







# শ্রীমহাভারতং।



শ্রীমম্বর্ষিবেদবাসবিরচিতম্।

উদ্যোগপর্ব।



শ্রীলশ্রীযুক্ত বর্দ্ধমানাধিপতিমহারাজাধিরাজমহতাব্চন্দ বাহাদুরসাজ্জয়া বায়েন চ

শ্রীসারদাপ্রসাদজ্ঞাননিধি-রামতনুতর্কসিদ্ধান্ত-গোপালধনচূড়ামণিভিঃ

পরিশোধিতম।



বর্দ্ধমান

• সত্যপ্রকাশয়ন্ত্রেণ মুদ্রিতম।

শকাব্দাঃ ১৭৮৯।

শ্রীপুরুষোত্তমদেবচট্টরাজেন মুদ্রিতং ।

## মহাভারতীয়োদ্যোগপর্বসূচীপত্রম্ ।



প্রকরণং ... .. পৃষ্ঠে পঙ্ক্তৌ	প্রকরণং ... .. পৃষ্ঠে পঙ্ক্তৌ
অভিমন্যুবিবাহোঃসবসমাগতানাং বি- রাটসভাস্থানাং রাজ্ঞাং সমীপে যু- ধিষ্ঠিররাজ্যপ্রাপ্তিসাহায্যার্থং কৃষ্ণস্য বাক্যং ... .. ১ ৩	তান্ প্রতি° তস্যোক্তিশ্চ ... .. ১৮ ৫
রাজ্ঞঃ প্রতি বলদেববাক্যং ... .. ২ ২৬	দেবাদীন্ প্রতি বৃহস্পতিবাক্যং ... .. ১৮ ২৩
বলদেববাক্যমসহমানস্য সাত্যকেষুঃ প্রতি সাতোপবাক্যং ... .. ৩ ২২	দেববাক্যেণ শচ্যা নহুষসমীপগমনং শুচ্যাঃ সমমপ্রার্থনাযাং নহুষস্যাকী- কারঃ ... .. ১৯ ২১
দ্রুপদস্য সাত্যকিমতানুমোদনং স্বম- তপ্রথ্যাপনঞ্চ ... .. ৪ ২৩	শচীবাক্যং শ্রুতবতাং দেবানামিন্দ্রস্য পাবনার্থং বিষ্ণুসমীপগমনং ... .. ২০ ২
বিরাটসংক্রুতস্য বাসুদেবস্য দ্রুপদা- দীন্ সস্তাষ্য দ্বারকাগমনং ... .. ৬ ১	বিষ্ণুপদেশাদশ্বমেধেন ব্রহ্মহত্যামপ- হতাপি বরদানক্রুঃসহং নহুষং দৃষ্ট্বা পুনরিন্দ্রস্যাস্তর্কানং ... .. ২০ ৮
ধৃতরাষ্ট্রসমীপগমনার্থং স্বপুরোহিতং প্রতি দ্রুপদবাক্যং পুরোহিতস্য হস্তি- নাগমনঞ্চ ... .. ৬ ২৬	শক্রং প্রদর্শয়িতুমিন্দ্রাণ্যা উপশ্রুতি- স্তুতিস্তদর্শনঞ্চ ... .. ২০ ১৯
যুধিষ্ঠির সাহায্যার্থং দ্রুপদস্য সর্ব- পার্থিবসমীপে দূতপ্রেরণং ... .. ৭ ২৩	উপশ্রুত্যা সহ শচ্যা ইন্দ্রাঘেষণার্থং গমনং ... .. ২১ ২
দুর্যোধনাজ্জুনঘোদ্বারকাগমনং ... .. ৭ ২৫	বিসতুস্তপ্রবিক্টমিন্দ্রং দৃষ্ট্বা তেন সহ শচ্যাঃ সস্তাষণঞ্চ ... .. ২১ ১২
কৃষ্ণং প্রতি দুর্যোধনস্য সহপ্রার্থনা অর্জুনস্য সারথ্যকর্মণি শ্রীকৃষ্ণবরণং কৃষ্ণসকাশান্নারায়ণীং সেনামাদায দুর্যোধনস্য বলদেবসমীপে গমনং তযোঃ সংবাদশ্চ ... .. ৮ ২১	শচ্যা নহুষসমীপগমনং ... .. ২২ ১
ক্রুতবর্ষগোহক্ষৌহিণীং সেনাং গৃহীত্বা দুর্যোধনস্য সর্বসৈন্যেন সহ হস্তিনা- গমনং ... .. ৯ ৩	শচীসমাদিক্টস্য নহুষস্য স্বীযযানবহ- নে স্বযীগাং নিযোগাদি ... .. ২২ ২১
সসৈন্যশল্যারাজস্য পাণ্ডবাতিগমনং শল্যদুর্যোধনযোঃ সংবাদঃ ... .. ১০ ১৮	ইন্দ্রসমীপমাগত্যাগন্তস্য নহুষপতন- বৃত্তান্তকথনং তেন চ দেবাদীনাং হর্ষঃ মহেন্দ্রস্য ত্রিভুবনরাজত্বপ্রাপ্তিরঙ্গি- রসে বরদানঞ্চ ... .. ২৫ ৭
শল্যযুধিষ্ঠিরযোঃ সংবাদঃ ... .. ১০ ২৪	রসে বরদানঞ্চ ... .. ২৬ ৯
যুধিষ্ঠিরং প্রতি শল্যস্য বিশ্বকপবত্রা- সুরযোঃ সংবাদকথনং ... .. ১১ ২৮	যুধিষ্ঠিরং প্রতি শল্যস্যোপদেশঃ শক্র- বিজযোপাখ্যানফলশ্রুতিকথনঞ্চ ... .. ২৬ ১৯
ব্রহ্মহত্যাপ্সু প্রতিচ্ছন্নে দেবেন্দ্রে দে- বাদীনাং দেবরাজ্যে নহুষাভিষেচনং উদ্বোধুকামস্য নহুষস্য শচীসস্তাষণং শচীবৃহস্পত্যোঃ সংবাদঃ ... .. ১১ ২১	যুধিষ্ঠিরানুরোধং কর্ণস্য তেজোবধং করিষ্যামিতি প্রতিজ্ঞায শল্যস্য দু- র্যোধনসমীপগমনং ... .. ২৭ ৫
শচী বৃহস্পতিং শরণমাপেতি শ্রুত্বা নহুষস্য ক্রোধঃ ... .. ১৮ ১	যুধিষ্ঠিরসমীপে সূসৈন্যসাত্যকিপ্রভু- তীনাগমনং ... .. ২৭ ১৩
ক্রুদ্ধং নহুষং প্রতি দেবাদীনাং সঙ্ঘনং	ভগদত্তাদীনাং দুর্যোধনসমীপাগমনং কুরুসভাযাং দ্রুপদপুরোহিতস্য বাক্যং দ্রুপদপুরোহিতং প্রতি ভীষ্মবাক্যং পাণ্ডবসমীপগমনার্থং সঞ্জয়ং প্রতি ধৃতরাষ্ট্রবাক্যং ... .. ৩০ ২৭
	সঞ্জয়যুধিষ্ঠিরযোঃ সংবাদঃ ... .. ৩৩ ১১
	সঞ্জয়ং প্রতি কৃষ্ণস্যোক্তিঃ ... .. ৪০ ২৬

प्रकरणं ... .. पृष्ठे पङ्क्तौ	प्रकरणं ... .. पृष्ठे पङ्क्तौ
युधिष्ठिरादीनामन्त्रा सङ्गस्य प्रतिगम- नानुष्ठाप्रार्थना ... .. ४४	सङ्गस्य तत्त्वदन्तुकीर्तनं ... .. १०९ २१
सङ्गस्य प्रति युधिष्ठिरस्य गमनानुष्ठा- प्रदानं धृतराष्ट्रादिसमीपे वक्तव्यास्य सन्देशवाक्यस्य कथनं ... .. ४४	१ धृतराष्ट्रे समीपे सङ्गस्य युधिष्ठिरसा- हायार्थं समागतानां राज्ञां नामा- दिवर्णनं ... .. ११० २७
युधिष्ठिरसमीपादागता सङ्गस्य धृ- तराष्ट्रसमीपागमनं ... .. ४८	१०० दुर्योधनं प्रति धृतराष्ट्रस्य सङ्गिहा- पनातिप्रार्थकथनं ... .. १०७ २२
धृतराष्ट्रसङ्गस्योः संवादः ... .. ४८	१०१ दुर्योधनं प्रति धृतराष्ट्रस्य तत्संनं ... .. ११४ ७
समीपमानावितसा विदुरस्य धृतराष्ट्रं प्रत्यापदेशकथनं ... .. ५०	७ कृषार्जुनकाचिकं शुक्रवस्तुं धृतराष्ट्रं प्रति सङ्गस्यवाक्यं ... .. ११५ १
धृतराष्ट्रविदुरस्योः संवादः ... .. ५०	१ धर्म्यादिमाहायवलेन पाण्डवानां वि- जयो भविष्यतीति पितृर्कथनमा- कर्णं दुर्योधनस्योत्तरदानं ... ११७ ११
केशिन्यार्थे विवदमानयोः सुधर्मवि- रोचनयोः संवादः ... .. ५९	२१ सदस्यवचनमतिदधानं कर्णं प्रति ती- श्या तत्संनं ... .. ११८ २२
पृच्छन्तं धृतराष्ट्रं प्रति विदुरस्य हित- वाक्यकथनं ... .. ७१	११ धृतराष्ट्रस्य कर्णस्य जीवति तीश्रे नाहं योऽस्यामिति प्रतिष्ठा शत्रुणि निष्क्रिया सताया निर्गमनं ... ११९ १४
धृतराष्ट्रसंज्ञातयोः संवादः ... १८	२३ स्वपक्षविजयं निश्चिता तीश्रे प्रति दुर्योधनस्य साहकारवाक्यं ... १२० १
सङ्गस्युत्थां पार्थानां वाचिकमवगन्तुं धृतराष्ट्रप्रतीनां सत्प्रवेशः ... ८९	११ धृतराष्ट्रसमीपे विदुरस्य दमोदरदास्त- पुरुषबोर्लक्षणकथनं ... .. १२० ११
पृच्छन्तं धृतराष्ट्रं प्रति सङ्गस्य धनञ्ज- योक्तृकथनं ... .. ९०	१४ जातिविरोधाकर्तव्यतासमर्थनार्थं दुर्यो- धनमुत्ताप्रदर्शनार्थं शाकुनिका- द्व्यापाथानकथनेन धृतराष्ट्रं प्रति विदुरस्य सङ्गिहापनार्थमुपदेशः ... १२१ ५
दुर्योधनं प्रति तीश्या नरनारारण- रुत्तान्तकथनं ... .. ९७	२५ युष्कनिर्णयार्थं दुर्योधनं प्रति धृ- तराष्ट्रवाक्यं ... .. १२२ १२
सङ्गस्य युधिष्ठिरसन्देशकथनं ... ९९	११ पृच्छते धृतराष्ट्रं सङ्गस्यार्जुनसन्देश- कथनं ... .. १२३ ७
पाण्डवसैन्यं पृच्छति धृतराष्ट्रे सङ्ग- स्य मूर्च्छादि ... .. ९९	१ स्वपरपक्षयोः सारासारं पृच्छति धृतराष्ट्रे सङ्गस्य व्यासगान्धारीसमीपे तत्कथनातिप्रार्थकथनं धृतराष्ट्र- वाक्यादिविदुरस्य तयोः सतायामानय- नं ... .. १२४ १
सङ्गस्य युधिष्ठिरादिपराक्रमरुत्तान्त- कथनं ... .. ९९	११ धृतराष्ट्रादिसमीपे सङ्गस्य कृषमा- हायार्थकीर्तनं ... .. १२४ १९
तीमपराक्रमकरणेन धृतराष्ट्रस्यानु- तापः ... .. १०१	४ द्रुपदज्ञानोपायं पृच्छते धृतराष्ट्रं सङ्गस्य तत्कथनं केशवं शरणमा- पुहीति पित्रूपदेशे दुर्योधनस्याना- दरः धृतराष्ट्राक्रेपणवनेन दुर्योधनं
धृतराष्ट्रस्यार्जुनपराक्रमादिकमालोच्य स्वपक्षपराजयवधारणं ... .. १०३	१ स्वपरपक्षयोः सारासारं पृच्छति धृतराष्ट्रे सङ्गस्य व्यासगान्धारीसमीपे तत्कथनातिप्रार्थकथनं धृतराष्ट्र- वाक्यादिविदुरस्य तयोः सतायामानय- नं ... .. १२४ १
पाण्डवादीनामजेयद्वयं प्रदर्शय धृतरा- ष्ट्रस्य शान्तिहापनेच्छाप्रकटनं ... १०५	११ धृतराष्ट्रादिसमीपे सङ्गस्य कृषमा- हायार्थकीर्तनं ... .. १२४ १९
कृकपाण्डवयोः सङ्गविधानार्थं धृ- तराष्ट्रं प्रति सङ्गस्यार्थयोगोपाहित- हितवाक्यं ... .. १०५	२४ द्रुपदज्ञानोपायं पृच्छते धृतराष्ट्रं सङ्गस्य तत्कथनं केशवं शरणमा- पुहीति पित्रूपदेशे दुर्योधनस्याना- दरः धृतराष्ट्राक्रेपणवनेन दुर्योधनं
तीमदीनां युष्कातिप्रार्थं स्वस्य प्रती- वादिक्थनानुवर्णय धृतराष्ट्रं प्रति दुर्यो- धनस्यास्थानं ... .. १०७	२३ द्रुपदज्ञानोपायं पृच्छते धृतराष्ट्रं सङ्गस्य तत्कथनं केशवं शरणमा- पुहीति पित्रूपदेशे दुर्योधनस्याना- दरः धृतराष्ट्राक्रेपणवनेन दुर्योधनं
पाण्डवानां रणविषयकमतिप्रार्थं रथ- सङ्गिणं पृच्छन्तं दुर्योधनं प्रति	

प्रकरणं ... .. पृष्ठे पङ्क्तौ		
प्रति गार्हपत्या तदसनं धृतराष्ट्रं		
प्रति वार्यस्य ज्ञानषोणोपदेशः स-		
ञ्जयस्य च पुनरपीश्वरतस्तुज्ञानोपास-		
कथनं ... .. १२५	१२	
धृतराष्ट्रसमीपे सञ्जयस्य कृष्णामा-		
बलिव्युत्पत्तिकथनं ... .. १२७	१४	
धृतराष्ट्रस्य स्वमीपमागमिष्यत् कृष्णस्य		
स्तुतिः ... .. १२९	१५	
भगवन्मानप्रकरणारम्भे कृष्णं प्रति		
युधिष्ठिरस्य दारिद्र्यानन्दार्थप्रशंसोपादि-		
पूर्विका राज्यालातोपासजिज्ञासा कौ-		
रवमभायां स्वयमुपगच्छुमुद्यते वासु-		
देवे तन्निवारणं तस्य तु दृढाधुवसाय-		
दर्शनेन तत्रानुमोदनं कृतानिर्दे-		
शश्च ... .. १२९	२२	
युधिष्ठिरं प्रति विविधयुक्तिमार्गान्		
प्रदर्शय कृष्णस्य युद्धाश्रयोपदेशः कुरू-		
सदसि श्रीयकृतस्य निर्धारणं समर-		
हृत्कच्छुनिर्मितप्रदर्शनं युद्धसङ्घाराया-		
नुमन्त्रणं ... .. १३१	२७	
कृष्णं प्रति भीमस्य कुरूसभायां सङ्घि-		
प्रस्ताविकरणोपदेशः ... .. १३७	२७	
सङ्घिसापनयनाय समरोत्साहवर्द्धनाय		
च भीमं प्रति कृष्णस्य कौशलेनानु-		
योगः ... .. १३४	२५	
कृष्णानुयुक्तस्य भीमस्य सरोषोत्सा-		
हेनाश्रुसामर्थकथनं ... .. १३५	२९	
कृष्णस्य भीमप्रशंसो विविधशास्त्रसिद्धा-		
स्तुतकथनं ... .. १३७	२४	
नानार्थुक्तिप्रदर्शनेन कृष्णं प्रता-		
र्जुनस्य सक्रातुमुपदेशः ... .. १३९	२२	
अर्जुनोपदेशे कृष्णस्यानुमोदनं		
विविधकारणानि निर्दिश्य संग्रामसम्भा-		
वनाकथनं ... .. १३८	२०	
कृष्णं प्रति नकुलस्य कार्यागतापस्था-		
पिते संक्रो विग्रहे वा वतितुमुप-		
देशः ... .. १३९	२१	
कृष्णं प्रति सहदेवस्य संग्रामसंघ-		
टनोचितप्रस्तावनोपदेशस्तत्र च सा-		
ताकिप्रमुंखानां सर्वबोधानामनुमो-		
दनं ... .. १४०	२७	

प्रकरणं ... .. पृष्ठे पङ्क्तौ		
सकरुणं विलपन्त्याः कृष्णस्य दुःशासन-		
परामुक्तं केशपाशं प्रदर्शय कृष्णं		
प्रति समरसंघटनोचितप्रस्तावनो-		
पदेशः ... .. १४१	१	
द्रौपदीं प्रति कृष्णस्य साक्षनं ... .. १४२	२७	
कृष्णस्य हस्तिनागमनं ... .. १४३	५	
गच्छन्तु त्रिगुणं प्रति युधिष्ठिरार्जुन-		
योः सन्देशकथनं ... .. १४४	११	
पथिसमेतैर्जामदग्यादिभिः कृष्णस्य स-		
न्नायणं ... .. १४५	१८	
कृष्णस्य वृकश्वले राजिषापनं ... .. १४९	१७	
धृतराष्ट्रोपदेशादुर्योधनस्य कृष्णसं-		
कारार्थं देशेदेशे सतानिष्ठागादि		
१४९	१८	
विदुरसन्निधौ धृतराष्ट्रस्य कृष्णसंकार-		
विषयकश्चातिश्रायकथनं तं प्रति वि-		
दुरसा हितोपदेशश्च ... .. १४८	१४	
कृष्णस्य कुरूसभायां सर्वैः समेता		
विदुरसन्मन्यातिथाग्रहणं ... .. १५१	१७	
समीपुगगतं कृष्णं प्रति पृथायाः खे-		
दोक्तिः ... .. १५२	२०	
कुन्तीं प्रति कृष्णस्य साक्षनं ... .. १५७	१९	
कृष्णस्य दुर्योधनगृहप्रवेशः ... .. १५९	१०	
कृष्णस्य दुर्योधनकृतनिमन्त्रणास्वीकारे		
तं प्रति तस्योक्तिः ... .. १५९	२२	
दुर्योधनं प्रति कृष्णस्योत्तरदानं ... .. १५९	२८	
दुर्योधनगृहान्निर्गता कृष्णस्य विदुरगृह-		
गमनं ... .. १५८	२१	
परम्परं संलपतोः कृष्णविदुरयो-		
निशायापनं ... .. १५९	७	
कृष्णसमीपे शकुनिदुर्योधनयोरग-		
मनं ... .. १६१	२४	
कुरूसभागमनार्थं कृष्णस्य रथारोहणं		
सत्ताप्रवेशश्च ... .. १६२	९	
भीष्मं प्रति कृष्णस्यास्तुरीकस्थानान्तर-		
दादीनामभार्थनार्थमुपदेशः सत्तायामु-		
पविष्टेषु देवर्षिषु सर्वेषामुपवेश-		
नं ... .. १६३	१०	
धृतराष्ट्रसन्निधौ कृष्णस्य सङ्घिप्रस्तावः		
१६४	१	
कृष्णार्जुनयोरजेयत्वप्रदर्शनेन सङ्घि-		
स्थापनार्थं जामदग्यास्य दन्तोस्तुवराता-		
स्तुतकथनं ... .. १६७	२५	



প্রকরণং ... .. পৃষ্ঠে পঙ্ক্তৌ	প্রকরণং ... .. পৃষ্ঠে পঙ্ক্তৌ
দুর্যোধনং প্রতি কণ্ঠস্য মাতলীযোপা- খ্যানকথনং ... .. ১৬৯	শিলাঃ সন্নিধোঃ সিদ্ধান্নাদিতোজনং • তাপসীপ্রভাবাৎ পক্ষাপনয়নাদিকঞ্চ ১৮৫ ১৪
মাতলিনারদযোঃ পাতালপুরপ্রবেশো মাতলিসকাশে নারদস্য বরুণালযবর্ণ- নঞ্চ ... .. ১৭০	অর্ধগুণমনুবর্ণ্য গালবং যযাতিসকাশে নী.দা তং রাজানং প্রতি গরুড়স্য গা- লবাতিলাষপ্রদানানুরোধঃ ... .. ১৮৭ ১৯
নারদস্য পাতালপুরবর্ণনং ... .. ১৭১	প্রার্থিততুরগদানাশক্লেণ যযাতিনা • প্রদস্তাৎ গুর্কর্ষুসংগ্রহলাধনরূপাৎ তৎ- কন্যাং মাধবীং গৃহীত্বা গালবস্য হর্যা- শ্বরাজসকাশে গমনং ... .. ১৮৮ ১৯
“ হিরণ্যপুরবর্ণনং ... .. ১৭২	হর্যাশ্বরীজম্য গালবার্ধিততুরঙ্গাণাং দ্বি- শতমাত্রং দাতুমঙ্গীকৃত্য মাধবীগর্ত্তে পুত্রমেকমুৎপাদয়িতুং তদীযপাণিগ্র- হণং পুত্রপ্রসবান্তে চ মাধবীং গৃহীত্বা গালবস্য দিবোদাসরাজসমীপে গম- নং ... .. ১৮৯ ২০
“ গরুড়বংশবর্ণনং ... .. ১৭৩	দ্বিশতমশ্বং দাতুমঙ্গীকুর্ক্বতি দিবো- দাসে গালবসৌকপুত্রোৎপাদনায ত- স্মৈ মাধবীদানং ... .. ১৯০ ২১
পাতালপুরস্য গোমাতুঃ সুরভেচ্চ বর্ণ- নং ... .. ১৭৩	গালবস্যোশীনরাষ রাজ্ঞে পূর্ক্ববন্নিয- মেন মাধবীদানং নিযমান্তে চ কন্যাং গৃহীত্বা প্রস্থানং ... .. ১৯১ ২২
ভোগবত্যাঃ পুর্যা নাগবংশস্য চ বর্ণনং মাতলেঃ স্মুখনাগাষ কন্যাং সম্প্র- দাতুমভিলাষচ্চ ... .. ১৭৪	গরুড়োপদেশাঙ্গালবস্য বিশ্বামিত্রায় ষট্শতশ্বপ্রদানং অপরদ্বিশতশ্বস্থা- নীযত্বেন পুত্রমেকমুৎপাদয়িতুং মা- ধবীং প্রদায় তপসে প্রস্থানঞ্চ ... .. ১৯২ ২৩
বিষ্ণুসমাদিষ্টস্য বাসবস্যাংপায়ুষে স্মু- খুখায় পরমায়ুঃপ্রদানং ... .. ১৭৫	মাধব্য্যাঃ পুনঃ স্বয়ম্বরং কর্ত্তুকামে ব- যাতৌ তৎপুত্রাতাং যদুপূরুভ্যাং তাং প্রযাগাশ্রমপদমুপনীয নির্দিশ্যা- মানেষু বরেষু তানুৎসৃজ্য বনং বৃত- বত্যা মাধব্যাস্তপশ্চরণং যযাতেঃ স্ব- গারোহণঞ্চ ... .. ১৯৩ ২৭
স্মুখায়াযুর্দানাদিচ্ছং প্রতি রুক্ষস্য গরুড়স্য সগর্ক্বনির্ভৎসনং বিষ্ণোগরু- ড়গর্ক্বাপনয়নং গরুড়রুভবিষ্ণুস্তৃতিঃ কণ্ঠস্যোপাখ্যানান্তে তং প্রতি দুর্যো- ধনস্যোপহাসচ্চ ... .. ১৭৭	দেবাদীনামবমানাৎ ক্ষীণপুণ্যস্য যযা- তেঃ স্বলোকান্নৈমিষারণো যিযক্ষুণাং স্বদৌহিত্রভূতানাং প্রতর্দনাদীনাং ম- ধ্যে পতনং তদীযৈঃ পুণ্যৈঃ পুনঃ স্ব- গারোহণঞ্চ ... .. ১৯৪ ১৫
নির্ক্বক্কদেবোপপাদনার্থং দুর্যোধন- সন্নিধৌ নারদস্য গালবচরিতকথনা- রন্তঃ বিশ্বামিত্রভক্তিপরীক্ষার্থং তৎ- সকাশে বশিষ্ঠরূপেণ ধর্ম্মস্যাগমনং পরীক্ষ্য চ তস্মৈ ব্রাহ্মণত্বপ্রদানং স্ব- শিষ্য গালবশুক্রষাতুর্কস্য বিশ্বামিত্র- স্য তস্মৈ বিনা দক্ষিণাদানেন স্বগৃহ- গমনাদেশস্তদীযনির্ক্বক্কাতিশবদর্শনাৎ শ্যামৈককর্ণাচ্ছততুরগপ্রার্থনা চ আত্মানং গুর্ক্বর্ষুসংগ্রহাসমর্থং মত্বা মর্ত্তুকামস্য বিষ্ণুং শরণং যিযাসোর্গা- লবস্য সন্নিধৌ গরুড়স্যাগমনং তদা- শ্বাসনঞ্চ ... .. ১৮০	পৃচ্ছন্তুং যযাতিং প্রতি পিতামহ- স্যাভিমানদোষকথনং দুর্যোধনং প্র- তি নারদস্য সঙ্ক্কার্থমাদেশচ্চ ... .. ১৯৭ ৬
যত্রেচ্ছসি তত্রৈব স্থাং নেষামীতুস্ত্বা গালবসকাশে গরুড়স্য পূর্ক্বদিগ্বিভাগ- বর্ণনং ... .. ১৮১	ধৃতরাষ্ট্রচোদিতস্য কৃষ্ণস্য দুর্যোধনং প্রতি হিতোপদেশঃ ... .. ১৯৮ ১২
সুপর্ণস্য দক্ষিণদিগ্বর্ণনং ... .. ১৮২	
পশ্চিমদিগ্বর্ণনং ... .. ১৮৩	
উত্তরদিগ্বর্ণনং ... .. ১৮৪	
পূর্ক্বাভিমুখেণ গালবং নযতো গরুড়- স্যর্ষভশৈলেহবতরণং তপস্বিন্যাঃ শা-	

प्रकरणं ... ..	पृष्ठे	पञ्चो	प्रकरणं ... ..	पृष्ठे	पञ्चो
दुर्योधनं प्रति तीर्थादीनामुपदे- शः ... ..	२०१	७	रुद्रावुपदेशः ... ..	२२७	१
कृष्णं प्रति दुर्योधनस्योत्तरदानं पाण्डवेभ्यो राज्यांश्चप्रदानेहसम्भ- तिप्रकटनम् ... ..	२०७	१२	पृष्ठवस्तुं धृतराष्ट्रं प्रति सङ्गमसा कृष्ण- कर्णसंवादकथनं ... ..	२०८	१२
दुर्योधनं प्रति कृष्णस्य तत्संनं दुर्योधनं प्रति दुःशासनवाक्यं ...	२०८	१४	विदुरमुखां कुरूपाण्डवसमरं दुर्नि- वृत्तमुपलभा कुन्त्याश्चिन्तनं स्वर्गवृत्ता- तं कर्णं पाण्डवपक्षमवलम्बयितुं तं- समीपे गमनम् ... ..	२०८	१२
ब्राह्मणचनं शत्रु क्रोधाद्दुर्योधन- स्य सभातः प्रस्थानं ... ..	२०८	२०	कुन्तीकर्णयोः संवादः ... ..	२०९	१५
तीर्थादीन् प्रति कृष्णस्य दुर्योधनसं- यमनावोपदेशः ... ..	२०७	१	सैनानिर्घाणप्रकरणरुद्रे कृष्णं प्रति युधिष्ठिरस्य कौरवसभागतसर्वरुद्रा- स्तुजिज्ञासा ... ..	२०९	२४
धृतराष्ट्रसमादिष्टाया गान्धार्था दुर्यो- धनं प्रति हितोपदेशः ... ..	२०७	२७	युधिष्ठिरसकाशे कृष्णस्य दुर्योधनाय कथितस्य तीर्थादीनां शास्त्रिणापनो- पदेशस्य कथनं ... ..	२०९	२४
मातुर्वाक्यामनादृता सभायाः प्रहितस्य दुर्योधनस्य कर्णादितिः सार्द्धं कृष्ण- संयमनायातिमस्त्रणं ... ..	२०९	१०	सर्वेषां वाक्यामनादृता कुरूक्षेत्रग- मनार्थं राज्ञः प्रति दुर्योधनाज्जा युधिष्ठिरं प्रति कृष्णस्य दुर्योधनदुर- तिप्रायेण युद्धस्यावश्यात्तावित्त्वकथनं	२१०	१५
कृष्णादीन् प्रति सात्याकेद्दुर्योधनाति- प्रायकथनं ... ..	२०९	२७	कृष्णवाक्यं शत्रु ब्राह्मन् प्रति सेना- विभागार्थं युधिष्ठिरस्यादेशः सेना- पतिनिर्घादिकं क्रुत्वा ससैन्यापाण्ड- वानां युद्धाय कुरूक्षेत्रगमनम् ...	२१०	१५
सात्याकिवाक्येन धृतराष्ट्रं प्रति कृष्ण- विदुरयोर्दुर्योधनदोषकथनं ...	२१०	१	कर्णादीन् प्रति दुर्योधनस्य कुरूक्षे- त्रे शिविरस्थापनादेशः ... ..	२१०	१७
सभामानायितं दुर्योधनं प्रति धृतराष्ट्र- राष्ट्रविदुरयोर्दुःशास्त्रादिकृष्णमाहात्म्या- कथनं ... ..	२१०	२१	संशयनिरसनार्थं युधिष्ठिरेण चोदि- तस्य कृष्णस्य समरकर्तव्यतावधारणं त- त्रार्जुनस्यानुमोदनम् ... ..	२१०	१७
कुरूसदसि कृष्णस्य विश्वरूपप्रदर्शनं सभाया निर्गच्छन्तं कृष्णं प्रति धृतराष्ट्र- स्यास्मिन्दिशयथाथापनं ... ..	२११	२०	दुर्योधनस्य सैन्याविभागकरणं ..	२११	१७
धृतराष्ट्रादिरुद्रानामस्त्रा कृष्णस्य कुन्ती- समीपगमनं ... ..	२११	२४	तीर्थं सेनापतिं क्रुत्वा ससैन्यादुर्यो- धनस्य कुरूक्षेत्रगमनं ... ..	२११	१७
कुरूसदसिरुद्रं सर्वमुद्रस्तुमुद्रामस्त्रा च पृथां गच्छकामसा कृष्णस्य समिधो तस्या युधिष्ठिरं प्रति वक्रवास्य हितोपदे- शस्य कथनं ... ..	२११	२०	द्रुपदादीन् सप्त सेनापतीन् धृष्टदुम्नम् सर्वसेनाप्रणेतारं क्रुत्वतो युधि- ष्ठिरस्य समीपे बलदेवस्यागमनं सु- मरसंसर्गमपहातुं सरस्वतीतीर्थगम- नम् ... ..	२११	१७
कुन्त्या विदुलापुत्रसंवादिषुपेतिहास- कथनं ... ..	२११	२७	साहायदानार्थं पाण्डवगणसमीपे स- सैन्याक्रुत्वा राजस्यागमनं तैः प्रत्या- यातस्य तस्य दुर्योधनसकाशे गमनं तेनापि तस्य प्रत्याख्यानम् ...	२११	१७
कृष्णसमीपे कुन्त्या तीर्थादीन् प्रति व- क्रवास्य सन्देशस्य कथनं ... ..	२११	१४	कुरूपाण्डवसेनासमिवेशं पृष्ठवते धृ- तराष्ट्राय सङ्गमस्य तं कथनं ...	२११	१७
स्वर्धे कर्णमारोप्य कृष्णस्य गमनं ...	२१२	१९			
युधिष्ठिराय कथितं कुन्त्यावाक्यामनुवर्ण राजपुरसंरुद्रादिमित्रसार्धसंस्त्रुचित- कौरवपराजयसम्भावनाम् प्रदर्शय दुर्यो- धनं प्रति तीर्थद्वेषेणयुद्धनि-					

প্রকরণং ... .. পৃষ্ঠে পঙ্ক্তৌ	
যুধিষ্ঠিরাদীন্ প্রতি .বক্তবাং বৈড়াল- ত্রতাখ্যানাদিকমুলুকায সন্দিশ্য ছু- র্যোধনস্য পাণ্ডবগণসমীপে দৌত্যার্থং তৎপ্রেরণং ... .. ২৫৬	৮
যুধিষ্ঠিরাদিসমীপে উলুকস্য দুর্যো- ধনসন্দেশকীর্তনং ... .. ২৬১	১৭
উলুকমুখাদেদুর্যোধনসন্দেশং শ্ৰুত্বা- র্জুনাৰ্দীনাং ক্রোধঃ সকলবাক্যানামে- কৈকশঃ সমুচিতোত্তরদানঞ্চ ... ২৬৪	২
উপপ্লব্যাং কৌরবসভামুপেতস্যোলুক- স্য মুখাং পাণ্ডবগণসন্দেশমাকর্ণা ছু- র্যোধনস্য সমরসন্নহনাদেশঃ ... ২৬৮	২২
পাণ্ডবানাং যুদ্ধায় প্রযাণং ধৃষ্টদ্যুম্নস্য প্রতিদ্বন্দ্বিনীকার্ণপূৰ্বকবোধবিভাগশ্চ ২৬৯	৪
কৌরবীযরথাতিরথসংখ্যাং পৃষ্ঠবন্তুং দুর্যোধনং প্রতি ভীষ্মস্য তৎকথনং ২৭০	৯
কণস্যাক্ষরথিস্বকীর্তনান্দীয়েণ সহ তস্য বিবাদঃ ... .. ২৭৪	৩
ভীষ্মস্য পাণ্ডবীযরথাতিরথসংখ্যাক- থনং শিখণ্ডিবিনাশনাসম্মতিপ্রকটন- ঞ্চ ... .. ২৭৫	২৬
শিখণ্ডিস্ত্রীপূৰ্বককথনপ্রসঙ্গোপহা- পি তাযোপাখ্যানপ্রকরণারম্ভে বিচিত্র- বীৰ্য্যবিবাহার্থং ভীষ্মস্য সৰ্বান্ নৃপ- তীন্ জিহ্বা কাশীরাজকন্যানয়নং ... ২৮০	১৫
ভ্রাতৃবিরবৎহিনীকাহোদ্যতং ভীষ্মং প্র- ত্যয়াযাঃ শাস্তোজগতং স্বীয়পূৰ্বরা- গমুক্ত্বা তৎসমীপগমনানুমতিপ্রার্থনা ২৮১	১০
ভীষণানুজ্ঞাতাযা অঘ্নাযাঃ শালু- সমীপগমনাদি ... .. ২৮১	২৫
শালেন প্রতাখ্যাতাযা অঘ্নাযা বি- লাপঃ তপোবনমুপেত্য তাপসগণস- মীপে স্বরূতাস্তমুক্ত্বা তপশ্চরণেচ্ছাপ্র- কটনঞ্চ ... .. ২৮৩	১
তাপসৈঃ সংমন্ত্রা পিতৃবেশ্ম গম্ভমুপদি- ক্কাবা অঘ্নাযাস্তপশ্চরণাযৈবাতিরতি- প্রকটনং সমীপমুপস্থিতাত্মাতামহাদ্রা- জর্ষিহোত্রবাহনাদ্দুঃখহানোপায়লাভ- শ্চ হোত্রবাহনস্য চ তৎকালসমাগ- তায় রামসহচরাযাকৃতব্রণায় দৌহিত্রী- দুঃখবৃত্তান্তকথনং ... .. ২৮৩	২৮

প্রকরণং ... .. পৃষ্ঠে পঙ্ক্তৌ	
অঘ্নাং প্রতাকৃতব্রণস্য রামেণ বৈরং নির্ঘাতযিতুমুপদেশঃ তাপসগণসমীপে রামস্যাগমনং অঘ্নাদুঃখবৃত্তান্তব্রণে- নাস্য ভীষ্মং শাসিতুমঙ্গীকৃত্য কুরুক্ষে- ত্রে প্রযাণঞ্চ ... .. ২৮৬	১৯
রামেণাহুযাযাং গৃহাণেতানুরুদ্ধস্য ভী- ষ্মস্য তদ্বচনাবজ্ঞানং তেন চোভযো- স্ত্রযোবিংশতিদিবসব্যাপিসমরারম্ভঃ ২৮৯	২১
স্বপ্নে ভীষ্মস্য বসুগণোপদিষ্টপ্রস্বাপ- মাস্ত্রপ্রযোগাদিপরিজ্ঞানং ... ২৯৮	২৩
সমরে প্রস্বাপনাস্ত্রং সন্ধাতুমুপক্রান্তস্য ভীষ্মস্য দেবার্ষিভিনিবার্ণং অস্ত্রপ্রতি- সংহারমালোক্য রামস্য স্বমুখেণ প- রাজযস্বীকারঃ দেবপিতৃগণৈর্নিবারি- তযোস্তযোযু দ্বিনিবৃত্তিশ্চ ... .. ২৯৯	১৯
রামেণ বৈরং নির্ঘাতযিতুমপারযন্ত্যা অঘ্নাযাঃ পুনস্তপোবনমুপেত্য কঠো- রতরতপোনুষ্ঠানং গঙ্গাশাপাদর্কাস্ত্র- না নদীকপধারণঞ্চ ... .. ৩০২	১৪
মহাদেবাদঘ্নাযা অভীক্টবরলাভো দী- প্তানলে দেহবিসর্জনঞ্চ ... .. ৩০৪	১০
অনপত্যতযা তপশ্চরতে দ্রুপদরাজা- য দেবদেবেন স্ত্রীপুমাংস্তে ভবিষ্যতী- তিবরে দস্তে তৎকন্যাত্বেনোৎপন্ন্যা অঘ্নাযা মাত্ৰা পুত্রদ্বয়েন প্রথ্যাপনং ৩০৫	৮
পুত্রকপিণ্যা দ্রুপদকন্যাযাঃ শিখণ্ডি- ন্যা দশাৰ্ণরাজদুহিতুঃ পাণিগ্রহণং তযা চ তস্যাঃ স্ত্রীত্বৈ প্রকাশীকৃত্যে কোপ- পরীতস্য হিরণ্যবর্শ্মণো দ্রুপদসকাশে দূতপ্রেরণং ... .. ৩০৬	৭
যুদ্ধাযাভিগম্ভমুদাতেন হিরণ্যবর্শ্মণা পু- নদূতে প্রেরিতে দ্রুপদস্য ভার্য্যাস্নি- ধৌ বিলাপঃ ... .. ৩০৭	১২
দ্রুপদাদিক্কাযাস্তুৎপন্ন্যাঃ সৰ্বজনসমী- পে দুহিতুস্বকীয়নিখিলগুহবৃত্তান্ত- কথনং স্বামিনে দেবার্চনাদার্থমুপদে- শদানঞ্চ পিত্রোঃ শোকদর্শনেন প্রা- ণাংস্তাস্ত্রকামাযাঃ শিখণ্ডিন্যা অপি বিজনবনগমনং তদধিকারিণঃ স্তৃণা- কর্ণযক্ষস্য সন্নিধৌ পুংস্তুপ্রার্থনা চ ৩০৮	১৩
শিখণ্ডিনীস্তুগাকর্ণযোরিতরেতরলিঙ্গ-	

প্রকরণং ... .. পৃষ্ঠে পঙ্ক্তৌ		
সংক্রামণং শিখণ্ডিনীপুংস্থলাভঙ্গ্যেণ		
দ্রুপদেন সন্দিক্ষ্য হিরণ্যবর্ষণো জা-		
মাতরং পরীক্ষ্য তস্মৈ বহুল বিভাদি-		
দানং স্তূগরীভাস্ত্রবর্ণেন রুক্ষস্য কুৰ্বে-		
রস্য তস্মৈ শিখণ্ডিজীবনকালং যাবৎ		
স্ত্রীভাবেনাবস্থানরূপশাপপ্রদানং স্তূগা-		
চ্ছাপবিবরণমাকর্য শিখণ্ডিনো হর্ষা-		
দিকঞ্চ ... .. :	৩০৯	২৫
কিয়তা কালেন পাণ্ডবীং সেনাং সং-		
হত্বুং সমর্থা যুযামিতি পৃষ্ঠবতে ছুর্যো-		
ধনায় ভীষ্মাদীনাং স্বস্ব সামর্থ্যকথনং	৩১৩	১

প্রকরণং ... .. পৃষ্ঠে পঙ্ক্তৌ		
ভীষ্মাদিশক্তিকথনোদন্তমুপলভ্য যুধি-		
ষ্ঠিরেণ কিয়তা কালেন শত্রুন্ক্ষপষে-		
রিত্তি পৃষ্ঠস্যার্জুনস্য তস্মৈ স্বসামর্থা-		
কথনং ভীষ্মাদিশক্তিকৌর্ভনেনাশ্বাসপ্র-		
দানঞ্চ ... .. :	৩১৪	১
শ্রেণীবিভাগক্রমেণ কৌরবসৈন্যস্য যু-		
দ্ধায় প্রয়াগং রণাঙ্গনে শিবিরসন্নিবেশ-		
নঞ্চ ... .. :	৩১৫	১
কৌশলেন শ্রেণীবিভাগং কৃত্বা পাণ্ডব-		
সৈন্যস্য যুদ্ধায় প্রয়াগং ... .. :	৩১৫	২৭

উদ্দেশ্যগপর্কীয় সূচীপত্রং সম্পূর্ণং ।

## উদ্যোগপরীয়াশুদ্ধশোধনম্ ।

অশুদ্ধঃ	শুদ্ধঃ	পৃষ্ঠে	পঙ্ক্তৌ	অশুদ্ধঃ	শুদ্ধঃ	পৃষ্ঠে	পঙ্ক্তৌ
কথঞ্চমঃ	কথঞ্চন	৪	২৮	নজুঃ	নৃজুঃ	১৬৭	২৩
কপিণীং	কপিণী	২০	২৮	রক্ষন্তী	ক্ষরন্তী	১৭৩	২৪
ভশং	ভৃশং	২৪	১১	রক্ষতে	ক্ষরতে	১৭৭	১০
গনে	গণে	৩২	১৯	কণস্য	কণস্য	১৭৮	২৪
শণ্ণেমি	শ্ণণেমি	৪২	২	দেবর্ষে	বিপ্রর্ষে	১৭৯	২১
শ্রদ্ধধান	শ্রদ্ধধান	৫০	২৭	স্বতযো	স্বতযো	১৮১	২৩
শ্রুদৌ	শ্রুদৌ	৬০	১৪	প্রতিচী	প্রতীচী	১৮৩	২
জুনো	জুনো	৯০	১৬	গায়ন্তি	গায়ন্তি	১৮৪	২৩
তুভাষি	তুভাষি	৯০	১৯	গাক্ষারং	কাঙ্ক্ষারং	১৮৪	২৪
নপো	নৃপো	৯১	৭	শুক্ৰটিষ্ঠা	শুক্ৰশ্চিন্তা	১৮৭	২৩
জর্জনম্	জর্জনম্	৯৭	২৬	পতিলো	পতিলো	১৯৬	১১
সভাগতান্	সমাগতান্	১১১	৯	ক্রুরং	ক্রুরং	১৯৮	১৭
শ্রদ্ধধান	শ্রদ্ধধান	১২০	১৯	বিকণ	বিকর্ণ	১৯৯	৩
কুম্নং	কুৎম্নং	১২৪	২৮	তজ্জ	তজ্জু	২০১	১৮
ধত	ধৃত	১২৬	১৪	সকণা	সকণা	২০৩	২৮
পন্নো	পন্নঃ	১২৯	৪	দৃশ্যঃ	দৃশ্যঃ	২১০	২৯
আকৃজ	আকৃজ্য	১৩৫	৫	নিরাময়ং	নিরামর্ষং	২১৬	৫
নিশ্শুক্ৰো	নিশ্শুক্ৰো	১৩৫	১১	হ্বয়	হ্বয়	২১৭	২৭
হদ	ভদ	১৩৬	২	তানেবা	তাবেবা	২১৮	২৬
ভুতা	ভুতা	১৩৯	১৬	দৃশং	দৃশং	২১৯	১৭
সক্সরো শীরা	সক্সরো বীরা	১৪০	২৬	সতাং	স্বতাং	২২৮	২২
ইতুক্তা	ইতুক্তা	১৪২	২১	শিষ্যোদ্রো	শিষ্যোদ্রো	২৩৩	৫
ধৃক্টদ্যমঃ	ধৃক্টদ্যমঃ	১৪৪	১৩	পূর্ব	সক্স	২৩৮	২৫
ভবাদযা	ভবাদযা	১৪৪	২২	দ্বোপ	দ্বোপ	২৪২	১০
ভশম্	ভৃশম্	১৪৫	১৩	রাট্	বাট্	২৫০	২২
সপ্তমাঃ	সপ্তমাঃ	১৪৬	১৫	পাৰ্বেণ	পাৰ্বেণ	২৪২	২৯
ভুণে	ভৃণে	১৪৮	৬	মিতপ্রজ্জ	মিতপ্রজ্জ	২৬৯	২৬
ধ্বতরাষ্ট্রি	ধ্বতরাষ্ট্রি	১৫২	৫	সত্তম	সত্তমঃ	২৭৩	১৪
দশনী	দশনী	১৫৭	৯	ভৃষ্	ভৃষ্	২৮৫	১৬
কৃতুঃ	কৃতুঃ	১৫৪	২৮	দ্রক্ট	দ্রক্টু	২৮৫	২১
সক্সেষু	সক্সেষ	১৫৯	১১	ধিপঃ	ধিপ	৩০৭	২৪
বুদ্ধহাং	বুদ্ধহাং	১৫৯	২৬	সক্ষিতা	সক্ষিত্য	৩০৮	১
লোকশ্চ	লোকস্য	১৬২	১৭	এতক্ষ্ণা	এতক্ষ্ণা	৩০৮	১৮
মূত্রা	মূত্রা	১৬৭	৭	মর্চয়	মর্চয়	৩০৮	২৪

শ্রীমহাভারত-কবিতা ।

# শ্রীমহাভারত ।



উদ্যোগপর্ব ।

সৈন্যোদ্যোগপর্ব ।

ওঁ নারায়ণং নমস্কৃত্য নরকৈব নরোত্তমম্ ।  
দেবীং সরস্বতীকৈব ততো জয়মুদীরয়েৎ ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ । কৃষ্ণা বিবাহস্ত কুরুপ্রবীরাস্তদাভিনয়োঋদিতাঃ সপক্ষাঃ ।  
বিশ্রম্য রাত্রাবুযসি প্রতীতাঃ সভাং বিরাটস্য ততোহভিজগ্মুঃ ॥ ১ ॥ সভা তু সা  
মৎস্যপতেঃ সমৃদ্ধা মণিপ্রবেকোত্তমরত্নচিত্রা । ন্যস্তাসনা মাল্যবতী সুগন্ধা তাম-  
ভ্রায়ুস্তে নররাজবৃক্ষাঃ ॥ ২ ॥ অথাসনান্যাবিশতাং পুরস্তাদুভৌ বিরাটক্রপদৌ  
নরেশৌ । বৃক্ষাশ্চ মান্যাঃ পৃথিবীপতীনাং পিত্রা সমং রামজনার্দনৌ চ ॥ ৩ ॥  
পাঞ্চালরাজস্য সমীপতস্ত শিনিপ্রবীরঃ সহরোহিণেযঃ । মৎস্যস্য রাজ্ঞস্ত সুসম্মি-  
কৃষ্ণে জনার্দনশ্চৈব যুধিষ্ঠিরশ্চ ॥ ৪ ॥ সুতাশ্চ সর্ষে ক্রপদস্য রাজ্ঞো ভীমাজ্জুনৌ  
মাদ্রবতীসুতো চ । প্রদ্যম্নশাঘৌ চ যুধি প্রবীরৌ বিরাটপুত্রৈশ্চ সহাভিমুখ্যঃ ॥ ৫ ॥  
সর্ষে চ শূরাঃ পিতৃভিঃ সমানা বীৰ্য্যেণ রূপেণ তথা বলেন । উপাশিশন্ দ্রৌপ-  
দেযাঃ কুমারাঃ সুবর্ণচিত্রেষু বরাসনেষু ॥ ৬ ॥ তত্রোপবিষ্টেষু মহারথেষু বিভ্রাজ-  
মানাঘরভূষণেষু । ররাজ সা রাজবতী সমৃদ্ধা গ্রহৈরিব দেয়োরিমলৈরুপেতা ॥ ৭ ॥  
ততঃ কথাস্তে সমবায়যুক্তাঃ কৃষ্ণা বিচিত্রাঃ পুরুষপ্রবীরাঃ । তস্মুর্মুহূর্তং পরিচিন্ত্যস্তঃ  
ক্লকং নৃপাস্তে সমুদীক্ষমাণাঃ ॥ ৮ ॥ কথাস্তমাসাদ্য চ মাধবৈন সঙ্ঘোদিতাঃ পাণ্ড-  
বকার্য্যাহেতোঃ । তে রাজসিংহাঃ সহিতা হৃশৃগুন্ বাক্যং মহার্থঞ্চ মহোদয়ঞ্চ ॥ ৯ ॥  
শ্রীকৃষ্ণ উবাচ । সর্ষেভবস্তির্বিদিতং যথাযং যুধিষ্ঠিরঃ সৌবলেনাক্রবত্যাং । জিতৌ  
নিকৃত্যাপহতঞ্চ রাজ্যং পুনঃ প্রবাসে সমযঃ ক্রতশ্চ ॥ ১০ ॥ শক্ভৈর্বিজেতুং তরসা  
মহীঞ্চ সত্যে স্থিতৈঃ সত্যরথৈর্ষথাবৎ । পাণ্ডোঃ সুতৈস্তদ্বৃতমুগ্রকপং বর্ষাণি ষট্ সপ্ত  
চ চীর্ণমগ্রৈঃ ॥ ১১ ॥ ঋষোদশশ্চৈব সুদুস্তরোহমমজ্জাযমানৈর্ভবতাং সমীপে ।

क्लेशानसहान् विविधान् सहस्रिर्वथोदितं तद्विदितं सदैवैः । एतैः परप्रेष्यनिमो-  
 गयुक्तेस्तूर्णो महस्त्रिः स्वबलेन राजन् ॥ १२ ॥ एवञ्जते धर्मसूतस्य राज्ञो दुर्य्यो-  
 धनस्यापि च यद्वितं स्यात् । तच्छिन्तयध्वं कुरुपाण्डवानां धर्म्यां युक्तं यशस्क-  
 रं ॥ १३ ॥ अधर्मयुक्तं न च कामयेत् राज्यं सुराणामपि धर्मराजः । धर्मार्थयु-  
 क्तं महीपतिष्वं ग्रामेऽपि कस्मिंश्चिदयं वृद्धुषेत् ॥ १४ ॥ पित्रां हि राज्यं  
 विदितं नृपाणां यथापकृष्टं धृतराष्ट्रपुत्रैः । मिथ्यापचारेण यथा हनेन कृच्छुं  
 महत् प्राप्नुमसहकपम् ॥ १५ ॥ न चापि पार्थो विजितो रणे तैः स्वतेजसा धृ-  
 तराष्ट्रस्य पुत्रैः । तथापि राजा सहितः सुहृद्भिरभीप्सतेऽहनामथमेव तेषाम् ॥ १६ ॥  
 वदु स्वयं पाण्डुसूतेर्विजित्य समान्तं भूमिपतीन्निपीड्य । तं प्रार्थयन्ते पुरुष-  
 प्रवीराः कुन्तीसूता माद्रवतीसूतो च ॥ १७ ॥ बालास्तुमे तैर्विबिधैरुपायैः  
 सम्प्रार्थिता ह्यममित्रसञ्ज्ञैः । राज्यं जिहीर्षद्विरसद्विरुद्गैः सर्वं तद्वो विदितं  
 यथावत् ॥ १८ ॥ तेषां लोभं प्रसनीक्य वृद्धं धर्मात्प्रताप्यापि युधिष्ठिरस्य । मय-  
 क्लिताऽपि समीक्य तेषां मतिं कुरुध्वं सहिताः पृथक् च ॥ १९ ॥ इमे च मतो  
 निरताः सदैव तं पालयिन्वा समयं यथावत् । अतोऽन्यथा तैरुपचर्याणां हन्याः  
 समेतान् धृतराष्ट्रपुत्रान् ॥ २० ॥ तैर्विप्रकारं निशम्य राज्ञः सुहृद्भिरास्तान्  
 परिवारयेत् । युद्धेन बाधेयुरिमांस्तथैव तैर्विध्यमाना युधि तांश्च हन्याः ॥ २१ ॥  
 अथापि नेमेऽन्नतया समर्थास्तुषां जयायेति भवेन्नतं वः । समेत्य सर्वे सहि-  
 ताः सुहृद्भिस्तुषां विनाशाय यतेयुरेव ॥ २२ ॥ दुर्य्योधनस्यापि मतं यथावत्  
 ज्ञायते विद्म करिष्यामीति । अज्ज्ञायमाने च मते परस्य किं स्यात् समारभ्यतमं  
 मतं वः ॥ २३ ॥ तस्मादितो गच्छतु धर्मशीलः शुचिः कुलीनः पुरुषोऽप्रमत्तः । दूतः  
 समर्थः प्रशमाय तेषां राज्यार्द्धदानाय युधिष्ठिरस्य ॥ २४ ॥ निशम्य वाक्यं जनार्द-  
 नस्य धर्मार्थयुक्तं मधुरं समं । समाददे वाक्यमथाग्रजोऽस्य संपूज्य वाक्यं  
 तदतीव राजन् ॥ २५ ॥

इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यामुद्धोगपर्वणि

सैन्योद्धोगपर्वणि श्रीकुरुवाक्ये प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥



बलदेव उवाच । श्रुतं भवद्विर्गदपूरुषस्य वाक्यं यथा धर्मवदर्थवत् । अज्ञात-  
 शत्रोश्च हितं हितं दुर्य्योधनस्यापि तथैव राज्ञः ॥ १ ॥ अर्द्धं हि राज्यस्य  
 विसृज्य वीराः कुन्तीसूतास्तस्य क्रुते यतन्ते । प्रदाय चार्द्धं धृतराष्ट्रपुत्रः सुधी

सहस्रातिरतीव मोदे ॥ २ ॥ लक्षा हिराज्यां पुरुषप्रवीराः सम्यक् प्रवृत्तेषु  
 परेषु चैव । ध्रुवं प्रशान्ताः सुखमाविशेषुस्तेषां प्रशान्तिश्च हितं प्रजानाम् ॥ ३ ॥  
 दुर्योधनस्यापि मतश्च वेदुं वक्तुं वाक्यानि युधिष्ठिरस्य । प्रियं मम स्याद्वदि तत्र  
 कश्चिद्ब्रजेच्छुमार्थं कुरुपाण्डवानाम् ॥ ४ ॥ स तीष्णममद्य कुरुप्रवीरं वैचित्रवी-  
 र्याश्च महान्नुभावम् । द्रोणं सपुत्रं विदुरं रूपं गान्धारराजं समृतपु-  
 त्रम् ॥ ५ ॥ सर्वे च येन्ये धृतराष्ट्रपुत्रा बलप्रधाना निगमप्रधानाः । स्थिताश्च  
 धर्मेषु यथा स्वकेषु लोकप्रवीराः श्रुतकालवृत्ताः ॥ ६ ॥ एतेषु सर्वेषु समागतेषु  
 पौरेषु वृद्धेषु च सङ्गतेषु । ब्रवीतु वाक्यं प्रणिपातयुक्तं कुन्तीसूतस्यार्थकरं  
 यथा स्यात् ॥ ७ ॥ सर्वासंबन्धुः च ते न कोप्या ग्रन्थो हि सोऽर्थो बलमाशि-  
 तैस्तैः । प्रियाभ्युपते च युधिष्ठिरस्य द्युते प्रमत्तस्य हतं स्वराज्यम् ॥ ८ ॥ निवा-  
 र्यामानश्च कुरुप्रवीरः सर्वैः सुहृदिर्हयमप्यतज्जङ्घः । गान्धारराजस्य सूतं मताक्षं  
 समान्शयदेवितुमाजमीतः ॥ ९ ॥ दुरोदरास्तत्र सहसुशोहन्ये युधिष्ठिरोऽयान् विष-  
 हेत जेतुम् । उत्सृज्य तान् सौबलमेव चायं समान्शयन् तेन जितोऽहं क्व-  
 र्याम् ॥ १० ॥ स दीव्यामानः प्रतिदीव्यादेनमक्षेषु नित्यं पराङ्मुखेषु । संरम्भ-  
 माणे विजितः प्रसह्य तत्रापराधः शकुनेन कश्चित् ॥ ११ ॥ तस्मात् प्रणम्यैव वचो-  
 ब्रवीतु वैचित्रवीर्यां वह सामयुक्तम् । तथा हि शक्ये धृतराष्ट्रपुत्रः स्वार्थे निषो-  
 क्तुं पुरुषेण तेन ॥ १२ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवं क्ववत्येव मधुप्रवीरे शनि-  
 प्रवीरः सहसोऽपपात । तच्छापि वाक्यं परिनिन्द्य तस्य समाददे वाक्यमिदं  
 समन्वयः ॥ १३ ॥

इत्याद्देशागपरिणि मैन्योद्देशागपरिणि बलदेववाक्ये

द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥



साताकिरुवाच । यादृशः पुरुषस्यात्मा तादृशं सम्पुत्रायते । यथाकपोहस्तुरात्मा  
 ते तथाकपं प्रभाषसे ॥ १ ॥ सन्ति वै पुरुषाः शूराः सन्ति कापुरुषास्तथा । उता-  
 वेतो दृष्टो पक्षो दृश्यते पुरुषान् प्रति ॥ २ ॥ एकस्मिन्नेव जायेते कुले  
 क्लीबमहाबलो । फलाफलवती शाखे यथैकस्मिन् वनस्पतौ ॥ ३ ॥ नातासूयानि  
 ते वाक्यं क्ववतो लाङ्गलध्वजः । ये तु शृण्वन्ति ते वाक्यं तानसूयानि माधव ॥ ४ ॥  
 कथं हि धर्मराजस्य दोषमल्लमपि क्ववन् । लभते परिषन्मध्ये व्याहर्तुमकुतो-  
 तयः ॥ ५ ॥ समान्शय महान्मानं जितवन्तोऽहं क्वकोविदाः । अनङ्गजं यथाश्रद्धं



তেষু ধর্মজঘঃ কৃতঃ ॥ ৬ ॥ যদি কুস্তীমুতং গেহে ক্রীডন্তং ভ্রাতৃভিঃ সহ । অতি-  
 গম্য জয়েযুস্তে তত্তেবাং ধর্মতো ভবেৎ ॥ ৭ ॥ সমাহূয তু কৌন্তেযং ক্ষত্রধর্মরতং  
 সদা । নিরুত্যা জিতবস্তুস্তে কিম্ তেবাং পরং শুভম্ ॥ ৮ ॥ কথং প্রণিপতেচ্চায-  
 মিহ কুত্বা পণং পরম্ । বনবাসাদ্বিমুক্তস্ত প্রাপ্তঃ পৈতামহং পদম্ ॥ ৯ ॥ যদ্যযং  
 পরবিত্তানি কামযেত যুধিষ্ঠিরঃ । একমপ্যযমত্যস্তং পরং নার্বতি যাচিতুন্ ॥ ১০ ॥  
 কথঞ্চ ধর্মযুক্তাস্তে ন চ রাজ্যং জিহীর্ষবঃ । নিবৃত্তবাসান্ কৌন্তেযান্ য আহর্ষিত্বিতা  
 ইতি ॥ ১১ ॥ অন্বনীতা হি ভীষ্মেণ দ্রোণেন চ মহাত্মনা । ন ব্যবস্যাস্তি পাণ্ডুনাং  
 প্রদাতুং পৈতৃকং পদম্ ॥ ১২ ॥ অহস্ত তান্ শিতৈর্বাণৈরন্বনীষ রণে বলাৎ । পা-  
 দযোঃ পাতযিষ্যামি কৌন্তেযস্য মহাত্মনঃ ॥ ১৩ ॥ অথ তে ন ব্যবস্যাস্তি প্রণিপা-  
 তায ধীমতঃ । গমিষ্যস্তি সহামাত্যা যমস্য সদনং প্রতি ॥ ১৪ ॥ ন হি তে যুযুধা-  
 নস্য সংরক্ষস্য যুযুৎসতঃ । বেগং সমর্থাঃ সংসোচুং বজ্রস্যেব মহীধরাঃ ॥ ১৫ ॥  
 কো হি গাণ্ডীবধন্বানং কশ্চ চক্রায়ুধং যুধি । মাঞ্চাপি বিষহেৎ কো নু কশ্চ ভীমং  
 দুরাসদম্ ॥ ১৬ ॥ যমো চ দৃঢ়ধন্বানৌ যমকালোপমদ্যতৌ । কো জিজীবিষুরাসীদে-  
 দ্ধৃষ্টদ্যুম্নঞ্চ পার্ষতম্ ॥ ১৭ ॥ পঞ্চমান্ পাণ্ডবেযাংশ্চ দ্রৌপদ্যাঃ কীর্তিবর্দ্ধনান্ ।  
 সমপ্রমাণান্ পাণ্ডুনাং সমবীর্য্যান্ মদোৎকটান্ ॥ ১৮ ॥ সৌভদ্রঞ্চ মহেশ্বাসম-  
 রৈরপি দুঃসহম্ । গদপ্রদ্যুম্নশাশ্বাংশ্চ কালবজ্রানলোপমান্ ॥ ১৯ ॥ তে বযং ধৃত-  
 রাষ্ট্রস্য পুলং শকুনিনা সহ । কর্ণেন চ নিহত্যাজাবতিষেক্যাম পাণ্ডবম্ ॥ ২০ ॥  
 নাধর্মো বিদ্যতে কশ্চিচ্ছত্রম্ ইত্বাততামিনঃ । অধর্ম্যামযশস্যঞ্চ শাত্রবানাং প্রযা-  
 চনম্ ॥ ২১ ॥ হৃদ্যাতস্তস্য যঃ কামস্তং কুরুধমতন্ত্রিতাঃ । বিসৃষ্টং ধৃতরাষ্ট্রেণ  
 রাজ্যং প্রাপ্নোতু পাণ্ডবঃ ॥ ২২ ॥ অদ্য পাণ্ডুসুতো রাজ্যং লভতাং বা যুধিষ্ঠিরঃ ।  
 নিহতা বা মযা সর্বে শেষ্যস্তে বসুধাতলে ॥ ২৩ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি সৈন্যোদ্যোগপর্বণি সাত্যকিবাক্যে

তৃতীযোঃ অধ্যায়ঃ ॥ ৩ ॥



ক্রপদ উবাচ । এবমেতন্মহাবাহো ভবিষ্যতি ন সংশয়ঃ । ন হি দুর্ষ্যোধনো  
 রাজ্যং মধুরেণ প্রদাস্যতি ॥ ১ ॥ অন্ববৎস্যতি তঞ্চাপি ধৃতরাষ্ট্রঃ সুতপ্রিয়ঃ ।  
 ভীষ্মদ্রোণৌ চ কার্পণ্যানৌর্থাড্রাধেষসৌবলৌ ॥ ২ ॥ বলদেবস্য বাক্যস্ত মম জ্ঞানে  
 ন যুজ্যতে । এতদ্ধি পুরুষেণাগ্রে কার্যং সুনষমিচ্ছতা ॥ ৩ ॥ ন তু বাচ্যো মৃদুবচো  
 ধার্তরাষ্ট্রঃ কথঞ্চনঃ । ন হি মার্দবসাধ্যোহসৌ পাপবুদ্ধির্মতো মম । গর্দভে

নার্দবং কুর্যাদ্যোষু তীক্ষ্ণং সমাচরেৎ ॥৪॥ মৃদু দুৰ্য্যোধনে বাক্যং যো বৃহাৎ পাপ-  
 চেতসি । মৃদুং বৈ মন্যতে পাপো ভাষমাণমশক্তিকম্ । জিতমর্থং বিজানীযাদ-  
 বুধো নার্দবে সতি ॥ ৫ ॥ এতচ্চৈব করিষ্যামো যত্ত্বশ্চ ক্রিয়তামিহ । প্রস্থাপয়ান  
 মিত্রেভ্যেণ বলান্য্যদ্বোজঘন্ত নঃ ॥ ৬ ॥ শল্যস্য ধৃষ্টকেতোশ্চ জঘৎসেনস্য বা  
 বিভো । কৈকেয়ানাঞ্চ সর্বেষাং দূতা গচ্ছন্ত শীঘ্রগাঃ ॥ ৭ ॥ স তু দুৰ্য্যোধনো নুনং  
 প্রেষযিষ্যতি সর্বশঃ । পূর্বাভিপন্নঃ সন্তুশ্চ ভজন্তে পূর্বচোদকম্ ॥ ৮ ॥ তত্ত্বরধং  
 নরেন্দ্রাণাং পূর্বমেব প্রচোদনে । মহদ্ধি কার্য্যং বোচব্যমিতি মে বর্ততে মতিঃ ॥ ৯ ॥  
 শল্যস্য প্রেষ্যতাং শীঘ্রং যে চ তস্যানুগা নৃপাঃ । ভগদত্তায় রাজ্ঞে চ পূর্বসাগর-  
 বাসিনে ॥ ১০ ॥ অমিতৌজসে তথোগ্রায় হার্দিক্যাযাঙ্কায় চ । দীর্ঘপ্রজ্ঞায়  
 মল্লায় রোচমানায় বা বিভো ॥ ১১ ॥ আনীযতাং বৃহত্ত্বশ্চ সেনাবিন্দুশ্চ পার্থিবঃ ।  
 পাপজিৎ প্রতিবিন্দ্যশ্চ চিত্রবর্মা সুবাস্তকঃ ॥ ১২ ॥ বাহ্লিকো মুঞ্জকেশশ্চ চৈদ্যা-  
 ধিপতিরেব চ । সুপার্শ্বশ্চ সুবাহুশ্চ পৌরবশ্চ মহারথঃ ॥ ১৩ ॥ শকানাং পল্লবা-  
 নাঞ্চ দরদানাঞ্চ যে নৃপাঃ । কাছোজা ঋষিকা যে চ পশ্চিমামুপকশ্চ যে ॥ ১৪ ॥  
 জঘৎসেনশ্চ কাশ্যশ্চ তথা পঞ্চনদা নৃপাঃ । ক্রাথপুলশ্চ দর্শকঃ পার্বতীয়াশ্চ যে  
 নৃপাঃ ॥ ১৫ ॥ জানকিশ্চ সুশম্মা চ মণিমান্ পৌর্তিমৎসাকঃ । পাং শুরাষ্টিধিপশ্চৈব  
 ধৃষ্টকেতুশ্চ বীর্য্যবান্ ॥ ১৬ ॥ ওড়ুশ্চ দণ্ডধারশ্চ বৃহৎসেনশ্চ বীর্য্যবান্ । অপ-  
 রাজিতো নিষাদশ্চ শ্রেণিমান্ বসুমানপি ॥ ১৭ ॥ বৃহদলো মহৌজাশ্চ বাহুঃ  
 পরপূরঞ্জযঃ । সমুদ্রসেনো রাজা চ সহ পুল্লেণ বীর্য্যবান্ ॥ ১৮ ॥ সুরারিশ্চ নদী-  
 জশ্চ কৰ্ণবেষ্টশ্চ পার্থিবঃ । সমর্থশ্চ সুবীরশ্চ মার্জারঃ কন্যকস্তথা ॥ ১৯ ॥ মহাবীরঃ  
 সুচক্রশ্চ নিশ্চক্রস্তমূলঃ ক্রথঃ । নীলশ্চ বীরধন্বা চ ভূমিপালশ্চ বীর্য্যবান্ ॥ ২০ ॥  
 দৃঙ্কর্যো দস্তবক্রশ্চ রুক্মী চ জননেজযঃ । আষাটো বায়ুবেগশ্চ পূর্বপালী চ পা-  
 র্থিবঃ ॥ ২১ ॥ ভুরিতেজা দেবকশ্চ একলব্যঃ সহাস্রজৈঃ । কাঞ্চকশ্চ রাজানঃ  
 ক্ষেমধূর্তিশ্চ বীর্য্যবান্ ॥ ২২ ॥ উদ্ভবঃ ক্ষেমকশ্চৈব বাটধানশ্চ পার্থিবঃ । শ্রুতা-  
 যুশ্চ দৃঢ়ায়ুশ্চ শাল্পপুলশ্চ বীর্য্যবান্ ॥ ২৩ ॥ কুমারশ্চ কলিঙ্গানাগ্নীশ্বরো যুদ্ধদু-  
 শ্মদঃ । এতেষাং প্রেষ্যতাং শীঘ্রমেতদ্ধি মম রোচতে ॥ ২৪ ॥ অক্ষয়ঃ ব্রাহ্মণঃ শীঘ্রং  
 মম রাজন্ পুরোহিতঃ । প্রেষ্যতাং ধৃতরাষ্ট্রায় বাক্যমস্মৈ সমর্পাতাম্ ॥ ২৫ ॥ যথা  
 দুৰ্য্যোধনো বাচ্যে যথা শান্তনবো নৃপঃ । ধৃতরাষ্ট্রে যথা বাচ্যে দ্রোণশ্চ রথিনাং  
 বরঃ ॥ ২৬ ॥

ইত্যুদ্দেশ্যে পর্বণি সৈন্যোদ্দেশ্যে পর্বণি উপদবাক্যে চতুর্থোহধ্যায়ঃ ॥৪॥

वासुदेव उवाच । उपपन्नमिदं वाक्यं सोमकानां धरन्करे । अर्थसिद्धिकरं  
 राज्ञः पाण्डवस्यामितौजसः ॥ १ ॥ एतच्च पूर्वं कार्यं नः सुनीतमभिकाङ्क्षताम् ।  
 अन्यथा हाचरन् कर्म पुरुषः स्यात् सुबालिषः ॥ २ ॥ किञ्च सशक्तं तुल्यमस्माकं  
 कुरुपाण्डुषु । यथेष्टं वर्तमानेषु पाण्डवेषु च तेषु च ॥ ३ ॥ ते विवर्हिर्हार्थमा-  
 नीता वयं सर्वे तथा भवान् । कृते विधाहे मुदिता गमिष्यामो गृहान् प्रति ॥ ४ ॥  
 भवान् वृद्धतमो राज्ञां वयसा च श्रुतेर्न च । शिष्यवन्ते वयं सर्वे भवामेह न  
 संशयः ॥ ५ ॥ भवस्तु धृतराष्ट्रश्च सततं बहू मन्यते । आचार्ययोः सखा चासि  
 द्रोणस्य च रूपस्य च ॥ ६ ॥ स भवान् प्रेषयद्वा पण्डुवार्थकरं वचः । सर्वेषां नि-  
 श्चितं तन्नः प्रेषयिष्यति यद्धवान् ॥ ७ ॥ यदि भावच्छमं कुर्यान्मया येन कुरुपुङ्गवः ।  
 न भवेत् कुरुपाण्डूनां सौत्रात्रेण महान् क्षयः ॥ ८ ॥ अथ दर्पान्वितो मोहात्  
 न कुर्यात्कृतराष्ट्रजः । अन्येषां प्रेषयिष्या च पश्चादस्मिन् समास्रवेः ॥ ९ ॥ ततो  
 दुर्योधनो मन्दः सहानात्यः सवाङ्मवः । निर्णामापत्स्यते मूढः क्रुद्धे गाण्डीव-  
 ध्वनि ॥ १० ॥ वैशम्पायन उवाच । ततः संकृत्य वार्ष्णेयं विराटः पृथिवीपतिः ।  
 गृहान् प्रस्थापयामास सर्गणं सहवान्मवन् ॥ ११ ॥ द्वारकास्तु गते क्रुद्धे युधिष्ठिरपुरो-  
 गमाः । चक्रुः सां ग्रामिकं सर्वं विराटश्च महीपतिः ॥ १२ ॥ ततः सं प्रेषयामास  
 विराटः सह वान्मवैः । सर्वेषां भूमिपालानां द्रुपदश्च महीपतिः ॥ १३ ॥ वच-  
 नात् कुरुसिंहानां मत्स्यपाक्षालयोश्च ते । समाजगुम्भमहीपालाः सं प्रहृष्टा  
 महाबलाः ॥ १४ ॥ तच्छ्रुत्वा पाण्डुपुत्राणां समागच्छन्महद्वलम् । धृतराष्ट्रसुतश्चापि  
 नमामिन्ये महीपतीन् ॥ १५ ॥ समाकुला मही राजन् कुरुपाण्डवकारणात् । तदा  
 समभवत् क्रुद्धन्ना सं प्रयागे महीकितान् ॥ १६ ॥ सकुला च तदा भूमिश्चतुरङ्गबला-  
 न्विता । बलानि तेषां वीराणामागच्छन्ति ततस्ततः । चालयन्तीव गां देवीं सपर्वत-  
 वनामिमाम् ॥ १७ ॥ ततः प्रज्जावयोवृद्धं पाक्षाल्यः स्वपुरोहितम् । कुरुभ्यः प्रेष-  
 यामास युधिष्ठिरमते स्थितः ॥ १८ ॥

.. इत्युद्देशोऽपि सैन्योद्देशोऽपि पुरोहितयाने

पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥



द्रुपद उवाच । भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः प्राणिनां वृद्धिजीविनः । वृद्धिमत्सु  
 नराः श्रेष्ठा नरेष्वपि द्विजातयः ॥ १ ॥ द्विजेषु वैदव्याः श्रेष्ठांसो वैदेयेषु कृत-  
 बुद्धयः । कृतबुद्धिषु कर्तारः कर्तृषु ब्रह्मवेदिनः ॥ २ ॥ स भवान् कृतबुद्धीनां प्रधान

इति मे मतिः । कुलेन च विशिष्टोऽसि वयसा च श्रुतेन च । प्रह्वया सदृशश्चापि  
 शुक्रेणाद्भिरसेन च ॥ ७ ॥ विदितश्चापि ते सर्वं यथावृत्तः स कौश्लवः । पाण्डवश्च  
 यथावृत्तः कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ ८ ॥ धृतराष्ट्रस्य विदिते वक्षिताः पाण्डवाः परैः ।  
 विदुरेणाशुनीतोऽपि पुत्रमेवाशुवर्तते ॥ ९ ॥ शकुनिर्वृद्धिपूर्वं हि कुन्तीपुत्रं  
 समाह्वयन् । अनङ्गद्वयं मताङ्गः सन् फलवृत्ते स्थितं शुचिम् ॥ ७ ॥ ते तथा वक्ष-  
 यिन्वा तु धर्मराजं युधिष्ठिरम् । न कस्याङ्गिदंबंश्यायां राज्यं दास्यति वै स्वयम् ॥ ११ ॥  
 तवाङ्गु धर्मसंयुक्तं धृतराष्ट्रं क्रवन् वचः । मनांसि तस्य योधानां ध्रुवनावर्त-  
 षिष्यति ॥ ८ ॥ विदुरश्चापि तद्वाक्यं साधयिष्यति तावकम् । भौमद्रोणरूपदीनां  
 तेदं संजनयिष्यति ॥ ९ ॥ अनातेषु च भिन्नेषु योधेषु विमुखेषु च । पुनरे-  
 काङ्गकरणं कर्म तेषां भविष्यति ॥ १० ॥ एतस्मिन्सुरे पार्थाः सुखमेकाग्रबुद्धयः ।  
 सेनाकर्म करिष्यन्ति द्रव्याणां तेषु सङ्घयम् ॥ ११ ॥ भिद्यमानेषु च श्वेषु लघ्नाने  
 तथा ह्यसि । न तथा ते करिष्यन्ति सेनाकर्म न संशयः ॥ १२ ॥ एतं प्रयोजन-  
 ष्वात्र प्राधान्येनोपलभ्यते । संगत्या धृतराष्ट्रश्च कुर्यादकर्म्यं वचस्तव ॥ १३ ॥  
 स भवान् धर्मयुक्तश्च धर्मं तेषु समाचरन् । रूपालेषु परिक्रेशान् पाण्डवीयान् प्रकी-  
 र्तयन् ॥ १४ ॥ वृद्धेषु कुलधर्मेषु क्रवन् पूर्वैरनुष्ठितम् । विभेत्स्यति मनां स्येषा-  
 र्गिति मे नात्र संशयः ॥ १५ ॥ नच तेभ्यो भयं तेहस्ति ब्राह्मणोऽसि वेदविः ।  
 दतकर्मणि युक्तश्च श्चविरश्च विशेषतः ॥ १६ ॥ स भवान् पुष्यायोगेन मुहूर्तेन  
 जयेन च । कौरवेवान् प्रयात्राशु कौश्लेवस्यार्थसिद्धये ॥ १७ ॥ वैशम्पायन  
 उवाच । तथानुशिक्षः प्रययौ द्रुपदेन महात्मना । पुरोधो वृत्तसम्पन्नेः नगरं  
 नागसाह्वयम् ॥ १८ ॥

इत्युद्योगपर्वणि सैन्योद्योगपर्वणि पुरोहितयाने

षष्ठोऽध्यायः ॥ ७ ॥



वैशम्पायन उवाच । पुरोहितेऽपि प्रस्थाप्य नगरं नागसाह्वयम् । दूतान् प्रस्था-  
 पयामासुः पार्थिवेभ्यस्तुतस्तुतः ॥ १ ॥ प्रस्थाप्य दूतानन्यत्र द्वारकां पुरुषर्षभः ।  
 स्वयं जंगाम कौरव्याः कुन्तीपुत्रो धनञ्जयः ॥ २ ॥ गते द्वारवतीं कृकेः बलदेवे  
 च माधवे । सह वृष्यकृकेः सवैर्भोजैश्च शतशस्तदा ॥ ३ ॥ सर्वमागमयामास पा-  
 ण्डवानां विचेष्टितम् । धृतराष्ट्रात्मजेऽ राजा गूढैः प्रणिहितैश्चरैः ॥ ४ ॥ स  
 श्रुत्वा माधवं यातं सदर्थैरनिलोपतैः । बलेन नातिमहता द्वारकामत्ययां

पुरीम् ॥ ५ ॥ तमेव दिवसं ऋषिः पाण्डुनन्दनः । आनर्तनगरीं रम्यां  
 जगामाशु धनञ्जयः ॥ ७ ॥ तौ यात्रा पुरुषव्याघ्रौ द्वारकां कुरुनन्दनौ । सुपुत्रं  
 ददर्शतुः क्रुशं शयानं ऋषिः ॥ ९ ॥ ततः शयाने गोविन्दे प्रविशेश सुयो-  
 धनः । उच्छीर्षतश्च क्रुशस्य निषसाद वरासने ॥ ८ ॥ ततः किरीटी तं स्यात्प्रविशेश  
 महामनाः । पश्चार्द्धे च स क्रुशस्य प्रह्लादं प्रतिष्ठं क्रुताञ्जलिः ॥ २ ॥ प्रतिबुद्धः स  
 वार्ष्णेयः ददर्शाग्रे किरीटिनम् । स तं योः स्वागतं क्रुशं यथावत् प्रतिपूज्य तौ ।  
 तदागमनजं हेतुं पश्चच्छ मधुसूदनः ॥ १० ॥ ततो दुर्योधनः क्रुशमुवाच प्रहस-  
 म्बिव । विग्रहेहस्मिन् भवान् साहं मम दातुमिहार्हति ॥ ११ ॥ समं हि भवतः  
 संध्यं मयि चैवाज्जुनेहपि च । तथा सर्वकं तुल्यमस्माकं द्वयि माधव ॥ १२ ॥  
 अहं ऋषिगतः पूर्वं द्वायद्य मधुसूदन । पूर्वं ऋषिगतं सन्तो भजन्ते पूर्वसंरि-  
 षः ॥ १३ ॥ द्वयं श्रेष्ठतमो लोके सतामद्य जनार्दन । सततं सम्यतश्चैव सदृश-  
 म्भूपालय ॥ १४ ॥ क्रुश उवाच । भवानभिगतः पूर्वमत्र मे नास्ति संशयः । दृष्टुं  
 प्रथमो राजस्य पाथो धनञ्जयः ॥ १५ ॥ तव पूर्वाभिगमनां पूर्वं ऋषिस्य दर्श-  
 नात् । साहाय्यमुभयोरेव करिष्यामि सुयोधन ॥ १६ ॥ प्रवारणं बालानां पूर्वं  
 कार्यमिति श्रुतिः । तस्मात् प्रवारणं पूर्वमर्हः पाथो धनञ्जयः ॥ १७ ॥ मत्सं-  
 नतुल्यानां गोपानामर्षुदं महत् । नारायणा इति ख्याताः सर्वे संग्रामयो-  
 धिनः ॥ १८ ॥ ते वा युधि दुराधर्षा भवन्त्येकस्य सैनिकाः । अयुध्यामानः संग्रामे  
 न्यस्तुशस्त्रोहमेकतः ॥ १९ ॥ आभ्यामन्यतरं पार्थ यन्ते हृदयतरं महत् । तद्-  
 वीतां भवानग्रे प्रवार्यस्तुं हि धर्मतः ॥ २० ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तुं  
 क्रुशेन कुन्तीपुत्रो धनञ्जयः । अयुध्यामानं संग्रामे वरषामास केशवम् ॥ २१ ॥  
 नारायणमित्रं कामाज्जातमजं नृषु । सर्वकृतस्य पुरतो देवदानवयोर्-  
 पि ॥ २२ ॥ दुर्योधनस्तु तं सैन्यं सर्वमावयत्तदा । सहसाणां सहस्रं योधानां  
 प्राप्य भारत । क्रुशं ऋषिपुत्रं मया स प्राप परमां मुदम् ॥ २३ ॥ दुर्योधनस्तु  
 तं सैन्यं सर्वमादाय पार्थिवः । ततोऽभ्यासीन् बलैः रौहिणेयं महाबलम् ॥ २४ ॥  
 सर्वं ऋषिगमने हेतुं स तस्मै संन्यावेदयत् । प्रत्युवाच ततः शौरिर्धार्तराष्ट्रमिदं  
 वचः ॥ २५ ॥ बलदेव उवाच ॥ विदितं ते नरव्याघ्रः सर्वं भवितुमर्हति । यन्म-  
 योक्तुं विराटस्य पुरा वैवाहिके तदा ॥ २६ ॥ निगृह्योक्तो ह्यधीकेशस्तुदर्थं कुरु-  
 नन्दन । मया सर्वकं तुल्यमिति राजन् पुनः पुनः ॥ २७ ॥ न च तद्वाक्यमुक्तं वै  
 केशवः प्रत्यपद्यत । न चाहमुत्सहे क्रुशं विना स्थातुमपि क्षणम् ॥ २८ ॥ नाहं

सहायः पार्थानां नापि दुर्योधनस्य वै । इति मे निश्चिता बुद्धिर्वासुदेवमवेक्ष्य  
 ह ॥ २२ ॥ जातोऽसि भारते वंशे सर्वपार्थिवपुंजिते । गच्छ युध्यस्व धर्मेण कालेण  
 भरतर्षभ ॥ ३० ॥ वैशम्पायन उवाच । इत्येवमुक्त्वस्तदा परिषज्य हलायुधम् । क्रुषं  
 चापहतं मत्वा जितं मेने धनञ्जयम् ॥ ३१ ॥ सोऽभ्ययां कृतवर्मानं धृतराष्ट्र-  
 सूतो नृपः । कृतवर्मा ददौ तस्य सेनां कौहिनीं तदा ॥ ३२ ॥ स तेन सर्व-  
 सैन्येन भीमेन कुरूनन्दनः । वृतः परिययो हर्षः सुहृदः संप्रहर्षयन् ॥ ३३ ॥  
 ततः पीताम्बरधरो जगत्सुक्ता जनार्दनः । गते दुर्योधने क्रुषः किरीटिनमथात्र-  
 वीं । अयुध्यमानः कां बुद्धिमांसायां वृतस्तथा ॥ ३४ ॥ अर्जुन उवाच । तव्यन्  
 समर्थस्तान् सर्वान् निहन्तं नात्र संशयः । निहन्तमहमप्येकः समर्थः पुरुषवत् ॥ ३५ ॥  
 तवांस्तु कौर्त्तिमान् लोके तद्वशस्त्वां गमिष्यति । यशसा चाहमप्यर्थां तस्मादसि  
 मया वृतः ॥ ३६ ॥ सारथ्यं त्वया कार्यामिति मे मनसं सदा । चिररात्रेऽपि तं  
 कामं तद्ववान् कर्तुमर्हति ॥ ३७ ॥ वासुदेव उवाच । उपपन्नमिदं पार्थ यं स्प-  
 र्क्षेथा मया सह । सारथ्ये कुरिष्यामि कामः सम्पद्यतां तव ॥ ३८ ॥ वैशम्पायन  
 उवाच । एवं प्रमुदितः पार्थः क्रुषेन सहितस्तदा । वृतो दाशार्हप्रवरैः पुनरा-  
 याद्वुधिष्ठिरम् ॥ ३९ ॥

इत्युद्योगपर्वणि सैन्योद्योगपर्वणि क्रुषसारथ्यस्वीकारे

सप्तमोऽध्यायः ॥ १ ॥

—३—

वैशम्पायन उवाच । शल्यः शूरा तु दूतानां सैन्येन महता वृतः । अभ्यां  
 पाण्डवान् राजन् सह पुत्रैश्चहारथैः ॥ १ ॥ तस्य सेनानिवेशोऽभुदधार्कमिव  
 योजनम् । तथा हि विपुलां सेनां स विभर्ति नरवृत्तः । अक्रौहिणीपती राजम-  
 हावीर्यपराक्रमः ॥ २ ॥ विचित्रकवचाः शूरा विचित्रध्वजकाम्बुकाः । विचित्राभरणाः  
 सर्वे विचित्ररथवाहनाः ॥ ३ ॥ विचित्रसुक्तराः सर्वे विचित्रायरभुषणाः । स्वदेश-  
 वेशाभरणा वीराः शतसहस्रशः । तस्य सेनाप्रणेतारो वडूषुः कल्पिर्षभताः ॥ ४ ॥  
 व्यथयन्निव दूतानि कम्पयन्निव मेदिनीम् । शनैर्विश्रामयन् सेनां स ययौ येन  
 पाण्डवाः ॥ ५ ॥ ततो दुर्योधनः शूरा महामेनं महारथम् । समायातुमभिद्रुत्य  
 स्वमानर्त्त भारत ॥ ६ ॥ कारयामास पूजार्थं तस्य दुर्योधनः सताः । रमणीयेषु  
 देशेषु रत्नचित्राः शलकृताः ॥ ७ ॥ शिल्पिभिर्विधैश्चैव क्रीडास्तत्र प्रयोजिताः ।  
 तत्र माल्यानि मांसानि भक्ष्यं पेयं च संकृतम् ॥ ८ ॥ कृपांश्च विविधाकाराः

मनोहर्षविवर्द्धनाः । वाप्यश्च विविधाकारा उदकानि गृहाणि च ॥ २ ॥ स ताः सताः  
 समसाद्य पूज्यमानो यथामरः । दुर्योधनस्य सचिवैर्देशे देशे यथाहृतः । आज-  
 गाम सभामन्यां देवावसथवर्द्धसम् ॥ १० ॥ स तत्र विविधैर्युक्तः कल्याणैरतिमा-  
 न्नुषैः । मेनेह्यधिकमाङ्गानमवनेनेः पुरन्दरम् ॥ ११ ॥ पंप्रच्छ स ततः प्रेष्यान्  
 प्रहर्षः क्लिष्यर्षभः । युधिष्ठिरस्य पुरुषां के नू चक्रुः सभा इमाः ॥ १२ ॥ आनीयन्तां  
 सभाकाराः प्रसादाहं हि मे मताः । प्रसादमेवां दास्यामि कुन्तीपुत्रोऽहं नूनमन्या-  
 ताम् ॥ १३ ॥ दुर्योधनाय तं सर्वं कथयन्ति स्म विस्मिताः । संप्रहर्षो यदा शल्यो  
 विदिं सुरपि जीवितम् । गूढो दुर्योधनस्तत्र दर्शयामास नातुलम् ॥ १४ ॥ तं दृष्ट्वा  
 मद्रराजस्तु ज्ञात्वा यत्नस्तु तस्य तम् । परिषज्यात्रवीं प्रीति ईकार्थो गृहतामि-  
 ति ॥ १५ ॥ दुर्योधन उवाच । अतवागुव कल्याण वरो वै मम दीयताम् । सर्वसे-  
 नाप्रणेता मे भवान् भवितुमर्हति ॥ १६ ॥ वैशम्पायन उवाच । कृतमित्यात्रवी-  
 छल्यः किमन्यं क्रियतामिति । कृतमित्येव गान्कारिः प्रतुयाच पुनः पुनः ॥ १७ ॥  
 शल्य उवाच । गच्छ दुर्योधन पुरं स्वकमेव नरर्षभ । अहं गमिष्ये द्रष्टुं वै युधि-  
 स्थिरनरिन्दनम् ॥ १८ ॥ दृष्ट्वा युधिष्ठिरं राजन् क्षिप्रमेवेत्ये नराधिप । अवश्यं क्षापि  
 द्रष्टव्यः पाण्डवः पुरुषर्षभः ॥ १९ ॥ दुर्योधन उवाच । क्षिप्रमागम्यतां राजन्  
 पाण्डवं वीक्ष्य पार्थिव । त्वयधीनाः स्म राजेन्द्र वरदानं स्मरस्य नः ॥ २० ॥ शल्य  
 उवाच । क्षिप्रमेव्यामि भद्रन्ते गच्छस्व स्वपुरं नृप ॥ २१ ॥ परिषज्य तथाम्योऽन्यां  
 शल्यदुर्योधनावुभौ । स तथा शल्यमामन्त्र्य पुनरायां स्वकं पुरम् । शल्यो जगाम  
 कौन्तेयानाथ्यातुं कर्म तस्य तं ॥ २२ ॥ उपप्लव्यं स गत्वा तूष्कम्भावारं प्रविश्य  
 च । पाण्डवानथ तान् सर्वान् शल्यस्तत्र ददर्श ह ॥ २३ ॥ समेत्य च महाबाहुः शल्यः  
 पाण्डुसूतेस्तदा । पादयमर्ष्यं गान्धेव प्रत्यगृह्णाद्यथाविधि ॥ २४ ॥ ततः कुशलपूर्वं  
 स मद्रराजोऽरिन्दनः । प्रीत्या परमया युक्तः समाश्लिष्य युधिष्ठिरम् ॥ २५ ॥ तथा  
 भीमाङ्गुनो ईर्ष्योः स्वस्रीयो च यमावुभौ । आसने चोपविष्टस्तु शल्यः पार्थमुवाच  
 ह ॥ २६ ॥ कुशलं राजशार्दूल कञ्चित्ते कुरुनन्दन । अरण्यवासोऽदिक्यासि विमुक्तो  
 जयतां वर ॥ २७ ॥ सुदुष्करं कृतं राजन् निज्जने वसता वने । भ्रातृभिः सह  
 राजेन्द्र कृषया चानया सह ॥ २८ ॥ अज्ज्ञातवासं धोरणं वसता दुष्करं कृतम् ।  
 दुःखमेव कृतः सौख्यं राक्षुर्भुक्तस्य भारत ॥ २९ ॥ दुःखस्यैतस्य महतो धार्तराक्षु-  
 कृतस्य वै । अवाप्स्यसि सुखं राजन् ह्यथा शत्रून् परस्तप ॥ ३० ॥ विदितन्ते महा-  
 राज लोकोत्तमं नराधिप । तस्मान्नोऽभक्तं किञ्चित्त्वं तात न विद्यते ॥ ३१ ॥

রাজেশ্বীনাং পুরাণানাং মার্গমম্বিচ্ছ ভারত । দানে তপসি সত্যে চ ভব' তাত যুধি-  
 ঠির ॥ ৩২ ॥ কমা দমশ্চ সত্যঞ্চ অহিংসা চ যুধিঠির । অদ্ভুতশ্চ পুনর্লোকস্তুধি  
 রাজন্ প্রতিষ্ঠিতঃ ॥ ৩৩ ॥ মূদূর্বদান্যো ব্রহ্মণ্যো দাতা ধর্ম্মপরাধণঃ । ধর্ম্মাস্তে বিদিতা  
 রাজন্ বহবো লোকসাম্বিধিঃ । সর্বং জগদিদং তাত বিদিতং তে পরস্তপ ॥ ৩৪ ॥  
 দিফ্য। কুঙ্কমিদং রাজন্ পারিতং ভরতর্ষভ' । দিফ্য। পশ্যামি রাজেন্দ্র ধর্ম্মাত্মানং  
 সহানুগম' । নিস্তীর্ণং দূক্ষরং রাজন্ দ্বাং ধর্ম্মনিরতং প্রভো ॥ ৩৫ ॥ বৈশম্পায়ন  
 উবাচ । ততোহস্যাকথষদ্রাজন্ দুর্বেয়াধনসমাগমম' । তচ্চ শুশ্রুষিতং সর্বং বরদানঞ্চ  
 ভারত ॥ ৩৬ ॥ যুধিঠির উবাচ' । স্মরুতং তে কৃতং রাজন্ প্রহৃষ্টেনাস্তুরাঅন' ।  
 দুর্বেয়াধনস্য যদীর হ্রষা বাচা প্রতিশ্রুতম' ॥ ৩৭ ॥ একং ত্বিচ্ছামি ভদ্রং তে ক্রিষ-  
 মাণং মহীপতে । রাজন্ কর্তব্যমপি কর্তুমহসি মাতুল ॥ ৩৮ ॥ মম ত্ববেক্ষয়া বীর  
 শূণু বিজ্ঞাপয়ামি তে । ভবানিহ ম'হারাজ বাসুদেবসমো যুধি ॥ ৩৯ ॥ কণাজ্জুনাত্যাং  
 সম্প্রাপ্তে দ্বৈরথে রাজসত্তম' । কর্ণস্য ভবতা কার্য্যং সারথ্যং নাত্র সংশয়ঃ ॥ ৪০ ॥  
 তত্র পাল্যোহজ্জুনো রাজন্ যদি মে প্রিয়মিচ্ছসি । তেজোরধশ্চ তে কার্য্যঃ সৌতে-  
 রশ্বজ্জয়াবহুঃ । অকর্তব্যমপি হেতৎ কর্তুমহসি মাতুল ॥ ৪১ ॥ শল্য উবাচ । শূণু  
 পাণ্ডব ভদ্রং তে যদুবীষি দুরাঅনঃ । তেজোবর্ধানমিত্তং মাং সূতপুত্রস্য সংযু-  
 গে ॥ ৪২ ॥ অহং তস্য ভবিষ্যামি সংগ্রামে সারথিধর্ম্মবম' । বাসুদেবেন হি সঙ্গং  
 নিত্যং মাং স হি মন্যতে ॥ ৪৩ ॥ তস্যাহং কুরুশা'র্দূল প্রতীপমহিতং বচঃ ।  
 ধ্রুবং সন্ধথযিষ্যামি ষোদ্ধুকামস্য সংযুগে ॥ ৪৪ ॥ যথা সংহতদর্পশ্চ হততেজাশ্চ  
 পাণ্ডব । ভবিষ্যতি স্মৃথং হস্তং সত্যমেতদুবীমি তে ॥ ৪৫ ॥ এবমেতৎ করিষ্যামি  
 যথা তাত হ্রমাথ নাম' । যচ্চান্যদপি শঙ্ক্যামি তৎ করিষ্যামি তে প্রিয়ম' ॥ ৪৬ ॥  
 যচ্চ দুঃখং ত্বয়া প্রাপ্তং দ্যুতে বৈ কৃষ্ণয়া সহ । পরুষাণি চ বাক্যানি সূতপুত্রকৃতানি  
 বৈ ॥ ৪৭ ॥ জটাসুরাং পরিক্লেশঃ কীচকাচ্চ মহাদ্যুতে । দ্রৌপদ্যাধিগতং সর্বং  
 দমযন্ত্যা যথাশুভম' ॥ ৪৮ ॥ সর্বং দুঃখমিদং বীর স্মৃখোদকং ভবিষ্যতি । নাত্র  
 মনুস্তুয়া কার্য্যো বিধির্হি বলবত্তরঃ ॥ ৪৯ ॥ দুঃখানি হি ম'হাত্মানঃ প্রাপ্নুবন্তি যুধি-  
 ঠির । দেবৈরপি হি দুঃখানি প্রাপ্তানি জগতীপতে ॥ ৫০ ॥ ইন্দ্রেণ শ্রযতে রাজন্  
 সভার্য্যেণ মহাত্মনা । অনুভূতং মহদুঃখং দেবরাজেন ভারত ॥ ৫১ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি সৈন্যোদ্যোগপর্বণি শল্যরাক্যেহষ্টমোহধ্যায়ঃ ॥ ৮ ॥



যুধিঠির উবাচ' । কথমিন্দ্রেণ রাজেন্দ্র সভার্য্যেণ মহাত্মনা । দুঃখং প্রাপ্তং পরং



घोरमेतदिहामि वेदितुम् ॥ १ ॥ शल्य उवाच । शूभ्रं राजन् पुरावृत्तमितिहासं  
 पुरातनम् । सर्तार्षेयं यथा प्रापुः दुःखमिश्रेण भारत ॥ २ ॥ वृष्णी प्रजापतिर्हा-  
 सीन्देवश्रेष्ठो महातपाः । स पुत्रं वै त्रिशिरसमिश्रद्रोहात् किलासृज ॥ ३ ॥  
 ईश्वरं स प्रार्थयत् स्थानं विश्वरूपो महादुःखितः । तैस्त्रिभिर्बर्दनेर्षोरैः सूर्येन्दुश्च-  
 लनोपमैः ॥ ४ ॥ वेदानेकेन सोऽहरीते सुरामेकेन चापिवत् । एकेन च दिशः  
 सर्वाः पिवन्निव निरीकृते ॥ ५ ॥ स तपस्वी मृदुर्दास्तो धर्मे तपसि चोद्यतः ।  
 तपस्तस्य महतीवत् सुदुश्चरमरिन्दम ॥ ६ ॥ तस्य दृष्ट्वा तपोवीर्यं सत्यधामित-  
 तेजसः । विषादमगमच्छुक्र ईश्वरोऽहं मा भवेदिति ॥ ७ ॥ कथं सज्जेत भोगेषु  
 न च तप्यन्महतपः । विवर्द्धमानस्त्रिशिराः सर्वं हि भुवनं त्रसेत् ॥ ८ ॥ इति  
 सङ्क्षिप्तं बहधा बुद्धिमान् भरतवर्षत । आज्जापयत् सोऽहंस्मरसुखं पुत्रप्रलोभ-  
 ने ॥ ९ ॥ यथा स सज्जेत्त्रिशिराः कामभोगेषु वै भृशम् । क्षिप्रं कुरुत गच्छध्वं  
 प्रलोभयत मा चिरम् ॥ १० ॥ शृङ्गारवेशाः सुश्रेण्यो हारैर्युक्ता मनोहरैः ।  
 ह्रावभावसमायुक्ताः सर्वाः सौन्दर्यशोभिताः ॥ ११ ॥ प्रलोभयत भद्रं वः शम-  
 यध्वं भयं मम । अस्वसुत् ह्यन्नान्नानं लक्षयामि वराङ्गनाः । भयं तन्मे महा-  
 घोरं क्षिप्रं नाशयतावलाः ॥ १२ ॥ अप्सरस उचुः । तथा यत्नं करिष्यामः शक्र  
 तस्य प्रलोभने । यथा नावाप्यसि भयं तस्माद्बलनिःसृदन ॥ १३ ॥ निर्दहन्निव  
 चक्रुर्भ्यां योऽहंसावासे तपोनिधिः । तं प्रलोभयितुं देव गच्छामः सहिता वयम् ।  
 यतिष्यामो वशे कर्तुं व्यपनेतुषु ते भयम् ॥ १४ ॥ शल्य उवाच । ईश्वरेण तान्त्व-  
 ज्जाता जग्मुस्त्रिशिरसोऽस्तिकम् ॥ १५ ॥ तत्र ता विविधैर्भावैर्लोभयन्त्या वराङ्गनाः ।  
 नृत्यं सन्दर्शयामासुस्तथैवाङ्गेषु सौष्ठवम् ॥ १६ ॥ नाभ्यगच्छत् प्रहर्षस्ताः पशान्  
 स सुमहातपाः । इन्द्रियाणि वशे कृत्वा पूर्णसागरसन्मितः ॥ १७ ॥ तान्त्व यत्नं परं  
 कृत्वा पुनः शक्रमुपस्थिताः । कृताङ्गलिपुटाः सर्वा देवराजमथाक्रवन् ॥ १८ ॥ न स  
 शक्यः सुदुर्द्धवो धैर्याच्छालयितुं प्रभो । यत्ने कार्यं महाभाग क्रियतां तदन-  
 स्तरम् ॥ १९ ॥ सम्पूज्याप्सरसः शक्रेण विभूज्य च महामतिः । चिन्तयामास तस्यैव  
 बन्धोपायं महात्मानः ॥ २० ॥ स तूक्तीं चिन्तयन् वीरो देवराजः प्रतापवान् ।  
 विनिश्चितमतिर्धीमान् वधे त्रिशिरसोऽभवत् ॥ २१ ॥ वज्रमस्य क्षिपाम्यद्य स क्षिप्रं  
 न भविष्यति । शत्रुः प्रवृद्धो नोपेक्ष्यो दुर्बलोऽपि बलीयसा ॥ २२ ॥ शास्त्रबुद्ध्या  
 विनिश्चित्य कृत्वा बुद्धिं वधे दृढाम् । अथ वैश्वानरनिभं घोररूपं तयावहम् ।  
 मूढोऽहं वज्रं संक्रुहः शक्रस्त्रिशिरसं प्रति ॥ २३ ॥ स पपात हतस्तन वज्रेण दृढ-

महतः । पर्वतस्यैव शिखरं प्रणमं मेदिनीतले ॥ २४ ॥ तस्य वज्रहतः दृष्ट्वा  
 शयान्मनचलोपमम् । न शम्भु लेभे देवेन्द्रो दीपितस्तस्य तेजसा ॥ २५ ॥ इतोऽ-  
 पि दीप्ततेजाः स जीवन्निव च दृश्यते । घातितस्य शिरांस्यार्जो जीवन्तीवाहु-  
 तानि वै । ततोऽतितीतो कपाले शक्रः आसु विचारयन् ॥ २६ ॥ अथाजगाम  
 परशुं स्कन्देनादाय वद्विकिः । तदरुणं महाराज वत्रासुहसौ निपातितः ॥ २७ ॥  
 स भीतस्तत्र तस्मान् घटमानं शचीपतिः । अपश्यदत्रवीचैनं नवरं पाकशा-  
 मनः । क्षिप्रं छिन्दि शिरांस्यस्य कुरूष वचनं मम ॥ २८ ॥ तस्मैवाच । महास्कन्दो  
 भूषणं ह्येष परशुर्न भविष्यति । कर्तुंशक्यं न शक्यामि कश्चिद्विगर्हितम् ॥ २९ ॥  
 इन्द्र उवाच । मातैस्तु शीघ्रमेतद्दे कुरूष वचनं मम । मत्प्रसादाद्दि ते शसु-  
 वज्रकल्पं भविष्यति ॥ ३० ॥ तस्मैवाच । कः भवन्तमहं विद्यां घोरकर्माणमदा-  
 वै । एतदिच्छान्यहं श्रोतुं तद्धेन कथयस्व मे ॥ ३१ ॥ इन्द्र उवाच । अहमिन्द्रो  
 देवराजस्तस्मिन् विदितमस्तु ते । कुरूमैतदथथोक्तं मे तस्मिन् नाहं विचारय ॥ ३२ ॥  
 तस्मैवाच । क्रूरं नानात्रपसे कथं शक्रेण कश्मना । पृषिपुत्रमिमं हन्ना वक्रहंता-  
 तथं न ते ॥ ३३ ॥ शक्र उवाच । पश्चात्कश्चिं चरिष्यामि पावनाथं सुदुश्चरनः ।  
 शत्रुरेष महावीर्यो वज्रेण निहतो मया । ३४ ॥ अदर्यापि चाहनुद्दिगस्तस्मिन् कश्चा-  
 दिभेमि वै । क्षिप्रं छिन्दि शिरांसि ह्यं करिष्यां नृग्रहं तव ॥ ३५ ॥ शिर-  
 पशोऽसु दास्यन्ति भागं वज्रेण मानवाः । एव तेहनुग्रहस्तस्मिन् क्षिप्रं कुरू मन-  
 प्रियम् ॥ ३६ ॥ शक्र उवाच । एतच्छ्रुत्वा तु तस्मात् महेंद्रवचनं तदा । शिरा-  
 स्याथ त्रिशिरसः कृत्तारेणाच्छिनत्तदा ॥ ३७ ॥ निरुद्धेषु ततस्तु निष्क्रमन्ति शिर-  
 स्स्थ । कपिञ्जलास्तित्तिराश्च कलविक्काश्च संघशः ॥ ३८ ॥ येन ह्येदानधीते स्म  
 पिवते सोममेव च । तस्माद्दत्तादिनिष्पेतुः क्षिप्रं तस्य कपिञ्जलाः ॥ ३९ ॥  
 येन सर्वा दिशो राजन् पिबन्निव निरीकते । तस्माद्दत्तादिनिष्पेतुस्तित्तिरुक्तस्य  
 पाण्डव ॥ ४० ॥ यत् सुरापन्नं तस्यासीत् वक्रं त्रिशिरसस्तदा । कलविक्का विनिष्पेतुः  
 शयनाश्च भरतर्षभ ॥ ४१ ॥ ततस्तु निरुद्धेषु विह्वरो मयवानथ । जगाम त्रिदिक्  
 ह्यस्तस्मापि स्वगृहान् यथो ॥ ४२ ॥ मेने कृतार्थमात्मानं हन्ना शत्रुं सुरारि-  
 हा ॥ ४३ ॥ ह्येता प्रजापतिः शक्रा शक्रेणाथ हतः सुतम् । क्रोधसंरक्तमयन  
 इदं वचनमब्रवीत् ॥ ४४ ॥ ह्येतावाच । तप्यमानं तपो नित्यं क्रान्तं दास्यं  
 जितेन्द्रियम् । अनपराधिनं यस्मात् पुलं हिंसितवान्मम । तस्माच्छक्रवपार्थाय  
 वृत्रमुत्पादयाम्यहम् ॥ ४५ ॥ लोकाः पश्यन्तु मे वीर्यात् तपसश्च बलं महत् । स च

पश्यातु देवेन्द्रो दुरात्र्या पापचेतनः ॥ ४७ ॥ उपस्पृश्य ततः क्रुद्धस्तपस्वी सुमहा-  
 यशाः । अग्नौ हृत्वा समुत्पाद्य घोरं वृत्रमुवाच ह ॥ ४९ ॥ इन्द्रशत्रो विवर्द्धस्व  
 प्रभावान्तपसो मम । सोऽवर्द्धत दिवं सुक्वा सूर्यावैश्वानरोपमः ॥ ४८ ॥ किं  
 करोमीति चावाच कालसूर्य इवोदितः । शक्रं जहीति चाप्युक्त्वा जगाम त्रि-  
 दिवं ततः ॥ ४९ ॥ ततो युद्धं समभरद्वृत्रवासवयोजुदा । संक्रुद्धयोर्महाघोरं  
 प्रसक्तं कुरुसन्तम ॥ ५० ॥ ततो जग्राह देवेन्द्रं वृत्रो वीरः शतक्रतुम् । अपा-  
 वृत्यास्त्रिपद्भक्तु शक्रं कोपसमन्वितः ॥ ५१ ॥ अश्वे वृत्रेण शक्रे तु सञ्जास्तान्निद-  
 शेषराः । असृजंस्तु महासत्त्वा जृम्भिकां वृत्रनाशिनीम् ॥ ५२ ॥ विजृम्भमाणस्य  
 ततो वृत्रस्यास्यदपावृतात् । स्वान्यङ्गान्यभिसंस्त्रिप्य निष्क्रान्तो बलनाशनः ॥ ५३ ॥  
 ततः प्रभृति लोकेषु जृम्भणा प्राणसंश्रिता । जहृमुश्च सुराः सर्वे दृष्ट्वा शक्रं  
 विनिःसृतम् ॥ ५४ ॥ ततः प्रववृते युद्धं वृत्रवासवयोः पुनः । संरुद्धयोजुदा  
 घोरं सूचिरं भरतर्षभ ॥ ५५ ॥ यदा व्यवर्द्धत रणे वृत्रो बलसमन्वितः । ह्यर्षुस्तु-  
 ज्जोर्बलाद्विद्वान् तदा शक्रे न्यवर्द्धत ॥ ५६ ॥ निवृत्ते च तदा देवा विषादमगमन्  
 परम् । समेत्य सह शक्रेण ह्यर्षुस्तुजोविमोहिताः ॥ ५७ ॥ अमन्त्रयुस्तु ते सर्वे  
 मुनिभिः सह भारत । किं कार्यमिति वै राजन् विचिन्त्य भयमोहिताः ॥ ५८ ॥  
 जग्मुः सर्वे महात्मानं मनोभिर्विष्णुमव्ययम् । उपविष्टा मन्दराग्रे सर्वे वृत्रवधे-  
 ष्ववः ॥ ५९ ॥

इत्युद्देश्येण पर्वणि सैन्योद्देश्येण पर्वणि वृत्रवासवयुद्धे

नवमोऽध्यायः ॥ २ ॥



इन्द्र उवाच । सर्वं व्याप्तमिदं देवा वृत्रेण जगदव्ययम् । न हस्य सदृशं किञ्चि-  
 प्रतिघाताय यद्वेत् ॥ १ ॥ समर्थो ह्यभवत् पूर्वमसमर्थोऽस्मि साम्प्रतम् । कथं  
 ह्यु कुर्यात् भद्रं वो दुर्धरैः स हि मे मतः ॥ २ ॥ तेजस्वी च महात्मा च युद्धे चामि-  
 त्तविक्रमः । असेत्रिभुवनं सर्वं सदेवासुरमाश्रुषम् ॥ ३ ॥ तस्माद्विनिश्चयमिमं  
 शृणुध्वं मे दिवोकसः । विषेणः ऋष्यनुपागम्य समेत्य च महात्माना । तेन संमन्त्र्य  
 वेत्स्यामो वधोपायं दुरात्र्यनः ॥ ४ ॥ शल्य उवाच । एवमुक्ते मथवता देवाः  
 सर्षिगणान्मुदा । शरण्यं शरणं देवं जग्मूर्विष्णुं महाबलं ॥ ५ ॥ उच्यते सर्वे  
 देवेशं विष्णुं वृत्रभयार्दिताः । त्वया लोकास्त्रयः क्रान्तान्निविर्बिक्रमैर्विभो ॥ ६ ॥  
 अमृतं चाहृतं विषेण दैत्याश्च निहता रणे । बलिं बद्ध्वा महार्देत्यं शक्रे

देवाधिपः कृतः ॥ १ ॥ इत्थं प्रभुः सर्वलोकानां इया सर्वमिदं ततम् । इत्थं हि  
 देवो महादेवः सर्वलोकनमस्कृतः ॥ ८ ॥ गतिर्भव इत्थं देवानां सैन्द्राणाम-  
 रोत्रम । जगद्ध्याप्तमिदं सर्वं वृत्रेणासुरसूदन ॥ ९ ॥ विष्णुरूवाच । अवश्यं कर-  
 णीयं मे भवतां हितमुक्तमम् । तस्मादुपायं वक्ष्यामि यथासौ न भविष्यति ॥ १० ॥  
 गच्छध्वं सर्षिगन्धर्वा यत्रासौ विश्वरूपधृक् । साम तस्य प्रयुञ्जध्वं तत एनं विजे-  
 श्यथ ॥ ११ ॥ भविष्यति जयैषा देवाः शक्रस्य मम तेजसा । अदृश्याश्च प्रवेक्ष्यामि  
 वज्रे चास्यायुधोत्तमे ॥ १२ ॥ गच्छध्वमृषिभिः सार्द्धं गन्धर्वैश्च सुरोत्तमाः । वृत्रस्य  
 सह शक्रेण सन्निःकुरुत मा चिरम् ॥ १३ ॥ शल्य उवाच । एवमुक्ते तु देवेन  
 ऋषयस्त्रिदशास्तदा । ययुः समेत्य सहिताः शक्रं क्रुद्ध्वा पुरःसरम् ॥ १४ ॥ समीपमेत-  
 च तदा सर्व एव महोजनः । तं तेजसा प्रज्वलितं प्रतपन्तं दिशो दश ॥ १५ ॥  
 असन्तमिव लोकांस्त्रीन् सूर्याचन्द्रमसौ यथा । ददृशुस्तत्र ते वृत्रं शक्रेण सह  
 देवताः ॥ १६ ॥ ऋषयोऽथ ततोऽभ्येत्य वृत्रमुचुः प्रियं वचः ॥ १७ ॥ व्याप्तं जग-  
 दिदं सर्वं तेजसा तव दुर्द्धय । न च शक्रेषि निर्जेतुं वासवं भूरितेजसम् ॥ १८ ॥  
 युध्यतांश्चापि वां कालो व्यतीतः सुमहानिह । पीड्यन्ते च प्रजाः सर्वाः सदेवा-  
 सुरमानुषाः ॥ १९ ॥ सख्यं भवतु ते वृत्र शक्रेण सह नित्यदा । अवाप्स्यसि सुखं  
 इत्थं शक्रलोकान्श्च शाश्वतान् ॥ २० ॥ ऋषिवाक्यं निशम्याथ स वृत्रः सुमहाबलः । उवाच  
 तांस्तदा सर्वान् प्रणम्य शिरसासुरः ॥ २१ ॥ सर्वे यूयं महाभागा गन्धर्वाश्चैव सर्व-  
 शः । यद्गुत तच्छुतं सर्वं ममापि शृणुतानयाः ॥ २२ ॥ सन्निःकथं वै भविता मम  
 शक्रस्य चोत्तयोः । तेजसोर्हि द्वयोर्देवाः सख्यं वै भविता कथम् ॥ २३ ॥  
 ऋषय उचुः । सकृत् सतां सङ्गतं लिप्सितव्यं ततः परं भविता भव्यमेव । नाति-  
 क्रमेण सत्पुरुषेण सङ्गतं तस्मात् सतां सङ्गतं लिप्सितव्यम् ॥ २४ ॥ दृष्टं सतां  
 सङ्गतं नित्यं वृषाच्छार्थं हर्षकृच्छ्रेषु धीरः । महार्थवं सत्पुषेण सङ्गतं  
 तस्मात् सन्तं न जिघांसेत धीरः ॥ २५ ॥ इन्द्रः सतां सम्यत्तश्च निवासश्च महा-  
 अनाम् । सत्यवादी हृदीनश्च धर्मविद् सुविनिश्चितः ॥ २६ ॥ तेन तै सह शक्रेण  
 सन्निर्भरतु शाश्वतः । एवं विश्वासमागच्छ मा तेऽभूद्विद्विरन्यथा ॥ २७ ॥ शल्य उवाच ।  
 महर्षिर्बचनं श्रुत्वा तान्नुवाच महादुयतिः । अवश्यं भगवन्तो मे माननीयास्तप-  
 स्विनः ॥ २८ ॥ त्रवीमि यदहं देवास्तु सर्वं क्रियतामिह । ततः सर्वं करिष्यामि  
 यदूर्ध्वं महर्षयः ॥ २९ ॥ न शक्रेण न चार्द्रेण नाश्वना न च दारुणा । न चास्त्रेण  
 न शस्त्रेण न दिवा न तथा निशि ॥ ३० ॥ वधेया भवेयं विप्रेन्द्राः शक्रस्य सह

दैवतैः । एवं मे रोचते सङ्घिः शक्रेण सह नित्यदा ॥ ७१ ॥ वाचमित्येवमृषयस्त-  
 मृचुर्भरतर्षत ॥ ७२ ॥ एवं कृते तु सङ्घाने वृत्रः प्रमुदितोऽभवत् । यत्रः समत-  
 द्वापि शक्रेण हर्षसमन्वितः ॥ ७३ ॥ वृत्रस्य वधसंयुक्तान्नुपायाननुचित्तयन् । रक्षा-  
 षेष्ठी समुद्दिग्ः सदाभ्रुद्धलवृत्रहा ॥ ७४ ॥ स कदाचित् समुद्रास्ते तमपश्यन्महासुरम् ।  
 सङ्घ्याकाल उपावृत्ते मुहूर्ते रौद्रदारुणे ॥ ७५ ॥ ततः सङ्घिस्तु भगवान् वरदानं  
 महास्ननः । सङ्घ्येयं वर्तते रौद्रा न रात्रिर्दिवसं न च । वृत्रश्चावश्यवधोऽहयं  
 नम सर्वहरो रिपुः ॥ ७६ ॥ यदि वृत्रं न हन्याद्य वक्ष्यिष्या महासुरम् । महाबलं  
 महाकायं न वै श्रेयो भविष्यति ॥ ७७ ॥ एवं सङ्घिस्तथैव शक्रेण विष्णुमनुस्म-  
 रन् । अथ फेनं तदापश्यत् समुद्रे परतोपमम् ॥ ७८ ॥ नायं शुक्रो न चा-  
 र्द्रोऽहयं न च शस्त्रमिदं तथा । एनं क्षेप्यामि वृत्रस्य क्षणादेव नशिष्यति ॥ ७९ ॥  
 सबद्धमथ फेनं तं क्षिप्रं वृत्रे विसृष्टवान् । प्रविश्य फेनं तं विष्णुरथ वृत्रं  
 व्यानाशयत् ॥ ८० ॥ निहते तु ततो वृत्रे दिशो वितिमिराभवन् । प्रववो च  
 शिवो वायुः प्रजाश्च जहन्नुस्तदा ॥ ८१ ॥ ततो देवाः सगन्धर्वाः यक्षराक्षसपन्नगाः ।  
 ऋषयश्च महेश्च तमस्तुवन् विविधैः स्तवैः ॥ ८२ ॥ नमस्कृतः सर्वभूतैः सर्वभूतानां-  
 सास्तुयत् । हत्वा वृत्रं प्रहृष्टात्त्वा वासवः सह दैवतैः । विष्णुं त्रिभुवनश्रेष्ठं पूज-  
 यामास धर्मवित् ॥ ८३ ॥ ततो हते महावीर्ये वृत्रे देवभयक्षरे । अनृतेनाभि-  
 भूतोऽभ्रुद्धक्रः परमदुर्म्नः । त्रैशीर्षवाभिभूतश्च स पूर्वं ब्रह्महत्याया ॥ ८४ ॥  
 सोऽस्तुमाश्रित्य लोकानां नष्टसंज्ञो ह्यचेतनः । न प्राप्त्वायत देवेन्द्रस्तुतिभूतः  
 स्वकल्पवैः । प्रतिच्छन्नो वसत्यप्सु चेष्टमान इवोरगः ॥ ८५ ॥ ततः प्रनष्टे देवेभ्यो  
 ब्रह्महत्याभयार्दिते । भूमिः प्रधस्तसङ्काशा निर्बृका शुक्ककानना ॥ ८६ ॥ विच्छिन्-  
 मोतसो नद्यः सरांस्यनुदकानि च । संकोतश्चापि सद्भानामनावृत्तिकृत्त्रोऽभवत्  
 ॥ ८७ ॥ देवाश्चापि भृशं त्रस्तास्तथा सर्वे महर्षयः । अराजकं जगत् सर्वम-  
 भिभूतमुपद्रवैः ॥ ८८ ॥ ततो भीताभवन् देवाः को नो राजा भवेदिति ।  
 दिवि देवर्षयश्चापि देवराजविनाकृताः । न च स्म कश्चिद्देवानां राज्याय कुरुते  
 ननः ॥ ८९ ॥

इत्युक्त्यागपर्वणि तैत्तिरीयब्राह्मणपर्वणि वृत्रवधे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥



शल्य उवाच । ऋषयोऽथाक्रवन् सर्वे देवाश्च त्रिदशेश्वराः । अयं वै नक्षः  
 श्रीमान् देवराज्येऽभिषिच्यताम् । तेजस्वी च यशस्वी च धार्मिकश्चैव नित्यदा ॥ १ ॥

তে গহ্বাথাক্রবন্ সর্বে রাজা নো ভব পার্থিব ॥ ২ ॥ স তানুবাচ. নহুষো দেবান্  
 সর্ষিগণাংস্তদা । পিতৃভিঃ সহিতান্ রাজন্ পরীপ্সন্ হিতমান্ননঃ ॥ ৩ ॥ দুর্বলো-  
 হহং ন মে শক্তির্ভবতাং পরিপালনে । বলবান্ জায়তে রাজা বলং শক্রে হি নি-  
 ত্যদা ॥ ৪ ॥ তমক্রবৎস্ততঃ সর্বে দেবাঃ সর্ষিপুরোগমাঃ । অস্মাকং তপসা যুক্তঃ পাহি  
 রাজ্যং ত্রিপিষ্টপে ॥ ৫ ॥ পরস্পরভয়ং ঘোরমস্মাকং হি ন সংশয়ঃ । অভিষি-  
 চ্যস্ব রাজেশ্চ ভব রাজা ত্রিপিষ্টপে ॥ ৬ ॥ দেবদানবযক্ষাণামৃষীণাং রক্ষসাং  
 তথা । সিদ্ধগন্ধর্ষভূতানাং চক্ষুর্বিষয়বর্তিনাম্ । তেজ আদাস্যসে পশ্যান্ বলবাংশ্চ  
 ভবিষ্যসি ॥ ৭ ॥ ধর্মং পুরস্কৃত্য সদা সর্বলোকাধিপো ভব । ব্রহ্মর্ষীংশ্চাপি দেবাং-  
 শ্চ গোপায়স্ব ত্রিপিষ্টপে ॥ ৮ ॥ অভ্যষিচ্যত. রাজেশ্চ ততো রাজা ত্রিপিষ্টপে ।  
 ধর্মং পুরস্কৃত্য তদা সর্বলোকাধিপোহভবৎ ॥ ৯ ॥ সুদূর্লভং বরং লব্ধ্বা প্রাপ্য  
 রাজ্যং ত্রিপিষ্টপে । ধর্মাত্মা সততং ভূত্বা কামাত্মা সমপদ্যত ॥ ১০ ॥ দেবোদ্যা-  
 নেষু সর্বেষু নন্দনোপবনেষু চ । কৈলাসে হিমবৎপৃষ্ঠে মন্দরে শ্বেতপর্বতে ॥ ১১ ॥  
 সহে মহেন্দ্রে মলযে সমুদ্রেষু সরিৎসু চ । অপ্সরোভিঃ পরিবৃত্তো দেবকন্যাসমা-  
 বৃত্তঃ ॥ ১২ ॥ নহুষো দেবরাজঃ স ক্রীডন্ বহুবিধং তদা । শৃণুন্ দিব্যা বহুবিধাঃ  
 কথাঃ ঞ্জতিমনোহরাঃ । বাদিত্রাণি চ দিব্যানি গীতঞ্চ মধুরস্বরম্ ॥ ১৩ ॥ বিশ্বা-  
 বসুর্নারদশ্চ গন্ধর্ষাপ্সরসাং গণাঃ । ঋতবশ্চাপি রাজেশ্চ মূর্ত্তিমন্ত উপাস্তি-  
 তাঃ । মারুতঃ সুরভির্বাতি মনোজ্ঞঃ সুখশীতলঃ ॥ ১৪ ॥ এবঞ্চ ক্রীডতস্তস্য  
 নহুষস্য দুর্ভান্ননঃ । সম্প্রাপ্তা দর্শনং দেবী শক্রস্য মহিষী শ্রিষা ॥ ১৫ ॥ স তাং  
 সন্দৃশ্য দুষ্কাত্মা প্রাহ সর্বান্ সভাসদঃ । ইন্দ্রস্য মহিষী দেবী কস্মান্মাং নোপতি-  
 ষ্ঠতি ॥ ১৬ ॥ অহমিন্দ্রোহস্মি দেবানাং লোকানাঞ্চ তথেশ্বরঃ । আগচ্ছতু শচী  
 মহং ক্ষিপ্রমেব নিবেশনম্ ॥ ১৭ ॥ তচ্ছুত্বা দুর্মনা দেবী বৃহস্পতিমথাত্রবীৎ । রক্ষ  
 মাং নহুষাদ্রুক্ষন্ তবাস্মি. শরণং গতা ॥ ১৮ ॥ সর্বলক্ষণসম্পন্নাং ব্রহ্মংস্ত্বং মাং প্রুভা-  
 যসে । দেবরাজস্য দধিতামত্যস্তসুখভাগিনীম্ ॥ ১৯ ॥ অবৈধবেয়নু যুক্তাঞ্চাপ্যে-  
 কপত্নীং পতিব্রতাম্ । উক্তবানসি মাং পূর্বমৃতাং তাং কুরু বৈ গিরম্ ॥ ২০ ॥  
 নোক্তপূর্বঞ্চ ভগবন্ মৃষা তে কিঞ্চদীশ্বর । তস্মাদেতদ্ভবেৎ সত্যং ত্বযোক্তং দ্বিজ-  
 সত্তম ॥ ২১ ॥ বৃহস্পতিরথোবাচ শক্রাণীং ভযমোহিতাম্ । যদুক্তাসি মযা দেবি  
 সত্যং তদ্ভবিতা ধুবম্ ॥ ২২ ॥ দ্রক্ষ্যসে দেবরাজানমিন্দ্রং পুনরিহাগতম্ । ন  
 ভেতব্যঞ্চ নহুষাং সত্যমেতদ্বীমি তে । সমানষিষ্যে শক্রেণ নচিরাত্তবতীমহম্ ॥ ২৩ ॥

অথ শুশ্রাব নহুষঃ শক্রাণীং শরণং গতাম্ । বৃহস্পতেরঙ্গিরসশ্চুক্রোধ স নৃপ-  
সুতা ॥ ২৪ ॥

ইত্যুদ্ধোগপর্বণি সৈন্যোদ্ধোগপর্বণি শচীবৃহস্পতিসংবাদে  
একাদশোহধ্যায়ঃ ॥ ১১ ॥



শল্য উবাচ । ক্রুদ্ধস্ত নহুষং দৃষ্ট্বা দেবাঃ সর্ষিপুরোগমাঃ । অক্রবন্ দেবরাজানং  
নহুষং যোরদর্শনম্ ॥ ১ ॥ দেবরাজ জহি ক্রোধং স্বযি ক্রুদ্ধে জগদ্বিতো । ত্রস্তং  
সাম্মুরগন্ধর্ষং সকিন্নরমহোরগম্ ॥ ২ ॥ জহি ক্রোধমিমং সাধো ন ক্রুধ্যস্তি ভব-  
দ্বিধাঃ । পরস্য পত্নী সা দেবী প্রসীদস্ব সুরেশ্বর ॥ ৩ ॥ নিবর্তয মনঃ পাপাৎ পর-  
দারাভিমর্ষণাৎ । দেবরাজোহসি ভদ্রং তে প্রজা ধর্ম্মেণ পালয় ॥ ৪ ॥ এবমুক্তো  
ন জগ্রাহ তদ্বচঃ কামমোহিতঃ । অথ দেবানুবাচেদমিন্দ্রং প্রতি সুরাধিপঃ ॥ ৫ ॥  
অহল্যা ধর্ষিতা পূর্বমৃষিপত্নী যশস্বিনী । জীবতো ভর্তৃরিন্দ্রেণ স বঃ কিং ন নিবা-  
রিতঃ ॥ ৬ ॥ বহুনি চ মৃশংসানি কৃতানীন্দ্রেণ বৈ পুরা । বৈধর্ম্ম্যাণ্যুপধাশ্চৈব স  
বঃ কস্মান্ন বারিতঃ ॥ ৭ ॥ উপতিষ্ঠতু দেবী মামৈতদম্যা হিতং পরম্ । যুস্মাকঞ্চ সদা  
দেবাঃ শিবমেবং ভবিষ্যতি ॥ ৮ ॥ দেবা উচুঃ । ইন্দ্রাণীমানযিষ্যামো যথেষ্টসি  
দিবস্পতে । জহি ক্রোধমিমং বীর প্রীতো ভব সুরেশ্বর ॥ ৯ ॥ শল্য উবাচ ।  
ইত্যুক্ত্বা তং তদা দেবা ঋষিভিঃ সহ ভারত । জগ্মুবৃহস্পতিং বক্রুমিন্দ্রাণীঞ্চাশুভং  
বচঃ ॥ ১০ ॥ জানীমঃ শরণং প্রাপ্তামিন্দ্রাণীং তব বেশ্মনি । দত্তাভযাঞ্চ বিপ্রেন্দ্র  
স্বযা দেবর্ষিসত্তম ॥ ১১ ॥ তে স্বাং দেবাঃ সগন্ধর্ষা ঋষযশ্চ মহাদ্যুতে । প্রসাদযস্তি  
চেন্দ্রাণী নহুষায় প্রদীযতাম্ ॥ ১২ ॥ ইন্দ্রাদ্বিশিষ্টো নহুষো দেবরাজো মহাদ্যু-  
তিঃ । বৃণোত্বিমং বরারোহা ভর্তৃশ্চে বরবর্ণিনী ॥ ১৩ ॥ এবমুক্তে তু সা দেবী বা-  
স্পমুৎসৃজ্য সস্বনম্ । উবাচ রুদতী দীনা বৃহস্পতিমিদং বচঃ ॥ ১৪ ॥ নাহমিচ্ছামি  
নহুষং পতিং দেবর্ষিসত্তম । শরণাগতাস্মি তে ব্রহ্মন্ ত্রাহি মাং মহতো ভযাৎ ॥ ১৫ ॥  
বৃহস্পতিরুবাচ । শরণাগতং ন ত্যজেযমিন্দ্রাণি মম নিশ্চিতম্ । ধর্ম্মজ্ঞাং সত্যশী-  
লাঞ্চ ন ত্যজে স্বামনিন্দিতে ॥ ১৬ ॥ নাকার্য্যং কর্তুমিচ্ছামি ব্রাহ্মণঃ সন্ বিশে-  
ষতঃ । শ্রুতধর্ম্মা সত্যশীলো জ্ঞানন্ ধর্ম্মানুশাসনম্ ॥ ১৭ ॥ নাহমেতৎ করিষ্যামি  
গচ্ছধ্বং বৈ সুরোত্তমাঃ । অস্মিংশ্চার্থে পুরা গীতং ব্রহ্মণা শ্রযতামিদম্ ॥ ১৮ ॥  
ন তস্য বীজং রোহতি বীজকালে ন চাস্য বর্ষং বর্ষতি বর্ষকালে । ভীতং প্রপন্নং  
প্রদদাতি শত্রবে ন ত্রাতারং লভতে ত্রাণমিচ্ছন্ ॥ ১৯ ॥ মোঘমর্থং বিন্ধতি চাপ্য-

चेताः स्वर्गाल्लोकान्द्रुश्याति नर्कचेर्कः । तीतं प्रपन्नं प्रददाति यो वै न तस्य हव्यं प्रतिगृह्णति देवाः ॥ २० ॥ प्रमीयते चास्य प्रजा हकाले सदा विवासं पितरोऽस्य कुर्वते । तीतं प्रपन्नं प्रददाति शत्रवे सैन्ध्रा देवाः प्रहरन्त्यस्य वज्रम् ॥ २१ ॥ एतदेवं प्रजानन् वै न दास्यामि शचीमिमाम् । इन्द्रानीं विश्रुतां लोकेश्चक्रस्य महिषीं प्रियाम् ॥ २२ ॥ अस्य हितं भवेद्यच्च मम चापि हितं भवेत् । क्रियतां तं सुरश्रेष्ठा न हि दास्याम्यहं शचीम् ॥ २३ ॥ शल्य उवाच । अथ देवासुमेवाहर्षुर्मन्त्रिरसां वरम् । कथं सुनीतञ्च तवेन्मन्त्रयश्च बृहस्पते ॥ १४ ॥ बृहस्पतिरुवाच । नह्यं याचतां देवी किञ्चिं कालान्तरं शुभा । इन्द्रानी हितमेतद्धि तथाऽन्नाकं भविष्यति ॥ २५ ॥ बह्विष्यः सुराः कालः कालः कालं नविष्यति । दर्पितो बलवांश्चापि नह्यो वरसंश्रयात् ॥ २६ ॥ शल्य उवाच । ततस्तु न तथोक्ते तु प्रीता देवासुदाक्रवन् । ब्रह्मन् साध्विदमुक्तं ते हितं सर्वदिवोकसाम् । एवमेतद्धिजश्रेष्ठ देवी चेयं प्रसाद्यताम् ॥ २७ ॥ ततः समस्ता इन्द्रानीं देवाः साग्निपुरोगमाः । उचूर्वचनमव्याघ्रा लोकानां हितकाम्यया ॥ २८ ॥ देवा उचुः । त्वया जगदिदं सर्वं धृतं स्वांवरजङ्गमम् । एकपद्भ्यामिसत्या च गच्छस्व नह्यं प्रति ॥ २९ ॥ किंप्रं त्वामतिकामश्च विनशियति पापकृत् । नह्यो देवि शक्रश्च सुरैश्वर्यामवाप्स्यति ॥ ३० ॥ एवं विनिश्चयं ज्ञात्वा इन्द्रानीं कार्यसिद्धये । अत्यगच्छत सत्रीडा नह्यं घोरदर्शनम् ॥ ३१ ॥ दृष्ट्वा तां नह्यश्चापि वयोरूपसमन्विताम् । समह्यत दूष्ठात्मा कामोपहतचेतनः ॥ ३२ ॥

इत्युद्योगपर्वणि सैन्योद्योगपर्वणि नह्यसतायामिन्द्रानी-

गमने द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥



शल्य उवाच । अथ तामब्रवीद्दृष्ट्वा नह्यो देवराट् तदा । त्रयाणामपि लेनकुनामहमिन्द्रः शुचिस्मिते । भङ्गश्च मां वरारोहे पतित्वे वरवर्णिनि ॥ १ ॥ एवमुक्त्वा तु सा देवी नह्येण पतिव्रता । प्रावेपत भयोद्दिग्ना प्रवाते कदली यथा ॥ २ ॥ प्रणम्य सा हि ब्रह्माणं शिरसा तु कृताञ्जलिः । देवराजमथोवाच नह्यं घोरदर्शनम् ॥ ३ ॥ कालमिच्छाम्यहं लक्ष्मं द्रुतः कश्चिं सुरेश्वर । न हि विज्जायते शक्रः क्विप्रापुः क्व वा गतः ॥ ४ ॥ तद्धमेतद् विज्जाय यदि न ज्जायते प्रभो । ततोऽहं त्वानुपस्थस्ये सत्यमेतद्ब्रवीमि ते ॥ ५ ॥ एवमुक्त्वा स इन्द्राण्या नह्यः प्रीतिमानभूत् ॥ ६ ॥ नह्य उवाच । एवं भवतु सुश्रेणि यथा मामिह भाषसे । ज्ञात्वा



चागमनं कार्यं सत्यमेतदनुस्मरेः ॥ १ ॥ नह्येषेण विसृष्टा च निश्चक्राम ततः  
 शुभा । बृहस्पतिनिकेतश्च सा जगाम यशस्विनी ॥ ८ ॥ तस्याः संश्रुतं च वचो  
 देवाः साग्निपुरोगमाः । चिन्तयामासुरेकाग्राः शक्रार्थं राजसत्तम ॥ ९ ॥ देव-  
 देवेन सङ्गम्य विष्णुना प्रभविष्णुना । उचूँश्चैनं समुद्दिग्ना वाक्यं वाक्यविशार-  
 दाः ॥ १० ॥ ब्रह्महत्याभिभूतो वै शक्रः सुरगणेश्वरः । गतिश्च नस्तुं देवेश  
 पूर्वजो जगतः प्रभुः । रक्षार्थं सर्वभूतानां विष्णुश्चमुपज्जिबान् ॥ ११ ॥ वृद्धीर्य-  
 निहते वृत्रे वासवो ब्रह्महत्याया । वृतः सुरगणेश्रेष्ठ मोक्षं तस्य विनिर्दिश ॥ १२ ॥  
 तेषां तद्वचनं श्रुत्वा देवानां विष्णुरब्रवीत् । मामेव यजतां शक्रः पावयिष्यामि  
 वज्रिणम् ॥ १३ ॥ पुण्येन ह्यमेधेन मामिक्त्वा पाकशासनः । पुनरेष्यति देवाना-  
 मिन्द्रह्मकुतोभयः ॥ १४ ॥ स्वकर्मभिश्च नह्येषो नाशं यास्यति दुर्मतिः । कश्चिं  
 कालमिमं देवा मर्षयध्वमतस्त्रिताः ॥ १५ ॥ श्रुत्वा विष्णोः शुभां सत्यां तां वा-  
 नीममृतोपमाम् । ततः सर्वे सुरगणाः सोपाध्यायाः सुरर्षिभिः । यत्र शक्रे भयो-  
 द्विगस्तुं देशमुपचक्रमुः ॥ १६ ॥ तत्राश्वमेधः सुमहान्महेन्द्रस्य महात्मानः । बवृते  
 पावनार्थं वै ब्रह्महत्यापहो नृप ॥ १७ ॥ विंभज्य ब्रह्मवध्यांस्तु बृक्षेषु च नदीषु च ।  
 पर्वतेषु पृथिव्यांश्च स्त्रीषु चैव युधिष्ठिर ॥ १८ ॥ संविभज्य च भूतेषु विसृज्य च  
 सुरेश्वरः । विज्वरो धृतपाप्मा च वासवोऽभवदाश्रवान् ॥ १९ ॥ अकम्पं नह्येषं  
 स्थानां दृष्ट्वा बलनिस्सूदनः । तेजोघ्नं सर्वभूतानां वरदानाच्च दुःसहम् ॥ २० ॥  
 ततः शचीपतिर्देवः पुनरेव वानशयत । अदृश्यः सर्वभूतानां कालाकाङ्क्षी चचार  
 ह ॥ २१ ॥ • प्रनष्टे तु ततः शक्रे शची शोकसमन्विता । हा शक्रेति तदा देवी  
 बिललाप सूदुःखिता ॥ २२ ॥ यदि दत्तं यदि हतं गुरवस्तोषिता यदि । एकतर्तुद्ध-  
 मेवास्तु सत्यं यद्यस्ति वा मयि ॥ २३ ॥ पुण्यांशेमामहं दिव्यां प्रवृत्तांशुत्तरा-  
 यणैः देवीं रात्रिं नमस्यामि सिध्यतां मे मनोरथः ॥ २४ ॥ प्रथता च निशां  
 देवीमुपातिष्ठत तत्र सा । पतिव्रतायां सत्येन सोपश्रुतिमथाकरोत् ॥ २५ ॥  
 यत्रास्ते देवराजोऽसौ तं देशं दर्शयस्व मे । इत्याहोपश्रुतिं देवीं सत्यां  
 सत्येन दृश्यताम् ॥ २६ ॥

इत्युद्देशागपर्वणि सैन्योद्देशागपर्वणि उपश्रुतिवाचने

ब्रह्मोद्देशागपर्वणः ॥ १७ ॥



शल्य उवाच । अथैनां कपिणीं साध्वीमुपातिष्ठदुपश्रुतिः । तां वयोरुपसम्पन्ना

দৃষ্টা দেবীমুপস্থিতাম্ । ইন্দ্রানী সংপ্রহৃষ্টায়া সংপুজ্যে নামথাত্রবীৎ ॥ ১ ॥  
 ইচ্ছামি স্বামহং জ্ঞাতুং কা স্বং বৃহি বরাননে ॥ ২ ॥ উপশ্রুতিরুবাচ । উপশ্রুতিরহং  
 দেবি তবাস্তিকমুপাগতা । দর্শনৈশ্চৈব সম্পূর্ণা তব সত্যেন ভাবিনি ॥ ৩ ॥ পতিত্র-  
 তাসি যুক্তা চ যমেন নিয়মেন চ । দর্শয়িষ্যামি তে শক্রং দেবং বৃত্তানসূদনম্ ।  
 ক্ষিপ্ৰমশ্বেহি ভদ্রস্তে দ্রক্ষ্যসে সুরসত্তমম্ ॥ ৪ ॥ ততস্তাং প্রস্থিতাং দেবীমিন্দ্রানী সা  
 সমন্বগাৎ ॥ ৫ ॥ দেবারণ্যান্যতিক্রম্য পর্বতাংশ্চ বহুংস্ততঃ । হিমবস্তমতিক্রম্য  
 উত্তরং পার্শ্বমাগমৎ ॥ ৬ ॥ সমুদ্রঞ্চ সমাসাদ্য বহুযোজনবিস্তৃতম্ । আসসাদ  
 মহাদ্বীপং নানাঙ্গমলতাবৃতম্ ॥ ৭ ॥ তত্রাপশ্যৎ সরো দিব্যং নানাশকুনিভির্-  
 তম্ । শতযোজনবিস্তীর্ণং তাবদেবার্যতং শুভম্ ॥ ৮ ॥ তত্র দিব্যানি পদ্মানি  
 পঞ্চবর্ণানি ভারত । ষট্‌পদৈরুপগীতানি প্রফুল্লানি সহস্রশঃ ॥ ৯ ॥ সরসস্তস্য  
 মধ্যে তু পদ্মিনী মহতী শুভা । গৌরেনোন্নতনালেন পদ্মেন মহতা বৃতা ॥ ১০ ॥  
 পদ্মস্য ভিত্ত্বা নালঞ্চ বিবেশ সহিতা তথা । বিসতন্তপ্রবিষ্টঞ্চ তত্রাপশ্যৎ শতক্র-  
 তুম্ ॥ ১১ ॥ তং দৃষ্ট্বাতিস্মৃশ্চৈব কপেণাবস্থিতং প্রভুম্ । সূক্ষ্মকপধরা দেবী বভূ-  
 ব্বোপশ্রুতিশ্চ সা । ইন্দ্রং তুষ্টাব চেন্দ্রানী বিশ্রুতৈঃ পূর্বকর্ম্মতিঃ ॥ ১২ ॥ স্তূয়মান-  
 স্ততো দেবঃ শচীমাহ পুরন্দরঃ । কিমর্থমসি সংপ্রাপ্তা বিজ্ঞাতশ্চ কথং স্বহম্ ॥ ১৩ ॥  
 ততঃ মা কথয়ামাস নহুষস্য বিচেষ্টিতম্ ॥ ১৪ ॥ ইন্দ্রং ত্রিযু লোকেষু প্রাপ্য  
 বীর্য্যসমুদ্বিতঃ । দর্পাবিষ্টশ্চ দুষ্টাত্মা মামুবাচ শতক্রতো । উপতিষ্ঠেতি স ক্রুরঃ  
 কালঞ্চ ক্লুতবান্ মম ॥ ১৫ ॥ যদি ন ত্রাস্যসি বিভো করিষ্যতি স মাং বশে । এতেন  
 চাহং সংত্রস্তা প্রাপ্তা শক্র তবাস্তিকম্ ॥ ১৬ ॥ জহি রৌদ্রং মহাবাহো নহুষং  
 পাপনিশ্চয়ম্ । প্রকাশয় স্বমাত্মানং দৈত্যদানবসূদন । তেজঃ সমাপ্লুহি বিভো  
 দেবরাজ্যং প্রশাধি চ ॥ ১৭ ॥

ইত্যুদ্ভোগপর্বণি সৈন্যোদ্ভোগপর্বণি শচীন্দ্রসংবাদে

চতুর্দশোঃধ্যায়ঃ ॥ ১৪ ॥



শল্য উবাচ । এবমুক্তঃ স ভগবান্ শচ্যা পুনরথাত্রবীৎ । বিক্রমস্য ন কালোহয়ং  
 নহুষো বলবত্তরঃ ॥ ১ ॥ বিবর্দ্ধিতশ্চ ঋষিভির্হৈবৈঃ কবৈশ্চ ভাবিনি । নীতিমত্র  
 বিধাস্যামি দেবি তাং কর্ত্তুমর্হসি ॥ ২ ॥ গুহ্যৈশ্চৈতদ্বদ্য কার্য্যং নাথ্যাতব্যং শুভে  
 ক্ৰচিৎ । গত্বা নহুষমেকাস্তে ত্রবীহি তস্মুমধ্যমে ॥ ৩ ॥ ঋষিযানেন দিব্যেন মামু-  
 পৈহি জগৎপতে । এবং তব বশে প্রীতা ভবিষ্যামীতি তং বদ ॥ ৪ ॥ ইত্যুক্তা

देवराजेन पत्नी सा कमलेक्षणा । एवमस्त्रित्यथोक्त्वा तु जगाम नह्वं प्रति ॥ ५ ॥  
 नह्वंस्तं ततो दृष्ट्वा सन्नितो वाक्यमब्रवीत् । स्वागतं ते वरारोहे किं करो-  
 मि शुचिस्मिते ॥ ७ ॥ भक्तं मां भज कल्याणि किमिच्छसि मनस्विनि । तव कल्याणि  
 यं कार्यं तं करिष्ये सुमध्यमे ॥ १ ॥ न च त्रीडा द्वया कार्या सुश्रोणि मयि विश्व-  
 सेः । सत्येन वै शपे देवि करिष्ये वचनं तव ॥ ८ ॥ इन्द्राण्युवाच । यो मे  
 कृतस्तुया कालस्तुमाकाङ्क्षे जगत्पते । तंस्तुमेव तर्ता मे भविष्यसि सुराधिप ॥ ९ ॥  
 कार्यं ह्यदि मे यत्तुदेवराजावधारय । वक्ष्यामि यदि मे राजन् प्रियमेतं करि-  
 ष्यसि । वाक्यं प्रणयसंयुक्तं ततः स्यात् वशगां तव ॥ १० ॥ इन्द्रस्य वाजिनो बाहो  
 हस्तिनो वा रथान्तथा । इच्छाम्यहमिहापूर्वं बाहनं ते सुराधिप । यन्न विष्णोर्न  
 रुद्रस्य नासुराणां न रक्षसाम् ॥ ११ ॥ बहसु द्वां महाभागो ऋषयः सङ्गतं विभो ।  
 सर्वे शिविकया राजन् एतद्धि मम रोचते ॥ १२ ॥ नासुरेषु न देवेषु तुल्यो भवि-  
 तुमर्हसि । सर्वेषां तेज आदत्से स्येन वीर्येण दर्शनात् । न ते प्रमुखतः स्वातुं  
 कश्चित् शक्नोति वीर्यावान् ॥ १३ ॥ शल्य उवाच । एवमुक्तस्तु नह्वः प्राह्वयत  
 तदा किल । उवाच वचनं अपि सुरेन्द्रस्तमनिन्दिताम् ॥ १४ ॥ नह्व उवाच । अपूर्णं  
 बाहनमिदं द्वयोक्तं वरवर्णिनि । दृष्टं मे रूचितं देवि द्वदशोहस्मि वरानने ।  
 न ह्यन्नवीर्ये भवति यो बाहान् कुरुते मुनीन् ॥ १५ ॥ अहं तपस्वी बलवान् भूत-  
 भव्यभवत्प्रभुः । मयि क्रुद्धे जगन्न स्यात् मयि सर्वं प्रतिष्ठितम् ॥ १६ ॥ देवदानव-  
 गन्धर्वाः किन्नरोरगराक्षसाः । न मे क्रुद्धस्य पर्याप्ताः सर्वे लोकाः शुचिस्मि-  
 ते ॥ १७ ॥ चक्षूषा यं प्रपश्यामि तस्य तेजे ह्यराम्यहम् । तस्मात्ते वचनं देवि  
 करिष्यामि न संशयः ॥ १८ ॥ सपुत्रयो मां वक्ष्यन्ति सर्वे व्रक्ष्ययस्तथा । पश्य माहा-  
 त्म्यमस्माकमृद्धिं वरवर्णिनि ॥ १९ ॥ शल्य उवाच । एवमुक्त्वा तु तां देवीं विसृज्य  
 च वराननाम् । विमाने योजयिष्या च ऋषीन् नियममास्थितान् ॥ २० ॥ अब्रह्मण्यो  
 रर्षोपेतो मत्तो मदबलेन च । कामवृत्तः स दूर्घात्मा बाह्यामास तानृषीन् ॥ २१ ॥  
 नह्वेण विसृष्टा सा बृहस्पतिमथाब्रवीत् । समयोह्यन्नावशेषो मे नह्वेणेह यः  
 कृतः । शक्रं मृगय शीघ्रं द्वं भक्त्यायाः कुरु मे दयाम् ॥ २२ ॥ वाचमित्येव भग-  
 वान् बृहस्पतिरुवाच ताम् । न तेतव्यं द्वया देवि नह्वान्दुष्टचेतसः ॥ २३ ॥ न ह्येष  
 स्तास्यति चिरं गत एव नराधमः । अधर्मज्ञो महर्षीणां बाहनात् हतः शुभे ॥ २४ ॥  
 इच्छिष्याहं करिष्यामि विनाशायास्य दुर्मतेः । शक्रं ऋषिगमिष्यामि मा तैस्तुं भद्र-  
 मस्तु ते ॥ २५ ॥ ततः प्रञ्चाल्य विधिवत् जुहाव परमं हविः । बृहस्पतिर्महातेजा

देवराजोपलक्षये । हृद्वाग्निं सोऽत्रवीजाजङ्गलमश्विद्यतामिति ॥ २७ ॥ तस्मात्  
 भगवान् देवः स्वयमेव हताशनः । स्त्रीवेशमद्भुतं क्रुद्धा तत्रैवासुरधीयत ॥ २९ ॥  
 स दिशः प्रदिशश्चैव पर्वतांश्च वनानि च । पृथिवीष्णान्तुरीक्ष्ण विचित्याथ मनो-  
 गतिः । निमेषान्तुरमात्रेण बृहस्पतिमुपागमत् ॥ २८ ॥ अग्निरुवाच । बृहस्पते  
 नं पश्यामि देवराजमिह क्वचित् । आपः शेषाः सदाचापः प्रवेक्षुं नोऽसहा-  
 म्यहम् ॥ २९ ॥ न मे तत्र गतिर्ब्रह्मन् किमन्यत् करवाणि ते । तमत्रवीदेवञ्जूरुरपो  
 विश महाद्युते ॥ ३० ॥ अग्निरुवाच । नापः प्रवेक्षुं शक्यामि क्वथो मेऽत्र भवि-  
 श्यति । शरणं ह्यत्र प्रपन्नोऽस्मि स्वस्ति तेऽस्तु महाद्युते ॥ ३१ ॥ अन्ध्याग्निर्ब्रह्मतः  
 क्रममश्नो लोहमुत्थितम् । तेषां सर्वत्रगं तेजः स्वाम् योनिषु शाम्यति ॥ ३२ ॥

इत्युद्देशागपत्रेण सैन्योद्देशागपत्रेण बृहस्पत्याग्निसंवादे

पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥



बृहस्पतिरुवाच । इमं सर्वदेवानां मुखं इमसि हव्यावाट् । इमन्तुः सर्वभूतानां  
 गूढं चरमि साक्षिवत् ॥ १ ॥ इमामहरेकं कवयस्तुमामहस्त्रिविधं पुनः । इया त्यक्तं  
 जगच्छेदं सदयो नश्येद्वताशन ॥ २ ॥ क्रुद्धा तुभ्यं नद्यो विप्राः स्वकर्मविजिता-  
 क्रतिम् । गच्छन्ति सह पत्नीभिः सुतेरपि च शाश्वतीम् ॥ ३ ॥ इमेवाग्ने हव्यावाह-  
 स्तमेव परमं हविः । यजन्ति सत्रैस्तुमेव षड्रेषु परमाधरे ॥ ४ ॥ सृष्ट्वा लोकां-  
 स्त्रीनिमान् हव्यावाह प्राप्ते काले पचसि पुनः समिद्धः । इत्वं सर्वस्य भुवनस्य प्रसू-  
 तिसुमेवाग्ने भवसि पुनः प्रतिष्ठा ॥ ५ ॥ इमं जलदानाहृदिद्युतश्च मनीषिणः ।  
 दहन्ति सर्वभूतानि इन्द्रो निष्क्रम्य हेतयः ॥ ६ ॥ इय्यापो निहिताः सर्वासुधि  
 सर्वमिदं जगत् । न तेऽस्त्यविदितं किञ्चित् त्रिषु लोकेषु पावक ॥ ७ ॥ स्वयानिं  
 तजते सर्वो विश्वापोऽविशक्तितः । अहं ह्यत्र वर्द्धयिष्यामि त्राकैर्म्मन्त्रैः सना-  
 तनैः ॥ ८ ॥ एवञ्चुतो हव्यावाट् स भगवान् कविक्रतुमः । बृहस्पतिमथोविषत् ।  
 प्रीतिमान् वाक्यमुत्तमम् । दर्शयिष्यामि ते शक्रं सत्यमेतद्भवीमि ते ॥ ९ ॥ शल्य  
 उवाच । प्रविश्यापस्तुते वह्निः समुद्राः सपत्न्याः । आजगाम सरस्तुच्छ गूढो यत्र  
 शचीपतिः ॥ १० ॥ अथ तत्रापि पद्मानि विचिन्वन् तरतर्षभ ! अन्नपश्यात् स देवे-  
 षु विसमध्यगतं तदा ॥ ११ ॥ आगत्य च ततस्तूर्णं तमाचर्त्त बृहस्पतिम् । अणु-  
 मात्रेण वपुषा पद्मतन्त्राश्रितं प्रभुम् ॥ १२ ॥ गत्वा देवर्षिगन्तवैः सहितोऽथ बृह-  
 स्पतिः । पुराणैः कर्मभिर्देवैः तूष्ठाव बलसूदनम् ॥ १३ ॥ महासुरो हतः शक्र

নমুচির্দারুণস্ত্রুয়া । শম্বরশ্চ বলশ্চৈব তথোভৌ ঘোরবিক্রমৌ ॥ ১৪ ॥ শতক্রতো  
 বিবর্ক্শ্ব সর্বান্ শত্রুন্নিম্নদয । উত্তিষ্ঠ শক্র সংপশ্য দেবর্ষীংশ্চ সমাগতান্ ॥ ১৫ ॥  
 মহেন্দ্র দানবান্ হত্বা লোকাস্ত্রাতাস্ত্রুয়া বিভো । অপাং ফেনং সমাসাদ্য বিষ্ণুতে-  
 জোহ্ভিবৃংহিতম্ । ত্বয়া বৃত্রো হতঃ পূর্বং দেবরাজ জগৎপতে ॥ ১৬ ॥ ত্বং সর্ব-  
 ভূতেষু শরণ্য ঙ্গিড্যস্ত্রুয়া সমং বিদ্যতে নেহ ভূতম্ । ত্বয়া ধার্যন্তে সর্বভূতানি শক্র  
 ত্বং দেবানাং মহিমানঞ্চকর্থ ॥ ১৭ ॥ পাহি সর্বান্ স লোকাংশ্চ মহেন্দ্র বলমা-  
 পুহি । এবং সংস্তুষমানশ্চ সোহবর্কিত শনৈঃ শনৈঃ ॥ ১৮ ॥ স্বধৈব বপুরাস্থাঘ  
 বভুব স বলাস্বিতঃ । অত্র বীচ গুরুং দেবো বৃহস্পতিমবস্থিতম্ ॥ ১৯ ॥ কিং কার্য-  
 মবশিষ্ঠং বো হতস্ত্রাষ্ট্রো মহাসুরঃ । বৃত্রশ্চ স্তুমহাকাযো যো বৈ লোকাননাশ-  
 যৎ ॥ ২০ ॥ বৃহস্পতিরুবাচ । মানুষ্যো নহস্যো রাজা দেবর্ষিগণতেজসা । দেবরা-  
 জ্যমনুপ্রাপ্তঃ সর্বান্নো বাধতে ভশম্ ॥ ২১ ॥ শক্র উবাচ । কথম্ নহস্যো রাজ্যং  
 দেবানাং প্রাপ দুর্লভম্ । তপসা কেন বা যুক্তঃ কিংবীর্যেয়া বা বৃহস্পতে ॥ ২২ ॥  
 বৃহস্পতিরুবাচ । দেবা ভীতাঃ শক্র নাকামযন্ত ত্বয়া ত্যক্তং মহদৈন্দ্রং পদ-  
 স্তুৎ ॥ ২৩ ॥ তদা দেবাঃ পিতরোহর্ষষশ্চ গন্ধর্ষমুখ্যাশ্চ সমেত্য সর্বে । গৃহ্মাক্রবন্ম-  
 হ্ষং শক্র তত্র ত্বমো রাজা ভব ভুবনস্য গোপ্তা ॥ ২৪ ॥ তানত্রবীমহস্যো নাশ্মি  
 শক্র আপ্যায়ধ্বং তপসা তেজসা মাম্ । এবমুক্তৈর্বর্কিতশ্চাপি দেবৈ রাজাভবন্মহস্যো  
 ঘোরবীর্যঃ । ত্রৈলোক্যে চ প্রাপ্য রাজ্যং মহর্ষীন্ কৃত্বা বাহান্ যাতি লোকান্  
 দুরাত্মা ॥ ২৫ ॥ তেজোহরং দৃষ্টিবিষং সুঘোরং মা ত্বং পশ্যেন্নহ্ষং বৈ কদাচিত্ ।  
 দেবাশ্চ সর্বে নহ্ষং ভযার্ভা ন পশ্যন্তে গূঢ়রূপাশ্চরন্তঃ ॥ ২৬ ॥ শল্য উবাচ ।  
 এবং বদত্যাঙ্গিরসাং বরিষ্ঠে বৃহস্পতো লোকপালঃ কুবেরঃ । বৈবস্বতশ্চৈব যমঃ  
 পুরাণো দেবশ্চ সোমো বরুণশ্চাজগাম ॥ ২৭ ॥ তে বৈ সমাসাদ্য মহেন্দ্রমুচির্দৃষ্টিয়া  
 ত্রাষ্ট্রো নিহতশ্চৈব বৃত্রঃ । দৃষ্টিয়া চ ত্বাং কুশলিনমক্ষতঞ্চ পশ্যাম বৈ নিহতারিঞ্চ  
 শক্র ॥ ২৮ ॥ স তান্ যথাবচ্চ হি লোকপালান্ সমেত্য বৈ প্রীতমনা মহেন্দ্রঃ ।  
 উবাচ চৈতান্ প্রতিভাষ্য শক্রঃ সঞ্জেদযিষ্যন্নহ্ষস্যাস্তুরেণ । রাজা দেবানাং  
 নহস্যো ঘোররূপস্তত্র সহং দীযতাং মে ভবন্তিঃ ॥ ২৯ ॥ তে চাক্রবন্মহস্যো ঘোররূপো  
 দৃষ্টিবিষস্তস্য বিভীম ঙ্গিশ । ত্বঞ্জেদ্রাজানং নহ্ষং পরাজয়েস্ততো বযং ভাগম-  
 হ্যাম শক্র ॥ ৩০ ॥ ইন্দ্রোহত্রবীজ্ববতু ভবানপাংপতির্যমঃ কুবেরশ্চ মযাভিবেকম্ ।  
 সংপ্রাপ্নুবস্তদ্য সইব দৈবতৈরিপুং জযাম নহ্ষং ঘোরদৃষ্টিম্ ॥ ৩১ ॥ ততশ্চ  
 শক্রং জ্বলনোহপ্যাহ ভাগং প্রযচ্ছ মহং তব সহং করিষ্যে । তমাহ শক্রো ভবিতাগে

তথাপি চৈশ্রাণ্যো বৈ ভাগ একো মহাক্রতো ॥ ৩২ ॥ শল্য উবাচ । এবং সঙ্কিন্ত্য  
ভগবান্নহেঙ্গঃ পাকশাসনঃ । কুবেরং সর্বযক্ষাণাং ধনানাঞ্চ প্রভুং তথা ॥ ৩৩ ॥  
বৈবস্বতং পিতৃণাঞ্চ বরুণঞ্চাপ্যপাং তথা । আধিপত্যে দদৌ শক্রঃ সংকৃত্য বরদ-  
স্তদা ॥ ৩৪ ॥

ইত্যুদ্ভোগপর্বনি সৈন্যোদ্ভোগপর্বনি ইন্দ্রবরুণাদিসংবাদে

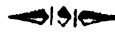
ষোড়শোহধ্যায়ঃ ॥ ১৬ ॥



শল্য উবাচ । অথ সঙ্কিন্ত্যানস্য দেবরাজস্য ধীমতঃ । নহ্ষস্য বধোপায়ং  
লোকপালৈঃ সদৈবতৈঃ । তপস্বী তত্র ভগবানগস্ত্যঃ প্রত্যদৃশ্যত ॥ ১ ॥ সোত্র-  
বীদচ্য দেবেশ্বং দিষ্ঠ্য বৈ বর্জিতে ভবান্ । বিশ্বকপবিনাশেন বৃত্রাসুরবধেন  
চ ॥ ২ ॥ দিষ্ঠ্য চ নহ্ষো ভূষ্ঠো দেবরাজ্যাং পুরন্দর । দিষ্ঠ্য হতারিং পশ্যামি  
ভবন্তং বলসূদন ॥ ৩ ॥ ইন্দ্র উবাচ । স্বগতন্তে মহর্ষেহস্তু প্রীতোহহং দর্শনা-  
ত্তব । পাদ্যমাচমনীয়ঞ্চ গামর্ঘ্যঞ্চ প্রতীচ্ছ মে ॥ ৪ ॥ শল্য উবাচ । পূজিতশ্চোপ-  
বিষ্টন্তমাসনে মুনিসত্তমম্ । পর্যাপৃচ্ছত দেবেশঃ প্রহৃষ্টো ব্রাহ্মণর্ষভম্ ॥ ৫ ॥  
এতদিচ্ছামি ভগবন্ কথ্যমানং দ্বিজোত্তম । পরিভ্রুষ্টিং কথং স্বর্গান্নহ্ষঃ পাপনি-  
শ্চয়ঃ ॥ ৬ ॥ অগস্ত্য উবাচ । শ্বণু শক্র প্রিযং বাক্যং যথা রাজা দুরাত্মবান্ ।  
স্বর্গান্নুষ্ঠো দুরাচারো নহ্ষো বলদর্পিতঃ ॥ ৭ ॥ শ্রমার্ভাস্তু বহন্তস্তং নহ্ষং পাপ-  
কারিণম্ । দেবর্ষযো মহাভাগাস্তথা ব্রহ্মর্ষযোহমলাঃ । পপ্রচ্ছুনহ্ষং দেব সংশয়ং  
জযতাম্বর ॥ ৮ ॥ য ইমে ব্রাহ্মণাঃ প্রোক্তা মন্ত্রা বৈপ্রোক্ষণে গবান্ । এতে প্রমাণং  
ভবত উতাহো নেতি বাসব । নহ্ষো নেতি তানাহ তমসা মুচচেতনঃ ॥ ৯ ॥ ঋষয়  
উচুঃ । অধর্ম্মে সংপ্রবৃত্তস্তং ধর্ম্মং ন প্রতিপদ্যসে । প্রমাণমেতদস্মাকং পূর্বং  
প্রোক্তং মহর্ষিভিঃ ॥ ১০ ॥ অগস্ত্য উবাচ । ততো বিবদমানঃ স মুনিভিঃ সহ  
বাসব । অথ মামস্পৃশ্ণুর্দ্ধি পাদেনাধর্ম্মপীড়িতঃ ॥ ১১ ॥ তেনাভূদ্ধততেজাশ্চ  
নিঃশ্রীকশ্চ শচীপতে । ততস্তমহমাবিগ্নমবোচং ভষপীড়িতম্ ॥ ১২ ॥ যস্মাৎ পূর্বেঃ  
কৃতং ব্রহ্ম ব্রহ্মর্ষিভিরনুষ্ঠিতম্ । অদুষ্টিং দুষ্যসি বৈ যন্মে মুর্দ্ধ্যস্পৃশং পদা ॥ ১৩ ॥  
যচ্চাপি হুমৃষীন্মূচ ব্রহ্মকল্মাশ দুরাসদান্ । বাহান্ কৃত্বা বাহ্যসি তেন স্বর্গাঙ্কতপ্রভঃ ।  
ধ্বংস পাপ পরিভ্রুষ্টিঃ ক্ষীণপুণ্যো মহীতলম্ ॥ ১৪ ॥ দশ বর্ষসহস্রাণি সপর্কপধরো  
মহান্ । বিচরিষ্যসি পূর্ণেষু পুনঃ স্বর্গমবাপ্যসি ॥ ১৫ ॥ এবং ভূষ্ঠো দুরাত্মা স  
দেবরাজ্যাদরিন্দম । দিষ্ঠ্য বর্জ্যামহে শক্র হতো ব্রাহ্মণকণ্টকঃ ॥ ১৬ ॥ ত্রিপিষ্টিপং

प्रपद्यस्व पाहि लोकान् शचीपते । जितेन्द्रियो जितामित्रः सुखमानो महर्षि-  
भिः ॥ ११ ॥ शल्य उवाच । ततो देवा हृशं तूष्ठा महर्षिगणसंवृताः । पितर-  
श्चैव यक्षाश्च भुजगा राक्षसास्तथा ॥ १८ ॥ गन्धर्वा देवकन्याश्च सर्वे चाप्सरसां  
गणाः । सुरांसि सरितः शैलाः सागराश्च विशाल्पते ॥ १२ ॥ उपगम्याक्रुवन्  
सर्वे दिव्या बर्हसि शत्रून् । हतश्च नृशंसः पापो दिव्यागस्त्येन धीमता । दिव्या  
पापसमाचारः क्रुतः सर्पो महीतले ॥ २० ॥

इत्युद्योगपर्वणि सैन्योद्योगपर्वणि इन्द्रागस्त्यसंवादे  
नृशंसभुंशे सप्तदशोऽध्यायः ॥ ११॥



शल्य उवाच । ततः शक्रसुखमानो गन्धर्वाप्सरसाङ्गैः । ऐरावतं समारूह्य  
द्विपेन्द्रं लक्ष्मणैर्युतम् ॥ १॥ पावकश्च महातेजा महर्षिश्च बृहस्पतिः । यमश्च वरुण-  
श्चैव कुबेरश्च धनेश्वरः ॥ २ ॥ सर्वैर्देवैः परिवृतः शक्रो बृत्रनिस्तूदनः । गन्ध-  
र्वाप्सरौतिश्च यातस्त्रिभुवनं प्रभुः ॥ ३ ॥ स समेत्य महेश्चाग्या देवराजः शत-  
क्रतुः । मुदा परमया युक्तः पालयामास देवराट् ॥ ४ ॥ ततः स भगवांस्तत्र अङ्घ्रि-  
राः समदृश्यत । अथर्ववेदंमन्त्रैश्च देवेन्द्रं समपूजयत् ॥ ५ ॥ ततस्तु भगवानिन्द्रः  
प्रहृष्टः समपद्यत । वरुणं प्रददौ तस्मै अथर्वाङ्घ्रिरसे तदा ॥ ६ ॥ अथर्वाङ्घ्रिरसो  
नाम वेदेऽस्मिन् वै भविष्यति । उदाहरणमेतद्धि यद्भृतागणं लप्स्यसे ॥ ७ ॥ एवं  
सम्पूज्य भगवानथर्वाङ्घ्रिरसं तदा । व्यासङ्कर्षणमारुह्य देवराजः शतक्रतुः ॥ ८ ॥  
संपूज्य सर्वांस्त्रिदशानृषींश्चापि तपोधनान् । इन्द्रः प्रमुदितो राजन् धर्मैणापा-  
लयत् प्रजाः ॥ ९ ॥ एवं दुःखमनुप्राप्तुमिच्छेत्सह सह भार्यया । अङ्घ्रातवासश्च क्रुतः  
शत्रुणां वधकाङ्क्षया ॥ १० ॥ नात्र मनुष्यस्तुया कार्येया यत् किञ्चोऽसि महाबने ।  
द्रोपद्या सह राजेन्द्र भ्रातृभिश्च महाश्रुभिः ॥ ११ ॥ एवं ह्यमपि राजेन्द्र राज्यं  
प्राप्स्यसि भारत । बृत्रं हृत्वा यथा प्राप्तः शक्रः कौरवनन्दन ॥ १२ ॥ दुराचारश्च  
नृशंसो ब्रह्मद्विष्टः पापचेतनः । अगस्त्यशापाभिहतो विनष्टः शाश्वतीः समाः ॥ १३ ॥  
एवं तव दुरात्मानः शत्रवः शत्रुस्तूदन । क्षिप्रं नाशं गमिष्यन्ति कर्णदुर्वेद्याधना-  
दयः ॥ १४ ॥ ततः सागरपर्यस्तान् भोक्त्यसे मेदिनीमिमाम् । भ्रातृभिः परितो  
वीर द्रोपद्या च सह प्रभो ॥ १५ ॥ उपाख्यानमिदं शक्रविजयं वेदसन्मितम् ।  
राज्जा व्यूढेष्वनीकेषु श्रोतव्यं जयमिच्छता ॥ १६ ॥ तस्मात्संश्रावयामि ह्यं विजयं  
जयताश्वर । संसुखमाना बर्हस्ते महाश्रानो युधिष्ठिर ॥ १७ ॥ कल्पियाणामभावोऽयं

যুধিষ্ঠির মহাত্মনাম্ । দুৰ্য্যোধনাপরাধেন ভীমার্জুনবলেন চ ॥ ১৮ ॥ আখ্যান-  
মিস্রবিজয়ং য ইদং নিযতঃ পঠেৎ । ধৃতপাপা জিতস্বর্গঃ প্রেত্য চেহ চ মোদ-  
তে ॥ ১৯ ॥ ন চারিজং ভৃষং তস্য নাপুলো বা ভবেন্নরঃ । নাপদং প্রাপ্নুবাৎ  
কাঞ্চিদীর্ঘমায়ুশ্চ বিন্দতি । সর্বত্র জয়মাপ্নোতি ন কদাচিত্ পরাজয়ম্ ॥ ২০ ॥ বৈশ-  
ম্পায়ন উবাচ । এবমাশ্বাসিতো রাজা শল্যেন ভরতর্ষভ । পূজয়ামাস বিধিবচ্ছল্যং  
ধর্মভূতাংবরঃ ॥ ২১ ॥ শ্রুত্বা তু শল্যবচনং কুন্তীপুলো যুধিষ্ঠিরঃ । প্রত্যুবাচ মহা-  
বাহুর্মদ্ররাজমিদং বচঃ ॥ ২২ ॥ ভবান্ কর্ণস্য সারথ্যং করিষ্যতি ন সংশয়ঃ ।  
তত্র তেজোবধঃ কার্য্যঃ কর্ণস্যার্জুনসংস্রবঃ ॥ ২৩ ॥ শল্য উবাচ । এবমেতৎ করি-  
ষ্যামি যথা মাং সংপ্রভাষসে । যচ্চান্যদপি শক্যামি তৎ করিষ্যাম্যহং তব ॥ ২৪ ॥  
বৈশম্পায়ন উবাচ । ততস্ত্বামন্ত্র্য কৌন্তেযান্ শল্যো মদ্রাধিপস্তদা । জগাম সবলঃ  
শ্রীমান্ দুৰ্য্যোধনমরিন্দম ॥ ২৫ ॥

ইত্যুদ্ধোগপর্বণি সৈন্যোদ্ধোগপর্বণি শল্যগমনে অষ্টাদশোহধ্যায়ঃ ॥ ১৮ ॥



বৈশম্পায়ন উবাচ । যুযুধানস্ততো বীরঃ সাত্ততানাং মহারথঃ । মহতা চতুরঙ্গেণ  
বলেনাগাদ্যুধিষ্ঠিরম্ ॥ ১ ॥ তস্য যোধা মহাবীর্যা নানাদেশসমাগতাঃ । নানা-  
প্রহরণা বীরাঃ শোভযাঞ্চক্রিরে বলম্ ॥ ২ ॥ পরশ্বধৈর্ভিন্দিপালৈঃ শক্তিতোমর-  
মুদগারৈঃ । পরিঘৈর্ঘষ্টিভিঃ প্রাসৈঃ করবালৈশ্চ নিশ্চলৈঃ ॥ ৩ ॥ খজ্জকাস্মুকনির্ঘূ-  
তৈঃ শরৈশ্চ বিবিধৈরপি । তৈলধৌতৈঃ প্রকাশদ্বিস্তদশোভত বৈ বলম্ ॥ ৪ ॥  
তস্য মেঘপ্রকাশস্য শস্ত্রৈস্তৈঃ শোভিতস্য চ । বভূব রূপং সৈন্যস্য মেঘস্যেব  
সবিদ্যুতঃ ॥ ৫ ॥ অক্ষৌহিনী হি সেনা সা তদা যৌধিষ্ঠিরং বলম্ । প্রবিশ্যাস্তর্দধে  
রাজন্ সাগরং কুন্দী যথা ॥ ৬ ॥ তথৈবাক্ষৌহিনীং গৃহ চেদীনামৃষভো বলী ।  
ধৃষ্টকৈতুরূপাগচ্ছৎ পাণ্ডবানমিতৌজসঃ ॥ ৭ ॥ মাগধশ্চ জয়ৎসেনো জারাসন্ধি-  
র্মহাবলঃ । অক্ষৌহিন্যেব সৈন্যস্য ধর্মরাজমুপাগমৎ ॥ ৮ ॥ তথৈব পাণ্ডেয়া রা-  
জেন্দ্রং সাগরানুপবাসিভিঃ । বৃতো বহুবৈধৈর্ষৌধৈর্ঘুধিষ্ঠিরমুপাগমৎ ॥ ৯ ॥ তস্য  
সৈন্যমতীবাসীভূস্মিন্ বলসমাগমে । প্রেক্ষণীয়তরং রাজন্ সুবেশং বলবত্তদা ॥ ১০ ॥  
ক্রপদস্যাপ্যভূৎ সেনা নানাদেশসমাগতেঃ । শোভিতা পুরুষৈঃ শূরৈঃ পুত্রৈশ্চাস্য  
মহারথৈঃ ॥ ১১ ॥ তথৈব রাজা মৎস্যানাং বিরাতো বাহিনীপতিঃ । পার্বতীযৈ-  
র্মহীপালৈঃ সহিতঃ পাণ্ডবানিযাৎ ॥ ১২ ॥ ইতশ্চেতশ্চ পাণ্ডনাং সমাজগ্নুর্মহা-  
ত্মনাম্ । অক্ষৌহিন্যস্ত সঠৈস্তা বিবিধধ্বজসংকুলাঃ । যুযুৎসমানাঃ কুরুভিঃ পাণ্ড-



वान् समर्षयन् ॥ १७ ॥ तथैव धार्तराक्षस्य हर्षं समभिवर्क्षयन् । भगदत्तो मही-  
पालः सेनामक्रोहिणीं ददौ ॥ १४ ॥ तस्य चीनैः किरातैश्च काक्षनैरिव सं-  
वृतम् । वभौ बलमनाधृष्यं कर्णिकारवनं यथा ॥ १५ ॥ तथा भूरिश्रवाः शूरः शंल्यश्च  
कुरुनन्दन । दुर्योधनमुपायातावक्रोहिण्या पृथक् पृथक् ॥ १६ ॥ कृतवर्मा च हा-  
र्दिक्यो भोजाङ्गकुकुरैः सह । अक्रोहिण्यैव सेनाया दुर्योधनमुपागमत् ॥ १७ ॥  
तस्य तैः पुरुषव्याघ्रैर्बनमालाधरैर्बलम् । अशोभत यथा मन्त्रैर्बनं प्रक्रीडितैर्ग-  
जैः ॥ १८ ॥ जयद्रथमुखाश्चान्ये सिद्धसौवीरवासिनः । आजगुः पृथिवीपालाः  
कम्पयन्तु इवाचलान् ॥ १९ ॥ तेषामक्रोहिणीं सेनां बहला विवभौ तदा । विधुय-  
मानो वातेन बहूप इवायुदः ॥ २० ॥ सुदक्षिणश्च काञ्चोजो यवनैश्च शकै-  
स्तथा । उपार्जगाम कौरव्यमक्रोहिण्या विशाम्पते ॥ २१ ॥ तस्य सेनासमावायः  
शलभानामिवावभौ । स च संप्राप्य कौरव्यं तत्रैवास्तुर्द्धधे तदा ॥ २२ ॥ तथा  
माहिष्मतीवासि नीलो नीलायुधैः सह । महीपालो महावीर्यैर्दक्षिणापथवासि-  
तिः ॥ २३ ॥ आवस्त्यो च महीपालो महाबलसुसंवृतो । पृथगक्रोहिणीभ्यास्तु-  
वतिषातो सुयोधनम् ॥ २४ ॥ कैकेयाश्च नरव्याघ्राः सेनदर्याः पङ्क पार्थिवः ।  
संहर्षयन्तुः कौरव्यमक्रोहिण्या समाद्रवन् ॥ २५ ॥ ततस्ततस्तु सर्वेषां भूमिपानां  
महाङ्गनाम् । तिस्रोहन्याः समवर्तन्तु बाहिन्या भरतर्षभ ॥ २६ ॥ एवमेकादशावृत्ताः  
सेना दुर्योधनस्य ताः । युयुत्समानाः कौन्तेयान् नानाध्वजसमाकुलाः ॥ २७ ॥  
न हास्तिनपुरे राजम्वकाशोऽभवत्तदा । राज्ञां स्वबलमुख्यानां प्राधान्येनापि  
भारत ॥ २८ ॥ ततः पङ्कनदक्षैव क्रुत्सङ्ग कुरुजाङ्गलम् । तथा रोहितकारण्यं  
मरुभूमिश्च केवला ॥ २९ ॥ अहिच्छत्रा कालकूटी गङ्गाकुलङ्ग भारत । वरुणा वाट-  
धानङ्ग यामुनैश्चैव पर्वतः ॥ ३० ॥ एष देशः सुविस्तीर्णः प्रभूतधनधान्यवान् ।  
वभूव कौरवेयाणां बलेन सुसमाकुलः ॥ ३१ ॥ तत्रु सैन्यं तथायुक्तं ददर्श स  
पुरोहितः । यः स पाण्डालराजेन प्रेषितः कौरवान् प्रति ॥ ३२ ॥

इत्युद्योगपर्वणि सैन्योद्योगपर्वणि पुरोहितसैन्यदर्शने

एकोनविंशतितमोऽध्यायः ॥ १२ ॥

समाप्तुङ्ग सैन्योद्योगपर्व ।



अथ सङ्गघनपर्व ।

वैशम्पायन उवाच । स तु कौरव्यमासाद्य द्रुपदस्य पुरोहितः । संकृतो धृ-  
त-

राष्ट्रेण तीक्ष्णेण विदुरेण च ॥ १ ॥ सर्वं कौशल्यमुक्त्वादौ पृष्ट्वा चैवमनामयम् ।  
 सर्वसैन्यप्रणेतृणां मध्ये वाक्यमुवाच ह ॥ २ ॥ सर्वैर्भवन्तिर्विदितो राजधर्मः सना-  
 तनः । वाक्योपादानहेतोस्तु वक्ष्यामि विदिते सति ॥ ३ ॥ धृतराष्ट्रश्च पाण्डुश्च  
 सूतावेकस्य विश्रुतो । तयोः समानं द्रविणं पैतृकं नात्र संशयः ॥ ४ ॥ धृतरा-  
 ष्टुस्य ये पुत्राः प्राप्नुवन्तेः पैतृकं वसु । पाण्डुपुत्राः कथं नाम न प्राप्ताः पैतृकं  
 वसु ॥ ५ ॥ एवञ्जते पाण्डुवैर्विदितं वः पुरा यथा । न प्रापुं पैतृकं द्रव्यं  
 धार्तराष्ट्रेण संवृतम् ॥ ६ ॥ प्राणान्तिकेरप्युपायैः प्रयतन्तिरनेकशः । शेषवस्तो  
 न शकित्वा गमितुं यमसामनम् ॥ ७ ॥ पुनश्च वर्द्धितं राज्यं स्वबलेन महाश्रुतिः ।  
 ह्यनापहतं क्लृप्तेर्धार्तराष्ट्रेः समो वलैः ॥ ८ ॥ तदप्यनुमतं कर्म यथायुक्त-  
 मनेन वै । वासिताश्च महारण्ये वर्षानीह त्रयोदश ॥ ९ ॥ सभायां कुशितेर्वी-  
 रैः सहचार्यैस्तथा भृशम् । अरण्ये विविधाः कुशाः सं प्राप्नुवन्तेः सुदारुणाः ॥ १० ॥  
 तथा विराटनगरे योन्यस्तुरगतेरिव । सं प्रापुः परमः कुशो यथा पापैर्माहा-  
 श्रुतिः ॥ ११ ॥ ते सर्वे पृथुतः क्रुद्धा तं सर्वं पूर्वकिल्बिषम् । सांमैव कुरुभिः सार्द्ध-  
 मिच्छन्ति कुरुपुङ्गवाः ॥ १२ ॥ तेषां वृद्धमाज्ज्याय वृद्धं दुर्योधनस्य च । अन्वने-  
 तुमिहार्हन्ति धार्तराष्ट्रं सुहृज्जनाः ॥ १३ ॥ न हि ते विग्रहं वीराः कुर्वन्ति कुरुभिः  
 सह । अविनाशेन लोकस्य काङ्क्षन्ते पाण्डवाः स्वकम् ॥ १४ ॥ यश्चापि धार्तराष्टुस्य  
 हेतुः स्याद्विग्रहं प्रति । स च हेतुर्न मन्तव्यो बलीयांसस्तथा हि ते ॥ १५ ॥ अक्लो-  
 हिण्यश्च संप्लव धर्मपुत्रस्य सङ्गताः । युयुत्समानाः कुरुभिः प्रतीकृतेः स्य शास-  
 नम् ॥ १६ ॥ अपरे पुरुषव्याघ्राः सहस्राक्लोहिणीसमाः । सात्यकिर्भीमसेनश्च यमो  
 च सुमहाबलो ॥ १७ ॥ एकदशैताः पृथना एकतश्च समागताः । एकतश्च महाबा-  
 ह्वर्षकूपो धनञ्जयः ॥ १८ ॥ यथा किरीटी सेनाभ्यः सर्वाभ्योऽप्यतिरिच्यते । एव-  
 मेष महाबुद्धिर्बासुदेवो महादुःखितः ॥ १९ ॥ बह्वलङ्घं सेनानां विक्रमं किरी-  
 टिनः । बुद्धिमत्तं कुरुस्य बुद्ध्या युध्यत को नरः ॥ २० ॥ ते भवन्तो यथाधर्मं  
 यथासमयमेव च । प्रयच्छन् प्रदातव्यं वा वः कालोऽत्यगादयम् ॥ २१ ॥

इत्युद्देश्यगपर्वणि सङ्गवधानपर्वणि पुरोहितवाक्ये

विंशतितमोऽध्यायः ॥ २० ॥



वैशम्पायन उवाच । तस्य तद्वचनं श्रुत्वा प्रज्जावृद्धो महादुःखितः । संपूज्येनं  
 यथाकामं तीक्ष्णो वचनमब्रवीत् ॥ १ ॥ दिष्ट्या कुशलिनः सर्वे सह दामोदरेण ते ।

दिक्या सहायवस्तुश्च दिक्या धर्मो च ते रताः ॥ २ ॥ दिक्या च सन्निकामास्ते भ्रातरः  
 कुरूनन्दनाः । दिक्या न युद्धमनसः पाण्डवाः सह बान्धवैः ॥ ३ ॥ भवता सत्यमुक्तु  
 सर्वमेतन्नसंशयः । अतितीक्ष्णं ते वाक्यं ब्राह्मण्यादिति मे मतिः ॥ ४ ॥ असं-  
 शयं कुशितास्ते वने चेह च पाण्डवाः । प्राप्ताश्च धर्मतः सर्वं पितुर्धनमसंश-  
 यम् ॥ ५ ॥ किर्रीटी बलवान् पार्थः कूर्तास्त्रश्च महारथः । को हि पाण्डुस्तुतं युद्धे  
 विषहेत धनङ्गयम् ॥ ६ ॥ अपि बज्रधरः साक्षात् किमुभान्ये धमुर्भूतः । त्रयाणामपि  
 लोकानां समर्थ इति मे मतिः ॥ ७ ॥ तीक्ष्णं क्ववति तद्वाक्यं धृष्टमाक्षिप्य मनु-  
 मान् । दुर्योधनं समालोक्य कर्णे वचनमब्रवीत् ॥ ८ ॥ न तन्न विदितं ब्रह्म-  
 ञ्जोके भूतेन केनचित् । पुनरुक्तेन किञ्चन भाषितेन पुनः पुनः ॥ ९ ॥ दुर्यो-  
 धनार्थं शकुनिदूर्यते निर्जितवान् पुरा । समयेन गतोऽरुण्यं पाण्डुपुत्रो युधिष्ठी-  
 रः ॥ १० ॥ न तं समयमादृत्य राज्यमिच्छति पैतृकम् । बलमाश्रित्य मत्स्यानां  
 पक्षालानां पार्थिवः ॥ ११ ॥ दुर्योधनो भयोद्धिग्नो न दद्यात् पादमस्तुतः ।  
 धर्मतस्तु महीं कृत्वा प्रदद्याच्छत्रवेऽपि च ॥ १२ ॥ यदि काङ्क्षन्ति ते राज्यं पितृ-  
 पैतामहं पुनः । यथाप्रतिज्ज्ञं कालस्तु चरन्तु वनमाश्रिताः ॥ १३ ॥ ततो दुर्यो-  
 धनस्यास्ते वर्तन्तामकुतोभयाः । अधार्मिकीस्तु मा बुद्धिं मोर्ख्यात् कुर्वन्तु केव-  
 लाम् ॥ १४ ॥ अथ ते धर्ममुत्सृज्य युद्धमिच्छन्ति पाण्डवाः । आसाद्येमान् कुरूश्रे-  
 ष्ठान् स्मरिष्यन्ति वचो मम ॥ १५ ॥ तीक्ष्ण उवाच । किमु राधेष वाचा ते कर्म तं स्म-  
 र्तुमर्हसि । एक एव यदा पार्थः षड्रथान् जितवान् युधि ॥ १६ ॥ न चेदेवं करि-  
 ष्यामो यदयं ब्रह्मणोऽब्रवीत् । ध्रुवं युधि हतास्तेन भक्षयिष्याम पांशुकान् ॥ १७ ॥  
 वैशम्पायन उवाच । धृतराष्ट्रस्ततो तीक्ष्णमनुमान्य प्रसाद्य च । अबभूत्स्य च राधे-  
 षमिदं वचनमब्रवीत् ॥ १८ ॥ अस्मद्विनिदं वाक्यं तीक्ष्णः शास्तनवोऽब्रवीत् ।  
 पाण्डवानां हितंैव सर्वस्य जगतस्तथा ॥ १९ ॥ चिन्तयिष्या तू पार्थेभ्यः प्रेषयि-  
 ष्यामि सङ्गयम् । स भवान् प्रतियाह्वय पाण्डवानेव मा चिरम् ॥ २० ॥ स तं सत्कृत्य  
 कौरवाः प्रेषयामास पाण्डवान् । सभामध्ये समाहूय सङ्गयं वाक्यमब्रवीत् ॥ २१ ॥

इत्युद्योगपर्वणि सङ्गयानपर्वणि सङ्गयाह्वाने

एक विंशतितमोऽध्यायः ॥ २१ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । प्राप्तानाहः सङ्गय पाण्डुपुत्रात्पुत्रपुत्रव्ये तान् विजानीहि गम्हा ।  
 अजातशत्रुः सभाजयेथा दिक्यानय ग्राममुपस्थितस्तुम् ॥ १ ॥ सर्वान् वदेः सङ्गय

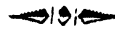
स्वस्तिमस्तुः कृच्छ्रं वासमतदर्हा निरुष्य । तेषां शान्तिर्बिद्यतेऽन्त्यान् शीघ्रं मिथ्या-  
 पेतानानुपकारिणां सताम् ॥ २ ॥ नहं क्वचिं सङ्गय पाण्डवानां मिथ्यावृत्तिं  
 काष्णं ज्ञात्वापश्यां । सर्वां श्रियं ह्याश्ववीर्येण लक्षां पर्याकार्युः पाण्डवा मह  
 मेव ॥ ३ ॥ दोषं ह्येषां नाद्यगच्छं परीप्सन् नित्यं कश्चिद्देव गर्ह्य पाथान् ।  
 धर्मार्थाभ्यां कर्म कूर्वन्ति नित्यं सुखप्रिये नानुरुध्यन्ति कामां ॥ ४ ॥ यन्मशीते  
 क्लृपिपासे तथैव निद्रां तस्त्रीं क्रोधहर्षो प्रमादम् । धृत्या चैव प्रज्जया चाभि-  
 दूय धर्मार्थयोगान् प्रतिवन्ति पार्थाः ॥ ५ ॥ त्यजन्ति मित्रेषु धनानि काले न सन्धा-  
 साज्जीर्यति तेषु मैत्री । यथाईमानार्थकरा हि पार्थास्तेषां द्वेषा नान्त्याजमीट-  
 पक्के ॥ ६ ॥ अन्यत्र पापाद्विषमामन्दबुद्धेर्दुर्योधनां क्रुद्रतराक्ष कर्णां । तेषां  
 हीमो हीनसुखप्रियाणां महाअनां वर्द्धयतो हि तेजः ॥ ७ ॥ उत्थानवीर्याः  
 सुखमेधमानो दुर्योधनः सुकृतं मन्यते तं । तेषां भागं यच्च मन्येत बालः  
 शक्यं हर्तुं जीवतां पाण्डवानाम् ॥ ८ ॥ यस्यार्जुनः पदवीं केशवश्च वृकोदरः  
 सात्यकोऽजातशत्रोः । माद्रीपुत्रो मृगयाश्चापि यास्ति पुरा युद्धां साधु तस्य  
 प्रदानम् ॥ ९ ॥ स ह्येवैकः पृथिवीं सव्यसाची गाण्डीवध्वा प्रणुदेद्रथश्च । तथा  
 जिष्णुः केशवोऽप्यप्रधृष्ये लोकत्रयस्याधिपतिर्मुहात्मा ॥ १० ॥ तिष्ठेत् कस्तस्य  
 मर्त्यः पुरस्ताद्व्यः सर्वलोकेषु वरेण्य एकः । पर्जन्यघोषान् प्रवपङ्कुरोषान् पतङ्ग-  
 सञ्चानिध शीघ्रवेगान् ॥ ११ ॥ दिशं ह्युदीचीमपि चोत्तरान् कुक्कान् गाण्डीवध्वैक-  
 रथो जिगाय । धनश्रेयामाहरं सव्यसाची सेनानुगान् द्राविडांश्चैव चक्रे ॥ १२ ॥  
 यश्चैव देवान् खाण्डवे सव्यसाची गाण्डीवध्वा प्रजिगाय सेन्द्रान् । उग्राहरं फा-  
 ल्गुनो जातवेदसे यशो मानं वर्द्धयन् पाण्डवानाम् ॥ १३ ॥ गदाभृतां भीम-  
 समो न कश्चिद्वस्यारोहो नास्ति समश्च तस्य । रथेऽर्जुनादाहरहीनमेनं बाह्यो-  
 र्वले चायुतनागवीर्यम् ॥ १४ ॥ सुशिक्षितः कृतवैरस्तुरशी दहेत् क्रुद्धस्तुरसा धूर्त-  
 राष्ट्रान् । सदात्यमर्षी बलवान् शक्यो युद्धे जेतुं वासवेनापि साक्षात् ॥ १५ ॥  
 सूचेतसो बलिनो शीघ्रहस्तौ सुशिक्षितौ भ्रातरौ फाल्गुनेन । श्येनौ यथा पक्षि-  
 पुगान् क्रुद्धस्तौ माद्रीसूतो शेषथेतां न शत्रून् ॥ १६ ॥ एतद्वलं पूर्णमस्माकमेवं  
 यत् सत्यं तान् प्राप्य नास्तीति मन्ये । तेषां मध्ये वर्द्धमानस्तुरशी धृष्टदुम्नः  
 पाण्डवानामिहैकः ॥ १७ ॥ सहामात्यः सोमकानां प्रवहः सन्त्यज्जात्वा पाण्डवार्थे  
 ऋतो मे । अजातशत्रुं प्रसहेत् कोऽन्यो येषां स स्यादग्रणीर्बृषिसिंहः ॥ १८ ॥  
 सहोषितश्चरितार्थो वयस्त्रे । मांस्येथानामधिपो वै विराटः । स वै सपुत्रः

पाण्डुवार्थे च शश्वदयुधिष्ठिरे भक्त इति श्रुतं मे ॥ १९ ॥ अवरुद्धा बलिनः केक-  
 येतो महेश्वासो भ्रातरः पक्ष सन्ति । कैकेयेतो राज्यामाकाङ्क्षमाणा युद्धार्थिन-  
 श्चान्नुवसन्ति पार्थान् ॥ २० ॥ सर्वे च वीराः पृथिवीपतीनां समानीताः पाण्डुवार्थे  
 निविष्टाः । शूरानर्हान् भक्तिमतः शृणोमि प्रीत्या युक्तान् संश्रितान् धर्मरा-  
 जम् ॥ २१ ॥ गिर्याश्रया दुर्गनिवासिनश्च घोषाः पृथिव्यां कुलजाश्च वृक्षाः ।  
 म्लेच्छाश्च नानायुधवीर्यवन्तः समागताः पाण्डुवार्थे निविष्टाः ॥ २२ ॥ पाण्डुश्च राजा  
 समितीन्द्रकन्नो युधि प्रवीरैरैरहृत्भिः समेतः । समागतः पाण्डुवार्थे महान्ना लोक-  
 प्रवीरोऽप्रतिवीर्यातेजाः ॥ २३ ॥ अस्त्रं द्रोणादङ्गुनाद्वासुदेवात् रूपाङ्गीष्वा-  
 क्षेपेन वृतं शृणोमि । यत्तं कार्ष्णिप्रतिममाहुरेकं स सात्यकिः पाण्डुवार्थे  
 निविष्टः ॥ २४ ॥ उपाश्रिताश्चेदिककषकाश्च सर्वोदघोर्गैर्भूमिपालाः समेताः ।  
 तेषां मध्ये सूर्यामिवातपन्तं श्रियावृतं चेदिपतिं ज्वलन्तम् ॥ २५ ॥ अस्तु-  
 नीयं युधि मन्यमानो ज्यां कर्षतां श्रेष्ठतमं पृथिव्याम् । सर्वोऽसाहं कलि-  
 याणां निहत्य प्रसह्य क्रूरसुरसा संममर्द ॥ २६ ॥ यशोमानो वर्द्धयन् पाण्डवानां  
 पुरातिनच्छिञ्चुपालं समीक्ष्य । यस्य सर्वे वर्द्धयन्ति स्य मानं कर्षुराजिप्रमुखा  
 नरेन्द्राः ॥ २७ ॥ तमसहं केशवस्तत्र मत्वा सुग्रीवयुक्तेन रथेन क्रूरम् । संप्रा-  
 द्रवंश्चेदिपतिं विहाय सिंहं दृष्ट्वा क्षुद्रमृगा इवान्ये ॥ २८ ॥ यस्तु प्रतीपं  
 तरसा प्रत्यूदीयादाशंसमानो द्वैरथे वासुदेवम् । सोऽशेत क्रूरेण हतः परासु-  
 र्वातेनेवोन्मथितः कर्णिकारः ॥ २९ ॥ पराक्रमं मे यदवेदयन्त तेषामर्थे सङ्गय  
 केशवस्य । अस्म्यरंस्तस्य कर्माणि जिष्णोर्गावल्गने नाधिगच्छामि शान्तिम् ॥ ३० ॥  
 न जातु तान् शत्रुरन्यः सहेत षेषां स स्यादग्रणीर्बृष्णिसिंहः । प्रवेपते मे हृदयं  
 भयेन शत्रुः क्रूरावेकरथे समेतो ॥ ३१ ॥ न चेदाच्छेत् सङ्गरं मूढबुद्धि-  
 स्ताभ्यां लभेच्छर्म तदा सूतो मे । नो चेत् कुरुं सङ्गय निर्दहेतामिन्द्रोपेन्द्रो  
 र्दैत्यसेनां यथैव ॥ ३२ ॥ मतो हि मे शक्रसमो धनङ्गयः सनातनो वृष्णिवी-  
 रश्च विष्णुः । धर्मारामो ज्ञानिषेवस्तुरशी कुन्तीपुत्रः पाण्डुवोऽजातशत्रुः । दुर्यो-  
 धनेन निरुतो मनशी नो चेत् क्रूरेः प्रदहेत्कारुण्येन ॥ ३३ ॥ नाहस्तथा हङ्गु-  
 नाद्वासुदेवाङ्गीमाहापि यमयोर्वा विभेमि । यथा राज्ञः क्रोधदीप्तस्य सूत मन्यो-  
 र्ग्रहं भीततरः सदैव ॥ ३४ ॥ महोत्तमा वक्रचर्येण युक्तः सक्रमोऽयं मानसस्तस्य सि-  
 द्धेः । तस्य क्रोधं सङ्गयाहं समीक्ष्य स्थाने जानन् भृशमस्यद्य भीतः ॥ ३५ ॥ स  
 गच्छ शीघ्रं प्रहितो रथेन पाण्डालराजस्य चमूनिवेशम् । अजातशत्रुं कुशलं स्य

पृच्छेः पुनः पुनः प्रीतियुक्तं वदेत्सुम् ॥ ७७ ॥ जनार्दनं तथापि समेत्य तात महा-  
मात्रं वीर्यवतामुदारम् । अनामयं मद्बचनेन पृच्छेर्द्धतराष्ट्रुः पाण्डवैः शान्ति-  
मीप्सुः ॥ ७९ ॥ न तस्य किञ्चिद्वचनं न कुर्यात् कुन्तीपुत्रो वासुदेवस्य सूत ।  
प्रियं शैचयामात्समश्च कृष्णो विद्वांश्चैषां कर्मणि नित्ययुक्तः ॥ ७८ ॥ समानी-  
तान् सृष्टवान् पाण्डवांश्च जनार्दनं युयुधानं विराटम् । अनामयं मद्बचनेन  
पृच्छेः सर्वांस्तथा द्रौपदेयांश्च पण्ड ॥ ७९ ॥ यद्यत्तत्र प्राणुकालं परेत्यस्तुं  
मन्यथा भारतानां हितं । तत्रोद्योगेषु सङ्गय राजमध्ये न मूर्च्छयेत्स्य च  
युद्धहेतुः ॥ ८० ॥

इत्युद्योगपर्वणि सङ्गययानपर्वणि धृतराष्ट्रुवाक्ये

द्वाविंशतितमोऽध्यायः ॥ २२ ॥



वैशम्पायन उवाच । राज्ञस्तद्वचनं श्रुत्वा धृतराष्ट्रस्य सङ्गयः । उपप्लव्यं ययौ  
द्रुष्टं पाण्डवानमितोजसः ॥ १ ॥ स तु राजानमासाद्य कुन्तीपुत्रं युधिष्ठिरम् ।  
अतिवाद्य ततः पूर्वं सूतपुत्रोऽभ्युत्थत ॥ २ ॥ गावल्गणिः सङ्गयः सूतसूत्र-  
जातशत्रुमर्दं प्रतीतः । दिक्ष्या राजंस्त्वामरोगं प्रपश्ये सहायवन्तं महेन्द्र-  
कर्म ॥ ३ ॥ अनामयं पृच्छति द्वायिकेषो वृद्धो राजा धृतराष्ट्रो मनीषी । कच्चि-  
न्दीमः कुशली पाण्डवाद्यो धनङ्गयस्तो च माद्रीतनुजो ॥ ४ ॥ कच्चिं कृष्णो द्रौपदी  
राजपुत्री सत्यव्रता वीरपत्नी सपुत्रा । मनश्चिनी यत्र च बाङ्गसि द्वनिष्ठान् कामान्  
भारत स्वस्तिकामः ॥ ५ ॥ युधिष्ठिर उवाच । गावल्गणे सङ्गय स्वागतं हे प्रीयामहे  
ते वयं दर्शनेन । अनामयं प्रतिजाने तवाहं सहानुजैः कुशली चास्मि  
विद्वन् ॥ ६ ॥ चिरादिदं कुशलं भारतस्य श्रुत्वा राज्ञः कुरुवृद्धस्य सूत । मन्ये  
साक्षात् दृष्टमहं नरेन्द्रं दृष्टैव त्वां सङ्गय प्रीतियोगात् ॥ ७ ॥ पितामहो नः  
स्त्विवरो मनश्चि महाप्राङ्गः सर्वधर्मोपपन्नः । स कौरव्यः कुशली तात भीष्मो यथा-  
पूर्वं वृत्तिरुत्तमस्य कच्चि ॥ ८ ॥ कच्चिद्राजा धृतराष्ट्रुः सपुत्रो वैचित्रवीर्यः कुश-  
ली महात्मा । महाराजो बाल्किः प्रातिपेयः कच्चिद्विद्वान् कुशली सूतपुत्र ॥ ९ ॥  
स सोमदत्तः कुशली तात कच्चिं तुरिश्वाः सत्यसङ्गः शलश्च । द्रोणः सपुत्रश्च  
रूपश्च विप्रो महेश्वसाः कच्चिदेतेऽप्यरोगाः ॥ १० ॥ सर्वे कुरुत्यः स्पृहयन्ति  
सङ्गय-धनुर्धरा ये पृथिव्यां प्रधानाः । महाप्रज्जाः सर्वशास्त्रावदाता धनुर्भूतां  
मुख्यतमाः पृथिव्याम् ॥ ११ ॥ कच्चिन्मानं तात लतस्तु एते धनुर्भूतः कच्चिदेतेऽ-

প্যরোগাঃ । যেষাং রাষ্ট্রে নিবসতি দর্শনীষো মহেষাসঃ শীলবান্ দ্রোণপুত্রঃ ॥১২॥  
 বৈশ্যাপুত্রঃ কুশলী তাত কচ্চিন্নহাপ্রজ্ঞো রাজপুত্রো যুযুৎসুঃ । কর্ণোহমাত্যঃ  
 কুশলী তাত কচ্চিৎ সুযোধনো যস্য নন্দো বিধেযঃ ॥ ১৩ ॥ স্ত্রিষো বৃদ্ধা ভার-  
 তানাং জমন্যো মহানস্যো দাসভার্য্যাশ্চ সূত । বধঃ পুত্রা ভাগিনেযা ভগিন্যো  
 দৌহিত্রা বা কচ্চিদপ্যব্যলীকাঃ ॥ ১৪ ॥ কচ্চিদ্রাজা ব্রাহ্মণানাং যথাবৎ প্রবর্ততে  
 পূর্ববত্তাত বৃত্তিম্ । কচ্চিদাযান্মামকান্ ধার্তরাষ্ট্রে দ্বিজাতীনাং সঞ্জয় নোপহ-  
 স্তি ॥ ১৫ ॥ কচ্চিদ্রাজা ধৃতরাষ্ট্রঃ সপুত্র উপেক্ষতে ব্রাহ্মণাতক্রমান্ বৈ । স্বর্গস্য  
 কচ্চিন্ন তথাবর্ত্তভূতামুপেক্ষতে তেষু সদৈব বৃত্তিম্ ॥ ১৬ ॥ এতজ্জ্যোতিশ্চোত্তমং  
 জীবলোকে শুক্লং প্রজানাং বিহিতং বিধাত্রা । তে চেদ্যোষং ন নিযচ্ছস্তি মন্দাঃ  
 ক্লেশো নাশো ভবিতা কৌরবাণাম্ ॥ ১৭ ॥ কচ্চিদ্রাজা ধৃতরাষ্ট্রঃ সপুত্রো বুভুষতে  
 বৃত্তিমমাত্যবর্গে । কচ্চিন্ন ভেদেন জিজীবিষস্তি সুহৃদ্রূপা দুর্হৃদশ্চেকমত্যাৎ ॥ ১৮ ॥  
 কচ্চিন্ন পাপং কথযস্তি তাত তে পাণ্ডবানাং কুরবঃ সর্ব এব । দ্রোণঃ সপুত্রোহথ  
 রূপশ্চ বীরো নাস্মাসু পাপানি বদস্তি কচ্চিৎ ॥ ১৯ ॥ কচ্চিদ্রাজ্যে ধৃতরাষ্ট্রং  
 সপুত্রং সমেত্যাহঃ কুরবঃ সর্ব এব । কচ্চিদৃষ্ট্বা দস্যুসংঘান্ সমেতান্ স্মরস্তি পার্থ-  
 স্য যুধাং প্রণেতুঃ ॥ ২০ ॥ মোর্ধ্বীভূজাগ্রপ্রহিতান্ স্ম তাত দোধূষমানেন ধনুর্গু-  
 ণেন । গাণ্ডীবমুক্তান্ স্তনযিত্নযোষানজিহ্বগান্ কচ্চিদনুস্মরস্তি ॥ ২১ ॥ ন চমপশ্যং  
 কচ্চিদহং পৃথিব্যাং যোধং সমং বাধিকমজ্জুনেন । যস্যৈকযষ্টির্নিশিতাস্তীক্লুধারাঃ  
 সুবাসসঃ সস্মতো হস্তবাপঃ ॥ ২২ ॥ গদাপাণিভীমসেনস্তরশ্বী প্রবেগবন্ শত্রুসং-  
 ঘাননৌকে । নাগঃ প্রতিম্ ইব নড্রলেষু চংক্রম্যতে কচ্চিদেনং স্মরস্তি ॥ ২৩ ॥  
 মাদ্রীপুত্রঃ সহদেবঃ কলিঙ্গান্ সমাগতানজযৎ দস্তকুরে । বামেনাস্যন্ দক্ষিণেনৈব  
 যো বৈ মহাবলং কচ্চিদেনং স্মরস্তি ॥ ২৪ ॥ পুরা জেতুং নকুলঃ প্রেষিতোহয়ং  
 শিবীংস্ত্রিগর্ত্তান্ সঞ্জয় পশ্যতংস্তে । দিশং প্রতীচীং বশমানযম্মে মাদ্রীসুতং কচ্চি-  
 দেনং স্মরস্তি ॥ ২৫ ॥ পরাভবো দ্বৈতবনে য আসীৎ দুর্শ্মস্ত্রিতে যোষয়াত্রাগতা-  
 নাম্ । যত্র মন্দাঙ্কুরবশং প্রযাতানমোচযদ্বীমসেনো জযশ্চ ॥ ২৬ ॥ অহং পশ্চা-  
 দজ্জুনমভ্যরক্ষং মাদ্রীপুত্রো ভীমসেনোহপ্যরক্ষৎ । গাণ্ডীবভৃচ্ছত্রসংঘান্দস্য  
 স্বস্ত্যাগমং কচ্চিদেনং স্মরস্তি ॥ ২৭ ॥ ন কর্মণা সাধুনৈকেন হ্রনং কর্ত্তুং শক্যং  
 বৈ ভবতীহ সঞ্জয় । সর্বাঘ্ননা পরিণেতুং বযঞ্চ ন শকুনো ধৃতরাষ্ট্রস্য পুত্রম্ ॥ ২৮ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি সঞ্জয়বানপর্বণি বৃষ্টিপ্তিরবাক্যে ত্রয়োবিং-

শতিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৩ ॥

सङ्गव उवाच । यथाथ मे पाण्डव तत्रैव कुरून् कुरूश्रेष्ठजनं पृच्छसि । अना-  
मयास्तान् मनस्विनस्ते कुरूश्रेष्ठान् पृच्छसि पार्थ यांस्तुम् ॥ १ ॥ सन्त्येव वृक्षाः साध-  
वो धार्तराष्ट्रे सन्त्येव पापाः पाण्डव तस्य विद्धि । दद्याद्विपुत्र्योऽपि हि धार्त-  
राष्ट्रः कुतो दायाल्लोपयेद्वाक्कणानाम् ॥ २ ॥ यद्युष्माकं वर्तते सौनर्ध्न्यमक्र-  
क्षेषु क्रुद्धस्तम साधु । मित्रधुक स्याद्दृतराष्ट्रः सपुत्रो युष्मान् द्विषन् साधुवृत्तानसा-  
धुः ॥ ३ ॥ न चान्नुजानाति त्रुशं तप्यते शोचत्यतः स्वविरोऽजातशत्रो । शृणो-  
ति हि त्राक्कणानां समेत्य मित्रद्रोहः पातकेभ्यो गरीयान् ॥ ४ ॥ अरिस्तु तुभ्यं  
नरदेव संयुगे युद्धे च जिज्ञेःशं युधां प्रणेतुः । समुत्क्रुष्टे दुन्दुभिशङ्घशके  
गदापाणिं भीमसेनं अरिस्तु ॥ ५ ॥ माद्रीसूतो चापि रणाजिरेषु सर्वा दिशः सं-  
पतन्तो अरिस्तु । सेन्यां वर्षन्तो शरवर्षैरजसुं महारथो समरे दुष्पुत्रो ॥ ७ ॥  
न ह्येव मन्ये पुरुषस्य राजग्ननागतं ज्ञायते वदुर्विषयम् । वृक्षेऽथ सर्धन्मोप-  
पन्नः प्रापुः केशं पाण्डव क्रुद्धकपम् ॥ ९ ॥ व्रमेवैतं सर्वमतश्च भूयः समीकुर्याः  
प्रक्रुषाजातशत्रो । न कामार्थं संत्याजेयुर्हि धर्मं पाण्डोः सूताः सर्वेऽवेन्द्रक-  
र्माः ॥ ८ ॥ व्रमेवैतं प्रक्रुषाजातशत्रो समीकुर्या येन शर्माप्लुयुस्ते । धार्तराष्ट्राः  
पाण्डवाः सृङ्गशाश्च षेचाप्यन्ये सन्निकृष्टा नरेन्द्राः ॥ ९ ॥ यन्मात्रवीद्वृतराष्ट्रे  
निशायामजातशत्रो वचनं पिताते । सहामात्यः सहपुत्रश्च राजन् समेत्य तां  
वाचमिमां निबोध ॥ १० ॥

इत्युद्देवोगपर्वणि सङ्गव्यानपर्वणि सङ्गववाक्ये चतुर्विं-

शतितमोऽध्यायः ॥ २४ ॥



युधिष्ठिर उवाच । समागताः पाण्डवाः सृङ्गशाश्च जनार्दनो युयुधानो विराटः ।  
यत्रे वाक्यं धृतराष्ट्रानुशिष्टं गवल्गणे ब्रुहि तं स्मृतपुत्र ॥ १ ॥ सङ्गव उवाच ।  
अजातशत्रुं वृकोदरं धनञ्जयं माद्ववतीसूतो च । आगन्त्रये वासुदेवश्च शौमि-  
युयुधानश्चेकितानं विराटम् ॥ २ ॥ पक्षालानामधिपक्षेवं वृक्षं धृष्टद्युम्नं पार्वतं  
याज्जसेनिम् । सर्वे वाचं शृणुतेमां मदीयां वक्ष्यामि यां भूतिमिच्छन् कुरू-  
णाम् ॥ ३ ॥ शमं राजा धृतराष्ट्रोऽभिनन्दन्नवोजयद्वरनानो रथं मे । सद्रातृपुत्र-  
स्वजनस्य राज्ञस्तद्रोचतां पाण्डवानां शमोऽस्तु ॥ ४ ॥ सर्वैर्दक्षैः सनुपेताः स्व-  
पार्थं संस्थानेन मार्दवेनार्जवेन । कुले जाता ह्यनृशंसा वदान्या ह्रीनिषेवाः  
कर्मणां निश्चयव्रताः ॥ ५ ॥ न युज्यते कर्म युष्मासु ह्रीनं सद्रं हि वस्तादृशं भीम-



सेनाः । उद्धामेत ह्यङ्गनविन्दुवत्तुं शुक्ले वस्त्रे यद्धवेत् किञ्चिद्युक्तं वः ॥ ७ ॥ 'सर्व-  
 क्रमो' दृश्यते यत्र क्रुत्सुः पापोदयो निरयोऽभावसंशुः । कस्तत्र कुर्याद्भ्रातृ कर्म  
 प्रजानन् पराजयो यत्र समो जयश्च ॥ १ ॥ ते वै धन्या वैः कृतं ज्ञातिकार्यं  
 ते वै पुत्राः सुहृदो वान्धवाश्च । उपक्रुत्तं जीवितं संत्यजेयुस्ततः कुरुणां  
 नियतो वैभवः स्यात् ॥ ८ ॥ ते चेत् कुंकनभूषित्यं च पार्था निर्णीय सर्वान् द्विषतो  
 निगृह्य । समं वस्तुज्जीवितं मृत्युना संयादयज्जीवधुं ज्ञातिवधे न साधु ॥ ९ ॥ को  
 ह्येव युष्मान् सह केशवेन सचेकितानान् पार्षतवाह्युपान् । समात्यकीर्षिषहेतेह  
 जेतुं लक्ष्मिपि देवान् सचिवानपीन्द्रः ॥ १० ॥ 'को' वा कुकन् द्रोणभीष्माभिगुपान-  
 श्वथाम्ना शल्यरूपदिभिश्च । रणे विजेतुं प्रसहेत राजनाथेषुगुपान् सह भूमिपा-  
 लैः ॥ ११ ॥ महद्वलं धार्तराष्ट्रस्य राज्ञः को वै शक्नो ह्युत्तमकीर्षिणाः । सोऽहं  
 जये तैव पराजये च निःश्रेयसं नाधिगच्छामि किञ्चित् ॥ १२ ॥ कथं हि नीचा इव  
 दौक्षुलेषा निर्धर्मार्थं कर्म कुर्यात् पार्थाः । सोऽहं प्रसाद्य प्रणतो वासुदेव  
 पञ्चालानामधिपक्षेव वृद्धम् । कृताङ्गलिः शरणं वः प्रपद्ये कथं स्वस्ति स्यात्  
 कुरुसृङ्खानान् ॥ १३ ॥ न ह्येवमेव वचनं वासुदेवो धनञ्जयो वा जातु किञ्चिन्  
 कुर्यात् । प्राणान् दद्यादथाच्यमानः कुतोऽन्यादेतद्विद्वन् सधनार्थं त्रवीमि । एत  
 द्राज्जो भीष्मपुरोगमस्य मतं यद्दः शान्तिरिहोद्धमा स्यात् ॥ १४ ॥

इत्याद्योगपरिणि सङ्ख्यानपरिणि सङ्खयवाक्ये पञ्चविं-  
 शतितमोऽध्यायः ॥ २५ ॥



युधिष्ठिर उवाच । कां नु वाचं सङ्खय मे शृणोसि युद्धेऽर्षिणीं येन युद्धाद्विभेदि ।  
 अयुद्धं वै तात युद्धादार्षीयः कस्तन्नका जातु युध्येत सृत ॥ १ ॥ अकुर्वतश्चेत् पुरु-  
 षस्य सङ्खय सिध्येत् सङ्ग्लो मनसा यं यमिच्छेत् । न कर्म कुर्याद्विदितं ममैतदन्यात्र  
 युद्धाद्विह यन्नधीयः ॥ २ ॥ कुतो युद्धं जातु नरोऽवगच्छेत् को देवशण्डो हि वृणीत  
 युद्धम् । सुथेषिणः कर्म कुर्वन्ति पार्था धर्मादहीनं यच्च लोकस्य पथम् ॥ ३ ॥  
 धर्मोदयं सुखमांशं समानाः क्रुच्छोपायं तद्वतः कर्म दुःखम् । सुखं प्रेम्पुर्विजि-  
 षां सुश्च दुःखं य इन्द्रियाणां प्रीतिवशानुगामी ॥ ४ ॥ कामाभिध्या स्वशरीरं दूनो-  
 ति यथा प्रयुक्तोऽनुकरोति दुःखम् । यथेध्यामानस्य समिद्धतेजसो भूयो बलं  
 वर्द्धते पावकस्य । कामार्थलाभेन तथैव भूयो न तृप्यते सर्पिषेवाग्निरिद्धः ॥ ५ ॥  
 संपश्यन् भोगचयं महासुतं सहास्माभिर्धृतराष्ट्रस्य राज्ञः ॥ ७ ॥ नाश्रेयान्

वै ईश्वरो विग्रहाणां नाशेषान् वै गीतशकं शृणोति । नाशेषान् वै सेवते  
 माल्यगङ्गां चाप्यशेषान्मुलेपनानि । नाशेषान् वै प्रावारान् संनिवसे कथं  
 तस्मात् संप्रणुदेत् कुरून् वै ॥ १ ॥ अत्रैव च स्यादवधस्यैव कामः प्रायः शरीरे  
 हृदयं दूनोति । स्वयं राजा विषमस्तः परेषु सामर्थ्यमस्ति तन्न साधु ॥ ८ ॥ यथा-  
 ह्यनः पश्याति वृत्तमेव तथा परेषामपि सोऽहंभ्युपैतु ॥ ९ ॥ आसन्नमग्निं निदाघ-  
 काले गन्तीरकफे गहने विसृज्य । यथा वृद्धं वायुयोगेन शोचेत् क्कमं मुमुक्षुः  
 शिशिरव्यापाये ॥ १० ॥ आतैश्वर्ये धृतराष्ट्रोऽहं राजा लालप्यते सङ्घ-  
 कस्य हेतोः । प्रगृह्य दुर्बुद्धिमनार्जवे रतं पुत्रं मन्दं मूढममस्त्रिणस्तम् ॥ ११ ॥  
 अनाप्तवत्तापुत्रमस्य वाचः सुयोधनो विदुरस्यावमन्य । सुतस्य राजा धृतराष्ट्रः  
 प्रियैषी संवुध्यमानो विशतेहर्षमेव ॥ १२ ॥ मेधाविनं हर्षकामं कुरूणां  
 बहुश्रुतं वाग्निनं शीलवस्तम् । स तं राजा धृतराष्ट्रः कुरूभ्यो न सम्भार विदुरं  
 पुत्रकाम्यात् ॥ १३ ॥ मानस्यस्यो मानकामस्य चेष्योः संरस्त्रिणश्चार्थधर्मातिगस्य ।  
 दुर्भाषिणो मन्यवशात्सुगस्य कामात्तनो दोर्हृदे तावितस्य ॥ १४ ॥ अनेषस्यांशे-  
 षसो दीर्घमन्योऽस्मिन्नहः सङ्घस्य पापवद्धेः । सुतस्य राजा धृतराष्ट्रः प्रियैषी  
 प्रपश्यमानः प्राजहात्क्षमकामो ॥ १५ ॥ तदैव मे सङ्घस्य दीव्यतोऽहंभ्युतिः कुरूणा-  
 मागतः स्यादभावः । काव्याश्चात् विदुरो भाषमाणो न विन्दते वै धृतराष्ट्रं  
 प्रशंसाम् ॥ १६ ॥ ऋतुर्बुद्धिर्नाम्नवर्तुस्तु बुद्धिं कुरुन् सुत तदाभ्याजगाम ।  
 यावत् प्रज्जामन्ववर्तुस्तु तस्य तावन्नेवात् राष्ट्रबुद्धिर्बुधुव ॥ १७ ॥ तदर्थलूकस्य निबोध  
 मेहृदयं ये मस्त्रिणो धार्तराष्ट्रस्य सुत । दुःशासनः शकुनिः सौबलश्च गौबलङ्गे  
 पुष्य सन्मोहमस्य ॥ १८ ॥ सोऽहं न पश्यामि परीक्षमाणः कथं स्वस्ति स्यात् कुरूसु-  
 ष्यान्तम् ॥ १९ ॥ आतैश्वर्ये धृतराष्ट्रः परेभ्यः प्रत्राजिते विदुरे दीर्घदृष्टौ ।  
 आशंसते वै धृतराष्ट्रः सपुत्रो महाराज्यमसपुत्रं पृथिव्याम् । तस्मिंश्चमः केवलो  
 नोपलभ्यः सर्वं स्वकं मदातं मन्यतेऽर्थम् ॥ २० ॥ यत्तु कर्णो मन्यते पारणीयं  
 युद्धे गृहीतायुधमर्जुनं वै । आसंश्च युद्धानि पुरा महास्ति कथं कर्णो नाभव-  
 द्दीप एषाम् ॥ २१ ॥ कर्णश्च जानाति सुयोधनश्च द्रोणश्च जानाति पितामहश्च ।  
 अन्ये च ये कुरवस्तत्र सन्ति यथाऽर्जुनामास्त्यपरो धनुर्धरः ॥ २२ ॥ जानन्त्येतत् कुरवः  
 सर्व एव ये चाप्यन्ये भूमिपालाः समेताः । दुर्व्याधने राज्यमिहाभवत्तथा अरि-  
 न्दमेकमन्त्रे विद्यमाने ॥ २३ ॥ तेनार्थवद्धं मन्यते धार्तराष्ट्रः शक्यं हर्तुं पाण्ड-  
 वानां ममहम् । किरीटिनां तालमात्रायुधेन तद्देदिना संयुगं तत्र गत्वा ॥ २४ ॥

গাণ্ডীববিস্ফারিতশকমাজাবশূণানা ধার্তরাষ্ট্রা ধ্রুযন্তে । ক্রুদ্ধং ন চেদ্বীকতে ভীম-  
সেনং সুযোধনো মন্যতে সিদ্ধমর্থম্ ॥ ২৫ ॥ ইন্দ্রোহপ্যেতম্মোৎসহেভ্রাত হর্ভুমে-  
শ্বর্যং নো জীবতি ভীমসেনে । ধনঞ্জয়ে নকুলে চৈব সূত তথা বীরে মহদেবে  
সহিকৌ ॥ ২৬ ॥ স চেদেভ্যং প্রতিপদ্যেত বুদ্ধিং বুদ্ধো রাজা সহ পুত্রেণ সূত ।  
এবং রণে পাণ্ডবকোপদক্ষা ন নশ্যেযুঃ সঞ্জয় ধার্তরাষ্ট্রাঃ ॥ ২৭ ॥ জীনাসি স্বং  
কেশমস্মানু বস্ত্রং হ্রাং পূজযন্ সঞ্জয়াহং ক্রমেষম্ । যচ্চাস্মাকং কৌরবেভূতপূর্বং  
যা নো বৃত্তিকার্তরাষ্ট্রে তদাসীৎ ॥ ২৮ ॥ অদ্যাপি তত্তত্র তথৈব বর্ততাং শান্তিং  
গমিষ্যামি যথা হুমাখ । ইন্দ্রপ্রস্থে ভবতু মমৈব রাজ্যং সুযোধনো যচ্ছতু ভার-  
তাগ্র্যঃ ॥ ২৯ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি সঞ্জয়বানপর্বণি যুধিষ্ঠিরবাক্যে ষড়্বিংশ-  
শতিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৬ ॥



সঞ্জয় উবাচ । ধর্ম্মনিত্যা পাণ্ডব তে বিচেক্টা লোকে শ্রুতা দৃশ্যতে চাপি পার্থ ।  
মহাশ্রাবং জীবিতক্ষাপ্যানিত্যং সংপশ্যংস্ত্বং পাণ্ডব মা ব্যনীনশঃ ॥ ১ ॥ 'ন  
চেভ্রাগং কুরবোহন্যত্র যুদ্ধাৎ প্রযচ্ছেরংস্ত্বভ্যমজাতশত্রো । তৈক্যচর্য্যামন্ধকবৃষ্ণি-  
রাজ্যে শ্রেয়ো মন্যে ন তু যুদ্ধেন রাজ্যম্ ॥ ২ ॥ অন্নকালং জীবিতং ষগ্নমুষ্যে  
মহাস্রাবং নিত্যদুঃখঞ্চলঞ্চ । ভুযশ্চ তদ্বশসো নানুরূপং তস্ম্যাৎ পাপং পাণ্ডব মা  
রুথাস্ত্বম্ ॥ ৩ ॥ কামা মনুষ্যং প্রসজ্জন্ত এতে ধর্ম্মস্য যে বিগ্নমূলং নরেন্দ্র । পূর্বং  
নরস্তম্মতিমান্ প্রতিঘ্নন্ লোকে প্রশংসাং লভতেহনবদ্যাম্ ॥ ৪ ॥ নিবন্ধনী হর্ষতৃ-  
ক্ষেহ পার্থ তামিচ্ছতাং বাধ্যতে ধর্ম্ম এব । ধর্ম্মস্ত্ব যঃ প্রবৃণীতে স বুদ্ধঃ কামে গৃহ্নো  
হীষতেহর্থাশুরোধী ॥ ৫ ॥ ধর্ম্মং কুত্বা কর্ম্মণাং তাত মুখ্যং মহাপ্রতাপঃ সবিভেব  
ভাতি । হীনো হি ধর্ম্মেণ মহীমপীমাং লদ্ধা নরঃ সীদতি পাপবুদ্ধিঃ ॥ ৬ ॥ বেদোহ-  
র্ধীতশরিতং ব্রহ্মচর্য্যং যজ্ঞৈরির্ষ্যং ব্রাহ্মণেভ্যশ্চ দত্তম্ । পরং স্থানং মন্যমানেন  
ভুয আত্মা দন্তো বর্ষপুগং সুখেভ্যঃ ॥ ৭ ॥ সুখপ্রিষে সেবমানোহতিবেলং যোগা-  
ভ্যাসে যো ন করোতি কর্ম্ম । বিত্তক্বে হীনসুখোহতিবেলং দুঃখং শেতে কামবে-  
গপ্রণুমঃ ॥ ৮ ॥ এবং পুনর্হর্ষচর্য্যাপ্রসক্তো হি হু ধর্ম্মং যঃ প্রকরোত্যধর্ম্মম্ । অশ্র-  
দ্ধং পরলোকায যুতো হি হু দেহং তপ্যতে প্রেত্য মন্দঃ ॥ ৯ ॥ ন কর্ম্মণাং বিশ্র-  
ণাশোহস্ত্যমুত্র পুণ্যানাং বাপ্যথ বা পাপকানাম্ । পূর্বং কর্ত্ত্বগচ্ছতি পুণ্যপাপং  
পশ্চাচ্চৈনমনুষ্যাতে্যব কর্ত্তা ॥ ১০ ॥ ন্যাযোপেতং ব্রাহ্মণেভ্যো যদম্মং শ্রদ্ধাপুতং

गङ्गारसोपपन्नम् । अवाहार्येषुस्तमदक्षिणेषु तथाकपत् कर्म विख्यायते ते ॥ ११ ॥  
 इह क्षेत्रे क्रियते पार्थ कार्यत् न वै किञ्चित् क्रियते प्रेत्य कार्यम् । क्रुतं ह्यवा  
 पारलोक्याङ्ग कार्यत् पुण्यत् महत् सन्दिरतिप्रशस्तम् ॥ १२ ॥ जहाति मृत्युङ्ग जरात्  
 त्वङ्ग क्लृपिपासे मनसश्चाप्रियाणि । न कर्तव्यत् विद्यते तत्र किञ्चिदन्यत्र वै  
 चेन्मिथप्रार्थनाङ्गि ॥ १३ ॥ एवङ्गकपत् कर्मकलत् नरेन्द्र मात्रावता हृदयस्य प्रियेण ।  
 स क्रोधजत् पाण्डव हर्षजङ्ग लोकावुतो मा प्रहासीश्चिराय ॥ १४ ॥ अस्तु गङ्गा  
 कर्मणात् मा प्रजहाः सत्यन्दमङ्गार्जुनानृशंस्यम् । अश्वमेधत् राजसूयत् स चेष्टु  
 पापस्यास्तुत् कर्मणोमा पुनर्गाः ॥ १५ ॥ तच्छेदेवत् द्वेषकपेण पार्थाः करिष्यधत् कर्म  
 पापङ्गिराय । नावत्स्यधत् वर्षपुङ्गत् वनेषु दुःखत् वासत् पाण्डवा धर्मनित्याः ॥ १६ ॥  
 अप्रत्रजन्मस्य हिङ्गा पुरस्तादाद्याधीनत् वदलन्ते तदासीत् । नित्यङ्ग वश्याः सचिवा-  
 स्तथेमे जनार्दनो युयुधानश्च वीरः ॥ १७ ॥ मात्स्यो राजा रूक्मरथः सपुत्रः प्रहा-  
 रिभिः सह वीरैर्विराटः । राजानश्च ये विजिताः पुरस्ताद्वामेव ते संश्रयेयुः  
 समस्ताः ॥ १८ ॥ महासहायः प्रतपन् बलशः पुरस्कृतो वासुदेवाङ्गुनाभ्याम् ।  
 वरान् हनिष्यन् द्विषतो रङ्गमध्ये व्यनेष्यथा धार्तराष्टस्य दर्पम् ॥ १९ ॥ बलत् कस्मा-  
 द्दक्षयिङ्गा परस्य निजान् कस्मात् कर्षयिङ्गा सहायान् । निरुष्य कस्माद्धर्षपुङ्गान् वनेषु  
 युयुत्ससै पाण्डव हीनकालम् ॥ २० ॥ अप्राङ्गो वा पाण्डव युध्यमानो धर्मङ्गो वा  
 भूतिमथोत् भूतैति । प्रङ्गावान् वा वुध्यमानोऽपि धर्मत् संस्तुङ्गाद्वा सोऽपि  
 भूतेरपैति ॥ २१ ॥ नाधर्म्ये ते धीयते पार्थ बुद्धिर्न संरञ्जात् कर्म चकर्थ पापम् ।  
 आथ किञ्चत् कारणत् यस्य हेतोः प्रङ्गाविरुद्धत् कर्म चिकीर्षसीदम् ॥ २२ ॥ अव्या-  
 धिङ्गत् कटुकत् शीर्षरोगि यशोमूषत् पापफलोदयङ्ग । सतात् पेयत् यन्नपिवस्त्य-  
 सन्तो मृत्युत् महाराज पिव प्रशाम्य ॥ २३ ॥ पापान्नुवङ्गत् को नु तत् कामयेत  
 क्तमैव ते ज्यायसी नोपभोगाः । यत्र भीष्मः शासुनवो हतः स्यात्सत्र द्रोणः सह-  
 पुत्रो हतः स्यात् ॥ २४ ॥ रूपः शल्यः सोमदक्षिर्विकर्णो विविंशतिः कर्णदुर्येयाधनो  
 च । एतान् हिङ्गा कीदृशत् तत् सुखत् स्यात् यद्विन्देथास्तदनुवृहि पार्थ ॥ २५ ॥ लङ्का-  
 पीमात् पृथिवीत् सागरास्तात् जरामृत्यु नैव हि ह्यत् प्रजहाः । प्रियाप्रिये सुख-  
 दुःखे च राजन् एवत् विद्वमैव युद्धत् कुरु ह्यम् ॥ २६ ॥ अमात्यानात् यदि कामस्य  
 हेतोरेवत् युक्तत् कर्म चिकीर्षसि ह्यम् । अपक्रामेः संप्रदायैव तेषात् मागास्तुत्  
 वै देवकानात् पथोऽद्य ॥ २७ ॥

इत्युद्योगपर्वणि सङ्गवर्षानपर्वणि सङ्गवर्षाक्ये सप्तविंशतितमोऽध्यायः ॥ २१ ॥

युधिष्ठिर उवाच । असंशयं सङ्गस्य सत्यमेतद्वर्णो वरः कर्मणां यत्प्रमाथ । ज्ञात्वा  
 तु मां सङ्गस्य गर्हयेत्सुं यदि धर्मं यद्यधर्मक्षरेशम् ॥ १ ॥ यत्राधर्मो धर्मकपाणि धत्ते  
 धर्मः कृत्स्नो दृश्यते हर्षधर्मकपः । विभ्रद्वर्णो धर्मकपः तथा च विद्वांसस्तु संप्रप-  
 श्यन्ति बुद्ध्या ॥ २ ॥ एवं तथैवापदि लिङ्गमेतद्वर्णाधर्मो नित्यवृत्ती भजेताम् ।  
 आद्यं लिङ्गं यस्य तस्य प्रमाणमापद्वर्णं सङ्गस्य तन्निबोध ॥ ३ ॥ लुप्टायास्तु  
 प्रकृतौ येन कर्म निष्पादयेत्तु परीक्षेद्विहीनः । प्रकृतिसृष्ट्यापदि वर्तमान  
 उभो गर्हो भवतः सङ्गयेतो ॥ ४ ॥ अविनाशमिच्छतां ब्राह्मणानां प्रायश्चित्तं  
 विहितं यद्विधात्वा । संपश्येथाः कर्मसु वर्तमानान् विकर्मस्थान् सङ्गस्य गर्हये-  
 स्तुम् ॥ ५ ॥ मनीषिणां सत्प्रविच्छेदनाय विधीयते सत्सु वृत्तिः सदैव । अब्राह्मणाः  
 सन्ति तु ये न वैद्याः सर्वोच्छेदं साधु मन्येत तेभ्यः ॥ ६ ॥ तदधानः पितरो ये  
 च पूर्वे पितामहा ये च तेभ्यः परेभ्यः । प्रज्जेषिणो ये च हि कर्म कुर्यान्नान्यं  
 ततो नास्तिकोऽस्मीति मन्ये ॥ ७ ॥ यं किञ्चनेदं विभ्रमस्यां पृथिव्यां यदेवानां  
 त्रिदशानां परं यं । प्राजापत्यं त्रिदिवं ब्रह्मलोकं नाधर्मतः सङ्गस्य कामये-  
 यम् ॥ ८ ॥ धर्मेश्वरः कुशलो नीतिमांश्चाप्युपासिता ब्राह्मणानां मनीषी । नाना-  
 विधांश्चैव महाबलांश्च राज्ञो विजानन्ननुशास्ति क्रुषः ॥ ९ ॥ यदि ह्यहं विसृ-  
 जन् स्यामगर्हो युध्यमानो यदि जह्यां स्वधर्मम् । महायशाः केशवस्तुद्वीतु वासुदे-  
 वस्तुभयोरर्थकामः ॥ १० ॥ शैनेयोऽहं च दयश्चाङ्गकाश्च वार्ष्णेयभोजाः कुरुराः  
 सृष्ट्याश्च । उपामीना वासुदेवस्य वृद्धिं निगृह्य शत्रून् सूहृदो नन्दयन्ति ॥ ११ ॥  
 वृष्यङ्गका ह्यग्रसेनादयो वै क्रुषप्रणीताः सर्व एवेन्द्रकलाः । मनस्विनः सत्यपरा-  
 यणाश्च महाबला यादवा भोगवस्तुः ॥ १२ ॥ काश्या बभूवुः प्रियमुत्तमाङ्गतो लङ्का  
 क्रुषं ब्रातरमीशितारम् । यस्मै कामान् वर्षति वासुदेवो ग्रीष्मात्यये मेघ ईव  
 प्रज्जाभ्यः ॥ १३ ॥ ङ्गदृशोऽहं केशवस्तुत भूयान् विक्रि हेनं कर्मणो निश्चय-  
 ङ्गम् । प्रियश्च नः साधुमतश्च क्रुषेण नतिक्रमे वचनं केशवस्य ॥ १४ ॥

इत्युद्योगपर्वणि सङ्गवचनपर्वणि युधिष्ठिरवाक्ये अर्थावि-

शतितमोऽध्यायः ॥ २८ ॥



वासुदेव उवाच । अविनाशं सङ्गस्य पाण्डवानामिच्छाम्यहं भूतिमेषां प्रियम् ।  
 तथा राज्ञो धृतराष्ट्रस्य सूत समाशंससे बहूपुत्रस्य वृद्धिम् ॥ १ ॥ काश्या हि मे  
 सङ्गस्य नित्यमेव नान्यद्वुषां तान् प्रति शाम्यतेति । राज्ञश्च हि प्रियमेतच्छृणोमि

मन्ये चैत० पाण्डवानां समर्थम् ॥ २ ॥ सुदुष्करस्तत्र शमो हि शून्यं सन्दर्शितः  
सङ्गय पाण्डवेन । यस्मिन् गृह्णो धृतराष्ट्रः सपुत्रः कस्माद्देवां कलहो नावमु-  
च्छेत् ॥ ३ ॥ न त्वं धर्मं विचरं सङ्गयेह मत्तश्च जानासि युधिष्ठिराच्च । अथो  
कस्मात् सङ्गय पाण्डवस्य उन्साहिनः पुरयुतः स्वकर्म । यथाख्यातमावसतः कुट्टयं  
पुराकल्लात् साधुविलोपमाथ ॥ ४ ॥ अस्मिन् विधौ वर्तमाने यथावदुच्चावचा मतयो  
ब्राह्मणानाम् ॥ ५ ॥ कर्मणां हि सिद्धिमैके परत्र हि द्वा कर्म विद्याया सिद्धिमैके ।  
नाभुङ्गानो भक्त्यभोज्यस्य तृप्येद्विद्वानपीह विदितं ब्राह्मणानाम् ॥ ६ ॥ या वै  
विद्याः साधयन्तीह कर्म तासां फलं विद्याते नेतरामाम् । तत्रेह वै दृष्टफलस्तु  
कर्म पीड्योदकं शाम्यति तृणयार्तः ॥ ७ ॥ सोऽयं विधिर्विहितः कर्मणैव तद्वर्तते  
सङ्गय तत्र कर्म । तत्र फोहन्यं कर्मणः साधु मन्येन्मोघस्तुस्यालपितं दुर्बलस्य ॥ ८ ॥  
कर्मणामी भास्ति देवाः परत्र कर्मणैवेह प्लवते मातरिश्वा । अहोरात्रे विदधं  
कर्मणैव अतस्त्रितः शश्वदुदेति सूर्यः ॥ ९ ॥ मासाद्दिमासानथ नक्तत्रयोगानतस्त्रि-  
तश्चन्द्रमाश्चाभ्युपैति । अतस्त्रितो दहते जातवेदाः समिध्यामानः कर्म कुर्वन्  
प्रजाभ्यः ॥ १० ॥ अतस्त्रिता भारमिमं महान्तं विभर्ति देवी पृथिवी बलेन ।  
अतस्त्रिताः शीघ्रमपो वहन्ति सन्तुर्षन्त्यः सर्वभूतानि नद्याः ॥ ११ ॥ अतस्त्रितो  
वर्षति भूरितेजाः सम्रादयन्तुरीक्षं दिशश्च । अतस्त्रितो ब्रह्मर्ष्यं चारुं श्रेष्ठं त्रि-  
च्छन् बलतिदेवतानाम् । हि द्वा सुखं मनसश्च प्रियाणि देवः शक्रः कर्मणा श्रेष्ठ्य-  
माप ॥ १२ ॥ सत्यधर्मो पालयन्नप्रमत्तो दमं तितिक्षां समतां प्रियं । एतानि  
सर्वाण्युपसेवमानः स देवराज्यं मयवान् प्राप मुथ्यम् ॥ १३ ॥ बृहस्पतिर्ब्रह्मर्ष्यं  
चचार समाहितः संशितात्मा यथावत् । हि द्वा सुखं प्रतिरुध्येन्द्रियाणि तेन देवा-  
नामगमुं गौरवं सं ॥ १४ ॥ तथा नक्तत्राणि कर्मणामुत्र भास्ति रुद्रादित्या वसवोऽ-  
थापि विश्वे । यमो राजा वैश्रवणः कुबेरो गन्धर्वयक्षाप्सरसश्च सृत् । ब्रह्मर्ष्यं  
वेदविद्यां क्रियां निषेवमाणा ऋषयोऽमुत्र भास्ति ॥ १५ ॥ जानन्निमं सर्वलो-  
कस्य धर्मं ब्राह्मणानां कलिषाणां विशां । स कस्मात्वं जानतां ज्ञानवान् सन्  
व्यायच्छसे सङ्गय कौरवार्थे ॥ १६ ॥ आग्नायेषु नित्यसंयोगमस्य तथाश्वमेधे राज-  
सृषे च विद्धि । संयुज्यते धनुषा वस्त्रेणा च हस्त्यश्वपृष्ठे रथशस्त्रेण च भुयः ॥ १७ ॥  
ते चेदिमे कौरवाणामुपायमधिगच्छेयुरवधेनैव पार्थाः । धर्मत्राणं पुण्यमेवां  
कृतं समाहार्ये वृत्ते भीमसेनं निगृह्य ॥ १८ ॥ ते चेत् पित्रे कर्मणि वर्तमाना  
आपद्वेरन् दिक्वशेन मृत्युम् । यथा शक्या पुरयुतः स्वकर्म तदप्येषां निधनं

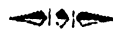
स्यात् प्रशस्तम् ॥ १२ ॥ उताहो ह्यं मन्यसे शाम्येव राज्ञां युद्धे वर्तते धर्म-  
 तन्त्रम् । अयुद्धे वा वर्तते धर्मतन्त्रं तथैव ते वाचमिमां शणोमि ॥ २० ॥ चातुर्ष-  
 र्गस्य प्रथमं विभागमेवेक्यं ह्यं सङ्गव स्वर्ग कर्म । निशम्याथो पाण्डवानां स्वकर्म  
 प्रशंस वा निन्द वा या मतिस्ते ॥ २१ ॥ अधीयीत ब्राह्मणोऽथो यजेत दद्यादिय-  
 तीर्थमुख्यानि तैव । अध्यापयेद्व्याजयेत्पि वाज्यान् प्रतिग्रहान् वा विदितां  
 प्रतीच्छेत् ॥ २२ ॥ तथा राजन्यो रक्षणं वै प्रजानां कृत्वा धर्मेणाप्रमत्तोऽथ  
 दत्त्वा । यज्ञैरिक्त्वा सर्ववेदानधीत्य दारान् कृत्वा पुण्यकृदावसेत् गृहान् । स धर्मात्मा  
 धर्ममधीत्य पुण्यं यदृच्छ्या ब्रजति ब्रह्मलोकम् ॥ २३ ॥ वैश्यांश्चीत्य कृषिगोर-  
 ऋपणैरिक्त्वा चित्वा पालयन्प्रमत्तः । प्रियं कुर्याणो ब्राह्मणक्षत्रियाणां धर्मशीलः  
 पुण्यकृदावसेत् गृहान् ॥ २४ ॥ परिचर्या वन्दनं ब्राह्मणानां नाधीयीत प्रतिसि-  
 द्धोऽस्य यज्ञः । नित्याथितो भूतयेऽतन्द्रितः स्यादेव संतः शुद्धधर्मः पुरा-  
 णः ॥ २५ ॥ एतान् राजा पालयन्प्रमत्तो नियोजयन् सर्ववर्णान् स्वधर्मे । अकामात्मा  
 समवृत्तिः प्रजासु नाधार्मिकान् नुरुध्येत कामान् ॥ २६ ॥ श्रेयांस्तस्माद्विदित्ये  
 कश्चिदभिज्जातः सर्वधर्मोपपन्नः । स तं द्रष्टुमनुशिष्यात् प्रजानां न चेद्गृध्ये-  
 दिति तस्मिन्साधुः ॥ २७ ॥ यदा गृध्येत् परभूतो नृशंसो विधिप्रकोपाद्वलमाद-  
 दानः । ततो राज्ञामभवद्युद्धमेतन्न जातं वस्त्रं शस्त्रं धनुश्च ॥ २८ ॥ इन्द्रेणै-  
 तदस्यवधाय कर्म उपादितं वस्त्रं शस्त्रं धनुश्च ॥ २९ ॥ तत्र पुण्यं दस्यवधेन  
 लभ्यते सोऽथ दौषः कुरुतिस्त्रीरूपः । अधर्मैर्धर्ममवध्यामनैः प्रादुर्भूतः  
 सङ्गव साधु तत्र ॥ ३० ॥ तत्र राजा धृतराष्ट्रस्य पुत्रो धर्म्यं हरन् पाण्डवानामकस्मात् ।  
 नावेक्यते राजधर्मं पुराणं तद्वयाः कुरवः सर्व एव ॥ ३१ ॥ स्तेनो हरेद्व्यत्र  
 धनं हृदयः प्रसह वा यत्र हरेत हृदयः । उभो गर्हो भवतः सङ्गवैतौ किं वै  
 पृथक्त्वं धृतराष्ट्रस्य पुत्रे ॥ ३२ ॥ सोऽथ लोभान्नन्यते धर्ममेतं यमिच्छति  
 क्रोधवशानुगामी । भागः पुनः पाण्डवानां निर्विद्यः तन्नो कस्मादाददीरन् परे  
 वै ॥ ३३ ॥ अस्मिन्पदे युध्यतां नो बधोऽपि श्लाघ्यः पितृयं परराज्याद्विशि-  
 ष्टम् ॥ ३४ ॥ एतान् धर्मान् कौरवाणां पुराणानाचक्षीथाः सङ्गव राजमध्ये । ये  
 ते मन्दा मृत्यवशाभिपन्नाः समानीता धार्तराष्ट्रेण मूढाः ॥ ३५ ॥ इदं पुनः कर्म  
 पापीय एव सभामध्ये पश्य वृत्तं कुरुणाम् । प्रियां भार्यां द्रौपदीं पाण्डवानां  
 यशस्विनीं शीलवृत्तोपपन्नम् । यदुपैक्यं कुरवो भीष्ममुख्याः कामानुपेक्षोपि-  
 रुक्तां ब्रजन्तीम् ॥ ३६ ॥ तांश्च ददा ते सकुमारवृद्धा अवारयिष्यन् कुरवः समेताः ।

मम प्रियं धृतराष्ट्रैः करिष्ये पुत्राणां कृतमस्याभविष्ये ॥ ७१ ॥ दूःशासनः  
 प्रातिलोभ्याग्निनाथ सभामध्ये शशुराणां कृष्णम् । सा तत्र नीता करुणं व्यपेक्ष्य  
 नान्यं कर्तुर्नाथमवाप कङ्कितं ॥ ७२ ॥ कार्पण्यादेव सहितास्तत्र भूपानाशकृत्स्न  
 प्रतिबल्लुं सभायाम् । एकः कृत्वा धर्म्यमर्थं कृवाणो धर्मबुद्ध्या प्रभुवाचान्नबु-  
 द्धिम् ॥ ७३ ॥ अबुद्धा ह्यं धर्ममेतं सभायामथेच्छसे पाण्डवस्योपदेक्षुम् ॥ ७४ ॥  
 कृष्णं ह्येतं कर्म चकार शुक्लं सुदुस्करं तत्र सभां समेत्य । येन कृच्छ्रात् पाण्डवा-  
 न्बुद्धहार तथात्मानं नौरिव सागरौघात् ॥ ७५ ॥ यत्रात्रवीं सूतपुत्रः सभायां  
 कृष्णं स्थितां शशुराणां समीपे । न ते गतिर्विद्यते याज्जसेनि प्रपद्य दाम्नी  
 धार्तराष्ट्रस्य वेश्म । पराजितान्ते पतयो न सन्ति पतिष्णान्यं भाविनि ह्यं वृणी-  
 ष ॥ ७६ ॥ यो वीतसेर्हृदये प्रोत आसीदस्ति छिन्दमर्श्याती सुषोरः । कर्णा-  
 छरो वाङ्मयस्तिग्महेजाः प्रतिष्ठितो हृदये फाल्गुनस्य ॥ ७७ ॥ कृष्णाजिनानि  
 परिधिंसमानान् दूःशासनः कर्तुकान्यत्प्रभाषत् । एते सर्वे षण्डितला विनष्टाः  
 क्षयङ्गता नरकं दीर्घकालम् ॥ ७८ ॥ गान्धारराजः शकुनिर्निरूत्या यदत्र वीक्ष्यत-  
 काले संपार्थम् । पराजितो नकुलः किन्तुवास्ति कृष्णया ह्यं दीव्य वै याज्जसे-  
 न्या ॥ ७९ ॥ जानासि ह्यं सङ्गस्य सर्वमेतत् द्यूते वाक्यं गह्वमेव यथोक्तम् ।  
 स्वयं ह्यं प्रार्थये तत्र गन्तुं समाधातुं कार्यमेतद्विपन्नम् ॥ ८० ॥ अहापयिह्या  
 यदि पाण्डुवार्थं शमं कुरुणामपि चेच्छरेषम् । पुण्यं मे स्यात्करितं महोदयं  
 मुच्येरंश्च कुरवो मृत्युपाशात् ॥ ८१ ॥ अपि मे वाचं भाषमाणस्य काव्यां धर्मा-  
 रानामर्थवतीमहिंसुाम् । अबेक्षेरन् धार्तराष्ट्राः समक्षं मां प्रापुं कुरवः पूज-  
 येयुः ॥ ८२ ॥ अतोहन्यथा रथिना फाल्गुनेन भीमेन चैवाहवदंशितेन ।  
 परासिक्तान् धार्तराष्ट्रांस्तु विद्धि प्रदहमानान् कर्मणा स्वैन पापान् ॥ ८३ ॥ परा-  
 जितान् पाण्डवेयांस्तु वाचो रौद्रा कक्षा भाषते धार्तराष्ट्रः । गदाहस्तो भीमसे-  
 नोऽप्रमत्तो दुर्येयाधनं स्मारयिता हि काले ॥ ८४ ॥ सुयोधनो मनु्यमयो महा-  
 क्रमः कृष्णः कर्णः शकुनिस्तस्य शाखा । दूःशासनः पुष्पफले समृद्धे मूलं राजा  
 धृतराष्ट्रैः मनीषी ॥ ८५ ॥ युधिष्ठिरो धर्ममयो महाक्रमः कृष्णोऽर्जुनो भीमसे-  
 नोऽस्य शाखा । माद्रीसूतो पुष्पफले समृद्धे मूलं ह्यं ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च ॥ ८६ ॥  
 वनं राजा धृतराष्ट्रः सपुत्रो व्याघ्रास्ते वै सङ्गस्य पाण्डुपुत्राः ॥ ८७ ॥ मा वनं  
 छिन्निं नव्याघुं मा व्याघ्रा नीनशन् वनात् । निर्बनो वध्यते व्याघ्रो निर्ब्याघुं छि-  
 द्यते वनम् । तस्माद्वाघ्रो वनं रक्षेद्यनं व्याघ्रं पालयेत् ॥ ८८ ॥ लताधर्मा



ধার্তরাষ্ট্রাঃ শালাঃ সঞ্জয় পাণ্ডবাঃ । ন লতা বর্দ্ধতে জাতু মহাক্রমমনাশ্রিতা ॥৫৫॥  
স্থিতাঃ শুশ্রুষিতুং পার্থাঃ স্থিতা যোদ্ধুমরিন্দমাঃ । যৎ কৃত্যৎ ধৃতরাষ্ট্রস্য তৎ করোতু  
নরাধিপঃ ॥ ৫৬ ॥ স্থিতাঃ শমে মহাত্মানঃ পাণ্ডবা ধর্মচারিণঃ । যোধাঃ সমৃদ্ধাস্ত-  
দ্বিদ্বন্মাচক্ষীথা যথা তথম্ ॥ ৫৭ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি সঞ্জয়যানপর্বণি শ্রীকৃষ্ণবাক্যে  
একোনত্রিংশত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৯ ॥



সঞ্জয় উবাচ । আমন্ত্রয়ে দ্বাং নরদেবদেব গচ্ছাম্যহং পাণ্ডব স্বাস্তি তেহস্ত ।  
কচ্চিন্ন বাচা বৃজিনং হি কিঞ্চিদুচ্চারিতং নে মনসোহভিষঙ্গাৎ ॥ ১ ॥ জনার্দনং  
ভীমসেনাজ্জুনো চ মাদ্রীসুতো সাত্যকিঞ্চেকিতানম্ । আমন্ত্র্য গচ্ছামি শিবং সুখং  
বঃ সৌম্যেন মাং পশ্যত চক্ষুষা নৃপাঃ ॥ ২ ॥ যুধিষ্ঠির উবাচ । অন্বজ্ঞাতঃ সঞ্জয়  
স্বাস্তি গচ্ছ ন নঃ স্মরস্যপ্রিয়ং জাতু বিদ্বন্ । বিদ্বাশ্চ দ্বাং তে চ বয়ঞ্চ সবে শুদ্ধা-  
ত্মানং মধ্যগতং সভাস্থম্ ॥ ৩ ॥ আপ্তো দূতঃ সঞ্জয় সুপ্রিযোহসি কল্যাণবাক্  
শীলবান্ দৃষ্টিমাংশ্চ । ন মুহেস্ত্বং সঞ্জয় জাতু মত্যা ন চ ক্রোধে রুচ্যমাণো দুরু-  
ক্রৈঃ ॥ ৪ ॥ ন মর্ম্মগাং জাতু বক্রাসি কক্ষাং নাপশ্রুতিং কটুকাং নোত মুক্তাম্ ।  
ধর্ম্মারামামর্থবতীমহিংস্রামেতাং বাচং তব জানীম সূত ॥ ৫ ॥ ত্বমেব নঃ প্রিয়ত-  
মোহসি দূত ইহাগচ্ছেদ্বিদুরো বা দ্বিতীয়ঃ । অতীক্ষুদৃষ্টোহসি পুরা হি নস্তং ধন-  
ঞ্জয়স্যাত্মসমঃ সখাসি ॥ ৬ ॥ ইতো গত্বা সঞ্জয় ক্ষিপ্রমেব উপাতিষ্ঠেথা ব্রাহ্মণান্  
যে তদর্হাঃ । বিশুদ্ধবীর্য্যাশ্চরণোপপন্নাঃ কুলে জাতাঃ সর্বধর্ম্মোপপন্নাঃ ॥ ৭ ॥  
স্বাধ্যায়িনো ব্রাহ্মণা ভিক্ষবশ্চ তপস্বিনো য়ে চ নিত্য বনেষু । অভিবাদ্যা বৈ মদ্ব-  
চনেন বৃদ্ধাস্তথেষতরেষাং কুশলং বদেথাঃ ॥ ৮ ॥ পুরোহিতং ধৃতরাষ্ট্রস্য রাজ্ঞ-  
স্তথাচার্য্যানৃষিজো য়ে চ তস্য । তৈশ্চ ত্বং তাত সহিতৈর্ষথাইং সঙ্গচ্ছেথাঃ কুশলে-  
র্নৈব সূত ॥ ৯ ॥ অশ্রোত্রিযা য়ে চ বসন্তি বৃদ্ধা মনস্বিনঃ শীলবলোপপন্নাঃ ।  
আশংসন্তোহস্মাকমনুস্মরন্তে । যথাশক্তি ধর্ম্মমাত্রাঞ্চরন্তঃ ॥ ১০ ॥ শ্লাঘস্ব মাং  
কুশলিনং স্ম তেভ্যো হনামযং তাত পৃচ্ছেজ্জর্ঘন্যম্ । য়ে জীবন্তি ব্যরহায়েণ  
রাষ্ট্রে য়ে পালযন্তে নিবসন্তি রাষ্ট্রে ॥ ১১ ॥ আচার্য্য ইংষ্টো নযগো বিধেযো বেদা-  
নভীপ্সন্ ব্রহ্মচর্য্যঞ্চচার । যোহস্ত্রং চতুষ্পাং পুনরেব চক্রে দ্রোণঃ প্রসমোহভি-  
বাদ্যস্তুযাসৌ ॥ ১২ ॥ অধীতবিদ্যশ্চরণোপপন্মো যোহস্ত্রঞ্চতুষ্পাং পুনরেব চক্রে ।  
গন্ধর্ব্বপুত্রপ্রতিমং তরস্বিনং তমশ্বখামানং কুশলং স্ম পৃচ্ছেঃ ॥ ১৩ ॥ শারদ্বত-

न्यावसथं न्य गङ्गा महारथस्याङ्गविदां वरस्य । दृश्यामतीक्ष्णं परिकीर्तयन् वै  
रूपस्य पादो सङ्गय पाणिना स्पृशेः ॥ १४ ॥ यस्मिन् शौर्यमानुशंस्यं तपश्च प्रज्जा  
शीलं श्रुतिसत्त्वे धृतिश्च । पादो गृहीत्वा कुरुसत्तमस्य तीक्ष्णस्य मास्तत्र निवेदये-  
थाः ॥ १५ ॥ प्रज्जाचक्रुर्घः प्रणेता कुरुणां बहुश्रुतो वृक्षसेवी मनीषी । तस्मै  
राज्जे स्त्रिविरायातिवादय आचक्षीथाः सङ्गय मामरोगम् ॥ १६ ॥ ज्येष्ठः पुत्रो  
धृतराष्ट्रस्य मन्दो मूर्खः शठः सङ्गय पापशीलः । प्रशास्ता वै पृथिवी येन सर्वा सुयो-  
धनं कुशलं तात पृच्छेः ॥ १७ ॥ भ्राता कनीयानपि तस्य मन्दस्तथाशीलः सङ्गय  
सोऽपि शश्वत् । महेश्वासः शूरतमः कुरुणां दुःशासनः कुशलस्तुत वाच्यः ॥ १८ ॥  
यस्य कामो वर्तते नित्यमेव नान्यः शमाद्भारतानामिति न्य । स बाह्लिकानामृषभो  
मनीषी ह्य्यातिवादयः सङ्गय साधुशीलः ॥ १९ ॥ शुणैरनेकैः प्रवरैश्च युक्तो विज्जा-  
नवात्मैव च निर्भूरो यः । स्रैहादमर्षं सहते सदैव स सोमदत्तः पूजनीयो मतो  
मे ॥ २० ॥ अर्हन्तमः कुरुषु सोमदत्तिः स नो भ्राता सङ्गय मत्सखा च । महेश्-  
वासो रथिनामुत्तमोऽर्हः सहामात्यः कुशलस्तस्य पृच्छेः ॥ २१ ॥ ये चैवान्ये कुरु-  
मुख्या युवानः पुत्राः पौत्राः भ्रातरैश्च ये नः । वं यमेयां मन्यसे येन यो-  
ग्यस्तुतं प्रोच्यानामयं सूत वाच्यः ॥ २२ ॥ ये राजानः पाण्डवायोधनाय समा-  
नीता धार्तराष्ट्रेण केचिन् । वशातयः शालकाः केकयाश्च तथाश्चैवा ये त्रिगर्ताश्च  
मुख्याः ॥ २३ ॥ प्राच्योदीच्या दक्षिणात्याश्च शूरास्तथा प्रतीच्याः पार्वतीयाश्च  
सर्वे । अनृशंसाः शीलवृत्तोपपन्नास्तुथां सर्वेषां कुशलं सूत पृच्छेः ॥ २४ ॥  
हस्त्यारोहा रथिनः सादिनश्च पदातयश्चार्यसंघा महान्तः । आख्याय मां कुशलिनं  
न्य नित्यमनामयं परिपृच्छेः समग्रान् ॥ २५ ॥ तथा राज्जे हर्षयुक्तानमात्यान् दौ-  
वारिकान् ये च सेनां नयन्ति । आयं व्ययं ये गणयन्ति नित्यमर्थांश्च ये महत-  
श्चित्तयन्ति ॥ २६ ॥ वृन्दारकं कविमर्थेष्वमूत्तं महप्रज्जं सर्वधर्मोपपन्नम् । न  
तस्य युद्धं रोचते वै कदाचिद्देश्यापुत्रं कुशलं तत्र पृच्छेः ॥ २७ ॥ निकर्तने  
देवने योऽद्वितीयश्छमोपधः साधुदेवी मताक्षः । यो दुर्जयो देवितुव्येन संथो  
स चित्रसेनः कुशलं तात वाच्यः ॥ २८ ॥ गान्धारराजः शकुनिः पार्वतीयो निक-  
र्तने योऽद्वितीयोऽक्षदेवी । मानं कूर्बन् धार्तराष्ट्रस्य सूत मिथ्याबुद्धेः कुशलं  
तस्य पृच्छेः ॥ २९ ॥ वः पाण्डवानेकरथेन वीरः समुत्सहत्यप्रधृष्यान् विजेतुम् ।  
स्ये. मुहतां मोहयिताद्वितीयो वैकर्तनः कुशलं तस्य पृच्छेः ॥ ३० ॥ स एव  
तक्रः स षुक्रः स भर्ता स वै पिता स च माता सुहृत् । अगाधबुद्धिर्बिदुरो दीर्घदर्शी स

নো মন্ত্রী কুশলং তস্য পৃচ্ছেঃ ॥ ৩১ ॥ বৃদ্ধাঃ স্ত্রিষো যাস্চ গুণোপপন্না জ্ঞায়ন্তে নঃ  
সঞ্জয় মাতরস্তাঃ । তাভিঃ সর্বাভিঃ সহিতাভিঃ সমেত্য স্ত্রীভির্বৃদ্ধাভিরুভিবাৎ  
বদেথাঃ ॥ ৩২ ॥ কচ্চিৎ পুত্রা জীবপুত্রাঃ সুসম্যগ্ভর্ত্তন্তে বো বৃত্তিম্নশংসকপাম্ ।  
ইতি স্মোক্ত্বা সঞ্জয় বৃহি পশ্চাদজাতশত্রুঃ কুশলী সপুত্রঃ ॥ ৩৩ ॥ যা নো ভার্য্যাঃ  
সঞ্জয় বেথ তত্র তাসাং সর্বাণাং কুশলং তাত পৃচ্ছেঃ । সুসংগুপ্তাঃ সুরভযোহন-  
বদ্যাঃ কচ্চিৎ গৃহানাবসথাপ্রমত্তাঃ ॥ ৩৪ ॥ কচ্চিদ্বৃত্তিং স্বশুরেষু ভদ্রাঃ কল্যাণীং  
বর্ত্তধ্বম্নশংসকপাম্ । যথা চ বঃ স্যুঃ পতযোহ্নুকূলাস্তথা বৃত্তিমান্ননঃ স্থাপয-  
ধম্ ॥ ৩৫ ॥ যা নঃ স্নুযাঃ সঞ্জয় বেথ তত্র প্রাপ্তাঃ কুলেভ্যশ্চ গুণোপপন্নাঃ ।  
প্রজাবত্যো বৃহি সমেত্য তাশ্চ যুধিষ্ঠিরো বোহভ্যবদৎ প্রসন্নঃ ॥ ৩৬ ॥ কন্যাঃ  
স্বজেথাঃ সদনেষু সঞ্জয় অনানযং মদ্বচনেন পৃচ্ছা । কল্যাণা বঃ সন্ত পতযোহ্নুকূলা  
যুযং পতীনাং ভবতান্নুকূলাঃ ॥ ৩৭ ॥ অলঙ্কতা বস্ত্রবত্যাঃ সুগন্ধা অবীভৎসাঃ  
সুখিতা ভোগবত্যাঃ । লঘু বাসাং দর্শনং বাক্ চ লঘী বেশস্ত্রিযঃ কুশলং তাঃ স্ম  
পৃচ্ছেঃ ॥ ৩৮ ॥ দাসীপুত্রা যে চ দাসাঃ কুরূণাং তদাশ্রয়া বহবঃ কুঞ্জখঞ্জাঃ । আ-  
খ্যায় মাং কুশলিনং স্ম তেভ্যোহপ্যনানযং পরিপৃচ্ছেজ্জঘন্যম্ ॥ ৩৯ ॥ কচ্চিদ্বৃত্তিং  
বর্ত্ততে বৈ পুরাণীং কচ্চিদ্ভোগান্ ধার্ত্তরাষ্ট্রো দদাতি । অঙ্গহীনান্ রূপগান্ বাম-  
নান্ বা যানান্নশংস্যো ধৃতরাষ্ট্রো বিভর্ত্তি ॥ ৪০ ॥ অন্ধাংশ্চ সর্বান্ স্ববিরাঃ স্তথৈব  
হস্তাজীবা বহুবো যে চ সন্তি । আখ্যায় মাং কুশলিনঞ্চাপি তেষামনাময়ং পরি-  
পৃচ্ছেজ্জঘন্যম্ ॥ ৪১ ॥ না ভৈষ্টি দুঃখেণ কুর্জীবিতেন ন্ননং কৃতং পরলোকেষু  
পাপম্ । নিগৃহ শত্রূন স্ত্রুদোহ্নুগৃহ বাসোভিরম্বেন চ বো ভরিষ্যে ॥ ৪২ ॥ সন্ত্যেব  
মে ব্রাহ্মণেভ্যঃ কৃতানি ভাবীন্যাথো নো বত বর্ত্তযন্তি । তান্ পশ্যাম্যহং বৃক্কক-  
পাংস্তথৈব তানেব সিদ্ধিং শ্রাববেথা নৃপং তম্ ॥ ৪৩ ॥ যে চানাথা দুর্বলাঃ সর্বকা-  
লমাত্মন্যেব প্রবতন্তেহ্থ মূঢ়াঃ । তাংশ্চাপি ব্ৰং রূপগান্ সর্বথৈব অস্মদ্বাক্যাৎ  
কুশলং তাত পৃচ্ছেঃ ॥ ৪৪ ॥ যে চাপ্যন্যে সংশ্রিতা ধার্ত্তরাষ্ট্রানাদিত্যোহ-  
ভ্যাগতাঃ সূতপুত্র । দৃষ্ট্বা তাংশ্চবাহঁতশ্চাপি সর্বান্ সংপৃচ্ছেথাঃ কুশলঞ্চাব্য-  
ঞ্চ ॥ ৪৫ ॥ এবং সর্বাণাগতাভ্যাগতাংশ্চ রাজ্ঞো দূতান্ সর্বিদিত্যোহভ্যুপেতান্ ।  
পৃচ্ছা সর্বান্ কুশলং তাংশ্চ সূত পশ্চাদহং কুশলী তেষু বাচ্যঃ ॥ ৪৬ ॥ ন হীদৃশাঃ  
সন্ত্যপরে পৃথিব্যাং যে যোধকা ধার্ত্তরাষ্ট্রেণ লন্ধাঃ । ধর্ম্মস্ত নিত্যো মম ধর্ম্ম এব  
মহাবলঃ শত্রুনিবর্হণায় ॥ ৪৭ ॥ ইদং পুনর্বচনং ধার্ত্তরাষ্ট্রং সুযোধনং সঞ্জয় শ্রব-  
বেথাঃ । যন্তে শরীরে হৃদযং দুনোতি কামঃ কুবন্থ স মপত্ত্বোহ্নুশিষ্যম্ ॥ ৪৮ ॥

न विद्यते युक्तिरेतस्य काचित्त्रैव विधास्याम यथा प्रियन्ते । ददश्व वा शक्रपुरीं  
ममेव युध्यस्व वा भारतमुख्य वीर ॥ ४२ ॥

इत्युद्देश्यगर्भणि सङ्गव्यानपर्वणि युधिष्ठिरवाक्ये

त्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ७१ ॥



युधिष्ठिर उवाच । उत सन्तमसस्तु वलं धीरं सङ्गव । उतावलं वलीवांसं  
धाता प्रकुरुते वशे ॥ १ ॥ उत बालाय पाण्डित्यं पाण्डितायोत बालताम् । ददा-  
ति सर्वमीशानः पुरस्ताच्छुक्रमुत्तरन् ॥ २ ॥ बलं जिज्ञासमानस्य आचक्षीथा यथा-  
तथम् । अथ मन्त्रं मन्त्रयिष्या अन्योन्येनातिहृष्टवत् ॥ ३ ॥ गावलगणे कुरून् गन्वा  
धृतराष्ट्रं महाबलम् । अतिवादोपसंगृह्य ततः पृच्छेरनामयम् ॥ ४ ॥ ब्रुयात्शेचनं  
द्वयमासीनं कुरुतिः परिवारितम् । तवैव राजन् वीर्येण सुखं जीवन्ति पाण्ड-  
वाः ॥ ५ ॥ तव प्रसादाद्दालास्ते प्राप्ता राज्यामरिन्दम । राज्ञे तान् स्थापयिष्यामि  
नोपेक्षीर्विनशियतः ॥ ६ ॥ सर्वमप्येतदेकस्य नालं सङ्गव कस्यचित् । तातसंहत्या  
जीवामो द्विषतां ना वशङ्गमः ॥ ७ ॥ तथा तीयं शास्तनवत् भरतानां पिताम-  
हम् । शिरसातिवदेथास्तुं गम नाम प्रकीर्तयन् ॥ ८ ॥ अतिवादो च वक्तव्यस्ततोऽ-  
स्माकं पितामहः । भवता शास्तनोर्दंशो निमग्नः पुनरुद्धतः ॥ ९ ॥ स ह्यं कुरू  
तथा त्वात् स्वमतेन पितामह । यथा जीवन्ति ते पौत्राः प्रीतिमन्तः परम्परम् ॥ १० ॥  
तथैव विदुरं ब्रुवाः कुरूणां मन्त्रधारिणम् । अबुद्धं सौम्यं भाषस्व हितकामो युधि-  
ष्ठिरे ॥ ११ ॥ अथ दुर्योधनं ब्रुवा राजपुत्रमनर्षणम् । मध्ये कुरूणां मासीनमनुनीय  
पुनः पुनः ॥ १२ ॥ अपापां यदपैकस्तुं कुरुषामेकां सतागतान् । तद्दुःखं वै  
तितिङ्गामो ना वधिष्म कुरुनिति ॥ १३ ॥ एवं पूर्वापरान् केशानतिभिक्षु पाण्ड-  
वाः । वलीवांसोऽपि सन्तो यत्तं सर्वं कुरवो विदुः ॥ १४ ॥ वनः प्रब्राजयेः  
सौम्य अजिनैः प्रतिवर्षितान् । अतिभिक्षामहि च तन्नावधिष्म कुरुनिति ॥ १५ ॥  
यत्तं कुन्तीमतिक्रम्य कुरुषां केशेषधर्षयत् । दुःशासनस्तेहनुमते तज्जाम्नाभिरुपे-  
क्षितम् ॥ १६ ॥ यथोचितं स्वकं भागं लभेमहि परस्तप । निवर्तय परद्रव्या-  
द्वुद्धिं गृह्णां नरर्षभ ॥ १७ ॥ शान्तिरेव भवेद्राजन् प्रीतिशैच परम्परम् । रा-  
ज्यैकदेशमपि नः प्रयच्छ शमनिच्छताम् ॥ १८ ॥ 'कुशशूलं वृकशूलं माकन्दीं  
वृषणवतम् । अवसानं भवेदत्र कश्चिदेकं पङ्कमम् ॥ १९ ॥ ब्रातृणां देहि  
पङ्कानां ग्रामान् पङ्क सुयोधनं । शान्तिर्नोऽस्तु महाप्राज्ञ ज्ञातिभिः सह सङ्ग-

য ॥ ২০ ॥ ভ্রাতা ভ্রাতরমম্বেষু পিতা পুত্রেণ যুক্ত্যতাম্ । অযমানাঃ সমাযাস্ত পা-  
 ঞ্জালাঃ কুরুভিঃ সহ ॥ ২১ ॥ অকৃতান্ কুরুপাঞ্জালান্ পশ্যেযমিতি কাময়ে । সর্বে  
 স্মননসস্তাত শাম্যাম ভরতর্ষভ ॥ ২২ ॥ অলমেব শমাযাস্মি তথা যুক্তায় সঞ্জয় ।  
 ধর্ম্মার্থযোরুল্লাসহং মৃদবে দারুণাষ চ ॥ ২৩ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি সঞ্জয়বানপর্বণি যুধিষ্ঠিরবাক্যে

একত্রিংশত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩১ ॥



বৈশম্পায়ন উবাচ । অমুক্তাতঃ পাণ্ডবেন প্রযযৌ সঞ্জয়স্তদা । শাসনং ধৃতরা-  
 ক্তস্য সর্বং কৃৎস্না মহাত্মনঃ ॥ ১ ॥ সংপ্রাপ্য হাস্তিনপুরং শীঘ্রমেব প্রবিশ্য চ ।  
 অন্তঃপুরমুপাস্থায় দ্বাঃস্থং বচনমব্রবীৎ ॥ ২ ॥ আচক্ষু ধৃতরাষ্ট্রায় দ্বাঃস্থ মাং সমু-  
 পাগতম্ । সকাশাৎ পাণ্ডুপুত্রাণাং সঞ্জয়ং বা চিরং কুথাঃ ॥ ৩ ॥ জাগর্তি চেদ-  
 ভিবদেস্ত্বং হি দ্বাঃস্থ প্রবিশেযং বিদিতো ভূমিপস্য । নিবেদ্যমত্রাত্যয়িকং হি মেহ-  
 স্তি দ্বাঃস্থোহথ ঞ্জয়া নৃপতিং জগাদ ॥ ৪ ॥ দ্বাঃস্থ উবাচ । সঞ্জয়োহয়ং ভূমিপতে  
 নমস্তে দিদৃক্ষষা দ্বারমুপাগতস্তে । প্রাপ্তো দূতঃ পাণ্ডবানাং সকাশাৎ প্রশাধি  
 রাজন্ কিমযং করোতু ॥ ৫ ॥ ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । আচক্ষু মাং সুখিনং কল্যর্ম্মস্মৈ  
 প্রবেশ্যতাং স্বাগতং সঞ্জয়ায় । ন চাহমেতস্য ভবাম্যকল্যঃ স মে কস্মাদ্ধারি তিষ্ঠেচ্চ  
 সক্তঃ ॥ ৬ ॥ বৈশম্পায়ন উবাচ । ততঃ প্রবিশ্যানুমতে নৃপস্য মহদ্বেশ্য প্রাজ্ঞশূ-  
 র্যার্যগুপ্তম্ । সিংহাসনস্থং পার্থিবমাসনাদ বৈচিত্রবীর্ষ্যং প্রাঞ্জলিঃ সূতপুত্রঃ ॥ ৭ ॥  
 সঞ্জয় উবাচ । সঞ্জয়োহহং ভূমিপতে নমস্তে প্রাপ্তোহস্মি গত্বা নরদেব পাণ্ডবান্ ।  
 অভিবাদ্য দ্বাং পাণ্ডুপুত্রো মনস্বী যুধিষ্ঠিরঃ কুশলঞ্চান্বপৃচ্ছৎ ॥ ৮ ॥ স তে পুত্রান্  
 পৃচ্ছতি প্রীযমাণঃ কচ্চিৎপুত্রৈঃ প্রীযসে নপ্তুভিষ্চ । তথা সুহৃদ্ভিঃ সচিবৈশ্চ রাজন্  
 যে চাপি ত্বামুপজীবন্তি তৈশ্চ ॥ ৯ ॥ ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । অভিনন্দ্য দ্বাং তাত বদামি  
 সঞ্জয় অজাতশত্রুঞ্চ সুখেণ পার্থম্ । কচ্চিৎ স রাজা কুশলী সপুত্রঃ সহামাত্যঃ  
 সানুজঃ কৌরবাণাম্ ॥ ১০ ॥ সঞ্জয় উবাচ । সহামত্যঃ কুশলী পাণ্ডুপুত্রো বৃভূষতে  
 ষচ্চ তেহগ্রে মনোহভূৎ । নির্নিরুধর্ম্মার্থকরো মনস্বী বহুশ্রুতো দৃষ্টিমান্ শীল-  
 বাংশ্চ ॥ ১১ ॥ পরং ধর্ম্মাৎ পাণ্ডবস্যানুশংস্যং ধর্ম্মঃ পরো বিত্তচয়ান্নতোহস্য ।  
 সুখপ্রিষেং ধর্ম্মহীনেহনপার্থেহমুরুধ্যতে ভারত তস্য বুদ্ধিঃ ॥ ১২ ॥ পরপ্রযুক্তঃ পুরুষো  
 বিচেষ্টতে সূত্রপ্রোতা দারুময়ীব যোষা । ইমং দৃষ্ট্বা নিয়মং পাণ্ডবস্য মন্যে পুরং  
 কর্ম্ম দৈবং মনুষ্যাৎ ॥ ১৩ ॥ ইমঞ্চ দৃষ্ট্বা তব কর্ম্মদোষং পাপোদর্কং ঘোরমবর্ণ

कृपम् । यावत् परः कामयतेऽतिवेलं तावन्नरोऽयं लभते प्रशंसाम् ॥ १४ ॥  
 अजातशत्रुस्तु विहाय पापं जीर्णं वृचं सर्प इवासमर्थम् । विराजतेऽर्हार्थवृत्तेन  
 धीरो मुधिष्ठिरस्तुषि पापं विसृज्य ॥ १५ ॥ इन्द्रात्पुनः कर्म निबोध राजन् धर्मार्थ-  
 युक्तादार्यावृत्तादपेतम् । उपक्रोशक्षेहं गतोऽसि राजन् भुवश्च पापं प्रम-  
 ज्जेदमुत्र ॥ १६ ॥ स द्वयर्थं संशयितं विना तैराशंससे पुल्लवशास्त्रुगोऽद्य ।  
 अधर्मशकश्च महान् पृथिव्यां नन्दं कर्म द्वयसमं भारताग्र्य ॥ १७ ॥ हीनप्रज्ज्ञो  
 दौक्कुलेयो नृशंसो दीर्घवैरी क्लृप्तिविद्यास्वधीरः । एवं धर्मानापदः संशयेयुर्ज्ञानो  
 वीर्ये यश्च भवेदशिर्षः ॥ १८ ॥ कुले जातो बलवान् यो यशस्वी बहुश्रुतः सुख-  
 जीरी जितात्मा । धर्माधर्मौ अथितौ यो विभर्ति स हस्य दिक्मय वशादुपैति ॥ १९ ॥  
 कथं हि मन्त्राग्र्यधरो मनीषी धर्मार्थयोरापदि संप्रणेता । एवं युक्तः सर्वमन्त्रै-  
 रहीनो नरो नृशंसं कर्म कुर्यादमुचः ॥ २० ॥ तव ह्यमी मन्त्रविदः समेत्य समासते  
 कर्मसु नित्ययुक्ताः । तेषामयं बलवान्निश्चयश्च कुरुक्षयो नियमेनोदपादि ॥ २१ ॥  
 अकालिकं कुरवो नाभविष्यन् पापेन चेत् पापमजातशत्रुः । इच्छेज्जातु द्वयि  
 पापं विसृज्य निन्दा चेयं तव लोकेऽभविष्यत् ॥ २२ ॥ किमन्यत्र विषयादीश्वराणां  
 यत्र पार्थः परलोकं न्य द्रक्षुम् । अत्यक्रामत् स तथा मन्मतः स्यान्न संशयो नास्ति  
 मन्मुष्यकारः ॥ २३ ॥ एतान् गुणान् कर्मकृतानवेक्ष्य भावाभावौ वर्तमानावनि-  
 त्यौ । बलिर्हि राजा पारमविन्दमानो नान्यत् कालात् कारणं तत्र मेने ॥ २४ ॥  
 चक्रुःश्रोत्रे नासिका वृक् च जिह्वा ज्ञानस्येतान्यामतनानि जन्तोः । तानि प्री-  
 तान्येव तृष्णाक्षयास्तु तान्यव्यथो दुःखहीनः प्रणुद्यात् ॥ २५ ॥ न ह्येव मन्ये पुरु-  
 षस्य कर्म मन्वर्तते सुप्रयुक्तं यथावत् । मातुः पितुः कर्मणातिप्रसूतः संवर्द्धते  
 विधिवद्वोजनेन ॥ २६ ॥ प्रियाप्रिये सुखदुःखे च राजनिन्दाप्रशंसे च भजन्तु  
 एनम् । परस्त्वेनं गर्हयतेऽपराधे प्रशंसते साधुवृत्तमेव ॥ २७ ॥ स द्वां गहं  
 भारतानां विरोधादन्तो नूनं भवितायं प्रजानाम् । नो चेदिदं तव कर्मः प्र-  
 राधात् कुरुन् दहेत् क्रुश्ववेत्तेव कर्मम् ॥ २८ ॥ द्वमेवैको जातु पुल्लस्य राजन्  
 वशं गत्वा सर्वलोके नरेन्द्र । कामात्पुनः शूषणो द्युतकाले नागाः शमं पश्या  
 विपाकमस्य ॥ २९ ॥ अनाप्तानां प्रग्रहाद्भ्यं नरेन्द्र तथाप्तानां निग्रहाच्छेव रा-  
 जन् । भूमिं स्फौतां दुर्बलत्वादनन्तां न शक्तुं रक्षितुं कौरवेव ॥ ३० ॥ अनु-  
 ज्ज्ञातो रथवेगावधूतः श्रोत्रोऽतिपद्ये शयनं नृसिंह । प्रातः श्रोतारः कुरवः  
 सभायामजातशत्रोर्बचनं समेताः ॥ ३१ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । अनुज्ज्ञातोऽस्य-

वसथं पतैरिहि सुखं प्रपद्यस्व शयनं सूतपुत्र । प्रातः श्रोतारः कुरवः सभायाम-  
जातशत्रोर्बचनं यथावत् ॥ ७२ ॥

इत्युद्योगपर्वणि सङ्गयथानपर्वणि धृतराष्ट्रसङ्गयसंबादे  
द्वात्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ७२ ॥



अथ प्रजागरपर्व ।

वैशम्पायन उवाच । द्वाःश्वं प्राह महाप्राज्ञो धृतराष्ट्रो महीपतिः । विदुरं  
द्रष्टुमिच्छामि तमिहानय मा चिरम् ॥ १ ॥ अहितो धृतराष्ट्रेण दूतः ऋत्वारमत्र वी० ।  
ईश्वरसुतां महाराजो महाप्राज्ञ दिदृक्षति ॥ २ ॥ एवमुक्तस्तु विदुरः प्राप्य राज-  
निवेशनम् । अत्रवीक्ष्यतराष्टाय द्वाःश्वं मां प्रतिवेदय ॥ ३ ॥ द्वाःश्व उवाच ।  
विदुरोऽहमनुप्राप्तो राजेन्द्र तव शासनात् । द्रष्टुमिच्छति ते पादौ किञ्चरोतु  
प्रशाधि माम् ॥ ४ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । प्रवेशय महाप्राज्ञं विदुरं दीर्घदर्शनम् ।  
अहं हि विदुरस्यास्य नाकल्यो जातु दर्शने ॥ ५ ॥ द्वाःश्व उवाच । प्रविशान्तुः-  
पुरं ऋत्वाहाराजस्य धीमतः । न हि ते दर्शनेऽकल्यो जातु राजाऽत्र वीक्षि  
माम् ॥ ६ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततः प्रविश्य विदुरो धृतराष्ट्रनिवेशनम् । अत्र-  
वी० प्राञ्जलिर्वाक्यं चिन्तयानं नराधिपम् ॥ ७ ॥ विदुरोऽहं महाप्राज्ञ संप्राप्त-  
स्तव शासनात् । यदि किञ्चन कर्तव्यमवगम्यि प्रशाधि माम् ॥ ८ ॥ धृतराष्ट्र उवाच ।  
सङ्गयो विदुर प्राप्नो गर्हयिष्या च मां गतः । अजातशत्रोः श्वो वाक्यं सभा-  
मध्ये स वक्ष्यति ॥ ९ ॥ तस्याद्य कुरुवीरस्य न विज्जातं वचो मया । तमे दहति  
गात्राणि तदकार्षी० प्रजागरम् ॥ १० ॥ जाग्रतो दहमानस्य श्रेयो यदनुपश्यामि ।  
तद्ब्रूहि त्वं हि नस्त्यत धर्मार्थकुशलो ह्यसि ॥ ११ ॥ यतः प्रापुः सङ्गयः पाण्डवेभ्यो  
न मे यथावग्नसः प्रशान्तिः । सर्वेन्द्रिवाण्यप्रकृतिङ्गतानि किं वक्ष्यतीत्येव हि  
मेहद्य चिन्ता ॥ १२ ॥ विदुर उवाच । अभियुक्तं बलवतीं दुर्बलं हीनसाधनम् ।  
हृतस्वं कामिनक्षोरमाविशन्ति प्रजागराः ॥ १३ ॥ कच्चिदेतैर्माहादोषैर्न स्पृ-  
ष्टोऽसि नराधिप । कच्चिच्छ परविद्येयु गृध्रान् परितप्यसे ॥ १४ ॥ धृतराष्ट्र उवाच ।  
श्रोतुमिच्छामि ते धर्म्यं परं नैःश्रेयसं वचः । अस्मिन्नाजर्षिवंशे हि द्वमेकः  
प्राज्ञसन्मतः ॥ १५ ॥ विदुर उवाच । निषेवते प्रशस्तानि निन्दितानि न सेवते ।  
अनास्तिकः शक्रान एतत् पण्डितसङ्गम् ॥ १६ ॥ राजा लक्षणसम्पन्नस्त्रैलोक्या-  
धिपो भवेत् । प्रेष्येत्प्रेषितश्चैव धृतराष्ट्र बुधिष्ठिरः । विपरीतरतश्च त्वं

ভাগধেয়ে ন সন্মতঃ ॥ ১৭ ॥ অর্চিষা প্রজ্ঞয়া চৈব ধর্মায়া ধর্মকোবিদঃ । আন-  
 শংস্যাৎক্রোশাদ্ধর্মাৎ সত্যপরাক্রমাৎ । গুরুত্বং ত্বয়ি সম্প্রক্ষ্য বহুন্ কেশান্  
 তিতিক্ষতে ॥ ১৮ ॥ দুর্ঘোষনে সৌবলেষে কর্ণে দুঃশাসনে তথা । এতেষৈশ্বর্যমা-  
 ধায় কথং ত্বং ভূতিনিচ্ছসি ॥ ১৯ ॥ আত্মজ্ঞানসম্মারস্তিস্তিতিক্ষা ধর্মনিত্যতা ।  
 যমর্থা নাপকর্ষন্তি স বৈ পণ্ডিত উচ্যতে ॥ ২০ ॥ ক্রোধো হর্ষশ্চ দর্পশ্চ হ্রীঃ স্তম্ভো  
 মান্যমানিতা । যমর্থান্নাপকর্ষন্তি স বৈ পণ্ডিত উচ্যতে ॥ ২১ ॥ যস্য কৃত্যং ন জানন্তি  
 মন্ত্রং বা মন্ত্রিতং পরে । কৃতমেवास্য জানন্তি স বৈ পণ্ডিত উচ্যতে ॥ ২২ ॥ যস্য  
 কৃত্যং ন বিদন্তি শীতমুখং ভয়ং রুতিঃ । সমৃদ্ধিরসমৃদ্ধির্বা স বৈ পণ্ডিত উচ্য-  
 তে ॥ ২৩ ॥ যস্য সংসারিণী প্রজ্ঞা ধর্মার্থাবনুবর্ততে । কামাদর্থং বৃণীতে যঃ স বৈ  
 পণ্ডিত উচ্যতে ॥ ২৪ ॥ যথাশক্তি চিকীর্ষন্তি যথাশক্তি চ কূর্বতে । ন কিঞ্চিদবম-  
 ন্যন্তে নরাঃ পণ্ডিতবৃদ্ধযঃ ॥ ২৫ ॥ ক্ষিপ্রং বিজানাতি চিরং শৃণোতি বিজ্ঞায় চার্থং  
 ভজতে ন কামাৎ । নাসংপৃষ্টো হুপযুক্তে পরার্থে তৎ প্রজ্ঞানং প্রথমং পণ্ডিত-  
 স্য ॥ ২৬ ॥ নাপ্রাপ্যনভিবাঙ্কন্তি নফৎ নেচ্ছন্তি শোচিতুন্ । আপৎসু চ ন  
 মুহুন্তি নরাঃ পণ্ডিতবৃদ্ধযঃ ॥ ২৭ ॥ নিশ্চিত্য যঃ প্রক্রমতে নাস্তর্বসতি কर्मণঃ ।  
 অবক্ষ্যাকালো বশ্যায়া স বৈ পণ্ডিত উচ্যতে ॥ ২৮ ॥ আর্ষ্যকর্মণি রজ্যন্তে ভূতি-  
 কর্ম্মণি কূর্বতে । হিতঞ্চ নাভ্যসৃযন্তি পণ্ডিতা ভরতর্ষভ ॥ ২৯ ॥ ন হব্যত্যাগস-  
 ম্মানে নাবমানে চ তপ্যতে । গাঙ্গে হুদ ইবাঙ্কোভ্যো যঃ স পণ্ডিত উচ্যতে ॥ ৩০ ॥  
 তত্ত্বজ্ঞঃ সর্বভূতানাং যোগজ্ঞঃ সর্বকর্ম্মণাম । উপায়জ্ঞো নৃত্য্যাণাং নরঃ পণ্ডিত  
 উচ্যতে ॥ ৩১ ॥ প্রবৃত্তবাকু চিত্রকথ উহাবান্ প্রতিভানবান্ । আশু গ্রন্থস্য বক্তা  
 চ যঃ স পণ্ডিত উচ্যতে ॥ ৩২ ॥ শ্রুতং প্রজ্ঞানুগং যস্য প্রজ্ঞা চৈব শ্রুতানুগা ।  
 অসন্তিগার্ষ্যমর্ব্যাৎ পণ্ডিতার্থ্যাং লভেত সঃ ॥ ৩৩ ॥ অশ্রুতশ্চ সমুদ্রো দরিদ্রশ্চ  
 মহাননাঃ । অর্থাংশ্চাকর্ম্মণা প্রেপ্সুমূচ ইতুচ্যতে বৃধৈঃ ॥ ৩৪ ॥ স্বমর্থং যঃ পরিত্যজে  
 পরার্থমনুতিষ্ঠতি । মিথ্যাচরতি মিত্রার্থে যশ্চ মূঢ় স উচ্যতে ॥ ৩৫ ॥ অকানন  
 কাময়তি যঃ কামযানান্ পরিত্যজেৎ । বলবন্তঞ্চ যো দ্বৈষ্টি তমাহমূঢ়চেতসন্ ॥ ৩৬ ॥  
 অমিত্রং কুরুতে মিত্রং মিত্রং দ্বৈষ্টি হিনস্তি চ । কস্য চারভতে দুর্ঘৎ তমাহমূঢ়চে-  
 তসন্ ॥ ৩৭ ॥ সংসারযতি কৃত্যানি সর্বত্র বিচিকিৎসতে । চিরং করোতি ক্ষিপ্ৰার্থে  
 স মূঢ়ো ভরতর্ষভ ॥ ৩৮ ॥ শ্রাদ্ধং পিতৃভ্যো ন দদাতি দৈবতানি ন চার্চাত । সুহ-  
 মিত্রং ন লভতে তমাহমূঢ়লক্ষণম ॥ ৩৯ ॥ অনাহতঃ প্রবিশতি অপৃষ্টো বহু  
 ভাষতে । অবিদ্বস্তে বিদ্বসিতি মূঢ়চেতী নরাধমঃ ॥ ৪০ ॥ পরং ক্ষিপতি দোষণে বর্ত-



मानः स्वयन्तथा । यश्च क्रुध्यत्यनीशानः स च मूढतमो नरः ॥ ४१ ॥ आत्मनो बलम-  
 ज्जाय धर्मार्थपरिवर्जितम् । अलभ्यमिच्छमैर्कर्म्यान्मूढबुद्धिरिहोच्यते ॥ ४२ ॥ अशि-  
 व्यं शास्त्रि यो राजन् यश्च शून्यमुपासते । कदर्व्यं भजते यश्च तमांश्मूढचेत-  
 सम् ॥ ४३ ॥ अर्थं महासुमनसाद्य विद्यामैश्वर्यमेव वा । विचरत्यसन्मुग्धो यः स  
 पण्डित उच्यते ॥ ४४ ॥ एकः सम्पन्नमन्त्राति वस्ते वासश्च शोभनम् । योऽसंवि-  
 तज्य भूतेभ्यः को नृशंसतरस्ततः ॥ ४५ ॥ एकः पापानि कुरुते फलं भुङ्क्ते  
 महाजनः । भोज्जारो विप्रमुच्यन्ते कर्ता दोषेण लिप्यते ॥ ४६ ॥ एकं हन्यान्न  
 वा हन्यादियुष्मन्को धनुश्चता । बुद्धिर्बुद्धिमतोऽसृष्टा हन्याद्राक्षुं सराजकम् ॥ ४७ ॥  
 एकया द्वे विनिश्चित्य त्रींश्चतुर्भिर्ब्रह्मेशे कुरु । पञ्च जिह्वा विदिह्य षट् सप्त हिह्य स्रुथी  
 भव ॥ ४८ ॥ एकं विषरसो हस्ति शस्त्रेणैकश्च बध्यते । सराक्षुं सप्रजं हस्ति  
 राजानं मन्त्रविप्लवः ॥ ४९ ॥ एकः स्वादू न भुङ्गीत एकंश्चार्थान् चिन्तयेत् । एको  
 न गच्छेदधानं नैकः सुप्रेषु जागृयात् ॥ ५० ॥ एकमेवाद्वितीयं तक्षद्राजमावबु-  
 ध्यसे । सत्यं स्वर्गस्य सोपानं पारावारस्य नोरिव ॥ ५१ ॥ एकः क्रमावतां  
 दोषो द्वितीयो नोपलभ्यते । वृदेनं क्रमरा युक्तमशक्तं मन्यते जनः ॥ ५२ ॥  
 सोऽस्य दोषो न मन्त्रव्यः क्रमा हि परमं बलम् । अक्रमावन् परं दोषैरात्मान-  
 ष्वापि योजयेत् ॥ ५३ ॥ एको धर्मः परं श्रेयः क्रमैकः शास्त्रिक्रमा । विद्वेका  
 परमा दृष्टिरिह संसैका सुखावहा ॥ ५४ ॥ द्वाविमो असते भूमिः सपो बिलशया-  
 निव । राजानश्वाप्ययोद्धारं ब्राह्मणश्वाप्रवासिनम् ॥ ५५ ॥ द्वे कर्मणी नरः कुर्वन्-  
 स्मिन् लोके विरोचते । अक्रवन् परुषं किञ्चिदसतो नार्क्ष्यंस्तथा ॥ ५६ ॥ द्वा-  
 विमो पुरुषव्याघ्र परप्रत्यकारिणो । स्त्रियः कामितकामिन्यो लोकः पूजितपू-  
 जकः ॥ ५७ ॥ द्वाविमो कण्टकौ तीक्ष्णौ शरीरपरिशोषिणो । यश्चाधनः कामयते  
 यश्च कूप्यतनीश्वरः ॥ ५८ ॥ द्वाविमो न विराजेते विपरीतेन कर्मणा । गहश्च  
 निरारम्भः कार्यवांश्चैव भिक्षुकः ॥ ५९ ॥ द्वाविमो पुरुषो राजन् स्वर्गस्योपरि  
 तिष्ठतः । प्रभुश्च क्रमया युक्तो दरिद्रश्च प्रदानवान् ॥ ६० ॥ न्यायागतस्य द्रव्यस्य  
 बोद्धव्यो द्वावतिक्रमो । अपात्रे प्रतिपत्तिश्च पात्रे चाप्रतिपादनम् ॥ ६१ ॥  
 द्वाविनावप्सु निष्केप्यो कथे वक्ता महाशिलाम् । धनवस्तुमदातारं दरिद्रक्षतपस्वि-  
 नम् ॥ ६२ ॥ द्वाविमो पुरुषो लोके सूर्यमण्डलभेदिनो । परिव्राज्योगयुक्तश्च  
 रणे चाभिमुखो हतः ॥ ६३ ॥ त्रयो न्याया मन्त्रुष्याणां श्रयस्ते भरतर्षभ । कनीयान्  
 मध्यमः श्रेष्ठ इति वेदविदो विदुः ॥ ६४ ॥ त्रिविधाः पुरुषा राजन् उत्तमाधनमध्य-

মাঃ । নিযোজযেদ্যথাবক্তাংস্ত্রিবিধেষেব কর্মসু ॥ ৬৫ ॥ ত্রয এবাধনা রাজন্ ভাৰ্য্যা  
দাসস্তথা স্তুতঃ । যত্তে সমধিগচ্ছন্তি যস্য তে তস্য তদ্ধনম্ ॥ ৬৬ ॥ হরণঞ্চ পর-  
স্বানাং পরদারোতিমর্ষণম্ । সুহৃদশ্চ পরিত্যাগস্ত্রয়ো দোষা ভযপ্রদাঃ ॥ ৬৭ ॥  
ত্রিবিধং নরকস্যেদং দ্বারং নাশনমাত্মনঃ । কামঃ ক্রোধস্তথা লোভস্তস্মাদেতল্লযং  
ত্যজেৎ ॥ ৬৮ ॥ ভক্তঞ্চ ভজমানঞ্চ তবাস্মীতি চ বাদিনম্ । ত্রীনেতাঙ্কুরণ-  
প্রাপ্তান্ বিষনেহপি ন সংত্যজেৎ ॥ ৬৯ ॥ বরপ্রদানং রাজ্যঞ্চ পুলকম্ চ ভার-  
ত । শত্রোশ্চ মোক্ষণং কুচ্ছাৎ ত্রীণি চৈকঞ্চ তৎসমম্ ॥ ৭০ ॥ চত্বারি রাজ্ঞা  
তু মহাবলেন বর্জ্যান্যাঙ্কঃ পণ্ডিতস্তানি বিদ্যাৎ । অল্পপ্রজ্ঞৈঃ সহ মন্ত্রং ন কু-  
ৰ্য্যাম দীৰ্ঘসূত্রৈরলসৈশ্চারণৈশ্চ ॥ ৭১ ॥ চত্বারি তে তাত গৃহে বসন্ত শিষ্যভিজু-  
ফস্য গৃহস্থধর্ম্মে । বৃদ্ধো জ্ঞাতিরবসনঃ কুলীনঃ সখা দরিদ্রো ভগিনী চান-  
পত্যা ॥ ৭২ ॥ চত্বার্য্যাহ মহারাজ সাদ্যক্ষানি বৃহস্পতিঃ । পৃচ্ছতে ত্রিদশে-  
শ্রায় তানীমানি নিবোধ মে ॥ ৭৩ ॥ দেবতানাঞ্চ সঙ্কল্পননুভাবঞ্চ ধীমতাম্ ।  
বিনয়ং কৃতবিদ্যানাং বিনাশং পাপকর্ম্মণাম্ ॥ ৭৪ ॥ চত্বারি কৰ্ম্মাণ্যভযকরাণি  
ভয়ং প্রযচ্ছন্ত্যথাকৃতানি । মানাগ্নিহোত্রমুত মানমৌনং মানেনাধীতমুত  
মানযজ্ঞঃ ॥ ৭৫ ॥ পঞ্চাগ্নয়ো মনুষ্যেণ পরিচর্যাঃ প্রযত্ততঃ । পিতা মাতাগ্নি-  
রাঙ্গা চ গুরুশ্চ ভরতর্ষভ ॥ ৭৬ ॥ পঞ্চৈব পূজযল্লোকে যশঃ প্রাপ্নোতি কেবলম্ ।  
দেবান্ পিতৃন্ মনুষ্যাংশ্চ ভিক্ষুনতিথিপঞ্চমান্ ॥ ৭৭ ॥ পঞ্চ ত্বানুগমিষ্যন্তি  
যত্র যত্র গমিষ্যসি । মিত্রাণ্যমিত্রা মধ্যস্থা উপজীব্যোপজীবিনঃ ॥ ৭৮ ॥ পঞ্চৈ-  
শ্চিযস্য মর্ত্যস্য ছিদ্ৰক্ষেদেকমিশ্চিযম্ । ততোহস্য সুবতি প্রজ্ঞা দূতেঃ পাদাদিবোদ-  
কম্ ॥ ৭৯ ॥ ষড়্দোষাঃ পুরুষেণেহ হাতব্যা ভূতিনিচ্ছতা । নিদ্রা তন্দ্রীর্ষ্যং  
ক্রোধমালস্যং দীৰ্ঘসূত্রতা ॥ ৮০ ॥ ষড়িমান্ পুরুষো জহাদ্ভিগ্নাং নাবমিবাণবে ।  
অপ্রবক্তারমাচার্য্যমনধীযানমৃষ্মিজম্ ॥ ৮১ ॥ অরক্ষিতারং রাজানং ভাৰ্য্যাঞ্চা-  
প্রিযবাদিনীম্ । গ্রামকামঞ্চ গোপালং বনকামঞ্চ নাপিতম্ ॥ ৮২ ॥ ষডেবতু  
গুণাঃ পুংসা ন হাতব্যাঃ কদাচন । সত্যং দানমনালস্যমনসুযা ক্ষম্য ধৃতিঃ ॥ ৮৩ ॥  
ষড়িমানি বিনশ্যন্তি মুহূর্ত্তমনবেক্ষণাৎ । গাবঃ সেবা কৃষিভাৰ্য্যাং বিদ্যা বধূলস-  
ঙ্গতিঃ ॥ ৮৪ ॥ ষডেতে হুবমন্যন্তে নিত্যং পূৰ্ব্বোপকারিণম্ । আচার্য্যং শিক্ষি-  
তাঃ শিষ্যাঃ কৃতদারাশ্চ মাতরম্ ॥ ৮৫ ॥ নারীং বিগতকামাশ্চ কৃতার্থাশ্চ প্রয়ো-  
জনম্ । নাবং নিস্তীর্ণকান্তারা আতুরাশ্চ চিকিৎসকম্ ॥ ৮৬ ॥ আরোগ্যমা-  
নৃণ্যমবিপ্রবাসঃ সন্দির্ম্মনুষ্যৈঃ সহ সংপ্রয়োগঃ । স্বপ্রত্যয়া বৃত্তিরভীতবাসঃ ষড্

जीवलोकस्य सुखानि राजन् ॥८१॥ ईषुर्बुनी नसञ्चर्कः क्रोधनो नित्यशक्ति-  
 तः । परभागेपजीवी च षडेते नित्यदुःखिताः ॥ ८८ ॥ अर्थाग्नौ नित्य-  
 मरोगिता च प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च । वश्याश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या षड्-  
 जीवलोकस्य सुखानि राजन् ॥ ८२ ॥ षण्णामान्नि नित्यार्नामैश्वर्यां योऽधिग-  
 छति । न स पापैः कुतोऽनर्थैर्युज्यते विजितेन्द्रियः ॥ २० ॥ षड्दिमे षट्सु  
 जीवन्ति सप्तमो नोपपद्यते । चोराः प्रमत्ते जीवन्ति व्याधितेषु चिकित्स-  
 काः ॥ २१ ॥ प्रमदाः कामधानेषु यजमानेषु याजकाः । राजा विवदमानेषु नित्यं  
 मूर्खेषु पण्डिताः ॥ २२ ॥ सप्त दोषाः सदा राज्ञा हातव्या व्यसनोदयाः । प्राय-  
 शो यैर्विनश्यन्ति कृतमूला अपीश्वराः ॥ २३ ॥ स्त्रियोऽङ्गा मृगया पानं वाकृपा-  
 रुष्यञ्च पञ्चमम् । महच्छ दण्डपारुष्यमर्थदूषणमेव च ॥ २४ ॥ अर्को पूर्वनिमित्तानि  
 नरस्य विनश्यतः । ब्राह्मणान् प्रथमं द्वेषि ब्राह्मणैश्च विरुध्यते ॥ २५ ॥  
 ब्राह्मणस्थानि चादत्ते ब्राह्मणांश्च जिघांसति । रमते निन्दया चैवां प्रशंसां  
 नाभिनन्दति ॥ २६ ॥ नैतान् स्मरति कृत्येषु याचितश्चाभ्यसूयति । एतान्  
 दोषान्नरः प्राप्ते बृध्येदुद्धा विवर्जयेत् ॥ २७ ॥ अर्काविमानि हर्षस्य नवनीतानि  
 भारत । वर्तमानानि दृश्यन्ते तान्येव सुसुखान्यपि ॥ २८ ॥ समागमश्च सखि-  
 त्तिर्महांश्चैव धनागमः । पुत्रेण च परिषद्भ्यः सन्निपातश्च मैथुने ॥ २९ ॥ समये  
 च प्रियालापः स्वयुथेषु समुत्तिः । अतिप्रेतस्य लाभश्च पूजा च जनसंस-  
 दि ॥ १०० ॥ अर्को गुणाः पुरुषं दीपयन्ति प्रज्वा च कौल्यञ्च दमः श्रुतञ्च । परा-  
 क्रमश्चावहताविता च दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च ॥ १०१ ॥ नवद्वारमिदं वेष्ट  
 त्रिसूत्रं पञ्चसाक्षिकम् । क्षेत्रज्ञाधिष्ठितं विद्वान् यो वेद स परः कविः ॥ १०२ ॥  
 दश धर्मं न जानन्ति धृतराष्ट्र निबोध तान् । नन्दः प्रमत्त उग्रतः शान्तः क्रुद्धो  
 बुभुक्षितः ॥ १०३ ॥ ह्यरमाणश्च तीरुश्च लूकः कामी च ते दश । तस्मादेतेषु  
 सर्वेषु न प्रसज्जेत पण्डितः ॥ १०४ ॥ अत्रैवोदाहरन्तीममितिहासं पुरात-  
 नम् । पुल्लामसुरेन्द्रेण गीतक्षेत्रेव सूध्वना ॥ १०५ ॥ यः काममन्य प्रजहाति  
 राजा पात्रे प्रतिष्ठापयते धनञ्च । विशेषविच्छ्रुतवान् क्षिप्रकारी तं सर्व-  
 लोकः कुरुते प्रमाणम् ॥ १०६ ॥ जानाति विश्वासयितुं मनुष्यान् विज्जातदो-  
 षेषु दधाति दण्डम् । जानाति मात्राञ्च तथा क्रमाञ्च तं तादृशं श्रीर्जुषते सम-  
 ग्रा ॥ १०७ ॥ यो दुर्बलनावजानाति कश्चिद्वुक्त्वा रिपुं सेवते बुद्धिपूर्वम् । न  
 विग्रहं रोचयते बलैस्त्रैः काले च यो विक्रमते स धीरः ॥ १०८ ॥ प्राप्यापदम्

व्यथते कदाचिदुद्देश्योपनिषत्ति चाप्रमत्तः । दुःखं काले सहते महात्मा धुरन्तर-  
रसुप्तस्य जिताः सपत्न्याः ॥ १०२ ॥ अनर्थकं विप्रवासं गृहेभ्यः पापैः सन्नि-  
परदारंतिमर्षम् । दन्तं तैस्तन्यं तैश्चनं मद्यपानं न सेवते यः स सुखी सदै-  
वः ॥ ११० ॥ न संरक्षेणारभते त्रिवर्गमाकारितः शंसति तद्वमेव । न मात्रार्थे  
रोचते विवादं नापूजितः कुप्यति चाप्यमुचः ॥ १११ ॥ न यो ह्यभ्यस्यत्यनु-  
स्पते च न दुर्बलः प्रातिभाव्यं करोति । नात्याह किञ्चिं क्रमते विवादं सर्वत्र  
तादृगुभते प्रशंसाम् ॥ ११२ ॥ यो नोद्वेगतं कुरुते जातु वेशं न पौरुषे-  
णापि विकथतेहन्यन् । न मूर्च्छितः कटुकान्याह किञ्चिं प्रियं सदा तं कुरुते  
जनोऽपि ॥ ११३ ॥ न वैरमुद्धीपयति प्रशान्तं न दर्पमारोहति नास्तमेति । न  
दुर्गतोऽस्मीति करोत्यकार्यं तमार्यशीलं परमाह्वार्याः ॥ ११४ ॥ न श्वे  
सुखे कुरुते वै प्रहर्षं नान्यस्य दुःखे भवति प्रहर्षः । दत्त्वा न पश्चात् कुरुते-  
हनुतापं स कथ्यते संपुरुषार्यशीलः ॥ ११५ ॥ देशाचारान् समथान् जाति-  
धर्मान् बुभूषते यः स परावरुद्धः । स यत्र तत्राभिगतः सदैव महाजनस्याधिपत्य-  
करोति ॥ ११६ ॥ दन्तं मोहं मंसरं पापकृत्यं राजद्विष्टं तैश्चनं पुण-  
वैरम् । मन्त्रोक्तैर्दुर्जनैश्चापि वादं यः प्रज्जावान् वर्जयेत् स प्रधानः ॥ ११७ ॥  
दमं शौचं दैवतं मङ्गलानि प्रायश्चित्तं विविधान् लोकवान् । एतानि यः  
कुरुते नैतिकानि तस्योथानं देवता धारयन्ति ॥ ११८ ॥ सैमैर्विवाहं कुरुते  
न हीनैः सैमैः सख्यं व्यवहारं कथाश्च । गुणैर्विशिष्टांश्च पुरो दधाति विपश्चि-  
तस्तस्य नवाः सुनीताः ॥ ११९ ॥ मितं बुद्धे संविभज्याश्रितेत्यो मितं स्वपित्य-  
मितं कर्म कृत्वा । ददात्यमित्रेषुपि याचितः स्वं तमात्रवस्तुं प्रजहत्यनर्थाः ॥ १२० ॥  
चिकीर्षितं विप्रकृतं यस्य नान्ये जनाः कर्म जानन्ति किञ्चिं । मन्त्रे गुप्ते सम्य-  
गनुष्ठिते च नास्त्रोप्यस्य च्यवते कश्चिदर्थः ॥ १२१ ॥ यः सर्वभूतप्रशमे निविष्टः  
सत्यो मृदुर्दानकृच्छुद्धभावः । अतीव स ज्ञायते ज्ञातिमध्ये महामणिर्जात्य ईर  
प्रसन्नः ॥ १२२ ॥ य आत्मानापत्रपते भृशन्नरः स सर्वलोकस्य गुरुर्भवतु न । अनन्त-  
तेजाः सुमनाः समाहितः स्वतेजसा सूर्या इवावभाषते ॥ १२३ ॥ बने जाताः  
शापदन्तस्य राज्ञः पाण्डोः पुत्राः पक्ष पक्षेन्द्रकलाः । स्वैव बाला वद्विताः शिक्षि-  
ताश्च तवादेशं पालयन्त्याधिकेय ॥ १२४ ॥ प्रदायैषामुचितं तात राज्यं सुखी  
पुत्रैः सहितो मोदमानः । न देवानां नापि च मानुषाणां भविष्यति त्वं तर्क-  
नीयो नरेन्द्र ॥ १२५ ॥

इत्युद्देश्योपनिषदि प्रजागरपर्वणि विदुरहितवाक्ये त्रयस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ७७ ॥

ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । জাগ্রতো দহমানস্য যৎ কার্যমনুপশ্যসি । তদ্বুহি ত্বং হি  
 নস্তাত ধর্মার্থকুশলো হসি ॥ ১ ॥ ত্বং মাং যথাবদ্বিদুর প্রশাধি প্রজ্ঞাপূর্বং সর্ব-  
 মজাতশত্রোঃ । যন্নন্যসে পথ্যমদীনসত্ব শ্রেয়স্করং বুহি তদ্বৈ কুরুণামু ॥ ২ ॥  
 পাপাশকী পাপমেবানুপশ্যন্ পৃচ্ছামি ত্বাং ব্যাকুলেনাত্মনাহম্ ॥ ২ ॥ তদেতন্মৈ  
 বুহি সর্বং যথাবগ্ননীষিতং সর্বমজাতশত্রোঃ ॥ ৩ ॥ বিদুর উবাচ । শুভং বা  
 যদি বা পাপং দেষ্যং বা যদি বা প্রিয়ম্ । অপৃষ্ঠস্তস্য তদ্ব্যাদ্যস্য নেচ্ছেৎ পরা-  
 ভবম্ ॥ ৪ ॥ তস্মাদক্ষ্যামি তে রাজন্ ভবমিচ্ছন্ কুরুন্ প্রতি । বচঃ শ্রেয়স্করং  
 ধর্ম্যং ক্রবতস্তমিবোধ মে ॥ ৫ ॥ মিথ্যোপেতানি কর্ম্মাণি মিথ্যেযুর্য়ানি ভারত ।  
 অনুপায়প্রযুক্তানি মা স্ম তেষু মনঃ কুথাঃ ॥ ৬ ॥ তথৈব যোগবিহিতং যত্র কর্ম্ম  
 ন সিধ্যতি । উপায়যুক্তং মেধাবৌ ন তত্র গুণযেগ্ননঃ ॥ ৭ ॥ অনুবন্ধানপেক্ষেত  
 সানুবন্ধেষু কর্ম্মসু । সংপ্রধার্য চ কুরীত ন বেগেন সমাচরেৎ ॥ ৮ ॥ অনুবন্ধঃ  
 সংপ্রেক্ষ্য বিপাকৈব কর্ম্মণাম্ । উত্থানমাত্মনশ্চৈব ধীরঃ কুরীত বা ন বা ॥ ৯ ॥  
 যঃ প্রমাণং ন জানাতি স্থানে বদ্বৌ তথা ক্ষযে । কোষে জনপদে দণ্ডে ন স রাজ্যে-  
 হবতিষ্ঠতে ॥ ১০ ॥ যস্তেতানি প্রমাণানি যথোক্তান্যনুপশ্যতি । যুক্তো ধর্ম্মার্থ-  
 যোজ্ঞানে স রাজ্যমধিগচ্ছতি ॥ ১১ ॥ ন রাজ্যং প্রাপ্তমিত্যেব বর্জিতব্যমসাং-  
 প্রতম্ । শ্রিষং হবিনযো হস্তি জরা কপমিরোত্তমম্ ॥ ১২ ॥ ভক্ষ্যোত্তমপ্রতি-  
 ছন্নং মৎস্যো বড়িশনায়সম্ । লোভাভিপাতী গ্রসতে নানুবন্ধমবেক্ষতে ॥ ১৩ ॥  
 যচ্ছক্যং গ্রাসিতুং গ্রস্যং গ্রস্তং পরিণমেচ্চ যৎ । হিতঞ্চ পরিণামে যত্রদাদ্যং ভূতি-  
 মিচ্ছতা ॥ ১৪ ॥ বনস্পতেরপক্কানি ফলান্যুপচিনোতি যঃ । স নাপ্নোতি রস-  
 ন্তেভ্যো বীজন্তস্য বিনশ্যতি ॥ ১৫ ॥ যস্তু পক্ষমুপাদত্তে কালে পরিণতং ফলম্ ।  
 ফলাদ্রসং স লভতে বীজাচ্চৈব ফলং পুনঃ ॥ ১৬ ॥ যথা মধু সমাদত্তে রক্ষন্  
 পুষ্পাণি ষট্‌পদঃ । তদ্বদর্থান্ননুষ্যেভ্য আদদ্যাদবিহিংসয়া ॥ ১৭ ॥ পুষ্পং পুষ্পং  
 বিচিনীত মূলচ্ছেদম কারয়েৎ । মালাকার ইবারামে ন যথাঙ্গারকারকঃ ॥ ১৮ ॥  
 কিং নু মে সমাদিদং কুত্বা কিং নু বা স্যাদকুর্ষতঃ । ইতি কর্ম্মাণি সন্ধিস্ত্য কুর্য্যাছা  
 পুরুষো ন বা ॥ ১৯ ॥ অনারভ্যা ভবন্ত্যর্থঃ কেচিমিত্যং তথাগতাঃ । কৃতঃ পুরুষ-  
 কারো হি ভবেদেষু নিরর্থকঃ ॥ ২০ ॥ প্রসাদো নিষ্ফলো যস্য ক্রোধশ্চাপি নির-  
 র্থকঃ । ন তং ভর্ত্তারমিচ্ছন্তি ষণ্ডং পতিমিব স্ত্রিয়ঃ ॥ ২১ ॥ কাংশ্চিদর্থামরঃ  
 প্রাজ্ঞো লঘুমূলান্নহাফলান্ । ক্ষিপ্রমারভতে কর্ত্তুং ন বিস্ময়তি তাদৃশান্ ॥ ২২ ॥  
 ঋজুঃ পশ্যতি যঃ সর্বং চক্ষুবানুপিবমিব । আসীনমপি তুষীকমনুরজ্যন্তি তং

প্রজাঃ ॥ ২৩ ॥ সুপুষ্পিতঃ স্যাদফলঃ ফলিতঃ স্যাদ্‌রারুহঃ । অপকঃ পকস  
 কাশোনচশীর্ষ্যেত কৰ্হিচিৎ ॥ ২৪ ॥ চক্ষুষা মনসা বাচা কৰ্ম্মণা চ চতুর্বিধম্ । প্রসা-  
 দযতি যো লোকং তং লোকোহনুপ্রসীদতি ॥ ২৫ ॥ যস্মাভ্রস্যন্তি ভুতানি মৃগ-  
 ব্যাধান্মৃগা ইব । সাগরান্তামপি মহীং লক্ষ্মা স পরিহীযতে ॥ ২৬ ॥ পিতৃপৈতা-  
 মহং রাজ্যং প্রাপ্তং বা স্বেন তেজসা । বায়ুরব্রুমিবাসাদ্য ভ্রংশযত্যানযস্থিতঃ ॥ ২৭ ॥  
 ধৰ্ম্মমাচরতো রাজ্ঞঃ সন্তিচরিতমাদিতঃ । বসুধা বসুসংপূৰ্ণা বর্ধতে ভূতিবর্দ্ধি-  
 নী ॥ ২৮ ॥ অথ সংত্যজতো ধৰ্ম্মমধৰ্ম্মঞ্চানুতিষ্ঠতঃ । প্রতিসংবেষ্টিতে ভূমিরগ্নৌ  
 চৰ্ম্মাহিতং যথা ॥ ২৯ ॥ য এব যত্নঃ ক্রিয়তে পররাষ্ট্রবিমর্দনে । স এব যত্নঃ কৰ্ত্তব্যঃ  
 স্বরাষ্ট্রপরিপালনে ॥ ৩০ ॥ ধৰ্ম্মেণ রাষ্ট্রং বিদ্যেত ধৰ্ম্মেণ পরিপালয়েৎ । ধৰ্ম্মমূলাৎ  
 শ্রিয়ং প্রাপ্য ন জহাতি ন হীযতে ॥ ৩১ ॥ অপুণ্যভ্রাতৃং প্রলপতো বালাচ্চ পরি-  
 জল্পতঃ । সৰ্বতঃ সারবাদদ্যাদশ্চাত্য ইব কাঞ্চনম্ ॥ ৩২ ॥ সুব্যাহতানি সূক্তানি  
 সূরুতানি ততস্ততঃ । সংচিন্মক্ষীর আসীত শিলাহারী শিলং যথা ॥ ৩৩ ॥ গন্ধেন  
 গাবঃ পশ্যন্তি বেদৈঃ পশ্যন্তি ব্রাহ্মণাঃ । চারৈঃ পশ্যন্তি রাজানশ্চক্ষুর্ভ্যামিতরে  
 জনাঃ ॥ ৩৪ ॥ ভূযাংসং লভতে কেশং যা গোত্ববতি দুদুহা । অথ যা সুদুহা রাজ-  
 ম্বেব তাং বিতুদন্ত্যপি ॥ ৩৫ ॥ যদতপ্তং প্রণমতি ন তৎ সস্তাপযন্ত্যপি । যচ্চ  
 স্বয়ম্মেদারু ন তৎ সন্নামযন্ত্যপি ॥ ৩৬ ॥ এতযোপমযা ধীরঃ সন্নমেত বলীযসে ।  
 ইন্দ্রায় স প্রণমতে নমতে যো বলীযসে ॥ ৩৭ ॥ পঙ্কন্যনাথাঃ পশবো রাজানো  
 মন্ত্রিবান্ধবাঃ । পতযো বান্ধবাঃ স্ত্রীণাং ব্রাহ্মণা বেদবান্ধবাঃ ॥ ৩৮ ॥ সত্যেন  
 রক্ষ্যতে ধৰ্ম্মো বিদ্যা যোগেন রক্ষ্যতে । মূজযা রক্ষ্যতে রূপং কুলং বৃত্তেন রক্ষ্য-  
 তে ॥ ৩৯ ॥ মানেন রক্ষ্যতে ধান্যমশ্বানুক্রত্যনুক্ৰমঃ । অভীক্ষুদর্শনং গাশ্চ স্ত্রিবো  
 রক্ষ্যাঃ কুটেলতঃ ॥ ৪০ ॥ ন কুলং বৃত্তহীনস্য প্রমাণমিতি মে মতিঃ । অন্তেষ্মপি  
 হি জাতানাং বৃত্তমেব বিশিষ্যতে ॥ ৪১ ॥ য ঙ্গিষুঃ পরবিত্তেষু রূপে বীৰ্য্যে কুলা-  
 যযে । সুখে সৌভাগ্যসংকারে তস্য ব্যাধিরনন্তকঃ ॥ ৪২ ॥ অকার্য্যকরণাঙ্ঘীতঃ  
 কার্য্যাণাঞ্চ বিবর্জনাৎ । অকালে মন্ত্রভেদাচ্চ যেন মাদ্যেন তৎ পিবেৎ ॥ ৪৩ ॥  
 বিদ্যামদো ধনমদস্তুতীযোহভিজনো মদঃ । মদা এতেহবলিপ্তানামেত এব সতাং  
 দমাঃ ॥ ৪৪ ॥ অসন্তোহভ্যর্চিতাঃ সন্তিঃ ক্বচিৎ কার্য্যে কদাচন । মন্যন্তে সন্তুনা-  
 ত্ত্বানমসন্তুমপি বিশ্রুতম্ ॥ ৪৫ ॥ গতিরাত্মবতাং সন্তুঃ সন্তু এব সতাক্ৰতিঃ । অসতাক্ৰ  
 গতিঃ সন্তো ন হুসন্তুঃ সতাক্ৰতিঃ ॥ ৪৬ ॥ জিতা সতা বস্তুবতা মিষ্ঠাশা গোমতা  
 জিতা । অধ্বা জিতো যানবতা সৰ্বং শীলবতা জিতম্ ॥ ৪৭ ॥ শীলং প্রধানং

पुरुषे तन्मस्येह प्रणशति । न तस्य जीवितेनार्थो न धनेन न वस्तुभिः ॥ ४८ ॥  
 आद्यानां मांसपरमं मध्यानां गोरसोत्तरम् । तैलोत्तरं दरिद्राणां भोजनं  
 त्रतर्षभ ॥ ४९ ॥ सम्पन्नतरमेवान्नं दरिद्रा भुङ्क्ते सदा । क्लृप्तं स्वादुतां जनयति  
 सा चाद्येषु सुदुर्लभा ॥ ५० ॥ प्रायेण शीमतां लोके भोक्तुं शक्तिर्न विद्यते ।  
 जीर्यन्त्यपि तु काष्ठानि दरिद्राणां महीपते ॥ ५१ ॥ अबुद्धेर्धनस्यानां मध्यानां  
 मरणान्त्यम् । उन्नमानान् मर्त्यानामवमानां परं भयम् ॥ ५२ ॥ ऐश्वर्यामदपापिष्ठा  
 मदाः पानमदादयः । ऐश्वर्यामदमत्तो हि नापतिव्यः विबुध्यते ॥ ५३ ॥ इन्द्रियैरि-  
 न्द्रियाथेषु वर्तमानैरनिग्रहैः । तैरयं ताप्यते लोको नक्त्राणि ग्रहैरि-  
 व ॥ ५४ ॥ यो जितः पक्षवर्गेण सहजेनात्मकर्षिणा । आपदस्तस्य बद्धन्ते शुकूपक्ष  
 इवोडुराट् ॥ ५५ ॥ अविजित्य य आत्मानममात्यान् विजिगीषते । अमित्रान् वा-  
 जितामात्याः सोऽवशः परिहीयते ॥ ५६ ॥ आत्मानमेव प्रथमं द्वेष्यकृपेण वो-  
 जयेत् । ततोऽमात्यान्मित्रांश्च न मोक्षं विजिगीषते ॥ ५७ ॥ वश्यान्प्रियं  
 जितात्मानं धृतदण्डं विकारिषु । परीक्ष्यकारिणं धीरमत्यन्तं शीर्निषेवते ॥ ५८ ॥  
 रथः शरीरं पुरुषस्य राजमात्रा निषतेन्द्रियाण्यस्य चाश्वाः । तैरप्रमत्तः कुर्शली  
 सदश्वेर्दासैः सुखं याति रथीव धीरः ॥ ५९ ॥ एतान्यनिगृहीतानि व्यापादयि-  
 तुमप्यलम् । अविधेया इवादाम्ना हयाः पथि कुसारथिम् ॥ ६० ॥ अनर्थमर्थतः  
 पश्यन्नर्थं चैवाप्यनर्थतः । इन्द्रियैरजितैर्बालः सुदुःखं मन्यते सुखम् ॥ ६१ ॥  
 धर्मार्थो यः परित्यज्य स्याद्विद्विषवशान्नुगः । शीघ्राणधनदारेभ्यः क्षिप्रं स परि-  
 हीयते ॥ ६२ ॥ अर्थानामीश्वरो यः स्याद्विद्विषाणामनीश्वरः । इन्द्रियाणाननै-  
 श्वर्यात् ब्रशतीह न संशयः ॥ ६३ ॥ आत्मानात्मानमन्निच्छेन्नोबुद्धोन्द्रियैर्ब-  
 तैः । आत्मा हेवात्मानो बन्धुरात्मेव रिपुरात्मानः । बन्धुरात्मानस्तस्य येनात्मा-  
 वात्माना जितः ॥ ६४ ॥ क्लृद्राक्लेषेणैव जालेन बाधावपिहितवक् । कामश्च राजन्  
 क्रोधश्च तौ प्रज्जानं विलुप्ततः ॥ ६५ ॥ मनवेक्ष्येह धर्मार्थो सत्तारान् योऽधि-  
 गच्छति । स वै समुत्तमं तारं सततं सुखमेधते ॥ ६६ ॥ यः पक्षाभ्यन्तरान्  
 शत्रून्विजित्य मनोमथान् । जिगीषति रिपूनन्यान् रिपवोऽतिभवंति तम् ॥ ६७ ॥  
 दृश्यन्ते हि दुरात्मानो बध्यमानाः स्वकर्मभिः । इन्द्रियाणामनीश्वराद्राजानो राज्य-  
 विभ्रमे ॥ ६८ ॥ असन्त्यागात् पापकृतानपापांस्तुल्यो दण्डः स्पृशते मिश्रभा-  
 वात् । शुक्लेणार्द्रं दहते मिश्रभावान्द्रव्यात् पापैः सह सक्तिं न कुर्यात् ॥ ६९ ॥  
 निजान्नुत्पततः शत्रून् पक्ष पक्ष प्रयोजनान् । यो मोहान् निगृह्णाति तमापत्

গ্রসতে নরম্ ॥ ৭০ ॥ অনসূযার্জবং শৌচং সন্তোষঃ প্রিযবাদিতা । দমঃ সত্যম-  
নাষাসো ন ভবন্তি দুরাত্মনাম্ ॥ ৭১ ॥ আত্মজ্ঞানমনাযাসস্তিতিক্ষা ধর্ম্মনিত্যতা ।  
বাক্ চৈব গুপ্তা দানঞ্চ নৈতান্যন্ত্যেষু ভারত ॥ ৭২ ॥ আক্ৰোশপরিবাদাত্যাং  
বিহিংসন্ত্যবুধা বুধান্ । বক্তা পাপনুপাদত্তে ক্ষমনাণো বিমুচ্যতে ॥ ৭৩ ॥ হিংসা  
বলমসাধুনাং রাজ্ঞাং দণ্ডবিধির্বলম্ । শুশ্রুষা তু বলং স্ত্রীণাং ক্ষমা গুণবতাং ব-  
লম্ ॥ ৭৪ ॥ বাক্ সংযমো হি নৃপতে সুদুর্করতমো মতঃ । অর্থবচ্চ বিচিত্রঞ্চ ন  
শক্যং বহু ভাষিতুন্ ॥ ৭৫ ॥ অভ্যাবহতি কল্যাণং বিবিধং বাক্ সুভাষিতা । মৈব  
দুর্ভাষিতা রাজম্ননর্থাযোপদ্যতে ॥ ৭৬ ॥ রোহতে সাযকৈর্বিদ্বং বনং পরশুনা  
হতম্ । বাচা দুর্ভুক্তং বীভৎসং ন সংরোহতি বাক্ ক্ষতম্ ॥ ৭৭ ॥ কর্ণিনালীকনা-  
রাচান্নিহ্নরন্তি শরীরতঃ । বাক্ ছল্যস্ত ন নিহ্নতং শক্যো হৃদিশযো হি মঃ ॥ ৭৮ ॥  
বাক্ সাযকা বদনান্নিপ্পতন্তি যৈরাহতঃ শোচতি রাত্ৰ্যহানি । পরস্য নামর্শ্মসু তে  
পতন্তি তান্ পণ্ডিতো নাবসৃজেৎ পরেষু ॥ ৭৯ ॥ যস্মৈ দেবাঃ প্রযচ্ছন্তি পুরুষাষ  
পরাভবম্ । বুদ্ধিত্তস্যাপকর্ষন্তি সোহবাচীনানি পশ্যতি ॥ ৮০ ॥ বুদ্ধৌ কলুষ-  
ভুগ্নায়াং বিনাশে প্রতু্যপস্থিতে । অনযো নফসঙ্কাশো হৃদযান্নাপসর্পতি ॥ ৮১ ॥  
সেযং বুদ্ধিঃ পরীতা তে পুত্রাণাং ভরতর্ষভ । পাণ্ডবানাং বিরোধেন ন চৈনানব-  
বুধ্যসে ॥ ৮২ ॥ রাজলক্ষণসম্পন্নস্ত্রৈলোক্যস্যাপি যো ভবেৎ । শিষ্যস্তে শাসিতা  
সোহস্তং ধৃতরাষ্ট্র যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ৮৩ ॥ অতীব সর্বান পুত্রাংস্তু ভাগধেষপুরুতঃ ।  
তেজসা প্রজ্জয়া চৈব যুক্তো ধর্ম্মার্থতদ্ববিৎ ॥ ৮৪ ॥ অনুক্রোশাদান্শংস্যাদ্যোহ  
সৌ ধর্ম্মভূতায়রঃ । গৌরবাত্তব রাজেন্দ্র বহূন্ ক্লেশাংস্তিতিক্ষতি ॥ ৮৫ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি প্রজাগরপর্বনি বিদুরবাক্যে চতুস্ত্রিংশত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩৪ ॥



ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । বৃহি ভূযো মহাবুদ্ধে ধর্ম্মার্থসহিতম্ভচঃ । শৃণুতো নাস্তি মে  
তৃপ্তির্বিচিত্রাণি হি ভাষসে ॥ ১ ॥ বিদুর উবাচ । সর্বতীর্থেষু বা স্নানং সর্বভূতৈ-  
ষু চাজ্জবম্ । উভে হ্যেতে সমে স্যাতামাজ্জবং বা বিশিষ্যতে ॥ ২ ॥ আর্জবং  
প্রতিপদ্যস্ব পুল্লেষু সততং বিভো । ইহ কীর্ত্তিং পরাং প্রাপ্য প্রেত্য স্বর্গমবাপ্য-  
সি ॥ ৩ ॥ যাবৎ কীর্ত্তিমন্মুখ্যস্য পুণ্যা লোকেষু গীযতে । তাবৎ স পুরুষব্যায়ু  
স্বর্গলোকে মহীযতে ॥ ৪ ॥ অত্রাপ্যদাহরন্তীমমিতিহাসং পুরাতনম্ । বিরোচ-  
নস্য সম্বাদং কোশিন্যর্থৈ সুধননা ॥ ৫ ॥ স্বয়ম্বরে স্থিতা কন্যা কোশিনী নাম না-  
মতঃ । রূপেণাপ্রতিমা রাজন্ বিশিষ্টপতিকাম্যয়া ॥ ৬ ॥ বিরোচনোহথ দৈতেষ-



স্তদা তত্রাজগাম হ । প্রাপ্তুমিচ্ছং স্ততস্তত্র দৈত্যৈশ্চং প্রাহ কেশিনী ॥ ৭ ॥ কেশি-  
 ন্যুবাচ । কিং ত্রাক্ষণা বৈ শ্রেয়াংসো দিতিজাঃ স্থিদিরোচন । অথ কেনাস্ম প-  
 র্যাকং সুধন্বা নাধিরোহতি ॥ ৮ ॥ বিরোচন উবাচ । প্রাজাপত্যা হি বৈ শ্রেষ্ঠা  
 বয়ং কেশিনি সত্তমাঃ । অস্মাকং খল্বিমে- লোকাঃ কে দেবাঃ কে দ্বিজাতযঃ ॥ ৯ ॥  
 কেশিন্যুবাচ । ইহৈবাবাং প্রতীক্ষ্য উপস্থানে বিরোচন । সুধন্বা প্রাতরাগস্তা  
 পশেষ্যং বাং সমাগতো ॥ ১০ ॥ বিরোচন উবাচ । তথা ভদ্রে করিষ্যামি যথা  
 ভ্বং ভীরু ভাষসে । সুধন্বানঞ্চ মাতৈশ্চৈব প্রাতর্দ্রষ্টাসি সঙ্গতো ॥ ১১ ॥ বিদুর উবাচ ।  
 অগ্নীতায়ঞ্চ শর্ষর্যামুদিতে সূর্য্যমণ্ডলে । অথাজগাম তদ্দেশং সুধন্বা রাজসত্তম ।  
 বিরোচনো যত্র বিভো কেশিন্যা সহিতঃ স্থিতঃ ॥ ১২ ॥ সমাগতং দ্বিজং দৃষ্ট্বা  
 কেশিনী ভরতর্ষভ । প্রত্যুখায়াসনং তস্মৈ পাদ্যমর্ঘ্যং দদৌ পুনঃ ॥ ১৩ ॥ সুধ-  
 ন্বোবাচ । অন্বালতে হিরণ্যং প্রাহাদে তে বরাসনম্ । একত্বমুপসম্পন্নো ন ত্বা-  
 সেহং ত্বয়া সহ ॥ ১৪ ॥ বিরোচন উবাচ । তবাহতে তু ফলকং কূর্টং বা প্যথ  
 বা বৃষী । সুধন্বম ত্বমর্হোহসি যথা সহ সমাসনং ॥ ১৫ ॥ সুধন্বোবাচ । পিতা-  
 পুত্রৌ সহাসীতাং দ্বৌ বিপ্রৌ ক্ষত্রিযাবপি । বৃদ্ধৌ বৈশ্যৌ চ শত্রৌ চ ন ত্বন্যা-  
 বিতরেতরং ॥ ১৬ ॥ পিতা হি তে সমাসীনমুপাসীতৈব মামধঃ । বালঃ সূতৈ-  
 ধিতো গেহে ন ত্বং কিঞ্চন বুধ্যসে ॥ ১৭ ॥ বিরোচন উবাচ । হিরণ্যঞ্চ গবাস্থঞ্চ  
 যদ্বিত্তমসুরেষু নঃ । সুধন্বন্ বিপণে তেন প্রশ্নং পৃচ্ছাব যে বিদুঃ ॥ ১৮ ॥ সুধন্বো-  
 বাচ । হিরণ্যঞ্চ গবাস্থঞ্চ তথৈবাস্তু বিরোচন । প্রাণযোস্তু পণং কুত্বা প্রশ্নং  
 পৃচ্ছাব যে বিদুঃ ॥ ১৯ ॥ বিরোচন উবাচ । আবাং কুত্র গমিষ্যাবঃ প্রাণযোর্বি-  
 পণে কুতে ন তু দেবেষহং স্থাতা ন মনুষ্যেষু কর্হিচিৎ ॥ ২০ ॥ সুধন্বোবাচ । পিত-  
 রন্তে গমিষ্যাবঃ প্রাণযোর্বিপণে কুতে । পুলস্যাপি স হেতোর্হি প্রহাদো নানু-  
 তং বদেৎ ॥ ২১ ॥ বিদুর উবাচ । এবং কুতপনৌ ক্রুদ্ধৌ তত্রাভিজগ্মতুস্তদা ।  
 বিরোচনসুধন্বানৌ প্রহাদো যত্র তিষ্ঠতি ॥ ২২ ॥ প্রহাদ উবাচ । ইমৌ তৌ  
 সংপ্রদৃশ্যেতে যাভ্যাং ন চরিতং সহ । আশীবিষাবিব ক্রুদ্ধাবেকমার্গাবিহাগ-  
 তৌ ॥ ২৩ ॥ কিং বৈ মহৈবং চরথো ন পুরা চরথঃ সহ । বিরোচনৈতৎ পৃচ্ছামি  
 কিস্তে সখ্যং সুধন্বনা ॥ ২৪ ॥ বিরোচন উবাচ । ন মে সুধন্বনা সখ্যং প্রাণযো-  
 র্বিপণাবহে । প্রহাদ তত্বাং পৃচ্ছামি মা প্রশ্নমনৃতং বদেৎ ॥ ২৫ ॥ প্রহাদ উ-  
 বাচ । উদকং মধুপর্কঞ্চ প্যানযন্ত সুধন্বনে । ব্রহ্মমভ্যর্চনীযোহসি শ্বেতা গোঃ  
 পীবরী কুতা ॥ ২৬ ॥ সুধন্বোবাচ । উদকং মধুপর্কঞ্চ পথিষেবার্পিতম্মম । প্রহাদ

স্বস্ত্র মে তথ্যং প্রশ্নং প্রবুহি পৃচ্ছতঃ । কিং ব্রাহ্মণা বৈ শ্রেযাংস উতাহোষ্বিহিরো-  
 চনঃ ॥২৭॥ প্রহ্লাদ উবাচ । পুত্র একৌ মম ব্রহ্মংস্তুঞ্চ সাক্ষাদিহ স্থিতঃ । তযো-  
 র্বিবদতোঃ প্রশ্নং কথমস্মদ্বিধৌ বদেৎ ॥ ২৮ ॥ সুধন্বোবাচ । গাং প্রদদ্যাস্তৌর-  
 সাং যচ্চান্যৎ স্যাৎ প্রিয়ং ধনম্ । দ্বয়োর্বিবদতোস্তথ্যং বাচ্যস্তু মতিমংস্তুযা ॥ ২৯ ॥  
 প্রহ্লাদ উবাচ । অথ যো নৈব প্রবুযাৎ সত্যং বা যদি বানৃতম্ । এতৎ সুধম্ন পৃ-  
 ছামি দুর্বিবক্তা স্ম কিং বসেৎ ॥ ৩০ ॥ সুধন্বোবাচ । যাং রাত্রিমধিবিম্বা স্ত্রী  
 যাক্ষৈবাক্ষপরাজিতঃ । যাক্ষ ভারাভিতপ্তাক্ষে । দুর্বিবক্তা স্ম তাং বসেৎ ॥ ৩১ ॥  
 নগরে প্রতিরুদ্ধঃ সন্ বহির্দ্বারে বভূক্ষিতঃ । অমিত্রান্ ভূষসঃ পশ্যেদ্বঃ সাক্ষ্যমনৃতং  
 বদেৎ ॥ ৩২ ॥ পঞ্চ পশ্বনৃতে হস্তি দশ হস্তি গবানৃতে । শতমশ্বানৃতে হস্তি স-  
 হস্রং পুরুষানৃতে ॥ ৩৩ ॥ হস্তি জাতান্ জনিষ্যাৎশ্চ হিরণ্যার্থেহনৃতং বদন ।  
 সর্বং ভূম্যনৃতে হস্তি মাশ্ম ভূম্যনৃতং বদেৎ ॥ ৩৪ ॥ প্রহ্লাদ উবাচ । মত্তঃ শ্রেযা-  
 নঙ্গিরা বৈ সুধন্বা স্বহিরোচন । মাতাস্য শ্রেযসী মাতুস্তব তদ্বং পরাজিতঃ ॥ ৩৫ ॥  
 বিরোচন সুধন্বাযং প্রাণানানীশ্বরস্তব । সুধম্ন পুত্রনিচ্ছামি ত্বয়া দত্তং বিরোচ-  
 নম্ ॥ ৩৬ ॥ সুধন্বোবাচ । যদ্বর্শ্মমবৃণীথাস্তুং ন কামাদনৃতং বদীঃ । পুনর্দদামি  
 তে পুত্রং তস্মাৎ প্রহ্লাদ দুর্লভম্ ॥ ৩৭ ॥ এষ প্রহ্লাদ পুত্রস্তে মযা দত্তো বিরো-  
 চনঃ । পাদপ্রক্ষালনং কুর্যাৎ কুংগার্যাঃ সন্নিধৌ মম ॥ ৩৮ ॥ বিদূর উবাচ ।  
 তস্মাদ্রাজৈস্ত্র ভূম্যর্থং নানৃতং বক্তুমহসি । মা গমঃ সমুতামাত্যো নাশং পুত্রার্থ-  
 মক্রবন্ ॥ ৩৯ ॥ ন দেবা যচ্চিমা দাব রক্ষন্তি পশুপালবৎ । যন্ত রক্ষিতুমিচ্ছন্তি  
 বুদ্ধ্যা সংবিতজ্জন্তি তম্ ॥ ৪০ ॥ যথা যথা হি পুরুষঃ কল্যাণে কুরুতে মনঃ । তথা  
 তথাস্য সর্বার্থাঃ সিধ্যন্তে নাত্র সংশয়ঃ ॥ ৪১ ॥ নৈনং চন্দাংসি বৃজিনাত্তারযন্তি  
 মাষাবিনং মাষযা বর্তমানম্ । নীডং শকুন্তা ইব জাতপক্ষাশ্চন্দাংসেনং প্রজ-  
 হত্যস্তকালে ॥ ৪২ ॥ মৃদ্যপানং কলহং পুগবৈরং ভার্যাপত্যোরন্তরং জ্ঞাতি-  
 ভেদম্ । রাজদ্বিষ্টং স্ত্রীপুংসযোর্বিবাদং বর্জ্যান্যাহর্যশ্চ । পত্ন্যাঃ প্রদর্শ্যঃ ॥ ৪৩ ॥  
 সামুদ্রকং বাণিজ্যকঞ্চ চৌরং শলাকবৃন্তিঞ্চ চিকিৎসকঞ্চ । অরিঞ্চ মিত্রঞ্চ কুশী-  
 লবঞ্চ নৈতান্ সাক্ষ্যে স্বধিকুর্ষীত সপ্ত ॥ ৪৪ ॥ মানাগ্নিহোত্রমুত মানমৌনং মানে-  
 নাধীতমুত মানযজ্ঞঃ । এতানি চত্বার্ষ্যভয়ঙ্করাণি ভয়ং প্রযচ্ছন্ত্যযথাকৃতানি ॥ ৪৫ ॥  
 অগারদাহী গরদঃ কুণ্ডাশী সোমবিক্রযী । পর্বকারশ্চ সূচী চ মিত্রধুক্ পারদা-  
 রিকঃ ॥ ৪৬ ॥ ক্রগহা গুরুতল্লী চ যশ্চ স্যাৎ পানপো দ্বিজঃ । অতিতীক্ষ্ণশ্চ কা-  
 কশ্চ নাস্তিকো বেদনিন্দকঃ ॥ ৪৭ ॥ সুব্রহ্মহণো ব্রাত্যঃ কীনাশশ্চার্থবানপি ।

रक्तेत्युक्तश्च यो हिंस्यात् सर्वे ब्रह्महृत्भिः समाः ॥ ४८ ॥ तृणोक्त्या ज्ञायते जात-  
 रूपं वृत्तेन भद्रो व्यवहारेण साधुः । शूरो भयेष्वर्थरुद्धेषु धीरः क्रुद्धास्त्रपतसु  
 सुहृदश्चारुश्च ॥ ४९ ॥ जरु रूपं हरति हि धैर्यामाशा मृत्युः प्राणान् धर्मचर्या-  
 मसृया । क्रोधः श्रियं शीलमनार्यासेवा ह्रियं कामः सर्वमेवाभिमानः ॥ ५० ॥  
 श्रीर्मङ्गलात् प्रभवति प्रागल्भ्यात् संप्रवर्द्धते । दाक्ष्यात्तु कुरुते मूलं संघमात्  
 प्रतितिष्ठति ॥ ५१ ॥ अर्को गुणाः पुरुषं दीपयन्ति प्रज्ज्वा च कौल्यं दमः श्रुतं ।  
 पराक्रमश्चावहृत्तावित्ता च दानं यथाशक्ति कृतञ्जला च ॥ ५२ ॥ एतान् गुणांस्तुत  
 महामुतावानेको गुणः संश्रयते प्रसह । राजा यदा सत्कुरुते मनुष्यं सर्वान्  
 गुणानेष गुणोऽतिभाति ॥ ५३ ॥ अर्को नृपेमानि मनुष्यालोके स्वर्गस्य लोकस्य  
 निदर्शनानि । चत्वार्येषामन्ववेतानि सन्तिश्चत्वार्येषामन्ववयन्ति सन्तः ॥ ५४ ॥ यज्जेता  
 दानमध्ययनं तपश्च चत्वार्येतान्यन्ववेतानि सन्तिः । दमः सत्यमार्जवमानुशंस्यं  
 चत्वार्येतान्यन्ववयन्ति सन्तः ॥ ५५ ॥ इज्याध्ययनदानानि तपःसत्यं क्रमा घृणा ।  
 अलोभ इति मार्गोऽयं धर्मस्यार्थविधेः स्मृतः ॥ ५६ ॥ तत्र पूर्वश्चतुर्वर्गो दस्तार्थ-  
 मपि सेव्यते । उत्तरश्च चतुर्वर्गो नामहात्मसु तिष्ठति ॥ ५७ ॥ न सा सता यत्र न  
 सन्ति वृद्धा न ते वृद्धा ये न वदन्ति धर्मम् । नासौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति न तं  
 सत्यं वच्छलेनाभ्युपेतम् ॥ ५८ ॥ सत्यं रूपं श्रुतं विद्या कौल्यं शीलं बलं  
 धनम् । शौर्यं चित्रभाष्यं दशेमे स्वर्गयोनयः ॥ ५९ ॥ पापं कूर्बन् पापकीर्तिः  
 पापमेवाश्रुते फलम् । पुण्यं कूर्बन् पुण्यकीर्तिः पुण्यमत्यन्तमश्रुते । तस्मात् पापं  
 न कूर्वीत पुरुषः संशितव्रतः ॥ ६० ॥ पापं प्रज्ज्वा नाशयति क्रियमाणं पुनः  
 पुनः । नक्तप्रज्ज्वा पापमेव नित्यमारभते नरः ॥ ६१ ॥ पुण्यं प्रज्ज्वा वर्द्धयति  
 क्रियमाणं पुनः पुनः । वृद्धप्रज्ज्वा पुण्यमेव नित्यमारभते नरः ॥ ६२ ॥ पुण्यं  
 कूर्बन् पुण्यकीर्तिः पुण्यं स्थानं समच्छति । तस्मात् पुण्यं निषेवेत पुरुषः सुसमाहि-  
 तः ॥ ६३ ॥ असूयको दन्दशूको निष्ठुरो वैररुच्छतः । स क्रुद्धं महदाप्नोति  
 नचिरात् पापमाचरन् ॥ ६४ ॥ अनसूयः क्रुतप्रज्ज्वा शोभनान्याचरन् सदा । न क्रुद्धं  
 महदाप्नोति सर्वत्र च विरोचते ॥ ६५ ॥ प्रज्ज्वा नेवागमयति यः प्राज्ज्वा तयः स प-  
 षितः । प्राज्ज्वा ह्वाप्य धर्माथो शक्रेति सुखमेधितुम् ॥ ६६ ॥ दिवसेनैव तं  
 कुर्यात् येन रात्रौ सुखं वसेत् । अर्कमासेन तं कुर्यात् येन वर्षाः सुखं व-  
 सेत् ॥ ६७ ॥ पूर्वे वयसि तं कुर्याद्वेन वृद्धः सुखं वसेत् । यावज्जीवन्तु तं  
 कुर्याद्वेन प्रेत्य सुखं वसेत् ॥ ६८ ॥ जीर्णमन्नं प्रशंसन्ति भार्याश्च गतयौव-

নাম্ । শুরং বিজিতসংগ্রামং গতপারং তপস্বিনম্ ॥ ৬২ ॥ ধনেনাধর্মলন্ধেন  
যচ্ছিত্রমপিধীয়তে । অসংবৃতং তদ্ভবতি ততোহন্যদবদীর্ঘ্যতে ॥ ৭০ ॥ গুরুরান্ন-  
বতাং শাস্তা শাস্তা রাজা দুরান্ননাম্ । অথ প্রচ্ছম্পাপানাং শাস্তা বৈবস্বতো  
যমঃ ॥ ৭১ ॥ ঋষীণাঞ্চ নদীনাঞ্চ কুলানাঞ্চ মহান্ননাম্ । প্রভাবো নাধিগন্তব্যঃ  
স্ত্রীণাং দূশ্চরিতস্য চ ॥ ৭২ ॥ দ্বিজাতিপূজাভিরতো দাতা জ্ঞাতিষু চাজ্জবী ।  
ক্ষত্রিয়ঃ শীলভাগ্রাজশ্চিরং পালযতে মহীম্ ॥ ৭৩ ॥ সুবর্ণপুষ্পাং পৃথিবীং চি-  
বন্তি পুরুষাস্ত্রয়ঃ । শুরশ্চ ক্রুরিদ্যশ্চ যশ্চ জানাতি সেবিতুন্ ॥ ৭৪ ॥ বুদ্ধিশ্রেষ্ঠা-  
নি কর্মাণি বাহুমধ্যানি ভারত । তানি জজ্বাজঘন্যানি ভারপ্রত্যবরাণি চ ॥ ৭৫ ॥  
দুর্যোধনেহথ শকুনো মূঢ়ে দুঃশাসনে তথা । কণে চৈশ্বর্যমাধায় কথং ত্বং ভূতিনি-  
চ্ছসি ॥ ৭৬ ॥ সর্বৈর্গুণৈরুপেতাঙ্গ পাণ্ডবা ভরতর্ষভ । পিতৃবভেষু বর্তস্ব বর্তস্তাং  
তে চ পুলবৎ ॥ ৭৭ ॥

ইত্যাউদ্যোগপর্বণি প্রজাগরপর্বণি বিদুরহিতবাক্যে পঞ্চত্রিংশ-  
শতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩৫ ॥



বিদুর উবাচ । অত্রৈবোদাহরন্তীমমিতিহাসং পুরাতনম্ । আত্রেয়স্য চ সংবাদং  
সাধ্যানাঞ্জেতি নঃ শ্রুতম্ ॥ ১ ॥ চরন্তং হংসরূপেণ মহর্ষিঃ সংশিতব্রতম্ । সাধ্যা  
দেবা মহাপ্রজ্ঞং পর্যাপৃচ্ছন্ত বৈ পুরা ॥ ২ ॥ সাধ্যা উচুঃ । সাধ্যা দেবা বয়মেতে  
মহর্ষে দৃষ্টা ভবন্তং ন শকুমোহনুমানাতুম্ । শ্রুতেন ধীরো বুদ্ধিমাংস্ত্বং মতো নঃ  
কাব্যং বাচং বক্তুমহস্যদারাম্ ॥ ৩ ॥ হংস উবাচ । এতৎ কার্যমমরাঃ সংশ্রু-  
তং মে ধৃতিঃ শমঃ সত্যধর্ম্মানুবৃত্তিঃ । গ্রন্থিঃ বিনীয হৃদযস্য সর্বং প্রিষাপ্রিষে  
চাত্মসমং নযীত ॥ ৪ ॥ আক্রুশ্যমানো নাক্রোশেগ্নান্ন্যরেব তিতিক্ষতঃ । আক্রো-  
ষ্ঠারং নির্দহতি সুরূতপ্লাস্য বিন্দতি ॥ ৫ ॥ নাক্রোশী স্যাম্মাবমানী পরস্য মিত্র-  
দ্রোহী নোত নীচোপসেবী । ন চাভিমানী ন চ হীনবৃত্তো কক্ষাং বাচমুষতীং বর্জ-  
যীত ॥ ৬ ॥ মর্মাণ্যস্তীনি হৃদযস্তথাস্বন কক্ষা বাচো নির্দহন্তীহ পুংসাম্ । তস্মা-  
দ্বাচমুষতীং কক্ষকপাং ধর্ম্মারামো নিত্যশো বর্জযীত ॥ ৭ ॥ অরুন্তদং পরুষং কক্ষ-  
বাচং বাক্কণ্টকৈর্ষিতুদন্তং মনুষ্যান্ । বিদ্যাভলক্ষীকৃতমং জনানাং মুখে নিবন্ধাং  
নিষ্ঠাতিং বৈ বহন্তম্ ॥ ৮ ॥ পরশ্চেদেনমভিবিধেত বাণৈর্ভৃশং সুতীক্ষ্ণরনলার্ক-  
প্রদীপৈঃ । স তাড্যমানোহপ্যতিদহমানো বিদ্যাং কবিঃ সুরূতং মে দধাতি ॥ ৯ ॥  
যদি সন্তং সেবতি যদ্যসন্তং তপস্বিনং যদি বা স্তেনমেব । বাসো যথা রঙ্গবশং

प्रयाति तथा स तेषां वशमभ्युपैति ॥ १० ॥ अतिवादं न प्रवदेन्न वादयेद्यो ना-  
 हतः प्रतिहन्यान्न घातयेत् । हस्तश्च यो नेच्छति पापकं वै तस्मै देवाः स्पृह्य-  
 स्त्यागताय ॥ ११ ॥ अव्याहृतं व्याहृताच्छेष आहः सत्यं वदेद्याहृतं तद्विद्वि-  
 यम् । प्रियं वदेद्याहृतं तद्वृत्तीयं धर्मं वदेद्याहृतं तच्छतुर्थम् ॥ १२ ॥ यादृशैः  
 सन्निविशते यादृशांश्चेत्पसेवते । यादृगिच्छेत् तद्वितुं तादृश्वति पुरु-  
 षः ॥ १३ ॥ यतो यतो निवर्तते ततस्ततो विमुच्यते । निवर्तनाङ्घ्रि सर्वतो न  
 वेत्ति दुःखमन्यपि ॥ १४ ॥ न जीयते नान्नुज्जिगीयतेहन्यान्न वैरकृष्ठाप्रतिघात-  
 कश्च । निन्दाप्रशंसाम्बु समस्तभावो न शोचते हस्यति नैव चायम् ॥ १५ ॥ भाव-  
 मिच्छति सर्वस्य नाभावे कुरुते मनः । सत्यवादी मदुर्दान्तो यः स उन्नम पुरु-  
 षः ॥ १६ ॥ नानर्थकं सान्त्वयति प्रतिज्जाय ददाति च । रक्षुं परस्य जानाति  
 यः स मध्यमपुरुषः ॥ १७ ॥ दुःशासनस्तूपहतोऽतिशस्तो नावर्तते मनुष्यावशात्  
 कृतज्ञः । न कस्यचिन्मित्रमथो दुरात्मा कलाशैचता अधमस्येह पुंसः ॥ १८ ॥ न  
 श्रद्धधाति कल्याणं परेभ्योऽप्याश्रयशक्तिः । निराकरोति मित्राणि यो वै  
 सोऽधमपुरुषः ॥ १९ ॥ उन्नमानेव सेवेत प्राप्ते काले तु मध्यमान् । अधमांस्तु  
 न सेवेत य ईच्छेद्भूतिमात्मनः ॥ २० ॥ प्राप्नोति वै विद्वमयं बलेन नित्यो-  
 थानां प्रज्जया पौरुषेण । न ह्येव सम्यग्लभते प्रशंसान् न वृत्तमाप्नोति महा-  
 कुलानाम् ॥ २१ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । महाकुलेभ्यः स्पृह्यन्ति देवा धर्मार्थानित्याश्च  
 बहूश्चताश्च । पृच्छानि ह्यं विदुर प्रश्नमेतं भवन्ति वै कानि महाकुलानि ॥ २२ ॥  
 विदुर उवाच । तपोदमो ब्रह्म विद्वं विभानाः पुण्या विवाहाः सततामदानं ।  
 येष्वेवैते सप्त गुणा भवन्ति सम्यग्वृत्तानि महाकुलानि ॥ २३ ॥ येषां न वद्वं  
 व्यथते न योनिर्ब्रतिप्रसादेन चरन्ति धर्मम् । ये कीर्त्तिमिच्छन्ति कुले विशिष्टां  
 तान्कान्तानि महाकुलानि ॥ २४ ॥ अनिज्या कुविवाहैर्बेदस्योऽसादनेन च ।  
 कुलान्यकुलतां यान्ति धर्मस्यातिक्रमेण च ॥ २५ ॥ देवद्रव्याविनाशेन ब्रह्महर-  
 णेन च । कुलान्यकुलतां यान्ति ब्राह्मणातिक्रमेण च ॥ २६ ॥ ब्राह्मणानां परि-  
 त्वात् परिवादोऽहं भारत । कुलान्यकुलतां यान्ति न्यासापहरणेन च ॥ २७ ॥  
 कुलानि समुपेतानि गोभिः पुरुषतोऽर्थतः । कुलसंख्यां न गच्छन्ति यानि हीना-  
 नि वृत्ततः ॥ २८ ॥ वृत्ततस्तुविहीनानि कुलान्यल्लधनान्यपि । कुलसंख्यां गच्छन्ति  
 कर्षन्ति च महद्वशः ॥ २९ ॥ वृत्तं यत्नेन संरक्षेद्विद्वमेति च याति च । अक्षीणो  
 विद्वतः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः ॥ ३० ॥ गोभिः पशुभिरश्वैश्च कृष्या च सुस-

मृक्षया । कुलानि न प्ररोहन्ति यानि हीनानि वृत्ततः ॥ ७१ ॥ मा नः कुले वैररू०  
 कश्चिदस्तु राजामातेया मा परस्वापहारी । मित्रद्रोही नैकृतिकोहन्ती वा पूर्वाशी  
 वा पितृदेवातिथिभ्यः ॥ ७२ ॥ यश्च नो ब्राह्मणान् हन्याद्व्यश्च नो ब्राह्मणान् द्विषेत् ।  
 न नः स समितिङ्गच्छेद्व्यश्च नो निर्बपेत् कृषिम् ॥ ७३ ॥ तृणानि भूमिरुदकं वाक्  
 चतुर्थी च सृन्ता । सतामेतानि गेहेषु नोच्छिद्यन्ते कदाचन ॥ ७४ ॥ श्रद्धया  
 परया राजमुपनीतानि संकृतिम् । प्रवृत्तानि महाप्राक्ते धर्मिणां पुण्यकर्मि-  
 णाम् ॥ ७५ ॥ सृञ्चोऽपि भारं नृपते मन्दनो वै शक्नो वोढुं न तथान्ये  
 महीजाः । एवंयुक्ता भारसर्हा भवन्ति महाकुलीना न तथान्ये मनुष्याः ॥ ७६ ॥  
 न तन्मित्रं यस्य कोपाद्विभेति यद्वा मित्रं शक्तितेनोपचर्यम् । यन्मित्रे पित-  
 रीवाश्वसीत तद्वै मित्रं सङ्गतानीतराणि ॥ ७७ ॥ यः कश्चिदप्यसङ्को मित्रभावेन  
 वर्तते । स एव वक्तुस्तन्मित्रं सा गतिस्तु परायणम् ॥ ७८ ॥ चलचित्तस्य वै पुंसो  
 वृद्धान्मुपसेवतः । पारिप्लवमतेर्नित्यमधुवो मित्रसंग्रहः ॥ ७९ ॥ चलचित्त-  
 मनाङ्गानिमिद्रियाणां वशानुगम् । अर्थाः समतिवर्तन्ते हंसाः शुक्लं सरो यथा ॥ ८० ॥  
 अकुम्भादेव कुप्यन्ति प्रसीदन्त्यानिमित्ततः । शीलमेतदसाधूनामत्रुं पारिप्लवं  
 यथा ॥ ८१ ॥ संकृताश्च कृतार्थाश्च मित्राणां न भवन्ति ये । तान्मृतानपि क्र-  
 व्यादाः कृतस्त्रामोपभुङ्गते ॥ ८२ ॥ अर्चयेदेव मित्राणि सति वासति वा धने ।  
 नानर्चयन् प्रजानाति मित्राणां सारफलताम् ॥ ८३ ॥ सन्तापाद्दुश्याते कृपं  
 सन्तापाद्दुश्याते बलम् । सन्तापाद्दुश्याते ज्ञानं सन्तापाद्याधिमृच्छति ॥ ८४ ॥  
 अनवाप्यक्षं शोकेन शरीरक्षोपतप्यते । अमित्राश्च प्रहस्यन्ति माम् शोके  
 मनः कृथाः ॥ ८५ ॥ पुनर्नरो म्रियते जायते च पुनर्नरो याचति याच्यते च ।  
 पुनर्नरः शोचति शोच्यते च पुनर्नरो हीयते वर्द्धते च ॥ ८६ ॥ सुखं दुःखं  
 त्वाभावो च लाभालाभो मरणं जीवितं । पर्यायशः सर्वमेते स्पृशन्ति तस्मा-  
 द्कीरो नैव ह्येष्यन् शोचेत् ॥ ८७ ॥ चलानि हीमानि षडिन्द्रियाणि तेषां  
 यद्वर्द्धते यत्र यत्र । ततस्ततः सुवते बुद्धिरस्य ह्रिद्रोदकुम्भार्दिव नित्यमस्तुः ॥ ८८ ॥  
 धृतराष्ट्र उवाच । तन्नृच्छः शिखी राजा मिथ्यापचरितो मया । मन्दानां सम  
 पुत्राणां युद्धेनास्तुकरिष्यति ॥ ८९ ॥ नित्याद्विग्नमिदं सर्वं नित्याद्विग्नमिदम्  
 नः । यत्तत्पदमनुद्विग्नं तन्मे वद महामते ॥ ९० ॥ विदुर उवाच । नान्यत्र वि-  
 द्यातपसोर्नान्यत्रेन्द्रियनिग्रहात् । नान्यत्र लोभसंत्यागाच्छान्तिं पश्यामि तेह-  
 नय ॥ ९१ ॥ बुद्ध्या भयं प्रणुदति तपसा विन्दते महत् । गुरुशुश्रूषया ज्ञानं

শাস্তিঃ যোগেন বিদ্বতি ॥ ৫২ ॥ অনাশ্রিতা দানপুণ্যং বেদপুণ্যমনাশ্রিতাঃ ।  
 রাগদ্বেষ্টবিনির্মুক্তা বিচরন্তীহ মোক্ষিণঃ ॥ ৫৩ ॥ স্বধীতস্য সুযুদ্ধস্য সুরূতস্য  
 চ কর্মণঃ । তপসশ্চ সুরূতস্য তস্যাস্তে সুখমেধতে ॥ ৫৪ ॥ স্বাস্তীর্ণানিশযনানি  
 প্রপন্নানৈব ভিমা জাতু নিদ্রাং লভন্তে । ন স্ত্রীষু রাজনুতিমাগ্নবন্তি ন মাগ-  
 ধৈঃ স্তুষ্যমানা ন স্মৃতেঃ ॥ ৫৫ ॥ ন বৈ ভিমা জাতু চরন্তি ধর্মং ন বৈ সুখং  
 প্রাপ্নুবন্তীহ ভিমাঃ । ন বৈ ভিমা গোঁরবং প্রাপ্নুবন্তি ন বৈ ভিমাঃ প্রশমং রোচ-  
 যন্তি ॥ ৫৬ ॥ ন বৈ তেষাং স্বদতে পথ্যমুক্তং যোগক্ষেমং কল্পতে নৈব তেষাম্ ।  
 ভিমানাং বৈ মনুজেন্দ্র পরাষণং ন বিদ্যতে কিঞ্চিদন্যদ্বিনাশাৎ ॥ ৫৭ ॥ সম্ভাব্যং  
 গোষু সম্পন্নং সম্ভাব্যং ব্রাহ্মণে তপঃ । সম্ভাব্যং চাপলং স্ত্রীষু সম্ভাব্যং জ্ঞাতিতো  
 ভয়ম্ ॥ ৫৮ ॥ তন্তুবোহপ্যায়তা নিত্যং তনবো বহলাঃ সমাঃ । বহূন্ বহুত্বাদায়াসান্  
 সহস্রীতু্যপমা সতাম্ ॥ ৫৯ ॥ ধূমায়ন্তে ব্যপেতানি ভুলন্তি সহিতানি চ । ধৃতরা-  
 ষ্টৌল্লুকানীব জ্ঞাতযো ভরতর্ষভ ॥ ৬০ ॥ ব্রাহ্মণেষু চ যে শূরা স্ত্রীষু জ্ঞাতিষু গোষু  
 চ । বস্তাদিব ফলং পক্ষং ধৃতরাষ্ট্র পতন্তি তে ॥ ৬১ ॥ মহানপ্যেকজো বৃক্ষে বলবান্  
 সুপ্রতিষ্ঠিতঃ । প্রসহ এব বাতেন স্কন্ধে নর্দিতুং কণাৎ ॥ ৬২ ॥ অথ যে সহিতা  
 বৃক্ষাঃ সঙ্ঘাশঃ সুপ্রতিষ্ঠিতাঃ । তেহপি শীঘ্রতমান্ বাতান্ সহন্তেহন্যোন্যসং-  
 শ্রযাৎ ॥ ৬৩ ॥ এবং মনুষ্যমপ্যেকং গুণৈরপি সমন্বিতম্ । শক্যং দ্বিষন্তো অন্যন্তে  
 বায়ুর্দ্রমিবৈকজম্ ॥ ৬৪ ॥ অন্যোন্যসমুপক্ৰান্তাদন্যোন্যাপাশ্রয়েণ বা । জ্ঞা-  
 তযঃ সং প্রবর্ধন্তে সরসীবোৎপলানু্যত ॥ ৬৫ ॥ অবধ্যা ব্রাহ্মণা গাবো জ্ঞাতযঃ  
 শিশবঃ স্ত্রিয়ঃ । যেষাঞ্চানানি ভুঞ্জীত যে চ স্যুঃ শরণাগতাঃ ॥ ৬৬ ॥ ন মনুষ্যে  
 গুণঃ কশ্চিদ্ভাজন্ মধনতামৃতে । অনাতুরত্বাদ্ভ্রমন্তে মৃতকল্পা হি রোগিণঃ ॥ ৬৭ ॥  
 অব্যাধিজং কটুকং শীর্ষরোগি পাপানুবন্ধং পরুষং তীক্ষ্ণমুষ্ণম্ । সতাং পেযং  
 যন্ন পিবন্ত্যসন্তো মনুষ্যং মহারাজ পিব প্রশাম্য ॥ ৬৮ ॥ রোগার্দিতা ন ফলা-  
 ন্যাদ্রিযন্তে ন বৈ লভন্তে বিষযেষু তত্ত্বম্ । দুঃখোপেতা রোগিণো নিত্যমেব ন  
 বধ্যন্তে ধনভোগান্ন সৌখ্যম্ ॥ ৬৯ ॥ পুরা হুক্তং নাকরোস্ত্রং বচো মে দ্যুতে  
 জিতাং দ্রৌপদীং প্রেক্ষ্য রাজন্ । দুর্ঘ্যোধনং বারযেত্যক্ষবর্ত্যাং কিতবত্বং পণ্ডিতা  
 বজ্জ্বলন্তি ॥ ৭০ ॥ ন তদ্বলং যন্মদুনা বিরুদ্ধ্যতে সূত্রো ধর্মসুরসা সেবিতব্যঃ ।  
 প্রধংসিনী কুরসমাহিতা শ্রীমৃদুপ্রোচা গচ্ছতি পুল্লপোল্লান্ ॥ ৭১ ॥ ধার্তরাষ্ট্রাঃ  
 পাণ্ডবান্ পালয়ন্ত পাণ্ডোঃ সূতাস্তব পুল্লাংশ্চ পাণ্ড । একারিমিত্রাঃ কুরবঃ পাণ্ডবা-  
 শ্চ জীবন্ত রাজন্ সুখিনঃ সমৃদ্ধাঃ ॥ ৭২ ॥ মেধীভূতঃ কোঁরবাণাং স্বমদ্য স্বম্যধীনং

কুরুকুলমাজনীচ । পার্থান্ বালান্ বনবাসপ্রতপ্তান্ গোপায়স্ব স্বং যশস্তাত  
রক্ষন্ ॥ ৭৩ ॥ সন্ধুৎস্ব ত্বং কৌরব পাণ্ডুপুত্রৈর্মা তেহস্তরং রিপবঃ প্রার্থয়স্ব । সত্যে  
স্থিতাস্তে নরদেব সর্বে দুর্যোধনং স্থাপয় ত্বং নরেন্দ্র ॥ ৭৪ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি প্রজাগরপর্বনি বিদুয়হিতবাক্যে

ষট্‌ত্রিংশত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩৬ ॥



বিদুর উবাচ । সপ্তদশেমানাজেন্দ্র মনুঃ স্বায়ত্তুবোহব্রবীৎ । বৈচিত্রবীর্ষ্য  
পুরুষানাকাশং মুষ্টিভিন্নতঃ ॥ ১ ॥ তানেবেন্দ্রস্য হি ধনুরনাম্যং নমতোহব্রবীৎ ।  
অথো মরীচিনঃ পাদানগ্রাহান্ গৃহতস্তথা ॥ ২ ॥ যশ্চাশিষ্যং শাস্তি বৈ যশ্চ  
রুষ্যেদ্যশ্চাতিবেলং ভজতে দ্বিষস্তম্ । স্ত্রিয়ঞ্চ যো রক্ষতি ভদ্রমস্ত তে যশ্চাযাচ্যং  
যাচতে কথতে চ ॥ ৩ ॥ যশ্চাতিজাতঃ প্রকরোত্যকার্যং যশ্চাবলো বলিনা  
নিত্যবৈরী । অশ্রদ্ধধানায় চ যো ব্রবীতি যশ্চাকাম্যং কামযতে নরেন্দ্র ॥ ৪ ॥  
বধাবহাসং শ্বশুরো মন্যতে যো বধাবসন্নভযো মানকামঃ । পরক্ষেত্রে নির্বপতি  
যশ্চ বীজং স্ত্রিয়ঞ্চ যঃ পরিবদতেহতিবেলম্ ॥ ৫ ॥ যশ্চাপি লক্ষ্মী  
তুবাচ দত্তা চ যঃ কথতি যাচ্যমানঃ । যশ্চাসতঃ সত্ত্বমুপানযীত এতান্নযন্তি নিরয়ং  
পাশহস্তাঃ ॥ ৬ ॥ যস্মিন্ যথা বর্ততে যো মনুষ্যস্তস্মিন্‌স্তথা বর্তিতব্যং স ধর্ম্মঃ ।  
মাযাচারো মাযয়া বর্তিতব্যঃ সাধ্বাচারঃ সাধুনা প্রত্যুপেযঃ ॥ ৭ ॥ জরা কপং হর-  
তি ধৈর্য্যমাশা মৃত্যুঃ প্রাণাক্ষর্ম্‌চর্য্যামসূয়া । কামো হিষং বৃত্তমনার্য্যসেবা ক্রোধঃ  
শ্রিষং সর্বমেবাভিমানঃ ॥ ৮ ॥ ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । শতায়ুরুক্তঃ পুরুষঃ সর্ববেদেষু  
বৈ যদা । নাপ্নোত্যথ চ তৎ সর্বমাযুঃ কেনেহ হেতুনা ॥ ৯ ॥ বিদুর উবাচ । অতি-  
বাদোহতিমানশ্চ তথাত্যাগো নরাধিপ । ক্রোধশ্চাত্মবিধিৎসা চ মিত্রদ্রোহশ্চ  
তানি ষট্ ॥ ১০ ॥ এত এবাসযস্তীক্ষ্ণাঃ ক্লান্তস্ত্যায়ুংষি দেহিনাম্ । এতানি মানবান্  
যন্তি ন মৃত্যুর্ভদ্রমস্ত তে ॥ ১১ ॥ বিশ্বস্তস্যেতি যো দারান্ যশ্চাপি গুরুতল্লগুঃ ।  
বৃষলীপতির্দ্বিজো যশ্চ পানপশ্চৈব ভারত ॥ ১২ ॥ আদেশক্লদৃতিহস্তা দ্বিজানাং  
প্রেমকশ্চ যঃ । শরণাগতহা চৈব সর্বে ব্রহ্মহণঃ সমাঃ ॥ ১৩ ॥ এতৈঃ সমেত্য কর্তব্যং  
প্রাশশ্চিত্তমিতি শ্রুতিঃ ॥ ১৪ ॥ গৃহীতবাক্যো নযবিদ্বদান্যঃ শেষামভোক্তা হবি-  
হিংসকশ্চ । নানর্থকৃত্যাকুশলঃ ক্লতজ্ঞঃ সত্যো মৃদুঃ স্বর্গমুপৈতি বিদ্বান্ ॥ ১৫ ॥  
সুলভাঃ পুরুষা রাজন্ সততং প্রিষবাদিনঃ । অপ্ৰিয়স্য তু পথ্যস্য বক্তা শ্রোতা  
চ দল্লভঃ ॥ ১৬ ॥ যো হি ধর্ম্মং সমাশ্রিত্য হিত্বা তর্ভুঃ প্রিষাপ্ৰিষে । অপ্ৰিষাণ্যাহ



পথ্যানি তেন রাজা সহায়বান্ ॥ ১৭ ॥ ত্যজেৎ কুলার্থে পুরুষং গ্রামস্যার্থে কুলং  
 ত্যজেৎ । গ্রামং জনপদস্যার্থে আত্মার্থে পৃথিবীং ত্যজেৎ ॥ ১৮ ॥ আপদার্থং ধনং  
 রক্ষেদারানুক্ষেদনৈরপি । আত্মানং সততং রক্ষেদারৈরপি ধনৈরপি ॥ ১৯ ॥  
 দ্যুতমেতৎ পুরা কল্পে দৃষ্টিং বৈরকরং নৃণাম্ । তস্মাদ্যুতং ন সেবেত হাংস্যার্থমপি  
 বুদ্ধিমান্ ॥ ২০ ॥ উক্তং মযা দ্যুতকালেংপি রাজমেদং যুক্তং বচনং প্রাতিপেয ।  
 তদৌষধং পথ্যমিবাতুরস্য ন রোচতোতব বৈচিত্রবীৰ্য্য ॥ ২১ ॥ কাটেকরিমাংশ্চিত্র-  
 বর্হান্ময়ুরান্ পরাজযেথাঃ পাণ্ডবান্ ধার্ত্তরাষ্ট্ৰৈঃ । হিঙ্গা সিংহান্ ক্রৌঞ্চুকান্ গূহ-  
 মানঃ প্রাপ্তে কালে শোচিতা হুং নরেন্দ্র ॥ ২২ ॥ যন্তাত ন-ক্রুধ্যতি সর্বকালং ভৃত্য-  
 স্য ভক্তস্য হিতেরতস্য । তস্মিন্ ভৃত্য ভর্ত্তরি বিশ্বসন্তি ন চৈনমাপৎসু পরিত্য-  
 জন্তি ॥ ২৩ ॥ ন ভৃত্যানাং বৃত্তিসংরোধেনে রাজ্যং ধনং সংজিঘৃক্ষেদপূর্বম্ ।  
 ত্যজন্তি হেনং বঞ্চিতা বৈ বিরুদ্ধাঃ স্নিগ্ধা হুমাভ্যাঃ পরিহীনভোগাঃ ॥ ২৪ ॥ কু-  
 ত্যানি পূর্বং পরিসংখ্যায় সর্বাণ্যায়ব্যয়ানুকপাঞ্চ বৃত্তিম্ । সংগৃহীষাদনুক-  
 পান্ সহায়ান্ সহায়সাধ্যানি হি দক্ষরাণি ॥ ২৫ ॥ অভিপ্রায়ং যো বিদিত্বা তু ভর্ত্তুঃ  
 সর্বাণি কার্য্যাণি কেরোত্যতস্তী । বক্তা হিতান্যামনুরক্ত আৰ্য্যঃ শক্তিজ্ঞ আয়েবু হি  
 সোহনুকম্প্যঃ ॥ ২৬ ॥ বাক্যন্ত যো নাদ্রিষতেহনুশিষ্টঃ প্রত্যাহ যশ্চাপি নিযুজ্যমা-  
 নঃ । প্রজ্ঞাভিমানী প্রতিকূলবাদী ত্যাজ্যঃ স তাদৃক্ হুরথৈব ভৃত্যঃ ॥ ২৭ ॥ অস্ত-  
 ক্রমক্লীবমদীর্ঘমূত্রং সানুক্রোশং শুল্কমহার্য্যমনৈঃ । অরোগজাতীয়মুদারবাক্যং  
 ভৃত্যং বদন্ত্যর্কগুণোপপন্নম্ ॥ ২৮ ॥ ন বিশ্বাসাজ্জাতু পরস্য গেহং গচ্ছেন্নরশ্চে-  
 তযানো বিকালে । ন চত্বরে নিশি তিষ্ঠেন্নিগূঢ়ো ন রাজকাম্যাং যোষিতং প্রার্থ-  
 যীত ॥ ২৯ ॥ ন নিহুবং মন্ত্রগতস্য গচ্ছেৎ সংসৃষ্টমন্ত্রস্য কুসঙ্গতস্য । ন চ বুযাম্না-  
 শ্বসামি হুযীতি সকারণং ব্যপদেশন্ত কুর্য্যাৎ ॥ ৩০ ॥ ঘনী রাজা পুংশ্চলী রাজ-  
 ভৃত্যঃ পুত্রো ভ্রাতা বিধবা বালপুত্রা । সেনাজীবী চোদ্ধৃতভূতিরেব ব্যবহারে বর্জ-  
 নীষাঃ স্মরেতে ॥ ৩১ ॥ অর্কো গুণাঃ পুরুষং দীপয়ন্তি প্রজ্ঞা চ কোল্যঞ্চ দমঃ  
 শ্রুতঞ্চ । পরাক্রমশ্চাবহুভাষিতা চ দানং যথাশক্তি কৃতজ্ঞতা চ ॥ ৩২ ॥ এতান্  
 গুণাংস্তাত মহানুভাবানেকো গুণঃ সংশ্রযতে প্রমহ । রাজা যদা সৎকুরুতে মনু-  
 স্যং সর্বান্ গুণানেষ গুণো বিভর্ত্তি ॥ ৩৩ ॥ গুণা দশ-স্নানশীলং ভজন্তে বলং  
 কপং স্বরবর্ণপ্রশুদ্ধিঃ । স্পর্শশ্চ গন্ধশ্চ বিশুদ্ধতা চ শ্রীঃ সৌকুমার্য্যং প্রবরাশ্চ না-  
 র্য্যঃ ॥ ৩৪ ॥ গুণাশ্চ ষণ্ণিতভুক্তং ভজন্তে আরোগ্যমায়ুশ্চ বলং সুখঞ্চ । অনাবি-  
 লঞ্চাস্য ভবত্যপত্যং ন চৈনমাদ্যন ইতি ক্ষিপন্তি ॥ ৩৫ ॥ অকর্ম্মশীলঞ্চ মহা-

शनक्ष लोकाद्विर्षं बह्मायं नृशंसम् । अदेशकालज्जमनिर्ष्वेशमेतान् गृहे  
न प्रतिवांसयेत ॥ ७७ ॥ कदर्यमाक्रोशकमश्रुतक्ष बनौकसं धूर्तममान्यमानि-  
नम् । निर्धूरिणं दृष्टवैरं कृतघ्नमेतान् भृशार्तोऽपि न जातु याचेत् ॥ ७१ ॥ संक्लि-  
ष्टकर्माणमतिप्रमादं नित्यानृतक्षदृष्टभक्किंक्ष । विसृष्टरागं बह्मानिनक्षाप्ये-  
ताम् सेवेत नराधमानु षट् ॥ ७८ ॥ .सहायवक्त्रना हर्थाः सहायाश्चार्थवक्त्रनाः ।  
अन्यान्यवक्त्रनावेतौ विनान्यान्यं न सिध्यतः ॥ ७९ ॥ उपाद्य पुलाननृणांश्च  
रुद्रा वृत्तिं तेभ्योऽनुविधाय कश्चिः । स्थाने कुमारीः प्रतिपाद्य सर्वा अरण्या-  
संस्थोऽथ मुनिर्बुधैः ॥ ८० ॥ हितं यं सर्वभूतानामात्मनश्च सुखावहम् । तं  
कुर्यादीश्वरे हेतुगुलं धर्मार्थसिद्धये ॥ ८१ ॥ बुद्धिः प्रभावस्तैजश्च सद्गुणानमेव  
च । व्यवसायश्च यस्य स्यात्सुखावृत्तिभयं कृतः ॥ ८२ ॥ पश्य दोषान् पाण्डुवैरि-  
ग्रहे च यत्र व्यथेरन्नपि देवाः सशक्राः । पुल्लैरैरं नित्यमुद्दिग्वासो यशःप्र-  
णाशो द्विषताक्ष हर्षः ॥ ८३ ॥ तीक्ष्णस्य कोपस्तव चैवेन्द्रकल्ल द्रोणस्य राज्ञश्च युधि-  
ष्ठिरस्य । उपादयेल्लोकमिमं प्रबुद्धः श्वेतो ग्रहस्तिर्यागिवापतन् खे ॥ ८४ ॥  
तव पुलंशतक्षैव कर्णः पक्ष च पाण्डवाः । पृथिवीमनुशासेयुराखिलां सागराय-  
राम् ॥ ८५ ॥ धार्तराष्ट्रा वनं राजन् व्याघ्राः पाण्डुसुता मताः । मा वनं छिन्नि  
सव्याघ्रं मा व्याघ्रा नीनशन् वनात् ॥ ८६ ॥ न स्यात् वनमृते व्याघ्रान् व्याघ्रा न  
स्युष्मते वनम् । वनं हि रक्ष्यते व्याघ्रैर्व्याघ्रानुक्त्ति काननम् ॥ ८७ ॥ न तथे-  
च्छन्ति कल्याणान् परेषां वेदितुं गुणान् । यथैवां ज्ञातुमिच्छन्ति नैर्गुण्यं  
पापचेतसः ॥ ८८ ॥ अर्थसिद्धिं परामिच्छन् धर्ममेवादितश्चरेत् । न हि धर्मा-  
दपैतयर्थः स्वर्गलोकादिवामृतम् ॥ ८९ ॥ यस्यात्मा विरतः पापात् कल्याणे च नि-  
वेशितः । तेन सर्वमिदं बुद्धं प्रकृतिर्विकृतिश्च या ॥ ९० ॥ यो धर्ममर्थं का-  
मक्ष यथाकालं निषेवते । धर्मार्थकामसंयोगं सोऽहमुत्रेह च विन्दति ॥ ९१ ॥  
समिपच्छति यो वेगमुत्थितं क्रोधहर्षयोः । स श्रियो भाजनं राजन् यश्चा-  
पत्सु न मुहति ॥ ९२ ॥ बलं पक्षविधं नित्यं पुरुषाणां निर्वोधने । यद्बु-  
बाह्वबलं नाम कनिष्ठं बलमुच्यते ॥ ९३ ॥ अमात्यलाभो भद्रस्तु द्वितीयबलमुच्यते ।  
तृतीयं धनलाभस्तु बलमाहर्षनीषिणः ॥ ९४ ॥ यद्ब्रह्मसहजं राजन् पितृपैताम-  
हं बलम् । अभिजातबलं नाम तच्छतुर्थं बलं स्मृतम् ॥ ९५ ॥ येन द्वेतानि सर्वाणि  
संगृहीतानि भारत । यद्वलानां बलं श्रेष्ठं तं प्रज्ज्वाबलमुच्यते ॥ ९६ ॥ महते  
योऽपकाराय नरस्य प्रभवैर्मरः । तेन वैरं समासज्य दूरस्थोऽस्मीति नाश-

সেৎ ॥ ৫৭ ॥ স্ত্রীষু রাজসু সপেষু স্বাধ্যায়প্রভুশত্রুযু । ভোগেষ্বায়ুষি বিশ্বাসং কঃ  
 প্রাজ্ঞঃ কর্তুমর্হতি ॥ ৫৮ ॥ প্রজ্ঞাশরেনাভিহতস্য জন্তোশ্চিকিৎসকাঃ সন্তি ন  
 চৌষধানি । ন হোমমন্ত্রা ন চ মন্ত্রলানি নাথর্ষণা নাপ্যগদাঃ সূসিদ্ধাঃ ॥ ৫৯ ॥  
 নর্পশ্চাগ্নিশ্চ সিংহশ্চ কুলপুত্রশ্চ ভারত । নাবজ্জেষা মনুষ্যেণ সর্বে হেতেহতিতে-  
 জসঃ ॥ ৬০ ॥ অগ্নিস্তেজো মহল্লোকে গূঢ়স্তিষ্ঠতি দারুযু । ন চোপযুক্তে তদারু  
 যাবম্নোদীপ্যতে পরৈঃ ॥ ৬১ ॥ স এব'খলু দারুভ্যো যদা নির্মথ্য দীপ্যতে । তদারু  
 চ বনঞ্চান্যগ্নির্দহত্যশ্চ তেজসা ॥ ৬২ ॥ এবমেব কুলে জাতাঃ পাবকোপমতেজসঃ ।  
 ক্ষমাবন্তো নিরাকারাঃ কাষ্ঠেহগ্নিরিব শেরতে ॥ ৬৩ ॥ লতাধর্মা ত্বং সপুত্রঃ শালাঃ  
 পাণ্ডুসুতা মতাঃ । ন লতা বর্দ্ধতে জাতু মহাক্রমমনাশ্রিতা ॥ ৬৪ ॥ বনং রাজংস্বং  
 সপুল্লোহম্বিকেষ সিংহান্ বনে পাণ্ডবাংস্তাত বিদ্ধি । সিংহৈর্বিহীনং হি বনং বিন-  
 শ্যেৎ সিংহা বিনশ্যেযুর্থাতে বনেন ॥ ৬৫ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি প্রজাগরপর্বণি বিদুরবাক্যে সপ্ত-

ত্রিংশত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩৭ ॥



বিদুর উবাচ । উদ্ধং প্রাণা হুৎক্রামন্তি যুনঃ স্ববির আযতি । প্রতুথানাভিবা-  
 দাত্যাং পুনস্তান্ প্রতিপদ্যতে ॥ ১ ॥ পীঠন্দ্বা সাধবেহভ্যাগতায় আনীযাপঃ পরিনি-  
 নির্জ্য পাদৌ । সুখং পৃষ্ঠা প্রতিবেদ্যাত্মসংস্থং ততো দদ্যাদন্নমবেক্ষ্য ধীরঃ ॥ ২ ॥  
 যস্যোদকং মধুপর্কঞ্চ গাঞ্চ ন মন্ত্রবিৎ প্রতিগৃহ্নাতি গেহে । লোভাদ্ভয়াদথ কার্ণ-  
 ণ্যতো বা তস্যানর্থং জীবিতমাহুরার্য্যাঃ ॥ ৩ ॥ চিকিৎসকঃ শল্যকর্ত্তাবকীর্ণী  
 স্তেনঃ কুরো মদ্যপো ক্রবহা চ । সেনাজীবী শ্রুতিবিক্রায়কশ্চ ভৃশং প্রিয়োহপ্য-  
 তিথিনোদকাইঃ ॥ ৪ ॥ অবিক্রেয়ং লবণং পক্ষমন্নং দধি ক্ষীরং মধু তৈলং ঘৃতঞ্চ ।  
 তিলা মাংসং মূলফলানি শাকং রক্তং বাসঃ সর্বগন্ধা গুডাশ্চ ॥ ৫ ॥ অরোষণো  
 যঃ সমলোষ্ঠকাঞ্চনঃ প্রহীণশোকো গতসন্ধিবিগ্রহঃ । নিন্দাপ্রশংসোপরতঃ প্রিযা-  
 প্রিযে ত্যজন্নদাসীনবদেষ ভিক্ষুকঃ ॥ ৬ ॥ নীবারমুলেঙ্গুদশাকবৃন্তিঃ সুসংযতা-  
 ভ্রাগ্নিকার্যেযু চোদ্যেঃ । বনে বসন্নতিথিষ্প্রমত্তো ধুরন্ধরঃ পুণ্যরুদেষ তাপসঃ ॥ ৭ ॥  
 অপকৃত্য বুদ্ধিমতো দূরস্থোহশ্মীতি নাশ্বসেৎ । দীর্ঘো বুদ্ধিমতো বাহু যাত্যাং হিং-  
 সতি হিংসতঃ ॥ ৮ ॥ ন বিশ্বসেদবিশ্বস্তে বিশ্বস্তে নাতিবিশ্বসেৎ । বিশ্বাসাদ্ভয়-  
 মুৎপন্নং মূলান্যপি নিকৃন্ততি ॥ ৯ ॥ অনীৰ্বুণ্ডপ্তদারঃ স্যাৎ সন্ধিভাগী প্রিযম্বদঃ ।  
 শুল্কো মধুরবাক্ স্ত্রীণাং ন চাসাং বশগো ভবেৎ ॥ ১০ ॥ পূজনীয়া মহাভাগাঃ

पुण्याश्च गृहदीपुषः । स्त्रियः श्रियो गृहस्योक्तान्स्त्रमाद्रक्या विशेषतः ॥ ११ ॥ पितु-  
रसुतःपुरं दद्यान्मातुर्दद्यान्महानसम् । गोषु चाश्वसमं दद्यात् स्वयमेव कृषिं  
व्रजेत् । भृत्यैर्वाणिज्यचारुषु पुल्लैः सेवेत च द्विजान् ॥ १२ ॥ अन्द्योहग्निर्ब्रह्मतः  
ऋत्नमशानो लोहमुत्थितम् । तेषां सर्वत्रयं तेजः स्वासु षोनिषु शाम्यति ॥ १३ ॥  
नित्यं सन्तः कुले जाताः पावकोपमतेजसः । ऋनावन्तो निराकाराः काष्ठेहग्नि-  
रिव शेरते ॥ १४ ॥ यस्य मन्त्रं न जानन्ति वाहाश्चात्त्यन्तराश्च ये । स राजा सर्वत-  
श्चक्रुश्चिरमैश्वर्यामश्नुते ॥ १५ ॥ करिष्यन् प्रभाषेत कृतान्येव तु दर्शयेत् ।  
धर्मकामार्थकार्याणि तथा मन्त्रो न भिद्यते ॥ १६ ॥ गिरिपृष्ठमुंपारुह्य प्रासादं वा  
रहोगतः । अरण्ये निःशलाके वा तत्र मन्त्रो विधीयते ॥ १७ ॥ नासूह्यं परमं  
मन्त्रं भारताहति वेदिदुम् । अपण्डितो वापि सूह्यं पण्डितो वाप्यनाश्ववान् ॥ १८ ॥  
नापरीक्ष्य महीपालः कुर्यात् सचिवमाश्रयः । अमात्येष्वर्थलिप्सा च मन्त्ररक्षणमेव  
च ॥ १९ ॥ कृतानि सर्वकार्याणि यस्य पारिषदा विदुः । धर्मे चार्थे च कामे च स राजा  
राजसत्तमः ॥ २० ॥ गूढमन्त्रस्य नृपतेस्तस्य सिद्धिरसंशयम् ॥ २१ ॥ अप्रशस्तानि  
कार्याणि यो मोहादनुतिष्ठति । स तेषां विपरिप्लवं शान्तिशयते जीवितादपि ॥ २२ ॥  
कर्मणां प्रशस्तानामनुष्ठानं सुखावहम् । तेषामेवाननुष्ठानं पश्चात्तापकरं  
मतम् ॥ २३ ॥ अनधीत्य यथा वेदान् विप्रः श्राद्धमर्हति । एवमश्रुतयाङ्गुण्यो न मन्त्रं  
श्रोतुमर्हति ॥ २४ ॥ स्थानवृद्धिर्कथञ्चन्या वाङ्गुण्यविदिताश्रयः । अनवज्ञातशीलस्य  
स्वाधीना पथिवी नृप ॥ २५ ॥ अमोघक्रोधहर्षस्य स्वयं कृत्यान्यवेक्षणः । आश्र-  
प्रत्ययकोषस्य वसुदैव वसुकरा ॥ २६ ॥ नाममात्रेण तुष्येत छत्रेण च महीपतिः ।  
भृत्येभ्यो विसृजेदर्थान्नैकः सर्वहरो भवेत् ॥ २७ ॥ ब्राह्मणे ब्राह्मणं वेद भर्ता  
वेद स्त्रियस्तथा । अमात्यं नृपतिर्वेद राजा राजानमेव च ॥ २८ ॥ न शत्रुरक्ष-  
मापन्नो मोक्तव्यो वध्यतास्ततः । न्यग्दूता पर्युपासीत वध्यं हन्याद्वले सति ।  
अहताङ्कि भयन्तस्माज्जायते न चिरादिवा ॥ २९ ॥ दैवतेषु च यत्नेन राजसु ब्राह्मणेषु च ।  
निष्कृत्याः सदा क्रोधो वृद्धबालातुरेषु च ॥ ३० ॥ निरर्थं कलहं प्राञ्जो बर्जयेन्मु-  
सेवितम् । कीर्तिं लभते लोके न चानर्थेन युज्यते ॥ ३१ ॥ प्रसादो निष्कलो  
यस्य क्रोधश्चापि निरर्थकः । न तं भर्तारमिच्छन्ति षण्णं पतिमिव स्त्रियः ॥ ३२ ॥  
न बुद्धिर्धनलाभाय न जाड्यमसमृद्धये । लोकपर्यायवृत्तान्तं प्राञ्जो जानाति ने-  
तरः ॥ ३३ ॥ विद्याशीलवयोवृद्धान् बुद्धिवृद्धांश्च भारत । धनाभिजातवृद्धांश्च  
नित्यं मूढोहवमन्यते ॥ ३४ ॥ अनार्यवृत्तमप्राञ्जमसूयकमथार्थिकम् । अनर्थाः कि

ପ୍ରମାୟାନ୍ତି ବାଗ୍‌ଦୁର୍ଘଃ କ୍ରୋଧନନ୍ତୁଥା ॥ ୩୫ ॥ ଅବିସନ୍ଧାଦନଂ ଦାନଂ ସମୟମ୍ୟାବ୍ୟତିକ୍ରମଃ ।  
 ଆବର୍ତ୍ତୟନ୍ତି ଭୂତାନି ସମ୍ୟକ୍ ପ୍ରାଣିହିତା ଚ ବାକ୍ ॥ ୩୬ ॥ ଅବିସନ୍ଧାଦକୋ ଦକ୍ଷଃ କୃତଜ୍ଞୋ  
 ମତିମାନୁଜୁଃ । ଅପି ସଂକ୍ଷୀଣକୋଷୋଽପି ଲଭତେ ପରିବାରଣମ୍ ॥ ୩୭ ॥ ଧୃତିଃ ଶମୋ  
 ଦମଃ ଶୌଚଂ କାରୁଣ୍ୟଂ ବାଗନିର୍ଘୂରା । ମିତ୍ରାଣାଞ୍ଚାନଭିଦ୍ରୋହଃ ମଠ୍ପୁତାଃ ମନିଧଃ ଶ୍ରି-  
 ଯଃ ॥ ୩୮ ॥ ଅସନ୍ଧିଭାଗୀ ଦୁର୍ଘାନ୍ତା କୃତସ୍ତ୍ନୋ ନିରପତ୍ରପଃ । ତାଦୃଘ୍ନରାଧମୋ ଲୋକେ  
 ବର୍ଜନୀୟୋ ନରାଧିପ ॥ ୩୯ ॥ ନ ସ ରାଟ୍ରୋ ସୁଖଂ ଶେତେ ମସର୍ପ ଇବ ବେଶ୍ମାନି । ଯଃ କୋ-  
 ପୟତି ନିର୍ଦୋଷଂ ସଦୋଷୋଽଭ୍ୟନ୍ତରଂ ଜନମ୍ ॥ ୪୦ ॥ ଯେଷୁ ଦୁର୍ଘେଷୁ ଦୋଷଃ ସ୍ୟାଦ୍ଦୋଷା-  
 ଶ୍ଳେଷମସ୍ୟ ଭାରତ । ସଦା ପ୍ରମାଦନନ୍ତେଷାଂ ଦେବତାନାମିବାଚରେଂ ॥ ୪୧ ॥ ଯେଽର୍ଥାଃ ଶ୍ରୀୟୁ  
 ସମାସକ୍ତାଃ ପ୍ରମତ୍ତପତିତେଷୁ ଚ । ସେ ଚାନାର୍ଯ୍ୟମାସକ୍ତାଃ ସର୍ବେ ତେ ସଂଶୟନ୍ତତାଃ ॥ ୪୨ ॥  
 ଯତ୍ର ଶ୍ରୀ ଯତ୍ର କିତରୋ ବାଲୋ ଯତ୍ରାଭୁଶାସିତା । ମଞ୍ଜୁନ୍ତି ତେହବଶା ରାଜନ୍ନନ୍ଦ୍ୟାମଶ୍ମପ୍ଳବା  
 ଇବ ॥ ୪୩ ॥ ପ୍ରବୋଜନେଷୁ ସେ ମକ୍ତା ନ ବିଶେଷେଷୁ ଭାରତ । ତାନହଂ ପଞ୍ଚିତାନ୍ମନେ  
 ବିଶେଷା ହି ପ୍ରମଦ୍ଧିନଃ ॥ ୪୪ ॥ ଯଂ ପ୍ରଶଂସନ୍ତି କିତବା ଯଂ ପ୍ରଶଂସନ୍ତି ଚାରଣାଃ । ଯଂ  
 ପ୍ରଶଂସନ୍ତି ବନ୍ଧକ୍ୟୋ ନ ସ ଜୀବତି ମାନବଃ ॥ ୪୫ ॥ ହିଞ୍ଚା ତାନ୍ ପରମେଷ୍ଠାମାନ୍ ପାଞ୍ଚ-  
 ବାନମିତୌଜମଃ । ଆହିତଂ ଭାରତୈଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟଂ ହ୍ଵୟାଦୂର୍ଯ୍ୟୋଧନେ ମହଂ ॥ ୪୬ ॥ ତଂ ଦ୍ରକ୍ଷ୍ୟ-  
 ସି ପରିଭ୍ରଷ୍ଟଂ ତସ୍ମାଦ୍ଧ୍ଵଂ ନଚିରାଦିବ । ଐଶ୍ଵର୍ଯ୍ୟମଦମଂ ମୁଚଂ ବଳିଂ ଲୋକତ୍ରୟାଦିବ ॥ ୪୭ ॥  
 ଇତ୍ୟୁଦ୍ଦୋଷପର୍ବଣି ପ୍ରଜାଗରପର୍ବଣି ସିଦୁରବାକ୍ୟେ ଅକ୍ଷତ୍ରିଂ-

ଶତ୍ରୁମୋହଧ୍ୟାୟଃ ॥ ୩୮ ॥



ଧୃତରାଷ୍ଟ୍ର ଉବାଚ । ଅନୀଶ୍ଵରୋହଂ ପୁରୁଷୋ ଭବାତ୍ତବେ ସୂତ୍ରପ୍ରୋତା ଦାରୁମୟୀବ ଯୋଷା ।  
 ଧାତ୍ରା ତୁ ଦିକ୍ଷିତ୍ୟ ବଶେ କୃତୋହଂ ତସ୍ମାଦ୍ଧ୍ଵଂ ଶ୍ରବଣେ ଧୃତୋହମ୍ ॥ ୧ ॥ ବିଦୁର  
 ଉବାଚ । ଅପ୍ରାପ୍ତକାଳଂ ବଚନଂ ବୃହସ୍ପତିରପି କ୍ରବନ୍ । ଲଭତେ ବୁଦ୍ଧ୍ୟବଜ୍ଞାନମବମାନଃ  
 ଭାରତ ॥ ୨ ॥ ପ୍ରିୟୋ ଭବତି ଦାନେନ ପ୍ରିୟବାଦେନ ଚାପରଃ । ମନ୍ତ୍ରମୂଳବଲେନାନ୍ୟୋ ଯଃ  
 ପ୍ରିୟଃ ପ୍ରିୟ ଏବ ସଃ ॥ ୩ ॥ ଦ୍ଵେଷ୍ୟୋ ନ ସାଧୁର୍ଭବତି ନ ମେଧାବୀ ନ ପଞ୍ଚିତଃ । ପ୍ରିୟେ  
 ଶୁଭାନି କାର୍ଯ୍ୟାଣି ଦ୍ଵେଷ୍ୟେ ପାପାନି ଚୈବ ହ ॥ ୪ ॥ ଉକ୍ତଂ ମୟା ଜାତମାତ୍ରେଽପି ରାଜନ୍  
 ଦୂର୍ଯ୍ୟୋଧନଂ ତ୍ୟଜ୍ଞ ପୁତ୍ରଂ ହ୍ଵମେକମ୍ । ତସ୍ୟ ତ୍ୟାଗାଂ ପୁତ୍ରଶତସ୍ୟ ବୃଦ୍ଧିରସ୍ୟାତ୍ୟାଗାଂ  
 ପୁତ୍ରଶତସ୍ୟ ନାଶଃ ॥ ୫ ॥ ନ ବୃଦ୍ଧିର୍ବହ୍ନ ମନ୍ତ୍ରବ୍ୟୋ ଯା ବୃଦ୍ଧିଃ କ୍ଷୟମାବହେଂ । କ୍ଷୟୋଽପି  
 ବହ୍ନ ମନ୍ତ୍ରବ୍ୟୋ ଯଃ କ୍ଷୟୋ ବୃଦ୍ଧିମାବହେଂ ॥ ୬ ॥ ନ ସ କ୍ଷୟୋ ମହାରାଜ ଯଃ କ୍ଷୟୋ ବୃଦ୍ଧି-  
 ମାବହେଂ । କ୍ଷୟଃ ସ ହି ହ ମନ୍ତ୍ରବ୍ୟୋ ଯଂ ଲକ୍ଷ୍ମା ବହ୍ନ ନାଶୟେଂ ॥ ୭ ॥ ସମୃଦ୍ଧା ଗୁଣତଃ  
 କେଚିଦ୍ଧବନ୍ତି ଧନତୋଽପରେ । ଧନବୃଦ୍ଧାନ୍ ଗୁଣୈର୍ହିନାନ୍ ଧୃତରାଷ୍ଟ୍ର ବିବଜ୍ଞୟ ॥ ୮ ॥ ଧୃତ-

রাষ্টি উবাচ । সর্বং ভ্রমাযতীযুক্তং ভাষসে প্রাজ্ঞসম্মতং । ন চোৎসহে স্মৃতং  
 ত্যক্তুং যতো ধর্মস্তুতো জয়ঃ ॥ ৯ ॥ বিদুর উবাচ । স্বভাবগুণসম্পন্নো ন জাতু  
 বিনয়ান্বিতঃ । সূক্ষ্মমপি ভূতানামুপমর্দমুপেক্ষতে ॥ ১০ ॥ পরাপবাদনিরতাঃ  
 পরদুঃখোদেষু চ । পরস্পরবিরোধে চ যতন্তে সততোখিতাঃ ॥ ১১ ॥ সদৌষং দশ-  
 নং যেষাং মহাসে স্মমহন্তযম্ । অর্থাদানে মহান্দোষঃ প্রদানে চ মহন্তযম্ ॥ ১২ ॥  
 যে বৈ ভেদনশীলাস্তু সকামা নিস্রপাঃ শঠাঃ । তে পাপা ইতি বিখ্যাতাঃ মহাসে  
 পরিগর্হিতাঃ ॥ ১৩ ॥ যুক্তাশ্চাতৈর্যমহাদোষৈর্বে নরাস্তান্ বিবর্জয়েৎ ॥ ১৪ ॥ নিব-  
 র্তমাণে সৌহার্দে প্রীতির্নীচে প্রণশ্যতি । যা চৈব ফলনির্বৃত্তিঃ সৌহর্দে চাপি যৎ  
 সুখম্ ॥ ১৫ ॥ যততে চাপবাদায যত্রমারভতে ক্ষয়ে । স্বল্পেহ্যপ্যপকুতে মোহান্ন  
 শাস্তিমুপগচ্ছতি ॥ ১৬ ॥ তাদর্শৈঃ সঙ্গতং নীচৈনৃশংসৈরকুতান্বিতঃ । নিশম্য  
 নিপুণং বুদ্ধ্যা বিদ্বান্ দূরাদ্বিবর্জয়েৎ ॥ ১৭ ॥ যো জ্ঞাতিননুগৃহ্নাতি দরিদ্রং দীন-  
 মাতুরম্ । স পুত্রপশুভিবৃদ্ধিং শ্রেয়শ্চানন্ত্যমশ্নুতে ॥ ১৮ ॥ জ্ঞাতযো বর্দ্ধনী-  
 যাস্তৈর্ষ ইচ্ছন্ত্যায়ানঃ শুভম্ । কুলবৃদ্ধিঞ্চ রাজেন্দ্র তস্মাৎ সাধু সমাচর । শ্রেয়সা  
 যোক্ষ্যসে রাজন্ কুর্বাণো জ্ঞাতিসৎক্রিয়াম্ ॥ ১৯ ॥ বিগুণা হ্যপি সংরক্ষ্যা জ্ঞাত-  
 যো ভবতর্ষভ । কিং পুনর্গণবন্তস্তে ত্বৎপ্রসাদাভিকাজ্জিগৎ ॥ ২০ ॥ প্রসাদং কুরু  
 বীরাণাং পাণ্ডবানাং বিশাম্পতে । দীবন্তাং গ্রামকাঃ কেচিৎ তেষাং বৃত্তার্থগী-  
 শ্বর । এবং লোকে যশঃ প্রাপ্তং ভবিষ্যতি নরাধিপ ॥ ২১ ॥ বৃদ্ধেন হি ত্বয়া  
 কার্য্যং পুত্রাণাং তাত রক্ষণম্ । যযা চাপি হিতং বাচ্যং বিদ্ধি মাং ত্বদ্ধিতৈষি-  
 গম্ ॥ ২২ ॥ জ্ঞাতিভির্বিগ্রহস্তাত ন কর্তব্যো ভবার্থিনা । সুখানি সহ ভোজ্যানি  
 জ্ঞাতিভির্ভরতর্ষভ ॥ ২৩ ॥ মস্তোজনং সঙ্কথনং সংপ্রীতিশ্চ পরস্পরম্ । জ্ঞাতিভিঃ  
 সহ কার্য্যাণি ন বিরোধঃ কদাচন ॥ ২৪ ॥ জ্ঞাতযস্তারযন্তীহ জ্ঞাতযো মজ্জযন্তি  
 চ । সূবৃত্তাস্তারযন্তীহ দুর্বৃত্তা মজ্জযন্তি চ ॥ ২৫ ॥ সূবৃত্তো ভব রাজেন্দ্র পাণ্ডবান্  
 প্রতি মানদ । অধর্মণীযঃ শত্রুণাং যৈবৃত্তস্ত্বং ভবিষ্যসি ॥ ২৬ ॥ শ্রীমন্তং জ্ঞাতি-  
 মাসাদ্য যো জ্ঞাতিরবসীদতি । দিগ্ধহস্তং মৃগ ইব স এনস্তস্য বিন্দতি ॥ ২৭ ॥  
 পশ্চাদপি নরশ্রেষ্ঠ তব তাপো ভবিষ্যতি । তান্ বা হতান্ সূতান্ বাপি শ্রদ্ধা তদনু-  
 চিন্তয ॥ ২৮ ॥ যেন খট্টাং সমাকটঃ পরিতপ্যেত কশ্মণা । আদাবেব ন তৎ  
 কুর্য্যাদধুবে জীবিতে সতি ॥ ২৯ ॥ ন কশ্চিন্নাপনযতে পুমানন্যত্র ভার্গবাৎ ।  
 শেষসংপ্রতিপত্তিস্তু বুদ্ধিমৎস্বৈব তিষ্ঠতি ॥ ৩০ ॥ দুর্ব্যোধনেন যদ্যেতৎ পাপং  
 তেষু পুরা কৃতম্ । ত্বয়া তৎ কুলবৃদ্ধেন প্রত্যানেযং নরেশ্বর ॥ ৩১ ॥ তাংস্ত্বং পদে

प्रतिष्ठाप्य लोके विगतकल्मषः । तविष्यसि नरश्रेष्ठ पूजनीयो मनीषिणाम् ॥७२॥  
 सुव्याहृतानि धीराणां फलतः परिचिन्त्य षः । अद्यवस्यति कार्येषु चिरं 'यसि  
 तिष्ठति ॥ ७३ ॥ असम्यग्पद्मुक्तं हि ज्ञानं सुकुशलैरपि । उपलभ्यन्ते विदितं  
 विदितज्ञानमुत्थितम् ॥ ७४ ॥ पापेदयकलं विद्वान् यो नारतति वर्द्धते । यस्तु  
 पूर्वकृतं पापमविमृश्यान्नवर्द्धते । अगाधपक्षे दुर्मैत्र्या विषमे स निपात्यते ॥७५॥  
 मन्त्रभेदस्य षट् प्राज्ञो द्वा राणीमानि लक्षयेत् । अर्थसंस्तिकामश्च रक्षेदेतानि  
 नित्यशः ॥ ७६ ॥ यदं स्वप्नमविज्ञानमाकारणात्सम्भवम् । दुर्दामातेषु विशुभ्तं  
 दूताच्छाकुशलादपि ॥ ७७ ॥ द्वाराण्येतानि यो ज्ञात्वा संवृणोति सदा नृपः ।  
 त्रिवर्गचरणे युक्तः स शत्रूनधितिष्ठति ॥ ७८ ॥ न वै श्रुतमविज्ञाय वृद्धान्मुप-  
 सेव्य वा । धर्माथो वेदितुं शक्यो बृहस्पतिसमैरपि ॥ ७९ ॥ नष्टं समुद्रे  
 पतितं नष्टं वाक्यमशृणुति । अनात्मानि श्रुतं नष्टं नष्टं हृतमनग्निकम् ॥ ८० ॥  
 मत्या परीक्ष्य मेधावी बुक्त्या सम्पाद्य चासकृत् । श्रुत्वा दुर्दामा विज्ञाय प्राञ्जैर्मैत्रीं  
 समाचरेत् ॥ ८१ ॥ अकीर्तिं विनयो हस्ति हस्त्यनर्थं पराक्रमः । हस्ति नित्यं  
 क्रमा क्रोधमाचारो हस्त्यलक्षणम् ॥ ८२ ॥ परिच्छेदेन क्षेत्रेण वेश्मना परिचर्या-  
 या । परीक्षेत कुलं राजन् भोजनाच्छादनैश्च ॥ ८३ ॥ उपस्थितस्य कामस्य  
 प्रतिवादो न विद्यते । अपि निम्बुक्तदेहस्य कामरक्तस्य किं पुनः ॥ ८४ ॥ रा-  
 ज्ञोपसेविनं वैद्यं धार्मिकं प्रियदर्शनम् । मित्रवस्तुं सुवाक्यं सुहृदं परिपा-  
 लयेत् ॥ ८५ ॥ दुष्कूलिनः कूलिनो वा मर्यादां यो न लज्जयेत् । धर्मापेक्षी  
 मृदुर्हीमान् स कूलिनशताद्वरः ॥ ८६ ॥ ययोश्चित्तेन वा चित्तं नैवृत्यं निर्-  
 तेन वा । समेति प्रज्जया प्रज्जा तयोर्मैत्री न जीर्यते ॥ ८७ ॥ दुर्बुद्धिमकृतप्रज्जं  
 ह्यं कूपं तन्नैरिव । विवर्ज्यते मेधावी तस्मिमैत्री प्रणशति ॥ ८८ ॥ अवलि-  
 प्तेषु मूर्खेषु रौद्रसाहसिकेषु च । तथैवापेतधर्मेषु न मैत्रीमाचरेद्बुधः ॥ ८९ ॥  
 कृतञ्च धार्मिकं सत्यमद्भुतं दृढतत्त्विकम् । जितेन्द्रियं स्थितं स्थित्यां मित्र-  
 मत्यागि चेष्यते ॥ ९० ॥ इन्द्रियाणामनुसर्गो मृत्युनापि विशिष्यते । अर्थार्थं  
 पुनरनुसर्गः सादयेद्देवतान्यपि ॥ ९१ ॥ मार्दवं सर्वभूतानामनसूया क्रमा धृतिः ।  
 आयुष्याणि बुधाः प्राहर्मात्राणांश्चापि मानना ॥ ९२ ॥ अपनीतं सुनीतेन योऽर्थं  
 प्रत्यानिनीषते । मतिमास्थाय सुदृढां तदकापुरुषव्रतम् ॥ ९३ ॥ आयत्यां प्रति-  
 कारञ्जस्तदाह्वे दृढनिश्चयः । अतीते कार्यशेषेऽहो नरोऽर्थेर्न प्रहीयते ॥ ९४ ॥  
 कर्मणा मनसा वाचा यदतीकृतं निषेवते । तदेवापहरत्येनं तस्मात् कल्याणमा

चरेत् ॥ ५५ ॥ मङ्गलालम्बनं योगः श्रुतमुखानमाङ्गवम् । भूतिमेतानि कूर्वाञ्छि  
सताक्षाभीक्ष्णदर्शनम् ॥ ५६ ॥ अनिर्बेदः श्रियो मूलं लाभस्य च शुभस्य च । महान्  
भवत्यनिर्बिणः सुखक्षान्त्यमंशुते ॥ ५७ ॥ नातः श्रीमन्तरुं किञ्चिदन्यत् पथ्यतम-  
स्तथा । प्रथविशेषार्थथा तात क्रमा सर्वत्र सर्वदा ॥ ५८ ॥ क्रमेदशक्तः सर्वस्य शक्ति-  
मान् धर्मकारणात् । अर्थानर्थो समो यस्य तस्य नित्यं क्रमा हिता ॥ ५९ ॥ यत्  
सुखं सेवमानोऽपि धर्माथाभ्यां न हीयते । कामस्तदुपसेवेत न मूढत्रतमा-  
चरेत् ॥ ६० ॥ दुःखार्तेषु प्रशान्तेषु नास्तिकेष्वलसेषु च । न शीर्षसत्यादास्तेषु ये  
चोत्साहविवर्जिताः ॥ ६१ ॥ आर्जवेन नरं युक्तं मृदुघ्नां सव्यपत्रपम् । अ-  
शक्तं मन्यमानास्तु धर्मयन्ति कुबुद्धयः ॥ ६२ ॥ अत्यार्यमतिदातारमतिशूरमति-  
त्रतम् । प्रज्जाभिमानिनैकेव श्रीर्भयामोपसर्पति ॥ ६३ ॥ न चातिगुणवत्स्वेषा  
नात्यस्तुं निगुणेषु च । उन्मत्ता गोरिवान्ता श्रीः कचिदेवावतिष्ठते ॥ ६४ ॥ अग्नि-  
होत्रफला वेदाः शीलवृत्तफलं श्रुतम् । रतिपुत्रफला नार्यो दत्तभुक्तफलं  
धनम् ॥ ६५ ॥ अधर्मोपार्जितैरर्थैर्धर्मः करोतेत्योद्धृदेहिकम् । न स तस्य फलं  
प्रेत्य भुङ्क्तेऽर्थस्य दुरागमात् ॥ ६६ ॥ कास्तारवनदुर्गेषु कृच्छ्रास्वापत्सु सञ्जमे ।  
उद्यतेषु च शस्त्रेषु नास्ति सद्भवतां भयम् ॥ ६७ ॥ उत्थानं संयमो दाक्ष्यमप्र-  
मादो धृतिः स्रुतिः । समीक्ष्य च समारम्भो विक्रि मूलं भवस्य तु ॥ ६८ ॥ तपो  
बलं तापसानां ब्रह्म ब्रह्मविदां बलम् । हिंसा बलमसाधुनां क्रमा गुणवतां  
बलम् ॥ ६९ ॥ अष्टौ तान्यत्रतस्मानि आपो मूलं फलं पयः । हविर्ब्राह्मणकाम्या  
च गुरोरर्चनमौषधम् ॥ ७० ॥ न तत् परस्य संदध्यात् प्रतिकूलं यदाङ्घनः । सं-  
ग्रहेणैव धर्मः स्यात् कामादन्यः प्रवर्तते ॥ ७१ ॥ अक्रोधेन जयेत् क्रोधमसाधुं  
साधुना जयेत् । जयेत् कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम् ॥ ७२ ॥ स्त्रीधूर्त्तके-  
लसे तीरो चण्डे पुरुषमानिनि । चोरे कृतस्ने विश्वासो न कार्यो न च नास्ति-  
के ॥ ७३ ॥ अभिवादनशीलस्य नित्यं बद्धोपसेविनः । चत्वारि संप्रवर्द्धन्ते  
कीर्तिरायुर्ब्रह्मेशो बलम् ॥ ७४ ॥ अतिक्रुशेन येऽर्थाः स्युर्धर्मस्यातिक्रमेण च । अरे-  
र्षा प्रणिपातेन मान्य तेभ्य मनः कृथाः ॥ ७५ ॥ अविद्यः पुरुषः शोच्यः शोच्यं  
मैथुनमप्रजम् । निराहाराः प्रजाः शोच्याः शोच्यं राक्षसराजकम् ॥ ७६ ॥ अधा-  
जरा देहवतां पर्वतानां जलं जरा । असन्तोषो जरा स्त्रीणां वाक्शल्यां मन-  
सो जरा ॥ ७७ ॥ अनान्नायमला वेदा ब्राह्मणस्यात्रतं मलम् । मलं पृथिव्या वा-  
ह्नीकाः पुरुषस्यानृतं मलम् ॥ ७८ ॥ कौतहलमला साक्षी विप्रवासमलाः स्त्रियः ।



সুবর্ণস্য মলং কপ্যং কপ্যস্যাপি মলং ত্রপু । জ্বেষং ত্রপুমলং সীসং সীসস্যাপি  
 মলং মলম্ ॥ ৭২ ॥ ন স্বপ্নেন জযেমিদ্ভাং ন কামেন জযেৎ স্ত্রিয়ঃ । নেহ্মেনেন  
 জযেদগ্নিঃ ন পানেন সুরাং জযেৎ ॥ ৮০ ॥ यस্য দানজিতং মিত্রং শত্রবো যুধি  
 নিজ্জিতাঃ । অন্নপানজিতা দারাঃ সফলং তস্য জীবিতম্ ॥ ৮১ ॥ মহসিগোহপি  
 জীবন্তি জীবন্তি শতিনস্তথা । ধৃতরাষ্ট্র বিমুঞ্চেচ্ছাং ন কথঞ্চিন্ন জীব্যতে ॥ ৮২ ॥  
 যৎ পৃথিব্যাং ত্রীহিবৎ হিরণ্যং পশবঃ স্ত্রিয়ঃ । নালমেকস্য তৎ সৰ্বমিতি পশ্যম  
 নুহতি ॥ ৮৩ ॥ রাজন্ ভূযো ব্রবীমি হ্রাং পুত্রেষু সমমাচর । সমতা যদি তে  
 রাজন্ শ্বেষু পাণ্ডুসুতেষু চ ॥ ৮৪ ॥

ইত্যুদ্যোগপৰ্বণি প্রজাগরপৰ্বণি বিদুরবাক্যে একোনচত্বারিং-

শতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩৯ ॥



বিদুর উবাচ । যোহভ্যর্চিতঃ সন্দিরসজ্জমানঃ করোত্যর্থং শক্তিমহাপযিত্বা ।  
 ক্ষিপ্রং যশস্তং সমুপৈতি সন্তমলং প্রসন্না হি সুখায় সন্তঃ ॥ ১ ॥ মহান্তমপ্যর্থম-  
 ধর্মযুক্তং যঃ সত্যজত্যানুপক্রুষ্টি এব । সুখং স দুঃখান্যবমুচ্য শেতে জীর্ণাং হ্রচং  
 সর্প ইবাবমুচ্য ॥ ২ ॥ অনৃতে চ সনুৎকর্ষো রাজগামি চ পৈশুনম্ । গুরোশ্চালীক-  
 নিবন্ধঃ সমানি ব্রহ্মহত্যয়া ॥ ৩ ॥ অস্বৈকপদং মৃত্যুরতিবাদঃ শ্রিয়ো বধঃ ।  
 অশুক্রযা হ্রা শ্লাঘা বিদ্যাযাঃ শত্রবস্ত্রয়ঃ ॥ ৪ ॥ আলস্যং মদনোহৌ চ চাপলং  
 গোষ্ঠিরেব চ । স্তব্ধতা চাভিনানিত্বং তথা ত্যাগিত্বমেব চ । এতে বৈ সপ্ত দোষাঃ  
 স্ত্যঃ সদা বিদ্যার্থিনাং মতাঃ ॥ ৫ ॥ সুখার্থিনঃ কুতো বিদ্যা নাস্তি বিদ্যার্থিনঃ  
 সুখম্ । সুখার্থী বা ত্যজেদ্বিদ্যাং বিদ্যার্থী বা ত্যজেৎ সুখম্ ॥ ৬ ॥ নাগ্নিস্তৃপ্যতি  
 কাষ্ঠানাং নাপগানাং মহোদধিঃ । নাস্তকঃ সর্বভূতানাং ন পুংসাং বামলোচ-  
 না ॥ ৭ ॥ আশা ধৃতিং হস্তি সমৃদ্ধিমন্তকঃ ক্রোধঃ শ্রিয়ং হস্তি যশঃ কদর্যতা ।  
 অপালনং হস্তি পশুংশ্চ রাজম্নেকঃ ক্রুদ্ধো ব্রাহ্মণো হস্তি রাষ্ট্রম্ ॥ ৮ ॥ অজাস্ব  
 কাংস্যং রজতঞ্চ নিত্যং মধ্বাকর্ষঃ শকুনিঃ শ্রোত্রিয়শ্চ । বৃদ্ধো জ্ঞাতিরবসমো বয়স্য  
 এতানি তে সপ্ত গৃহে সদৈব ॥ ৯ ॥ অজোক্ষা চন্দনং বীণা আদর্শো মধুসর্পিষী ।  
 বিষনৌডুম্বরং শঙ্খঃ স্বর্ণনাভোহথ রোচনা ॥ ১০ ॥ গৃহে স্থাপযিতব্যানি ধন্যানি  
 মনুরব্রবীৎ । দেবব্রাহ্মণপূজার্থমতিথীনাঞ্চ ভারত ॥ ১১ ॥ ইদঞ্চ হ্রাং সর্বপরং  
 ব্রবীমি পুণ্যং পদং তাত মহাবিশিষ্টম্ । ন জাতু কামান্ন ভয়ান্ন লোভাক্ষমং জ-  
 হ্যাজ্জীবিতস্যাপি হেতোঃ ॥ ১২ ॥ নিত্যো ধর্মঃ সুখদুঃখে হ্রনিত্যে জীবো নিত্যো

हेतुरस्य अनित्यः । तद्विज्ञानित्यं प्रतिष्ठितं नित्यं सन्तुष्टं च तौषण्यं हि  
 लाभः ॥ १३ ॥ महाबलान् पश्य महानुभावान् प्रशंस्य भूमिं धनधान्यपूर्णां ।  
 राज्यानि हिंसा विपुलांश्च भोगान् गतामरेन्द्रान् वशमस्तु कस्य ॥ १४ ॥ मृतं  
 पुत्रं दुःखं पुत्रं मनुष्या उक्त्विप्य राजन् स्वगृहानिहरन्ति । तं मुक्तकेशाः करुणं  
 रुदन्तश्चित्तमधे कार्त्तुमिव क्षिपन्ति ॥ १५ ॥ अन्ये धनं प्रेतगतस्य भुञ्जे वशा-  
 सि चाग्निश्च शरीरधातुन् । द्वाभ्यामयं सह गच्छत्यमूत्र पुण्येन पापेन च वेक्त-  
 मानः ॥ १६ ॥ उत्सृज्य विनिवर्तन्ते ज्जातयः सुहृदः सुताः । अपुष्पानफलान्  
 वृक्षान् यथा तात पतन्निर्गः ॥ १७ ॥ अग्ने प्रास्तुतु पुरुषं कर्मायेति स्वयं कृतम् ।  
 तस्मात्तु पुरुषो यत्नाद्वर्त्मं सक्त्विष्याच्छनैः ॥ १८ ॥ अस्माल्लोकदूर्द्ध्वमनुष्य चाधो  
 महत्तमस्तिष्ठति चाक्षकारम् । तद्दे महामोहनमिन्द्रियाणां वध्यं ना द्यां प्रल-  
 भेत राजन् ॥ १९ ॥ इदं वचः शक्यसि चेद्वथावनिशय सर्वं प्रतिपन्नमेव । यशः  
 परं प्राप्स्यसि जीवलोकं भयं न चामूत्र न चेह तेहस्ति ॥ २० ॥ आत्मा नदी  
 भारत पुण्यतीर्था सत्योदका धृतिकूला दयोर्म्मिः । तस्यां स्नातः पूषते पुण्यकर्मा  
 पुण्ये हात्मा नित्यमस्तोहस्त एव ॥ २१ ॥ कामक्रोधग्रहवतीं पक्षेन्द्रिवजलां  
 नदीम् । नावं धृतिमयीं कृत्वा जन्मदुर्गाणि सन्तुर ॥ २२ ॥ प्रज्जावृक्षं धर्मवृक्षं  
 स्ववक्त्रं विद्यावृक्षं वयसाचापि वृक्षम् । कार्यकार्ये पूजयिष्या प्रसाद्य यः संपू-  
 ष्ण स मुहेत् कदाचित् ॥ २३ ॥ धृत्या शिष्योदरं रक्षेत् पाणिपादश्च चक्षुषा ।  
 चक्षुःश्रोत्रे च मनसा मनो वाचश्च कर्मणा ॥ २४ ॥ नित्योदकी नित्ययज्ञोपवीती  
 नित्यस्वाध्यायी पतितान्नवर्ज्जी । सत्यं कृवन् गुरवे कर्म कुरन् ब्राह्मणश्च्यवते ब्रह्म-  
 लोकात् ॥ २५ ॥ अधीत्य वेदान् परिसंस्तुर्य चाग्नीनिष्ठा वज्रेः पालयिष्या प्र-  
 जाश्च । गोब्राह्मणार्थे शस्त्रपूतान्तरात्मा हतः संग्रामे क्लिषः स्वर्गमेति ॥ २६ ॥  
 वैश्याहधीत्य ब्राह्मणान् क्लिष्यांश्च धनैः काले संवितज्याश्रितांश्च । त्रेता-  
 पूतं धूममाघ्राय पुण्यं प्रेत्य स्वर्गे दिव्यसुखानि भुञ्जे ॥ २७ ॥ ब्रह्म क्लृप्तं वैश्या-  
 वर्णश्च शूद्रः क्रमेणैतान्मयावतः पूजयानः । तुष्टेष्वेतेष्वव्याथो दक्षपापस्त्यक्त्वा देहं  
 स्वर्गसुखानि भुञ्जे ॥ २८ ॥ चातुर्वर्ण्यस्यैव धर्मस्तु बोक्त्रो हेतुष्वानुक्रवतो मे  
 निबोध । क्षात्राद्वर्मादीयते पाण्डुपुत्रस्तं च राजन् राजधर्मे नियुक्त्व ॥ २९ ॥  
 धृतराष्ट्र उवाच । एवमेतद्वथा च मामनुशाससि नित्यदा । ममापि च मतिः सौम्य  
 तवत्येवं यथाथ माम् ॥ ३० ॥ । सा तु बुद्धिः कृताप्येवं पाण्डवान् प्रति मे सदा ।

ଦୁର୍ଯ୍ୟୋଧନଂ ସମାସାଦ୍ୟ ପୁନର୍ବିପରିବର୍ତ୍ତତେ ॥ ୩୧ ॥ ନ ଦିର୍ଘମପ୍ୟତିକ୍ରାନ୍ତୁଂ ଶକ୍ୟଂ ମର୍ତ୍ତ୍ୟେନ  
କେନଚିତ୍ । ଦିର୍ଘମେବ ଧ୍ରୁବଂ ମନ୍ୟେ ପୌରୁଷନ୍ତ ନିରର୍ଥକମ୍ ॥ ୩୨ ॥

ଇତ୍ୟୁଦ୍ଧୋଗପର୍ବିଣି ପ୍ରଜାଗରପର୍ବିଣି ବିଦୁରବାକ୍ୟେ ଚତ୍ବାରିଂଶତମୋଽଧ୍ୟାୟଃ ॥୫୦॥



ଧୃତରାଷ୍ଟ୍ର ଉବାଚ । ଅନୁକ୍ତଂ ଯଦି ତେ କିଂକ୍ଷିତ୍ବାଚା ବିଦୁର ବିଦ୍ୟତେ । ତନ୍ମେ ଶୁକ୍ରସତୋ  
ବୁଝି ବିଚିତ୍ରାଣି ହି ଭାଷସେ ॥ ୧ ॥ ବିଦୁର ଉବାଚ । ଧୃତରାଷ୍ଟ୍ର କୁମାରୋ ବୈ ସଃ ପୁରାଣଃ  
ସନାତନଃ । ସନଽସୁଜାତଃ ପ୍ରୋବାଚ ମୃତ୍ୟୁର୍ନାସ୍ତୀତି ଭାରତ ॥ ୨ ॥ ସ ତେ ଶୁହାନ୍  
ପ୍ରକାଶାଂଶ୍ଚ ସର୍ବାନ୍ ହୃଦୟସଂଶୟାନ୍ । ପ୍ରବକ୍ଷ୍ୟତି ମହାରାଜ ସର୍ବବୁଦ୍ଧିମତାଂବରଃ ॥ ୩ ॥  
ଧୃତରାଷ୍ଟ୍ର ଉବାଚ । କିଂ ହ୍ବଂ ନ ବେଦ ତଦ୍ଭୃଷୋ ଯନ୍ମେ ବୁଝାଂ ସନାତନଃ । ହ୍ବମେବ ବିଦୁର ବୁଝି  
ପ୍ରଜ୍ଞାଶେଷୋଽସ୍ତି ଚେତ୍ତବ ॥ ୪ ॥ ବିଦୁର ଉବାଚ । ଶୂଦ୍ରସୋନାବହଂ ଜାତୋ ନାତୋହନ୍ୟ-  
ଦକ୍ତୁମୁଂସହେ । କୁମାରସ୍ୟ ତୁ ଯା ବୁଦ୍ଧିର୍ବେଦ ତାଂ ଶାଶ୍ଵତୀମହମ୍ ॥ ୫ ॥ ବ୍ରାହ୍ମଣୀଂ ହି ଷୋ-  
ନିମାପନ୍ନଃ ସୁଶୁଭମପି ଯୋ ବଦେଂ । ନ ତେନ ଗର୍ହୋ ଦେବାନାଂ ତସ୍ମାଦେତଦ୍ଭୁବୀମି ତେ ॥ ୬ ॥  
ଧୃତରାଷ୍ଟ୍ର ଉବାଚ । ବ୍ରବୀହି ବିଦୁର ହ୍ବଂ ମେ ପୁରାଣନ୍ତଂ ସନାତନମ୍ । କଥମେତେନ ଦେହେନ  
ସ୍ୟାଦିତ୍ତୈବ ସମାଗମଃ ॥ ୭ ॥ ବୈଶମ୍ପାୟନ ଉବାଚ । ଚିନ୍ତୟାମାସ ବିଦୁରନ୍ତମୃଷିଂ  
ସଂଶିତବ୍ରତମ୍ । ସ ଚ ତଚ୍ଚିନ୍ତ୍ବିତଂ ଜ୍ଞାତ୍ବା ଦର୍ଶୟାମାସ ଭାରତ ॥ ୮ ॥ ସ ଟୈନଂ ପ୍ରତି-  
ଜଗ୍ରାହ ବିଧିଦୃଷ୍ଟେନ କର୍ମଣା । ସୁଖୋପବିଷ୍ଟଂ ବିଶ୍ରାନ୍ତମଥୈନଂ ବିଦୁରୋଽବ୍ରବୀଂ ॥ ୯ ॥  
ଭଗବନ୍ ସଂଶୟଃ କଶ୍ଚିଦ୍ଧୃତରାଷ୍ଟ୍ରସ୍ୟ ମାନସଃ । ଷୋ ନ ଶକ୍ୟୋ ମସା ବକ୍ତୁଂ ତମସ୍ମୈ ବକ୍ତୁ-  
ମହସି । ସଂ ଶ୍ରଦ୍ଧାସଂ ମନ୍ତ୍ରଷ୍ଟୋତ୍ରଃ ସର୍ବଦୁଃଖାତିଗୋ ଭବେଂ ॥ ୧୦ ॥ ଲାଭାଲାଭୋ ପ୍ରିୟ-  
ଦ୍ଵେଷୋ ଷଥୈନଂ ନ ଜରାନ୍ତକୋ । ବିଷହେରନ୍ ଭସାମର୍ଷୋ କ୍ଳୁଂପିପାସେ ମଦୋଦ୍ଭବୋ ।  
ଅରତିଶୈବ ତନ୍ନୀଶ୍ଚ କାମକ୍ରୋଧୋ କ୍ଷୟୋଦୟୋ ॥ ୧୧ ॥

ଇତ୍ୟୁଦ୍ଧୋଗପର୍ବିଣି ପ୍ରଜାଗରପର୍ବିଣି ବିଦୁରବାକ୍ୟେ ଏକଚତ୍ବାରିଂଶତମୋଽଧ୍ୟାୟଃ ॥୫୧॥

ସମାପ୍ତଃ ପ୍ରଜାଗରପର୍ବ ।



ଅଥ ସନଽସୁଜାତପର୍ବ ।

ବୈଶମ୍ପାୟନ ଉବାଚ । ତତୋ ରାଜା ଧୃତରାଷ୍ଟ୍ରୋ ମନୀଷୀ ସଂପୂଜ୍ୟ ତଂ ଧର୍ମଭୃତାଂ  
ବରିଷ୍ଠମ୍ । ସନଽସୁଜାତଂ ରହିତେ ମହାତ୍ମା ପପ୍ରଚ୍ଛ ବୁଦ୍ଧିଂ ପରମାଂ ବ୍ରହ୍ମଣ୍ ॥ ୧ ॥ ଧୃତ-  
ରାଷ୍ଟ୍ର ଉବାଚ । ସନଽସୁଜାତାହମିମଂ ଶୃଣୋମି ନ ମୃତ୍ୟୁରସ୍ତୀତି ତବ ପ୍ରବାଦମ୍ । ଦେବା-  
ସ୍ମରା ହାଚରନ୍ ବ୍ରହ୍ମଚର୍ଯ୍ୟମମୃତ୍ୟବେ ତଂ କତରମୁ ସତ୍ୟମ୍ ॥ ୨ ॥ ସନଽସୁଜାତ ଉବାଚ ।  
ଅପୂଞ୍ଚଃ କର୍ମଣା ସମ୍ମାଂ ମୃତ୍ୟୁର୍ନାସ୍ତୀତି ଚାପରମ୍ । ଶୂଢ଼ ମେ ବ୍ରବତୋ ରାଜନ୍ ଷଥୈତନ୍ମା

विशक्तिः ॥ ७ ॥ उभे सत्ये क्लिष्टैतस्य विद्धि मोहान्मृत्युः सम्मतोऽहं कवी-  
नाम् । प्रमादं वै मृत्युमहं त्रवीमि तथाप्रमादममृतं त्रवीमि ॥ ४ ॥ प्रमा-  
दाद्वै असुराः पराभवन्प्रमादाद्भुक्तुता भवन्ति । न वै मृत्युर्व्याघ्र इवात्ति ज-  
न्तुन् न हस्य कपमुपलभ्यते हि ॥५॥ यमं द्वेके मृत्युमतोऽहन्यमाहंरात्रावसम्-  
मृतं त्रक्चर्यम् । पितृलोके राज्यमनुशास्ति देवः शिवः शिवानामशिवोऽशि-  
वानाम् ॥ ७ ॥ अस्यादेशान्निःसरते नराणां क्रोधः प्रमादो लोभकपश्च  
मृत्युः । अहंगतेनैव चरन् विमर्गान् चाञ्जनो योगमुपैति कश्चि ॥ १ ॥  
ते मोहितास्तद्वशे वर्तमाना इतः प्रेतस्तत्र पुनः पतन्ति । ततस्तान् देवा अन्व-  
विष्यन्ते अतो मृत्युर्मरणाख्यामुपैति ॥ ८ ॥ कर्मोदये कर्मफलानुरागास्तत्रानु-  
ते यान्ति न तरन्ति मृत्युम् । सदर्थयोगानवगमात् समस्तां प्रवर्तते भोगयोगेन  
देही ॥ २ ॥ तद्वै महामोहनमिन्द्रियाणां मिथ्यार्थयोगेऽस्य गतिर्हि नित्या ।  
मिथ्यार्थयोगाभिहतान्तरात्रा अरन्नुपास्ते विषयान् समस्तां ॥ १० ॥ अभिध्या वै  
प्रथमं हन्ति लोकान् कामक्रोधावनुगृह्यांश्च पश्चात् । एते बालान् मृत्यवे  
प्रापयन्ति धीरास्तु धर्मेण तरन्ति मृत्युं ॥ ११ ॥ मोहोऽभिध्यायन्मुत्पतितान्निहन्या-  
दनादरेणाप्रतिबुध्यमानः । नैनं मृत्युर्मृत्युरिवात्ति भूत्वा एवं विद्वान् यो विनि-  
हन्ति कामान् ॥ १२ ॥ कामान्नुसारी पुरुषः कामान्नु विनश्यति । कामान् व्यदस्य  
धुनुते यत् किञ्चित् पुरुषो रजः ॥ १३ ॥ तमोऽप्रकाशो भूतानां नरकोऽहं  
प्रदृश्यते । मुहस्तु इव धावन्ति गच्छन्तः श्वश्रवत् सुखम् ॥ १४ ॥ अमूचवृत्तेः पुरुष-  
स्यैह कुर्यात् किं वै मृत्युस्तर्ण इवास्य व्याघ्रः । अमन्यमानः क्लिष्ट किञ्चि-  
दन्यान्माधीयति निर्गुदन्निवास्य चायुः ॥ १५ ॥ सक्रोधलोभो मोहवान्तरात्रा स  
वै मृत्युस्तुच्छरीरे य एषः । एवं मृत्युं जायमानं विदित्वा ज्ञाने तिष्ठन्  
विभेतीह मृत्याः । विनश्यते विषये तस्य मृत्युर्मृत्योर्यथा विषयं प्राप्य  
मर्त्यः ॥ १६ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । यानेवाहुरिज्या साधुलोकान् द्विजातीनां  
पुण्यतमान् सनातनान् । तेषां परार्थं कथयन्तीह वेदा एतद्विद्वानोऽपैति  
कथं नु कर्म ॥ १७ ॥ सनत्सुजात उवाच । एवं हविद्वान्नुपयाति तत्र तथार्थ-  
जातं वदन्ति वेदाः । अनीह आयाति परं परात्रा प्रयाति मार्गेण निहत्य  
मार्गान् ॥ १८ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । कोऽसौ नियुञ्जे तमजं पुराणं स चेदि-  
दं सर्वमनुक्रमेण । किं वास्य कार्यमथ वा सुखं तन्मे विद्वन् ब्रुहि सर्वं  
यथावत् ॥ १९ ॥ सनत्सुजात उवाच । दोषो महानत्र विभेदयोगे हनादियो-

গেন ভবন্তি নিত্যাঃ । তথাস্য নাধিক্যমুপৈতি কিঞ্চিদনাদিযোগেন ভবন্তি  
 পুংসঃ ॥২০॥ য এতদ্বা ভগবান্ স নিত্যো বিকারযোগেন কুরোতি বিশ্বং । তথা চ  
 তচ্ছক্তিরিতি স্ম মন্যতে তথার্থযোগে চ ভবন্তি বেদাঃ ॥ ২১ ॥ ধৃতরাষ্ট্র উবাচ ।  
 যেহস্মিন্ ধর্ম্মাচরন্তীহ কেচিৎ তথা ধর্ম্মান্ কেচিদিহাচরন্তি । ধর্ম্মঃ পাপেন  
 প্রতিহন্যতে স্বিদুতাহো ধর্ম্মঃ প্রতিহন্তি পাপম্ ॥ ২২ ॥ সনৎসুজাত উবাচ ।  
 উভয়মেব তত্রোপযুজ্যতে ফলং ধর্ম্মস্যেবেতরস্য চ ॥ ২৩ ॥ তস্মিন্ স্থিতৌ বাপ্যু-  
 ভয়ং হি নিত্যং জ্ঞানেন বিদ্বান্ প্রতিহন্তি সিদ্ধং । তথানাথা পুণ্যমুপৈতি দেহী  
 তথাগতং পাপমুপৈতি সিদ্ধম্ ॥ ২৪ ॥ গত্ত্বোভয়ং কর্ম্মণী যুজ্যতেহস্থিরং শুভস্য  
 পাপস্য স চাপি কর্ম্মণা । ধর্ম্মেণ পাপং প্রণদতীহ বিদ্বান্ ধর্ম্মো বলীযানিতি তস্য  
 সিদ্ধিঃ ॥ ২৫ ॥ ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । যানিহাঙ্কঃ স্বস্য ধর্ম্মস্য লোকান্ দ্বিজাতীনাং  
 পুণ্যকৃতাং সনাতনান্ । তেষাং ক্রমান্ কথয় ততোহপি চান্যাম্নৈতদ্বিদ্বন্ বেদু-  
 মিচ্ছামি কর্ম্ম ॥ ২৬ ॥ সনৎসুজাত উবাচ । যেষাং ব্রতেহথ বিস্পর্কী বলে বল-  
 বতামিব । তে ব্রাহ্মণা ইতঃ প্রেত্য ব্রহ্মলোকপ্রকাশকাঃ ॥ ২৭ ॥ যেষাং ধর্ম্মে চ  
 বিস্পর্কী তেষাং তজ্জ্ঞানসাধনং । তে ব্রাহ্মণা ইতো মুক্তাঃ স্বর্গং যান্তি ত্রিপি-  
 ষ্টপং ॥ ২৮ ॥ তস্য সম্যক্ সমাচারমাহুর্বেদবিদো জনাঃ । নৈনং মন্যেত ভূযি-  
 ষ্ঠং বাহুমান্যন্তরং জনং ॥ ২৯ ॥ যত্র মন্যেত ভূযিষ্ঠং প্রাবৃষীব ভূণোলপম্ ।  
 অন্নং পানং ব্রাহ্মণস্য তজ্জীবনান্নসংজ্বরেৎ ॥ ৩০ ॥ যত্র কথয়মানস্য প্রযচ্ছত্য-  
 শিবং ভয়ম্ । অতিরিক্তমিবাকুর্ষন স শ্রেয়াম্নৈতরো জনঃ ॥ ৩১ ॥ যো বা কথয়-  
 মানস্য হ্যাত্মানং নান্নসংজ্বরেৎ । ব্রহ্মস্বং নোপভুঞ্জীত তদন্নং সম্মতং সতা-  
 ম ॥ ৩২ ॥ যথা স্বং বাস্তমশ্নাতি শ্বা বৈ নিত্যমভুতযে । এবস্তে বাস্তমশ্নন্তি স্ববীর্য-  
 স্যোপজীবনাৎ ॥ ৩৩ ॥ নিত্যমজ্ঞাতচর্য্যা মে ইতি মন্যেত ব্রাহ্মণঃ । জ্ঞাতী-  
 নাস্তু বসন্মাধ্যে তং বিদুব্রাহ্মণং বধাঃ ॥ ৩৪ ॥ কো হনন্তরমাত্মানং ব্রাহ্মণো  
 হন্তুমর্হতি । নির্লঙ্ঘমচলং শুদ্ধং সর্বদ্বৈতবিবজ্জিতম্ ॥ ৩৫ ॥ তস্মাক্ষি ক্ষত্রিয়-  
 স্যাপি ব্রহ্মাবসতি পশ্যতি ॥ ৩৬ ॥ যোহন্যথা সন্তমাত্মানমন্যথা প্রতিপদ্যতে ।  
 কিং তেন ন কৃতং পাপং চৌরেণাত্মাপহারিণা ॥ ৩৭ ॥ অশ্রান্তঃ স্যাৎসদনাদাতা  
 সম্মতো নিরুপদ্রবঃ । শিষ্টো'ন শিষ্টবৎ স স্যাদ্ভ্রাহ্মণো ব্রহ্মবিৎ কবিঃ ॥ ৩৮ ॥ অ-  
 নাঢ্যা মানুষ্যে বৃতে আঢ্যা দৈবে তথা ক্রতো । তে দুর্দ্ধর্ষা দুস্পৃকম্প্যাস্তান্ বিদ্যা-  
 দ্বন্ধনস্তনুম ॥ ৩৯ ॥ সর্বান্ স্বিষ্টকৃতো দেবান্ বিদ্যাৎ ইহ কশ্চন । ন সমানো  
 ব্রাহ্মণস্য তস্মিন্ প্রযততে স্বয়ম্ ॥ ৪০ ॥ যমপ্রযতমানস্তু মানযন্তি স মানিতঃ ।

न मान्यमानो मन्येत न मान्यमभिसंज्वरेत् ॥ ४१ ॥ लोकः स्वभाववृत्तिर्हि निमेषोन्मेषवत् सदा । विद्वांसो मानयन्तीह इति मन्येत मानितः ॥ ४२ ॥ अधर्म्मनिपुणा मृत्वा लोके मायाविशारदाः । न मान्यं मानयिष्यन्ति मान्यानामवमानिनः ॥ ४३ ॥ न वै मानंश्च मौनंश्च सहितौ वसतः सदा । अयं हि लोके मानस्य असौ मौनस्य तद्विदः ॥ ४४ ॥ श्रीः सुखस्यैह संवासः सा चापि परिपन्थिनी । ब्राह्मी सुदुर्लभा श्रीर्हि प्रज्जाहीनेन क्लिष्य ॥ ४५ ॥ द्वाराणि तस्यैह वदन्ति सन्तो बहूपकाराणि दुराधराणि । सत्यार्जवे ह्रीर्दमशौचविद्याः षण्णानमोहप्रतिबन्धकानि ॥ ४६ ॥

इत्युद्देश्योपनिषदि सनत्सुजातपर्वणि सनत्सुजातवाक्ये द्विचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ४२ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । कस्यैष मौनः कतरन्न मौनं प्रब्रुहि विद्वन्निह मौनभावम् । मौनेन विद्वान्मुत याति मौनं कथं मुने मौनमिहाचरन्ति ॥ १ ॥ सनत्सुजात उवाच । यतो न वेदा मनसा सहैममनुप्रविशन्ति ततोऽथ मौनम् । यत्रोत्थितो वेदशक्तस्तथायं स तन्मयत्वेन विभाति राजन् ॥ २ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । ऋचो यजूंषि यो वेद सामवेदश्च वेद यः । पापानि कुर्वन् पापेन लिप्यते किं न लिप्यते ॥ ३ ॥ सनत्सुजात उवाच । नैनं सामान्यतो वापि न यजूंष्यविचक्षणम् । त्रायन्ते कर्मणः पापान् ते निथ्या त्रवीम्यहम् ॥ ४ ॥ न छन्दांसि वजिनान्तरयन्ति मायाविनं मायया वर्तमानम् । नीडं शकुन्ता इव जातपक्वाश्छन्दांस्येनं प्रजहत्यन्तकाले ॥ ५ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । न चेद्देदा विना धर्म्मं त्रातुं शक्तां विचक्षणम् । अथ कस्मात् प्रलापोऽयं ब्राह्मणानां सनातनः ॥ ६ ॥ सनत्सुजात उवाच । तस्यैव नामादिविशेषकपैरिदं जगद्धाति महान्नुभाव । निर्दिश्य सम्यक् प्रवदन्ति वेदान्तद्विष्ववैकप्यमुदाहरन्ति ॥ ७ ॥ तदर्थमुक्तुस्तप एतदिज्या ताभ्यामसौ पुण्यमुपैति विद्वान् । पुण्येन पापं विनिहत्य पश्चात्संजायते ज्ञानविदीपितात्मा ॥ ८ ॥ ज्ञानेन चाज्ञानमुपैति विद्वानथान्यथा वर्गफलान्मुकाङ्क्षी । अस्मिन् कृतं तत् परिगृह्य सर्वं अमुत्र भुङ्क्ते पुनरेति मागम् ॥ ९ ॥ अस्मिन्लोके तपस्तपुः फलमन्यत्र दृश्यते । ब्राह्मणानामिमे लोकाधास्ते तपसि तिष्ठताम् ॥ १० ॥ धृतराष्ट्र उवाच । कथं समृद्धममृद्धं तपो भवति केवलम् । सनत्सुजात प्रब्रुहि यथा विद्याम तद्वयम् ॥ ११ ॥ सनत्सुजात

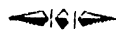
उवाच । निष्कलमषं तपस्त्रुतं केवलं परिचक्षते । एतं समृद्धमप्युद्धं तपो  
 भवति केवलम् ॥ १२ ॥ तपोमूलमिदं सर्वं यन्मां पृच्छसि कलिष । तपसा  
 वेदविद्यांसः परं ह्यमृतमाप्नुयुः ॥ १३ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । कलमषं तपसो ब्रुहि  
 श्रुतं निष्कलमषं तपः । सनत्सुजातं येनेदं विद्यां गुह्यं सनातनम् ॥ १४ ॥  
 सनत्सुजात उवाच । क्रोधादयो द्वादश यस्य दोषास्तथा नृशंसानि दशत्रि  
 राजन् । धर्मादयो द्वादश ते पितॄणां शास्त्रे गुणां ये विदिता द्विजानाम् ॥ १५ ॥  
 क्रोधकामो लोभमोहो विधिंसा रूपासृष्ये मानशोकौ स्पृहा च । ईर्ष्या जुषुसा  
 च मनुष्यादोषा बर्ज्याः सदा द्वादशैते नराणाम् ॥ १६ ॥ एकैकः पर्यपास्ते ह  
 मनुष्यान्मनुजर्षभ । लिप्समानोऽन्तरं तेषां मृगानामिव लुक्ककः ॥ १७ ॥ विक-  
 थनः स्पृहालर्मनश्चै विद्वं कोपक्षपलोहरक्षणश्च । एतान् पापाः वृषणाः पाप-  
 धर्मान् प्रकुर्वते नो त्रसन्तः सुदुर्गे ॥ १८ ॥ सन्तोषमथिद्विषमोऽतिमान् दन्ता-  
 न्नतापी रूपणो बलीयान् । वगप्रशंसौ वनितासु द्वेषा एते परे सप्त नृशंस-  
 वगाः ॥ १९ ॥ धर्मश्च सत्यं दमस्तपश्च अमांसर्ष्यं ह्रीस्तितिक्षानसृषा । यज्ञश्च  
 दानं धृतिः श्रुतं ब्रतानि वै द्वादश ब्राह्मणस्य ॥ २० ॥ यस्त्रुतेभ्यः प्रतवे-  
 द्वादशभ्यः सर्वामपीमां पृथिवीं स शिष्यात् । त्रिभिर्द्वाभ्यामेकतो वाग्नितो  
 मस्तस्य स्वमस्तीति स वेदितव्यः ॥ २१ ॥ दमस्त्यागोऽप्रमादश्च एतेषमृतमाहितम् ।  
 तानि सत्यमूखान्याहर्त्राङ्गणा ये मनीषिणः ॥ २२ ॥ दमो ह्यष्टादशगुणः प्रतिकूलं  
 कृतकृते । अनृतकाभ्यासृषा च कामाथो च तथा स्पृहा ॥ २३ ॥ क्रोधः शोक-  
 स्तथा तृष्ण लोभः पैशुन्यमेव च । मंसरश्च विहिंसा च परितपस्तथारतिः ॥ २४ ॥  
 अपश्चारश्चातिवादस्तथा सन्तावनाङ्गानि । एतैर्विमुक्तो दोषैर्यः स दान्तः सन्दि-  
 क्रुच्यते ॥ २५ ॥ मदोऽष्टादशदोषः स्यात् त्यागो भवति षड्विधः । विपर्ययाः  
 स्मृता ह्येते मददोषा उदाहृताः ॥ २६ ॥ श्रेयांस्तु षड्विधस्त्यागस्तृतीयो दुष्करो  
 र्भवेत् । तेन दुःखस्तुरन्त्येव भिन्नं तस्मिन् जितं कृते ॥ २७ ॥ श्रेयांस्तु षड्विध-  
 स्त्यागः श्रियं प्राप्य न ह्यस्यति । इष्टापूर्तं द्वितीयं स्यान्नित्यवैराग्ययो-  
 गतः ॥ २८ ॥ कामत्यागश्च राजेन्द्र स तृतीय इति स्मृतः । अप्यवाचां वदन्त्येनं  
 स तृतीयो गुणः स्मृतः ॥ २९ ॥ तयैकेर्द्रवैर्युद्धवति नोपयुक्तेश्च कामतः । न च  
 द्रव्यैस्तुद्धवति नोपयुक्तेश्च कामतः ॥ ३० ॥ न च कर्मसिद्धेषु दुःखं तेन च  
 न गपेत् । सर्वैरेव गुणैर्युक्तो द्रव्यवानपि यो भवेत् ॥ ३१ ॥ अप्रिये च  
 समुत्पन्ने व्यथां जातु न गच्छति । इष्टान् पुत्रांश्च दारांश्च न याचेत कदा-

चन ॥ ७२ ॥ अर्हते याचमानाय प्रदेयं तच्छूभं भवेत् । अप्रमादी भवेदेतैः  
 स चाप्यर्कगुणो भवेत् ॥ ७३ ॥ सत्यं ध्यानं समाधानं चोद्यं वैराग्यमेव च ।  
 अस्त्येयं ब्रह्मचर्यं तथा संग्रहमेव च ॥ ७४ ॥ एवं दोषा मदस्योक्तान् दोषान्  
 परिवर्जयेत् । तथा त्यागोऽप्रमादश्च स चाप्यर्कगुणो मतः ॥ ७५ ॥ अर्को  
 दोषाः प्रमादस्य तान् दोषान् परिवर्जयेत् । इन्द्रियेभ्यश्च पञ्चभ्यो मनसश्चैव  
 भारत । अतीतानागतेभ्यश्च मुक्त्यपेतः सुखी भवेत् ॥ ७६ ॥ सत्यात्मा भव  
 राजेन्द्र सत्ये लोकाः प्रतिष्ठिताः । तांस्तु सत्यमुखानाहः सत्ये हनृतनाहि-  
 तम् ॥ ७७ ॥ निवृत्तेनैव दोषेण तपोव्रतमिहाचरेत् । एतद्कातृकृतं वृत्तं  
 सत्यमेव सतां व्रतम् ॥ ७८ ॥ दोषैरेतैर्विमुक्तस्तु गुणैरेतैः समन्वितः ।  
 एतं सनृक्षमत्यथं तपो भवति केवलम् ॥ ७९ ॥ यन्मां पृच्छसि राजेन्द्र म-  
 क्षेपां प्रब्रवीमि ते । एतं पापहरं पुण्यं जन्मत्युजरापहम् ॥ ८० ॥ धृ-  
 राक्षु उवाच । आख्यानपञ्चनैरेतैर्भूयिष्ठं कथाते जनः । तथैवान्ये चतु-  
 र्वेदास्त्रिवेदाश्च तथापरे ॥ ८१ ॥ द्विवेदाश्चकवेदाश्चाप्यनृचश्च तथापरे ।  
 तेषान्त्र कतरः स म्यादवर्गहं वेद वै द्विजम् ॥ ८२ ॥ मनस्सुजात उवाच । एकस्य  
 वेदस्याज्ज्ञानाद्देदास्ते बहवः कृताः । सत्यस्यैकस्य राजेन्द्र सत्ये कश्चिदव-  
 स्थितः ॥ ८३ ॥ एवं वेदमविक्राय प्राञ्जोऽहमिति मन्यते । दानमध्यमं यज्ज्ञो  
 लोभादेतं प्रवर्तते ॥ ८४ ॥ सत्यां प्रच्यवमानानां सकलश्च तथा भवेत् ।  
 ततो यज्ज्ञः प्रतायेत सत्यस्यैवावधारणां ॥ ८५ ॥ मनसान्यस्य भवति वाचा-  
 न्यस्याथ कर्मणा । सकलसिद्धः पुरुषः सकलानधिपतिष्ठति ॥ ८६ ॥ अनैर्भृत्येन  
 वै तस्य दौक्षितव्रतमाचरेत् । नानैतद्कातुर्निवृत्तं सत्यमेव सतां परम् ॥ ८७ ॥  
 ज्ञानं वै नाम प्रत्यक्षं परोक्षं जायते तपः । विद्याद्वहृपठस्तु द्विजं वै  
 बहृपाठिनम् ॥ ८८ ॥ तस्मां क्लृष्य मामंश्वा जल्लितेनैव वै द्विजम् । ष एव  
 सत्यान्नापैति स ज्ञेयो ब्राह्मणस्तथा ॥ ८९ ॥ छन्दांसि नाम क्लृष्य तान्यथैवा पूर्वा  
 जर्गे मर्षिसंघ एषः । छन्दोविदस्ते ष उत नाधीतवेदा न वेदवेद्यस्य विदुर्हि-  
 तम् ॥ ९० ॥ छन्दांसि नाम द्विपदां वरिष्ठं स्वच्छन्दयोगेन भवन्ति तत्र । छन्दो-  
 विदस्तेन च तानधीत्य गता न वेदस्य न वेद्यनार्याः ॥ ९१ ॥ न वेदानां वेदिता  
 कश्चिदस्ति कश्चिद्वेतान् बध्यते चापि राजन् । यो वेद वेदान्न स वेद वेद्यां  
 सत्ये स्थितो यस्तु स वेद वेद्यम् ॥ ९२ ॥ न वेदानां वेदिता कश्चिदस्ति वेद्येन  
 वेदं न विदन्वेद्यम् । यो वेद वेद्यां स च वेद वेद्यां यो वेद वेद्यां न स वेद



सत्यम् ॥ ५३ ॥ यो वेद वेदान् स च वेद वेद्यं न तं विदुर्बेदविदो न वेदाः ।  
 तथापि वेदेन विदन्ति वेदं ये ब्राह्मणा वेदविदो भवन्ति ॥ ५४ ॥ 'धाम्नांश-  
 भागस्य तथा हि वेदा यथा च शाखा हि महीरूहस्य । सन्वेदने तैव यथा मनसि  
 तस्मिन् हि सत्ये परमात्मनोऽर्थे ॥ ५५ ॥ अभिजानामि ब्राह्मणं व्याख्यातारं वि-  
 क्रमम् । यश्छिन्नविचिकित्सः सन् व्याचक्षेत् सर्वसंशयान् ॥ ५६ ॥ नास्य पर्येषणं  
 गच्छेत् प्राचीनं नोत दक्षिणम् । नार्वाचीनं कुतस्तिर्यङ्गादिशस्तु कथञ्चन ॥ ५७ ॥  
 तस्य पर्येषणं गच्छेत् प्रत्यर्थिषु कथञ्चन । अविचिन्मिमं वेदे तपः पश्यति तं  
 प्रभुम् ॥ ५८ ॥ तूष्णींभूत उपसौत न चेष्टेन्नसापि च । उपावर्तस्य तद्वक्त्रं  
 अन्तरात्मानि विश्रुतम् ॥ ५९ ॥ मौनान्न स मुनिर्भवति नारण्यवसनान्मुनिः ।  
 यो वेद स मुनिः श्रेष्ठ उच्यते ॥ ६० ॥ सर्वार्थानां व्याकरणं द्वेष्याकरणं उच्यते ।  
 तन्मूलतो व्याकरणं व्याकरोतीति तन्नथा ॥ ६१ ॥ प्रत्यक्षदर्शी लोकानां  
 सर्वदर्शी भवेन्नरः । सत्ये वै ब्राह्मणसिद्धिं तद्विद्वान् सर्वविद्धवेत् ॥ ६२ ॥  
 धर्मा-  
 दिषु स्थितोऽप्येवं क्लिय ब्रह्म पश्यति । वेदेषु चानुपूर्व्येण एतद्वक्ष्या ब्रवी-  
 मि ते ॥ ६३ ॥

इत्युद्योगपर्वणि सनत्सुजातपर्वणि सनत्सुजातवाक्ये त्रिचत्वारिंश-  
 त्तमोऽध्यायः ॥ ४७ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । सनत्सुजात यामिमां परां ह्यं ब्राह्मीं वाचं वदसे विश्व-  
 रूपाम् । परां हि कामेन सुदुर्लभां कथां तद्ब्रूहि मे वाक्यमेतत् कुमार ॥ १ ॥  
 सनत्सुजात उवाच । नैतद्वक्त्रं ह्यरमाणेन लभ्यं यन्मां पृच्छन्ति ह्यस्यतीव ।  
 बुद्धौ विलीने मनसि प्रचिन्त्या विद्या हि सा ब्रह्मचर्येण लभ्या ॥ २ ॥  
 धृतराष्ट्र उवाच । अत्यन्तविद्यामिति यत् सनातनीं ब्रवीषि ह्यं ब्रह्मचर्येण सिद्धाम् ।  
 अनारभ्यां वसतीह कार्यकाले कथं ब्राह्मण्यममृतं लभेत ॥ ३ ॥  
 सनत्सुजात उवाच । अव्यक्तविद्यामतिधाम्ये पुराणीं बुद्ध्या तेषां ब्रह्मचर्येण  
 सिद्धाम् । यां प्राप्येयं नर्तलोकं त्यजन्ति या वै विद्या गुरुवृद्धेषु नित्या ॥ ४ ॥  
 धृतराष्ट्र उवाच । ब्रह्मचर्येण वा विद्या शक्या वेदितुमङ्गसा । तत् कथं ब्रह्मचर्यं  
 म्यादेतद्वक्त्रं ब्रवीहि मे ॥ ५ ॥ सनत्सुजात उवाच । आचार्ययोनिमिह ये  
 प्रविश्य भूत्वा गर्भे ब्रह्मचर्यं चरन्ति । इहैव ते शास्त्रकारा भवन्ति प्रहाय देहं  
 परमं यास्यन्ति योगम् ॥ ६ ॥ येऽस्मिंल्लोके वै जयन्तीह कामान् ब्राह्मीं स्थितिं

हनुति तिक्रमाणाः । त आत्मानमिह रंतीह देहान्मण्डादिषीकामिव सद्ब्रह्मसंस्थाः ॥ १ ॥  
 रशीरमेतौ कुरुतः पिता माता च भारत । आचार्यशास्त्रायां जातिः सा पुण्या  
 सा ज्ञानमया ॥ ८ ॥ यः प्राबृणोत्यवितथेन वर्णानृतं कुर्वन्नृतं संप्रयच्छन् । तं  
 वै मन्येत पितरं मातरं तस्मै न ऋहेः कृतमस्य जानन् ॥ ९ ॥ गुरुं  
 शिष्यो नित्यमभिवादीत स्वाध्यायमिच्छेच्छुचिरप्रमत्तः । मानसं कुर्यान्मादधीत रोष-  
 मेष प्रथमो ब्रह्मचर्यस्य पादः ॥ १० ॥ शिष्यवृत्तिक्रमेणैव विद्यामाप्नोति यः  
 शुचिः । ब्रह्मचर्यव्रतस्यास्य प्रथमः पाद उच्यते ॥ ११ ॥ आचार्यस्य प्रियं  
 कुर्यात् प्राणैरपि धनैरपि । कर्मणा मनसा वाचा द्वितीयः पाद उच्यते ॥ १२ ॥  
 समागुरो यथा वृत्तिर्गुरुपत्न्यां तथा चरेत् । तं पुत्रे च तथा कुर्वन् द्वितीयः  
 पाद उच्यते ॥ १३ ॥ आचार्येणात्कृतं विज्ञानं ज्ञात्वा चार्थं भावितोऽस्मी-  
 तानेन । यन्नन्यते तं प्रति ह्यस्तु बद्धिः स वै तृतीयो ब्रह्मचर्यस्य पादः ॥ १४ ॥  
 नाचार्यस्यानपाकृत्य प्रवासं प्राज्जः कुर्यात् नैतदहं करोमि । इतीव मन्येत  
 न भाषयेत् स वै चतुर्थो ब्रह्मचर्यस्य पादः ॥ १५ ॥ कालेन पादं लभते तर्थाथं  
 ततश्च पादं गुरुयोगतश्च । उऽसाहयोगेन च पादमृच्छेत् शास्त्रेण पादं  
 ततोऽभिधाति ॥ १६ ॥ धर्मादयो द्वादश यस्य कृपमन्यानि चाङ्गानि तथा  
 बलं । आचार्ययोगे फलतीति चाहर्ब्रह्मार्थयोगेन च ब्रह्मचर्यम् ॥ १७ ॥ एवं  
 प्रवृत्तो यदुपालभेत वै धनमाचार्याय तदनुप्रयच्छेत् । स तां वृत्तिं बहुगुणा-  
 मेवमेति गुरोः पुत्रे भवति च वृत्तिरेषा ॥ १८ ॥ एवं वसन् सर्वतो वर्कतीह  
 बहून् पुत्रान्भवेत् च प्रतिष्ठाम् । वर्षान्ति चास्मै प्रदिशेत् दिशश्च वसन्त्यास्मिन् ब्रह्म-  
 चर्ये जनाश्च ॥ १९ ॥ एतेन ब्रह्मचर्येण देवा देवत्वमाप्नुवन् । ऋषयश्च महा-  
 भागा ब्रह्मलोकं मनीषिणः ॥ २० ॥ गन्धर्वाणामनेनैव कृपमप्सरसामभूत् । एतेन  
 ब्रह्मचर्येण सूर्योऽप्यह्नाय जायते ॥ २१ ॥ आकाङ्क्षार्थस्य संयोगाद्रसभेदा-  
 र्थिनामिव । एवं ह्येतं समाज्जाय तदृग्धावंगता इमे ॥ २२ ॥ य आश्रयेत्  
 पञ्चव्येष्टापि राजन् सर्वं शरीरं तपसा तप्यमानः । एतेन वै बाल्यमभ्येति  
 विद्वान् मृत्युस्तथा स जयत्यनुकाले ॥ २३ ॥ अस्तु वृत्तः क्लिप्तं ते जयन्ति लोकान्  
 जनाः कर्मणा निर्मलेन । त्रैकैव विद्यांस्तु चार्थोति सर्वं नान्यं पश्चादव-  
 नाय विद्यते ॥ २४ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । आभाति शुक्लमिव लोहितमिवाथो  
 क्लृप्तमिवाङ्गनं काद्रवं वा । सद्ब्रह्मणः पश्याति योऽत्र विद्वान् कथं कृपं तदमृत-  
 मकरं पदम् ॥ २५ ॥ सनंस्त्रुजात उवाच । आभाति शुक्लमिव लोहितमिवा-

थो क्रुशमायसमर्कवर्णम् । न पथिव्यास्तिष्ठति नास्तुरीक्षे नैतत् समुद्रे मलिलं  
 विभर्ति ॥ २७ ॥ न तारकासु न च विद्युदाश्रितं न चाक्षेषु दृश्यते कर्णमस्य । न  
 चापि वायो न च देवतासु न तच्छ्रे दृश्यते नोत सूर्ये ॥ २९ ॥ नैवक्कु तम  
 यजूःसु नाप्यथर्वसु न दृश्यते वै विमलेषु सामसु । रथन्तरे बाह्रद्रेथे वापि राज-  
 न्महाव्रते नैव दृश्येद्भवस्तु ॥ २८ ॥ अपारणीयस्तमसः परस्तात्तदस्तकोहप्यति  
 विनाशकाले । अणीयो कपत् कुरधारया समत् महत् कपत् तद्वै पर्वतेभ्यः ॥ २९ ॥  
 सा प्रतिष्ठा तदमृतं लोकान्स्तद्वृक्ष तद्वृक्षः । भूतानि जङ्गिरे तस्मात् प्रलयं यास्ति  
 तत्र हि ॥ ३० ॥ अनामयं तन्महदुद्यतं यशो वाचो विकारं कवयो वदन्ति ।  
 यस्मिन् जगत् सर्वमिदं प्रतिष्ठितं ये तद्विदुरमृतान्ते भवन्ति ॥ ३१ ॥

इत्युद्योगपर्वणि सनत्सुजातपर्वणि सनत्सुजातवाक्ये चतुश्चत्वारिंश-

तमोऽध्यायः ॥ ८८ ॥



सनत्सुजात उवाच । शोकः क्रोधश्च लोभश्च कामो मोहः परासुता । ईर्ष्या  
 मानो विधिःसा च रूपामृषा ज्जुष्टिसिता । द्वादशैते महादोषा मनुष्याप्राना-  
 शनाः ॥ १ ॥ एकैकमेते राजेन्द्र मनुष्यान् पर्युपासते । यैराविष्टो नरः  
 पापं मुत्संश्लो व्यवस्यति ॥ २ ॥ स्पृह्यालुरुग्रः परुषो वदान्यः क्रोधं  
 विभ्रमनसा वै विकथी । नृशंसधर्माः षडिमे जना वै प्राप्याप्यर्थं नोत स-  
 ताजयन्ते ॥ ३ ॥ सन्तोषसन्निविषमोऽतिमानो दद्रा विकथी रूपणो दुर्बलश्च ।  
 बह्व्रशंसो वनिताद्विष्टसदैव सप्रेवोक्तः पापशीला नशंसः ॥ ४ ॥ धर्मश्च  
 सत्यं तपो दमश्च अमांसर्यं ह्रीस्तितिकानसूया । दानं श्रुतशैव धृतिः  
 क्रमा च महाव्रता द्वादश ब्राह्मणस्य ॥ ५ ॥ यो नैतेभ्यः प्रच्यवेद्द्वादशभ्यः सर्वा-  
 मपीमां पृथिवीं स शिष्यात् । त्रिभिर्द्वाभ्यामेकतो वार्थितो यो नास्य स्वमस्तीति  
 च वेदितव्यम् ॥ ६ ॥ दमस्त्यागोऽथाप्रमाद इत्येतेष्वमृतं स्थितम् । एतानि  
 ब्रह्मख्यानां ब्राह्मणानां मनीषिणाम् ॥ ७ ॥ सद्वासदा परीवादो ब्राह्मणस्य न  
 शस्यते । नरकप्रतिष्ठास्तसूर्येऽवन्तं कूर्बते जनाः ॥ ८ ॥ मदोऽहं दशदोषः  
 स्यात् पुरा योऽहं प्रकीर्तितः । लोकद्वेष्यं प्रातिकूल्यमभ्यसूया मृषा वचः ॥ ९ ॥  
 कामक्रोधो पारतन्त्र्यं परीवादोऽथ पैशुनम् । अर्थहानिर्बिवादश्च मांसर्यं  
 प्राणिपीडनम् ॥ १० ॥ ईर्ष्या मोहोऽतिवादश्च संज्ञानाशोऽभ्यसूयिता । तस्मात्  
 प्राञ्छे न माद्येत सदा हेतुद्विगर्हितम् ॥ ११ ॥ सौहार्दे वै षड्गुणा वेदितव्याः

प्रिये ह्यस्यप्रिये च व्यथन्ते । स्यादात्मनः सुहितं याचते यो ददात्ययाच्य-  
मपि देयं खलु स्यात् ॥ १२ ॥ ईशान् पुत्रान् विभवान् स्वांश्च दारान् व्यथितश्चा-  
इति शुद्धभावः । त्यक्तद्रव्यः संवसेन्नेह कामाद्भुङ्क्ते कर्म स्वाशयं बाधते  
च ॥ १३ ॥ द्रव्यवान् शुणवानेवं त्यागी भवति सात्त्विकः । पञ्च भूतानि पञ्चभ्यो  
निवर्तयति तादृशः ॥ १४ ॥ एतत् सङ्घमप्युद्धं तपो भवति केवलम् । सद्भावं  
प्रच्यवमानानां सकल्लेन समाहितम् ॥ १५ ॥ यतो यज्ज्ञाः प्रवर्द्धन्ते सत्यस्यैवा-  
वरोधनात् । मनसान्यस्य भवति वाचान्यस्याथ कर्मणा ॥ १६ ॥ सकल्लसिद्धं पुरुष-  
मसकल्लोद्धतिष्ठति । ब्राह्मणस्य विशेषेण किञ्चान्यदपि मे शृणु ॥ १७ ॥ अध्याप-  
येन्महदेतद्व्यशस्यं वाचो विकारान् कवयो वदन्ति । अस्मिन् योगे सर्वमिदं  
प्रतिष्ठितं ये तद्दिदुरमृतास्ते भवन्ति ॥ १८ ॥ न कर्मणा सूकृतेनैव राजन् सत्यं  
जयेज्जह्याद्वा यजेद्वा । नैतेन बालोऽमृत्युमभ्येति राजन्नुतिष्ठामो न लभ-  
त्यनुकाले ॥ १९ ॥ तूष्णीमेक उपासीत चेष्टेत मनसापि न । तथा संस्तुति-  
निन्दाभ्यां प्रीतिरौषो विवर्द्धयेत् ॥ २० ॥ अत्रैव तिष्ठन् क्लिप्तं ब्रह्माविशति  
पश्याति । वेदेषु चान्नुपूर्वेण एतद्दिद्वन् ब्रवीमि ते ॥ २१ ॥

इत्युद्देश्योपनिषदि सनञ्ज्जातपर्वणि सनञ्ज्जातवाक्ये पञ्चचत्वारिंश-

तमोऽध्यायः ॥ ४५ ॥



सनञ्ज्जात उवाच । यत्तच्छूक्रं महज्ज्योतिर्दीप्यमानं महद्व्यशः । तद्वै देवा  
उपासन्ते तस्मात् सूर्यो विराजते । योगिनस्तु प्रपश्यान्ति भगवन्तुं सनात-  
नम् ॥ १ ॥ शुक्रादृक् प्रभवति ब्रह्म शुक्लेण वर्द्धते । तच्छूक्रं ज्योतिषां मध्येऽ-  
तपुं तपति तापनम् । योगिनस्तु प्रपश्यान्ति भगवन्तुं सनातनम् ॥ २ ॥ अपो-  
ऽथ अद्भ्यः मलिलस्य मध्ये उभौ देवौ शिशिषातेऽन्नरीक्षे । अर्धप्रतः सवि-  
तुर्वै विवस्वान् उभौ विभर्ति पृथिवीं दिवम् । योगिनस्तु प्रपश्यान्ति भगवन्तुं  
सनातनम् ॥ ३ ॥ उभौ च देवौ पृथिवीं दिवम् दिशः शुक्रो भुवनं विभर्ति ।  
तस्माद्दिशः सरितश्च सुवन्ति तस्मात् समुद्रा विहिता महान्तः । योगिनस्तु प्रपश्यान्ति  
भगवन्तुं सनातनम् ॥ ४ ॥ चक्रे रथस्य तिष्ठन्तोऽधुवस्याव्ययकर्मणः । केतुनस्तु बह-  
न्त्याश्वासुं दिव्यमजरं दिवि । योगिनस्तु प्रपश्यान्ति भगवन्तुं सनातनम् ॥ ५ ॥ न  
सादृशेति तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्याति कश्चिदेनम् । मनौषयाथो मनसा हृदा  
च यएनं विदुरमृतास्ते भवन्ति । योगिनस्तु प्रपश्यान्ति भगवन्तुं सनातनम् ॥ ६ ॥

द्वादशपुगां सरितं पिवन्तो देवरक्षिताम् । मधीकस्तुश्च ते तस्याः सङ्गरन्तीह  
 योराम् । योगिनस्तुं प्रपश्यन्ति भगवन्तुं सनातनम् ॥ १ ॥ तदर्द्धमासं पिवति  
 सङ्गन्त्य ब्रमरो मधु । ईशानः सर्वभूतेषु हविर्भूतमकल्पयन् । योगिनस्तुं प्रपश्यन्ति  
 भगवन्तुं सनातनम् ॥ ८ ॥ हिरण्यपर्णमश्वत्थमतिपद्य ह्यपक्काः । ते तत्र पक्विणो  
 भृशं प्रपतन्ति यथादिशम् । योगिनस्तुं प्रपश्यन्ति भगवन्तुं सनातनम् ॥ १० ॥ पूर्णां  
 पूर्णान्त्यङ्करन्ति पूर्णां पूर्णानि चक्रिरे । हरन्ति पूर्णां पूर्णानि पूर्णमेवावशिष्यते ।  
 योगिनस्तुं प्रपश्यन्ति भगवन्तुं सनातनम् ॥ १० ॥ तस्माद्दे वायुरायातस्तस्मिंश्च  
 प्रयुतः सदा । तस्मादग्निश्चसोमश्च तस्मिंश्च प्राणं आततः ॥ ११ ॥ सर्वमेव ततो  
 विद्यात्तद्वत्तुं न शक्यम् । योगिनस्तुं प्रपश्यन्ति भगवन्तुं सनातनम् ॥ १२ ॥  
 अपानं गिरति प्राणः प्राणं गिरति चन्द्रमाः । आदित्ये गिरते चन्द्रमादित्यं  
 गिरते परः । योगिनस्तुं प्रपश्यन्ति भगवन्तुं सनातनम् ॥ १३ ॥ एकं पादं नो  
 क्षिपति मलिनाङ्गं स उच्चरन् । तक्षेत् सन्ततमुर्द्धाय न मृत्युर्नामृतं भवेत् । योगि-  
 नस्तुं प्रपश्यन्ति भगवन्तुं सनातनम् ॥ १४ ॥ अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषो हस्तुरात्मा लिङ्गस्य  
 योगेन संयाति नित्यम् । तमीशमीड्यमनुकल्पमाद्यं पश्यन्ति मूढा न विराज-  
 मानम् ॥ १५ ॥ असाधना वापि साधना वा समानमेतदृश्यते मान्नुषेषु । समान-  
 मेतदमृतस्येतरस्य मुक्तस्तत्र मधु उंसं समापुः । योगिनस्तुं प्रपश्यन्ति भगवन्तुं  
 सनातनम् ॥ १६ ॥ उभौ लोकौ विद्याया व्याप्य याति तदा हतष्णाहतमग्निहोत्रम् ।  
 ना ते ब्राह्मी लघूतामादधीत प्रज्जानं स्यान्नाम धीरा लभन्ते । योगिनस्तुं प्रप-  
 श्यन्ति भगवन्तुं सनातनम् ॥ १७ ॥ एवं देवो महान्ना स पावकं पुरुषो गिरन् ।  
 यो वै तं पुरुषं वेद तस्येहार्थो न रिष्यते । योगिनस्तुं प्रपश्यन्ति भगवन्तुं  
 सनातनम् ॥ १८ ॥ यः सहस्रं सहस्राणां पक्वान् सन्तत्य संपतेत् । मध्ये मध्य  
 आगच्छेदपि चेत् स्यान्ननोजवः । योगिनस्तुं प्रपश्यन्ति भगवन्तुं सनातनम् ॥ १९ ॥  
 न दर्शने तिष्ठति कपमस्य पश्यन्ति टैनं सुविशुद्धसद्वाः । हितो मनीषी मनसा न  
 तप्यते ये प्रब्रजेयुरमृतास्ते भवन्ति । योगिनस्तुं प्रपश्यन्ति भगवन्तुं सना-  
 तनम् ॥ २० ॥ गृह्णन्ति सर्पा इव गह्वराणि स्वशिक्षया स्वैर्न वृत्तेन मर्त्याः । तेषु  
 प्रमुहन्ति जना विमूढा यथाधामं मोहयन्ते भवाय । योगिनस्तुं प्रपश्यन्ति भग-  
 वन्तुं सनातनम् ॥ २१ ॥ नाहं सदाहं सत्कृतः स्यान्नमृत्युर्न चामृत्युरमृतं मे कुतः  
 स्यात् । सत्यान्ते सत्यसमानवक्त्रे सतश्च यो निरसतश्चैक एव । योगिनस्तुं  
 प्रपश्यन्ति भगवन्तुं सनातनम् ॥ २२ ॥ न साधुना नोत् असाधुना वा समानमेतदृ-

शयते मानुषेषु । समानमेतदमृतस्य विद्यादेवं युक्ते मधु तद्वै परीप्सेत् ।  
 योगिनस्तु प्रपश्यन्ति भगवन्तु सनातनम् ॥ २३ ॥ नास्यातिवादा ह्यदयं ताप-  
 यन्ति नानधीतं नाहृतमग्निहोत्रम् । मनो ब्राह्मीं लघतामादधीत प्रज्जाष्ठांस्म  
 नाम धीरा लभन्ते । योगिनस्तु प्रपश्यन्ति भगवन्तु सनातनम् ॥ २४ ॥ एवं षः  
 सर्वभूतेषु आत्मानमनुपश्यति । अन्यत्रान्यत्र युक्तेषु किं स शोचेत्ततः परम् ॥ २५ ॥  
 यथोदपाने महति सर्वतः संप्लुतोदके । एवं सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजा-  
 नतः ॥ २६ ॥ अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषो महात्मा न दृश्यतेऽसौ हृदि सन्निविष्टः । अज-  
 श्चरो दिवारात्रमत्रितः स तं मत्वा कविरास्ते प्रसन्नः ॥ २७ ॥ अहमेव स्मृतो  
 माता पिता पुल्लोहम्याहं पुनः । आत्माहमपि सर्वस्य यच्च नास्ति यदस्ति च ॥ २८ ॥  
 पितामहोऽस्मि स्वविरः पिता पुल्लश्च भारत । ममैव यूयमात्मा न मे यूयं न  
 वो ह्यहम् ॥ २९ ॥ आत्मेव स्थानं मम जन्म चात्मा । ओतप्रोतोऽहमजरप्रतिष्ठः ।  
 अजश्चरो दिवारात्रमत्रितोऽहं मां विज्जाय कविरास्ते प्रसन्नः ॥ ३० ॥ अणो-  
 रणीयान् सूमनाः सर्वभूतेषु जाग्रति । पितरं सर्वभूतेषु पुष्करे निहितं विदुः ॥ ३१ ॥

इत्युद्घोषपरिणि सनत्सुजातपरिणि सनत्सुजातवाक्ये षट्चत्वारिंश-

तुमोऽध्यायः ॥ ४७ ॥ समाप्तं सनत्सुजातपरि ॥



अथ यानसङ्घिपरि ।

वैशम्पायन उवाच । एवं सनत्सुजातेन विदुरेण च धीमता । सार्द्धं कथ-  
 यते राज्ञः सा व्यतीयाय शर्वरी ॥ १ ॥ तस्यां रजन्यां व्युष्ठायां राजानः  
 सर्व एव ते । सतामाविविशुर्हृष्टाः सूतस्योपदिदृक्षवा ॥ २ ॥ शुश्रूषमाणाः पार्थानां  
 वचो धर्मार्थसंहितम् । धृतराष्ट्रमुखाः सर्वे ययु राजसभां शुभाम् ॥ ३ ॥ सुधा-  
 वदातां विस्तीर्णां कनकाजिरडूषणाम् । चन्द्रप्रभां सूरुचिरां सिक्तां चन्दन-  
 वारिणा ॥ ४ ॥ रूचिरैर्रासनेस्तीर्णां काष्ठीनैर्दारवैरपि । अश्विनारमथैर्दातेभ्यः  
 स्वास्तीर्णैः सोत्तरच्छदैः ॥ ५ ॥ भौमो द्रोणः रूपः शल्यः कृतवर्मा जयद्रथः ।  
 अश्वथामा विकर्णश्च सोमदुश्च बाह्लिकः ॥ ६ ॥ विदुरश्च महाप्राज्ञो युयुत्-  
 सुश्च महारथः । सर्वे च सहिताः शूराः पार्थिवा भरतर्षभ । धृतराष्ट्रं पुरस्कृत्य  
 विविशुस्तां सतां शुभाम् ॥ ७ ॥ दुःशासनश्चित्रसेनः शकुनिश्चापि सौबलः ।  
 दुर्मुखो दुःसहः कर्ण उलूक्येऽथ विविंशतिः ॥ ८ ॥ कुरुराजं पुरस्कृत्य दुर्यो-  
 धनमगर्षणम् । विविशुस्तां सतां राजन्सूराः शक्रसदो यथा ॥ ९ ॥ आविशन्ति-

স্তদা রাজন্ শূরৈঃ পরিষবাহুভিঃ । শুশুভে সা সভা রাজন্ সিংহৈরিব গিরে-  
 গুহা ॥ ১০ ॥ তে প্রবিশ্য মহেষ্ণাসাঃ সভাং সৰ্বে মহৌজসঃ । আসনানি বিচি-  
 ত্রাণি ভেজিরে সূর্য্যবচ্চসঃ ॥ ১১ ॥ আসনস্থেষু সৰ্বেষু তেষু রাজসু ভারত ।  
 দ্বাঃস্থো নিবেদযামাস সূতপুল্লমুপস্থিতম্ ॥ ১২ ॥ অষং সরথ আঘাতি যোহঘাসীৎ  
 পাণ্ডবান্ প্রতি । দূতো নস্তূর্ণমাঘাতঃ সৈন্ধবৈঃ সাধুবাহিভিঃ ॥ ১৩ ॥ উপেষাষ  
 তু সন্ধিপ্রং রথাং প্রস্কন্দ্য কুণ্ডলী । প্রবিবেশ সভাং পূর্ণাং মহীপালৈর্নহা-  
 ত্ৰ্যভিঃ ॥ ১৪ ॥ সঞ্জয় উবাচ । প্রাপ্তোহস্মি পাণ্ডবান্ গত্বা তদ্বিজানীত কৌরবাঃ ।  
 যথাবযঃ কুরুন্ সৰ্বান্ প্রতিনন্দন্তি পাণ্ডবাঃ ॥ ১৫ ॥ অভিবাদযান্তি বৃদ্ধাংশ্চ  
 বযস্যংশ্চ বযস্যবৎ । যুনশ্চাত্যবদন্ পার্থাঃ প্রতিপূজ্য যথাবযঃ ॥ ১৬ ॥ যথাহং  
 ধতরাষ্ট্রেণ শিষ্ঠঃ পূৰ্বমিতো গতঃ । অক্রবং পাণ্ডবান্ গত্বা তন্নিবোধত  
 পার্থিবাঃ ॥ ১৭ ॥

ইত্যুদ্যোগপৰ্বণি যানসন্ধিপৰ্বণি সঞ্জয়প্রত্যাগমনে সপ্তচত্বারিংশ-  
 ভ্রমোহধ্যায়ঃ ॥ ৪৭ ॥



ধতরাষ্ট্র উবাচ । পৃচ্ছামি ত্বাং সঞ্জয় রাজমধ্যে কিমব্রবীদ্বাক্যমদীনসত্ত্বঃ । ধন-  
 স্ত্যস্তাত যুধাং প্রণেতা দুরাত্মনাং জীবিতচ্ছিন্নহাত্মা ॥ ১ ॥ সঞ্জয় উবাচ । দুৰ্য্যো-  
 ধনো বাচমিমাং শৃণোতু যদব্রবীদজ্জুনো যোৎস্যমানঃ । যুধিষ্ঠিরস্যানুমতে মহাত্মা  
 ধনস্ত্যঃ শব্দতঃ কেশবস্য ॥ ২ ॥ অন্তস্তো বাহুবীৰ্য্যং বিদান উপহস্বরে বাসুদে-  
 বস্য ধীরঃ । অবোচন্মাং যোৎস্যমানঃ কিরীটী মধ্যে ব্রুযা ধার্তরাষ্ট্রং কুরুণাম্ ॥ ৩ ॥  
 সংশব্দতস্তস্য দুভাষিণো বৈ দুরাত্মনঃ সূতপুল্লস্য সূত । যো যোদ্ধমাশংসতি মাং  
 সদৈব মন্দপ্রজ্ঞঃ কালপক্কাহতিমূঢ়ঃ ॥ ৪ ॥ যে বৈ রাজানঃ পাণ্ডবাষোধনায়  
 সমানীতাঃ শব্দতাঞ্চাপি তেষাম্ । যথা সমগ্রং বচনং মযোক্তং সহামাত্যং  
 শ্রাবেষথা নৃপং তৎ ॥ ৫ ॥ যথা নুনং দেবরাজস্য দেবাঃ শুক্রযন্তে বজ্জহস্তস্য  
 সৰ্বে । তথাশব্দন্ পাণ্ডবাঃ সৃঞ্জয়াশ্চ কিরীটিনা বাচমুক্তাং সমর্থাম্ ॥ ৬ ॥ ইত্য-  
 ব্রবীদজ্জুনো যোৎস্যমানো গাণ্ডীবধন্বা লোহিতপদ্মনেত্রঃ । ন চেদ্রাজ্যং মুঞ্চতি  
 ধার্তরাষ্ট্রো যুধিষ্ঠিরস্যাজমীচস্য রাজ্ঞঃ ॥ ৭ ॥ অস্তি নুনং কৰ্ম্ম কৃতং পুরস্তাদনি-  
 বিষ্টং পাপকং ধার্তরাষ্ট্রৈঃ । যেষাং যুদ্ধং ভীমসেনাজ্জুনাভ্যাং তথাশ্বিত্রীং  
 বাসুদেবেন চৈব ॥ ৮ ॥ শৈনেয়েন ধুবমাত্ৰায়ুধেন ধৃষ্টদ্যুম্নেনাথ শিখণ্ডিনা চ ।  
 যুধিষ্ঠিরেনৈশ্চক্ৰেন চৈব যোহপধ্যানান্নির্দহেদ্যাং দিবঞ্চ ॥ ৯ ॥ তৈশ্চৈকদ্বৈ

मन्यते धार्तराष्ट्रो निवृत्तोऽर्थः सकलः पाण्डवानाम् । मा त७ कार्षीः पाण्डवस्यार्थ-  
हेतोर्ऋषेहि युद्धं यदि मन्यसे ह्वम् ॥ १० ॥ यां तां वने दुःखशय्यामवात्सीत्  
प्रब्राजितः पाण्डवो धर्मचारी । प्राप्नोतु तां दुःखतरामनर्थामस्त्यां शय्यां धार्त-  
राष्ट्रः परासुः ॥ ११ ॥ हिया ज्ञानेन तपसा दमेन शौर्येणाथो धर्मगुप्त्या  
बलेन । अन्यायवृत्तिः कुरूपाण्डवेयानधमातिष्ठन् धार्तराष्ट्रो दुरात्मा ॥ १२ ॥ मायो-  
पधः प्रणिपाताङ्गवाभ्यां तपोदमाभ्यां धर्मगुप्त्या बलेन । सत्यं कृवन् प्रति-  
पन्नो नपो नस्ति विक्रमागः किश्यमानोऽतिबेलम् ॥ १३ ॥ यदा ज्येष्ठः पाण्डवः  
संशितात्मा क्रोधं यत्नं बर्षपुगान् सुयोरम् । अवसुक्ता कुरूवृद्धचेतास्तदा युद्धं  
धार्तराष्ट्रोऽह्वतप्यत् ॥ १४ ॥ कृष्णवत्सेव ज्वलितः समिक्षो यथा दहेत् कर्म-  
ग्निनिदाये । एवं दक्षा धार्तराष्ट्रस्य सेनां युधिष्ठिरः क्रोधदीप्तोऽह्ववेक्ष्य ॥ १५ ॥  
यदा द्रुपः भीमसेनं रथसुं गदाहस्तं क्रोधविषं वमन्तम् । दुर्मर्षणं पाण्डवं  
भीमवेगं तदा युद्धं धार्तराष्ट्रोऽह्वतप्यत् ॥ १६ ॥ सेनाग्रगं दंशितं भीम-  
सेनं स्वालङ्क्यं वीरहणं परेषाम् । मन्त्रमूमन्त्रकर्मनिकाशं तदा स्मर्त्वा वचनस्या-  
भिमानि ॥ १७ ॥ यदा द्रुपः भीमसेनेन नागान्निपातितान् गिरिकूटप्रकाशान् । कुन्ति-  
रिवामृक् वमतो भिमकुन्तास्तदा युद्धं धार्तराष्ट्रोऽह्वतप्यत् ॥ १८ ॥ महासिंहो  
गाव इव प्रविश्या गदापाणिर्धार्तराष्ट्रान्पेत्य । यदा भीमो भीमकपो निहन्ता  
तदा युद्धं धार्तराष्ट्रोऽह्वतप्यत् ॥ १९ ॥ महाभये वीतभवः कृतास्रः समागमे शत्रु-  
बलावमर्दी । सकृद्रथेनाप्रतिमान्नुथोयान् पदातिसंघान् गदवाभिनिघ्नन् ॥ २० ॥  
शैकेयन नागांस्तुरसावमृदन् यदा क्षेप्रा धार्तराष्ट्रस्य सैन्यम् । छिन्दन् वनं परशु-  
नेव शूरस्तदा युद्धं धार्तराष्ट्रोऽह्वतप्यत् ॥ २१ ॥ तृणप्रायं ज्वलनेनेव दक्षं  
ग्रामं यथा धार्तराष्ट्रान् समीक्ष्य । पक्वं शस्यं वैद्यतेनेव दक्षं परासिक्तं  
विपुलं स्वं बलोद्यम् ॥ २२ ॥ हतप्रवीरं विमुखं भयार्तं पराङ्मुखं प्राय-  
शोऽधृष्टयोधम् । शस्त्रार्चिषा भीमसेनेन दक्षं तदा युद्धं धार्तराष्ट्रोऽह्वत-  
प्यत् ॥ २३ ॥ उपासङ्गानाचरन् दक्षिणेन परं शतान्नकुलं चित्रयोधौ । यदा  
रथाग्रेया रथिनः प्रचेता तदा युद्धं धार्तराष्ट्रोऽह्वतप्यत् ॥ २४ ॥ सुथोचितो  
दुःखशय्यां वनेषु दीर्घकालं नकुलो यामशेत । आशीविषः क्रुद्ध इवोद्यमन्  
विषं तदा युद्धं धार्तराष्ट्रोऽह्वतप्यत् ॥ २५ ॥ त्यक्त्वात्मानः पार्थिवायोधनाय  
समादिष्टा धर्मराजेन सूतः । रथेः शुभैः सैन्यमभिद्रवन्तो दृष्ट्वा पश्चात्प्यते  
धार्तराष्ट्रः ॥ २६ ॥ शिशून् कृतान्निशिशुप्रकाशान् यदा द्रुपः कौरवः पञ्च शूरान् ।



ত্যক্ত্বা প্রাণান্ কৌরবানাদ্রবন্তস্তদা যুদ্ধং ধার্তরাষ্ট্রৌহন্বতস্যৎ ॥ ২৭ ॥ যদা  
 গতৌদ্বাহমকুজনাঙ্কং সুবর্ণতারং রথমাততায়ী । দাষ্টৈর্যুক্তং সহদেবৌহধি-  
 কটঃ শিরাংসি রাজ্ঞাং ক্ষেপ্যতে মার্গণৌঘৈঃ ॥ ২৮ ॥ মহাভয়ে সংপ্রবৃত্তে রথস্থং  
 বিবর্তমানং সগরে কৃতাস্ত্রম্ । সর্বা দিশঃ সম্পতন্তং সমীক্ষ্য তদা যুদ্ধং ধার্তরাষ্ট্রৌ-  
 হন্বতস্যৎ ॥ ২৯ ॥ হ্রীনিষেবো নিপুণঃ সত্যবাদী মহাবলঃ সর্বধর্মোপপন্নঃ ।  
 গাঙ্গারিমচ্ছ্বেস্তমূলে ক্ষিপ্রকারী ক্ষেপ্তা জনান্ সহদেবস্তরস্বী ॥ ৩০ ॥ যদা দ্রষ্টা  
 দ্রৌপদেষান্মহেশ্বনু শূরান্ কৃতাস্ত্রানুথযুদ্ধকোবিদান্ । আশীবিষান্ ঘোরবিষানিবা-  
 যতশ্চদা যুদ্ধং ধার্তরাষ্ট্রৌহন্বতস্যৎ ॥ ৩১ ॥ যদাভিমমু্যঃ পরবীরঘাতী শরৈঃ  
 পরাম্বেষ ইবাভিবর্ষন । বিগাহিতা কৃষ্ণসমঃ কৃতাস্ত্রস্তদা যুদ্ধং ধার্তরাষ্ট্রৌহন্বত-  
 স্যৎ ॥ ৩২ ॥ যদা দ্রষ্টা বালমবালবীর্যং দ্বিষচ্চমুঃ মৃত্যুমিবা পতন্তম্ । সৌভ-  
 দ্রমিস্ত্রপ্রতিমং কৃতাস্ত্রং তদা যুদ্ধং ধার্তরাষ্ট্রৌহন্বতস্যৎ ॥ ৩৩ ॥ প্রভদ্রকাঃ শীঘ্ৰ-  
 তরা যুবানো বিশারদাঃ সিংহসমানবীর্য্যাঃ । যদা ক্ষেপ্তারো ধার্তরাষ্ট্রান্ সসৈন্যাং-  
 স্তদা যুদ্ধং ধার্তরাষ্ট্রৌহন্বতস্যৎ ॥ ৩৪ ॥ বৃদ্ধৌ বিরাটদ্রুপদৌ মহারথৌ পৃথক্-  
 চমৃত্যামভিবর্তমানৌ । যদা দ্রষ্টারো ধার্তরাষ্ট্রাঃ সসৈন্যাস্তদা যুদ্ধং ধার্তরাষ্ট্রৌহ-  
 ন্বতস্যৎ ॥ ৩৫ ॥ যদা কৃতাস্ত্রো দ্রুপদঃ প্রচিষন্ শিরাংসি যুনাং সগরে রথস্থঃ । ক্রুদ্ধঃ  
 শরৈশ্ছেৎস্যতি চাপমুন্ডৈস্তদা যুদ্ধং ধার্তরাষ্ট্রৌহন্বতস্যৎ ॥ ৩৬ ॥ যদা বিরাটঃ পর-  
 বীরঘাতী মদন্তরে শত্রুচমুং প্রবেষ্ট । মৎস্যৈঃ সার্কিমনুশংসকটৈপস্তদা যুদ্ধং ধার্ত-  
 রাষ্ট্রৌহন্বতস্যৎ ॥ ৩৭ ॥ জ্যেষ্ঠং নাৎস্যানুশংসার্য্যকপং বিরাটপুত্রং রথিনং  
 পুরস্তাৎ । যদা দ্রষ্টা দংশিতং পাণ্ডবার্থে তদা যুদ্ধং ধার্তরাষ্ট্রৌহন্বতস্যৎ ॥ ৩৮ ॥  
 রণে হতে কৌরবাণাং প্রবীরে শিখণ্ডিনা সন্তমে শান্তনুজে । ন জাতু নঃ শত্রবো  
 ধারষেয়ুরসংশয়ং সত্যমেতদ্বুবীমি ॥ ৩৯ ॥ যদা শিখণ্ডী রথিনঃ প্রচিষন্ ভীষ্মং  
 রথেনাভিঘাতা বকথী । দিব্যৈর্হৈবৈরবমৃদুনাথোঘাংস্তদা যুদ্ধং ধার্তরাষ্ট্রৌহন্বত-  
 স্যৎ ॥ ৪০ ॥ যদা দ্রষ্টা সৃঞ্জয়ানামনীকে ধষ্টদ্যম্নং প্রমুখে রোচমানম । অস্ত্রং  
 যস্মৈ গুহমুবাচ ধীমান্ দ্রোণস্তদা তস্যতি ধার্তরাষ্ট্রঃ ॥ ৪১ ॥ যদা স সেনাপতির-  
 প্রমেযঃ পরামৃদুমিষুভির্ধার্তরাষ্ট্রান্ । দ্রোণং রণে শত্রুসহোহভিঘাতা তদা যুদ্ধং  
 ধার্তরাষ্ট্রৌহন্বতস্যৎ ॥ ৪২ ॥ হ্রীমান্মনীষী বলবান্ মনস্বী স লক্ষীবান্ সোম-  
 কানাং প্রবর্হঃ । ন জাতু তং শত্রবোহন্যে সহেরন্থ ঘেষাং স স্যাদগ্রনীবৃষ্টি-  
 সিংহঃ ॥ ৪৩ ॥ ইদম্ব বৃথা মা বৃণীষেতি লোকে যুদ্ধে দ্বিতীয়ং সচিবং রথস্থম্ ।  
 শিনেনপ্তারং প্রবৃণীম সাত্যকিং মহাবলং বীতভয়ং কৃতাস্ত্রম্ ॥ ৪৪ ॥ মহোরক্ষো

दीर्घबाहूः प्रमाथी युद्धेऽद्वितीयः परमास्त्रवेदी । शिनेनष्टा तालमात्रायुधोऽस्य  
 महारथो वीतभयः क्रुतास्त्रः ॥ ४५ ॥ यदा शिनीनामधिपो मयोक्तः शरैः परास्त्रेण  
 इव प्रवर्षन् । प्रच्छादयिष्यत्यरिहा योधमुख्यांस्तदा युद्धं धार्तराष्ट्रोऽश्वत-  
 स्यात् ॥ ४६ ॥ यदा धृतिं कुरुते योऽस्यमानः स दीर्घबाहूर्दृष्टश्च महात्मा ।  
 सिंहस्यैव गङ्गमाश्राय गावः संवेष्टेत्से शत्रुबोऽस्त्राद्रणात् ॥ ४७ ॥ स दीर्घबाहूर्दृ-  
 ष्टश्च महात्मा तिन्यादिगरीन् संहरेत् सर्वलोकान् । अस्त्रे क्रुती निपुणः क्षिप्रहस्ते  
 दिवि स्थितः सूर्य इवावभाति ॥ ४८ ॥ चित्रः सूत्रः सूत्रदो यादवस्य अस्त्रे योगो  
 वृषिसिंहस्य भूषान् । यथाविधं योगमाहः प्रशस्तं सर्वैर्गुणैः सात्यकिस्तैरु-  
 पेतः ॥ ४९ ॥ हिरण्यं श्वेतहयैश्चतुर्भिर्षदा युद्धं सान्दनं माधवस्य । द्रुप-  
 युद्धे सात्यकेर्धातृराष्ट्रस्तदा तप्यत्यक्रुतास्त्रा स मन्दः ॥ ५० ॥ यदा रथं हेममणि-  
 प्रकाशं श्वेताश्वयुक्तं वानरकेतुमुग्रम् । द्रुप मयाप्याश्रितं केशवेन तदा  
 तप्यत्यक्रुतास्त्रा स मन्दः ॥ ५१ ॥ यदा मौर्यास्तलनिष्पेषमुग्रं महाशक्तं वज्रनि-  
 ष्पेषतुल्यम् । विधूयमानस्य महारणे मया स गाण्डीवस्य शोष्यति मन्दबुद्धिः ॥ ५२ ॥  
 तदा मूढो धृतराष्ट्रस्य पुत्रस्तुष्टा युद्धे दुर्मतिदुःसहायः । द्रुप सैन्यं बाणवर्षाङ्क-  
 कारे प्रभङ्ग्यस्तं गोकुलवज्रणात् ॥ ५३ ॥ बलाहकादुच्चरतः सुतीमान् विद्यु-  
 स्फुलिङ्गानिव घोररूपान् । सहस्रघ्नान् द्विषतां सङ्घरेषु अस्त्रिच्छिदो मर्मभिदः  
 सुपुञ्जान् ॥ ५४ ॥ यदा द्रुप ज्यामुखाद्वाणसंघान् गाण्डीवमुक्तानापततः शिता-  
 ग्रान् । गजान् हयान् वस्त्रिणश्चाददानांस्तदा युद्धं धार्तराष्ट्रोऽश्वतस्य ॥ ५५ ॥  
 यदा मन्दः परवाणान् विमुक्तान् ममेवुभिर्हि यमाणान् प्रतीपम् । तिर्यग्निधुः क्षिद्य-  
 मानान् पृथक्कैस्तदा युद्धं धार्तराष्ट्रोऽश्वतस्य ॥ ५६ ॥ यदा विपाठा मञ्जु-  
 विप्रमुक्ता द्विजाः फलानीव महीरुहाः । प्रचेतार उक्तमाङ्गानि यूनां तदा युद्धं  
 धार्तराष्ट्रोऽश्वतस्य ॥ ५७ ॥ यदा द्रुप पततः सान्दनेत्थो महागजेत्थोऽश्व-  
 गतान् सुयोधान् । शरैर्हतान् पातितान्श्चैव रङ्गे तदा युद्धं धार्तराष्ट्रोऽश्वत-  
 स्यात् ॥ ५८ ॥ असम्प्राप्तानस्त्रपथं परस्य यदा द्रुप नश्यतो धार्तराष्ट्रान् ।  
 अकुर्वतः कर्म युद्धे समस्तास्तदा युद्धं धार्तराष्ट्रोऽश्वतस्य ॥ ५९ ॥ पदाति-  
 संघान्पृथक्संघान् समस्ताद्यत्त्राननः काल इवाततेषुः । प्रणोऽस्यामि झलितैर्बाण-  
 वर्षैः शत्रूस्तदा तप्यति मन्दबुद्धिः ॥ ६० ॥ सर्वा दिशः सम्पतता रथेन रजोधस्तं  
 गाण्डिवेनापकृतम् । यदा द्रुप स्वबलं संप्रमूढस्तदा पश्चात्तप्यति मन्दबुद्धिः ॥ ६१ ॥  
 कान्दिगुतं हिमगात्रं विसंज्ञं दुर्योधनो द्रुप्यति सर्वसैन्यम् । इताश्वरी-

रात्र्यनरेन्द्रनागं पिपासितं श्रासुपत्रं त्र्यर्तुम् ॥ ७२ ॥ आर्तस्वरं हन्य-  
 मानं हतं विकीर्णकेशाङ्घ्रिकपालसंघम् । प्रजापतेः कर्म यथार्कनिष्ठितं तदा  
 दृष्ट्वा तपस्यति मन्दचेताः ॥ ७३ ॥ यदा रथे गाण्डिवः वासुदेवः दिव्यं शङ्खं  
 पाण्डजन्यं ह्यात्स । तुणावकथ्यो देवदत्तः माण्ड्रक्या युद्धे धार्तराष्ट्रो हस्त-  
 पत्यः ॥ ७४ ॥ उद्धर्तयन् दस्युसंघान् समेतान् प्रवर्तयन् युगमन्याद्गुणांस्तु । यदा  
 धन्याम्यग्निवत् कौरवेयांस्तदा तप्रा धार्तराष्टुः सपुत्रः ॥ ७५ ॥ सभ्राता वै सहसैन्यः  
 सभृत्यो अर्कैश्वर्याः क्रोधवशो हस्तचेताः । दर्पस्यांस्तु विहतो वेपमानः पश्चा-  
 न्नन्दस्तपस्यति धार्तराष्टुः ॥ ७६ ॥ पूर्वाह्ने मां कृतजप्यं कदाचिद्विप्रः प्रोवा-  
 चोदकांस्तु मनोज्ञम् । कर्तव्यं ते दुष्करं कर्म पार्थ योद्धव्यं ते शत्रुभिः  
 सव्यासिन् ॥ ७७ ॥ इन्द्रो वा ते हरिमान् वज्रहस्तः पुरस्तादात्तु समरे हरिन्  
 विनिम्नः । सुग्रीवयुक्तेन रथेन वा ते पश्चात् क्रुषेण रक्षतु वासुदेवः ॥ ७८ ॥  
 वत्रे चाहं वज्रहस्तान्महेन्द्रादग्निं युद्धे वासुदेवः सहायम् । स मे लक्ष्मो दस्यु-  
 वधाय क्रुषेण मन्ये चैतद्विहितं देवतैश्चे ॥ ७९ ॥ अयुध्यमानो मनसापि यस्य  
 जयं क्रुषः पुरुषम्यातिन्देत् । ध्रुवं सर्वान् सोऽह्यतीयादमितान् सैन्द्रान्  
 देवान्मानुषे नास्ति चिन्ता ॥ ८० ॥ स बाह्यत्वात् सागरमुत्तितीर्षेन्महोदधिं मलि-  
 लस्याप्रमेयम् । तेजस्विनं क्रुषमत्यस्तशूरं युद्धेन यो वासुदेवः जिगीषेत् ॥ ८१ ॥  
 गिरिं य इच्छेत्तु तलेन भेत्तुं शिलोच्छयं श्वेतमतिप्रमाणम् । तस्यैव पाणिः  
 मनथो विशीर्षेन्म चापि किष्किं स गिरेस्तु कुर्यात् ॥ ८२ ॥ अग्निं समिद्धं शम-  
 येद्भुजाभ्यां चन्द्रं सूर्यं निवारयेत् । हरेन्देवानाममृतं प्रसह युद्धेन यो  
 वासुदेवः जिगीषेत् ॥ ८३ ॥ यो क्रुक्विणीमेकरथेन भोजान्मुत्साद्य राज्ञः  
 समरे प्रसह । उवाह भार्यात्वं यशसाञ्जलन्तीं यस्यां जज्ञे रौक्विणेयो महा-  
 त्मा ॥ ८४ ॥ अयं गान्धारास्तुरसा सम्पुमथ्य जिह्वा पुलामग्नजितः समग्रान् ।  
 वद्धं मुमोच विन्दस्तुं प्रसह सुदर्शनं वै देवतानां ललामम् ॥ ८५ ॥ अयं  
 कवाटेनजघान पाण्ड्यं तथा कलिङ्गान् दन्तकूरे ममर्द । अनेन दक्षा वर्षपुगा-  
 ननाथा वाराणसी नगरौ सम्यभुव ॥ ८६ ॥ यं न्य युद्धे मन्यतेऽन्यैरजेयं तमे-  
 कलव्यं नाम निषादराजम् । वेगेनेव शैलमतिहत्य जम्बुः शेते स क्रुषेण हतः  
 परासुः ॥ ८७ ॥ तथोग्रसेनस्य सुतं सुदुर्घं वृक्ष्यन्कानां मध्यगतं सताम्बम् ।  
 अपातयद्धलदेवद्वितीयो हत्वा ददौ चोग्रसेनाय राज्याम् ॥ ८८ ॥ अयं सौभ-  
 योधयामास धनुं विभीषणं मायया शाल्वराजम् । सौभद्वारे प्रत्यगृह्णाच्छतश्रीं

দৌৰ্ভ্যাং ক এনং বিষহেত মৰ্তাঃ ॥ ৭২ ॥ প্রাগ্জ্যোতিষং নাম বভুব দুর্গং পুরং  
 যোরমসুরাণামসহম্ । মহাবলো নরকস্তত্র ভৌমো জহারাদিত্যা মণিকুণ্ডলে  
 শুভে ॥ ৮০ ॥ ন তং দেবাঃ সহ শক্রেণ শেকুঃ সমাগতা যুধি মৃত্যোরভীতাঃ । দৃষ্ট্বা  
 চ তং বিক্রমং কেশবস্য বলং তথৈবাস্ত্রমবারণীষম্ ॥ ৮১ ॥ জানন্তোহস্য প্রকৃতিং  
 কেশবস্য ন্যযোজয়ন্ দস্যুবধায় ক্লমম্ । স তং কন্ম প্রতিশুশ্রাব দুষ্করমৈশ্বর্যবান্  
 সিদ্ধিষু বাসুদেবঃ ॥ ৮২ ॥ নিৰ্মোচনে ষট্ সহস্রাণি হস্তা সংছিদ্য পাশান্ সহসা  
 ক্ষুরাস্তান্ । মুরং হস্তা বিনিহত্যৌষরক্ষে। নিৰ্মোচনঞ্চাপি জগাম বীরঃ ॥ ৮৩ ॥  
 তত্রৈব তেনাস্য বভুব যুদ্ধং মহাবলেনাতিবলস্য বিষ্ণোঃ । শেতে স ক্লেশেন হতঃ  
 পরাসুর্বাতেনেব মথিতঃ কর্ণিকারঃ ॥ ৮৪ ॥ আহত্য ক্লেশো মণিকুণ্ডলে তে হস্তা  
 চ ভৌমং নরকং মুরঞ্চ । শ্রিষা বৃত্তো যশসা চৈব বিদ্বান্ প্রত্যাজগামাপ্রতিম-  
 প্রভাবঃ ॥ ৮৫ ॥ অস্মৈ বরানদদংস্তত্র দেবা দৃষ্ট্বা ভীমং কন্ম কৃতং রণে তৎ ।  
 শ্রমশ্চ তে যুধ্যমানস্য ন স্যাদাকাশে চাপ্পু চ তে ক্রমঃ স্যাৎ ॥ ৮৬ ॥ শস্ত্রাণি  
 গাত্রে ন চ তে ক্রমেরমিত্যেব ক্লমশ্চ ততঃ কৃতার্থঃ । এবং কপে বাসুদেবেহপ্রমেঘে  
 মহাবলে গুণসম্পৎ সদৈব ॥ ৮৭ ॥ তমসহং বিষ্ণুমনস্তবীৰ্যমাশংসতে ধার্ত্ত-  
 রাষ্ট্রো বিজেতুম্ । সদা হেনং তর্কযতে দুরাত্মা তচ্চাপ্যযং সহতেহস্মান্ সমী-  
 ক্ষ্য ॥ ৮৮ ॥ পর্য্যাগতং মম ক্লমস্য চৈব যো মন্যতে কলহং সম্প্রসহ । শক্যং  
 ন হর্ত্বুং পাণ্ডবানাং মমত্বং তদ্বেদিতা সংযুগং তত্র গত্বা ॥ ৮৯ ॥ নমস্কৃত্বা শাস্ত্র-  
 নবায রাজ্ঞে দ্রোণাযাথো সহপুত্রায় চৈব । শারদতায়াপ্রতিদ্বন্দ্বিনে চ যোৎস্য-  
 ম্যহং রাজ্যমভীপ্সমানঃ ॥ ৯০ ॥ ধর্ম্মেণাপ্তং নিধনং তস্য মন্যে যো যোৎস্যতে  
 পাণ্ডবৈঃ পাপবুদ্ধিঃ । মিথ্যাগুহে নিজ্জিতা বৈ নৃশংসৈঃ সম্বৎসরান্ দ্বাদশ রাজ-  
 পুত্রাঃ ॥ ৯১ ॥ বাসঃ ক্লুচ্ছো বিহিতশ্চাপ্যরণ্যে দীর্ঘং কালঞ্চৈকমজ্ঞাতবর্ষম্ । তেষাং  
 কস্মাজ্জীবতাং পাণ্ডবানাং নন্দিষ্যন্তে ধার্ত্তরাষ্ট্রাঃ পদস্থাঃ ॥ ৯২ ॥ তে চেদস্মান্  
 যুধ্যমানান্ জযেযুর্দেবৈশ্মহেন্দ্রপ্রমুখৈঃ সহায়ৈঃ । ধর্ম্মাদধর্ম্মশ্চরিতো গরীযা-  
 স্ততো ধুবং নাস্তি কৃতঞ্চ সাধু ॥ ৯৩ ॥ ন চেদিমং পুরুষং কন্মবদ্ধং ন চেদস্মান্মন্য-  
 তেহসৌ বিশিষ্টান্ । আশংসেহং বাসুদেবদ্বিতীযো দুর্ঘ্যোধনং সান্নুবন্ধং  
 নিহন্তুম্ ॥ ৯৪ ॥ ন চেদিদং কন্ম নরেন্দ্র বন্ধ্যং ন চেদ্ভবেৎ সুকৃতং নিষ্ফলং বা ।  
 ইদঞ্চ তচ্চাভিসমীক্ষ্য নুনং পরাজযো ধার্ত্তরাষ্ট্রস্য সাধুঃ ॥ ৯৫ ॥ প্রত্যক্ষং বঃ কুর-  
 বো যদ্ববীমি যুধ্যমানা ধার্ত্তরাষ্ট্রা ন সন্তি । অন্যত্র যুদ্ধাৎ কুরবো যদি সূ্যর্ন যুদ্ধে  
 বৈ শেষ ইহাস্তি কশিৎ ॥ ৯৬ ॥ হস্তা হুহং ধার্ত্তরাষ্ট্রান্ সকর্ণান্ রাজ্যং কুরুণা-

नवजेता समग्रं । यद्दः कार्यं तं कुरुध्वं यथास्मिन्मार्गानाद्युत्तोगान् भुज-  
 ध्वम् ॥ २१ ॥ अप्येवं नो ब्राह्मणाः सन्ति वृद्धा बह्वृताः शीलवन्तः कुलीनाः ।  
 सायंसरा ज्योतिषि चातियुक्ता नक्तत्रयोगेषु च निश्चयज्ञाः ॥ २४ ॥ उक्तावचं  
 दैवयुक्तं रहस्यं दिव्यप्रज्ञा मृगचक्रा मुहूर्ताः । क्रयं महान्तं कुरुसृष्टयानां  
 निवेदयन्ते पाण्डवानां जयम् ॥ २२ ॥ यथा हि नो मन्यतेऽजातशत्रुः संसि-  
 द्धाथो द्विषतां निग्रहाय । जनार्दनश्चाप्यपरोक्षविद्यो न संशयं पश्याति  
 वृषिसिंहः ॥ १०० ॥ अहं तथैव खलु भारिकपं पश्यामि वृद्ध्या स्वयमप्रमत्तः ।  
 दृष्टिश्च मे न व्यथते पुरानी संयुध्यमाना धार्तराष्ट्रि न सन्ति ॥ १०१ ॥ अनालक्षं  
 जृम्भति गाण्डिवं धनुर्ननाहता कम्पति मे धनुर्ज्या । वाणाश्च मे तुण्मुखाद्विसृत्य  
 मुहूर्त्तुर्गन्तुमुशन्ति तैव ॥ १०२ ॥ खड्गः कोषान्निःसरति प्रसन्नो हित्सेव जीर्णामुरग-  
 स्त्रुचं स्वाम् । धजे वाचो रौद्रकपा भवन्ति कदा रथो योक्त्यते ते किर्रीटिन् ॥ १०३ ॥  
 गोमायुसंघाश्च नदन्ति रात्रौ रक्षांस्यथो निष्पतन्त्यस्तुरीक्षाः । मृगाः शृगालाः  
 शितिकृशाश्च काका गृद्धा बलाकाश्च तरुक्षवश्च ॥ १०४ ॥ सुवर्णपत्राश्च पतन्ति  
 पश्चात् दृष्ट्वा रथं श्वेतहयप्रयुक्तम् । अहं ह्येकः पार्थिवान् सर्वयोधान् शरान्  
 वर्षन् मृत्युलोकं नयेयम् ॥ १०५ ॥ समाददानः पृथगस्त्रमार्गान् यथाग्निरिन्दो  
 गहनं निदाघे । शूनाकर्णं पाण्डुपतं महास्त्रं ब्राह्मणास्त्रं यच्च शक्रेऽप्य-  
 दान्ने ॥ १०६ ॥ वधे धृतो वेगवतः प्रमूढमाहं प्रजाः किञ्चिदिहावशिष्ये । शान्तिं  
 लप्से परमो ह्येष भावः स्थिरो मम वृहि गावलगणे तान् ॥ १०७ ॥ ये वै न  
 जय्याः समरे सृत लक्षा देवानपीन्द्रप्रमुखान् सहायान् । तैर्मन्यते कलहं सम्प्र-  
 सह स धार्तराष्ट्रः पश्यात मोहमस्य ॥ १०८ ॥ वृद्धो भीष्मः शान्तनवः रूपश्च द्रोणः  
 सपुत्रो विदुरश्च धीमान् । एते सर्वे वदन्त्येतदस्तु आयुष्मन्तुः कुरवः सन्तु  
 सर्वे ॥ १०९ ॥

इत्युद्योगपर्वणि यानसक्तिपर्वणि सङ्ख्यवाक्ये अष्टचत्वारिंश-

तमोऽध्यायः ॥ ४८ ॥



वैशम्पायन उवाच ॥ समवेतेषु सर्वेषु तेषु राजसू भारत । दुर्योधनमिदं  
 वाक्यं भीष्मः शान्तनवोऽब्रवीत् ॥ १ ॥ बृहस्पतिश्चाशना च ब्रह्मणं पर्ष्यप-  
 त्त्रितो । मरुतश्च सहेज्रेण वसवश्चाश्विना सह ॥ २ ॥ आदित्याश्चैव साध्याश्च  
 षे च सप्तर्षयो दिवि । विश्वावसूश्च गन्धर्वः शुभाश्चाप्सरसाङ्गणाः ॥ ३ ॥ नमस्कृ-

ত্যাগজগ্মুস্তে লোকবৃদ্ধং পিতামহম্ । পরিবার্য চ বিশ্বেশং পর্য্যাসত দিবৌ-  
 কসঃ ॥ ৪ ॥ তেষাং মনশ্চ তেজশ্চাপ্যাদদানাবিবৌজসা । পূৰ্বেদেবৌ ব্যতিক্রান্তৌ  
 নরনারায়ণাবৃষী ॥ ৫ ॥ বৃহস্পতিস্তু পপ্রচ্ছ ব্রহ্মাণং কাবিমাবিতি । ভবন্তং নোপ-  
 তিষ্ঠেতে তৌ নঃ শংস পিতামহ ॥ ৬ ॥ ব্রহ্মোবাচ । যাবেতৌ পৃথিবীং দ্যাঞ্চ  
 ভাসযন্তৌ তপস্বিনৌ । জ্বলন্তৌ রোচমানৌ চ ব্যাপ্যাতীতৌ মহাবলৌ ॥ ৭ ॥  
 নরনারায়ণাবেতৌ লোকাল্লোকং সমাস্থিতৌ । উজ্জিতৌ স্মেন তপসা মহাসত্ত্ব-  
 পরাক্রমৌ ॥ ৮ ॥ এতৌ হি কৰ্ম্মণা লোকং নন্দয়ামাসতুধুবম্ । দ্বিধাভূতৌ মহা-  
 প্রাজ্ঞৌ বিদ্ধি ব্রহ্মন্ পরম্বুপৌ । অসুরাণাং বিনাশায় দেবগন্ধৰ্ব্বপূজিতৌ ॥ ৯ ॥  
 জগাম শক্রস্তচ্ছ্রী যত্র তৌ তেপতুস্তপঃ । সার্কং দেবগণৈঃ সর্বেবৃহস্পতিপুরো-  
 গমৈঃ ॥ ১০ ॥ তদা দেবাসুরে যুদ্ধে ভযে জাতে দিবৌকসাং । অঘাচত মহা-  
 অ্যানৌ নরনারায়ণৌ বরম্ ॥ ১১ ॥ তাববুতাং বৃণীষেতি তদা ভরতসত্তম । অথৈ-  
 তাবব্রবীচ্ছক্রঃ সহং নঃ ক্রিয়তামিতি ॥ ১২ ॥ ততস্তৌ শক্রমবুতাং করিষ্যা-  
 বৌ যদিচ্ছসি । তাভ্যাঞ্চ সহিতঃ শক্রে বিজিগ্যে দৈত্যদানবান্ ॥ ১৩ ॥ নর  
 ইন্দ্রস্য সংগ্রামে হুত্বা শত্রূন্ পরম্বুপঃ । পৌলোমান্ কালকঞ্জাংশ্চ সহস্রাণি শতা-  
 নি চ ॥ ১৪ ॥ এষ ভ্রান্তে রথে তিষ্ঠন্ ভল্লেনাপাহরচ্ছিরঃ । জম্বস্য গ্রসমানস্য তদা  
 হৃজ্জুন আহবে ॥ ১৫ ॥ এষ পারৈে সমুদ্রস্য হিরণ্যপুরমারুজং । জিহ্বা ষষ্টি-  
 সহস্রাণি নিবাতকবচান্ রণে ॥ ১৬ ॥ এষ দেবান্ মহেন্দ্রেণ জিহ্বা পরপুরঞ্জযঃ ।  
 অতর্পয়ন্নহাবাহুরজ্জুনৌ জাতবেদসম্ ॥ ১৭ ॥ নারায়ণস্তথৈবাত্র ভূষশোহন্যান্  
 জঘান হ । এবমেতৌ মহাবীর্যৌ তৌ পশ্যত সনাগতৌ ॥ ১৮ ॥ বাসুদেবাজ্জুনৌ  
 বীরৌ সমবেতৌ মহারথৌ । নরনারায়ণৌ দেবৌ পূৰ্বেদেবাবিতি শ্রুতিঃ ॥ ১৯ ॥  
 অজের্যৌ মানুষে লোকে সেন্দ্রৈরপি সুরাসুরৈঃ । এষ নারায়ণঃ কৃষ্ণঃ ফাল্গুনশ্চ  
 নরঃ স্মৃতঃ ॥ ২০ ॥ নারায়ণৌ নরশ্চৈব সত্ত্বমেকং দ্বিধা কৃতম্ । এতৌ হি কৰ্ম্মণা  
 লোকানশ্শুবাতেহক্ষয়ান্ ধুবান্ ॥ ২১ ॥ তত্র তত্রৈব জাযেতে যুদ্ধকালে পুনঃ  
 পুনঃ । তস্মাৎ কশ্মৈব কৰ্ত্তব্যমিতি হোবাচ নারদঃ । এতদ্ধি সর্বমাচষ্ট বৃষ্টিচক্রস্য  
 বেদবিৎ ॥ ২২ ॥ শঙ্খচক্রগদাহস্তং যদা দ্রক্ষ্যসি কেশবম্ । পর্য্যাদদানঞ্চাস্ত্রাণি  
 ভীমধন্বানমজ্জুনম্ ॥ ২৩ ॥ সনাতনৌ মহাঅ্যানৌ কৃষ্ণাবেকরথে স্থিতৌ । দর্য্যো-  
 ধন তদা তাত স্মর্তাসি বচনং মম ॥ ২৪ ॥ নো চেদঘমভাবঃ স্যাৎ কুরুণাং  
 প্রত্যুপস্থিতঃ ॥ ২৫ ॥ অর্থাচ্ছ তাত ধর্মাচ্ছ তব বুদ্ধিরূপপ্লুতা । ন চেদগ্রহীষ্যসে  
 বাক্যং শ্রোতাসি সুবহ্ন হতান্ ॥ ২৬ ॥ তবৈব হি মতং সর্বে কুরবঃ পর্য্যাপাসতে ।

त्रयाणामेव च मतं तद्वमेकोऽस्मन्नन्यासे ॥ २१ ॥ रामेण चैव शत्रुस्य कर्णस्य  
 भरतवर्षत । दुर्ज्ञातेः सूतपुत्रस्य शकुनेः सौबलस्य च । तथा क्रुद्रस्य पापस्य  
 द्रातुदुःशासनस्य च ॥ २८ ॥ कर्ण उवाच ॥ नैवमायुष्मता वाच्यं यन्मामर्थं पिता-  
 मह । क्लृप्तधर्मे स्थितो ह्यस्मि स्वधर्मादनपेयिवान् ॥ २२ ॥ किष्कान्याग्निं दुर्बृहत्तं  
 षेन मां परिगर्हसे ॥ ३० ॥ न हि मे वृजिनं किष्किंकार्तुराक्षुं विदुः क्वचिन् ।  
 नाचरं वृजिनं किष्किंकार्तुराक्षुस्य नित्यशः ॥ ३१ ॥ अहं हि पाण्डवान् सर्वान्  
 हनिष्यामि रणे स्थितान् । प्राग्विरुद्धैः समं सक्तिः कुतश्च वा क्रियते पुनः ॥ ३२ ॥  
 राक्ष्णे हि धृतराक्षुस्य सर्वं कार्यं प्रियं यथा । तथा दुर्योधनस्यापि स हि  
 राज्ये समाहितः ॥ ३३ ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ कर्णस्य तु वचः श्रुत्वा भीष्मः  
 शास्तनवः पुनः । धृतराक्षुं महाराजमाभाष्येदं वचोऽब्रवीत् ॥ ३४ ॥ यदयं  
 कथते नित्यं हस्ताहं पाण्डवानिति । नायं कलापि संपूर्णं पाण्डवानां महा-  
 अनां ॥ ३५ ॥ अनयो योऽयमागन्ता पुल्लगां ते दुराअनाम् । तदस्य कर्म  
 जानीहि सूतपुत्रस्य दुर्मतेः ॥ ३६ ॥ एतमाश्रित्य पुल्लेस्ते मन्दबुद्धिः सूयो-  
 धनः । अवामन्यत तान् वीरान् देवपुत्रानरिन्दमान् ॥ ३७ ॥ किष्काप्येतेन तं  
 कर्म कृतपूर्वं सूदुस्करम् । तेर्यथा पाण्डवैः सर्वैरेकैकेन कृतं पुरा ॥ ३८ ॥  
 दृष्ट्वा विराटनगरे द्रातरं निहतं प्रियम् । धनञ्जयेन विक्रम्य किमनेन तदा  
 कृतम् ॥ ३९ ॥ सहितान् हि कुरून् सर्वानभिधातो धनञ्जयः । प्रमथ्य चाच्छिनद्वासः  
 किमयं प्रोषितस्तदा ॥ ४० ॥ गन्धर्वैर्योषयात्रायां हि यते यत् सूतस्तव । क्व तदा  
 सूतपुत्रोऽभूदस्य ईदानीं वृषायते ॥ ४१ ॥ ननु तत्रापि भीमेन पार्थेन च महा-  
 अना । यमात्र्यामेव संगम्य गन्धर्वास्ते पराजिताः ॥ ४२ ॥ एतान्यस्य मृषो-  
 क्तानि बहूनि भरतवर्षत । विकथनस्य तद्रं ते सदा धर्मार्थलोपिनः ॥ ४३ ॥  
 भीष्मस्य तु वचः श्रुत्वा भारद्वाजो महामनाः । धृतराक्षुमुवाचेदं राजमध्येऽभि-  
 पूजयन् ॥ ४४ ॥ यदाह भरतश्रेष्ठो भीष्मस्तं क्रियतां नृप । न काममर्थलिप्सूनां  
 वचनं कर्तुमर्हसि ॥ ४५ ॥ पुरा युक्तां साधु मन्ये पाण्डवैः सह सङ्गतम् ॥ ४६ ॥ यद्वा-  
 क्यमर्जुनेनोक्तं सङ्गयेन निवेदितम् । सर्वं तदभिजानामि करिष्याति च पाण्डवः ।  
 न ह्यस्य त्रिषु लोकेषु सदृशोऽस्ति धनुर्धरः ॥ ४७ ॥ अनादृत्य तु तद्वाक्यमर्थवद्दोष-  
 तीष्मयोः । ततः स सङ्गयं राजा पर्यपृच्छत पाण्डवान् ॥ ४८ ॥ तदैव कुरवः  
 सर्वे निराशा जीवितेऽभवन् । भीष्मद्रोणौ यदा राजा न सम्यगब्रुवावते ॥ ४९ ॥  
 इत्युद्योगपर्वणि यानसक्तिपर्वणि भीष्माद्युपदेशे एकौनपक्षाशोऽध्यायः ॥ ४९ ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ किमसौ पाण्डवो राजा धर्मपुत्रोऽभ्युत्थितः । श्रेष्ठेऽहं  
 बहलाः सेनाः प्रीत्यर्थं नः समागताः ॥ १ ॥ किमसौ चेकते सूत योऽस्यमानो  
 युधिष्ठिरः । केवास्य भ्रातृपुत्राणां पश्यास्त्याज्जेप्सवो मुखम् ॥ २ ॥ के सिदेनं  
 वारिषन्ति युक्तास्त्राम्योति वा पुनः । निरुत्या.कोपितं मन्दैर्धर्मज्जं धर्मचारिणम् ॥ ३ ॥  
 सङ्ग उवाच ॥ राज्ञो मुखमुदीक्येते पाण्डालाः पाण्डवैः सह । युधिष्ठिरस्य भद्रं  
 ते स सर्वान्मृशान्ति च ॥ ४ ॥ पृथग्भूताः पाण्डवानां पाण्डालानां रथत्रजाः ।  
 आयास्तमभिनन्दन्ति कुन्तीपुत्रं युधिष्ठिरम् ॥ ५ ॥ नभःसूर्यामिवोद्यन्तं कौन्तेयं  
 दीप्ततेजसम् । पाण्डालाः प्रतिनन्दन्ति तेजोराशिमिवोदितम् ॥ ६ ॥ आगो-  
 पालाविपालाश्च नन्दमाना युधिष्ठिरम् । पाण्डालाः केकया मत्स्याः प्रतिनन्दन्ति  
 पाण्डवम् ॥ ७ ॥ ब्राह्मणैः राजपुत्रैश्च विशां दुहितरश्च याः । क्रीडन्त्योऽभि-  
 समायांति पार्थं समक्षमीक्षितुम् ॥ ८ ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ सङ्गयाचक्षु येनाम्नान्  
 पाण्डवा अभ्युत्थत । धृष्टदुम्नस्य सैन्येन सोमकानां बलेन च ॥ ९ ॥ वैशम्पा-  
 यन उवाच ॥ गावल्गणित्तु तत्पृष्ठः सभायां कुरुसंसदि । निःश्वस्य सुभृशं  
 दीर्घं मुखं सङ्क्षिप्तमिवं । तत्रानिमित्ततो देवां सृतं कश्मलमाविशं ॥ १० ॥  
 तदाचक्षे विदुरः सभायां कुरुसंसदि । सङ्गयोऽयं महाराज मूर्च्छितः पतितो  
 भुवि । वाचं न सृजते काश्चिद्धीनप्रज्जोऽहन्नचेतनः ॥ ११ ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥  
 अपश्यां सङ्गयो ह्यनं कुन्तीपुत्रान्महारथान् । तैरस्य पुरुषव्याघैर्भृशमुद्दे-  
 जितं मनः ॥ १२ ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ सङ्गयश्चेतनां लक्षा प्रत्याश्वस्येदम-  
 त्रवीं । धृतराष्ट्रं महाराजं सभायां कुरुसंसदि ॥ १३ ॥ सङ्ग उवाच ॥ दृष्ट-  
 वान्मि राजेन्द्र कुन्तीपुत्रान्महारथान् । मत्स्यराजगृहावासनिरोधेनावकर्षि-  
 तान् ॥ १४ ॥ शूणु यैर्हि महाराज पाण्डवा अभ्युत्थत । धृष्टदुम्नेन वीरेण युद्धे  
 वस्तेऽभ्युत्थत ॥ १५ ॥ यो नैव रोषान् भवान् लोभान्मार्थकारणां । न हेतुवा-  
 दाक्ष्ण्यान्ना सत्यां जहां कदाचन ॥ १६ ॥ यः प्रमाणं महाराज धर्मै धर्मभृता-  
 ऋणैः अजातशत्रुणा तेन पाण्डवा अभ्युत्थत ॥ १७ ॥ यस्य बाह्वले तुल्याः  
 पृथिव्यां नास्ति कश्चन । यो वै सर्वान्महीपालान्, वशे चक्रे धर्मुर्धरः ॥ १८ ॥  
 यः काशीनङ्गमगधान् कलिङ्गांश्च पुराजयत् । तेन वो भीमसेनेन पाण्डवा अभ्य-  
 युत्थत ॥ १९ ॥ यस्य वीर्येण सहसा चकारो भुवि मानवाः । निःसृता जतुगेहाद्वै  
 हिडिष्वां पुरुषादकां । यश्चेवामभवद्दीपः कुन्तीपुत्रो बकोदरः ॥ २० ॥ याञ्जसेनी-  
 मथो यत्र सिद्धराजोऽपक्रुष्टवान् । तत्र चैवाभवद्दीपः कुन्तीपुत्रो बकोदरः ॥ २१ ॥



यश्च तान् सङ्गतान् सर्वान् पाण्डवान् वारणावते । दहते मोचयामास तेन वसे-  
 ह्भ्ययुञ्जत ॥ २२ ॥ कृष्णयाश्चरता प्रीतिं येन क्रोधवशा हताः । प्रविश्य विषमं  
 घोरं पर्वतं गङ्गमादनम् ॥ २३ ॥ यस्य नागायुतैर्वीर्यं भुजघोः सारमर्पितम् ।  
 तेन वो भीमसेनेन पाण्डवा अभ्ययुञ्जत ॥ २४ ॥ कृष्णद्वितीयो विक्रम्य तुर्क्यथं  
 जातवेदसः । अजयद्वयः पुरा वीरो युध्यमानं पुरन्दरम् ॥ २५ ॥ यः स साङ्गान्महा-  
 देवः गिरीशं शूलपाणिनम् । तोषयामास युद्धेन देवदेवमुमापतिम् ॥ २६ ॥  
 यश्च सर्वान् वशे चक्रे लोकपालान् धनुर्धरः । तेन वो विजयेनाजो पाण्डवा  
 अभ्ययुञ्जत ॥ २७ ॥ यः प्रतीचीं दिशश्चक्रे वशं श्लेच्छगणायुताम् । स तत्र नकुलो  
 योक्ता चित्रयोधी व्यवस्थितः ॥ २८ ॥ तेन वो दर्शनीयेन वीरेणातिधनुर्भृता ।  
 माद्रीपुत्रेण कौरव्य पाण्डवा अभ्ययुञ्जत ॥ २९ ॥ यः काशीनङ्गमगधान् कलि-  
 ङ्गांश्च युधाञ्जयत् । तेन वः सहदेवेन पाण्डवा अभ्ययुञ्जत ॥ ३० ॥ यस्य वी-  
 र्येण सदृशाश्चकारो भुवि मानवाः । अश्वथामा धृष्टकेतुरूक्षी प्रद्युम्न एव  
 च ॥ ३१ ॥ तेन वः सहदेवेन युद्धं राजग्नहात्ययम् । यवीयसा नृवीरेण माद्री-  
 नन्दिकरेण च ॥ ३२ ॥ तपश्चचारया घोरं काशीकन्या पुरा सती । भीष्मस्य वध-  
 मिच्छन्ती प्रेत्यापि भरतर्षभ ॥ ३३ ॥ पाण्डालस्य सूता जङ्गे दैवाच्च स पुनः  
 पुमान् । स्त्रीपुंसोः पुरुषव्याघ्र यः स वेद गुणागुणान् ॥ ३४ ॥ यः कलिङ्गान्  
 समापेदे पाण्डाल्या युद्धदुर्मदः । शिखण्डिना वः कुरवः क्रुतास्त्रेणाभ्ययुञ्जत ॥ ३५ ॥  
 यां यक्षः पुरुषश्चक्रे भीष्मस्य निधनेच्छया । महेष्वासैन रौद्रेण पाण्डवा अभ्य-  
 युञ्जत ॥ ३६ ॥ महेष्वासो राजपुत्रा ज्ञातरः पक्ष केकयाः । आमुक्तकवचाः शूरा-  
 तैश्च वसेह्भ्ययुञ्जत ॥ ३७ ॥ यो दीर्घबाहूः क्षिप्रान्त्रो धृतिमान् सत्यविक्रमः ।  
 तेन वो वृष्णिवीरेण युयुधानेन सङ्गरः ॥ ३८ ॥ य आसीत् शरणं काले पाण्ड-  
 वानां महान्मनां । रणे तेन विराटेन भविता वः समागमः ॥ ३९ ॥ यः स  
 काशीपतीराजा वाराणस्यां महारथः । स तेषामभवद्वोक्ता तेन वसेह्भ्य-  
 युञ्जत ॥ ४० ॥ शिशुभिर्दुर्जयैः संख्ये द्रोपदेयैर्महाश्रुतिः । आशीविक्लम-  
 स्पर्शैः पाण्डवा अभ्ययुञ्जत ॥ ४१ ॥ यः कृष्णसदृशो वीर्ये युधिष्ठिरसमो दमे ।  
 तेनाभिमन्युना संख्ये पाण्डवा अभ्ययुञ्जत ॥ ४२ ॥ यश्चेवाप्रतिमो वीर्ये धृष्ट-  
 केतुर्महायशाः । दुःसहः समरे क्रूकः शैशुपालिर्महारथः ॥ ४३ ॥ तेन वसे-  
 दिराजेन पाण्डवा अभ्ययुञ्जत । अकौहिण्या परिवृतः पाण्डवान् योऽभिसं-  
 श्रितः ॥ ४४ ॥ यः संश्रयः पाण्डवानां देवानामिव वासवः । तेन वो वासु-

দেবেন পাণ্ডবা অভ্যযুঞ্জত ॥ ৪৫ ॥ তথা চেদিপতেভ্রাতী শরভো ভরতর্ষভ । কর-  
কর্ষণে সহিতস্তাত্যাং বস্ত্রেভ্যযুঞ্জত ॥ ৪৬ ॥ জারাসন্ধিঃ সহদেবো জযৎসেনশ্চ  
তাবুভৌ । যুদ্ধেই প্রতিরথৌ বীরৌ পাণ্ডবার্থে ব্যবস্থিতৌ ॥ ৪৭ ॥ ক্রপদশ্চ মহা-  
তেজা বলেন মহতা বৃতঃ । ত্যক্তান্না পাণ্ডবার্থাষ যোৎস্যমানো ব্যবস্থিতঃ ॥ ৪৮ ॥  
এতে চান্যে চ বহবঃ প্রাচ্যেদীচ্যা মহীক্ষিতঃ । শতশো যানুপাশ্রিত্য ধর্মরাজৌ  
ব্যবস্থিতঃ ॥ ৪৯ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি যানসন্ধিপর্বণি সঞ্জযবাক্যে পঞ্চাশত্তমোঃ অধ্যায়ঃ ॥ ৫০ ॥



ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । সর্ব এতে মহোৎসাহা য়ে ত্বয়া পরিকীর্তিতাঃ । একতস্ত্বেব তে  
সর্বে সর্মেতা ভীম একতঃ ॥ ১ ॥ ভীমসেনাদ্বি মে ভূষো ভযং সংজায়তে মহৎ ।  
ক্রুদ্ধাদমর্ষণাত ব্যাঘাদিব মহারুরোঃ ॥ ২ ॥ জাগন্মি রাত্রযঃ সর্বা দৌর্ঘমুঞ্চঞ্চ  
নিশ্বসন্ । ভীতো বৃকোদরাত সিংহাৎ পশুরিবাপরঃ ॥ ৩ ॥ ন হি তস্য  
মহাবাহোঃ শক্রপ্রতিমতেজসঃ । সৈন্যেহস্মিন্ প্রতিপশ্যামি য এনং বিষহে-  
দ্যুধি ॥ ৪ ॥ অমর্ষণশ্চ কৌন্তেযো দৃঢ়বৈরশ্চ পাণ্ডবঃ । অনর্ঘ্যহাসী সোমাদ-  
স্তির্যাক্ প্রেক্ষী মহাস্বনঃ ॥ ৫ ॥ মহাবেগো মহোৎসাহো মহাবাহুর্নহাবলঃ । মন্দা-  
নাং মম পুত্রাণাং যুদ্ধেনাস্তং করিষ্যতি ॥ ৬ ॥ গুরুগ্রাহগৃহীতানাং গদাং বিভ্র-  
হুকোদরঃ । কুরুণামৃষভো যুদ্ধে দণ্ডপানিরিবাস্তকঃ ॥ ৭ ॥ অষ্টাশিমাযসীং ঘোরাং  
গদাং কাঞ্চনভূষণাম্ । মনসাহং প্রপশ্যামি ব্রহ্মদণ্ডমিবোদ্যতম্ ॥ ৮ ॥ যথা  
কুরুণাং যুথেষু সিংহো জাতবলশ্চরেৎ । মামকেষু তথা ভীমো বলেষু বিচরি-  
ষ্যতি ॥ ৯ ॥ সর্বেষাং মম পুত্রাণাং স একঃ ক্রুরবিক্রমঃ । বহ্নাশী বিপ্রতীপশ্চ  
বাল্যেহপি রভসঃ সদা ॥ ১০ ॥ উদ্বৈপতে মে হৃদযং যে মে দুর্যোধনাদযঃ ।  
বাল্যেহপি তেন যুধ্যস্তো বারণেনেব মর্দিতাঃ ॥ ১১ ॥ তস্য বীর্যেণ সংক্লিষ্টা  
নিত্যমেব স্মৃতা মম । স এব হেতুর্ভেদস্য ভীমো ভীমপরাক্রমঃ ॥ ১২ ॥ এসমান-  
মক্ষীকানি নরবারণবাজিনাম্ । পশ্যামীবাগ্রতো ভীমং ক্রোধমুচ্ছিতমাহবে ॥ ১৩ ॥  
অস্ত্রে দ্রোণাজ্জুনসমং বায়ুবেগসমং জবে । মহেশ্বরসমং ক্রোধে কো হন্যাভীম-  
মাহবে । সঞ্জযাচক্ষু মে শূরং ভীমসেনমমর্ষণম্ ॥ ১৪ ॥ অতিলাভস্ত মন্যেহং  
যন্তেন রিপুঙ্কাতিনা । তদৈব ন হতাঃ সর্বে পুত্রা মম মনস্বিনা ॥ ১৫ ॥ যেন ভীম-  
বলা যক্ষা রাক্ষসাশ্চ পুরা হতাঃ । কথং তস্য রণে বেগং মানুষ্যঃ প্রমহিষ্যতি ॥ ১৬ ॥  
ন স জাতু বশে তস্যো মম বাল্যেহপি সঞ্জয । কিং পুনর্নম দুস্পুলৈঃ ক্লিষ্টঃ সং প্রতি

पाण्डवः ॥ ११ ॥ निष्ठुरो रोषणोऽत्यर्थं भजेत्यापि न सममेतं । तिर्यक्प्रेक्षी  
 संहतक्रः कथं शान्येद्भृकोदरः ॥ १८ ॥ शूरस्तथाप्रतिबलो गौरस्ताल इवो-  
 म्नतः । प्रमाणतो भीमसेनः प्रादेशेनाधिकोऽर्जुनात् ॥ १९ ॥ ज्वेनं बार्जिनो-  
 इत्येति बलेनात्येति कुञ्जरान् । अव्यक्तजम्बी मध्वक्ने मध्यमः पाण्डवो बली ॥ २० ॥  
 इति बाल्ये ऋतः पूर्वं मया व्यासमुखात् पुरा । कपतो वीर्यतश्चैव याथा-  
 तथ्येन पाण्डवः ॥ २१ ॥ आघसेन स दण्डेन रथाम्नागामरान् हयान् । हनिष्यति रणे  
 क्रुद्धो रौद्रः क्रूरपराक्रमः ॥ २२ ॥ अमर्षी नित्यसंरुद्धो भीमः प्रहरतां वरः ।  
 मया तात प्रतीपानि कूर्बन् पूर्वं विमानितः ॥ २३ ॥ निष्कीर्णमायसीं शूलात्  
 सुपार्श्वं काष्ठीं गदाम् । शतघ्नीं शतनिर्हृदां कथं शक्यस्ति मे सूताः ॥ २४ ॥  
 अपारमण्ववागाधं समुद्रं शरवेगितम् । भीमसेनमयं दृग्ं तात मन्दास्तिती-  
 र्ववः ॥ २५ ॥ क्रोशतो मे न शृण्वस्ति बालाः पण्डितमानिनः । विषमं नावबुध्यन्ते  
 प्रपातं मधुदर्शिनः ॥ २६ ॥ संयुगे ये समेष्यस्ति नरकपेण मृत्युना । नियत-  
 ष्णोदिता धात्रासिंहनेव हता मृगाः ॥ २७ ॥ शैक्यां तात चतुःकिङ्कं षडशि-  
 ममितौजसम् । प्रहितां दुःखसंस्पर्शां कथं शक्यस्ति मे सूताः ॥ २८ ॥  
 गदां ब्रामयतस्तस्य भिन्दतो हस्तिमस्तकान् । सूक्ती लेलिहानस्य वाष्पमुत्सृजतो  
 मूहः ॥ २९ ॥ उद्दिश्य नागान् पततः कूर्बतोऽभैरवानुवान् । प्रतीपं पततो  
 मत्तान् कुञ्जरान् प्रतिगर्जतः ॥ ३० ॥ विगाह्य रथमार्गेषु वरान्मुदिश्य निम्नतः ।  
 बह्लेः प्रङ्गलितस्यैव अपि मुच्येत मानवः ॥ ३१ ॥ वीथीं कूर्बन्महाबाहूर्द्रावयन्मम  
 बाहिनीम् । नृत्यमिव गदापाणियुगास्तुं दर्शयिष्यति ॥ ३२ ॥ प्रतिम इव मातङ्गः  
 प्रतङ्गन् पुष्पितान् क्रमान् । प्रवेक्ष्यति रणे सेनां पुल्लागां मे वृकोदरः ॥ ३३ ॥  
 कूर्बन्नुथान् विपुरुषान् विसारथिहयध्वजान् । आरुजन् पुरुषव्याघ्रो रथिनः सादिन-  
 स्तथा ॥ ३४ ॥ गङ्गावेग इवानुपांस्त्यीरजान् विविधान् क्रमान् । प्रतङ्क्यति  
 रणे सेनां पुल्लागां मम सङ्घ ॥ ३५ ॥ दिशो ह्यनं गमिष्यस्ति भीमसेनतया-  
 दिताः । मम पुल्लाशं भृत्याश्च राजानश्चैव सङ्घ ॥ ३६ ॥ येन राजा महावीर्यः  
 प्रविश्यास्तुःपुरं पुरा । वासुदेवसहायेन जरासन्धो निपातितः ॥ ३७ ॥ कृत्-  
 स्नेयं पृथिवी देवी जरासन्धेन धीमता । नागधेक्ष्णं बलिना वशे कृत्वा प्रता-  
 पिता ॥ ३८ ॥ भीमप्रतापां कुरवो नयेनास्मकवृषभः । यम तस्य वशे जग्मुः  
 केवलं दैवमेव तत् ॥ ३९ ॥ स गङ्गा पाण्डुपुत्रेण तरसा बाहूशालिना । अना-  
 युधेन वीरेण निहतः किं ततोऽधिकम् ॥ ४० ॥ दीर्घकालसमासक्तं विषमाशी-

विषो यथा । स मोक्ष्यति रणे तेजः पुल्लेषु मम सङ्घस्य ॥ ४१ ॥ महेश्च इव  
 बद्धेण दानवान् देवसङ्घमः । भीमसेनो गदापाणिः स्रुदयिष्यति मे सूतान् ॥ ४२ ॥  
 अविषह्यंमनांवार्यां तीव्रवेगपराक्रमम् । पश्यामीवातितान्मुक्त्वापतन्तुं वृको-  
 दरम् ॥ ४३ ॥ अगदस्याप्यधुषो विरथस्य विवर्धनः । बाह्वभ्यां युध्यमानस्य  
 कस्तिष्ठेदग्रतः पुमान् ॥ ४४ ॥ भीष्मो द्रोणश्च विप्रोऽहयं रूपः शारद्वतस्तथा ।  
 ज्ञानस्त्योते यथैवाहं वीर्यश्रुस्तस्य धीमतः ॥ ४५ ॥ आर्याव्रतस्तु ज्ञानस्तुः सङ्घ-  
 रान्तुं विधिंसवः । सेनामुखेषु स्वास्यन्ति मामकानां नरर्षभाः ॥ ४६ ॥ बलीयः  
 सर्वतो दिक्त्वं पुरुषस्य विशेषतः । पश्यन्नपि जयं तेषां न निषच्छामि यं  
 सूतान् ॥ ४७ ॥ ते पुराणं महेश्वासो मार्गमैन्द्रं समाहिताः । त्यक्त्यन्ति तुमुले  
 प्राणान्मुक्तुः पार्थिवं यशः ॥ ४८ ॥ यथैवाहं मामकास्तत तथैवाहं पाण्डवा अपि ।  
 पौत्रा भीष्मस्य शिष्याश्च द्रोणस्य च रूपस्य च ॥ ४९ ॥ यद्वस्मदाश्रयं किञ्चिद्व-  
 मिर्क्यं सङ्घस्य । तस्यापचितिमार्याव्यां कर्तारः स्वविरास्रयः ॥ ५० ॥ आददानस्य  
 शस्त्रं हि क्लृप्तधर्मं परीप्सतः । निधनं क्लृप्तिस्यार्जो वरमेवाह्वरुत्तमम् ॥ ५१ ॥  
 स वै शेषाचामि सर्वान् वै ये युयुत्सन्ति पाण्डवैः । विक्रुष्टं विदुरेणादौ तदेतद्व-  
 यमागतम् ॥ ५२ ॥ न तु मन्ये विधाताय ज्ञानं दुःखस्य सङ्घस्य । भवत्यतिबलं  
 हेतुं ज्ञानस्याप्युपघातकम् ॥ ५३ ॥ ऋषयो ह्यपि निमुक्ताः पश्यन्तो लोकसंग्र-  
 हान् । सूथैर्भवन्ति सूथिनस्तथा दुःखेन दुःखिताः ॥ ५४ ॥ किं पुनर्योऽहमासक्त-  
 स्तत्र तत्र सहस्रधा । पुल्लेषु राज्ञे दारेषु पौत्रेष्वपि च वन्दुषु ॥ ५५ ॥ संशये  
 तु महत्यास्मिन् किम् मे क्षेममुत्तरम् । विनाशं ह्येव पश्यामि कुरूणामनुचित्त-  
 यन् ॥ ५६ ॥ द्यूतप्रमुखमाभाति कुरूणां व्यसनं महत् । मन्देनैश्वर्याकामेन  
 लोभात् पापमिदं कृतम् ॥ ५७ ॥ मन्ये पर्यायधर्मोऽहयं कालस्यात्यन्तगा-  
 मिनः । चक्रे अधिरिवासक्त्वा नास्य शक्यं पलायितुम् ॥ ५८ ॥ किम् कुर्यात्  
 कथं कुर्यात् क्व नु गच्छामि सङ्घस्य । एते नश्यान्ति कुरवो मन्दाः कालवशं  
 ग्रन्थाः ॥ ५९ ॥ अवशोऽहं तदा तात पुत्राणां निहते शते । श्रेष्यामि  
 निन्दं स्त्रीणां कथं मां मरणं स्पृशेत् ॥ ६० ॥ यथा निदाघे ज्वलनः समिद्धो  
 दहेत् कक्त्वं वायुना चोद्यमानः । गदाहस्तः पाण्डवो वै तथैव हन्ता मदौघान्  
 सहितोऽङ्गुनेन ॥ ६१ ॥

इत्युद्देश्योपपत्तिर्यानसङ्घिपर्वणि धृतराष्ट्रवाक्ये एकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५१ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । यस्य वै नानृता वाचः कदाचिदनुशुश्रुम् । त्रैलोक्यमपि  
 तस्य स्यान्मोक्षा यस्य धनञ्जयः ॥ १ ॥ तस्यैव च न पश्यामि युधि गाण्डीवधन्वणः ।  
 अनिशं चिन्तयानोऽपि यः प्रतीयाद्रथेन तम् ॥ २ ॥ अस्यतः कर्णिनालीकान्  
 मार्गान् हृदयच्छिदः । प्रत्येता न समः कश्चिद्युधि गाण्डीवधन्वणः ॥ ३ ॥ द्रोण-  
 कर्णौ प्रतीयातां यदि वीरौ नरवर्धे । कृतार्त्रो बलिनां श्रेष्ठौ समरेष-  
 पराजितौ । महान् स्यात् संशयो लोकेन ह्यस्ति विजयो मम ॥ ४ ॥ घृणी कर्णः  
 प्रमादी च द्वाचार्यः स्वविरो गुरुः । समर्थो बलवान् पार्थो दृढधन्वा जितकुमः ॥ ५ ॥  
 तवेत् सुतुमुलं युद्धं सर्वशोऽप्यपराजयः । सर्वे ह्यस्त्रविदः शूराः सर्वे प्राप्ता  
 महद्वशः ॥ ६ ॥ अपि सर्वामरेश्वर्यं त्यजेयुर्न पुनर्ज्जयम् । वधे ह्यनं तवेत्  
 शान्तिस्तयोर्वा फाल्गुनस्य वा ॥ ७ ॥ न तु हस्ताज्जुर्नस्यस्ति जेता चास्य न विद्यते ।  
 मनु्यस्तस्य कथं शाम्येन्मन्दान् प्रति य उथितः ॥ ८ ॥ अन्येऽप्यस्त्राणि जानन्ति  
 जीयन्ते च जयन्ति च । एकान्तविजयस्तुव ऋषते फाल्गुनस्य च ॥ ९ ॥ त्रयस्त्रिंशत्-  
 समाः सूत थाण्डवेऽग्निमतर्षत् । जिगाष च सुरान् सर्वान्मास्य विद्मः पराजयम् ॥ १० ॥  
 यस्य यन्ता ह्यवीकेशः शीलवृत्तममो युधि । ध्रुवं तस्य जयन्तात यथेन्द्रस्य जय-  
 स्तथा ॥ ११ ॥ कृष्णवेकरथे यत्तावधिज्यं गाण्डीवं धनुः । युगपत्प्रीणि तेजांसि  
 समेतान्यनुशुश्रुम् ॥ १२ ॥ नैवास्ति नो धनुस्तदृद्धन योक्ता न च सारथिः । तच्छ  
 मन्दा न जानन्ति दुर्योधनवशाद्भुगाः ॥ १३ ॥ शेषयेदशनिर्दीप्तो निपतन्मूर्च्छि  
 सङ्गः । न तु शेषं शरास्तात् कुर्युरस्ताः किरीटिना ॥ १४ ॥ अपि चास्यग्निवा-  
 ताति निम्नमिव धनञ्जयः । उद्धरन्मिव कायेभ्यः शिरांसि शरवृष्टिभिः ॥ १५ ॥  
 अपि बाणमयं तेजः प्रदीप्तमिव सर्वतः । गाण्डीवोत्थं दहेदाजो पुल्लाणां मम  
 बाहिनीम् ॥ १६ ॥ अपि सा रथघोषेण तथार्ता सव्यसार्चनः । विद्वस्ता बहधा  
 सेना भारती प्रतिभाति मे ॥ १७ ॥ यथा कर्णं महानग्निः प्रदहेत् सर्वतश्चरन् ।  
 महार्चिरनिलोद्धृतस्तद्वद्वक्त्यति मामकान् ॥ १८ ॥ यदोद्धमग्निशितान् बाणसङ्घांस्त-  
 नाततायी समरे किरीटी । सृष्टोऽस्तुकः सर्वहरो विधात्रा यथा तवेत्तद्वदप्र-  
 नीयः ॥ १९ ॥ यदा ह्यतीक्ष्णं सुबहून् प्रकारान् श्रोतास्मि तातावसथे कुरूणां ।  
 तेषां समस्तास्तथा रणाग्रे ऋयः किलायं भरतामूटैति ॥ २० ॥

इत्युद्योगपर्वणि यानसङ्घिपर्वणि धृतराष्ट्रवाक्ये द्विपञ्चाशत्त-

मोऽध्यायः ॥ ५२ ॥



ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । যথৈব পাণ্ডবাঃ সর্বে পরাক্রান্তা জিগীষবঃ । তথৈবাতিসরা-  
 স্তেষাং ত্যক্তাঙ্গানো জযে ধৃত্যঃ ॥ ১ ॥ স্বমেব হি পরাক্রান্তানাচক্ষীথাঃ পরা-  
 ন্মম । পাঞ্চালান্ কেকযাম্ৎস্যাম্মাগধান্ বৎস ভুমিপান্ ॥ ২ ॥ যশ্চ সেন্দ্রানিমান্  
 লোকানিচ্ছন্ কুর্যাদ্বশে বশী । স শ্রেষ্ঠো জগতঃ কৃষ্ণঃ পাণ্ডবানাং জযে ধৃত্যঃ ॥ ৩ ॥  
 সমস্তামজ্জুনাঙ্গিদ্যাং সাত্যকিঃ ক্ষিপ্রমাণ্ডুবান্ । শৈনেষঃ সমরে স্থাতা বীজবৎ  
 প্রবপন্ শরান্ ॥ ৪ ॥ ধৃষ্টদ্যুম্নশ্চ পাঞ্চাল্যঃ তুরকর্মা মহারথঃ । মামকেষু রণং  
 কর্তা বলেষু পরমাস্ত্রবিৎ ॥ ৫ ॥ যুধিষ্ঠিরস্য চ ক্রোধাদজ্জুনস্য চ বিক্রমাৎ । যমা-  
 ত্যাং ভীমসেনাচ্চ ভযং মে তাত্ জয়তে ॥ ৬ ॥ অমানুষং ননুস্যেত্শ্রেজালং  
 বিততমস্তরা । ন মে সৈন্যাস্তরিষ্যন্তি ততঃ ক্রোশামি সঞ্জয় ॥ ৭ ॥ দর্শনীযো মনস্বী  
 চ লক্ষ্মীবান্ ব্রহ্মবর্চসী । মেধাবী সুরূতপ্রজ্ঞো ধর্মাঙ্গা পাণ্ডুনন্দনঃ ॥ ৮ ॥ মিত্রা-  
 মাতৈ্যঃ সুসম্পন্নঃ সম্পন্নো যুদ্ধযোজকৈঃ । ভ্রাতৃভিঃ শ্বশুরৈর্বীরৈরুপপন্নো মহা-  
 রথৈঃ । ধৃত্য চ পুরুষব্যাসৌ নৈভৃত্যেন চ পাণ্ডবঃ ॥ ৯ ॥ অনৃশংসো বদান্যশ্চ  
 হ্রীমান্ সত্যপরাক্রমঃ । বহুশ্রুতঃ ক্রুতাত্মা চ বৃদ্ধসেবী জিতেন্দ্রিয়ঃ ॥ ১০ ॥ তং সর্ব-  
 গুণসম্পন্নং সমিদ্ধমিব পাবকম্ । তপস্তমিব কো মন্দঃ পতিষ্যতি পতঙ্গবৎ । পাণ্ড-  
 বাগ্নিমনার্য্যং মুমূর্ষুর্নর্ফচেতনঃ ॥ ১১ ॥ তমুরূচঃ শিখী রাজা মিথ্যোপচরিতো  
 মযা । মন্দানাং মম পুত্রাণাং যুদ্ধেনাস্তং করিষ্যতি ॥ ১২ ॥ তৈরযুদ্ধং সাধু মন্যে  
 কুরবস্তমিবোধত । যুদ্ধে বিনাশঃ কুৎসস্য কুলস্য ভবিতা ধুবম্ ॥ ১৩ ॥ এষা মে  
 পরমা বুদ্ধির্যযা শাম্যতি মে মনঃ । যদি ত্বযুদ্ধমিচ্ছং বো বযং শাষ্ট্যে যতা-  
 মহে ॥ ১৪ ॥ ন তুনঃ ক্লিষ্ট্যমানান্ বৈ উপেক্ষেত যুধিষ্ঠিরঃ । জুগুপসতি হৃদম্মেণ  
 মামেবোদ্दिश्य কারণম্ ॥ ১৫ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি যানসন্ধিপর্বণি ধৃতরাষ্ট্রবাক্যে ত্রিপঞ্চাশ-  
 ভ্রমোঃধ্যায়ঃ ॥ ৫৩ ॥



সঞ্জয় উবাচ । এবমেতম্মহারাজ যথা বদসি ভারত । যুদ্ধে বিনাশঃ কুলস্য  
 গাণ্ডীবেন প্রদৃশ্যতে ॥ ১ ॥ ইদন্ত নাভিজানামি তব ধীরস্য নিত্যশঃ । যৎ  
 পুত্রবশমাগচ্ছেস্তত্ত্বজ্জঃ সব্যসাচিনঃ ॥ ২ ॥ নৈষ কালো মহারাজ তব শশ্বৎকৃতা-  
 গসঃ । স্বযা হেবাদিতঃ পার্থা নিকৃতা ভরতর্ষভ ॥ ৩ ॥ পিতা শ্রেষ্ঠঃ সুহৃদ্বশ্চ  
 সম্যক্ প্রণিহিতাত্মবান্ । আশ্বেযং হি হিতং তেন ন দ্রোক্ষা গুরুরুচ্যতে ॥ ৪ ॥  
 ইদং জিতমিদং লক্ষ্মিতি শ্রদ্ধা পরাজিতান্ । দ্যুতকালে মহারাজ স্মযসে স্ম

कुमारवत् ॥ ५ ॥ परुषाण्युच्यमानांश्च पुरा पार्थान्पेक्षसे । क्लृप्तं राज्यं  
जयन्तीति प्रपातं नानुपश्यासि ॥ ७ ॥ पितृयं राज्यं महाराज कुरुरस्ते.सजा-  
ह्लाः । अथ वीरैर्जिज्ञतामूर्ध्वीमथिलाप्रत्यपद्यथाः ॥ १ ॥ बाह्वीर्याज्जिता  
भूमिस्तव पाथैर्निवेदिता । मयेदं कृतमित्येव मन्यसे राजसत्तम ॥ ८ ॥ अस्तान्  
गन्धर्वराजेन मज्जते ह्यग्नवेहस्तसि । आनिनाय पुनः पार्थः पुत्रांस्ते राजस-  
त्तम ॥ ९ ॥ कुमारवत् स्वयसे द्यूते विनिरूतेषु यत् । पाण्डवेषु वनं राजन्  
प्रव्रजत्सु पुनःपुनः ॥ १० ॥ प्रवर्षतः शरव्रातान्ज्जूनस्य शितान् वहन् । अप्य-  
र्वा विशुष्येयुः किं पुनर्मांसस्योनयः ॥ ११ ॥ अस्यतां फाल्गुनः श्रेष्ठो गाण्डीव  
धनुषां वरम् । केशवः सर्वभूतानां चक्राणां सुदर्शनम् । वानरो रोचमानश्च  
केतुः केतुमतां वरः ॥ १२ ॥ एवमेतानि स रथो वहन् श्वेतहयो रणे । क्षय-  
यिष्यति नो राजन् कालचक्रमिवोद्यतम् ॥ १३ ॥ तस्याद्य वसुधा राजन् निधि-  
ला भरतर्षभ । यस्य भीमाज्जूनो योधो स राजा राजसत्तमः ॥ १४ ॥ तथा  
भीमहंतप्रायां मज्जन्तीं तव बाहिनीम् । दुर्येयाधनमुखा दृष्ट्वा क्षयं यास्यन्ति  
कौरवाः ॥ १५ ॥ न हि भीमभयान्नीता लप्स्यन्ति विजयं विभो । तव पुत्रो महा-  
राज राजानश्चानुसारिणः ॥ १६ ॥ मत्स्यास्तुामद्य नार्क्षन्ति पाण्डालाश्च सकैकयाः ।  
शाल्वेषाः शरसेनाश्च सर्वे ह्यामवजानते ॥ १७ ॥ पार्थं ह्येते गताः सर्वे वीर्या-  
ज्ज्ञास्तस्य धीमतः । तन्न्या ह्यस्य विरुध्यन्ते तव पुत्रैः सदैव ते ॥ १८ ॥ अनर्हानेव  
तु वधे धर्मयुक्तान् विकर्मणाः । योश्चकेशयं पाण्डुपुत्रान् यो विद्वेक्ष्यधुनापि  
वै ॥ १९ ॥ सर्वोपायैर्नियन्तव्यः सानुगः पापपुरुषः । तव पुत्रो महाराज नानु-  
शोचितुमर्हसि । द्यूतकाले मया चोक्तं विदुरेण च धीमता ॥ २० ॥ यदिदं ते विल-  
पितं पाण्डवान् प्रति भारत । अनीशेनेव राजेन्द्र सर्वमेतन्निरर्थकम् ॥ २१ ॥

इत्युद्योगपर्वणि यानसङ्घिपर्वणि सङ्घषवाक्ये चतुःपञ्चाश-

तमोऽध्यायः ॥ ५४ ॥



दुर्येयाधन उवाच । न भेतव्यं महाराज न शोच्या भवता वयम् । समर्थाः स्म  
परान्नाजन् विजेतुं समरे विभो ॥ १ ॥ वने प्रव्रजितान् पार्थान् यदायामधु-  
सूदनः । महता बलचक्रेण परराष्ट्रावमर्दिना ॥ २ ॥ केकया धृष्टकेतुश्च धृष्टद्यूम्नश्च  
पार्षतः । राजानश्चानुयुः पार्थान् वहवोहन्येहनुषायिनः ॥ ३ ॥ इन्द्रप्रस्थस्य चादृ-  
रां समाजग्नूर्महारथाः । व्यगर्हयंश्च सङ्गम्य भवन्तुं कुरुतिः सह ॥ ४ ॥ ते युधि-

ऋषिमासीन्मज्जिनैः प्रतिवासितम् । कुरुप्रधानाः संहृत्य पर्युपासत भारत ॥ ५ ॥  
 प्रत्यादानं राज्यस्य कार्यमुचूर्नराधिपाः । भवतः सान्नुवन्मस्य समुच्छेदं चिकी-  
 र्षवः ॥ ६ ॥ श्रद्धा चैव न योज्ज्यास्तु तीक्ष्णद्रोणरूपपास्तदा । ज्वातिक्वथयद्राजन्  
 तीतेन भरतर्षभ ॥ ७ ॥ न नः श्वास्यन्ति समये पाण्डवा इति ने मतिः । समुच्छेदं  
 हि नः कुरुक्षेत्रं वासुदेवश्चिकीर्षति ॥ ८ ॥ अत्रे च विदुरात् सर्वे यूयं वध्या महा-  
 अयनः । धृतराष्ट्रस्तु धर्मज्ञो न वध्यः कुरुसन्तमः ॥ ९ ॥ समुच्छेदं कुरुक्षेत्रं नः कुरु-  
 तात जनार्दनः । एकराज्यं कुरुक्षेत्रं च चिकीर्षति युधिष्ठिरे ॥ १० ॥ तत्र किं  
 प्राप्नुकालं नः प्रणिपातः पलायनम् । प्राणान् वा संपरित्यज्य प्रतियुध्यामहे  
 परान् ॥ ११ ॥ प्रतियुद्धे तु नियतः स्यादस्माकं पराजयः । युधिष्ठिरस्य सर्वे हि  
 पार्थिवो वशवर्तिनः ॥ १२ ॥ विरक्तुराष्ट्राश्च वयं मित्राणि कुपितानि नः । धिक्-  
 कृताः पार्थिवैः सर्वैः स्वजनेन च सर्वशः ॥ १३ ॥ प्रणिपाते न दोषोऽस्ति  
 मन्दिनः शाश्वतीः समाः । पितरं ह्येव शोचामि प्रज्जानेत्रं जनाधिपम् । म-  
 कृते दुःखमापन्नं क्लेशं प्राप्नुमनस्तकम् ॥ १४ ॥ कृतं तव पुत्रैश्च परेषामव-  
 रोधनम् । मत्प्रियार्थं पुत्रैर्वैतत् विदितं ते नरोत्तम ॥ १५ ॥ ते राज्ञो  
 धृतराष्ट्रस्य सामात्यस्य महारथाः । वैरं प्रतिकरिष्यन्ति कुलोच्छेदेन पाण्ड-  
 वाः ॥ १६ ॥ ततो द्रोणोऽब्रवीद्धीमः रूपो द्रोणिश्च भारत । महा मां महतीं  
 चिन्तामाश्रितं व्यथितेन्द्रियम् ॥ १७ ॥ अभिद्रुक्ताः परे चेन्नो न भेतव्यं परस्तप ।  
 असमथाः परे जेतुमस्मान् युधि समाश्रितान् ॥ १८ ॥ एकैकशः समर्थाः श्वा  
 विजेतुं सर्वपार्थिवान् । आगच्छन्तु विनेष्यामो दर्पमेषां शितैः शरैः ॥ १९ ॥  
 पुत्रैकेन हि तीक्ष्णेन विजिताः सर्वपार्थिवाः ॥ २० ॥ मृते पितर्यातिक्रुद्धो रथे-  
 नैकेन भारत । जयान् सुवहूँस्तेषां संरक्तः कुरुसन्तमः । ततस्ते शरणं जग्मू-  
 र्देवव्रतमिमं भयात् ॥ २१ ॥ स तीक्ष्णः सुसमर्थोऽयमस्माभिः सहितो रणे । परान्  
 विजेतुं तस्मान्ने व्येतु तीर्त्तरतर्षभ ॥ २२ ॥ इत्येषां निश्चयो ह्यसीत् त-  
 कालेऽमिततेजसाम् । पुरा परेषां पृथिवी कुरुक्षेत्रादीशवर्तिनी ॥ २३ ॥ अस्मान्  
 पुनरमौ नाद्य समर्था जेतुमाहवे । हिनपक्काः परे ह्यद्य वीर्याहीनाश्च पाण्ड-  
 वाः ॥ २४ ॥ अस्मत्संस्था च पृथिवी वर्तते भरतर्षभ । एकार्थाः सुखदुःखेषु मया-  
 नीताश्च पार्थिवाः ॥ २५ ॥ अप्याग्निं प्रविशेयुस्ते समुद्रं वा परस्तप । मदर्थं पा-  
 र्थिवाः सर्वे तद्विद्धि कुरुसन्तम ॥ २६ ॥ उन्मत्तमिव चापि ह्यं प्रहसन्ति च दुःखितम् ।  
 विलपन्तुं बह्विधं तीतं परविकथने ॥ २७ ॥ एषां ह्येकैकशो राज्ञां समर्थः



पाण्डवान् प्रति । आश्वानं मन्यते सर्वो व्येतु ते भयमागतम् ॥ २८ ॥ जेतुं  
 समग्रां सेनां मे वासवोऽपि न शक्नुयात् । इन्द्रमक्षय्यकपेयं ब्रह्मणोऽपि स्व-  
 द्भुवः ॥ २९ ॥ युधिष्ठिरः पुरं हिंसा पङ्कं ग्रामान् अयाचते । भीतो हि मामकां  
 सैन्यां प्रतावाच्छेव मे विभो ॥ ३० ॥ समर्थं मन्यसे यत्तु कुन्तीपुत्रं वृकोदरम् ।  
 तन्मिथ्या न हि मे क्रुत्स्नं प्रतावं वेत्सि भारत ॥ ३१ ॥ मत्समो हि गदायुद्धे  
 पृथिव्यां नास्ति कश्चन । नासीत् कश्चिदतिक्रान्तो भविता न च कश्चन ॥ ३२ ॥  
 युक्ते दुःखोऽपि तच्छाहं विद्यापारगतस्तथा । तन्माम् भीमान्मन्येतेत्या भयं मे  
 दिद्यते क्वचित् ॥ ३३ ॥ दुर्योधनसमो नास्ति गदायामिति निश्चयः । सक्वर्ष-  
 णस्य भद्रं ते यत्तुदैनमुपावसम् ॥ ३४ ॥ युद्धे सक्वर्षणसमो बले नास्त्यधिको  
 भुवि । गदाप्रहारं भीमो मे न जातु विषहेक्ष्यधि ॥ ३५ ॥ एकं प्रहारं यं  
 दद्यात् भीमाय रुषितो नृप । स एवैनं नयेद्वारः क्षिप्रं वैवस्वतक्षयम् ॥ ३६ ॥  
 ईच्छेयङ्क गदाहस्तं राजन् द्रक्षुं वृकोदरम् । सूचिरं प्रार्थितो ह्येष मम नित्यं  
 मनोरथः ॥ ३७ ॥ गदया निहतो ह्यजो मया पार्थो वृकोदरः । विशीर्णगात्रः  
 पृथिवीं परासुः प्रपतिष्यति ॥ ३८ ॥ गदाप्रहाराभिहतो हिमवानपि पर्वतः ।  
 सक्वर्षया विदीर्येत गिरिः शतसहस्रधा ॥ ३९ ॥ स चाप्येतद्विजानाति वासुदे-  
 वाङ्मनो तथा । दुर्योधनसमो नास्ति गदायामिति निश्चयः ॥ ४० ॥ तन्ते वृकोद-  
 रमयं भयं व्येतु महाहवे । व्यपनेष्याम्यहं ह्येनं मा राजन् विमना भव ॥ ४१ ॥  
 तस्मिन् मया हते क्षिप्रमङ्गूनं बहवो रथाः । तुल्यरूपा विशिष्टाश्च क्लृप्त्यस्ति  
 त्ररतर्षत ॥ ४२ ॥ भीष्मो द्रोणः रूपो द्रोणिः कर्णो भूरिश्रवास्तथा । प्राग्ज्योति-  
 याधिपः शल्यः सिङ्गुराजो जयद्रथः ॥ ४३ ॥ एकैक एषां शक्रस्तु इन्द्रं भारत  
 पाण्डवान् । समेतास्तु क्णैनेतामेष्यस्ति यमसादनम् ॥ ४४ ॥ समग्रा पार्थिवी  
 सेना पार्थमेकं धनञ्जयम् । कन्वादशक्रा निज्जैतुमिति हेतुर्न विद्यते ॥ ४५ ॥  
 शरत्रातैस्तु भीष्मेण शतशो निचितोऽवशः । द्रोणद्रोणिक्रुपैश्चैव गन्ता पार्थो  
 यमक्षयम् ॥ ४६ ॥ पितामहोऽपि गाक्षेयः शास्तुनोरधि भारत । ब्रह्मर्षिसदृशः  
 जज्ञे देवैरपि दुरूत्सहः ॥ ४७ ॥ न हस्ता विद्यते वापि राजन् भीष्मस्य कश्चन ।  
 पित्राशुक्रः प्रसन्नेन नाकामस्तुं मरिष्यासि ॥ ४८ ॥ ब्रह्मर्षेः च त्ररद्विजान्द्रोणो  
 द्रोण्यामजायत । द्रोणाङ्गज्ञे महाराज द्रोणिश्च परमास्त्रवि ॥ ४९ ॥ रूपश्चा-  
 चार्यमुष्येऽहं यं महर्षेर्गोतमादपि । शरस्तुशोऽन्धवः श्रीमानवध्य इति मे मतिः ॥ ५० ॥  
 अयोनिजास्त्रयस्त्रुते पिता माताथ मातुलः । अश्वथाम्नो महाराज स च शूरः स्थितो

মম ॥ ৫১ ॥ সর্ব এতে মহারাজ দেবকল্পা মহারথাঃ । শক্রস্যাপি ব্যথাং  
 কুর্যাঃ সংযুগে ভরতর্ষভ ॥ ৫২ ॥ নৈতেষামজ্জুনঃ শক্র একৈকং প্রতি বীক্ষিতুম্ ।  
 সহিতাস্তৈ নরব্যাস্থা হনিষ্যন্তি ধনঞ্জয়ম্ ॥ ৫৩ ॥ ভীষ্মদ্রোণরূপাণাঞ্চ তুল্যঃ কর্ণো  
 মতো মম । অল্পজ্ঞাতশ্চ রামেণ মৎসমোহসীতি ভারত ॥ ৫৪ ॥ কুণ্ডলে রুচিরে  
 চাস্তাং কর্ণস্য সহজে শুভে । তে শচ্যর্থে মহেন্দ্রেণ যাচিতঃ স পরস্তপঃ । অমো-  
 ঘষা মহারাজ শক্ত্যা পরমভীষয়া ॥ ৫৫ ॥ তস্য শক্ত্যোপগূঢ়স্য কস্মাজ্জীবৈকান-  
 ঙ্গযঃ ॥ ৫৬ ॥ বিজযো মে ধুবং রাজন্ ফলং পাণাবিবাহিতম্ । অভিব্যক্তঃ পরে-  
 ষাঞ্চ কুৎস্নো ভুবি পরাজয়ঃ ॥ ৫৭ ॥ অহ্না হে কেন ভীষ্মোহয়মযুতং হস্তি ভারতঃ  
 তৎসমাশ্চ মহেষ্বাসা দ্রোণদ্রৌণিরূপা অপি ॥ ৫৮ ॥ সংশপ্তকানাং বৃন্দানি  
 ক্ষত্রিযাণাং পরস্তপ । অজ্জুনঃ বয়মস্মান্ বা নিহন্যাং কর্ণিকেতনঃ ॥ ৫৯ ॥ তঞ্চাল-  
 মিতি মন্যন্তে সব্যসাচিবধে ধৃতাঃ । পার্থিবাঃ স ভবাংস্তেভ্যো হকস্মাদ্ব্যথতে  
 কথম্ ॥ ৬০ ॥ ভীমসেনে চ নিহতে কোহন্যো যুধ্যত ভারত । পরেষাং তন্মমা-  
 চক্ষু যদি বেথ পরস্তপ ॥ ৬১ ॥ পঞ্চ তে ভ্রাতরঃ সর্বে ধৃষ্টদ্যুম্নোহথ সাত্যকিঃ ।  
 পরেষাং সপ্ত যে রাজন্ যোধাঃ সারং বলং মতম্ ॥ ৬২ ॥ অস্মাকন্ত বিশিষ্টা  
 যে ভীষ্মদ্রোণরূপাদযঃ । দ্রৌণিরৈকর্তনঃ কর্ণঃ সোমদত্তোহথ বাহ্লিকঃ ॥ ৬৩ ॥  
 প্রাগ্জ্যোতিষাধিপঃ শল্য আবন্ত্যৌ চ জয়দ্রথঃ । দুঃশাসনো দুর্শ্মখশ্চ দুঃসহশ্চ  
 বিশাম্পতে ॥ ৬৪ ॥ শ্রুতায়ুশ্চিত্রসেনশ্চ পুরুমিত্রো বিবিংশতিঃ । শলো ভুরি-  
 শ্রবাশ্চোভো বিকর্ণশ্চ তবায়জঃ ॥ ৬৫ ॥ অক্ষৌহিন্যো হি মে রাজন্ দশৈকা  
 চ সমাহুতাঃ । সূ্যনাঃ পরেষাং সপ্তৈশ্চ কস্মান্মে স্যাৎ পরাজয়ঃ ॥ ৬৬ ॥ বলং  
 ত্রিগুণতো হীনং যোধ্যং প্রাহ বৃহস্পতিঃ । পরেভ্যস্ত্রিগুণা চেযং মম রাজমনী-  
 কিনি ॥ ৬৭ ॥ গুণহীনং পরেষাঞ্চ বহু পশ্যামি ভারত । গুণোদযং বহুগুণমা-  
 ছ্যনশ্চ বিশাম্পতে ॥ ৬৮ ॥ এতৎ সর্বং সমাজ্জায় বলাগ্র্যং মম ভারত । সূ্যনতাং  
 পাণ্ডবানাঞ্চ ন মোহং গন্তুমর্হসি ॥ ৬৯ ॥ ইত্যুক্ত্বা সঞ্জয়ং ভূযঃ, পর্যাপৃচ্ছত  
 ভারত । বিধিৎসুঃ প্রাপ্তকালানি জ্ঞাত্বা পরপূরঞ্জয়ঃ ॥ ৭০ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি যানসন্ধিপর্বনি দুর্যোধনবাক্যে পঞ্চপঞ্চাশ-  
 ত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫৫ ॥



দুর্যোধন উবাচ । অক্ষৌহিনীঃ সপ্ত লক্ষা রাজভিঃ সহ সঞ্জয় । কিং স্বিদি-  
 ছতি কৌন্তেযো যুদ্ধপ্রেক্ষুর্যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ১ ॥ সঞ্জয় উবাচ । অতীব মুদিতো রাজন্

युक्त्रेणसुर्धुधिष्ठिरः । भीमसेनाङ्गुनौ चोत्तो षमावपि न विभ्यतः ॥ २ ॥ रथस्रु  
दिव्यं कौश्लेयः सर्वा विभ्राजयन्दिशः । मन्त्रं जिज्ञासमानः सन् वीभ्रतःसुः समयो-  
जयत् ॥ ३ ॥ तमपश्याम सन्नङ्गं मेघं विद्युद्वृतं यथा । समस्तां सर्गतिध्याय  
हृष्यामार्णोहृत्यतावत ॥ ४ ॥ पूर्वकपनिदं पश्य वयं जेष्याम सङ्घय । वीभ्र-  
सुर्धुमां यथोवाच तथावैम्यहमप्युत ॥ ५ ॥ दुर्योधन उवाच । प्रशंसस्यतिन-  
क्तंस्तान् पार्थानक्वपराजितान् । अङ्गुनस्य रथे ब्रुहि कथमश्वाः कथं ध्वजाः ॥ ६ ॥  
सङ्घय उवाच । भौमनः सह शक्रेण बहूचित्रं विशाम्पते । कृपाणि कल्पयामास ह्यृष्टा  
क्वात्रा समं विभो ॥ ७ ॥ ध्वजे हि तस्मिन्प्राणि चक्रुस्ते देवमायया । महाधनानि दिव्यानि  
महासि च लघूनि च ॥ ८ ॥ भीमसेनानुरोधाय हनुमान्मारुताञ्जः । आञ्जप्रति-  
कृतिं तस्मिन् ध्वज आरोपयिष्यति ॥ ९ ॥ सर्वा दिशो योजनमात्रमसुरं स तिर्य्य-  
गूर्द्धं क्रुरोधवै ध्वजः । सङ्गत्यसौ तरुभिः संवृतोऽपि तथा हि माया विहिता  
भौमनेन ॥ १० ॥ यथाकाशे शक्रधनुः प्रकाशते न चैकवर्णं न च वेद्मि किम्  
तत् । तथा ध्वजो विहितो भौमनेन बह्वाकारं दृश्यते कृपमस्य ॥ ११ ॥ यथाग्नि-  
धूमो दिवमेति रूक्षा वर्णान् विभ्रतैजसांश्चित्रकृपान् । तथा ध्वजो विहितो  
भौमनेन न चेन्द्रो भविता नोत रोधः ॥ १२ ॥ श्वेतास्तस्मिन् वातवेगाः  
सदश्वा दिव्या युक्ताश्चित्ररथेन दत्ताः । शतं यन्त्रं पुर्याते नित्यकालं हतं हतं  
दत्तवरं पुरस्तात् ॥ १३ ॥ तथा राज्ञो दस्तवर्णं बृहन्तो रथे युक्ता तासि तदीर्य्य-  
तुल्याः । ऋक्प्रथ्या भीमसेनस्य बाहा रथे वायोस्तुल्यावेगा बभूवुः ॥ १४ ॥ कल्पा-  
याङ्गासिद्धिरिचित्रपृष्ठा ब्राह्म दत्ताः प्रीयता फाल्गुनेन । ब्राह्मवैरस्यैश्वर्यैर्वि-  
शिष्टा मुदा युक्ताः सहदेवं बहसि ॥ १५ ॥ माद्रीपुत्रं नकुलं ह्यजमीत महेश्व-  
दत्ता हरयो वाजिमुख्याः । समा वायोर्बलवन्तुसुरसिनो बहसि वीरं वृत्रशत्रुं  
यथेश्वरम् ॥ १६ ॥ तुल्याशैचिर्बयसा विक्रमेण महाजवाश्चित्रकृपाः सदश्वाः ।  
सौभद्रादीन् द्रौपदेयान् कुमारान् बहस्यश्वा देवदत्ता बृहन्तुः ॥ १७ ॥

इत्युद्योगपर्वणि यानसङ्घिपर्वणि सङ्घयवाक्ये षट्पञ्चाशत्त-

मोहध्यायः ॥ ५७ ॥

—•••—

धृतराष्ट्र उवाच । कांसुत्र सङ्घयापश्याः प्रीत्यर्थेन समागतान् । ये योऽस्यन्ते  
पाण्डुवार्थे पुत्रस्य मम बाहिनीम् ॥ १ ॥ सङ्घय उवाच । मुख्यमङ्ककवृक्षीनामपश्यां कृष्ण-  
मागतम् । चेकितानं तत्रैव युयुधानं सात्यकिम् ॥ २ ॥ पृथगकौहिनीभ्यां तौ

पाण्डवानभिसंश्रितो । महारथो समाध्यातावुभौ पुरुषमानिनो ॥ ७ ॥ अक्को-  
हिण्याश्च पाण्डाल्यो दशतिस्तनयैवृतः । सत्यजिप्रमुथैवीरैर्धृष्टद्युम्नपुरो-  
गमैः ॥ ८ ॥ ऋपदो बर्द्धयन् मानं शिखण्डिपरिपालितः । उपायां सर्वसैन्यानां  
प्रतिच्छाद्य तदा वपुः ॥ ९ ॥ विराटः सह पुत्राभ्यां शस्त्रेनैवोत्तरेण च । सूर्य-  
दत्तादिभिर्वीरैर्म्मदिराश्वपुरोगमैः ॥ १० ॥ सहितः पृथिवीपालो ब्रातृतिस्तनयै-  
स्तथा । अक्कोहिण्यैव सैन्यानां वृतः पार्थं समाश्रितः ॥ ११ ॥ जारामन्निर्माणधश्च  
धृष्टकेतुश्च चेदिराट् । पृथक् पृथगनुप्राप्तौ पृथगक्कोहिणीवृतौ ॥ १२ ॥ कैकेया  
ब्रातरः पञ्च सर्वे लोहितकधजाः । अक्कोहिण्या परिवृताः पाण्डवानभिसं-  
श्रिताः ॥ १३ ॥ एतानेतावतस्तत्र तानपश्यं सभागतान् । ये पाण्डुवार्थे षोडशस्य  
स्ति धार्तराष्ट्रस्य बाहिनीम् ॥ १४ ॥ यो वेद मानुषं बृहं देवं गान्धर्वमासुरम् ।  
स तत्र सेनाप्रमुखे धृष्टद्युम्ने महामनाः ॥ १५ ॥ भीष्मः शान्तनवो राजन् भागः  
कुण्डः शिखण्डिनः । तं विराटो हनुसंघाता सार्द्धं मत्स्यैः प्रहारिभिः ॥ १६ ॥  
ज्येष्ठस्य पाण्डुपुत्रस्य भागो मद्राधिपो बली । तौ तु तत्राक्रुवन् केचिद्विषमौ  
नो मताविति ॥ १७ ॥ दुर्योधनः सहस्रतः सार्द्धं ब्रातृशतेन च । प्राच्याश्च  
दाक्षिणात्याश्च भीमसेनस्य भागतः ॥ १८ ॥ अङ्गुनस्य तु भागेन कर्णो वैक-  
र्त्तनो मतः । अश्वथामा विकर्णश्च सैन्धवश्च जयद्रथः ॥ १९ ॥ अशक्याश्चैव ये  
केचिं पृथिव्यां शूरमानिनः । सर्वास्तानङ्गुनः पार्थः कल्लयामास भागतः ॥ २० ॥  
महेष्वासो राजपुत्रा ब्रातरः पञ्च कैकयाः । कैकेयानेव भागेन क्रुद्धा षोडशस्यस्ति  
संयुगे ॥ २१ ॥ तेषामेव क्रुतो भागो मालवाः शाल्वकैकयाः । त्रिगर्तानाञ्च  
द्वौ मुखेयो यौ तौ संशुक्राविति ॥ २२ ॥ दुर्योधनस्युताः सर्वे तथा दुःशासनस्य  
च । सौभद्रेण क्रुतो भागो राजा टैव बृहद्वलः ॥ २३ ॥ द्रौपदेया महेश्वासो  
सुवर्णविकृतधजाः । धृष्टद्युम्नमुखा द्रोणमभियाम्यस्ति भारत ॥ २४ ॥ चेकितानः  
सोमदत्तं द्वैरथे योद्धामिच्छति । भोजस्त क्रुतवर्माणं युयुधानो युयुत्सति ॥ २५ ॥  
सहदेवस्तु माद्रेवः शूरः संक्रन्दनो युधि । स्वयं संकल्लयामास श्यालस्ते सुवला-  
ञ्जम् ॥ २६ ॥ उलकक्षैव कैतव्यां ये च सारस्वता गणाः । नकुलः कल्लयामास  
भागं मद्रवतीसुतः ॥ २७ ॥ ये चान्ये पार्थिवा राजन् प्रतुल्याम्यस्ति सङ्घरे ।  
समाह्वानेन तांश्चापि पाण्डुपुत्रा अकल्लयन् ॥ २८ ॥ एवमेषामनीकानि प्रवि-  
भक्तानि भागशः । वत्ते कार्यं स्वपुत्रस्य क्रियतां तदकालिकम् ॥ २९ ॥ धृतराष्ट्र  
उवाच । न सन्ति सर्वे पुत्रा मे मुदा दुर्द्वैतदेविनः । येषां युद्धं बलवता भीमेन

रथमुर्कनि ॥ २७ ॥ राजानः पार्थिवाः सर्वे प्रोक्त्रिताः कालधर्मणा । गाण्डीबाग्निं  
 प्रवेक्ष्यन्ति पतद्वा इव पावकम् ॥ २९ ॥ विद्रुतां बाहिनीं मन्ये क्रुतवैरैर्महा-  
 अग्निः । तां रणे केह्लुषास्यन्ति प्रभङ्गां पाण्डवैर्बुधि ॥ २८ ॥ सर्वे ह्यति-  
 रथाः शूराः कीर्तिमन्तः प्रतापिनः । सूर्यपम्बकयोस्तुल्यास्तुजसा समितिङ्गयाः ॥ २९ ॥  
 येषां युधिष्ठिरो नेता गोपुत्रो च मधुसूदनः । योधो च पाण्डवो वीरो सव्यसाचि-  
 वृकोदरो ॥ ३० ॥ नकुलः सहदेवश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः । सात्यकिर्द्रुपदशैश्च  
 धृष्टद्युम्नस्य चाञ्जः ॥ ३१ ॥ उन्नमोजाश्च पाण्डालेया युधामन्युश्च दूर्जयः ।  
 शिखण्डी क्लृपदेवश्च तथा वैराट्कुरुत्ररः ॥ ३२ ॥ काशयश्चेदयश्चैव मत्स्याः  
 सर्वे च सृङ्गयाः । विराट्पुत्रो बभ्रुश्च पाण्डालाश्च प्रभद्रकाः ॥ ३३ ॥ येषामि-  
 द्रोहप्यकामानां न हरेत् पृथिवीमिमाम् । वीराणां नरवीराणां ये तिन्युः  
 परतानपि ॥ ३४ ॥ तान् सर्वगुणसम्पन्नानमनुष्यप्रतापिनः । क्रोशतो मम  
 दुष्पुत्रो योद्धुमिच्छति सृङ्गय ॥ ३५ ॥ दुर्योधन उवाच । उभो स्व एकजातीयौ  
 तथोभो भूमिगोचरौ । अथ कस्मात् पाण्डवानामेकतो मन्यसे जयम् ॥ ३६ ॥  
 पितामहश्च द्रोणश्च रूपं कर्णश्च दूर्जयम् । जयद्रथं सोमदत्तमश्वथामानमेव च ॥ ३७ ॥  
 सुतेजसो महेश्वसानिद्रोहपि सहितोहमरैः । अशक्रः समरे जेतुं किं  
 पुनस्तुत पाण्डवाः ॥ ३८ ॥ सर्वे च पृथिवीपाला मदर्थे तात पाण्डवान् । आर्याः  
 शस्त्रभृतः शूराः समर्थाः प्रतिवाधितुम् ॥ ३९ ॥ न मामकान् पाण्डवास्तु समथाः  
 प्रतिवीक्षितुम् । पराक्रान्तो ह्यहं पाण्डून् सपुत्रान् योद्धुमाहवे ॥ ४० ॥ मत्प्रियं  
 पार्थिवाः सर्वे ये चिकीर्षन्ति भारत । ते तानावारयिष्यन्ति ऋणेषानिव तद्वना ॥ ४१ ॥  
 महता रथवंशेन शरजालैश्च मामकैः । अभिद्रुता तविष्यन्ति पाण्डालाः पाण्ड-  
 वैः सह ॥ ४२ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । उन्नत इव मे पुत्रो बिलपतोय सृङ्गय । न हि  
 शक्नो रणे जेतुं धर्मराजं युधिष्ठिरम् ॥ ४३ ॥ जानाति हि यथा भीष्मः पाण्ड-  
 वानां यशस्विनाम् । बलवतां सपुत्राणां धर्मज्ञानां महान्नाम् ॥ ४४ ॥ यतो  
 नारोचयदयं विग्रहं तैर्महाअग्निः । किञ्च सृङ्गय मे बुधिं पुनस्तुषां विचेष्टि-  
 तम् ॥ ४५ ॥ कस्तांस्तुरश्विनो भूषः सन्दीपयति पाण्डवान् । अर्चिष्मतो महेश्व-  
 सान् हविषा पावकानिव ॥ ४६ ॥ सृङ्गय उवाच । धृष्टद्युम्नः सदैवैतान् सन्दीपयति  
 भारत । युध्यधमिति मातैर्भक्त युद्धान्तरतसन्तनाः ॥ ४७ ॥ ये केचिन् पार्थिवान्द्रु  
 धार्तराष्ट्रेण संवृताः । युद्धे समागमिष्यन्ति तुमुले शस्त्रसंकुले ॥ ४८ ॥ तान् सर्वा-  
 नाहवे क्रुक्कान् सान्नुवक्कान् समागतान् । अहमेकः समादास्ये तिमिर्मत्स्यानिबोद-

কাৎ ॥ ৪২ ॥ ভীষ্মং দ্রোণং রূপং কৰ্ণং দ্রৌণিং শল্যং সুযোধনম্ । এতাংশ্চাপি  
নিরোৎস্যামি বেলেব মকরালযম্ ॥ ৫০ ॥ তথা ক্রবন্তং ধৰ্ম্মাত্মা প্রাহ রাজা  
যুধিষ্ঠিরঃ । তব ধৈর্য্যঞ্চ বীর্য্যঞ্চ পাঞ্চালাঃ পাণ্ডবৈঃ সহ । সৰ্বে সমধিকৃতাঃ স্ম  
সংগ্রামামঃ সমুদ্ধর ॥ ৫১ ॥ জানামি স্বাং মহাবাহো ফলধৰ্ম্মে ব্যবস্থিতম্ ।  
সমর্থমেকং পর্যাাপ্তং কৌরবাণাং বিনিগ্রহে ॥ ৫২ ॥ পুরস্তাদুপঘাতানাং কৌর-  
বাণাং যুযুৎসতাম্ । ভবতা যদ্বিধাতব্যং তন্নঃ শ্রেয়ঃ পরন্তপ ॥ ৫৩ ॥ সংগ্রামাদ-  
পঘাতানাং ভগ্নানাং শরুণৈষিণাম্ । পৌরুষং দর্শয়ন্ শূরো যস্তিষ্ঠেদগ্রতঃ পুমান্ ।  
ক্রীণীযাত্তং সহস্ৰেণ ইতি নীতিনতাং মতম্ ॥ ৫৪ ॥ স ত্বং শূরশ্চ বীরশ্চ বিক্রা-  
ন্তশ্চ নরর্ষভ । ভযাৰ্ত্তানাং পরিত্রাতা সংযুগেষু ন সংশয়ঃ ॥ ৫৫ ॥ এবং ক্রবতি  
কৌন্তেযে ধৰ্ম্মাত্মনি যুধিষ্ঠিরে । ধৃক্‌দুয়ম্ উবাচেদং মাং বচো গতসাধসম্ ॥ ৫৬ ॥  
সর্বান্ জনপদান্ স্মৃত যোধা দুৰ্য্যোধনস্য যে । সবাঙ্কিকান্ কুবন্ ব্রুযাঃ প্রাতি-  
পীয়ান্ শরদ্বতঃ ॥ ৫৭ ॥ স্মৃতপুত্রং তথা দ্রোণং সহপুত্রং জঘদ্রথম্ । দুঃশাসনং বিক-  
ৰ্ণঞ্চ তথা দুৰ্য্যোধনং নৃপম্ । ভীষ্মঞ্চ বৃহি গত্বা ত্বমাশু গচ্ছত মাচিরম্ ॥ ৫৮ ॥ যুধি-  
ষ্ঠিরঃ সাধুনৈবাত্যুপেযো মা বো বদীদঙ্কুনো দেবগুপ্তঃ । রাজ্যং দাতুং ধৰ্ম্মরাজস্য  
তুৰ্ণং যাচধ্বং বৈ পাণ্ডবং লোকবীরম্ ॥ ৫৯ ॥ নৈতাদৃশো হি যোধোহস্তি পৃথি-  
ব্যামিহ কশ্চন । যথাবিধঃ সব্যসাচী পাণ্ডবঃ সত্যবিক্রমঃ ॥ ৬০ ॥ দেবৈর্হি সং-  
বৃতো দিব্যো রথো গাণ্ডীবধন্বনঃ । ন স জেযো মনুষ্যেণ মাস্ম কৃচ্চং মনো  
যুধি ॥ ৬১ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি যানসন্ধিপর্বনি সঞ্জয়বাক্যে সপ্তপঞ্চাশ-

ভমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫৭ ॥



ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । ফলতেজা ব্রহ্মচারীকৌমারাদপি পাণ্ডবঃ । তেন সংযুগমেঘ্যস্তি  
মন্দা বিলপতো মম ॥ ১ ॥ দুৰ্য্যোধন নিবর্ত্তস্ব যুদ্ধান্তরতসত্তমঃ । ন হি যুদ্ধং প্রশং-  
সস্তি সর্বাভস্মরিন্দম ॥ ২ ॥ অলমর্কং পৃথিব্যাস্তে সহামাত্যস্য জীবিতুং । প্রযচ্ছ  
পাণ্ডুপুত্রাণাং যথোচিতমরিন্দম ॥ ৩ ॥ এতন্ধি কুরবঃ সৰ্বে মন্যন্তে ধৰ্ম্মসংহিতম্ ।  
যত্বং প্রশান্তিং মন্যেথাঃ পাণ্ডুপুত্রৈর্মহাত্মভিঃ ॥ ৪ ॥ অঙ্গেনাং সমবেক্ষস্ব পুত্র  
স্বামেব বাহিনীম্ । জাত এষ তবাসু বস্তুস্ত্ব মোহান্নবুধ্যসে ॥ ৫ ॥ ন হহং যোদ্ধুমি-  
চ্ছামি নৈতদিচ্ছতি বাঙ্কিকঃ । ন চ ভীষ্মো ন চ দ্রোণো নাশ্বথামা ন সঞ্জয়ঃ ॥ ৬ ॥  
ন সোমদত্তো ন শলো ন রূপো যোদ্ধুমিচ্ছতি । সত্যব্রতঃ পুরুমিত্রো জযো ভুরি-

শ্রবাস্তথা ॥ ৭ ॥ যেষু সম্পতি তিষ্ঠেযুঃ কুরবঃ পীড়িতাঃ পঠৈঃ । তে যুদ্ধং নাভি-  
 নন্দন্তি তত্ত্বভ্যং তাত রোচতাম্ ॥ ৮ ॥ ন ত্বং করোষি কামেন কর্ণঃ কারযিত্বা তব ।  
 দুঃশাসনশ্চ পাপাত্মা শকুনিশ্চাপি সৌবলঃ ॥ ৯ ॥ দুর্ঘেয়াধন উবাচ । নাহং  
 ভবতি ন দ্রোণে নাশ্বখান্নি ন সঞ্জয়েণ । ন বিকর্ণে ন কাষোজে ন ক্রুপে ন চ  
 বাহ্লিকে ॥ ১০ ॥ সত্যত্র তে পুরুষিত্রে ভুরিশ্রবসি বা পুনঃ । অন্যেষু বা তাবকেষু  
 ভারং কৃত্বা সমাস্রযে ॥ ১১ ॥ অহং তাত কর্ণশ্চ রণযজ্ঞং বিতত্য বৈ । যুদ্ধিষ্ঠিরং  
 পশুং কৃত্বা দীক্ষিতৌ পুরুষষভৌ ॥ ১২ ॥ রথো বেদী সুরঃ খজ্রো গদা স্কৃ কবচং  
 সর্দং । চাতুর্হোত্রঞ্চ ধূর্য্যামে শরা দর্ভা ইবির্ঘশঃ ॥ ১৩ ॥ আত্মযজ্ঞেন নৃপতে  
 ইক্ষু বৈবস্বতং রণে । বিজিত্য স্বযমেঘ্যাবো হতামিত্রৌ শ্রিষাবৃতৌ ॥ ১৪ ॥  
 অহং তাত কর্ণশ্চ ভ্রাতা দুঃশাসনশ্চ মে । এতে বযং হনিষ্যামঃ পাণ্ডবান্ সমরে  
 ত্রযঃ ॥ ১৫ ॥ অহং হি পাণ্ডবান্ হত্বা প্রশাস্তা পৃথিবীমিমাম্ । মাং বা হত্বা  
 পাণ্ডুপুত্রা ভোক্তারঃ পৃথিবীমিমাম্ ॥ ১৬ ॥ ত্যক্তং মে জীবিতং রাজ্যং ধনং  
 সর্দঞ্চ পার্থিব । ন জাতু পাণ্ডবৈঃ সর্দঞ্চ বসেষমহমচ্যুত ॥ ১৭ ॥ যাবান্নি সূচ্যা-  
 স্তীক্ষ্ণায়া বিধেদগ্রেণ মারিষ । তাবদপ্যপরিত্যাজ্যং ভূমেনঃ পাণ্ডবান্ প্রতি ॥ ১৮ ॥  
 ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । সর্বান্ বস্তাত শোচামি ত্যক্তো দুর্ঘেয়াধনো গযা । যে মন্দমনু-  
 যাস্যধ্বং যান্তুং বৈবস্বতক্ষয়ম্ ॥ ১৯ ॥ কুরুণামিব যুথেষু ব্যাঘ্রাঃ প্রহরতাং বরাঃ ।  
 বরান্ বরান্ হনিষ্যন্তি সমেতান্ যুধি পাণ্ডবাঃ ॥ ২০ ॥ প্রতীপমিব মে ভাতি  
 যুযুধানেন ভারতী । ব্যস্তা সীমন্তিনী গ্রস্তা প্রমৃষ্টা দীর্ঘবাহুনা ॥ ২১ ॥ সংপূর্ণং  
 পূরণম্ ভূষো বলং পার্থস্য মাধবঃ । শৈনেযঃ সমরে স্থাতা বীজবৎ প্রবপন্ শরা-  
 ন্ ॥ ২২ ॥ সেনামুখে প্রযুদ্ধানাং ভীমসেনো ভবিষ্যতি । তং সর্বে সংশ্রিষ্যন্তি  
 প্রাকারমকুতোভয়ম্ ॥ ২৩ ॥ যদা দ্রক্ষ্যসি ভীমেন কুঞ্জরান্ বিনিপাতিতান্ ।  
 বিশীর্ণদন্তান্ গির্য্যাতান্ ভিন্নকুন্তান্ সশোণিতান্ ॥ ২৪ ॥ তানভিপ্রেক্ষ্য সং-  
 গ্রামে বিশীর্ণানিব পর্বতান্ । ভীতো ভীমস্য সংস্পর্শাৎ স্মর্তাসি বচনস্য মে ॥ ২৫ ॥  
 নিদংকং ভীমসেনেন সৈন্যং হতরথদ্বিপম্ । গতিমগ্নেব প্রেক্ষ্য স্মর্তাসি বচনস্য  
 মে ॥ ২৬ ॥ মহদ্বো ভষমাগামি ন চেচ্ছাম্যথ পাণ্ডবৈঃ । গদয়া ভীমসেনেন  
 হতাঃ শমমুপৈষ্যথ ॥ ২৭ ॥ মহাবনমিব ছিন্নং যদা দ্রক্ষ্যসি পাতিতম্ । বলং  
 কুরুণাং ভীমেন তদা স্মর্তাসি মে বচঃ ॥ ২৮ ॥ বৈশম্পায়ন উবাচ । এতাবদুক্রু  
 রাজা তু সর্বাংস্তান্ পৃথিবীপতীন্ । অন্নুভাষ্য মহারাজ পুনঃপপ্রচ্ছ সঞ্জয়ম্ ॥ ২৯ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি যানসন্ধিপর্বণি ধৃতরাষ্ট্রবাক্যেহৃৎপঞ্চাশত্ত-

মোহধ্যায়ঃ ॥ ৫৮ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । यदब्रुवात् महात्मानो वासुदेवधनञ्जयो । तन्मे ब्रूहि महा-  
 प्राञ्ज शुश्रूषे वचनं तव ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । शृणु राजन् यथा दृष्टो मया क्रुष्ण-  
 धनञ्जयो । उच्यतेऽपि यद्दीरो तत्रे वक्ष्यामि भारत ॥ २ ॥ पदाङ्गुलीरभिप्रे-  
 क्तं प्रयतोऽहं कृताङ्गलिः । शुक्लान्तं प्राविशं राजमाख्यातुं नरदेवयोः ॥ ३ ॥  
 नैवाभिमन्युर्न यमो तं देशमभियान्ति वै । यत्र क्रुष्णे च क्रुष्णे च सत्यतामा च  
 तामिनी ॥ ४ ॥ उभौ मध्वासवकीवावुभौ चन्दनकषितौ । सगुणो वरवश्रो तु  
 दिव्याभरणभूषितौ ॥ ५ ॥ नैकरत्नविचित्रस्त काङ्कनं महदासनम् । विविधासुरणा-  
 स्तीर्णं यत्रासातामरिन्दमौ ॥ ६ ॥ अङ्गुनोऽसङ्गो पादौ केशवस्योपलक्ष्ये ।  
 अङ्गुनस्य च क्रुष्णयां सत्यायाश्च महात्मानः ॥ ७ ॥ काङ्कनं पादपीठस्तु पार्थो मे  
 प्रादिशत् पदा । तदहं पाणिना स्पृष्ट्वा ततो भ्रुवावुपाविशम् ॥ ८ ॥ उर्ध्वरेख-  
 तलो पादौ पार्थस्य शुभलक्षणौ । पादपीठादपहतौ तत्रापश्यमहं शुभौ ॥ ९ ॥  
 श्यामौ बृहस्तो तरुणो शालकृन्नाविवोदागतौ । एकसनगत्तौ दृष्ट्वा भयं मां  
 महदाविशत् ॥ १० ॥ इन्द्रविष्णुसमावेतौ मन्दात्रा नावबुध्यते । संश्रयाद्दोष-  
 तीम्नाभ्यां कर्णस्य च विकथनात् ॥ ११ ॥ निदेशस्त्याविमो यस्य मानसस्तस्य से-  
 स्यते । सकृन्ने धर्मराजस्य निश्चयो मे तदाभवत् ॥ १२ ॥ सत्कृतश्चान्नपाना-  
 भ्यामाच्छ्रमो लक्षसत्क्रियः । अङ्गलिं मुद्गिं सक्त्वा तौ मन्देशमचोदयम् ॥ १३ ॥  
 धनुर्गुणकिणाक्षेण पाणिना शुभलक्षणम् । पादमानमयन् पार्थः केशवं मनचो-  
 दयत् ॥ १४ ॥ इन्द्रकेतुरिवोथाय सर्वाभरणभूषितः । इन्द्रवीर्योपमः क्रुष्णः सं-  
 विष्टो माभ्यभाषत ॥ १५ ॥ वाचं संवदतां श्रेष्ठो ह्लादिनीं वचनक्षमाम् । त्रा-  
 सनीं धार्तराष्ट्राणां मृदुपूर्वां सुदारुणाम् ॥ १६ ॥ वाचं तां वचनाहस्य शिखा-  
 क्षरसमन्विताम् । अश्रीषमहमिर्कार्थां पश्चाद्ददयशोषणीम् ॥ १७ ॥ वासुदेव उवाच ।  
 सञ्जयेदं वचो ब्रूया धृतराष्ट्रं मनीषिणम् । कुरुमुख्यस्य तीम्नस्य द्रोणस्यापि च  
 शृणुतः ॥ १८ ॥ आवयोर्वचनात् सूत ज्योष्ठानप्याभिवादयन् । यवीवमश्च कुशलं  
 पश्चात्पृच्छेवमुत्तरम् ॥ १९ ॥ यजध्वं विविधैर्वज्रैर्विप्रेभ्यो दत्तदक्षिणाः । पुत्रै-  
 र्दारैश्च मोदध्वं महद्वो भयमागतम् ॥ २० ॥ अर्थास्त्यजत पात्रेभ्यः सूतान्  
 प्राप्नुत कामजान् । प्रियं प्रियेभ्यश्चरत राजा हि हरते जये ॥ २१ ॥ ऋणमेतत्  
 प्रवृद्धं मे हृदयाम्नापसर्पति । यद्वोविन्देति चक्रोश क्रुष्ण मां दूरवासिनम् ॥ २२ ॥  
 तेजोमयं दुराध्वं गाण्डीवं यम्य कार्मुकम् । मद्दितीयेन तेनेह वैरं वः सव्य-  
 साचिना ॥ २३ ॥ मद्दितीयं पुनः पार्थं कः प्रार्थयितुमिच्छति । यो न कालपरी-



तः स्यादपि साक्षात् पुरन्दरः ॥ २४ ॥ बाह्यभ्यामुद्धहेद्धूमिं दहेत् क्रुद्ध इमाः  
 प्रजाः । पातयेन्निदिवाद्देवान् योऽज्जूनं समरे जयेत् ॥ २५ ॥ देवासुरमनु-  
 श्येषु यक्षगन्धर्वभोगिषु । न तं पश्याम्यहं युद्धे पाण्डवं योऽभ्यास्रजे ॥ २६ ॥  
 यत्तद्विराटनगरे श्रयते महदद्भुतम् । एकस्य च बहूनां पर्याप्तं तन्निदर्शनम् ॥ २७ ॥  
 एकेन पाण्डुपुत्रेण विराटनगरे यदा । भग्नाः पलायत दिशः पर्याप्तं तन्निदर्श-  
 नम् ॥ २८ ॥ बलं वीर्यं तेजश्च शीघ्रता लघुहस्तता । अविषादश्च धैर्यं च  
 पार्थान्नान्यत्र विद्यते ॥ २९ ॥ इत्यब्रवीद्धृषीकेशः पार्थमुद्धर्षयन् गिरा । गज्जन्  
 समवर्षीव गगने पाकशासनः ॥ ३० ॥ केशवस्य वचः श्रुत्वा किरीटी श्वेतवाहनः ।  
 अज्जूनस्तमहदाक्यमब्रवीद्रोमहर्षणम् ॥ ३१ ॥

इत्युद्योगपर्वणि वानसङ्घिपर्वणि सङ्गयवाक्ये एकौनवष्टि-

तमोऽध्यायः ॥ ५२ ॥



वैशम्पायन उवाच । सङ्गयस्य वचः श्रुत्वा प्रज्जाचक्कूर्नरेश्वरः । ततः संख्यातुमा-  
 रेते तद्वचो गुणदोषतः ॥ १ ॥ प्रसंख्याय च सौम्येण गुणदोषान् विचक्षणः ।  
 यथावन्मति तद्वेन जयकामः सूतान् प्रति ॥ २ ॥ बलाबलं विनिश्चित्य याथात-  
 थ्येन बुद्धिमान् । शक्तिः संख्यातुमारैते तदा वै मनुजाधिपः ॥ ३ ॥ देव-  
 मानुषयोः शक्त्या तेजसा चैव पाण्डवान् । कुक्कन् शक्त्यान्नतरया दूर्व्योधनमथा-  
 ब्रवीत् ॥ ४ ॥ दूर्व्योधनेषं चिन्ता मे शश्वन्न व्युपशाम्यति । सत्यं हेतदहं मन्ये  
 प्रत्यक्षं नानुमानतः ॥ ५ ॥ आत्मजेषु परं स्नेहं सर्वभूतानि कुर्वते । प्रियाणि  
 चैवात् कुर्वन्ति यथाशक्ति हितानि च ॥ ६ ॥ एवमेवोपकर्तृणां प्रायशो लक्ष्या-  
 नहे । इच्छन्ति बहलं सन्तः प्रतिकर्तुं महं प्रियम् ॥ ७ ॥ अग्निः साचिव्यकर्ता  
 स्यात् खाण्डवे तं क्रुतं स्मरन् । अज्जूनस्यापि भीमेऽस्मिन् कुरूपाण्डुसमाग-  
 मे ॥ ८ ॥ ज्ञातगृह्याभिपन्नाश्च पाण्डवानामनेकशः । धर्मादयः समेष्यन्ति समा-  
 हूता दिवोकसः ॥ ९ ॥ भीष्मद्रोणकृपादीनां त्रयादशानिस्मितम् । विरिक्षिष्यन्तः  
 संरुन्तं गमिष्यन्तीति मे मतिः ॥ १० ॥ ते देवैः सहिताः पार्था न शक्याः प्रति-  
 वीक्षितुम् । मानुषेण नरव्याघ्रा वीर्यवस्तोऽस्त्रपारगाः ॥ ११ ॥ दूरसदं यस्य  
 दिव्यं गाण्डीवं धनुर्बलम् । वारुणो चाक्षर्यो दिव्यो शरपुणो महेशुधी ॥ १२ ॥  
 वानरश्च ध्वजे दिव्यो निःसङ्गे धूमवदातिः । रथश्च चतुरन्तायां यस्य नास्ति समः  
 क्कितो ॥ १३ ॥ महामेघनिभश्चापि निर्घोषः श्रयते जनैः । महाशनिसमः शकः

शात्रवाणां भयङ्करः ॥ १४ ॥ यक्षप्रतिमान्मुषं वीर्ये कृत्स्नो लोको व्यवस्यति ।  
 देवानामपि जेतारं यं विदुः पार्थिवा रणे ॥ १५ ॥ शतानि पक्षं चैवेषून् यो  
 गृह्णन्मैत्रं दृश्याते । निमेषान्तरमात्रेण मुञ्चन् दूरं पातयन् ॥ १६ ॥ यमाह तीम्नो  
 द्रोणश्च रूपो द्रोणिस्तथैव च । मद्रराजस्तथा शलेया मध्यस्था ये च मानवाः ॥ १७ ॥  
 युद्धायावस्थितं पार्थं पार्थिवैरतिमान्मुषैः । अशक्यं रथशार्दूलं पराजेतुम-  
 रिन्दमम् ॥ १८ ॥ सदृशं बाह्वीर्येण कार्त्तवीर्यस्य पाण्डवम् । क्षिपत्येकेन वेगेन  
 पक्षं वाणशतानि यः ॥ १९ ॥ तमर्जुनं महेश्वरं महेश्वरोपेन्द्रविक्रमम् । निम्न-  
 मिव पश्यामि विमर्देऽस्मिन् महाभये ॥ २० ॥ इत्येवं चिन्तयन् कृत्स्नमहोरात्राणि  
 भारत । अनिद्रो निःसुखश्चास्मि कुरूणां समचित्तया ॥ २१ ॥ ऋषोदयोऽयं सुमहान्  
 कुरूणां प्रत्यूषस्थितः । अस्य चेत् कलहस्यास्तुः शमादन्यो न रिद्यते ॥ २२ ॥  
 शमो मे रोचते नित्यं पार्थिवास्तान् न विग्रहः । कुरूभ्यो हि सदा मन्ये पाण्ड-  
 वान् शक्तिमत्तरान् ॥ २३ ॥

इत्युद्देश्योगपर्वणि यानसङ्घिपर्वणि धृतराष्ट्र विवेचने षष्ठी-

तमोऽध्यायः ॥ ७० ॥



वैशम्पायन उवाच । पितुरेतद्वचः श्रुत्वा धार्तराष्ट्रोऽह्यमर्षणः । आधाय वि-  
 पुलं क्रोधं पुनरेवेदमब्रवीत् ॥ १ ॥ अशक्या देवसचिवाः पार्थाः सूर्यरिति यद्ध-  
 वान् । मन्यते तद्धयं व्येतु भवतो राजसत्तम ॥ २ ॥ अकामद्वेषसंयोगलोभ-  
 द्रोहाच्च भारत । उपेक्षया च भावानां देवा देवद्वनाप्नुवन् ॥ ३ ॥ इति द्वैपा-  
 यनो व्यासो नारदश्च महोत्तमाः । जामदग्न्यश्च रामो नः कथामकथयत् पुरा ॥ ४ ॥  
 नैव मान्मुषवद्देवा प्रवर्तन्ते कदाचन । कामालोभादनुक्रोशात् द्वेषाच्च भवत-  
 र्भवत् ॥ ५ ॥ यदि ह्यग्निश्च वायुश्च धूम इन्द्रोऽश्विनावपि । कामयोगात् प्रवर्तेरन्  
 न पार्था दुःखमाप्नुयुः ॥ ६ ॥ तस्मान्न भवता चिन्ता कार्थ्येषा स्यात् कथञ्चन ।  
 दैवेष्टपेक्षका ह्येते शश्वद्धावेषु भारत ॥ ७ ॥ अथ चेत् कामसंयोगात् द्वेषो  
 लोभश्च लक्ष्यते । देवेषु दैवप्रामाण्यान्मेषात् तद्विक्रमिष्यति ॥ ८ ॥ मयाभि-  
 मन्त्रितः शश्वज्जातवेदाः प्रशाम्यति । दिवङ्गुः सकलान् लोकान् परिक्षिप्य सम-  
 न्ततः ॥ ९ ॥ यद्वा परमकं तेजो येन युक्ता दिवोकसः । ममाप्यनुपमं भूयो  
 देवेभ्यो विद्धि भारत ॥ १० ॥ विदीर्यमाणां वसुधां गिरीणां शिखराणि च ।  
 लोकस्य पश्यातो राजन् स्थापयाम्यभिमन्त्रणात् ॥ ११ ॥ चेतनाचेतनस्यास्य जङ्ग-

মহাবরস্য চ । বিনাশায় সমুৎপন্নং মহাঘোরং মহাস্বনম্ ॥ ১২ ॥ অশ্ববর্ষঞ্চ  
 বায়ুঞ্চ শময়ামীহ নিত্যশঃ । জগতঃ পশ্যতোহভীক্ষুং ভূতানামলুকম্পয়া ॥ ১৩ ॥  
 স্তম্ভিতাস্বপ্নু গচ্ছন্তি মযা রথপদাতযঃ । দেবাসুরাণাং ভাবানামহমেকঃ প্রব-  
 ত্তিতা ॥ ১৪ ॥ অক্ষৌহিণীভির্ধান দেশান্ যামি কার্ষেণ কেনচিৎ । তত্রাস্থা মে  
 প্রবর্তন্তে যত্র যত্রাভিকামযে ॥ ১৫ ॥ ভয়ানকানি বিষয়ে ব্যালাদীনি ন সন্তি মে ।  
 মন্ত্রগুণানি ভূতানি ন হিংসন্তি ভয়ঙ্করাঃ ॥ ১৬ ॥ নিকামবর্ষী পঙ্কন্যো রাজন্  
 বিষযবাসিনাম্ । ধর্মিষ্ঠাশ্চ প্রজাঃ সর্বা ঈতয়শ্চ ন সন্তি মে ॥ ১৭ ॥ অশ্বিনাবথ  
 বায়ুগ্নী মরুদ্ভিঃ সহ বত্রহা । ধর্মশ্চৈব মযা দ্বিষ্টান্নোৎসহন্তেহভিরক্ষিতুম্ ॥ ১৮ ॥  
 যদি হেতে সমর্থাঃ স্যুর্নদ্বিষস্ত্রাতুনঙ্গসা । ন স্ম ত্রয়োদশসমাঃ পার্থা দুঃখমবা-  
 প্লযুঃ ॥ ১৯ ॥ .নৈব দেবা ন গন্ধর্বা নাসুরা ন চ রাক্ষসাঃ । শক্তাস্ত্রাতুং মযা  
 দ্বিষ্টং সত্যমেতদ্ববীমি তে ॥ ২০ ॥ যদভিধ্যাম্যহং শশ্বৎ শুভং বা যদি বাশুভম্ ।  
 নৈতদ্বিপন্নপূর্বং মে মিত্রেষ্ণরিষু চোভযোঃ ॥ ২১ ॥ ভবিষ্যতীদমিতি বা যদ্ববীমি  
 পরন্তপ । নান্যথাভূতপূর্বন্তুং সত্যবাগিতি মাং বিদুঃ ॥ ২২ ॥ লোকসাক্ষিকমে-  
 তন্মে নাহাঅ্যং দিক্ষু বিশ্রুতম্ । আশ্বাসনার্থং ভবতঃ প্রোক্তং ন শ্লাঘয়া নৃপ ॥ ২৩ ॥  
 ন হহং শ্লাঘনো রাজন্ ভূতপূর্বঃ কদাচন । অসদাচরিতং হ্যেতদ্বদাঙ্গানং প্রশং-  
 সতি ॥ ২৪ ॥ পাণ্ডবাংশ্চৈব মৎস্যাস্ত্ৰ পাঞ্চালান্ কৈকযৈঃ সহ । সাত্যকিং  
 বাসুদেবঞ্চ শ্রোতাসি বিজিতান্মযা ॥ ২৫ ॥ সারিতঃ সাগরং প্রাপ্য যথা নশ্যন্তি  
 সর্ষশঃ । তথৈব তে বিনঙ্ক্যন্তি মামাসাদ্য সহান্বযাঃ ॥ ২৬ ॥ পরা বুদ্ধিঃ পরং  
 তেজো বীর্যঞ্চ পরমং মম । পরা বিদ্যা পরো যোগো মম তেভ্যো বিশিষ্যতে ॥ ২৭ ॥  
 পিতামহশ্চ দ্রোণশ্চ রূপং শল্যঃ শলস্তথা । অস্ত্রেষু যৎ প্রজানন্তি সর্বং তন্মযি  
 বিদ্যতে ॥ ২৮ ॥ ইত্যুক্ত্বা সঞ্জয়ং ভূযঃ পর্যাপৃচ্ছত ভারত । জ্ঞাত্বা যুযুৎসুঃ কা-  
 র্য্যাণি প্রাপ্তকালমরিন্দমঃ ॥ ২৯ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি যানসন্ধিপর্বনি দুর্যোধনবাক্যে একষষ্টি-

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩১ ॥



বৈশম্পায়ন উবাচ । তথা তু পচ্ছস্তমতীব পার্থং বৈচিত্রবীর্যং তমচিন্তুষিহ্বা ।  
 উবাচ কর্ণো ধৃতরাষ্ট্রপুত্রং প্রহর্ষয়ন্ সংসদি কৌরবাণাম্ ॥ ১ ॥ মিথ্যা প্রতিজ্ঞায়  
 মযা যদস্রং রামাৎ রুতং ত্রক্ষপরং পুরস্তাৎ । বিজ্ঞায় তেনাস্মি তদৈবমুক্তস্তবা-  
 স্তুকালে প্রতিভাস্যতীতি ॥ ২ ॥ মহাপরাধে হ্যপি যত্র তেন মহর্ষিণাহং গুরুণা

च शशुः । शक्रः प्रदक्षुं ह्यपि तिग्मतेजाः समागरामप्यवनिं महर्षिः ॥ ७ ॥  
 प्रसादितं ह्यस्य मया मनोऽभूत् शुश्रूषया स्येन च पौरुषेण । तदस्ति चास्त्रं मम  
 सावशेषं तस्मात् समर्थेऽस्मि ममैष भारः ॥ ८ ॥ निमेषमात्रात्तुमृषिप्रसादम-  
 वाप्य पाषालककवमत्स्यान् । निहत्य पार्थान् सह पुल्रपोल्लैर्लोकानहं शस्त्रजि-  
 तान् प्रपत्स्ये ॥ ९ ॥ पितामहस्तिष्ठतु ते समीपे द्रोणश्च सर्वे च नरेन्द्रमुख्याः ।  
 यथा प्रधानेन बलेन गत्वा पार्थान् हनिष्यामि ममैष भारः ॥ ७ ॥ एवं क्रवस्तुं  
 तमुवाच भीष्मः किं कथसे कालपरीतवद्वे । न कर्ण जानासि यथा प्रधाने हते  
 हताःस्यर्धुतरास्तुपुत्राः ॥ १ ॥ यत्थाऽव दाहयता क्रुतं हि क्रुशद्वितीयेन धन-  
 ष्णयेन । श्रुत्वेव तत् कर्म निषस्तुमात्मा युक्तस्तुया वै सह वाक्कवेन ॥ ८ ॥ याष्वापि  
 शक्तिं त्रिंशोधिपस्ते ददौ महात्मा भगवान् महेश्वरः । तस्मीकृतां तां समरे  
 विशीर्णां चक्राहतां दक्ष्यसि केशवेन ॥ २ ॥ यस्ते शरः सर्पमुखो विभाति सदा-  
 ग्र्यमालैर्यर्महितः प्रयत्नात् । स पाण्डुपुत्रातिहतः शरौघैः सह ह्यया यास्यति कर्ण  
 नाशम् ॥ १० ॥ वाणस्य तौमस्य च कर्ण हस्ता किरीटिनं रक्षति वासुदेवः । यस्तुाद्-  
 शानाक्ष बलीयसाक्ष हस्ता रिपुणां तुमुले प्रगाढे ॥ ११ ॥ कर्ण उवाच । असंशयं  
 वृषिपतिर्यथोक्तस्तथा च भूयांश्च ततो महात्मा । अहं यदुक्तः परुषस्तु किंश्च  
 पितामहस्तस्य फलं शृणोतु ॥ १२ ॥ न्यस्यामि शस्त्राणि न जातु संख्ये पितामहो  
 दक्ष्यति मां सभायाम् । द्वयि प्रशास्ते तु मम प्रतावं दक्ष्यन्ति सर्वे भुवि भूमि-  
 पालाः ॥ १३ ॥ वैशम्पायन उवाच । इत्येवमुक्त्वाऽस महाधनुश्चान् हिवा सभां  
 स्वं भवनं जगाम । भीष्मस्तु दुर्योधनमेव राजन् नद्ये कुरूणां प्रहसन्नुवाच ॥ १४ ॥  
 सत्यप्रतिष्ठः किल सूतपुत्रस्तथा स भारं विषहेत कस्मात् । बृहं प्रतिवृह्य शिरां-  
 सि तिव्वा लोककृषं पश्यत भीमसेनात् ॥ १५ ॥ आवस्त्यकालिङ्गजयद्रथेषु चेदि-  
 ष्ठजे तिष्ठति बाह्निके च । अहं हनिष्यामि सदा परेषां सहस्रशचायुतशश्च षो-  
 धान् ॥ १६ ॥ यदैव रामे भगवत्यानिन्द्ये ब्रह्मक्रवाणः क्रुतवांस्तुदस्तम् । तदैव  
 धर्मश्च तपश्च नष्टं वैकर्तनस्याधमपुरूषस्य ॥ १७ ॥ तथोक्तवाक्ये नृपतीन्द्र भीष्मे  
 निष्कप्य शस्त्राणि गते च कर्णे । वैचित्रवीर्यस्य सूतोऽन्नबुद्धिदुर्योधनः शान्त-  
 नवः वभाषे ॥ १८ ॥

इत्युद्योगपर्वणि शानसक्तिपर्वणि कर्णादिवोक्ये द्विषक्ति-

तमोऽध्यायः ॥ ७२ ॥



दुर्योधन उवाच । सदृशानां मनुष्येषु सर्वेषां तुल्यजन्मानाम् । कथमेकास्तुत-  
 स्तेषां पार्थानां मन्यसे जयम् ॥ १ ॥ वयं तेह्यपि तुल्या वै वीर्येण च परा-  
 क्रमैः । समेन वयसा चैव प्रातिभेन श्रुतेन च ॥ २ ॥ अस्त्रेण बोधयोग्यास्तु  
 शीयुस्ते कौशले तथा । सर्वे अस्मज्जातीयाः सर्वे मानुषयोनयः । पितामह  
 विजानीषे पार्थेषु विजयं कथम् ॥ ३ ॥ नाहं भवति न द्रोणे न रूपे न च  
 बाह्निके । अन्येषु च नरेन्द्रेषु पराक्रम्य समारते ॥ ४ ॥ अहं वैकर्तनः कर्णे  
 द्रुपता दुःशासनश्च मे । पाण्डवान् समरे पृथु हनिष्यामः शितैः शरैः ॥ ५ ॥  
 ततो राजन् महायज्ञैर्विधैर्भूरिदक्षिणैः । ब्राह्मणांस्तुर्पयिष्यामो गोभिरश्वै-  
 र्धनेन च ॥ ६ ॥ यदा परिकरिष्यामि ऋणेषानिव तन्नुना । अतरित्रानिव जले वाह-  
 तिर्मामका रणे ॥ ७ ॥ पश्यन्तुस्ते परांस्तत्र रथनागसमाकुलान् । तदा दर्पं  
 विमोक्ष्यामि पाण्डवाः स च केशवः ॥ ८ ॥ विदुर उवाच । इह निःश्रेयसं प्राह-  
 र्बद्धा निश्चितदर्शिनः । ब्राह्मणस्य विशेषेण दमो धर्मः सनातनः ॥ ९ ॥ तस्य दानं  
 क्रमा सिद्धिर्यथावदुपपद्यते । दमो दानं तपो ज्ञानमधीतक्षान्नुवर्तते ॥ १० ॥  
 दमस्तेजो वर्द्धयति पवित्रं दम उन्नमम् । विपाप्मा वृद्धतेजाश्च पुरुषो विन्दते  
 महत् ॥ ११ ॥ क्रव्याद्व्य इव भूतानामदास्तेभ्यः सदा भयम् । तेषां प्रतिषेधार्थं  
 क्लृप्तं सृष्टं स्वयन्तुवा ॥ १२ ॥ आश्रमेषु चतुर्धाहर्दमनेवोक्तमं व्रतम् । तस्य  
 लिङ्गं प्रवक्ष्यामि येषां समुदयो दमः ॥ १३ ॥ क्रमा धृतिरहिंसा च समता सत्य-  
 माङ्गवम् । इन्द्रियाभिजयो धैर्यं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥ १४ ॥ अकार्पण्यमसं  
 रज्जुः सन्तोषः श्रद्धधानता । एतानि यस्य राजेन्द्र स दान्तः पुरुषः स्मृतः ॥ १५ ॥  
 कामो लोभश्च दर्पश्च मन्यनिद्रा विकथनम् । मान ईर्ष्या च शोकश्च नैतान् दान्तो  
 निषेवते ॥ १६ ॥ अजिह्वमशठं शुद्धमेतदान्तस्य लक्षणम् । अलोलुपस्तथास्नेहः  
 कामानामविचिञ्चिता । समुद्रकण्ठः पुरुषः स दान्तः परिकीर्तितः ॥ १७ ॥ सुवृद्धः शील-  
 सम्पन्नः प्रसन्नास्त्रविद्वेषः । प्राप्येह लोके सम्मानं सुगतिं प्रेत्य गच्छति ॥ १८ ॥  
 अन्धं यस्य भूतेभ्यः सर्वेषामन्धं यतः । स वै परिणतप्रज्जः प्रथ्यातो मनुजो-  
 त्तमः ॥ १९ ॥ सर्वभूतहितो मैत्रस्तस्मान्मोद्विजते जनः । समुद्र इव गन्धीरः  
 प्रज्जातृप्तः प्रशाम्यति ॥ २० ॥ कर्मणाचरितं पूर्वं सद्भिराचरितं यत् । तदेवा-  
 स्थाय मोदन्ते दान्ताः शमपरायणाः ॥ २१ ॥ नैककर्म्यं वा समास्थाय ज्ञानतृप्तो  
 जितेन्द्रियः । कालाकाङ्क्षी चरल्लोके ब्रह्मभूषाय क्लृते ॥ २२ ॥ शकुनीनामिवा-  
 काशे पदं नैवोपलभ्यते । एवं प्रज्जानतृप्तस्य मुनेर्बर्त्तनं दृश्यते ॥ २३ ॥

उत्सृज्य वा गृहान् वस्तु मोक्षमेवाभिमन्यते । लोकास्तुज्जोमयास्तस्य कर्मसु  
शान्तता दिवि ॥ २४ ॥

इत्युद्योगपर्वणि शानसङ्घिपर्वणि विदुरवाक्ये त्रिषष्टि-  
तमोऽध्यायः ॥ ७३ ॥

—•••—

विदुर उवाच । शकुनीनामिहार्थाय पाशं भुजवयोजयत् । कश्चिच्छाकुनिक-  
स्तात पूर्वेषामिति शुश्रूष ॥ १ ॥ तस्मिन् द्यौ शकुनौ बह्वौ युगपत् सहचारिणौ ।  
तावुपादाय तं पाशं जग्मतुः खचरावभौ ॥ २ ॥ तौ विहायनमाक्रान्तौ दृष्ट्वा  
शाकुनिकस्तदा । अन्वधावदनिर्विमो येन येन स्म गच्छतः ॥ ३ ॥ तथा तमन्वधा-  
वस्तुं मृगयुं शकुनार्थिनम् । आश्रमस्था मुनिः कश्चिद्दर्शाथ कृतार्हिकः ॥ ४ ॥ ताव-  
न्तुरीक्षगो शीघ्रमनुयातुं महीचरम् । श्लोकेनानेन कौरव्य पप्रच्छ स मुनि-  
स्तदा ॥ ५ ॥ विचित्रमिदमाश्चर्यं मृगहन् प्रतिभाति मे । प्लवमानो हि खचरो  
पदातिरनुधावसि ॥ ६ ॥ शाकुनिक उवाच । पाशमेकमुत्तावेतौ सहितौ हरंतौ  
मम । यत्र वै विवदिष्येते तत्र मे वशमेष्यतः ॥ ७ ॥ विदुर उवाच । तौ विवाद-  
मनुप्राप्तौ शकुनौ मृत्युसन्दिभौ । विगृह्य च सुदुर्द्धी पृथिव्यां समिपेततुः ॥ ८ ॥  
तौ युध्यमानौ संरक्षौ मृत्युपाशवशात्तुगौ । उपसत्यापरिज्जातो जग्राह मृगहा  
तदा ॥ ९ ॥ एवं ये ज्जातयोऽर्थेषु मिथो गच्छति विग्रहम् । तेऽमित्तवशमा-  
यास्ति शकुनाविव विग्रहात् ॥ १० ॥ संभोजनं संकथनं संप्रश्नोऽथ समा-  
गमः । एतानि ज्जातिकार्य्याणि न विरोधः कदाचन ॥ ११ ॥ येऽस्य काले सुमनसः  
सर्वे वृक्षानुपासते । सिंहशुभ्रमिवारण्यमप्रधृष्या भवन्ति ते ॥ १२ ॥ षेऽर्थं  
सन्ततमासाद्य दीना इव समासते । शिष्यं ते संप्रयच्छन्ति द्विषन्त्या भरतर्षभ ॥ १३ ॥  
धूमायस्ते व्यपेतानि ज्वलन्ति सहितानि च । धृतराष्ट्रोऽप्युक्तानीव ज्जातयो भरत-  
र्षभ ॥ १४ ॥ इदमन्यत् प्रवक्ष्यामि यथा दृष्टं गिरौ मया । श्रद्धा तदपि कौरव्य  
यथा श्रेयस्तथा कुरु ॥ १५ ॥ वयं किरातैः सहिताः गच्छामो गिरिं मुत्तरम् । त्रा-  
कनैर्देवकलैश्च विद्याजस्तकवार्तिकैः ॥ १६ ॥ कुञ्जतुतं गिरिं सर्वमभितो गन्त-  
मादनम् । दीप्यमानोऽधिगणं सिद्धगन्धर्वसेवितम् ॥ १७ ॥ तत्रापश्याम वै सर्वे  
मधु पीतममाक्षिकम् । मरुप्रपाते विषमे निविष्टं कुस्तसन्मितम् ॥ १८ ॥ आशी-  
विषे रक्ष्यमाणं कुबेरदमितं तृणम् । यत् प्राश्या पुरुषो मत्प्राप्यमरुत्तं निय-  
च्छति ॥ १९ ॥ अचकूलभते चक्रुर्बहो भवति वै युवा । इति ते कथयन्ति स्म

ব্রাহ্মণা জন্তুসাধকাঃ ॥ ২০ ॥ ততঃ কিরাতাস্তদৃষ্ট্বা প্রার্থযন্তো মহীপতে । বিনে-  
শুর্বিষমে তন্মিন্ সসর্পে গিরিগঙ্ঘরে ॥ ২১ ॥ তথৈব তব পুত্রোহৃষং পৃথিবীমেক  
ইচ্ছতি । মধু পশ্যতি সংমোহাৎ প্রপাতং নামুপশ্যতি ॥ ২২ ॥ দুর্যোধনো  
যোদ্ধমনাঃ সমরে সব্যসাচিনা । ন চ পশ্যামি তেজোহস্য বিক্রমং বা তথাবি-  
ধম্ ॥ ২৩ ॥ একেন রথমাস্থাষ পৃথিবী যেন নিজ্জিতা । ভীষ্মদ্রোণপ্রভৃতযঃ  
সংত্রস্তাঃ সাধুষা যিনঃ ॥ ২৪ ॥ বিরাটনগরে ভগ্নাঃ কিং তত্র দৃশ্যতাং তব । প্রতী-  
ক্ষমাণো যো বীরঃ ক্ষমতে বীক্ষিতং তব ॥ ২৫ ॥ ঋপদো মৎস্যরাজশ্চ সংক্রুদ্ধশ্চ  
ধনঞ্জযঃ । ন শেষযেযুঃ সমরে বাতযুক্তা ইবাগ্নযঃ ॥ ২৬ ॥ অক্ষে কুরুষ রাজানং  
ধৃতরাষ্ট্র যুধিষ্ঠিরম্ । যুধ্যতোহি দ্বিষোর্যুদ্ধে নৈকাস্তেন ভবেজ্জযঃ ॥ ২৭ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি যানসন্ধিপর্বণি বিদূরবাক্যে চতুঃষষ্টি-

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৬৪ ॥



ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । দুর্যোধন বিজানীহি যদ্বাং বক্ষ্যামি পুত্রক । উৎপথং মন্যসে  
মার্গমনভিত্ত্ব ইবাগ্নযঃ ॥ ১ ॥ পঞ্চানাং পাণ্ডুপুত্রানাং যতেজঃ প্রজিহীর্ষসি ।  
পঞ্চানামিব ভুতানাং মহতাং লোকধারিণাম্ ॥ ২ ॥ যুধিষ্ঠিরং হি কৌন্তেযং  
পরং ধর্ম্মমিহ স্থিতম্ । পরাং গতিমসংপ্রেক্ষ্য ন হ্বং জেতুমিহাহসি ॥ ৩ ॥ ভীম-  
সেনস্ত কৌন্তেযং যস্য নাস্তি সমো বলে । রণাস্তকং তর্কযসে মহাবাতমিব ঋমঃ ॥ ৪ ॥  
সর্বশস্ত্রভূতাং শ্রেষ্ঠং মেরুং শিখরিণামিব । যুধি গাণ্ডীবধন্যানং কোহনুযুধ্যেত  
বুদ্ধিমান্ ॥ ৫ ॥ ধৃষ্টদ্যুম্নশ্চ পাঞ্চাল্যঃ কমিবাদ্য ন শাতষেৎ । শত্রুমধ্যে শরা-  
ন্যক্ষন্ দেবরাডশনীমিব ॥ ৬ ॥ সাত্যকিশ্চাপি দুর্দ্ধষঃ সম্মতোহঙ্কবৃষ্টিষু । ধ্বংস-  
যিষ্যতি তে সেনাং পাণ্ডবেযহিতে রতঃ ॥ ৭ ॥ যঃ পুনঃ প্রতিমানেন ত্রীল্লোকান-  
তিরিচ্যতে । তং ক্লবং পুণ্ডরীকাক্ষং কোহনুযুধ্যেত বুদ্ধিমান্ ॥ ৮ ॥ একতো  
হস্য দারাশ্চ জ্ঞাতযশ্চ সবাঙ্কবাঃ । আত্মা চ পৃথিবী চেষমেকতশ্চ ধনঞ্জযঃ ॥ ৯ ॥  
বাসুদেবোহপি দুর্দ্ধর্যো যতাত্মা যত্র পাণ্ডবঃ । অবিষহং পৃথিব্যাপি তদ্বলং যত্র  
কেশবঃ ॥ ১০ ॥ তিষ্ঠ তাত সতাং বাক্যে সুহৃদামথবাদিনাম্ । বৃদ্ধং শাস্ত্রনবং  
ভীষ্মং তিতিক্ষস্ব পিতামহম্ ॥ ১১ ॥ মাঞ্চ ক্রবাণং শুশ্রাম কুরুণামর্থদর্শিনম্ ।  
দ্রোণং রূপং বিকর্ণঞ্চ মহারাজঞ্চ বাহ্লিকম্ ॥ ১২ ॥ এতে হপি যথৈবাহং মন্তম-  
হসি তাং স্তথা । সর্বে ধর্ম্মবিদো হেতে তুল্যম্নেহাশ্চ ভারত ॥ ১৩ ॥ যত্রদ্বিরাট-  
নগরে সহ ভ্রাতৃভিরগ্রতঃ । উৎসৃজ্য গাঃ স্মসংত্রস্তং বলস্তে সমশীর্ষ্যত ॥ ১৪ ॥

यच्छेव तस्मिन्गरे ऋषते महदद्भुतम् । एकस्य च बहूनां पर्याप्तं तस्मिदर्शनम् ॥ १५ ॥ अर्द्धनस्तु तथाकार्षीं किंपुनः सर्व एव ते । स द्रातूनभिजानीहि त्रुत्यांश्च परिपालय ॥ १७ ॥

इत्युद्देश्यगर्भनि शानसङ्घिपर्वणि धृतराष्ट्रुवाक्ये पञ्चषष्टिः ।

तमोऽध्यायः ॥ ७५ ॥



वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त्वा महाप्राज्ञो धृतराष्ट्रुः सुषोधनम् । पुनरेव महाभागः सञ्जयं पर्यापृच्छ ॥ १ ॥ ब्रुहि सञ्जय यच्छेषं वासुदेवादनस्तुरम् । यदर्द्धन उवाच द्वां परं कौतूहलं हि मे ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । वासुदेववचः श्रुत्वा कुन्तीपुत्रो धनञ्जयः । उवाच काले दुर्कषो वासुदेवस्य शृणुतः ॥ ३ ॥ पितामहं शान्तनवं धृतराष्ट्रं सञ्जय । द्रोणं रूपं कर्णं महाराजं बाह्लिकम् ॥ ४ ॥ द्रोणिं सोमदत्तं शकुनिं चापि सौबलम् । दशसैनं शलक्षैव पुरुपित्रं विविंशतिम् ॥ ५ ॥ विकर्णं चित्रसेनं जयसेनं पार्थिवम् । विन्दासुविन्दं वावस्त्रो दन्मूखं चापि कौरवम् ॥ ७ ॥ सैन्धवं दसहक्षैव भूरिश्रवसमेव च । तगदत्तं राजानं जलसङ्गं पार्थिवम् ॥ ९ ॥ ये चाप्यन्ये पार्थिवास्तत्र योद्धुः समागताः कौरवाणां प्रियार्थम् । मूर्ध्नि पाण्डवाग्नौ प्रदीपे समानीता धार्तराष्ट्रेण होतुम् ॥ ८ ॥ यथान्यायं कौशलं बन्दनं समागता मद्दृशनेन वाच्याः । इदं व्रुवाः सञ्जय राजमध्ये सुषोधनं पापकृतां प्रधानम् ॥ २ ॥ अमर्षं दन्मतिं राजपुत्रं पापात्मानं धार्तराष्ट्रं सुलुक्मम् । सर्वं ममैतद्वचनं समग्रं सहामात्यं सञ्जय श्रावयेथाः ॥ १० ॥ एवं प्रतिष्ठाप्य धनञ्जयो मां ततोऽर्थवदन्मवच्छापि वाक्यम् । प्रोवाचेदं वासुदेवं समीक्ष्य पार्थो धीमान् लोहितान्तःशतः ॥ ११ ॥ यथा श्रुतं वदतो महान्मनो मधुप्रवीरस्य वचः समाहितम् । तथैव वाच्यं भवता हि मद्दृशः समागतेषु क्तिपेषु सर्वशः ॥ १२ ॥ महाशराग्नौ रथवायुनोद्विजे धनुःसर्वेणास्त्रवलापहारिणा । यथा न होमः क्रियते महामूढे तथा समेत्य प्रयतध्मादताः ॥ १३ ॥ न चेत् प्रयच्छध्ममित्रघातिनो युधिष्ठिरस्य शमभौषितं स्वकम् । नयामि वः साश्वपदातिकुञ्जरान् दिशं पितृनामशिवां शितैः शरैः ॥ १४ ॥ ततोऽहमामन्त्र्य हरिं चतुर्भुजं धनञ्जयक्षैव नमस्य सत्वरः । ज्वेन सम्प्राप्तुं इहामरुद्यते तवार्तिकं प्रापयितुं वचो महत् ॥ १५ ॥

इत्युद्देश्यगर्भनि शानसङ्घिपर्वणि सञ्जयवाक्ये षट्षष्टितमोऽध्यायः ॥ ७७ ॥



বৈশম্পায়ন উবাচ । দূৰ্ঘ্যেধনে ধাৰ্ত্তরাষ্ট্রে তদ্বচো নাভিনন্দতি । তুষ্ণীভূতেষু  
 সৰ্বেষু সমুত্তস্থূনরেশ্বরঃ ॥ ১ ॥ উথিতেষু মহারাজ পৃথিব্যাং সৰ্বরাজসু । রহিতে  
 সঞ্জয়ং রাজা পরিপ্রফুং প্রচক্রমে ॥ ২ ॥ আশংসমানো বিজয়ং তেষাং পুল্লব-  
 শামুগঃ । আত্মনশ্চ পরেষাঞ্চ পাণ্ডবানাঞ্চ নিশ্চয়ম্ ॥ ৩ ॥ ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । গাব-  
 ল্গণে বৃহি নঃ সারফল্ল স্বসেনাযাং যাবদিহাস্তি কিঞ্চিৎ ! ত্বং পাণ্ডবানাং নিপুণং  
 বেথ সৰ্বং কিমেষাং জ্যাযঃ কিমু তেষাং কনীযঃ ॥ ৪ ॥ ত্বমেতযোঃ সারবিৎ  
 সৰ্বদর্শী ধৰ্ম্মার্থযোনিপুণো নিশ্চয়জ্ঞঃ । স মে পৃষ্ঠঃ সঞ্জয় বৃহি সৰ্বং যু্যমানাঃ  
 কতরেৎশ্মিন্ন সন্তি ॥ ৫ ॥ সঞ্জয় উবাচ । ন ত্বাং বৃষাং রহিতে জাতু কিঞ্চিদসূষা  
 হি ত্বাং প্রবিশেত রাজন্ । আনয়স্ব পিতরং মহাত্ৰতং গান্ধারীঞ্চ মহিষীমাজ-  
 মীচ ॥ ৬ ॥ তো তেহসূষাং বিনযেতাং নরেন্দ্র ধৰ্ম্মজ্ঞৌ তৌ নিপুণৌ নিশ্চয়জ্ঞৌ ।  
 তযোস্তু ত্বাং সন্নিধৌ তদ্বদেযং কুৎস্নং মতং কেশবপাৰ্থযোৰ্যৎ ॥ ৭ ॥ বৈশম্পায়ন  
 উবাচ । ইত্যুক্তেন চ গান্ধারী ব্যাসশ্চাত্ৰাজগাম হ । আনীতৌ বিদুরেণেহ সভাং  
 শীঘ্ৰং প্রবেশিতৌ ॥ ৭ ॥ ততস্তম্নতমাজ্জায় সঞ্জয়স্যাত্মজস্য চ । অভ্যুপেত্য  
 মহাপ্রাজ্ঞঃ কৃষ্ণদ্বৈপায়নোহত্রবীৎ ॥ ৮ ॥ ব্যাস উবাচ । সংপৃচ্ছতে ধৃতরাষ্ট্রায়  
 সঞ্জয় আচক্ষু সৰ্বং যাবদেযোহসুযুক্তে । সৰ্বং তাবদেথ তস্মিন্ যথা বন্দ্যাতাতথ্যং  
 বাসুদেবেহজ্জুনে চ ॥ ৯ ॥

ইত্যুদ্যোগপৰ্বণি বানসন্ধিপৰ্বণি ব্যাসবাক্যে সপ্তষষ্টি-

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩৭ ॥



সঞ্জয় উবাচ । অজ্জুনো বাসুদেবশ্চ ধম্বিনৌ পরমার্চিতৌ । কামাদন্যত্র সন্তুতৌ  
 সৰ্বাভাবায সন্মতৌ ॥ ১ ॥ ব্যাসান্তরং সমাস্থায় যথায়ুক্তং মনস্বিনঃ । চক্রং তদ্বা-  
 সুদেবস্য মাযযা বর্ততে বিভৌ ॥ ২ ॥ সাপহুবং কৌরবেষু পাণ্ডবানাং সুসন্মতম্ ।  
 সারাসারবলং জ্ঞাতুং তেজঃপুঞ্জাবভাসিতম্ ॥ ৩ ॥ নরকং শম্বরশ্চৈব কংসং  
 চৈদ্যঞ্চ মাধবঃ । জিতবান্ ঘোরসন্ধাশান্ ক্রৌড়ম্বিব মহাবলঃ ॥ ৪ ॥ পৃথিবীক্শা-  
 স্তুরীক্শঞ্চ দ্যাশ্চৈব পুরুষোত্তমঃ । মনসৈব বিশিষ্টাত্মা নযত্যাশ্রবশং বশী ॥ ৫ ॥  
 ভূযো ভূযো হি যদ্রাজন্ পৃচ্ছসে পাণ্ডবান্ প্রতি । সারাসারবলং জ্ঞাতুং তৎ  
 সমাসেন মে শৃণু ॥ ৬ ॥ একতো বা জগৎ কুৎস্নমেকতো বা জনার্দনঃ । সারতো  
 জগতঃ কুন্মাদতিরিক্তো জনার্দনঃ ॥ ৭ ॥ ভস্ম কুৰ্য্যাৎজগদিদং মনসৈব জনার্দনঃ ।  
 ন তু কুন্মং জগচ্ছক্ৰং ভস্মীকৰ্ত্তুং জনার্দনম্ ॥ ৮ ॥ যতঃ সত্যং যতো ধৰ্ম্মো

যতো হীরাজ্জবং যতঃ । ততো ভবতি গোবিন্দো যতঃ কৃষ্ণস্ততো জয়ঃ ॥ ৯ ॥  
 পৃথিবীঞ্চাস্তরীক্ষঞ্চ দিবঞ্চ পুরুষোত্তমঃ । বিচেষ্টযতি ভূতাত্মা ক্রীডন্নিব জনা-  
 র্দনঃ ॥ ১০ ॥ স কৃৎস্না পাণ্ডবান্ সত্রং লোকং সম্মোহয়ন্নিব । অধর্মনিরতান্  
 মূঢ়ান্ দক্ষ্মিচ্ছতি তে স্মৃতান্ ॥ ১১ ॥ কালচক্রং জগচ্চক্রং যুগচক্রঞ্চ কেশবঃ ।  
 আত্মযোগেন ভগবান্ পরিবর্তয়তেহনিশম্ ॥ ১২ ॥ কালস্য চ হি মৃত্যোশ্চ জঙ্গ-  
 মস্হাবরস্য চ । ঈশতে ভগবানেকঃ সত্যমেতদ্বুবীমি তে ॥ ১৩ ॥ ঈশন্নপি মহা-  
 যোগী সর্বস্য জগতো হরিঃ । কস্মাণ্যারভতে কর্ত্বুং কীনাশ ইব দুর্বলঃ ॥ ১৪ ॥  
 তেন বঞ্চযতে লোকান্ মায়াযোগেন কেশবঃ । যে তমেব প্রপদ্যন্তে ন তে মুহুন্তি  
 মানবাঃ ॥ ১৫ ॥

• ইত্যুদ্যোগপর্বণি যানসন্ধিপর্বণি সঞ্জয়বাক্যে অষ্টষষ্টি-

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩৮ ॥



ধৃतराक्षु उवाच । कथं द्वयं माधव्यं वेत्थ सर्वलोकमहेश्वरम् । कथमेनं न वेदाहं  
 तन्ममाचक्षु सঞ্জय ॥ १ ॥ सঞ্জय उवाच । शृणु राजन् ते विद्या मन विद्या न हीयते ।  
 विद्याहीनस्तमोधस्तो नाभिजानाति केशवम् ॥ २ ॥ विद्याया तात जानामि त्रियुगं  
 मधुसूदनम् । कर्त्तारमकृतं देव्यं भूतानां प्रभवाप्ययम् ॥ ३ ॥ धृतराक्षु उवाच ।  
 गावल्गणेहधिका भक्तिः का ते नित्यं जनार्दने । यथा ह्यमभिजानामि त्रियुगं  
 मधुसूदनम् ॥ ४ ॥ सঞ্জय उवाच । मायां न सेवे तद्रं ते न वृथा धर्ममाचरे ।  
 शुद्धभावगतो भक्त्या शास्त्राद्देहि जनार्दनम् ॥ ५ ॥ धृतराक्षु उवाच । दुर्योधन  
 ह्यवीकेशं प्रपद्यस्व जनार्दनम् । आप्णो नः सঞ্জयस्तत शरणं गच्छ केशवम् ॥ ६ ॥  
 दुर्योधन उवाच । भगवान् देवकीपुत्रो लोकांश्चेन्निहनिष्यति । प्रवदन्नर्जुने  
 सख्यं नाहं गच्छेहद्य केशवम् ॥ ७ ॥ धृतराक्षु उवाच । अर्वाक् गान्कारि पुलस्त  
 गच्छतेषु सुदुर्मतिः । ईषदूरात्मा मानी च श्रेयसां वचनातिगः ॥ ८ ॥ गान्कार्यु-  
 वाच । ऐश्वर्यकाम दुर्छात्सन् वृक्षानां शासनातिग । ऐश्वर्यजीर्विते हिंसा पितरं  
 मांश्च बालिश ॥ ९ ॥ वर्द्धयन् दुर्हदां प्रीतिं मांश्च शोकानले दहन् । निहतो  
 भीमसेनेन स्मर्त्तानि वचनं पितुः ॥ १० ॥ व्यास उवाच । प्रियोहसि राजन् कृष्णस्य  
 धृतराक्षु निबोध मे । यस्य ते सঞ্জयो दतो यस्तुवां श्रेयसि योक्त्यते ॥ ११ ॥  
 जानातेषु ह्यवीकेशं पुराणं यच्च वै परम् । शुश्रूषमाणमेकाग्रं योक्त्यते  
 द्वां महाभयां ॥ १२ ॥ वैचित्रवीर्य्य पुरुषाः क्रोधहर्षसमावृताः । सिता बह-

विधेः पाशैर्षे न तूष्ठाः स्वकैर्धनैः ॥ १३ ॥ यमस्य वशमायास्ति काममूढाः पुनः-  
 पुनः । अङ्गनेत्रा यथैवाङ्गा नीयमानाः स्वकर्मभिः ॥ १४ ॥ एष एकायनः पञ्च।  
 षेन यास्ति मनीषिणः । तं दृष्ट्वा मृत्युमत्येति महासुत्रं न सङ्कति ॥ १५ ॥ धृ-  
 त्वास्तु उवाच । अङ्ग सङ्गय मे शंस पञ्चानमकुतोभयम् । येन गद्वा हवीकेशं  
 प्राप्नुवां सिद्धिमुत्तमाम् ॥ १६ ॥ सङ्गय उवाच । नारुतात्मा कृतार्त्नानं जातु  
 विद्याङ्गनार्दनम् । आत्मानस्तु क्रियोपायो नान्यत्रेन्द्रियनिग्रहात् ॥ १७ ॥ इन्द्रि-  
 याणामुदीर्णानां कामत्यागोऽप्रमादतः । अप्रमादो विहिंसो च ज्ञानयोनिरसं-  
 शयम् ॥ १८ ॥ इन्द्रियाणां षमे यतो भव राज्ञमृतञ्चितः । वद्विश्च ते मा च्यवतु  
 नियच्छेनां यतस्ततः ॥ १९ ॥ एतज्ज्ञानं विदुर्बिप्रा ध्रुवमिन्द्रियधारणम् । एतज्-  
 ज्ञानं पञ्चाशत् येन यास्ति मनीषिणः ॥ २० ॥ अप्राप्यः केशवो राज्ञमिन्द्रियैर-  
 जितैर्नृभिः । आगमाधिगताद्योगाद्दशौ तद्धे प्रसीदति ॥ २१ ॥

इत्युद्योगपर्वणि यानसङ्घिपर्वणि सङ्गयवाक्ये एकौनसप्तति-

तमोऽध्यायः ॥ ७२ ॥

—०—

धृतराष्ट्र उवाच । त्रयो मे पुण्डरीकाक्षं सङ्गयाचक्षुः पृच्छतः । नामकर्मार्थविज्ञात  
 प्राप्नुवां पुरुषोत्तमम् ॥ १ ॥ सङ्गय उवाच । श्रुतं मे देवदेवस्य नामनिर्बचन-  
 सुतम् । यावत्तत्राभिजानेहं ह्यप्रमेयो हि केशवः ॥ २ ॥ वसनां सर्वभूतानां  
 वसुध्वाद्देवयोनितः । वासुदेवस्ततो वेद्यो बृहद्वाद्बिष्णुरूच्यते ॥ ३ ॥ मौना-  
 क्ष्यानात्त यो गात्त विद्धि भारत माधवम् । सर्वतद्ब्रह्मयद्वात्त मधुहा मधुसूदनः ॥ ४ ॥  
 कृषिर्भूवाचकः शक्यो णश्च निर्वृतिवाचकः । कृष्यस्तद्धावयोगात्त कृषेण भवति मा-  
 त्ततः ॥ ५ ॥ पुण्डरीकं परं धाम नित्यमक्षयमव्ययम् । तद्धावात् पुण्डरीकाक्षो  
 दस्युत्रासाङ्गनार्दनः ॥ ६ ॥ यतः सत्त्वं न च्यवते यत्त सद्ब्रह्म हीयते । सत्त्वतः  
 सात्त्वतस्तस्मादार्षताद्विषतेक्षणः ॥ ७ ॥ न जायते जनित्रा यदजस्तस्मादनीकजित् ।  
 देवानां स्वप्रकाशत्वादमादा मोदरो विभुः ॥ ८ ॥ हर्षात् सुखात् सुथैश्वर्यात् हवी-  
 केशवमश्नुते । बाह्यत्वात् रोदसी विभ्रमहावाहुरिति स्मृतः ॥ ९ ॥ अधो न क्षी-  
 यते जातु यस्मादस्मादधोऽक्षयः । नराणामथनात्तपि ततो नारायणः स्मृतः ।  
 पुराणात् सदात्तपि ततोऽसौ पुरुषोत्तमः ॥ १० ॥ असत्तत्त सत्तैश्च सर्वस्य  
 प्रथवाप्यथात् । सर्वस्य च सदा ज्ञानात् सर्वमेतत् प्रचक्षते ॥ ११ ॥ सत्ये प्रति-  
 ष्ठितः कृषः सत्यमत्र प्रतिष्ठितम् । सत्यात् सत्यं गोविन्दस्तस्मात्सत्योऽपि

নামতঃ ॥ ১২ ॥ বিষ্ণুর্বিক্রমণাদেবো জঘনাজ্জিষ্ণুরুচ্যতে । শাস্বতছাদনস্তশ্চ  
গোবিন্দো বেদনাদ্যাবাম্ ॥ ১৩ ॥ অতত্ত্বং কুরুতে তত্ত্বং তেন মোহযতে প্রজাঃ ।  
এবংবিধো ধর্ম্মনিত্যো ভগবান্মধুসূদনঃ । আগস্তা হি মহাবাহুরানুশংস্যার্থ-  
ক্ষ্যুতঃ ॥ ১৪ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি যানসন্ধিপর্বণি সঞ্জঘবাক্যে সপ্ততি-

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৭০ ॥



ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । চক্ষুশ্চতাং বৈ স্পৃহ্যামি সঞ্জঘ দ্রক্ষ্যন্তি যে বাসুদেবং সমীপে ।  
বিভ্রাজমানং বপুষা পরেণ প্রকাশযন্তুং প্রদিশো দিশশ্চ ॥ ১ ॥ ঈরয়ন্তুং ভার-  
তীং ভারতানামভ্যর্চনীয়াং শঙ্করীং সৃঞ্জযানাম্ । বৃভুষন্তিগ্রহণীযামনিন্দ্যাং  
পরাসূনামগ্রহণীষকপাম্ ॥ ২ ॥ সমুদ্যন্তুং সাত্ত্বতমেকবীরং প্রণেতারমৃষভং যাদ-  
বানাম্ । নিহস্তারং ক্ষোভণং শাত্রবাণাং মুষ্ণুস্তঞ্চ দ্বিষতাং বৈ যশাংসি ॥ ৩ ॥  
দ্রক্ষ্যরো হি কুরবস্তুং সমেতা মহাত্মানং শত্রুহণং বরেণ্যম্ । ক্রবস্তুং বাচমনূশং-  
সকপাং বৃষ্ণিশ্রেষ্ঠং মোহযন্তুং মদৌযান্ ॥ ৪ ॥ ঋষিং সনাতনতমং বিপশ্চিতং  
বাচঃ সমুদ্রং কলসং যতীনাম্ । অরিষ্টনেমিং গরুডং সুপর্ণং হরিং প্রজানাং  
ভুবনস্য ধাম ॥ ৫ ॥ সহস্রশীর্ষং পুরুষং পুরাণমনাদিমধ্যাস্তমনস্তকীর্তিম্ । শুক্রস্য  
ধাতারমজঞ্চ নিত্যং পরং পরেভ্যঃ শরণং প্রপদ্যে ॥ ৬ ॥ ত্রৈলোক্যানির্মাণ-  
করং জনিত্রং দেবাসুরাণামথ রাক্ষসানাম্ । নরাধিপানাং বিদুষাং প্রধানমিস্ত্রা-  
মুজং তং শরণং প্রপদ্যে ॥ ৭ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি যানসন্ধিপর্বণি ধৃতরাষ্ট্রবাক্যে একসপ্ততিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৭১ ॥

সমাপ্তঞ্চ যানসন্ধিপর্ব ।



অথ ভগবদ্ব্যানপর্ব ।

বৈশম্পায়ন উবাচ । সঞ্জঘে প্রতিষাতে তু ধর্ম্মরাজো যুধিষ্ঠিরঃ । অত্যভাষত  
দাশাহমৃষভং সর্বসাত্ত্বতাম্ ॥ ১ ॥ অযং স কালঃ সংপ্রাপ্তো মিত্রাণাং মিত্রবৎ-  
সল । ন চ ছদন্যং পশ্যামি যো ন আপৎসু তারয়েৎ ॥ ২ ॥ ছাং হি মাধবমা-  
শ্রিত্য নির্ভয়া মোঘদর্পিতম্ । ধার্ত্তরাষ্ট্রং সহামাত্যং স্বযং সমনুযুঞ্জুহে ॥ ৩ ॥  
যথা হি সর্বাষাপৎসু পার্শ্বি বৃক্ষীনিন্দম । তথা তে পাণ্ডবা রক্ষ্যাঃ পাহস্মান্ম-  
হতো ভয়াৎ ॥ ৪ ॥ ভগবান্নুবাচ । অযমস্মি মহাবাহো ব্রহ্মি যন্তে বিবক্ষিতম্ । করি-

व्यामि हि त० सर्व० यद्भ० वक्ष्यसि भारत ॥ ५ ॥ युधिष्ठिर उवाच । श्रुतस्ते धृ-  
 तराष्टस्य सपुत्रस्य चिकीर्षितम् । एतद्धि सकलं कृषः सङ्गयो मां यदब्रवीत् ॥ ७ ॥  
 तन्नतं धृतराष्टस्य सोऽस्यत्ना विवृतान्तरः । यथोक्तः दूत आचर्के वध्यः स्या-  
 दन्यथा क्रूरन् ॥ १ ॥ अप्रदानेन राज्यस्य शास्त्रिमन्त्रासु मार्गति । लूकः पापेन  
 मनसा चरन्नसममात्मानः ॥ ८ ॥ यत्तद्वादशवर्षाणि वनेष्वध्यायिता वयम् । हृदना शर-  
 दक्षेकां धृतराष्टस्य शासनात् ॥ २ ॥ स्वाता नः समये तस्मिन् धृतराष्ट इति  
 प्रभो । नाहास्य समयं कृषः तद्धि नो ब्राह्मणा विदुः ॥ १० ॥ गृह्णो राजा धृतराष्टः  
 स्वधर्मं नानुपश्यति । वश्यत्वात् पुत्रगृह्णित्वात् मन्दस्याश्चेति शासनम् ॥ ११ ॥  
 सूयोधनमते तिष्ठन्नाजास्यसु जनार्दन । मिथ्या चरति लूकः सन् चरन् हि प्रिय  
 मात्मानः ॥ १२ ॥ इतो दुःखतरं किम् यदहं मातुरन्ततः । शंविधातुं न शक्नोमि  
 मित्राणां वा जनार्दन ॥ १३ ॥ काशिभिश्चेदिपांक्षालैर्मत्स्यैश्च मधुसूदन ।  
 तवता चैव नाथेन पक्षं ग्रामा वृता मया ॥ १४ ॥ अविश्वलं वृकश्वलं माकन्दीं  
 वारणावतम् । अवसानक्षं गोविन्द कक्षिदेवात्र पक्षमम् ॥ १५ ॥ पक्षं नस्त्यात दीयन्तां  
 ग्रामा वा नगराणि वा । वसेन सहिता येषु ना च नो भरता नशन् ॥ १६ ॥ न च  
 तानपि दुष्टात्मा धार्तराष्ट्रोऽहन्नमन्यते । स्वाम्यमात्मानि मत्सावतो दुःखतरं  
 नृ किम् ॥ १७ ॥ कुले जातस्य वृद्धस्य परवित्रेषु गृह्यतः । लोभः प्रज्जानमाहस्ति  
 प्रज्जा हस्ति हता हिमम् ॥ १८ ॥ ह्यहता बाधते धर्मं धर्मो हस्ति हतः श्रियम् । श्रीहता  
 पुरुषं हस्ति पुरुषस्याधनं वधः ॥ १९ ॥ अधनाद्दिनिवर्तस्ते ज्ञातयः सूहृदो द्विजाः ।  
 अपुष्पादफलाद्दृक्फाल्मथा कृषः पतत्रिणः ॥ २० ॥ एतच्च मरणं तात यन्मत्तः पति-  
 तादिव । ज्ञातयो विनिवर्तस्ते प्रेतसङ्गादिवासवः ॥ २१ ॥ नातः पापीयसीं  
 काक्षिदवस्थां शयरोऽब्रवीत् । यत्र नैवाद्य न प्रातर्भोजनं प्रतिदृश्याते ॥ २२ ॥  
 धनमाहः परं धर्मं धने सर्वं प्रतिष्ठितम् । जीवन्ति धनिनो लोके मृता ये  
 द्वधना नराः ॥ २३ ॥ ये धनादपकर्षन्ति नरं स्वबलमास्थिताः । ते धर्ममर्थं कामक्ष  
 प्रमथन्ति नरक्ष तम् ॥ २४ ॥ एतामवस्थां प्राप्येके मरणं वत्रिरे जनाः । ग्रामा-  
 यैके वनायैके नाशायैके प्रवक्रजुः ॥ २५ ॥ उन्नादमेके पुष्यन्ति यास्त्यन्ये  
 द्विषतां वशम् । दास्यमेके च गच्छन्ति परेषामर्थहेतुना ॥ २६ ॥ आपदेवास्य  
 मरणात् पुरुषस्य गरीयसी । श्रियो विनाशस्तुह्यस्य निमित्तं धर्मकामयोः ॥ २७ ॥  
 षदस्य धर्म्यं मरणं शाश्वतं लोकवर्द्धतं । समस्ताः सर्वभूतानां न तदतोति  
 कश्चन ॥ २८ ॥ न तथा बाध्यते कृषः प्रकृत्या निर्दानी जनः । यथा उद्रां श्रियं

প্রাপ্য তথা হীনঃ সুখৈধিতঃ ॥ ২২ ॥ স তদাত্মাপরাধেন সংপ্রাপ্তো ব্যসনং মহৎ ।  
 সেন্দ্রানু গর্হয়তে দেবান্নাত্মানঞ্চ কথঞ্চন ॥ ৩০ ॥ ন চাস্য সর্বশাস্ত্রাণি প্রভবন্তি  
 নিবর্হণে । মোহভিক্রুধ্যতি ভৃত্যানাং সুহৃদশ্চাত্মসূষতি ॥ ৩১ ॥ তৎ তদা মন্যুরে-  
 বৈতি স ভূষঃ সংপ্রমুহতি । স মোহবশমাপন্নো ক্রুরং কৰ্ম নিষেবতে ॥ ৩২ ॥  
 পাপকৰ্ম্মতষাং টেব সঙ্করং তেন পুষ্যতি । সঙ্করো নরকাষেব সা কাষ্ঠা পাপকৰ্ম্ম-  
 গাম্ ॥ ৩৩ ॥ ন চেৎ প্রবুধ্যতে ক্লঞ্চ নরকাষেব গচ্ছতি । তস্য প্রবোধঃ প্রজ্জৈব  
 প্রজ্জাচক্ষুস্তরিষ্যতি ॥ ৩৪ ॥ প্রজ্জালাতে হি পুরুষঃ শাস্ত্রাণ্যেবান্বেক্ষতে । শাস্ত্র-  
 নিষ্ঠঃ পুনর্ধর্ম্মং তস্য হীরঙ্গমুত্তমম্ ॥ ৩৫ ॥ হীমান্ হি পাপং প্রদেষ্টি তস্য  
 শ্রীরতিবর্দ্ধতে । শ্রীমান্ স যাবদ্ভবতি তাবদ্ভবতি পুরুষঃ ॥ ৩৬ ॥ ধর্ম্মনিত্যঃ  
 প্রশান্তাত্মা কার্য্যযোগবহঃ সদা । নাধর্ম্মে কুরুতে বুদ্ধিং ন চ পাপে প্রবর্ত্ত-  
 তে ॥ ৩৭ ॥ অহীকো বা বিমূঢ়ো বা নৈব স্ত্রী ন পুনঃ পুমান্ । নাস্যাধিকারো  
 ধর্ম্মেহস্তি যথা শূদ্রস্তথৈবসঃ ॥ ৩৮ ॥ হীমানবতি দেবাংশ্চ পিতৃনাত্মানমেব  
 চ । তেনামৃতত্বং ব্রজতি সা কাষ্ঠা পুণ্যকৰ্ম্মগাম্ ॥ ৩৯ ॥ তদিদং মযি তেদৃষ্টং  
 প্রত্যক্ষং মধুসূদন । যথা রাজ্যাৎ পরিভ্রষ্টো বসামি বসতীরিমাঃ ॥ ৪০ ॥ তে  
 বযং ন শ্রিষ্যং হাতুনলং ন্যায়েন কেনচিৎ । অত্র নো যতমানানাং বধশ্চেদপি  
 নাধু তৎ ॥ ৪১ ॥ তত্র নঃ প্রথমঃ কল্পো যদ্বযং তে চ মাধব । প্রশান্তাঃ সমভূতাশ্চ  
 শ্রিষ্যং তামশ্লুবামহি ॥ ৪২ ॥ তত্রৈষা পরমা কাষ্ঠা রৌদ্রকৰ্ম্মক্ষযোদযা । যদ্বযং  
 কৌরবান্ হত্বা তানি রাষ্ট্রাণ্যবাগ্নুঃ ॥ ৪৩ ॥ যে পুনঃ স্যুরসন্নদ্ধা অনার্য্যাঃ ক্লঞ্চ  
 শত্রবঃ । তেষামপ্যবধঃ কার্য্যঃ কিং পুনর্ঘে স্যুরীদৃশাঃ ॥ ৪৪ ॥ জ্ঞাতযশ্চৈব  
 ভূযিষ্ঠাঃ সহায়া গুরবশ্চ নঃ । তেষাং বধোহতিপাপীয়ান্ কিম্বু যুদ্ধেহস্তি শোভ-  
 নম্ ॥ ৪৫ ॥ পাপঃ ক্লত্রিষধর্ম্মোহযং বধঞ্চ ক্লত্রবন্ধবঃ । স নঃ স্বধর্ম্মোহধর্ম্মো বা বৃত্তি-  
 রন্যা বিগর্হিতা ॥ ৪৬ ॥ শূদ্রঃ কুরোতি শুশ্রুসাং বৈশ্যো বিপণিজীবিকাম্ । বযং  
 বধেন জীবামঃ কপালং ক্রাক্ষণৈর্বৃতম্ ॥ ৪৭ ॥ ক্লত্রিষঃ ক্লত্রিষং হস্তি মৎস্যো  
 মৎস্যেন জীবতি । শ্বা শ্বানং হস্তি দাশাই পশ্য ধর্ম্মো যথাংগতঃ ॥ ৪৮ ॥ যুদ্ধে  
 ক্লঞ্চ কলিনিত্যং প্রাণাঃ নীদন্তি সংযুগে । বলন্ত নীতিমাধায় হঠে জয়পরাজ-  
 যৌ ॥ ৪৯ ॥ নাত্মচ্ছন্দেন ভুতানাং জীবিতং মরণং তথা । নাপ্যকালে সুখং  
 প্রাপ্যং দুঃখং বাপি যদূত্তমম্ ॥ ৫০ ॥ একো হপি বহূন্ হস্তি স্তন্ত্যেকং বহুবোহ-  
 প্যত । শূরং কাপুরুষো হস্তি অযশস্বী যশস্বিনম্ ॥ ৫১ ॥ জযো নৈবোভযো-  
 দৃষ্টো নোভযোশ্চ পরাজয়ঃ । কৃথৈবাপচযো দৃষ্টো ব্যপযানে ক্ষযব্যযৌ ॥ ৫২ ॥

सर्वथा वृजिनं युद्धं को ह्यप्रतिहन्यते । हतस्य च ह्यवीकेश समो जयपरा-  
 जयौ । पराजयश्च मरणान्नन्ये नैव विशिष्यते ॥ ५३ ॥ यस्य स्याद्विजयः क्रुष्य  
 तस्याप्यपचयो ध्रुवम् । अस्तुतो दयितं ह्यस्ति केचिदप्यपरे . जनाः ॥ ५४ ॥  
 तस्याङ्ग बलहीनस्य पुत्रान् ब्रातूनपश्यतः । निर्बेदे। जीविते क्रुष्य सर्वतश्चाप-  
 जायते ॥ ५५ ॥ ये हेव धीरा ह्यीमस्तु आर्याः करुणवेदिनः । तं एव युद्धे  
 हन्यन्ते ववीषान्मुच्यते जनः ॥ ५६ ॥ ह्यप्यनुशयो नित्यं परानपि जनार्दन ।  
 अनुवन्तश्च पापोहत्र शेषस्याप्यवशिष्यते ॥ ५७ ॥ शेषो हि बलमासाद्य न  
 शेषमवशेषयेत् । सर्वोच्छेदे च यतते वैरस्यास्तुविधिंसया ॥ ५८ ॥ जयो वैरुं  
 प्रसृजति दुःखमास्तु पराजितः । सुखं प्रशान्तः स्वपिति ह्यत्रा जयपराजयौ ॥ ५९ ॥  
 जातवैरुश्च पुरुषो दुःखं स्वपिति नित्यदा । अनिर्वृतेन मनसा ससर्प इव वेश्म-  
 नि ॥ ६० ॥ उंसदयति यः सर्वं यशसा स विमुच्यते । अकीर्तिं सर्वभूतेषु शा-  
 श्वतीं स निषच्छति ॥ ६१ ॥ न हि वैराणि शान्त्यन्ति दीर्घकालधृतान्यपि । आख्या-  
 तारुश्च विद्यन्ते पुमांश्चेद्विद्यते कुले ॥ ६२ ॥ न चापि वैरुं वैरेण केशव  
 व्यपशाम्यति । ह्यविषाग्निर्यथा क्रुष्य भूय एवातिवर्द्धते ॥ ६३ ॥ अतोहन्यथा नास्ति  
 शान्तिर्नित्यमन्तरमन्ततः । अन्तरं लिप्समानानामयं दोषो निरन्तरः ॥ ६४ ॥  
 पौरुषे यो हि बलवानाधिर्हदयवाधनः । तस्य त्यागेन वा शान्तिर्निरणेनापि वा  
 भवेत् ॥ ६५ ॥ अथ वा मूलघातेन द्विषतां मधुसूदन । फलनिर्वृतिरिक्त्वा स्या-  
 त्मृशंसतरो भवेत् ॥ ६६ ॥ या तु त्यागेन शान्तिः स्यात् तदृते वध एव सः ।  
 संशयाच्च समुच्छेदाद्विषतामात्मानस्तथा ॥ ६७ ॥ न च त्यक्तुं तदिच्छामो न चेच्छा-  
 मः कुलक्षयम् । अत्र वा प्रणिपातेन शान्तिः सैव गरौषसी ॥ ६८ ॥ सर्वथा यतमा-  
 नानामयुद्धमतिकाङ्क्षताम् । मास्तु प्रतिहते युद्धं प्रसिद्धं नापराक्रमः ॥ ६९ ॥  
 प्रतिघातेन मास्तुस्य दारुणं सं प्रवर्तते । तच्छनामिव सम्पाते पण्डितैरु-  
 पलङ्कितम् ॥ ७० ॥ लाङ्गूलचार्जनं क्षेपुडा प्रतिवाचो विवर्तनम् । दन्तदर्शनमा-  
 रावस्ततो युद्धं प्रवर्तते ॥ ७१ ॥ तत्र यो बलवान् क्रुष्य जिह्वा सोहति तदा-  
 मिषम् । एवमेव मनुष्येषु विशेषो नास्ति कश्चन ॥ ७२ ॥ सर्वथा ह्येतदचितं  
 दुर्बलेषु बलीयसाम् । अनादरोहविरोधश्च प्रणिपाती हि दुर्बलः ॥ ७३ ॥ पिता  
 राजा च वृद्धश्च सर्वथा मानमर्हति । तस्मान्मान्याश्च पूज्याश्च धृतराष्ट्रो जनार्दन ॥ ७४ ॥  
 पुत्रश्चेहश्च बलवान् धृतराष्टुस्य माधव । स पुत्रवशमापन्नः प्रणिपातं प्रहास्य-  
 ति ॥ ७५ ॥ तत्र किं मन्यसे क्रुष्य प्राणुकाल नन्तरम् । कथमर्थाच्च धर्माच्च न

হীষেমহি মাধব ॥ ৭৬ ॥ ঈদৃশে হৃথক্ছেহস্মিন্ কমন্যং মধুসূদন । উপসংপ্রক্-  
 নহামি ত্বামূতে পুরুষোত্তম ॥ ৭৭ ॥ প্রিয়শ্চ প্রিয়কামশ্চ গতিশ্চঃ সর্বকর্মণাম্ ।  
 কো হি ক্লৃণাস্তি নস্ত্বাদৃক্ সর্বনিশ্চযবিৎ সুহৃৎ ॥ ৭৮ ॥ বৈশম্পায়ন উবাচ ।  
 এবমুক্তঃ প্রত্যুবাচ ধর্মরাজং জনার্দনঃ । উভযোরেব বাগর্থেষাম্যামি কুরুসং-  
 সদম্ ॥ ৭৯ ॥ শমং তত্র লভেষঞ্চৈদ্ব্যদর্থমহাপয়ন্ । পুণ্যং নে সুমহদ্রাজন্  
 চরিতং স্যাম্মহাকলম্ ॥ ৮০ ॥ মোচযেষং মৃত্যুপাশাৎ সংরক্তান্ কুরুসৃঞ্জযান্ ।  
 পাণ্ডবান্ ধার্ত্তরাষ্ট্রাংশ্চ সর্বাঞ্চ পৃথিবীমিমাম্ ॥ ৮১ ॥ যুধিষ্ঠির উবাচ । ন মনৈত-  
 ন্নতং ক্লৃণ যত্নং যযাঃ কুব্ধু প্রতি । সুয়োধনঃ সূক্তমপি ন করিষ্যতি তে বচঃ ॥ ৮২ ॥  
 সমেতং পার্থিবং ক্লত্রং দুর্যোধনবশান্নুগম্ । তেষাং মধ্যাবতরণং তব ক্লৃণ ন  
 রোচযে ॥ ৮৩ ॥ ন হিনঃ প্রীগবেদ্রব্যং ন দেবত্বং কুতঃ সুখং । ন চ সর্বাং রৈ-  
 শ্বর্যং তব দ্রোহেণ মাধব ॥ ৮৪ ॥ ভগবানুবাচ । জানাম্যেতাং মহারাজ ধার্ত্ত-  
 রাষ্ট্রস্যাপাপতাম্ । অবাচ্যাস্তু ভবিষ্যামঃ সর্বলোকে মহীক্ষিতাম্ ॥ ৮৫ ॥ ন  
 চাপি মম পর্যাপ্তাঃ সহিতাঃ সর্বপার্থিবাঃ । ক্রুদ্ধস্য প্রমুখে স্হাতুং সিংহস্যেবে-  
 তরে মৃগাঃ ॥ ৮৬ ॥ অথ চেত্তে প্রবর্ত্তেরন্ময়ি কিঞ্চিদসাম্প্লুতম্ । নির্দহেবং কুব্ধু  
 সর্বাং নিতি মে ধীয়তে মতিঃ ॥ ৮৭ ॥ ন জাতু গমনং পার্থ ভবেত্তত্র নিরর্থকম্ ।  
 অর্থপ্রাপ্তিঃ কদাচিৎ স্যাদন্ততো বণপ্যবাচ্যতা ॥ ৮৮ ॥ যুধিষ্ঠির উবাচ । যত্নুভ্যং  
 রোচতে ক্লৃণ স্বস্তি প্রাপ্নুহি কৌরবান্ । কৃতার্থং স্বস্তিমন্তং ত্বাং দ্রক্ষ্যামি পুনরা-  
 গতম্ ॥ ৮৯ ॥ বিশ্বক্সেন কুব্ধু গত্বা ভারতান্ শমযেঃ প্রভো । যথা সর্বে  
 স্তুমনসঃ সহ স্যামঃ সুচেতসঃ ॥ ৯০ ॥ ভ্রাতা চাসি সখা চাসি বীতৎসোর্মগ চ  
 প্রিযঃ । সৌহৃদেনাবিশঙ্ক্যোহসি স্বস্তি প্রাপ্নুহি ভূতযে ॥ ৯১ ॥ অস্মান্ বেথ  
 পরান্ বেথ বেথার্থান্ বেথ ভাষিতুম্ । যদ্বদস্মদ্বিতং ক্লৃণ তত্তদাচ্যঃ সুয়ো-  
 ধনঃ ॥ ৯২ ॥ যদ্বদস্মেগ সংযুক্তনুপদ্যেদ্বিতং বচঃ । তত্তৎ কেশব ভাষেথাঃ  
 সাস্ত্বং বা যদি বেতরৎ ॥ ৯৩ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি ভগবদ্ভাষ্যপর্বনি যুধিষ্ঠিরবাক্যে দ্বিসপ্ততি-

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৭২ ॥



ভগবানুবাচ । সঞ্জয়স্য শ্রুতং বাক্যং ভবতশ্চ শ্রুতং মযা । সর্বং জানাম্য-  
 তিপ্রাষণং তেষাঞ্চ ভবতশ্চ মঃ ॥ ১ ॥ তব ধর্মাশ্রিতা বুদ্ধিস্তেষাং বৈরাশ্রয়া মতিঃ ।  
 যদযুদ্ধেন লভ্যেত তত্তে বহুমতং ভবেৎ ॥ ২ ॥ ন চৈবং নৈষ্টিকং কস্ম ক্লত্রিযস্য



विशाम्पते । आह्वराश्रमिणः सर्वे षड्वैक्यं कृत्रियश्चरेत् ॥ ३ ॥ जयो वधो वा  
 संग्रामे धात्रा दिक्कः सनातनः । स्वधर्मः कृत्रियस्यैव कार्पण्यं न प्रशस्यते ॥ ४ ॥  
 न हि कार्पण्यमाहाय शक्या वृत्रियुधिष्ठिर । विक्रमश्च महाबाहो जहि शत्रून् पर-  
 त्तप ॥ ५ ॥ अतिगृह्णाः क्रुतस्नेहा दीर्घकालं सहोषिताः । क्रुतमित्राः क्रुतबला  
 धार्तराष्ट्राः परत्तप ॥ ६ ॥ न पर्यायोऽस्ति षट् साम्यं ह्ययि कुर्युर्विशाम्पते ।  
 बलवतां हि मन्यन्ते भीष्मद्रोणरूपदिभिः ॥ ७ ॥ यावच्च मार्दवेनेतान्नाजम्प-  
 चरिष्यसि । तावदेते हरिष्यन्ति तव राज्यमरिन्दम ॥ ८ ॥ नान्नुक्रोशाम् कार्प-  
 ण्याम् च धर्मार्थकारणात् । अलक्षर्तुं धार्तराष्ट्रास्तव काममरिन्दम ॥ ९ ॥ एतदेव  
 निमित्तं पाण्डवान् यथा ह्ययि । नाश्रितप्यन्तु कौपीनं तावत् क्रुत्वापि दुष्करम् ॥ १० ॥  
 पितामहस्य द्रोणस्य विदुरस्य च धीमताः । ब्राह्मणानां च साधूनां राज्ञश्च नगरस्य  
 च ॥ ११ ॥ पश्यतां कुरुमुख्यानां सर्वेषामेव तद्व्रतः । दानशीलं मृदुं दास्युं  
 धर्मशीलमनुव्रतम् ॥ १२ ॥ यद्भामुपधिना राजन् द्यूते वक्षितवांसुदा । न चापत्र-  
 पते तेन नशंसः स्येन कर्मणा ॥ १३ ॥ तथाशीलसमाचारे राज्ञ्या प्रणयं  
 क्रुथाः । वध्यास्ते सर्वलोकस्य किं पुनस्तव भारत ॥ १४ ॥ वाङ्मिदुप्रतिक्रुपाभि-  
 रतुदङ्गां सहानुजम् । श्लाघमानः प्रहर्षः सन् भ्रातृभिः सह भारत ॥ १५ ॥ एतावत्  
 पाण्डवानां हि नास्ति किञ्चिदिह स्वकम् । नामधेयं च गौत्रं च तदप्येषां न शिष्य-  
 ते ॥ १६ ॥ कालेन महता टैचयां भविष्यति पराभवः । प्रकृतित्ते भजिष्यन्ति नष्ट-  
 प्रकृतयो मयि ॥ १७ ॥ दुःशासनं पापेन तदा द्यूते प्रवर्तिते । अनाथवत्तदा  
 देवी द्रौपदी सुदुरात्मना ॥ १८ ॥ आरुष्य केशे रुदती सभायां राजसंसदि ।  
 भीष्मद्रोणप्रमुखतो गौरिति व्याहृता मुखः ॥ १९ ॥ भवता वारिताः सर्वे भ्रातरौ  
 भीष्मविक्रमाः । धर्मपाशनिबद्धास्ते न किञ्चिं प्रतिपेदिरे ॥ २० ॥ एताश्चान्याश्च  
 परुषा वाचः स समुदीरयन् । श्लाघते ज्जातिमध्ये स्म ह्ययि प्रव्रजिते वनम् ॥ २१ ॥  
 ये तत्रासन् समानीतास्ते दृष्ट्वा स्वामनागसम् । अश्रुकृत्वा रुदन्तश्च सभायामासते  
 तदा ॥ २२ ॥ न टैचनमभ्यनन्दन्ते राजानो ब्राह्मणैः सह । सर्वे दर्येयाधनं तत्र  
 निन्दन्ति स्म सभासदः ॥ २३ ॥ कुलीनस्य च या निन्दा वधो वामित्रकर्षण । महागुणो  
 वधो राज्ञ तु निन्दा कुजौविका ॥ २४ ॥ तदेव निहतो राजन् षदैव निरपत्रपः ।  
 निन्दितश्च महाराज पृथिव्यां सर्वराजभिः ॥ २५ ॥ द्वेषकार्येण वधस्तस्य षस्य  
 चारित्रमीदृशम् । प्रकन्देन प्रतिस्तुक्कश्चिन्मूल इव क्रमः ॥ २६ ॥ वधः सर्प  
 इवानार्यः सर्वलोकस्य दुर्मतिः । जह्नेनं ह्यमित्रम्यमा राजन् विचिकिंसाः ॥ २७ ॥

সর্বথা স্বৎক্রমশ্চেতদ্রোচতে চ মমানঘ । যদ্বৎ পিতরি ভীষ্মে চ প্রনিপাতং সমা-  
চরেঃ ॥ ২৮ ॥ অহস্ত সর্বলোকস্য গত্বা ছেৎস্যামি সংশয়ম্ । যেষামস্তি দ্বিধা-  
ভাবো রম্জন্ দুৰ্য্যোধনং প্রীতি ॥ ২৯ ॥ মধ্যে রাজ্ঞামহং তত্র প্রাতিপৌরুষিকান্  
শুণান্ । তব সংকীৰ্ত্তিষিষ্যামি যে চ তস্য ব্যতিক্রমাঃ ॥ ৩০ ॥ ক্রবতস্তত্র মে  
বাক্যং ধৰ্ম্মার্থসহিতং হিতম্ । নিশম্য পার্থিবাঃ সর্বে নানা জনপদেশ্বরীঃ ॥ ৩১ ॥  
ত্বয়ি সম্প্রতিপৎস্যন্তে ধৰ্ম্মাত্মা সত্যবাগিতি । তস্মিংশ্চাধিগমিষ্যন্তি যথা লোভাদ-  
বর্তত ॥ ৩২ ॥ গর্হিষিষ্যামি চৈবৈনং পৌরজানপদেশপি । বৃদ্ধবালানুপাদায় চাতু-  
র্ধন্যে সমাগতে ॥ ৩৩ ॥ শমং তৈব যাচমানস্তং নাধৰ্ম্মং তত্র লপ্যসে । কুরুন্  
বিগর্হিষ্যন্তি ধৃতরাষ্ট্রঞ্চ পার্থিবাঃ ॥ ৩৪ ॥ তস্মিল্লোকপরিত্যক্তে কিং কার্যমব-  
শিষ্যতে । হতে দুৰ্য্যোধনে রাজন্ যদন্যৎ ক্রিয়তামিতি ॥ ৩৫ ॥ যাত্বা চাহং  
কুরুন্ সর্বান যুদ্ধদর্থমহাপয়ন্ । যতিষ্যে প্রশমং কৰ্ত্তং লক্ষ্যিষ্যে চ চেক্ষিতম্ ॥ ৩৬ ॥  
কৌরবাণাং প্রবৃতিঞ্চ গত্বা যুদ্ধাধিকারিকান্ । নিশম্য বিনিবর্তিষ্যে জযায তব  
ভারত ॥ ৩৭ ॥ সর্বথা যুদ্ধমেবাহমাশংসামি পরৈঃ সহ । নিমিত্তানি হি সর্বাণি  
তথা প্রাদুর্ভবন্তি মে ॥ ৩৮ ॥ মৃগাঃ শকুন্তাশ্চ বদন্তি ঘোরং হস্ত্যশ্বমুখ্যেষু  
নিশামুখেষু । ঘোরাণি কপাণি তথৈব চাগ্নির্ধর্গান্ বহূন্ পুষ্যাতি ঘোরকপান্ ॥ ৩৯ ॥  
মনুষ্যালোকক্ষয়কৃৎ সুঘোরো নোচেদনুপ্রাপ্ত ইহান্তকঃ স্যাৎ । শস্ত্রাণি যন্ত্রং  
কবচান্ রথাংশ্চ নাগান্ হযাংশ্চ প্রতিপাদযিত্বা ॥ ৪০ ॥ যোধাশ্চ সর্বে কৃতনিশ্চ-  
যাস্তে তবস্ত হস্ত্যশ্বরথেষু বভাঃ । সাংগ্রামিকন্তে যদুপাজ্জনীযং সর্বং সমগ্রং  
কুরু তন্নরেন্দ্র ॥ ৪১ ॥ দুৰ্য্যোধনো ন হনমদ্য দাতুং জীবং স্তবৈতন্মপতে কথঞ্চিৎ ।  
যত্তে পুরস্তাদভবৎ সমৃদ্ধং দ্যতে হতং পাণ্ডবমুখ্য রাজ্যম্ ॥ ৪২ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্ভাষ্যপর্বণি শ্রীকৃষ্ণবাক্যে ত্রিসপ্ততি-  
তমোঃধ্যায়ঃ ॥ ৭৩ ॥

—•••—

ভীম উবাচ । যথা যথৈব শান্তিঃ স্যাৎ কুরুণাং যুদ্ধসুদন । তথা তথৈব ভাষে-  
থা মাম্ম যুদ্ধেন ভীষ্মে ॥ ১ ॥ অমৰ্ষী জাতসংরত্তঃ শ্রেষোধেষী মহামনাঃ । নোগ্রং  
দুৰ্য্যোধনো বাচ্যঃ সাত্মৈবৈমং সমাচরেঃ ॥ ২ ॥ প্রকৃত্যা পাপসত্ত্বশ্চ তুল্যচেতাশ্চ  
দস্যুভিঃ । ঐশ্বর্য্যমদমত্ত্বশ্চ কৃতবৈরশ্চ পাণ্ডবৈঃ ॥ ৩ ॥ অদীর্ঘদর্শী নিহুরী  
ক্ষেপ্তা ক্রুরপরাক্রমঃ । দীর্ঘমন্যুরনেযশ্চ পাপাত্মা নিকৃতিপ্রিয়ঃ ॥ ৪ ॥ ম্রিষেতাপি  
ন ভজ্যেত নৈব জহাৎ স্বকং মৰ্চম্ । তাদৃশেন শমঃ কৃষ্ণ মন্যে পরমদুষ্করঃ ॥ ৫ ॥

সুহৃদামপ্যবাচীনস্ত্যক্রুধর্মা প্রিয়ানৃতঃ । প্রতিহন্ত্যেব সুহৃদাং বাচশ্চৈব মনাংসি  
 চ ॥ ৬ ॥ সমন্যুবশমাপন্নঃ স্বভাবং দৃষ্টমাস্থিতঃ । স্বভাবাৎ পাপমভ্যেতি  
 তৃণৈশ্ছন্ন ইবোরগঃ ॥ ৭ ॥ দুর্ঘোষনো হি যৎসেনঃ সর্বথা বিদিতস্তব । যচ্ছী-  
 লো যৎস্বভাবশ্চ যদ্বলো যৎপরাক্রমঃ ॥ ৮ ॥ পুরা প্রসমাঃ কুরবঃ সহপুত্রাস্তথা  
 বয়ম্ । ইন্দ্রজ্যেষ্ঠা ইবাভুম মোদমানাঃ সবান্ধবাঃ ॥ ৯ ॥ দুর্ঘোষনস্য ক্রোধেন  
 ভারতা মধুসূদন । ধন্যস্তে শিশিরাপায়ে বনানীব হতাশনৈঃ ॥ ১০ ॥ অষ্ঠাদ-  
 শেমে রাজানঃ প্রখ্যাতা মধুসূদন । যে সমুচ্চিচ্ছিদুর্জাতীন্ সুহৃদশ্চ সবান্ধ-  
 বান্ ॥ ১১ ॥ অসুরাণাং সমৃদ্ধানাং জ্বলতামিব তেজসা । পর্য্যায়কালে ধর্মস্য  
 প্রাপ্তে কলিরজাযত ॥ ১২ ॥ হৈহয়ানামুদাবর্তো নীপানাং জনমেজয়ঃ । বহু-  
 লস্তালজ্জ্বানাং ক্রমীণামুদ্ধতো বসুঃ ॥ ১৩ ॥ অজবিন্দুঃ সুবীরাণাং সুরাষ্টিণাং  
 রুর্ধ্বকিকঃ । অর্কজশ্চ বলীহানাং চীনানাং ধৌতমূলকঃ ॥ ১৪ ॥ হযগ্রীবো বিদে-  
 হানাং বরযুশ্চ মহৌজসাম্ । বাহুঃ সুন্দরবেগানাং দীপ্তাষ্টিণাং পুঙ্করবাঃ ॥ ১৫ ॥  
 সহজশ্চৈদিমৎস্যানাং প্রবীরাণাং বৃষধ্বজঃ । ধারণশ্চন্দ্রবৎসানাং মুকুটানাং  
 বিগাহনঃ ॥ ১৬ ॥ সমশ্চ নন্দিবেগানামিত্যেতে কুলপাৎসনাঃ । যুগান্তে কৃষ্ণ  
 সমুতাঃ কুলেষু পুরুষাধমাঃ ॥ ১৭ ॥ অপ্যযং নঃ কুরুণাং স্যাদ্ধুগান্তে কাল-  
 সমুতঃ । দুর্ঘোষনঃ কুলাঙ্গারো জঘন্যঃ পাপপুরুষঃ ॥ ১৮ ॥ তস্মান্মৃদু শনৈবুযা  
 ধর্মার্থসহিতং হিতং । কামানুবন্ধবহুলং নোগ্রমুগ্রপরাক্রম ॥ ১৯ ॥ অপি দুর্ঘো-  
 ধনং কৃষ্ণ সর্বে বয়মধশ্চরাঃ । নীচৈর্ভূত্বান্মুযাস্যামো মাস্ম নোভ রতা নশন্ ॥ ২০ ॥  
 অপ্যদাসীনবৃত্তিঃ স্যাৎ যথা ন কুরুভিঃ সহ । বাসুদেব তথা কার্যং ন কুরুননয়ঃ  
 স্পৃশেৎ ॥ ২১ ॥ বাচ্যঃ পিতামহো বৃদ্ধো যে চ কৃষ্ণ সভাসদঃ । ভ্রাতৃণামস্ত সৌ-  
 ভ্রাত্রং ধার্ত্তরাষ্ট্রঃ প্রশাম্যতাম্ ॥ ২২ ॥ অহমেতদ্বুবীম্যেবং রাজা চৈব প্রশং-  
 সতি । অজ্ঞানো নৈব যুদ্ধার্থী ভূমিসী হি দযাজ্জনে ॥ ২৩ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্গানপর্বণি ভীমবাক্যে চতুঃসপ্ততি-  
 ক্রমোঃধ্যায়ঃ ॥ ৭৪ ॥



বৈশম্পায়ন উবাচ । এতচ্ছ্রীমহাবাহুঃ কেশবঃ প্রহৃদমিব । অভূতপূর্বং ভীমস্য  
 মাদ্দবোপহিতং বচঃ ॥ ১ ॥ গিরেরিব লঘুত্বং তচ্ছ্রীত্বমিব পাবকে । মদ্বা রামা-  
 নুজঃ শৌরিঃ শাক্ষধ্বা বৃকোদরম্ ॥ ২ ॥ সন্তেজসৎসুদা বাণ্ডির্মাতরিশ্বেব পাব-  
 কম্ । উবাচ ভীমমাসীনং রূপযাতিপরিপ্লুতম্ ॥ ৩ ॥ শ্রীভগবানুবাচ । হ্রমন্যদা

ভীমসেন যুদ্ধমেব প্রশংসসি । বধাভিনন্দিনঃ ক্রুরান্ ধার্ত্তরাষ্ট্রান্ মিমর্দিষুঃ ॥ ৪ ॥  
 ন চ স্বর্পিণি জাগর্ষি ম্যুজ্জঃ শেষে পরন্তপ । যোরামশাস্তামুযতীং সদা বাচং  
 প্রভাষসে ॥ ৫ ॥ নিশ্বসন্নগ্নিবন্তেন সন্তপ্তঃ শ্বেন মন্থ্যনা । অপ্রশান্তমনা ভীম  
 সধম ইব পাবকঃ ॥ ৬ ॥ একান্তে নিশ্বসন্ শেষে ভারত্ব ইব দুর্বলঃ । অপি হ্ৰা-  
 কেচিদুন্নতং মন্যন্তেহতদ্বিদো জনাঃ ॥ ৭ ॥ আরুহ্য বৃক্ষান্নিশূলান্ গজঃ পরিভূজ-  
 শ্শিব । নিগ্নন্ পন্ডিঃ ক্ষিতিং ভীম নিষ্ঠনন্ পরিধাবসি ॥ ৮ ॥ নান্মিন্ জনেহ্ভি-  
 রমসে রহঃ ক্ষিপসি পাণ্ডব । নান্যগ্নিশি দিবা বাপি কদাচিদভিনন্দসি ॥ ৯ ॥  
 অকস্মাৎ স্ময়মানশ্চ রহস্যাস্বে রুদগ্নিব । জাম্বোমূর্দ্ধানমাধায় চিরমাস্বে প্রমী-  
 লিতঃ ॥ ১০ ॥ ভ্রুকুটিঞ্চ পুনঃ কুর্ষম্মোষ্ঠৌ চ বিদগ্নিব । অভীক্ষুং দৃশ্যসে ভীম  
 সর্ষং তন্নর্ষ্যকারিতম্ ॥ ১১ ॥ যথা পুরস্তাৎ সবিতা দৃশ্যতে শুক্রমুচ্চরন্ । যথা চ  
 পশ্চানিশ্মুকো ধ্রুবং পর্য্যেতি রশ্মিবান্ ॥ ১২ ॥ তথা সত্যং ব্রবীম্যেতন্মাস্তি তস্য  
 ব্যতিক্রমঃ । হস্তাহং গদযাভ্যেত্য দুর্ঘ্যোধনমমর্ষণম্ ॥ ১৩ ॥ ইতি স্ম মध्ये ভ্রা-  
 তুণাং সত্যেনালভসে গদাম্ । তস্য তে প্রশমে বুদ্ধিক্ষীযতেহদ্য পরন্তপ ॥ ১৪ ॥  
 অহো যুদ্ধাভিকাঙ্কানাং যুদ্ধকাল উপস্থিত্তে । চেতাংসি বিপ্রতীপানি যদ্বাং ভী-  
 র্তীম বিন্দতি ॥ ১৫ ॥ অহো পাথ নিমিত্তানি বিপরীতানি পশ্যসি । স্বপ্নান্তে  
 জাগরান্তে চ তস্মাৎ প্রশমমিচ্ছসি ॥ ১৬ ॥ অহো নাশংসমে কিঞ্চিৎ পুংস্ত্রং ক্লীব  
 ইবাঙ্গনি । কশ্মলেনাভিপমোহসি তেন তে বিকৃতং মনঃ ॥ ১৭ ॥ উদ্বেপতে তে  
 হৃদযং মনস্তে প্রতিসীদতি । উরুস্তস্তগৃহীতোহসি তস্মাৎ প্রশমমিচ্ছসি ॥ ১৮ ॥  
 অনিত্যং কিল মর্ত্যস্য পার্থ চিত্তং চলাচলম্ । বাতবেগপ্রচলিতা অষ্টীলা শাল্ম-  
 লেরিব ॥ ১৯ ॥ তবৈষা ধিক্কুতা বুদ্ধির্গবাং বাগিব মানুষী । মনাংসি পাণ্ডুপু-  
 ত্রাণাং মজ্জযত্যপ্তবানিব ॥ ২০ ॥ ইদং মে হ্রদাশ্চর্য্যং পর্বতস্যেব সর্পণং ।  
 যদীদৃশং প্রভাষেথা ভীমসেনাসমং বচঃ ॥ ২১ ॥ স দৃষ্ট্বা স্বানি কৰ্ম্মাণি কুলে জন্ম  
 চ ভারত । উত্তিষ্ঠস্ব বিম্বাদং না রুথা বীর স্থিরো ভব ॥ ২২ ॥ ন চৈতদল্পকপং  
 তে যত্তে গুণানিরিন্দম । মদোজসা ন লভতে ক্ষত্রিযো ন তদশ্নুতে ॥ ২৩ ॥

ইত্যুদ্বোধনপর্বণি ভগবদ্গানপর্বণি ভগবদ্ভাক্যে পঞ্চসপ্ততি

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৭৫ ॥



বৈশম্পায়ন উবাচ । তথোক্তো বাসুদেবেন নিত্যমন্থ্যরমর্ষণঃ । সদশ্ববৎ সমা-  
 ধাবদ্বভাবে তদনন্তরম্ ॥ ১ ॥ ভীমসেন উবাচ । অন্যথা মাং চিকীর্ষন্তমন্যথা মন্য-

সেংচ্যুত । প্রণীতভাবমত্যর্থং যুধি সত্যপরাক্রমম্ ॥ ২ ॥ বেৎসি দাশার্হসঙ্ঘং  
 মে দীর্ঘকালং সহোষিতঃ । উত বা মাং ন জানাসি প্লবন্ হৃদ ইবাঙ্গবে । তস্মাদ-  
 নতিরূপাভির্বাণ্ডির্মাং হুং সমচ্ছসি ॥ ৩ ॥ কথং হি ভীমসেনং মাং জানন্ কশ্চন  
 মাধব । ব্রূবাদপ্রতিরূপাণি যথা মাং বন্ধুমর্হসি ॥ ৪ ॥ তস্মাদিদং প্রবক্ষ্যামি  
 বচনং বৃষ্ণিনন্দন । আত্মনঃ পৌরুষশ্চৈব বলঞ্চ ন সমং পরৈঃ ॥ ৫ ॥ সর্বথানা-  
 র্যাকশ্মৈতৎ প্রশংসা স্বযমাত্মনঃ । অতিবাদাপবিদ্ধস্তু বক্ষ্যামি বলমাত্মনঃ ॥ ৬ ॥  
 পশ্যেমে রোদসৌ ক্লম্ব যথোরাসম্মিমাঃপ্রজাঃ । অচলে চাপ্রতিষ্ঠে চাপ্যনস্তে  
 সূর্যমাতরৌ ॥ ৭ ॥ যদীমে সহসা ক্রুদ্ধে সমেষাতাং শিলে ইব । অহমেতে নিগৃ-  
 হীষাং বাহুভ্যাং সচরাচরে ॥ ৮ ॥ পশ্যেত্যদন্তুরং বাহ্নোর্মহাপরিঘযোরিব ।  
 ব এতৎ প্রাপ্য মুচ্যেত ন তৎ পশ্যামি পুরুষম্ ॥ ৯ ॥ হিমবাংশ্চ সমুদ্রশ্চ বজ্রী  
 বা বলভিৎ স্বযম্ । মযাভিপন্নং ত্রাঘেরন্ বলমাস্থায ন ত্রযঃ ॥ ১০ ॥ যুদ্ধার্থান্  
 ক্ষত্রিয়ান্ সর্বান পাণ্ডবেষাততাত্মিনঃ । অধঃপাদতলে নৈতানধিষ্ঠাস্যামি ভূত-  
 লে ॥ ১১ ॥ ন হি হুং নাভিজানাসি মম বিক্রমমচ্যুত । যথা মযা বিনির্জিত্য  
 রাজানো বশগাঃ কৃতঃ ॥ ১২ ॥ জ্ঞথ চেন্মাং ন জানাসি সূর্য্যস্যেবৌদ্যতঃ  
 প্রভাম্ । বিগাঢ়ে যুধি সম্বাধে বেৎস্যসে মাং জনাৰ্দ্দন ॥ ১৩ ॥ পরুশৈরাক্ষিপ-  
 স্যেবং ত্রণংপুতিমিবোন্নয়ন্ । যথামতি ব্রবীথে্যতদ্বিদ্ধি নামধিকং ততঃ ॥ ১৪ ॥  
 দ্রষ্টাসি যুধি সম্বাধে প্রবৃত্তে বৈশসেংহনি । মযা প্রণুন্নান্মাতঙ্গানুখিনঃ সাদিনস্ত-  
 থা ॥ ১৫ ॥ তথা নরানভিক্রুদ্ধং নিম্নস্তং ক্ষত্রিয়র্ষভান্ । দ্রষ্টা মাং হুঞ্চ লোকশ্চ  
 নিক্ষর্ষস্তং বরান্ বরান্ ॥ ১৬ ॥ ন মে সীদন্তি মজ্জানো ন মমোদ্বেপতে মনঃ ।  
 সর্বলোকাদপি ক্রুদ্ধাৎ ন ভযং বিদ্যতে মম ॥ ১৭ ॥ কিন্তু সৌহৃদমেবৈতৎ কুপযা  
 মধুসূদন । সর্বাংস্তিতিক্ষে সংক্বেশান্ মা চ নো ভরতা নশন্ ॥ ১৮ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্ভাষ্যপর্বণি ভীমবাক্যে ষট্‌সপ্ততি-

কমোহধ্যায়ঃ ॥ ৭৬ ॥



শ্রীভগবানুবাচ । ভাবং জিজ্ঞাসমানোহহং প্রণয়াদিদমক্রবম্ । ন চাক্ষেপাম  
 পাণ্ডিত্যম্ন ক্রোধাম্ন বিবক্ষযা ॥ ১ ॥ বেদাহং তব মহাত্ম্যমুত তে বেদ যদ্বলম্ ।  
 উত তে বেদ কৰ্ম্মাণি ন হুং পরিভবাম্যহম্ ॥ ২ ॥ যথা চাত্মনি কল্যাণং সম্ভা-  
 বযসি পাণ্ডব । সহস্রগুণমপ্যেতদ্ব্যযি সম্ভাবযাম্যহম্ ॥ ৩ ॥ ষাদৃশে চ কুলে জন্ম  
 সর্বরাজাভিপূজিতে । বন্ধুভিশ্চ সূহৃদ্ভিশ্চ ভীম ধর্মসি তদৃশঃ ॥ ৪ ॥ জিজ্ঞাসস্তো

হি ধর্মস্য সন্দ্বিগ্নস্য বৃকোদর । পর্য্যায়ং নাধ্যবস্যস্তি দেবমানুষযোজনাঃ ॥ ৫ ॥  
 স এব হেতুভূত্বা হি পুরুষস্যার্থসিদ্ধিষু । বিনাশেহপি স এবাস্য সন্দ্বিগ্নং কৰ্ম  
 পৌরুষম্ ॥ ৬ ॥ অন্যথা পরিদৃষ্টানি কবিভির্দোষদর্শিভিঃ । অন্যথা পরিব-  
 র্ত্তন্তে বেগা ইব নভস্বতঃ ॥ ৭ ॥ স্মৃত্ত্বিতং স্মনীতঞ্চ ন্যাযতশ্চোপপাদিতম্ ।  
 কৃতং মানুষ্যকং কৰ্ম দৈবেনাপি বিরূধ্যতে ॥ ৮ ॥ দৈবমপ্যকৃতং কৰ্ম পৌরুষেণ  
 বিহন্যতে । শীতমুষ্ণং তথা বর্ষং ক্ষুৎপিপাসে চ ভারত ॥ ৯ ॥ যদন্যদ্বিকৃত্যবন্য  
 পুরুষস্য স্বয়ং কৃতম্ । তস্মাদনুপলোখশ্চ বিদ্যতে তত্র লক্ষণম্ ॥ ১০ ॥ লোকস্য  
 নান্যতো বৃত্তিঃ পাণ্ডবান্যত্র কৰ্মণঃ । এবং বুদ্ধিঃ প্রবর্ত্তেত ফলং ন্যাদভূষা-  
 যযে ॥ ১১ ॥ য এবং কৃতবুদ্ধিঃ সন্ কৰ্মস্বৈব প্রবর্ত্তেত । নাসিদ্ধৌ ব্যথতে তস্য  
 ন সিদ্ধৌ হর্ষমশ্নতে ॥ ১২ ॥ তত্রৈবননুমাত্রা মে ভীমসেন বিবক্ষিতা । নৈকান্ত-  
 সিদ্ধির্বক্তব্য । শত্রুভিঃ সহ সংযুগে ॥ ১৩ ॥ নাতিপ্রহীণরশ্মিঃ স্যাৎ তথা ভাব-  
 বিপর্য্যয়ে । বিবাদমচ্ছেদগুণিৎ বাপ্যেতমর্থং ব্রবীনি তে ॥ ১৪ ॥ শ্বে ভূতে  
 ধৃতরাষ্টস্য সনীপং প্রাপ্য পাণ্ডব । যতিষ্যে প্রশমং কর্ত্ত্বং যুগ্মদর্থমঙ্গাপযন্ ॥ ১৫ ॥  
 শমক্ষেতে করিষ্যস্তি ততোহনন্তং বশো মম । ভবতাঞ্চ কৃতঃ কামস্তেবাঞ্চ শ্রেয  
 উত্তমম্ ॥ ১৬ ॥ তে চেদভিনিবেক্ষ্যন্তে নাভ্যুপৈষ্যন্তি মদচঃ । কুরবো যুদ্ধমেবাত্র  
 ঘোরং কৰ্ম ভবিষ্যতি ॥ ১৭ ॥ অস্মিন্ যুদ্ধে ভীমসেন হৃষি ভারঃ সমাহিতঃ ।  
 ধূরজ্জুনেন ধার্য্যা স্যাদ্বোচব্য ইতরো জনঃ ॥ ১৮ ॥ অহং হি যন্তা বীতংসোর্ভ-  
 বিতা সংযুগে সতি । ধনঞ্জয়স্যৈষ কানো ন হি যুদ্ধং ন কাময়ে ॥ ১৯ ॥ তস্মাদা-  
 শঙ্কমানোহহং বৃকোদর মতিং তব । গদতঃ ক্লীববা বাচা তেজস্তে সমদীদিপম ॥ ২০ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্গানপর্বণি কৃষ্ণবাক্যে সপ্তসপ্ততি-

তনোহধ্যায়ঃ ॥ ৭৭ ॥



অর্জুন উবাচ । উক্লং যুধিষ্ঠিরেণৈব যাবদ্বাচ্যং জনাৰ্দ্দন । তব বাক্যন্ত মে  
 শ্রুত্বা প্রতিভাতি পরন্তপ ॥ ১ ॥ নৈব প্রশমমত্র হৃৎমন্যসে স্মকরং প্রভো । লো-  
 ভাছা ধৃতরাষ্টস্য দৈন্যাদ্ধা সমুপস্থিতাৎ ॥ ২ ॥ অকলং নন্যসে বাপি পুরুষস্য  
 পরাক্রমম্ । ন চান্তুরেণ কৰ্ম্মাণি পৌরুষেণ ফলোদযঃ ॥ ৩ ॥ তদিদং ভাষিতং  
 বাক্যং তথা চ ন তথৈব তং । ন চৈতদেবং দ্রষ্টব্যমসাধ্যমপি কিঞ্চন ॥ ৪ ॥ কি  
 ঞ্চেতন্নন্যসে ক্লুচ্ছমস্মাকমবলাদকম্ । কুর্বন্তি তেষাং কৰ্ম্মাণি যেষাং নাস্তি ফলো-  
 দযঃ ॥ ৫ ॥ সম্পাদ্যমানং সম্যকস্যাৎ তং কৰ্ম সফলং প্রভো । স তথা কৃষ্ণ

वर्तुष्व यथा शर्म भवेत् पटैः ॥ ७ ॥ पाण्डवानां कुरूणां भवान् प्रथमतः  
 सूहृत् । सुराणामसुराणां यथा वीर प्रजापतिः ॥१॥ कुरूणां पाण्डवानां प्रति-  
 पत्सु निरामयम् । अस्मद्विदमनुष्ठानं मन्ये तव न दुष्करम् ॥ ८ ॥ एतन् कार्य-  
 तामेति कार्यं तव जनार्दन । गमनादेवमेव त्वं करिष्यासि जनार्दन ॥२॥ चिकी-  
 र्षितमथान्यात्ते तस्मिन् वीर दुरात्मनि । भविष्यति च तं सर्वं यथा तव चिकीर्षि-  
 तम् ॥ १० ॥ शर्म तैः सह वा नोऽस्तु तव वा यच्चिकीर्षितम् । विचार्यमाणो यः काम-  
 स्तुव क्रुष्ये स नोऽगुरुः ॥ ११ ॥ न स नार्हति दुष्कात्त्वा वधं समुत्तवान्धवः । येन  
 धर्मसूते दृष्ट्वा न सा श्रीरूपमर्षिता ॥ १२ ॥ यच्छाप्यपश्यतोपायं धर्मिष्ठं मधु-  
 सूदन । उपायेन नृशंसैन हता दुर्युतदेविना ॥ १३ ॥ कथं हि पुरुषो जातः  
 क्लिष्येषु धनुर्धरः । समाहूतो निवर्तेत प्राणत्यागेऽप्यपस्थिते ॥ १४ ॥ अधर्मेण  
 जितान् दृष्ट्वा बने प्रव्रजितास्तथा । वध्यतां मम वार्ष्णेय निर्गतोऽसौ सुयो-  
 धनः ॥ १५ ॥ न चैतदद्भुतं क्रुष्ये मित्रार्थे यच्चिकीर्षसि । क्रिया कथं मुख्या स्यान्मु-  
 दुर्ना वेतरेण वा ॥ १६ ॥ अथवा मन्यसे ज्यायान् वधस्तेषामनन्तरम् । तदेव  
 क्रियतामाशु न विचार्यमतस्तथा ॥ १७ ॥ जानासि हि यथा तेन द्रौपदी पापव-  
 द्दिना । परिक्रिष्टा सभामध्ये तत्र चास्योपमर्षितम् ॥ १८ ॥ स नाम सम्यग्बर्तेत  
 पाण्डुर्वेषिणि माधव । न मे संजायते बुद्धिर्वीर्यमुष्णमिवोषरे ॥ १९ ॥ तस्माद्धर्म-  
 न्यसे युक्तं पाण्डवानां हितं यत् । तदाशु कुरु वार्ष्णेय यन्मः कार्यमनन्तरम् ॥२०॥

इत्युद्योगपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि अर्जुनवाक्येऽष्टमस्तुति-

तमोऽध्यायः ॥ १८ ॥



श्रीभगवानुवाच । एवमेतन्महादाहो यथा वदसि पाण्डव । पाण्डवानां कुरू-  
 णां प्रतिपत्स्ये निरामयम् ॥ १ ॥ सर्वं ह्यिदं मया त्वं वीतस्यो कर्मणो-  
 र्दयोः । केतुं हि रसवच्छुद्धं कर्मणैवोपपादितम् । ऋते वर्षान् कौन्तेय जातु  
 निर्बर्तते फलम् ॥ २ ॥ तत्र वै पौरुषं वयुरासेकं यत्प्रकारितम् । तत्र चापि  
 ध्रुवं पश्येत् शोषणं दैवकारितम् ॥ ३ ॥ तदिदं निश्चितं बुद्ध्या पूर्वेरपि  
 महात्माभिः । दैवे च मानुषे चैव संयुक्तं लोककुरणम् ॥ ४ ॥ अहं हि तं  
 करिष्यामि परं पुरुषकारतः । दैवस्तु न मया शक्यं कर्म कर्तुं कथं न ॥ ५ ॥  
 स हि धर्मं लोकं त्यक्त्वा चरति दुर्मतिः । न हि नस्तप्यते तेन तथाकापेण  
 कर्मणा ॥ ६ ॥ तांश्चापि बुद्धिं पापिष्ठां बद्धयन्त्यस्य मद्भिः । शकुनिः सूतपुत्रश्च

ব্রাতা দুঃশাসনস্তথা ॥ ৭ ॥ স হি ত্যাগেন রাজ্যস্য ন শমং সমুপৈষ্যতি । অন্তরেণ  
 বধং পার্থ সান্নিবন্ধঃ সুযোধনঃ ॥ ৮ ॥ ন চাপি প্রণিপাতেন ত্যক্তুমিচ্ছতি  
 ধর্মরাট্ । যাচ্যমানশ্চ রাজ্যং স ন প্রদাস্যতি দুর্মতিঃ । ন তু মন্যে স তদ্বাচ্যো  
 যদ্বিধিষ্টিরশাসনম্ ॥ ৯ ॥ উক্তং প্রযোজনং যত্ন ধর্মরাজেন ভারত । তথা পা-  
 পস্ত তৎ সর্বং ন করিষ্যতি কৌরবঃ ॥ ১০ ॥ তস্মিংশ্চাক্রিয়মাণেহসৌ লোক-  
 বধ্যো ভবিষ্যতি । মম চাপি স বধ্যো হি জগতশ্চাপি ভারত ॥ ১১ ॥ যেন কৌমা-  
 রকে যুযং সর্ষে বিপ্রকৃতাস্তদা । বিপ্রলপ্তঞ্চ বো রাজ্যং নৃশংসেন দুরাত্মনা ॥ ১২ ॥  
 ন চোপশাম্যতে পাপঃ শ্রিয়ং দৃষ্ট্বা যুধিষ্ঠিরে । অসকৃচ্চাপ্যহন্তেন ত্বংকৃতে পার্থে  
 ভেদিতঃ ॥ ১৩ ॥ ন মযা তদাহীতঞ্চ পাপং তস্য চিকীর্ষিতম্ । জানাসি হি মহা-  
 বাহো ত্বমপ্যস্য পরং মতম্ ॥ ১৪ ॥ প্রিয়ং চিকীর্ষমাণঞ্চ ধর্মরাজস্য মামপি ।  
 সঞ্জানংস্তস্য চাত্মানং মম চৈব পরং মতম্ । অজানান্নিব মাং কস্মাদর্জুনাদ্যাভি-  
 শঙ্কসে ॥ ১৫ ॥ যচ্চাপি পরমং দিব্যং তচ্চাপ্যনুগতং ত্বয়া । বিধানবিহিতং  
 পার্থ কথং শর্ম ভবেৎ পরৈঃ ॥ ১৬ ॥ যত্ন বাচা মযা শক্যং কস্মিণা বাপি পাশ্চিব ।  
 করিষ্যে তদহং পার্থ ন ত্বাশংসে শমং পরৈঃ ॥ ১৭ ॥ কথং গোহরণে হুক্তো নৈত  
 চ্ছর্ম তথাদিতঃ । যাচ্যমানোহপি ভীষ্মেণ সম্বৎসরগতেহধনি ॥ ১৮ ॥ তদৈব  
 তে পরাভূতা যদা সঙ্কলিতাস্ত্রযা । লবশঃ ক্ষণশ্চাপি ন চতুষ্ঠঃ সুযোধনঃ ॥ ১৯ ॥  
 ন বথা তু মযা কার্যং ধর্মরাজস্য শাসনম্ । বিভাব্যং তস্য ভূষশ্চ কস্ম পাপং  
 দুরাত্মনঃ ॥ ২০ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্গানপর্বণি কৃষ্ণবাক্যে একোনাশীতি-

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৭৯ ॥



নকুল উবাচ । উক্তং বহুবিধং বাক্যং ধর্মরাজেন মাধব । ধর্মজ্ঞেন বদান্যেন  
 শ্রুতক্ষেবেহ তদ্বয়া ॥ ১ ॥ মতমাজ্জায় রাজ্ঞশ্চ ভীমসেনেন মাধব । সংশবো বাহু-  
 বীর্যঞ্চ খ্যাপিতং মাধবাত্মনঃ ॥ ২ ॥ তথৈব ফাল্গুনেনাপি যদুক্তং তদ্বয়া শ্রুতম্ ।  
 আত্মনশ্চ মতং বীর কথিতং ভবতাসকৃতং ॥ ৩ ॥ সর্বমেতদতিক্রম্য শ্রদ্ধা পরমতং  
 ভবান্ । যৎ প্রাপ্তকালং মন্যেথাস্তৎকুর্ব্যাঃ পুরুষোত্তম ॥ ৪ ॥ তস্মিংশ্চাস্মিন্নি-  
 মিত্তে হি মতং ভবতি কেশব । প্রাপ্তকালং মনুষ্যেণ ক্ষমং কার্যমরিন্দম ॥ ৫ ॥  
 অন্যথা চিন্তিতো হর্থঃ পুনর্ভবতি সোহন্যথা । অনিত্যমতযো লোকে নরাঃ পুরুষ-  
 সত্তম ॥ ৬ ॥ অন্যথা বুদ্ধযো হাসন্নস্মাসু বনবাসিষু । অদৃশ্যেঘন্যথা কৃষ্ণ দৃশ্যেষু



পুনরন্যথা ॥ ৭ ॥ অস্মাকমপি বার্ষেয বনে বিচরতাংতদা । ন তথা প্রণযো রাজ্যে  
যথা সম্প্রতি বর্ততে ॥ ৮ ॥ নিবৃত্তবনবাসামঃ শ্রুত্বা বীর সমাগতাঃ । অক্ষৌহিণ্যো  
হি সপ্তেমান্সুৎপ্রসাদাজ্জনান্দন ॥ ৯ ॥ ইমান্ হি পুরুষব্যাঘানচিন্ত্যবলপৌরু  
ষান্ । আন্তশস্ত্রানুগে দৃষ্টা ন ব্যথেদিহ্ কঃ পুমান্ ॥ ১০ ॥ স ভবান্ কুরুমধ্যে  
তং সান্ত্বপূর্বং ভযোত্তরম্ । বুধাঢ্যাক্যং যথা মন্দো ন ব্যথেত সুযোধনঃ ॥ ১১ ॥  
যুধিষ্ঠিরং ভীমসেনং বীতংসুং চাপরাজিতম্ । সহদেবঞ্চ মাঞ্চৈব ত্বাঞ্চ রামঞ্চ  
কেশব ॥ ১২ ॥ সাত্যকিঞ্চ মহাবীর্যং বিরাটঞ্চ মহাভুজম্ । দ্রুপদঞ্চ সহামাত্যং  
ধৃষ্টদ্যুম্নঞ্চ মাধব ॥ ১৩ ॥ কাশিরাজঞ্চ বিক্রান্তং ধৃষ্টকৈতুঞ্চ চেদিপম্ । মাংস-  
শোণিতভূমত্যঃপ্রতিযুধ্যত কো যুধি ॥ ১৪ ॥ স ভবান্ গমনাদেব সাধযিষ্যত্য-  
সংশয়ম্ । ইফটমর্থং মহাবাহো ধর্ম্মরাজস্য কেবলম্ ॥ ১৫ ॥ বিদূরশ্চৈব ভীষ্মশ্চ  
দ্রোণশ্চ সহবাহ্লিকঃ । শ্রেযঃ সমর্থা বিজ্ঞাতুমুচ্যমানাস্ত্বযানয ॥ ১৬ ॥ তে বৈ তমন্মু-  
নেষ্যন্তি ধৃতরাষ্ট্রং জনাধিপম্ । তঞ্চ পাপসমাচারং সহামাত্যং সুযোধনম্ ॥ ১৭ ॥  
শ্রোতা চার্থস্য বিদূরস্তুঞ্চ বক্তা জনান্দন । কমিবার্থং বিবর্তন্তং স্থাপযেতাং ন  
বর্ত্তানি ॥ ১৮ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্দ্যানপর্বণি নকুলবাক্যেহশীতিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৮০ ॥

—৩৩—

সহদেব উবাচ । যদেতৎ কথিতং রাজ্ঞা ধর্ম্মেষ সনাতনঃ । যথা চ যুদ্ধমেব  
স্যাত্তথা কার্যমরিন্দম ॥ ১ ॥ যদি প্রশমনিক্ষেযুঃ কুরবঃ পাণ্ডবৈঃ সহ । তথাপি  
যুদ্ধং দাশাহঁ যোজযেথাঃ নহৈব তৈঃ ॥ ২ ॥ কথং নু দৃষ্ট্বা পাঞ্চালীং তথা  
কৃষ্ণ সভাগতাম্ । অবধেন প্রশাম্যেত মম মন্যুঃ সুযোধনে ॥ ৩ ॥ যদি ভীমাজ্জ-  
নৌ কৃষ্ণ ধর্ম্মরাজশ্চ ধার্ম্মিকাঃ । ধর্ম্মমুৎসৃজ্য তেনাহং যোদ্ধুমিচ্ছামিসংযুগে ॥ ৪ ॥  
সাত্যকিরুবাচ । সত্যমাহ মহাবাহো সহদেবো মহামতিঃ । দর্বেযাধনবধে শান্তি-  
স্তস্য কোপস্য মে ভবেৎ ॥ ৫ ॥ ন জানাসি যথা দৃষ্ট্বা চীরাজিনধরান্ বনে ।  
তবাপি মন্যুরুদ্ধুতো দুঃখিত্যম্ প্রেক্ষ্য পাণ্ডবান্ ॥ ৬ ॥ তস্মান্মাদ্রীসুতো বীরো  
যদাহ রণকর্কশঃ । বচনং সর্ব্বষোধানাং তন্নতং পুরুষোত্তম ॥ ৭ ॥ বৈশম্পায়ন  
উবাচ । এবং বদতি বাক্যস্ত যুযুধানে মহামতো । সুভীমঃ সিংহনাদোহভূদ্যো-  
ধানাং তত্র সর্ব্বশঃ ॥ ৮ ॥ সর্বে হি সর্ব্বরো শীরাস্তদচ ধ্ প্রত্যপুজন্ । সাধুসাধ্বিতি  
শৈনেযং হর্ষযন্তো যুযুৎসবঃ ॥ ৯ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্দ্যানপর্বণি সহদেববাক্যে একাশীতিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৮১ ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ । রাজ্জন্তু বচনং শ্রুত্বা ধর্ম্মার্থসহিতং হিতম্ । কৃষ্ণা দাশার্হ-  
 মাসীনমত্রবীচ্ছোককর্ষিতা ॥ ১ ॥ সুতা ক্রপদরাজস্য স্বসিতাযতমূর্দ্ধজা । সংপূজ্য  
 সহদেবঞ্চ সাত্যকিঞ্চ মহারথম্ ॥ ২ ॥ ভীমসেনঞ্চ সংশান্তং দৃষ্ট্বা পরমদুর্মনাঃ ।  
 অশ্রুপূর্ণেক্ষণা বাক্যমুবাচেদং যশস্বিনী ॥ ৩ ॥ বিদিতস্তে মহাবাহো ধর্ম্মজ্ঞ মধুসূ-  
 দন । যথা নিকৃতিমাশ্রায় ভ্রংশিতাঃ পাণ্ডবাঃ সুখাৎ । ধৃতরাষ্ট্রস্য পুত্রেণ সামা-  
 ত্যেন জনার্দন ॥ ৪ ॥ যথা চ সঞ্জযো রাজ্ঞা মন্ত্রং রহসি শ্রাবিতঃ । যুধিষ্ঠিরেণ  
 দাশার্হ তচ্চাপি বিদিতং তব ॥ ৫ ॥ যথোক্তঃ সঞ্জযশ্চৈব তচ্চ সর্বং শ্রুতং ত্বয়া ।  
 পঞ্চ নস্তাত দীযস্তাং গ্রামা-ইতি মহাদ্যুতে । ৬ ॥ অবিস্তলং বৃকস্তলং মাকন্দীং  
 বারণাবতম্ । অবসানং মহাবাহো কঞ্চিদেকঞ্চ পঞ্চমম্ ॥ ৭ ॥ ইতি দুর্য্যোধনো  
 বাচ্যঃ সুহৃদশচাস্য কেশব । ন চাপি হকরোদ্বাক্যং শ্রুত্বা কৃষ্ণ সুযোধনঃ ॥ ৮ ॥  
 যুধিষ্ঠিরস্য দাশার্হ হীমতঃ সন্ধিমিচ্ছতঃ । অপ্রদানেন রাজ্যস্য যদি কৃষ্ণ সুযো-  
 ধনঃ । সন্ধিমিচ্ছন্ন কর্তব্যস্তত্র গত্বা কথঞ্চন ॥ ৯ ॥ শক্ষ্যন্তি হি মহাবাহো পাণ্ডবাঃ  
 সৃঞ্জযৈঃ সহ । ধার্ত্তরাষ্ট্রবলং ঘোরং ক্রুদ্ধং প্রতিসমাসিতুম্ ॥ ১০ ॥ ন হি সাম্না ন  
 দানেন শক্যোহর্থস্তেষু কশ্চন । তস্মান্তেষু ন কর্তব্যা রূপা তে মধুসূদন ॥ ১১ ॥  
 সাম্না দানেন বা কৃষ্ণ যেন শাম্যন্তি শত্রবঃ । যোক্তব্যস্তেষু দণ্ডঃ স্যাজ্জীবিতং পরি-  
 রক্ষতা ॥ ১২ ॥ তস্মান্তেষু মহাদণ্ডঃ ক্ষেপ্তব্যঃ ক্ষিপ্রমচ্যত । ত্বয়া চৈব মহাবাহো  
 পাণ্ডবৈঃ সৃঞ্জযৈঃ সহ ॥ ১৩ ॥ এতৎ সমর্থং পার্থানাং তব চৈব যশস্করম্ । ক্রিয়-  
 মাণং ভবেৎ কৃষ্ণ ক্ষলস্য চ সুখাবহম্ ॥ ১৪ ॥ ক্ষলিযেণ হি হন্তব্যঃ ক্ষলিযো  
 লোভমাস্থিতঃ । অক্ষলিযো বা দাশার্হ স্বধর্ম্মমনুতিষ্ঠতা ॥ ১৫ ॥ অন্যত্র ব্রাহ্ম-  
 ণাত্মাত সর্বপাপেষুবস্থিতাৎ । গুরুর্হি সর্ববর্ণানাং ব্রাহ্মণঃ প্রসূতাগ্রভুক্ ॥ ১৬ ॥  
 যথাবধে ভবেদ্রোধো বধ্যমানে জনার্দন । সংরধ্যস্যাবধে দৃষ্ট ইতি ধর্ম্মবিদো  
 বিদুঃ ॥ ১৭ ॥ যথা ত্বাং ন স্পৃশেদেব দোষঃ কৃষ্ণ তথা কুরু । পাণ্ডবৈঃ সহ  
 দাশার্হ সৃঞ্জযৈশ্চ সসৈনিকৈঃ ॥ ১৮ ॥ পুনরুক্তঞ্চ বক্ষ্যামি বিশ্রান্তেণ জনার্দন ।  
 কা নু সীমন্তিনী মাদৃক্ পৃথিব্যামস্তি কেশব ॥ ১৯ ॥ সুতা ক্রপদরাজস্য বেদী-  
 মধ্যাৎ সমুস্থিতা । ধৃষ্টদ্যুম্নস্য ভগিনী তব কৃষ্ণ প্রিয়া সখী ॥ ২০ ॥ আজমীঢ়-  
 কুলং প্রাপ্তা স্মৃষা পাণ্ডোর্মহাত্মনঃ । মহিবী পাণ্ডুপুত্রাণাং পঞ্চেন্দ্রসমবচ্চ-  
 সাম্ ॥ ২১ ॥ সুতা মে পঞ্চভির্বীরৈঃ পঞ্চ জাতা মহারথাঃ । অভিমন্যুর্যথা কৃষ্ণ  
 তথা তে তব ধর্ম্মতঃ ॥ ২২ ॥ সাহং কেশগ্রহং প্রাপ্তা পরিক্লেপ্তা সভাক্তা ।  
 পশ্যতাং পাণ্ডুপুত্রাণাং স্বযি জীবতি কেশব ॥ ২৩ ॥ জীবৎসু পাণ্ডুপুত্রেষু

পাঞ্চালেষু বৃষ্ণিষু । দাসীভুতান্মি পাপানাং সভামধ্যে ব্যবস্থিতা ॥ ২৪ ॥ নির-  
 মর্ষেষু চেষ্টিষু প্রেক্ষমাণেষু পাণ্ডুযু । পাহি মামিতি গোবিন্দ মনসা চিন্তিতোহসি  
 মে ॥ ২৫ ॥ যত্র মাং ভগবান্ রাজা শ্বশুরো বাক্যমব্রবীৎ । বরং বৃণীষ পাঞ্চা-  
 লি বরার্থাসি যত্রাসি মে ॥ ২৬ ॥ অদাসাঃ পাণ্ডবাঃ সন্ত সরথাঃ সাযুধা ইতি ।  
 মযোক্তে যত্র নিম্নুক্তা বনবাসায় কেশব ॥ ২৭ ॥ এবংবিধানাং দুঃখানামভি-  
 জ্ঞোহসি জনার্দন । ত্রাযস্ব পুণ্ডরীকাক্ষ সতত্ জ্ঞাতিবান্ধবাম্ ॥ ২৮ ॥ নম্বহং কৃষ্ণ  
 ভীষ্মস্য ধৃতরাষ্ট্রস্য চোভযোঃ । স্মৃষা ভবামি ধর্ম্মেণ সাহং দাসী কৃত্য বলাৎ ॥ ২৯ ॥  
 ধিক্ পার্থস্য ধনুস্বত্নাং ভীমসেনস্য ধিগ্বেলম্ । যত্র দর্যেয়াধনঃ কৃষ্ণ মুহূর্তমপি জী-  
 বতি ॥ ৩০ ॥ যদি তেহহমনুগ্রাহ্যা যদি তেহস্তুি রূপা মযি । ধার্ত্তরাষ্ট্রেষু বৈ  
 কোপঃ সর্বঃ কৃষ্ণ বিধীয়তাম্ ॥ ৩১ ॥ বৈশম্পায়ন উবাচ । ইত্যুক্ত্বা মৃদুসংহারং  
 বৃজিনাগ্রং সুদর্শনম্ । স্তনৌলমসিতাপাক্ষী সর্বগন্ধাধিবাসিতম্ ॥ ৩২ ॥ সর্বল-  
 ক্ষণসম্পন্নং মহাভুজগবচ্চর্মম্ । কেশপক্ষং বরারোহা গৃহ বামেন পাণিনি ॥ ৩৩ ॥  
 পদ্মাক্ষী পুণ্ডরীকাক্ষমুপেত্য গজগামিনী । অশ্রুপূর্ণেক্ষণা কৃষ্ণা কৃষ্ণং বচনম-  
 ব্রবীৎ ॥ ৩৪ ॥ অযন্ত পুণ্ডরীকাক্ষ দুঃশাসনকরোদ্ধৃতঃ । স্মৃত্তব্যঃ সর্বকার্যেষু  
 পরেষাং সন্ধিমিচ্ছতা ॥ ৩৫ ॥ যদি ভীমাজ্জুনৌ কৃষ্ণ রূপণৌ সন্ধিকামুকৌ । পিতা  
 মে যোৎস্যতে বন্ধঃ সহ পুত্রৈর্মহারথেঃ ॥ ৩৬ ॥ পঞ্চ চৈব মহাবীৰ্য্যাঃ পুত্রা মে  
 মধুসূদন । অভিমন্যুং পুরস্কৃত্য যোৎস্যন্তে কুরুভিঃ সহ ॥ ৩৭ ॥ দুঃশাসনভুজং  
 শ্যামং সংছিন্নং পাংশুগুণ্ডিতম্ । যদ্যহন্ত ন পশ্যামি কা শান্তির্হৃদযস্য মে ॥ ৩৮ ॥  
 ত্রয়োদশ হি বর্ষাণি প্রতীক্ষন্ত্য গতানি মে । নিধায় হৃদযে মন্যুং প্রদীপ্তমিব  
 পাবকম্ ॥ ৩৯ ॥ বিদীৰ্য্যতে মে হৃদযং ভীমবাক্শল্যপীড়িতম্ । যোহযমদ্য ম-  
 হাবাহুর্ধর্ম্মমেবানুপশ্যতি ॥ ৪০ ॥ ইত্যুক্ত্বা বাষ্পসম্মেন কণ্ঠেনাঘতলোচনা ।  
 রুরোদ কৃষ্ণা সোৎকম্পং সম্বরং বাষ্পগদগদম্ ॥ ৪১ ॥ স্তনৌ পীনাঘতশ্রোণী  
 সহিতাবভিবর্ষতী । দ্রবীভুতমিবাত্যক্ষং মুঞ্চন্তী বারি নেত্রজম্ ॥ ৪২ ॥ তামুবাচ  
 মহাবাহুঃ কেশবঃ পরিসান্ত্বয়ন্ । অচিরাদ্ধৃক্যসে কৃষ্ণে রুদতীভরতাস্ত্রযঃ ॥ ৪৩ ॥  
 এবং তা ভীরু রোৎস্যন্তি নিহতজ্ঞাতিবান্ধবাঃ । হতমিত্রা হতবলা যেষাং ক্রুদ্ধাসি  
 ভাবিনি ॥ ৪৪ ॥ অহঞ্চ তৎ করিষ্যামি ভীমাজ্জুনঘর্ষৈঃ সহ । যুধিষ্ঠিরনিষোগেন  
 দৈবাচ্চ বিধিনির্ম্মিতাৎ ॥ ৪৫ ॥ ধার্ত্তরাষ্ট্রাঃ কালপক্ষা ন চেৎ শৃণুন্তি মে বচঃ ।  
 শেষ্যন্তে নিহতা ভূমৌ শ্বশৃগালাদনীরুতাঃ ॥ ৪৬ ॥ 'চলেদ্ধি হিমবান্ শৈলো  
 মেদিনী শতধা ফলেৎ । দেয়াঃ পতেচ্চ সনক্ষত্রা ন মে স্মোষং বচো ভবেৎ ॥ ৪৭ ॥

সত্যং তে প্রতিজানামি কৃষ্ণে বাস্পো নিগৃহ্যতাম্ । হতামিত্রান শ্রিষা যুক্তানচি-  
রাদ্ধৃক্ষ্যসে পতীন ॥ ৪৮ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি ভগবদ্গানপর্বনি শ্রীকৃষ্ণবাক্যে দ্ব্যশীতি-

তমোঃধ্যাযঃ ॥ ৮২ ॥



অর্জুন উবাচ । কুরুণামদ্য সর্বেষাং ভবান্ সুহৃদনুভবঃ । সশস্ত্রী দযিতো  
নিত্যনুভযোঃ পক্ষযোরপি ॥ ১ ॥ পাণ্ডবৈর্ধাত্তরাষ্টুনাং প্রতিপাদ্যমনামযম্ ।  
সমর্থঃ প্রশমত্বেষ কৰ্ত্তুমহঁসি কেশব ॥ ২ ॥ হুমিতঃ পুণ্ডরীকাক্ষ সুযোধনমমর্ষণম্ ।  
শান্ত্যর্থং ভ্রাতরং ব্রূয়া যত্নদ্বাচ্যমমিত্রহন ॥ ৩ ॥ হুয়া ধর্ম্মার্থযুক্তক্ষেদুক্তঃ শিবম-  
নামযম্ । হিতং নাদাস্যতে বালে দিষ্টস্য বশমেষ্যতি ॥ ৪ ॥ ভগবানুবাচ ।  
ধর্ম্ম্যমস্মদ্বিতক্ষেব কুরুণাং যদনামযম্ । এষ যাস্যামি রাজানং ধৃতরাষ্ট্রমভীপ্স-  
য়া ॥ ৫ ॥ বৈশম্পায়ন উবাচ । ততো ব্যপেতে তমসি সূর্য্যে বিমল উদগতে ।  
মৈত্রে মুহূর্ত্তে সম্প্রাপ্তে মৃদুর্চিষি দিবাকরে ॥ ৬ ॥ কৌমুদে মাসি রেবত্যাং শর-  
দন্তে হিমাগমে । স্ফীতশস্যসুখে কালে কল্যাঃ সত্ত্ববতাং বরঃ ॥ ৭ ॥ মঙ্গল্যাঃ  
পুণ্যানির্ঘোষা বাচঃ শৃণুংশ্চ স্মৃত্যঃ । ব্রাহ্মণানাং প্রতীতানামৃষীণামিব বা-  
সবঃ ॥ ৮ ॥ কৃৎন পৌর্বাঙ্কিকং কৃত্যং স্নাতঃ শুচিরলঙ্কৃতঃ । উপতস্থে বিবস্বন্তং  
পাবকঞ্চ জনার্দনঃ ॥ ৯ ॥ ঋষতং পৃষ্ঠ আলভ্য ব্রাহ্মণানভিবাদ্য চ । অগ্নিং  
প্রদক্ষিণং কৃৎন পশ্যান্ কল্যাণমগ্রতঃ ॥ ১০ ॥ তৎ প্রতিজ্ঞায় বচনং পাণ্ডবস্য  
জনার্দনঃ । শিনেৰ্নপ্তারমাসীনমভ্যভাষত সাত্যকিন্ ॥ ১১ ॥ রথ আরোপ্যতাং  
শঙ্খশ্চক্রঞ্চ গদযা সহ । উপাসঙ্কশ্চ শক্ত্যশ্চ সর্বপ্রহরণানি চ ॥ ১২ ॥ দুর্য্যোধনো  
হি দুর্ঘটায়া কর্ণশ্চ সহসৌবলঃ । ন চ শত্রুরবজ্জেষো দুর্বলোহপি বলীযমা ॥ ১৩ ॥  
ততস্তন্মতমাজ্ঞায় কেশবস্য পুরঃসরাঃ । প্রসমুর্যোজযিষ্যন্তো রথং চক্রগদাভ-  
তঃ ॥ ১৪ ॥ তং দীপ্ত্যিব কালাগ্নিমাকাশগমিবাধ্বগম্ । সূর্য্যচন্দ্রপ্রকাশাত্যাং  
চক্রাভ্যাং সমলঙ্কৃতম্ ॥ ১৫ ॥ অর্ধচন্দ্রেশ্চ চন্দ্রেশ্চ মৎসৈঃ সমৃগপক্ষিভিঃ ।  
পুষ্পৈশ্চ বিবিধৈশ্চিত্রং মণিরত্নৈশ্চ সর্বশঃ ॥ ১৬ ॥ তরুণাদিত্যসঙ্কশং বৃহন্তঃ  
চারুদর্শনম্ । মণিহেমবিচিত্রাঙ্গং সুধ্বজং সুপতাকিনম্ ॥ ১৭ ॥ সুপঙ্করমনাধ্বাং  
বৈষাঘ্রপরিবারণম্ । যশোম্বলং প্রত্যমিত্রাণাং যদূনাং নন্দিবর্দ্ধনম্ ॥ ১৮ ॥ বাজি-  
ভিঃ শৈব্যসুগ্রীবমেঘপুষ্পবলাহকৈঃ । স্নাতৈঃ সম্পাদযামাসুঃ সম্পটৈঃ সর্বস-  
ম্পদা ॥ ১৯ ॥ মহিমানন্ত কৃষ্ণস্য ভূষ এবাভিবর্দ্ধয়ন্ । সুধোষঃ পতগেশ্চৈগ ধ্বজেন

युवुजे रथः ॥ २० ॥ तं मेरुशिखरप्रथं मेघदूधनिश्चनम् । आरुरोह रथं  
 शौरिर्बिमानमिव कामगम् ॥ २१ ॥ ततः सात्यकिमारोप्य प्रघषो पुरूषेभ्यः ।  
 पृथिवीक्षान्तरीक्षं रथघोषेण नादयन् ॥ २२ ॥ व्यपोचात्तुस्ततः कालः कर्णेनसम-  
 पद्यत । शिवश्चान्नुवो वायुः प्रशान्तमभवद्रजः ॥ २३ ॥ प्रदक्षिणान् लोमांश्च  
 मङ्गला मृगपक्षिणः । प्रयागे वासुदेवस्य बभूवुरनुयायिनः ॥ २४ ॥ मङ्गलार्थपदैः  
 शकैरनुवर्तन्तु सर्वशः । सारसाः शतपत्राश्च हंसाश्च मधुसूदनम् ॥ २५ ॥ मञ्जा-  
 ह्तिमहाहोमैर्हृषमानश्च पावकः । प्रदक्षिणशिखो भुव्वा विधूमः समपद्यत ॥ २६ ॥  
 वशिष्ठो वामदेवश्च भूरिदुय्यो गयः क्रथः । शुक्रनारदवाङ्मीका मरुतः कुशिको  
 भृशुः ॥ २७ ॥ वक्रदेवर्षयश्चैव कृष्णं यदुसुखावहम् । प्रदक्षिणमवर्तन्तु सहिता  
 वासवान्नुजम् ॥ २८ ॥ एवमेतैर्महाभागेर्महर्षिगणसाधुभिः । पूजितः प्रघषो  
 कृष्णः कुरुणां सदनं प्रति ॥ २९ ॥ तम्पुषान्तमनुप्रायां कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ।  
 तीमसेनाङ्गूनो चोतो माद्रीपुत्रो च पाण्डवो ॥ ३० ॥ चेकितानश्च विक्रास्तो  
 धृष्टकेतुश्च चेदिपः । क्रपदः काशिराजश्च शिखण्डी च महारथः ॥ ३१ ॥ धृष्टद्युम्नः  
 सपुत्रश्च विराटः केकयैः सह । सन्साधनार्थं प्रययुः कलिषाः कलिषर्षभम् ॥ ३२ ॥  
 ततोऽनुव्रज्य गोविन्दं धर्मराजो युधिष्ठिरः । राज्ञां सकाशे द्युतिमान्नुवाचेदं  
 वचस्तदा ॥ ३३ ॥ यो वै न कामान् भयान् क्रोधान्मार्थकारणां । अन्यायमनुवर्तेत  
 स्थिरबुद्धिरलोलुपः ॥ ३४ ॥ धर्मज्ञो धृतिमान् प्राज्ञः सर्वभूतेषु केशवः । ईश्वरः  
 सर्वभूतानां देवदेवः प्रतापवान् ॥ ३५ ॥ तं सर्वगुणसम्पन्नं शीवसकृतलक्षणम् ।  
 संपरिषज्य कौन्तेयः सन्देहमुपचक्रमे ॥ ३६ ॥ युधिष्ठिर उवाच । या सा बाल्यां  
 प्रभृत्यस्मान् पर्यवर्द्धयतावला । उपवासतपःशीला सदा स्वस्त्ययने रता ॥ ३७ ॥  
 देवतातिथिपुजासु गुरुशुक्रघ्ने रता । वत्सला प्रियपुत्रा च प्रियास्माकं जना-  
 र्दन ॥ ३८ ॥ सुयोधनभयादया नो हत्रायतामित्रकर्षण । महतो मृत्युसंवाधाद्द्वरे  
 शौरिबर्षवां ॥ ३९ ॥ अस्मत्कृते च सततं यथा दुःखानि माधव । अनुभूतान्य-  
 दुःखार्हां तां स्म पृच्छेरनामयम् ॥ ४० ॥ भृशमाश्वसयेत्तेनां पुत्रशोकैरति-  
 प्लुताम् । अतिवादय स्वजेर्थास्तुं पाण्डवान् परिकीर्तयन् ॥ ४१ ॥ उवाच प्रभृति  
 दुःखानि श्वशुराणामरिन्दम । निकारानतदर्हा च पश्यन्ती दुःखमश्लते ॥ ४२ ॥  
 अपि ज्ञातु स कालः स्यात् कृष्ण दुःखविपर्ययः । यदाहं मातरं किञ्चां सुखे  
 दध्यामरिन्दम ॥ ४३ ॥ प्रव्रजन्तोऽहन्नुधावन्तीं रूपगां पुत्रगृह्णीन्मि । रुदन्तीमव-  
 हायैनामगच्छाम वयं वनम् ॥ ४४ ॥ न नूनं म्रियते दुःखैः सा चेज्जीवति के-

शव । तथा पुत्राधिभिर्गात्मात्ता हानर्तुसत्कृता ॥ ४५ ॥ अतिवादया तु सा क्रुष  
 वषा मद्धचनाद्विभो । धृतराष्ट्रश्च कौरव्यो राजानश्च वषोऽधिकाः ॥ ४६ ॥ तीम्नं  
 द्रोणं ह्युपैव महाराजश्च बाह्लिकम् । द्रौणिश्च सोमदत्तश्च सर्वांश्च भरतान्  
 पृथक् ॥ ४७ ॥ विदूरश्च महाप्राज्ञश्च कुरूणां मन्त्रधारिणम् । अगाधबुद्धिं धर्मज्ञं  
 स्वजेथा मधुसूदन ॥ ४८ ॥ इत्युक्त्वा केशवं तत्र राजमध्ये युधिष्ठिरः । अमु-  
 ज्जातो निवृत्ते क्रुषं क्रुषा प्रदक्षिणम् ॥ ४९ ॥ ब्रजमेव तु वीभत्सुः सथायं  
 पुरुषर्षभम् । अब्रवीत् परवीरुश्च द्वाशाहमपराजितम् ॥ ५० ॥ यदस्माकं विभो  
 वृत्तं पुरा वै मन्त्रनिश्चये । अर्क्षं राज्यास्य गोविन्द विदितं सर्वराजसु ॥ ५१ ॥  
 तच्छेददुरसङ्गेन सत्कृत्यान्वमन्य च । प्रियं मे स्यान्महाबाहो मुच्येरन्महतो  
 भयात् ॥ ५२ ॥ अतश्चेदन्यथा कर्ता धार्तराष्ट्रोऽनुपायवित् । अस्तं ह्यनं करि-  
 श्यामि क्लिष्याणां जनार्दन ॥ ५३ ॥ एवमुक्ते पाण्डवेन पर्याह्वयद्ब्रह्मकोदरः ।  
 मुहुर्मुहुः क्रोधवशात् प्रावेपत च पाण्डवः ॥ ५४ ॥ वेपमानश्च कौन्तेयः प्राक्क्रो-  
 शन्महतो रवान् । धनञ्जयवचः श्रुत्वा हर्षोऽसिक्तमना भ्रमम् ॥ ५५ ॥ तस्य तस्मि-  
 नदं श्रुत्वा सम्प्रावेपसु धस्विनः । बाह्नानि च सर्वाणि शक्रमूत्रे प्रसुस्रुवुः ॥ ५६ ॥  
 इत्युक्त्वा केशवं तत्र तथा चोक्त्वा विनिश्चयम् । अमुज्जातो निवृत्ते परिषज्य  
 जनार्दनम् ॥ ५७ ॥ तेषु राजसुं सर्वेषु निवृत्तेषु जनार्दनः । तूर्णमभ्यगमद्वृष्टः  
 शैव्यसुग्रीववाहनः ॥ ५८ ॥ ते हया वासुदेवस्य दारुकेण प्रचोदिताः । पश्यान्-  
 नाचेमुरिव ग्रसमाना इवाश्रमम् ॥ ५९ ॥ अथापश्यन्महाबाह्वर्षीन्धनि केशवः ।  
 ब्राह्म्या श्रिया दीप्यमानान् स्थितान्नुभयतः पथि ॥ ६० ॥ सोऽवतीर्य रथात्तूर्णम-  
 तिवाद्य जनार्दनः । यथावत्तानृषीन् सर्वानभ्यभाषत पूजयन् ॥ ६१ ॥ कच्चिन्नो-  
 केषु कुशलं कच्चिद्धर्मः स्मृष्टितः । ब्राह्मणानां त्रयो वर्णाः कच्चिन्निष्ठान्ति शास-  
 ने ॥ ६२ ॥ तेभ्यः प्रयुज्य तां पूजां प्रोवाच मधुसूदनः । भगवन्तुः क्व सं-  
 सिद्धाः का वीथी भवतामिह ॥ ६३ ॥ किंवा भगवतां कार्यमहं किं करवाणि  
 वः । केनार्थेनोपसंप्राप्ता भगवन्तो महीतलम् ॥ ६४ ॥ तमब्रवीद्ब्रह्मदत्त  
 उपेत्य मधुसूदनम् । परिषज्य च गोविन्दं सुरासुरपतेः सथा ॥ ६५ ॥ देव-  
 र्षयः पुण्यकृतो ब्राह्मणाश्च बहुश्रुताः । राजर्षयश्च द्वाशाहं मानयन्तुस्तपस्विनः ॥ ६६ ॥  
 देवासुरस्य द्रुपदः पुराणस्य महाद्यूते । समेतं पार्थिवं क्लृप्तं दिदृक्षुस्तश्च  
 सर्वतः ॥ ६७ ॥ सतासदश्च राजानस्तुक् सत्यां जनार्दनम् । एतन्महं प्रेक्ष-  
 नीयं द्रुपदं गच्छाम केशव ॥ ६८ ॥ धर्मार्थसहिता वाचः श्रोतुमिच्छाम माधव ।

ত্বযোচ্যমানাঃ কুরুষু রাজমধ্যে পরন্তপ ॥ ৬২ ॥ ভীষ্মদ্রোণাদযশৈচব বিদুরশ্চ  
মহামতিঃ । ত্বঞ্চ যাদবশাৰ্দল সভাষাং বৈ সমেষ্যথ ॥ ৭০ ॥ তব বাক্যানি দিব্যা-  
নি তথা তেষাঞ্চ মাধব । শ্রোতুমিচ্ছাম গোবিন্দ সত্যানি চ হিতানি চ । আপ-  
ফৌহসি মহাবাহো পুনর্দ্রক্ষ্যামহে বয়ম্ ॥ ৭১ ॥ যাছবিষ্মেন বৈ বীর দ্রক্ষ্যামস্তাং  
সভাগতম্ । আসীনমাসনে দিব্যে বলতেজঃসমাহিতম্ ॥ ৭২ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্ভাষ্যপর্বণি ভগবদ্ভাষ্যে ত্র্যশীতি-

তমোঃধ্যায়ঃ ॥ ৮৩ ॥



বৈশম্পায়ন উবাচ । প্রযান্তং দেবকীপুত্রং পরবীররুজো দশ । মহারথা মহা  
বাহুমন্বযুঃ শস্ত্রপাণযঃ ॥ ১ ॥ পদাতীনাং সহস্রঞ্চ সাদিনাঞ্চ পরন্তপ । ভোজ্যঞ্চ  
বিপুলং রাজন্ প্রেষ্যাশ্চ শতশোহপরে ॥ ২ ॥ জনমেজয় উবাচ । কথং প্রযাতো  
দাশাহো মহাত্মা বধুসূদনঃ । কানি বা ব্রজতন্তস্য নিমিত্তানি মহৌজসঃ ॥ ৩ ॥  
বৈশম্পায়ন উবাচ । তস্য প্রযানে যান্যাসম্মিমিত্তানি মহাত্মনঃ । তানি যে শৃণু  
সৰ্বাণি দৈবান্যোৎপাতিকানি চ ॥ ৪ ॥ অনন্ত্রেহশনিনির্ঘোষঃ সবিন্দ্যৎ সমজাযত ।  
অনগেব চ পর্জ্জন্যঃ প্রাবর্ষদ্বিঘনে ভূশম্ ॥ ৫ ॥ প্রত্যগূহর্ষ্মহানদ্যঃ প্রাড্গুখাঃ  
সিন্ধুসত্তমাঃ । বিপরীতা দিশঃ সর্বা ন প্রাজ্জায়ত কিঞ্চন ॥ ৬ ॥ প্রাজ্বলন্নগ্নযো  
রাজন্ পৃথিবী সমকম্পত । উদপানাশ্চ কুম্ভাশ্চ প্রাসিঞ্চন্ শতশো জলম্ ॥ ৭ ॥  
তমঃসংবৃতমপ্যাসীৎ সর্বং জর্গদিদং তথা । ন দিশো নাদিশো রাজন্ প্রাজ্জায়ন্তে  
স্ম রেণুনা ॥ ৮ ॥ প্রাদুরাসীন্নহাশব্দঃ খে শরীরং ন দৃশ্যতে । সর্বেষু রাজন্  
দেশেষু তদদ্ভুতমিবাভবৎ ॥ ৯ ॥ প্রামথ্বাঙ্কাস্তিনপুরং বাতো দক্ষিণপশ্চিমঃ ।  
আরুজন্ গণশো বক্ষান্ পরুষোহশনিনিব্বনঃ ॥ ১০ ॥ যত্র যত্র চ বাৰ্ষেযো বর্ততে  
পথি ভারত । তত্র তত্র সুখো বায়ুঃ সর্বঞ্চাসীৎ প্রদক্ষিণম্ ॥ ১১ ॥ ববর্ষ পুষ্পবর্ষঞ্চ  
কমলানি চ ভূরিশঃ । সন্মশ্চ পস্থা নিদুঃখো ব্যপেতকুশকণ্টকঃ ॥ ১২ ॥ সংস্তুতো  
ব্রাহ্মণৈর্গীর্ভিস্তুত্র তত্র সহস্রশঃ । অর্চ্যতে মধুপকৈশ্চ বস্তুভিশ্চ বস্তুপ্রদঃ ॥ ১৩ ॥  
তং কিরন্তি মহাত্মানং বনৈর্ন্যঃ পুষ্পৈঃ সুগন্ধিভিঃ । স্ত্রিষঃ পথি সমাগম্য সর্ব-  
ভুতহিতেরতম্ ॥ ১৪ ॥ স শালিভবনং রম্যং সর্বশস্যসমাচিতম্ । সুখং পরম-  
ধর্মিষ্ঠমভ্যাগাস্তরতর্ষভ ॥ ১৫ ॥ পশ্যান্ বহুপশূন্ গ্রামানুম্যান্ হৃদযতোষণান্ ।  
পুরাণি চ ব্যতিক্রামনাষ্টাণি বিবিধানি চ ॥ ১৬ ॥ নিত্যং হৃক্টাঃ সুমনসো ভার-  
তৈরভিরক্ষিতাঃ । নোদ্বিগ্নাঃ পরচক্রাণাং ব্যসনানামকোবিদাঃ ॥ ১৭ ॥ উপপ্ত-

ব্যাদথাগম্য জনাঃ পুরনিবাসিনঃ । পথ্যতিষ্ঠন্তু সহিতা বিশ্বক্সেনদিদৃক্ষ্বা ॥ ১৮ ॥  
 তে তু সর্বে সমাযান্তমগ্নিমিক্টিমিব প্রভুম্ । অর্চযামাসুরর্চাইং দেশাতিথিমুপ-  
 স্থিতম্ ॥ ১৯ ॥ বৃকস্থলং সমাসাদ্য কেশবঃ পরবীরহা । প্রকীর্ণরশ্মাবাদিত্যে  
 বে্যাম্নি বৈ লোহিতাযতি ॥ ২০ ॥ অবতীৰ্য্য রথাত্তূর্ণং ক্লৃষ্বা শৌচং যথাবিধি ।  
 রথমোচনমাদিশ্য সক্ষ্যামুপবিবেশ হ ॥ ২১ ॥ দারুকোহপি হযান্মুক্তা পরিচর্য্য চ  
 শাস্ত্রতঃ । মুমোচ সর্বং যোক্তাদি মুক্তা চৈতানবাসৃজৎ ॥ ২২ ॥ অভ্যতীত্য তু  
 তৎ সর্বমুবাচ মধুসূদনঃ । যুধিষ্ঠিরস্য কার্য্যথনিহ বৎস্যামহে ক্ষপাম্ ॥ ২৩ ॥  
 তস্য তন্নতমাজ্জায চক্রুরাবসথং নরাঃ । ক্ষণেন চান্নপানানি গুণবন্তি সমাজ্জ-  
 যন্ ॥ ২৪ ॥ তস্মিন্ গ্রামে প্রধানাস্ত য আসন্ ব্রাহ্মণা নৃপ । আৰ্য্যাঃ কুলীনা  
 হ্রীমন্তো ব্রাহ্মীং বৃত্তিমমুষ্টিতাঃ ॥ ২৫ ॥ তেহভিগম্য মহাত্মানং হৃষীকেশমরি-  
 ন্দমম্ । পূজাঞ্চক্রুর্থথান্যায়মাশীর্ষ্মঙ্গলসংযুতাম্ ॥ ২৬ ॥ তে পূজযিত্বা দাশাইং  
 সর্বলোকেষু পূজিতম্ । ন্যবেদযন্তু বেষ্মানি রত্নবন্তি মহাত্মনে ॥ ২৭ ॥ তান্  
 প্রভুঃ কৃতমিত্যুক্তা সৎকৃত্য চ যথার্থতঃ । অভ্যেত্য চৈষাং বেষ্মানি পুনরাযাৎ  
 সত্বেব তৈঃ ॥ ২৮ ॥ সুমুর্ফং ভোজযিত্বা চ ব্রাহ্মণাংস্তত্র কেশবঃ । ভুক্ত্বা চ সহ  
 তৈঃ সর্বৈরবসত্তাং ক্ষপাং সুখম্ ॥ ২৯ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি ভগবদ্দানপর্বনি ভগবদ্দানে চতুরশীতি-

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৮৪ ॥



বৈশম্পায়ন উবাচ । তথা দূতৈঃ সমাজ্জায প্রযাতং মধুসূদনম্ । ধৃতরাষ্টোহত্র-  
 বীভীষ্মমর্চযিত্বা মহাত্মজম্ ॥ ১ ॥ দ্রোণঞ্চ সঞ্জয়শ্চৈব বিদুরঞ্চ মহামতিম্ । দুৰ্য্যো-  
 ধনং সহামাত্যং হৃষ্টরোমাহত্রবীদিদম্ ॥ ২ ॥ অদ্ভুতং মহদাশ্চর্য্যং ক্ষযতে  
 কুরুনন্দন । স্ত্রিষো বালাশ্চ বৃদ্ধাশ্চ কথযন্তি গৃহে গৃহে ॥ ৩ ॥ সৎকৃত্যাচক্ষতে  
 চান্যে তথৈবান্যে সমাগতাঃ । পৃথগ্বাদাশ্চ বর্তন্তে চত্বরেষু সভাসু চ ॥ ৪ ॥  
 উপাযাস্যতি দাশাইঃ পাণ্ডবার্থে পরাক্রমী । স নো মান্যশ্চ পূজ্যশ্চ সর্বথা  
 মধুসূদনঃ ॥ ৫ ॥ তস্মিন্ হি যাত্রা লোকস্য ভূতানামীশ্বরো হি সঃ । তস্মিন্  
 ধৃতিশ্চ বীর্য্যঞ্চ প্রজ্ঞা চৌজশ্চ মাধবে ॥ ৬ ॥ সম্মান্যতাং নরশ্চেষ্টঃ স হি ধর্ম্মঃ  
 সনাতনঃ । পূজিতো হি সুখায় স্যাদসুখঃ স্যাদপূজিতঃ ॥ ৭ ॥ স চেত্তুয্যতি  
 দাশাই উপচারৈররিন্দম । ক্লেশান্ সর্বানতিপ্রায়ান্ প্রাপ্স্যামঃ সর্বরাজসু ॥ ৮ ॥  
 তস্য পূজার্থমদ্যেব সংবিধৎস্ব পরশুপ । সভাঃ পথি বিধীয়ন্তাং সর্বকামসম-



श्विताः ॥ २ ॥ यथा प्रीतिर्म्हाबाहो श्विजायेत तस्य वै । तथा कुरूषु गान्धारे  
 कथं वा भीष्म मन्यसे ॥ १० ॥ ततो भीष्मादयः सर्वे धृतराष्ट्रं जनाधिपम् । उचुः  
 परममित्येवं पूजयन्तोऽस्य तद्वचः ॥ ११ ॥ तेषामनुमत्तं ज्ञात्वा राजा दूर्व्यो-  
 धनसुता । सत्वास्तूनि रम्यानि प्रदेष्टुमुपचक्रमे ॥ १२ ॥ ततो देशेषु देशेषु  
 रमणीयेषु भागशः । सर्वरत्नसमाकीर्णः सत्वाश्चक्रुरनेकशः ॥ १३ ॥ आसनानि  
 विचित्रानि युक्तानि विविधैर्गुणैः । स्त्रियो गन्धानलङ्कारान् सूत्र्याणि वसनानि  
 च ॥ १४ ॥ गुणवस्त्यन्नपानानि भोज्यानि धिबिधानि च । माल्यानि च सुगन्धानि  
 तानि राजा ददौ ततः ॥ १५ ॥ विशेषतश्च वासार्थं सत्वां ग्रामे वृकश्ले ।  
 विदधे कौरवो राजा बहुरत्नां मनोरमाम् ॥ १६ ॥ एतद्विधाय वै सर्वं देवाह-  
 मतिमान्नुषम् । आचख्यो धृतराष्ट्राय राजा दूर्व्योधनसुता ॥ १७ ॥ ताः सत्वाः  
 केशवः सर्वा रत्नानि विविधानि च । असमीक्ष्येव दाशार्हा उपायां कुरूसद्य तं ॥ १८ ॥

इत्युद्योगपर्वणि भगवद्गीतानपर्वणि भगवद्गीताने पञ्चाशीति-

तमोऽध्यायः ॥ ८५ ॥

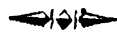


धृतराष्ट्र उवाच । उपप्लव्यादिह क्वत्ररूपायातो जनार्दनः । वृकश्ले निवसति  
 स च प्रातरिहैश्याति ॥ १ ॥ आहूकानामधिपतिः पुरोगः सर्वसाक्षताम् । महामना  
 महावीर्यो महासद्बो जनार्दनः ॥ २ ॥ स्फीतस्य वृष्णिराष्टस्य तर्ता गोपुत्रा च  
 माधवः । त्रयाणामपि लोकानां भगवान् प्रपितामहः ॥ ३ ॥ वृष्यङ्गकाः सुम-  
 नसो यस्य प्रज्जामुपासते । आदित्या वसवो रुद्रा यथा बुद्धिं बृहस्पतेः ॥ ४ ॥  
 तस्मै पूजां प्रयोज्यामि दाशार्हाय महात्माने । प्रत्यक्षं तव धर्मज्ञं तां मे कथ-  
 यतः शृणु ॥ ५ ॥ एकवर्णैः सुकुण्डलैर्बहुभिर्जातैर्हयोत्तमैः । चतुर्व्यूक्तानुथां-  
 सुतस्मै रौक्मान् दास्यामि षोडश ॥ ६ ॥ नित्यप्रतिमान्नातङ्गानीषादन्तान् प्रहा-  
 रिणः । अर्कान्नुचरमेकैकमर्कौ दास्यामि कौरव ॥ ७ ॥ दासीनामप्रजातानां  
 सुभानां रत्नवर्चसाम् । शतमस्यै प्रदास्यामि दासानामपि तावतः ॥ ८ ॥ आ-  
 विकङ्क सुखस्पर्शं पार्वतीर्यैरुपाहृतम् । तदप्यस्यै प्रदास्यामि सहस्राणि दशार्क  
 च ॥ ९ ॥ अजिनानां सहस्राणि चीनदेशोद्भवानि च । तान्यप्यस्यै प्रदास्यामि  
 यावदहति केशवः ॥ १० ॥ दिवा रात्रौ च तातेषु सुतेजा विमलो मणिः । तम-  
 प्यस्यै प्रदास्यामि तमप्यहति केशवः ॥ ११ ॥ एकेनाभिपतत्यह्ना योजनानि चतु-  
 र्दश । धानमश्वतरीयुक्तं दास्ये तस्यै तदप्यहम् ॥ १२ ॥ यावन्ति बाहनान्यस्य

যাবন্তঃ পুরুষাশ্চ তে । ততোহৃষ্টগুণমপ্যস্মৈ ভোজ্যং দাস্যাম্যহং সদা ॥ ১৩ ॥  
 মম পুত্রাশ্চ পৌত্রাশ্চ সৰ্বৈ দুর্যোধনাদৃতে । প্রত্যাঙ্কাস্যন্তি দাশার্হঃ রথৈর্মৃষ্টৈ-  
 রলঙ্কৃতাঃ ॥ ১৪ ॥ স্বলঙ্কৃতাশ্চ কল্যাণ্যঃ পাদৈরেব সহস্রশঃ । বারমুখ্যা মহাভাগঃ  
 প্রত্যাঙ্কাস্যন্তি কেশবম্ ॥ ১৫ ॥ নগরাদপি যাঃ কাশ্চিদানিষ্যন্তি জনার্দনম্ ।  
 দ্রষ্টং কন্যাশ্চ কল্যাণ্যস্তাশ্চ যাস্যন্ত্যনাবৃতাঃ ॥ ১৬ ॥ সস্ত্রীপুরুষবালঞ্চ নগরং  
 মধুসূদনম্ । উদীক্ষতাং মহাত্মানং ভানুমন্তমিব প্রজাঃ ॥ ১৭ ॥ মহাধ্বজপতা-  
 কাশ্চ ক্রিয়স্তাং সৰ্বতো দিশঃ । জলাবসিক্তো বিরজাঃ পশ্চাস্তস্যোতি চাবশাৎ ॥ ১৮ ॥  
 দংশাসনস্য চ গৃহং দুর্যোধনগৃহাদ্বরম্ । তদদ্য ক্রিয়তাং ক্ষিপ্রং সুসংমৃষ্টমল-  
 কৃতম্ ॥ ১৯ ॥ এতন্ধি রুচিরাকারৈঃ প্রাসাদৈরুপশোভিতম্ । শিবঞ্চ রমণীযঞ্চ  
 সৰ্বভূষু মহাধনম্ ॥ ২০ ॥ সৰ্বমস্মিন্ গৃহে রত্নং মম দুর্যোধনস্য চ । যদ্যদহতি  
 বাক্ষ্যেযস্তত্তদেযমসংশয়ম্ ॥ ২১ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি ভগবদ্গানপর্বনি ধৃতরাষ্ট্রবাক্যে ষডশীতি-

ভমোহধ্যায়ঃ ॥ ৮৩ ॥



বিদূর উবাচ । রাজন্ বহুমতশ্চাসি ত্রৈলোক্যস্যাপি সত্তমঃ । সম্ভাবিতশ্চ লো-  
 কস্য সম্মতশ্চাসি ভারত ॥ ১ ॥ যত্রমেবঙ্গগতে বুধাঃ পশ্চিমে বষসি স্থিতঃ । শাস্ত্রাদ্বা  
 সুপ্রতর্কাদ্বা সুস্থিরঃ স্তবিরো হসি ॥ ২ ॥ লেখাশ্মনীব ভাঃ সূর্য্যে মহোশ্মিরিব  
 সাগরে । ধর্ম্মস্থিতি তথা রাজমিতি ব্যবসিতাঃ প্রজাঃ ॥ ৩ ॥ সদৈব ভাবিতো  
 লোকো গুণৌষেষস্তব পার্থিব । গুণানাং রক্ষণে নিত্যং প্রযতস্ব সবাঙ্কবঃ ॥ ৪ ॥  
 আজ্জ্ববং প্রতিপদ্যস্ব মা বাল্যাছ নীনশঃ । রাজন্ পুত্রাংশ্চ পৌত্রাংশ্চ সুহৃদ-  
 শ্চৈব সুপ্রিয়ান্ ॥ ৫ ॥ যত্রমিচ্ছসি কৃষ্ণায় রাজম্নতিথয়ে বহু । এতদন্যচ্চ দাশার্হঃ  
 পৃথিবীমপি চার্হতি ॥ ৬ ॥ ন তু ত্বং ধর্ম্মমুদ্दिश्य তস্য বা প্রযকারণাৎ । এতদি-  
 চ্ছসি কৃষ্ণায় সত্যেনাত্মানমালভে ॥ ৭ ॥ মাযৈষা সত্যমেবৈতৎ চ্ছদ্যেতদ্ভুরি-  
 দক্ষিণ । জানামি ত্বম্নতং রাজন্ গুঢ়ং বাহেন কর্ম্মণা ॥ ৮ ॥ পঞ্চ পঞ্চৈব লিপ্সন্তি  
 গ্রামকান্ পাণ্ডবা নৃপ । ন চ দিৎসসি তেভ্যস্তান্ তচ্ছমং কঃ করিষ্যতি ॥ ৯ ॥  
 অর্থেন তু মহাবাহুং বাক্ষ্যেযং ত্বং জিহীষসি । অনেনৈব হুপাষেন পাণ্ডবেভ্যো  
 বিভেৎস্যসি ॥ ১০ ॥ ন চ বিত্তেন শক্যোহসৌ নোদ্যমেন ন চার্হষা । অন্যো  
 ধনঞ্জয়াৎ কর্ত্তমেতত্ত্বং ত্রবীমি তে ॥ ১১ ॥ বেদ কৃষ্ণস্য মহাত্ম্যং বেদাস্য দৃঢ়-  
 তক্ৰিতাম্ । অত্যাভ্যমস্য জানামি প্রাণৈস্তল্যং ধনঞ্জয়ম্ ॥ ১২ ॥ অন্যৎ কুস্তা-

दपाङ्पूर्णादन्यत् पादावसेचनात् । अन्यत् कुशलसङ्प्रशामैषिष्यति जनार्दनः ॥ १३ ॥ यद्वस्य प्रिषमातिथ्यं मानार्हस्य महात्मनः । तदस्मै क्रियतां राज-  
न्मानार्होऽसौ जनार्दनः ॥ १४ ॥ आशङ्गमानः कल्याणं कुरुनतेत्यति केशवः ।  
येनैव राजमर्थेन तदेवास्मा उपाकुरु ॥ १५ ॥ शममिच्छति दाशाहस्तव दुर्योधनस्य  
च । पाण्डवानां राजेन्द्र तदस्य वचनं कुरु ॥ १६ ॥ पितासि राजन् पुत्रास्ते  
रुद्रस्तुः शिशवः परे । वर्तस्य पितृवतेषु वर्तस्ते ते हि पुत्रवत् ॥ १७ ॥

इत्युद्योगपर्वणि तगवद्व्यानपर्वणि विदूरवाक्ये सप्तशीति-  
तमोऽध्यायः ॥ ८१ ॥



दुर्योधन उवाच । यदाह विदूरः कृष्णं सर्वं तत् सत्यमुच्यते । अश्रुरक्त्रो  
हसंहार्यः पार्थान् प्रति जनार्दनः ॥ १ ॥ यत्तु सत्कारसङ्युक्तं देवः  
वसू जनार्दने । अनेककपं राजेन्द्र न तद्देवः कदाचन ॥ २ ॥ देशः काल-  
स्तथायुक्त्रो न हि नार्हति केशवः । मत्स्यत्याधोक्त्रो राजन् भयादर्कति  
मामिति ॥ ३ ॥ अवमानश्च यत्र स्यात् क्लिषस्य विशाम्पते । न तत् कुर्या-  
द्धुषः कार्यमिति मे निश्चिता मतिः ॥ ४ ॥ स हि पूज्यतमो लोके कृष्णः पृथुल-  
लोचनः । त्रयाणामपि लोकानां विदितं मम सर्वथा ॥ ५ ॥ न तु तस्मै प्रदेयः  
स्यात्तथा कार्यगतिः प्रभो । विग्रहः समुपारुक्त्रो न हि शाम्यत्यविग्रहात् ॥ ६ ॥  
वैशम्पायन उवाच । तस्य तद्वचनं श्रुत्वा तीम्नः कुरूपितामहः । वैचित्रवीर्यः  
राजानमिदं वचनमब्रवीत् ॥ १ ॥ सत्कृतोऽसत्कृतो वापि न क्रुध्येत जना-  
र्दनः । नालमेनमवज्जातुं नावज्जेयो हि केशवः ॥ ८ ॥ यत्तु कार्यं महा-  
बाहो मनसा कार्यतां गतम् । सर्वोपायैर्न तच्छक्यं केनचित् कर्तुमन्यथा ॥ २ ॥  
स यद्गुणान्महाबाहस्तु कार्यमविशङ्कया । वासुदेवेन तीर्थेन क्षिप्रं संशाम्य  
पाण्डवैः ॥ १० ॥ धर्म्यमर्थ्यं धर्मात्मा ध्रुवं वक्त्रा जनार्दनः । तस्मिन् वाच्याः प्रिया  
वाचो भवता वाक्त्रवैः सह ॥ ११ ॥ दुर्योधन उवाच । न पर्यायोऽस्ति यद्राजन्  
श्रियं निष्कवलामहम् । तैः सहेनामुपाश्रीयां यावज्जीवं पितामह ॥ १२ ॥  
इदंस्तु सुमहत्कार्यं शृणु मे यत् समर्थितम् । परायणं पाण्डवानां नियम्यामि  
जनार्दनम् ॥ १३ ॥ तस्मिन् वक्त्रे भविष्यन्ति वृष्णः पृथिवी तथा । पाण्डवाश्च  
विधेया मे स च प्रातरिहैष्यति ॥ १४ ॥ अत्रोपायान् यथा सम्यक् न बुध्येत जना-  
र्दनः । न चापायो भवेत् कश्चित् तद्वान् प्रब्रवीतु मे ॥ १५ ॥ वैशम्पायन

উবাচ । তস্য তদ্বচনং শ্রুত্বা ষোরং কৃষ্ণাভিসংহিতম্ । ধৃতরাষ্ট্রঃ সহামাত্যো  
ব্যথিতো বিমনাহ্ভবৎ ॥ ১৬ ॥ ততো দুর্যোধনমিদং ধৃতরাষ্ট্রোহব্রবীদ্বচঃ । মৈবং  
বোচঃ প্রজাপাল নৈব ধর্ম্যঃ সনাতনঃ ॥ ১৭ ॥ দূতশ্চ হি হৃষীকেশঃ সযক্ষী চ প্রিয়শ্চ  
নঃ । অপাপঃ কৌরবেযেষু স কথং বন্ধমহতি ॥ ১৮ ॥ ভীষ্ম উবাচ । পরীতস্তব  
পুল্লোহয়ং ধৃতরাষ্ট্র সুমন্দধীঃ । বৃণোত্যনর্থং নৈবার্থং যাচ্যমানঃ সুহৃজ্জনৈঃ ॥ ১৯ ॥  
ইমমুৎপথি বর্তন্তং পাপং পাপানুবন্ধিনম্ । বাক্যানি সুহৃদাং হিত্বা হ্রমপ্যস্যা-  
নুবর্তসে ॥ ২০ ॥ কৃষ্ণমক্লিষ্টকশ্ম্মাণমাসাদ্যাযং সুদর্শ্যতিঃ । তব পুল্লঃ সহামাত্যঃ  
ক্লেবেন ন ভবিষ্যতি ॥ ২১ ॥ পাপস্যাস্য নৃশংসস্য ত্যক্তধর্মস্য দুর্শ্যতেঃ । নোৎ-  
সহেহনর্থসংযুক্তাঃ শ্রোতুং বাচঃ কথঞ্চন ॥ ২২ ॥ ইতুক্ত্বা ভরতশ্রেষ্ঠো বৃদ্ধঃ  
পরমমন্যমান্ । উথায় তস্মাৎ প্রাতিষ্ঠন্তীষ্মঃ সত্যপরাক্রমঃ ॥ ২৩ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্দানপর্বণি দুর্যোধনবাক্যে অক্ষাশীতি-

তনোহধ্যায়ঃ ॥ ৮৮ ॥



বৈশম্পায়ন উবাচ । প্রাতরুথায় কৃষ্ণস্ত কৃতরান্ নবমাহ্নিকম্ । ব্রাহ্মণৈরভ্য-  
নুজ্ঞাতঃ প্রযযৌ নগরং প্রতি । ১ ॥ তং প্রযান্তং মহাবাহুমনুজ্ঞাপ্য মহাবলম্ ।  
পর্যবর্তন্ত তে সর্বে বৃকস্থলনিবাসিনঃ ॥ ২ ॥ ধার্তরাষ্ট্রাস্তমাযান্তং প্রতুদজগ্মুঃ  
স্বলকৃতাঃ । দুর্যোধনাদৃতে সর্বে ভীষ্মদ্রোণরূপাদযঃ ॥ ৩ ॥ পৌরাশ্চ বহ্লা  
রাজন্ হৃষীকেশং দিদ্ধৃকবঃ । যানৈবহুবৈধেরনেৎ পন্ডি়িরেব তথাপরে ॥ ৪ ॥  
স বৈ পথি সমাগম্য ভীষ্মেণাক্লিষ্টকশ্ম্মণা । দ্রোণেন ধার্তরাষ্ট্রেশ্চ তৈবৃভো নগরং  
যযৌ ॥ ৫ ॥ কৃষ্ণসন্মাননার্থঞ্চ নগরং সমলকৃতম্ । বভূব রাজমাগশ্চ বহুরত্নসমা-  
চিতঃ ॥ ৬ ॥ ন চ কশ্চিদাহে রাজংস্তদাসীদুরতর্ষভ । ন স্ত্রী ন বৃদ্ধো ন শিশু-  
বাসুদেবদিদ্ধৃকযা ॥ ৭ ॥ রাজমার্গে নরাস্তস্মিন্ সংস্ৰবন্ত্যবনিং গতাঃ । তস্মিন্ কালে  
মহারাজ হৃষীকেশপ্রবেশনে ॥ ৮ ॥ আবৃতানি বরস্বীভির্গৃহাণি সুমহান্ত্যপি ।  
প্রস্বলস্তীব ভারেণ দৃশ্যন্তে স্ম মহীতলে ॥ ৯ ॥ তথা চ গতিমন্তস্তে বাসুদেবস্য  
বাজিনঃ । প্রনষ্টগতযোহভুবন্ রাজমার্গে নরৈবৃতে ॥ ১০ ॥ স গৃহং ধৃতরাষ্ট্রস্য  
প্রাবিশচ্ছত্রকর্ষণঃ । পাণ্ডরং পুণ্ডরীকাক্ষঃ প্রাসাদৈরূপশোভিতম্ ॥ ১১ ॥ তিসুঃ  
কক্ষ্যা ব্যতিক্রম্য কেশবো রাজবেশ্মনঃ । বৈচিত্রবীর্ষ্যং রাজানমভ্যগচ্ছদরিন্দ-  
মঃ ॥ ১২ ॥ অভ্যাগচ্ছতি দাশাহে প্রজ্ঞাচক্ষুর্নরাধিপঃ । সইব দ্রোণভীষ্মা-  
ত্যাযুদতিষ্ঠমহাষশাঃ ॥ ১৩ ॥ কৃপশ্চ সোমদত্তশ্চ মহারাজশ্চ বাহ্লিকঃ । আস-

नेत्योहचलन् सर्वे पूजयन्ते। जनार्दनम् ॥ १४ ॥ ततो राजानमासाद्य धृ-  
 त्वात्तुं यशस्विनम् । सतीम्नं पूजयामास वार्ष्णेयो वाङ्मिरञ्जसा ॥ १५ ॥ । तेषु  
 धर्मानुपूर्वीं तां प्रयुज्य मधुसूदनः । यथावयः समीयाथ राजभिः सह माक्षवः ॥ १६ ॥  
 अथ द्रोणं सपुत्रं स बाह्वीकं यशस्विनम् । रूपं सोमदत्तं समीयाथ जना-  
 र्दनः ॥ १७ ॥ तत्रासीदूर्जितं मूढं काकनं महदासनम् । शासनाङ्कतरात्रेण  
 तत्रोपाविशदक्ष्यतः ॥ १८ ॥ अथ गां मधुपर्कं प्यादकं जनार्दने । उपा-  
 ज्जुर्षथान्याथं धृतराष्ट्रपुरोहिताः ॥ १९ ॥ । कृतातिथ्यस्तु गोविन्दः सर्वान् परि-  
 त्तमन् कुर्वन् । आस्तु सायन्तिकं कुर्वन् कुरुभिः परिवारितः ॥ २० ॥ सोऽर्चितो  
 धृतराष्ट्रेण पूजितश्च महावशाः । राजानं समनुज्जाप्य निरक्रामदरिन्दमः ॥ २१ ॥  
 तैः सनेत्य यथान्याथं कुरुभिः कुरुसंसदि । विदुरावसथं रम्यमुपातिष्ठत  
 माक्षवः ॥ २२ ॥ विदुरः सर्वकल्याणैरभिगम्य जनार्दनम् । अर्चयामास दाशाहं  
 सर्वकामैरुपस्थितम् ॥ २३ ॥ या मे प्रीतिः पुष्कराक्ष द्वन्द्वदर्शनसमुद्भवा । सा किमाख्या-  
 यते तूभयमन्तरात्रासि देहिनाम् ॥ २४ ॥ कृतातिथ्यस्तु गोविन्दः विदुरः सर्व-  
 धर्मविः । कुशलं पाण्डुपुत्राणामपृच्छमधुसूदनम् ॥ २५ ॥ प्रीयमाणस्य सुहृदो  
 विदुषो वृक्षिसन्तमः । धर्मार्थनित्यस्य सतो गतरौषस्य धीमतः ॥ २६ ॥ तस्य  
 सर्वं सुविस्तारं पाण्डवानां विचेकितम् । ऋतुराचर्य दाशाहः सर्वप्रत्यक्षदर्शि-  
 वान् ॥ २७ ॥

इत्युद्योगपर्वणि भगवद्गीतानपर्वणि श्रीकृष्ण विदुरसंवादे एकाननवति-

तमोऽध्यायः ॥ ८२ ॥



वैशम्पायन उवाच । अथोपगम्य विदुरमपराह्णे जनार्दनः । पितृष्वनारं स  
 पथामभ्यगच्छदरिन्दमः ॥ १ ॥ सा दृष्ट्वा कृष्णमायास्तुं प्रसन्नादित्यवर्त्तसम् । कठे  
 गृहीत्वा प्राक्क्रोशं स्मरन्ती तनयान् पृथा ॥ २ ॥ तेषां सद्भवतां मध्ये गोविन्दं  
 सहचारिणम् । चिरस्य दृष्ट्वा वार्ष्णेयं वास्पमाहारयं पृथा ॥ ३ ॥ सात्रवीं कृष्ण-  
 मासीनं कृतातिथ्यं युधां पतिम् । वास्पगद्गदपूर्णेन मुखेन परिशुष्यता ॥ ४ ॥  
 ये ते बाल्यां प्रभृत्येव गुरुशुश्रूषणे रताः । परस्परस्य सुहृदः सम्मताः सम-  
 चेतसः ॥ ५ ॥ निरुत्या अंशिता राज्याङ्गनाहा निर्ज्जनं गताः । विनीतक्रोध-  
 हर्षाश्च ब्रह्मण्याः सत्यवादिनः ॥ ६ ॥ तत्कृत्वा प्रियमुखे पार्था रुदन्तीमपहाय माम् ।  
 अहासुश्च वनं यास्तुः समूलं हृदयं मम ॥ ७ ॥ अतदर्हा महात्मानः कथं केशव

পাণ্ডবাঃ । উষুর্মহাবনে তাত সিংহব্যাস্রগজাকুলে ॥ ৮ ॥ বালা বিহীনাঃ পিত্রা  
 তে মযা সততলালিতাঃ । অপশ্যস্তশ্চ পিতরো কথমুষুর্মহাবনে ॥ ৯ ॥ শঙ্খদুন্দুভি-  
 নিষৌষৈর্মৃদৈর্বেণুনিষ্বনৈঃ । পাণ্ডবাঃ সমবোধ্যস্ত বাল্যাং প্রভৃতি কেশব ॥ ১০ ॥  
 য়ে স্ম বারুণশক্বেন হযানাং হেষিতেন চ । রথনেমিনিনাদৈশ্চ ব্যবোধ্যস্ত তদা  
 গৃহে ॥ ১১ ॥ শঙ্খভেরীনিনাদেন বেণুবীণাসুনাদিনা । পুণ্যাহঘোষমিশ্রেণ পূজ্য-  
 মানা দ্বিজাতিভিঃ ॥ ১২ ॥ বস্তু রত্নৈরলঙ্কারৈঃ পূজযন্তো দ্বিজম্ননঃ । গীতির্ম-  
 জলযুক্তাতিত্রাক্ণানানাং মহাত্মনাম্ ॥ ১৩ ॥ অর্চিতৈরর্চনাইশ্চ স্তবদ্বিরভিনন্দি-  
 তাঃ । প্রাসাদাগ্রেষবোধ্যস্ত রাঙ্কবাজিনশাযিনঃ ॥ ১৪ ॥ সুনঞ্চ নিনদং শ্রুত্বা  
 স্থাপদানাং মহাবনে । ন স্মোপযান্তি নিদ্রাং তে ন তদর্হা জনাৰ্দন ॥ ১৫ ॥  
 ভেরীমৃদঙ্গনিনদৈঃ শঙ্খবৈণবনিষ্বনৈঃ । স্ত্রীণাং গীতিনিনাদৈশ্চ মধুরৈর্মধুসূ-  
 দন ॥ ১৬ ॥ বন্দিমাগধসূতৈশ্চ স্তবদ্বিরোধিতাঃ কথম্ । মহাবনেষবোধ্যস্ত স্থাপ-  
 দানাং রুতেন তে ॥ ১৭ ॥ হীমান্ সত্যধৃতির্দাস্তো ভূতানামনুকম্পিতা । কাম-  
 দ্বেষৌ বশে কৃত্বা সতাং বর্জ্যানুবর্ততে ॥ ১৮ ॥ অস্বরীষস্য মাক্কা তুর্ঘ্বাভেনর্হুসস্য চ ।  
 ভরতস্য দিলীপস্য শিবেরৌশীনরস্য চ ॥ ১৯ ॥ রাজর্ষীণাং পুরাণানাং ধুরং ধত্তে  
 দুরুদ্বহাম্ । শীলবৃত্তোপসম্পন্নো ধর্মজ্ঞঃ সত্যসঙ্গরঃ ॥ ২০ ॥ রাজা সর্বগুণোপেত-  
 ত্শ্রৈলোক্যস্যাপি যো ভবেৎ । অজাতশত্রুর্ধর্মাত্মা শুদ্ধজাযনদপ্রভঃ ॥ ২১ ॥ শ্রেষ্ঠঃ  
 কুরুষু সর্বেষু ধর্মতঃ শ্রুতব্রততঃ । প্রিয়দর্শী দীর্ঘভুজঃ কথং কৃষ্ণ যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ২২ ॥  
 যঃ স নাগায়ুতপ্রাণো বাতরংহা মহাবলঃ । সামর্ষ্যঃ পাণ্ডবো নিত্যং প্রিয়ো ভ্রাতৃঃ  
 প্রিয়ঙ্করঃ ॥ ২৩ ॥ কীচকস্য চ সজ্জাভের্যো হস্তা মধুসূদন । শূরঃ ক্রোধবশানাঞ্চ  
 হিডিম্বস্য বকস্য চ ॥ ২৪ ॥ পরাক্রমে শক্রসমো মাতরিশ্বসমো বলে । মহেশ্বরসমঃ  
 ক্রোধে ভীমঃ প্রহরতাংবরঃ ॥ ২৫ ॥ ক্রোধং বলমমর্ষঞ্চ যো নিধায় পরন্তপঃ ।  
 জিতাত্মা পাণ্ডবোহমর্ষী ভ্রাতৃস্তিষ্ঠতি শাসনে ॥ ২৬ ॥ তেজোরাশিং মহাত্মানাং  
 বরিষ্ঠমমিতৌজসম্ । ভীমং প্রদর্শনেনাপি ভীমসেনং জনাৰ্দন ॥ ২৭ ॥ তন্ম-  
 মাচক্ষু বার্ষেয কথমদ্য বৃকোদরঃ । আস্তে পরিষবাহুঃ স মধ্যমঃ পাণ্ডবোহ-  
 চ্যুত ॥ ২৮ ॥ অর্জুনেনাৰ্জুনো যঃ স কৃষ্ণ বাহুসহস্রিণা । দ্বিবাহুঃ স্পর্ধতে  
 নিত্যমতীতেনাপি কেশব ॥ ২৯ ॥ ক্ষিপত্যেকেন বেগেন পঞ্চবাণশতানি যঃ ।  
 ইষস্তুে সদৃশো রাজ্ঞঃ কার্ভবীর্য়স্য পাণ্ডবঃ ॥ ৩০ ॥ তেজসাদিত্যসদৃশো মহর্ষি-  
 সদৃশো দমে । ক্ষময়া পৃথিবীতুল্যো মহেন্দ্রসমবিক্রমঃ ॥ ৩১ ॥ আধিরাজ্যং  
 মহদীপ্তং প্রথিতং মধুসূদন । আহুতং যেন বীর্য়োণ কুরুণাং সর্বরাজসু ॥ ৩২ ॥

षम्य बाह्वलं सर्वे पाण्डवाः पर्युपासते । स सर्वरथिनां श्रेष्ठः पाण्डवः सत्य-  
 विक्रमः ॥ ७३ ॥ यं गङ्गातिमुखः सञ्च्ये न जीवन् कश्चिदाव्रजेत् । यो जेता  
 सर्वभूतानामजेयो जिहुरच्युत ॥ ७४ ॥ योऽपाश्रयः पाण्डवानां देवानामिव  
 वासवः । स ते भ्राता सखा तैव कथमद्य धनञ्जयः ॥ ७५ ॥ दयावान् सर्वभूतेषु  
 ह्रीनिषेवो महाश्रुविः । मृदुश्च सुकुमारश्च धार्मिकश्च प्रियश्च मे ॥ ७६ ॥ सह-  
 देवो महेश्वासः शूरः समितिशोभनः । भ्रातृणां कृष्ण सुश्रुधर्मार्थकुशलो  
 युवा ॥ ७७ ॥ सदैव सहदेवस्य भ्रातरो मधुसूदन । वृत्तं कल्याणवृत्तस्य पूज-  
 यन्ति महाश्रुतः ॥ ७८ ॥ ज्येष्ठोपचायिनं वीरं सहदेवं युधां पतिम् । सुश्रुं  
 र्गम वाक्येय माद्रीपुत्रं प्रचक्षु मे ॥ ७९ ॥ सुकुमारो युवा शूरो दशनीयश्च पा-  
 ण्डवः । भ्रातृणां तैश्च सर्वेषां प्रियः प्राणो बहिश्चरः ॥ ८० ॥ चित्रबोधी च नकुलो  
 महेश्वासो महाबलः । कच्छिं स कुशली कृष्ण वत्सो मम सुथैर्धितः ॥ ८१ ॥  
 सुखोचितमदुःखार्हं सुकुमारं महारथम् । अपि जातु महाबाहो पश्येयं नकुलं  
 पुनः ॥ ८२ ॥ पद्मसम्पातजे काले नकुलेन विनाकृता । न लभामि धृतिं वीर  
 साद्य जीवामि पश्य माम् ॥ ८३ ॥ सदैवः पुत्रैः प्रियतरा द्यौपदी ने जना-  
 र्दन । कुलीना रूपसम्पन्ना सदैवः समृद्धिता गुणैः ॥ ८४ ॥ पुल्लोकां पतिलो-  
 कान् वृणुना सत्यवादिनी । प्रियान् पुत्रान् परित्यज्य पाण्डवानमरुध्यत ॥ ८५ ॥  
 महाभिजनसम्पन्ना सर्वकामैः सुपूजिता । ईश्वरी सर्वकल्याणी द्यौपदी कथमच्यु-  
 त ॥ ८६ ॥ पतिभिः पण्डुभिः शूरैरग्निक्लैः प्रहारिभिः । उपपन्ना महेश्वासैर्द्यौ-  
 पदी दुःखतागिनी ॥ ८७ ॥ चतुर्दशमिमं वर्षं याम्नापश्यामिन्दम । पुत्राधिभिः  
 परिद्यूनां द्यौपदीं सत्यवादिनीम् ॥ ८८ ॥ न ह्यनं कर्मभिः पुण्यैरश्रुते पुरुषः  
 सुखम् । द्यौपदी चेत्तथावता नाश्रुते सुखमव्ययम् ॥ ८९ ॥ न प्रियो मम कृष्णाया  
 वीतं सुन युधिष्ठिरः । भीमसेनो यमो चापि यदपश्यं सतागताम् । न मे  
 दुःखतरं किञ्चित् भूतपूर्वं ततोऽधिकम् ॥ ९० ॥ स्त्रीधर्मिणीं द्यौपदीं यं शशु-  
 राणां समीपगाम् । अनायितामनार्येण क्रोधलोभान्नुवर्तिना । सर्वे तैश्चक्रुः  
 कुरव एकवज्रां सतागताम् ॥ ९१ ॥ तत्रैव धृतराष्ट्रश्च महाराजश्च बाल्किणः ।  
 कृपश्च सोमदत्तश्च निर्विन्नाः कुरवस्तथा ॥ ९२ ॥ तस्यां संसदि सर्वेषां क्रुद्धारं  
 पूजयाम्यहम् । वृत्तेन हि भवत्यार्येया न धनेन न विद्यया ॥ ९३ ॥ तस्य कृष्ण  
 महाबुद्धेर्गङ्गीरस्य महाश्रुतः । क्रुद्धः शीलमलकारो लोकान् विहृत्त्य तिष्ठति ॥ ९४ ॥  
 वैशम्पायन उवाच । सा शोकार्तं च हृत्वा च दृष्ट्वा गोविन्दमागतम् । नानाविधानि

दुःखानि सर्वाण्येवावकीर्तयत् ॥ ५५ ॥ पूर्वैराचरितं वत्तं कुराजतिररिन्दम ।  
 अकुर्यात्तं मृगवधः कर्त्तुमिच्छत् ॥ ५६ ॥ तन्मां दहति यत् क्रुषा म-  
 भायां कुरुसन्निधौ । धार्तराष्ट्रैः परिक्रिष्टा यथा न कुशलं तथा ॥ ५७ ॥ निर्वा-  
 सनं नगरात् प्रव्रज्या च परस्तप । नानाविधानां दुःखानामभिज्ज्ञास्मि जना-  
 र्दन ॥ ५८ ॥ अज्ज्ञातचर्या बालानामवरोधश्च माधव । न मे क्लेशतमं तन्मां  
 पुत्रैः सह परस्तप ॥ ५९ ॥ दुर्योधनेन निरुता वर्षमद्य चतुर्दशम् । दुःखादपि सुखं  
 न स्यात् यदि पुण्यफलकवः ॥ ६० ॥ न मे विशेषो जाह्नवीकाठराष्ट्रैः पाण्डवैः ।  
 तेन सत्येन क्रुषा ह्यं हुतामित्रं शिवावृतम् । अस्मादिभुक्तं संग्रमात् पश्येयं  
 पाण्डवैः सह ॥ ६१ ॥ नैव शक्याः पराजितुं सर्वं ह्येषां तथाविधम् । पितरस्तुव  
 गर्हेयं नात्मानं न सुषोषनम् । येनाहं कुन्तिभोजाय धनं धूर्तेरिवापिता ॥ ६२ ॥  
 बालां मामार्यकस्तुभ्यां क्रीडन्तीं कन्दुहस्तिकाम् । अददं कुन्तिभोजाय सखा  
 सथे महात्माने ॥ ६३ ॥ साहं पित्रा च निरुता श्वशुरैश्च परस्तप । अत्यस्तदु-  
 धिता क्रुषा किं जीवितफलं मम ॥ ६४ ॥ यन्मां वागव्रीमन्तं मृतके मया-  
 साचिनः । पुलस्त्ये पृथिवीं जेता वशशास्य दिवं मृशेत् ॥ ६५ ॥ इहा कुरुन्  
 महाजन्ये राज्यं प्राप्य धनञ्जयः । आतृभिः सह कौन्तेयस्त्रीन् मेधानाह्रि-  
 ष्यति ॥ ६६ ॥ नाहं तामभ्यसूयामि नमो धर्म्याय वेधसे । क्रुषाय महते नित्यं  
 धर्मो धारयति प्रजाः ॥ ६७ ॥ धर्मश्चेदस्ति वार्केय यथा वागभ्यभाषत । द्वेषापि  
 तस्तथा क्रुषा सर्वं सम्पादयिष्यसि ॥ ६८ ॥ न मां माधव वैधव्यं नार्थनाशो न  
 वैरता । तथा शोकाय दधति यथा पुल्लैरिना भवः ॥ ६९ ॥ याहं गाण्डीवध्वानं  
 शर्षशस्त्रभतां वरम् । धनञ्जयं न पश्यामि का शान्तिर्हृदयस्य मे ॥ ७० ॥ इतश्चतु-  
 र्दशं वर्षं यन्मापश्यां युधिष्ठिरम् । धनञ्जयं गोविन्द यमो त्वं ह्येकोदरम् ॥ ७१ ॥  
 जीवनाशं प्रनष्टानां श्राद्धं कुरन्ति मानवाः । अर्थतस्ते मम मृतान्तेषां ह्यहं  
 जनार्दन ॥ ७२ ॥ बुधा माधव राजानं धर्मात्मानं युधिष्ठिरम् । बुधांस्ते हीयते  
 धर्मो मा पुल्लक रथा क्रुधाः ॥ ७३ ॥ पराश्रया वासुदेव या जीवति धिगस्तु ताम् ।  
 वृत्तेः कापण्यलक्षाया अप्रतिष्ठैव ज्यायसी ॥ ७४ ॥ अथो धनञ्जयं बुधा नित्यो-  
 ऽन्तुक्तं ह्येकोदरम् । यदर्थं क्लिषा मृते तस्य कालोऽयमागतः ॥ ७५ ॥ अस्मि-  
 ष्चेदागते काले कालो बोधतिक्रमिष्यति । लोकसंस्त्राविताः सन्तः सुनृशंसं  
 करिष्यथ ॥ ७६ ॥ नृशंसेन च वो युक्तांस्त्यजेयं शाश्वतीः समाः । काले हि  
 समस्तुप्राप्ते त्यक्तव्यमपि जीवितम् ॥ ७७ ॥ माद्रीपुत्रो च वक्तव्यो क्लृप्तधर्मरतो



सदा । विक्रमेणाङ्गितान् भोगान् वृणीतं जीवितादपि ॥ १८ ॥ विक्रमाधिगत  
 ह्यर्थाः क्लृप्तधर्मेण जीवतः । मनो मनुष्यस्य सदा प्रीणन्ति पुरुषोत्तम ॥ १९ ॥  
 गङ्गा बुहि महाबाहो सर्वशस्त्रभृतां वरम् । अङ्गुनं पाण्डवं वीरं द्रौपद्याः  
 पदवीक्षर ॥ २० ॥ विदितो हि तवात्स्यस्तं संक्रुद्धो तौ यथास्तको । तीमा-  
 ङ्गुनो नयेतां हि देवानपि परां गतिम् ॥ २१ ॥ तयोश्चैतदवज्जानं यत्रां  
 कृष्णां सतां गताम् । दूःशासनश्च कर्णश्च परुषाण्यत्स्यताम ॥ २२ ॥ दुर्यो-  
 धनो भीमसेनमभ्यगच्छन्मन्थिनम् । पश्यातां कुरुमुख्यानां तस्य द्र्यक्ष्यति यं  
 फलम् । न हि वैरं समासाद्य प्रशाम्यति वृकोदरः ॥ २३ ॥ सूचिरादपि भीमस्य  
 न हि वैरं प्रशाम्यति । यावदन्तं न नयति शत्रवान् शत्रुकर्षणः ॥ २४ ॥ न दूःखं  
 राज्यहरणं न च द्यूते पराजयः । प्रव्राजनं पुत्राणां न मे तदूःखकारणम् ॥ २५ ॥  
 यदु सा रूहती श्यामा एकवस्त्रा सतां गता । अशृणोत् परुषा वाचः किमु दूःखतरं  
 ततः ॥ २६ ॥ स्त्रीधर्मिणी वरारोहा क्लृप्तधर्मरता सदा । नात्यगच्छन्तदा नाथं  
 कृष्णा नाथवती सती ॥ २७ ॥ यस्या मम सपुत्रायास्त्रुनाथो मधुसूदन । रामश्च  
 बलिनां श्रेष्ठः प्रद्युम्नश्च महारथः ॥ २८ ॥ साहमेवंविधं दूःखं सहेयं पुरु-  
 षोत्तम । भीमे जीवति दुर्द्धरे विजये चापलायिनि ॥ २९ ॥ वैशम्पायन  
 उवाच । तत आश्वासयामास पुत्राधिभिरतिप्लुताम् । पितृष्वसारं शोचन्तीं शौरिः  
 पार्थसखः पृथाम् ॥ ३० ॥ वासुदेव उवाच । का नू सौमन्तिनी ह्यादक् लोके-  
 ष्वस्ति पितृष्वसः । शूरस्य राज्ञो दुहिता आजमीटकूलंगता ॥ ३१ ॥ महाकुलीना  
 भवती हृदा हृदमिवागता । ईश्वरी सर्वकल्याणी भद्रा परमपूजिता ॥ ३२ ॥ वीर-  
 सूर्यारपत्नी ह्यं सर्वैः समुदिता गुणैः । सुखदूःखे महाप्राज्ञे ह्यादृशी सोढुमह-  
 ति ॥ ३३ ॥ निद्रा तस्त्री क्रोधहर्षो मूढपिपासे हिमातपो । एतानि पार्था  
 निज्जित्य नित्यं वीरसूखे रताः ॥ ३४ ॥ त्यक्तग्राम्यसूखाः पार्था नित्यं वीरसूख-  
 प्रियाः । न ते स्वप्नेन तुष्येषुर्महोत्साहा महाबलाः ॥ ३५ ॥ अन्तं धीरा  
 निषेवस्ते मध्यं ग्राम्यसूखप्रियाः । उन्नमांश्च परिक्रेशान् भोगांश्चातीव मानु-  
 यान् ॥ ३६ ॥ अन्तेषु रेमिरे धीरा न ते मध्येषु रेमिरे । अन्तप्राप्तिं सूखा-  
 माहूदूःखमन्तरमन्तयोः ॥ ३७ ॥ अतिवादवन्ति भवतीं पाण्डवाः सह कृष्णा ।  
 आश्वानं कुशलिनं निवेद्याहरनामयम् ॥ ३८ ॥ अरोगान् सर्वसिद्धार्थान् क्षिप्रं  
 द्रक्ष्यसि पाण्डवान् । ईश्वरान् सर्वलोकस्य हतामित्रान् श्रियारुतान् ॥ ३९ ॥ एव-  
 माश्वानिता कुन्ती प्रत्यूवाच जनार्दनम् । पुत्राधिभिरतिधस्ता निगृह्यावृद्धिजं

তমঃ ॥ ১০০ ॥ কুন্ত্যুবাচ । যদ্ব্যভেষাং মহাবাহো পথ্যং স্যাম্মধুসূদন । যথা যথা  
 ত্বং মন্যেথাঃ কুর্য্যাঃ ক্লৃণু তথা তথা ॥ ১০১ ॥ অবিলোপেন ধর্মস্য অনিকৃত্য।  
 পরস্তপ । প্রভাবজ্ঞান্মি তে ক্লৃণু সত্যস্যাভিজনস্য চ ॥ ১০২ ॥ ব্যবস্থাযাঞ্চ মিত্রেষু  
 বুদ্ধিবিক্রমযোস্তুথা । ত্বমেব নঃ কুলে ধর্মস্ত্বং সত্যং ত্বং তপো মহৎ ॥ ১০৩ ॥  
 ত্বং ভ্রাতা ত্বং মহদ্বন্ধু ত্বয়ি সর্বং প্রতিষ্ঠিতম্ । যথৈবাথ তথৈবৈতৎ ত্বয়ি সত্যং  
 ভবিষ্যতি ॥ ১০৪ ॥ বৈশম্পায়ন উবাচ । তামামন্ত্র্য হৃষীকেশঃ কৃৎস্না চাভিপ্রদ-  
 ক্ষিণম্ । প্রাতিষ্ঠত মহাবাহুর্দুর্যোধনগহান্ প্রতি ॥ ১০৫ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্গানপর্বণি কুন্তীক্লৃণুসংবাদে নবতি-  
 তমোঃধ্যায়ঃ ॥ ২০ ॥



বৈশম্পায়ন উবাচ । পৃথামামন্ত্র্য গোবিন্দঃ কৃৎস্না চাভিপ্রদক্ষিণম্ । দুর্যোধন-  
 গহং শৌরিরভ্যগচ্ছদরিন্দমঃ ॥ ১ ॥ লক্ষ্ম্য। পরময়া যুক্তং পুরন্দরগহোপমম্ । বিচি-  
 ত্রৈরামনৈর্যুক্তং প্রবিবেশ জনাঙ্গনঃ ॥ ২ ॥ তস্য কক্ষ্যা ব্যতিক্রম্য তিশ্রো দ্বাঃশ্বে-  
 রবারিতঃ । ততোঃত্বধনসংকাশং গিরিকূটমিবোচ্ছিতম্ । শ্রিযা জ্বলন্তং প্রাসা  
 দমারুরোহ মহাযশাঃ ॥ ৩ ॥ তত্র রাজসহশ্ৰৈশ্চ কুরুভিষ্চাভিসংরতম্ । ধার্তরাষ্ট্রৈঃ  
 মহাবাহুং দদর্শাসীনমাসনে ॥ ৪ ॥ দঃশাসনঞ্চ কর্ণঞ্চ শকুনিঞ্চাপি সৌবলম্ ।  
 দুর্যোধনসমীপে তানাসনস্থান্ দদর্শসং ॥ ৫ ॥ অভ্যাগচ্ছতি দাশাহে ধার্তরাষ্ট্রো  
 মহাযশাঃ । উদতিষ্ঠৎ সহামাত্যঃ পূজয়াম্মধুসূদনম্ ॥ ৬ ॥ সমেত্য ধার্তরাষ্ট্রেণ  
 সহামাত্যেন কেশবঃ । রাজভিস্তত্র বাক্ষেযঃ সমাগচ্ছদ্যথাবযঃ ॥ ৭ ॥ তত্র জাম্বন-  
 দমযং পর্যাক্তং সুপরিঙ্কৃতম্ । বিবিধাস্তরণাস্তীর্ণমভ্যুপাविशदच्युतः ॥ ৮ ॥ তস্মিন্  
 গাং মধুপকঞ্চাপ্যদকঞ্চ জনাঙ্গনে । নিবেদযামাস তদা গহানাজ্যঞ্চ কৌরবঃ ॥ ৯ ॥  
 তত্র গোবিন্দমাসীনং প্রসন্নাদিত্যবর্চসম্ । উপাসাঞ্চক্রিরে সর্বে কুরবো রাজভিঃ  
 সহ ॥ ১০ ॥ ততো দুর্যোধনো রাজা বাক্ষেযং জযতাং বরম্ । ন্যনস্ত্রযদ্ভোজনেন  
 নাভ্যনন্দচ্চ কেশবঃ ॥ ১১ ॥ ততো দুর্যোধনঃ ক্লৃণুগত্রবীং কুরুসংসদি । মৃদু-  
 পূর্বং শঠোদকং কর্ণমাভাষ্য কৌরবঃ ॥ ১২ ॥ কস্মাদন্নানি পানানি বাসাংসি শষ-  
 নানি চ । ত্বদর্থমুপনীতানি নাগ্রহীস্বং জনাঙ্গন ॥ ১৩ ॥ উভযোশ্চাদদঃ সহমুভ-  
 যোশ্চ হিতে রতঃ । সশকী দযিতশ্চাসি ধতরাষ্ট্রস্য মাধব ॥ ১৪ ॥ ত্বং হি গোবিন্দ  
 ধর্মার্থো বেথ তত্ত্বেন সর্বশঃ । তত্র কারণমিচ্ছামি শ্রোতুং চক্রগদাধর ॥ ১৫ ॥  
 বৈশম্পায়ন উবাচ । স এবমুক্তো গোবিন্দঃ প্রত্যুবাচ মহামনাঃ । ওষমে-

षष्ठनः काले प्रगृह्य विपुलं भुजम् ॥ १७ ॥ अनश्रुतमग्रस्तनिरस्तमसकूलम् ।  
 राजीवनेत्रो राजानं हेतुमदाकामुत्तमम् ॥ १९ ॥ क्रुतार्थां भुञ्जते दृताः पूजां  
 गृह्णन्ति चैव ह । क्रुतार्थं मां सहामात्यस्त्वमर्चिष्यसि भारत ॥ १८ ॥ एवमुक्त्वा प्रत्यु-  
 वाच धार्तराष्ट्रो जनार्दनम् । न युक्तं भवतास्मासु प्रतिपत्तमसाश्रितम् ॥ १९ ॥  
 क्रुतार्थं क्रुतार्थं च्वां वयं मधुसूदन । यतामहे पूजयितुं दाशार्हं न च श-  
 क्रुमः ॥ २० ॥ न च तं कारणं विद्यो यस्मिन्नो मधुसूदन । पूजां क्रुतां  
 प्रीयमाणैर्नामंश्वाः पुरुषोत्तम ॥ २१ ॥ वैरं नो नास्ति भवता गोविन्द न च  
 विग्रहः । स भवान् प्रसमीक्ष्य तन्नेदृशं वक्तुमर्हति ॥ २२ ॥ एवमुक्त्वा प्रत्युवाच  
 धार्तराष्ट्रं जनार्दनः । अतिवीक्ष्य सहामात्यं दाशार्हः प्रहसन्निव ॥ २३ ॥ नाहं  
 कामान् संरुत्तान् देवाम्नाथकारणात् । न हेतुवादाल्लोभाद्वा धर्मं जहां कथ-  
 ष्ण ॥ २४ ॥ संप्रीतिभोज्यान्मानि आपद्भोज्यानि वा पुनः । न च संप्री-  
 यसे राजान् चैवापदाता वयम् ॥ २५ ॥ अकस्मात् द्वेक्षि वै राजन् जन्मप्रभृति  
 पाण्डवान् । प्रियान्नुवर्तिनो भ्रातॄन् सदैवः समुदितान् गुणैः ॥ २६ ॥ अकस्माच्छेव  
 पार्थानां द्वेषणं नोपपद्यते । धर्मो स्थिताः पाण्डवेयाः कस्तान् किं वक्तुम-  
 र्हति ॥ २७ ॥ यस्तान् द्वेक्षि स मां द्वेक्षि यस्तान्नु स मामनु । एकान्यत् मां  
 गतं विद्धि पाण्डवैर्धर्मचारिभिः ॥ २८ ॥ कामक्रोधान्नुवर्ती हि यो मोहाद्विरू-  
 रूत्सति । गुणवस्तुषु यो द्वेक्षि तमाहः पुरुषार्थमन् ॥ २९ ॥ यः कल्याणगुणान्  
 श्रुतीन् मोहाल्लोभादिदुक्ते । सोऽजिताग्नाजितक्रोधो न चिरं तिष्ठति  
 श्रियाम् ॥ ३० ॥ अथ यो गुणसम्पन्नान् हृदयस्याप्रियानपि । प्रियेण कुरुते वश्यान्  
 चिरं षणसि तिष्ठति ॥ ३१ ॥ सर्वमेतन्न भोक्तव्यमन्नं दुष्कृतिः संहितम् । क्तु-  
 रेकस्य भोक्तव्यमिति मे शीघ्रते मतिः ॥ ३२ ॥ एवमुक्त्वा महाबाहुर्दुर्योधनम-  
 र्षणम् । निश्चक्राम ततः शुभ्राङ्घ्रिर्नारुणिवेशनात् ॥ ३३ ॥ निर्याय च महाबाहु-  
 र्वासुदेवो महामनाः । निवेशाय यथो वेश्म विदूरस्य महात्मानः ॥ ३४ ॥ तमभ्य-  
 गच्छद्गोणश्च रूपेण तीक्ष्णोऽथ बाह्लिकः । कुरवश्च महाबाहुं विदूरस्य गृह्णन्ति-  
 तम् ॥ ३५ ॥ त उचुर्माधव वीरं कुरवो मधुसूदनम् । निवेदयाम वाक्येय सर-  
 त्नांस्ते गृहान् वयम् ॥ ३६ ॥ तान्नुवाच महातेजाः कौरवान् मधुसूदनः । सर्वे  
 भवन्तो गच्छन्तु सर्वा मेऽपचिभिः क्रुता ॥ ३७ ॥ वातेषु कुरुषु कृता दाशार्हमप-  
 राजितम् । अत्यर्चयामास तदा सर्वकामैः प्रयत्नवान् ॥ ३८ ॥ ततः कृतामपा-  
 नानि श्रुतीनि श्रुण्वन्ति च । उपाहरदनेकानि केशवाय महात्माने ॥ ३९ ॥ तैस्तुर्प-

যিদ্ধা প্রথমং ব্রাহ্মণান্নধুসূদনং । বেদবিদ্যেয়া দদৌ কৃষ্ণঃ পরমজবিণান্যপি ॥ ৪০ ॥  
ততোহনুযাযিভিঃ সার্কং মরুভিরিব বাসবঃ । বিদুরাম্মানি বুভুজে শুচীনি গুণ-  
বস্তিচ ॥ ৪১ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি ভগবদ্গানপর্বনি কৃষ্ণদুর্যোধনসংবাদে এক-  
নবতিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ২১ ॥



বৈশম্পায়ন উবাচ । তং ভুক্তবস্তুমাশ্বস্তং নিশাযাং বিদুরোহব্রবীৎ । নেদং  
সম্যগ্যবসিতং কেশবাগমনং তব ॥ ১ ॥ অর্থধর্মাতিগো মন্দঃ সংরস্তী চ জনা-  
র্দন । মানস্মো মানকামশ্চ বৃদ্ধানাং শাসনাতিগঃ ॥ ২ ॥ ধর্মশাস্ত্রাতিগো মুচো  
দরাভ্যা প্রগ্রহং গতঃ । অনেষঃ শ্রেষসাং মন্দো ধার্তরাষ্ট্রো জনাৰ্দ্দন । কামাত্মা  
প্রাজ্ঞমানী চ মিত্র ধ্রু ক্ সর্বশক্তিঃ ॥ ৩ ॥ অকর্তা চাক্রতজ্জশ্চ ত্যক্রধর্মা প্রিয়া-  
নৃতঃ । মুচশ্চাক্রতবুদ্ধিশ্চ ইন্দ্রিযাণামনীশ্বরঃ ॥ ৪ ॥ কানানুসারী কৃত্যেযু সর্বেষু  
কৃতনিশ্চয়ঃ । এতৈশ্চানৈশ্চ বহুভির্দৌষৈরেষ সমন্বিতঃ ॥ ৫ ॥ স্বষোচ্যমানঃ  
শ্রেয়োহপি সংরস্তান্ন গ্রহীষ্যতি ॥ ৬ ॥ ভীষ্মে দ্রোণে রূপে কর্ণে দ্রোণপুল্রে জয-  
দ্ভথে । ভূবসীং বর্ততে বৃত্তিং ন শমে কুরুতে মনঃ ॥ ৭ ॥ নিশ্চিতং ধার্তরাষ্ট্রাণাং  
সকর্ণানাং জনাৰ্দ্দন । ভীষ্মদ্রোণমুখান্ পার্থা ন শক্তাঃ প্রতিবীক্ষিতুম্ ॥ ৮ ॥  
সেনাসমুদযং দৃষ্টা পার্থিবং মধুসূদন । কৃতার্থং মন্যতে বাল আত্মানমবিচ-  
ক্ষণঃ ॥ ৯ ॥ একঃ কর্ণঃ পরাঞ্জৈতুং সমর্থ ইতি নিশ্চিতম্ । ধার্তরাষ্ট্রস্য দুৰ্বুদ্ধেঃ  
স শমং নোপযাস্যতি ॥ ১০ ॥ সংবিচ্ছ ধার্তরাষ্ট্রাণাং সর্বেষামেব কেশব । শমে  
প্রযতমানস্য তব সৌভ্রাতৃকাজ্জিহ্নঃ ॥ ১১ ॥ ন পাণ্ডবানামস্মাভিঃ প্রতিদেষং যথো-  
চিতম্ । ইতি ব্যবসিতাস্তেষু বচনং স্যাম্নিরর্থকম্ ॥ ১২ ॥ যত্র সূক্তং দুরুক্তঞ্চ  
সমং স্যাম্নধুসূদন । ন তত্র প্রলপেৎপ্রাজ্ঞো বধিরেষ্বিব গাযনঃ ॥ ১৩ ॥ অবি-  
জানৎসু মুচেষু নির্মর্ষ্যাদেশু মাধব । ন ত্বং বাক্যং ক্রবন্ যুক্তশ্চাণ্ডালেনু  
দ্বিজো যথা ॥ ১৪ ॥ সৌহযং বলস্শো মুচশ্চ ন করিষ্যতি তে বচঃ । তন্মি্নিরর্থকং  
বাক্যমুক্তং সম্পৎস্যতে তব ॥ ১৫ ॥ তেষাং সমুপবিষ্টানাং সর্বেষাং পাপচেতসাম্ ।  
তব মধ্যাবতরণং মম কৃষ্ণ ন রোচতে ॥ ১৬ ॥ দুৰ্বুদ্ধীনামশিষ্টানাং বহুনাং দুষ্-  
চেতসাম্ । প্রতীপং বচনং মধ্যে তব কৃষ্ণ ন রোচষে ॥ ১৭ ॥ অনুপাসিতবদ্ধদ্বাৎ  
শ্রিযো দর্পাচ্চ মোহিতঃ । বযোদর্পাদমর্ষাচ্চ ন তে শ্রেয়ো গ্রহীষ্যতি ॥ ১৮ ॥  
বলং বলবদপ্যস্য যদি বক্ষ্যসি মাধব । ত্ব্যস্য মহতী শঙ্কা ন করিষ্যতি তে

वचः ॥ १२ ॥ नेदमद्य युधा शक्यमिच्छेणापि सहामरैः । इति व्यवसिताः सर्वे धार्तराष्ट्राः जनार्दन ॥ २० ॥ तेष्वेवमुपपन्नेषु कामक्रोधान्बुवर्तिषु । समर्थमपि ते वाक्यमसमर्थं भविष्यति ॥ २१ ॥ मध्ये तिष्ठन् हस्त्यनीकस्य मन्दो रथाश्वयुक्तस्य बलस्य मूढः । दुर्योधनो मन्यते वीतभीतिः क्रुद्धः ममेव पृथिवी जितेति ॥ २२ ॥ आशंसते वै धृतराष्ट्रस्य पुलो महाराज्यमसपन्नं पृथिव्याम् । तस्मिंश्चमः केवलो नोपलभ्येत्येव वदन् सन्तं मन्यते लक्ष्मणम् ॥ २३ ॥ पर्यस्त्येव पृथिवी कालपक्वा दुर्योधनार्थं पाण्डवान् योद्धुकामाः । समागताः सर्वयोधाः पृथिव्यां राजानश्च क्षितिपाटैः समेताः ॥ २४ ॥ सर्वे चैते क्रुतवैराः पुरस्ताद्धवा राजानो हतसाराश्च क्रुधा । तवोद्देशात्संश्रिता धार्तराष्ट्रान् सुसंहताः सहकर्णेन वीराः ॥ २५ ॥ त्यक्त्वास्त्रानः सह दुर्योधनेन हृष्टा योद्धुः पाण्डवान् सर्वयोधाः । तेषां मध्ये प्रविशेथा यदि ह्यं न तन्नतं मम दाशाह्वीर ॥ २६ ॥ तेषां समुपविष्टानां बहूनां दुष्टचेतसाम् । कथं मध्यं प्रपद्येथाः शत्रूणां शत्रुकर्षण ॥ २७ ॥ सर्वथा ह्यं महाबाहो देवैरपि दूरामदः । प्रतावं पौरुषं बुद्धिं जानामि तव शत्रून् ॥ २८ ॥ या मे प्रीतिः पाण्डवेषु भूयः सा ह्यपि माधव । प्रेमू च बहूनां च सौहृदाच्च त्रवीम्यहम् ॥ २९ ॥ या मे प्रीतिः पुक्तराक् हृदार्शनसमुद्भवा । सा किमाख्यायते तुभ्यमसुरास्त्रासि देहिनाम् ॥ ३० ॥

इत्युक्त्यागपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि विदुरवाक्ये द्विनवति-

तमोऽध्यायः ॥ २२ ॥



भगवान्नुवाच । यथा वृषान्महाप्राज्ञे यथा वृषाद्विचक्षणः । यथा वाच्यस्तद्विधेन भवता मद्दिषः सूक्तं ॥ १ ॥ धर्मार्थयुक्तं तथ्यं यथा ह्युपपद्यते । तथा वचनमुक्त्यास्मि ह्येतत् पितृमातृवत् ॥ २ ॥ सत्यं प्राप्नुयुः युक्त्याप्येवमेव यथाथ माम् । शूण्वागमने हेतुं विदुरावहितो भव ॥ ३ ॥ दौरास्यं धार्तराष्ट्रस्य क्लिषाणां वैरताम् । सर्वमेतदहं जानन् क्रुतः प्राप्नोह्ये कौरवान् ॥ ४ ॥ पर्यस्तां पृथिवीं सर्वां साश्वां सरथकुञ्जराम् । यो मोक्षेन्नृत्युपाशां प्राप्नुयाद्धर्ममुत्तमम् ॥ ५ ॥ धर्मकार्यं यतन् शक्या नो चेत् प्राप्नोति मानवः । प्राप्नोति भवति तत्पुण्यमत्र मे नास्ति संशयः ॥ ६ ॥ मनसा चिन्तयन् पापं कर्मणा नातिरोचयन् । न प्राप्नोति फलं तस्येत्येव धर्मविदो विदुः ॥ ७ ॥ सोऽहं यतिष्ये प्रशमं क्रुतः कर्तुमयाया । कुरुणां सङ्घानां संग्रामे विनशिष्यताम् ॥ ८ ॥

সেযমাপন্নহাঘোরা কুরুষেব সমুখিতা । কৰ্ণদুর্যোধনকূতা সর্বে ছেতে তদন-  
 যাঃ ॥ ৯ ॥ ব্যসনে ক্লিষ্টমানং হি যো মিত্রং নাতিপদ্যতে । অনুনীয় যথাশক্তি  
 তং নৃশংসং বিদূৰ্ব্বধাঃ ॥ ১০ ॥ আকেশগ্রহণামিত্রমকার্য্যাৎ সন্নিবর্তয়ন্ । অবাচ্যাঃ  
 কস্যচিদ্ভবতি কৃতযত্নো যথাবলম্ ॥ ১১ ॥ তৎ সমর্থং শুভং বাক্যং ধৰ্ম্মার্থ-  
 সহিতং হিতম্ । ধার্ত্তরাষ্ট্রঃ সহামাত্যো গ্রহীতুং বিদুরাহীতি ॥ ১২ ॥ হিতং হি  
 ধার্ত্তরাষ্ট্রাণাং পাণ্ডবানাং তথৈব চ । পৃথিব্যাং ক্লিষ্টাণাঞ্চ যতিষ্যেহ্ননমা-  
 যযা ॥ ১৩ ॥ হিতে প্রযতমানং মাং শক্কেদুর্যোধনো যদি । হৃদযস্য চ মে প্রীতি-  
 রানুগ্যঞ্চ ভবিষ্যতি ॥ ১৪ ॥ জ্ঞাতীনাং হি মিথো ভেদে যন্মিত্রং নাতিপদ্যতে ।  
 সৰ্বযত্নেন মধ্যস্থং ন তন্মিত্রং বিদূৰ্ব্বধাঃ ॥ ১৫ ॥ ন মাং ব্রুয়ুরধম্মিষ্ঠা মূঢ়া হসুহ-  
 দস্তথা । শক্ভো নাবারযৎ কৃষ্ণঃ সংরদ্ধান্ কুরুপাণ্ডবান্ ॥ ১৬ ॥ উভযোঃ সাধ-  
 যম্মর্থমহমাগত ইত্যুত । তত্র যত্নমহং কৃৎস্বা গচ্ছেযং নৃষবাচ্যতাম্ ॥ ১৭ ॥ মম  
 ধৰ্ম্মার্থযুক্তং হি শ্রুত্বা বাক্যমনামযম্ । ন চেদাদান্যতে বালো দিষ্টস্য বশমে-  
 য্যতি ॥ ১৮ ॥ অহাপযন্ পাণ্ডবার্থং যথাবচ্ছমং কুরুণাং যদি বা চরেযম্ । পুণ্যঞ্চ  
 মে স্যাচ্চরিতং মহার্থং নুচ্যেয়ং শ্চ কুরবো মৃত্যুপাশাৎ ॥ ১৯ ॥ অপি বাচং ভাষ-  
 মাণস্য কাব্যং ধৰ্ম্মারামার্থবতীমহিংস্রাম্ । অবেক্ষেরন্ ধার্ত্তরাষ্ট্রাঃ শমার্থং  
 মাঞ্চ প্রাপ্তং কুরবঃ পূজযেযুঃ ॥ ২০ ॥ ন চাপি মম পর্য্যাপ্তাঃ সহিতাঃ সৰ্বপার্থিবাঃ ।  
 ক্রুদ্ধস্য প্রমুখে স্থাতুং সিংহস্যেবেতরে মৃগাঃ ॥ ২১ ॥ বৈশম্পায়ন উবাচ । ইত্যে-  
 বমুক্ত্বা বচনং রুক্ষীনামৃষভস্তদা । শযনে সুখসংস্পর্শে শিষ্যে যদুসুখাবহঃ ॥ ২২ ॥  
 ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্গানপর্বণি শ্রীকৃষ্ণবাক্যে ত্রিনবতিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৯৩ ॥



বৈশম্পায়ন উবাচ । তথা কথযতোরেব তবোৰ্ব্বন্ধিমতোস্তদা । শিবা নক্ষত্রস-  
 ম্পন্নাসা ব্যতীষায় শৰ্ব্বরী ॥ ১ ॥ ধৰ্ম্মকামার্থযুক্তাশ্চ বিচিত্রার্থপদাকরাঃ । শৃণু-  
 তো বিবিধা বাচো বিদুরস্য মহাস্বনঃ ॥ ২ ॥ কথাভিরনুরূপাভিঃ কৃষ্ণস্যামিততে-  
 জসঃ । অকামস্যেব কৃষ্ণস্য সা ব্যতীষায় শৰ্ব্বরী ॥ ৩ ॥ ততস্ত্ব স্বরসম্পন্নাবহবঃ  
 স্মৃতমাগধাঃ । শঙ্খদুন্দুভিনির্ঘোষৈঃ কেশবং প্রত্যবোধযন্ ॥ ৪ ॥ তত উখায় দাশাহ  
 ঋষভঃ সৰ্বসাস্ত্রতাম্ । সৰ্বমাবশ্যকং চক্রে প্রাতঃ কার্য্যং জনার্দনং ॥ ৫ ॥ কৃতো-  
 দকামুজপ্যঃ স হতাগ্নিঃ সমলকৃতঃ । তত আদিত্যমুদ্যন্তমুপাতিষ্ঠত মাধবঃ ॥ ৬ ॥  
 অথ দুর্যোধনঃ কৃষ্ণং শকুনিশ্চাপি সৌবলঃ । সন্ধ্যাং তিষ্ঠন্তমভ্যেত্য দাশার্হমপ-  
 রাজিতম্ ॥ ৭ ॥ আচক্ষেতাস্ত কৃষ্ণস্য ধৃতরাষ্ট্রং সভাগতম্ । কুরুশ্চ ভীষ্মপ্র-

मुखान्नाङ्गः सर्वांश्च पार्थिवान् ॥ ८ ॥ स्वामर्थवस्तो गोविन्द दिवि शक्रमिवामराः ।  
 तावत्तनन्ददोगोविन्दः साम्ना परमवल्लना ॥ ९ ॥ ततो विमल आदित्ये ब्राह्मणेभ्यो  
 जनार्दनः । ददौ हिरण्यं वासांसि गाश्चाश्वांश्च परस्तपः ॥ १० ॥ विसृज्य बहु-  
 रत्नानि दाशाहमपराजितम् । तिष्ठस्तमुपसंगम्य ववन्दे सारथिस्तदा ॥ ११ ॥ ततो  
 रथेन श्वेत्त्रेण महता किङ्किणीकिना । हयोत्तमयुजा शीघ्रमुपातिष्ठत दारुकः ॥ १२ ॥  
 तमुपस्थितमाज्जाय रथं दिव्यं महामनाः । महाब्रुघननिर्घोषं सर्वरत्नविभूषि-  
 तम् ॥ १३ ॥ अग्निं प्रदक्षिणं क्रुद्धा ब्राह्मणांश्च जनार्दनः । कौस्तुभं मणिमा-  
 नुच्य श्रिया परमया झलन् ॥ १४ ॥ कुरूभिः संरुतः क्रुषेण रथिः तिसृचाभिरक्षितः ।  
 आतिष्ठत रथं शौरिः सर्वयादवनन्दनः ॥ १५ ॥ अम्बारुरोह दाशाहं विदूरः  
 सर्वधर्मविः । सर्वप्राणभृतां श्रेष्ठं सर्वबुद्धिमतां वरम् ॥ १६ ॥ ततो दुर्यो-  
 धनः क्रुषं शकुनिश्चापि सौबलः । द्वितीयेन रथेनैनमन्वयातां परस्तपम् ॥ १७ ॥  
 सात्यकिः क्रुतवर्मा च रथीनाम्नापरे रथाः । पृष्ठतोहन्नुययुः क्रुषं गजैरुत्थे रथै-  
 रपि ॥ १८ ॥ तेषां हेमपरिक्षारैर्युक्ताः परमवार्जिभिः । गच्छतां षोडश-  
 शिचत्रा रथा राजन् विरेजिरे ॥ १९ ॥ संमूढसंस्क्रुरजः प्रतिपेदे महापथम् ।  
 राजर्षिचरितं काले क्रुषेण धीमान् श्रिया झलन् ॥ २० ॥ ततः प्रयाते दाशाहे  
 प्रावादयैस्तुकपुष्कराः । शङ्खाश्च दक्षिणे तत्र वाद्यान्यन्यानि यानि च ॥ २१ ॥  
 प्रवीराः सर्वलोकाश्च युवानः सिंहविक्रमाः । परिवार्य रथं शौरेरगच्छन्तु  
 परस्तपाः ॥ २२ ॥ ततोहन्ये बहुसाहस्रा विचित्राद्भुतवाससः । असिप्रासायुध-  
 धराः क्रुषस्यासन् पुरःसराः ॥ २३ ॥ गजाः पक्षशतान्तत्र रथाश्चासन् सहस्रशः ।  
 प्रयास्तमन्वयुर्वीरं दाशाहमपराजितम् ॥ २४ ॥ पुरं कुरूणां संरुतं द्रुपकामं  
 जनार्दनम् । सरङ्गबालं सस्त्रीकं रथ्यागतमरिन्दमम् ॥ २५ ॥ वेदिकामाश्रिता-  
 तिसृच समाक्रान्तान्यनेकशः । प्रचलन्तीव भारेण षोडशिर्भवनान्मृत ॥ २६ ॥  
 सम्प्राप्त्यमानः कुरूभिः संशृणुन् मधुराः कथाः । यथाहं प्रतिसंकुर्वन् प्रेक्षमाणः  
 शनैर्यथो ॥ २७ ॥ ततः सभां समासाद्य केशवस्यानुयायिनः । सशस्त्रैर्वैष्णुनि-  
 र्घोषैर्दिशः सर्वा वनादयन् ॥ २८ ॥ ततः सा समितिः सर्वा राज्ञाममिततेजसाम् ।  
 सस्त्राकम्पत हर्षेण क्रुषागमनकाङ्क्षया ॥ २९ ॥ ततोहत्यासगते क्रुषे समहृद्य-  
 म्पराधिपाः । श्रुत्वा तं रथनिर्घोषं पङ्कन्यानिनदोपमम् ॥ ३० ॥ आसाद्य तु  
 सभाद्वारमृषतः सर्वसाह्वताम् । अवतीर्य रथाच्छौरिः कैलासशिखरोपमां ॥ ३१ ॥  
 नवमेघप्रतीकाशां झलन्तीमिव तेजसा । महेश्वरसदनप्रथ्यां प्रविवेश सभां

ততঃ ॥ ৩২ ॥ পানৌ গৃহীত্বা বিদুরং সাত্যকিঞ্চ মহাযশাঃ । জ্যোতীংষ্যাদিত্য-  
বদ্রাজন্ কুবন্ প্রচ্ছাদয়ন্ শ্রিযা ॥ ৩৩ ॥ অগ্রতো বাসুদেবস্য কর্ণদূর্যেয়াধনা-  
বুভৌ । বৃষ্ণঃ কৃতবর্ষা চাপ্যাসন্ কৃষ্ণস্য পৃষ্ঠতঃ ॥ ৩৪ ॥ ধৃতরাষ্ট্রং পুরস্কৃত্য  
ভীষ্মদ্রোণাদয়স্ততঃ । আসনেভ্যোহচলন্ সর্বে পূজযন্তো জনার্দনম্ ॥ ৩৫ ॥ অভ্যা-  
গচ্ছতি দাশার্হে প্রজ্ঞাচক্ষুর্নরেশ্বরঃ । সত্বেব দ্রোণভীষ্মাভ্যামুদতিষ্ঠন্নহাযশাঃ ॥ ৩৬ ॥  
উত্তিষ্ঠতি মহারাজে ধৃতরাষ্ট্রে জনেশ্বরে । তানি রাজসহস্রাণি সমুত্তস্থুঃ সম-  
ন্ততঃ ॥ ৩৭ ॥ আসনং সর্বতোভদ্রং জাম্বনদপরিষ্কৃতম্ । কৃষ্ণার্থে কল্পিতং তত্র  
ধৃতরাষ্ট্রস্য শাসনাৎ ॥ ৩৮ ॥ স্ময়মানস্তু রাজানং ভীষ্মদ্রোণৌ চ মাধবঃ । অভ্য-  
ভাষত ধর্মাঙ্গা রাজ্ঞশ্চান্যান্ যথাবয়ঃ ॥ ৩৯ ॥ তত্র কেশবমানর্চুঃ সম্যগভ্যা-  
গতং সভাং । রাজানঃ পার্থিবাঃ সর্বে কুরবশ্চ জনার্দনম্ ॥ ৪০ ॥ তত্র তিষ্ঠন্  
স দাশার্হৌ রাজমধ্যে পরস্তপঃ । অপশ্যদস্তুরীক্ষস্থান্বীন পরপুরঞ্জয়ঃ ॥ ৪১ ॥ তত-  
স্তানভিসম্প্রেক্ষ্য নারদপ্রমুখান্বীন । অভ্যভাষত দাশার্হৌ ভীষ্মং শান্তনবং  
শনৈঃ ॥ ৪২ ॥ পার্থিবীং সমিতিং দ্রক্ষুর্মৃষযোহভ্যাগতা নৃপ । নিমন্ত্যস্তামাস-  
নৈশ্চ সৎকারেণ চ ভূষসা ॥ ৪৩ ॥ নৈতেষ্বনুপবিষ্টেষু শক্যং কেনচিদাসিতুম্ ।  
পূজা প্রযুজ্যতামাশু মুনীনাং ভাবিতাঙ্গনাম্ ॥ ৪৪ ॥ ঋষীন শান্তনবো দৃষ্ট্বা  
সভাদ্বারমুপাগতান্ । হ্রস্বমাণস্ততো ভৃত্যানাসনানীত্যচোদয়ৎ ॥ ৪৫ ॥ আসনা-  
ন্যথ মৃষ্টানি মহাস্তি বিপুলানি চ । মণিকাঞ্চনচিত্রাণি সমাজহুস্ততস্ততঃ ॥ ৪৬ ॥  
তেষু তত্রোপবিষ্টেষু গৃহীতার্যেষু ভারত । নিষসাদাসনে কৃষ্ণে রাজানশ্চ যথা-  
সনম্ ॥ ৪৭ ॥ দংশাসনঃ সাত্যকযে দদাবাসনমুত্তমম্ । বিবিংশতির্দদৌ পীঠং  
কাঞ্চনং কৃতবর্ষণে ॥ ৪৮ ॥ অবিদুরে তু কৃষ্ণস্য কর্ণদূর্যেয়াধনাবুভৌ । একাসনে  
মহাত্মানৌ নিষীদতুরমর্ষণৌ ॥ ৪৯ ॥ গান্ধাররাজঃ শকুনিগান্ধারৈরভিরক্ষিতঃ ।  
নিষসাদাসনে রাজা সহপুত্রো বিশাম্পতে ॥ ৫০ ॥ বিদুরো মণিপীঠে তু শুক্ল-  
স্পর্ক্যাজিনোত্তরে । সংস্পৃশন্নাসনং শৌরেন্মহামতিরূপাংশি ॥ ৫১ ॥ চিরস্য  
দৃষ্ট্বা দাশার্হং রাজানঃ সর্ব এব তে । অমৃতস্যেব নাভূপ্যন্ প্রেক্ষমাণা জনা-  
র্দনম্ ॥ ৫২ ॥ অতসীপুস্পসংকাশঃ পীতবাসা জনার্দনঃ । ব্যভ্রাজত সভামধ্যে  
হেম্নীবোপহিতো মণিঃ ॥ ৫৩ ॥ ততস্তৃক্ষীং সর্বমাসীদোাবিন্দগতমানসম্ । ন তত্র  
কশ্চিৎ কিঞ্চিদ্বা ব্যাজহার পুমান্ ক্ৰটিৎ ॥ ৫৪ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্গানপর্বণি শ্রীকৃষ্ণস্য কুরুসভোপবেশনে

চতুর্নবতিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৪ ॥



वैशम्पायन उवाच । तेषासीनेषु सर्वेषु तुष्णींभूतेषु राजसु । वाक्यमभ्या-  
 ददे क्रुषः सुदंष्ट्रैः दुन्दुतिश्वनः ॥ १ ॥ जीमूत इव शर्मान्ते सर्वां-संश्रावण  
 सताम् । धृतराष्ट्रमतिप्रेक्ष्य समतासत माधवः ॥ २ ॥ भगवान् उवाच । कुरूणां  
 पाण्डवानांश्च शमः स्यादिति भारत । अप्रणाशेन वीराणामेतद्व्यतिदुर्मागतः ॥ ३ ॥  
 राजमान्यं प्रवक्तव्यं तव नैःश्रेयसं वचः । विदितं ह्येव ते सर्वं वेदितव्य-  
 मरिन्दम ॥ ४ ॥ इदं हृद्य कुलं श्रेष्ठं सर्वराजसु पार्थिव । श्रुतवृत्तोपस-  
 म्पन्नं सर्वैः समुदितं गुणैः ॥ ५ ॥ रूपान्मुकम्पा कारुण्यमानुशंस्यश्च भारत ।  
 तथाङ्गवन् क्त्वा सत्यं कुरूष्वेतद्विशिष्यते ॥ ६ ॥ तस्मिन्नेव विधे राजन् कुले  
 महति तिष्ठति । द्विमित्रं विशेषेण नेह युक्तमसाश्रितम् ॥ ७ ॥ द्वं हि वार-  
 यिता श्रेष्ठः कुरूणां कुरूसन्तम । मिथ्या प्रचरतां तात बाहेष्वाभ्यस्तुरेषु च ॥ ८ ॥  
 ते पुत्रास्तव कौरव्य दुर्योधनपुरोगमाः । धर्माथो पृष्ठतः क्रुद्धा प्रचरन्ति नृशं-  
 सवत् ॥ ९ ॥ अशिक्ता गतमर्यादा लोभेन हतचेतसः । श्वेषु वक्रुषु मुख्येषु  
 तद्वेथ पुरूषवत् ॥ १० ॥ सेवमापन्नहासोरा कुरूष्वेव समुथिता । उपेक्ष्यमाणा  
 कौरव्य पृथिवीं यातयिष्यति ॥ ११ ॥ शक्या चेष्टं शमयितुं द्वन्द्वेदिच्छसि भा-  
 रत । न दुष्करो ह्यत्र शमो मतो मे भरतर्षभ ॥ १२ ॥ द्वयधीनः शमो राजन्  
 मयि टैव विशाम्पते । पुलान् स्थापय कौरव्य स्थापयिष्याम्यहं परान् ॥ १३ ॥  
 आज्ञा तव हि राजेन्द्र कार्य्या पुलैः सहाय्यैः । हितं बलवदप्येषां तिष्ठतां  
 तव शासने ॥ १४ ॥ तव टैव हितं राजन् पाण्डवानामथो हितम् । शमे प्रयत-  
 मानस्य तव शासनकाङ्क्षिणः ॥ १५ ॥ स्वयं निष्कलमालक्ष्य मयिध्वंश्च विशाम्पते ।  
 सहायभूता भरतास्तवैव स्युर्जनैश्चर ॥ १६ ॥ धर्मार्थयोस्तिष्ठ राजन् पाण्डवैरभि-  
 रक्षितः । न हि शक्यास्तथाभूता यद्वादपि नराधिप ॥ १७ ॥ न हि द्वां पाण्डवै-  
 र्जेतुं रक्ष्यमाणं महाश्रुतिः । इन्द्रोऽपि देवैः सहितः प्रसहेत कुतो नृपाः ॥ १८ ॥  
 यत्र भीष्मश्च द्रोणश्च कृपः कर्णो विविंशतिः । अश्वथामा विकर्णश्च सोमदत्तोऽथ  
 बाह्लिकः ॥ १९ ॥ सैक्यश्च कलिङ्गश्च काश्याश्च सुदक्षिणः । युधिष्ठिरो भीम-  
 सेनः सव्यासाची शमो तथा ॥ २० ॥ सात्यकिश्च महातेजा युयुत्सुश्च महारथः । को  
 न्नू तान् विपरीतास्त्रा युध्येत भरतर्षभ ॥ २१ ॥ लोकस्येश्वरतां द्रुपः शत्रूतिश्चा-  
 प्यधृष्यताम् । प्राप्स्यसि द्वमित्रं सहितः कुरूपाण्डवैः ॥ २२ ॥ तस्य ते पृथिवी-  
 पालास्तुसमाः पृथिवीपते । श्रेष्ठांसश्चैव राजानः सक्त्वास्यन्ते परस्तप ॥ २३ ॥  
 न द्वं पुलैश्च पौल्लैश्च पितृभिर्भ्रातृभिस्तथा । सूहृदिः सर्वतो गुप्तः सुध्वं

শক্যসি জীবিতুম্ ॥ ২৪ ॥ এতান্বেব পুরোধায় সৎকৃত্য চ যথা পুরা । অখিলাং  
ভোক্যসে সর্বাং পৃথিবীং পৃথিবীপতে ॥ ২৫ ॥ এতৈর্হি সহিতৈঃ সর্ভৈঃ পাণ্ডবৈঃ  
তৈশ্চ ভারত । অন্যান্ বিজেষ্যসে শত্রূন্ এষ স্বার্থস্তবার্থিনঃ ॥ ২৬ ॥ তৈ-  
রেবোপার্জিতাংভূমিং ভোক্যসে চ পরস্তপ । যদি সম্পৎস্যসে পুত্রৈঃ সহ্যামাট্যে-  
নরাধিপ ॥ ২৭ ॥ সংযুগে বৈ মহারাজ দৃশ্যতে সুমহান্ ক্রযঃ । ক্রযে চোভষতো  
রাজন্ কং ধর্মমনু পশ্যসি ॥ ২৮ ॥ পাণ্ডবৈর্নিতৈঃ সংখ্যে পুত্রৈর্বাপি মহা-  
বলৈঃ । যদ্বিন্দেথাঃ সুখং রাজংস্তদ্বুহি ভরতর্ষভ ॥ ২৯ ॥ শূরাশ্চ হি কৃতাস্ত্রাশ্চ  
সর্বে যুদ্ধাভিজাঙ্কনঃ । পাণ্ডবাস্ত্রাবকাশ্চৈব তানুক্ মহতো ভযাৎ ॥ ৩০ ॥ ন-  
পশ্যেয়ম কুবান্ সর্বাণ্ পাণ্ডবাংশ্চৈব সংযুগে । ক্ষীণানুভষতঃ শূরানুখিনো রথি-  
ভির্হিতান্ ॥ ৩১ ॥ সমবেতাঃ পৃথিব্যাং হি রাজানো রাজসত্তম । অমর্ষবশমা-  
পন্ন্য নাশয়েয়ুরিমাঃ প্রজাঃ ॥ ৩২ ॥ ত্রাহি রাজস্মিনং লোকং ন নশেয়ুরিমাঃ  
প্রজাঃ । ত্বষি প্রকৃতিমাপন্নৈশ্চ শেষঃ স্যাৎ কুরুনন্দন ॥ ৩৩ ॥ শুরু বদান্যা হ্রীমন্ত  
আর্য্যাঃ পুণ্যাভিজাতযাঃ । অন্যান্যসচিবা রাজংস্তান্ পাহি মহতো ভযাৎ ॥ ৩৪ ॥  
শিবেনেমে ভূমিপালঃ সমাগম্য পরস্পরম্ । সহ ভুক্ত্বা চ পীত্বা চ প্রতিযাস্ত  
যথাগৃহম্ ॥ ৩৫ ॥ সুবাসসঃ অগ্নিণশ্চ সৎকৃতা ভরতর্ষভ । অমর্ষঞ্চ নিরাকৃত্য  
বৈরাগি চ পরস্তপ ॥ ৩৬ ॥ হার্দং যৎ পাণ্ডবেষ্ণাসীৎ প্রাপ্তেহস্মিন্নায়ুষঃ ক্রযে ।  
তদেব তে ভবত্বদ্য সন্ধৎস্ব ভরতর্ষভ ॥ ৩৭ ॥ বালা বিহীনাঃ পিত্রা তে ত্বেষেব  
পরিবর্জিতাঃ । তান্ পালয় যথান্যাযং পুত্রাংশ্চ মনুজেশ্বর ॥ ৩৮ ॥ ভবতৈব হি  
রক্ষ্যাস্তে ব্যসনেষু বিশেষতঃ । মা তে ধর্মস্তথৈবার্থো নশেয়ত ভরতর্ষভ ॥ ৩৯ ॥  
আহস্বাং পাণ্ডবা রাজস্ভিবাদ্য প্রসাদ্য চ । ভবতঃ শাসনাদুঃখমনুভূতং সহ্য-  
নুগৈঃ ॥ ৪০ ॥ দ্বাদশেমানি বর্ষাণি বনে নির্বৃষিতানি নঃ । ত্রয়োদশং তথাজ্জাতৈঃ  
সজনে পরিবৎসরম্ ॥ ৪১ ॥ স্মাতা নঃ সমবে তস্মিন্ পিতেতি কৃতনিশ্চযাঃ ।  
নাহান্ম সমযং তাত তচ্চ নো ব্রাহ্মণা বিদুঃ । তস্মিন্নঃ সমবে তিষ্ঠ স্থিতানাং  
ভরতর্ষভ ॥ ৪২ ॥ নিত্যং সংক্লেশিতা রাজন্ স্বরাজ্যাংশং লভেমহি । ত্বং ধর্ম-  
মর্থং সঞ্জানন্ সম্যগুস্মাতুমহসি ॥ ৪৩ ॥ গুরুত্বং ভবতি প্রেক্ষ্য বহূন ক্লেশাং  
স্তিতিন্মহে । স ভবান্মাতৃপিতৃবদস্মাসু প্রতিপদ্যতাম্ ॥ ৪৪ ॥ গুরোগরীযসী রুতির্যা  
চ শিষ্যস্য ভারত । বর্ত্তামহে ত্বষি চ তাং ত্বঞ্চ বর্ত্তস্ব নস্তথা ॥ ৪৫ ॥ পিত্রা স্থাপয়ি-  
তব্যা হি বয়মুৎপথমাস্থিতাঃ । সংস্থাপয় পথিষ্মস্যাংস্তিষ্ঠ ধর্ম্মে স্ববর্ত্তনি ॥ ৪৬ ॥  
আহশ্চেমাং পরিষদং পুত্রাস্তে ভরতর্ষভ । ধর্ম্মজ্ঞেষু সভাসৎসু নেহ যুক্তমসা-

श्रुतम् ॥ ४१ ॥ यत्र धर्मो ह्यधर्मेण सत्यं यत्रानृतेन च । हन्यते प्रेक्षमाणानां  
 हतास्तत्र सभासदः ॥ ४८ ॥ विद्वो धर्मो ह्यधर्मेण सत्तां यत्र प्रपद्यते । न चास्य  
 शल्यं क्लृप्तं विद्वान्त्र सभासदः । धर्म एतानारूजति यथा नद्यन्मुकूलजान् ॥ ४२ ॥  
 ये धर्ममनुपश्यन्तुस्तुक्तीं ध्यायन्तु आसते । ते सत्यमाहर्धर्म्यां न्याय्यं त्र-  
 तर्षत ॥ ५० ॥ शक्यं किमन्यदुक्तं ते दानादन्याज्जनेश्वर । क्रवस्तु वा महीपालाः  
 सत्तायां ये समासते ॥ ५१ ॥ धर्मार्थो संप्रधार्यैव यदि सत्यं त्रवीम्यहम् ।  
 प्रमुक्षेमान् मृत्युपाशां क्लिषान् पुरुषर्षत । प्रशाम्य त्ररतश्चेष्टं मा मम्यव-  
 शमश्चगाः ॥ ५२ ॥ पितृयं तेभ्यः प्रदायांशं पाण्डवेभ्यो यथोचितम् । ततः  
 सपुत्रः सिद्धार्थो दुष्कृ भोगान् परस्तप ॥ ५३ ॥ अजातशत्रुं जानीषे स्थितं  
 धर्मे सत्तां सदा । सपुत्रे द्वयि रत्तिं वर्तते यां नराधिप ॥ ५४ ॥ दाहितश्च  
 निरस्तश्च द्वामेवोपाश्रितः पुनः । इन्द्रप्रभुं द्वैवामो सपुत्रेण विवासि-  
 तः ॥ ५५ ॥ स तत्र निवसन् सर्वान् वशमानीष पार्थिवान् । ह्यनुधानकरोद्राजम्  
 च द्वामत्यवर्तत ॥ ५६ ॥ तस्यैव वर्तमानस्य सौबलेन जिहीर्षता । राक्ष्साणि  
 धनधान्यां प्रयुक्तः परमोपधिः ॥ ५७ ॥ स तामवस्थां संप्राप्य कृष्णां प्रेक्ष्य  
 सतागतम् । क्लृप्तधर्मादमेयात्मा नाकम्पत युधिष्ठिरः ॥ ५८ ॥ अहस्तु तव तेषां  
 श्रेष्ठ इच्छामि तारत । धर्मादर्थां सुखाट्टेव मा राजमीनशः प्रजाः ॥ ५९ ॥  
 अनर्थमर्थं मन्वानोऽप्यर्थं नर्थमाञ्जनः । लोभेऽतिप्रसृतान् पुत्रान् निगृहीष  
 विशाम्पते ॥ ६० ॥ स्थिताः शुक्रवितुं पार्थाः स्थिता योद्धुमरिन्दमाः । यत्ते पथा-  
 तमं राजंस्तन्मिंस्तिष्ठ परस्तप ॥ ६१ ॥ वैशम्पायन उवाच । तद्वाक्यं पार्थिवाः  
 सर्वे हृदयैः समपूजयन् । न तत्र कश्चिद्वक्तुं हि वाचं प्राक्रामदग्रतः ॥ ६२ ॥

इत्युद्योगपर्वणि भगवद्गीतानपर्वणि श्रीकृष्णवाक्ये पञ्च-

वतितमोऽध्यायः ॥ २५ ॥



वैशम्पायन उवाच । तन्मिंस्तिहिते वाक्ये केशवेन महात्मना । स्तिमिता ह्यु-  
 रोमाण आसन् सर्वे सभासदः ॥ १ ॥ कश्चिदुत्तरमेतेषां वक्तुं नोऽसहते पुमान् ।  
 इति सर्वे मनोभिस्ते चिन्तयन्ति स्म पार्थिवाः ॥ २ ॥ तथा तेषु च सर्वेषु तुक्तीं-  
 तेषु राजसु । जानदग्य इदं वाक्यमत्रवीं कुरुसंसदि ॥ ३ ॥ इमां ये सोपमां  
 वाचं शृणु सत्यामशक्तितः । तां श्रद्धा श्रेष्ठ आदत्स्य यदि साधिति मन्यासे ॥ ४ ॥  
 राजा दस्तोस्तुवो नाम सार्वभौमः पुरातवत् । अखिलां बुभुजे सर्वां पृथिवी-

মিত্তি নঃ শ্রুতম্ ॥ ৫ ॥ স স্ম নিত্যং নিশাপাষে প্রাতরুখাষ বীর্যবান্ । ব্রাহ্ম-  
 ণান্ কলিত্যাংশ্চৈব পৃচ্ছমাশ্চ মহারথঃ ॥ ৬ ॥ অস্তি কশ্চিদ্ধিশিষ্টো বা মদ্বিধো  
 বা ভবেদ্বিধি । শূদ্রো বৈশ্যঃ কলিত্যো বা ব্রাহ্মণো বাপি শস্ত্রভৃৎ ॥ ৭ ॥ ইতি  
 ক্রবম্বচরৎ স রাজা পৃথিবীমিমাম্ । দর্পেণ মহতা মত্তঃ কঙ্কিদন্যমচিন্তয়ন্ ॥ ৮ ॥  
 তৎ বৈদ্যা অরূপণা ব্রাহ্মণাঃ সর্বতোহভয়াঃ । প্রত্যবেধন্ত রাজানং শ্লাঘ্যমানং  
 পুনঃ পুনঃ ॥ ৯ ॥ নিবিধ্যমানোহপ্যসকুৎ পৃচ্ছতোবৎ স বৈ দ্বিজান্ । অতিমানং  
 শ্রিয়া মত্তং তমুচুব্রাহ্মণাস্তথা ॥ ১০ ॥ তপস্বিনো মহাত্মানো বেদব্রতসমম্বিতাঃ ।  
 উদীর্যমাণং রাজানং ক্রোধদীপ্তা দ্বিজাতযঃ ॥ ১১ ॥ অনেকজয়িনৌ সংখ্যে  
 যৌ বৈ পুরুষসত্তমৌ । তযোস্ত্বং ন সমো রাজন্ ভবিতাসি কদাচন ॥ ১২ ॥ এবমুক্তঃ  
 স রাজা তু পুনঃ পপ্রচ্ছ তান্ দ্বিজান্ । ক্ব তৌ বীরৌ ক্বজন্মানৌ কিংকর্মাণৌ  
 চ কৌ চ তৌ ॥ ১৩ ॥ ব্রহ্মণা উচুঃ । নরো নারায়ণশ্চৈব তাপসাবিত্তি নঃ শ্রুতম্ ।  
 আঘাতৌ মানুষে লোকে তাভ্যাং যুধ্যস্ব ভারত ॥ ১৪ ॥ ক্বেতে তৌ মহাত্মানৌ  
 নরনারায়ণাবুভৌ । তপো ঘোরমনির্দেশ্যং তপ্যেতে গন্ধমাদনে ॥ ১৫ ॥ স রাজা  
 মহতীং সেনাং যোজয়িত্বা ষডঙ্গিনীম্ । অমৃষ্যমাণঃ সম্প্রাযাম্বত্র তাবপরাজি-  
 তৌ ॥ ১৬ ॥ স গত্বা বিষমং ঘোরং পর্বতং গন্ধমাদনম্ । মৃগযাণোহম্বগচ্ছতৌ  
 তাপসৌ বনমাশ্রিতৌ ॥ ১৭ ॥ তৌ দৃষ্ট্বা ক্ষুৎপিপাসাত্যাং ক্লশৌ ধমনিসস্ততৌ ।  
 শীতবাতাতপৈশ্চৈব কৰ্ষিতৌ পুরুষোত্তমৌ । অভিগম্যোপসংগৃহ পর্যাপৃচ্ছদনা-  
 মষম্ ॥ ১৮ ॥ তমর্চিষ্বা মূলফলৈরাসনেনোদকেন চ । ন্যমন্ত্ৰযেতাং রাজানং কিং-  
 কার্য্যং ক্রিয়তামিত্তি ॥ ১৯ ॥ ততস্তামানুপূর্বাং স পুনরেবাম্বকীর্তয়ৎ । বাহুভ্যাং  
 মে জিতা ভূমির্নিহতাঃ সর্বশত্রবঃ ॥ ২০ ॥ ভবন্ত্যাং যুদ্ধমাকাঙ্ক্ষমপযাতোহস্মি  
 পর্বতম্ । আতিথ্যং দীযতামেতৎ কাঙ্কিতং মে চিরং প্রতি ॥ ২১ ॥ নরনারা-  
 যণাবুচতুঃ । অপেতক্রোধলোভোহযমাশ্রমো রাজসত্তম । ন হস্মিমাশ্রমে যুদ্ধং  
 কুতঃ শস্ত্রং কুতোহনজুঃ । অন্যত্র যুদ্ধমাকাঙ্ক্ষু বহবঃ কলিত্যাঃ ক্ষিতৌ ॥ ২২ ॥ রাম  
 উবাচ । উচ্যমানস্তথাপি স্ম ভূষ এবাভ্যভাষত । পুনঃ পুনঃ ক্লাম্যমাণঃ সাস্ত্র্য-  
 মানশ্চ ভারত । দস্তোদ্ভবো যুদ্ধমিচ্ছমাশ্রমত্যেব তাপসৌ ॥ ২৩ ॥ ততো নর-  
 স্ত্বীকাণাং মুক্তিমাদায় ভারত । অত্রবীদেহি যুধ্যস্ব যুদ্ধকামুক কলিত্য ॥ ২৪ ॥  
 সর্বশস্ত্রাণি চাঙ্গুস্ব যোজয়স্ব চ বাহিনীম্ । অহং হি তে বিনেষ্যামি যুদ্ধশ্রদ্ধামিতঃ  
 পরম্ ॥ ২৫ ॥ দস্তোদ্ভব উবাচ । যদ্যেতদস্ত্রমস্মাসু যুক্তং তাপস মন্যসে । এতে-  
 নাপি ত্বয়া যোৎস্যে যুদ্ধার্থী হহমাগতঃ ॥ ২৬ ॥ রাম উবাচ । ইত্যুক্ত্বা শরবর্ষণ

सर्वतः समवाकिरन् । दन्तोद्धवस्तपसं तं जिघांसुः सहसैनिकः ॥ २१ ॥ तस्य  
 तानस्यतो घोरानिभून् परतमृच्छिदः । कदर्शीकृत्य स मुनिरीषीकाभिः समार्प-  
 यन् ॥ २८ ॥ ततोऽस्मै प्रासजन्म्वारमैवीकमपराजितः । अस्त्रमप्रतिसङ्क्षेपं  
 तदद्भुतमिवाभवत् ॥ २२ ॥ तेषामक्षीणि कर्णांश्च नासिकांश्चैव माषया । निमित्त-  
 वेधी स मुनिरीषीकाभिः समार्पयन् ॥ ३० ॥ स दृष्ट्वा श्वेतमाकाशमीषीकाभिः  
 समाहितम् । पादयोर्न्यपतद्राजा स्वस्ति मेऽस्त्विति चाब्रवीत् ॥ ३१ ॥ तमब्रवीन्नरो  
 राजङ्गरण्यः शरणैषिणाम् । ब्रूयन्ते । तव धर्मात्मा मा च त्स्मैव पुनः क्रुथाः ॥ ३२ ॥  
 नैतादृक् पुरुषो राजन् क्लृप्तधर्ममनुस्मरन् । मनसा नृपशादूर्ल भवत्यरिपुरङ्गमः ॥ ३३ ॥  
 ना च दर्पसमाविष्टः फेप्सीः कांश्चित् कदाचन । अस्त्रीयांसं विशिक्तं वा तत्ते  
 राजन् समाहितम् ॥ ३४ ॥ कृतप्रज्ज्ञो वीतलोभो निरहंकार आत्मानम् । दास्यः  
 क्वास्तो मृदुः सौम्यः प्रजाः पालय पार्थिव । मा स्म भूयः क्षिपेः कश्चिदविदिद्वा  
 बलाबलम् ॥ ३५ ॥ अनुज्ज्ञातः स्वस्ति गच्छ मैव भूयः समाचरेः । कुशलं ब्राह्मणान्  
 पुच्छेरावयोर्षचनाद्धृशम् ॥ ३६ ॥ राम उवाच । ततो राजा तयोः पादावतिवाद्य  
 महात्मनोः । प्रत्याजगाम स्वपुरं धर्मक्षेत्राचरद्धृशम् ॥ ३७ ॥ सुमहत्तापि तं  
 कर्म यन्नरेण कृतं पुरा । ततो गुणैः सुवह्निभिः श्रेष्ठो नारायणोऽभवत् ॥ ३८ ॥  
 तस्माद्वावक्नुःश्रेष्ठे गाण्डीवेऽस्त्रं न युज्यते । तावद्भ्यं मानमुत्सृज्य गच्छ राजन्  
 धनङ्गमम् ॥ ३९ ॥ काकुदीकं शुक्रं नाकमक्सिस्तुङ्गनं तथा । सस्तानं नर्तकं  
 घोरमास्यनोदकमर्कमम् ॥ ४० ॥ एतैर्बिद्धाः सर्वेऽव मरणं यास्ति मानवाः । उग्र-  
 त्वाश्च विचेष्टन्ते नर्कसंज्ञा विचेतसः ॥ ४१ ॥ स्वपस्ति च प्लवन्ते च हृद्दयस्ति च  
 नानवाः । मूत्रयन्ते च सततं रुदन्ति च हसन्ति च ॥ ४२ ॥ निर्माता सर्वलोकाना-  
 मीश्वरः सर्वकर्मवित् । यस्य नारायणो बह्मरज्जूनो दुःसहो युधि ॥ ४३ ॥ कस्तमुत्-  
 सहते जेतुं त्रिषु लोकेषु भारत । वीरं कपिध्वजं जिष्णुं यस्य नास्ति समो  
 युधि ॥ ४४ ॥ असंख्येषां गुणाः पार्थे तद्विशिष्टे । जनार्दनः । त्वमेव भूयो जानासि  
 कुन्तीपुत्रं धनङ्गमम् ॥ ४५ ॥ नरनारायणो यो तौ तावेवाज्जूनकेशवौ । विजानीहि  
 महाराज प्रवीरौ पुरुषवर्तौ ॥ ४६ ॥ यद्येतदेवं जानासि न च मामभिषङ्गसे ।  
 आर्यामतिं समाहाय शम्य भारत पाण्डवैः ॥ ४७ ॥ अथ चेन्नन्यसे श्रेयो न मे  
 भेदो भवेदिति । प्रशम्य भरतश्रेष्ठ मा च युद्धे मनः क्रुथाः ॥ ४८ ॥ तवतां कुरु-  
 श्रेष्ठ कुलं बहुमतं भुवि । तत्रैवास्तु भद्रन्ते स्वार्थमेवोपचिन्तय ॥ ४९ ॥

इत्युद्धोगपर्वणि भगवद्वाणपर्वणि जामदग्न्यावाक्ये षष्ठवतितमोऽध्यायः ॥ २७ ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ । জামদগ্ন্যবচঃ শ্রদ্ধা কণোহপি ভগবানৃষিঃ । দূর্যোধনমিদং  
 বাক্যমব্রবীৎ কুরুসংসদি ॥১১॥ কণু উবাচ ॥ অক্ষয়শ্চাব্যযশ্চৈব ব্রহ্মা লোকপিতা-  
 মহঃ । তথৈব 'ভগবন্তৌ তৌ নরনারায়ণারুণী ॥ ২ ॥ আদিত্যানাং হি সর্বেষাং  
 বিষ্ণুরেকঃ সনাতনঃ । অজয়শ্চাব্যযশ্চৈব শাশ্বতঃ প্রভুরীশ্বরঃ ॥ ৩ ॥ নিমিত্ত-  
 মরণাশ্চান্যে চন্দ্রসূর্য্যৌ মহী জলম্ । বায়ুরগ্নিস্তথাকাশং গ্রহাস্তারাগণাস্তথা ॥৪॥  
 তে চ ক্ষযান্তে জগতো হিহা লোকত্রয়ং সদা । ক্ষয়ং গচ্ছন্তি বৈ সর্বে সৃজ্যন্তে চ  
 পুনঃপুনঃ ॥৫॥ মুহূর্ত্তমরণান্ত্বন্যে মানুষা মৃগপক্ষিণঃ । তৈর্যাগ্যোন্যাশ্চ যে চান্যে  
 জীবলোকচরাস্তথা ॥ ৬ ॥ ভূয়িষ্ঠেন তু রাজানঃ শ্রিয়ং ভুক্ত্বায়ুষঃ ক্ষয়ে । তরুণঃ  
 প্রতিপদ্যন্তে ভোক্তুং স্কৃত্তদুষ্কৃতে ॥৭॥ স ভবান্ ধর্ম্মপুল্লেণ শমং কর্ত্তুমিহাহতি ।  
 পাণ্ডবাঃ কুরবশ্চৈব পালযন্ত বসুক্করাম্ ॥ ৮ ॥ বলবানহমিত্যেব ন মন্তব্যং সুযো-  
 ধন । বলবন্তো বলিভ্যো হি দৃশ্যন্তে পুরুষর্ষভ ॥৯॥ ন বলং বলিনাং মধ্যে বলং  
 ভবতি কৌরব । বলবন্তো হি তে সর্বে পাণ্ডবা দেববিক্রমাঃ ॥ ১০ ॥ তত্রাপ্যদা-  
 হরস্তীমমিতিহাসং পুরাতনম্ । মাতলের্দাতুকামস্য কন্যাং মৃগযতো বরম্ ॥ ১১ ॥  
 মর্ত্তস্ত্রিলোকরাজস্য মাতর্লির্নাম সারথিঃ । তস্মৈতৈকৈব কুলে কন্যা রূপতো লোক-  
 বিশ্রুতা ॥ ১২ ॥ গুণকেশীতি বিখ্যাতা নাম্না সা দেবকপিণী । শ্রিযা চ বপুষা  
 চৈব স্ত্রিয়োহন্যাঃ সাতিরিচ্যতে ॥ ১৩ ॥ তস্যাঃ প্রদানসময়ং মাতলিঃ সহ  
 ভার্য্যাযা । জ্ঞাত্বা বিমমৃষে রাজন্ তৎপরঃ পরিচিস্ত্বযন্ ॥ ১৪ ॥ ধিক্ খলুলঘুশী-  
 লানাযুচ্ছিতানাং যশস্বিনাম্ । নরাণাং মৃদুসজ্জানাং কুলে কন্যাপ্ররোহণম্ ॥১৫॥  
 মাতুঃ কুলং পিতৃকুলং যত্র চৈব প্রদীয়তে । কুলত্রয়ং সংশযিতং কুরুতে কন্যকা  
 মতাম্ ॥ ১৬ ॥ দেবমানুষলোকৌ দ্বৌ মানসেনৈব চক্ষুষা । অবগাঠৈব বিচিতৌ  
 ন চ মে রোচতে বরঃ ॥ ১৭ ॥ কণু উবাচ । ন দেবাত্মৈব দিতিজাম্ গন্ধর্ব্বাম  
 মানুযান্ । অরোচযদ্বরকৃতে তথৈব বহ্লানৃষীন্ ॥ ১৮ ॥ ভার্য্যাযা তু স সংমজ্জ্য  
 সহ রাত্রৌ সুধর্ম্মযা । মাতলির্নাগলোকাষ চকার গমনে মতিম্ ॥ ১৯ ॥ ন মে  
 দেবমানুষ্যেষু গুণকেশ্যাঃ সমো বরঃ । রূপতো দৃশ্যতে কশ্চিমাগেষু ভবিতা  
 ধ্রুবম্ ॥ ২০ ॥ ইত্যামস্ত্য সুধর্ম্মাং স কৃদ্ধা চাতিপ্রদক্ষিণম্ । কন্যাং শিরসু্যপা-  
 শ্রায প্রবিবেশ মহীতলম্ ॥ ২১ ॥

ইত্যাড্যোগপর্ব্বণি ভগবদ্দ্যানপর্ব্বণি মাতলীযোপাখ্যানেন সপ্তনবতি-

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৭ ॥

কণু উবাচ । মাতলিস্তু ব্রহ্ম্মার্গে নারদেন মহর্ষিণা । বরুণং গচ্ছতা দ্রুতং  
সমাগচ্ছদ্বদৃচ্ছয়া ॥ ১ ॥ নারদোহথাব্রবীদেনং ক ভবান্ গন্তুমুদ্যতঃ । ০ স্বেন  
বা সূত কার্যেণ শাসনাদ্বা শতক্রতোঃ ॥ ২ ॥ মাতলিনারদেনৈবং সংপৃষ্ঠঃ পথি  
গচ্ছতা । যথাবৎ সর্বমাচর্চ স্বকার্যং বরুণং প্রতি ॥ ৩ ॥ তমুবাচাত্ম স মুনির্গ-  
চ্ছাব সহিতাবিতি । সলিলেশদিদৃক্ষার্থমহমপ্যুদ্যতো দিবঃ ॥ ৪ ॥ অহস্তে সর্ব-  
মাখ্যাস্যে দর্শয়ন্ বসুধাতলম্ । দৃষ্ট্বা তত্র বরং কঞ্চিদ্রোচযিষ্যাব মাতলে ॥ ৫ ॥  
অবগাহ ততো ভূমিমুভৌ মাতলিনারদৌ । দৃশ্যতে মহাত্মানৌ লোকপালম-  
পাম্পতিম্ ॥ ৬ ॥ তত্র দেবর্ষিসদৃশীং পূজাং প্রাপ স নারদঃ । মহেন্দ্রসদৃশী-  
শ্চৈব মাতলিঃ প্রত্যপদ্যত ॥ ৭ ॥ তাবুভৌ প্রীতমনসৌ কার্যবন্তৌ নিবেদ্য হ ।  
বরুণেনাত্যনুজ্ঞাতৌ নাগলোকং বিচেরতুঃ ॥ ৮ ॥ নারদঃ সর্বভূতানামন্তুভূমি-  
নিবাসিনাম্ । জানংশ্চকার ব্যাখ্যানং যন্তুঃ সর্বমশেষতঃ ॥ ৯ ॥ নারদ উবাচ ।  
দ্রুতেন্তে বরুণঃ সূত পুত্রপৌত্রসমারতঃ । পশ্যাদকপতেঃ স্থানং সর্বতোভদ্রমৃদ্ধি-  
নং ॥ ১০ ॥ এষ পুত্রো মহাপ্রাঞ্ছো বরুণস্যেহ গোপতেঃ । এষ বৈ শীলবৃন্তেন  
শৌচেন চ বিশিষ্যতে ॥ ১১ ॥ এষোহস্য পুত্রোহতিমতঃ পুঙ্করঃ পুঙ্করেক্ষণঃ ।  
কপবান্দর্শনীযশ্চ সোমপুত্র্যা রতঃ পতিঃ ॥ ১২ ॥ জ্যেৎস্নাকালীতি যামাহুদ্বি-  
তীয়াং কপতঃ শ্রিয়ম্ । অদিত্যাশ্চৈব যঃ পুত্রো জ্যেষ্ঠঃ শ্রেষ্ঠঃ কৃতঃ স্মৃতঃ ॥ ১৩ ॥  
ভবনং পশ্য বারুণ্যং যদেতৎ সর্বকাঞ্চনম্ । যৎ প্রাপ্য সুরতাং প্রাপ্তাঃ সুরাঃ  
সুরপতেঃ সখে ॥ ১৪ ॥ এতানি হুতরাজ্যানাং দৈতেযানাং স্ম মাতলে । দীপ্যমা-  
নানি দৃশ্যন্তে সর্বপ্রহরণান্মৃত ॥ ১৫ ॥ অক্ষয়ানি কিলৈতানি বিবর্তন্তে স্ম মাতলে ।  
অনুভাবপ্রযুক্তানি সুরৈরবজিতানি হ ॥ ১৬ ॥ অত্র রাক্ষসজাত্যশ্চ ভূতজাত্যশ্চ  
মাতলে । দিব্যপ্রহরণাশ্চাসন্ সর্বদৈবতনির্জিতাঃ ॥ ১৭ ॥ অগ্নিরেব মহার্চি-  
স্মান্ জাগর্তি বারুণে হুদে । বৈষ্ণবং চক্রমাবিদ্ধং বিধূমেন হবিষ্মতা ॥ ১৮ ॥ এষ  
গাণ্ডীমষশ্চাপো লোকসংহারসম্বৃতঃ । রক্ষ্যতে দৈবতৈর্নিত্যং যতস্তদগাণ্ডিবং  
ধনুঃ ॥ ১৯ ॥ এষ কৃত্যে সমুৎপন্নে তত্তদ্বারযতে বলম্ । সহস্রশতসংখ্যেন প্রা-  
ণেন সততং ধ্রুবঃ ॥ ২০ ॥ অশাস্যানপি শাস্ত্যেষ রক্ষাবক্ষুষু রাজসু । সৃষ্টঃ  
প্রথমতশ্চণ্ডো ব্রহ্মণা ব্রহ্মবাদিনা ॥ ২১ ॥ এতচ্ছত্রং নরেন্দ্রাণাং মহচ্ছক্রেণ ভা-  
ষিতম্ । পুত্রাঃ সলিলরাজস্য ধারযন্তি মহোদযম্ ॥ ২২ ॥ এতৎ সলিলরাজস্য  
ছত্রং ছত্রগৃহে স্থিতম্ । সর্বতঃ সলিলং শীতং জীমূত ইব বর্ষতি ॥ ২৩ ॥ এতচ্ছ-  
ত্রাৎ সলিলং সলিলং সোমনির্মলম্ । তমসা মুচ্ছিতং ভাতি যেন নাচ্ছতি দর্শ-

নম্ ॥ ২৪ ॥ বহুন্যদ্ভুতকপাণি দ্রুমব্যানীহ মাতলে । তব কার্ষ্যোপরোধস্তু তস্মা-  
দাচ্ছাব মার্চিরম্ ॥ ২৫ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্গানপর্বণি মাতলীযোপাখ্যানেন অষ্টনবতি-

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৯৮ ॥



নারদ উবাচ । এতত্তু নাগলোকস্য নাভিস্থানে স্থিতং পুরম্ । পাতালমিতি  
বিখ্যাতং দৈত্যদানবসেবিতম্ ॥ ১ ॥ ইদমন্ডিঃ সমং প্রাপ্তা যে কেচিদ্ধুবজঙ্গমাঃ ।  
প্রবিশন্তো মহানাদং নদন্তি ভষপীড়িতাঃ ॥ ২ ॥ অত্রাসুরোহগ্নিঃ সততং দীপ্য-  
তে বারিভোজনঃ । ব্যাপারেণ ধূতান্নানং নিবন্ধং সমবুধ্যত ॥ ৩ ॥ অত্রামৃতং  
সুরৈঃ পীত্বা নিহিতং নিহতারিভিঃ । অতঃ সোমস্য হানিশ্চ রুদ্ধিশ্চৈব প্রদৃশ্য-  
তে ॥ ৪ ॥ অত্রাদিত্যো হৃষশিরাঃ কালে পর্বণি পর্বণি । উত্তিষ্ঠতি সুবর্ণাখ্যং  
বাণ্ডিরাপূরযন্ জগৎ ॥ ৫ ॥ যস্মাদত্র সমগ্রাস্তাঃ পতন্তি জলমূর্তয়ঃ । তস্মাৎ  
পাতালমিতোবং খ্যায়তে পুরমুত্তমম্ ॥ ৬ ॥ ঐরাবণোহস্মাৎ সলিলং গৃহীত্বা  
জগতো হিতঃ । মেঘেষামুঞ্চতে শীতং যন্মহেন্দ্রঃ প্রবর্ষতি ॥ ৭ ॥ অত্র নানাবিধা-  
কারাস্তিমযো নৈককপিণঃ । অস্পৃসোমপ্রভাং পীত্বা বসন্তি জলচারিণঃ ॥ ৮ ॥  
অত্র সূর্যাং শুভিভিন্নাঃ পাতালতলমাশ্রিতাঃ । মৃতা দিবসতঃ সূত পুনর্জীবন্তি  
বৈ নিশি ॥ ৯ ॥ উদযম্নিত্যশশচাত্র চন্দ্রমা রশ্মিবাহুভিঃ । অমৃতং স্পৃশ্য সংস্প-  
র্শাৎ সংজীবয়তি দেহিনঃ ॥ ১০ ॥ অত্র তে ধর্ম্মনিরতা বন্ধাঃ কালেন পীড়িতাঃ ।  
দৈতেযা নিবসন্তি স্ম বাসবেন হৃতশ্রিয়ঃ ॥ ১১ ॥ অত্র ভূতপতির্নাম সর্বভূতমহে-  
শ্বরঃ । ভূতযে সর্বভূতানামচরত্বেপ উত্তমম্ ॥ ১২ ॥ অত্র গোব্রতিনো বিপ্রাঃ স্বাধ্যা-  
য়ান্নাষকর্ষিতাঃ । ত্যক্তপ্রাণা জিতস্বর্গা নিবসন্তি মহর্ষষঃ ॥ ১৩ ॥ যত্র তত্র শযো  
নিত্যং যেন কেনচিদাশিতঃ । যেন কেন চিদাচ্ছন্নঃ স গোব্রত ইহোচ্যতে ॥ ১৪ ॥  
ঐরাবণো নাগরাজো বামনঃ কুমুদোহঞ্জনঃ । প্রসূতাঃ সুপ্রতীকস্য বংশে বারণ-  
সত্তমাঃ ॥ ১৫ ॥ পশ্য যদ্যত্র তে কশ্চিদ্রোচতে গুণতো বরঃ । বরযিস্যামি তং  
গত্বা যত্নমাস্থায় মাতলে ॥ ১৬ ॥ অণুমেতজ্জলে ন্যস্তং দীপ্যমানমিব শ্রিয়া ।  
আপ্রজানাং নিসর্গাঈছ নোন্দ্ভিদ্যতি ন সর্পতি ॥ ১৭ ॥ নাস্য জাতিং নিসর্গং বা  
কথ্যমানং শৃণোমি বৈ । পিতরং মাতরং বাপি নাস্য জানাতি কশ্চন ॥ ১৮ ॥  
অতঃ কিল মহানগ্নিরন্তুকালে সমুখিতঃ । ধক্ষ্যতে মাতলে সর্বং ত্রৈলোকাং সচরা-



चरम् ॥ १२ ॥ मातलिङ्गुर्वी७ श्रद्धा नारदस्याथ भाषितम् । न मेहञ्च रोचते  
कश्चिदन्यतो ब्रह्म माचिरम् ॥ २० ॥

इत्युद्घोषपर्वणि भगवद्भानपर्वणि मातलीषोपाख्याने नवनवति-

तमोऽध्यायः ॥ २२ ॥



नारद उवाच । हिरण्यपुरमित्येतत् ख्यातं पुरवरं महत् । दैत्यानां दानवा-  
नां मायाशतविचारिणाम् ॥ १ ॥ अनलेन प्रयत्नेन निर्मितं विश्वकर्मा । मयेन  
मनसा सृष्टं पातालतलमाश्रितम् ॥ २ ॥ अत्र मायासहस्राणि विकूर्वाणा महो-  
जसः । दानवा निवसन्ति स्म शूरा दत्तवराः पुरा ॥ ३ ॥ नैते शक्रेण नान्येन  
यमेन वरुणेन वा । शक्येभ्ये वशमानेतुं तथैव धनदेन च ॥ ४ ॥ असुराः काल-  
कङ्गाश्च तथा विष्णुपदोद्भवाः । नैर्ऋता यातुधानाश्च ब्रह्मपादोद्भवाश्च ये ॥ ५ ॥  
दंष्ट्रिणो भीमवेगाश्च वातवेगपराक्रमाः । मायावीर्येणामसम्पन्ना निवसन्त्यत्र मात-  
ले ॥ ६ ॥ निवातकवचा नाम दानवा युद्धदुर्मदाः । जानासि च यथा शक्रे नैतान्  
शक्रेति बाधितुम् ॥ ७ ॥ बहुशो मातले द्वेषं तव पुत्रश्च गोमुखः । निर्भ्रगो  
देवराजश्च सहपुत्रः शचीपतिः ॥ ८ ॥ पश्य वेश्मानि रौद्राणि मातले राज-  
तानि च । कर्माणि विधियुक्तेन युक्तान्यपगतानि च ॥ ९ ॥ वैदूर्यमणिचित्राणि  
प्रवालरुचिराणि च । अर्कस्फटिकशुभ्राणि वज्रसारोज्ज्वलानि च ॥ १० ॥ पार्थिवा-  
नीव चातास्ति पद्मरागमयानि च । शैलानीव च दृश्यन्ते दारवाणीव चाप्युत ॥ ११ ॥  
सूर्यरूपाणि चातास्ति दीप्ताग्निमृशानि च । मणिजालविचित्राणि प्रांशूनि निवि-  
डानि च ॥ १२ ॥ नैतानि शक्यं निर्देष्टुं रूपतो द्रव्यतस्तथा । गुणतश्चैव  
सिद्धानि प्रमाणगुणवन्ति च ॥ १३ ॥ आक्रीडान् पश्य दैत्यानां तथैव शयना-  
न्युत । रत्नवन्ति महार्हाणि भाजनान्यासनानि च ॥ १४ ॥ जलदाभास्तथा शैलां  
स्तोषप्रश्रवणानि च । कामपुष्पफलांश्चापि पादपान् कामचारिणः ॥ १५ ॥ मातले  
कश्चिदत्रापि कूचितस्ते वरो भवेत् । अथ चान्यां दिशं भ्रुमेर्गच्छाव यदि मन्य-  
से ॥ १६ ॥ मातलिङ्गुर्वीदेनं भाषमाणं तथाविधम् । देवर्षे नैव मे कार्यं  
विप्रियं त्रिदिवोकसाम् ॥ १७ ॥ नित्यान्नुषक्तवैरा हि भ्रातरो देवदानवाः ।  
परपक्षेण सम्यक् रोचयिष्याम्यहं कथम् ॥ १८ ॥ अन्यत्र साधु गच्छाव द्रष्टुं  
नार्हामि दानवान् । जानामि तव चात्मानं हिंसात्प्रकमलस्तथा ॥ १९ ॥

इत्युद्घोषपर्वणि भगवद्भानपर्वणि मातलीषोपाख्याने शततमोऽध्यायः ॥१००॥

নারদ উবাচ । অষং লোকঃ সুপর্ণানাং পক্ষিণাং পন্নগাশিনাম্ । বিক্রমে গমনে  
 ভারে নৈষামস্তি পরিশ্রমঃ ॥ ১ ॥ বৈনতেযসুতৈঃ সূত ষড্ভিস্ততমিদং কুলম্ ।  
 সুমুখেণ সুনাম্না চ সুনৈত্রেণ সুবর্চসা ॥ ২ ॥ সুরুচা পক্ষিরাজেন সুবলেণ চ  
 মাতলে । বর্দ্ধিতানি প্রসৃত্যা বৈ বিনভাকুলকর্তৃভিঃ ॥ ৩ ॥ পক্ষিরাজাতিজা-  
 ত্যানাং সহস্রাণি শতানি চ । কশ্যপস্য ততো বংশে জাতৈর্ভূতিবিবর্দ্ধনৈঃ ॥ ৪ ॥  
 সর্বে হেতে শ্রিয়া যুক্তাঃ সর্বে শ্রীবৎসলক্ষণাঃ । সর্বে শ্রিয়মভীপ্সন্তো ধারযন্তি  
 বলানু্যত ॥ ৫ ॥ কৰ্ম্মণা কল্লিষাশ্চৈতে নিঘর্ষণা ভোগিভোজিনঃ । জ্ঞাতিসংক্ষয়-  
 কর্তৃহ্মাং ব্রাহ্মণ্যং ন লভন্তি বৈ ॥ ৬ ॥ নামমুনি চৈষাং বক্ষ্যামি যথা প্রাধান্যতঃ  
 শৃণু । মাতলে শ্লাঘ্যমেতন্নি কুলং বিষ্ণুপরিগ্রহম্ ॥ ৭ ॥ দৈবতং বিষ্ণুরেতেষাং  
 বিষ্ণুরেব পরাধনম্ । হৃদি চৈষাং সদা বিষ্ণুর্বিষ্ণুরেব সদা গতিঃ ॥ ৮ ॥ সুবর্ণচূড়ো  
 নাগাশী দারুণশচণ্ডতুণ্ডকঃ । অনিলশচানলশ্চৈব বিশালাক্ষোহথ কুণ্ডলী ॥ ৯ ॥  
 পঙ্কজিদ্বজ্রনিষ্কন্তো বৈনতেযোহথ বামনঃ । বাতবেগো দিশাচক্ষুর্নিমিষোহনি-  
 মিষস্তথা ॥ ১০ ॥ ত্রিবারঃ সপ্তবারশচ বায়ীকির্দীপকস্তথা । দৈত্যদ্বীপঃ সরি-  
 দ্বীপঃ সারসঃ পদ্মকেতনঃ ॥ ১১ ॥ সুমুখশ্চিত্রকেতুশ্চ চিত্রবহস্তথানঘঃ । মেঘহুৎ  
 কুমুদো দক্ষঃ সর্পান্তঃ সোমভোজনঃ ॥ ১২ ॥ গুরুভারঃ কপোতশ্চ সূর্য্যনেত্রশ্চি-  
 রান্তকঃ । বিষ্ণুধর্ম্মা কুমারশ্চ পরিবহো হরিস্তথা ॥ ১৩ ॥ সুস্বরো মধুপর্কশ্চ  
 হেমবর্ণস্তথৈব চ । মলযো মাতরিশ্বা চ নিশাকরদিবাকরৌ ॥ ১৪ ॥ এতে প্রদেশ-  
 মাত্রেণ মযোক্তা গরুডাভ্রজাঃ । প্রাধান্যতস্তে যশসা কীর্তিতাঃ প্রাণিনশ্চ যে ॥ ১৫ ॥  
 যদ্যত্র ন রুচিঃ কাচিদেহি গচ্ছাব মাতলে । তং নঘিষ্যামি দেশং হ্মাং বরং যত্রো-  
 পলপ্যাসে ॥ ১৬ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্দ্যানপর্বণি মাতলীষোপাখ্যানেন একাধিক-

শততমোঃধ্যায়ঃ ॥ ১০১ ॥

—•••—

নারদ উবাচ । ইদং রসাতলং নাম সপ্তমং পৃথিবীতলম্ । যত্রাস্তে সুরভি-  
 র্নাতা গবামমৃতসন্তবা ॥ ১ ॥ রক্ষন্তী সততং ক্ষীরং পৃথিবীসারসন্তবম্ । ষণ্ণাঃ  
 রসানাং সারেণ রসমেকমনুভ্রমম্ ॥ ২ ॥ অমৃতেনাভিতৃপ্তস্য সারমুর্দিগরতঃ পুরা ।  
 পিতামহস্য বদনাদুদতিষ্ঠদনিন্দিতা ॥ ৩ ॥ যস্যঃ ক্ষীরস্য ধারায়া নিপতন্ত্যা  
 মহীতলে । হৃদঃ ক্রুতঃ ক্ষীরনিধিঃ পবিত্রং পরমুচ্যতে ॥ ৪ ॥ পুষ্পিতস্যেব ফে-  
 নেন পর্য্যন্তমনুবেক্ষিতম্ । পিবন্তো নিবসন্ত্যত্র ফেনপা মুনিসত্তমাঃ ॥ ৫ ॥ ফে-

নপা নাম তে খ্যাতাঃ ফেনাহারাশ্চ মাতলে । উগ্রে তপসি বর্তন্তে যেষাং বিভ্যতি  
 দেবতাঃ ॥ ৬ ॥ অস্যাশ্চতশ্চো ধেম্বোহন্যা দিক্ণু সর্বাশু মাতলে । নিবসন্তি  
 দিশাং পাল্যো ধারযন্ত্যো দিশঃ স্মৃতাঃ ॥ ৭ ॥ পূর্বাং দিশং ধারযতে সুকপা নাম  
 সৌরভী । দক্ষিণাং হংসিকা নাম ধারযত্যপরাং দিশম্ ॥ ৮ ॥ পশ্চিমা বারুণী  
 দিক্চ ধার্যতে বৈ সুভদ্রয়া । মহানুভাবযা নিত্যং মাতলে বিশ্বকপযা ॥ ৯ ॥  
 সর্ষকামদুঘা নাম ধেমুর্ধারযতে দিশম্ । উত্তরাং মাতলে ধর্ম্যাং তথৈলবিলসং-  
 জিতাম্ ॥ ১০ ॥ আসান্ত পযসা মিশ্রং পযো নির্মথ্য সাগরে । মহানং মন্দরং  
 কৃত্বা দেবৈরসুরসংহিতৈঃ ॥ ১১ ॥ উক্তা বারুণী লক্ষ্মীরমৃতঞ্চাপি মাতলে । উচ্চৈঃ  
 শ্রবাশ্চাশ্বরাজো মণিরত্নঞ্চ কৌস্তভম্ ॥ ১২ ॥ সুধাহারেষু চ সুধাং স্বধাতো-  
 জিষু চ স্বধাম্ । অমৃতঞ্চামৃতশেষু সুরভী-রক্ষতে পযঃ ॥ ১৩ ॥ অত্র গাথা পুরা  
 গীতা রসাতলনিবাসিভিঃ । পৌরাণী শ্রযতে লোকে গীযতে যা মনীষিভিঃ ॥ ১৪ ॥  
 ন নাগলোকে ন স্বর্গে ন বিমানে ত্রিপিষ্ঠপে । পরিবাসঃ সুখস্তাদ্গ্ৰসাতলতলে  
 যথা ॥ ১৫ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্গানপর্বণি মাতলীযোপাখ্যানেন

দ্ব্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১০২ ॥



নারদ উবাচ । ইযং ভোগবতী নাম পুরী বাসুকিপালিতা । ষাদৃশী দেবরা-  
 জস্য পুরী বর্য্যামরাবতী ॥ ১ ॥ এষ শেষঃ স্থিতো নাগো যেনেযং ধার্যতে সদা ।  
 তপসা লোকমুখ্যেন প্রভাবমহিতা মহী ॥ ২ ॥ শ্বেতাচলনিভাকারো দিব্যাভ-  
 রণভূষিতঃ । সহস্রং ধারযন্নূক্কাং জ্বালাজিহ্বো মহাবলঃ ॥ ৩ ॥ ইহ নানাবিধা-  
 কারা নানাবিধবিভূষণাঃ । সুরমায়াঃ সূতা নাগা নিবসন্তি গতব্যথাঃ ॥ ৪ ॥ মণি-  
 স্বস্তিকচক্রাঙ্গাঃ কমণ্ডলুকলঙ্কণাঃ । সহস্রসংখ্যা বলিনঃ সর্বে রৌদ্রাঃ স্বভা-  
 বতঃ ॥ ৫ ॥ সহস্রশিরসঃ কেচিৎ কেচিৎ পঞ্চশতাননাঃ । শতশীর্ষাস্তথা কেচিৎ  
 কেচিত্রিশিরসোহপি চ ॥ ৬ ॥ দ্বিপঞ্চশিরসঃ কেচিৎ কেচিৎ সপ্তমুখাস্তথা । মহা-  
 ভোগা মহাকাষাঃ পর্বতাভোগভোগিনঃ ॥ ৭ ॥ বহুনীহ সহস্রাণি প্রযুতান্যর্ষুদা-  
 নি চ । নাগানামেকবংশ্যানাং যথাশ্রেষ্ঠস্ত মে শৃণু ॥ ৮ ॥ বাসুকিস্তক্ষকশ্চৈব  
 কর্কোটকধনঞ্জয়ো । কালিযো নহ্ষশ্চৈব কয়লাশ্বতরাবুভৌ ॥ ৯ ॥ বাহুকুণ্ডো  
 মণিনাগস্তথৈবাপূরণঃ খগঃ । বামনশ্চৈলপত্রশ্চ কুকুরঃ কুকুণস্তথা ॥ ১০ ॥ আ-  
 র্য্যকো নন্দকশ্চৈব তথা কলশপোতকৌ । কৈলাসকঃ পিঞ্জরকো নাগশ্চৈরাবত-

স্তথা ॥ ১১ ॥ সুমনোমুখো দধিমুখঃ শশ্বেণা নন্দোপনন্দকৌ । আপ্তঃ কোটরক-  
 শ্চৈব শিখী নিষ্ঠুরকস্তথা ॥ ১২ ॥ তিত্তিরিহস্তিভদ্রশ্চ কুমুদো মাল্যপিপ্তকঃ ।  
 দ্বৌ পদ্বৌ পুণ্ডরীকশ্চ পুষ্পো মুদারপর্ণকঃ ॥ ১৩ ॥ করবীরঃ পিঠরকঃ সংরভো  
 রন্ত এব চ । পিণ্ডারো বিল্বপত্রশ্চ মুষিকাদঃ শিরীষকঃ ॥ ১৪ ॥ দিলীপঃ শঙ্খ-  
 শীর্ষশ্চ জ্যোতিষ্কোহথাপরাজিতঃ । কোরব্যো ধৃতরাষ্ট্রশ্চ কুহরঃ ক্লশক-  
 স্তথা ॥ ১৫ ॥ বিরজা ধারণশ্চৈব সুবাহুমুখরো জয়ঃ । বধিরাক্ষৌ বিশুণ্ডিশ্চ  
 বিরসঃ সুরসস্তথা ॥ ১৬ ॥ এতে চান্যে চ বহবঃ কশ্যপস্যাত্মজাঃ স্মৃতাঃ । মাতলে  
 পশ্য যদ্যত্র কশ্চিত্তে রোচতে বরঃ ॥ ১৭ ॥ কণ উবাচ । মাতলিশ্চৈকমব্যগ্রঃ  
 সততং সংনিরীক্ষ্য বৈ । পপ্রচ্ছ নারদং তত্র প্রীতিমানিব চাতবৎ ॥ ১৮ ॥ স্তিতো  
 য এষ পুরতঃ কোরব্যস্যার্য্যকস্য তু । দ্যুতিমান্দর্শনীযশ্চ কসৈষ কুলনন্দনঃ ॥ ১৯ ॥  
 কঃ পিতা জননী চাস্য কতমসৈষ ভোগিনঃ । বংশস্য কসৈষ মহান্ কেতুভূত  
 ইব স্থিতঃ ॥ ২০ ॥ প্রণিধানেন ধৈর্য্যেণ কপেণ বযসা চ মে । মনঃপ্রবিষ্টৌ দেবেষু  
 গুণকেশ্যাঃ পতিবরঃ ॥ ২১ ॥ কণ উবাচ । মাতলিং প্রীতমনসং দৃষ্ট্বা সুমুখদ-  
 র্শনাৎ । নিবেদয়ামাস তদা মাহাত্ম্যং জন্মকর্ম্ম চ ॥ ২২ ॥ নারদ উবাচ । ঐরাবত-  
 কুলে জাতঃ সুমুখো নাম নাগরাট্ । আর্য্যকস্য মতঃ পৌত্রো দৌহিত্রো বাম-  
 নস্য চ ॥ ২৩ ॥ এতস্য হি পিতা নাগশ্চিকুরো নাম মাতলে । নচিরাদ্বৈনতেযেন  
 পঞ্চমুপপাদিতঃ ॥ ২৪ ॥ ততোহত্রবীৎ প্রীতমনা মাতলিনারদং বচঃ । এষ  
 মে রুচিতস্তাত জামাতা ভুজগোত্তমঃ ॥ ২৫ ॥ ক্রিষতামত্র যত্তো হি প্রীতি-  
 মানস্ম্যনেন বৈ । অস্মৈ নাগায় বৈ দাতুং প্রিয়াং দূহিতরং মুনে ॥ ২৬ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্গানপর্বণি মাতলীযোপখ্যানেন ত্র্যধিক-

শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১০৩ ॥



নারদ উবাচ । স্মৃতোহিবং মতালিনাম শক্রস্য দযিতঃ সুহৃৎ । শুচিঃ শীলগুণো-  
 পেতস্তেজস্বী বীৰ্য্যবান্ বলী ॥ ১ ॥ শক্রস্যায়ং সখা টৈব মন্ত্রী সার্থিরেব চ ।  
 অল্লাস্তরপ্রভাবশ্চ বাসবেন রণে রণে ॥ ২ ॥ অযং হরিসহশ্র্ণেণ যুক্তং জৈত্রং  
 রথোত্তমম্ । দেবাসুরেষু যুদ্ধেষু মনসেব নিবচ্ছতি ॥ ৩ ॥ অনেন বিজিতানশ্বেদো-  
 ভ্যাং জযতি বামবঃ । অনেন প্রহৃতে পূর্বং বলভিৎ প্রহরতু্যত ॥ ৪ ॥ অস্য  
 কন্যা বরারোহা কপেণাসদৃশী ভুবি । সত্যশীলগুণোপেতা গুণকেশীতিবিশ্র-

তা ॥ ৫ ॥ তস্যাস্য যত্নাচ্চরতস্ত্রৈলোক্যমমরদ্যুতে । সুমুখো ভবতঃ পৌত্রো  
 রোচতে দুহিতুঃ পতিঃ ॥ ৬ ॥ যদি তে রোচতে সৌম্য ভুজগোত্তম মার্চিরং ।  
 ক্রিষতামার্য্যক ক্ষিপ্রং বুদ্ধিঃ কন্যাপরিগ্রহে ॥ ৭ ॥ যথা বিষ্ণুকুলে লক্ষ্মীর্থথা স্বাহা  
 বিভাবসোঃ । কুলে তব তথৈবাস্ত গুণকেশী সুমধ্যমা ॥ ৮ ॥ পৌত্রস্যার্থে ভবাং-  
 স্তস্মাদগুণকেশীং প্রতীচ্ছতু । সদৃশীং প্রতিক্রপস্য বাসবস্য শচীমিব ॥ ৯ ॥ পিতৃ-  
 হীনমপি হেনং গুণতো বরষামহে । বহুমানাচ্চ ভবতস্তথৈবৈরাবতস্য চ । সুমু-  
 খস্য গুণৈশ্চৈব শীলশৌচদমাদিভিঃ ॥ ১০ ॥ অভিগম্য স্বয়ং কন্যাময়ং দাতুং সমু-  
 দ্যতঃ । মাতলিস্তস্য সম্মানং কর্তুমর্হে ভবানপি ॥ ১১ ॥ কণু উবাচ । স তু দীনঃ  
 প্রহৃষ্টশ্চ প্রাহ নারদমার্য্যকঃ । ধ্রুয়মাণে তথা পৌত্রে পুল্লে চ নিধনং গতে ॥ ১২ ॥  
 আর্য্যক উবাচ । ন মে নৈতদ্বহুমতং দেবর্ষে বচনং তব । সখা শক্রস্য সংযুক্তঃ  
 কস্যাবং নেপ্সিতো ভবেৎ । কারণস্য তু দৌর্বল্যাৎ চিন্তয়ামি মহামুনে ॥ ১৩ ॥  
 অস্য দেহকরস্তাত মম পুল্লে মহাদ্যুতে । ভক্ষিতো বৈনতেযেন দুঃখার্ভাস্তেন  
 বৈ বযম্ ॥ ১৪ ॥ পুনরেবচ তেনোক্তং বৈনতেযেন গচ্ছতা । মাসেনান্যেন  
 সুমুখং ভক্ষিষ্য ইতি প্রভো ॥ ১৫ ॥ ঙ্গবং তথা তদ্ভবিতা জানীমস্তস্য নিশ্চ-  
 যম্ । তেন হর্ষঃ প্রনক্টো মে সুপর্ণবচনেন বৈ ॥ ১৬ ॥ কণু উবাচ । মাতলিস্ত-  
 ব্রবীদেনং বুদ্ধিরত্র ক্রুতা মযা । জামাতৃভাবেন রতঃ সুমুখস্তব পুল্লজঃ ॥ ১৭ ॥  
 সোহয়ং মযা চ সহিতো নারদেন চ পন্নগঃ । ত্রিলোকেশং সুরপতিং গত্বা পশ্য-  
 তু বাসবম্ ॥ ১৮ ॥ শেষেণৈবাস্য কার্য্যেণ প্রজ্ঞাস্যাম্যহমাযুষঃ । সুপর্ণস্য বিঘা-  
 তে চ প্রযতিষ্যামি সত্তম ॥ ১৯ ॥ সুমুখশ্চ মযা সার্কং দেবেশমভিগচ্ছতু । কার্য্য-  
 সংসাধনার্থায় স্বস্তি তেহস্ত ভুজঙ্গম ॥ ২০ ॥ ততস্তে সুমুখং গৃহ সর্বএব মহৌ-  
 জসঃ । দদৃশুঃ শক্রমাসীনং দেবরাজং মহাদ্যুতিম্ ॥ ২১ ॥ সঙ্গত্যা তত্র ভগ-  
 বান্ বিষ্ণুরাসীচ্চতুর্ভুজঃ । ততস্তৎ সর্বমাচখ্যো নারদো মাতলিং প্রতি ॥ ২২ ॥  
 বৈশম্পায়ন উবাচ । ততঃ পুরন্দরং বিষ্ণুরুবাচ ভুবনেশ্বরম্ । অমৃতং দীযতা-  
 মস্মৈ ক্রিষতামমরৈঃ সমঃ ॥ ২৩ ॥ মাতলিনারদশ্চৈব সুমুখশ্চৈব বাসব । লভস্তাং  
 ভবতঃ কামাৎ কামমেতং যথেষ্পিতম্ ॥ ২৪ ॥ পুরন্দরোহথ সঞ্চিন্ত্য বৈনতেষ-  
 পরাক্রমম্ । বিষ্ণুমেবাত্র বীদেনং ভবানেব দদাতি ॥ ২৫ ॥ বিষ্ণুরুবাচ । ঙ্গশস্ত্বং  
 সর্বলোকানাং চরাণামচরাশ্চ যে । স্বযা দত্তমদত্তং কং কর্তুমুৎসহতে বিভো ॥ ২৬ ॥  
 প্রাদাচ্ছক্রস্ততস্তস্মৈ পন্নগাযাযুরুত্তমম্ । ন হেনমমৃতপ্রাশং চকার বলবত্র-  
 হা ॥ ২৭ ॥ লক্ষ্মী বরস্ত সুমুখঃ সুমুখঃ সম্ভূব হ । কৃতদারো যথাকামং জগাম

চ গৃহান্ প্রতি ॥ ২৮ ॥ নারদশ্চার্য্যকশ্চৈব কৃতকার্য্যৌ মুদা যুতৌ । প্রতিজগ্ম-  
তুরভ্যর্চ্য দেবরাজং মহাদ্যুতিম্ ॥ ২৯ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি ভগবদ্গানপর্বনি মাতলীযোপাখ্যানেন চতুরধিকশত-

তমোঃধ্যায়ঃ ॥ ১০৪ ॥



কণ্ উবাচ । গরুডস্তথ শুশ্রাব যথারত্নং মহাবলঃ । আয়ুঃপ্রদানং শক্রেণ  
কৃতং নাগস্য ভারত ॥ ১ ॥ পক্ষবাতেন মহতা রুদ্ধা ত্রিভুবনং খগঃ । সুপর্ণঃ  
পরমক্রুদ্ধো বাসবং সমুপাদ্রবৎ ॥ ২ ॥ গরুড উবাচ । ভগবন্ কিমবজ্ঞানাত্  
বুদ্ধিঃ প্রতিহতা মম । কামকারং বরং দত্ত্বা পুনশ্চলিতবানসি ॥ ৩ ॥ নিসর্গাৎ  
সর্বভূতানাং সর্বভূতেশ্বরেণ মে । আহারো বিহিতো ধাত্বা কিমর্থং বার্য্যতে  
ত্বয়া ॥ ৪ ॥ রতশ্চৈব মহানাগঃ স্থাপিতঃ সমঘশ্চ মে । অনেন চ ময়া দেব ভর্তব্যঃ  
প্রসবো মহান্ ॥ ৫ ॥ এতস্মিৎস্বন্যথাভূতে নান্যং হিংসিতুমুৎসহে । ক্রীডসে  
কামকারেণ দেবরাজ যথেষ্টকম্ ॥ ৬ ॥ সোহহং প্রাণান্ বিনোক্ষ্যানি তথা পরি-  
জনো মম । যে চ ভূত্যা মম গৃহে প্রীতিমান্ শুব বাসব ॥ ৭ ॥ এতচ্চৈবাহম-  
হামি ভূযশ্চ বলবত্রহন্ । ত্রৈলোক্যস্যেশ্বরো যোহহং পরভৃত্যত্বমাগতঃ ॥ ৮ ॥  
ত্বাং তিষ্ঠতি দেবেশ ন বিষ্ণুঃ কারণং মম । ত্রৈলোক্যরাজ রাজ্যং হি ত্ববি বাসব  
শাস্বতম্ ॥ ৯ ॥ মমাপি দক্ষস্য সূতা জননী কশ্যপঃ পিতা । অহমপ্যুৎসহে  
লোকান্ সমগ্রান্ বোচুমঞ্জসা ॥ ১০ ॥ অনহং সর্বভূতানাং মমাপি বিপুলং  
বলম্ । মমাপি সুমহৎ কৰ্ম্ম কৃতং দৈতেষবিগ্রহে ॥ ১১ ॥ শ্রুতশ্চীঃ শ্রুতসেনশ্চ  
বিবস্বানোচনামুখঃ । প্রস্তুতঃ কালকাক্ষশ্চ মমাপি দিতিজা হতাঃ ॥ ১২ ॥ বহু ধ্বজ-  
স্থানগতো যত্নাৎ পরিচরাম্যহম্ । বহামি চৈবানুজং তে তেন নামবমনাসে ॥ ১৩ ॥  
কোহন্যো ভারসহো হস্তি কোহন্যোস্তি বলবত্তরঃ । ময়া বোহহং বিশিষ্টঃ সন্  
বহামীমং সবান্ধবম্ ॥ ১৪ ॥ অবজ্ঞায় তু যত্তেহহং ভোজনাদ্যপরোপিতঃ । তেন  
মে গৌরবং নষ্টং ত্বত্তশ্চাম্মাচ্চ বাসব ॥ ১৫ ॥ অদিত্যা য ইমে জাতা বলবিক্রম-  
শালিনঃ । ত্বমেষাং কিল সর্বেষাং বলেন বলবত্তরঃ ॥ ১৬ ॥ সোহহং পক্ষৈক-  
দেশেন বহামি ত্বাং গতক্রমঃ । বিমূশ ত্বং শনৈস্তাত কো যত্র বলবানিতি ॥ ১৭ ॥  
কণ্ উবাচ । স তস্য বচনং শ্রুত্বা খগস্যোদর্কদারুণম্ । অক্ষোভ্যং ক্ষোভযংস্তা-  
ক্ষ্যমুবাচ রথচক্রভূৎ ॥ ১৮ ॥ গরুড্মন্যন্যসেত্মানং বলবন্তং সুদুবল । অলমস্ব-  
সমক্লেস্তে স্তোতুমাত্মানমগুজ ॥ ১৯ ॥ ত্রৈলোক্যমপি মে কুৎসমশক্ৰং দেহ-

धारणे । अहमेवात्मानात्मानं वहामि द्वाङ्ग धारणे ॥ २० ॥ इमं तावन्नमैकं  
 द्वं बाह्वं सव्येतरं वह । यद्येनं धारणस्यैकं सफलं ते विकथनम् ॥ २१ ॥  
 ततः स भगवांस्तस्य श्कन्ते बाह्वं समासज्ज ॥ निपपात सभारार्तो विह्वलो  
 नर्कचेतनः ॥ २२ ॥ षावान् हि भारः क्रुन्नायाः पृथिव्याः पर्वतेः सह । एकस्या  
 देहशाखायास्तुवन्दारममन्यत ॥ २३ ॥ न ह्येनं पीडयामास बलेन बलवद्भुरः ।  
 ततो हि जीवितं तस्य न वयनीनशदच्युतः ॥ २४ ॥ व्यात्तास्यः अस्तकायश्च वि-  
 चेता विह्वलः खगः । मूयोऽपि तदा शुरुभारप्रपीडितः ॥ २५ ॥ स विष्णुं  
 शिरसा पङ्की प्रथम्य विनतासूतः । विचेता विह्वलो दीनः किङ्किद्वचनमत्रवी ॥ २६ ॥  
 भगवन् लोकसारस्य सदृशेन वपुश्चता । भुजेन श्वैरमुक्तेन निष्पिच्छोऽस्मि मही-  
 तले ॥ २७ ॥ श्कन्तमर्हसि मे देव विह्वलस्यान्नतेजसः । बलदाहविदक्षस्य पङ्कि-  
 णो ध्वजवासिनः ॥ २८ ॥ न विज्जातं बलं देव मया ते परमं विभो । तेन  
 मन्याम्यहं वीर्यामात्मानो न समं पटैः ॥ २९ ॥ ततश्चक्रे स भगवान् प्रसादं  
 वै गरुड्यतः । ममैवं भूय इति स्नेहात्तदा चैनमुवाच ह ॥ ३० ॥ पदाङ्गुष्ठेन  
 चिक्षेप सुमुखं गरुडोरसि । ततः प्रभृति राजेन्द्र सह सर्पेण वर्तते ॥ ३१ ॥  
 एवं विष्णुबलाक्रान्ते । गर्भनाशमुपागतः । गरुडो बलवान् राजन् वैनतेयो  
 महायशाः ॥ ३२ ॥ तथा ह्यपि गान्धारे यावत् पाङ्गुसूतानुणे । नासादयसि  
 तान् वीरान् तावज्जीवसि पुलक ॥ ३३ ॥ तीमः प्रहरतां श्रेष्ठो वायुपुत्रो  
 महाबलः । धनञ्जयश्चेन्द्रसूतो न हन्यातास्तु कं रणे ॥ ३४ ॥ विष्णुर्वायुश्च शक्रेश्च  
 धर्मस्तो चाश्विनावुभौ । एते देवासुया केन हेतुना वीक्षितुं क्रमाः ॥ ३५ ॥  
 तदलं ते विरोधेन शमं गच्छ नृपात्तज । वासुदेवेन तीर्थेन कुलं रक्षितु-  
 मर्हसि ॥ ३६ ॥ प्रत्यक्षदर्शी सर्वस्य नारदोऽयं महत्तपाः । माहात्म्यस्य तदा  
 विष्णोः सोऽयं चक्रगदाधरः ॥ ३७ ॥ वैशम्पायन उवाच । दुर्योधनस्तु तं श्रुत्वा  
 निश्चमन् भूकुटीमुखः । राधेषमभिसंप्रेक्ष्य जहास स्वनवत्तदा ॥ ३८ ॥ कदर्थी-  
 क्रुत्य तद्वाक्यमेषः कणस्य दूर्मतिः । उरुं गजकराकारं ताडयन्निदमत्रवी ॥ ३९ ॥  
 यथैवेश्वरमृच्छोऽस्मि यन्नावि या च मे गतिः । तथा महर्षे वर्तमि किं प्रलापः  
 करिष्याति ॥ ४० ॥

इत्युद्योगपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि मातलीषोपाख्याने पञ्चाधिक-

शततमोऽध्यायः ॥ १०६ ॥

জনমেজয় উবাচ । অনর্থে জ্ঞাতনির্বন্ধং পরার্থে লোভমোহিতম্ । অনাৰ্য্য-  
 কেষভিরতঃ মরণে ক্লতনিশ্চয়ম্ ॥ ১ ॥ জ্ঞাতীনাং দুঃখদাতারং বন্ধুনাং শোক-  
 বর্জনম্ । সুহৃদাং ক্লেশদাতারং দ্বিষতাং হর্ষবর্জনম্ ॥ ২ ॥ কথং নৈনং বিমা-  
 র্গস্থং বারযন্তীহ বান্ধবাঃ । সৌহৃদাদ্বা সুহৃৎ স্নিক্শো ভগবান্ বা পিতামহঃ ॥ ৩ ॥  
 বৈশম্পায়ন উবাচ । উক্তং ভগবতা বাক্যমুক্তং ভীষ্মেণ যৎ ক্ষমম্ । উক্তং বহু-  
 বিধৈশ্চৈব নারদেনাপি তচ্ছৃণু ॥ ৪ ॥ নারদ উবাচ । দুর্লভো বৈ সুহৃৎ শ্রোতা  
 দুর্লভশ্চ হিতঃ সুহৃৎ । তিষ্ঠতে হি সুহৃদেষু ন বন্ধুস্তত্র তিষ্ঠতি ॥ ৫ ॥ শ্রোতব্য-  
 মপি পশ্যামি সুহৃদাং কুরুনন্দন । ন কর্তব্যশ্চ নির্বন্ধো নির্বন্ধো হি সুদারুণঃ ॥ ৬ ॥  
 অত্রাপ্যদাহরন্তীমমিতিহাসং পুরাতনম্ । যথা নির্বন্ধতঃ প্রাপ্তো গালবেন পরা-  
 জয়ঃ ॥ ৭ ॥ বিশ্বামিত্রং তপস্যস্তং ধর্ম্মো জিজ্ঞাসয়া পুরা । অভ্যগচ্ছৎ স্বয়ং  
 ভূত্বা বশিষ্ঠো ভগবানৃষিঃ ॥ ৮ ॥ সপ্তর্ষীগামন্যতমং বেশমাস্থায় ভারত । বুভুক্ষুঃ  
 ক্ষুধিতো রাজমাশ্রমং কৌশিকস্য চ ॥ ৯ ॥ বিশ্বামিত্রোহথ সম্ভ্রান্তঃ শ্রপযামাস  
 তং চক্রম্ । পরমাস্মস্য যত্নেন ন চ তং প্রত্যপালয়ৎ ॥ ১০ ॥ অন্নং তেন যদা ভুক্ত-  
 মনৈর্দত্তং তপস্বিভিঃ । অথ গৃহ্যন্নমত্যুষ্ণং বিশ্বামিত্রোহপ্যুপাগমৎ ॥ ১১ ॥ ভুক্তং  
 মে তিষ্ঠ তাবত্বমিত্যুক্ত্বা ভগবান্ যযৌ । বিশ্বামিত্রস্ততো রাজন্ স্থিত এব মহা-  
 দ্যুতিঃ ॥ ১২ ॥ তক্তং প্রগৃহ্য মূর্দ্ধ্ণা বৈ বাহুভ্যাং সংশিতব্রতঃ । স্থিতঃ স্থানুরিবা-  
 ভ্যাসে নিশ্চেষ্টো মারুতাশনঃ ॥ ১৩ ॥ তস্য শুশ্রুষণে যত্নমকরোদগালবো মুনিঃ ।  
 গৌরবাহুমানাচ্চ হার্দেন প্রিযকাম্যয়া ॥ ১৪ ॥ অথ বর্ষশতে পূর্णे ধর্ম্মঃ পুনরু-  
 পাগমৎ । বাশিষ্ঠং বেশমাস্থায় কৌশিকং ভোজনেপ্সয়া ॥ ১৫ ॥ স দৃষ্ট্বা শিরসা  
 তক্তং ধ্রুযমানং মহর্ষিণা । তিষ্ঠতা বায়ুভক্ষণে বিশ্বামিত্রেণ ধীমতা ॥ ১৬ ॥ প্রতি-  
 গৃহ্য ততো ধর্ম্মস্তথৈবোষ্ণং তথা নবম্ । ভুক্ত্বা প্রীতোহস্মি দেবর্ষে তমুক্ত্বা স মুনি-  
 র্গতঃ ॥ ১৭ ॥ ক্ষত্রভাবাদপগতো ব্রাহ্মণত্বমুপাগতঃ । ধর্ম্মস্য বচনাৎ প্রীতো  
 বিশ্বামিত্রস্তথাহভবৎ ॥ ১৮ ॥ বিশ্বামিত্রস্ত শিষ্যস্য গালবস্য তপস্বিনঃ । শুশ্রুষ-  
 যা চ তক্ত্যা চ প্রীতিমানিত্যুবাচ হ ॥ ১৯ ॥ অন্বজ্ঞাতো মযা বৎস যথেষ্টং গচ্ছ  
 গালব । ইত্যুক্তঃ প্রত্যুবাচেদং গালবো মুনিসভমম্ ॥ ২০ ॥ প্রীতো মধুরষা  
 বাচা বিশ্বামিত্রং মহাদ্যুতিম্ । দক্ষিণাঃ কাঃ প্রযচ্ছামি ভবতে গুরুকর্ম্মণি ॥ ২১ ॥  
 দক্ষিণাভিরূপেতং হি কর্ম্ম সিধ্যতি মানবম্ । দক্ষিণানাং হি দাতা বৈ অপব-  
 র্গেণ যুজ্যতে ॥ ২২ ॥ স্বর্গে ক্রতুফলং সন্দিদক্ষিণাভিস্তথাপ্যতে । কিমাহরামি  
 গুর্বর্থং ব্রবীতু ভগবানিতি ॥ ২৩ ॥ স জ্ঞানম্বেব ভগবান্ জিতঃ শুশ্রুষণেন বৈ ।



विश्वामित्रस्तमसकृदाह गच्छेत्यचोदयत् ॥ २४ ॥ असकृदाह गच्छेति विश्वामित्रेण  
 भाषितः । किं ददामीति बहुशो गालवः प्रत्यभाषत ॥ २५ ॥ निर्वृत्तस्तु बहु-  
 शो गालवस्य तपस्विनः । किञ्चिदागतसंरुद्धो विश्वामित्रोऽहं ब्रवीदिदम् ॥ २६ ॥  
 एकतः शतानि कर्णानां हयानां चन्द्रवर्त्मसाम् । अर्धैः शतानि मे देहि गच्छ गालव  
 मा चिरम् ॥ २७ ॥

इत्युद्योगपर्वणि भगवद्गीतानपर्वणि गालवचरिते षडधिक शत-

तमोऽध्यायः ॥ १०७ ॥



नारद उवाच । एवमुक्तस्तदा तेम विश्वामित्रेण धीमता । नास्ते न शेते नाहारं  
 कुरुते गालवस्तदा ॥ १ ॥ द्वगस्थिभूतो हरिणश्चिस्ताशोकपराय ः । शोचमानोऽति-  
 मात्रं स दहमानश्च मनुजना ॥ २ ॥ गालवो दःखितो दुःखां विललाप सुबोधन ।  
 कुतः पुष्टानि मित्राणि कुतोऽर्थाः सख्यः कुतः ॥ ३ ॥ हयानां चन्द्रशुभ्राणां  
 शतान्यर्धैः कुतो मम । कुतो मे भोजनश्रद्धा सुखश्रद्धा कुतश्च मे । श्रद्धा  
 मे जीवितस्यापि हिमा किं जीवितेन मे ॥ ४ ॥ अहं पारे समुद्रस्य पृथिव्या  
 वा परम्परां । गङ्गाग्नानं विमुष्मामि किं फलं जीवितेन मे । ५ ॥ अधन-  
 स्याकृतार्थस्य त्यक्तस्य विविधैः फलैः । ऋणं धारयमाणस्य कुतः सुखमनीहया ॥ ६ ॥  
 सुहृदां हि धनं दुक्त्वा कृत्वा । प्रणयमीप्सितम् । प्रतिकर्तुमशक्तस्य जीवितान्तरणं  
 वरम् ॥ ७ ॥ प्रतिश्रुत्वा करिष्येति कर्तव्यं तदकुरुतः । मिथ्यावचनदङ्गस्य ईर्ष्या-  
 पूर्तं प्रदश्याति ॥ ८ ॥ न रूपमन्तस्यास्ति नान्तन्यास्ति सन्ततिः । नान्तन्याधि-  
 पत्यश्च कुत एव गतिः शुभा ॥ ९ ॥ कुतः कृतघ्नस्य यशः कुतः स्थानं कुतः सुखम् ।  
 अश्रद्धेयः कृतघ्नो हि कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः ॥ १० ॥ न जीवत्यपनः पापः कुतः  
 पापस्य तन्त्रणम् । पापोऽब्रुवमवाप्नोति विनाशं नाशयन् कृतम् ॥ ११ ॥ सोऽहं  
 पापः कृतघ्नश्च रूपणशान्तोऽपि च । गुरोर्यः कृतकार्यः संस्तुं करोमि न भा-  
 षितम् ॥ १२ ॥ सोऽहं प्राणान् विमोक्ष्यामि कृत्वा यत्नमनुत्तमम् ॥ १३ ॥ अर्थना  
 न मया काचिं कृतपूर्वा दिवोकसाम् । मानयस्ति च मां सर्वे त्रिदशा यद्भग-  
 न्तरे ॥ १४ ॥ अहं विबुधश्रेष्ठं देवं त्रिभुवनेश्वरम् । विष्णुं गच्छ माहं  
 कृष्णं गतिं गतिमताश्वरम् ॥ १५ ॥ भोगा यन्मां प्रतिष्ठन्ति व्याप्य सर्वान् सुरा-  
 सुरान् । प्रणतोऽर्क्षुमिच्छामि कृष्णं योगिनमव्ययम् ॥ १६ ॥ एवमुक्ते सथा  
 तस्य गरुडो विनताम्रजः । दर्शयामास तं प्राह संश्रुतः प्रियकाम्यथा ॥ १७ ॥

সুহৃদ্বাম্মম মতঃ সুহৃদাঞ্চ মতঃ সুহৃৎ । ঈপ্সিতেনাভিলাষণ যোক্তব্যো  
বিতবে সতি ॥ ১৮ ॥ বিতবশ্চাস্তি মে বিপ্র বাসবাবরজো দ্বিজ । পূর্বমুক্তশ্বদ-  
র্থঞ্চ কৃতঃ কামশ্চ তেন মে ॥ ১৯ ॥ স ভবানেতু গচ্ছাব নষিষ্যে স্বাং যথাসুখম্ ।  
দেশং পারং পৃথিব্যা বা গচ্ছ গালব মা চিরম্ ॥ ২০ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্ভাষ্যপর্বণি গালবচরিতে সপ্তাধিকশত-  
তমোহধ্যায়ঃ ॥ ১০৭ ॥



সুপর্ণ উবাচ । অনুশিষ্টোহস্মি দেবেন গালবাজ্ঞাতযোনিনা । বৃহি কামস্ব  
কাং যামি দ্রফুং প্রথমতো দিশম্ ॥ ১ ॥ পূর্বাং বাদক্ষিণাং বাহমথ বা পশ্চিমাং  
দিশম্ । উত্তরাং বা দ্বিজশ্রেষ্ঠ কুতো গচ্ছামি গালব ॥ ২ ॥ যস্যামুদযতে পূর্বং  
সর্বলোকপ্রভাবনঃ । সবিতা যত্র সক্ষ্যায়াং সাধ্যানাং বর্ততে তপঃ ॥ ৩ ॥ যস্যাম্  
পূর্বং মতির্যাতা যথা ব্যাপ্তমিদং জগৎ । চক্ষুষী যত্র ধর্মস্য যত্র চৈষ প্রতিষ্ঠিতঃ ॥ ৪ ॥  
হতং যতো মুখে হব্যং সর্পতে সর্বতো দিশম্ । এতদ্বারং দ্বিজশ্রেষ্ঠ দিবসস্য  
তথাধনঃ ॥ ৫ ॥ অত্র পূর্বং প্রসূতা বৈ দাক্ষায়ণ্যঃ প্রজাঃ স্ত্রিয়ঃ । অস্যাং দিশি  
প্ররুদ্ধাশ্চ কশ্যপস্যাত্মসম্ভবাঃ ॥ ৬ ॥ অতো মূলং সুরানাং শ্রীর্যত্র শক্ৰোহত্য-  
ষিচ্যত । সুররাজ্যেন বিপ্রর্ষে দেবৈশ্চাত্র তপশ্চিতম্ ॥ ৭ ॥ এতস্মাৎ কারণাদ্ব-  
ক্ষন পূর্বেত্যেষা দিগুচ্যতে । যস্মাৎ পূর্বগতে কালে পূর্বমেষা তা সুরৈঃ ॥ ৮ ॥  
অত এব চ পূর্বেষাং পূর্বানাশাং প্রচক্ষতে । পূর্বং সর্বাণি কার্য্যাণি দেবানাং  
সুখমীপসতাম্ ॥ ৯ ॥ অত্র বেদান্ জগৌ পূর্বং ভগবান্ লোকভাবনঃ । অত্রৈ-  
বোক্তা সবিত্রাসীৎ সাবিত্রী ব্রহ্মবাদিষু ॥ ১০ ॥ অত্র দত্তানি সুর্য্যেণ যজুঃ ষি  
দ্বিজসত্তম । অত্র লক্ষবরঃ সোমঃ সুরৈঃ ক্রতুষু পীযতে ॥ ১১ ॥ অত্র ভৃগু হত-  
বহাঃ স্বাং যোনিমুপভূঞ্জতে । অত্র পাতালমাশ্রিত্য বরুণঃ শ্রিয়মাপ চ ॥ ১২ ॥  
অত্র পূর্বং বিশিষ্টস্য পৌরাণস্য দ্বিজর্ষভ । সূতিশ্চৈব প্রতিষ্ঠা চ নিধনঞ্চ প্রকা-  
শতে ॥ ১৩ ॥ ওঙ্কারস্যাত্র গীযন্তে সূতযো দশতীর্দশ । পিবন্তি মুনযো যত্র হবি-  
ধূমং স্ম ধূমপাঃ ॥ ১৪ ॥ প্রোক্ষিতা যত্র বহবো বরাহাদ্যা মৃগা বনে । শক্রেণ-  
যজ্ঞভাগার্থে দৈবতেষু প্রকল্পিতাঃ ॥ ১৫ ॥ অত্রাহিতাঃ কৃতঘ্নাশ্চ মানুষাশ্চাসু-  
রাশ্চ যে । উদযংস্তান্ হি সর্বান্ বৈ ক্রোধাক্ষন্তি বিভাবসুঃ ॥ ১৬ ॥ এতদ্বারং  
ত্রিলোকস্য স্বর্গস্য চ সুখস্য চ । এষ পূর্বো দিশাং ভাগো গচ্ছাবোহত্র যদী-

हृदि ॥ ११ ॥ प्रियं कार्यं हि मे तस्य यस्यांश्चि वचने स्थितः । बुद्धि गालव  
यास्यामि शुणु वाप्यपरां दिशम् ॥ १८ ॥

इत्युद्योगपर्वणि भगवद्गीतानपर्वणि गालवचरितेऽर्थाधिकशत-

तमोऽध्यायः ॥ १०८ ॥



सुपण उवाच । इयं विवस्वता पूर्वं श्रौवेण विधिना किल । गुरवे दक्षिणा दत्ता  
दक्षिणेत्युच्यते च दिक् ॥ १ ॥ अत्र लोकत्रयस्यास्य पितृपक्षः प्रतिष्ठितः । अत्रो-  
द्युपाणां देवानां निवासः श्रयते द्विज ॥ २ ॥ अत्र विश्वे सदा देवाः पितृभिः  
सार्द्धमासते । इज्यामानाः स्य लोकेषु सम्प्राप्तस्तुल्यतागताम् ॥ ३ ॥ एतद्वि-  
तीयं धर्मस्य द्वारमाचकते द्विज । त्रुटिशो लवशश्चात्र गण्यते कालनिश्चयः ॥ ४ ॥  
अत्र देवर्षयो नित्यं पितृलोकर्षयस्तथा । तथा राजर्षयः सर्वे निवसन्ति गत-  
व्याथाः ॥ ५ ॥ अत्र धर्मश्च सत्यं कर्म चात्र निगद्यते । गतिरेषा द्विजश्रेष्ठ  
कर्मणाश्चावसादिनः ॥ ६ ॥ एषा दिक् सा द्विजश्रेष्ठ यां सर्वः प्रतिपद्यते । यता  
इन्ववरोधेन सूक्ष्मेण न गम्यते ॥ ७ ॥ नैर्ऋतानां सहस्राणि बहून्यत्र द्विजर्षभ ।  
सृष्टानि प्रतिकूलानि द्रुक्व्यान्यकृताश्चिभिः ॥ ८ ॥ अत्र मन्दरकुण्डेषु विप्रर्षि-  
सदनेषु च । गायन्ति गाथा गङ्गर्षाश्चिद्रुक्विहरा द्विज ॥ ९ ॥ अत्र सामानि गाथाभिः  
श्रुत्वा गीतानि रैवतः । गतदारो गतामातेया गतराज्येया वनं गतः ॥ १० ॥ अत्र  
सावर्णिना टैव यवक्रुताश्चिजेन च । मर्यादा स्थापिता ब्रह्मन् यां सूर्येया नाति-  
वर्तते ॥ ११ ॥ अत्र राक्षसराजेन पौलस्त्येन महात्मना । रावणेन तपश्चीत्वा  
सुरेभ्योऽहमरता यता ॥ १२ ॥ अत्र रुतेन रुद्रोऽपि शक्रशत्रुहृमीषिवान् । अत्र  
सर्वासवः प्राप्ताः पुनर्गच्छन्ति पक्ष्वा ॥ १३ ॥ अत्र दूकृतकर्माणो नराः पच्यन्ति गालव ।  
अत्र वैतरणी नाम नदी वितरनेर्षता ॥ १४ ॥ अत्र गङ्गा सूखस्यास्तुं दुःखस्यास्तुं  
प्रपद्यते । अत्रारुतेऽदिनकरः सुरसं करते पयः । काष्ठां चामाद्य वाशिष्ठीं  
हिममुत्सृजते पुनः ॥ १५ ॥ अत्राहं गालव पुरा क्रुधार्तः परिचिन्तयन् । लक्ष्वान्  
युधामानो द्दो बृहस्तो गजकच्छपो ॥ १६ ॥ अत्र चक्रधनुर्नाम सूर्याङ्गातो  
महानृषिः । विदुर्वं कपिलं देवं येनात्राः सगराश्चिजाः ॥ १७ ॥ अत्र सिद्धा  
शिवा नाम ब्राह्मणी वेदपारगा । अधीत्य साथिलान् वेदान् लेभे स्वं देहम-  
क्षयम् ॥ १८ ॥ अत्र भोगवती नाम पुरी वासुकिपालिता । तक्षकेण च नागेन  
तथैवैरावतेन च ॥ १९ ॥ अत्र निर्माणकालेषु तमः सम्प्राप्यते महं । अत्रे-

দ্যং ভাস্করেণাপি স্বযং বা ক্লৃণবত্ননা ॥ ২০ ॥ এষ তস্যাপি তে মার্গঃ পরিবার্যাস্য  
গালব । বৃহি মে যদি গন্তব্যং প্রতিচীং শৃণু চাপরাম্ ॥ ২১ ॥

ই ভ্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্ভাসনপর্বণি গালবচরিতে নবাধিক

শততমোঃধ্যায়ঃ ॥ ১০৯ ॥



সুপর্ণ উবাচ । ইযং দিগ্গযিতা রাজ্ঞো বরুণস্য তু গোপতেঃ । সদা সলিলরাজস্য  
প্রতিষ্ঠা চাদিরেব চ ॥ ১ ॥ অত্র পশ্চাদহঃ সূর্য্যো বিসজ্জ্বলতি ভাঃ স্বযম্ । পশ্চিমৈ-  
ত্যভিবিখ্যাতা দিগিযং দ্বিজসত্তম ॥ ২ ॥ যাদসামত্র রাজ্যেন সলিলস্য চ গুপ্ত-  
ষে । কশ্যপো ভগবান্দেবো বরুণং স্মাত্যষেচযৎ ॥ ৩ ॥ অত্র পীত্বা সমস্তান্ বৈ  
বরুণস্য রসাংস্তু ষট্ । জাযতে তরুণঃ সোমঃ শুক্রস্যাদৌ তমিঅহা ॥ ৪ ॥ অত্র  
পশ্চাৎকৃতা দৈত্যা বায়ুনা সংযতাস্তদা । নিশ্বসন্তো মহাবাতৈরর্দিতাঃ সুষু-  
প্ত্বিঞ্জ ॥ ৫ ॥ অত্র সূর্য্যং প্রণযিৎ প্রতিগচ্ছতি পর্বতঃ । অস্তো নাম যতঃ  
সন্ধ্যে পশ্চিমা প্রতিসংতি ॥ ৬ ॥ ততো রাত্রিশ্চ নিদ্রা চ নির্গতা দিবসক্লেষে ।  
জাযতে জীবলোকস্য হর্ভুমর্কমিবাযুষঃ ॥ ৭ ॥ অত্র দেবীং দিতিং সুপ্তামাঅপ্র-  
সবধারিণীম্ । বিগর্তামকরোচ্ছক্ৰো যত্র জাতো বরুণাণঃ ॥ ৮ ॥ অত্র মূলং  
হিমবতো মন্দরং যতি শাশ্বতম্ । অপি বর্ষসহস্রৈশ্চ ন চাস্যাস্তোহধিগম্যতে ॥ ৯ ॥  
অত্র কাঞ্চনশৈলস্য কাঞ্চনাম্বুরুহস্য চ । উদধেষ্টীরমাসাদ্য সুরভিঃ ক্রুরতে  
পষঃ ॥ ১০ ॥ অত্র মধ্যে সমুদ্রস্য কবন্ধঃ প্রতিদৃশ্যতে । স্বর্ভানোঃ সূর্য্যকল্পস্য  
সোমসূর্য্যো জিঘাংসতঃ ॥ ১১ ॥ সুবর্ণশিরসোহপ্যত্র হরিরোমুঃ প্রগাযতঃ । অদৃশ্য-  
স্যাপ্রমেযস্য ক্ষযতে বিপুলধনিঃ । ১২ ॥ অত্র ধ্বজবতী নান কুমারী হরিমে-  
ধসঃ । আকাশে তিষ্ঠতিষ্ঠেতি তস্মৌ সূর্য্যস্য শাসমাৎ ॥ ১৩ ॥ অত্র বায়ুস্তথা  
বহ্নিরাপঃ খঞ্চাপি গালব । আহ্নিকক্ষেব নৈশঞ্চ দঃখম্পর্শং বিমুঞ্চতি ॥ ১৪ ॥  
অতঃ প্রভৃতি সূর্য্যস্য তীর্থ্যাগাবর্ত্ততে গতিঃ । অত্র জ্যোতীংষি সর্বাণি বিশন্ত্যাদি-  
ত্যমগুলম্ ॥ ১৫ ॥ অষ্টাবিংশতিরাত্রঞ্চ চক্রম্য সহ ভাস্বনা । নিষ্পতন্তি পুনঃ  
সূর্য্যাৎ সোমসংযোগযোগতঃ ॥ ১৬ ॥ অত্র নিত্যং অবন্তীনাং প্রভবঃ সাগরো-  
দযঃ । অত্র লোকত্রযস্যাপস্তিষ্ঠন্তি বরুণালয়ে ॥ ১৭ ॥ অত্র পন্নগরাজস্যাপানস্তস্য  
নিবেশনম্ । অনাদিনিধনস্যাত্র বিষ্ণোঃ স্থানম্নুত্তমম্ ॥ ১৮ ॥ অত্রানলসঞ্চ  
স্যাপি পবনস্য নিবেশনম্ । মহর্ষেঃ কশ্যপস্যাত্র মারীচস্য নিবেশনম্ ॥ ১৯ ॥ এষ

ते पश्चिमो मार्गो दिग्द्वारेण प्रकीर्तितः । बृहि गालव गच्छावो बुद्धिः का द्वि-  
जसन्तम् ॥ २० ॥

इत्युद्योगपर्वणि त्रिगवद्वानपर्वणि गालवचरिते दशाधिकशत-  
तमोऽध्यायः ॥ ११० ॥

—००—

सुपर्ण उवाच । यस्मादुत्तार्यते पापांश्च यस्मान्निःश्रेयसोऽश्नुते । अस्मादुत्तारण-  
बलादुत्तरेत्युच्यते द्विज ॥ १ ॥ उत्तरस्य हिरण्यस्य परिवार्यस्य गालव । मार्गः  
पश्चिमपूर्वाभ्यां दिग्भ्यां वै मध्यमः स्मृतः ॥ २ ॥ अस्यां दिशि वरिष्ठायामुत्त-  
रायां द्विजर्षभ । नासौम्यो नाविधेयात्मा नाधर्मो वसते जनः ॥ ३ ॥ अत्र  
नारायणः कृष्णो जिष्णुश्चैव नरोत्तमः । वदर्यामाश्रमपदे तथा ब्रह्मा च शाश्व-  
तः ॥ ४ ॥ अत्र वै हिमवत्पृष्ठे नित्यमास्तु महेश्वरः । प्रकृत्या पुरुषः सार्द्धं  
युगान्ताग्निमप्रभः ॥ ५ ॥ न स दृश्या मुनिगणैस्तथा देवैः सवासवैः । गन्धर्व-  
यक्षसिद्धैर्वा नरनारायणैश्च ॥ ६ ॥ अत्र विष्णुः सहस्राक्षः सहस्रचरणोऽव्ययः । सह-  
स्रशिरसः श्चिमानेकः पश्याति मायया ॥ ७ ॥ अत्र राज्ञेयं विप्राणां चन्द्रमाश्चाभ्याषि-  
च्यत ॥ ८ ॥ अत्र गङ्गाः महादेवः पतन्तीं गगणच्युताम् । प्रतिगृह्णददौ लोके  
मानुषे ब्रह्मविभक्तम् ॥ ९ ॥ अत्र देव्या तपस्तप्तुं महेश्वरप्रतीक्षया । अत्र कामश्च  
रोषश्च शैलश्चोत्तमा च संवदुः ॥ १० ॥ अत्र राक्षसयक्षाणां गन्धर्वाणाञ्च गालव ।  
आधिपत्येन कैलासे धनदोऽप्याभिषेचितः ॥ ११ ॥ अत्र चैत्ररथं रम्यमत्र  
वैधानसाश्रमः । अत्र मन्दार्किनी चैव मन्दरश्च द्विजर्षभ ॥ १२ ॥ अत्र सौगन्धि-  
कवनं नैर्ऋतैरतिरक्ष्यते । शाल्लं कदलीकृन्मत्र सन्तानका नगाः ॥ १३ ॥  
अत्र संघमनित्यानां सिद्धानां स्वैरुचारिणाम् । विमानान्यशूकपाणि कामभोज्यानि  
गालव ॥ १४ ॥ अत्र ते ऋषयः सप्त देवी चारुङ्कती तथा । अत्र तिष्ठति  
वै स्वातिरत्रास्या । उदयः स्मृतः ॥ १५ ॥ अत्र यज्ञं समासाद्य ३ वं स्वाता पिता-  
महः । ज्योतींश्चिं चन्द्रसूर्यो च परिवर्तन्ति नित्यशः ॥ १६ ॥ अत्र गायन्ति  
गाङ्गारं रक्षन्ति द्विजसन्तम् । धावमाना महात्मानो मूनयः सत्यवादिनः ॥ १७ ॥  
न तेषां ज्ञायते स्मृतिर्न कृतं न तपश्चितम् । परिवर्तसहस्राणि कामभोज्यानि  
गालव ॥ १८ ॥ यथा यथा प्रविशति तस्मात् परतरं नरः । तथा तथा द्विजश्रेष्ठ  
प्रविलीयति गालव ॥ १९ ॥ नैतत् केनचिदन्येन गतपूर्वं द्विजर्षभ । ऋते  
नारायणं देवं नरं वा जिष्णुमव्ययम् ॥ २० ॥ अत्र कैलासमित्युक्तं स्थानमैल-

বিলস্য তৎ । অত্র বিদ্যুৎপ্রভা নাম জজ্বিরেহ্পরসো দশ ॥ ২১ ॥ অত্র বিষ্ণু-  
পদং নাম ক্রমতা বিষ্ণুনা কৃতম্ । ত্রিলোকবিক্রমে ব্রহ্মমুত্তরাং দিশমাশ্রিতম্ ॥ ২২ ॥  
অত্র রাজ্ঞা নরুত্তেন যজ্ঞেনৈষ্ঠং দ্বিজোত্তম । উশীরবীজে বিপ্রর্ষে যত্র জাম্বুনদং  
সরঃ ॥ ২৩ ॥ জীমূতস্যাত্র বিপ্রর্ষেরূপতস্তে মহাত্মনঃ । সাক্ষাট্টৈকমবতঃ পুণ্যো  
বিমলঃ কনকাকরঃ ॥ ২৪ ॥ ব্রাহ্মণেষু চ যৎ কুৎস্নং স্বস্তং কৃত্বা ধনং মহৎ । বত্রে-  
ধনং মহর্ষিঃ স জৈমূতং তদ্ধনং ততঃ ॥ ২৫ ॥ অত্র নিত্যং দিশাংপালাঃ সাযং  
প্রাতর্দ্বিজর্ষভ । কস্য কার্য্যং কিম্বিতি বৈ পরিক্রোশস্তি গালব ॥ ২৬ ॥ এবমেবা  
দ্বিজশ্রেষ্ঠ গুণৈরনৈর্দ্যদিগুত্তরা । উত্তরতি পরিখ্যাতা সর্বকর্ম্মসু চোত্তরা ॥ ২৭ ॥  
এতা বিস্তরশস্তাত তব সংকীর্তিতা দিশঃ । চতস্রঃ ক্রমযোগেন কামাশাং গ-  
ত্ত্বমিচ্ছসি ॥ ২৮ ॥ উদ্যতোহহং দ্বিজশ্রেষ্ঠ তব দর্শয়িতুং দিশঃ । পৃথিবীধা-  
খিলাং ব্রহ্মংস্তস্মাদারোহ মাং দ্বিজ ॥ ২৯ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্দ্যানপর্বণি গালবচরিতে একাদশাধিক-

শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১১১ ॥



গালব উবাচ । গরুত্মান্ ভুজগেন্দ্রারে সুপর্ণ বিনতাত্মজ । নয মাং তাক্ষ্য  
পূর্বেণ যত্র ধর্ম্মস্য চক্ষুষী ॥ ১ ॥ পূর্বামেতাং দিশং গচ্ছ যা পূর্বং পরিকীর্তিতা ।  
দৈবতানাং হি সান্নিধ্যং যত্র কীর্তিতবানসি ॥ ২ ॥ অত্র সত্যঞ্চ ধর্ম্মশ্চ ত্বয়া সম্যক্  
প্রকীর্তিতৌ । ইচ্ছেষঞ্চ সমাগম্বং সমস্তৈর্দৈবতৈরহম্ । ভূষশ্চ তান্ সুরান্ দ্রষ্টুমি-  
চ্ছেষমরুণানুজ ॥ ৩ ॥ নারদ উবাচ । তমাহ বিনতাস্থনুরারোহস্বেতি বৈ দ্বিজম্ ।  
আরুরোহাথ স মুনির্গরুডং গালবস্তদা ॥ ৪ ॥ গালব উবাচ । ক্রমমাণস্য তে  
কপং দৃশ্যতে পন্নগাশন । ভাস্করস্যেব পূর্বাহ্নে সহস্রাংশোর্বিবস্বতঃ ॥ ৫ ॥ পক্ষ-  
বাতপ্রণুন্নানাং বক্ষাণামনুগামিনাম্ । প্রস্থিতানামিব সমং পশ্যামীহ গতিং  
খগ ॥ ৬ ॥ সমাগরবনামুর্বাং সশৈলবনকাননাম্ । অ্যকর্ষমিব চাভাসি পক্ষ-  
বাতেন খেচর ॥ ৭ ॥ সমীননাগনক্রঞ্চ খমিবারোপ্যতে জলম্ । বায়ুনা চৈব  
মহতা পক্ষবাতেন চানিশম্ ॥ ৮ ॥ তুল্যকপাননাম্ মৎস্যাংস্তথা তিমিতিমি-  
ঞ্জিলান্ । নাগাংশ্চ নরবক্ত্রাংশ্চ পশ্যাম্যুন্মথিতানিব ॥ ৯ ॥ মহার্ণবস্য চ রবেঃ  
শ্রোত্রে মে বধিরীকৃতে । ন শৃণোমি ন পশ্যামি নাত্মনো বোধি কারণম্ ॥ ১০ ॥  
শনৈঃ স তু ভবান্ যাতু ব্রহ্মবধ্যামনুস্মরন্ । ন দৃশ্যতে রবিস্তাত ন দিশো ন চ  
খং খগ ॥ ১১ ॥ তম এব তু পশ্যামি শরীরং তে ন লক্ষ্যে । নণীব জাতো

পশ্যামি চক্ষুষী তেহহমগুজ ॥ ১২ ॥ শরীরে তু ন পশ্যামি তব চৈবান্ননশ্চ হ ।  
 পদে পদে তু পশ্যামি শরীরাদগ্নিমুখিতম্ ॥ ১৩ ॥ স মে নির্বাপ্য সহসা চক্ষুষী  
 শাম্য তে পুনঃ । তন্নিষচ্ছ মহাবেগং গমনে বিনতান্নজ ॥ ১৪ ॥ ন মে প্রযো-  
 জনং কিঞ্চিদগমনে পন্নগাশন । সন্নিবর্ত্ত মহাভাগ ন বেগং বিষহামি তে ॥ ১৫ ॥  
 গুরবে সংশ্রুতানীহ শতান্যর্কো হি বাজিনাম্ । একতঃ শ্যামকর্ণনাং শুভ্রাণাং  
 চন্দ্রবর্চসাম্ ॥ ১৬ ॥ তেষাশ্কেবাপবর্গায মার্গং পশ্যামি নাগুজ । ততোহযং  
 জীবিতত্যাগে দৃষ্টো মার্গো মযান্ননঃ ॥ ১৭ ॥ .নৈব মেহস্তি ধনং কিঞ্চিন্ন ধনেনা-  
 ন্নিতঃ সুহৃৎ । ন চার্থেনাপি মহতা শক্যমেতদ্ব্যপোহিতুম্ ॥ ১৮ ॥ নারদ উবাচ ।  
 এবং বহু চ দীনঞ্চ ক্রবাণং গালবং তদা । প্রত্যুবাচ ব্রজমেব প্রহসন্ বিনতা-  
 ন্নজঃ ॥ ১৯ ॥ নাতিপ্রজ্ঞোহসি বিপ্রর্ষে যোহ্মানং ত্যক্তুমিচ্ছসি । ন চাপি  
 কৃত্রিমঃ কালঃ কালো হি পরমেশ্বরঃ ॥ ২০ ॥ কিমহং পূর্বমেবেহ ভবতা নাতি-  
 চোদিতঃ । উপায়োহত্র মহানস্তি যেনৈতদুপপদ্যতে ॥ ২১ ॥ তদেষ ঋষভো  
 নাম পর্বতঃ সাগরাস্তিকে । অত্র বিশ্রম্য ভুক্ত্বা চ নিবর্ত্তিষ্যাব গালব ॥ ২২ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্গানপর্বণি গালবচরিতে দ্বাদশাধিকশত-

তমোহিধ্যায়ঃ ॥ ১১২ ॥

নারদ উবাচ । ঋষভস্য ততঃ শৃঙ্গে নিপত্য দ্বিজপক্ষিণৌ । শাণ্ডিলীং ব্রাহ্মণীং  
 তত্র দদৃশাতে তপোহন্বিতাম্ ॥ ১ ॥ অভিবাদ্য সুপর্ণস্তু গালবশ্চাতিপূজ্য তাম্ ।  
 তথা চ স্বাগতেনোকৌ বিষ্ণুরে সন্নিষীদতুঃ ॥ ২ ॥ সিদ্ধমন্নং তথা দত্তং বলিম-  
 ন্নোপহৃতম্ । ভুক্ত্বা তৃপ্তাবৃত্তৌ ভূমৌ সুপ্তৌ তাবন্মুহোহিতৌ ॥ ৩ ॥ মুহূর্ত্তাং  
 প্রতিবুদ্ধস্তু সুপর্ণো গমনেপ্সযা । অথ ভ্রষ্টতনুজাঙ্গমাহ্মানং দদৃশে খগঃ ॥ ৪ ॥  
 নাংসপিপ্তোপনোহভুৎ স মুখপাদান্নিতঃ খগঃ । গালবস্তং তথা দৃষ্ট্বা বিষণঃ পর্য-  
 পুচ্ছত ॥ ৫ ॥ কিমিদং ভবতা প্রাপ্তমিহাগমনজং ফলম্ । বাসোহযমিহ কালস্তু  
 কিমন্তং নৌ ভবিষ্যতি ॥ ৬ ॥ কিমু তে মনসা ধ্যাতমশ্চ তং ধর্ম্মদূষণম্ । ন হ্যযং  
 ভবতঃ স্বল্পে ব্যভিচারো ভবিষ্যতি ॥ ৭ ॥ সুপর্ণোহথাব্রবীদ্বিপ্রং প্রধ্যাতং বৈ  
 মযা দ্বিজ । ইমাং সিদ্ধামিতৌ নেতুং তত্র যত্র প্রজাপতিঃ ॥ ৮ ॥ যত্র দেবো  
 মহাদেবো যত্র বিষ্ণুঃ সনাতনঃ । যত্র ধর্ম্মশ্চ যজ্ঞশ্চ তত্রৈব নিবসেদिति ॥ ৯ ॥  
 সোহহং ভগবতীং যাচে প্রণতঃ প্রিষকাম্যযা । যথৈতন্মাম প্রধ্যাতং মনসা  
 শোচতা কিল ॥ ১০ ॥ তদেবং বহুমানাভে মযেহানীপ্সিতং কৃতম্ । স্কৃতং দৃষ্-

তং বা ত্বং মহাত্ম্যং ক্ষত্ৰমহঁসি ॥ ১১ ॥ সা তৌ তত্রাববীতুৰ্কা পতগেন্দ্রদ্বিজ-  
 ষতৌ । ন ভেতব্যং সুপর্ণোহঁসি সুপর্ণত্যজ সন্ত্ৰমম্ ॥ ১২ ॥ নিন্দিতাস্মি ত্বয়া  
 বৎস ন চ নিন্দাং ক্ষমাম্যহম্ । লোকেভ্যঃ স পরিভ্রশ্যেদ্ষো মাং নিন্দেত পাপ-  
 ক্লং ॥ ১৩ ॥ হীনযা লক্ষণৈঃ সর্বৈস্তথা নিন্দিতযা মযা । আচারং প্রতিগৃহ্ত্য  
 সিদ্ধিঃ প্রাপ্তেযমুক্তমা ॥ ১৪ ॥ আচারঃ ফলতে ধৰ্ম্মমাচারঃ ফলতে ধনম্ । আচা-  
 রাং শ্রিয়মাপ্নোতি আচারো হন্ত্যলক্ষণম্ ॥ ১৫ ॥ তদায়ুস্মন্ খগপতে যথেক্ৰং  
 গম্যতামিতঃ । ন চ তে গর্হণীষা হি গর্হিতব্যঃ স্ত্রিয়ঃ ক্ৰচিৎ ॥ ১৬ ॥ ভবিতাসি  
 যথা পূর্বং বলবীৰ্য্যসমন্বিতঃ । বভূবতুস্ততস্তস্য পক্ষৌ দ্রবিণবত্তরৌ ॥ ১৭ ॥ অনু-  
 জ্ঞাতস্ত শাণ্ডিল্য যথাগতমুপাগমৎ । নৈব চাসাদযামাস তথাকপাংস্তুরঙ্গ-  
 নান্ ॥ ১৮ ॥ বিশ্বামিত্রোহথ তং দৃক্ষৌ গালবং চাধনি স্থিতম্ । উবাচ বদতাং  
 শ্রেষ্ঠো বৈনতেষস্য সন্নিধৌ ॥ ১৯ ॥ যস্ত্বয়া স্বযমেবার্থঃ প্রতিজ্ঞাতো মম দ্বিজ ।  
 তস্য কালোহপবর্গস্য যথা বা মন্যতে ভবান্ ॥ ২০ ॥ প্রতীক্ষিষ্যাম্যহং কালমেতা-  
 বন্তং তথাপরম্ । যথা সংসিধ্যতে বিপ্র স মার্গস্তু নিশম্যতাম্ ॥ ২১ ॥ সুপর্ণোহ-  
 খাববীদীনং গালবং ভৃশদুঃখিতম্ । প্রত্যক্ষং খলিদানীং মে বিশ্বামিত্রো  
 যদুক্তবান্ ॥ ২২ ॥ তদাগচ্ছ দ্বিজশ্রেষ্ঠ মন্ত্রাঘিষ্যাব গালব । নাদত্বা গুরবে শক্যং  
 ক্লংস্মমর্থং ত্বয়াসিতুম্ ॥ ২৩ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি ভগবদ্দ্যানপর্বনি গালবচরিতে ত্রয়োদশাধিক-  
 শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১১৩ ॥



নারদ উবাচ । অথাহ গালবং দীনং সুপর্ণঃ পততাস্বরঃ । নিশ্চিতং বহ্নিনা  
 ভূমৌ বায়ুনা বর্জিতং তথা । যস্মাদ্ধিরণ্যং সর্বং হিরণ্যন্তেন চোচ্যতে ॥ ১ ॥ ধত্তে  
 ধারষতে চেদমেতস্মাৎ কারণাঙ্কনং । তদেতল্লিষু লোকেষু ধনং তিষ্ঠতি শাস্ত-  
 তম্ ॥ ২ ॥ নিত্যং প্রোষ্ঠপদাত্যাঞ্চ শুক্রে ধনপতৌ তথা । মনুষ্যেভ্যঃ সমা-  
 ধত্তে শুক্রচিন্তাজ্জিতং ধনম্ ॥ ৩ ॥ অজৈকপাদহির্বধৌ রক্ষ্যতে ধনদেন চ ।  
 এবং ন শক্যতে লক্ষ্মলক্ষব্যং দ্বিজর্ষভ ॥ ৪ ॥ ঋতে চ ধনমস্থানাং নাবাপ্তিবি-  
 দ্যতে তব । স ত্বং যাচাত্ত রাজানং কঞ্চিদ্রাজর্ষিবংশজম্ । ব্রহ্মপুপেত্য গুর্বর্থং  
 যস্তে কুর্য্যাৎ কৃতার্থিতাম্ ॥ ৫ ॥ অস্তি সোমান্ববাযে মে জাত্ত কশ্চিন্নপঃ সখা ।  
 অতিগচ্ছাবহে তং বৈ তস্যাস্তি বিভবো ভুবি ॥ ৬ ॥ যযাতির্নাম রাজর্ষিনা হৃষ্যঃ  
 সত্যবিক্রমঃ । স দাস্যতি মযা চোক্কো ভবতা চাধিতঃ স্বযম্ ॥ ৭ ॥ বিভবশ্চাসা



সুমহানাসীদ্ধনপতেরিব । এবং গুরুধনং বিদ্বন্ দানেনৈব বিশোধষ ॥ ৮ ॥  
 তথা তো কথযন্তৌ চ চিন্তযন্তৌ চ যৎ ক্ষমম্ । প্রতিষ্ঠানে নরপতিং যযাতিং  
 প্রত্যুপস্থিতৌ ॥ ৯ ॥ প্রতিগৃহ্ চ সৎকারৈরর্ঘ্যপাদ্যাদিকং বরম্ । পৃষ্ঠশ্চাগমনে  
 হেতুমুবাচ বিনতাসুতঃ ॥ ১০ ॥ অযং মে নাহ্মম সখা গালবস্তপসো নিধিঃ । বিশ্বা-  
 মিত্রস্য শিষ্যোহ্ভুদ্বর্ষণ্যযুতশো নৃপ ॥ ১১ ॥ সোহযন্তেনাভ্যনুজ্ঞাত উপকারে-  
 পসয়া দ্বিজঃ । তমাহ ভগবান্ কালে দদানি গুরুদক্ষিণাম্ ॥ ১২ ॥ অসকৃতেন  
 চোক্তেন কিঞ্চিদাগতমনু্যনা । অযমুক্তঃ প্রযচ্ছেতি জানতা বিভবং লঘু ॥ ১৩ ॥  
 একতঃ শ্যামকর্ণানাং শুভ্রাণাং শুদ্ধজন্মনাম্ । অষ্টৌশতানি মে দেহি হযানাং  
 চন্দ্রবর্চসাম্ ॥ ১৪ ॥ গুর্বর্থো দীযতামেষ যদি গালব মন্যসে । ইত্যেবমাহ  
 সক্রোধো বিশ্বামিত্রস্তপোধনঃ ॥ ১৫ ॥ সোহযং শোকেন মহতা তপ্যমানো দ্বিজ-  
 বর্ভঃ । অশক্লঃ প্রতিকর্তুং তদ্ববস্তুং শরণং গতঃ ॥ ১৬ ॥ প্রতিগৃহ্ নরব্যাত্রাত্ত্বভৌ  
 ভিক্ষাং গতব্যথঃ । কৃত্বাপবর্গং গুরবে চরিষ্যতি মহত্তপঃ ॥ ১৭ ॥ তপসঃ সস্থিভাগেন  
 ভবন্তমপি যোক্ষ্যতে । স্বেন রাজর্ষিতপসা পূর্ণং দ্বাং পুরিষ্যতি ॥ ১৮ ॥ যাবন্তি  
 রোমাণি হযে ভবন্তীহ নরেশ্বর । তাবতো বাজিনো লোকান্ প্রাপ্নুবন্তি মহী-  
 পতে ॥ ১৯ ॥ পাত্রং প্রতিগ্রহস্যর্ঘ্যং দাতুং পাত্রং তথা ভবান্ । শস্ত্রে ক্ষী-  
 রমিবাসক্লং ভবত্বৈতত্তথোপমম্ ॥ ২০ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্দ্যানপর্বণি গালবচরিতে চতুর্দশা-  
 ধিক্শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১১৪ ॥



নারদ উবাচ । এবমুক্তঃ সুপর্ণেন তথ্যং বচনমুক্তমম্ । বিমৃষ্যাবহিতৌ রাজা  
 নিশ্চিত্য চ পুনঃ পুনঃ ॥ ১ ॥ বক্টা ক্রতুসহস্রাণাং দাতা দানপতিঃ প্রভুঃ । যযাতিঃ  
 সর্বকাশীশ ইদং বচনমত্রবীৎ ॥ ২ ॥ দৃক্টা প্রিযসখং তাক্ষ্যং গালবঞ্চ দ্বিজবর্ভম্ ।  
 নিদর্শনঞ্চ তপসো ভিক্ষাং শ্লাঘ্যাঞ্চ কীর্তিতাম্ ॥ ৩ ॥ অতীত্য চ নৃপানন্যানা-  
 দিত্যকুলসস্তবান্ । মৎসকাশমনুপ্রাপ্তাবেতাং বুদ্ধিমবেক্ষ্য চ ॥ ৪ ॥ অদ্য মে  
 সফলং জন্ম তারিতঞ্চাদ্য মে কুলম্ । অদ্য্যষং তারিতো দেশো মম তাক্ষ্য  
 ত্বয়ানঘ ॥ ৫ ॥ বক্লুমিচ্ছামি তু সখে যথা জানাসি মাং পুরা । ন তথা বিভবান-  
 নস্মি ক্ষীণং বিক্লং হি মে সখে ॥ ৬ ॥ ন চ শক্লোহস্মি তে কর্ত্বুং মোঘমাগ-  
 মনং খগ । ন চাশামস্য বিপ্রর্ষেবিতথাং কর্ত্বুমুৎসহে ॥ ৭ ॥ তত্ত্ব দাস্যামি যৎ কা-  
 র্যমিদং সম্পাদযিষ্যতি । অভিগম্য হতাশো হি নিবৃত্তো দহতে কুলম্ ॥ ৮ ॥ নাতঃ

পরং বৈনতেষ কিঞ্চিৎ পাপিষ্ঠমুচ্যতে । যথাশানাশনাল্লোকে দেহি নাস্তীতি  
 বা বচঃ ॥ ৯ ॥ হতাশো হরুতার্থঃ সন্ হতসস্তাবিতো নরঃ । হিনস্তি তস্য  
 পুত্রাংশ্চ পৌত্রাংশ্চাকুর্বতো হিতম্ ॥ ১০ ॥ তস্মাচ্চতুর্গাং বর্ণানাং স্থাপয়িত্রী  
 সূতা মম । ইষং সুরসুতপ্রথ্যা সর্বধর্মোপপাদিনী ॥ ১১ ॥ সদা দেবমন্মুঘ্যাণাম-  
 সুরাণাঞ্চ গালব । কাজ্জিতা রুপতো বালা সূতা মে প্রতিগৃহতাম্ ॥ ১২ ॥ অন্যাঃ  
 শুক্লং প্রদাস্যন্তি নৃপা রাজ্যমপি ধ্রুবম্ । কিং পুনঃ শ্যামকর্ণানাং হযানাং দে  
 চতুঃশতে ॥ ১৩ ॥ সভবান্ প্রতিগৃহ্নাতু মমেমাং মাধবীং সূতাম্ । অহং দৌহি-  
 ত্রবান্ স্যাং বৈবর এষ মম প্রভো ॥ ১৪ ॥ প্রতিগৃহ চ তাং কন্যাং গালবঃ সহ-  
 পক্ষিণা । পুনর্দক্ষ্যাব ইত্যুক্তা প্রতশ্ছে সহ কন্যায়া ॥ ১৫ ॥ উপলক্ষ্মিদং দ্বারম-  
 স্থানামিতি চাণ্ডজঃ । উক্ত্বা গালবমাপৃচ্ছ্য জগাম ভবনং স্বকম্ ॥ ১৬ ॥ গতে  
 পতগরাজে তু গালবঃ সহ কন্যায়া । চিন্তয়ানঃ ক্ষমং দানে রাজ্ঞাং বৈ শুক্লতোহ-  
 গমৎ ॥ ১৭ ॥ সোহগচ্ছন্নসেক্ষুকুং হর্যশ্বং রাজসত্তমম্ । অযোধ্যায়াং মহা-  
 বীর্য্যং চতুরঙ্গবলান্বিতম্ ॥ ১৮ ॥ কোষধান্যবলোপেতং প্রিয়পৌরং দ্বিজপ্রি-  
 যম্ । প্রজাভিকামং শাম্যন্তং কুর্বাণং তপ উত্তমম্ ॥ ১৯ ॥ তমুপাগম্য বিপ্রঃ স  
 হর্যশ্বং গালবোহব্রবীৎ । কেন্যেযং মম রাজেন্দ্র প্রসবৈঃ কুলবর্দ্ধিনী ॥ ২০ ॥  
 ইষং শুক্লেন ভার্য্যার্থে হর্যশ্ব প্রতিগৃহতাম্ । শুক্লং তে কীর্ত্তিযিষ্যামি তৎশ্রদ্ধা  
 সম্প্রধার্য্যতাম্ ॥ ২১ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্দ্যানপর্বণি গালবচরিতে পঞ্চদশাধিকশত-

তনোহধ্যায়ঃ ॥ ১১৫ ॥

—o—

নারদ উবাচ । হর্যশ্বস্ত্বব্রবীদ্রাজা বিচিন্ত্য বহুধা ততঃ । দীর্ঘমুঞ্চঃ নিশ্চস্য  
 প্রজাহেতোনৃপোত্তমঃ ॥ ১ ॥ উন্নতেষুন্নতা ষট্শু সৃষ্ণা সৃষ্ণেষু সপ্তশু । গস্তীরা  
 ত্রিষু গস্তীরেষিষং রক্তা চ পঞ্চশু ॥ ২ ॥ বহুদেবাসুরালোকা বহুগন্ধর্বদর্শনা ।  
 বহুলক্ষণসম্পন্ন বহুপ্রসমধারিণী ॥ ৩ ॥ সমর্থেষং জনযিতুং চক্রবর্ত্তিনমাত্মজম্ ।  
 বৃহি শুক্লং দ্বিজশ্রেষ্ঠ সমীক্ষ্য বিভবং মম ॥ ৪ ॥ গালব উবাচ । একতঃ শ্যাম  
 কর্ণানাং শতান্যকৌ প্রযচ্ছ মে । হযানাঞ্চশুভ্রাণাং দেশজানাং বপুষ্মতান্ ॥ ৫ ॥  
 ততস্তব ভবিত্রীষং পুত্রাণাং জননী শুভা । অরণীব হতাশানাং যোনিরাষত-  
 লোচনা ॥ ৬ ॥ নারদ উবাচ । সভক্ষুদ্বা বচো রাজা হর্যশ্বঃ কামনোহিতঃ ।  
 উবাচ গালবং দীনো রাজর্ষির্ধর্মিসত্তমম্ ॥ ৭ ॥ দে মে শতে সন্নিহিতে হযানাং

ষদ্বিধাস্তব । এক্ষব্যঃ শতশস্ত্রন্যে চরন্তি মম বাজিনঃ ॥ ৮ ॥ সোহহমেকমপত্যং  
 বৈ জনযিষ্যামি গালব । অস্যামেতং ভবান্ কামং সম্পাদযতু মে বরম্ ॥ ৯ ॥  
 এতৎ শ্রুত্বা তু সা কন্যা গালবং বাক্যমব্রবীৎ । মম দত্তো বরঃ কশ্চিৎ কেনচিদ্ভুক্ত-  
 বাদিনা ॥ ১০ ॥ প্রসূত্যস্তে প্রসূত্যস্তে কন্যৈব ত্বং ভবিষ্যসি । স ত্বং দদম্ব মাং  
 রাজ্ঞে প্রতিগৃহ্য হযোত্তমান্ ॥ ১১ ॥ নৃপেভ্যো হি চতুর্ভ্যস্তে পূর্ণান্যক্ শতানি  
 বৈ । ভবিষ্যন্তি তথা পুত্রা মম চত্বার এব চ ॥ ১২ ॥ ক্রিয়তামুপসংহারো গুর্ধর্থং  
 দ্বিজসত্তম । এষা তাবন্মম প্রজ্ঞা যথা বা মন্যসে দ্বিজ ॥ ১৩ ॥ এবমুক্তস্ত স মুনিঃ  
 কন্যায়া গালবস্তদা । হর্যশ্বং পৃথিবীপালমিদং বচনমব্রবীৎ ॥ ১৪ ॥ ইযং কন্যা  
 নরশ্রেষ্ঠ হর্যশ্ব প্রতিগৃহ্যতাম্ । চতুর্ভাগেন শুক্লস্য জনযশ্চৈকমাত্মজম্ ॥ ১৫ ॥  
 প্রতিগৃহ্য স তাং কন্যাং গালবং প্রতিনন্দ্য চ । সময়ে দেশকালে চলক্ববান্ সূত-  
 মীপ্সিতম্ ॥ ১৬ ॥ ততো বসুমনা নাম বসুভ্যো বসুমত্তরঃ । বসুপ্রথ্যো নরপতিঃ  
 স বভূব বসুপ্রদঃ ॥ ১৭ ॥ অথ কালে পুনর্দীমান্ গালবঃ প্রত্যুপস্থিতঃ । উপ-  
 সঙ্গম্য চোবাচ হর্যশ্বং প্রীতমানসম্ ॥ ১৮ ॥ জাতো নৃপ সূতস্তেহযং বালো  
 ভাস্করসম্নিভঃ । কালো গন্তং নরশ্রেষ্ঠ তিক্ষার্থমপরং নৃপম্ ॥ ১৯ ॥ হর্যশ্বঃ  
 সত্যবচনে স্থিতঃ স্থিত্বা চ পৌরুষে । দূর্লভত্বাদ্ধ্বানাঞ্চ প্রদদৌ মাধবীং পুনঃ ॥ ২০ ॥  
 মাধবী চ পুনর্দীপ্তাং পরিত্যজ্য নৃপশ্রিয়ম্ । কুমারী কামতো ভূত্বা গালবং পৃষ্ঠ-  
 তোহন্বযাৎ ॥ ২১ ॥ ত্বযেব তাবত্তিষ্ঠন্ত্ব হযা ইত্যুক্তবান্ দ্বিজঃ । প্রযযৌ কন্যায়া  
 সার্কং দিবোদাসং প্রজেশ্বরম্ ॥ ২২ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্দানপর্বণি গালবচরিতে ষোড়শাধিকশত্ৰু

তমোঃধ্যায়ঃ ॥ ১১৬ ॥



গালব উবাচ । মহাবীর্যেয়া মহীপালঃ কাশীনামীশ্বরঃ প্রভুঃ । দিবোদাস  
 ইতিখ্যাতো ভৈমসেনির্নরাধিপঃ ॥ ১ ॥ তত্র গচ্ছাবহে ভদ্রে শনৈরাগচ্ছ মা শুচঃ ।  
 ধার্মিকঃ সংযমে যুক্তঃ সত্যে চৈব জনেশ্বরঃ ॥ ২ ॥ নারদ উবাচ । তমুপাগম্য  
 স মুনির্ন্যাযতস্তেন সৎকৃতঃ । গালবঃ প্রসবস্যার্থে তং নৃপং পর্য্যচোদযৎ ॥ ৩ ॥  
 দিবোদাস উবাচ । শ্রুতমেতন্মযা পূর্বং কিমুক্ত্বা বিস্তরং দ্বিজ । কাঙ্ক্ষিতো হি  
 মমৈষোহর্থঃ শ্রুত্বৈব দ্বিজসত্তম ॥ ৪ ॥ এতচ্চ মে বহুমতং যদুৎসৃজ্য নরাধিপান্ ।  
 মামেবমুপযাতোহসি ভাবি চৈতদসংশয়ম্ ॥ ৫ ॥ স এব বিভবোহস্মাকমস্থানা-  
 মপি গালব । অহমপ্যেকমেবাগ্যাং জনযিষ্যামি পার্থিবম্ ॥ ৬ ॥ তথৈতু্যক্ত্বা

দ্বিজশ্রেষ্ঠঃ প্রাদাৎ কন্যাং মহীপতেঃ । বিধিপূর্বঞ্চ তাং রাজা কন্যাং প্রতিগৃহীত-  
বান্ ॥ ৭ ॥ রেমে স তস্যাত্ রাজর্ষিঃ প্রভাবত্যাং যথা রবিঃ । স্বাহাযাঞ্চ যথা  
বহ্নির্যথা শচ্যাঞ্চ বাসবঃ ॥ ৮ ॥ যথা চন্দ্রশ্চ রোহিণ্যামুশ্মিলাযাং যথা যমঃ ।  
বরুণশ্চ যথা গৌর্য্যাং যথা চর্কিয়াং ধনেশ্বরঃ ॥ ৯ ॥ যথা নারায়ণো লক্ষ্ম্যাং জাহ্নু-  
ব্যাঞ্চ যথোদধিঃ । যথা রুদ্রশ্চ রুদ্রাণ্যাং যথা বেদ্যাং পিতামহঃ ॥ ১০ ॥ অদ্-  
শ্যন্ত্যাঞ্চ বাশিষ্ঠো বশিষ্ঠশ্চাক্ষনালযা । চ্যবনশ্চ সুকন্যাযাং পুলস্ত্যঃ সঙ্ক্যাযা  
যথা ॥ ১১ ॥ অগস্ত্যশ্চাপি বৈদর্ভ্যাং সাবিত্র্যাং সত্যবান্ যথা । যথা ভৃগুঃ  
পুল্লামাযানদিত্যাং কশ্যপো যথা ॥ ১২ ॥ রেণুকাযাং যথার্চীকো হৈমবত্যাঞ্চ  
কৌশিকঃ । বৃহস্পতিশ্চ তারাযাং শুক্রশ্চ শতপর্বযা ॥ ১৩ ॥ যথা ভূম্যাং ভূমি-  
পতিরূর্বশ্যাঞ্চ পুরুরবাঃ । ঋচীকঃ সত্যবত্যাঞ্চ সরস্বত্যাং যথা মনুঃ ॥ ১৪ ॥  
শকুন্তলাযাং দম্ভস্তো ধৃত্যাং ধর্ম্মশ্চ শাস্বতঃ । দমযন্ত্যাং নলশ্চৈব সত্যবত্যাঞ্চ  
নারদঃ ॥ ১৫ ॥ জরৎকারুর্জরৎকার্বাং পুলস্ত্যশ্চ প্রতীচ্যা । মেনকাযাং যথো-  
র্নায়ুস্তমুরুশ্চৈব রন্তযা ॥ ১৬ ॥ বাসুকিঃ শতশীর্ষাযাং কুমার্যাঞ্চ ধনঞ্জয়ঃ । বৈ-  
দেহাঞ্চ যথা রামো রুক্মিণ্যাঞ্চ জনার্দনঃ ॥ ১৭ ॥ তথা তু রমমাণস্য দিবোদাসস্য  
ভূপতেঃ । মাধবী জনযামাস পুলমেকং প্রতর্দনম্ ॥ ১৮ ॥ অথাজগাম ভগবান্  
দিবোদাসং স গালবঃ । সময়ে সর্ম্মনুপ্রাপ্তে বচনঞ্জেদমত্রবীৎ ॥ ১৯ ॥ নির্যাতযতু  
মে কন্যাং ভবাংস্তিষ্ঠন্ত বাজিনঃ । যাবদন্যত্র গচ্ছামি শুদ্ধার্থং পৃথিবী-  
পতে ॥ ২০ ॥ দিবোদাসোহথ ধর্ম্মাত্মা সময়ে গালবস্য তাং । কন্যাং নির্যাতযা-  
মাস স্থিতঃ সত্যে মহীপতিঃ ॥ ২১ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি ভগবদ্দেহানপর্বনি গালবচরিতে সপ্তদশাধিক-

শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১১৭ ॥



নারদ উবাচ । তথৈব তাং শ্রিষ্যং ত্যক্ত্বা কন্যা ভূত্বা যশস্বিনী । মাধবী গালবং  
বিপ্রমন্বযাং সত্যসঙ্করা ॥ ১ ॥ গালবো বিমৃশন্নেব স্বকার্য্যগতমানসঃ । জগাম  
ভোজনগরং দ্রক্ষুমৌশীনরং নৃপম্ ॥ ২ ॥ তমুবাচাত গত্বা স নৃপতিং সত্যবি-  
ক্রমম্ । ইযং কন্যা স্মৃতৌ দ্বৌ তে জনযিষ্যতি পার্থিবৌ ॥ ৩ ॥ অস্যাং  
ভবানবাগ্ণার্থো ভবিতা প্রেত্য চেহ চ । সোমার্কপ্রতিসঙ্কশৌ জনযিত্বা স্মৃতৌ  
নৃপ ॥ ৪ ॥ শুদ্ধন্ত সর্বধর্ম্মজ্ঞ হযানাং চন্দ্রবর্চসাম্ । একতঃ শ্যামকর্ণানাং দেষং  
মহৎ চতুঃশতম্ ॥ ৫ ॥ গুর্বর্থোহযং সনারস্তো ন হ্যৈঃ কৃত্যমাস্তি মে । যদি

শক্যং মহারাজ ক্রিয়তামবিচারিতম্ ॥ ৬ ॥ অনপত্যোহসি রাজর্ষে পুত্রো  
 জনয় পার্থিব । পিতৃন্ পুত্রপ্নবেন হুমান্নানশ্চৈব তারয ॥ ৭ ॥ ন পুত্রফল-  
 ভোক্তা হি রাজর্ষে পাত্যতে দিবঃ । ন যাতি নরকং ঘোরং যথা গচ্ছন্ত্যনা-  
 ত্মজাঃ ॥ ৮ ॥ এতচ্চান্যচ্চ বিবিধং শ্রুত্বা গালবভাষিতম । উশীনরঃ প্রতি-  
 বচো দদৌ তস্য নরাধিপঃ ॥ ৯ ॥ শ্রুতবানস্মি তে বাক্যং যথা বদসি গালব ।  
 বিধিস্ত্ব বলবান্ ক্রন্দন্ প্রবণং হি মনো মম ॥ ১০ ॥ শতে হে তু মমাশ্বানামী-  
 দৃশানাং দ্বিজোত্তম । ইতরেষাং সহস্রাণি স্তুবহুনি চরন্তি মে ॥ ১১ ॥ অহম-  
 প্যেকমেবাস্যাং জনমিষ্যামি গালব । পুত্রং দ্বিজ গতং মার্গং গমিষ্যামি পঠৈ-  
 রহম্ ॥ ১২ ॥ মূল্যেনাপি সমং কুৰ্ব্যাং তবাহং দ্বিজসত্তম । পৌরজানপদা-  
 র্থস্ত্ব মমার্থো নাত্মভোগতঃ ॥ ১৩ ॥ কামতো হি ধনং রাজা পারক্যং যঃ প্রয-  
 ছতি । ন স ধর্মেণ ধর্মাশ্বান্ যুজ্যতে যশসা ন চ ॥ ১৪ ॥ সোহহং প্রতিগ্রহী-  
 য্যামি দদাহ্বেতাং ভবান্মম । কুমারীং দেবগৰ্ভাভামেকপুত্রভবায মে ॥ ১৫ ॥  
 তথা তু বহুকল্যাণমুক্তবস্তং নরাধিপম্ । উশীনরং দ্বিজশ্রেষ্ঠো গালবঃ প্রত্য-  
 পূজয়ৎ ॥ ১৬ ॥ উশীনরং প্রতিগ্রাহু গালবঃ প্রযযৌ বনম্ । রেমে স তাং সমা-  
 সাদ্য কৃতপুণ্য ইব শ্রিয়ম্ ॥ ১৭ ॥ কন্দরেষু চ শৈলানাং নদীনাং নিব্বারেষু চ ।  
 উদ্যানেষু বিচিত্রেষু বনেষুপবনেষু চ ॥ ১৮ ॥ হর্শ্যেষু রমণীয়েষু প্রাসাদশিখ-  
 রেষু চ । বাতায়নবিমানেষু তথা গৰ্ভগহেষু চ ॥ ১৯ ॥ ততোহস্য সময়ে জজ্জে  
 পুত্রো বালরবিপ্রভঃ । শিবিরমায়া তু বিখ্যাতো যঃ স পার্থিবসত্তমঃ ॥ ২০ ॥ উপ-  
 স্থায় স তং বিপ্রো গালবঃ প্রতিগৃহ চ । কন্যাং প্রযাতস্তাং রাজন্ দৃষ্টবান্ বিন-  
 তাত্মজম্ ॥ ২১ ॥

ইত্যুদ্যোগপৰ্বণি ভগবদ্ভাষ্যপৰ্বণি গালবচরিতে অষ্টাদশা-

ধিক শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১১৮ ॥



নারদ উবাচ । গালবং বৈনতেযোহথ প্রহসন্নিদমব্রবীৎ । দিষ্ট্যা কৃতাত্মং  
 পশ্যামি ভবন্তমিহ বৈ দ্বিজ ॥ ১ ॥ গালবস্ত্ব বচঃ শ্রুত্বা বৈনতেযেন ভাষিতম্ ।  
 চতুর্ভাগাবশিষ্টং তদাচখ্যো কার্যমস্য হি ॥ ২ ॥ সুপর্ণস্ত্বব্রবীদেনং গালবং বদ-  
 তায়্বরঃ । প্রযত্নস্তে ন কর্তব্যো নৈষ সম্পৎস্যতে তব ॥ ৩ ॥ পুরা হি কান্যকুজে  
 বৈ গাধেঃ সত্যবতীং সূতাম্ । ভার্য্যার্থেহবরযৎ কন্যামৃচীকস্তেন ভাষিতঃ ॥ ৪ ॥  
 একতঃ শ্যামকর্ণানাং হযানাঞ্চন্দ্রবর্চসাম্ । ভগবন্ দীযতাং মহৎ সহস্রমিতি

গালব ॥৫॥ ঋচীকস্ত তথৈতু্যক্তা বরুণস্যালয়ং গতঃ । অশ্বতীর্থে হযান্ লদ্ধা দত্ত-  
বান্ পার্থিবায় বৈ ॥৬॥ ইক্ষু তে পুণ্ডরীকেণ দত্তা রাজ্ঞা দ্বিজাতিষু । তেভ্যো হে  
দে শতে ক্রীড়া প্রাপ্তে তৈঃ পাথি বৈস্তুদা ॥ ৭ ॥ অপরাণ্যপি চত্বারি শতানি  
দ্বিজসত্তম । নীযমানানি সন্তারে হতান্যাসমিতস্তদা ॥ ৮ ॥ এবং ন শক্যমপ্রাপ্যং  
প্রাপ্তুং গালব কর্হিচিৎ । ইমামশ্বশতাভ্যাং বৈ দ্বাভ্যাং তস্মৈ নিবেদয ॥ ৯ ॥  
বিশ্বামিত্রায় ধর্ম্মান্ন স্ৰুভিরশ্বশতৈঃ সহ । ততোহসি গতসম্মোহঃ ক্রুতক্রুতো  
দ্বিজোত্তম ॥ ১০ ॥ গালবস্তং তথৈতু্যক্তা সুপর্ণসহিতস্ততঃ । আদাযাশ্বাংশ্চ  
কন্যাঞ্চ বিশ্বামিত্রমুপাগমৎ ॥ ১১ ॥ অশ্বানাং কাঙ্ক্ষিতার্থানাং স্ৰুডিমানি শ-  
তানি বৈ । শতদ্বয়েন কন্যেযং ভবতা প্রতিগৃহ্যতাম্ ॥ ১২ ॥ অস্যাং রাজর্ষিভিঃ  
পুত্রা জাতা বৈ ধার্ম্মিকাস্ত্রযঃ । চতুর্থং জনযত্নেকং ভবানপি নরোত্তমম্ ॥ ১৩ ॥  
পূর্ণান্যেবং শতান্যেষৌ তুরগাণাং ভবন্ত তে । ভবতো হনুণো ভূত্বা তপঃ কুর্ষ্যাং  
যথাসুখম্ ॥ ১৪ ॥ বিশ্বামিত্রস্ত তং দৃষ্ট্বা গালবং সহ পক্ষিণা । কন্যাঞ্চ তাং  
বরারোহামিদমিত্যত্রবীদ্বচঃ ॥ ১৫ ॥ কিমিযং পূর্বমেবেহ ন দত্তা মম গালব ।  
পুত্রা মমৈব চত্বারো ভবেযুঃ কুলভাবনাঃ ॥ ১৬ ॥ প্রতিগৃহ্যামি তে কন্যামে-  
কপুত্রফলায় বৈ । অশ্বাশ্চাশ্রমঙ্গাসাদ্য চরন্ত মম সর্বশঃ ॥ ১৭ ॥ স তথা রমমা-  
ণোহথ বিশ্বামিত্রো মহাদ্যুতিঃ । আত্মজং জনযামাস মাধবীপুত্রমর্ককম্ ॥ ১৮ ॥  
জাতমাত্রং সূতং তঞ্চ বিশ্বামিত্রো মহামুনিঃ । সংযোজ্যাতৈষ্ঠস্তথা ধর্ম্মৈরশ্বৈষ্ঠৈঃ-  
সংযোজযৎ ॥ ১৯ ॥ অথার্ককঃ পুরং প্রাযাত্তদা সোমপুরপ্রভম্ । নির্যাত্য কন্যাং  
শিষ্যায় কৌশিকোহপি বনং যযৌ ॥ ২০ ॥ গালবোহপি সুপর্ণেন সহ নির্যাত্য  
দক্ষিণাম্ । মনসার্ভিপ্রতীতেন কন্যামিদমুবাচ হ ॥ ২১ ॥ জাতো দানপতিঃ পুত্র-  
স্বয়া শূরস্তথাপরঃ । সত্যধর্ম্মরতশ্চান্যো যজ্ঞা চাপি তথাপরঃ ॥ ২২ ॥ তদা-  
গচ্ছ বরারোহে তারিতস্তে পিতা সূতৈঃ । চত্বারশ্চৈব রাজানস্তথাহঞ্চ সূম-  
ধ্যমে ॥ ২৩ ॥ গালবস্ত্ৰভ্যমুজ্জায় সুপর্ণং পন্নগাশনম্ । পিতুর্নির্যাত্য তাং কন্যাং  
প্রযযৌ বনমেব হ ॥ ২৪ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি ভগবদ্দানপর্বনি গালবোপাখ্যানেন একোনবিং-

শত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১১৯ ॥

—•••—

নারদ উবাচ । স তু রাজা পুনস্তস্যঃ কর্ত্তুকামঃ স্বযম্বরম্ । উপগম্যাশ্রমপদং  
গঙ্গাযমুনসঙ্গমে ॥ ১ ॥ গৃহীতমাল্যদামাং তাং রথমারোপ্য মাধবীম্ । পুরুষদুশ্চ

भगिनीमाश्रमे पर्यथावताम् ॥ २ ॥ नागयक्षमनुष्याणां गन्धर्वमृगपक्षिणाम् ।  
 शैलद्रुमवनोकानामासीत्तत्र समागमः ॥ ३ ॥ नानापुरुषदेश्यानामीश्वरैश्च समा-  
 कुलम् । ऋषिभिर्ब्रह्मकलैश्च समस्तादारितं वनम् ॥ ४ ॥ निर्दिश्यमानेषु तु सा  
 वरेषु वरवर्णिनी । वरान्मुञ्चम्य सर्वास्तान् वरं व्रतवती वनम् ॥ ५ ॥ अवतीर्या  
 रथां कन्या नगस्कृत्य च वक्ष्युः । उपगम्य वनं पुण्यां तपस्तेपे यथातिजा ॥ ६ ॥  
 उपवासैश्च विविधैर्दीक्षाभिर्निर्ममैस्तथा । अस्त्रानो लघुतां क्रुद्धा वडूव मृगचा-  
 रिणी ॥ ७ ॥ वैदूर्याक्षुरकण्णानि मृदूनि हरितानि च । चरन्ती शम्पुमुख्यानि तिक्कानि  
 नि मधुराणि च ॥ ८ ॥ अवन्तीनाशं पुण्यानां सुरसानि शुचीनि च । पिवन्ती वारि-  
 मुख्यानि शीतानि विमलानि च ॥ ९ ॥ वनेषु मृगराजेषु व्याघ्रविप्रोषितेषु च ।  
 दावाग्निविश्रयुक्तेषु शून्येषु गहनेषु च ॥ १० ॥ चरन्ती हरिणैः सार्द्धं मृगैव वन-  
 चारिणी । चचार विपुलं धर्मं ब्रह्मचर्येण संव्रता ॥ ११ ॥ यथातिरपि पूर्वेषां  
 राज्ञां व्रतमनुष्ठितः । बहुवर्षसहस्रायुष्युजे कालधर्मणा ॥ १२ ॥ पुरुषदुश्च द्यौ  
 वंशो वर्द्धमानो नरोत्तमो । ताभ्यां प्रतिष्ठितो लोके परलोके च नाह-  
 यः ॥ १३ ॥ महीयते नरपतिर्यथातिः स्वर्गमास्थितः । महर्षिकण्ठो नृपतिः स्वर्गा-  
 ग्र्यफलभुङ्गिभुः ॥ १४ ॥ बहुवर्षसहस्राथे काले बहुगुणे गते । राजर्षिषु निष-  
 ग्नेषु महीयन्सु महर्षिषु ॥ १५ ॥ अवमेने नरान् सर्वान् देवानृषिगणास्तथा ।  
 यथातिमूर्त्तविज्ञानो विस्मयार्किष्टचेतनः ॥ १६ ॥ ततस्तं वृबुधे देवः शक्रे । बल-  
 निस्तूदनः । ते च राजर्षयः सर्वे धिग्धिगित्येवमक्रुवन् ॥ १७ ॥ विचारश्च समु-  
 पमो निरीक्ष्य ननुषाञ्जम् । को नृपः वस्य वा राज्ञः कथं वा स्वर्गमागतः ॥ १८ ॥  
 कर्मणा केन सिद्धोऽहं क्व चानेन तपश्चितम् । कथं वा ज्ञायते स्वर्गे केन वा  
 ज्ञायतेऽप्यत ॥ १९ ॥ एवं विचारयन्तुस्ते राजानं स्वर्गवासिनः । पृष्ठा पप्रच्छुर-  
 न्यान्यां यथातिं नृपतिं प्रति ॥ २० ॥ विमानपालाः शतशः स्वर्गद्वाराभिर-  
 क्षिणः । पृष्ठा आसनपालाश्च न जानीमेत्यथाक्रुवन् ॥ २१ ॥ सर्वे ते हारत-  
 ज्ञाना नात्यजानस्तु तं नृपम् । स मुहूर्त्तादथ नृपो हतौजाश्चाभवत्तदा ॥ २२ ॥

इत्युद्देश्यगपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि यथातिनोहे विंशत्यधिकशत-

तनोऽध्यायः ॥ १२० ॥



नारद उवाच । अथ प्रचलितः स्थानादासनाच्च परिच्युतः । कम्पितेनेव मनसा  
 धर्यतः शोकवह्निना ॥ १ ॥ ग्लानश्रग्लफटविज्ञानः प्रलफटमुकुटाङ्गदः । विघूर्णन्

অস্তুসর্বাঙ্কঃ প্রভ্রুতাভরণায়রঃ ॥ ২ ॥ অদৃশ্যমানস্তান্ পশ্যন্নপশ্যৎশ্চ পুনঃ-  
 পুনঃ । শূন্যঃ শূন্যেন মনসা প্রপতিষ্যামহীতলম্ ॥ ৩ ॥ কিং মযা মনসা ধ্যাত-  
 মশ্চ তৎ ধর্ম্মদূষণম্ । যেনাহং চলিতঃ স্থানাদিতি রাজা ব্যাচিন্তয়ৎ ॥ ৪ ॥ তে তু তত্রৈব  
 রাজানঃ সিদ্ধাশ্চাপ্সরসস্তথা । অপশ্যন্তু নিরালম্বং যযাতিং তং পরিচ্যুতম্ ॥ ৫ ॥  
 অথৈত্য পুরুষঃ কশ্চিৎ ক্ষীণপুণ্যানিপাতকঃ । যযাতিমত্রবীজাজন্ দেবরাজস্য  
 শাসনাৎ ॥ ৬ ॥ অতীব মদমত্তস্ত্বং ন কিঞ্চিন্নাবমন্যসে । মানেন ভ্রষ্টঃ স্বর্গস্তে  
 নাইস্ত্বং পার্থিবায়জ ॥ ৭ ॥ ন চ প্রজ্ঞায়সে গচ্ছ পতস্বৈতি তমত্রবীৎ । পতেষং  
 সৎস্বিতি বচাস্ত্ররুদ্ভু নহ্বায়জঃ । পতিষ্যৎশ্চিত্ত্বয়ামাস গতিং গতিনতাযরঃ ॥ ৮ ॥  
 এতস্মিন্বেব কালে তু নৈমিষে পার্থিবর্ষতান্ । চতুরোহপশ্যত নৃপস্তেষাং মধ্যে  
 পপাত হ ॥ ৯ ॥ প্রতর্দনো বসুমনাঃ শিবিরৌশীনরোহৃৎকঃ । বাজপেযেন  
 যজ্ঞেন তর্পয়ন্তি সুরেশ্বরম্ ॥ ১০ ॥ তেষামধরজং ধূমং স্বর্গদ্বারমুপস্থিতম্ । যযাতি-  
 রূপজিহ্বন বৈ নিপপাত মহীং প্রতি ॥ ১১ ॥ ভূমৌ স্বর্গে চ সন্নদ্ধাং নদীং ধূমমঘী-  
 মিব । গঙ্গাং গামিব গচ্ছন্তীমালম্ব্য জগতীপতিঃ ॥ ১২ ॥ শ্রীমৎস্ববভূতাপ্ত্রেযু  
 চতুষু প্রতিবন্ধুযু । মধ্যে নিপতিতো রাজা লোকপালোপমেযু সঃ ॥ ১৩ ॥ চতুষু  
 হৃতকল্লেষু রাজসিংহমহাগ্নিযু । পপাত মধ্যে রাজর্ষির্যযাতিঃ পুণ্যসংক্রমে ॥ ১৪ ॥  
 তমাহঃ পার্থিবাঃ সর্বে দীপ্যমানমিব শ্রিষা । কো ভবান্ কন্য বা বন্ধুদেশস্য  
 নগরস্য বা ॥ ১৫ ॥ যক্ষো বাপ্যথ বা দেবো গন্ধর্ভো রাক্ষসোহপি বা । ন হি  
 নানুঘকপোহসি কো বার্থঃ কাঙ্ক্ষ্যতে ত্বয়া ॥ ১৬ ॥ যযাতিরুবাচ । যযাতিরস্মি  
 রাজর্ষিঃ ক্ষীণপুণ্যশ্চ্যতো দিবঃ । পতেষং সৎস্বিতি ধ্যায়ন্ তবৎসু পতিত-  
 স্ততঃ ॥ ১৭ ॥ রাজান উচুঃ । সত্যমেতদ্ভবতু তে কাঙ্ক্ষিতং পুরুষবত । সমেষাং  
 নঃ ক্রতুফলং ধর্ম্মশ্চ প্রতিগৃহ্যতাম্ ॥ ১৮ ॥ যযাতিরুবাচ । নাইং প্রতিগ্রহণনো  
 ব্রাহ্মণঃ ক্ষত্রিয়ো হহম্ । ন চ মে প্রবণা বুদ্ধিঃ পরপুণ্যবিনাশনে ॥ ১৯ ॥  
 নারদ উবাচ । এতস্মিন্বেব কালে তু মৃগচর্য্যাক্রমাগতাম্ । মাধবীং প্রেক্ষ্য রাজান-  
 স্তেহভিবাদ্যেদমক্রবন্ ॥ ২০ ॥ কিমাগমনকৃত্যং তে কিং কুস্মঃ শাসনং তব ।  
 আজ্ঞাপ্যা হি বয়ং সর্বে তব পুত্রাস্তপোদনে ॥ ২১ ॥ তেষাং তদ্ভাষিতং শ্রুত্বা  
 মাধবী পরযা মুদা । পিতরং সমুপাগচ্ছদ্যযাতিং সা ববন্দ চ ॥ ২২ ॥ স্পৃক্তা  
 মূর্দ্ধনি তান্ পুত্রাংস্তাপসী বাক্যমত্রবীৎ ॥ ২৩ ॥ দৌহিত্রাস্তব রাজেন্দ্র মন পুত্রা  
 ন তে পরাঃ । ইমে হ্মাং তারিষ্যন্তি দৃষ্টমেতৎ পুরাতনে ॥ ২৪ ॥ অহস্তে দুহিতা  
 রাজন্ মাধবী মৃগচারিণী । মযাপ্যগচিতো ধর্ম্মস্ততোহর্কং প্রতিগৃহ্যতাম্ ॥ ২৫ ॥



यस्माद्राजमराः सर्वे अपत्यफलभागिनः । तस्मादिच्छन्ति दौहित्रान् यथा वृं वसु-  
धाधिप ॥ २७ ॥ ततस्ते पार्थिवाः सर्वे शिरसा जननीं तदा । अर्तिवादय नम-  
स्कृत्य मातामहमथाक्रवन् ॥ २९ ॥ उच्छैरन्नूपमैः स्निग्धैः स्वरैरापूर्य्य मेदिनीम् ।  
मातामहं नृपतयस्तारयन्तो दिवश्च्युतम् ॥ २८ ॥ अथ तस्माद्गुपगतो गालवोऽप्याह  
पार्थिवम् । तपसो मेहृत्भागेन स्वर्गमारोहतां भवान् ॥ २९ ॥

इत्युद्योगपर्वणि भगवद्गीतानपर्वणि यथातिब्रंशे एक-

विंशत्याधिकशततमोऽध्यायः ॥ १२१ ॥



नारद उवाच । प्रत्यभिज्ञातमात्रोऽथ सन्तिस्तेर्नरपुङ्गवः । समारुरोह नृपति-  
रस्पृशन् वसुधातलम् ॥ १ ॥ यथातिर्दिव्यसंस्थानो बभूव विगतञ्जरः । दिव्यमा-  
ल्याम्बरधरो दिव्याभरणभूषितः । दिव्यगङ्गुणोपेतो नृपृथ्वीमस्पृशन् पदा ॥ २ ॥  
ततो वसुमनाः पूर्वमुच्छैरुच्छारयन् वचः । ध्यातो दानपतिलोके व्याजहार  
नृपन् तदा ॥ ३ ॥ प्राप्नुवानस्मि यल्लोके सर्ववर्णेष्वर्घ्या । तदप्यथ च दास्यामि तेन  
संयुज्यतां भवान् ॥ ४ ॥ यत्फलं दानशीलस्य क्रमाशीलस्य यत्फलम् । यच्च  
मे फलमाधाने तेन संयुज्यतां भवान् ॥ ५ ॥ ततः प्रतर्दनोऽप्याह वाक्यं  
क्वत्रियपुङ्गवः । यथा धर्मरतिर्नित्यं नित्यं युद्धपरायणः ॥ ६ ॥ प्राप्नुवानस्मि  
यल्लोके क्वालवंशोद्भवं यशः । वीरशकफलक्षैव तेन संयुज्यतां भवान् ॥ ७ ॥  
शिविरौशीनरो धीमान्नुवाच मधुरां गिरम् । यथा बालेषु नारीषु वैहार्येषु  
तथैव च ॥ ८ ॥ सङ्गरेषु निपातेषु तथापद्यसनेषु च । अनृतं नोक्तपूर्वं मे  
तेन सत्येन खं ब्रज ॥ ९ ॥ यथा प्राणांश्च राज्यं राजन् कर्म सुखानि च ।  
त्यजेयं न पुनः सत्यं तेन सत्येन खं ब्रज ॥ १० ॥ यथा सत्येन मे धर्मो  
यथा सत्येन पावकः । प्रीतः शतक्रतुश्चैव तेन सत्येन खं ब्रज ॥ ११ ॥ अर्क-  
कस्तुथ राजर्षिः कौशिको माधवीसुतः । अनेकशतयज्ञानं नाह्वयं प्राह धर्म-  
वि ॥ १२ ॥ शतशः पुण्डरीका मे गोसवाश्चरिताः प्रभो । क्रतवो वाज-  
पेयाश्च तेषां फलमवाप्नुहि ॥ १३ ॥ न मे रत्नानि न धनं न तथान्ये परि-  
च्छदाः । क्रतुष्वन्नृपयुक्तानि तेन सत्येन खं ब्रज ॥ १४ ॥ यथा यथा हि जगन्ति  
दौहित्रास्तमराधिपम् । तथा तथा वसुमतीं त्यक्त्वा राजा दिव्यं यथौ ॥ १५ ॥ एवं  
सर्वे समस्तान्ते राजानः सुकृतैस्तदा । यथातिं स्वर्गतो ब्रह्मं तारयामासुर-  
ण्णा ॥ १६ ॥ दौहित्राः सैन धर्मैर्ण यज्जदानकृतेन वै । चतुर्षु राजवंशेषु

সন্তুতাঃ কুলবর্দ্ধনাঃ । মাতামহং মহাপ্রাজ্ঞা দিবমারোপযন্তি তে ॥ ১৭ ॥ রাজান  
উচুঃ । রাজধর্মগুণোপেতাঃ সর্বধর্মগুণাবিতাঃ । দৌহিত্রাস্তে বয়ং রাজন্ দিব-  
মারোহ পার্থিব ॥ ১৮ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্ভানপর্বণি যযাতিস্বর্গারোহণে দ্বাবিংশ-  
শত্যাধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১২২ ॥



নারদ উবাচ । সন্দিরারোপিতঃ স্বর্গং পার্থিবৈভূরিদক্ষিণৈঃ । অভ্যনুজ্ঞায়  
দৌহিত্রান্ যযাতির্দিবমাস্তিতঃ ॥ ১ ॥ অভিরুচ্চ বর্ষণে নানাপুষ্পসুগন্ধিনা ।  
পরিষক্ৰচ্চ পুণ্যেন বায়ুনা পুণ্যগন্ধিনা ॥ ২ ॥ অচলং স্থানমাসাদ্য দৌহিত্র-  
ফলনির্জিতম্ । কস্মভিঃ সৈরুপচিতো জজ্বাল পরযা শ্রিয়া ॥ ৩ ॥ উপগীতো-  
পনৃত্শ্চ গন্ধর্বাঙ্গরমাং গণৈঃ । প্রীত্যা প্রতিগৃহীতশ্চ স্বর্গে দুন্দুভিনিস্বনৈঃ ॥ ৪ ॥  
অভিষ্কৃতশ্চ বিবিধৈর্দেবরাজর্ষিচারুণৈঃ । অর্চিতশ্চোক্তমার্ঘ্যেণ দৈবতৈরভিনন্দি-  
তঃ ॥ ৫ ॥ প্রাপ্তঃ স্বর্গফলশ্চৈব তমুবাচ পিতামহঃ । নিরতং শান্তমনসং বচোভি-  
স্তপ্যমিব ॥ ৬ ॥ চতুষ্পাদস্ব্রযা ধর্মশ্চিতো লোক্যেন কস্মণা । অক্ষয়স্তব  
লোকোহয়ং কীর্তিশ্চৈবাক্ষযা দিবি ॥ ৭ ॥ পুনস্ব্রযেব রাজর্ষে স্বরুতেন বিঘাতিতম্ ।  
আরতং তমস্যা চেতঃ সর্বেষাং স্বর্গবাসিনাম্ ॥ ৮ ॥ যেন ত্বাং নাভিজানন্তি  
ততোহজ্ঞাতোহসি পাতিতঃ । প্রীতৈ্যেব চাসি দৌহিত্রৈস্তারিতস্বমিহাগতঃ ॥ ৯ ॥  
স্থানঞ্চ প্রতিপন্নোহসি কস্মণা স্মেন নির্জিতম্ । অচলং শাস্বতং পুণ্যমুভয়ং  
ধ্রুবমব্যয়ম্ ॥ ১০ ॥ যযাতিরুবাচ । ভগবন্ সংশযো মেহস্তুি কশ্চিত্তং ছেত্বম-  
হসি । ন হন্যামহমহামি প্রক্ষুং লোকপিতামহ ॥ ১১ ॥ বহুবর্ষনহস্রাস্তং প্রজা-  
পালনবর্দ্ধিতম্ । অনেকক্রতুদানৌষৈরজ্জিতং মে মহৎ ফলম্ । কথং তদল্পকা-  
লেন ক্ষীণং যেনাস্মি পাতিতঃ ॥ ১২ ॥ ভগবন্ বেথং লোকাংশ্চ শাস্বতান্মম নি-  
র্জিতান্ । কথং নু নম তৎ সর্বং বিপ্রনকং মহাদ্যুতে ॥ ১৩ ॥ পিতামহ উবাচ ।  
বহুবর্ষসহস্রাস্তং প্রজাপালনবর্দ্ধিতম্ । অনেকক্রতুদানৌষৈর্ষত্রযোপাজ্জিতং  
ফলম্ ॥ ১৪ ॥ তদনেনৈব দোষণে ক্ষীণং যেনাসি পাতিতঃ । অভিনানেন রা-  
জেন্দ্র ধিক্কৃতঃ স্বর্গবাসিভিঃ ॥ ১৫ ॥ নাযং মানেন রাজর্ষে ন বলেন ন হিংসয়া ।  
ন শাঠ্যেন ন মাযাভিলোকো ভবতি শাস্বতঃ ॥ ১৬ ॥ নাবমান্যাস্ব্রযা রাজনধ-  
মোৎকৃষ্টমধ্যমাঃ । ন হি মানপ্রদধানাং কশ্চিদস্তুি সমঃ ক্বচিৎ ॥ ১৭ ॥ পতনা-  
রোহণমিদং কথবিষ্যন্তি যে নরাঃ । বিষমাণ্যপি তে প্রাপ্তাস্তরিষ্যন্তি ন সংশ-

যঃ ॥ ১৮ ॥ নারদ উবাচ । এষ দোষোহভিমানেন পুরা প্রাপ্তো যযাতিনা ।  
নির্ধ্বজতাতি মাত্রঞ্চ গালবেন মহীপতে ॥ ১৯ ॥ শ্রোতব্যং হিতকামানাং সুহৃদাং  
হিতমিচ্ছতা । ন কর্তব্যো হি নির্বন্ধো নির্বন্ধো হি ক্ষযোদযঃ ॥ ২০ ॥ তস্মাদ্ভ-  
মপি গান্ধারে মানং ক্রোধঞ্চ বজ্জ্বয় । সন্ধৎস্ব পাণ্ডুবৈবীর সংরন্তং ত্যজ পার্থি-  
ব ॥ ২১ ॥ দদাতি যৎ পার্থিব যৎ কুরোতি যদ্বা তপস্তপ্যতি যজ্জুহোতি । ন তস্য  
নাশোহস্তু ন চাপকর্ষো নান্যস্তদশ্চাতি স এব কৰ্তা ॥ ২২ ॥ ইদং মহাখ্যান-  
মনুতমং মতং বহুশ্রুতানাং গতরোষরাগিণাম্ ! সমীক্ষ্য লোকে বহুধা প্রধারিতং  
ত্রিবর্গদৃষ্টিঃ পৃথিবীমুপাশ্নুতে ॥ ২৩ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্দানপর্বণি যযাতিস্বর্গারোহণে ত্রয়োবিংশত্যধিক-  
শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১২৩ ॥



ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । ভগবন্নেবমেবৈতদ্ব্যথা বদসি নারদ । ইচ্ছামি চাহমপ্যেবং  
ন স্বীশো ভগবন্নহম্ ॥ ১ ॥ বৈশম্পায়ন উবাচ । এবমুক্ত্বা ততঃ কৃষ্ণমভ্যভাষত  
কৌরবঃ । স্বর্গ্যং লোক্যঞ্চ নামাখ' ধর্ম্যং ন্যায্যঞ্চ কেশব ॥ ২ ॥ .ন ত্বহং স্বব-  
শস্তাত ক্রিয়মাণং ন মে প্রিয়ম্ । অঙ্গ দুর্ঘ্যোধনং কৃষ্ণ মন্দং শাস্ত্রাতিগং মম ।  
অনুনেতুং মহাবাহো যতস্ব পুরুষোত্তম ॥ ৩ ॥ ন শৃণোতি মহাবাহো বচনং  
সাধু ভাষিতম্ । গান্ধার্য্যাশ্চ হ্রষীকেশ বিদুরস্য চ ধীমতঃ । অন্যেষাঐশ্বব সুহৃদাং  
ভীষ্মাদীনাং হিতৈষিণাম্ ॥ ৪ ॥ স ত্বং পাপমতিং ক্রুরং পাপচিত্তমচেতনম্ । অনু-  
শাধি দুরাত্মানং স্বয়ং দুর্ঘ্যোধনং নৃপম্ । সুহৃৎকার্য্যঞ্চ সুমহৎ কৃতং তেস্যাঙ্জ-  
নার্দন ॥ ৫ ॥ ততোহভ্যারত্য বার্ষেযো দুর্ঘ্যোধনমমর্ষণম্ । অত্রবীন্মধুরাং বাচং  
সর্বধর্ম্মার্থতত্ত্ববিৎ ॥ ৬ ॥ দুর্ঘ্যোধন নিবোধেদং মদ্বাক্যং কুরুসত্তম । শমার্থ-  
তে বিশেষেণ সানুবন্ধস্য ভারত ॥ ৭ ॥ মহাপ্রাজ্ঞকুলে জাতঃ সাধেতং কর্তু-  
মর্হসি । শ্রুতব্রতোপসম্পন্নঃ সর্বৈঃ সমুদিতো গুণৈঃ ॥ ৮ ॥ দৌক্ষুলেযা দুরাত্মানো  
নৃশংসা নিরপত্রপাঃ । ত এতদীদৃশং কুর্য্যুর্থথা ত্বং তাত মন্যসে ॥ ৯ ॥ ধর্ম্মার্থযুক্তা  
লোকেহস্মিন্ প্রবত্তির্লক্ষ্যতে সতাম্ । অসতাং বিপরীতা তুলক্ষ্যতে ভরতর্ষভ ॥ ১০ ॥  
বিপরীতা দ্বিষং বত্তিরসকুলক্ষ্যতে ত্বয়ি । অধর্ম্মশ্চানুবন্ধোহত্র ঘোরঃ প্রাণহরো  
মহান্ ॥ ১১ ॥ অনিষ্ঠশ্চানিমিত্তশ্চ ন চ শক্যশ্চ ভারত । তমনর্থং পরিহরন্মাত্ম-  
শ্রেয়ঃ করিষ্যসি ॥ ১২ ॥ ভ্রাতৃণামথ ভৃত্যানাং মিত্রাণাঞ্চ পরস্তপ । অধর্ম্মাদ-  
যশস্য্যচ্চ কর্ম্মণস্ত্বং প্রমোক্ষ্যসে ॥ ১৩ ॥ প্রাজ্ঞৈঃ শূরৈর্ম্মহোৎসাহৈরাগ্নবন্দি-

বহুশ্রুতৈঃ । সন্ধুৎস্ব পুরুষব্যায়ৈঃ পাণ্ডবৈর্ভরতর্ষভ ॥ ১৪ ॥ তদ্বিতঞ্চ প্রিয-  
 ঠৈব ধৃতরাষ্ট্রস্য ধীমতঃ । পিতামহস্য দ্রোণস্য বিদুরস্য মহামতেঃ ॥ ১৫ ॥ রূপস্য  
 সৌমদত্তস্য বাহ্লীকস্য চ ধীমতঃ । অশ্বখান্নো বিকণস্য সঞ্জয়স্য বিবিংশতেঃ ॥ ১৬ ॥  
 জ্ঞাতীনাক্ষৈব ভূষিষ্ঠং মিত্রাণাঞ্চ পরস্তপ । শমে শর্ম ভবেত্তাত সর্বস্য জগ-  
 তস্তথা ॥ ১৭ ॥ হীমানসি কুলে জাতঃ শ্রুতবাননৃশংসবান্ । তিষ্ঠ তাত পিতুঃ  
 শাস্ত্রে মাতুশ্চ ভরতর্ষভ ॥ ১৮ ॥ এতচ্ছ্রেষো হি মন্যন্তে পিতা যচ্ছাস্তি ভারত ।  
 উত্তমাপদাতঃ সর্বঃ পিতুঃ স্মরতি শাসনম্ ॥ ১৯ ॥ রোচতে তে পিতুস্তাত পাণ্ডবৈঃ  
 সহ সঙ্গমঃ । সামাত্যস্য কুরুশ্রেষ্ঠ তদুভ্যং তাত রোচতাম্ ॥ ২০ ॥ শ্রুত্বা যঃ  
 সুহৃদাং শাস্ত্রং মর্ত্যো ন প্রতিপদ্যতে । বিপাকান্তে দহত্যেনং কিম্পাকমিব ভঙ্কি-  
 তম্ ॥ ২১ ॥ যস্ত নিঃশ্রেয়সং বাক্যং মোহান প্রতিপদ্যতে । স দীর্ঘসূত্রো হী-  
 নার্থঃ পশ্চাত্তাপেন যুজ্যতে ॥ ২২ ॥ যস্ত নিঃশ্রেয়সং শ্রুত্বা প্রাক্ তদেবাভি-  
 পদ্যতে । আত্মনো মতমুৎসৃজ্য স লোকে সুখমেধতে ॥ ২৩ ॥ যোহর্থকামস্য  
 বচনং প্রাতিকূল্যান্ন মৃষ্যতে । শৃণোতি প্রতিকূলানি দ্বিষতাং বশমেতি সঃ ॥ ২৪ ॥  
 সতাং মতমতিক্রম্য যোহসতাং বর্ততে মতে । শোচন্তি ব্যসনে তস্য সুহৃদো নচি-  
 রাদিব ॥ ২৫ ॥ মুখ্যানমাত্যানুৎসৃজ্য যো হি হীনান্নিষেবতে । স ঘোরামা-  
 পদং প্রাপ্য নোত্তারমধিগচ্ছতি ॥ ২৬ ॥ যো মৎসরী হৃথাচারো ন শ্রোতা  
 সুহৃদাং সতাম্ । পরান্ বৃণীতে স্বান্ দ্বেষ্টি তং গোস্ত্যজতি ভারত ॥ ২৭ ॥ স হুং  
 বিরূধ্য তৈর্বীরৈরন্যেভ্যস্ত্রাণমিচ্ছসি । অশিষ্টেভ্যোহসমর্থেভ্যো মূঢ়েভ্যো ভরত-  
 র্ষভ ॥ ২৮ ॥ কো হি শক্রসমান্ জ্ঞাতীনতিক্রম্য মহারথান্ । অন্যেভ্যস্ত্রাণমাশং-  
 সেহৃদন্যো ভুবি মানবঃ ॥ ২৯ ॥ জন্মপ্রভৃতি কৌন্তেয়া নিত্যং বিনিক্রুতাস্ত্বয়া । ন  
 চ তে জাতু কুপ্যন্তি ধর্ম্মাত্মানো হি পাণ্ডবাঃ ॥ ৩০ ॥ মিথ্যোপচরিতাস্তাত জন্ম-  
 প্রভৃতি পাণ্ডবাঃ । ত্বয়ি সম্যঙ্মহাবাহো প্রতিপন্ন্য যশস্বিনঃ ॥ ৩১ ॥ ত্বয়াপি  
 প্রতিপত্তব্যং তথৈব ভরতর্ষভ । স্বেষু বন্ধুষু মুখ্যেষু না মন্যুবশমন্নগাঃ ॥ ৩২ ॥ ত্রিব-  
 র্গযুক্তঃ প্রাজ্ঞানাং মারস্তো ভরতর্ষভ । ধর্ম্মার্থাবনুরূধ্যন্তে ত্রিবর্গাসন্তবে নরাঃ ॥ ৩৩ ॥  
 পৃথক্ চ বিনিবিষ্টানাং ধর্ম্মং ধীরোহনুরূধ্যতে । মধ্যমোহর্থং কলিং বালং কাম-  
 মেবানুরূধ্যতে ॥ ৩৪ ॥ ইন্দ্রিযৈঃ প্রাক্কৃতো লোভাৎ ধর্ম্মং বিপ্রজহাতি যঃ ।  
 কামার্থাবনুপাষেন লিপ্সমানো বিনশ্যতি ॥ ৩৫ ॥ কামার্থো লিপ্সমানস্ত ধর্ম্মমে-  
 বাদিতশ্চরেৎ । ন হি ধর্ম্মাদপৈত্যর্থঃ কামো বাপি কদাচন ॥ ৩৬ ॥ উপাষং  
 ধর্ম্মমেবাহস্ত্রিবর্গস্য বিশাম্পতে । লিপ্সমানো হি তেনাশু কক্ষেহগ্নিরিব বর্দ্ধতে ॥ ৩৭ ॥

स द्वं तातान्नुपायेन लिप्ससे भरतर्षभ । आधिराज्यं महद्दीप्तं प्रथितं  
 सर्वराजसु ॥ ७८ ॥ आत्मानं तक्षति ह्येष वनं परशुना यथा । षःसम्यग्वर्त-  
 मानेषु मिथ्या राजन् प्रवर्तते ॥ ७९ ॥ न तस्य हि मतिं छिन्द्यादस्य नेच्छेत्  
 पराभवम् । अविच्छिन्नमतेरस्य कल्याणे वीर्यते मतिः ॥ ८० ॥ आत्मान्नाव-  
 मन्येत त्रिषु लोकेषु भारत । अप्यन्यं प्राकृतं कश्चिं किमु तान् पाण्डवर्ष-  
 तान् ॥ ८१ ॥ अमर्षवशमापन्नो न किञ्चिद्धृष्यते नरः । छिद्यते ह्याततं सर्वं  
 प्रमाणं पश्य भारत ॥ ८२ ॥ श्रेयसे दुर्जनान्नात पाण्डवैः सह सङ्गतम् । तैर्हि सं-  
 प्रीयमाणस्त्वं सर्वान् कामानवाप्स्यसि ॥ ८३ ॥ पाण्डवैर्निर्जितांभूमिं बुझानो  
 राजसत्तम । पाण्डवान् पृष्ठतः कृत्वा द्राणमाशंससेहन्यतः ॥ ८४ ॥ दुःशासने  
 द्बिषहे कर्णे चापि च सौबले । तेषैश्वर्यं समाधाय भूतिमिच्छसि भारत ॥ ८५ ॥  
 न तैस्ते तव पर्याप्ताः ज्ञाने धर्मार्थवोस्तथा । विक्रमे चाप्यपर्याप्ताः पाण्डवान्  
 प्रति भारत ॥ ८६ ॥ न हीमे सर्वराजानः पर्याप्ताः सहितास्तथा । क्रुद्धस्य भीम-  
 सेनस्य प्रेक्षितुं मुखमाहवे ॥ ८७ ॥ इदं सन्निहितं तात समग्रं पार्थिवं  
 बलम् । अयं भीमस्तथा द्रोणः कर्णश्चायं तथा रूपः ॥ ८८ ॥ भूरिशबाः सौमदन्ति-  
 रश्वथामा जयद्रथः । अशक्ताः सर्वेऽवैते प्रतियोद्धुं धनञ्जयम् ॥ ८९ ॥ अजेयो-  
 हर्जूनः क्रुद्धः सर्वैरपि सुरासुरैः । नान्नुषैरपि गन्धर्वैर्मा युद्धे चेत आधि-  
 थाः ॥ ९० ॥ दृश्यतां वा पुमान् कश्चित् समग्रे पार्थिवे बले । योऽर्जूनं  
 समरे प्राप्य स्वस्तिमानाब्रजेदहान् ॥ ९१ ॥ किन्तु जनक्येनेह कृतेन भरत-  
 र्षभ । यस्मिन् जिते जितं ते स्यात्पुमानेकः स दृश्यताम् ॥ ९२ ॥ षः स देवान्  
 सगन्धर्वान् सयक्षासुरपन्नगान् । अजयत् पाण्डवप्रस्थे कस्तुं युध्येत मानवः ॥ ९३ ॥  
 तथा विराटनगरे श्रवते महदद्भुतम् । एकस्य च बहूनां पर्याप्तं तन्निदर्शनम् ॥ ९४ ॥  
 युद्धे येन महादेवः साक्षात् सन्तोषितः शिवः । तमजेयमनाधृष्यं विजेतुं  
 जिष्मन्त्युतम् । आशंसमीह समरे वीरनर्जूनमूर्जितम् ॥ ९५ ॥ मद्दितीयं पुनः  
 पार्थं कः प्रार्थयितुमर्हति । युद्धे प्रतीपमायास्तमपि साक्षात् पुरन्दरः ॥ ९६ ॥  
 बाह्यानुद्धरेद्धूमिं दहेत् क्रुद्ध इमाः प्रजाः । पातवेत्त्रिदिवादेवान् योऽर्जूनं  
 समरे जयेत् ॥ ९७ ॥ पश्य पुत्रांस्तथा द्रातून् ज्ञातीन् सयस्मिनस्तथा । द्वन्द्वकृतेन  
 विनश्येयुरिमे भरतसत्तमाः ॥ ९८ ॥ अस्तु शेषं कौरवाणां मा पराभूदिदं  
 कुलम् । कुलघ्न इति नोच्येथा नष्टकैर्भिर्नराधिप ॥ ९९ ॥ त्वामेव स्थापयिष्यन्ति  
 यौवराज्ये महारथाः । महाराज्ये च पितरं धृतराष्ट्रं जनेश्वरम् ॥ १०० ॥ मा

তাত শ্ৰিয়মাযান্তীমবমংস্থাঃ সমুদ্যতাম্ । অর্কং প্রদায পার্থেভ্যো মহতীংশ্ৰিয়-  
মাপ্যসি ॥ ৬১ ॥ পাণ্ডবেঃ সঙ্গমং কৃত্বা কৃত্বা চ সুহৃদাং বচঃ । সশ্ৰীযমাণো  
মিত্ৰৈশ্চ চিরং ভদ্রাণ্যবাপ্যসি ॥ ৬২ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্গানপর্বণি শ্রীকৃষ্ণবাক্যে চতুর্বিংশ-  
শত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১২৪ ॥



বৈশম্পায়ন উবাচ । ততঃ শান্তনবো ভীষ্মো দুৰ্য্যোধনমমর্ষণম্ । কেশবস্য বচঃ  
শ্রুত্বা প্রোবাচ ভরতর্ষভ ॥ ১ ॥ কৃষ্ণেন বাক্যমুক্তোহসি সুহৃদা শমমিচ্ছতা ।  
অনুপদ্যস্ব তত্তাত মা মন্যুবশমম্বগাঃ ॥ ২ ॥ অকৃত্বা বচনং তাত কেশবস্য মহা-  
অনঃ । শ্রেয়ো ন জাতু ন সুখং ন কল্যাণমবাপ্যসি ॥ ৩ ॥ ধর্ম্ম্যমর্থ্যং মহাবাহু-  
রাহু স্বাং তাত কেশবঃ । তমর্থমভিপদ্যস্ব মা রাজমীনশঃ প্রজাঃ ॥ ৪ ॥ জ্বলিতাং  
ভ্রমিমাং লক্ষ্মীং ভারতীং সর্বরাজসু । জীবতো ধৃতরাষ্ট্রস্য দৌরাঅ্যাদ্ভুঃশ-  
যিষ্যসি ॥ ৫ ॥ আত্মানঞ্চ সহামাত্যং সপুল্ভ্রাতৃবান্ধবম্ । অহমিত্যনযা বুদ্ধ্যা  
জীবিতাদ্ভুঃশযিষ্যসি ॥ ৬ ॥ অতিক্রামন্ কেশবস্য তথ্যং বচনমর্থবৎ । পিতুশ্চ  
ভরতশ্চেষ্ট বিদুরস্য চ ধীমতঃ ॥ ৭ ॥ মা কুলম্নঃ কুপুরুষো দুর্ম্মতিঃ কাপথঙ্গমঃ ।  
মাতরং পিতরশ্চৈব মা মজ্জীঃ শোকমাগরে ॥ ৮ ॥ অথ দ্রোণোহব্রবীত্তত্র দুৰ্য্যো-  
ধনমিদং বচঃ । অমর্ষবশমাপন্নং নিশ্বসন্তুং পুমঃপুনঃ ॥ ৯ ॥ ধর্ম্মার্থযুক্তং  
বচনমাহু স্বাং তাত কেশবঃ । তথা ভীষ্মঃ শান্তনবস্তজ্জুঘস্ব নরাধিপ ॥ ১০ ॥  
প্রাজ্ঞো মেধাবিনৌ দান্তাবর্থকামৌ বহুশ্রতো । আহতুস্ত্বাং হিতং বাক্যং তজ্জ-  
ঘস্ব নরাধিপ ॥ ১১ ॥ অনুতিষ্ঠ মহাপ্রাজ্ঞ কৃষ্ণভীষ্মৌ যদূচতুঃ । মাধবং বুদ্ধি-  
মোহেন মাবমংস্থাঃ পরস্তপ । ১২ ॥ যে স্বাং প্রোহসাহযন্ত্যেতে নৈতে কৃত্য্যয  
কর্হিচিৎ । বৈরং পরেষাং গ্রীবাযাংপ্রতিমোক্ষ্যন্তি সংযুগে ॥ ১৩ ॥ মা জীযনঃ  
প্রজাঃ সর্বাঃ পুলান্ ভ্রাতুংস্তথৈব চ । বাসুদেবাজ্জুনৌ যত্র বিক্র্যেজেযং বলং  
হি তৎ ॥ ১৪ ॥ এতচ্চৈব মতং সত্যং সুহৃদোঃ কৃষ্ণভীষ্মযোঃ । যদি নাদাস্যসে  
তাত পশ্চাত্তপ্যসি ভারত ॥ ১৫ ॥ যথোক্তং জামদগ্ন্যেন ভূযানেষ ততোহজ্জনঃ ।  
কৃষ্ণে হি দেবকীপুত্রো দেবৈরপি দুরাসদঃ ॥ ১৬ ॥ কিল্তে সুখপ্রিষেণেহ প্রো-  
ক্তেন ভরতর্ষভ । এতত্তে সর্বমাখ্যাং যথেষ্টসি তথা কুরু । ন হি স্বামুৎসহে বক্তং  
ভূযো ভরতসত্তম ॥ ১৭ ॥ বৈশম্পায়ন উবাচ । তস্মিন্ বাক্যান্তরে বাক্যং কৃত্বা-  
পি বিদুরোহব্রবীৎ । দুৰ্য্যোধনমভিপ্রেক্ষ্য ধার্ত্তরাষ্ট্রমমর্ষণম্ ॥ ১৮ ॥ দুৰ্য্যোধন

न शोचामि ह्यमहं भरतर्षभ । इमो तु रक्षो शोचामि गान्धारीं पितरक्ष  
 ते ॥ १९ ॥ यावनाथो चरिष्येते ह्यथा नाथेन दुर्जना । हतमित्रो हतामात्रो  
 लनपक्षाविवाण्डजो ॥ २० ॥ तिमूकौ विचरिष्येते शोचन्तो पृथिवीमिमाम् ।  
 कुलघ्नमीदृशं पापं जनविद्धा कुपुरुषम् ॥ २१ ॥ अथ दुर्योधनं राजा धृ-  
 तराष्ट्रो ह्यभ्युत्थत । आसीनं भ्रातृभिः सार्क्षं राजभिः परिवारितम् ॥ २२ ॥  
 दुर्योधन निबोधेदं शौरिणोक्तं महात्मना । आदत्तं शिवमत्यस्तं योग-  
 केमं वदत्ययम् ॥ २३ ॥ अनेन हि सहायेन कुर्येनाक्लिष्टकर्मणा । इष्टान्  
 सर्वानभिप्रायान् प्राप्स्यामः सर्वराजसु ॥ २४ ॥ स संहितः केशवेन गच्छ तत्र  
 युधिष्ठिरम् । चर स्वस्त्ययनं कृत्स्नं भरतानामनामयम् ॥ २५ ॥ वासुदेवेन तीर्थेन  
 तत्र गच्छस्व संशमम् । कालप्राप्तमिदं मन्ये मा ह्यं दुर्योधनातिगाः ॥ २६ ॥  
 शमकेन्द्राचमानं ह्यं प्रत्याख्यास्यसि केशवम् । ह्यदर्थमभिजगन्ननुं न तवास्त्य-  
 परा भवः ॥ २७ ॥

इत्युद्योगपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि दुर्योधनं प्रति भीष्मादिवाक्ये  
 पञ्चविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १२५ ॥



वैशम्पायन उवाच । धृतराष्ट्रवचः श्रुत्वा भीष्मद्रोणो समर्थ्य तौ । दुर्योधन-  
 मिदं वाक्यमुचतुः शासनातिगम् ॥ १ ॥ यावत् कृष्णवसन्नक्षो यावन्निष्ठति गाण्डि-  
 वम् । यावद्वैश्या न मेधाग्नौ ज्जुहोतीह द्विषद्वलम् ॥ २ ॥ यावन्न प्रेक्षते  
 क्रुद्धः सेनां तव युधिष्ठिरः । हीनिषेवो महेश्वासस्तावच्छान्यतु वैशसम् ॥ ३ ॥  
 यावन्न दृश्यते पार्थः श्वेषनीकेष्ववस्थितः । भीमसेनो महेश्वासस्तावच्छान्यतु वैश-  
 सम् ॥ ४ ॥ यावन्न चरते मार्गान् पृथनामभिधर्षयन् । भीमसेनो गदापाणिस्तावत्  
 संशाम्य पाण्डवैः ॥ ५ ॥ यावन्न शतघत्याजो शिरांसि गजयोधिनाम् । गदया  
 वीरघातिन्या फलानीव वनस्पतेः । कालेन परिपक्वानि तावच्छान्यतु वैश-  
 सम् ॥ ६ ॥ नकुलः सहदेवश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्वतः । विराटश्च शिखण्डी च शैशु-  
 पालिश्च दंशिताः ॥ ७ ॥ यावन्न प्रविशन्त्येते नक्रा इव महार्णवम् । कृतान्त्राः  
 क्षिप्रमस्यस्तस्तावच्छान्यतु वैशसम् ॥ ८ ॥ यावन्न सूकुमारेषु शरीरेषु महीक्षिताम् ।  
 गार्क्षपत्राः पतन्त्युग्रान्तावच्छान्यतु वैशसम् ॥ ९ ॥ चन्दनागुरुदिक्क्षेषु हारनिष्क-  
 धरेषु च । नोरःसु यावद्वेधाधानां महेश्वासैर्महेश्वरः ॥ १० ॥ कृतान्त्रेः क्षिप्र-  
 मस्यन्तिदूरपातिभिरायसाः । अबिलक्ष्यन्निपात्यन्ते तावच्छान्यतु वैशसम् ॥ ११ ॥

অভিবাদযমানং স্বাং শিরসা রাজকুঞ্জরঃ । পানিত্যাং প্রতিগৃহ্নাতু ধর্মরাজো  
 যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ১২ ॥ ধজাক্ষুশপতাকাঙ্কং দক্ষিণন্তে সুদক্ষিণঃ । স্কন্ধে নিক্ষিপতাং  
 বাহুং শান্তয়ে ভরতর্ষভ ॥ ১৩ ॥ রত্নৌষধিসমেতেন রক্তাঙ্গুলিতলেন চ । উপবি-  
 ক্তস্য পৃষ্ঠন্তে পানিনা পরিমাজ্জতু ॥ ১৪ ॥ শালস্কন্ধো মহাবাহুস্বাং স্বজানো  
 রকোদরঃ । সান্নাভিবদতাঞ্চাপি শান্তয়ে ভরতর্ষভ ॥ ১৫ ॥ অঙ্কুনেন যমাত্যাঞ্চ  
 ত্রিভিত্তৈরভিবাদিতঃ । মুন্ধিতান্ সমুপাত্রায প্রেমাভিবদ পার্থিব ॥ ১৬ ॥ দৃষ্ট্বা স্বাং  
 পাণ্ডবৈর্দীরৈত্রাত্তিঃ সহ সঙ্গতম্ । যাবদানন্দজাশ্চাপি প্রমুঞ্চন্ত নরাধিপাঃ ॥ ১৭ ॥  
 যুষ্যতাং রাজধানীষু সর্বসম্পন্নহীক্ষিতাম্ । পৃথিবী ভ্রাতৃভাবেন ভূজ্যতাং বিজ-  
 রো ভব ॥ ১৮ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি ভগবদ্গানপর্বনি ভীষ্মদ্রোণবাক্যে ষড়্বিংশত্য-  
 ধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১২৬ ॥



বৈশম্পায়ন উবাচ । শ্রুত্বা দুর্ব্যোধনো বাক্যমপ্রিযং কুরুসংসদি । প্রতুবাচ  
 মহাবাহুং বাসুদেবং যশস্বিনম্ ॥ ১ ॥ প্রসমীক্ষ্য ভবানেতদ্বক্তৃমহতি কেশব ।  
 মামেব হি বিশেষেণ বিভাষ্য পরিগর্হসে ॥ ২ ॥ ভক্তিবাদেন পার্থানামকস্মান্মধু-  
 সূদন । ভবান্ গর্হ্যতে নিত্যং কিং সমীক্ষ্য বলাবলম্ ॥ ৩ ॥ ভবান্ কভ্রা চ রাজা  
 বাপ্যাচার্য্যো বা পিতামহঃ । মামেব পরিগর্হন্তে নান্যং কঞ্চন পার্থিবম্ ॥ ৪ ॥  
 ন চাহং লক্ষ্যে কঞ্চিদ্যভিচারমিহাত্মনঃ । অথ সর্বে ভবন্তো মাং বিদ্বিষন্তি সরা-  
 জকাঃ ॥ ৫ ॥ ন চাহং কঞ্চিদত্যর্থমপরাধমরিন্দম । বিচিন্তয়ন্ প্রপশ্যামি সুসূক্ষ্ম-  
 মপি কেশব ॥ ৬ ॥ প্রিযাত্যুপগতে দ্যুতে পাণ্ডবা মধুসূদন । জিতাঃ শকুনিনা  
 রাজ্যং তত্র কিং মম দুষ্কৃতম্ ॥ ৭ ॥ যৎ পুনর্দ্রবিনং কিঞ্চিৎত্রাজীযন্ত পাণ্ডবাঃ ।  
 তেভ্য এবাত্যমুজ্জাতং তত্তদা মধুসূদন ॥ ৮ ॥ অপরাধে ন চাস্মাকং যত্তে হৃক্ষ-  
 পরাজিতাঃ । অজেযা জযতাং শ্রেষ্ঠ পার্থাঃ প্রব্রজিতা বনম্ ॥ ৯ ॥ কেন বা-  
 প্যপবাদেন বিরুদ্ধ্যন্ত্যরিভিঃ সহ । অশক্তাঃ পাণ্ডবাঃ কৃষ্ণাঃ প্রহৃষ্টাঃ প্রত্যমিত্র-  
 বৎ ॥ ১০ ॥ কিনস্মাভিঃ কৃতং তেষাং কস্মিন্ বা পুনরাগমি । ধার্তরাষ্ট্রান্ জি-  
 য়াংসন্তি পাণ্ডবাঃ সৃঞ্জয়ৈঃ সহ ॥ ১১ ॥ ন চাপি বয়মুগ্রেণ কস্মিণা বচনেন বা ।  
 বিত্রস্তাঃ প্রণমামেহ ভবাদপি শতক্রতুম্ ॥ ১২ ॥ ন চ তং কৃষ্ণং পশ্যামি স্কল-  
 ধর্মমনুষ্ঠিতম্ । উৎসহেত যুধা জেতুং যো নঃ শত্রুনিবর্হণ ॥ ১৩ ॥ ন হি ভীষ্ম-  
 রূপদ্রোণাঃ সকা মধুসূদন । দেবৈরপি যুধা জেতুং শক্যাঃ কিমুত পাণ্ডবৈঃ ॥ ১৪ ॥



स्वधर्ममनुपश्यान्तो यदि माधव संयुगे । अस्त्रेण निधनं काले प्राप्स्यामः स्वर्गमेव  
 तं ॥ १५ ॥ मुख्यैश्चैवैव नो धर्मः क्लिष्याणां जनार्दन । यच्छयीमहि संग्रामे  
 शरतल्लगता वयम् ॥ १६ ॥ ते वयं वीरशयनं प्राप्स्यामो यदि संयुगे । अप्रण-  
 त्मैव शत्रूणां न नस्तप्याति माधव ॥ १७ ॥ कश्च जातु कुले जातः क्लृप्तधर्मेण  
 वर्तयन् । त्वाद्दृष्टिं समीक्ष्यैव प्रणमेदिह कस्यचि ॥ १८ ॥ उद्वेष्टेदेव न  
 नमेदुद्यमो ह्येव पौरुषम् । अप्यपर्वणि भजेत न नमेदिह कस्यचि ॥ १९ ॥  
 इति मातङ्गवचनं परीप्सन्ति हितेऽसवः । धर्माय चैव प्रणमेद्वाक्कणेभ्यश्च मद्दि-  
 धः ॥ २० ॥ अचिन्तयन् कश्चिदन्यं यावज्जीव्यं तथाचरेत् । एष धर्मः क्लिष्याणां  
 मत्तमेतच्च मे सदा ॥ २१ ॥ राज्यांश्चाभ्यनुज्जातो धो मे पित्रा पुराभवत् ।  
 न स लभ्यः पुनर्जातु मयि जीवति केशव ॥ २२ ॥ यावत्त राजा ध्रियते धृतराष्ट्रे  
 जनार्दन । न्यस्तशस्त्रा वयं ते वाप्यपजीवाम माधव ॥ २३ ॥ अप्रदेयं पुरा-  
 दत्तं राज्यं परवतो मम । अज्जानाद्वा त्वाद्वापि मयि बाले जनार्दन ॥ २४ ॥  
 न तदद्य पुनर्लभ्यं पाण्डुवैरुषिर्नन्दन । ध्रियमाणे महाबाहो मयि सम्प्रति के-  
 शव ॥ २५ ॥ यावन्नि तीक्ष्णया सूच्या विधेयदग्नेण केशव । तावदप्यपरित्याज्यं  
 भुमेर्नः पाण्डवान् प्रति ॥ २६ ॥

इत्युद्योगपर्वणि भगवद्गीतानपर्वणि दुर्योधनवाक्ये सप्तविंशत्य-

धिकशततमोऽध्यायः ॥ १२१ ॥



वैशम्पायन उवाच । ततः प्रहस्य दाशार्हः क्रोधपर्याकुलेक्षणः । दुर्योधन-  
 मिदं वाक्यमब्रवीत् कुरूसंसदि ॥ १ ॥ लप्स्यसे वीरशयनं काममेतदवाप्स्यसि ।  
 स्थिरो भव सहामात्यो विमर्दे भविता महान् ॥ २ ॥ यच्छेव्यं मन्यसे मूढ न मे  
 कश्चिद्द्व्यतिक्रमः । पाण्डुवेषिति तं सर्वं निबोधत नराधिपाः ॥ ३ ॥ शिष्या  
 सन्तप्यमानेन पाण्डवानां महात्मनाम् । त्वाद्दुर्मन्त्रितं द्यूतं सौबलेन च भा-  
 रत ॥ ४ ॥ कथञ्च ज्ञातयस्तात श्रेयांसः साधु सम्यताः । तथान्यायमुपस्थातुं  
 जिक्केणाजिक्कचारिणः ॥ ५ ॥ अक्कद्यूतं महाप्राज्ञ सतां मतिविनाशनम् । असतां  
 तत्र जायन्ते भेदाश्च व्यसनानि च ॥ ६ ॥ तदिदं व्यसनं घोरं त्वाद्द्यूतमुखं  
 कृतम् । असमीक्ष्य सदाचारैः सार्द्धं पापान्बुवस्कनैः ॥ ७ ॥ कश्चान्यो ब्राह्-  
 भार्यां वै विप्रकर्तुं तथाहति । आनीय च सतां वक्तुं यथोक्ता द्रौपदी  
 त्वा ॥ ८ ॥ कुलीना शीलसम्पन्ना प्राणेभ्योऽपि गरीयसी । महिषी पाण्डुपु-

ভ্রাণাং তথা বিনিকৃতা ত্বয়া ॥ ৯ ॥ জানন্তি কুরবঃ সর্বে যথোক্তাঃ কুরুসংসদি ।  
 দুঃশাসনেন কৌন্তেয়াঃ প্রব্রজন্তঃ পরন্তপাঃ ॥ ১০ ॥ সম্যগ্রভেষলুক্লেষু সততং  
 ধর্মচারিষু । শ্বেষু বন্ধুযু কঃ সাধুশ্চরেদেবনসাম্প্রতম্ ॥ ১১ ॥ নৃশংসানামনা-  
 র্য্যাণাং পুরুষাণাঞ্চ ভাষণম্ । কর্ণদুঃশাসনাত্যাঞ্চ ত্বয়া চ বহুশঃ কৃতম্ ॥ ১২ ॥ সহ  
 মাত্রা প্রদক্ষুং তান্ বালকান্ বারণাবতে । আস্থিতঃ পরমং যত্নং ন সমৃদ্ধঞ্চ  
 তত্ত্ব ॥ ১৩ ॥ উষুশ্চ সূচিরং কালং প্রচ্ছমাঃ পাণ্ডবাস্তদা । মাত্রা সতৈকচক্রাযাং  
 ব্রাহ্মণস্য নিবেশনে ॥ ১৪ ॥ বিবেণ সর্পবন্ধৈশ্চ যতিতাঃ পাণ্ডবাস্ত্বয়া । সর্বো-  
 পায়ৈর্ষিনাশায় ন সমৃদ্ধঞ্চ তত্ত্ব ॥ ১৫ ॥ এবংবুদ্ধিঃ পাণ্ডবেষু মিথ্যারুত্তিঃ সদা  
 ভবান্ । কথন্তে নাপরাধোহস্তু পাণ্ডবেষু মহাত্মসু ॥ ১৬ ॥ যচ্চৈভ্যো যাচমা-  
 নেভ্যঃ পিত্র্যমংশং ন দিৎসসি । তচ্চ পাপ প্রদাতাসি ভ্রষ্টৈশ্বর্য্যো নিপাতি-  
 তঃ ॥ ১৭ ॥ কৃত্বা বহুন্যকার্য্যাণি পাণ্ডবেষু নৃশংসবৎ । মিথ্যারুত্তিরনার্য্যঃ সমদ্য  
 বিপ্রতিপদ্যসে ॥ ১৮ ॥ মাতাপিতৃত্যাং ভীষ্মেণ দ্রোণেন বিদরেণ চ । শাম্যেতি  
 মুহুরুক্তোহসি ন চ শাম্যসি পার্থিব ॥ ১৯ ॥ শনে হি সুমহাল্লাভস্ত্বব পার্থস্য  
 চোভযোঃ ! ন চ রোচযসে রাজন্ কিমন্যদুঙ্কিলাষবাৎ ॥ ২০ ॥ ন শর্ম্ম প্রাপ্যসে  
 রাজমুৎক্রম্য সুহৃদাং বচঃ । অধর্ম্ম্যমযশস্যঞ্চ ক্রিয়তে পার্থিব ত্বয়া ॥ ২১ ॥ বৈশ-  
 ম্পায়ন উবাচ । এবং ক্রবতি দাশাহে দুর্ব্যোধনমমর্ষণম্ । দুঃশাসন ইদংবাক্যম-  
 ব্রবীৎ কুরুসংসদি ॥ ২২ ॥ ন চেৎ সন্ধ্যাস্যসে রাজন্ স্বেন কামেন পাণ্ডবৈঃ ।  
 বদ্ধা কিল ত্বাং দাস্যন্তি কুন্তীপুত্রায় কৌরবাঃ ॥ ২৩ ॥ বৈকর্তনং ত্বাঞ্চ মাঞ্চ  
 ত্রীনেনান্ মনুজর্ষভ । পাণ্ডবেভ্যঃ প্রদাস্যন্তি ভীষ্মো দ্রোণঃ পিতা চ তে ॥ ২৪ ॥  
 বৈশম্পায়ন উবাচ । ভ্রাতুরেতদ্বচঃ শ্রুত্বা ধার্ত্তরাষ্ট্রঃ সুযোধনঃ । ক্রুদ্ধঃ প্রাতিষ্ঠতো-  
 খায় মহানাগ ইব শ্বসন্ ॥ ২৫ ॥ বিদ্রং ধৃতরাষ্ট্রঞ্চ মহারাজঞ্চ বাহ্লিকম্ । রূপঞ্চ  
 সোমদত্তঞ্চ ভীষ্মং দ্রোণং জনার্দনম্ ॥ ২৬ ॥ সর্ষীনেতাননাদৃত্য দুর্ম্মতির্নির-  
 পত্রপঃ । অশিষ্ঠবদমর্ষ্যাদৌ মানী মান্যাবমানিতা ॥ ২৭ ॥ তং প্রস্থিতমভি-  
 প্রেক্ষ্য ভ্রাতরো মনুজর্ষভম্ । অনুজগ্মুঃ সহামাত্যা রাজানশ্চাপি সর্ষশঃ ॥ ২৮ ॥  
 সভাষামুখিতং ক্রুদ্ধং প্রস্থিতং ভ্রাতৃভিঃ সহ । দুর্ব্যোধনমভিপ্রেক্ষ্য ভীষ্মঃ শান্ত-  
 নবোহব্রবীৎ ॥ ২৯ ॥ ধর্ম্মার্থাবতিসংত্যজ্য সংরস্তং যোহনুমন্যতে । হসন্তি  
 ব্যসনে তস্য দুর্হৃদৌ নচিরাদিব ॥ ৩০ ॥ দুরাত্মা রাজপুত্রোহযং ধার্ত্তরাষ্ট্রোহনু-  
 পায়বিৎ । মিথ্যাভিমানী রাজ্যস্য ক্রোধলোভবশানুগঃ ॥ ৩১ ॥ কালপক্রমিদং  
 মন্যে সর্ষক্ষত্রং জনার্দন । সর্বে হনুহৃতা মোহাৎ পার্থিবাঃ সহ মন্ত্রিভিঃ ॥ ৩২ ॥

वैशम्पायन उवाच । भीष्मस्यार्थं वचः श्रुत्वा दाशार्हः पुङ्कुरेक्षणः । भीष्मद्रोण-  
 मुखान् सर्वानभ्यभाषत वीर्यवान् ॥ ७३ ॥ सर्वेषां कुरूवृद्धानां महानयमति-  
 क्रमः । प्रसह्य मन्दमैश्वर्ये न निषच्छत यज्ञपम् ॥ ७४ ॥ तत्र कार्यमहं मन्ये  
 प्राप्सुकालमरिन्दमाः । क्रियमाणे भवेच्छ्रेयस्तु सर्वं शृणुतानघाः ॥ ७५ ॥ प्रत्य-  
 क्रमेतद्भवतां यद्वक्ष्यामि हितं वचः । भवतामानुकूल्येन यदि रोचेत भार-  
 ताः ॥ ७६ ॥ भोजराजस्य वृद्धस्य दुराचारो हनाश्वान् । जीवतः पितृरै-  
 श्वर्यं हृत्वा मृत्युवशङ्कतः ॥ ७७ ॥ उग्रसेनसूतः कंसः परित्यक्तः स वाङ्मतेवः ।  
 ज्ञातीनां हितकामेन मया शस्तो महामृधे ॥ ७८ ॥ आह्वकः पुनरश्वभिर्ज्ञाति-  
 त्तिश्चापि संकृतः । उग्रसेनः क्रुतो राजा भोजराज्यस्य वर्द्धनः ॥ ७९ ॥ कंस-  
 मेकं परित्यज्य कुलार्थे सर्वथादवाः । मत्सूय सुखमेधस्ते भारतान्ककुरवः ॥ ८० ॥  
 अपि चाप्यवदद्राजन् परमेष्ठी प्रजापतिः । व्यते देवासुरे युद्धे ह्युद्यत्तथायुधेषु  
 च ॥ ८१ ॥ द्वैधीभूतेषु लोकेषु विनश्यत्सु च भारत । अब्रवीदृष्टिमान्देवो  
 भगवान् लोकभावनः ॥ ८२ ॥ पराभविष्यन्त्यसुरा दैतेया दानवैः सह । आ-  
 दित्या वसवो रुद्रा भविष्यन्ति दिवोकमः ॥ ८३ ॥ देवासुरमनुष्याश्च गन्धर्वोरग-  
 राक्षसाः । अस्मिन् युद्धे सुसंकुक्ता हनिष्यन्ति परस्परम् ॥ ८४ ॥ इति मत्सूयव्री-  
 द्धर्म्यं परमेष्ठी प्रजापतिः । वरुणाय प्रयच्छेत्तान् वद्धा दैतेयदानवान् ॥ ८५ ॥  
 एवमुक्तस्ततो धर्मो निषोगां परमेष्ठिनः । वरुणाय ददौ सर्वान् वद्धा दैतेय-  
 दानवान् ॥ ८६ ॥ तान् वद्धा धर्मपाशैश्च तैश्च पाशैर्द्धर्लेश्वरः । वरुणः सा-  
 गरे यत्ते । नित्यं रक्षति दानवान् ॥ ८७ ॥ तथा दुर्योधनं कर्णं शकुनिष्वापि  
 सौबलम् । वद्धा दुःशामनष्वापि पाण्डवेभ्यः प्रयच्छत ॥ ८८ ॥ तज्जेत् कुलार्थे पूरुषं  
 ग्रामस्यार्थे कुलं तज्जेत् । ग्रामं जनपदस्यार्थे आश्वार्थे पृथिवीं तज्जेत् ॥ ८९ ॥  
 राजन् दुर्योधनं वद्धा तर्तुः संशाम्य पाण्डवैः । त्र्यंशुकृते न विनश्येयुः क्लिष्याः  
 क्लिष्यथ ॥ ९० ॥

इत्युक्तो गपर्वणि भगवद्गीतानपर्वणि श्रीकृष्णवाक्ये अष्टाविंशत्यधिक-

शततमोऽध्यायः ॥ १२८ ॥



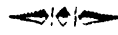
वैशम्पायन उवाच । कृष्णस्य तु वचः श्रुत्वा धृतराष्ट्रो जनेश्वरः । विदरं सर्व-  
 धर्मज्ञं त्वरमाणोऽभ्यभाषत ॥ ९१ ॥ गच्छ तात महाप्रज्जां गान्धारीं दीर्घदर्शिनीम् ।  
 आनयेह तया सार्द्धमनुनेष्यामि दुर्मतिम् ॥ ९२ ॥ यदि सापि दुराश्वानं शमयेद्दृष्ट-

চেতসম্ । অপি ক্লমস্য সুহৃদস্তিষ্ঠেম বচনে বয়ম্ ॥ ৩ ॥ অপি লোভাভিভূতস্য  
 পস্থানমনুদর্শয়েৎ । দুর্বুদ্ধৈর্দুঃসহায়স্য শমার্থং ক্রবতী বচঃ ॥৪॥ অপি নো ব্যসনং  
 ঘোরং দুর্ঘোষণকৃতং মহৎ । শমযেচ্চিররাত্রায় যোগক্ষেমবদব্যয়ম্ ॥৫॥ রাজ্ঞস্ত  
 বচনং শ্রুত্বা বিদুরো দীর্ঘদর্শিনীম্ । আনয়ামাস গান্ধারীং ধৃতরাষ্ট্রস্য শাস-  
 নাৎ ॥ ৬ ॥ ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । এষ গান্ধারি পুত্রস্তে দুরাত্না শাসনাতিগঃ । ঐ-  
 শ্বর্যলোভাদৈশ্বর্যং জীবিতঞ্চ প্রহাস্যতি ॥ ৭ ॥ অশিষ্ঠবদমর্যাদঃ পাপৈঃ সহ  
 দুরাত্নবান্ । সভায়া নিৰ্গতো মূঢ়ো ব্যতিক্রম্য সুহৃদচঃ ॥৮॥ বৈশম্পায়ন উবাচ ।  
 সা ভর্তুর্বচনং শ্রুত্বা রাজপুলী যশস্বিনী । অন্নিচ্ছন্তী মহচ্ছুষো গান্ধারী বাক্য-  
 মব্রবীৎ ॥ ৯ ॥ গান্ধার্যুবাচ । আনায়স্ব সূতঃ । কিপ্রং রাজ্যকামুকমাতুরম্ । ন  
 হি রাজ্যমশিষ্টেন শক্যং ধর্ম্মার্থলোপিনা । আপ্তুমাশ্বতং তথাপীদমবিনীতেন সর্ব-  
 থা ॥ ১০ ॥ ত্বং হেবাত্র ভৃশং গর্হো ধৃতরাষ্ট্র স্মৃতপ্রিয়ঃ । যো জানন্ পাপতা-  
 মস্য তৎপ্রজ্ঞামনুবর্তসে ॥ ১১ ॥ স এষ কামমনুষ্যভ্যাং প্রলক্কো মোহমাস্থিতঃ ।  
 অশক্যোহদ্য ত্বয়া রাজন্ বিনিবর্তয়িতুং বলাৎ ॥ ১২ ॥ রাজ্যপ্রদানে মূঢ়স্য  
 বালিশস্য দুরাত্ননঃ । দুঃসহায়স্য লুক্কস্য ধৃতরাষ্ট্রোহশ্মুতে ফলম্ ॥ ১৩ ॥ কথং  
 হি স্বজনে ভেদমুপেক্ষেত মহীপতিঃ । ভিন্নং হি স্বজনেন ত্বাং প্রহসিষ্যন্তি শত্র-  
 বঃ ॥ ১৪ ॥ যা হি শক্যা মহারাজ সান্না ভেদেন বা পুনঃ । নিস্তর্তুমাপদঃ শ্বেষু  
 দণ্ডং কস্তত্র পাতয়েৎ ॥ ১৫ ॥ বৈশম্পায়ন উবাচ । শাসনাকৃতরাষ্ট্রস্য দুর্ঘো-  
 ধনমমর্ষণম্ । মাতুশ্চ বচনাৎ ক্রভা সভাং প্রাবেশর্যৎ পুনঃ ॥ ১৬ ॥ স মাতুর্বচ-  
 নাকাজ্জ্ঞী প্রবিবেশ সভাং পুনঃ । অতিতামেক্ষণং ক্রোধান্নিশ্বসন্নিব পন্নগঃ ॥১৭॥  
 তং প্রবিষ্টমভিপ্রেক্ষ্য পুত্রমুৎপথমাস্থিতম্ । বিগর্হমাণা গান্ধারী শমার্থং বাক্য-  
 মব্রবীৎ ॥ ১৮ ॥ 'দুর্ঘোষণ নিবোধেদং বচনং মম পুত্রক । হিতং তে সান্ন-  
 বন্ধস্য তথাযত্যাং সুখোদয়ম্ ॥ ১৯ ॥ দুর্ঘোষণ ষদাহ ত্বাং পিতা ভরতমভ্র-  
 মঃ । ভীষ্মো দ্রোণঃ রূপঃ ক্রভা সুহৃদাং কুরু তদ্বচঃ ॥ ২০ ॥ ভীষ্মস্য তু পিতু-  
 শ্চৈব মম চাপচিতিঃ ক্রতা । ভবেৎ দ্রোণমুখানাঞ্চ সুহৃদাং শাম্যতা ত্বয়া ॥ ২১ ॥  
 ন হি রাজ্যং মহাপ্রাজ্ঞ স্মেন কামেন শক্যতে । অবাপ্তং রক্ষিতুঞ্চাপি ভোক্তুং  
 বা ভরতর্ষভ ॥ ২২ ॥ ন হবশ্যেন্দ্রিযো রাজ্যমশ্মীযাদীর্ঘমন্তরম্ । বিজিতাত্না তু  
 মেধাবী স রাজ্যমভিপালয়েৎ ॥ ২৩ ॥ কামক্রোধৌ হি পুরুষমর্থেভ্যো ব্যপ-  
 কষতঃ । তৌ তু শত্রু বিনির্জিত্য রাজা বিজযতে মহীম্ ॥ ২৪ ॥ লোকেশ্বরপ্রভু-  
 ত্বং হি মহদেতৎ দুরাত্নভিঃ । রাজ্যং নামেপ্সিতং স্থানমশক্যমভিরক্ষিতুম্ ॥ ২৫ ॥

इन्द्रियाणि महत् प्रेम्पुर्निषच्छेदधर्म्ययोः । इन्द्रियैर्निषत्ते बुद्धिर्बद्धते ह्यग्निरिवे-  
 क्तनैः ॥ २७ ॥ अविधेयानि हीमानि व्यापादयितुमप्यलम् । अविधेया इकादान्ता  
 ह्याः पथि कुसारथिम् ॥ २९ ॥ अविजित्य य आत्मानमम्यात्यान् विजिगीषते ।  
 अमित्रान् वाजितामात्यः सोऽवशः परिहीयते ॥ २८ ॥ आत्मानमेव प्रथमं  
 द्वेष्यरूपेण योजयेत् । ततोऽमात्यान्मित्रांश्च न मोष्यं विजिगीषते ॥ २९ ॥  
 वश्यान्प्रियं जितामात्यं धृतदण्डं विकारिषु । परीक्ष्यकारिणं वीरमत्यर्थं श्चीर्नि-  
 षेवते ॥ ३० ॥ स्फुद्राक्षेणेव जालेन वषावपिहिताबुधे । कामक्रोधौ शरी-  
 रस्थौ प्रज्ज्वानन्तौ विलुप्ततः ॥ ३१ ॥ याभ्यां हि देवाः स्वर्धातुः स्वर्गस्य पिदधु-  
 र्मुखम् । विभ्यतोऽनुपरागस्य कामक्रोधौ स्य बर्द्धितौ ॥ ३२ ॥ कामं क्रोधञ्च  
 लोभञ्च दम्भञ्च दर्पञ्च भूमिपः । सम्यग्बिजेतुं यो वेद स महीमभिजायते ॥ ३३ ॥  
 सततं निग्रहे युक्त इन्द्रियाणां तवेष्टपः । ङ्गमन्मर्थञ्च धर्मञ्च द्विषताञ्च परा-  
 भवम् ॥ ३४ ॥ कामाभिभूतः क्रोधाद्वा यो मिथ्या प्रतिपद्यते । श्वेषु चान्येषु  
 वा तस्य न सहाया भवन्त्युत ॥ ३५ ॥ एकैर्भूतेर्महाप्राङ्गैः शूरैररिनिवर्हणैः ।  
 पाण्डवैः पृथिवीं तात भोक्त्यसे सहितः सुधी ॥ ३६ ॥ यथा भीष्मः शान्तनवो  
 द्रोणश्चापि महारथः । आहतुस्तत तं सत्यमजेयौ क्रुषपाण्डवौ ॥ ३७ ॥ प्रप-  
 द्यस्व महाबाहूँ क्रुषमक्रिष्टकारिणम् । प्रसन्नो हि सुखाय स्यादुत्थोरेव केश-  
 वः ॥ ३८ ॥ सुहृदामर्थकामानां यो न तिष्ठति शासने । प्राज्ज्वानां क्रुतविद्या-  
 नां स नरः शत्रुनन्दनः ॥ ३९ ॥ न युक्ते तात कल्याणं न धर्मार्थो कृतः सुखम् ।  
 न चापि विजयो नित्यं ना युक्ते चेत आधिथाः ॥ ४० ॥ भीष्मेण हि महाप्राङ्ग  
 पित्रा ते बाह्लिकेन च । दत्तोऽंशः पाण्डुपुत्राणां तेदाद्वीतैररिन्दम ॥ ४१ ॥  
 तस्य चैतत् प्रदानस्य फलमद्यान्नुपश्यासि । यदुज्जेक पृथिवीं क्रुत्वां शूरैर्निहत-  
 कण्टकाम् ॥ ४२ ॥ प्रयच्छ पाण्डुपुत्राणां यथोचितमरिन्दम । यदीच्छसि सहामातेया  
 भोक्तुमर्द्धं महीक्षिताम् ॥ ४३ ॥ अलमर्द्धं पृथिव्यास्ते सहामात्यस्य जीवनम् ।  
 सुहृदां वचनेऽतिष्ठन् वशः प्राप्स्यसि भारत ॥ ४४ ॥ श्रीमद्भिरात्रवद्विस्तैर्बुद्धिम-  
 द्भिर्जितेन्द्रियैः । पाण्डवैर्विग्रहस्तुत अंशयेनहतः सुखात् ॥ ४५ ॥ निग्रहं सुहृ-  
 दां मनुष्यं शाधि राज्यं यथोचितम् । स्वमंशं पाण्डुपुत्रेभ्यः प्रदाय भरत-  
 र्षभ ॥ ४६ ॥ अलमर्द्धं निकारोऽयं त्रयोदश समाः क्रुतः । शमयेनं महाप्राङ्ग  
 कामक्रोधसमेधितम् ॥ ४७ ॥ न चैव शत्रुः पार्थानां वस्तुमर्थमतीप्ससि । सूत-  
 पुत्रो दृढक्रोधो ब्राता दुःशासनश्च ते ॥ ४८ ॥ भीष्मे द्रोणे रूपे कर्णे भीम-

সেনে ধনঞ্জয়ে । ধৃষ্টদ্যুম্নে সুসংক্রুদ্ধে ন স্যুঃ সর্বাঃ প্রজা ক্রবন্ ॥ ৪৯ ॥ অমর্ষ-  
বশমাপন্নো মা কুরুস্তাত জীঘনঃ । এষা হি পৃথিবী ক্রুৎস্না মা গমত্বৎকৃতে  
বধম্ ॥ ৫০ ॥ যচ্চ ত্বং 'মন্যসে মূঢ় ভীষ্মদ্রোণরূপাদযঃ । যোৎস্যন্তে সর্বশক্ত্যতি  
নৈতদদ্যোপপদ্যতে ॥ ৫১ ॥ সমং হি রাজ্যং প্রীতিশ্চ স্থানঞ্চ বিদিতান্ননাম্ ।  
পাণ্ডবেষ্থ যুয়াম্ ধর্ম্মস্তু ত্যধিকস্ততঃ ॥ ৫২ ॥ রাজপিণ্ডভষাদেতে যদি হাস্যন্তি  
জীবিতম্ । ন হি শক্ষ্যন্তি রাজানং যুধিষ্ঠিরমুদীক্ষিতুন্ ॥ ৫৩ ॥ ন লোভাদর্থ-  
সম্পাভিনরাণামিহ দৃশ্যতে । তদলং তাত লোভেন প্রশাম্য ভরতর্ষভ ॥ ৫৪ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্গানপর্বণি গান্ধারীবাক্যে একোনত্রিংশদধিক-  
শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১২৯ ॥



বৈশম্পায়ন উবাচ । তত্শু বাক্যমনাত্য সোৎপর্বণাত্তাষিতম্ । পুনঃ প্রতশ্শে  
সংরস্তাৎ সকাশমকৃতান্ননাম্ ॥ ১ ॥ ততঃ সভাষা নির্গম্য মন্ত্রযানাস কৌরবঃ ।  
সৌবলেন মতাক্ষেণ রাজ্ঞা শকুনিনা সহ ॥ ২ ॥ দুর্ব্যোধনস্য কর্ণস্য শকুনেঃ  
সৌবলস্য চ । দুঃশাসনচতুর্থানাং দিমাঙ্গীর্ষিচৈচ্চিতম্ ॥ ৩ ॥ পুরাযমশ্মান্ গৃহ্ণাতি  
ক্ষিপ্রকারী জনার্দনঃ । সহিতো ধৃতরাষ্ট্রেণ রাজ্ঞা শান্তনবেন চ ॥ ৪ ॥ বয়মেব  
হৃষীকেশং নিগৃহ্ণীম বলাদিব । প্রসহ্য পুরুষব্যমিন্দ্রো বৈরোচনিং যথা ॥ ৫ ॥  
শ্রুত্বা গৃহীতং বাক্ষেযং পাণ্ডবা হতচেতসঃ । নিরুৎসাহা ভবিষ্যন্তি ভগ্নদংষ্ট্রা  
ইবোরগাঃ ॥ ৬ ॥ অযং হেযাং মহাবাহুঃ সর্বেষাং শর্ম্ম বর্ম্ম চ । অশ্মিন্ গৃহীতে  
বরদে ঋষভে সর্বসত্ত্বতাম্ । নিরুদ্যমা ভবিষ্যন্তি পাণ্ডবাঃ সোমকৈঃ সহ ॥ ৭ ॥  
তস্মাদ্বষমিহৈবৈনং কেশবং ক্ষিপ্রকারিণম্ । ক্রোশতো ধৃতরাষ্ট্রস্য বদ্ধা যোৎ-  
স্যামহে রিপুন্ ॥ ৮ ॥ তেষাং পাপমতিপ্রাযং পাপানাং দুষ্কচেতসাম্ । ইঙ্গিতজ্জঃ  
কবিঃ ক্ষিপ্রমন্ববুধ্যত সাত্যকিঃ ॥ ৯ ॥ তদর্থমভিনিফ্রম্য হ্লাদিক্যেন সহাস্তিতঃ ।  
অত্রবীৎ কৃতবর্মাণং ক্ষিপ্রং যোজয বাহিনীন্ ॥ ১০ ॥ ব্যুতানীক্ মতাদ্বারনুপ-  
তিষ্ঠস্ব দংশিতঃ । যাবদাখ্যান্যহৃষ্টে তৎ কৃষ্ণাযাক্লিষ্টকর্ম্মণে ॥ ১১ ॥ ন প্রবিশ্য  
সভাং বীরঃ সিংহো গিরিগুহানিব । আচফ্য তমতিপ্রাযং কেশবায় মহান্না-  
নে ॥ ১২ ॥ ধৃতরাষ্ট্রং ততশ্চৈব বিদুরঞ্চান্বতাষত । তেষানেতমতিপ্রাযমাচচক্ষে  
শ্ময়শ্চিব ॥ ১৩ ॥ ধর্ম্মাদর্থাচ্চ কানাচ্চ কর্ম্ম সাধুবিগর্হিতম্ । মন্দাঃ কত্রু মিহে-  
চ্ছন্তি ন চাবাপ্যং কথঞ্চন ॥ ১৪ ॥ পুরা বিকূর্বতে মূঢ়াঃ পাপাত্মানঃ সমাগতাঃ ।  
ধর্ম্মিতাঃ কামমন্যুত্যাং ক্রোধলোভবশান্নুগাঃ ॥ ১৫ ॥ ইমং হি পুণ্ডরীকাক্ষ-

जिष्णुस्त्यग्नचेतसः । पटेनाग्निं प्रज्वलितं यथा बाला यथा जडाः ॥ १७ ॥ मातृ-  
 केशुद्वयः श्रद्धा विदुरो दीर्घदर्शिवान् । धृतराष्ट्रं महाबाहू मंत्रवीं कुरुसंसदि ॥ १९ ॥  
 राजन् परीतकालास्ते पुल्लाः सर्वे परशुप । अशक्यमवशस्यं कर्म कर्तुं समुद्य-  
 ताः ॥ १८ ॥ इमं हि पुण्डरीकाक्षमभिर्भूय प्रसह्य च । निग्रहीतुं किलेच्छसि  
 सहिता वासवान्भुजम् ॥ १९ ॥ इमं पुरुषशार्दूलमप्रधृष्यं दुरासदम् । आसाद्य  
 न भविष्यसि पतङ्गा इव पावकम् ॥ २० ॥ अयमिच्छन् हि तान् सर्वान् युध्यमानान्  
 जनार्दनः । सिंहो नागानिव क्रुद्धो गमयेद्व्यमसादनम् ॥ २१ ॥ न ह्ययं निन्दितं  
 कर्म कुर्यात् क्रुद्धः कथञ्चन । न च धर्मादपक्रामेदच्युतः पुरुषोत्तमः ॥ २२ ॥  
 विदुरेणैवमुक्ते तु केशवो वाक्यमब्रवीत् । धृतराष्ट्रमभिप्रेक्ष्य सुहृदां शृणुतां  
 मिथः ॥ २३ ॥ राजन्नेते यदि क्रुद्धा मां निग्रहीयुरोजसा । एते वा मामहं  
 वैनान्भुजानीहि पार्थिव ॥ २४ ॥ एतान् हि सर्वान् संरक्षामि यस्तु मह्युत्सहे ।  
 न ह्यहं निन्दितं कर्म कुर्यात् पापं कथञ्चन ॥ २५ ॥ पाण्डुवार्थे हि लुभ्यन्तः  
 स्वार्थान् हस्यसि ते सुताः । एते चेदेवमिच्छसि कृतकार्येण युधिष्ठिरः ॥ २६ ॥  
 अद्वैतव ह्यहमेनांश्च ये चैनान्भुजं भारत । निग्रह्य राजन् पार्थेतेषां दद्यात् किं  
 दुष्करं तवेत् ॥ २७ ॥ इदं न प्रवर्तेष्यं निन्दितं कर्म भारत । समिधौ ते महा-  
 राज क्रोधजं पापबुद्धिजम् ॥ २८ ॥ एष दुर्योधनो राजन् यथेच्छति तथास्तु  
 तत् । अहं सर्वान्स्तनयान्भुजानामि ते नृप ॥ २९ ॥ एतच्छ्रद्धा तु विदुरं धृ-  
 तराष्ट्रोऽभ्यभाषत । किंप्रमानय तं पापं राज्यलक्षं सुयोधनम् ॥ ३० ॥  
 सहमित्तं सहामात्यं समोदर्यं सहानुगम् । शक्यं यदि पश्यान्मवतारयितुं  
 पुनः ॥ ३१ ॥ ततो दुर्योधनं ऋता पुनः प्रवेशयत् सभाम् । अकामं त्रा-  
 त्तिः सार्द्धं राजतिः परिवारितम् ॥ ३२ ॥ अथ दुर्योधनं राजा धृतरा-  
 ष्ट्रोऽभ्यभाषत । कर्णदुःशासनाभ्यां राजतिश्चातिसंयुतम् ॥ ३३ ॥ नृशंस पाप-  
 तुषिष्ठं सुद्रकर्मसहायवान् । पापैः सहायैः संहृत्य पापं कर्म चिकीर्षसि ॥ ३४ ॥  
 अशक्यमवशस्यं सन्निश्चापि विगर्हितम् । यथा द्वापृशको मूढो व्यवसेत् कुल-  
 पांसनः ॥ ३५ ॥ ह्यमिमं पुण्डरीकाक्षमप्रधृष्यं दुरासदम् । पापैः सहायैः  
 संहृत्य निग्रहीतुं किलेच्छसि ॥ ३६ ॥ यो न शक्यो बलात्कर्तुं देवैरपि  
 सवासवैः । तं ह्यं प्रार्थयसे मन्द बालश्चन्द्रमसं यथा ॥ ३७ ॥ देवैश्चानुष्ये-  
 र्गर्ह्यैरसुरैररुणैश्च यः । न सोऽहं समरे शक्यस्तं न बुध्यसि केशवम् ॥ ३८ ॥  
 दूर्गाहः पाणिना वायुदंश्याः पाणिना शशी । दूर्करा पृथिवी मुर्धा दूर्गाहः केश-

বো বলাৎ ॥ ৩২ ॥ ইত্যুক্তে ধৃতরাষ্ট্রেণ ক্রত্বাপি বিদুরোহিব্রবীৎ । দূর্য্যোধন-  
মভিপ্ৰেক্ষ্য ধার্ত্তরাষ্ট্রমমর্ষণম্ ॥ ৪০ ॥ সৌভদ্বারে বানরেস্ত্রো দ্বিবিদো নাম নামতঃ ।  
শিলাবর্ষণে মহতা ছাদযামাস কেশবম্ ॥ ৪১ ॥ গ্রহীতুকামো বিক্রম্য সর্বযত্নেন  
মাধবম্ । গ্রহীতুং নাশকতত্র তং ত্বং প্রার্থযসে বলাৎ ॥ ৪২ ॥ নির্মোচনে ষট্-  
সহস্রাঃ পাশৈর্বন্ধুং মহাসুরাঃ । গ্রহীতুকামা বিক্রম্য সর্বযত্নেন মাধবম্ । গ্রহীতুং  
নাশকং শ্চেনং তং ত্বং প্রার্থযসে বলাৎ ॥ ৪৩ ॥ প্রাগ্জ্যোতিষগতং শৌরিং  
নরকৈঃ সহ দানবৈঃ । গ্রহীতুং নাশকতত্র তং ত্বং প্রার্থযসে বলাৎ ॥ ৪৪ ॥ অনেন  
হি হতা বাল্যে পুতনা শকুনী তথা । গোবর্ধনো ধারিতশ্চ গবার্থে ভরতর্ষভ ॥ ৪৫ ॥  
অরিষ্ঠো ধেনুকশ্চৈব চান্নুরশ্চ মহাবলঃ । অশ্বরাজশ্চ নিহতঃ কংসশ্চারিষ্টমা-  
চরন্ ॥ ৪৬ ॥ জরাসন্ধশ্চ বক্রশ্চ শিশুপালশ্চ বীর্য্যবান্ । বাণশ্চ নিহতঃ সংখ্যে  
রাজানশ্চ নিসৃদিতাঃ ॥ ৪৭ ॥ বরুণো নিজ্জিত্তো রাজা পাবকশ্চানিতৌজসা ।  
পারিজাতঞ্চ হরতা জিতঃ সাক্ষাচ্চীপতিঃ ॥ ৪৮ ॥ একাৰ্ণবে চ শযতা নিহতৌ  
মধুকৈটভৌ । জন্মান্তরমুপাগম্য হবগ্রীবস্তথা হতঃ ॥ ৪৯ ॥ অবং কর্ত্বা ন ক্রিষতে  
কারুণ্যাপি পৌরুষে । যদ্বদিচ্ছেদযং শৌরিস্তত্তৎ কুর্য্যাদযত্ততঃ ॥ ৫০ ॥ তংন বু-  
ধ্যসি গোবিন্দং ঘোরবিক্রমমচ্যুতম্ । আশীবিষমিব ক্রুদ্ধং তেজোরাশিমনি-  
ন্দিতম্ ॥ ৫১ ॥ প্রধর্ম্মমহাবাহুং ক্লমক্লিষ্টকারিণম্ । পতঙ্গোহগ্নিমিবাসাদ্য  
সামাতেয়া ন ভবিষ্যসি ॥ ৫২ ॥

ইত্যুদ্দেশ্যগপর্বণি ভগবদ্দ্যানপর্বণি বিদুরবাক্যে ত্রিংশদধিক-  
শততনোধ্যায়ঃ ॥ ১৩০ ॥

—•••—

বৈশম্পায়ন উবাচ । বিদুরেণৈবমুক্তে তু কেশবঃ শত্রুপুংগহা । দূর্য্যোধনং  
ধার্ত্তরাষ্ট্রমভ্যভাষত বীর্য্যবান্ ॥ ১ ॥ একোহহমিতি যম্মোহান্মন্যসে মাং সুযো-  
ধন । পরিভূষ সুদুর্বুদ্ধে গ্রহীতুং মাং চিকীর্ষসি ॥ ২ ॥ ইতৈব পাণ্ডবাঃ সবে  
তথৈবান্নকরুণ্যঃ । ইহাদিত্যাশ্চ রুদ্রাশ্চ বসবশ্চ সহর্ষিভিঃ ॥ ৩ ॥ এবমুক্ত্বা  
জহাসোচ্চৈঃ কেশবঃ পরবীরহা । তস্য সংস্ময়তঃ শৌরের্বিদ্যুক্রপা মহান্ননঃ ।  
অঙ্গুষ্ঠমাত্রাস্ত্রিদশা মুমুচুঃ পাবকার্ছিষঃ ॥ ৪ ॥ অস্য ব্রহ্মা ললাটস্থো রুদ্রা  
বক্ষসি চাভবন্ । লোকপালা ভুজেষাসন্নগ্নিরাস্যাদজাষত ॥ ৫ ॥ আদিত্যাশ্চৈব  
সাধ্যাশ্চ বসবোহথাশ্বিনাবপি । নরুতশ্চ মহেন্দ্রেণ বিশ্বদেবাস্তথৈব চ । বভূবু-  
শ্চৈবকপাণি যক্ষগন্ধর্ষরক্ষসাম ॥ ৬ ॥ প্রাদুরাস্তাং তথা দোভ্যাং সক্ষর্ষণধন-



ञ्जयो । दक्षिणेऽथाङ्गुनो धरौ हली रामश्च सव्यतः ॥ १ ॥ भीमो युधिष्ठिरश्चैव  
 माद्रीपुत्रो च पृष्ठतः । अश्वका इक्ष्वाकुश्चैव प्रद्युम्नप्रमुखस्ततः । अग्रे बभूवुः कृष्णस्य  
 समुद्यतमहायुधाः ॥ ८ ॥ शङ्खचक्रगदाशक्तिशार्ङ्गलाङ्गलनन्दकाः । अदृश्यास्तोदय-  
 तान्येव सर्वप्रहरणानि च । नानाबाह्वु कृष्णस्य दीप्यमानानि सर्वशः ॥ ९ ॥  
 नेत्राभ्यां नस्तुतश्चैव श्रोत्राभ्यां समस्ततः । प्रादुरासन्नहारौद्राः सधूमाः  
 पावकार्क्षिणः । रोमकूपेषु च तथा सूर्यास्येव मरीचयः ॥ १० ॥ तं दृष्ट्वा घोर-  
 मात्मानं केशवस्य महान्नमः । न्यामीलयस्तु नेत्राणि राजानस्तुस्तुचेतसः ॥ ११ ॥  
 ऋते द्रोणश्च भीष्मश्च विदुरश्च महानतिम् । सङ्गवश्च महाभागं ऋषींश्चैव तपो-  
 धनान् । प्रादात्तेषां स भगवान् दिव्यं चक्रुर्जनार्दनः ॥ १२ ॥ तद्दृष्ट्वा महदा-  
 श्चर्यां माधवस्य सभातले । देवदन्तुभयो नेदः पुष्पवर्षं पपात च ॥ १३ ॥  
 चचाल च मही कृष्णा सागरश्चापि चुम्बते । विस्मयं परमं जगुः पार्थिवा भर-  
 तर्षभ ॥ १४ ॥ ततः स पुरुषव्याघ्रः संजहार वपुः स्वकम् । तां दिव्यामद्भुतां  
 चित्रामृद्धिमत्रामरिन्दमः ॥ १५ ॥ ततः सात्यकिमादाय पार्थो हार्दिक्यमेव च । ऋषि-  
 भित्तैरनुज्जातो निर्भवो मधुसूदनः ॥ १६ ॥ ऋषयोऽस्तुर्हिता जगुस्तुतस्ते नार-  
 दादयः । तस्मिन् कोलाहले हृते तदद्भुतमिवाभवत् ॥ १७ ॥ तं प्रस्रितमभि-  
 प्रेक्ष्य कौरवाः सह राजाभिः अनुजगुर्नरव्याघ्रं देवा इव शतक्रतुम् ॥ १८ ॥  
 अचिन्तयन्नमेयात्मा सर्वं तद्राजमण्डलम् । निश्चक्राम ततः शौरिः सधूम इव  
 पावकः ॥ १९ ॥ ततो रथेन शुभ्रेण महता किङ्किणीकिना । हेमजालविचित्रेण  
 लघुना मेघनादिना ॥ २० ॥ सूपस्करेण शुभ्रेण वैयाघ्रेण वक्रथिना । शैब्यसूत्रीव-  
 युक्तेन प्रत्यदृश्यत दारुकः ॥ २१ ॥ तथैव रथमास्थाय क्रुतवर्ष्मा महारथः ।  
 वृषणीनां सम्यतो वीरो हार्दिक्यः प्रत्यदृश्यत ॥ २२ ॥ उपस्थितरथं शौरिं  
 प्रयास्यन्तुमरिन्दमम् । धतरार्क्षि महाराज पुनरेवाभ्युत्थायत ॥ २३ ॥ बावद्वलं  
 मे पुत्रेषु पश्यन्त्येतज्जनार्दन । प्रत्यक्षं ते न ते किञ्चिं परोक्षं शत्रु-  
 कर्षण ॥ २४ ॥ कुरूणां शममिच्छन्तं वतमानश्च केशव । विदित्वैतानवस्थां मे नाभि-  
 शक्तिमुर्मसि ॥ २५ ॥ न मे पापोऽस्त्यभिप्रायः पाण्डवान् प्रति केशव । ज्ञात-  
 मेव हि ते वाक्यं यन्मयोक्तः सुषोधनः ॥ २६ ॥ जानन्ति कुरवः सर्वे राजान-  
 श्चैव पार्थिवाः । शमे प्रवतमानं मां सर्वयत्नेन माधव ॥ २७ ॥ वैशम्पायन  
 उवाच । ततोऽब्रवीन्महाबाहूर्धतरार्क्षि जनेश्वरम् । द्रोणं पितामहं भीष्मं  
 ऋत्वारं बाह्लिकं रूपम् ॥ २८ ॥ प्रत्यक्षमेतद्वचनं यद्भुतं कुरूसंसदि । यथा

চাশিষ্ঠবন্দো রোষাদস্কুদুখিতঃ ॥ ২৯ ॥ বদত্যানীশমাত্মানং ধৃতরাষ্ট্রো মহী-  
পতিঃ । আপৃচ্ছে ভবতঃ সর্বান্ গমিষ্যামি যুধিষ্ঠিরম্ ॥ ৩০ ॥ আমন্ত্র্য প্রস্থিতং  
শৌরিং রথস্থং পুরুষষভম্ । অনুজগ্মুমহেষাসাঃ প্রবীরা ভরতর্ষভাঃ ॥ ৩১ ॥ ভীষ্মো  
দ্রোণঃ কৃপঃ ক্ষত্রা ধৃতরাষ্ট্রোহথ বাহ্লিকঃ । অশ্বথামা বিকর্ণশ্চ যুযুৎসুশ্চ মহা-  
রথঃ ॥ ৩২ ॥ ততো রথেন শুভ্রেণ মহতা কিঙ্কিনীকিনা । কুরুণাং পশ্যতাং দ্রক্ষুং  
স্বসারং স্বপিতুর্যযৌ ॥ ৩৩ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি ভগবদ্গানপর্বনি বিশ্বকপদর্শনে একত্রিংশ-  
দধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৩১ ॥



বৈশম্পায়ন উবাচ । প্রবিশ্যাথ গৃহং তস্যাস্চরণাবতিবাদ্য চ । আচখ্যো তৎ  
সমাসেন বদন্তং কুরুসংসদি ॥ ১ ॥ বাসুদেব উবাচ । উক্তং বহুবিধং বাক্যং  
গ্রহণীয়ং সহৈতুকম্ । ঋষিভিশ্চ মযা চৈব ন চাসৌ তদাঙ্গীতবান্ ॥ ২ ॥ কাল-  
পক্রমিদং সর্বং সুযোধনবশানুগম্ । আপৃচ্ছে ভবতীং শীত্রং প্রযাস্যে পাণ্ডবান্  
প্রতি ॥ ৩ ॥ কিং বাচ্যাঃ পাণ্ডবেযাস্তে ভবত্যা বচনামযা । তদ্বুহি ত্বং মহাপ্রাজ্ঞে  
শুশ্রামে বচনং তব ॥ ৪ ॥ কুন্ত্যুবাচ । ব্রূয়াঃ কেশব রাজানং ধর্মান্মাত্মানং যুধিষ্ঠিরম্ ।  
ভূযাংস্তে হীযতে ধর্মো মা পুত্রক রথা কুথাঃ ॥ ৫ ॥ শোত্রিষস্যেব তে রাজন্ম-  
ন্দকস্যাবিপশ্চিতঃ । অনুবাকহতা বুদ্ধিধর্মমেবৈকনীকতে ॥ ৬ ॥ অঙ্গাবেক্ষস্ব  
ধর্মং ত্বং যথা সৃষ্টিঃ স্বযন্তুবা । উরস্তঃ ক্ষত্রিয়ঃ সৃষ্টি বাহুবীর্য্যোপজীবিতা ॥ ৭ ॥  
ক্রূরায় কর্মনে নিত্যং প্রজানাং পরিপালনে । শৃণু চাত্রোপনামেকাং যা বুদ্ধেভ্যঃ  
ক্ষত্রা মযা ॥ ৮ ॥ মুচুকুন্দস্য রাজর্ষেবদদৎ পৃথিবীমিনাম্ । পুরা বৈশ্রবণঃ  
প্রীতো ন চাসৌ তদাঙ্গীতবান্ ॥ ৯ ॥ বাহুবীর্য্যাজ্জিতং রাজ্যমশ্রীষামিতি কা  
মযে । ততো বৈশ্রবণঃ প্রীতো বিস্মিতঃ সমপদ্যত ॥ ১০ ॥ মুচুকুন্দস্ততো রাজা  
সোহন্বশাসদ্বসুক্করাম্ । বাহুবীর্য্যাজ্জিতাং সম্যক্ ক্রতধর্মমনুষ্ঠিতঃ ॥ ১১ ॥  
যং হি ধর্মং চরন্তীহ প্রজা রাজ্ঞা সুরক্ষিতাঃ । চতুর্থং তস্য পুণ্যস্য রাজা  
ভারত বিন্দতি ॥ ১২ ॥ রাজা চরতি চেক্রম্যং দেবহাষেব কল্পতে । স চেদ-  
ধর্মং পরতি নরকাষেব গচ্ছতি ॥ ১৩ ॥ দণ্ডনীতিঃ স্বধর্মেণ চাতুর্ণ্যং নিযচ্ছতি ।  
প্রযুক্তা স্বামিনা সম্যগ্ধর্মেভ্যশ্চ প্রযচ্ছতি ॥ ১৪ ॥ দণ্ডনীত্যা যদা রাজা সম্যক্  
কার্ষ্মেয়ান বর্ততে । তদা ক্রতযুগং নাম কালঃ শ্রেষ্ঠঃ প্রবর্ততে ॥ ১৫ ॥ কালো  
বা কারণং রাজ্ঞো রাজা বা কালকারণম্ । ইতি তে সংশযো মাভূদ্রাজা কালস্য

कारणम् ॥ १७ ॥ राजा कृतयुगश्चक्रे त्रेतायां द्वापरस्य च । युगस्य च चतुर्थस्य  
 राजा भवति कारणम् ॥ १९ ॥ कृतस्य करुणाद्राजा स्वर्गमत्यन्तमश्नुते । त्रेतायाः  
 करुणाद्राजा स्वर्गनात्यन्तमश्नुते ॥ १८ ॥ प्रवर्तनाद्द्वापरस्य यथाभागमुपा-  
 श्नुते । कलेः प्रवर्तनाद्द्राजा पापमत्यन्तमश्नुते ॥ १९ ॥ ततो वसति दुर्धर्मा  
 नरके शाश्वतीः समाः । राजदोषेण हि जगत् स्पृश्यते जगतः स च ॥ २० ॥ राज-  
 धर्मानवेक्ष्य पितृपैतामहोचितान् । नैतद्द्राजर्षिरुत्तं हि यत्र ह्यं स्वातुमिच्छ-  
 सि ॥ २१ ॥ न हि वैक्लव्यसंसृष्ट आनृशंस्यव्यवस्थितः । प्रजापालनसंस्तुतं  
 फलं किञ्चिन्न लभ्यते ॥ २२ ॥ न हेतुमाश्रियं पाण्डुरचाहं न पितामहः । प्रयुक्त-  
 वस्तुः पूर्वं ते यथा चरसि मेधया ॥ २३ ॥ यज्ञो दानं तपः शौर्यं प्रज्ज्ञा संस्तान-  
 मेव च । माहात्म्यं बलमायुश्च नित्यमाशंसितं यथा ॥ २४ ॥ नित्यं स्वाहा स्वधा  
 नित्यं ददुर्मान्नुषदेवताः । दीर्घमायुर्बलं पुत्रान् सम्यगाराधिताः शुभाः ॥ २५ ॥  
 पुल्लेषाशसते नित्यं पितरो दैवतानि च । दानमध्ययनं यज्ञः प्रजानां  
 परिपालनम् ॥ २६ ॥ एतद्धर्ममधर्मं वा जन्मनैवात्यजायथाः । ते स्त्वैदद्याः  
 कुले जाता अरुन्त्या तात पीडिताः ॥ २७ ॥ यत्र दानपतिं शूरं क्रुधिताः पृथि-  
 वीचराः । प्राप्य तुष्ठाः प्रतिष्ठन्ति धर्मः कोहत्याधिकस्ततः ॥ २८ ॥ दानेनान्यं  
 बलेनान्यं तथा सूनृतया परम् । सर्वतः प्रतिगृह्णीयाद्राज्यं प्राप्येह धार्मि-  
 कः ॥ २९ ॥ ब्राह्मणः प्रचरेद्वैदिक्यं क्लृप्तियः परिपालयेत् । वैश्या धनार्जनं  
 कुर्याच्छूद्रः परिचरेच्छ तान् ॥ ३० ॥ तैश्च विप्रतिषिद्धेभ्यो कृषिर्नैवोपपद्यते ।  
 क्लृप्तियोऽसि कृतब्रता बह्वीर्योपजीविता ॥ ३१ ॥ पितृभ्यः शं महाबाहो  
 निमग्नं पुनरुद्धर । माम्ना भेदेन दानेन दण्डेनाथ नयेन च ॥ ३२ ॥ इतो दुःख-  
 तरं किञ्चे यदहं हीनवाक्कवा । परपिण्डुदीक्षे वै ह्यं सृष्ट्वा मित्रनन्दनम् ॥ ३३ ॥  
 युध्यस्व राजधर्मेण मा मज्जय पितामहान् । मा गमः क्षीणपुण्यस्यं सान्नुजः पापिकां  
 गतिम् ॥ ३४ ॥

इत्युद्योगपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि कुन्तीवाक्ये द्वात्रिंशदधिक-

शततमोऽध्यायः ॥ १०२ ॥



कुन्त्यावाच । अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् । विदुलायाश्च संवादं  
 पुल्लस्य च परस्तप । ततः श्रेयश्च भूयश्च यथावद्वक्तुमर्हसि ॥ १ ॥ यशस्विनी मन्यु-  
 मती कुले जाता विभावरी । क्लृप्तधर्मरता दास्ता विदुला दीर्घदर्शिनी । विश्रुता

রাজসংসংসু শ্রুতবাক্য। বহুশ্রুতা ॥ ২ ॥ বিদুলা নাম রাজন্যা জগর্হে পুত্র-  
 মৌরসম্ । নিজ্জিতং সিন্ধুরাজেন শযানং দীনচেতসম্ ॥ ৩ ॥ বিদুলোবাচ ।  
 অনন্দন মমাজাত দ্বিষতাং হর্ষবর্দ্ধন । ন মযা ত্বং ন পিত্রা চ জাতঃ ক্ৰাভ্যাগতো  
 হসি ॥ ৪ ॥ নিস্মন্যুশ্চাপ্যসংখ্যেযঃ পুরুষঃ ক্লীবসাধনঃ । যাবজ্জীবং নিরাশোহসি  
 কল্যাণায় ধুরং বহ ॥ ৫ ॥ মাত্মানমবমন্যস্ব তৈনমল্লেন বীতরঃ । মনঃ ক্লভ্বা সুক-  
 ল্যাণং মা তৈশ্চুং প্রতিসংহর ॥ ৬ ॥ উত্তিষ্ঠ হে কাপুরুষ মা শেঠৈবং পরাজি-  
 তঃ । অমিত্রানন্দযন্ সর্বাশ্মিন্মানো বন্ধুশোকদঃ ॥ ৭ ॥ সুপুরা বৈ কুনদিকা  
 সুপুরো মৃষিকাঞ্জলিঃ । সুসন্তোষঃ কাপুরুষঃ স্বল্পকেনৈব তুষ্যতি ॥ ৮ ॥ অপ্যহে-  
 রারুজন্ দংষ্ট্রাং মা শ্বেব নিধনং ব্রজ । অপি বা সংশয়ং প্রাপ্য জীবিতেহপি  
 পরাক্রমেঃ ॥ ৯ ॥ অপ্যরেঃ শ্যেনবচ্ছিদ্রং পশ্যেত্বং বিপরিক্রমন্ । বিনদন্ বাথ  
 বা তুষীং ব্যোম্নি বাপরিশক্তিঃ ॥ ১০ ॥ ত্বমেবং প্রেতবচ্ছেষে কস্মাদ্ভুজুহতো যথা ।  
 উত্তিষ্ঠ হে কাপুরুষ মা স্বাপ্সীঃ শত্রুনিজ্জিতঃ ॥ ১১ ॥ মাস্তং গমস্ত্বং রূপণো রিশ্চ  
 যস্ব স্বকর্মণা । মা মথ্যে মা জঘনে্য ত্বং মাধোভূস্তিষ্ঠ চোজ্জিতঃ ॥ ১২ ॥ অলাতং  
 তিন্দুকস্যেব মুহূর্তমপি হি জ্বল । মা তুবাগ্নিরিবানর্চিধূমাযস্ব জিজীবিসুঃ ॥ ১৩ ॥  
 মুহূর্তং জ্বলিতং শ্রেযো ন তু ধূমাযিতং চিরম্ । মা হস্ম কস্যচিদোহে জনী রাজ্ঞঃ  
 খরী মৃদুঃ ॥ ১৪ ॥ ক্লভ্বা মানুষ্যকং কর্ম সৃষ্টাজিৎ যাবদুত্তমম্ । ধর্মস্যানুধ্যমা-  
 প্নোতি ন চাত্মানং বিগর্হতে ॥ ১৫ ॥ অলক্কা যদি বা লক্কা নানুশোচতি পণ্ডিতঃ ।  
 আনন্তর্য্যাক্ষারভতে ন প্রাণানাং ধনাযতে ॥ ১৬ ॥ তদ্ভাবয়স্ব বীর্য্যং বা তাং বা  
 গচ্ছ ধ্রুবাং গতিম্ । ধর্মং পুত্রাশ্রিতঃ ক্লভ্বা কিংনিমিত্তং হি জীবসি ॥ ১৭ ॥ ইচ্চা-  
 পূর্তং হিতে ক্লীব কীর্তিশ্চ সকলা হতা । বিচ্ছিন্নং ভোগমূলন্তে কিংনিমিত্তং  
 হি জীবসি ॥ ১৮ ॥ শত্রুনির্মজ্জতা গ্রাহো জজ্ঞায়াং প্রপতিষ্যতা । বিপরিচ্ছিন্ন-  
 মূলোহপি ন বিষীদেৎ কথঞ্চন ॥ ১৯ ॥ উদ্যম্য ধুরমুৎকর্ষেদাজানেযকৃতং স্মরন্ ।  
 কুরু সত্ত্বঞ্চ মানঞ্চ বিদ্ধি পৌরুষমাশ্রয়ঃ । উদ্ভাবয় কুলং মগ্নং ত্বংকৃতে স্বযমেব  
 হি ॥ ২০ ॥ যস্য বৃত্তং ন জল্পন্তি মানবা মহদদ্ভুতম্ । রাশিবর্দ্ধনমাত্রং স নৈব  
 স্ত্রী ন পুনঃ পুমান্ ॥ ২১ ॥ দানে তপসি শৌর্যে চ যস্য নোচ্চারিতং যশঃ । বিদ্যা-  
 যামর্থলাভে বা মাতুরুচ্চার এব সঃ ॥ ২২ ॥ শ্রুতেন তপসা বাপি শ্রিয়া বা বিক্র-  
 মেণ বা । জনান্ যোঃভিভবত্যন্যান্ কর্মণা হি স বৈ পুমান্ ॥ ২৩ ॥ ন ত্বেব  
 জাল্মীং কাপালীং বৃত্তিমেষিতুমর্হসি । নৃশংস্যামযশস্যঞ্চ দুঃখাং কাপুরুষো-  
 চিতাম্ ॥ ২৪ ॥ য এনমভিনন্দেয়ুরমিত্রাঃ পুরুষং ক্লশম্ । লোকস্য সমবজ্জাতং

निहीनाशनवाससम् ॥ २५ ॥ अहो लोभकरं हीनमल्लजीवनमल्लकम् । नेदुशं  
 वक्रमासाद्य वान्धवः सुखमेधते ॥ २६ ॥ अरुद्वैव विपत्स्यामो वयं राक्ष्सां  
 प्रवासिताः । सर्वकामरसैर्हीनाः स्थानत्रयं अकिञ्चनाः ॥ २७ ॥ अवल्लुकारिणः  
 सत्सु कुलवंशस्य नाशनम् । कलिं पुल्लप्रवादेन सङ्गय ह्यामजीजनम् ॥ २८ ॥  
 निरामयं निरुत्साहं निर्वीर्यमरिनन्दनम् । नास्म सीमन्तिनी काचिं जनयेत्  
 पुल्लमीदृशम् ॥ २९ ॥ ना धूमाय ज्वलात्यस्तमाक्रम्य जहि शात्रवान् । ज्वल मुर्धन्य-  
 मित्राणां नुहूर्तमपि वा ऋणम् ॥ ३० ॥ एतावानेव पुरुषो यदमर्षी यदर्कमी ।  
 ऋमावान्निरमर्षश्च नैव स्त्री न पुनः पुमान् ॥ ३१ ॥ सन्तोषो वै श्रियं हस्ति तथा-  
 न्नुक्रोश एव च । अनुत्थानभये चोत्ते निरीहो नाश्रुते महत् ॥ ३२ ॥ एतेषां  
 निरुतिपापेभ्यः प्रमुष्णात्मानमात्मना । आयसं हृदयं क्रुद्धा मृगयस्व पुनः  
 स्वकम् ॥ ३३ ॥ पुरं विषहते यस्मात्तस्मात् पुरुष उच्यते । तमाह्वयर्थनामानं  
 स्त्रीवद्व इह जीवति ॥ ३४ ॥ शूरस्योर्जितसद्वस्य सिंहविक्रान्तचारिणः । दिष्टभावं  
 गतस्यापि विषये मोदते प्रजा ॥ ३५ ॥ य आत्मानः प्रियसूखे हित्वा मृगयते  
 श्रियम् । अमात्यानामथो हर्षमादधात्यचिरेण सः ॥ ३६ ॥ पुल्ल उवाच । किञ्च ते  
 मामपश्यन्त्याः पृथिव्या अपि सर्वथा । किमात्तरणकृत्यन्ते किन्तो गैर्जीवितेन  
 वा ॥ ३७ ॥ मातोवाच । अनादृतानां ये लोका द्विषन्तस्तानवाप्नुयुः । ये  
 ह्यादृतात्मानां लोकाः सुहृदस्तान् ब्रजन्त नः ॥ ३८ ॥ भृत्यैर्विहीयमानानां पर-  
 पिणोपजीविनाम् । रूपणानामसद्धानां ना रतिमनुवर्तिताः ॥ ३९ ॥ अनु ह्यां  
 तात जीवन्त ब्राह्मणाः सुहृदस्तथा । पञ्जन्यामिव भूतानि देवा इव शतक्रतुम् ॥ ४० ॥  
 यमाजीवन्ति पुरुषं सर्वभूतानि सङ्गय । पक्वद्रुममिवामाद्य तस्य जीवितमर्थरत्नं ॥ ४१ ॥  
 यस्य शूरस्य विक्रान्तैरेधन्ते वान्धवाः सुखम् । त्रिदशा इव शक्रस्य साधु तस्योह  
 जीवितम् ॥ ४२ ॥ स्वबाह्वलघाश्रित्य यो ह्युद्भूद्जीवति मानवः । स लोके लभते  
 कीर्तिं परत्र च शुभांगतिम् ॥ ४३ ॥

इत्युद्योगपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि विदुलापुत्रानुशासने त्रयस्त्रिंश-

दधिकशततमोऽध्यायः ॥ १७७ ॥



विदुलोवाच । अथैतस्यामवस्थायां पौरुषं हातुमिच्छसि । निहीनसेवितं  
 मार्गं गमिष्यस्यचिरादिव ॥ १ ॥ यो हि तेजो यथाशक्ति न दर्शयति विक्रमात् ।  
 ऋत्रियो जीवितकाङ्क्षी स्तेन इत्येव तं विदः ॥ २ ॥ अर्थवस्तुपपन्नानि वा-

ক্যানি শুণবন্তি চ । নৈব সংপ্রাপ্নুবন্তি ত্বাং মুমুষুন্নিব ভেষজম্ ॥ ৩ ॥ সন্তি বৈ  
 সিন্ধুরাজস্য সত্ত্বক্কা ন তথা জনাঃ । দৌৰ্বল্যাদাসতে মুঢ়া ব্যসনৌষপ্রতীক্ষিণঃ ॥৪॥  
 মহাযোপচয়ং ক্লুপ্তা ব্যবসায়্য ততস্ততঃ । অল্পদুষ্যেয়ুরপরে পশ্যন্তস্তব পৌরুষম্ ॥৫॥  
 তৈঃ ক্লুপ্তা সহ সংঘাতং গিরিদুর্গালয়ং চর । কালে ব্যসনমাকাঙ্ক্ষনৈবামজরাম-  
 মরঃ ॥ ৬ ॥ সঞ্জযো নামতশ্চ ত্বং ন চ পশ্যামি তত্ত্বযি । অন্বর্থনামা ভব মে  
 পুত্রমা ব্যর্থনামকঃ ॥ ৭ ॥ সম্যগ্দৃষ্টির্মহাপ্রাজ্ঞো বালং ত্বাং ত্র্যাক্ষণোহব্রবীৎ ।  
 অযং প্রাপ্য মহৎ ক্লুপ্তুং পুনর্দ্বিঃ গমিষ্যতি ॥ ৮ ॥ তস্য স্মরন্তী বচনমাশংসে  
 বিজয়ং তব । তস্মাত্তাত ব্রবীমি ত্বাং বক্ষ্যামি চ পুনঃপুনঃ ॥ ৯ ॥ যস্য হৃথ্যভি-  
 নিরুত্তৌ ভবন্ত্যাপ্যায়িতঃ পরে । তস্যার্থসিদ্ধির্নিষতা নযেষ্বর্থানুসারিণঃ ॥ ১০ ॥  
 সমৃদ্ধিরসমৃদ্ধির্বা পূর্বেষাং মম সঞ্জয । এবং বিদ্বান্ যুদ্ধমনা ভব মা প্রত্যুপা-  
 হরঃ ॥ ১১ ॥ নাভঃ পাপীষসীং কাঞ্চিদবস্থাং শমরোহব্রবীৎ । যত্র নৈবাদ্য ন  
 প্রাতর্ভোজনং প্রতিদৃশ্যতে ॥ ১২ ॥ পতিপুত্রবধাদেতৎ পরমং দুঃখমব্রবীৎ ।  
 দারিদ্র্যমিতি যৎ প্রোক্তং পর্য্যায়মরণং হি তৎ ॥ ১৩ ॥ অহং মহাকূলে জাতা  
 হুদাদ্ধমিবাগতা । ঈশ্বরী সর্বকল্যাণৈর্ভত্রী পরমপূজিতা ॥ ১৪ ॥ মহার্হমাল্যা-  
 ভরণাং সুমৃচ্চাং বরবাসসম্ । পুরা দৃষ্ট্বা সুহৃদ্বর্গো মামপশ্যৎ সুদুর্গতাম্ ॥ ১৫ ॥  
 যদা মাতৃশ্ব ভাৰ্য্যাঞ্চ দ্রষ্টাসি ভৃশদুর্বলাম্ । ন তদা জীবিতেনার্থো ভবিতা তব  
 সঞ্জয ॥ ১৬ ॥ দাসকর্ম্মকরান্ ভৃত্যানাচার্য্যর্ষিকপুত্রোহিতান্ । অরত্যাস্মান্  
 প্রজহতো দৃষ্ট্বা কিং জীবিতেন তে ॥ ১৭ ॥ যদি ক্লুপ্ত্যং ন পশ্যামি তবাদ্যাহং  
 যথা পুরা । শ্লাঘনীযং যশস্যঞ্চ কা শান্তির্হৃদযস্য মে ॥ ১৮ ॥ নেতি চেদ্দ্বাক্ষণং  
 বুধ্যাং দৌর্ঘ্যেত হৃদযং মম । ন হুহং ন চ মে ভর্ত্তা নেতি ত্র্যাক্ষণমুক্তবান্ ॥ ১৯ ॥  
 বযমাশ্রয়ণীযাঃ স্ম নাশ্রেতারঃ পরস্য চ । সান্যমাশ্রিত্য জীবন্তী পরিত্যক্ষ্যামি  
 জীবিতম্ ॥ ২০ ॥ অপারে ভব নঃ পারমপ্লবে ভব নঃ প্লবঃ । কুরুষ স্থানমস্থানে  
 মৃতান্ সংজীবয়স্ব নঃ ॥ ২১ ॥ সর্বে তে শত্রবঃ সহ্য ন চেজ্জীবিতুমিচ্ছসি । অথ  
 চেদীদৃশীং রুত্তিং ক্লীবামভ্যুপপদ্যসে । নির্বিমাত্মা হতমনা মুঞ্চতাং পাপজী-  
 বিকাম্ ॥ ২২ ॥ একশত্রুবধেনৈব শরো গচ্ছতি বিশ্রুতিম্ ॥ ২৩ ॥ ইন্দ্রো রত্ন-  
 বধেনৈব মহেন্দ্রঃ সমপদ্যত । নাহেন্দ্রং প্রগ্রহং লেভে লোকানাঞ্চেশ্বরোহভবৎ ॥২৪॥  
 নাম বিশ্রাব্য বৈ সংখ্যে শত্রুনাস্ত্য দংশিতান্ । সেনাগ্রঞ্চাপি বিদ্রাব্য হত্বা বা  
 পুরুষং বরম্ ॥ ২৫ ॥ যদৈব লভতে বীরঃ সুযুদ্ধেন মহদ্বশঃ । তদৈব প্রব্যথন্তে  
 স্ম শত্রবো বিনমন্তি চ ॥ ২৬ ॥ ত্যক্তাত্মানং রণে দক্ষং শরং কাপুরুষা জনাঃ ।

अवशाः पुरयन्ति न्य सर्वकामसृष्टिभिः ॥ २१ ॥ अंशो वाप्यस्तु राज्यस्य संशयो  
 जीवितस्य वा । न लक्षस्य हि शत्रोर्बै शेषं कुर्वन्ति साधवः ॥ २२ ॥ स्वर्गद्वारो-  
 पमं राज्यमथवाप्यमृतोपमम् । प्राप्यं विदिद्वा विक्रम्यं पतोल्लुक इवारिषु ।  
 जहि शत्रून् रणे राजन् स्वधर्ममनुपालय ॥ २३ ॥ मा द्वा दशं सूक्ष्मं शत्रूणां  
 श्रीविवर्द्धनम् । अस्मदीयैश्च शोचन्तिर्नन्दन्तिश्च पतैरुत्तमम् । अपि द्वां नानुप-  
 शेयं दीना दीननिव स्थितम् ॥ २४ ॥ ह्यस्य सौवीरकन्याभिर्हृष्यमाणो यथा पूरा ।  
 मा च सैन्धवकन्यानामवसमो वशङ्गमः ॥ २५ ॥ युवा कपेण सम्पन्नो विद्ययाभि-  
 जनेन च । यद्वाद्देशो विकुर्वीत यशस्यी लोकविश्रुतः । अनङ्गानिव बोचव्यो  
 मन्ये मरणमेव तं ॥ २६ ॥ यदि द्वामनुपश्यामि परस्य प्रियवादिनम् । पृष्ठ-  
 तोहनुव्रजस्तं वा काशास्त्रिर्हृदयस्य मे ॥ २७ ॥ नास्मिन् जातु कुले जातो  
 गच्छेद्व्योहन्यस्य पृष्ठतः । न द्वं परस्यानुचरस्तत जीवितुमर्हसि ॥ २८ ॥ अहं हि  
 क्लृप्तहृदयं वेद यच्छाश्वतं परम् । पूर्वेः पूर्वतरेः प्रोक्तं पतैः परतरे-  
 रपि । शाश्वतथाव्यथैव प्रजापतिविनिर्मितम् ॥ २९ ॥ यो वै कश्चिदिहा-  
 जातः क्लृप्तियः सर्वधर्मविं । त्वार्द्धं समीक्ष्यैव न नमेदिह कस्य चिं ॥ ३० ॥  
 उद्वेष्टेदेव न नमेदुद्यमो हेव पौरुषम् । अप्यपरिणि भजेत्यत न नमेतेह क-  
 स्यचिं ॥ ३१ ॥ मातङ्गे मत्त इव च परीयां स महामनाः । क्राङ्गणेभ्यो नमे-  
 म्नित्यं धर्माथैव च सङ्गय ॥ ३२ ॥ नियच्छन्तिरान वर्गान् विनिघ्नन् सर्वदुःखान् ।  
 सहायोऽसहायो वा यावज्जीवं तथा भवेत् ॥ ३३ ॥

इत्युद्योगपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि विदुलावाक्ये चतुस्त्रिंशदधिक-

शततमोऽध्यायः ॥ १०४ ॥



पुत्र उवाच । क्लृप्तियस्यैव च ते संहृत्य हृदयं कृतम् । नम मातङ्गकुरुणे  
 वीरप्रज्जे हर्मणे ॥ १ ॥ अहो क्लृप्तसमाचारो यत्र मामितरं यथा । निषो-  
 जयसि युक्ताय परमातेव मां तथा ॥ २ ॥ इदं वचनं ब्रुवाद्भवती पुल्लमेकजम् ।  
 किम् ते मामपश्यन्त्याः पृथिव्या अपि सर्वथा ॥ ३ ॥ किमातरणकृत्येन किं भो-  
 गैर्जीवितेन वा । मयि वा सङ्गरहिते प्रियपुत्रे विशेषतः ॥ ४ ॥ मातोवाच ।  
 सर्वारम्भा हि विदुषां तात धर्मार्थकारणां । तानेवाभिसमीक्ष्याहं सङ्गय द्वामचू-  
 चुदम् ॥ ५ ॥ स समीक्ष्यक्रमोपेतो मुख्याः कालोऽयमागतः । अस्मिंश्चेदागते  
 काले कार्यं न प्रतिपद्यसे । असन्तावितकपस्तुं ननुशंसं करिष्यसि ॥ ६ ॥

तं द्वाभ्यांशस्य स्पृष्टं न बुधां यदि सङ्गय । खरीवात्सल्यमाहस्तमिःसामर्थ्यमहे-  
तुकम् ॥ १ ॥ सन्तिर्विगर्हितं मार्गं त्यज् मुखनिर्घेवितम् । अविद्या वै महत्यास्ति  
शमिमां संश्रिताः प्रजाः ॥ ८ ॥ तव स्यात्सदि सदृत्तं तेन मे द्वं प्रियो  
भवेः । धर्मार्थगुणयुक्तेन नेतरेण कथञ्चन ॥ २ ॥ दैवमानुषयुक्तेन सन्तिराच-  
रितेन च । श्रुतशीलविनीतेन रमते पुलनपुत्रा ॥ १० ॥ अनुत्थानवता चापि  
दुर्विनीतेन दक्षिणा । रमते वस्तु पुल्लेण मोघस्तस्य प्रजाफलम् ॥ ११ ॥ अकुर्वन्तो  
हि कर्माणि कुर्वन्तो निन्दितानि च । सुखं नैवेह नानुत्र लभन्ते पुरुषाधमाः ॥ १२ ॥  
युक्ताय क्लिषः सुखं सङ्गयेह जयाय च । जयन् वा वध्यमानो वा प्राप्नोतीन्द्रस-  
लोकताम् ॥ १३ ॥ न शक्ये भवने पुण्ये दिवि तद्दद्याते सुखम् । यदमित्रान् वशे  
रुद्धा क्लिषः सुखमेधते ॥ १४ ॥ मन्युना दहमानेन पुरुषेण मनस्विना । निरुतेनेह  
वह्शः शत्रून् प्रतिजिगीषता ॥ १५ ॥ आत्मा वापि परित्याजेया निपात्याः शत्र-  
वोऽपि वा । अतोऽन्येन प्रकारेण शान्तिरस्य कुतो भवेत् ॥ १६ ॥ इह प्राञ्छे  
हि पुरुषः स्वर्गमप्रियमिच्छति । यस्य स्वर्गं प्रियं लोके ऋवं तस्यार्गमप्रियम् ॥ १७ ॥  
प्रियाभावोऽपि पुरुषो नैव प्राप्नोति शोभनम् । ऋवणाभावमभ्येति गत्वा गङ्गेव  
सागरम् ॥ १८ ॥ पुल्लक उवाच । नेषं नतिस्त्रया वाच्या मातः पुल्ले विशेषतः ।  
कारुण्यमेवानुपश्य भूद्धेह जडमूकवत् ॥ १९ ॥ मातोवाच । अतो मे भूषमी  
नन्दिर्यदेवमनुपश्यासि । चोदयं मां चोदयस्येतद्धृशं वै चोदयामि ते ॥ २० ॥  
अथ द्वां पूजयिष्यामि हत्वा वै सर्वसैकवान् । अहं पश्यामि विजयं रूत्सं तावि-  
नमेव ते ॥ २१ ॥ पुल्लक उवाच । अकोषस्यासहायस्य कुतश्च विजयो मम ।  
इत्यवस्थां विदित्त्वेमामान्नाग्नि दारुणाम् । राज्याद्धावो निरुत्तो मे त्रिदिवा-  
दिव दूकृतः ॥ २२ ॥ इदृशं भवती कश्चिदुपायमनुपश्याति । तन्मे परिणतप्रज्ञे  
सम्यक् प्रवृत्ति पृच्छते । करिष्यामि च तं सर्वं यथावदनुशासनम् ॥ २३ ॥ मातो-  
वाच । पुल्ल नात्मावमस्तव्यः पूर्वाभिरसमृद्धिभिः । अबुद्धा हि भवन्तुर्था बुद्धा नश्या  
न्ति चापरे ॥ २४ ॥ अमर्षे नैव चाप्यर्था नारुक्तव्याः सुबालिशैः । सर्वेषां कर्म-  
णां तात फले नित्यमनित्यता ॥ २५ ॥ अनित्यमिति जानन्तो न भवन्ति भवन्ति  
च । अथ ये नैव कुर्वन्ति नैव जातु भवन्ति ते ॥ २६ ॥ एकगुण्यमनीहवाम-  
तावः कर्मणां फलम् । अथ द्वैगुण्यमीहायां फलं भवति वा न वा ॥ २७ ॥ यस्य  
प्रागेव विहिता सर्वार्थानामनित्यता । मुदेदृक्षिसमृद्धौ स प्रतिकूलेनृपात्तज ॥ २८ ॥  
उथातव्यं जागृतव्यं योक्तव्यं भूतिकर्मसु । त्रिष्यतीत्येव मनः रुद्धा सतत-



मव्यथैः । मङ्गलानि पुरस्कृत्य ब्राह्मणांश्चेश्वरैः सह ॥ २२ ॥ प्राङ्मुख्यं नृपते  
 राङ्गे रङ्घिर्भवति पुत्रक । अभिवर्तति लक्ष्मीस्तुं दिक् प्राचीं दिवाकरम् ॥ ३० ॥  
 निदर्शनान्युपायांश्च बहून्यक्षरिणानि च । अनुदर्शितकपोहसि पश्यामि कुरु पौ-  
 रूषम् ॥ ३१ ॥ पुरुषार्थमभिप्रेतं समाहर्तुमिहाहसि । क्रुद्धान् लुक्कान् परिष्की-  
 णानवलिप्तान् विमानितान् । स्पर्द्धिनश्चैव ये केचित्तान् युक्त उपधारय ॥ ३२ ॥  
 एतेन ह्यं प्रकारेण महतो तेत्स्यसे गणान् । महावेग इवोद्धृतो मातरिश्वा  
 बलाहकान् ॥ ३३ ॥ तेषामग्रप्रदायी स्याः कल्योथायी प्रियश्चदः । ते ह्यं प्रियं  
 करिष्यान्ति पुरो धाम्यान्ति च ह्रवम् ॥ ३४ ॥ यदैव शत्रुर्जानीयां सपत्न्यं त्यक्त-  
 जीवितम् । तदैवास्मादुद्धिजते सर्पाद्वेश्मगतादिव ॥ ३५ ॥ तं विदिह्य परा-  
 क्रान्त्यं वशे न कुरुते यदि । निर्वादैर्निर्वदेदेनमस्तुतस्तुद्विष्यति ॥ ३६ ॥ निर्वा-  
 दादास्पदं लक्षा धनरङ्घिर्भविष्यति । धनवस्तुं हि मित्राणि भङ्गन्ते चाश्रयन्ति  
 च ॥ ३७ ॥ श्वलितार्थं पुनस्तानि संत्यजन्ति च वाक्त्रवाः । अप्यास्मिन्नाश्रयन्ते च  
 जूष्णसन्ते च तादृशम् ॥ ३८ ॥ शत्रुं क्रुद्धा यः सहायं विश्वासमुपगच्छति । ततः  
 सस्ताव्यमेवैतं यद्राज्यं प्राप्नुयादिति ॥ ३९ ॥

इत्युद्योगपर्वणि भगवद्गीतानपर्वणि विदुलापुत्रानुशासने पञ्चत्रिंश-  
 दधिकशततमोऽध्यायः ॥ १३५ ॥



मातोवाच । नैव राज्ञो दरः कार्येया जातु कस्याङ्घ्रिदापदि । अथ चेदपि दीर्घः  
 स्यान्नैव वर्तेत दीर्घवत् ॥ १ ॥ दीर्घं हि दृष्ट्वा राजानं सर्वमेवानुदीर्यते । रात्र्यं  
 बलममात्यांश्च पृथक् कुर्वन्ति ते मतीः ॥ २ ॥ शत्रूनेके प्रपद्यन्ते प्रजहत्यपरे  
 पुनः । अन्ये तु प्रजिहीर्षन्ति ये पुरस्ताद्विमानिताः ॥ ३ ॥ य एवात्यन्तसूहृदस्तु  
 एनं पर्युपासते । अशक्तयः स्वस्तिकाना वद्ववत्सा इला इव । शोचन्तमनुशोचन्ति  
 पतितानिव षङ्कवान् ॥ ४ ॥ अपि ते पूजिताः पूर्वं मपि ते सूहृदो मताः । ये  
 रात्र्यमभिमन्यन्ते रात्र्यो व्यसनमीयुषः ॥ ५ ॥ मा दीदरस्तुं सूहृदो मा ह्यं दीर्घं  
 प्रहासिषुः ॥ ६ ॥ प्रभावं पौरुषं बुद्धिं जिज्ञासन्त्या मया तव । विदधत्या  
 समाश्वासमुक्तं तेजोविरुद्धये ॥ ७ ॥ यद्येतं संविजानासि यदि सम्यग्ब्रवी-  
 म्याहम् । क्रुद्धा सौम्यामिवात्मानं जयायोत्तिष्ठ सङ्गय ॥ ८ ॥ अस्ति नः कोषनिच-  
 यो महानविदितस्तव । तमहं वेद नान्यस्तमुपसम्पादयामि ते ॥ ९ ॥ सन्ति नैक-  
 शता भूयः सूहृदस्तव सङ्गय । सुखदुःखसहा वीर शतार्हा हनिवर्तिनः ॥ १० ॥ ता-

দৃশা হি সহাযা বৈ পুরুষস্য বুভূষতঃ । ইচ্ছং জিহীষতঃ কিঞ্চিৎ সচিবাঃ শত্রু-  
 কৰ্ষণ ॥ ১১ ॥ তস্যাস্ত্রীদৃশকং বাক্যং শ্রুত্বাপি স্বল্পচেতসঃ । তমস্তদ্যগমন্তস্য  
 সূচিত্রার্থপদাক্ষরম্ ॥ ১২ ॥ পুত্র উবাচ । উদকে ভুরিষং ধার্য্যা মর্তব্যং প্রবণে  
 মযা । যস্য মে ভবতী নেত্রী ভবিষ্যদ্ভূতিদর্শিনী ॥ ১৩ ॥ অহং হি বচনং দ্বন্তঃ  
 শুশ্রুয়ুরপরাপরম্ । কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ প্রতিবদনং তুষ্ণীমাসং মুহুমুহুঃ ॥ ১৪ ॥ অত্-  
 প্যম্মুতস্যেব কুচ্ছাল্লকস্য দৈবতঃ । উদ্যচ্ছাম্যেষ শত্রুণাং নিযমায জযাষ চ ॥ ১৫ ॥  
 কুন্ত্যুবাচ । সদশ্ব ইব স ক্ষিপ্তঃ প্রণমো বাক্যসাযকৈঃ । তচ্চকার তথা সর্বং যথা-  
 বদনুশাসনম্ ॥ ১৬ ॥ ইদমুদ্ধর্ষণং ভীমং তেজোবর্দ্ধনমুত্তমম্ । রাজানং শ্রাব-  
 যেন্মন্ত্রী সীদন্তং শত্রুপীড়িতম্ ॥ ১৭ ॥ জযো নামেতিহাসোহয়ং শ্রোতব্যো  
 বিজিগীষুণা । মহীং বিজযতে ক্ষিপ্রং শ্রুত্বা শত্রুংশ্চ মর্দতি ॥ ১৮ ॥ ইদং পুংস-  
 বনশ্চৈব বীরাজননমেব চ । অভীক্ষুং গর্ভিণী শ্রুত্বা ধ্রুবং বীরং প্রজাযতে ॥ ১৯ ॥  
 বিদ্যাশূরং তপঃশূরং দানশূরং তপস্বিনম্ । ব্রাহ্ম্য শ্রিযা দীপ্যমানং সাধুবাদে চ  
 সম্মতম্ ॥ ২০ ॥ অর্চিস্মন্তং বলোপেতং মহাভাগং মহারথম্ । ধৃতিমন্তমনাধ্ব্যং  
 জেতারমপরাজিতম্ ॥ ২১ ॥ নিযন্তারমসাধূনাং গোপ্তারং ধর্মচারিণাম্ । ঈদৃশং  
 ক্ষত্রিযা সূতে বীরং সত্যপরাক্রমম্ ॥ ২২ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্দ্যানপর্বণি বিদুলাপুত্রানুশাসনে ষট্‌ত্রিংশদধিক-  
 শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৩৬ ॥



কুন্ত্যুবাচ । অর্জুনং কেশব ব্রহ্মাস্ত্রিযি জাতে স্ম সূতকে । উপোপবিষ্টা নারী-  
 ভিরাশ্রমে পরিবারিতা ॥ ১ ॥ অথাস্তুরীক্ষে বাগাসীদ্ধিব্যকৃপা মনোরমা । সহ-  
 শ্রাক্ষসমঃ কুন্তি ভবিষ্যত্যেষ তে সূতঃ ॥ ২ ॥ এষ জেষ্যতি সংগ্রামে কুরুন্  
 সর্বান্ সমাগতান্ । ভীমসেনদ্বিতীয়শ্চ লোকমুদ্বর্ত্তযিষ্যতি ॥ ৩ ॥ পুত্রস্তে পৃথিবীং  
 জেতা যশশ্চাস্য দিবং স্পৃশেৎ । হত্বা কুরুংশ্চ সংগ্রামে বাসুদেবহৃদ্বাষবান্ ॥ ৪ ॥  
 পিত্র্যমংশং প্রনর্ষক্ পুনরপ্যুদ্বরিষ্যতি । ভ্রাতৃভিঃ সহিতঃ শ্রীমাংস্ত্রীম্মেধানা-  
 হরিষ্যতি ॥ ৫ ॥ স সত্যসন্ধো বীভৎসুঃ সব্যসাতী যথাচ্যুতঃ । তথা ত্বমেব জানাসি  
 বলবন্তং দুরাসদম্ ॥ ৬ ॥ তথা তদস্ত দাশাহঁ যথা বাগভ্যভাষত । ধর্মশ্চেদস্তি  
 বার্ষেয তথা সত্যং ভবিষ্যতি ॥ ৭ ॥ হৃৎশাপি তত্তথা কৃষং সর্বং সম্পাদযিষ্যসি ।  
 নাহং তদভ্যসূয়ামি যথা বাগভ্যভাষত ॥ ৮ ॥ নমো ধর্মায় মহতে ধর্মো ধারযতে  
 প্রজাঃ । এতদ্ধনঞ্জযো বাচ্যো নিত্যোদ্যুক্তো বৃকোদরঃ ॥ ৯ ॥ যদর্থং ক্ষত্রিযা

सूते तस्य कालोद्यमागतः । न हि वैरं समासाद्य सीदन्ति पुरुषवर्षाः ॥ १० ॥  
 विदिता ते सदा बुद्धिर्भीमस्य न स शाम्यति । यावदस्य न कुरुते शत्रूणां शत्रु-  
 र्षणः ॥ ११ ॥ सर्वधर्मविशेषज्ञां सुधां पाण्डोर्महात्मनः । बुधा माधव कल्याणीं  
 कृष्णां कृष्ण वशस्विनीम् ॥ १२ ॥ युक्तमेतन्महाभागे कुलेजाते मनस्विनि । यन्मे  
 पुल्लेषु सर्वेषु यथावद्व्यवर्तिथाः ॥ १३ ॥ माद्रीपुत्रौ च बल्लव्यौ क्लृप्तधर्मरता-  
 वृत्तौ । विक्रमेणाज्जितान् भोगान् वृणीतं जीवितादपि ॥ १४ ॥ विक्रमाधि-  
 गता हर्थाः क्लृप्तधर्मैर्ण जीवतः । मनो मनुष्यस्य सदा प्रीणन्ति पुरुषोत्तम ॥ १५ ॥  
 यच्च वः प्रेक्षमाणानां सर्वधर्मोपचायिनाम् । पाण्डाली परुषाण्युक्ता को नू तं  
 क्लृप्तमर्हति ॥ १६ ॥ न राज्यहरणं दुःखं द्यूते वापि पराजयः । प्रव्राजन्  
 सूतानां न मे तदुःखकारणम् ॥ १७ ॥ यत्तु सा ब्रह्मी श्यामा सभायां रुदती  
 तदा । अश्रीषीं परुषा वाचस्तन्मे दुःखतरं महं ॥ १८ ॥ स्त्रीधर्मिणी वरा-  
 रोहा क्लृप्तधर्मरता सदा । नाथ्यगच्छन्तदा नाथं कृष्ण नाथवती सती ॥ १९ ॥ तं  
 वै बुहि महाबाहो सर्वशस्त्रभृताम्बरम् । अर्जुनं पुरुषव्याघ्रं द्रौपद्याः पदवी-  
 ष्वर ॥ २० ॥ विदितौ हि तवात्यर्थं क्रुद्धाविव यमास्तुको । तीमाज्जूनो नयेतां  
 हि देवानपि परां गतिम् । तयोश्चतदवज्जानं यं सा कृष्ण सभां गता ॥ २१ ॥  
 दुःशासनश्च यद्धीमं कटुकान्याभ्यभाषत । पश्यतां कुरूवीराणां तच्च संस्म-  
 रयेः पुनः ॥ २२ ॥ पाण्डवान् कुशलं पृच्छेः सपुत्रान् कृष्णया सह । मांश्च कुश-  
 लिनीं बुधास्तुषु भूषो जनार्दन । अरिष्टं व्रज पञ्चानं पुत्रान्मे परिपाल-  
 य ॥ २३ ॥ वैशम्पायन उवाच । अतिवादयाथ तां कृष्णः कृत्वा चातिप्रदं किमम् ।  
 निश्चक्राम महाबाहूः सिंहे खेलगतिस्ततः ॥ २४ ॥ ततो विसर्जयामास तीम्नादीन्  
 कुरूपुङ्गवान् । आरोप्य च रथे कर्णं प्रायां सात्याकिना सह ॥ २५ ॥ ततः  
 प्रयाते दाशाहे कुरवः सङ्गता मिथः । जजग्मूर्महदाश्चर्यां केशवे परमाद्भु-  
 तम् ॥ २६ ॥ प्रमुटा पृथिवी सर्वा मृत्युपाशवशीकृता । दुर्योधनस्य बालिश्या-  
 न्नैतदस्तीति चाक्रवन् ॥ २७ ॥ ततो निर्वाय नगरां प्रयवो पुरुषोत्तमः । मन्त्र-  
 यामास च तदा कर्णेन सूचिरं सह ॥ २८ ॥ विसर्जयिस्वा राधेयं सर्ववादवनन्दनः ।  
 ततो जवेन महता तूर्णमश्वानचोदयत् ॥ २९ ॥ ते पिवन्तु इवाकाशं दारुकैर्ण  
 प्रचोदिताः । हया जग्मूर्महावेगा मनोमारुतरं हसः ॥ ३० ॥ ते व्यतीत्य महा-  
 ध्वानं किप्रं श्येना इवाशुगाः । उच्छेर्जग्मुरूपप्लव्यं शार्ङ्गध्वानमावहन् ॥ ३१ ॥

इत्युद्योगपर्वणि भगवद्गीतानपर्वणि श्रीकृष्णप्रत्यागमने सप्तत्रिंश-

दधिकशततमोऽध्यायः ॥ १७१ ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ । কুন্ত্যাস্তু বচনং শ্রুত্বা ভীষ্মদ্রোণৌ মহারথৌ । দুৰ্য্যোধন-  
 মিদং বাক্যমুচতুঃ শাসনাতিগম্ ॥ ১ ॥ শ্রুতস্তে পুরুষব্যাস কুন্ত্যা ক্লেশস্য সন্নিধৌ ।  
 বাক্যমর্থবদ ত্যগ্রমুক্তং ধর্ম্যমনুত্তমম্ ॥ ২ ॥ তৎ করিষ্যন্তি কৌন্তেয়া বাসুদেবস্য  
 সন্মতাঃ । ন হি তে জাতু শাম্যোরম্মতে রাজ্যেন কৌরব ॥ ৩ ॥ ক্লেশিতা হি  
 ত্বয়া পার্থা ধর্মপাশসিতাস্তদা । সভায়াং দ্রৌপদী চৈব তৈশ্চ তন্মর্ষিতং তব ॥ ৪ ॥  
 কৃতাস্ত্রং হৃদ্ধূনং প্রাপ্য ভীমঞ্চ কৃতনিশ্চয়ম্ । গাণ্ডীবং চেযুধী চৈব রথঞ্চ ধ্বজ-  
 মেবচ ॥ ৫ ॥ নকুলং সহদেবঞ্চ বলবীর্যসমন্বিতৌ । সহায়ং বাসুদেবঞ্চ ন ক্লে-  
 স্যতি যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ৬ ॥ প্রত্যক্ষস্তে মহাবাহো যথা পার্থেন ধীমতা । বিরাটনগরে  
 পূর্বং সর্বে স্ম যুধি নিক্কিতাঃ ॥ ৭ ॥ দানবা ঘোরকর্মাণো নিবাতকবচা যুধি ।  
 রৌদ্ৰমস্ত্রং সমাদায দক্ষা বানরকেতুনা ॥ ৮ ॥ কর্ণপ্রভৃতযশ্চেমৈ ত্বঞ্চাপি কবচী  
 রথী । মোক্ষিতো ঘোষযাত্রায়াং পর্য্যাপ্তং তন্নিদর্শনম্ ॥ ৯ ॥ প্রশাম্য ভরতশ্রেষ্ঠ  
 ভ্রাতৃভিঃ সহ পাণ্ডবৈঃ । রক্ষেমাং পৃথিবীং সর্বাং মৃত্যোর্দংক্রান্তুরং গতাম্ ॥ ১০ ॥  
 জ্যেষ্ঠো ভ্রাতা ধর্মশীলো বৎসলঃ শঙ্কুবাকু কবিঃ । তং গচ্ছ পুরুষব্যাসং ব্যপ-  
 নীষেহ কিল্বিষম্ ॥ ১১ ॥ দৃষ্টশ্চ ত্বং পাণ্ডবেন ব্যপনীতশরাসনঃ । প্রশান্তভুকুটিঃ  
 শ্রীমান্ কৃত্য শাস্তিঃ কুলস্য নঃ ॥ ১২ ॥ তমভ্যেত্য সহামাত্যং পরিষজ্য নৃপা-  
 ত্মজ । অভিবাদয রাজানং যথাপূর্বনিন্দম ॥ ১৩ ॥ অভিবাদযমানং ত্বাং  
 পানিত্যাং ভীমপূর্বজঃ । প্রতিগচ্ছাতু সৌহার্দ্যং কুন্তীপুলো যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ১৪ ॥  
 সিংহস্কন্ধোরুবাহুস্ত্বাং রত্নাবতমহাভুজঃ । পরিষজতু বাহুভ্যাং ভীমঃ প্রহরতাং  
 বরঃ ॥ ১৫ ॥ কষুগ্রীবো গুডাকেশস্ততস্ত্বাং পুঙ্করেক্ষণঃ । অভিবাদবতাং পার্থঃ  
 কুন্তীপুলো ধনঞ্জয়ঃ ॥ ১৬ ॥ আশ্বিনেযৌ নরব্যাত্তৌ কপেণাপ্রতিমৌ ভুবি ।  
 তৌ চ ত্বাং গুরুবৎ প্রেম্না পূজয়া প্রত্যুদীযতাম্ ॥ ১৭ ॥ মুঞ্চস্ত্বানন্দজাশ্রুণি  
 দাশার্হপ্রমুখা নৃপাঃ । সংগচ্ছ ভ্রাতৃভিঃ সার্কং মানং সংত্যজ্য পার্থিব ॥ ১৮ ॥  
 প্রশাধি পৃথিবীং ক্লেশ্নাং ততস্ত্বং ভ্রাতৃভিঃ সহ । সমালিঙ্গ্য চ হৃষেণ নৃপা যাস্তু  
 পরস্পরম্ ॥ ১৯ ॥ অলং যুদ্ধেন রাজেন্দ্র সুহৃদাং শৃণু বারণম্ । ক্রবং বিনাশো  
 যুদ্ধে হি ক্লিষ্যাণাং প্রদৃশ্যতে ॥ ২০ ॥ জ্যেষ্ঠাংষি প্রতিকূলানি দারুণা মৃগ-  
 পক্ষিণঃ । উৎপাতা বিবিধা বীর দৃশ্যন্তে ক্লনাশনাঃ ॥ ২১ ॥ বিশেষত ইহা-  
 স্মাকং নিমিত্তানি নিবেশনে । উক্লাভির্হি প্রদীপ্তাভির্বাধ্যতে পুতনা তব ॥ ২২ ॥  
 বাহনান্যপ্রহর্যনানি রুদন্তীব বিশাম্পতে । গৃধ্রাস্তে পর্য্যাপাসন্তে সৈন্যানি চ সম-  
 ন্ততঃ ॥ ২৩ ॥ নগরং ন যথা পূর্বং তথা রাজনিবেশনম্ । শিবাশ্চাশিবনির্ঘোষা

দীপ্তাং সেবন্তি বৈ দিশম্ ॥ ২৪ ॥ কুরু বাক্যং পিতৃশ্মাতুরশ্মাকঞ্চ হিতৈষণাং ।  
 ভুয়াযন্তো মহাবাহো শমো ব্যাঘাম এব চ ॥ ২৫ ॥ ন চেৎ করিষ্যসি বচঃ স্মৃহদা-  
 মরিকর্ষণঃ । তপস্যসে বাহিনীং দৃষ্ট্বা পার্থবাণপ্রপীড়িতাম্ ॥ ২৬ ॥ ভীমস্য চ  
 মহানাৎ নদতঃ শুষ্কিণো রণে । শ্ৰদ্ধা স্মর্তাসি মে বাক্যং গাণ্ডীবস্য চ নিশ্বনম্ ।  
 যদ্যেতদপসব্যস্তে ভবিষ্যতি বচো মম ॥ ২৭ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি ভগবদ্দানপর্বণি ভীষ্মদ্রোণবাক্যে অষ্টত্রিংশ-  
 দধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৩৮ ॥

—৪—

বৈশম্পায়ন উবাচ । এবমুক্তস্তু বিমনা তিৰ্য্যগৃষ্টিরধোমুখঃ । সংহত্য চ  
 ভুবোর্শ্মধ্যং ন কিঞ্চিদ্যাজহার হ ॥ ১ ॥ তং বৈ বিমনসং দৃষ্ট্বা সংপ্ৰেক্ষ্যান্যোনা-  
 মন্তিকাৎ । পুনরেবোত্তরং বাক্যমুক্তবস্তৌ নরযভৌ ॥ ২ ॥ ভীষ্ম উবাচ । শুশ্রুমু-  
 মনস্মৃষঞ্চ ব্রহ্মণ্যং সত্যবাদিনম্ । প্রতিযোৎস্যামহে পার্থমতো দুঃখতরং নু  
 কিম্ ॥ ৩ ॥ দ্রোণ উবাচ । অশ্বখাম্নি যথা পুত্র ভূষো মম ধনঞ্জয়ে । বহুমানঃ  
 পরো রাজন্ সন্নতিশ্চ কপিধ্বজে ॥ ৪ ॥ তঞ্চ পুত্রাৎ প্রিযতমং প্রতিযোৎস্যে ধন-  
 ঙ্গযম্ । ফলধর্মমমুষ্ঠায় ধিগন্তু ফলজীবিকাম্ ॥ ৫ ॥ যস্য লোকে সমো নাস্তি  
 কশ্চিদন্যো ধনুর্ধরঃ । মৎপ্রসাদাৎ স বীতসুঃ শ্ৰেযাননৈর্যধনুর্ধরৈঃ ॥ ৬ ॥  
 মিত্রধৃগদুষ্কৃতাভাশ্চ নাস্তিকোহথানৃজুঃ শঠঃ । ন সৎসু লভতে পূজাং যজে মূর্খ  
 ইবাগতঃ ॥ ৭ ॥ বার্যমাণোহপি পাপেভ্যঃ পাপাত্মা পাপমিচ্ছতি । চোদ্যমা-  
 নোহপি পাপেন শুভাত্মা শুভমিচ্ছতি ॥ ৮ ॥ মিথ্যোপচরিতা হেতে বর্তমানা  
 হনুপ্রিযে । অহিতত্বায় কল্পন্তে দোষা ভরতসত্তম ॥ ৯ ॥ ভ্রমুক্তঃ কুরুবন্ধেন  
 নযা চ বিদুরেণ চ । বাসুদেবেন চ তথা শ্রেযো নৈবাভিমন্যসে ॥ ১০ ॥ অস্তি মে  
 বলমিত্যেব সহসা ভুং তিতীর্ষসি । সগ্রাহনক্রমকরং গঙ্গাবেগ ইবার্ণবম্ ॥ ১১ ॥  
 বাস এব যথাত্মকং প্রবৃণানোহদ্য মন্যসে । অজং ত্যক্তামিব প্রাপ্য লোভা-  
 দ্মোধিষ্ঠিরীং শ্রিষম্ ॥ ১২ ॥ দ্রৌপদীসহিতং পার্থং সায়ুধৈর্ভ্রাতৃভির্বর্তম্ । বনস্থ-  
 মপি রাজ্যস্থঃ পাণ্ডবং কো বিজেষ্যতি ॥ ১৩ ॥ নিদেশে যস্য রাজানঃ সর্বে তিষ্ঠন্তি  
 কিকরাঃ । তমৈলবিলমাসাদ্য ধর্মরাজো ব্যরাজত ॥ ১৪ ॥ কুবেরসদনং প্রাপ্য  
 ততো রত্নান্যবাধ্য চ । স্ফীতমাক্রম্য তে রাষ্ট্রং রাজ্যমিচ্ছন্তি পাণ্ডবাঃ ॥ ১৫ ॥  
 দত্তং হৃতমধীতঞ্চ ব্রাহ্মণাস্তুর্পিতা ধনৈঃ । আবযোর্গতমাযুশ্চ কৃতকৃত্যৌ চ বিদ্ধি  
 নৌ ॥ ১৬ ॥ ভুং তু হিহ্না সুখং রাজ্যং মিত্রাণি চ ধনানি চ । বিগ্রহং পাণ্ডবৈঃ

কৃৎনামহর্ষ্যসনমাপ্যসি ॥ ১৭ ॥ দ্রৌপদী যস্য চাশাস্ত্রে বিজয়ং সত্যবাদিনী ।  
তপোঘোরত্রতা দেবী কথং জেষ্যসি পাণ্ডবম্ ॥ ১৮ ॥ মন্ত্রী জনার্দনো যস্য ভ্রাতা  
যস্য ধনঞ্জয়ঃ । সর্বশস্ত্রভূতাং শ্রেষ্ঠঃ কথং জেষ্যসি পাণ্ডবম্ ॥ ১৯ ॥ মহাযা  
ত্রাঙ্কণা যস্য ধৃতিমন্তো জিতেন্দ্রিয়াঃ । তমুগ্রতপসং বীরং কথং জেষ্যসি পাণ্ড-  
বম্ ॥ ২০ ॥ পুনরুক্কণ্ড বক্ষ্যামি যৎ কার্যং ভূতিমিচ্ছতা । সুহৃদা মজ্জমানেষু  
সুহৃৎসু ব্যসনার্ণবে ॥ ২১ ॥ অগ্নং যুদ্ধেন তৈর্বীরৈঃ শাম্য ত্বং কুলবৃদ্ধয়ে ।  
অগ্নিঃ সমুতামাত্যঃ সবলশ্চ পরাভবম্ ॥ ২২ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি ভগবদ্ব্যনপর্বনি ভীষ্মদ্রোণবাক্যে একোনচছারিংশ-

দধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৩৯ ॥

সমাপ্তঞ্চ ভগবদ্ব্যনপর্ব ।



অথ কর্ণবিবাদপর্ব ।

ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । রাজপুত্রৈঃ পরিবৃতস্তথামাতৈশ্চ সঞ্জয় । উপারোপ্য রথে  
কর্ণং নির্ঘাতো মধুসূদনঃ ॥ ১ ॥ কিমত্রবীদ্রথোপস্থে রাধেযং পরবীরহা । কানি  
সাস্ত্রানি গোবিন্দঃ সূতপুত্রে প্রযুক্তবান্ ॥ ২ ॥ উদ্যম্বেষশ্বনঃ কালে কৃষ্ণঃ কর্ণ-  
মথাত্রবীৎ । মৃদু বা যদি বা তীক্ষ্ণং তন্মমাচক্ষু সঞ্জয় ॥ ৩ ॥ সঞ্জয় উবাচ । আনু-  
পূর্বেণ বাক্যানি তীক্ষ্ণানি চ মৃদুনি চ । প্রিযাণি ধর্ম্মযুক্তানি সত্যানি চ হিতানি  
চ ॥ ৪ ॥ হৃদযগ্রহণীয়ানি রাধেযং মধুসূদনঃ । যান্যত্রবীদমেযাত্মা তানি মে  
শৃণু ভারত ॥ ৫ ॥ বাসুদেব উবাচ । উপাসিতাস্ত্রে রাধেয ত্রাঙ্কণা বেদপারগাঃ ।  
তদ্বার্থং পরিপৃষ্ঠাশ্চ নিযতেনানসূষযা ॥ ৬ ॥ ত্বমেব কর্ণ জানাসি বেদবাদান্  
সনাতনান্ । ত্বমেব ধর্ম্মশাস্ত্রেষু সূত্রেষু পরিনিষ্ঠিতঃ ॥ ৭ ॥ কানীনশ্চ সহোচশ্চ  
কন্যাযাং যশ্চ জায়তে । বোচারং পিতরং তস্য প্রাহঃ শাস্ত্রবিদো জনাঃ ॥ ৮ ॥  
সোহসি কর্ণ তথা জাতঃ পাণ্ডোঃ পুত্রোহসি ধর্ম্মতঃ । নিগ্রহাঙ্কর্ম্মশাস্ত্রাণামেহি  
রাজা ভবিষ্যসি ॥ ৯ ॥ পিতৃপক্ষে চ তে পার্থা মাতৃপক্ষে চ বৃষ্ণয়ঃ । দ্বৌ পক্ষা-  
বভিজানীহি ত্বমেতৌ পুরুষর্ষভ ॥ ১০ ॥ যথা সার্কমিতো যাতমদ্য ত্বাং তাত পা-  
ণ্ডবাঃ । অভিজানস্ত্ব কৌন্তেযং পূর্বজাতং যুধিষ্ঠিরাৎ ॥ ১১ ॥ পাদৌ তব গ্রহী-  
ষ্যন্তি ভ্রাতরঃ পঞ্চ পাণ্ডবাঃ । দ্রৌপদেযাস্তথা পঞ্চ সৌভদ্রশ্চাপরাজিতঃ ॥ ১২ ॥  
রাজানো রাজপুত্রাশ্চ পাণ্ডবার্থে সমাগতাঃ । পাদৌ তব গ্রহীষ্যন্তি সর্বে চান্দ্রক-  
বৃষ্ণয়ঃ ॥ ১৩ ॥ হিরণ্যবাংশ্চ তে কুস্তান্নাজতান্ পার্থিবাংশ্চথা । ওষধ্যঃ সর্ববী-

जानि सर्वरत्नानि वीरुधः । राजन्या राजकन्याश्चाप्यानयन्त्वाभिषेचनम् ॥ १४ ॥  
 षष्ठे च द्वात्रिं तथा काले द्रौपद्युपगमिष्यति । अग्निं जुहोतु वै धोम्यः संशि-  
 तात्वा द्विजोत्तमः ॥ १५ ॥ अद्य द्वाभिविषुस्तु चातुर्बेदया द्विजातयः । पुरोहितः  
 पाण्डवानां त्रिकर्मण्यवस्थिताः ॥ १६ ॥ तथैव द्वातरुः पक्ष पाण्डवाः पूरुषर्षभाः ।  
 द्रौपदेयास्तथा पक्ष पाण्डालाश्चेदयस्तथा ॥ १७ ॥ अहं द्वाभिवेक्ष्यामि राजानं  
 पृथिवीपतिम् । युवराजोऽस्तु ते राजा धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ १८ ॥ गृहीत्वा व्य-  
 जनं श्वेतं धर्मात्मा संशितव्रतः । उपान्वारोहतु रथं कुन्तीपुत्रो युधिष्ठि-  
 रः ॥ १९ ॥ ह्यत्र ते महाश्वेतं तीमसेनो महाबलः । अभिषिक्तस्य कौन्तेयो  
 धारिष्यति मुद्गनि ॥ २० ॥ किङ्किणीशतनिर्घोषं वैयात्रपरिवारणम् । रथं श्वेत-  
 ह्यैयुक्त्रमङ्गुनो बाह्विष्यति ॥ २१ ॥ अभिमन्युश्च ते नित्यं प्रत्यासन्नो भवि-  
 ष्यति । नकुलः सहदेवश्च द्रौपदेयाश्च पक्ष ये ॥ २२ ॥ पाण्डालास्त्रानुषास्यन्ति  
 शिखण्डी च महारथः । अहं द्वाभिवेक्ष्यामि सर्वे चाक्रकवृषभः । दाशार्हाः परिवा-  
 रास्ते दशार्गाश्च विशाम्पते ॥ २३ ॥ दुष्कृ राज्यां महाबाहो द्वाभिविः सह  
 पाण्डवैः । जपैर्होमैश्च संयुक्ते मङ्गलैश्च पृथग्विधैः ॥ २४ ॥ पुरोगनाश्च  
 ते सन्तु द्रविडाः सह कुन्तलैः । अङ्गुस्तालचराश्चैव चुचुपा रेणुपास्तथा ॥ २५ ॥  
 सुवस्तु द्वादय बहूः सुतिभिः सूतमागधाः । विजयं वसुधेनस्य घोषयन्तु च पाण्ड-  
 वाः ॥ २६ ॥ स द्वयं परिव्रतः पार्थैर्नक्तैरिव चन्द्रमाः । प्रशाधि राज्यां कौन्तेय  
 कुन्तीं प्रतिनन्दय ॥ २७ ॥ मित्राणि ते प्रहस्यन्तु व्यथन्त रिपवस्तथा । सौभ्रातृ-  
 तैश्च तेऽद्यास्तु द्वाभिविः सह पाण्डवैः ॥ २८ ॥

इत्युद्योगपर्वणि कर्णविवादपर्वणि भगवद्वाक्ये चत्वारिंशदधिक-  
 शततमोऽध्यायः ॥ १४० ॥



कर्ण उवाच । असंशयं सोऽहदान्ने प्रणयाच्छाथ केशव । सथेन टैव वार्ष्णेय  
 श्रेयस्कामतयैवैव ॥ १ ॥ सर्वैश्वर्याभिजानामि पाण्डोः पुत्रोऽहं धर्मतः । निग्र-  
 हाङ्गुशास्त्राणां यथा द्वयं कृषं मन्यसे ॥ २ ॥ कन्या गर्भं समाधत्त भास्करान्मां  
 जनार्दन । आदित्यवचनाटैव जातं मां सा व्यसङ्गवत् ॥ ३ ॥ सोऽहं कृषं  
 तथा जातः पाण्डोः पुत्रोऽहं धर्मतः । कुन्त्या द्वाभिमपार्कीर्णो यथा न कुशलं  
 तथा ॥ ४ ॥ सूतो हि मानधिरथो दृष्टैवाभ्यनयदृहान् । राधायाश्चैव गास्त्रादां  
 सौहार्दान्मधुसूदन ॥ ५ ॥ मत्सन्नेहाटैव राधायाः सदयः क्षीरमवातरत् । सा मे

मूत्रं पुरीषं प्रतिजग्राह माधव ॥ ७ ॥ तस्याः पिण्डव्यपनयं कुर्यादश्विः  
 कथम् । धर्मविद्वन्मशास्त्राणां श्रवणे सततं रतः ॥ १ ॥ तथा मामभिजानाति  
 सूतश्चाधिरथः सूतम् । पितरक्षाभिजानामि तमहं सोऽहदां सदा ॥ ८ ॥ स हि  
 मे जातकर्मादि कारयामास माधव । शास्त्रदृष्टेन विधिना पुल्लप्रीत्या जनार्दन  
 ॥ ९ ॥ नाम वै वसुषेणेति कारयामास वै द्विजैः । भार्याशेचात्ता मम  
 प्राप्ते यौवने तत्परिग्रहात् ॥ १० ॥ ताम् पुल्लाश्च पौल्लाश्च मम जाता जनार्दन  
 ॥ ११ ॥ ताम् मे हृदयं कृष्णं संजातं कामवन्दनम् ॥ ११ ॥ न पृथिव्या सकलया  
 न सुवर्णस्य राशिभिः । हर्षाद्भवाद्वा गोविन्द मिथ्या कर्तुं तदुत्सहे ॥ १२ ॥ धृतराष्ट्रकुले  
 कृष्णं दुर्योधनसमाश्रयात् । मया त्रयोदश समा भुक्तं राज्यमकण्ठ-  
 कम् ॥ १३ ॥ ईर्यं बहुभिर्ब्रह्मैः सह सूतेर्न्यासकृत् । आवाहाश्च विवाहाश्च सह  
 सूतेर्न्यासकृताः ॥ १४ ॥ मां कृष्णं समामाद्य कृतः शस्त्रसमुद्यमः । दुर्योधनेन  
 वार्ष्णेय विग्रहश्चापि पाण्डवैः ॥ १५ ॥ तस्माद्गणे द्वैरथे मां प्रतुष्याताम-  
 च्युत । कृतवान् परमं हर्षं प्रतीपं सव्यासाचिनः ॥ १६ ॥ वधाद्धक्ताद्भवाद्वापि  
 लोभाद्वापि जनार्दन । अनृतं नोत्सहे कर्तुं धार्तराष्ट्रस्य धीमतः ॥ १७ ॥  
 यदि हृदयं न गच्छेयं द्वैरथं सव्यासाचिना । अकीर्तिः स्याद्धृषीकेश मम पार्थस्य  
 चोत्थयोः ॥ १८ ॥ असंशयं हितार्थाय बुधास्तु मधुसूदन । सर्वं पाण्डवाः  
 कुर्यात्स्वदशित्वान्न संशयः ॥ १९ ॥ मन्त्रस्य नियमं कुर्यात्स्वमत्र मधुसूदन । एतदत्र  
 हितं मन्ये सर्वं यादवनन्दन ॥ २० ॥ यदि जानाति मां राजा धर्मात्मा संयते-  
 द्विषः । कुन्त्याः प्रथमजं पुल्लं न न राज्यां ग्रहीष्यति ॥ २१ ॥ प्राप्य चापि  
 महद्राज्यं तदहं मधुसूदन । स्फूर्तिं दुर्योधनाद्यैव संप्रदद्यान्नरिन्दन ॥ २२ ॥ स  
 एव राजा धर्मात्मा शाश्वतोऽस्तु युधिष्ठिरः । नेता यस्य हृषीकेशो योक्ता यस्य  
 धनंशयः ॥ २३ ॥ पृथिवी तस्य राक्षसं यस्य भीमो महारथः । नकुलः सहदेवश्च  
 द्रौपदेयाश्च माधव ॥ २४ ॥ धृष्टद्युम्नश्च पाण्डाल्यः सात्यकिश्च महारथः । उक्त-  
 गौजा युधानृत्यः सत्यधर्मा च सौमिकः ॥ २५ ॥ तैद्यश्च चेकितानश्च शिखण्डी  
 चापराजितः । इन्द्रगोपकवर्णाश्च केकया भ्रातरस्तथा ॥ २६ ॥ इन्द्रायुधसवर्णाश्च  
 कुन्तिभोजो महाननाः । मातुलो भीमसेनस्य श्येनजिह्व महारथः ॥ २७ ॥ शङ्खः  
 पुल्लो विराटस्य निधिवृष्ण जनार्दन । महानयं कृष्णं कृतः क्लृप्तस्य समुदानयः ॥ २८ ॥  
 राज्यं प्राप्नुमिदं दीप्तं प्रथितं सर्वराजसु । धार्तराष्ट्रस्य वार्ष्णेय शस्त्रयज्ञे  
 भविष्यति ॥ २९ ॥ अस्य यज्ञस्य वेत्ता त्वं भविष्यसि जनार्दन । आधर्यावक्ष्ये ते



ক্রুঞ্চ ক্রতাবস্মিন্ ভবিষ্যতি ॥ ৩০ ॥ হোতা চৈবাত্র বীতংসুঃ সন্নদ্ধঃ স কপিধ্বজঃ ।  
 গাণ্ডীবং স্রুতখাজ্যঞ্চ বীর্যং পুংসাং ভবিষ্যতি ॥ ৩১ ॥ ঐন্দ্রং পাশুপতং  
 ত্রাক্ষং সূণাকর্ণঞ্চ মাধব । মন্ত্রাস্তত্র ভবিষ্যন্তি প্রযুক্তাঃ সব্যসাচিনা ॥ ৩২ ॥ অমু-  
 যাতশ্চ পিতরমধিকো বা পরাক্রমে । গীতস্তোত্রং স সৌভদ্রঃ সম্যক্ তত্র ভবি-  
 ষ্যতি ॥ ৩৩ ॥ উদ্যাতাত্র পুনর্ভীমঃ প্রস্তোতা স্ম মহাবলঃ । বিনদন্ স নরব্যাগ্রো  
 নাগানীকান্তরুদ্ধনে ॥ ৩৪ ॥ স চৈব তত্র ধর্মাত্মা শশ্বদ্রাজা যুধিষ্ঠিরঃ । জপহো-  
 মৈশ্চ সংযুক্তো ব্রহ্মত্বং কারিষ্যতি ॥ ৩৫ ॥ শঙ্খশব্দাঃ সমুরজা ভৈর্যশ্চ মধু-  
 সূদন । উৎকৃষ্টঃ সিংহনাদশ্চ সুরকণ্যো ভবিষ্যতি ॥ ৩৬ ॥ নকুলঃ সহদেবশ্চ  
 মাদ্রীপুত্রৌ যশস্বিনৌ । শামিত্রস্তৌ মহাবীর্যৌ সম্যক্ স্তত্র করিষ্যতঃ ॥ ৩৭ ॥  
 কল্মাষদণ্ডা গোবিন্দ বিমলা রথপঙ্কজযঃ । যুপাঃ সমুপকল্পাস্তামস্মিন্ যজ্ঞে জনা-  
 র্দন ॥ ৩৮ ॥ কর্ণিনালীকনারাচা বৎসদন্তোপরংহণাঃ । তোমরাঃ সোমকলশাঃ  
 পরিভ্রাণি ধনুংষি চ ॥ ৩৯ ॥ অসযোহত্র কপালানি পুরোডাশাঃ শিরাংসি চ ।  
 হবিস্তু রুধিরং ক্রুঞ্চ তস্মিন্ যজ্ঞে ভবিষ্যতি ॥ ৪০ ॥ ইধ্মাঃ পরিধয়শ্চৈব শক্তয়ো  
 বিমলা গদাঃ । সদস্যো দ্রোণশিষ্যাশ্চ রূপস্য চ শরদ্বতঃ ॥ ৪১ ॥ ইষবোহত্র পরি-  
 স্তোমা মুক্তা গাণ্ডীবধন্বনা । মহারথপ্রযুক্তাশ্চ দ্রোণদ্রৌণিপ্রচোদিতাঃ ॥ ৪২ ॥  
 প্রতিপ্রাস্থানিকং কৰ্ম্ম সাত্যকিস্তু করিষ্যতি । দীক্ষিতো ধার্ত্তরাষ্ট্রোহত্র পত্নী চাস্য  
 মহাচমুঃ ॥ ৪৩ ॥ ষটোৎকচোহত্র শামিত্রং করিষ্যতি মহাবলঃ । অতিরাত্রে  
 মহাবাহো বিততে যজ্ঞকর্ম্মণি ॥ ৪৪ ॥ দক্ষিণা ভ্রম্য যজ্ঞস্য ধৃষ্টদ্যুম্নঃ প্রতাপবান্ ।  
 বৈতানে কর্ম্মণি ততে জাতো যঃ ক্রুঞ্চপাবকাৎ ॥ ৪৫ ॥ যদক্রবমহং ক্রুঞ্চ কটুকানি  
 স্ম পাণ্ডবান্ । প্রিয়ার্থং ধার্ত্তরাষ্ট্রস্য তেন তপ্যে হকর্ম্মণা ॥ ৪৬ ॥ যদা দ্রক্ষ্যসি  
 মাং ক্রুঞ্চ নিহতং সব্যসাচিনা । পুনশ্চিতিস্তদা চাস্য যজ্ঞস্যথ ভবিষ্যতি ॥ ৪৭ ॥  
 দঃশাসনস্য রুধিরং যদা পাস্যতি পাণ্ডবঃ । আনর্দং নদতঃ সম্যক্ তদা সত্যং  
 ভবিষ্যতি ॥ ৪৮ ॥ যদা দ্রোণঞ্চ ভীষ্মঞ্চ পাঞ্চাল্যৌ পাতয়িষ্যতঃ । তদা যজ্ঞাব-  
 সানং তদ্ভবিষ্যতি জনার্দন ॥ ৪৯ ॥ দুর্যোধনং যদা হস্তা ভীমসেনো মহাবলঃ ।  
 তদা সমাপ্যতে যজ্ঞে ধার্ত্তরাষ্ট্রস্য মাধব ॥ ৫০ ॥ স্নুযাশ্চ প্রস্নুযাশ্চৈব ধৃতরাষ্ট্রস্য  
 সঙ্গতাঃ । হতেশ্বরী হতসুতা হতনাথশ্চ কেশব ॥ ৫১ ॥ রুদত্যাঃ সহ গান্ধার্য্যা স্বগৃধু-  
 কুররাকুলে । স যজ্ঞেহস্মিন্মবভূথো ভবিষ্যতি জনার্দন ॥ ৫২ ॥ বিদ্যারুদ্ধা বযো  
 রুদ্ধাঃ কলিষাঃ কলিষর্ষভ । রথা মৃত্যুং ন কুর্ষীরং স্ত্বৎ ক্রতে মধুসূদন ॥ ৫৩ ॥ শস্ত্রেণ  
 নিধনং গচ্ছেৎ সমৃদ্ধিং ফলমগুলম্ । কুরুক্ষেত্রে পুণ্যতমে ত্রৈলোক্যস্যাপি কে-

श्व ॥ ५४ ॥ तदत्र पुण्डरीकाक्ष विधत्स्व यदभीप्सितम् । यथा काँश्च्येन वार्ष्णेय  
 क्रत्रं स्वर्गमवाप्नुयात् ॥ ५५ ॥ यावत् श्वास्यस्ति गिरयः सरितश्च जनार्दन । तावत्  
 कीर्त्तिभवः शकः शाश्वतोऽयं भविष्यति ॥ ५६ ॥ व्राकणाः कथयिष्यन्ति महा-  
 भारतमाहवन् । समागमेषु वार्ष्णेय क्रत्रियाणां यशोधनम् ॥ ५७ ॥ समुपानय  
 कौन्तेयं युक्ताय मम केशव । मन्त्रसंवरणं कूर्ध्वन् नित्यमेव परस्तप ॥ ५८ ॥

इत्युद्योगपर्वणि कर्णविवादपर्वणि कर्णवाक्ये एकचत्वारिंशदधिक-

शततमोऽध्यायः ॥ १९१ ॥



सञ्जय उवाच । कर्णस्यैवचनं श्रुत्वा केशवः परवीरहा । उवाच प्रहसन् वाक्यं  
 श्रितपूर्वमिदं तदा ॥ १ ॥ भगवान्नुवाच । अपि त्वां न लभेत् कर्ण राज्यलम्बो-  
 पपादना । मया दत्तास्तु पृथिवीं न प्रशंसितुमिच्छसि ॥ २ ॥ क्रवो जयः पाण्डु-  
 वानामितीदं न संशयः कश्चन विद्यतेऽत्र । जयध्वजो दृश्यते पाण्डवस्य समु-  
 च्छितो वानरकेतुरुग्रः ॥ ३ ॥ दिव्या माया विहिता भौमनेन समुच्छिता इन्द्रकेतु-  
 प्रकाशा । दिव्यानि भूतानि जयावहानि दृश्यान्ति तैवत्र भयानकानि ॥ ४ ॥ न  
 सञ्जते शैलवनस्पतिभ्य उर्ध्वं तिर्यगेषाज्जनमात्ररूपः । श्रीमान् ध्वजः कर्ण धनञ्ज-  
 यस्य समुच्छितः पावकतुल्यरूपः ॥ ५ ॥ यदा द्रक्ष्यसि संग्रामे श्वेताश्वं क्रुशसा-  
 रथिम् । ऋद्धमस्त्रं विकूर्वाणमुत्तौ तैवग्निमारुतो ॥ ६ ॥ गाण्डीवस्य च निर्घोषं  
 विस्फूर्जितमिवाशनेः । न तदा भविता त्रेता न क्रुतं द्वापरं न च ॥ ७ ॥ यदा  
 द्रक्ष्यसि संग्रामे कुन्तीपुत्रं युधिष्ठिरम् । जपहोमसमायुक्तं श्वत्सं रक्तस्रं महा-  
 चमूम् ॥ ८ ॥ आदित्यामिव दूर्ध्वं तपन्तुं शत्रूराहिनीं । न तदा भविता त्रेता न  
 क्रुतं द्वापरं न च ॥ ९ ॥ यदा द्रक्ष्यसि संग्रामे भीमसेनं महाबलम् । दूःशास-  
 नस्य रूधिरं पीत्वा नृत्यन्तुमाहवे ॥ १० ॥ प्रतिनम्बिव मातङ्गं प्रतिद्विरदधाति-  
 नम् । न तदा भविता त्रेता न क्रुतं द्वापरं न च ॥ ११ ॥ यदा द्रक्ष्यसि संग्रामे  
 द्रोणं शास्तनवं रूपम् । सुयोधनश्च राजानं सैन्धवश्च जयद्रथम् ॥ १२ ॥ युक्ता-  
 यापततस्रुणं वारितान् सव्यसाचिना । न तदा भविता त्रेता न क्रुतं द्वापरं न  
 च ॥ १३ ॥ यदा द्रक्ष्यसि संग्रामे माद्रीपुत्रो महाबलो । बाहिनीं धार्तरा-  
 ष्ट्राणां क्षोभयन्तो गजाविव ॥ १४ ॥ विगाटे शस्त्रसम्पाते परवीररथारूजो ।  
 न तदा भविता त्रेता न क्रुतं द्वापरं न च ॥ १५ ॥ वृषाः कर्ण इतो गत्वा द्रोणं  
 शास्तनवं रूपम् । सौम्योऽयं वर्तते मासः सुप्रापववसेम्ननः ॥ १६ ॥ सर्वो-

वधिवनस्फीतः फलवानल्लमङ्गिकः । निष्पक्षो रसवत्त्रोषो नातु्यः शिशिरः  
सुखः ॥११॥ सप्तमाक्षापि दिवसादमावास्य भविष्यति । सङ्ग्रामो युज्यतां तस्य  
तां ह्यहः शक्रदेवताम् ॥ १८ ॥ तथा राज्ञो वदेः सर्वान् ये युद्धायाभ्युपा-  
गताः । यद्धो ननीषितं तद्धै सर्वं सम्पादयाम्यहम् ॥ १२ ॥ राजानो राज-  
पुत्राश्च दुर्योधनवशान्मुगाः । प्राप्य शस्त्रेण निधनं प्राप्स्यन्ति गतिमुत्तमाम् ॥२०॥

इत्युद्योगपर्वणि कर्णविवादपर्वणि श्रीकृष्णवाक्ये द्विचत्वारिंशदधिक-

शततमोऽध्यायः ॥ १४२ ॥



सङ्गम उवाच । केशवस्य तु तदाक्यं कर्णः श्रुत्वा हितं शुभम् । अत्रवीदति-  
संपूज्य कृष्णं तं मधुसूदनम् ॥ १ ॥ जानन्मां किं महाबाहो सम्मोहयितुमि-  
च्छसि । योऽहं पृथिव्याः कांश्चैन विनाशः समुपस्थितः ॥ २ ॥ निमित्तं तत्र  
शकुनिरहं दूःशासनस्तथा । दुर्योधनश्च नृपतिर्धृतराष्ट्रसूतोऽहं तव ॥ ३ ॥  
असंशयमिदं कृष्ण महत्सूक्ष्मुपस्थितम् । पाण्डवानां कुरूणां चौरं कृधिरकद-  
म् ॥ ४ ॥ राजानो राजपुत्राश्च दुर्योधनवशान्मुगाः । रणे शस्त्राग्निना दक्षाः  
प्राप्स्यन्ति यमसादनम् ॥ ५ ॥ स्वप्ना हि बहवो योरा दृश्यन्ते मधुसूदन । निमित्तानि  
च योराणि तथोपाताः सुदारुणाः ॥ ६ ॥ पराजयं धार्तराष्ट्रे विजयं युधि-  
ष्ठिरे । शंसन्तु इव वार्ष्णेय विविधा लोमहर्षणाः ॥ ७ ॥ प्राजापत्यं हि नक्तत्रं  
ग्रहस्तौक्छ्वा महाद्यूतिः । शनैश्चरः पीडयति पीडयन् प्राणिनोऽधिकम् ॥ ८ ॥  
कृष्ण चाङ्गारको वक्रं ज्येष्ठायां मधुसूदन । अन्नुराधां प्रार्थयते नैत्रं संश-  
मयन्निव ॥ ९ ॥ नूनं महद्दयं कृष्ण कुरूणां समुपस्थितम् । विशेषेण हि वार्ष्णेय  
चित्रां पीडयते ग्रहः ॥ १० ॥ सोमस्य लक्ष्म व्यावृत्तं राहुरङ्गमुपैति च । दिव-  
शेचाक्काः पतन्त्येताः सनिर्घाताः सकम्पनाः ॥ ११ ॥ निश्चिन्तन्ति च मातङ्गा मुष्ण्ण्य-  
ङ्गानि वाजिनः । पानीयं यवसङ्गापि नाभिनन्दन्ति माधव ॥ १२ ॥ प्रादुर्भूतेषु चै-  
तेषु त्वमाल्लुपस्थितम् । निमित्तेषु महाबाहो दारुणं प्राणिनाशनम् ॥ १३ ॥  
अल्ले दुक्ते पुरीषं प्रभुत्वमिह दृश्यते । वाजिनां वारणानां मनुष्याणां केश-  
व ॥ १४ ॥ धार्तराष्ट्रेषु सैन्येषु सर्वेषु मधुसूदन । पराभवस्य तल्लिङ्गमिति प्राह-  
र्मनीषिणः ॥ १५ ॥ प्रहस्यं वाहनं कृष्ण पाण्डवानां प्रदृश्यते । प्रदक्षिणा मृगा-  
श्चैव तत्रेषां ज्वलक्षणम् ॥ १६ ॥ अपसव्या मृगाः सर्वे धार्तराष्ट्रस्य केशव ।  
वाचस्पत्यशरीरिण्यस्तु पराभवलक्षणम् ॥ १७ ॥ मयूराः पुण्यशकुना हंसमारस-

चातकाः । जीवङ्गीवकसंघाश्चाप्यनुगच्छन्ति पाण्डवान् ॥ १८ ॥ गृधाः कक्षा वकाः  
 श्येना यातुधानास्तथा रुकाः । मङ्गिकाणां संघाता अनुधावन्ति कौरवान् ॥ १९ ॥  
 धार्तराष्ट्रस्य सैन्येषु तेरीणां नास्ति निश्चनः । अनाहताः पाण्डवानां नदन्ति  
 पटहाः किल ॥ २० ॥ उदपानाश्च नदन्ति यथा गोरुषभास्तथा । धार्तराष्ट्रस्य सै-  
 न्येषु तं पराभवलक्षणम् ॥ २१ ॥ मांसशोणित्ववर्षणं रुक्मं देवेन माधव । तथा  
 गन्धर्वनगरं तान्त्रमं समुपस्थितम् ॥ २२ ॥ सप्रकारं सपरिधं सवप्रं चारुतो-  
 र्गणम् । रुक्मश्च परिषुद्धं तान्नुमारत्य तिष्ठति ॥ २३ ॥ उदयास्तमये सन्त्ये वेद-  
 यन्ती महद्भवम् । शिवा च वाशते योरं तं पराभवलक्षणम् ॥ २४ ॥ रुक्मग्रीवाश्च  
 शकुना रक्तपादा भयानकाः । सक्त्यामभिमुखा यान्ति तं पराभवलक्षणम् ॥ २५ ॥  
 ब्राह्मणान् प्रथमं द्वेष्टि गुक्मश्च मधुसूदन । भृत्यान् भक्तिमत्तश्चापि तं पराभव-  
 लक्षणम् ॥ २६ ॥ पूर्वा दिग्गोहितकारा शस्त्रवर्णा च दक्षिणा । आमपात्रप्रतीकाशा  
 पश्चिमा मधुसूदन ॥ २७ ॥ प्रदीपुश्च दिशः सर्वा धार्तराष्ट्रस्य माधव । महद्भवं  
 वेदयन्ति तस्मिन्पातलक्षणे ॥ २८ ॥ सहस्रपादं प्रामादं स्वप्नान्तेषु युधिष्ठिरः ।  
 अधिरौहमया दृष्टः सह भ्रातृभिरुच्यत ॥ २९ ॥ श्वेतोष्णीषाश्च दृश्यन्ते सर्वे ते  
 शुक्रवाससः । आसनानि च शुभ्राणि सर्वेषामुपलक्षये ॥ ३० ॥ तव चापि मया  
 रुक्म स्वप्नान्ते रुधिराविला । अस्त्रेण पृथिवी दृष्टा परिक्लिप्ता जनार्दन ॥ ३१ ॥ अस्त्रि-  
 सङ्घमाकटशामितोजा युधिष्ठिरः । सुवर्णपात्र्यां संसृष्टो भुक्तवान् घृतपाय-  
 सम् ॥ ३२ ॥ युधिष्ठिरो मया दृष्टो असमानो वसुधराम् । ह्यया दत्तामिमां व्यक्तं  
 भोक्त्यते स वसुधराम् ॥ ३३ ॥ उच्चपर्वतमाकटो भीमकर्मा रुकोदरः । गदा-  
 पाणिर्नरव्याघ्रो असन्नव महीमिमाम् ॥ ३४ ॥ क्रयविष्यति नः सर्वान् स सुव्यक्तं  
 महारणे । विदितं मे हवीकेश यतो धर्मस्ततो जयः ॥ ३५ ॥ पाण्डुरं गज-  
 माकटो गाण्डीवी स धनक्षयः । ह्यया सार्द्धं हवीकेश शिवा परमया ज्वलन् ॥ ३६ ॥  
 यूयं सर्वे विष्यध्वं तत्र मे नास्ति संशयः । पार्थिवान् मनरे रुक्मं दूर्योधनपुरो-  
 गमान् ॥ ३७ ॥ नकुलः सहदेवश्च सात्यकिश्च महारथः । शुक्रकेयूरकवचाः शुक्र-  
 नाल्याग्रराशताः ॥ ३८ ॥ अधिकता नरव्याघ्रा नरवाहनमुत्तमम् । त्रय एते मया  
 दृष्टा पाण्डुरच्छत्रवाससः ॥ ३९ ॥ श्वेतोष्णीषाश्च दृश्यन्ते त्रय एते जना-  
 र्दन । धार्तराष्ट्रेषु सैन्येषु तान् विजानीहि केशव ॥ ४० ॥ अश्वथामा रूपशैचव  
 कृतवर्मा च साह्वभः । रुक्मोष्णीषाश्च दृश्यन्ते सर्वे माधव पार्थिवाः ॥ ४१ ॥ उक्ते  
 प्रयुक्तमाकटो भीमद्रोणो जनार्दन । मया सार्द्धं महाबाहो धार्तराष्ट्रेण वा-

রিতৌ ॥ ৪২ ॥ অগস্ত্যশাস্তাঞ্চ দিশং প্রযাতাঃ স্ম জনার্দন । অচিরেণৈব কালেন  
 প্রাপ্যামৌ যমসাদনম্ ॥ ৪৩ ॥ অহৃৎশান্যে চ রাজানো যচ্চ তৎ ক্লমগুণ্ডলম্ ।  
 গাণ্ডীবাগ্নিঃ প্রবেক্ষ্যাম ইতি মে নাস্তি সংশয়ঃ ॥ ৪৪ ॥ কৃষ্ণ উবাচ । উপস্থিতঃ  
 বিনাশেষং স্মনমদ্য বস্কুরা । যথা হি মে বচঃ কর্ণ নাবৈতি হৃদযং তব ॥ ৪৫ ॥  
 সর্বেষাং তাত ভূতানাং বিনাশে প্রত্যুপস্থিতে ! অনযো নযসংকাশো হৃদযান্নাপ-  
 সর্পতি ॥ ৪৬ ॥ কর্ণ উবাচ । অপি হ্যং কৃষ্ণ পশ্যাম জীবন্তোহস্মান্নহারণাৎ ।  
 সমুত্তীর্ণা মহাবাহো বীরক্লবিনাশনাৎ ॥ ৪৭ ॥ অথ বা সঙ্গমঃ কৃষ্ণ স্বর্গে নো ভি-  
 বিতা ধ্রুবম্ । তত্রৈদানীং সমেষ্যামঃ পুনঃ সার্কং হ্রয়ানয ॥ ৪৮ ॥ সঞ্জয় উবাচ ।  
 ইত্যুক্ত্বা মাধবং কর্ণঃ পরিষজ্য চ পীড়িতম্ । বিসজ্জিতঃ কেশবেন রথোপস্থ্য-  
 দবাতরৎ ॥ ৪৯ ॥ ততঃ স রথমাস্থ্য জায়ুনদবিভূষিতম্ । সহাস্মাভিনিববৃতে  
 রাধেযো দীনমানসঃ ॥ ৫০ ॥ ততঃ শীঘ্রতরং প্রায়াৎ কেশবঃ সহসাত্যকিঃ । পুন-  
 রুচ্চারযন্ বাণীং যাহি যাহীতি সারথিম্ ॥ ৫১ ॥

ইত্যুদ্ভোগপর্বণি কর্ণবিবাদপর্বণি কর্ণশ্রীকৃষ্ণসংবাদে ত্রিচছারিংশ-  
 দধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৪৩ ॥



বৈশম্পায়ন উবাচ । অসিদ্ধান্ননযে কৃষ্ণে কুরুভ্যঃ পাণ্ডবান্ গতে । অভিগম্য  
 পৃথাং ক্লভা শনৈঃ শোচন্নিবাত্রবীৎ ॥ ১ ॥ জানাসি মে জীবপুল্লি ভাবং  
 নিত্যমবিগ্রহে । ক্রোশতো ন চ গচ্ছীতে বচনং মে সুষোধনঃ ॥ ২ ॥ উপপন্নো  
 হসৌ রাজা চেদিপাঞ্চালকেক্ষৈঃ । ভীমাজ্জুনাভ্যাং কৃষ্ণেন যুযুধানযমৈরপি ॥ ৩ ॥  
 উপপ্লব্যে নিবিষ্টোহপি ধর্ম্মমেব যুধিষ্ঠিরঃ । কাজ্জতে জ্ঞাতিমৌহর্দাৎ বলবান্  
 দুর্বলো যথা ॥ ৪ ॥ রাজা তু ধৃতরাষ্ট্রোহযং বযোরদ্ধো ন শাম্যতি । মত্তঃ পুত্র-  
 নদেনৈব বিধর্ম্মে পথি বর্ত্ততে ॥ ৫ ॥ জঘদ্রথস্য কর্ণস্য তথা দুঃশাসনস্য চ । সৌবলস্য  
 চ দুর্বুদ্ধ্যা মিথো ভেদঃ প্রপৎস্যতে ॥ ৬ ॥ অধর্ম্মেণ হি ধর্ম্মিষ্ঠে কৃতং বৈ কার্য্যমী-  
 দৃশম্ । যেষাং তেষামযং ধর্ম্মঃ সান্নুবন্ধো ভবিষ্যতি ॥ ৭ ॥ হ্রিয়মাণে বলাদ্ধর্ম্মে  
 কুরুভিঃ কো ন সংজ্বরেৎ । অসান্না কেশবে যাতে সমুদ্ভোক্ষ্যন্তি পাণ্ডবাঃ ॥ ৮ ॥ ততঃ  
 কুরুণামনযো ভবিতা বীরনাশনঃ । চিন্তযন্ন লভে নিদ্রামহঃসু চ নিশাসু চ ॥ ৯ ॥  
 শ্রুত্বা তু কুন্তী তদ্বাক্যমর্থকামেন ভাষিতম্ । সা নিশ্বসন্তী দুঃখার্তা মনসা  
 বিমমর্ষ হ ॥ ১০ ॥ ধিগস্ত্বর্থং যৎকৃতেহযং মহান্ জ্ঞাতিবধঃ কৃতঃ । বৎস্যতে  
 সুহৃদাঐব যুদ্ধেহস্মিন্ বৈ পরাভবঃ ॥ ১১ ॥ পাণ্ডবাশ্চেদিপাঞ্চালা যাদবাশ্চ

समागताः । भारतेः सह योऽस्यन्ति किम् दुःखमतः परम् ॥ १२ ॥ पश्ये दोषं  
 क्रुवं युद्धे तथायुद्धे पराभवम् । अधनस्य मृतं श्रेयो न हि ज्ञातिक्रयो  
 जयः । इति मे चिन्तयन्त्या वै हृदि दुःखं प्रवर्तते ॥ १३ ॥ पितामहः शास्त्रनव  
 आचार्यश्च युधांपतिः । कर्णश्च धार्तराष्ट्रार्थं वर्द्धयन्ति भयं मम ॥ १४ ॥ नाचार्यः  
 कामवान् शिष्येद्रोणे युध्येत जातुचित् । पाण्डवेषु कथं हर्दं कुर्यात्त च पिता-  
 महः ॥ १५ ॥ अयं द्वेको रथादृष्टिर्धार्तराष्ट्रस्य दुर्मतेः । मोहान्बुवर्ती सततं  
 पाप्मं द्वेष्टि च पाण्डवान् ॥ १६ ॥ महत्यनर्थे निर्बन्धौ बलवांश्च विशेषतः । कर्णः  
 सदा पाण्डवानां तन्मे दहति सश्रुति ॥ १७ ॥ आशंसे हृद्य कर्णस्य मनोऽहं  
 पाण्डवान् प्रति । असूदयितुमासाद्य दर्शयन्ती यथातथम् ॥ १८ ॥ तोषितो  
 भगवान् यत्र दूषसा मे वरुन्ददौ । आह्वानं मन्त्रसंयुक्तं वसन्त्याः पितृवेश्म-  
 नि ॥ १९ ॥ साहसन्तःपुरे राज्ञः कुन्तिभोजपुरकृता । चिन्तयन्ती बहुविधं हृद-  
 येन विदूषता ॥ २० ॥ बलाबलं मन्त्राणां ब्राह्मणस्य च बाहुलम् । स्त्रीभावाद्बाल-  
 तावाच्च चिन्तयन्ती पुनःपुनः ॥ २१ ॥ धात्र्या विश्रद्धया गुप्ता सखीजनरता तदा ।  
 दोषं परिहरन्ती च पितुश्चारित्र्यरक्षिणी ॥ २२ ॥ कथं नू सूकृतं मे स्यान्माप-  
 राधवती कथम् । भवेयमिति सङ्गित्य ब्राह्मणं तं नमस्य च ॥ २३ ॥ कौतूहलात्  
 तं लक्षा बालिश्यादाचरं तदा । कन्या सती देवमर्कमासादयमहं ततः ॥ २४ ॥  
 योऽसौ कानीनगर्भो मे पुत्रवत् परिरक्षितः । कस्मान् कुर्याद्वचनं पश्यन्  
 ब्राह्मिणं तथा ॥ २५ ॥ इति कुन्ती विनिश्चित्य कार्यनिश्चयमुत्तमम् । कार्यार्थ-  
 मतिनिश्चित्य यथो भागीरथीं प्रति ॥ २६ ॥ आह्वजस्य ततस्तस्य घृणिनः सत्य-  
 सन्निहः । गङ्गातीरे पृथार्शोषीद्वेदाध्ययननिश्चनम् ॥ २७ ॥ प्राङ्मुखस्योर्द्ध-  
 बाहोः सा पर्यातिष्ठत पृष्ठतः । जप्यावसाने कार्यार्थं प्रतीकृन्ती तपस्वि-  
 नी ॥ २८ ॥ अतिष्ठत् सूर्यातापार्ता कर्णस्योत्तरवासि । कौरव्यपत्नी बाष्पेयी  
 पद्ममालेव शुष्यती ॥ २९ ॥ आपृष्ठतापाङ्गुला स परिभृत्य यत्रतः । दृष्ट्वा कुन्ती-  
 मुपातिष्ठदतिवादय कृताङ्गलिः ॥ ३० ॥ यथान्यायं महातेजा मानी धर्मभृता-  
 वरः । उऽस्म्यन् प्रणतः प्राह कुन्तीं वैकर्तनो वृषः ॥ ३१ ॥

इत्युद्देश्यगर्भणि कर्णविवादपर्वणि कुन्तीकर्णसमागमे चतुश्चत्वारिंश-

दधिकशततमोऽध्यायः ॥ १९८ ॥

—•••—

कर्ण उवाच । राधेयोऽहमाधिरथिः कर्णश्चामतिवादये । प्राप्ता किमर्थं भवती ब्रुहि

किं करवाणि ते ॥ १ ॥ कुन्तीवाच । कौन्तेयस्त्रुं न राधेघो न तवाधिरथः पिता ।  
 नासि सूतकुले जातः कर्णतद्विद्धि मे वचः ॥ २ ॥ कानीनस्त्रुं मया जातः पूर्वजः  
 कुम्भिणा धृतः । कुम्भिराजस्य भवने पार्थस्त्रुमसि पुत्रक ॥ ३ ॥ प्रकाशकर्मा तपनो  
 योऽयं देवो विरोचनः । अज्जानद्वायं नव्येष कर्ण शस्त्रभृताम्बर ॥ ४ ॥ कुण्डी  
 वद्वकवचो देवगर्भः श्रिया हृतः । जातस्त्रुमसि दुर्द्धर्ष मया पुत्र पितुर्गृहे ॥ ५ ॥ स त्रुं  
 ब्रातूनसंबुध्य मोहाद्वदुपसेवसे । धार्तराष्ट्रान् तद्व्यक्तं द्वयि पुत्र विशेषतः ॥ ६ ॥  
 एतद्वर्णफलं पुत्र नराणां धर्मनिश्चये । यद्व्यस्त्यस्य पितरो माता चाप्येकदर्शि-  
 नी ॥ ७ ॥ अज्जनेनाज्जितां पूर्वं हतां लोभादसाधुभिः । आच्छिद्य धार्त-  
 राष्ट्रेभ्यो बुद्धु योधिष्ठिरीं श्रियम् ॥ ८ ॥ अद्य पश्यात् कुरवः कर्णाज्जूनसमा-  
 गमम् । सौभ्रात्रेण समालक्ष्य समनस्तानसाधवः ॥ ९ ॥ कर्णाज्जूनो वै भवेतां  
 यथा रामजनादानी । असाध्यं किम् लोके स्याद्व्युवयोः सहिताग्रनोः ॥ १० ॥  
 कर्ण शोभिष्यसे नूनं पञ्चभिर्भ्रातृभिरृतः । देवैः परिरुतो व्रक्षा वेद्यामिव  
 महाधरे ॥ ११ ॥ उपपन्नो गुणैः सर्वैर्जेष्ठैः श्रेष्ठेषु वक्रुषु । सूतपुत्रेति मा  
 शकः पार्थस्त्रुमसि वीर्यवान् ॥ १२ ॥

इत्युद्योगपर्वणि कर्णविवादपर्वणि कुन्तीवाक्ये पञ्चचत्वारिंशदधिक-

शततमोऽध्यायः ॥ १४५ ॥



वैशम्पायन उवाच । ततः सूर्याग्निश्चरितां कर्णः शुश्राव भारतीं । दूरत्यायां  
 प्रग्विनीं पितृवद्व्यास्करैर्रिताम् ॥ १ ॥ सत्यमाह पृथा वाक्यं कर्ण मातृवचः कुरु ।  
 श्रेयस्ते स्यान्नरव्याह सर्वमाचरतस्तथा ॥ २ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तस्य  
 मात्रा च स्वयं पित्रा च भानुना । चचाल नैव कर्णस्य मतिः सत्यधृतेस्तदा ॥ ३ ॥  
 कर्ण उवाच । न टैतत् श्रद्धये वाक्यं क्लिष्ये भाषितं द्वया । धर्मादारं नमैतत्  
 स्याग्नियोगकरणं तव ॥ ४ ॥ अकरोन्मयि यत् पापं तव गी सूमहात्यम् । अपा-  
 कीर्णोऽस्मि यन्मातस्तद्व्यशःकीर्तिनाशनम् ॥ ५ ॥ अहंश्रे क्लिषो जातो न प्राप्नुः  
 क्लमसत्क्रियाम् । द्वयकृते किम् पापीयः शत्रुः कुर्यान्ममाहितम् ॥ ६ ॥ क्रियाकाले  
 द्वयक्रेणशमक्रुद्वा द्विममं मम । हीनसंस्कारसमयमद्य मां समचूदः ॥ ७ ॥ न वै  
 मम हितं पूर्वं मातृवच्छेदितं द्वया । सा मां संबोधयस्यद्य केवलाग्रहितै-  
 विनी ॥ ८ ॥ क्रुषेण सहितां को वै न व्यथेत धनञ्जयात् । कोऽद्य भीतं न मां  
 विद्यात् पार्थानां समितिं गतम् ॥ ९ ॥ अब्राता विदितः पूर्वं युद्धकाले प्रका-

शितः । पाण्डवान् यदि गच्छामि किं मां क्लृप्तं वदिष्यति ॥ १० ॥ सर्वकामैः सं-  
 विभक्तः पूजितश्च यथासुखम् । अहं वै धार्तराष्ट्राणां कुर्यां तदफलं क-  
 थम् ॥ ११ ॥ उपनह्य परैरैरुं ये मां नित्यमुपासते । नमस्कुर्यन्ति च सदा वसवो  
 वासवः यथा ॥ १२ ॥ मम प्राणेन ये शत्रून् शक्ताः प्रतिसमासितुम् । मन्यन्ते ते  
 कथं तेषामहं हिन्यां मनोरथम् ॥ १३ ॥ मया प्लवेन संग्रामं तृतीयन्ति  
 दुरत्ययम् । अपारे पारकामा ये त्यजेयं तानहं कथम् ॥ १४ ॥ अयं हि कालः  
 सश्रापेण धार्तराष्ट्रोपजीविनाम् । निर्बेक्यं मया तत्र प्राणानपरिरक्षता ॥ १५ ॥  
 कृतार्थाः सुभृता ये हि कृत्यकाले ह्यपस्थिते । अनवेक्यं कृतं पापा विकुर्वन्त्य-  
 नवस्थिताः ॥ १६ ॥ रङ्गकिल्बिषिणां तेषां भर्तृपिण्डापहारिणाम् । नैवायं न  
 परो लोको विद्यते पापकर्मणाम् ॥ १७ ॥ धृतराष्टस्य पुत्राणामर्थे योऽस्यामि  
 ते सूतेः । बलं शक्तिं श्वाय न वै ह्यनृतं वदे ॥ १८ ॥ आनुशंस्यमथो  
 वृत्तं रङ्गं संपुरुषोचितम् । अतोऽर्थकरमप्येतन्न करोम्यथ ते वचः ॥ १९ ॥  
 न च तेह्यं समारम्भो मयि मोघो भविष्यति । वध्यान् विषहान् संग्रामे न हनि-  
 ष्यामि ते सुतान् ॥ २० ॥ युधिष्ठिरं भीमं यमौ चैवाज्जुनादते । अज्जनेन  
 समं युद्धं मम योधिष्ठिरे वले ॥ २१ ॥ अज्जुनं हि निहत्याजौ संग्रामं स्यात्  
 फलं मया । यशसा वापि युज्येयं निहतः सव्यसाचना ॥ २२ ॥ न ते जातु  
 नशिष्यन्ति पुत्राः पक्षं यशसिनि । निरज्जुनाः सकणा वा साज्जुना वा हते मयि ॥ २३ ॥  
 इति कर्णवचः श्रुत्वा कुन्ती दुःखात् प्रवेपथी ! उवाच पुत्रमाश्लिष्य कर्णं धैर्यादक-  
 म्पनम् ॥ २४ ॥ एवं वै भाव्यमेतेन क्षयं वास्यन्ति कौरवाः । यथा ह्यं भाषसे  
 कर्ण दैवस्तु बलवन्तरम् ॥ २५ ॥ ह्यथा चतुर्णां ब्रातॄणामभयं शत्रुकषण । दत्तं तं  
 प्रतिजानीहि सङ्गरप्रतिमोचनम् ॥ २६ ॥ अनामयं स्वस्ति चेति पृथाथो कर्णम-  
 ब्रवीत् । तां कर्णेऽथ तथेत्युक्त्वा ततस्तौ जग्मतुः पृथक् ॥ २७ ॥

इत्युद्घोषपरिणि कर्णविवादपरिणि कुन्तीकर्णसर्वादौ षट्छत्रारिंशदधिक-

शततमोऽध्यायः ॥ १४७ ॥ समाप्तं कर्णविवादपरि ।



अथ सैन्यानिर्वाणपरि ।

वैशम्पायन उवाच । आगम्य हास्तिनपुरादप्लव्यमरिन्दमः । पाण्डवानां यथा-  
 वृत्तं केशवः सर्वमुक्तवान् ॥ १ ॥ सन्ताप्य सूचिरं कालं मन्त्रयित्वा पुनःपुनः । स्वमेव  
 त्वनं शौरिर्विश्रामार्थं जगाम ह ॥ २ ॥ विदुज्य सर्वान्पतीन् विराटप्रमुखा-



सुदा । पाण्डवाः भ्रातरः पञ्च भानावस्तुं गते सति ॥ ७ ॥ सक्र्यामुपास्य ध्यायन्तु-  
 त्तमेव गतमानसाः । आनीय क्रुषः दशार्हं पुनर्मन्त्रममन्त्रयन् ॥ ८ ॥ युधिष्ठिर  
 उवाच । ह्यथा नागपुरं गत्वा सभायां धृतराष्ट्रजः । किमुक्तः पुण्डरीकाक्ष तमः  
 शंसितुमर्हसि ॥ ९ ॥ वासुदेव उवाच । मया नागपुरं गत्वा सभायां धृतराष्ट्रजः ।  
 तथ्यं पथ्यं हितक्षोक्ते न च गृह्णाति दुर्मतिः ॥ ७ ॥ युधिष्ठिर उवाच । तस्मिन्नु-  
 पथमापन्ने कुरुरक्षः पितामहः । किमुक्तवान् ह्यवीकेश दुर्योधनममर्षणम् ॥ १ ॥  
 आचार्येया वा महाभागो भारद्वाजः किमब्रवीत् । पिता वा धृतराष्ट्रस्तुं गान्धारी-  
 वा किमब्रवीत् ॥ ८ ॥ पिता षवीयानस्माकं कृत्वा धर्मभूताश्रयः । पुल्लशोकाभि-  
 सस्तुपुः किमाह धृतराष्ट्रजम् ॥ २ ॥ किञ्च सर्वे नृपतयः कृतायां ये समासते ।  
 उक्तवन्तो यथातद्वत् तद्ब्रुहि त्वं जनार्दन ॥ १० ॥ उक्तवान् हि भवान् सर्वं वचनं  
 कुरुमुख्ययोः । धार्तराष्ट्रस्य तेषां हि वचनं कुरुसंसदि ॥ ११ ॥ कामलोभा-  
 भिभूतस्य नन्दस्य प्रार्जुमानिनः । अप्रियं हृदये मह्यं तन्न तिष्ठति केशव ॥ १२ ॥  
 तेषां वाक्यानि गोविन्द श्रोतुमिच्छाम्यहं विभो । यथा च नाभिपद्येत काल-  
 स्तात तथा कुरु । भवान् हि नो गतिः क्रुष भवान्माथो भवान् गुरुः ॥ १३ ॥ वासु-  
 देव उवाच । शृणु राजन् यथा वाक्यमुक्ते राजा सुयोधनः । मध्ये कुरुणां रा-  
 जेन्द्र सभायां तन्निबोध मे ॥ १४ ॥ मम वै श्राविते वाक्ये जहास धृतराष्ट्रजः ।  
 अथ तीम्नः सुसंक्रुद्ध इदं वचनमब्रवीत् ॥ १५ ॥ दुर्योधन निबोधेदं कुलार्थे  
 यद्ब्रवीमि ते । तं श्रुत्वा राजशार्दूल स्वकुलस्य हितं कुरु ॥ १६ ॥ मम तात  
 पिता राजन् शान्तनुर्लोकविश्रुतः । तस्याहमेक एवासं पुत्रः पुल्लवताश्रय ॥ १७ ॥  
 तस्य बुद्धिः समुत्पन्ना द्वितीयः स्यात् कथं सूतः । एकं पुल्लमपुत्रं वै प्रवदन्ति  
 मनीषिणः । न चोच्छेदं कुलं यायाद्विस्तार्येत कथं यशः ॥ १८ ॥ तस्याहमी-  
 प्सितं बुद्ध्वा कालीं मातरमावहम् । प्रतिज्ज्ञां दूष्करां क्रुत्वा पितुरर्थे कुलस्य च ॥ १९ ॥  
 अराजा चोर्द्ध्वरेताश्च यथा सुविदितं तव । प्रतीतो निवसाम्येष प्रतिज्ज्ञामनु-  
 पालयन् ॥ २० ॥ तस्यां जज्जे महाबाहूः श्रीमान् कुरुकुलोद्भवः । विचित्रवीर्येया  
 धर्मात्मा कनीयान्मम पार्थिव ॥ २१ ॥ स्वर्घातेहहं पितरि तं स्वराज्ये मनि-  
 वेशयम् । विचित्रवीर्यं राजानं भूतेयां भुत्वा ह्यधश्चरः ॥ २२ ॥ तस्याहं सदृ-  
 शान्दारान्नाजेन्द्र समुपाहरम् । जिह्वा पार्थिवसंघातमपि ते बहूशः श्रुतम् । ततो  
 रामेण समरे दन्दयुद्धमुपागमम् ॥ २३ ॥ स हि रामभयादेभिर्नागरैर्विप्रवासितः ।  
 दारेष्वप्यतिषक्तश्च वस्त्राणं समपद्यत ॥ २४ ॥ यदा ह्यराजके राक्षे न बवष

সুরেশ্বরঃ। তদাভ্যধাবন্মামেব প্রজাঃ ক্ষুদ্ৰঘপীড়িতাঃ ॥ ২৫ ॥ প্রজা উচুঃ।  
 উপক্ষীণাঃ প্রজাঃ সৰ্বা রাজা ভব ভবায় নঃ। ঈতীঃ প্রণুদ ভদ্রস্তে শান্তনোঃ কুল-  
 বর্জন ॥ ২৬ ॥ পীড়্যন্তে তে প্রজাঃ সৰ্বা ব্যাধিভির্ভৃশদারুণৈঃ। অন্নাবশিষ্টা  
 গাঙ্কেয তাঃ পরিত্রাতুমর্হসি ॥ ২৭ ॥ অধীন প্রণুদ বীর হুং প্রজা ধর্মেণ পালয।  
 হুযি জীবতি মা রাক্ষেং বিনাশমুপগচ্ছতু ॥ ২৮ ॥ ভীষ্ম উবাচ। প্রজানাং ক্রোশ-  
 তীনাং বৈ নৈবাক্ষু ভ্যত মে মনঃ। প্রতিজ্ঞাং রক্ষমাণস্য সদৃক্তং স্মরতস্তথা ॥ ২৯ ॥  
 ততঃ পৌরা মহারাজ মাতা কালী চ মে শুভা। ভৃত্যাঃ পুরোহিতাচার্য্যা ব্রাহ্মণাশ্চ  
 বহুশ্রুতাঃ। মামুচুর্ভৃশসন্তপ্তা ভব রাজেতি সন্ততম্ ॥ ৩০ ॥ প্রতীপরক্ষিতং  
 রাক্ষেং হুং প্রাপ্য বিনশিষ্যতি। স হুমস্মদ্বিতার্থং বৈ রাজা ভব মহামতে ॥ ৩১ ॥  
 ইত্যুক্তঃ প্রাঞ্জলিভূত্বা দুঃখিতো ভৃশমাতুরঃ। তেভ্যো ন্যবেদযস্তত্র প্রতিজ্ঞাং  
 পিতৃগৌরবাৎ। উর্দ্ধরেতা হুরাজা চ কুলস্যার্থে পুনঃপুনঃ ॥ ৩২ ॥ ততোহহং  
 প্রাঞ্জলিভূত্বা মাতরং সং প্রসাদযম্। নায শান্তনুনা জাতঃ কৌরবং বংশমুদ্বহম্।  
 প্রতিজ্ঞাং বিতথাং কুৰ্য্যামিতি রাজন্ পুনঃ পুনঃ ॥ ৩৩ ॥ বিশেষতস্তদর্থঞ্চ প্রতিজ্ঞাং  
 কৃতবানহম্। অহং প্রেষ্যশ্চ দাসশ্চ তবায় স্মৃতবৎসলে ॥ ৩৪ ॥ এবং তামনু-  
 নীযাহং মাতরং জনমেব চ। অযাচং ভাতৃদারেষু তদা ব্যাসং মহামুনিম্ ॥ ৩৫ ॥  
 সহ মাত্রা মহারাজ প্রসাদ্য তমৃষিৎ তদা। অপত্যার্থং মহারাজ প্রসাদং কৃত-  
 বাংশ্চ সঃ ॥ ৩৬ ॥ ত্রীন্ স পুত্রানজনযত্তদা ভরতসন্তম। অন্ধঃ করণহীনহ্মান বৈ  
 রাজা পিতা ভব ॥ ৩৭ ॥ রাজা তু পাণ্ডুরভবমহাত্মা লোকবিশ্রুতঃ। স রাজা  
 তস্য তে পুত্রাঃ পিতৃদাযাদ্যহারিণঃ ॥ ৩৮ ॥ মা তাত কলহং কাৰ্ষী রাজ্যস্যার্কং  
 প্রদীবতাম। যযি জীবতি রাজ্যং কঃ সম্প্রশাসেৎ পুমানিহ ॥ ৩৯ ॥ মা বমং-  
 স্থা বচো মহং শনমিচ্ছামি বঃ সদা। ন বিশেষোহস্তি মে পুত্র হুযি তেষু চ পা-  
 র্থিব ॥ ৪০ ॥ মতমেতৎ পিতৃস্তৃত্যং গান্ধার্য্যা বিদুরস্য চ। শ্রোতব্যং খলু বৃদ্ধা-  
 নাং মাতিশকীর্বচো মম। নাশযিষ্যসি মা সৰ্বমাত্মানং পৃথিবীং তথা ॥ ৪১ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি সৈন্যনির্বাণপর্বনি ভগবদ্বাক্যে সপ্তচত্বারিংশ-

দধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৪৭ ॥



বাসুদেব উবাচ। ভীষ্মেণোক্তে ততো দ্রোণো দুৰ্য্যোধনমভাষত। মধ্যে নৃপা-  
 নাং ভদ্রং তে বচনং বচনক্ষমঃ ॥ ১ ॥ প্রাতীপঃ শান্তনুস্তাত কুলস্যার্থং যথো-  
 খিতঃ। যথা দেবব্রতো ভীষ্মঃ কুলস্যার্থে স্থিতোহভবৎ ॥ ২ ॥ তথা পাণ্ডুরপতিঃ

सत्यसङ्को जितेश्चिषः । राजा कुरूणां धर्मात्मा सुव्रतः सुसमाहितः ॥ ७ ॥ ज्ये-  
 ष्ठाथ राज्यमददद्धृतराष्ट्राय धीमते । यवीयसे तथा ऋषे कुरूवंशविवर्द्धनः ॥ ८ ॥  
 ततः सिंहासने राजन् श्वापषिष्टेनमच्युतम् । वनं जगाम कौरव्यो भार्याभ्यां  
 सहितो नृपः ॥ ९ ॥ नीचैः शिवा तु विदुर उपास्ते न्य विनीतवत् । प्रेष्यवत्  
 पुरुषव्याघ्रो बालव्यजनमुत्क्रिपन् ॥ १० ॥ ततः सर्वाः प्रजास्तत धृतराष्ट्रं  
 जनेश्वरम् । अश्वपदस्तु विधिवन्मथा पाण्डुः जनाधिपम् ॥ ११ ॥ विमृज्य धृतराष्ट्राय  
 राज्यं स विदुराय च । चत्वार पृथिवीं पाण्डुः सर्वां परपुरञ्जयः ॥ १२ ॥ कोषसं-  
 जनने दाने भृत्यानां क्षमवेक्षणे । भरणे चैव सर्वस्य विदुरः सत्यसङ्करः ॥ १३ ॥  
 सन्निविग्रहसंयुक्तो राज्ञां सन्नाहनक्रियाः । अवैक्यतः महातेजा तीम्नः पर-  
 पुरञ्जयः ॥ १४ ॥ सिंहासनस्थो नृपतिर्धृतराष्ट्रो महाबलः । अस्मात्मानः सततं  
 विदुरेण महान्ना ॥ १५ ॥ कथं तस्य कुले जातः कुलभेदं व्यवस्यसि । सन्धुष  
 द्रातृभिः सार्द्धं भुङ्क्वु भोगान् जनाधिप ॥ १६ ॥ त्रवीम्यहं न कार्पण्यमार्थ-  
 हेतोः कथञ्चन । तीम्नेण दत्तमश्लामि न त्वया राजसत्तम ॥ १७ ॥ नाहं त्वन्नोत्ति-  
 काङ्क्षिष्ये रत्न्यपायं जनाधिप । यतो तीम्नस्ततो द्रोणो यद्धीमन्स्त्राह तं  
 कुरु ॥ १८ ॥ दीयतां पाण्डुपुत्रेभ्यो राज्यार्द्धमरिकर्षण । सममाचार्यकं तात  
 तव तेषां मे सदा ॥ १९ ॥ अश्वत्थामा यथा महं तथा श्वेतहयो मम । बहना  
 किं प्रलापेन यतो धर्मस्ततो जयः ॥ २० ॥ वासुदेव उवाच । एवमुक्ते  
 महाराज द्रोणेनामिततेजसा । व्याजहार ततो वाक्यं विदुरः सत्यसङ्करः ।  
 पितुर्ददनमश्नीक्य परिरृत्य च धर्मवित् ॥ २१ ॥ विदुर उवाच । देवव्रत निवो-  
 धेदं वचनं मम भाषतः । अनर्कः कौरवो वंशश्रुवायं पुनरुद्धृतः । तन्मे  
 बिलपमानस्य वचनं समुपेक्षसे ॥ २२ ॥ कोहयं दुर्घोषेनो नाम कुलेहस्मिन्  
 कुलपांसनः । यस्य लोभात्तिभूतस्य मतिं समन्ववर्द्धसे ॥ २३ ॥ अनार्यस्याकृत-  
 ङ्गस्य लोभेन हतचेतसः । अतिक्रामति यः शास्त्रं पितुर्दर्मार्थदर्शिनः ॥ २४ ॥  
 एते नश्यान्ति कुरवो दुर्घोषधनकृतेन वै । यथा ते न प्रणश्येयुर्महाराज तथा  
 कुरु ॥ २५ ॥ मातृश्वेव धृतराष्ट्रं पूर्णमेव महान्यते । चित्रकार इवालेख्यं कृत्वा  
 श्वापितवानसि ॥ २६ ॥ प्रजापतिः प्रजाः सृष्ट्वा यथा संहरते तथा । नोपेक्ष्य  
 महाबाहो पश्यामानः कुलक्षयम् ॥ २७ ॥ अथ तेह्य मतिर्नर्कः विनाशे प्रतुप-  
 स्थिते । वनं गच्छ मया सार्द्धं धृतराष्ट्रेण चैव ह ॥ २८ ॥ बद्ध्वा वा निरुतिप्रङ्गं  
 धार्तराष्ट्रं सुदुर्मतिम् । शाधीदं राज्यमद्यांशु पाण्डुवैरतिरक्षितम् ॥ २९ ॥

প্রসীদ রাজশাদূল বিনাশো দৃশ্যতে মহান্ । পাণ্ডবানাং কুরুণাঞ্চ রাজ্ঞাঞ্চামি-  
 ততেজসাম্ ॥ ২৬ ॥ বিররামৈবমুক্তা তু বিদুরো দীনমানসঃ । প্রধ্যায়মানঃ স তদা  
 নিশ্বসংশ্চ পুনঃপুনঃ ॥ ২৭ ॥ ততোহথ রাজ্ঞঃ সুবলস্য পুত্রী ধর্মার্থযুক্তং কুলনাশ-  
 ভীতা । দুর্যোধনং পাপমতিং নৃশংসং রাজ্ঞাং সমক্ষং স্মৃতমাহ কোপাৎ ॥ ২৮ ॥  
 যে পার্থিবা রাজসভাং প্রবিষ্টা ব্রহ্মর্ষযো যে চ সভাসদোহন্যে । শৃণুস্ত বক্ষ্যামি  
 তবাপরাধং পাপস্য সাগাত্যপরিচ্ছদস্য ॥ ২৯ ॥ রাজ্যং কুরুণামনুপূর্বভোজ্যং  
 ক্রমাগতো নঃ কুলধর্ম এষঃ । ত্বং পাপবুদ্ধেহতিনৃশংসকর্মন্ রাজ্যং কুরুণা-  
 মনযাদ্বিহংসি ॥ ৩০ ॥ রাজ্যে স্থিতো ধৃতরাষ্ট্রো মনীষী তস্যানুজো বিদুরো  
 দীর্ঘদর্শী । এতাবতিক্রম্য কথং নৃপত্বং দুর্যোধন প্রার্থষসেহদ্য মোহাৎ ॥ ৩১ ॥  
 রাজা চ ক্ষত্রা চ মহানুভাবৌ ভীষ্মে স্থিতে পরবন্তৌ ভবেতাম্ । অযন্ত ধর্মজ্ঞ-  
 তযা মহাত্মা ন রাজ্যকামো নুবরো নদীজঃ ॥ ৩২ ॥ রাজ্যন্ত পাণ্ডোরিদমপ্রধ্ব্যৎ  
 তস্যাদ্য পুত্রাঃ প্রভবন্তি নান্যে । রাজ্যং তদেতন্নিখিলং পাণ্ডবানাং পৈতা-  
 মহং পুত্রপৌত্রানুগামি ॥ ৩৩ ॥ যদ্বৈ বৃত্তে কুরুমুখ্যো মহাত্মা দেবব্রতঃ সত্য-  
 সন্ধো মনীষী । সর্বং তদস্মাভিরহত্য ধর্মং গ্রাহং স্বধর্মং পরিপালযত্দিঃ ॥ ৩৪ ॥  
 অনুজ্ঞয়া চাথ মহাব্রতস্য বৃষানৃপোহযং বিদুরস্তথৈব । কার্যং ভবেত্তৎ সুহৃদ্ভি-  
 নিযুজ্য ধর্মং পুরস্কৃত্য সুদীর্ঘকালম্ ॥ ৩৫ ॥ ন্যাযাগতং রাজ্যমিদং কুরুণাং  
 যুধিষ্ঠিরঃ শাস্তু বৈ ধর্মপুত্রঃ । প্রচোদিতো ধৃতরাষ্ট্রেণ রাজ্ঞা পুরস্কৃতঃ শাস্তন-  
 বেন চৈব ॥ ৩৫ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি সৈন্যানির্বাণপর্বনি শ্রীকৃষ্ণবাক্যে অষ্টচত্বারিংশ-

দধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৪৮ ॥



বাসুদেব উবাচ । এরমুক্তে তু গান্ধার্যা ধৃতরাষ্ট্রো জনেশ্বরঃ । দুর্যোধনমুবা-  
 চেদং রাজ্ঞাং মধ্যে জনাধিপ ॥ ১ ॥ দুর্যোধন নিবোধেদং বদ্বাং বক্ষ্যামি পুত্র-  
 ক । তথা তৎ কুরু ভীষ্মস্তে যদ্যস্তি পিতৃগৌরবম্ ॥ ২ ॥ সোমঃ প্রজাপতিঃ পূর্বং  
 কুরুণাং বংশবর্দ্ধনঃ । সোমাদ্ভুব ষষ্ঠোহযং যযাতির্মহর্ষাশ্রজঃ ॥ ৩ ॥ তস্য  
 পুত্রা বভুবুর্হি পঞ্চ রাজর্ষিসত্তমাঃ । তেষাং যদুর্শ্বহাতেজা জ্যেষ্ঠঃ সমভবৎ  
 প্রভুঃ ॥ ৪ ॥ পুরুষবীযাংশ্চ ততো যোহস্মাকং বংশবর্দ্ধনঃ । শর্মিষ্ঠয়া সংপ্র-  
 সূতো দহিত্রা বৃষপর্বণঃ ॥ ৫ ॥ যদুশ্চ ভরতশ্রেষ্ঠ দেবযান্যাঃ সূতোহভবৎ ।  
 দৌহিত্রস্তাত শুক্রস্য কাব্যস্যামিততেজসঃ ॥ ৬ ॥ যাদবানাং কুলকরো বলবান্

वीर्यासम्मतः । अवमेने स तु ऋत्रं दर्पपूर्णः सुमङ्गवीः ॥ १ ॥ न चातिष्ठं पितुः  
 शास्त्रे बलदर्पविमोहितः । अवमेने च पितरं ब्रातृंश्चाप्यपराजितः ॥ ८ ॥ पृ-  
 थिव्यां चतुरस्रायां यदुरेवाभवद्वली । वशे क्रुद्धा स नृपतीम्यवसन्नागसाहस्ये ॥ १२ ॥  
 तं पिता परमक्रुद्धो यथातिर्ह्यवाञ्छुः । शशाप पुलं गान्कारे राज्याच्छापि  
 व्यरोपयत् ॥ १० ॥ ये चैनमश्ववर्तुस्तु ब्रातरौ बलदर्पितम् । शशाप तानपि  
 क्रुद्धो यथातिस्तनयानथ ॥ ११ ॥ यवीयांसं ततः पूरुं पुलं स्वशवर्तिनम् ।  
 राज्ञे निवेशयामास विधेयं नृपसत्तमः ॥ १२ ॥ एवं ज्येष्ठोऽप्यथोऽसिक्तौ  
 न राज्यामभिजायते । यवीयांसोऽभिजायन्ते राज्यं वृद्धोपसेवया ॥ १३ ॥ तथैव  
 सर्वधर्मज्ञः पितुर्मम पितामहः । प्रतीपः पृथिवीपालस्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः ॥ १४ ॥  
 तस्य पार्थिवसिंहास्य राज्यं धर्म्येण शासतः । त्रयः प्रज्जिह्वरे पुत्रा देवकणा  
 यशस्विनः ॥ १५ ॥ देवापिरभवदज्येष्ठो बाल्हीकस्तदनन्तरम् । तृतीयः शास्त्रनुस्त्रात  
 धृतिमान् मे पितामहः ॥ १६ ॥ देवापिस्तु महातेजा द्वेन्दोषी राजसत्तमः ।  
 धार्मिकः सत्यवादी च पितुः शुश्रूषणे रतः ॥ १७ ॥ पौरजानपदानां सम्मतः  
 साधुसंस्कृतः । सर्वेषां बालरुद्धानां देवापिर्हदयङ्गमः ॥ १८ ॥ वदान्यः सत्य-  
 सङ्गश्च सर्वभूतहिते रतः । वर्तमानः पितुः शास्त्रे ब्राह्मणानां तथैव च ॥ १९ ॥  
 बाल्हीकस्य प्रियो ब्राता शास्त्रनोश्च महात्मनः । सौब्राह्मण परं तेषां सहि-  
 तानां महात्मनाम् ॥ २० ॥ अथ कालस्य पर्याये वृद्धो नृपतिसत्तमः । सन्तारान्  
 नभिषेकार्थं कारयामास शास्त्रतः । मङ्गलार्थानि सर्वाणि कारयामास वै विभुः ॥ २१ ॥  
 तं ब्राह्मणाश्च वृद्धाश्च पौरजानपदैः सह । सर्वे निवारयामासुर्देवापेरभिषे-  
 चनम् ॥ २२ ॥ स तच्छ्रुत्वा तु नृपतिरभिषेकनिवारणम् । अश्रुकण्ठोऽभवद्राजा  
 पर्यशोचत चाञ्जम् ॥ २३ ॥ एवं वदान्यो धर्मज्ञः सत्यसङ्गश्च सोऽभवत् ।  
 प्रियः प्रजानामपि स द्वेन्दोषेण प्रदूषितः ॥ २४ ॥ हीनाङ्गं पृथिवीपालं नाभि-  
 नन्दन्ति देवताः । इति क्रुद्धा नृपश्रेष्ठं प्रत्येषधन् द्विजर्षभाः ॥ २५ ॥ ततः  
 प्रव्यथिताङ्गोऽसौ पुलःशोकसमन्वितः । निवारितं नृपं दृष्ट्वा देवापिः संश्रितो  
 वनम् ॥ २६ ॥ बाल्हीको मातुलकुलं त्यक्त्वा राज्यं समास्थितः । पितृन् भ्रातृन्  
 परित्यज्य प्राप्नुवान् परमृद्धिमत् ॥ २७ ॥ बाल्हीकेन वृद्धातः शास्त्रनुर्लोक-  
 विश्रुतः । पितर्युपरते राजन् राज्यकाममकारयत् ॥ २८ ॥ तथैवाहं मतिमता  
 परिचिन्त्येह पाण्डुना । ज्येष्ठः प्रब्रंशितो राज्याङ्गीनाङ्ग इति भारत ॥ २९ ॥  
 पाण्डुस्तु राज्यं संप्राप्तः कनीयानपि मङ्गपः । विनाशे तस्य पुत्राणांमिदं राज्य-

মরিন্দম ॥ ৩০ ॥ ময্যভাগিনি রাজ্যায় কথং ত্বং রাজ্যমিচ্ছসি । অরাজপুল্লো  
 হস্বামী পরস্বং হর্ন্তুমিচ্ছসি ॥ ৩১ ॥ যুধিষ্ঠিরো রাজপুল্লো মহাত্মা ন্যাযাগতং  
 রাজ্যমিদঞ্চ তস্য । সকৌরবস্যাস্য কুলস্য ভর্ত্তা প্রশাসিতা চৈব মহানুভাবঃ ॥ ৩২ ॥  
 স সত্যসন্ধঃ সততাশ্রমভঃ শাস্ত্রে স্থিতো বন্ধুজনস্য সাধুঃ । প্রিয়ঃ প্রজামাং সুহৃ-  
 দোহ্নুকম্পী জিতেন্দ্রিয়ঃ সাধুজনস্য ভর্ত্তা ॥ ৩৩ ॥ ক্ষমা তিতিক্ষা দম আর্জ্জবঞ্চ  
 সত্যব্রতত্বং শ্রুতমশ্রমাদঃ । ভুতানুকম্পা হ্নুশাসনঞ্চ যুধিষ্ঠিরে রাজগুণাঃ সম-  
 স্তাঃ ॥ ৩৪ ॥ অরাজপুল্লস্ত্বমনার্য্যবৃত্তৌ লুক্কঃ সদা বন্ধুষু পাপবুদ্ধিঃ । ক্রমাগতং  
 রাজ্যমিদং পরেষাং হর্ন্তং কথং শঙ্ক্যসি দর্শিনীত ॥ ৩৫ ॥ প্রযচ্ছ রাজ্যাদ্ধমপেত-  
 মোহঃ সবাহনং ত্বং সপরিচ্ছদঞ্চ । ততোহবশেষং তব জীবিতস্য মহানুজস্যৈব  
 ভবেন্নরেন্দ্র ॥ ৩৬ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি সৈন্যানির্বাণপর্বণি বাসুদেববাক্যে একোনপঞ্চাশ-  
 দধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৪৯ ॥



বাসুদেব উবাচ । এবমুক্তে তু ভীষ্মেণ .দ্রোণেন বিদুরেণ চ । গান্ধার্য্যা ধৃত-  
 রাষ্ট্রেণ ন চ মন্দোহস্ববুধ্যত ॥ ১ ॥ অবধূষোথিতো মন্দঃ ক্রোধসংরক্তলোচনঃ ।  
 অশ্বদ্রবস্ত তং পশ্চাদ্রাজানস্ত্যক্তজীবিতাঃ ॥ ২ ॥ আজ্ঞাপযচ্ছ রাজস্তান্ পার্থি-  
 বান্ দৃষ্টচেতসঃ । প্রযাধ্বং বৈকুরুকেত্রং পুষ্যোহদ্যেতি পুনঃপুনঃ ॥ ৩ ॥ ততস্তে  
 পৃথিবীপালাঃ প্রযযুঃ সহসৈনিকাঃ । ভীষ্মং সেনাপতিং কৃৎন্বা সংহৃতাঃ কালচো-  
 দিতাঃ ॥ ৪ ॥ অক্ষৌহিণ্যো দশৈকা চ কৌরবাণাং সমাগতাঃ । তাসাং প্রমুখতো  
 ভীষ্মস্তালকেতুর্য্যরোচত ॥ ৫ ॥ যদত্র যুক্তং প্রাপ্তঞ্চ তদ্বিধস্ব বিশাম্পতে । উক্তং  
 ভীষ্মেণ যদ্বাক্যং দ্রোণেন বিদুরেণ চ ॥ ৬ ॥ গান্ধার্য্যা ধৃতরাষ্ট্রেণ সনক্ষং মম  
 ভারত । এতত্তে কথিতং রাজন্ যদ্বত্তং কুরুসংসদি ॥ ৭ ॥ সাম্যমাদৌ প্রযুক্তং  
 মে রাজন্ সৌভ্রাত্ৰমিচ্ছতা । অতেদাযস্য বংশস্য প্রজানাঞ্চ বিরুদ্ধয়ে ॥ ৮ ॥  
 পুনর্ভেদশ্চ মে যুক্তো যদা সাম ন গৃহতে । কৰ্ম্মানুকীর্তনশ্চৈব 'দেবমানুষসং-  
 হিতম্ ॥ ৯ ॥ যদা নাঙ্গ্রিষতে বাক্যং সামপূর্বং সুযোধনঃ । তদা মযা সমানীয  
 ভেদিতাঃ সর্বপার্থিবাঃ ॥ ১০ ॥ অদ্ভুতানি চ ঘোরাণি দারুণানি চ ভারত । অমা-  
 নুষাণি কৰ্ম্মাণি দর্শিতানি মযা বিভো ॥ ১১ ॥ নিভৎসযিহ্না রাজস্তাংস্তনীকৃত্য  
 সুযোধনম্ । রাধেযং ভীষযিহ্না চ সৌবলঞ্চ পুনঃপুনঃ ॥ ১২ ॥ দ্যুততো ধার্ত্তরাষ্ট্রাণাং  
 নিন্দাং কৃৎন্বা তথা পুনঃ । ভেদযিহ্না নৃপান্ সর্ষান্ বাণ্ডির্শস্ত্রেণ চাসকুৎ ॥ ১৩ ॥

पुनः सामातिसंयुक्तं संप्रदानमथाक्रुवन् । अवेदां कुरुवंशस्य कार्ययोगात्त-  
थैव च ॥ १४ ॥ ते शूरा धृतराष्ट्रस्य भीष्मस्य विदुरस्य च । तिष्ठेयुः पाण्डवाः सर्वे  
हिंसा मानमधश्चराः ॥ १५ ॥ प्रयच्छन् च ते राज्यमनीशास्तु भवन् च । यथाह राजा  
गाह्वयेषो विदुरश्च हितं तव ॥ १६ ॥ सर्वं भवतु ते राज्यं पक्षग्रामान् विस-  
र्ज्य । अवश्यं भवनीया हि पितुस्तु राजसत्तम ॥ १७ ॥ एवमुक्तस्तु दूष्ठाया नैव  
भागं व्यमुक्त । दण्डं चतुर्थं पश्यामि तेषु पापेषु नान्यथा ॥ १८ ॥ निर्वाताश्च  
विनाशाय कुरुक्षेत्रं नराधिपाः । एतन्ने कथितं राजन् यद्दृष्टं कुरुसंसदि ॥१९॥  
न ते राज्यं प्रयच्छन्ति विना युद्धेन पाण्डव । विनाशहेतवः सर्वे प्रत्युपस्थित-  
मृत्यवः ॥ २० ॥

इत्युद्योपर्वणि सैन्यानिर्वाणपर्वणि श्रीकृष्णवाक्ये पञ्चाशदधिकशत-

तमोऽध्यायः ॥ १५० ॥



वैशम्पायन उवाच । जनार्दनवचः श्रुत्वा धर्मराजो युधिष्ठिरः । आतुनुवाच  
धर्मात्मा समक्षे केशवस्य ह ॥ १ ॥ श्रुतं भवद्विर्षदृष्टं सभायां कुरुसंसदि ।  
केशवस्यापि यद्वाक्यं तं सर्वमवधारितम् ॥ २ ॥ तस्मात् सैनाविभागं मे कुरुध्वं  
नरसत्तमाः । अफोहिण्यस्तु सप्रेताः समेता विर्जयाय वै । तामां ये पतयः सप्त  
विख्यातास्तान्निबोधत ॥ ३ ॥ ऋपदश्च विराटश्च धृष्टद्युम्नशिखण्डिनौ । सात्यकि-  
शेकितानश्च भीमसेनश्च वीर्यावान् ॥ ४ ॥ एते सैनाप्रणेतारो वीराः सर्वे  
तनुत्यजः । सर्वे वेदविदः शूराः सर्वे सूचरितव्रताः ॥ ५ ॥ हीमन्तो नीतिमन्तश्च  
सर्वे युद्धविशारदाः । इषस्रकुशलाः सर्वे तथा सर्वास्त्रयोधिनः ॥ ६ ॥ सप्ताना-  
मपि यो नेता सैनानां प्रविभागविं । यः सहैत रणे भीष्मं शरार्चिः पावको-  
पमम् ॥ ७ ॥ तं तावत् सहदेवात् प्रब्रुहि कुरुनन्दन । स्वगतं पुरुषव्याघ्र को-  
नः सैनापतिः क्षमः ॥ ८ ॥ सहदेव उवाच । संयुक्त एकदंष्ट्रश्च वीर्यावांश्च  
महीपतिः । र्थं समाश्रित्य धर्मज्ञं स्वमंशन्युः उच्यते ॥ ९ ॥ मत्स्यो विराटो  
बलवान् क्रुतास्त्रे । युद्धदर्शदः । प्रसहिष्यति संग्रामे भीष्मं तांश्च महारथान् ॥ १० ॥  
वैशम्पायन उवाच । तथोक्ते सहदेवेन वाक्ये वाक्यविशारदः । नकुलोहन-  
स्तुरं तस्मादिदं वचनमाददे ॥ ११ ॥ वयसा शास्त्रतो धैर्यात् कुलेनाभिजनेन  
च । हीमान् बलान्वितः श्रीमान् सर्वशास्त्रविशारदः ॥ १२ ॥ वेदशास्त्रं भवद्वाजा-  
दूर्क्षः सत्यसङ्गरः । यो नित्यं स्पर्द्धते द्रोणं भीष्मैश्चैव महाबलम् ॥ १३ ॥

স্নাঘ্যঃ পার্থিববংশস্য প্রমুখে বাহিনীপতিঃ । পুল্লপৌত্রৈঃ পরিবৃতঃ শতশাখ ইব  
 ক্রমঃ ॥ ১৪ ॥ যন্তুতাপ তপো ঘোরং সদারঃ পৃথিবীপতিঃ । রোষাদ্ধোণবিনা-  
 শাঘ বীরঃ সমিতিশোভনঃ ॥ ১৫ ॥ পিতেবাস্মান্ সমাধত্তে যঃ সদা পার্থিববর্ষভঃ ।  
 শ্বশুরো ক্রপদোহস্মাকং সেনাগ্রং সম্প্রকর্ষতু ॥ ১৬ ॥ স দ্রোণভীষ্মাবাঘাত্তৌ  
 সহেদ্বিতি মতির্শ্মম । স হি দিব্যাস্ত্রবিদ্রাজা সখা চাঙ্গিরসো নৃপঃ ॥ ১৭ ॥ মাদ্রী-  
 সূতাভ্যামুক্তে তু স্বমতে কুরুনন্দনঃ । বাসবির্বাসবসমঃ সব্যসাত্যত্রবীহ চঃ ॥ ১৮ ॥  
 যোহয়ং তপঃপ্রভাবেন ঋষিসন্তোষণেন চ । দিব্যঃ পুরুষ উৎপন্নো জ্বালাবর্ণো  
 মহাবলঃ ॥ ১৯ ॥ ধনুস্মান্ কবচীং খজী রথমারুহ্য দংশিতঃ । দিব্যৈর্হযবরৈ-  
 র্যুক্রৈরগ্নিকুণ্ডাং সমুখিতঃ ॥ ২০ ॥ গজ্জগ্নিব মহামেষো রথযোষণে বীর্যবান্ ।  
 সিংহসংহননো বীরঃ সিংহতুল্যপরাক্রমঃ ॥ ২১ ॥ সিংহোরক্ষঃ সিংহভুজঃ  
 সিংহবক্ষা মহাবলঃ । সিংহপ্রগজ্জনো বীরঃ সিংহক্ষন্ধো মহাদ্যুতিঃ ॥ ২২ ॥ সুক্রঃ  
 সুদক্ষঃ সুহনুঃ সুবাহুঃ সুমুখোহরুশঃ । সুজত্রুঃ সুবিশালাক্ষঃ সুপাদঃ সুপ্র-  
 তিষ্ঠিতঃ ॥ ২৩ ॥ অভেদ্যঃ সর্বশস্ত্রাণাং প্রতিম ইব বারণঃ । জজ্ঞে দ্রোণবি-  
 নাশাঘ সত্যবাদী জিতেন্দ্রিয়ঃ ॥ ২৪ ॥ ধৃষ্টদ্যুম্নমহং মন্যে সহেদ্রৌষ্মস্য শাষকান্ ।  
 বজ্রাশনিসমস্পর্গন্দীপ্তাস্যানুরগানিব ॥ ২৫ ॥ যমদূতসমান্ বেগে নিপাতে  
 পাবকোপমান্ । রানেণাজৌ বিষহিতান্ বজ্রনিষ্পেষদারুণান্ ॥ ২৬ ॥ পুরুষং  
 তং ন পশ্যামি যঃ সহেত মহাত্রতন্ । ধৃষ্টদ্যুম্ননৃতে রাজনিতি মে ধীযতে  
 মতিঃ ॥ ২৭ ॥ ক্রিপ্রহস্তশ্চিত্রযোধী মতঃ সেনাপতির্শ্মম । অভেদ্যকবচঃ শ্রীমান্  
 যাতঙ্গ ইব যুথপঃ ॥ ২৮ ॥ ভীমসেন উবাচ । বধার্থং যঃ সমুৎপন্নঃ শিখণ্ডী ক্রপ-  
 দাত্মজঃ । বদন্তি সিদ্ধা রাজেন্দ্র ঋষযশ্চ সমাগতাঃ ॥ ২৯ ॥ যস্য সংগ্রামমধ্যেষু  
 দিব্যমস্ত্রং প্রকূর্বতঃ । কপং দ্রক্ষ্যন্তি পুরুষা রামস্যেব মহাত্মনঃ ॥ ৩০ ॥ ন তং  
 যুদ্ধে প্রপশ্যামি যো ভিন্দ্যাত্তং শিখণ্ডিনম্ । শস্ত্রেণ সমরে রাজন্ সন্নদ্ধং স্যন্দনে  
 স্থিতম্ ॥ ৩১ ॥ দ্বৈরথে সমরে নান্যো ভীষ্মং হন্যামহাব্রতম্ । শিখণ্ডিনমৃতে  
 বীরং স মে সেনাপতির্শ্মতঃ ॥ ৩২ ॥ যুধিষ্ঠির উবাচ । সর্বস্য জগতস্তাত সার-  
 সারং বলাবলম্ । সর্বং জানাতি ধর্মাত্মা মতমেষণে কেশবঃ ॥ ৩৩ ॥ যমাহ  
 কৃষ্ণে দাশার্হঃ সোহস্ত সেনাপতির্শ্মম । কৃতাস্ত্রোহপ্যকৃতাস্ত্রো বা হৃদ্ধো বা যদি  
 বা যুবা ॥ ৩৪ ॥ এষ নো বিজযে মূলমেঘ তাত বিপর্যযে । অত্র প্রাণাশ্চ  
 রাজ্যঞ্চ ভাবাতাবৌ সুখাসুখে ॥ ৩৫ ॥ এষ ধাতা বিধাতা চ সিদ্ধিরত্র প্রতি-  
 ঠিতা । যমাহ কৃষ্ণে দাশার্হঃ সোহস্ত নো বাহিনীপতিঃ । ত্রবীতু বদতাং



শ্রেষ্ঠে নিশা সমভিবর্ততে ॥ ৩৬ ॥ ততঃ সেনাপতিং কৃৎস্না কৃৎস্নস্য বশবর্তিনঃ ।  
 রাত্রিশেষে ব্যতিক্রান্তে প্রযাস্যামো রণাজিরম্ । অধিবাসিতশস্ত্রাশ্চ কৃতকৌতুক-  
 মঙ্গলাঃ ॥ ৩৭ ॥ বৈশম্পায়ন উবাচ । তস্য তদ্বচনং শ্রুত্বা ধর্ম্মরাজস্য ধীমতঃ ।  
 অত্রবীৎ পুণ্ডরীকাক্ষো ধনঞ্জয়মবেক্ষ্য হং ॥ ৩৮ ॥ মমাপ্যেতে মহারাজ ভবন্তি-  
 র্ঘ উদাহতাঃ । নেতারস্তুব সেনায়া মতা বিক্রান্তযোধিনঃ ॥ ৩৯ ॥ সর্ব এব  
 সমর্থা হি তব শত্রুং প্রবাধিতুম্ ! ইন্দ্রস্যাপি ভয়ং হেতে জনয়েযুর্ম্মহাহবে ।  
 কিং পুনর্ধাত্তরাষ্ট্রাণাং লুকানাং পাপচেতসাম্ ॥ ৪০ ॥ মযাপি হি মহাবাহো-  
 ত্বৎপ্রিষার্থং মহাহবে । ক্রুতো যত্তো মহাংস্তত্র শমঃ স্যাদिति ভারত । ধর্ম্মস্য-  
 গতমানুগ্যং ন স্ম বাচ্যা বিবক্ষতাম্ ॥ ৪১ ॥ ক্রুতার্থং মন্যতে বাল আত্মানমবি-  
 চক্ষণঃ । ধাত্তরাষ্ট্রো বলস্থঞ্চ পশ্যত্যাত্মানমাতুরঃ ॥ ৪২ ॥ যুজ্যতাং বাহিনী সাধু  
 বধসাধ্যা হি মে মতাঃ । ন ধাত্তরাষ্ট্রাঃ শক্ষ্যন্তি স্মাতুং দৃষ্ট্বা ধনঞ্জয়ম্ ॥ ৪৩ ॥  
 ভীমসেনঞ্চ সংক্রুদ্ধং যমৌ চাপি যমোপনৌ । যুষুধানদ্বিতীয়ঞ্চ ধৃষ্টদ্যুম্নমমর্ষ-  
 ণম্ ॥ ৪৪ ॥ অভিমন্যুং দ্রৌপদেষান্ বিরাটক্রপদাবপি । অক্ষৌহিণীপতীং শ্চান্যা-  
 মরেন্দ্রান্ ভীমবিক্রমান্ ॥ ৪৫ ॥ সারবদ্রলমস্মাকং দৃষ্ট্বা ধর্ম্মং দুরাসদম্ । ধাত্তরাষ্ট্রবলং  
 সংখ্যে হনিষ্যতি ন সংশয়ঃ ॥ ৪৬ ॥ এবমুক্তে তু ক্রুৎস্নেন সস্ত্রাহায্যমরোত্তমাঃ ।  
 তেষাং প্রহৃষ্টমনসাং নাদঃ সমভবন্নহান্ । যোগং ইত্যথ সৈন্যানাং ত্বরতাং সস্ত্র-  
 ধাবতাম্ ॥ ৪৭ ॥ হযবারণশকাশ্চ নেমিষোষাশ্চ সর্বতঃ । শঙ্খদুন্দুভিষোষাশ্চ  
 তুমুলাঃ সর্বতোহ্ভবন্ ॥ ৪৮ ॥ প্রযাস্যতাং পাণ্ডবানাং সসৈন্যানাং সম-  
 স্তুতঃ । গঞ্জৈব পূর্ণা দুর্দ্ধর্ষা সমদৃশ্যত বাহিনী ॥ ৪৯ ॥ অগ্রানীকে ভীমসেনো  
 মাদ্রীপুল্লৌ চ দংশিতৌ । সৌভদ্রো দ্রৌপদেষাশ্চ ধৃষ্টদ্যুম্নশ্চ পার্ষতঃ । প্রভদ্র-  
 কাশ্চ পাঞ্চালা ভীমসেনমুখা যযুঃ ॥ ৫০ ॥ ততঃ শব্দঃ সমভবৎ সমুদ্রসেযব পর্বাণি ।  
 হৃষ্টানাং সংপ্রযাতানাং ঘোষো দিবমিবাস্পৃশৎ ॥ ৫১ ॥ প্রহৃষ্টা দংশিতা ঘোধাঃ  
 পরানীকবিদারণাঃ । তেষাং মধ্যে যযৌ রাজা কুন্তীপুল্লৌ যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ৫২ ॥ শক-  
 টাপণবেশাশ্চ যানযুগ্যঞ্চ সর্বশঃ । কোষযন্ত্রায়ুধশ্চৈব যে চ বৈদ্যাশ্চিকিৎসকাঃ ॥ ৫৩ ॥  
 ফল্লুবচ্চ বলং কিঞ্চিৎ যচ্চাপি ক্রুশদূর্বলম্ । তৎ সংগৃহ্য যযৌ রাজা যে চাপি  
 পরিচারকাঃ ॥ ৫৪ ॥ উপপ্লব্যে তু পাঞ্চালী দ্রৌপদী সত্যবাদিনী । সহ স্ত্রীতি-  
 নিবরতে দাসীদাসসমারতা ॥ ৫৫ ॥ কৃৎস্না মূলপ্রতীকারং গুল্মৈঃ স্বাবরজঙ্গমৈঃ ।  
 স্কন্ধাবারণে মহতা প্রযযুঃ পাণ্ডুনন্দনাঃ ॥ ৫৬ ॥ দদতো গাং হিরণ্যঞ্চ ব্রাহ্মণৈরভি-  
 সংবৃত্তাঃ । স্তুষমানা যযু রাজনুত্থৈর্মণিবিভূষিতৈঃ ॥ ৫৭ ॥ কৈকেয়া ধৃষ্টকেশুশ্চ

পুল্লঃ কাশ্যস্য বা বিভুঃ । শ্রেণিমান্ বসুদানশ্চ শিখণ্ডী চাপরাজিতঃ ॥ ৫২ ॥  
 হৃষ্টাস্তৃষ্টিঃ কবচিনঃ সশস্ত্রাঃ সমলকৃতাঃ । রাজানমঘযুঃ সর্বে পরিবার্য যুধি-  
 ষ্ঠিরম্ ॥ ৬০ ॥ জঘনাক্কে বিরাটশ্চ যাজ্ঞসেনিশ্চ সৌমকিঃ । সুধর্ম্মা কুন্তিতো-  
 জশ্চ ধৃষ্টদ্যুম্নস্য চাত্মজাঃ ॥ ৬১ ॥ রথায়ুতানি চত্বারি হযাঃ পঞ্চগুণাস্তথা ।  
 পত্তিসৈন্যং দশগুণং গজানামযুতানি ষট্ ॥ ৬২ ॥ অনাধৃষ্টিশ্চেকিতানশ্চেদি-  
 রাজোহথ সাত্যকিঃ । পরিবার্য যযুঃ সর্বে বাসুদেবধনঞ্জর্যো ॥ ৬৩ ॥ আসাদ্য তু  
 কুরুক্ষেত্রং ব্যটানীকাঃ প্রহারিণঃ । পাণ্ডবাঃ সমদৃশ্যস্ত নর্দন্তো রুঘভা ইব ॥ ৬৪ ॥  
 তেহবগাহ কুরুক্ষেত্রং শঙ্খান্ দধ্মুঃ রুরিন্দমাঃ । তথৈব দধ্মুঃ শঙ্খো বাসুদেবধন-  
 ঙ্গর্যো ॥ ৬৫ ॥ পাঞ্চজন্যস্য নির্ঘোষং বিস্ফূজ্জিতমিবাশনেঃ । নিশম্য সর্বসৈ-  
 ন্যানি সমহস্যস্ত সর্বশঃ ॥ ৬৬ ॥ শঙ্খদুন্দুভিসংসৃক্ঃ সিংহনাদস্তরস্বিনাম্ । পৃথি-  
 বীঞ্চাস্তুরীক্ষঞ্চ সাগরাংশ্চান্বনাদযৎ ॥ ৬৭ ॥ ততো দেশে সমে স্নিগ্ধে প্রভুতষবসে-  
 ক্তনে । নিবেশয়ামাস তদা সেনাং রাজা যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ৬৮ ॥ পরিহৃত্য শ্মশানানি  
 দেবতায়তনানি চ । আশ্রমাংশ্চ মহর্ষীণাং তীর্থান্যায়তনানি চ ॥ ৬৯ ॥ মধুরা-  
 নুঘরে দেশে শুচৌ পুণ্যে মহামতিঃ । নিবেশং কারয়ামাস কুন্তীপুত্রো যুধি-  
 ষ্ঠিরঃ ॥ ৭০ ॥ ততশ্চ পুনরুথায় সুখী বিশ্রান্তবাহনঃ । প্রযযৌ পৃথিবীপালৈর্হৃতঃ  
 শতসহস্রশঃ ॥ ৭১ ॥ বিদ্রাব্য শতশো গুল্মান্ ধার্ত্তরাক্ষস্য সৈনিকান্ । পর্য-  
 ক্রামৎ সমস্তাচ্চ পার্থেন সহ কেশবঃ ॥ ৭২ ॥ শিবিরং মাপয়ামাস ধৃষ্টদ্যুম্নশ্চ  
 পার্ষতঃ । সাত্যকিশ্চ রথোদারো যুযুধানঃ প্রতাপবান্ ॥ ৭৩ ॥ আসাদ্য সরিতং  
 পুণ্যাং কুরুক্ষেত্রে হিরণুতীমা সূপতীর্থাং শুচিজলাং শর্করাপঙ্কবজ্জিতাম্ ॥ ৭৪ ॥  
 খানয়ামাস পরিখাং কেশবস্তত্র ভারত । গুপ্তার্থমপি চাদিশ্য বলং তত্র ন্যবে-  
 শযৎ ॥ ৭৫ ॥ বিধির্ষঃ শিবিরস্যাসীৎ পাণ্ডবানাং মহান্বনাম্ । তদ্বিধানি নরে-  
 ন্দ্রাণাং কারয়ামাস কেশবঃ ॥ ৭৬ ॥ প্রভুততরকাষ্ঠানি দুরাধর্ষতরাণি চ । ভক্ষ্য-  
 ভোজ্যাম্পানানি শতশোহথ সহস্রশঃ ॥ ৭৭ ॥ শিবিরানি মহার্হাণি রাজ্ঞাং তত্র  
 পৃথক্ পৃথক্ । বিমানানীব রাজেন্দ্র নিবিষ্টানি মহীতলে ॥ ৭৮ ॥ তত্রাসন্ শিল্লিনঃ  
 প্রাজ্ঞাঃ শতশো দত্তবেতনাঃ । সর্বোপকরণৈর্যুক্তা বৈদ্যাঃ শাস্ত্রবিশারদাঃ ॥ ৭৯ ॥  
 জ্যাধনুর্ধর্ম্মশস্ত্রাণাং তথৈব মধুসর্পিষোঃ । সমজ্জ্বরসপাংশুনাং রাশযঃ পর্বতো-  
 পমাঃ ॥ ৮০ ॥ বহুদকং সুষবসং তুষাঙ্গারসমম্বিতম্ । শিবিরে শিবিরে রাজা  
 সঞ্চকার যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ৮১ ॥ মহাযজ্ঞানি নারাচাস্তোমরাণি পরশ্বধাঃ । ধনুং বি  
 কবচাদীনি ঋক্‌যজুঃসংযুতাঃ ॥ ৮২ ॥ গজাঃ কণ্টকসম্মাহা লোহবর্ম্মোত্তরচ্ছদা ।

दृश्यन्ते तत्र गिर्याताः सहस्रशतयोधिनः ॥ ८३ ॥ निविष्टान् पाण्डवांसुत्र  
ज्जात्रा मित्राणि भारत । अभिसंश्रयथोद्देशं सबलाः सहबाहनाः ॥ ८४ ॥ चरित-  
त्रक्षर्यास्तु सोमपा भूरिदक्षिणाः । जयाय पाण्डुपुत्राणां समाजग्न्यग्नीहीकृतः ॥ ८५ ॥

इत्युद्योगपर्वणि सैन्यानिर्माणपर्वणि शिविरादिनिर्माणे एकपञ्चाशदधिक-

शततमोऽध्यायः ॥ १५१ ॥



जनमेजय उवाच । युधिष्ठिरं सहानीकमुपायांतुं युयुत्सया । सन्निविष्टं कुरू-  
क्षेत्रे वासुदेवेन पालितम् ॥ १ ॥ विराट्कृपदाभ्यां सपुत्राभ्यां समन्वितम् ।  
कैकेयैश्च विभिशैश्च पार्थिवैः शतशो वृतम् ॥ २ ॥ महेश्चमिव चादितैरभि-  
शुभ्रं महारथैः । श्रद्धा दुर्योधनो राजा किं कार्यं पर्यापद्यत ॥ ३ ॥ एत-  
दिच्छाम्यहं श्रोतुं विस्तरेण महामते । सद्भुमे तुमुले तस्मिन् यदासीत् कुरूजा-  
ङ्गले ॥ ४ ॥ व्यथयेयुरिमे देवान् सेन्द्रानपि समागमे । पाण्डवा वासुदेवश्च  
विराट्कृपदो तथा ॥ ५ ॥ धृष्टद्युम्नश्च पाण्डालाः शिखण्डी च महारथः । युयुधानश्च  
विक्रास्तो देवैरपि दुरासदः ॥ ६ ॥ एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं विस्तरेण तपोधन ।  
कुरूणां पाण्डवानां यदादासीद्विचेष्टितम् ॥ ७ ॥ वैशम्पायन उवाच । अभिघाते  
तु दाशार्हे राजा दुर्योधनस्तदा । कर्णं दशशसनैश्च शकुनिष्ठात्रवीदिदम् ॥ ८ ॥  
अकृतेनैव कार्येण गतः पार्थानधोक्कजः । स एनान् मनुन्याविकेो ऋवं धक्य  
त्यसंशयम् । ईष्टो हि वासुदेवस्य पाण्डवैर्मम विग्रहः ॥ ९ ॥ भीमसेनाङ्गुनो  
टैव दाशार्हस्य मते स्थितौ । अजातशत्रुरत्यर्थं भीमाङ्गुनवशान्भुगः । निरूतश्च  
मया पूर्वं सह सर्षेः सहोदरैः ॥ १० ॥ विराट्कृपदो टैव कृतवैरौ मया सह ।  
तौ च सेनाप्रणेतारौ वासुदेववशान्भुगौ ॥ ११ ॥ भविता विग्रहः सोऽहं तु-  
मुलो लोमहर्षणः । तस्मात् सां ग्रामिकं सर्वं कारयधमत्प्रिताः ॥ १२ ॥ शिवि-  
राणि कुरूक्षेत्रे क्रियन्तां वसुधाधिपाः । सुपर्याप्तवकाशानि दुरादेयानि शत्रु-  
भिः ॥ १३ ॥ "आसन्नजलकाष्ठानि शतशोऽथ सहस्रणः । अच्छेद्याहारमार्गाणि  
रत्नोच्छ्रितानि च ॥ १४ ॥ विचित्रायुधपूर्णानि पताकाधजवस्त्रि च । समाश्च तेषां  
पस्थानः क्रियन्तां नगराद्वहिः । प्रवाणं घुष्यतामद्य श्वोभूत इति मा चि-  
रम् ॥ १५ ॥ ते तथेति प्रतिज्जाय श्वोभूते चक्रिरे तथा । ह्यर्कपा महात्मानो  
निवासाय महीकृतम् ॥ १६ ॥ ततस्तु पार्थिवाः सर्वे तं श्रद्धा राजशासनम् ।  
आसनेभ्यो महार्हेभ्य उदतिष्ठन्नमर्षिताः ॥ १७ ॥ बाहून् परिघसक्तां संस्प-

शस्तुः शनैःशनैः । काङ्क्षनाङ्गददीपुत्तं च चन्दनाङ्गुरुभूषितान् ॥ १८ ॥ उष्णीषाणि  
 नियच्छस्तुः पुङ्गुरीकनिठैः करैः । अस्तुरीयोत्तरीयाणि भूषणानि च सर्वशः ॥ १९ ॥  
 ते रथानुत्थिनः श्रेष्ठाः ह्यत्तं च ह्यकोविदाः । सङ्गयन्ति स्म नागांश्च नागशिक्षा-  
 स्वस्तुष्ठीताः ॥ २० ॥ अथ वर्ष्मणि चित्राणि काङ्क्षनानि बहूनि च । विविधानि च  
 शस्त्राणि चक्रुः सर्वाणि सर्वशः ॥ २१ ॥ पदातयश्च पुरुषाः शस्त्राणि विविधानि च ।  
 उपाङ्गह्युः शरीरेषु हेमचित्राण्यनेकशः ॥ २२ ॥ तदुत्सव इवोदग्रं सञ्चरु-  
 नरावृतम् । नगरं धार्तराष्ट्रस्य तं रतासीं समाकुलम् ॥ २३ ॥ जनोद्यमलिला-  
 वर्त्ते रथनागाश्वमीनवान् । शङ्खद्वन्द्वुभिर्निर्घोषः कोषसङ्घवरत्नवान् ॥ २४ ॥ चित्रा-  
 त्रणवर्ष्मोन्मिः शस्त्रनिर्मलफेणवान् । प्रासादमालाद्रिरतो रथ्यापणमहाहृदः ॥ २५ ॥  
 योश्चन्द्रोदयोद्भूतः कुरुराजमहार्णवः । अदृश्यत तदा राजंश्चन्द्रोदय इवा-  
 र्णवः ॥ २६ ॥

इत्युद्देश्यागपर्वणि सैन्यानिर्वाणपर्वणि दुर्योधनसैन्यसङ्क्रायां द्विपञ्चाश-  
 दधिकशततमोऽध्यायः ॥ १५२ ॥



वैशम्पायन उवाच । वासुदेवस्य तद्वाक्यमनुस्मृत्य युधिष्ठिरः । पुनः पप्रच्छ  
 वार्ष्णेयं कथं मन्दोद्भवदीदिदम् ॥ १ ॥ अस्मिन्भ्यागते काले किञ्च नः क्रम-  
 नच्यत । कथं वर्त्तमाना वै स्वधर्म्मान् च्यवेमहि ॥ २ ॥ दुर्योधनस्य कर्णस्य शकुनेः  
 सौबलस्य च । वासुदेव मतज्जोऽसि मम सद्भ्रातृकस्य च ॥ ३ ॥ विदुरस्यपि तद्वाक्यं  
 श्रुतं भीष्मस्य चोत्तयोः । कुन्त्याश्च विपुलप्रज्ज प्रज्जा कात्स्न्येन ते श्रुता ॥ ४ ॥  
 सर्वमेतदतिक्रम्य विचार्य च पुनः पुनः । क्षेमं यमो महाबाहो तद्विचार-  
 यन् ॥ ५ ॥ श्रुत्वेतद्वर्ष्मराजस्य धर्म्मार्थसहितं वचः । मेघद्वन्द्वुभिर्निर्घोषः क्रुषेण  
 वाक्यमथाब्रवीत् ॥ ६ ॥ वासुदेव उवाच । उक्तवानसि यद्वाक्यं धर्म्मार्थसहितं  
 हितम् । न तु तन्निकृतिप्रज्जे कौरव्ये प्रतितिष्ठति ॥ ७ ॥ न च भीष्मस्य दूर्श्मेधाः  
 शृणोति विदुरस्य वा । मम वा भाषितं किञ्चिन् सर्वमेवातिवर्त्तते ॥ ८ ॥ नैष  
 कामयते धर्म्मं नैष कामयते यशः । जितं समन्यते सर्वं दुरात्मा कर्णमाश्रि-  
 तः ॥ ९ ॥ बन्धुमाज्जापयामास मम चापि सूयोधनः । न च तं लक्ष्मणं कामं  
 दुरात्मा पापनिश्चयः ॥ १० ॥ न च भीष्मो न च द्रोणो युक्तं तत्राहतुर्वचः । सर्वे  
 तमनुवर्त्तन्ते ऋते विदुरमच्यत ॥ ११ ॥ शकुनिः सौबलश्चैव कर्णदुःशासनावपि ।  
 द्वयायुक्तान्यभाषन्त मृता मृतमवर्षणम् ॥ १२ ॥ किञ्च तेन मयोक्तेन वान्यभाषत

कौरवः । संक्षेपेण दुरात्मासौ न युक्तं ह्यसि वर्तते ॥ १७ ॥ पार्थिवेषु न सर्वेषु  
 य इमे तव सैनिकाः । यत् पापं यन्न कल्याणं सर्वं तस्मिन् प्रतिष्ठितम् ॥ १८ ॥  
 न चापि वयमप्यर्थपरित्यागेन कर्हिचित् । कौरवैः शममिच्छामस्तत्र युद्धमन-  
 त्तरम् ॥ १९ ॥ वैशम्पायन उवाच । तच्छ्रुत्वा पार्थिवाः सर्वे वासुदेवस्य भाषितम् ।  
 अक्रवन्तो मुखं राज्ञः समुदैक्यं तदा ॥ १७ ॥ युधिष्ठिरश्चुत्प्रियायमभिलक्ष्य  
 महीक्षिताम् । वोगमाज्जापयामास भीमाज्जूनयमैः सह ॥ १९ ॥ ततः किलकिला-  
 दुत्तमनीकं पाण्डवस्य ह । आज्जापिते तदा योगे समस्तव्यस्तु सैनिकाः ॥ १८ ॥  
 अवध्यानां वधं पश्यन् धर्मराजो युधिष्ठिरः । निश्चसन् भीमसेनं विजयक्षेम-  
 त्रवीं ॥ १९ ॥ यदर्धं वनवासश्च प्राप्तं दुःखं यथा । सोऽयमस्मान्नुपैतेत्येव  
 परोऽह्नयः प्रयत्नतः ॥ २० ॥ तस्मिन् यत्नः कृतोऽस्माभिः स नो हीनः प्रयत्नतः ।  
 अकृतेऽत्र प्रयत्नेऽस्मान्नुपारतः कलिर्महान् ॥ २१ ॥ कथं ह्यवधेयः संग्रामः  
 कार्यः सह भविष्यति । कथं ह्यवा गुह्यं वृक्षान् विजयो नो भविष्यति ॥ २२ ॥  
 तच्छ्रुत्वा धर्मराजस्य सव्यासाटी परस्तपः । यदुक्तं वासुदेवेन श्रावयामास तद्व-  
 चः ॥ २३ ॥ उक्तवान्देवकीपुत्रः कुस्त्याश्च विदुरस्य च । वचनं तद्वया राजन्  
 निखिलेनावधारितम् ॥ २४ ॥ न च तौ वक्ष्यतोऽधर्ममिति मे नैष्ठिकी मतिः ।  
 नापि युक्तं कौन्तेय निवर्तितुमयुध्यतः ॥ २५ ॥ तच्छ्रुत्वा वासुदेवोऽपि सव्यासा-  
 चिवचस्तदा । अयमानोऽत्रवीं पार्थमेवमेवमिति क्ववन् ॥ २६ ॥ ततस्ते धृतसं-  
 कला युद्धाय सहसैनिकाः । पाण्डवेऽपि महाराज तां रात्रिं सुखमावसन् ॥ २७ ॥

इत्युद्योगपर्वणि सैन्यानिर्माणपर्वणि युधिष्ठिराज्जूनसंबादे त्रिपक्षाश-

दधिकशततमोऽध्यायः ॥ १५७ ॥



वैशम्पायन उवाच । व्युत्थायां वै रजन्यास्तु राजा दुर्येयाधनस्ततः । व्यतज्जन्त-  
 न्यानीकानि दश तैश्च भारत ॥ १ ॥ नरहस्तिरथाश्वानां सारं मध्यं फल्लु च ।  
 सर्वेषु तेषु नैकेषु सन्दिदेश महीपतिः ॥ २ ॥ सान्नुकर्षाः सतूनीराः सबकथाः  
 सतोमराः । सोपासङ्गाः सशक्तीकाः सनिषङ्गाः सहर्षयः ॥ ३ ॥ सधजाः सप-  
 ताकाश्च सशरासनतोमराः । रज्जुभिश्च विचित्राभिः सपाशाः सपरिच्छदाः ॥ ४ ॥  
 सकचग्रहविक्षेपाः सतैलगुडबालूकाः । साशीविषयटाः सर्वे समज्जरसपां-  
 शवः ॥ ५ ॥ सघण्टकलकाः सर्वे सायोगुडजलोपलाः । सशूलभिन्दिपालाश्च  
 समधूर्च्छिर्कमुद्गराः ॥ ६ ॥ सकाण्डगुकाः सर्वे समीरविषतोमराः । सशूर्पपिटकाः

সর্বে সদাত্ৰাক্ষশতোমরাঃ ॥ ৭ ॥ সর্কীলক্রকচাঃ সর্বে বাসীরক্ষাদনান্বিতাঃ । ব্যাঘ্র-  
 চর্মপরীবারা রতাশ্চ দ্বীপিচর্মভিঃ ॥ ৮ ॥ সহর্ষ্যঃ সশৃঙ্গাশ্চ সপ্রাসবিবিধায়ুধাঃ ।  
 সকুঠারাঃ সকুদালাঃ সতৈলক্ষৌমসর্পিষঃ ॥ ৯ ॥ রুক্মজালপ্রতিচ্ছিন্না নানানগ্নি-  
 বিভূষিতাঃ । চিত্রানীকাঃ সুবপুষো জ্বলিতা ইব পাবকাঃ ॥ ১০ ॥ তথা কবচিনঃ  
 শূরাঃ শস্ত্রেযু রুভনিশ্চয়াঃ । কুলীনা হৃষ্যোনিচ্ছ্রাঃ সারথ্যে বিনিবেশিতাঃ ॥ ১১ ॥  
 বদ্ধারিষ্ठा বদ্ধকক্ষা বদ্ধধ্বজপতাকিনঃ । বদ্ধাভরণনির্যুহা বদ্ধচর্মাসিপাটীশাঃ ॥ ১২ ॥  
 চতুর্যুজো রথাঃ সর্বে সর্বে চোত্তনবাজিনঃ । সপ্রাসঙ্খম্ভিকাঃ সর্বে সর্বে শতশরা-  
 সনাঃ ॥ ১৩ ॥ ধূর্য্যবোহৃষ্যবোরেকস্তথান্যো পাকিসারথী । তৌ চাপি রথিনাং  
 শ্রেষ্ঠৌ রথী চ হৃষ্যবিত্থা ॥ ১৪ ॥ নগরাণীব গুপ্তানি দুরাধর্ষাণি শত্রুভিঃ । আস-  
 নুথসম্ভ্রাণি হেমমালানি সর্ষশঃ ॥ ১৫ ॥ যথা রথাস্তথা নাগা বদ্ধকক্ষাঃ স্বল-  
 ক্তাঃ । বভূবুঃ সপ্তপুরুষা রত্নবস্ত্র ইবাদ্রযঃ ॥ ১৬ ॥ দ্বাবকুশধরৌ তত্র দ্বাবুত্তম-  
 ধনুর্ধরৌ । দ্বৌ বরাসিধরৌ রাজলোকঃ শক্তিপিলাকধৃক্ ॥ ১৭ ॥ গজৈর্মতৈঃ সন্না-  
 কীর্ণং সবর্ষায়ুধকোষকৈঃ । তদ্বভুব বলং রাজন্ কৌরব্যস্য মহান্ননঃ ॥ ১৮ ॥  
 আমুক্তচিত্রকবচৈঃ সপতাকৈঃ স্বলক্টৈঃ । সাদিভিশ্চোপপন্নাস্ত তথা চাযুতশো  
 হ্যাঃ ॥ ১৯ ॥ সুসংগ্রাহাঃ সুসংপন্ন হেমভাণ্ডপরিচ্ছদাঃ । অনেকশতসাহস্রাঃ  
 সর্বে সাদিবশে স্থিতাঃ ॥ ২০ ॥ নানাকপবিকারাশ্চ নানাকবচশস্ত্রিণঃ । পদাতিনো  
 নরাস্তত্র বভূবুর্হেমমালিনঃ ॥ ২১ ॥ রথস্যাসন্ দশ গজা গজস্য দশ বাজিনঃ ।  
 নরা দশ হৃষ্যস্যাসন্ পাদরক্ষাঃ সমস্ততঃ ॥ ২২ ॥ রথস্য নাগাঃ পঞ্চাশন্নাগস্যাস-  
 ঙ্গতং হ্যাঃ । হৃষ্যস্য পুরুষাঃ সপ্ত ভিন্নসন্ধানকারিণঃ ॥ ২৩ ॥ সেনা পঞ্চশতং  
 নাগা রথাস্তাবস্ত্র এব চ । দশসেনা চ পূতনা পূতনা দশ বাহিনী ॥ ২৪ ॥ সেনা  
 চ বাহিনী চৈব পূতনা ধ্বজিনী চমুঃ । অক্ষৌহিনীতি পর্য্যাবৈর্নিকুক্তা চ বক্রথি-  
 নী ॥ ২৫ ॥ এবং ব্যুচান্যনীকানি কৌরবেষণে ধীমতা । অক্ষৌহিন্যো দশৈকা  
 চ সংখ্যাতাঃ সপ্ত চৈব হ ॥ ২৬ ॥ অক্ষৌহিন্যস্ত সপ্তৈব পাণ্ডুবান্নামভূদলম্ ।  
 অক্ষৌহিন্যো দশৈকা চ কৌরবাণামভূদলম্ ॥ ২৭ ॥ নরাণাং পঞ্চপঞ্চাশদেবা পত্তি-  
 বিধীয়তে । সেনামুখস্ত্রিঃস্তা গুল্ম ইত্যতিশক্তিতম্ ॥ ২৮ ॥ ত্রয়ো গুল্মা গণ-  
 স্বাসীদাগস্ত্রযুতশো ভবেৎ । ত্রয়োধনস্য সেনাসু যোৎস্যমানাঃ প্রহারিণঃ ॥ ২৯ ॥  
 তত্র ত্রয়োধনো রাজা শূরান্ বুদ্ধিমতো নরান্ । প্রসমীক্ষ্য মহাবাহুশ্চক্রে সেনা-  
 পতীংস্তদা ॥ ৩০ ॥ পৃথগক্ষৌহিনীনাঞ্চ প্রণেত্নরসত্তমান্ । বিধিবৎ পূর্বমানীয পা-  
 র্থিবানভ্যভাষত ॥ ৩১ ॥ রূপং দ্রোণঞ্চ শল্যঞ্চ সৈন্ধবঞ্চ জঘদ্রথম্ । সুদক্ষিণঞ্চ

काञ्चोज्ज्वलं कृतवर्णाङ्गमेव च ॥ ७२ ॥ द्रोणपुत्रश्च कर्णश्च भूरिश्रवसमेव च । शकुनिं  
सौबलश्चैव बाह्लीकश्च महाबलम् ॥ ७३ ॥ दिवसे दिवसे तैश्चां प्रतिबेलश्च  
भारत । चक्रे स विविधाः पूजाः प्रत्यक्षश्च पुनः पुनः ॥ ७४ ॥ तथा विनिवृत्ताः सर्वे  
ये च तेषां पदानुगाः । बभूवुः सैनिका राजन् प्रियं राज्ञश्चिकीर्षवः ॥ ७५ ॥

इत्युद्योगपर्वणि सैन्यानिर्माणपर्वणि दुर्योधनसैन्याविभागे चतुः-

पञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १५४ ॥



वैशम्पायन उवाच । ततः शास्त्यनवः भीष्मं प्राञ्जलिधृतराष्ट्रजः । सह  
सर्वैर्महीपालैरिदं वचनमब्रवीत् ॥ १ ॥ ऋते सेनाप्रणेतारं पृथना सुमह-  
त्यापि । दीर्यते युद्धमासाद्य पिपीलिकपुटं यथा ॥ २ ॥ न हि जातु द्वयोर्बुद्धिः  
समा भवति कर्हिचित् । शौर्यश्च नाम नेतृणां स्पर्द्धिते च परस्परम् ॥ ३ ॥ श्रयते  
च महाप्राज्ञे ह्येहानमिर्तोजसः । अत्ययुर्त्राक्षणाः सर्वे समुद्धितकुशधजाः ॥ ४ ॥  
तानत्ययुस्तदा वैश्याः शूद्राश्चैव पितामह । एकतस्तु त्रयो वर्णा एकतः क्षत्रिय-  
वृत्ताः ॥ ५ ॥ ते स्म युद्धेष्वभज्यन्तु त्रयो वर्णाः पुनः पुनः । क्षत्रियास्तु जयन्त्येव  
बहलैश्चकतो बलम् ॥ ६ ॥ ततस्ते क्षत्रियानेव पप्रच्छुर्द्विजसन्तमाः । तेभ्यः शशं-  
सुर्धर्मज्ञा याथातथ्यं पितामह ॥ ७ ॥ वयमेकस्य शृण्वाना महारुद्धिमतो रणे ।  
भवन्तस्तु पृथक् सर्वे स्वबुद्धिवशवर्तिनः ॥ ८ ॥ ततस्ते त्राक्षणाश्चक्रुरेकं सेनापतिं  
द्विजम् । नयेषु कुशलं शूरमजयन् क्षत्रियांस्तुतः ॥ ९ ॥ एवं ये कुशलं शूरं  
हितेप्सितमकल्पयन् । सेनापतिं प्रकूर्षन्ति ते जयन्ति रणे रिपून् ॥ १० ॥ भवा-  
न्नृशमसा तुल्यो हितैषी च सदा मम । असंहार्यः स्थितो धर्म्ये स नः सेनापति-  
र्भव ॥ ११ ॥ रश्मिवतामिवादित्यो वीरूधामिव चन्द्रमाः । कुबेर इव यक्षाणां  
देवानामिव वासवः ॥ १२ ॥ पर्वतानां यथा मेरुः सुपर्णः पक्षिणां यथा ।  
कुमार इव देवानां वसूनामिव हव्यराट् ॥ १३ ॥ भवता हि वयं गुप्ताः शक्रे-  
णैव दिवोकसः । अनाधृष्या भविष्यामस्त्रिदशानामपि ऋवम् ॥ १४ ॥ प्रयातु नो  
भवानग्रे देवानामिव पावकिः । वयस्त्रामनुयास्यामः सौरभेया इवर्षतम् ॥ १५ ॥  
भीष्म उवाच । एवमेतन्महाबाहो यथा वदसि भारत । यथैव हि भवन्तो मे तथैव  
मम पाण्डवाः ॥ १६ ॥ अपि तैव मया श्रेयो वाच्यं तेषां नराधिप । संयो-  
द्धव्यं तवार्थाय यथा मे समयः कृतः ॥ १७ ॥ न तु पश्यामि योद्धारमात्मनः सदृशं  
भुवि । ऋते तस्मान्नरव्याघ्रां कुन्तीपुत्राङ्गनञ्जयां ॥ १८ ॥ स हि वेद महारुद्धिर्दि-

ব্যান্যস্ত্রাণ্যনেকশঃ । ন তু মাং বিব্রতো যুদ্ধে জাতু যুদ্ধ্যত পাণ্ডবঃ ॥ ১৯ ॥ অহ-  
 ঠ্বেব ক্লেণেনৈব নিশ্চলুষ্যামিদং জগৎ । কুর্য্যাং শস্ত্রবলেনৈব সমুসুরাসুররাক্ষ-  
 সম্ ॥ ২০ ॥ ন হ্বেষোৎসাদনীযা মে পাণ্ডোঃ পুত্রা নরাধিপ । তস্মাদ্বেষাধান্  
 হনিষ্যামি প্রযোগেণাযুতং সদা ॥ ২১ ॥ এবমেবাং করিষ্যামি নিধনং কুরুন-  
 ন্দন । ন চেত্তে মাং হনিষ্যন্তি পূর্বমেব সমাগমে ॥ ২৩ ॥ সেনাপতিশ্চ হং রাজন্  
 সমযেনাপরেণ তে । ভবিষ্যামি যথাকামং তন্মে শ্রোতুমিহাহসি ॥ ২৪ ॥ কর্ণো  
 বা যুদ্ধ্যতাং পূর্বমহং বা পৃথিবীপতে । স্পর্ধিতে হি সদাত্যর্থং সূতপুত্রো মযা  
 রণে ॥ ২৫ ॥ কর্ণ উবাচ । নাহং জীবতি গান্ধেযে রাজন্ যোৎস্যে কথঞ্চন ।  
 হতে ভীষ্মে তু যোৎস্যামি সহ গান্ধীবধন্বনা ॥ ২৬ ॥ বৈশম্পায়ন উবাচ । ততঃ  
 সেনাপতিঞ্চক্রে বিধিবদ্ধুরিদক্ষিণম্ । ধৃতরাষ্ট্রায়জো ভীষ্মং সোহভিষিক্তো  
 ব্যরোচত ॥ ২৭ ॥ ততো ভেরীশ্চ শঙ্খাংশ্চ শতশোহথ সহস্রশঃ । বাদযামা-  
 সুরব্যগ্রাঃ পুরুষা রাজশাসনাৎ ॥ ২৮ ॥ সিংহনাদাশ্চ বিবিধা বাহনানাঞ্চ  
 নিস্বনাঃ । প্রাহুরাসন্নব্রুচ বর্ষং রুধিরকর্দমম্ ॥ ২৯ ॥ নির্ঘাতাঃ পৃথিবীকম্পা  
 গজবৃংহিতনিস্বনাঃ । আসংশ্চ সর্বযোধামাং পীডযন্তো মনাংসুত ॥ ৩০ ॥  
 বাচশ্চাপ্যশরীরিণ্যো দিবশ্চোক্ষাঃ প্রপেদিরে । শিবাশ্চ ভযবেদিন্যো নেহর্দীপ্ত-  
 তরা ভূশম্ ॥ ৩১ ॥ সৈন্যপত্যে যদা রাজা গান্ধেযমভিষিক্তবান্ । তদৈতান্ন্যগ্র-  
 কৃপাণি বভূবুঃ শতশো নৃপ ॥ ৩২ ॥ ততঃ সেনাপতিং কৃত্বা ভীষ্মং পরবলার্দনম্ ।  
 বাচযিত্বা দ্বিজশ্রেষ্ঠান্ গোভিনির্নিকৈশ্চ ভুরিশঃ ॥ ৩৩ ॥ বর্দ্ধমানো জঘাশীর্ভি-  
 নির্যযৌ সৈনিকৈর্বর্তঃ । আপগেষং পুরস্কৃত্য ভ্রাতৃভিঃ সহিতস্তদা ॥ ৩৪ ॥  
 স্কন্ধাবারেণ মহতা কুরুক্ষেত্রং জগাম হ । পরিক্রম্য কুরুক্ষেত্রং কর্ণেন সহ কৌরবঃ ।  
 শিবিরং মাপযামাস সমে দেশে নরাধিপঃ ॥ ৩৫ ॥ যধুরানুঘরে দেশে প্রভূতয-  
 বসেন্ধনে । যথৈব হ্যস্তিনপুরং তদ্বচ্ছিবিরমাবভৌ ॥ ৩৬ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি সৈন্যনির্ঘাণপর্বণি ভীষ্মসৈন্যপত্যে পঞ্চপঞ্চাশদধিক-

শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৫৫ ॥

জনমেজয উবাচ । আপগেষং মহাত্মানং ভীষ্মং শস্ত্রভূতাং বরম্ । পিতামহং  
 ভারতানাং ধ্বজং সর্বমহীক্ষিতাম্ ॥ ১ ॥ বৃহস্পতিসমং বুদ্ধ্য্য ক্ষমযা পৃথিবীসমম্ ।  
 সমুদ্ভমিব গান্ধীর্যো হিমবন্তমিব স্থিরম্ ॥ ২ ॥ প্রজাপতিমিবৌদার্যো তেজসা  
 ভাস্করোপমম্ । মহেন্দ্রমিব শত্রুণাং ধ্বংসনং শরস্কিতিঃ ॥ ৩ ॥ রণযুদ্ধে প্রবি-



तते सुभीमे लोमहर्षणे । दीक्षितं चिररात्राय श्रुत्वा तत्र युधिष्ठिरः । किमत्र-  
 वीर्यहावाहः सर्वशस्त्रभृताम्बरः ॥ ४ ॥ भीमसेनाङ्गुनो चापि क्रुशेण वा प्रत्यत्ता-  
 वत ॥ ५ ॥ वैशम्पायन उवाच । आपद्गर्माथकुशलो महाबुद्धिर्युधिष्ठिरः । सर्वान्  
 द्रातूनं समानीय वासुदेवश्च सात्वतम् ॥ ७ ॥ उवाच वदतां श्रेष्ठः सास्त्रपूर्वनिदं  
 वचः । पर्याक्रामत सैन्यानि यत्तास्त्रिष्ठित दंशिताः ॥ १ ॥ पितामहेन वो युद्धं  
 पूर्वमेव भविष्यति । तस्मात् सप्तसु सेनासु प्रणेतुमत्र पश्यत ॥ ८ ॥ वासुदेव  
 उवाच । यथार्हति भवान् वक्तुमस्मिन् काले ह्युपस्थिते । तथेदमर्थवद्वाक्यमुक्तुं श्ले  
 षततर्षत ॥ १० ॥ रोचते मे महाबाहो क्रियतां यदनन्तरम् । नायकास्तव सेनायां  
 क्रियन्तामिह सप्त वै ॥ १० ॥ वैशम्पायन उवाच । ततो द्रुपदमनाया विराट्  
 शिनिपुङ्गवम् । धृष्टद्व्यम्नश्च पाण्डाल्यं धृष्टकेतुश्च पार्थिवम् । शिखण्डिनश्च पाण्डाल्यं  
 सहदेवश्च मागधम् ॥ ११ ॥ एतान् सप्त महाभागान् वीरान् युद्धाभिकारिणः ।  
 सेनाप्रणेतून् विधिवदन्त्यविश्वद्यूधिष्ठिरः ॥ १२ ॥ सर्वसेनापतिश्चात्र धृष्टद्व्यम्नश्च-  
 कार ह । द्रोणास्तुहेतोरुत्पन्नो य इन्द्राज्जातवेदसः ॥ १३ ॥ सर्वेषामेव ते-  
 षास्तु समस्तानां महान्नाम् । सेनापतिपतिश्चक्रे गुडाकेशं धनञ्जयम् ॥ १४ ॥  
 अङ्गुनस्यपि नेता च संयन्ता टैव वाजिनान् । सक्वर्षणान्जः श्रीमान् महाबुद्धि-  
 ङ्गुनार्दनः ॥ १५ ॥ तद्दृष्ट्वापस्थितं युद्धं समासन्नं महात्ययम् । प्राविशद्वनं  
 राज्ञः पाण्डवस्य हलायुधः ॥ १६ ॥ सहकूरुप्रभृतिभिर्गदशायाद्वबादिभिः । रौ-  
 क्मिणेयाहकसुतैश्चारुदेवैश्च पुरोगमैः ॥ १७ ॥ रुक्मिण्युथैरधिगतैर्व्यात्रैरिव व-  
 लोत्कटैः । अतिगुणैः महाबाहूर्मरुद्धिरिव वासवः ॥ १८ ॥ नीलकौशेषवसनः  
 कैलासशिखरोपमः । सिंहखेलगतिः श्रीमान् मदरक्तान्तलोचनः ॥ १९ ॥ तं  
 दृष्ट्वा धर्मराजश्च केशवश्च महद्भ्रतिः । उदतिष्ठन्नतः पार्थो भीमकर्मा रुको-  
 दरः ॥ २० ॥ गाण्डीवधन्वा ये चान्ये राजानस्तत्र केचन । पूजयाश्चक्रिरे ते वै  
 समावास्तं हलायुधम् ॥ २१ ॥ ततस्तं पाण्डवो राजा कुरे पस्पर्श पाणिना ।  
 वासुदेवपुरोगास्तं सर्व एवाभ्यवादयन् ॥ २२ ॥ विराट्द्रुपदौ रुद्रावभिवान्  
 हलायुधः । युधिष्ठिरेण सहित उपाविशदरिन्दमः ॥ २३ ॥ ततस्तेषूपविष्टेषु पाथि-  
 वेषु समस्ततः । वासुदेवमभिप्रेक्ष्य रौहिणेयोऽभ्यभाषत ॥ २४ ॥ भवितायं  
 महारौद्रो दारुणः पुरुषक्षयः । दिक्मेतद्भवन् मन्ये न शक्यमतिवर्द्धितुम् ॥ २५ ॥  
 अस्माद्बुद्ध्यां समुत्तीर्णानपि वः समुहङ्गुनान् । अरोगान्कतैर्देहैर्द्रुक्तास्मीति  
 मतिर्मम ॥ २६ ॥ समेतं पार्थिवं क्लृप्तं कालपक्रमशंसयं । विमर्दश्च महा-

ন ভাবী মাংসশোণিতকর্দমঃ ॥ ২৭ ॥ উক্তো ময়া বাসুদেবঃ পুনঃপুনরুপহ্বরে ।  
 সম্বন্ধিষু সমাং বৃত্তিং বর্ত্তস্ব মধুসূদন ॥ ২৮ ॥ পাণ্ডবা হি যথাস্মাকং তথা দুর্ষ্যো-  
 ধনো নৃপঃ । তস্যাপি ক্রিয়তাং সহং স পর্যেতি পুনঃপুনঃ ॥ ২৯ ॥ তচ্চ মে  
 নাকরোদ্ধাক্যং হৃদর্শে মধুসূদনঃ । নিবিষ্টিঃ সর্বভাবেন ধনঞ্জয়মবেক্ষ্য হ ॥ ৩০ ॥  
 ধ্রুবো জয়ঃ পাণ্ডবানামিতি মে নিশ্চিতা মতিঃ । তথা হৃভিনিবেশোহয়ং বাসুদে-  
 বস্য ভারত ॥ ৩১ ॥ নচাহমুৎসহে কৃষ্ণমৃতে লোকমুদীক্ষিতুম্ । ততোহহমনুব-  
 র্ত্তামি কেশবস্য চিকীর্ষিতম্ ॥ ৩২ ॥ উভৌ শিষ্যৌ হি মে বীরৌ গদাযুদ্ধবিশারদৌ ।  
 তুল্যাস্নেহোহস্ম্যতো ভীমে তথা দুর্ষ্যোধনে নৃপে ॥ ৩৩ ॥ তস্মাদ্ভ্যাম্যামি তীর্থানি  
 সরস্বত্যা নিষেবিতুম্ । ন হি শক্ষ্যামি কৌরব্যানশ্যমানানুপেক্ষিতুম্ ॥ ৩৪ ॥  
 এবমুক্ত্বা মহাবাহুরনুজ্জাতশ্চ পাণ্ডবৈঃ । তীর্থঘাত্রাং যযৌ রামো নিবর্ত্য মধু-  
 সূদনম্ ॥ ৩৫ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি সৈন্যনির্মাণপর্বণি বলদেববাক্যে ষট্‌পঞ্চাশদধিক-  
 শততনোহধ্যায়ঃ ॥ ১৫৬ ॥



বৈশম্পায়ন উবাচ । এতস্মিন্নেব কালে হু ভীষ্মকস্য মহাত্মনঃ । হিরণ্যরোমেন্না  
 নৃপতেঃ সাক্ষাদিন্দ্রসখস্য বৈ ॥ ১ ॥ আকূতীনামধিপতির্ভোজস্যাতিশশস্বিনঃ ।  
 দাক্ষিণাত্যপতেঃ পুত্রো দিক্ষু রুক্মীতি বিশ্রুতঃ ॥ ২ ॥ যঃ কিংপুরুষসিংহস্য  
 গন্ধমাদনবাসিনঃ । শিষ্যঃ কুৎসং ধনুর্বেদং চ ভূম্পাদমবাণ্ডবান্ ॥ ৩ ॥ যো মাহে  
 স্ত্রং ধনুর্লেভে তুল্যং গাণ্ডীবতেজসা । শার্ঙ্গং চ মহাবাহুঃ সস্মিতং দিব্যাল-  
 ক্ষণম্ ॥ ৪ ॥ ত্রীণ্যেবেতানি দিব্যানি ধনুঃষি দিবিচারিণাম্ । বারুণং গাণ্ডীবং  
 তত্র মাহেস্ত্রং বিজয়ং ধনুঃ ॥ ৫ ॥ শার্ঙ্গম্ বৈষ্ণবঞ্চাহৃদ্ব্যং তেজোময়ং ধনুঃ ।  
 ধারয়ামাস যৎ কৃষ্ণঃ পরসেনাভয়াবহম্ ॥ ৬ ॥ গাণ্ডীবং পাবকাল্পেভে খাণ্ডবে  
 পাকশাসনিঃ । ক্রমাক্রমী মহাতেজা বিজয়ং প্রত্যপদ্যত ॥ ৭ ॥ সংছিদ্য  
 মৌরবান্ পাশান্নিত্য মুরুমোজসা । নিজ্জিত্য নরকং ভৌমমাহত্য মণিকু-  
 গুলে ॥ ৮ ॥ ষোড়শ স্ত্রীসহস্রাণি রত্নানি বিবিধানি চ । প্রতিপেদে হৃষীকেশঃ  
 শার্ঙ্গঞ্চ ধনুরুত্তমম্ ॥ ৯ ॥ রুক্মী তু বিজয়ং লক্ষা ধনুর্মেষনিভস্বনম্ । বিভীষম্মি-  
 ব জগৎ পাণ্ডবানভ্যবর্ত্তত ॥ ১০ ॥ নামৃষ্যত পুরা যোহসৌ স্ববাহুবলগরিতঃ ।  
 রুক্মিণ্যা হরণং বীরো বাসুদেবেন ধীমতা ॥ ১১ ॥ কৃষ্ণা প্রতিজ্ঞাং নাহত্বা নিব-  
 র্ত্তিষ্যে জনার্দনম্ । ততোহন্বধাবদ্বাষ্কেষং সর্বশস্ত্রভূতাস্বরম্ ॥ ১২ ॥ সেনয়া

चतुरङ्गिण्या महत्या दूरपातया । विचित्राङ्गरधारिण्या गङ्गयेव प्रवृद्धया ॥ १३ ॥ स  
 समासाद्य वार्ष्णेयं योगिनामीश्वरं प्रभुम् । व्यंसितो त्रीडितो राजमाजगाम  
 स कुण्डिनम् ॥ १४ ॥ यत्रैव क्रुषेण रणे निज्जितः परवीरहा । तत्र भोजकटं  
 नाम क्रुतं नगरमुत्तमम् ॥ १५ ॥ सैन्येन महता तेन प्रभूतगजवाजिना । पुरं  
 तद्भुवि विख्यातं नाम्ना भोजकटं नृप ॥ १६ ॥ स भोजराजः सैन्येन महता  
 परिवारितः । अफोहिण्या महावीर्यः पाण्डवान् समुपागमत् ॥ १७ ॥ ततः स  
 कवची धनी तली खड्गी शरासनी । ध्वजेनादित्यवर्णेन प्रविवेश महाचक्रम् ।  
 विदितः पाण्डवेयानां वासुदेवप्रियेप्सया ॥ १८ ॥ युधिष्ठिरस्तु तं राजा प्रत्यू-  
 दाम्याभ्यपूजयत् ॥ १९ ॥ स पूजितः पाण्डुपुत्रैर्वथान्यायं सुसंस्तुतः । प्रति-  
 पूज्य च तान् सर्वान् विश्रास्तः सहसैनिकः ॥ २० ॥ उवाच मध्ये वीराणां कुन्तीपुत्रं  
 धनञ्जयम् । साहाय्येऽस्मिन् स्थितो युद्धे यदि भीतोऽसि पाण्डव ॥ २१ ॥ करिष्यामि  
 रणे सख्यमसहं तव शत्रुभिः । न हि मे विक्रमे तुल्यः पुमानस्तीह कश्चन ॥ २२ ॥  
 हनिष्यामि रणे भागं वं मे दास्यसि पाण्डव । अपि द्रोणरूपो वीरो भीष्म-  
 कर्णावथो पुनः ॥ २३ ॥ अथ वा सर्व एवैते तिष्ठन् वसुधाधिपाः । निहत्य सम-  
 रे शत्रुंस्तव दास्यामि मेदिनीम् ॥ २४ ॥ इत्युक्त्वा धर्मराजस्य केशवस्य च सन्नि-  
 धौ । शत्रुतां पार्थिवेन्द्राणामन्येषां केशवः ॥ २५ ॥ वासुदेवमभिप्रेक्ष्य  
 धर्मराजश्च पाण्डवम् । उवाच धीमान् कौन्तेयः प्रहस्य सखिपूर्वकम् ॥ २६ ॥ कौर-  
 वाणां कुले जातः पाण्डोः पुत्रो विशेषतः । द्रोणं व्यपदिशन् शिष्यो वासु-  
 देवसहायवान् । भीतोऽस्मीति कथं वृथा दधानो गाण्डिवं धनुः ॥ २७ ॥ युध्य-  
 मानस्य मे वीर गन्तव्यैः सुमहाबलैः । साहायो घोषयात्रायां कस्तदासीत् सखा  
 मम ॥ २८ ॥ तथा प्रतिभवे तस्मिन् देवदानवसङ्गले । पाण्डवे युध्यमानस्य  
 कः साहायस्तदाभवत् ॥ २९ ॥ निवातकवचैर्युद्धे कालकेशे च दानवैः । तत्र मे  
 युध्यमानस्य कः साहायस्तदाभवत् ॥ ३० ॥ तथा विराटनगरे कुरुभिः सह सङ्गरे ।  
 युध्यतो बह्विस्तत्र कः साहायोऽभवन्मम ॥ ३१ ॥ उपजीव्य रणे क्रुद्रं शत्रुं वैश्र-  
 वणं यमम् । वरुणं पावकं केशव रूपं द्रोणं माधवम् ॥ ३२ ॥ धारयन् गाण्डिवं  
 दिव्यं धनुस्तेजोमयं दृढम् । अक्षयशरसंयुक्त्वा दिव्यास्त्रपरिरुंहितः ॥ ३३ ॥  
 कथमस्मद्विधो वृषाङ्गीतोऽस्मीति यशोहरम् । वचनं नरशाद्गूल वज्रायुधमपि  
 स्वयम् ॥ ३४ ॥ नास्मि भीतो महाबाहो साहाय्यार्थं च नास्ति मे । यथाकामं यथा-  
 योगं गच्छ वान्यत्र तिष्ठ वा ॥ ३५ ॥ विनिवर्त्तय ततो रूक्षी सेनां सागरसन्नि-

ভাম্ । দুর্ঘ্যেধনমুপাগচ্ছত্বেব ভরতর্ষভ ॥ ৩৬ ॥ তথৈব চাভিগম্যৈনমুবাচ  
বসুধাধিপঃ । প্রত্যাখ্যাতশ্চ তেনাপি স তদা শূরমানিনা ॥ ৩৭ ॥ দ্বাবেব তু মহা-  
রাজ তস্মাদ্বুদ্ধাদপেয়তুঃ । রৌহিণেষশ্চ বাক্ষেযো রুক্মী চ বসুধাধিপঃ ॥ ৩৮ ॥  
গতে রামে তীর্থযাত্রাং ভীষ্মকস্য স্মৃতে তথা । উপাশিশন্ পাণ্ডবেষা মন্ত্রায় পুন-  
রেব চ ॥ ৩৯ ॥ সমিতির্ধর্মরাজস্য সা পার্থিবসমাকুলা । শুশুভে তারকৈশ্চিত্রা  
দ্যৌশ্চন্দ্রেণেব ভারত ॥ ৪০ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি সৈন্যনির্বাণপর্বণি রুক্মিপ্রত্যাখ্যানে সপ্তপঞ্চাশ-  
দধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৫৭ ॥



জনমেজয় উবাচ । তথা ব্যুৎেষনীকেষু কুরুক্ষেত্রে দ্বিজর্ষভ । কিমকুর্ষংশ্চ কুরবঃ  
কালেনাভিপ্রচোদিতাঃ ॥ ১ ॥ বৈশম্পায়ন উবাচ । তথা ব্যুৎেষনীকেষু যত্তেষু  
ভরতর্ষভ । ধৃতরাষ্ট্রো মহারাজ সঞ্জয়ং বাক্যমব্রবীৎ ॥ ২ ॥ এহি সঞ্জয় সর্ষং  
মে আচক্ষানবশেষতঃ । সেনানিবেশে যদ্বৃত্তং কুরুপাণ্ডবসেনযোঃ ॥ ৩ ॥ দিষ্ট-  
মেব পরং মন্যে পৌরুষঞ্চাপ্যনর্থকম্ । যদহং বুধ্যমানোহপি যুদ্ধদোষান্ ক্ষয়ো-  
দযান্ ॥ ৪ ॥ তথাপি নিকৃতিপ্রজ্ঞং পুল্লং দুর্দ্যুতদেবিনম্ । ন শক্লোমি নিযন্তং  
বা কর্ত্তং বা হিতমাত্মনঃ ॥ ৫ ॥ ভবত্যেব হি মে স্মৃত বুদ্ধির্দোষানুদর্শিনী । দুর্ঘ্যে-  
ধনং সমাসাদ্য পুনঃ সা পরিবর্ত্ততে ॥ ৬ ॥ এবংগতে বৈ যদ্ভাবি তদ্ভবিষ্যতি সঞ্জ-  
য় । ক্ষত্রধর্ম্মঃ কিল রণে তনুত্যাগো হি পূজিতঃ ॥ ৭ ॥ সঞ্জয় উবাচ । স্বন্য-  
ক্লেংযমনুপ্রংশো মহারাজ যথেষ্টসি । ন তু দুর্ঘ্যেধনে দোষনিমমাধাতুমহসি ।  
শৃণু স্বানবশেষেণ বদতো মম পার্থিব ॥ ৮ ॥ য আত্মনো হ্রশ্চরিতাদশুভং প্রাপ্নু-  
যাম্নরঃ । ন স কালং ন বা দৈবং বন্ধুমেতদিহার্হতি ॥ ৯ ॥ মহারাজ মনুষ্যেষু  
নিন্দ্যং যঃ সর্ষমাচরেৎ । স বধ্যঃ সর্ষলোকস্য নিন্দিতানি সমাচরন্ ॥ ১০ ॥ নি-  
কারা মনুজশ্রেষ্ঠ পাণ্ডবৈস্বংপ্রতীক্ষয়া । অনুভূতাঃ সহামাত্যৈর্নিকৃতৈরধিদে-  
বনে ॥ ১১ ॥ হযানাঞ্চ গজানাঞ্চ রাজ্ঞাঞ্চামিততেজসাম্ । বৈশসং সমরে যত্নং  
যত্তন্মে শৃণু সর্ষশঃ ॥ ১২ ॥ স্থিরো ভূত্বা মহাপ্রাজ্ঞ সর্ষলোকক্ষযোদযম্ । যথা ভূতং  
মহায়ুদ্ধে শ্রদ্ধা টেচকমনা ভব ॥ ১৩ ॥ ন হেব কর্ত্তা পুরুষঃ কর্ম্মণোঃ শুভপাপ-  
যোঃ । অস্বতন্ত্রো হি পুরুষঃ কার্যতে দারুযন্ত্রবৎ ॥ ১৪ ॥ কেচিদীশ্বরনির্দিষ্টং  
কেচিদেব যদৃচ্ছয়া । পূর্বকর্ম্মভিরপ্যন্যে ত্রৈধমেতৎ প্রদৃশ্যতে ॥ ১৫ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি সৈন্যনির্বাণপর্বণি সঞ্জয়বাক্যে অষ্টপঞ্চাশদধিক-  
শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৫৮ ॥ সমাপ্তঞ্চ সৈন্যনির্বাণপর্ব ॥

## अथोलूकदूताभिगमनपर्व ।

सञ्जय उवाच । हिरण्यत्यांनिविष्टेषु पाण्डवेषु महात्मसु । न्यविशन्तु महाराज  
 कौरवेषा यथाविधि ॥ १ ॥ तत्र दुर्योधनो राजा निवेश्य बलमोजसा । सम्मान-  
 यित्वा नृपतीन् न्यस्य गुह्यांस्तथैव च ॥ २ ॥ आरक्षस्य विधिं क्रुद्धा योधानां  
 तत्र भारत । कर्णं दुःशसनैश्चैव शकुनिंश्चापि सौबलम् । आनाय्य नृपतिसुत्र  
 मन्त्रयामास भारत ॥ ३ ॥ ततो दुर्योधनो राजा कर्णेन सह भारत । सन्तापित्वा  
 च कर्णेन आत्वा दुःशसनेन च ॥ ४ ॥ सौबलेन च राजेन्द्र मन्त्रयित्वा नरवर्षभ ।  
 आहूयोपह्वरे राजमूलुकमिदमत्र वी० ॥ ५ ॥ उलूक गच्छ कैतव्य पाण्डवान् सह-  
 सोमकान् । गत्वा मम वचो ब्रुहि वासुदेवस्य शृणुतः ॥ ६ ॥ इदन्तुं समनुप्राप्तुं  
 वर्षपूगाभिचिन्तितम् । पाण्डवानां कुरूणां युद्धं लोकत्रयकरम् ॥ ७ ॥ यदे-  
 तं कथनावक्त्यं सञ्जयो महदत्र वी० । वासुदेवसहायस्य गच्छतः सान्नुजस्य  
 ते । मध्ये कुरूणां कौन्तेय तस्य कालोऽयमागतः ॥ ८ ॥ यथा वः संप्रतिज्जा-  
 तं तं सर्वं क्रियतामिति ॥ ९ ॥ ज्येष्ठं तथैव कौन्तेयं ब्रुयात्स्वं वचना-  
 न्नम । आतृभिः सहितैः सर्वैः सोमकैश्च सकेकथैः ॥ १० ॥ कथं वा धार्मिको  
 भूत्वा ह्यमधर्मे मनः कृथाः । य इच्छन्ति जगत् सर्वं नश्यमानं नृशंसवत् ॥ ११ ॥  
 अतयं सर्वभूतेभ्यो दाता ह्यमिति मे मतिः ॥ १२ ॥ श्रुते हि पुरा गीतः  
 श्लोकोऽयं भरतर्षभ । प्रह्लादेनाथ भद्रन्ते हते राज्ये तु दैवतैः ॥ १३ ॥  
 यस्य धर्मधजे नित्यं सुरा ध्वज इवोच्छ्रितः । प्रच्छन्नानि च पापानि वैडालं  
 नाम तद्व्रतम् ॥ १४ ॥ अत्र ते वर्तयिष्यामि आख्यानमिदमुत्तमम् । कथितं नार-  
 देनेह पितृर्म्मम नराधिप ॥ १५ ॥ माञ्ज्जारः किल ह्युक्त्वा निश्चयः सर्वकर्मसु ।  
 उक्त्वाहः स्थितो राजन् गङ्गातीरे कदाचन ॥ १६ ॥ स वै क्रुद्धा मनःशुद्धिं प्रत्या-  
 यार्थं शरीरिणाम् । करोमि धर्मनित्याह सर्वानेव शरीरिणः ॥ १७ ॥ तस्य कालेन  
 महता विशन्तुं जग्मुरगुजाः । समेत्य च प्रशंसन्ति माञ्ज्जारं तं विशाम्प-  
 ते ॥ १८ ॥ पूज्यमानस्तु तैः सर्वैः पक्विभिः पक्विभोजनः । अत्तकार्यं कृतः  
 मेने चर्यायाश्च कृतं फलम् ॥ १९ ॥ अथ दीर्घस्य कालस्य तं देशं मुषिका  
 ययुः । दशशुश्रुते तत्र धार्मिकं व्रतचारिणम् ॥ २० ॥ कार्येण महता युक्तं  
 दशयुक्तेन भारत । तेषां मतिरियं राजमासीत्तत्र विनिश्चये ॥ २१ ॥ बह्वमित्रा  
 वयं सर्वे तेषां नो नातूलो ह्यम । रक्षां करोतु सततं वृद्धबालस्य सर्व-  
 शः ॥ २२ ॥ उपगम्य तु ते सर्वे विडालमिदमब्रुवन् । भवत्प्रसादादिच्छामश्चर्तु-

तैव यथासुखम् ॥ २३ ॥ भवानो गतिरव्याग्रा भवान् परमः सुखम् । ते वयं  
 सहिताः सर्वे भवन्तु शरणं गताः ॥ २४ ॥ भवान् धर्मपरो नित्यं भवान् धर्मे  
 व्यवस्थितः । स नो रक्ष महाम्राष्ट्रं त्रिदशानिव बज्रभृत् ॥ २५ ॥ एवमुक्तुस्तु तैः  
 सर्वैर्मुषिकैः स विशाम्पते । प्रत्युवाच ततः सर्वाभ्युषिकान्मुषिकान्तरुम् ॥ २६ ॥  
 द्वयोर्योगं न पश्यामि तपसो रक्षणस्य च । अवश्यं मया कार्यं वचनं भवतां  
 हितम् ॥ २७ ॥ युष्माभिरपि कर्तव्यं वचनं मम नित्यशः । तपसाम्नि परिश्रान्तो  
 दृष्टं नियममास्थितः ॥ २८ ॥ न चापि गमने शक्तिं काङ्क्षे पश्यामि चिन्तयन् ।  
 सोऽस्मि नेयः सदा तात नदीकूलमितः परम् ॥ २९ ॥ तथेति ते प्रतिज्जाय  
 मुषिका भरतर्षभ । रक्षवालमथो सर्वं माञ्ज्जाराय न्यवेदयन् ॥ ३० ॥ ततः स  
 पापो ह्युक्त्वा मुषिकानथ भक्षयन् । पीवरश्च सुवर्णश्च दृष्टवन्तश्च जायते ॥ ३१ ॥  
 मुषिकाणां गणश्चात्र भृशं संक्षीयतेऽथ सः । माञ्ज्जारो बर्हते चापि तेजोबल-  
 समन्वितः ॥ ३२ ॥ ततस्ते मुषिकाः सर्वे समेत्यानेयान्यमक्रुवन् । मातुलो बर्हते  
 नित्यं वयं क्षीयामहे भृशम् ॥ ३३ ॥ ततः प्राज्जतमः कश्चिदिडिङ्गिको नाम  
 मुषिकः । अत्रवीद्वचनं राजन् मुषिकाणां महागणम् ॥ ३४ ॥ गच्छतां वो  
 नदीतीरं सहितानां विशेषतः । पृष्ठतोऽहं गमिष्यामि सहैव मातुलेन तु ॥ ३५ ॥  
 साधु साधिति ते सर्वे पूजयाङ्कुरे तदा । चक्रुश्चैव यथान्यायं डिङ्गिकस्य  
 वचोऽर्थवत् ॥ ३६ ॥ अविज्जानाततः सोऽथ डिङ्गिकं ह्युपयुक्तवान् । ततस्ते  
 सहिताः सर्वे मन्त्रयामासुरङ्गसा ॥ ३७ ॥ तत्र रक्षतमः कश्चिं कोकिलो नाम मु-  
 षिकः । अत्रवीद्वचनं राजन् ज्जातिमध्ये यथातथम् ॥ ३८ ॥ न मातुलो धर्म-  
 कामश्छद्ममात्रं कृता शिखा । न मूलफलभक्षस्य विष्ठा भवति लोमशा ॥ ३९ ॥  
 अस्य गात्राणि बर्हन्ते गणश्च परिहीयते । अद्य सप्तार्धदिवसान् डिङ्गिकोऽपि  
 न दृश्यते ॥ ४० ॥ एतच्छ्रुत्वा वचः सर्वे मुषिका विप्रहृद्भवुः । विडालोऽपि  
 सुहृत्कृत्वा जगादैव यथागतम् ॥ ४१ ॥ तथा ह्यमपि ह्युक्त्वा वैडालं व्रत-  
 मास्थितः । चरसि ज्जातिषु सदा विडालो मुषिकेष्विव ॥ ४२ ॥ अन्यथा किल  
 ते वाक्यमन्यथा कर्म दृश्यते । दन्तनार्थाय लोकस्य वेदाशेषापशमश्च ते ॥ ४३ ॥  
 त्यक्त्वा ह्यदं द्विदं राजन् क्लृप्तधर्मं समाश्रितः । कुरु कार्याणि सर्वाणि धर्मि-  
 ष्ठाऽसि नरर्षभ ॥ ४४ ॥ बाह्वीर्येण पृथिवीं लब्ध्वा भरतसन्तम । देहि दानं  
 द्विजातिभ्यः पिडुतांश्च यथोचितम् ॥ ४५ ॥ क्लिंताया वर्षपुगांश्च मातुर्मातृ-  
 हिते स्थितः । प्रमाञ्ज्जांश्च रणे जिह्वा सम्मानं परमावह ॥ ४६ ॥ पञ्च ग्रामा

वृता यत्नामाश्चाभिरपवर्जिताः । युध्यामहे कथं संख्ये कोपयेम च पाण्डु-  
 बान् । ४१ ॥ इत्युक्ते ह्युक्तभावस्य सन्त्यागो विहरस्य च । जातुषे च गृहे दाहं  
 स्मरंश्च पुरुषो भव ॥ ४८ ॥ यच्च क्रुषमवोचस्वमायास्तुं कुरुसंसदि । अथमस्मि  
 स्थितो राजन् शमाय समराय च । तस्यायमागतः कालः समरस्य नराधिप ॥ ४२ ॥  
 एतदर्थं मया सर्वं कृतमेतद्व्युधिष्ठिर । किमु युद्धात् परं लाभं कल्पियो बह  
 मन्यते ॥ ५० ॥ किंश्च इत्थं कल्पियकुले जातः संप्रथितो भुवि । द्रोणादस्त्राणि  
 संप्राप्य रूपान्तरं भवतर्षभ । तुल्यायोनौ समथले वासुदेवस्य समाश्रितः ॥ ५१ ॥  
 वृषास्तुं वासुदेवस्य पाण्डवानां समीपतः । आत्मारथं पाण्डुवार्थं यत्नो मां  
 प्रतियोधय ॥ ५२ ॥ सभामध्ये च यद्गपं मायया कृतवानसि । तन्नैवेव पुनः  
 कृत्वा साङ्गुनो मामभिद्रव ॥ ५३ ॥ इन्द्रजालस्य माया वै कुहका वापि भीषणा ।  
 आतृशस्त्रस्य संग्रामे बहन्ति प्रतिगर्जनाः ॥ ५४ ॥ वधमप्युत्सहेम द्यां च  
 गच्छेम मायया । रसातलं विशानोऽपि ईन्द्रं वा पुरमेव तु । दर्शयेम च कृपाणि  
 स्वशरीरे बहून्यापि ॥ ५५ ॥ न तु पर्यायतः निक्षिप्रं क्षिमाप्नोति मानुषीम् । मनसैव  
 हि भूतानि धातेव कुरुते वशे ॥ ५६ ॥ यद्ब्रवीषि च वार्क्ये धार्तराष्ट्रानहं रणे ।  
 यातश्चिद्वा प्रदास्यामि पार्थेभ्यो राज्यमुत्तमम् ॥ ५७ ॥ आचक्षे च मे सर्वं  
 सङ्गयस्तव भाषितम् । नदिद्वीयेन पार्थेन वैरुं वः सव्यासिचिना ॥ ५८ ॥ स सत्य-  
 सङ्गरो भूत्वा पाण्डुवार्थे पराक्रमी । युध्यस्वादय रणे यत्तः पश्यामः पुरुषो भव ॥ ५९ ॥  
 यस्तु शत्रुनिभङ्गाय शुद्धं पौरुषमस्त्वितः । करोति द्विषतां शोकं स जीवति  
 सूजीवितम् ॥ ६० ॥ अवस्माच्छेव ते क्रुषं ख्यातं लोके महद्वशः । अद्ये-  
 दानीं विजानीमः सन्ति यन्ताः सशृङ्गकाः ॥ ६१ ॥ नद्विषो नापि नृपतिस्त्वपि युक्तः  
 कथं न । सन्नाहं संयुगं कर्तुं कंसभृत्ये विशेषतः ॥ ६२ ॥ तस्य तूवरकं  
 बालं ब्रह्माशिनमविद्यकम् । उलूक मद्यो ब्रुहि असकृन्तीमसेनकम् ॥ ६३ ॥ विराट्-  
 नगरे पार्थ यस्तुं सुदो ह्युः पुरा । बल्लवो नाम विख्यातस्तन्ममैव हि पौरु-  
 षम् ॥ ६४ ॥ प्रतिष्ठातं सभामध्ये न तन्निथ्या त्वया पुरा । द्रुपशासनस्य रूधिरं  
 पीयतां यदि शक्यते ॥ ६५ ॥ यद्ब्रवीषि च कौन्तेय धार्तराष्ट्रानहं रणे । निहनि  
 श्यामि तरसा तस्य कालोऽयमागतः ॥ ६६ ॥ इत्थं हि भोज्ये पुरस्कार्येण तक्ष्ये  
 पेये च भारत । क्व युद्धं क्व च भोक्तव्यं युध्यस्व पुरुषो भव ॥ ६७ ॥ शयिष्यामि  
 हतो भूमौ गदामालिङ्ग्य भारत । तद्वथा च सभामध्ये बलंगितं ते वक्रोदर ॥ ६८ ॥  
 उलूक नकुलं ब्रुहि वचनाग्रमं भारत । युध्यस्वादय स्थिरो भूत्वा पश्यामस्तव पौ-

রুশম্ ॥ ৬৯ ॥ যুধিষ্ঠিরানুরাগঞ্চ দেবঞ্চ মযি ভারত । কৃষ্ণায়াশ্চ পরিক্লেণং স্মরে-  
 দানীং যথাতথম্ ॥ ৭০ ॥ বুযাস্ত্বং সহদেবঞ্চ রাজমধ্যে বচো মম । যুধ্যেদানীং  
 রণে যত্তঃ কেশান্ স্মর চ পাণ্ডব ॥ ৭১ ॥ বিরাতক্রুপদৌ চোভৌ বুযাস্ত্বং বচনা-  
 ন্মম । ন দৃষ্টপূৰ্ণা ভৰ্ত্তারো ভৃত্যৈরপি মহাশুণৈঃ ॥ ৭২ ॥ তথার্থপতিভিত্ত্য  
 যতঃ সৃষ্টিঃ প্রজাস্ততঃ । অশ্লাঘ্যোহয়ং নরপতিযুবযোরিতি চাগতম্ ॥ ৭৩ ॥ তে  
 যুযং সংহতা ভুত্বা তদ্ব্যর্থং মনাপি চ । আত্মার্থং পাণ্ডবার্থঞ্চ প্রযুধ্যস্বং মযা  
 সহ ॥ ৭৪ ॥ ধৃষ্টদ্র্যম্নঞ্চ পাঞ্চাল্যং বুযাস্ত্বং বচনান্মম । এষ তে সমবঃ প্রাপ্তো  
 লঙ্কব্যশ্চ ত্বযাপি সং ॥ ৭৫ ॥ দ্রোণনামাদ্য সনরে জ্ঞান্যসে হিতমুত্তমম্ । যুধ্যস্ব  
 সমুহ্লং স্বার্থং কুরু কৰ্ম্ম সুহৃক্ষরম্ ॥ ৭৬ ॥ শিখণ্ডিনমথো বৃহি উল্লুক বচনান্মম ।  
 স্ত্রীতি মত্বা মহাবাহুর্ন হনিষ্যতি কৌরবঃ ॥ ৭৭ ॥ গাঙ্গেযো ধম্বিনাং শ্রেষ্ঠো যুধ্যে-  
 দানীং সুনিত্বঃ । কুরু কৰ্ম্ম রণে যত্তঃ পশ্যামঃ পৌরুষং তব ॥ ৭৮ ॥ এবমুক্ত্বা  
 ততো রাজা প্রহস্যোলুকমব্রবীৎ । ধনঞ্জয়ং পুনবৃহি বাসুদেবস্য শৃণুতঃ ॥ ৭৯ ॥  
 অস্মান্ বা ত্বং পরাজিত্য প্রশাধি পৃথিবীমিগাম্ । অথ বা নিজ্জিতোহস্মাভী রণে  
 বীর শযিষ্যসি ॥ ৮০ ॥ রাষ্ট্রান্নির্বাসনক্লেশং বনবাসঞ্চ পাণ্ডব । কৃষ্ণায়াশ্চ  
 পরিক্লেণং সংস্মরন্ পুরুষো ভব । যদর্থংক্ষত্রিয়া স্মৃতে মবং তদিদমাগতম্ ॥ ৮১ ॥  
 বলং বীর্য্যঞ্চ শৌর্য্যঞ্চ পরঞ্চাপ্যস্ত্রলাঘবম্ । পৌরুষং দর্শয়ন্ যুদ্ধে কোপস্য কুরু  
 নিষ্কৃতিম্ ॥ ৮২ ॥ পরিক্লিষ্টস্য দীনস্য দীর্ঘকালোষিতস্য চ । হৃদয়ং ন স্ফুটেৎ  
 কস্য ঐশ্বর্য্যাদ্ভুংশিতস্য চ ॥ ৮৩ ॥ কুলে জাতস্য শূরস্য পরবিত্তেষুগৃহ্যতঃ । অচ্ছিন্নং  
 রাজ্যমাক্রম্য কোপং কস্য ন দীপযেৎ ॥ ৮৪ ॥ যত্তহুঙ্কং মহদাক্যং কৰ্ম্মণা তদ্বি-  
 ভব্যতাম্ । অকৰ্ম্মণা কথিতেন সন্তঃ কুপুরুষং বিদ্ভঃ ॥ ৮৫ ॥ অমিত্রাণাং বশে  
 স্থানং রাজ্যঞ্চ পুনরুদ্ধর । দ্বাবথো যুদ্ধকামস্য তস্মাৎ কুরুত পৌরুষম্ ॥ ৮৬ ॥  
 পরাজিতোহসি দ্যুতেন কৃষ্ণা চানায়িতা সতাম্ । শক্যোহমৰ্ষো মনুষ্যেণ কৰ্ত্ত্বং  
 পুরুষমানিনা ॥ ৮৭ ॥ দ্বাদশৈব তু বর্ষাণি বনে ধিক্ষ্যাৎস্বিকাসিতঃ । সত্ৰংসরং বিরা-  
 টস্য দাস্যমাস্থায় চোষিতঃ ॥ ৮৮ ॥ রাষ্ট্রান্নির্বাসনক্লেশং বনবাসঞ্চ পাণ্ডব ।  
 কৃষ্ণায়াশ্চ পরিক্লেণং সংস্মরন্ পুরুষো ভব ॥ ৮৯ ॥ অপ্রিযাণাঞ্চ বচনং প্রক্ৰ-  
 বৎসু পুনঃপুনঃ । অমৰ্ষং দর্শয়স্ব ত্বমমৰ্ষো হেব পৌরুষম্ ॥ ৯০ ॥ ক্রোধো বলং  
 তথা বীর্য্যং জ্ঞানযোগোহস্ত্রলাঘবম্ । ইহ তে দৃশ্যতাং পার্থ যুধ্যস্ব পুরুষো  
 ভব ॥ ৯১ ॥ লোহাভিহারো নিরৃত্তঃ কুরুক্ষেত্রমকর্দমম্ । পুষ্টাস্তেহস্থা ভূতা বোধঃ  
 শ্বো যুধ্যস্ব সকেশবঃ ॥ ৯২ ॥ অসমাগম্য ভীষ্মেণ সংযুগে কিং বিকথসে । আরু-



रुन्धुर्यथा मन्तः पर्वतं गङ्गामादनम् । एवं कथसि कौस्तुभ्य अकथन् पुरूषो भव । २३ ॥  
 सूतपुत्रं सुहृद्द्वेषं शल्यं बलिनां वरम् । द्रोणं बलिनां श्रेष्ठं शचीपति-  
 सनं युधि । अजिह्वा संयुगे पार्थ राज्यं कथमिहेच्छसि ॥ २४ ॥ ब्राह्मे धनुषि  
 चाचार्य्यं . वेदयोरस्तुगं द्वयोः । युधि धुर्य्यमविक्रोभ्यमनीकचरमुच्यतम् ॥ २५ ॥  
 द्रोणं महाह्यतिं पार्थ जेतुमिच्छसि तन्मृषा । न हि शुश्रुम वातेन मेरुमुन्म-  
 थितं गिरिम् ॥ २६ ॥ अनिलो वा बहेन्मेरुं द्यौर्यापि निपतेन्महीम् । युगं  
 वा परिवर्तेत यदेव्यं स्याद्वथाथ माम् ॥ २७ ॥ को ह्याभ्यां जीविताकाङ्क्षी  
 प्राप्यास्त्रमरिन्दनम् । पार्थो वा इतरो वापि कोऽन्यः स्वस्ति गृहान् ब्रजे ॥ २८ ॥  
 कथमाभ्यामभिध्यातः संसृष्टो दारुणेन वा । रणे जीवन् प्रमुच्येत पदा भूमिमु-  
 पस्पृशन् ॥ २९ ॥ किं दह्रंरः कूपशयो यथेमां न बुध्यसे राजचमूं समेताम् ।  
 हुराधर्यां देवचमुप्रकाशां गुप्तां नरेन्द्रेन्द्रिदशैरिव द्याम् ॥ ३० ॥ प्राट्यैः  
 प्रतीट्यैरथ दार्किणातैरुदीच्यकाशैः जशकैः थशैश्च । शालैः समत्सैः कुरू-  
 मध्यदेशैश्चैः पुलिन्दैर्द्रविडोडुकाणैः ॥ ३१ ॥ नानाजनैश्च युधि संप्र-  
 रक्तं गाङ्गं यथा वेगमपारणीयम् । मांश्च स्थितं नागबलस्य मध्ये युयुत्ससे मन्द  
 किमल्लबुद्धे ॥ ३२ ॥ अक्षय्याविषुधीं चैव अग्निदत्तं ते रथम् । जानीमो हि  
 रणे पार्थ केतुं दिव्यं भारत ॥ ३३ ॥ अकथमानो युध्यस्व कथसेहज्जुन किं  
 बह । पर्यायां सिद्धिरेतस्य नैतत् सिध्यति कथनात् ॥ ३४ ॥ यदीदं कथनाल्लोके  
 सिध्यत् कर्म धनञ्जय । सर्वे भवेयुः सिद्धार्थाः कथने को हि दुर्गतः ॥ ३५ ॥  
 जानामि ते वासुदेवं सहायं जानामि ते गाण्डिवं तालमात्रम् । जानाम्यहं  
 द्वादशो नास्ति योक्ता जानानस्ते राज्यमेतद्वरानि ॥ ३६ ॥ न तु पर्यायधर्मेण  
 सिद्धिमाप्नोति मानवः । मनसैवानुकूलानि विधाता कुरुते वशे ॥ ३७ ॥ त्रयो-  
 दश समा भुक्तं राज्यं विलपतस्तव । भूयश्चैव प्रशासिष्ये द्वां निहत्य सवान्क-  
 वम् ॥ ३८ ॥ क्व तदा गाण्डिवं तेहभूत् यद्वं दासपणैर्जितः । क्व तदा भीम-  
 सेनस्य बलमासीत् फाल्गुन ॥ ३९ ॥ सगदास्तीमसेनाद्वा फाल्गुनाद्वा सगाण्डिव्यत् ।  
 न वै मोक्षस्तदा बोहभुदिनारूष्णामनिन्दिताम् ॥ ४० ॥ सा वो दास्ये समाप-  
 न्मान् मोचयामास पार्थी । अमानुष्यं समापन्नान् दासकर्मण्यवस्थितान् ॥ ४१ ॥  
 अबोचं यत् षण्डतिलानहं वस्तुथ्यमेव तत् । धृता हि वेणी पार्थेन विराटनगरे  
 तदा ॥ ४२ ॥ सूदकर्मणि च श्राव्यं विराटस्य महानसे । भीमसेनेन कौस्तुभ्य  
 यत्तु तन्मम पौरुषम् ॥ ४३ ॥ एवमेव सदा दण्डं क्लिष्याः क्लिष्ये दधुः । वेणीं

रुद्रा षष्ठवेशः कन्यां नर्तितवानसि ॥ ११४ ॥ न भयाद्वासुदेवस्य न चापि तव  
 फाल्गुन । राज्यं प्रतिप्रदास्यामि युध्यस्व सहकेशवः ॥ ११५ ॥ न माया हीम्रजालं  
 वा कुहका वा विभीषणा । आतुशस्त्रस्य संग्रामे बहन्ति प्रतिगच्छन्ताः ॥ ११७ ॥  
 वासुदेवसहस्रं वा फाल्गुनानां शतानि वा । आसाद्य माममोषेषुं त्रिविधांश्चि  
 दिशो दश ॥ ११९ ॥ संयुगं गच्छ तीर्थेण तिस्रि वा शिरसा गिरिम् । तत्र वा द्वं  
 महागाधं बाहृत्यां पुरुषोदधिम् ॥ ११८ ॥ शारद्वतमहामीनं विविंशतिमहो-  
 रगम् । बृहद्वलमहोच्छालं सौमदत्तितिमिद्विलम् ॥ ११९ ॥ युयुत्सुतोषं भग-  
 दत्तमारुतं श्रुतायुहार्दिक्यमहासमुद्रम् । दुःशासनोष्णं शलशल्यमत्स्यं सुषेण-  
 चित्रायुधनागनक्रम् ॥ १२० ॥ तीर्थवेगमपर्यास्तं द्रोणग्राहद्वुरासदम् । कर्णशल्य-  
 बाषावर्तं काञ्चोजवडवामुथम् ॥ १२१ ॥ जयद्रथाद्रिं पुरुमित्रगाटं दुर्गर्षणोदं  
 शकुनिप्रपातम् । शस्त्रोष्मक्षयमतिप्ररुद्धं यदावगाह्य श्रमनर्कचेताः । भवि-  
 ष्यसि द्वं हतसर्वबाह्वस्तदा मनस्ते परितापमेष्यति ॥ १२२ ॥ तदा मनस्ते त्रिदि-  
 वादिवाशुचेर्निवर्तिता पार्थ महीप्रशासनात् । प्रशास्यराज्यं हि सुदुर्लभं त्वया  
 बुभुषितः स्वर्ग इवातपस्विना ॥ १२३ ॥

इत्युद्देश्यागपर्वणि उलूकदूताभिगमनपर्वणि उलूकं प्रति दुर्योधनवाक्ये  
 एकानवर्षाधिकशततमोऽध्यायः ॥ १५२ ॥

—•••—

सञ्जय उवाच । सेनानिवेशं संग्रामं कृतव्यः पाण्डवस्य ह । समागतः पाण्ड-  
 वेषैर्युधिष्ठिरमभाषत ॥ १ ॥ अतिहो दूतवाक्यानां यथोक्तं क्ववतो मम ।  
 दुर्योधनसमादेशं श्रुत्वा न क्रोद्धुमर्हसि ॥ २ ॥ युधिष्ठिर उवाच । उलूक न भय-  
 न्तेहस्ति ब्रुहि द्वं विगतञ्जुरः । यन्मतं धार्तराष्ट्रस्य लूकस्यादीर्घदर्शिनः ॥ ३ ॥ ततो  
 ह्यतिमतां मध्ये पाण्डवानां महाश्रनाम् । सृष्टवानां मत्स्यानां कृष्णस्य च  
 षण्श्विनः ॥ ४ ॥ द्रुपदस्य सपुत्रस्य विराटस्य च समिधो । भूमिपानां सर्वेषां  
 मध्ये वाक्यं जगद् ह ॥ ५ ॥ उलूक उवाच । इदं त्वामत्रवीज्जा धार्तराष्ट्रे  
 महामनाः । शृणुतां कुरुवीराणां तन्निबोध युधिष्ठिर ॥ ७ ॥ पराजितोऽसि  
 द्युतेन कृष्ण चानाशिता मताम् । शक्योऽहमर्षो मनुष्येण कर्तुं पुरुषमानिना ॥ ९ ॥  
 ह्यादशैव तु वर्षाणि बने धिक्प्याद्विवासिताः । मयत्सरं विराटस्य दास्यमाहाय  
 चोषिताः ॥ ८ ॥ अमर्षं राज्यहरणं वनवासं पाण्डव । द्रौपद्याश्च परि-  
 क्लेशं संस्मरन् पुरुषो तव ॥ ९ ॥ अशक्तेन च यच्छुभं तीमसेनेन पाण्डव ।

द्रुःशासनस्य रूधिरं पीयतां यदि शक्यते ॥ १० ॥ लोहाभिहारो निर्वृत्तः कुरू-  
 क्केत्रमकर्दमम् । समः पद्मा भृता तेहस्थाः श्वो युध्यस्व मकेशवः ॥ ११ ॥ असमागम्य  
 तीक्ष्णेण संयुग्मे किं विकथसे ॥ १२ ॥ आरुरुरुर्मुखथा मन्दः पर्वतं गङ्गामदनम् ।  
 एवं कथसि कौन्तेय अकथन् पुरुषो भव ॥ १३ ॥ सूतपुत्रं सुहृद्द्वेषं शल्यं  
 बलिनां वरम् । द्रोणं बलिनां श्रेष्ठं शचीपतिसमं युधि । अङ्घ्रिह्वा संयुगे  
 पार्थ राज्यं कथमिहेच्छसि ॥ १४ ॥ ब्राह्म्ये धनुषि चाचार्य्यं वेदयोरनुगतं द्वयोः ।  
 युधि धुर्यमविक्रोभ्यमनीकचरमच्युतम् ॥ १५ ॥ द्रोणं महाद्भ्यतिं पाथ जेतुमि-  
 च्छसि तन्मृषा । न हि शुश्रम वातेन मेरुमुन्मथितं गिरिम् ॥ १६ ॥ अनिलो वा  
 बहेम्नेरुं द्योर्बापि निपतेन्महीम् । युगं वा परिवर्तेत यद्येवं स्यान्मथाथ  
 माम् ॥ १७ ॥ को हस्ति जीविताकाङ्क्षी प्राप्येयममरिमर्दनम् । गजो वाजी रथो-  
 वापि पुनः स्वस्ति गृहान् व्रजेत् ॥ १८ ॥ कथमाभ्यामभिध्यातः संसृष्टो दारुणेन  
 वा । रणे जीवन्मिमुच्येत पदा भूमिमुपस्पृशन् ॥ १९ ॥ किं दर्दुरः कूपशयो यथेमां  
 न बुध्यसे राजचयुं समेतान् । दुराधर्षां देवचमुप्रकाशां गुण्ठां नरेन्द्रेस्त्रिदशै-  
 रिव द्याम् ॥ २० ॥ प्राट्यैः प्रतीट्यैरथ दार्किणैर्युद्धैर्युद्धैः पुलिन्दैर्द्रविडाङ्गुकाण्डैः ॥ २१ ॥  
 नानाजनोषं युधि संप्रवृद्धं गाङ्गं यथा वेगमपारणीयम् । मां स्थितं नाग-  
 बलस्य मध्ये युयुत्ससे मन्द किमन्न वद्वे ॥ २२ ॥ इत्येवमुक्त्वा राजानं धर्मपुत्रं  
 युधिष्ठिरम् । अभ्यारत्य पुनर्जिह्वुमूलुकः प्रत्यभाषत ॥ २३ ॥ अकथमानो युध्यस्व  
 कथसेहर्द्धन किं वद । पर्यायां सिद्धिरेतस्य नैतत् सिध्यति कथनात् ॥ २४ ॥  
 यदिदं कथनाल्लोके सिध्येत् कर्म धनञ्जय । सर्वे भवेयुः सिद्धार्थाः कथने को हि  
 दुर्गतः ॥ २५ ॥ जानामि ते वासुदेवं सहायं जानामि ते गाण्डिवं तालमात्रम् ।  
 जानाम्येतद्वाद्दृशो नास्ति योद्धा जानानस्ते राज्यमेतद्विरामि ॥ २६ ॥ न तु प-  
 र्यायधर्मेण राज्यं प्राप्नोति मानुषः । मनसैवास्त्रकूलानि विधाता कुरुते व-  
 शे ॥ २७ ॥ त्रयोदश समा भुक्तं राज्यं विलपतस्तव । त्र्यशैचव प्रशासिष्ये  
 निहत्य द्वां सवाङ्गवम् ॥ २८ ॥ क्व तदा गाण्डिवं तेह भुक्त्वा दासपणैर्जितः ।  
 क्व तदा तीमसेनस्य बलमासीत् फाल्गुन ॥ २९ ॥ सगदास्तीमसेनाद्वा पार्थाद्वापि  
 सगाण्डिवात् । न वै योक्त्वस्तदा बोह भुद्धिना ह्युक्तामनिन्दिताम् ॥ ३० ॥ सा वो  
 दास्यं समापन्नान् मोचयामास पार्थवी । अमाङ्गुष्यं समायुक्तान् दासकर्मण्यवस्थि-  
 तान् ॥ ३१ ॥ अबोचं वत् षण्णतिलानहं वस्तुथ्यमेव तत् । धृता हि वेणी पाथेण

বিরাটনগরে তদা ॥ ৩২ ॥ সূদকর্মাণি চ শ্রাস্তং বিরাটস্য মহানসে । ভীমসেনেন  
কৌন্তেয যচ্চ তন্মম পৌরুষম্ ॥ ৩৩ ॥ এবমেতৎ সদা দণ্ডং ক্রত্বিষা ক্রত্বিয়ে দধুঃ ।  
বেণীং ক্রত্বা যণ্ডবেশঃ কন্যাং নর্ত্তিতবানসি ॥ ৩৪ ॥ ন ভযাদ্বাসুদেবস্য ন চাপি  
তব ফাল্গুন । রাজ্যং প্রতিপ্রদাস্যামি যুধ্যস্ব সহকেশবঃ ॥ ৩৫ ॥ ন মাষা হীক্স-  
জালং বা কুহকা বাপি ভীষণা । আন্তশস্ত্রস্য মে যুদ্ধে বহন্তি প্রতিগজ্জনাঃ ॥ ৩৬ ॥  
বাসুদেবসহস্রং বা ফাল্গুনানাং শতানি বা । আসাদ্য নামমোষেষুং দ্রবিষ্যন্তি  
দিশো দশ ॥ ৩৭ ॥ সংযুগং গচ্ছ ভীষ্মেণ ভিন্ধি বা শিরসা গিরিগ্ । তরেমং  
বা মহাগাধং বাহুভ্যাং পুরুষোদধিম্ ॥ ৩৮ ॥ শারদ্বতমহামীনং বিবিংশতি-  
ঋষাকুলম্ । বৃহদ্বলমহোচ্ছালং সৌমদত্তিতিমিঞ্জিলম্ ॥ ৩৯ ॥ যুযুৎসুতোষণং  
ভগদত্তমারুতং শ্রুতায়ুহাৰ্দিক্যমহাসমুদ্রম্ । দুঃশাসনৌঘং শলশল্যমৎস্যং সুষণে  
চিত্রায়ুধনাগনক্রম্ ॥ ৪০ ॥ ভীষ্মবেগমপর্যন্তং দ্রোণগ্রাহদুরাসদম্ । কৰ্ণশল্যঋষা-  
বর্ত্তং কাষ্বোজবডবামুখম্ ॥ ৪১ ॥ জযদ্রথাত্রিং পুরুমিত্রগাচং দুর্মর্ষণোদং শকু-  
নিপ্রপাতম্ । শস্ত্রৌঘমক্ষয়মতিপ্রবদ্ধং যদাবগাহ শ্রমনক্চেতাঃ । ভবিষ্যসি  
ত্বং হতসৰ্ব্ববান্ধবস্তদা মনস্তে পরিতাপমেষ্যতি ॥ ৪২ ॥ তদামনস্তে ত্রিদিবাদিবা-  
শুচেৰ্ণিবর্ত্তিতা পার্থ মহীপ্রশাসনাৎ । শ্রশাস্যরাজ্যং হি সুদ্বলভং ত্বয়া বৃভূ-  
ষিতঃ স্বৰ্গ ইবাতপস্বিনা ॥ ৪৩ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি উলুকদূতাত্তিগমনপর্বণি উলুকবাক্যে ষষ্ঠ্যধিশত-  
তমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৩০ ॥



সপ্তম উবাচ । উলুকস্বজ্জ্বনং ভূযো যথোক্তং বাক্যমব্রবীৎ । আশীবিষমিব-  
ক্রুদ্ধং তুদন্ বাক্যশলাকয়া ॥ ১ ॥ তস্য তদ্বচনং শ্রুত্বা রুষিতাঃ পাণ্ডবা ভৃশম্ ।  
প্রাগেব ভৃশসংক্রুদ্ধাঃ কৈতবোনাপি ধৰ্ষিতাঃ ॥ ২ ॥ আসনেষুদতিষ্ঠন্ত বাহুংশ্চৈব  
প্রচিক্ক্ষিপুঃ । আশীবিষা ইব ক্রুদ্ধা বীক্ষাঞ্চক্রুঃ পরস্পরম্ ॥ ৩ ॥ অবাক্শিরা  
ভীমসেনঃ সমুদৈকত কেশবম্ । নেত্রাভ্যাং লোহিতান্তাভ্যামাশীবিষ ইব শ্বসন ॥ ৪ ॥  
আৰ্ত্তং বাতান্নজং দৃষ্ট্বা ক্রোধেনাভিহতং ভৃশম্ । উৎস্রযম্বিব দাশাহঃ কৈতব্যং  
প্রত্যভাষত ॥ ৫ ॥ প্রযাহি শীঘ্রং কৈতব্য বৃষাশ্চৈব সুযোধনম্ । শ্রুতং বাক্যং  
গৃহীতোহর্থো মতং যন্তে তথাস্ত তৎ ॥ ৬ ॥ এবমুক্ত্বা মহাবাহুঃ কেশবো রাজস-  
ত্তম । পুনরেব মহাপ্রাজ্ঞং যুধিষ্ঠিরমুদৈকত ॥ ৭ ॥ সৃঞ্জমানাঞ্চ সৰ্বেষাং কৃষ্ণস্য  
চ ষশস্বিনঃ । দ্রুপদস্য সপুত্রস্য বিরাটস্য চ সম্বিধৌ ॥ ৮ ॥ ভূমিপানাঞ্চ সৰ্বেষাং

মধ্যে বাক্যং জগাদ হ । উলুকোহপ্যঙ্কনং ভূযো যথোক্তং বাক্যমত্রবীৎ ॥ ৯ ॥  
 আশীবিষমিব ক্রুদ্ধং তুদনং বাক্যশলাকম্ । ক্রুদ্ধাদীংশ্চৈব তাম্মুসর্জান্ যথোক্তং  
 বাক্যমত্রবীৎ ॥ ১০ ॥ উলুকস্য তু তদ্বাক্যং পাপং দারুণমীরিষম্ । শ্রদ্ধা বিচু-  
 ক্ততে পার্থো ললাটক্షাপ্যমাজ্জঘৎ ॥ ১১ ॥ তদবস্থং তদা দৃষ্ট্বা পার্থং সা সমিতি-  
 নৃপ । নাংমৃষ্যন্ত মহারাজ পাণ্ডবানাং মহারথাঃ ॥ ১২ ॥ অধিক্ষেপেণ ক্রুদ্ধস্য  
 পার্থস্য চ মহাত্মনঃ । শ্রদ্ধা তে পুরুষব্যাত্ৰাঃ ক্রোধাজ্জঙ্ঘলুরচ্যুতাঃ ॥ ১৩ ॥  
 ধৃষ্টদ্র্যম্নঃ শিখণ্ডী চ সাত্যকিষ্ম মহারথঃ । কৈকেয়া ভ্রাতরঃ পঞ্চ রাক্ষসশ্চ ঘটোৎ-  
 কচঃ ॥ ১৪ ॥ দ্রৌপদেযাভিমন্যুশ্চ ধৃষ্টকেশুশ্চ পার্থিবঃ । ভীমসেনশ্চ বিক্রান্তো  
 যমজৌ চ মহারথৌ ॥ ১৫ ॥ উৎপেতুরাসনাৎ সর্বে ক্রোধসংরক্তলোচনাঃ । বাহুন্  
 প্রগৃহ্য সূভূজা রক্তচন্দনকষিতান্ । অঙ্গদৈঃ পারিহার্যৈশ্চ কেয়ুরৈশ্চ বিভূষি-  
 তান্ ॥ ১৬ ॥ দন্তান্ দন্তেষু নিষ্পিষ্য দৃষ্ণী পরিলেলিহ্ন । তেষামাকারভাবজ্ঞঃ  
 কুস্তীপুল্লো বৃকোদরঃ । উদতিষ্ঠৎ স্ববেগেন ক্রোধেন প্রজ্বলম্বিব ॥ ১৭ ॥ উদ্ধৃত্য  
 সহস্রা নেত্রে দন্তান্ কটকটায় চ । হস্তং হস্তেন নিষ্পিষ্য উলুকং বাক্যমত্র-  
 বীৎ ॥ ১৮ ॥ অশক্তানামিবান্মাকং প্রোৎসাহননিমিত্তকম্ । শ্রুতং তে বচনং  
 মূৰ্খং যত্রাং দ্রুর্ঘোথনোহত্রবীৎ ॥ ১৯ ॥ তন্মে কথয়তো মন্দ শৃণু বাক্যং দুরাসদম্ ।  
 সর্বকলস্য মধ্যে ত্বং যদ্বক্ষ্যসি স্মৃষোধনম্ । শৃণুতঃ সূতপুত্রস্য পিতুশ্চ ত্বং দুরা-  
 স্ননঃ ॥ ২০ ॥ অস্মাভিঃ প্রীতিকামৈস্তু ভ্রাতুর্জ্যেষ্ঠস্য নিত্যশঃ । মর্ষিতং তে  
 দুরাচার তদ্বং ন বহু মন্যসে ॥ ২১ ॥ প্রেযিতশ্চ হৃষীকেশঃ শমাকাজ্জী কুবন্  
 প্রতি । কুলস্য হিতকামেন ধর্ম্মরাজেন ধীমতা ॥ ২২ ॥ ত্বং কালচোদিতো সুনং  
 গন্ত্বকামো যমক্ষয়ম্ । গচ্ছস্বাহবমস্মাভিস্তুচ শ্বে ভবিতা ক্রবম্ ॥ ২৩ ॥ মযাপি  
 চ প্রতিজ্ঞাতো বধঃ সত্ৰাতৃকস্য তে । স তথা ভবিতা পাপ নাত্র কার্য্যা বিচা-  
 রণা ॥ ২৪ ॥ বেলামতিক্রমেৎ সদ্যঃ সাগরো বরুণালয়ঃ । পর্বতাশ্চ বিশীর্যে-  
 যুর্মযোক্তং ন মৃষা ভবেৎ ॥ ২৫ ॥ সহায়স্তে যদি যমঃ কুবেরো রুদ্ভ এব বা । যথা-  
 প্রতিজ্ঞং দ্রুর্ভুক্তে প্রকরিষ্যন্তি পাণ্ডবাঃ ॥ ২৬ ॥ দ্ৰুঃশাসনস্য রুধিরং পাতা চান্মি  
 যথেষ্মিতম্ । যশ্চৈহ প্রতিসংরক্তঃ ক্ষত্রিষো মাভিযাস্যতি । অপি ভীষ্মং পুরস্কৃত্য  
 তৎ মেঘ্যামি যমক্ষয়ম্ ॥ ২৭ ॥ যট্টেতদ্রুক্তং বচনং মযা কলস্য সংসদি । যথৈ-  
 তদ্ভবিতা সত্যং তথৈবাস্মানমালভে ॥ ২৮ ॥ ভীমসেনবচঃ শ্রদ্ধা সহদেবোহপ্য-  
 মর্ষণঃ । ক্রোধসংরক্তনয়নস্ততো বাক্যমুবাচ হ ॥ ২৯ ॥ শৌণ্ডীরশরসদৃশমনী-  
 কজনসংসদি । শৃণু পাপ বচো মহৎ যদ্বাচ্যো হি পিতা ত্বয়া ॥ ৩০ ॥ নান্মাকং

त्विता तेदः कदाचिं कुरुतिः सह । धृतराष्ट्रस्य समक्षे यदि न स्यात्तथा सह ॥७१॥  
 द्वयं लोकविनाशाय धृतराष्ट्रकुलस्य च । उपमो वैरपुरुषः स्वकुलमश्च पाप-  
 क्लृप्तं ॥ ७२ ॥ जन्मप्रभृति चास्माकं पिता ते पापपुरुषः । अहितानि नृशंसानि  
 नित्यशः कर्तुमिच्छति । तस्य वैरानुषङ्गस्य गन्तान्म्यस्तुं सुदुर्गमम् ॥७३॥ अहमादौ  
 निहत्य द्वां शकुनेः संप्रपश्यतः । ततोऽस्मि शकुनिं हन्त्वा मिषतां सर्वधन्वि-  
 नाम् ॥ ७४ ॥ भीमस्य वचनं श्रुत्वा सहदेवस्य चोत्तमः । उवाच फाल्गुनो  
 वाक्यं भीमसेनं श्रुत्वा ॥ ७५ ॥ भीमसेन न ते सन्ति येषां वैरं त्वया सह ।  
 मन्दा ह्येषु सुखिनो मृत्युपाशवशंगताः ॥ ७६ ॥ उलूकश्च न ते वाच्यः पुरुषं  
 पुरुषोत्तम । दूताः किमपराधेनैव यथोक्तस्यांनु भाषिणः ॥ ७७ ॥ एवमुक्त्वा महा-  
 बाहूर्भीमं भीमपराक्रमम् । धृष्टद्युम्नमुखान् वीरान् सुहृदः समभाषत ॥७८॥ अतं  
 वस्तस्य पापस्य धार्तराष्ट्रस्य भाषितम् । कुत्सनं वासुदेवस्य मम चैव विशेषतः ।  
 अत्रैव तवन्तः संरक्ता अस्माकं हितकामया ॥ ७९ ॥ प्रभावद्वासुदेवस्य तव-  
 तां प्रयत्नतः । समग्रं पार्थिवं क्लृप्तं सर्वं न गणयाम्यहम् ॥ ८० ॥ त्वर्वाङ्घ्रिः  
 समनुज्जातो वाक्यमस्य यदुत्तरम् । उलूके प्रापयिष्यामि यद्वक्त्याति सुयोधनम् ॥८१॥  
 श्वो भूते कथितस्यास्य प्रतिवाक्यं चमुमुखे । गाण्डीवेनाभिधास्यामि क्लीबा हि  
 वचनोत्तराः ॥ ८२ ॥ ततस्तु पार्थिवाः सर्वे प्रशशंसुर्धनञ्जयम् । तेन वाक्योप-  
 चारेण विस्मिता राजसत्तमाः ॥ ८३ ॥ अनुनीय ह तान् सर्वान् यथान्यायं यथा-  
 वयः । धर्मराजस्तदा वाक्यं तत्प्राप्यं प्रत्यभाषत ॥ ८४ ॥ आत्मानमवमन्वानो  
 न हि स्यात् पार्थिवोत्तमः । तत्रोत्तरं प्रवक्ष्यामि तव शुश्रूषणे रतः ॥ ८५ ॥  
 उलूकं भरतश्रेष्ठ मामपूर्वमथोज्ज्वितम् । दुर्घोषधनस्य तद्वाक्यं निशम्य भरत-  
 र्वतः ॥ ८६ ॥ अतिलोहितनेत्राभ्यामाशीविष इव स्वसन् । श्रममान इव क्रोधात्  
 मृक्कणी परिसंलिहन् । जनार्दनमभिप्रेक्ष्य ब्रातृं चैव वेदमत्रवीत् ॥ ८७ ॥ अत्र-  
 भाषत कैत्रव्यं प्रगृह्य विपुलं भुजम् ॥ ८८ ॥ उलूक गच्छ कैत्रव्य वृहि तात  
 सुयोधनम् । कृतमं वैरपुरुषं दुर्मतिं कुलपांसनम् । पाण्डवेषु सदा पाप  
 नित्यं जिह्वं प्रवर्तसे ॥ ८९ ॥ स्ववीर्याद्यः पराक्रम्य पाप आह्वयते परान् ।  
 अतीतः पुरयन् वाक्यमेष वै क्लृप्तियः पुमान् ॥ ९० ॥ स पापः क्लृप्तियो भूत्वा  
 अस्मानाह्वय संयुगे । मान्यामात्यान् पुरस्कृत्य युद्धं मा गाः कुलाधम ॥ ९१ ॥  
 आत्मीवीर्यात् समाश्रित्य भृत्यवीर्यात् कौरव । आह्वयस्वरणे पार्थिव सर्वथा  
 क्लृप्तियो भव ॥ ९२ ॥ परवीर्यात् समाश्रित्य यः समाह्वयते परान् । अशक्तः स्व-

मादातुमेतदेव नपुंसकम् ॥ ५३ ॥ यस्तु परेषां वीर्येण आत्मानं बहू  
 मन्यसे । कथमेवमशक्तुश्चमन्मान् समभिगङ्गसि ॥ ५४ ॥ श्रीकृष्ण उवाच । मद्वचश्चापि  
 भूयस्ते वक्तव्यः स सुयोधनः । श्व इदानीं प्रपद्येथाः पुरुषो भव द्रुमते ॥ ५५ ॥  
 मन्यसे वचं मूढ इति न योत्स्यति जनार्दनः । सारथ्येन वृतः पार्थैरिति इति न  
 विभेदि च ॥ ५६ ॥ जघन्यकालमप्येतन्न भवेत् सर्वपार्थिवान् । निर्दहेयमहं  
 क्रोधात् तृणानीव हताशनः ॥ ५७ ॥ युधिष्ठिरनिबोधात्तु फल्लुनस्य महात्मानः ।  
 करिष्ये युष्यन्मानस्य सारथ्यं विजितात्मनः ॥ ५८ ॥ यत्रापतसि लोकांस्त्रीन्  
 यद्याविशसि भूतलम् । तत्र तत्राङ्गूनरथं प्रभाते द्रक्ष्यसे पुनः ॥ ५९ ॥ यच्छापि  
 भीमसेनस्य मन्यसे मोक्षतापितम् । द्रुशामनस्य रूधिरं पीतमद्यावधारय ॥ ६० ॥  
 न ह्यं समीकते पार्थो नापि राजा युधिष्ठिरः । न भीमसेनो न यमो प्रतिकूल-  
 प्रभाषिणम् ॥ ६१ ॥

इत्युद्योगपर्वणि उलूकदृताभिगमनपर्वणि भगवद्वाक्ये एकवर्ष्याधिक-  
 शततमोऽध्यायः ॥ १७१ ॥



सञ्जय उवाच । दुर्योधनस्य तद्वाक्यं निशम्य भरतर्षभ । नेत्राभ्यामतिता-  
 म्नाभ्यां कैतव्यं समुदैक्षत ॥ १ ॥ स. केशवमभिप्रेक्ष्य गुडाकेशो महाशशाः ।  
 अत्यतामसत कैतव्यं प्रगृह्य विपुलं भुजम् ॥ २ ॥ स्ववीर्यं यः समाश्रित्य समा-  
 स्त्रयति वै परान् । अभीतो युध्यते शत्रून् स वै पुरुष उच्यते ॥ ३ ॥ परवीर्यं  
 समाश्रित्य यः समास्त्रयते परान् । फल्लवक्त्रशक्तुश्चाल्लोके स पुरुषाधमः ॥ ४ ॥  
 स इति परेषां वीर्येण मन्यसे वार्यामात्मानः । स्वयं कापुरुषो मूढ परांश्च  
 क्लेषुमिच्छसि ॥ ५ ॥ यस्तु रक्तं सर्वराज्यां हितबुद्धिं जितेन्द्रियम् । मरणाथ  
 महाप्राङ्गं दीक्षयिष्या विकथसे ॥ ६ ॥ भावस्ते विदितोऽस्मात्तिर्दूर्बुद्धे कुलपां-  
 सन । न हनिष्यन्ति गाक्षेयं पाण्डवा यृणयेति ह ॥ ७ ॥ यस्य वीर्यं समाश्रित्य  
 धार्तराष्ट्रं विकथसे । हस्तान्मि प्रथमं भीष्मं मिषतां सर्वधर्मिणाम् ॥ ८ ॥ कैतव्य  
 गद्वा भरतान् समेत्य सुयोधनं धार्तराष्ट्रं वदस्व । तथेत्युवाचाङ्गूनः सव्यसाची  
 निशाव्यपाये भविता विमर्दः ॥ ९ ॥ यद्वाहव्रवीद्वाक्यमदीनसद्वा मध्ये कुरून  
 हर्षयन् सत्यमङ्कः । अहं हस्ता सृञ्जयानामनीकं शास्त्रेयकांश्चेति ममैव भा-  
 रः ॥ १० ॥ हन्यामहं द्रोणमृतेऽपि लोकं न ते भयं विद्यते पाण्डवेभ्यः ।

ততো হি তে লব্ধতমঞ্চ রাজ্যমাপদ্যতাঃ পাণ্ডবাশ্চেতি ভাবঃ ॥ ১১ ॥ স দর্শ-  
 পূর্ণো ন সমীক্ষসে ত্বমনর্থমাত্মন্যপি বর্তমানম্ । তস্মাদহং তে প্রথমং সমূহে  
 হস্তা সমক্ষং কুরুঃ ক্রমেব ॥ ১২ ॥ সূর্য্যোদয়ে যুক্তসেনঃ প্রতীক্ষ্য ধ্বজী রথী রক্ষত  
 সত্যসন্ধম্ । অহং হি বঃ পশ্যতাং দ্বীপমেনং ভীষ্মং রথাৎ পাত্ৰিষ্যামি  
 বাণৈঃ ॥ ১৩ ॥ শ্বো ভূতে কথনাবাক্যং বিজ্ঞাস্যতি সুযোধনঃ । আচিতং শর-  
 জ্বালেন ময়া দৃষ্টা পিতামহম্ ॥ ১৪ ॥ ষড়্ভুজশ্চ সভামধ্যে পুরুষো হৃষ্মদর্শনঃ ।  
 ক্রুদ্ধেন ভীমসেনেন ভ্রাতা দুঃশাসনস্তব ॥ ১৫ ॥ অধর্ম্মজ্ঞো নিত্যবৈরী পাপ-  
 বুদ্ধিনৃশংসবৎ । সত্যপ্রতিজ্ঞামচিরাদক্ষ্যসে তাং সুযোধন ॥ ১৬ ॥ অভি-  
 মানস্য দর্শস্য ক্রোধপারুষ্যযোস্তথা । নৈষ্ঠুর্ব্যস্যাবলেপস্য আত্মসন্তাবনস্য চ ॥ ১৭ ॥  
 নৃশংসতাঘাটৈস্তক্ষ্যস্য ধর্ম্মবিদ্বেষণস্য চ । অধর্ম্মস্যাপবাদস্য বৃদ্ধাতিক্রমস্য  
 চ ॥ ১৮ ॥ দর্শনস্য চ বক্রস্য কুৎস্নাপনঘনস্য চ । দ্রক্ষ্যসি ত্বং ফলং তীব্রমচি-  
 রেণ সুযোধন ॥ ১৯ ॥ বাসুদেবদ্বিতীয়ে হি মযি ক্রুদ্ধে নরাধম । আশা-তে  
 জীবিতে মূঢ় রাজ্যে বা কেন হেতুনা ॥ ২০ ॥ শান্তে ভীষ্মে তথা দ্রোণে সূতপুল্লে  
 চ পাতিতে । নিরাশো জীবিতে রাজ্যে পুত্রেষু চ ভবিষ্যসি ॥ ২১ ॥ ভ্রাতৃগাং  
 নিধনং শ্রদ্ধা পুল্লাগাঞ্চ সুযোধন । ভীমসেনেন নিহতো দুঃকৃতানি স্মরি-  
 য্যসি ॥ ২২ ॥ ন দ্বিতীয়াং প্রতিজ্ঞাং হি প্রতিজ্ঞানামি কৈতব । সত্যং ত্রবীম্যহং  
 হেতৎ সর্বং সত্যং ভবিষ্যতি ॥ ২৩ ॥ যুধিষ্ঠিরোহপি কৈতব্যানুলুক্ষ্মিদব্রবীৎ ।  
 উলুক মদ্বচো বৃহি গত্বা তাত সুযোধনম্ ॥ ২৪ ॥ স্মেন হতেন মে বৃত্তং নাধি-  
 গন্ত্বং ত্বমর্হসি । উভযোরন্তরং বেদ স্মৃত্তান্তঘোরপি ॥ ২৫ ॥ ন চাহং কামযে  
 পাপমপি কীটপিপীলযোঃ । কিংপুনর্জ্ঞাতিষু বধং কামযেযং কথঞ্চন ॥ ২৬ ॥  
 এতদর্থং ময়া তাত পঞ্চ গ্রামা রতাঃ পুরা । কথং তব স্মৃভবুদ্ধে ন প্রেক্ষে ব্যসনং  
 মহৎ ॥ ২৭ ॥ স ত্বং কামপরীতাত্মা মূঢ়তাবাচ্চ কথসে । তথৈব বাসুদেবস্য ন  
 গচ্ছাসি হিতং বচঃ । কিঞ্চদানীং বহুজ্ঞেন যুধ্যস্ব সহ বান্ধবৈঃ ॥ ২৮ ॥ মম  
 বিপ্রিষকর্তারং কৈতব্য বৃহি কৌরবম্ । শ্রুতং বাক্যং গৃহীতোহর্থো মতং যত্তে  
 তথাস্ত তৎ ॥ ২৯ ॥ ভীমসেনস্ততো বাক্যং ভূয আহ নৃপাত্মজম্ । উলুক মদ্বচো  
 বৃহি দুর্ম্মতিং পাপপুরুষম্ ॥ ৩০ ॥ শঠং নৈকৃতিকং পাপং দুরাচারং সুযোধনম্ ।  
 গৃধ্বেদরে বা বস্তব্যং পুরে বা নাগসাহস্রযে ॥ ৩১ ॥ প্রতিজ্ঞাতং ময়া যচ্চ সভা-  
 মধ্যে নরাধম । কর্ত্বাহং তদ্বচঃ সত্যং সত্যেনৈব শপামি তে ॥ ৩২ ॥ দুঃশা-  
 সনস্য রুধিরং হত্বা পাস্যাম্যহং মৃধে । সন্ধিনী তব ভঙ্বেব হত্বা হি তব



সোদরান্ ॥ ৩৩ ॥ সর্বেষাং ধার্ত্তরাষ্ট্রাণামহং মৃত্যুঃ সুযোধন । সর্বেষাং রাজ-  
 পুত্রাণামভিমন্যুরসংশয়ম্ ॥ ৩৪ ॥ কৰ্ম্মণা তোষযিষ্যামি ভুষশ্চৈব বচঃ শৃণু ।  
 হত্বা সুযোধন ত্বাং বৈ সহিতং সর্বসোদরৈঃ । আক্রমিষ্যে পদা মুর্দ্ধি ধৰ্ম্মরাজস্য  
 পশ্যতঃ ॥ ৩৫ ॥ নকুলস্ত ততো বাক্যমিদমাহ মহীপতে । উলুক বৃহি কৌরব্যং  
 ধার্ত্তরাষ্ট্রং সুযোধনম্ ॥ ৩৬ ॥ শ্রুতং তে গদতো বাক্যং সৰ্বমেব যথাতথম্ ।  
 তথা কৰ্ত্তাম্মি কৌরব্য যথা ত্বমনুশাস্‌সি মাম্ ॥ ৩৭ ॥ সহদেবোহপি নৃপতে ইদ-  
 মাহ বচোহর্থবৎ । সুযোধন মতিৰ্থা তে হৃথেষা তে ভবিষ্যতি ॥ ৩৮ ॥ শোচি-  
 য়সে মহারাজ সপুত্রজ্ঞাতিবান্ধবঃ । ইমঞ্চ ক্লেশমন্মাকং হৃষ্টো যত্বং বিকথ-  
 সে ॥ ৩৯ ॥ বিরাটক্রপদৌ বৃদ্ধাংলুকমিদমুচতুঃ । দাসতাবং নিযচ্ছেব সাধো-  
 রিতি মতিঃ সদা । তৌ চ দাসাবদাসৌ বা পৌরুষং যস্য যাদৃশম্ ॥ ৪০ ॥ শিখণ্ডী  
 তু ততো বাক্যমূলুকমিদমব্রবীৎ । বক্তব্যো ভবতা রাজা পাপেষভিরতঃ সদা ।  
 পশ্য ত্বং মাং রণে রাজন্ কুর্বাণং কৰ্ম্ম দারুণম্ ॥ ৪১ ॥ যস্য বীর্য্যং সমাসাদ্য  
 মন্যসে বিজয়ং যুধি । তমহং পাতযিষ্যামি রথান্তব পিতামহম্ ॥ ৪২ ॥ অহং  
 ভীষ্মবধাৎ হৃষ্টো নুনং ধাত্ৰা মহাৰ্জুন । মোহহং ভীষ্মং হনিষ্যামি মিসতাং  
 সৰ্বধন্বিনাম্ ॥ ৪৩ ॥ ধৃষ্টদ্র্যয়্নোহপি কৈতব্যমূলুকমিদমব্রবীৎ । সুযোধনো মম  
 বচো বক্তব্যো নৃপতেঃ স্মৃতঃ ॥ ৪৪ ॥ অহং দ্রোণং হনিষ্যামি সগণং সহবান্ধ-  
 বম্ । কৰ্ত্তা চাহং তথা কৰ্ম্ম যথা নান্যঃ করিষ্যতি ॥ ৪৫ ॥ তমব্রবীদ্ধৰ্ম্মরাজঃ  
 কারুণ্যার্থং বচো মহৎ । নাহং জ্ঞাতিবধং রাজন্ কামযেযং কথঞ্চন ॥ ৪৬ ॥  
 তবৈব দোষাদ্ধৰ্ম্মবুদ্ধে সৰ্বমেতদ্বনারতম্ । অবশ্যঞ্চ মযা কার্য্যং সর্বেষাং চরিতং  
 মহৎ ॥ ৪৭ ॥ স গচ্ছ না চিরং তাত উলুক যদি মন্যসে । ইহ বা তিষ্ঠ ভদ্রন্তে  
 বযং হি তব বান্ধবাঃ ॥ ৪৮ ॥ উলুকস্ত ততো রাজন্ ধৰ্ম্মপুত্রং যুধিষ্ঠিরম্ ।  
 আমন্ত্র্য প্রযযৌ তত্র যত্র রাজা সুযোধনঃ ॥ ৪৯ ॥ উলুকস্তত আগম্য দুৰ্য্যো-  
 ধনমমর্ষণম্ । অজ্জুনস্য সমাদেশং যথোক্তং সৰ্বমব্রবীৎ ॥ ৫০ ॥ বাসুদেবস্য  
 ভীমস্য ধৰ্ম্মরাজস্য পৌরুষম্ । নকুলস্য বিরাটস্য ক্রপদস্য চ ভারত ॥ ৫১ ॥  
 সহদেবস্য চ বচো ধৃষ্টদ্র্যয়্নশিখণ্ডিনোঃ । কেশবাজ্জুনযোৰ্বাক্যং যথোক্তং সৰ্বম-  
 ব্রবীৎ ॥ ৫২ ॥ কৈতব্যস্য তু তদ্বাক্যং নিশম্য ভরতর্ষভঃ । দুঃশাসনঞ্চ কর্ণঞ্চ  
 শকুনিঞ্চাপি ভারত ॥ ৫৩ ॥ আজ্ঞাপযত রাজ্ঞশ্চ বলং মিত্রবলং তথা । যথা প্রা-  
 গুদযাৎ সর্বে যুক্তাস্তিষ্ঠন্ত্যনীকিনঃ ॥ ৫৪ ॥ ততঃ কর্ণসমাদিষ্ঠা দূতাঃ সত্ত্বরিতা  
 রথৈঃ । উষ্ট্রবানীভিরপ্যন্যে সদশ্বেশ্চ মহাজবৈঃ ॥ ৫৫ ॥ তূর্ণং পরিযযুঃ সেনাং

কুৎস্নাং কৰ্ণস্য শাসনাৎ । আজ্ঞাপযন্তো রাজ্ঞশ্চ যোগঃ প্রাণ্ডদযাদিতি ॥ ৫৩ ॥  
ইত্যুদ্যোগপর্বণি উলুকদূতাভিগমনপর্বণি উলুকপ্রত্যাগমনে দ্বিষষ্ঠ্য-  
ধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৬২ ॥



সঞ্জয় উবাচ । উলুকস্য বচঃ শ্রদ্ধা কুন্তীপুত্রো যুধিষ্ঠিরঃ । সেনাং নিৰ্যাপযা-  
নাস ধৃষ্টদ্র্যম্নপুরোগমাম্ ॥ ১ ॥ পদাতিনীং নাগবতীং রথিনীমশ্বরিন্দিনীম্ ।  
চতুর্বিধবলাং ভীমামকম্পাং পৃথিবীমিব ॥ ২ ॥ ভীমসেনাদিতিগুপ্তাং সাজ্জুনৈশ্চ  
মহারথৈঃ । ধৃষ্টদ্র্যম্নবশাং দুর্গাং সাগরস্তিমিতোপমাম্ ॥ ৩ ॥ তস্যাস্ত্রগ্ৰে মহে-  
ষাসঃ পাঞ্চাল্যো যুদ্ধদ্রুমদঃ । দ্রোণপ্রেশুরনীকানি ধৃষ্টদ্র্যম্নো ব্যকর্ষত ॥ ৪ ॥  
যথাবলং যথোৎসাহং রথিনঃ সমুপাদিশৎ । অজ্জুনং সূতপুত্রায় ভীমং দুর্য্যো-  
ধনায চ ॥ ৫ ॥ ধৃষ্টকেতুঞ্চ শল্যায় গৌতমাযোত্তমৌজসম্ । অশ্বথাম্নে চ নকুলং  
শৈব্যাঞ্চ কৃতবর্ষ্মণে ॥ ৬ ॥ সৈন্ধবায চ বাৰ্ষেঘং যুযুধানং সমাদিশৎ । শিখণ্ডিনঞ্চ  
ভীম্নায় প্রমুখে সমকল্পযৎ ॥ ৭ ॥ সহদেবং শকুনযে চেকিতানং শলায চ । দ্রৌপ-  
দেষাংস্তথা পঞ্চ ত্রিগর্ত্তেভ্যঃ সমাদিশৎ ॥ ৮ ॥ বৃষসেনায় সৌভদ্রং শেষাণাঞ্চ  
মহীক্ষিতাম্ । স সমর্থং হি তং মেনে পার্থাদভ্যধিকং রণে ॥ ৯ ॥ এবং বিভজ্য  
যোধাংস্তান্ পৃথক্ চ সহ টেব হ । জ্বালাবর্ণো মহেষাসো দ্রোণমং শমকল্পযৎ ॥ ১০ ॥  
ধৃষ্টদ্র্যম্নো মহেষাসঃ সেনাপতিপতিস্ততঃ । বিধিবদ্যহ মেধাবী যুদ্ধায় ধৃতমান-  
সঃ ॥ ১১ ॥ যথোদ্দিষ্টানি সৈন্যানি পাণ্ডবানামযোজযৎ । জযায পাণ্ডুপুত্রা-  
ণাং যত্তস্তস্বৌ রণাজিরে ॥ ১২ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি উলুকদূতাভিগমনপর্বণি সেনাপতিনিষোগে ত্রিষষ্ঠ্য-

ধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৬৩ ॥

সমাপ্তঞ্চ উলুকদূতাভিগমনপর্ব ।



অথ রথাতিরথসংখ্যানপর্ব ।

ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । প্রতিজ্ঞাতে ফাল্গুনেন বধে ভীমস্য সংযুগে । কিমকুর্ষত মে  
মন্দাঃ পুত্রা দুর্য্যোধনাদযঃ ॥ ১ ॥ হতমেব হি পশ্যামি গাঙ্গেষং পিতরং রণে ।  
বাসুদেবসহাযেন পার্থেন দৃঢ়ধ্বনা ॥ ২ ॥ স চাপরিমিত প্রজ্ঞস্তৎ শ্রদ্ধা পার্থ-  
ভাষিতম্ । কিমুক্তবান্মহেষাসো ভীম্নঃ প্রহরতাং বরঃ ॥ ৩ ॥ সৈনাপত্যঞ্চ সং-  
প্রাপ্য কৌরবাণাং ধুরন্ধরঃ । কিমচেষ্টত গাঙ্গেষো মহাবুদ্ধিপরাক্রমঃ ॥ ৪ ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ । ততস্তৎ সঞ্জয়স্তস্মৈ সর্বমেব ন্যবেদযৎ । যথোক্তং কুরুবন্ধেন  
 ভীষ্মেণামিততেজসা ॥ ৫ ॥ সঞ্জয় উবাচ । সৈনাপত্যমক্ষু প্রাপ্য ভীষ্মঃ শান্তনবো  
 নৃপ । হ্রষ্যেধনমুবাচেদং বচনং হর্ষযম্ভিব ॥ ৬ ॥ নমস্কৃত্য কুমার য সেনান্যে  
 শক্তিপাণয়ে । অহং সেনাপতিস্তেহদ্য ভবিষ্যামি ন সংশয়ঃ ॥ ৭ ॥ সেনাকৰ্ম্মণ্য-  
 ভিক্ষোহস্মি ব্যুহেষু বিবিধেষু চ । কৰ্ম্ম কারযিতুশ্চৈব ভূতানপ্যভূতাংস্তথা ॥ ৮ ॥  
 যাত্রাযানে চ যুদ্ধে চ তথা প্রশমনেষু চ । ভূশং বেদ মহারাজ যথা বেদ বৃহস্প-  
 তিঃ ॥ ৯ ॥ ব্যাহানাঞ্চ সমারস্তান্ দৈবগাম্ভৈর্ভমানুমান্ । তৈরহং মোহযিষ্যামি  
 পাণ্ডবান্ ব্যেতু তে জ্বরঃ ॥ ১০ ॥ সোহহং যোৎস্যামি তন্ত্বেন পালয়ংস্তব বাহি-  
 নীম্ । যথাবচ্ছাস্ততো রাজন্ ব্যেতু তে মানসো জ্বরঃ ॥ ১১ ॥ হ্রষ্যেধন উবাচ ।  
 বিদ্যতে মে ন গান্ধেয ভষং দেবাসুরেষপি । সমস্তেষু মহাবাহো সত্যমেতদ্বুবীমি  
 তে ॥ ১২ ॥ কিং পুনস্ত্বযি হ্রদ্বর্ষে সৈনাপত্যে ব্যবস্থিতে । দ্রোণে চ পুরুষব্যাস্তে  
 স্থিতে যুদ্ধাভিনন্দিনি ॥ ১৩ ॥ ভবন্ত্যাং পুরুষাগ্র্যাত্যাং স্থিতাত্যাং বিজযো মম ।  
 ন হুর্লভং কুরুশ্রেষ্ঠ দেবরাজ্যমপি ধ্রুবম্ ॥ ১৪ ॥ রথসংখ্যাস্ত্ব কাৎশ্চেন্যন পরেষা-  
 মান্ননস্তথা । তথৈবাত্তিরথানাঞ্চ বেত্তুমিচ্ছামি কৌরব ॥ ১৫ ॥ পিতামহো হি  
 কুশলঃ পরেষামান্ননস্তথা । শ্রোতুমিচ্ছাম্যহং সর্বেঃ সত্ৰৈর্ভির্ভস্মুধাধিপৈঃ ॥ ১৬ ॥  
 ভীষ্ম উবাচ । গান্ধারে শৃণু রাজেন্দ্র রথসংখ্যাং স্বকে বলে । যে রথাঃ পৃথিবী-  
 পাল তথৈবাত্তিরথাস্চ যে ॥ ১৭ ॥ বহুনীহ সহস্রাণি প্রযুতান্যর্ধুদানি চ । রথানাং  
 তব সেনায়াং যথামুখ্যস্ত মে শৃণু ॥ ১৮ ॥ ভবানগ্রে রথোদারঃ সহ সর্বেঃসহো-  
 দরৈঃ । হ্রঃশাসনপ্রভৃতিভিভ্রাভিঃ শতসংমিতৈঃ ॥ ১৯ ॥ সর্বে কৃতপ্রহরণা-  
 শ্চেদ্যভেদ্যবিশারদাঃ । রথোপস্থে গজস্কন্ধে গদাংপ্রাসাসিচৰ্ম্মণি ॥ ২০ ॥ সংয-  
 স্তারঃ প্রহর্তারঃ কৃতাস্ত্রা ভারসাধনাঃ । ইষস্তে দ্রোণশিষ্যাস্চ রূপস্য চ শরদ্ব-  
 তঃ ॥ ২১ ॥ এতে হনিষ্যন্তি রণে পাঞ্চালান্ যুদ্ধদুৰ্ম্মদান্ । কৃতকিল্বিষাঃ পাণ্ড-  
 বেষৈর্ধার্ত্তরাক্তা মনস্বিনঃ ॥ ২২ ॥ তথাহং ভরতশ্রেষ্ঠ সর্বসেনাপতিস্তব । শত্রূন  
 বিধ্বংসযিষ্যামি কদর্থীকৃত্য পাণ্ডবান্ । ন হ্যাত্মনো গুণান্ বক্তুমর্হামি বিদিতোহ-  
 স্মি তে ॥ ২৩ ॥ কৃতবৰ্ম্মা স্বতিরথো ভোজঃ শস্ত্রভূতাস্বরঃ । অর্থসিদ্ধিং তব রণে  
 করিষ্যতি ন সংশয়ঃ ॥ ২৪ ॥ শস্ত্রবিন্দিরনাধুষ্যো দূরপাতী দৃঢ়াযুধঃ । হনিষ্যতি  
 চমুং তেষাং মহেন্দ্রো দানবানিব ॥ ২৫ ॥ মদ্ররাজো মহেষ্বাসঃ শল্যো মেহতি-  
 রথো মতঃ । স্পর্কতে বাসুদেবেন নিত্যং যো বৈ রণে রণে ॥ ২৬ ॥ ভাগিনে-  
 যামিজাংস্ত্যক্তা শল্যস্তে রথসত্তমঃ । এষ যোৎস্যতি সংগ্রামে পাণ্ডবাংশ্চ

महारथान् । सागरौर्ग्निसमैर्बाणैः प्लावयन्निव शान्द्रवान् ॥ २१ ॥ भूरिश्रवाः कृता-  
 स्त्रश्च तव चापि हितः सूक्ष्मः । सौमदन्तिर्महेष्वासो रथयूथपयूथपः । बलक्षयमि-  
 त्वाणां सूमहान्तुं करिष्यति ॥ २८ ॥ सिद्धुराजो महाराज मतो मे द्विगुणो  
 रथः । योऽस्यते समरे राजन् विक्राश्टो रथसन्तमः ॥ २९ ॥ द्रौपदीहरणे  
 राजन् परिक्रिष्टश्च पाण्डवैः । संस्मरन्स्तुं परिक्लेशं योऽस्यते परवीरहा ॥ ३० ॥  
 एतेन हि तदा राजन् तप आस्थाय दारुणम् । सूदुर्लभो वरो लक्षः पाण्डवान्  
 योद्धमाहवे ॥ ३१ ॥ स एष रथशार्दूलस्तुदैरं संस्मरन्नुणे । योऽस्यते पाण्ड-  
 वैस्तुत प्राणांस्त्यक्त्वा सूदुस्त्यजान् ॥ ३२ ॥

इत्युद्देश्यो गपर्वणि रथातिरथसंख्यानपर्वणि कौरवरथातिरथसंख्यायां  
 चतुःषष्ट्याधिकशततमोऽध्यायः ॥ १७४ ॥

—•••—

भीष्म उवाच । सूदक्षिणस्तु काशोजो रथ एकगुणो मतः । तवार्थसिद्धिमाका-  
 ङ्क्षन् योऽस्यते समरे पटैः ॥ १ ॥ एतस्य रथसिंहस्य तवार्थं राजसन्तम ।  
 पराक्रमं यथेन्द्रस्य द्रक्ष्यस्ति कुरवो युधि ॥ २ ॥ एतस्य रथवंशे हि तिग्मवेगाः  
 प्रहारिणः । काशोजानां महाराज शलतानामिवायतीः ॥ ३ ॥ नीलो माहि-  
 म्यतीवामी नीलवर्णा रथस्तव । रथवंशेन कदनं शत्रूणां वै करिष्यति ॥ ४ ॥  
 कृतवैरः पुरा चैव सहदेवेन मारिष । योऽस्यते सततं राजंस्तुवार्थं कुरू-  
 नन्दन ॥ ५ ॥ विन्दान्नुविन्दामावस्त्यो समेतो रथसन्तमो । कृतिनो समरे तात  
 दृष्टवीर्यपराक्रमो ॥ ६ ॥ एतौ ते पुरुषव्याघ्रौ रिपुसैन्यं प्रधक्ष्यतः । गदा-  
 प्रासासिनाराटैस्तोमरैश्च करुच्यतैः ॥ ७ ॥ युद्धाभिकामो समरे क्रीडन्ताविव  
 यूथपो । यूथमध्ये महाराज विचरन्तो कृतान्तवत् ॥ ८ ॥ त्रिगर्ता भ्रातरः पक्ष  
 रथोदारो मता मम । कृतवैराश्च पार्थैस्ते विराटनगरे तदा ॥ ९ ॥ मकरा इव  
 राजेन्द्र समुद्धततरङ्गिणीम् । गङ्गां विष्कोभयिष्यन्ति पार्थानां युधि बाहिनीम् ॥ १० ॥  
 ते रथाः पक्ष राजेन्द्र वेषां सत्यरथो मुखम् । एते योऽस्यन्ति संग्रामे संस्म-  
 रन्तुः पुराकृतम् ॥ ११ ॥ बलीकं पाण्डवेयेन भीमसेनान्नुजेन ह । दिशो विज-  
 यता राजन् श्वेतबाहेन भारत ॥ १२ ॥ ते हनिष्यन्ति पार्थानां तानासाद्य महा-  
 रथान् । वरान् वरान् महेष्वासान् कलिषाणां धुरन्करान् ॥ १३ ॥ लक्ष्मणस्तव पुलश्च  
 तथा द्रुःशासनस्य च । उभौ तौ पुरुषव्याघ्रौ संग्रामेषु पलायिनौ ॥ १४ ॥  
 तरुणो सुकुमारो च राजपुत्रो तरश्चिनो । युद्धानां विशेषज्ञो प्रणेतारो च

सर्वशः ॥ १५ ॥ रथो तो कुरूशार्दूलो मतो मे रथसत्तमो । क्लृधर्षे रथो  
 वीरौ महं कर्म करिष्यतः ॥ १७ ॥ दण्डधारो महाराज रथ एको नरवर्षत । षोड-  
 स्यते तव संग्रामे स्वेन सैन्येन पालितः ॥ १९ ॥ बृहद्वलस्तथा राजा कौशलेया  
 रथसत्तमः । रथो मम मतस्तुत महावेगपराक्रमः ॥ १८ ॥ एष षोडस्यति सं-  
 ग्रामे स्वान् बहून् सं प्रहर्षयन् । उग्रायुधो महेश्वासो धार्तराष्ट्रहिते रतः ॥ १२ ॥  
 रूपः शारद्वतो राजन् रथयुथपयुथपः । प्रियान् प्राणान् परित्यज्य प्रधक्यति  
 रिपुंस्तव ॥ २० ॥ गौतमस्य महर्षेर्ष आचार्यस्य शरद्वतः । कार्तिकेय इवाजेयः  
 शरस्तुश्चां सुतोऽभवत् ॥ २१ ॥ एष सेनाः सुबहुला विविधायुधकाम्बुकाः । अग्निवत्  
 समरे तात चरिष्यति विनिर्दहन ॥ २२ ॥

इत्युद्योगपर्वणि रथातिरथसंख्यानपर्वणि कौरवरथातिरथसंख्यायां  
 पञ्चषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १७५ ॥



भीष्म उवाच । शकुनिर्मातुलस्तेऽसौ रथ एको नराधिप । प्रयुज्य पाण्डवै-  
 रैररं षोडस्यते नात्र संशयः ॥ १ ॥ एतस्य सेना दुर्द्धर्षा समरे प्रतिवायिनः ।  
 विक्रतायुधभूयिष्ठा वायुवेगसमा जवे ॥ २ ॥ द्रोणपुत्रो महेश्वासः सर्वानेवाति  
 ध्विनः । समरे चित्रयोधी च दृढास्त्रश्च महारथः ॥ ३ ॥ एतस्य हि महाराज  
 यथा गाण्डीवध्वनः । शरान्नविनिर्मुक्ताः संसक्ता यांति सायकाः ॥ ४ ॥ नैष  
 शक्यो मवा वीर संख्यातुं रथसत्तमः । निर्दहेदपि लोकांस्त्रीनिच्छ्लेष महा-  
 रथः ॥ ५ ॥ क्रोधस्तेजश्च तपसा सन्तृतोऽश्रमवासिना । द्रोणेनानुगृहीतश्च दिव्यै-  
 रस्त्रैरुदारधीः ॥ ६ ॥ दोषस्त्रस्य महानेको येनैष भरतवर्षत । न मे रथो  
 नातिरथो मतः पार्थिवसत्तम ॥ ७ ॥ जीवितं प्रियमत्यर्थमायुक्तामः सदा द्विजः ।  
 न ह्यस्य संशयः कश्चिद्भयोः सैनयोरपि ॥ ८ ॥ हन्यादेकरथेनैष देवाना-  
 मपि बाहिनीम् । वपुष्मांस्तुल्योषेण स्फोटयेदपि पर्वतान् ॥ ९ ॥ असंख्येय-  
 ण्णो वीरः प्रहस्ता दारुणद्व्यतिः । दण्डपाणिनिवासहः कालवत् प्रचरिष्यति ॥ १० ॥  
 युगान्ताग्निसमः क्रोधात् सिंहग्रीवो महाद्व्यतिः । एष भारत युद्धस्य पृष्ठं संश-  
 न्मिष्यति ॥ ११ ॥ पिता ह्यस्य महातेजा रूद्रोऽपि युवतिर्बरः । रणे कर्म महं  
 कर्ता अत्र मे नास्ति संशयः ॥ १२ ॥ अस्त्रवेगानिलोद्धृतः सेनाकक्केकनोऽपि ॥  
 पाण्डुपुत्रस्य सैन्यानि प्रधक्यति रणे धृतः ॥ १३ ॥ रथयुथपयुथानां युथपोऽहं  
 रथवतः । भरद्वाजाञ्जः कर्ता कर्म तीव्रं हितं तव ॥ १४ ॥ सर्वमुक्ताभिषिक्ता-

नामाचार्यः स्वविरो गुरुः । गच्छेदन्तुं सृष्टयानां प्रियस्तस्य धनञ्जयः ॥ १५ ॥  
 नैव जातु महेश्वरः पार्थमक्लिष्टकारिणम् । हन्यादाचार्यकं दीप्तं संस्मृत्य गुण-  
 निम्नितम् ॥ १६ ॥ श्लाघतेह्यं सदा वीर पार्थस्य गुणविस्तरेः । पुल्लादभ्याधिकं  
 चैनं तारदाजोहनुपश्याति ॥ १७ ॥ हन्यादेकरथेनैव देवगन्धर्वमाशुषान् ।  
 एकैर्भूतानपि रणे दिव्यैरस्त्रैः प्रतापवान् ॥ १८ ॥ पौरवो राजशार्दूलस्तव  
 राजन्महारथः । मतो मम रथोदारः परवीररथारूढः ॥ १९ ॥ श्वेन सैन्येन  
 महता प्रतपन् शत्रुवाहिनीम् । प्रधक्यति स पाण्डालान् कङ्कमग्निगतिर्यथा ॥ २० ॥  
 सत्यश्रवा रथश्चेको राजपुत्रो बृहद्वलः । तव राजनिपुबले कालवत् प्रचरिष्य-  
 ति ॥ २१ ॥ एतस्य योधा राजेन्द्र विचित्रकवचायुधाः । विचरिष्यन्ति संग्रामे  
 निम्नन्तुः शात्रवास्तव ॥ २२ ॥ वृषसेनो रथश्चेह्यः कर्णपुत्रो महारथः । प्रध-  
 क्यति रिपूणांस्तु बलस्तु बलिनां वरः ॥ २३ ॥ जलसक्तो महातेजा राजनुथवर-  
 स्तव । त्यक्त्यते समरे प्राणान् माधवः परवीरहा ॥ २४ ॥ एष योत्स्यति संग्रामे  
 गजस्कन्धविशारदः । रथेन वा महाबाहूः कृपयन् शत्रुवाहिनीम् ॥ २५ ॥ रथं एष  
 महाराज मतो मे राजसन्तम । हृदये त्यक्त्यते प्राणान् सहसैन्या महारणे ॥ २६ ॥  
 एष विक्रान्तयोधी च चित्रयोधी च सङ्घरे । वीतभीश्चापि ते राजन् शत्रुभिः सह  
 योत्स्यते ॥ २७ ॥ बाह्वीकोर्तिरथश्चेव समरे चानिवर्तनः । मम राजन्मतो  
 युद्धे शूरो वैवस्वतोपमः ॥ २८ ॥ न ह्येष समरं प्राप्य निवर्तेत कथञ्चन । यथा  
 सततगो राजन् सहि हन्यात् परान् रणे ॥ २९ ॥ सैन्यापतिर्म्महाराज सत्यवास्तु  
 महारथः । रणेषुद्धुतकर्मा च रथी पररथारूढः ॥ ३० ॥ एतस्य समरं दृष्ट्वा न  
 व्यथास्ति कथञ्चन । उन्मथन्पतत्येष परानुथपथे स्थितान् ॥ ३१ ॥ एष बाह्विषु  
 विक्रान्तः कर्म संपुरुषोचितम् । कर्ता विमर्दे स्महद्दुदये पुरुषोत्तमः ॥ ३२ ॥  
 अलङ्घ्यो राक्षसेन्द्रः क्रूरकर्मा महारथः । हनिष्यति परान् राजन् पूर्ववैरमनुष्म-  
 रन् ॥ ३३ ॥ एष राक्षससैन्यानां सर्वेषां रथसन्तमः । नायावी दृढवैरश्च समरे  
 विचरिष्यति ॥ ३४ ॥ प्राग्ज्योतिषाधिपो वीरो भगदत्तः प्रतापवान् । गजाङ्गु-  
 धरश्चेष्टो रथे चैव विशारदः ॥ ३५ ॥ एतेन युद्धमभवत् पुरा गाण्डीवधननः ।  
 दिवसान् सुबहून् राजन्भयोर्जयगङ्गिनोः ॥ ३६ ॥ ततः सखायं गान्कारे मानयन्  
 पाकशासनम् । अकरोत् सन्धिदं तेन पाण्डवेन महात्मना ॥ ३७ ॥ एष योत्स्यति  
 संग्रामे गजस्कन्धविशारदः । एरावतगतो राजा देवानामिव वासवः ॥ ३८ ॥

इत्युद्देश्योपपत्तिरथातिरथसंख्यानपर्वणि कौरवरथातिरथसंख्यायां

षट्षष्ट्याधिकशततमोऽध्यायः ॥ १७७ ॥

ভীষ্ম উবাচ । অচলো বৃষকশ্চৈব সহিতৌ ভ্রাতরাবুভৌ । রথৌ তব ছুরাধর্ষৌ  
 শত্ৰূন্ বিধ্বংসযিষ্যতঃ ॥ ১ ॥ বলবন্তৌ নরব্যাসৌ দৃঢ়ক্রোধৌ প্রহারিণৌ । গা-  
 ক্ষারমুখ্যৌ তরুণৌ দর্শনীযৌ মহাবলৌ ॥ ২ ॥ সখা তে দযিতৌ নিত্যং য এষ রণ-  
 কর্কশঃ । উৎসাহযতি রাজংস্বাং বিগ্রহে পাণ্ডবৈঃ সহ ॥ ৩ ॥ পুরুষঃ কথনৌ  
 নীচঃ কর্ণৌ বৈকর্ভনস্তব । মন্ত্রী নেতা চ বন্ধুশ্চ মানী চাত্যন্তমুচ্ছিতঃ ॥ ৪ ॥ এষ  
 নৈব রথঃ কর্ণো ন চাপ্যতিরথো রণে । বিযুক্তঃ কবচেনৈষ সহজেন বিচেতনঃ ।  
 কুণ্ডলাভ্যাং দিব্যাভ্যাং বিযুক্তঃ সততং যুগী ॥ ৫ ॥ অভিষাপাচ্চ রামস্য ব্রাহ্মণস্য  
 চ ভাষণাৎ । কর্ণানাং বিযোগাচ্চ তেন মেহর্দ্ররথো মতঃ ॥ ৬ ॥ নৈষ ফাল্গুন-  
 মাসাদ্য পুনর্জীবন্ বিমোক্ষ্যতে ॥ ৭ ॥ ততোহত্রবীৎ পুনর্দৌগঃ সর্বশস্ত্রভূতাংবরঃ ।  
 এবমেতদ্ব্যথা ত্বং ন মিথ্যাস্তি কদাচন ॥ ৮ ॥ রণে রণেং ভিমানী চ বিমুখশ্চাপি  
 দৃশ্যতে । যুগী কর্ণঃ প্রমাদী চ তেন মেহর্দ্ররথো মতঃ ॥ ৯ ॥ এতচ্ছ্রদ্ধা তু রা-  
 ধেযঃ ক্রোধাদ্ভ্রংফাল্য লোচনে । উবাচ ভীষ্মং রাধেযস্তদন্ বাণ্ডিঃ প্রতোদবৎ ॥ ১০ ॥  
 পিতামহ যথেষ্টং মাং বাকশরৈরুপকৃত্বসি । অনাগসং সদা দ্বেষাদেবমেব পদে-  
 পদে । মর্ষয়ামি চ তৎ সর্বং ত্বর্যেোধনকৃতেন বৈ ॥ ১১ ॥ ত্বন্তু মাং মন্যসে  
 মন্দং যথা কাপুরুষং তথা । ভবানর্দ্ররথো মহং মতো বৈ নাত্র সংশয়ঃ ॥ ১২ ॥  
 সর্বস্য জগতশ্চৈব গাজ্জেষ ন যুধা বদে । কুংকণামহিতৌ নিত্যং ন চ রাজা-  
 ববুধ্যতে ॥ ১৩ ॥ কো হি নাম সমানেষু রাজসুদারকর্ম্মসু । তেজোবধমিমং  
 কুর্ষ্যাদ্বিভেদযিষুরাহবে । যথা ত্বং গুণবিদ্বেষাদপরাগং চিকীর্ষসি ॥ ১৪ ॥ ন হায-  
 নৈর্নপলিতৈর্ন বিভৈর্ন চ বন্ধুভিঃ । মহারথত্বং সংখ্যাতুং শক্যং ক্ষত্রস্য কৌ-  
 রব ॥ ১৫ ॥ বলজ্যেষ্ঠং স্মৃতং ক্ষত্রং মন্ত্রজ্যেষ্ঠা দ্বিজাতযঃ । ধনজ্যেষ্ঠাঃ স্মৃতা  
 বৈশ্যা শূদ্রাস্তু বযসাধিকাঃ ॥ ১৬ ॥ যথেষ্টকং স্বয়ং বুযাদ্রথানতিরথাংস্তথা ।  
 কামদ্বেষসমায়ুক্তো মোহাৎ প্রকুরুতে ভবান্ ॥ ১৭ ॥ ত্বর্যেোধন মহাবাহো সাধু  
 সম্যগবেক্ষ্যতাম্ । ত্যজ্যতাং ত্বর্ফভাবোহয়ং ভীষ্মঃ কিল্বিষকৃতব ॥ ১৮ ॥ ভিষ্মা  
 হি সেনা নৃপতে ত্বঃসন্ধেযা ভবন্ত্যুত । মৌলা হি পুরুষব্যাস্র কিমু নানা সমুখি-  
 তাঃ ॥ ১৯ ॥ এষাং দ্বৈধঃ সমুৎপন্নং যোধানাং যুধি ভারত । তেজোবধো নঃ  
 ক্রিষতে প্রত্যক্ষেণ বিশেষতঃ ॥ ২০ ॥ রথানাং ক্ চ বিজ্ঞানং ক্ চ ভীষ্মোহল্প-  
 চেতনঃ । অহমাবারযিষ্যামি পাণ্ডবানামনীকিনীম্ ॥ ২১ ॥ আসাদ্য মামমো-  
 ঘেষুং গমিষ্যস্তি দিশো দশ । পাণ্ডবাঃ সহপাঞ্চালাঃ শার্দূলং বৃষভা ইব ॥ ২২ ॥  
 ক্ চ যুদ্ধং বিমর্দো বা মন্ত্রং স্তব্যাহতানি চ । ক্ চ ভীষ্মো গতববা মন্দাত্মা কাল-

চোদিতঃ ॥ ২৩ ॥ একাকী স্পর্ধিতে নিত্যং সর্বেণ জগতা সহ । ন চান্যং পুরুষং  
 কঞ্চিন্নন্যতে মোঘদর্শনঃ ॥ ২৪ ॥ শ্রোতব্যং খলু বৃদ্ধানামিতি শাস্ত্রনিদর্শনম্ ।  
 ন হ্বেব হ্তিরুদ্ধানাং পুনর্বালা হি তে মতাঃ ॥ ২৫ ॥ অহমেকো হনিষ্যামি  
 পাণ্ডবানামনীকিনীম্ । স্বযুদ্ধে রাজশার্দূল যশো ভীষ্মং গমিষ্যতি ॥ ২৬ ॥ কৃতঃ  
 সেনাপতিশ্বেষ স্বযা ভীষ্মো নরাধিপ । সেনাপতৌ যশো গন্তা ন তু যোধান্ কথ-  
 ঞ্চন ॥ ২৭ ॥ নাহং জীবতি গাঙ্গেযে যোৎস্যে রাজন্ কথঞ্চন । হতে ভীষ্মে  
 তু যোদ্ধাম্মি সর্বৈরেব মহারথেঃ ॥ ২৮ ॥ ভীষ্ম উবাচ । সমুদ্যতোহসং ভারো  
 মে স্মমহান্ সাগরোপমঃ । ধার্ত্তরাষ্ট্রস্য সংগ্রামে বর্ষপূর্গাভিচিন্তিতঃ ॥ ২৯ ॥  
 তস্মিন্নভ্যাগতে কালে প্রতপ্তে লোমহর্ষণে । মিথো ভেদো ন মে কার্যস্তুেন  
 জীবসি সূতজ ॥ ৩০ ॥ ন হহং স্বদ্য বিক্রম্য স্ববিরোহপি শিশোস্তব । যুদ্ধশ্র-  
 দ্ধামহং ছিন্দ্যাং জীবিতাশাঞ্চ সূতজ ॥ ৩১ ॥ জামদগ্ন্যেন রামেণ মহাস্ত্রাণি বিমু-  
 ঞ্চতা । ন মে ব্যথা কৃত্য কাচিৎস্ব মে কিং করিষ্যসি ॥ ৩২ ॥ কামং নৈতৎ প্রশং-  
 সন্তি সন্তঃ স্ববলসংস্তবম্ । বক্ষ্যামি তু ত্বাং সন্তপ্তো নিহীনকুলপাংসন ॥ ৩৩ ॥  
 সমেতং পার্থিবং ক্ষত্রং কাশিরাজস্বষম্বরে । নির্জিতৈত্বকরথেনৈব যাঃ কন্যাস্তরসা-  
 হতাঃ ॥ ৩৪ ॥ ঐদৃশানাং সহস্রাণি বিশিষ্টানামথো পুনঃ । মঠৈকেন নিরস্তানি  
 সসৈন্যানি রণাজিরে ॥ ৩৫ ॥ ত্বাং প্রাপ্য টেবরপুরুষং কুকণামনযো মহান্ ।  
 উপস্থিতো বিনাশায় যতস্ব পুরুষো ভব ॥ ৩৬ ॥ যুধ্যস্ব সমরে পার্থং যেন বিস্প-  
 দ্ধানে সহ । দক্ষ্যামি ত্বাং বিনির্মুক্তমস্মাদ্ধুকাৎ সুদুর্মতে ॥ ৩৭ ॥ তমুবাচ ততো  
 রাজা ধার্ত্তরাষ্ট্রঃ প্রতাপবান্ । নাং সমীক্ষস্ব গাঙ্গেয কার্যং হি মহদুদ্যতম্ ॥ ৩৮ ॥  
 চিন্ত্যতামিদমেকাগ্রং মম নিঃশ্রেয়সং পরম্ । উভাবপি ভবন্তৌ মে মহৎ কৰ্ম্ম  
 করিষ্যতঃ ॥ ৩৯ ॥ ভূষশ্চ শ্রোতুমিচ্ছামি পরেষাং রথসত্তমান্ । যে চৈবাতি-  
 রথাস্তত্র যে চৈব রথযথপাঃ ॥ ৪০ ॥ বলাবলমমিত্রাণাং শ্রোতুমিচ্ছামি কৌরব ।  
 প্রভাতাষাং রজন্যাং বৈ ইদং যুদ্ধং ভবিষ্যতি ॥ ৪১ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি রথাস্তিরথসংখ্যানপর্বনি ভীষ্মকর্গকলহে সপ্তষষ্ঠ্য-

ধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৩৭ ॥



ভীষ্ম উবাচ । এতেরথাস্ত্রবাখ্যাতাস্তথৈবাতিরথা নৃপ । যে চাপ্যর্কিরথা রাজন্  
 পাণ্ডবানামতঃ শৃণু ॥ ১ ॥ যদি কৌতুহলং তেহদ্য পাণ্ডবানাং বলে নৃপ । রথ-  
 সংখ্যাং শৃণু স্বং সত্হৈভির্বসুধাধিপৈঃ ॥ ২ ॥ স্বয়ং রাজা রথোদারঃ পাণ্ডবঃ



কুস্তিনন্দনঃ । অগ্নিবৎ সমরে তাত চরিষ্যতি ন সংশয়ঃ ॥৩॥ ভীমসেনস্ত রাজেশ্ব  
 রথোহৃষ্টগুণসংমিতঃ । ন তস্যাস্তি সমো যুদ্ধে গদয়া সাযকৈরপি ॥ ৪ ॥ নাগায়ুত-  
 বলো মানী তেজসানস মানুষ্যঃ ॥ ৫ ॥ মাদ্রীপুত্রৌ চ রথিনৌ দ্বাবেব পুরুষৰ্ভৌ  
 অশ্বিনাবিব কপেণ তেজসা চ সমন্বিতৌ ॥৬॥ এতে চমুখগতাঃ স্মরন্তঃ ক্লেশ-  
 মুক্তমগ্ন । রুদ্রবৎ প্রচরিষ্যন্তি তত্র মে নাস্তি সংশয়ঃ ॥ ৭ ॥ সৰ্ব এব 'মহাত্মানঃ  
 শালস্তস্তা ইবোদগাতাঃ । প্রাদেশেনাধিকাঃ পুংতিরন্যেষু চ প্রমাণতঃ ॥ ৮ ॥  
 সিংহসংহননাঃ সৰ্বৈ পাণ্ডুপুত্রা মহাবলাঃ । চরিত্তব্রহ্মচর্য্যাশ্চ সৰ্বৈ তাত তপ-  
 স্বিনঃ । হ্রীমন্তঃ পুরুষব্যাক্র ব্যাক্রা ইব বলোৎকটাঃ ॥ ৯ ॥ জবে প্রহারে সং-  
 মর্দে সৰ্ব এবাতিমানুষাঃ । সৰ্বৈর্জিতা মহীপালা দিগ্জয়ে ভরতর্ষভ ॥ ১০ ॥ ন  
 চৈষাং পুরুষাঃ কেচিদায়ুধানি গদাঃ শরান্ । বিষহস্তি সদা কর্ত্তুমধিজ্যান্যপি কৌ-  
 রব । উদ্যন্তং বা গদা গুর্ধীঃ শরান্ বিক্ষেপুনাহবে ॥ ১১ ॥ জবে লক্ষ্যস্য হরণে  
 ভোজ্যে পাংশুবিকর্ষণে । বালৈরপি ভবন্তুস্তৈঃ সৰ্ব এব বিশেষিতাঃ ॥১২॥ এতৎ  
 সৈন্যং সমাসাদ্য সৰ্ব এব বলোৎকটাঃ । বিধ্বংসযিষ্যন্তি রণে মান্ম তৈঃ সহ  
 সঙ্গমঃ ॥ ১৩ ॥ একৈকশস্তে সংমর্দে হন্যুঃ সৰ্বান্ মহীক্ষিতঃ । প্রত্যক্ষং তব  
 রাজেশ্ব রাজসূয়ে যথাভবৎ ॥ ১৪ ॥ দ্রৌপদ্যাশ্চ পরিক্লেপং দ্যুতে চ পরুষা  
 গিরঃ । তে স্মরন্তশ্চ সংগ্রামে চরিষ্যন্তি চ রুদ্রবৎ ॥ ১৫ ॥ লোহিতাক্ষো গুডা-  
 কেশো নারাঘণসহায়বান্ । উভযোঃ সেনযোর্ধীরৌ রথো নাস্তীতি তাদৃশঃ ॥১৬॥  
 ন হি দেবেষু বা পূর্বং ননুষ্যেযুরগেষু চ । রাক্ষসেষুথ যক্ষেষু নরেষু কুত এব  
 তু । ভূতোহথ বা ভবিষ্যো বা রথঃ কশ্চিন্ময়া শ্রুতঃ ॥ ১৭ ॥ সমায়ুক্তো মহারাজ  
 রথঃ পার্থস্য ধীমতঃ । বাসুদেবশ্চ সংযন্তা যোদ্ধা চৈবধনঞ্জয়ঃ ॥ ১৮ ॥ গাণ্ডী-  
 বঞ্চ ধনুর্দীব্যং তে চাশ্বা বাতরংহসঃ । অভেদ্যং কবচংদিব্যমক্ষয়ৌ চ মহে-  
 যুধী ॥ ১৯ ॥ অস্ত্রগ্রামশ্চ মাহেন্দ্রো রৌদ্রঃ কৌবের এব চ । ষাম্যশ্চ বারুণশ্চৈব  
 গদাশ্চৈত্রপ্রদর্শনাঃ । বজ্রাদীনি চ মুখ্যানি নানা প্রহরণানি চ ॥ ২০ ॥ দান-  
 বানাং সহস্রাণি হিরণ্যপুরবাসিনাম্ । হতান্যেকরথেনাজৌ কস্তস্য সদৃশো  
 রথঃ ॥ ২১ ॥ এষ হন্যাক্ষি সংরন্তী বলবান্ সত্যবিক্রমঃ । তব সেনাং মহাবাহুঃ  
 স্বাষ্ট্বেব পরিপালয়ন্ ॥ ২২ ॥ অহষ্ট্বেনং প্রত্যুদিযামাচার্য্যো বা ধনঞ্জয়ম্ । ন  
 তৃতীযোহস্তি রাজেশ্ব সেনযোরুভযোরপি ॥ ২৩ ॥ য এনং শরবর্ষণি বর্ষস্তমুদি-  
 যাদ্রথী । জীমূত ইব ষর্মান্তে মহাবাতসমীরিতঃ ॥ ২৪ ॥ সমায়ুক্তস্ত কৌন্তেযো  
 বাসুদেবসহায়বান্ । তরুণশ্চ কৃতী চৈব জীর্গাবাবামুভাবপি ॥২৫॥ বৈশম্পায়ন

উবাচ । এতৎ শ্রদ্ধাতু ভীষ্মস্য রাজ্ঞাং দধৎসিরে তদা । কাঞ্চনান্নদিনঃ পীনা  
ভুজাশ্চন্দনকাষিতাঃ ॥ ২৬ ॥ মনোভিঃ সহসংবেগৈঃ সংস্মৃত্য চ পুরাতনম্ ।  
সামর্থ্যং পাণ্ডবেযানাং যথা প্রত্যক্ষদর্শনাৎ ॥ ২৭ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি রথাতিরথসংখ্যানপর্বনি পাণ্ডবরথাতিরথসংখ্যায়া-  
মষ্টষষ্ঠ্যাধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৬৮ ॥



ভীষ্ম উবাচ । দ্রৌপদেযা মহারাজ সর্বে পঞ্চ মহারথাঃ । বৈরাটিকুন্তরশ্চৈব  
রথোদারো মতো মম ॥ ১ ॥ অভিমন্যুস্মহাবাহুরথযুথপযুথপঃ । সমঃ পার্থেন  
সমরে বাসুদেবেন চারিহা ॥ ২ ॥ লঘুস্ত্রশিচত্রযোধী চ মনস্বী চ দৃঢ়ব্রতঃ । সং-  
স্মরন বৈ পরিক্লেশং স্বপিতুর্নিক্রমিষ্যতি ॥ ৩ ॥ সাত্যকির্মাধবঃ শূরো রথযুথপ-  
যুথপঃ । এষ হৃষিকপ্রবীরানামমর্ষী জিতসাধসঃ ॥ ৪ ॥ উত্তমোজাস্তথা রাজন্  
রথোদারো মতো মম । যুধামন্যুশ্চ বিক্রান্তো রথোদারো মতো মম ॥ ৫ ॥  
এতেষাং বহুসাহস্রা রথা নাগাহ্বাস্তথা । যোৎস্যন্তে তে তনুস্ত্যক্ত্বা কুন্তী-  
পুল্লপ্রিয়েঙ্গবা ॥ ৬ ॥ পাণ্ডবৈঃ সহ রাজেন্দ্র তব সেনাসু ভারত । অগ্নিমানুত-  
বদ্রাজনাস্ত্রযন্তঃ পরস্পরম্ ॥ ৭ ॥ অজেযৌ সমরে হৃদ্ধৌ বিরাটক্রপদৌ তথা । মহা-  
রথৌ মহাবীর্যৌ মতো মে পুরুষর্ষভৌ ॥ ৮ ॥ বযোরদ্ধাবপি হিতৌ ক্লত্রধর্মপরা-  
যর্নৌ । যতিষ্যেতে পরং শক্ত্যা স্থিতৌ বীরগতে পথি ॥ ৯ ॥ সমস্ককেন রাজেন্দ্র  
তো তু বীর্যবলান্বযাৎ । আর্য্যব্রতো মহেষ্ণাসৌ স্নেহবীর্য্যস্থিতাবুভৌ ॥ ১০ ॥  
কারণং প্রাপ্য তু নরাঃ সর্ব এব মহাভুজাঃ । শূরা বা কাতরা বাপি ভবাস্তু কুরু-  
পুঙ্গব ॥ ১১ ॥ একাঘনগতাবেতো পার্থিবৌ দৃঢ়ধন্বিনৌ । প্রাণাংস্ত্যক্ত্বা পরং  
শক্ত্যা ঘাটিতারৌ পরন্তপ ॥ ১২ ॥ পৃথগক্ষৌহিনীভ্যাং তারুভৌ সংযতি দারুণৌ ।  
সম্বন্ধিভাবং রক্ষন্তৌ মহৎ কস্ম করিষ্যতঃ ॥ ১৩ ॥ লোকবীরৌ মহেষ্ণাসৌ ত্যক্তা-  
ন্বানৌ চ ভারত । প্রত্যয়ং পরিরক্ষন্তৌ মহৎ কস্ম করিষ্যতঃ ॥ ১৪ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি রথাতিরথসংখ্যানপর্বনি পাণ্ডবরথাতিরথসংখ্যায়াং  
একোনসপ্তত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৬৯ ॥



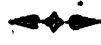
ভীষ্ম উবাচ । পাঞ্চালরাজস্য সূতো রাজন্ পরপুরঞ্জযঃ । শিখণ্ডী রথমুখ্যা  
মে মতঃ পার্থস্য ভারত ॥ ১ ॥ এষ যোৎস্যতি সংগ্রামে নাশযন্ পূর্বসংস্থিতিং ।  
পরং যশো বিপ্রথযংস্তব সেনাসু ভারত ॥ ২ ॥ এতস্য বহুনাঃ সেনাঃ পঞ্চা-

লাশ্চ প্রভদ্রকাঃ । তেনাসৌ রথবংশেন মহৎ কৰ্ম করিষ্যতি ॥ ৩ ॥ ধৃষ্টদ্র্যম্নশ্চ  
 সেনানীঃ সর্বসেনাসু ভারত । মতো মেহত্রিরথো রাজন্ দ্রোণশিষ্যো মহা-  
 রথঃ ॥ ৪ ॥ এষ যোৎস্যতি সংগ্রামে সূদয়ন্ বৈ পরানুগে । ভগবানিব সংক্রুদ্ধঃ  
 পিনাকী যুগসংক্ষয়ে ॥ ৫ ॥ এতস্য তদ্রথানীকং কথযন্তি রণপ্রিয়াঃ । বহুত্বাৎ  
 সাগরপ্রখ্যৎ দেবানামিব সংযুগে ॥ ৬ ॥ ক্ষত্রধৰ্ম্মা তু রাজেন্দ্র মতো মেহর্করথো  
 নৃপ । ধৃষ্টদ্র্যম্নস্য তনযো বাল্যাম্মাতিকৃতশ্রমঃ ॥ ৭ ॥ শিশুপালসুতো বীরশেচ-  
 দিরাজো মহারথঃ । ধৃষ্টকেতুৰ্মহেষাসঃ সযক্ষী পাণ্ডবস্য হ ॥ ৮ ॥ এষ চেদিপতিঃ  
 শূরঃ সহ পুল্লেণ ভারত । মহারথানাং সুকরং মহৎ কৰ্ম করিষ্যতি ॥ ৯ ॥ ক্ষত্র-  
 ধৰ্ম্মরতো মহৎ মতঃ পরপূরঞ্জযঃ । ক্ষত্রদেবস্ত রাজেন্দ্র পাণ্ডবেষু রথোত্তমঃ ॥ ১০ ॥  
 জয়ন্তশ্চামিতৌজাশ্চ সত্যজিচ্চ মহারথঃ । মহারথা মহাত্মানঃ সৰ্বে পাঞ্চাল-  
 সত্তমাঃ । যোৎস্যন্তে সমরে তাত সংরদ্ধা ইব কুঞ্জরাঃ ॥ ১১ ॥ অজো ভোজশ্চ  
 বিক্রান্তৌ পাণ্ডবার্থে মহারথৌ । যোৎস্যেতে বলিনৌ শূরৌ পরং শক্ত্যা ক্ষি-  
 যতঃ । শী ব্রাহ্মণৌ চিত্রযোদ্ধারৌ কুতিনৌ দৃঢ়বিক্রমৌ ॥ ১২ ॥ কৈকেয়াঃ পঞ্চ  
 রাজেন্দ্র ভ্রাতরৌ যুদ্ধভ্রম্মদাঃ । সৰ্বে টৈব রথোদারাঃ সৰ্বে লোহিতকধ্বজাঃ ॥ ১৩ ॥  
 কাশিকঃ সুকুমারশ্চ নীলো যশ্চাপরৌ নৃপ । সূর্য্যদত্তশ্চ শঙ্খশ্চ মদিরাশ্চ না-  
 মতঃ ॥ ১৪ ॥ সৰ্ব এতে রথোদারাঃ সৰ্বে চাহবলক্ষণাঃ । সর্বাস্ত্রবিদ্রুঘঃ সৰ্বে  
 মহাত্মানো মতা মম ॥ ১৫ ॥ বার্কক্ষেমিৰ্ম্মহারাজ মতো মম মহারথঃ । চিত্রায়ুধশ্চ  
 নৃপতিৰ্ম্মতো মে রথনত্তমঃ । স হি সংগ্রামশোভী চ ভক্তশ্চাপি কিরীটিনঃ ॥ ১৬ ॥  
 চেকিতানঃ সত্যধৃতিঃ পাণ্ডবানাং মহারথৌ । দ্বাবিমৌ পুরুষব্যাস্ত্রৌ রথোদারৌ  
 মতো মম ॥ ১৭ ॥ ব্যাঘ্রদত্তশ্চ রাজেন্দ্র চন্দ্রসেনশ্চ ভারত । মতো মম রথো-  
 দারৌ পাণ্ডবানাং ন সংশযঃ ॥ ১৮ ॥ সেনাবিন্দুশ্চ রাজেন্দ্র ক্রোধহস্তা চ না-  
 মতঃ । যঃ সমো বাসুদেবেন ভীমসেনেন বা বিভো । স যোৎস্যতি হি বিক্রম্য  
 সমরে তব সৈনিকৈঃ ॥ ১৯ ॥ মাঞ্চ দ্রোণং রূপকৈব যথা সংমন্যতে ভবান্ ।  
 তথা স সমরশ্ৰাঘী মন্তব্যো রথনত্তমঃ ॥ ২০ ॥ কাশ্যঃ পরমশীঘ্রাস্ত্রঃ শ্লাঘনীযো  
 নরোত্তমঃ । রথ একগুণো মহৎ জেযঃ পরপূরঞ্জযঃ ॥ ২১ ॥ অযঞ্চ যুধি বিক্রান্তৌ  
 মন্তব্যোহৃষ্টগুণো রথঃ । সত্যজিৎ সমরশ্ৰাঘী রূপদস্যাত্মজো যুবা ॥ ২২ ॥ গতঃ  
 সোহত্রিরথত্বং হি ধৃষ্টদ্র্যম্নেন সংনিতঃ । পাণ্ডবানাং যশক্ষামঃ পরং কৰ্ম করি-  
 য্যতি ॥ ২৩ ॥ অনুরক্তশ্চ শূরশ্চ রথোৎসমপরো মহান্ । পাণ্ডুরাজো মহাবীর্য্যঃ  
 পাণ্ডবানাং ধুরন্ধরঃ । দৃঢ়ধৰ্ম্মা মহেষাসঃ পাণ্ডবানাং মহারথঃ ॥ ২৪ ॥ শ্রেণিমান

कौरवश्रेष्ठो वसुदानश्च पार्थिवः । उभावतावतिरथो मतो परपुरञ्जय ॥ २५ ॥

इत्युद्दोगपरिणि रथातिरथसंख्यानपरिणि पाण्डवरथातिरथसंख्यायां

सप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ ११० ॥



भीष्म उवाच । रोचमानो महाराज पाण्डवानां महारथः । योऽस्यतेऽमरवत्  
संख्ये परसैन्येषु भारत ॥ १ ॥ पूरुजिह्वं कुन्तिभोजश्च महेश्वानो महाबलः ।  
मातुलो भीमसेनस्य स च मेऽतिरथो मतः ॥ २ ॥ एष वीरो महेश्वसः कृती च  
निपुणश्च ह । चित्रयोधी च शक्रश्च मतो मे रथपुङ्गवः ॥ ३ ॥ स योऽस्यति हि  
विक्रम्य मयवानिव दानवैः । योथा ये चास्य विख्याताः सर्वे युद्धविशारदाः ॥ ४ ॥  
भागिनेयकृते वीरः स करिष्यति सङ्घरे । सुमहत् कर्म पाण्डुनां स्थितः प्रियहिते  
रतः ॥ ५ ॥ तैमसेनिर्महारज हैडिद्यो राक्षसेश्वरः । मतो मे बहुमायावी  
रथयुथपयुथपः ॥ ६ ॥ योऽस्यते समरे तात मायावी समरप्रियः । ये चास्य  
राक्षसा वीराः सचिवा वशवर्तिनः ॥ ७ ॥ एते चान्ये च बहवो नानाजनपदे-  
श्वराः । समेताः पाण्डवस्यार्थे वासुदेवपुरोगमाः ॥ ८ ॥ एते प्राधान्यतो  
राजन् पाण्डवस्य महान्नः । रथाश्चातिरथाश्चैव ये चान्येऽर्क्षरथा नृप ॥ ९ ॥  
नेष्यन्ति समरे सेनां भीमां योधिष्ठिरौ नृप । महेश्वरेण वीरेण पाल्य-  
मानां किरीटिना ॥ १० ॥ तैरहं समरे वीर मायाविद्धिर्जयैषिभिः । योऽस्य-  
मि जयमाकाङ्क्षन्तवा निधनं रणे ॥ ११ ॥ वासुदेवश्च पार्थश्च चक्रगाण्डीवधा-  
रिणो । सङ्ख्यागताविवार्केन्दू समेष्ये ते रथोत्तमो ॥ १२ ॥ ये चैव ते रथो-  
दाराः पाण्डुपुत्रस्य सैनिकाः । सहसैन्यानहन्तांश्च प्रतीयां रणमूर्क्षनि ॥ १३ ॥  
एते रथाश्चातिरथाश्च तुभ्यं यथाप्रधानं नृप कीर्तिता मया । तथापरे येऽर्क्ष-  
रथाश्च केचित्तथैव तेषामपि कौरवेन्द्र ॥ १४ ॥ अर्जुनं वासुदेवश्च ये चान्ये  
तत्र पार्थिवाः । सर्वास्तान् वारिष्यामि यावद्वृक्ष्यामि भारत ॥ १५ ॥ पाण्डाल्यस्तु  
महाबाहो नाहं हन्यां शिखण्डिनम् । उद्यतेषुमथो दृष्ट्वा प्रतियुध्यस्तनाहवे ॥ १६ ॥  
लोकस्तद्धेद यदहं पितुः प्रियचिकीर्षया । प्राप्सुं राज्यं परित्यज्य ब्रह्मचर्य-  
व्रते स्थितः ॥ १७ ॥ चित्राङ्गदं कौरवाणामधिपत्येऽभ्यषेचयम् । विचित्रवीर्यश्च  
शिषुं यौवराज्येऽभ्यषेचयम् ॥ १८ ॥ देवव्रतव्रतं विज्ज्ञाप्य पृथिव्यां सर्वराजसु ।  
नैव हन्यां स्त्रियं जातु न स्त्रीपूर्वं कदाचन ॥ १९ ॥ स हि स्त्रीपूर्वको राजन्  
शिखण्डी यदि ते श्रुतः । कन्या भूत्वा पुमान् जातो न योऽस्ये तेन भारत ॥ २० ॥

সর্বাঃ স্তন্যান্ হনিষ্যামি পার্থিবান্ ভরতর্ষভ । যান্ সমেষ্যামি সমরে ন তু কুন্তী-  
সুতান্ ॥ ২১ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি রথাতিরথসংখ্যানপর্বণি পাণ্ডবরথাতিরথসংখ্যানে

একসপ্তত্যধিকশততমেহধ্যায়ঃ ॥ ১৭১ ॥

সমাপ্তঞ্চ রথাতিরথসংখ্যানপর্ব ।



অথায়োপাখ্যানপর্ব ।

ভূর্যোধন উবাচ । কিমর্থং ভরতশ্রেষ্ঠ নৈব হন্যাঃ শিখণ্ডিনম্ । উদ্যতেষুগথো  
দৃষ্টা সমরেষাততায়িনম্ ॥ ১ ॥ পূর্বমুক্তা মহাবাহো পাঞ্চালান্ সহ সোমকৈঃ ।  
হনিষ্যামীতি গান্ধেব তমে বৃহি পিতামহ ॥ ২ ॥ ভীষ্ম উবাচ । শৃণু ভূর্যোধন  
কথাং সতৈভির্বিস্মৃধাধিপৈঃ । যদর্থং যুধি সংপ্ৰেক্ষ্য নাহং হন্যাং শিখণ্ডিনম্ ॥ ৩ ॥  
মহারাজো মম পিতা শান্তনুলোকবিশ্রুতঃ । দিষ্টান্তুনাপ ধর্মাত্মা সময়ে ভরত-  
র্ষভ ॥ ৪ ॥ ততোহহং ভরতশ্রেষ্ঠ প্রতিজ্ঞাং পরিপালয়ন্ । চিত্রাঙ্গদং ভ্রাতরং  
তৈ মহারাজ্যেহভ্যষেচয়ম্ ॥ ৫ ॥ তস্মিন্শচ নিধনং প্রাপ্তে সত্যবত্যা মতে স্থিতঃ ।  
বিচিত্রবীর্যং রাজানমভ্যষিঞ্চং যথাবিধি ॥ ৬ ॥ যথাভিষিক্তো রাজেন্দ্র যবীষানপি  
ধর্মতঃ । বিচিত্রবীর্যো ধর্মাত্মা নামেব সমুদৈক্ষত ॥ ৭ ॥ তস্য দারক্রিষাং তাত  
চিকীষুঁরহমপ্যুত । অনুকুপাদিব কুলাদিত্যেব চ মনো দধে ॥ ৮ ॥ তথ্যশ্রৌষং  
মহাবাহো তিস্রঃ কন্যাঃ স্বধনরাঃ । কপেণাপ্রতিমাঃ সর্বাঃ কাশিরাজসুতাস্ত-  
দা ॥ ৯ ॥ অস্বাষ্টৈবাস্বিকাস্তৈব তথৈবাস্বালিকামপি । রাজানশচ সমাহূতাঃ পৃথিব্যাং  
ভরতর্ষভ ॥ ১০ ॥ অস্বাজ্যেষ্ঠাভবত্ৰাসাময়িকা ত্বথ মধ্যমা । অস্বালিকা চ রাজেন্দ্র  
রাজকন্যা যবীষসী ॥ ১১ ॥ সোহহমেকরথেনৈব গতঃ কাশিপতেঃ পুরীম্ । অপশ্য-  
স্তা মহাবাহো তিস্রঃ কন্যাঃ স্বলঙ্কৃতাঃ । রাজ্ঞশ্চৈব সমাহূতান্ পার্থিবান্ পৃথিবী-  
পতে ॥ ১২ ॥ ততোহহস্তান্নপান্ সর্বানাহুঘ সমরে স্থিতান্ । রথমারোপযাঞ্চক্রে  
কন্যাস্তা ভরতর্ষভ ॥ ১৩ ॥ বীর্যশুঙ্কাস্চ তা জ্ঞাত্বা সমারোপ্য রথং তদা । অবো-  
চং পার্থিবান্ সর্বানহং তত্র সমাগতান্ । ভীষ্মঃ শান্তনবঃ কন্যা হরতীতি পুনঃ  
পুনঃ ॥ ১৪ ॥ তে যতধ্বং পরং শক্ত্যা সর্বে মোক্ষায় পার্থিবাঃ । প্রসহ হি হরাম্যেয  
মিষতাং বো নরর্ষভাঃ ॥ ১৫ ॥ ততস্তে পৃথিবীপালাঃ সমুৎপেতুরুদায়ুধাঃ । যোগো  
যোগ ইতি ক্রুদ্ধাঃ সারথীনভ্যচোদয়ন্ ॥ ১৬ ॥ তে রথৈর্মেঘসঙ্কাতৈর্গজৈশ্চ  
গজযোধিনঃ । পুটৈশ্চাটৈশ্চর্মহীপালাঃ সমুৎপেতুরুদায়ুধাঃ ॥ ১৭ ॥ ততস্তে মাং

মহীপালাঃ সর্ব এব বিশাম্পতে । রথব্রাতেন মহতা সর্বতঃ পর্য্যবারযন্ ॥১৮॥ তানহং  
শরবর্ষণে সমস্তাং পর্য্যবারযন্ । সর্বান্‌পাংশ্চাপ্যজযং দেবরাডিব দানবান্ ॥১৯॥  
অপাতযং শরৈর্দীপ্তৈঃ প্রহসন্ ভরতর্ষভ । তেষামাপততাং চিত্রান্ ধ্বজান্ হেমপরি  
কৃতান্ ॥ ২০ ॥ একেকেন হি বাণেন ভূমৌ পাতিতবানহন্ । হযাংস্তেষাং গজাং-  
শৈচব সারথীংশ্চাপ্যহং রণে ॥ ২১ ॥ তে নিরুত্তাশ্চ ভগ্নাশ্চ দৃষ্টা তল্লাঘবং মম ।  
অথাহং হাস্তিনপুরমায়াং জিহ্বা মহীক্ষিতঃ ॥ ২২ ॥ ততোহহং তাশ্চ কন্যা বৈ  
ব্রাতুরর্থায ভারত । তচ্চ কন্ম মহাবাহো সত্যবতৌ ন্যবেদযন্ ॥ ২৩ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি কাশিরাজকন্যাহরণে দ্বিসপ্তত্যধিকশত-  
তমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৭২ ॥

ভীষ্ম উবাচ । ততোহহং ভরতশ্রেষ্ঠ মাতরং বীরমাতরন্ । অভিগম্যোপসংগৃহ  
দাশেযীমিদমক্রবন্ ॥ ১ ॥ ইমাঃ কাশিপতেঃ কন্যা মযা নিজ্জিত্য পার্থিবান্ ।  
বিচিত্রবীর্যস্য ক্রতে বীর্যশুঙ্কা হতা ইতি ॥ ২ ॥ ততো মুর্দ্ধন্যপাদ্রায় পর্য্যশ্চ-  
নযনা নৃপ । আহ সত্যবতী হৃষ্টা দিষ্ট্যা পুত্র জিতং স্বযা ॥ ৩ ॥ সত্যবত্যাশ্চু-  
মতে বিবাহে সমুপস্থিতে । উবাচ বাক্যং সত্রীড়া জ্যেষ্ঠা কাশিপতেঃ সূতা ॥ ৪ ॥  
ভীষ্ম ত্বমসি ধর্ম্মজ্ঞঃ সর্বশাস্ত্রবিশারদঃ । শ্ৰুত্বা চ বচনং ধর্ম্ম্যং মহং কর্তুমিহা-  
র্হসি ॥ ৫ ॥ মযা শাল্বপতিঃ পূর্বং মনসাভিত্তো বরঃ । তেন চাম্মি সূতা পূর্বং  
রহস্যবিদিতে পিতুঃ ॥ ৬ ॥ কথং মামন্যকামাং স্বং রাজন্ ধর্ম্মমতীত্য বৈ ।  
বাসযেথা গৃহে ভীষ্ম কৌরবঃ সন্ বিশেষতঃ ॥ ৭ ॥ এতদ্বুক্ত্যা বিনিশ্চিত্য মনসা  
ভরতর্ষভ । যৎ ক্ষমন্তে মহাবাহো তদিহারকুমর্হসি ॥ ৮ ॥ স মাং প্রতীক্ষতে  
ব্যক্তং শাল্বরাজো বিশাম্পতে । তস্মান্মাং স্বং কুরুশ্রেষ্ঠ সমনুজ্ঞাতুমর্হসি ॥ ৯ ॥  
রূপাং কুরু মহাবাহো মযি ধর্ম্মভূতাংবর । স্বং হি সত্যবতো বীর পৃথিব্যামিতি  
নঃ শ্রুতম্ ॥ ১০ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি অম্বোপাখ্যানপর্বনি অম্বাবাক্যে ত্রিসপ্তত্যধিক-  
শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৭৩ ॥

ভীষ্ম উবাচ । ততোহহং সমনুজ্ঞাপ্য কালীং গন্ধবতীং তদা । মল্লিগশ্চ-  
ত্রিংশ্চৈব তথৈব চ পুরোহিতান ॥ ১ ॥ সমনুজ্ঞাসিষং কন্যামম্বাং জ্যেষ্ঠাং  
নরার্ধিপ । অনুজ্ঞাতা যযৌ সা তু কন্যা শাল্বপতেঃ পুরম্ ॥ ২ ॥ স্তৈর্দ্বিজাতিভি-  
র্গুপ্তা ধাত্র্যা চানুগতা তদা । অতীত্য চ তমধানমাসাদ্য নৃপতিং তথা ॥ ৩ ॥ সা

तमासाद्य राजानं शाल्वं वचनमब्रवीत् । आगताहं महाबाहो ह्यमुदिश्यामहा-  
 मते ॥ ४ ॥ तामब्रवीच्छाल्वपतिः श्वश्रुव विशाम्पते । ह्यन्यपूरुषा नाहं  
 भार्यार्थी वरवर्णि न ॥ ५ ॥ गच्छ भद्रे पुनस्तत्र सकाशंभीष्मकस्य वै । नाहमि-  
 छामि भीष्मेण गृहीतां ह्यं प्रसह वै ॥ ६ ॥ ह्यं हि भीष्मेण निज्जित्य नीता  
 प्रीतिमती तदा । परामृष्य महायुद्धे निज्जित्य पृथिवीपतीन् ॥ ७ ॥ नाहं ह्यन्य-  
 न्यपूरुषां भार्यार्थी वरवर्णिनि । कथमश्वदिवो राजा परपूरुषां प्रवेशयेत् ॥ ८ ॥  
 नारीं विदितविज्ञानः परेषां धर्ममादिशन् । यथेष्टं गम्यतां भद्रे मा ह्यं  
 कालोऽत्यगादयम् ॥ ९ ॥ अथा तमब्रवीद्राजमनङ्गशरपीडिता । नैव वद मही-  
 पाल नैतदेव कथञ्चन ॥ १० ॥ नास्मि प्रीतिमती नीता भीष्मेणामित्रकर्षण । बला-  
 ग्नीतास्मि रुदती विद्राव्य पृथिवीपतीन् ॥ ११ ॥ भजस्व मां शाल्वपते भक्त्यां  
 बालामनागसम् । भक्त्यां हि परित्यागो न धर्मेषु प्रशस्यते ॥ १२ ॥ साहसा-  
 मन्त्र्य गाङ्गेयं समरेषुनिवर्तिनम् । अमुक्त्वा च तेनैव ततोऽहं भृशमाग-  
 ता ॥ १३ ॥ न स भीष्मो महाबाहूर्न्मामिच्छति विशाम्पते । ब्रातृहेतोः समा-  
 रम्भो भीष्मस्येति श्रुतं मया ॥ १४ ॥ लुगिनो मम ये नीते अश्विकायालिके नृप ।  
 प्रादाद्विचित्रवीर्याय गाङ्गेयो हि षवीषसे ॥ १५ ॥ यथा शाल्वपते नान्यं वरं  
 ध्यायामि कञ्चन । ह्यगृते पुरुषव्याह तथा मुद्गानमालभे ॥ १६ ॥ न चान्यपूरु-  
 राजेन्द्र ह्यमहं समुपस्थिता । सत्यं ब्रवीमि शाल्वे तं सत्येनाङ्गानमालभे ॥ १७ ॥  
 भजस्व मां विशालाङ्ग स्वयं कन्यामुपस्थिताम् । अनन्यपूरुषां राजेन्द्र ह्यं प्रसा-  
 दात्तिकाङ्क्षिणीम् ॥ १८ ॥ तामेवं भाषमाणस्तु शाल्वः काशिपतेः सूताम् । अत्य-  
 जद्वरतश्चेत्तु जौर्णां ह्यचमिवोरगः ॥ १९ ॥ एवं बह्विधैर्बाकैर्यथाच्यमानस्तथा  
 नृपः । नाश्रद्धच्छाल्वपतिः कन्याया भरतर्षभ ॥ २० ॥ ततः सा मनु्यनाविक्ता ज्येष्ठा  
 काशिपतेः सूता । अब्रवीत् साश्रुनयना वास्पविप्लव्या गिरा ॥ २१ ॥ ह्यया त्यक्त्वा  
 गमिष्यामि यत्र तत्र विशाम्पते । तत्र मे गतयः सन्तु सन्तुः सत्यं यथा क्लृप्तम् ॥ २२ ॥  
 एवं तां भाषमाणस्तु कन्यां शाल्वपतिस्तदा । परितत्याज कौरव्य करुणं परि-  
 देवतीम् ॥ २३ ॥ गच्छ गच्छेति तां शाल्वः पुनःपुनरभाषत । विभेमि भीष्मां  
 सुश्रोणि ह्यं भीष्मपरिग्रहः ॥ २४ ॥ एवमुक्त्वा तु सा तेन शाल्वेनादीर्घदर्शिना ।  
 निश्चक्राम पुरादानीं रुदती कुररी यथा ॥ २५ ॥

इत्युद्देश्योपनिषत्परिनि अश्वोपाख्यानपरिनि अश्वशाल्वसंवादे चतुःसप्तत्य-

धिकशततमोऽध्यायः ॥ ११४ ॥

भीष्म उवाच । निष्कामस्ती तु नगराच्छिन्तयामास दुःखिता । पृथिव्यां नास्ति युव-  
तिर्विषमस्तुरा मया ॥ १ ॥ वंशुभिर्विप्रहीणान्मि शाल्वेन च निराकृता । न च शक्यं  
पुनर्गन्तुं मया वारुणसास्त्रयम् ॥ २ ॥ अनुज्ज्वला तु भीष्मेण शाल्वमुद्दिश्य कारणम् ।  
किं नू गर्हाम्यथात्मानमथ भीष्मं दुरासदम् । अथ वा पितरं मूढं यो मेहकार्षीं  
स्वयम्बरम् ॥ ३ ॥ मयायं स्वरूतो दोषो याहं भीष्मरथात्तदा । प्रवृत्ते दारुणे  
युद्धे शाल्वार्थं नागता पुरा । तस्येयं फलनिर्वृत्तिर्यदापन्नास्मि मूढवत् ॥ ४ ॥  
धिष्णीयं धिक् च मे मन्दं पितरं मूढचेतसम् । येनाहं वीर्यशुक्लेति पण्यस्त्रीव  
प्रवेरिता ॥ ५ ॥ धिक् शाल्वराजानं धिक्कातारमथापि वा । येषां दुर्नी-  
तभावेन प्राप्तास्यापदमुत्तमान् ॥ ६ ॥ सर्वथा भागधेयानि स्वानि प्राप्नोति मान-  
वः । अनयस्यास्य तु मुखं भीष्मः शान्तनवो मम ॥ ७ ॥ सा भीष्मे प्रतिकर्तव्य-  
महं पश्यामि सास्त्रतम् । तपसा वा युधा वापि दुःखहेतुः स मे मतः ॥ ८ ॥ को  
नू भीष्मं युधा जेतुनुत्सहेत महीपतिः । एवं सा परिनिश्चित्य जगाम नगरा-  
द्वहिः ॥ ९ ॥ आश्रमं पुण्यशीलानां तापसानां महात्मानाम् । ततस्तामवस-  
द्रात्रिं तापसैः परिवारिता ॥ १० ॥ आचख्यो च यथारुद्रं सर्वमात्मानि भारत ।  
विस्तरेण महाबाहो निखिलेन श्रुचिस्मिता । हरणं विसर्गं शाल्वेन च विसर्ज-  
नम् ॥ ११ ॥ ततस्तत्र महानासौद्राक्कणः संशितव्रतः । शैखावत्यस्तपोरुद्रः  
शास्त्रे चारुण्यके गुरुः ॥ १२ ॥ आर्तान्तामाह स मुनिः शैखावत्यो महत्तपाः ।  
निश्चसन्तीं सतीं बालां दुःखशोकपरायणाम् ॥ १३ ॥ एवं गते तु किं भद्रे  
शक्यं कर्तुं तपस्विभिः । आश्रमस्तेर्महाभागे तपोयुक्तेर्महात्माभिः ॥ १४ ॥  
सा द्वेनमत्रवीद्राजन् क्रियतां मदनुग्रहः । प्रात्राज्यमहमिच्छामि तपस्तप्यामि  
दुश्चरम् ॥ १५ ॥ मथैव यानि कर्माणि पूर्वदेहे तु मूढया । कृतानि नूनं पापानि  
तेषामेतत् फलं श्रवम् ॥ १६ ॥ नोत्सहे तं पुनर्गन्तुं स्वजनं प्रति तापसाः ।  
प्रत्याख्याता निरानन्दा शाल्वेन च निराकृता ॥ १७ ॥ उपदिष्टमिहेच्छामि तापस्यं  
वीतकल्मषाः । युष्माभिर्देवसंकाशैः कृपा भवतु वो मयि ॥ १८ ॥ स तामाश्रासयत्  
कन्यां दृष्टान्तागमहेतुभिः । सास्त्रयामास कार्यां प्रतिज्ज्ञे द्विजैः सह ॥ १९ ॥

इत्युद्देश्योपपत्तिनि अयोपाख्यानपर्वणि अथाशैखावत्यसंबादे पक्ष-

सप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ ११५ ॥



भीष्म उवाच । ततस्ते तापसाः सर्वे कार्यवन्तोऽहंभवन्सदा । तां कन्यां चिन्त-



यस्तुस्ते किंकार्यमिति धर्मिणः ॥ १ ॥ केचिदाहः पितुर्बेश्म नीषतामिति तापसाः ।  
 केचिदश्वत्थपालस्ते मतिश्चक्रुर्ह तापसाः ॥ २ ॥ केचिच्छात्रपतिं गङ्गा निषोज्य-  
 मिति मेनिरे । नेति केचिद्व्यवस्यस्तु प्रत्याख्याता हि तेन सा ॥ ३ ॥ एव-  
 गते तु किंशक्यं भद्रे कर्तुं मनीषिभिः । पुनर्बुधश्च तां सर्वे तापसाः संशित-  
 त्रताः ॥ ४ ॥ अलं प्रव्रजितेनेह भद्रे शुभं हितं वचः । इतो गच्छस्व भद्रस्ते  
 पितुरेव निवेशनम् ॥ ५ ॥ प्रतिपत्स्यति राजा स पिता ते यदनन्तरम् । तत्र  
 वत्स्यसि कल्याणी सुखं सर्वगुणान्विता । न च तेहन्या गतिर्नार्य्या भवेद्भद्रे यथा  
 पिता ॥ ६ ॥ पतिर्वापि गतिर्नार्य्याः पिता वा वरवर्णिनि । गतिः पतिः समस्त्याया  
 विषमे वा पिता गतिः ॥ ७ ॥ प्रव्रज्या हि सुदुःखेव सुकुमार्य्या विशेषतः । राज-  
 पुत्र्याः प्रकृत्या च कुमार्य्यास्तव भाविनि ॥ ८ ॥ भद्रे दोषा हि विद्यन्ते बहवो वर-  
 वर्णिनि । आश्रमे हि वसन्त्यास्ते न भवेयुः पितुर्गृहे ॥ ९ ॥ ततश्चन्येऽक्रवन् वाक्यं  
 तापसास्तान् तपस्विनीम् । स्वामिहैकाकिनीं दृष्ट्वा निज्जनने गहने वने । प्रार्थ-  
 षिष्यन्ति राजानस्तस्मान्नैव मनः कृथाः ॥ १० ॥ अश्वोवाच । न शक्यं काशिन-  
 गरं पुनर्गच्छं पितुर्गृहान् । अवज्जता भविष्यामि बान्धवानां न संशयः ॥ ११ ॥  
 उषितान्मि तथा बाल्ये पितुर्बेश्मनि तापसाः । नाहं गमिष्ये भद्रं वस्तुत्र यत्र  
 पिता मम ॥ १२ ॥ तपस्तपुमतीप्सामि तापसैः परिरक्षिता । यथा परेऽपि मे  
 लोके न स्यादेव महात्ययम् । दोर्ताग्यं तापसश्रेष्ठान्स्मृत्प्याम्यहं तपः ॥ १३ ॥  
 तीक्ष्ण उवाच । इत्येवं तेषु विप्रेषु चिन्तयत्सु यथातथम् । राजर्षिस्तद्धनं प्राप्नु-  
 स्तपत्नी होत्रवाहनः ॥ १४ ॥ ततस्ते तापसाः सर्वे पूजयन्ति स्म तं नृपम् । पूजातिः  
 स्वागतदयाभिरासनेनोदकेन च ॥ १५ ॥ तस्योपरिवर्तस्य सतो विश्रान्तस्योप-  
 शृणुतः । पुनरेव कथां क्रुः कन्यां प्रति वनौकसः ॥ १६ ॥ अश्वयास्तान् कथां  
 श्रुत्वा काशिराजश्च भारत । राजर्षिः स महातेजा बभूवोद्विग्नमानसः ॥ १७ ॥ तां  
 तथा वादिनीं श्रुत्वा दृष्ट्वा च स महातपाः । राजर्षिः रूपयाविष्टो महात्मा होत्र-  
 वाहनः ॥ १८ ॥ स वेपमान उथास मातुस्तस्याः पिता तदा । तां कन्यामकमा-  
 रोप्य पर्याश्वसयत प्रभो ॥ १९ ॥ स तामपृच्छं कार्त्तम्येन व्यसनोत्पत्ति-  
 मादितः । सा च तस्मै यथारुतं विस्तरेण न्यवेदयत् ॥ २० ॥ ततः स राजर्षिरुद्धू-  
 खशोकसमन्वितः । कार्यं प्रतिपेदे तन्मनसा सुमहातपाः ॥ २१ ॥ अत्रवौद्धेप-  
 मानश्च कन्यामार्त्तां सुदुःखिताम् । मा गाः पितृगृहं भद्रे मातुस्ते जनको  
 ह्वम् ॥ २२ ॥ दुःखं हिन्द्यामहस्ते वै मयि वर्तस्व पुत्रिके । पर्याप्तं ते मनो

वत्से षडेवंपरिशुष्यासि ॥ २३ ॥ गच्छ मद्युचनान्द्रामं जामदग्न्यं तपस्विनम् ।  
 रामस्ते सुमहदुःखं शोकश्लेषापनेष्यति । हनिष्यति रणे तीक्ष्णं न करिष्यति  
 चेद्वचः ॥ २४ ॥ तं गच्छ भार्गवश्रेष्ठं कालाग्निसमतेजसम् । प्रतिष्ठापयिता स  
 द्वां समे पथि महाभपाः ॥ २५ ॥ ततस्तु सुस्वरं वास्पमुत्सृजन्ती पुनःपुनः ।  
 अत्रवीं पितरं मातुः सा हृदा होत्रवाहनम् ॥ २६ ॥ अभिवादयिष्वां शिरसा  
 गमिष्ये तव शासनात् । अपि नामाद्य पश्येयमार्यां तं लोकविश्रुतम् ॥ २७ ॥  
 कथं त्रीं त्रु खं मे नाशयिष्यति भार्गवः । एतदिच्छाम्याहं ज्ञातुं यथा या-  
 स्यामि तत्र वै ॥ २८ ॥ होत्रवाहन उवाच । रामं द्रक्ष्यसि तद्रे द्वं जामदग्न्यं  
 महाबने । उग्रे तपसि वर्तन्तं सत्यसक्तं महाबलम् ॥ २९ ॥ महेश्वरं वै  
 गिरिश्रेष्ठं रामो नित्यमुपास्ति ह । ऋषयो वेदविदांसो गन्धर्वाप्सरसस्तथा ॥ ३० ॥  
 तत्र गच्छस्व तद्वस्ते बुधाश्चैनं वचो मम । अभिवाद्य च तं मुक्त्वा तपोरुद्धं  
 दृष्टव्रतम् ॥ ३१ ॥ बुधाश्चैनं पुनर्भद्रे यत्ने कार्यं मनीषितम् । नयि संकी-  
 र्तिते रामः सर्वं तत्ते करिष्यति ॥ ३२ ॥ मम रामः सखा वत्से प्रीतियुक्तः  
 सुहृच्छ मे । जमदग्निस्तो वीरः सर्वशस्त्रभृतावरः ॥ ३३ ॥ एवं क्ववति कन्यास्तु  
 पार्थिवे होत्रवाहने । अकृतवर्णः प्रादुरासीद्द्रामस्यान्वृत्तरः प्रियः ॥ ३४ ॥ ततस्ते  
 नूनयः सर्वे समुत्सृष्टः सहस्रशः । स च राजा वयोरुद्धः दृष्ट्वा होत्रवाहनः ॥ ३५ ॥  
 ततो द्रुक्त्वा कृतातिथ्यामन्योन्यं ते वनौकसः । सहिता भरतश्रेष्ठ निषेधः  
 परिवार्य तम् ॥ ३६ ॥ ततस्ते कथवानाम्नुः कथास्तुता मनोरमाः । धन्या दिव्याश्च  
 राजेन्द्र प्रीतिर्हर्षनुदा युताः ॥ ३७ ॥ ततः कथान्ते राजर्षिर्नहात्वा होत्रवाहनः ।  
 रामं श्रेष्ठं महर्षीणामपृच्छदकृतव्रणम् ॥ ३८ ॥ क्व सञ्जति महाबाहो जामदग्न्याः  
 प्रभापवान् । अकृतव्रण शक्यो वै द्रुक्त्वं वेदविदांवरः ॥ ३९ ॥ अकृतव्रण  
 उवाच । भवस्तुमेव सततं रामः कीर्तयति प्रभो । सृष्ट्वा मे प्रियसखो राज-  
 र्षिर्निति पार्थिव ॥ ४० ॥ इह रामः प्रभाते श्वो भवितेति मतिस्मम । द्रुष्टास्ये-  
 नमिहायास्तुं तव दर्शनकाङ्क्षया ॥ ४१ ॥ इष्यं कन्या राजर्षे किमर्थं वनमागता ।  
 कस्य चेयं तव च का भवतीच्छामि वेदितुम् ॥ ४२ ॥ होत्रवाहन उवाच । दौहि-  
 त्रीयं मम विभो काशिराजस्तुता प्रिया । ज्येष्ठा स्वप्नरे तस्मै भगिनीभ्यां सहा-  
 नय ॥ ४३ ॥ इयमस्मैति विख्याता ज्येष्ठा काशिपतेः सुता । अश्विकाश्वान्तिके  
 कन्ये कनीषस्यो तपोधन ॥ ४४ ॥ समेतं पार्थिवं क्लृप्तं काशिपुर्यां ततोऽ-  
 तवत् । कन्यानिमित्तं विप्रर्षे तत्रासीद्वत्सवो महान् ॥ ४५ ॥ ततः किं महा-

वीर्येया भीष्मः शान्तनवो नृपान् । अधिष्णिप्य महातेजास्तिस्रः कन्या । जहार  
 ताः ॥ ४७ ॥ निज्जित्य पृथिवीपालानथ भीष्मो गजान्वयम् । आजगाम विशु-  
 द्धाया कन्याभिः सह भारत ॥ ४९ ॥ सत्यवतेत्ये निवेद्याथ विवाहं समनसुरम् ।  
 द्रातुर्विचित्रवीर्यस्य समान्नापयत प्रभुः ॥ ४८ ॥ तस्य वैवाहिकं दृष्ट्वा कन्येयं  
 समुपाज्जितम् । अत्र वीरुत गाङ्गेयं मन्त्रिमध्ये द्विजवत् ॥ ४२ ॥ मया शाल्व-  
 पतिर्वीर मनसाभिः तः पतिः । न मामर्हसि धर्मज्ञ दातुं द्रात्रेऽन्यमानसाम् ॥ ५० ॥  
 तच्छ्रुत्वा वचनं भीष्मः संमन्त्र्य सह मन्त्रिभिः । निश्चित्य विससज्जेमां सत्यवत्या  
 मते स्तितः ॥ ५१ ॥ अनुज्जाता तु भीष्मेण शाल्वं सौभपतिं ततः । कन्येयं  
 मुदिता तत्र काले वचनमब्रवीत् ॥ ५२ ॥ विसज्जितान्मि भीष्मेण धर्मं मां प्रति-  
 पादय । मनसाभिरुतः पूर्वं मया ह्यं पार्थिववत् ॥ ५३ ॥ प्रत्याचख्यो च शाल्वोऽह-  
 न्याश्चारित्रस्याभिर्शक्तिः । सेयं तपोवनं प्राप्त्वा तापस्येऽभिरता भृशम् ॥ ५४ ॥  
 मया च प्रत्याभिज्जाता वंशस्य परिकीर्तनात् । अन्य दुःखस्य चोत्पत्तिं भीष्ममे-  
 वेह मन्यते ॥ ५५ ॥ अश्वोवाच । भगवन्नेवमेवेह यथाह पृथिवीपतिः । शरी-  
 रकर्ता मातुश्चे सृष्टयो होत्रवाहनः ॥ ५६ ॥ न ह्यस्येह स्वनगरं प्रतिषातुं तपो-  
 धन । अपमानभाटैश्च व्रीडया च महामुने ॥ ५७ ॥ यत्तु मां भगवान्मुनो  
 वक्ष्यति द्विजसन्तम् । तन्मे कार्यतमं कार्यमिति मे भगवन्मतिः ॥ ५८ ॥

इत्युद्योगपर्वणि अश्वोपाख्यानपर्वणि अकृतव्रणाश्वसंवादे षट् सप्त-  
 त्वाधिकशततमोऽध्यायः ॥ ११७ ॥



अकृतव्रण उवाच । दुःखद्वयमिदं भद्रे कतरस्य चिकीर्षसि । प्रतिकर्तव्यमबले  
 तद्वत् वत्से वदस्व मे ॥ १ ॥ यदि सौभपतिर्भद्रे निषोक्तव्यो मत्सुतव । निषो-  
 क्यति महात्मा स रामश्चकितकान्यथा ॥ २ ॥ अथापगेवं भीष्मं तं रामेणे-  
 छसि धीमता । रणे विनिज्जितं द्रुष्टुं कुर्यात्तदापि भार्गवः ॥ ३ ॥ सृष्टवस्य वचः  
 श्रुत्वा तव चैव श्रुचिस्मिते । यदत्र ते भृशं कार्यं तदद्वैव विचिन्त्यताम् ॥ ४ ॥  
 अश्वोवाच । अपनीतान्मि भीष्मेण भगवन्निजानता । नाभिजानाति मे भीष्मो  
 ब्रह्मन् शाल्वगतं मनः ॥ ५ ॥ एतद्विचार्य मनसा भवानेतद्विनिश्चयम् । विचिनोतु  
 यथान्यायं विधानं क्रियतां तथा ॥ ६ ॥ भीष्मे वा कुरुशर्दूले शाल्वराजेऽथ  
 वा पुनः । उभयोरेव वा ब्रह्मन् युक्तं यत्तु समाचर ॥ ७ ॥ निवेदितं मया ह्येत-  
 द्दुःखमूलं यथातथम् । विधानं तत्र भगवन् कर्तुमर्हसि युक्तिः ॥ ८ ॥ अकृतव्रण

উবাচ । উপপন্নমিদং ভদ্রে যদেবং বরবর্ণিনি । ধর্মং প্রতি বচো বৃষাঃ শৃণু চেদং  
 বচো মম ॥ ৯ ॥ যদি হ্যামাপগেযো বৈ ন নযেদাজসাহস্রম্ । শাল্বশ্চ শিরসা  
 ভীরু গৃহীষাদ্রামচোদিতঃ ॥ ১০ ॥ তেন ত্বং নিজ্জিতা ভদ্রে যস্মান্নীতাসি ভাবিনি ।  
 সংশয়ঃ শাল্বরাজস্য তেন ত্বষি সুমধ্যমে ॥ ১১ ॥ ভীষ্মঃ পুরুষমানী চ জিতকাশী  
 তথৈব চ । তস্মাৎ প্রতিক্রিয়া যুক্তা ভীষ্মে কারযিতুং তব ॥ ১২ ॥ অথোবাচ ।  
 মমাপ্যেষ সদা ব্রহ্মন্ হৃদি কামোহ্ভিবর্ততে । যাতযেষং যদি রণে ভীষ্মমিত্যেব  
 নিত্যদা ॥ ১৩ ॥ ভীষ্মং বা শাল্বরাজং বা যং বা দোষণে গচ্ছসি । প্রশাধি তং  
 মহাবাহো যৎকৃতেহং সুদুঃখিতা ॥ ১৪ ॥ ভীষ্ম উবাচ । এবং কথ্যতামেব  
 তেষাং স দিবসো গতঃ । রাত্রিশ্চ ভরতশ্রেষ্ঠ সুখশীতোষ্ণমারুতা ॥ ১৫ ॥ ততো  
 রামঃ প্রান্তরাসীৎ প্রজ্বলমিব তেজসা । শিষ্যৈঃ পরিতো রাজন্ জটাটীরধরো  
 মুনিঃ ॥ ১৬ ॥ ধনুস্পানিরদীনাত্মা খল্লং বিব্রৎ পরশ্বধী । বিরজা রাজশার্দূল  
 সোহভ্যযাৎ সঞ্জয়ং নৃপম্ ॥ ১৭ ॥ ততস্তে তাপসা দৃষ্ট্বা স চ রাজা মহাতপাঃ ।  
 তস্তুঃ প্রাঞ্জলযো রাজন্ সা চ কন্যা তপস্বিনী ॥ ১৮ ॥ পূজযামাসুরব্যগ্রা মধুপ-  
 ক্কেণ ভার্গবম্ । অর্চিতশ্চ যথান্যাযং নিষসাদ সত্বে তৈঃ ॥ ১৯ ॥ ততঃ পূর্বং  
 ব্যতীতানি কথ্যন্তৌ স্ম তাবুভৌ । আসাতাং জামদগ্ন্যশ্চ সঞ্জয়শ্চৈব ভারত ॥ ২০ ॥  
 তথা কথান্তে রাজর্ষিভৃগুশ্রেষ্ঠং মহাবলম্ । উবাচ মধুরং কালে রামং বচনমর্থ-  
 বৎ ॥ ২১ ॥ রামেঘং মম দৌহিত্রী কাশিরাজসুতা প্রভো । অন্যাঃ শৃণু যথা-  
 তত্ত্বং কার্ষ্যং কার্য্যবিশারদ ॥ ২২ ॥ পরমং কথ্যতাক্লেতি তাং রামঃ প্রত্যভা-  
 যত । ততঃ সাত্যাগমদ্রামং জ্বলন্তমিব পাবকম্ ॥ ২৩ ॥ ততোহ্ভিবাদ্য চরণৌ  
 রামস্য শিরসা উভৌ । স্পৃষ্ট্বা পদ্মদলাভাত্যাং পাণিত্যামগ্রতঃ স্থিতা ॥ ২৪ ॥ রু-  
 রোদ সা শোকবতী বাস্পব্যাকুললোচনা । প্রপেদে শরণক্ষেব শরণ্যং ভৃগুন্দ-  
 নম্ ॥ ২৫ ॥ রাম উবাচ । যথা ত্বং সঞ্জয়স্যস্য তথা মে ত্বং নৃপাত্মজে । বৃহি  
 যন্তে মনোদুঃখং করিস্যে বচনং তব ॥ ২৬ ॥ অথোবাচ ॥ ভগবন্ শরণং ত্বদ্য  
 প্রপন্ন স্মি মহাব্রতম্ । শোকপক্ষার্ণবান্নগ্রাং ঘোরাহুঙ্কর মাং বিভো ॥ ২৭ ॥  
 ভীষ্ম উবাচ । তস্যাস্চ দৃষ্ট্বা কপঞ্চ বপুশ্চাভিনবং পুনঃ । সৌকুমার্য্যং পরক্ষেব  
 রামশ্চিত্তাপরোহ্ভবৎ ॥ ২৮ ॥ কিমিষং বক্ষ্যতীত্যেবং বিমমর্ষ ভৃগুদ্বহঃ । ইতি  
 দধ্যৌ চিরং রামঃ রূপযাভি পরিপ্লুতঃ ॥ ২৯ ॥ কথ্যতামিতি সা ভূষো রামেনোক্ত  
 শুচিস্মিতা । সর্বমেব যথাতত্ত্বং কথ্যামাস ভার্গবে ॥ ৩০ ॥ তচ্ছ্রুত্বা জামদগ্ন্যস্ত  
 রাজপুল্য্য বচস্তদা । উবাচ তাং বরারোহাং নিশ্চিত্যার্থবিশিষ্টম্ ॥ ৩১ ॥ রাম

উবাচ । প্রেষয়িষ্যামি ভীষ্মায কুরুশ্রেষ্ঠায ভাবিনি । করিষ্যতি বচো মহৎ শ্রুত্বা চ  
 স নরাধিপঃ ॥ ৩২ ॥ ন চেৎ করিষ্যতি বচো মযোক্তং জাহ্নুবীস্বতঃ । ধক্ষ্যাম্যহং  
 রণে ভদ্রে সামাত্যং শস্ত্রতেজসা ॥ ৩৩ ॥ অথ বা তে মতিস্তত্র রাজপুল্লি নিব-  
 র্ত্ততে । যাবচ্ছাল্পপতিং বীরং যোজ্জ্বাম্যত্র কৰ্ম্মণি ॥ ৩৪ ॥ অশ্বোবাচ । বিস-  
 জ্জিতাহং ভীষ্মেণ শ্রুত্বৈব ভৃগুনন্দন । শাল্বরাজগতং ভাবং মম পূৰ্বং মনীষি-  
 তম্ ॥ ৩৫ ॥ সৌভরাজমুপেত্যাহমবোচং ত্বৰ্জচং বচঃ । ন চ মাং প্রত্যগ্জ্জাৎ  
 স চারিত্রপরিশঙ্কিতঃ ॥ ৩৬ ॥ এতৎ সৰ্বং বিনিশ্চিত্য স্বহৃদ্যা ভৃগুনন্দন । যদ-  
 ত্রৌপায়িকং কার্যং তচ্চিন্তয়িতুমর্হসি ॥ ৩৭ ॥ মম তু ধ্যসনস্যাস্য ভীষ্মো মূলং  
 মহাব্রতঃ । যেনাহং বশমানীতা সমুৎক্ষিপ্য বলাভ্রদা ॥ ৩৮ ॥ ভীষ্মং জহি  
 মহাবাহো যৎকৃতে ত্রুঃখমীদৃশম্ । প্রাপ্তাহং ভৃগুশার্দূল চরাম্যপ্রিয়মুত্তমম্ ॥ ৩৯ ॥  
 স হি লঙ্কশ্চ নীচশ্চ জিতকাশী চ ভার্গব । তস্মাৎ প্রতিক্রিয়া কর্ত্ত্বং যুক্তা তস্মৈ  
 ত্বয়ানঘ ॥ ৪০ ॥ এষ মে ক্রিষমাণাযা ভারতেন তদা বিভো । অভবদ্ধৃদি সঙ্কল্পো  
 যাতযেষং মহাব্রতম্ ॥ ৪১ ॥ তস্মাৎ কামং মনাদ্যেমং রাম সম্পাদয়ানঘ । জহি  
 ভীষ্মং মহাবাহো যথা ব্রতং পুরন্দরঃ ॥ ৪২ ॥

ইত্যুদ্যোগপৰ্বণি অশ্বোপাখ্যানপৰ্বণি রামাশ্বাসংবাদে সপ্তসপ্তত্যধিক-

শততমোঃধ্যায়ঃ ॥ ১৭৭ ॥

—•—

ভীষ্ম উবাচ । এবমুক্তস্তদা রামো জহি ভীষ্মমিতি প্রভো । উবাচ রুদতীং কন্যাং  
 চোদযন্তীং পুনঃপুনঃ ॥ ১ ॥ কাশ্যে ন কামং গচ্ছামি শস্ত্রং বৈ বরবর্গিনি । ঋতে  
 ব্রহ্মবিদাং হেতোঃ কিমন্যৎ করবাণি তে ॥ ২ ॥ বাচা ভীষ্মশ্চ শাল্বশ্চ মম রাজ্জি  
 বশান্নুগৌ । ভবিষ্যতোহনবদ্যাক্ছি তৎ করিষ্যামি মা শুচঃ ॥ ৩ ॥ ন তু শস্ত্রং  
 গ্রহীষ্যামি কথঞ্চিদপি ভাবিনি । ঋতে নিযোগাদ্বিপ্রাণামেব মে সমযঃ কৃতঃ ॥ ৪ ॥  
 অশ্বোবাচ । মম ত্রুঃখং ভগবতা ব্যপনেযং যতস্ততঃ । তচ্চ ভীষ্মপ্রসূতং মে তৎ  
 জহীশ্বর মা চিরম্ ॥ ৫ ॥ রাম উবাচ । কাশিকন্যে পুনব্ৰুহি ভীষ্মস্তে চরণাবুভৌ ।  
 শিরসা বন্দনার্হোহপি গ্রহীষ্যতি গিরা মম ॥ ৬ ॥ অশ্বোবাচ । জহি ভীষ্মং রণে  
 রাম গজ্জন্তুমসুরং যথা । সমাহৃতো রণে রাম মম চেদিচ্ছসি প্রিয়ম্ । প্রতিশ্রুতঞ্চ  
 যদপি তৎ সত্যং কর্ত্তুমর্হসি ॥ ৭ ॥ ভীষ্ম উবাচ । তযোঃ সংবদতোরেবং রা-  
 জনুমাশ্বযোস্তুদা । ঋষিঃ পরমধর্মাভ্যা ইদং বচনমব্রবীৎ । শরণাগতাং মহা-  
 বাহো কন্যাং ন ত্যক্তুমর্হসি ॥ ৮ ॥ যদি ভীষ্মো রণে রাম সমাহৃতস্তথা মৃধে ।

নির্জিতোহস্মীতি বা বুধ্যাৎ কুৰ্ব্যাৎ বাচনং তব ॥ ৯ ॥ কৃতমস্যা ভবেৎ কার্য্যং  
কন্যায়া ভৃগুনন্দন । বাক্যং সত্যঞ্চ তে বীর ভবিষ্যতি কৃতং বিভো ॥ ১০ ॥ ইয-  
ঞ্চাপি প্রতিজ্ঞা তে তদা রাম মহামুনে । জিত্বা বৈ কলিযান্ সর্ষান্ ব্রাহ্মণেষু প্রতি-  
জ্ঞতা ॥ ১১ ॥ ব্রাহ্মণঃ কলিযো বৈশ্যঃ শূদ্রশ্চৈব রণে যদি । ব্রহ্মহিড্ভবিতা তং  
বৈ হনিষ্যামীতি ভার্গব ॥ ১২ ॥ শরণার্থপ্রপন্নানাং ভীতানাং শরণার্থিনাম্ ।  
ন শঙ্ক্যামি পরিত্যাগং কর্ত্বুং জীবন্ কথঞ্চন ॥ ১৩ ॥ যশ্চ কুৎস্নং রণে কলত্রং  
বিজেষ্যতি সমাগতম্ । দৌণ্ডাত্মানমহং তঞ্চ হনিষ্যামীতি ভার্গব ॥ ১৪ ॥ স  
এবং বিজয়ী রাম ভীষ্মঃ কুরুকুলোদ্ধহঃ । তেন যুধ্যস্ব সংগ্রামে সমেত্য ভৃগুন-  
ন্দন ॥ ১৫ ॥ রাম উবাচ । স্মরাম্যহং পূর্বকৃতাং প্রতিজ্ঞামৃষিসত্তম । তথৈব চ  
করিষ্যামি যথা সাত্নৈব লক্ষ্যতে ॥ ১৬ ॥ কার্য্যমেতন্মহদ্বন্ধন কাশিকন্যামনো-  
গতম্ । গমিষ্যামি স্বয়ং তত্র কন্যামাদায যত্র সঃ ॥ ১৭ ॥ যদি ভীষ্মো রণশ্লাঘী  
ন করিষ্যতি মে বচঃ । হনিষ্যাম্যেনমুদ্ভিক্তমিতি মে নিশ্চিতা মতিঃ ॥ ১৮ ॥ ন  
হি বাণা মযোৎসৃষ্টাঃ সজ্জস্তীহ শরীরিণাম্ । কাষেষু বিদিতং তুভ্যং পুরা কলিয-  
সঙ্গরে ॥ ১৯ ॥ এবমুক্ত্বা ততো রামঃ সহ তৈত্রক্বাদিভিঃ । প্রযাণায মতিং  
কৃত্বা সমুত্তস্থৌ মহাতপাঃ ॥ ২০ ॥ ততস্তে তামুষিত্বা তু রজনীং তত্র তাপসাঃ ।  
হতাগ্নযো জপ্তজপ্যাঃ প্রতস্থূর্নজ্জিঘাৎসযা ॥ ২১ ॥ অভ্যগচ্ছততো রামঃ সহ  
তৈত্রক্বাদিভিঃ । কুরুক্ষেত্রং মহারাজ কন্যায়া সহ ভারত ॥ ২২ ॥ ন্যবিশস্ত  
ততঃ সর্বে পরিগৃহ্য সরস্বতীম্ । তাপসাস্তে মহাত্মানো ভৃগুশ্চৈষ্ঠপুরুত্যাঃ ॥ ২৩ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি অম্বোপাখ্যানপর্বণি রামস্য কুরুক্ষেত্রপ্রাপ্তৌ অষ্টমপ্ত-

ত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৭৮ ॥



ভীষ্ম উবাচ । ততস্তৃতীয়ে দিবসে সংদিদেশ ব্যবস্থিতঃ । কুরু প্রিযং স মে  
রাজন্ প্রাপ্তোহস্মীতি মহাত্রত ॥ ১ ॥ তমাগতমহং শ্রুত্বা বিষয়ান্তং মহাব-  
লম্ । অভ্যগচ্ছং জবেনাশু প্রীত্যা তেজোনিধিং প্রভুম্ ॥ ২ ॥ গাং পুরস্কৃত্য  
রাজেশ্ব ব্রাহ্মণৈঃ পরিবারিতঃ । ঋত্বিগ্নির্দেবকল্লৈশ্চ তথৈব চ পুরোহিতৈঃ ॥ ৩ ॥  
স মামভিগতং দৃষ্ট্বা জামদগ্ন্যঃ প্রতাপবান্ । প্রতিজগ্রাহ তাং পূজাং বচনঞ্চৈদম-  
ব্রবীৎ ॥ ৪ ॥ রাম উবাচ । ভীষ্ম কাং বুদ্ধিমাস্থায কাশিরাজসুতা তদা । অকা-  
মেন ত্বয়া নীতা পুনশ্চৈব বিসর্জিতা ॥ ৫ ॥ বিভ্রংশিতা ত্বয়া হীযং ধর্ম্মাদাস্তে  
যশস্বিনী । পরামৃষ্টাং ত্বয়া হীমাং কো হি গন্তুমিহার্হতি ॥ ৬ ॥ প্রত্যাখ্যাতা

हि शान्तेन ह्यथा नीतेति भारत । तन्मादिमां मन्त्रियोगां प्रतिगृहीष्व भारत ॥१॥  
 स्वधर्मं पुरुषव्यात्र राजपुत्री लभस्वियम् । न युक्तस्त्ववमानो ह्ययं राजन् कर्तुं ह्यवा-  
 नय ॥ ८ ॥ ततस्तं वै विमनसमुदीक्याहमथाक्रवम् । नाहमेनां पुनर्दद्यां  
 त्रक्नन् त्रात्रे कथञ्चन ॥ ९ ॥ शान्तस्यार्हमिति प्राह पुरा मामेव भार्गव । मया-  
 तैवात्मानुज्जाता गतेयं नगरं प्रति ॥ १० ॥ न भयाम्नाप्यनुक्रोशान्नाथलोभाम्  
 काम्यथा । क्षालं धर्ममहं जहामिति मे व्रतमाहितम् ॥ ११ ॥ अथ मामब्रवी-  
 द्रामः क्रोधपर्याकुलेक्षणः । न करिष्यसि चेदेतद्वाक्यं मे नरपुङ्गव ॥ १२ ॥  
 हनिष्यामि सहानात्यं ह्यामद्येति पुनःपुनः । संरुन्तादब्रवीद्रामः क्रोधपर्या-  
 कुलेक्षणः ॥ १३ ॥ तमहं गीर्भिरिष्ठाभिः पुनःपुनरिन्दम । अथाचं भृश-  
 शार्दूलं न तैव प्रशशाम सः ॥ १४ ॥ प्रथम्य तमहं युक्त्वा भूयो ब्राह्मणसद्व्रमम् ।  
 अक्रवं कारणं किन्तुद्वयं युद्धं मयेच्छसि ॥ १५ ॥ ईष्वस्त्रं मम बालस्य भवतैव  
 चतुर्विधम् । उपदिष्टं महाबाहो शिष्योऽस्मि तव भार्गव ॥ १६ ॥ ततो माम-  
 ब्रवीद्रामः क्रोधसंरुक्तलोचनः । जानीषे मां गुरुं तीम्न गृह्णामीमां न तैव  
 ह ॥ १७ ॥ सूतां काश्यप्य कौरव्य मत्प्रियार्थं महामते । न हि मे विद्यते  
 शान्तिरन्यथा कुरूनन्दन ॥ १८ ॥ गृह्णाणेमां महाबाहो रक्षस्व कुलमात्मनः । ह्यथा  
 विप्रंशिता हीयं तर्त्तारं नाधिगच्छति ॥ १९ ॥ तथा क्रवन्तं तमहं रामं पर-  
 पुरण्वयम् । नैतदेव पुनर्भावि त्रक्कर्ये किं श्रमेण ते ॥ २० ॥ गुरुह्यं ह्यसि सं-  
 प्रेक्ष्य ज्ञानदग्न्य पुरातनम् । प्रसादये ह्यं भगवंस्त्यक्तैषा तु पुरा मया ॥ २१ ॥  
 को जातु परभावां हि नारीं ब्यालीमिव स्थिताम् । वासयेत गृहे जानन् स्त्रीणां  
 दोषो महात्ययः ॥ २२ ॥ न भयाद्वासवस्यापि धर्मं जहां महाव्रत । प्रसीद  
 मां वा यद्वा ते कार्यं तं कुरु मा चिरम् ॥ २३ ॥ अवष्ठापि विशुद्धात्मान् पुराणे  
 क्रयते विभो । मरुत्तेन महाबुद्धे गीतः श्लोको महात्मना ॥ २४ ॥ गुरोरप्यबलि-  
 पुत्रस्य कार्यकार्यमजानतः । उत्पथप्रतिपन्नस्य परित्यागो विधीयते ॥ २५ ॥  
 स ह्यं गुरुरिति प्रेम्णा मया सम्मानितो भूषम् । गुरुवृत्तिं न जानीषे तन्मादोष-  
 स्यामि वै ह्यथा ॥ २६ ॥ गुरुं न हन्यां समरे ब्राह्मणं विशेषतः । विशेषत-  
 स्तपोरुद्धमेव क्षास्त्रं मया तव ॥ २७ ॥ उद्यतेषुमथो द्रुपदा ब्राह्मणं क्षत्रव-  
 क्तवत् । यो हन्यां समरे क्रुद्धं युध्यस्तमपलायिनम् ॥ २८ ॥ त्रक्कहत्या न तस्य  
 स्यादिति धर्मेषु निश्चयः । क्षत्रियाणां स्थितो धर्मो क्षत्रियोऽस्मि तपोधन ॥ २९ ॥  
 यो यथा वर्तते यस्मिंस्तथातस्मिन् प्रवर्तयन् । नाधर्मं समवाप्नोति न चाश्रेयश्च

বিন্ধতি ॥ ৩০ ॥ অর্থে বা যদি বা ধর্ম্মে সমর্থো দেশকালবিৎ । অর্থসংশয়মা-  
পন্নঃ শ্রেয়ান্নিঃসংশয়ো নরঃ ॥ ৩১ ॥ যস্মাৎ সংশযিতেহপ্যর্থেষু স্থান্যান্যায়ং প্রব-  
র্ত্তসে । তস্মাদ্ভ্যোৎস্যামি সহিতস্ত্বয়া রাম মহাহবে । পশ্য মে বাহুবীৰ্য্যঞ্চ বিক্র-  
মঞ্চাতিমানুষম্ ॥ ৩২ ॥ এবংগতেহপি তু ময়া যচ্ছক্যং তৃণ্ডনন্দন । তৎ করিষ্যে  
কুরুক্ষেত্রে যোৎস্যে বিপ্র ত্বয়া সহ ॥ ৩৩ ॥ দ্বন্দ্বৈ রাম যথেষ্টং সজ্জীভব মহা-  
দ্র্যতে । যত্র ত্বং নিহতো রাম ময়া শরশতাদিতঃ । প্রাপ্যসে নিজ্জিতাল্লোকান্  
শস্ত্রপূতো মহারণে ॥ ৩৪ ॥ স গচ্ছ বিনিবর্ত্তস্ব কুরুক্ষেত্রং রণপ্রিয়ম্ । তত্রৈষ্যামি  
মহাবাহো যুদ্ধায় ত্বাং তপোধন ॥ ৩৫ ॥ অপি যত্র ত্বয়া রাম ক্রুতং শৌচং পুরা  
পিতুঃ । তত্রাহমপি হত্বা ত্বাং শৌচং কর্ত্তাম্মি তাগব । ৩৬ ॥ তত্র রাম সমাগচ্ছ  
ত্বরিতং যুদ্ধদ্রুমদ । ব্যপনেষ্যামি তে দর্পং পৌরাণং ব্রাহ্মণক্রব ॥ ৩৭ ॥ যচ্চা-  
পি কথসে রাম বহুশঃ পরিবৎসরে । নিজ্জিতাঃ ক্ষত্রিয়া লোকে মথৈকেনেতি  
তচ্চণু ॥ ৩৮ ॥ ন তদা জাতবান্ ভীষ্মঃ ক্ষত্রিয়ো বাপি মদ্বিধঃ । পশ্চাজ্জাতানি  
তেজাংসি তৃণেষু জ্বলিতং ত্বয়া ॥ ৩৯ ॥ যন্তে যুদ্ধময়ং দর্পং কামঞ্চ ব্যপনাশযেৎ ।  
সোহহং জাতো মহাবাহো ভীষ্মঃ পরপুরঞ্জয়ঃ । ব্যপনেষ্যামি তে দর্পং যুদ্ধে রাম  
ন সংশয়ঃ ॥ ৪০ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি অম্বোপাখ্যানপর্বনি ভীষ্মবাক্যে একোনাশীত্যধিক-

শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৭৯ ॥



ভীষ্ম উবাচ । ততো মামত্রবীড়ামঃ প্রহসন্নিব ভারত । দিষ্ঠ্যা ভীষ্ম ময়া সাক্ষং  
যোদ্ধুমিচ্ছসি সঙ্গরে ॥ ১ ॥ অয়ং গচ্ছামি কৌরব্য কুরুক্ষেত্রং ত্বয়া সহ । ভাষিতং  
তে করিষ্যামি তত্র গচ্ছ পরস্তপ ॥ ২ ॥ তত্র ত্বাং নিহতং মাতা ময়া শরশতা-  
ন্বিতম । জাহ্নবী পশ্যতাং ভীষ্ম গৃধ্রককবলাশনম্ ॥ ৩ ॥ রূপণং ত্বামভিপ্রেক্ষ্য  
সিদ্ধচারণসেবিতা । ময়া বিনিহতং দেবী রোদতামদ্য পার্থিব ॥ ৪ ॥ অতদর্হা  
মহাভাগা ভগীরথসুতা নদী । যা ত্বামজীজনম্মন্দং যুদ্ধকামুকমাতুরম্ ॥ ৫ ॥  
এহি গচ্ছ ময়া ভীষ্ম যুদ্ধকামুক দ্রুমদ । গৃহাণ সর্বং কৌরব্য রথাদি ভরতর্ষভ ॥ ৬ ॥  
ইতি ক্রবাণং তমহং রামং পরপুরঞ্জয়ম্ । প্রণম্য শিরসা রামমেবনস্ত্রিত্যাথা-  
ক্রবম্ ॥ ৭ ॥ এবমুক্ত্বা যথৌ রামঃ কুরুক্ষেত্রং যুযুৎসয়া । প্রবিশ্য নগরঞ্চাহং  
সত্যবতৌ ন্যবেদযম্ ॥ ৮ ॥ ততঃ ক্রুতস্বস্ত্যযনো মাত্রা চ প্রতিনন্দিতঃ । দ্বিজা-  
তীন্ বাচ্য পুণ্যাহং স্বস্তি টৈব মহাদ্র্যতে ॥ ৯ ॥ রথমাস্থায় রুচিরং রাজতং পাণ্ডু



रैर्हथैः । सृपकरं स्वधिष्ठानं वैयात्रपरिवारणम् ॥ १० ॥ उपपन्नं महाशत्रैः  
 सर्वोपकरणाश्रितम् । तत्कुलीनेन वीरेण ह्यशास्त्रविदा रणे । यत्तं सृतेन  
 शिष्टेन बहूशो दृष्टकर्मणा ॥ ११ ॥ दंशितः पाण्डुरेणाहं कवचेन धनुश्चता ।  
 पाण्डुरं कार्मुकं गृह्य प्रायां भरतसन्तम ॥ १२ ॥ पाण्डुरेणातपत्रेण ध्रियमाणेन  
 मूर्ध्नि । पाण्डुरैश्चापि व्यजनैर्वीज्यमानो नराधिप ॥ १३ ॥ शुक्रावासाः सितो-  
 ष्ठीषः सर्वशुक्राविभूषणः । सुयमानो जयाशीर्तिर्निष्कृत्य गजसाहसया ॥ कुरूक्षेत्रं  
 रणक्षेत्रमुपायां भरतवर्षत ॥ १४ ॥ ते ह्यश्वेष्टादितान्तेन सृतेन परमाहवे ।  
 अवहन्त्यां भृशं राजन् मनोमारुतरं हसः ॥ १५ ॥ गद्वाहस्तं कुरूक्षेत्रं स च  
 रामः प्रतापवान् । युद्धाय सहसा राजन् पराक्रान्तौ परस्परम् ॥ १६ ॥ ततः  
 सम्पर्शने तिष्ठन् रामस्यातितपस्विनः । प्रगृह्य शङ्खप्रवरं ततः प्राथममुत्तमम् ॥ १७ ॥  
 ततस्तत्र द्विजा राजसुतापसाश्च वनौकसः । अपश्यन्त रणं दिव्यं देवाः सैन्द्र-  
 गणास्तदा ॥ १८ ॥ ततो दिव्यानि माल्यानि प्रादुरासंस्तुतस्ततः । बादित्वाणि च  
 दिव्यानि मेघरन्धानि चैव ह ॥ १९ ॥ ततस्ते तापसाः सर्वे भार्गवस्यानुयायिनः ।  
 प्रेक्षकाः समपद्यन्त परिवार्य रणार्जिरम् ॥ २० ॥ ततो मामत्र वीदेवौ सर्व-  
 भूतहितैषिणी । माता स्वर्कपिनी राजन् किमिदं ते चिकीर्षितम् ॥ २१ ॥ गद्वाहं  
 जामदग्न्यस्तु प्रयाचिष्ये कुरूदह । भीष्मेण सह मा योत्सीः शिष्येणेति पुनः-  
 पुनः ॥ २२ ॥ मा मैवं पुल्ल निद्वन्द्वं कुरू विप्रेण पार्थिव । जामदग्न्येन समरे  
 योद्धुं मामित्यभत्सय ॥ २३ ॥ किम् वै क्लिष्यहणे हरतुल्यपराक्रमः । वि-  
 दितः पुल्ल रामस्ते यतस्तं योद्धुमिच्छसि ॥ २४ ॥ ततोहहमक्रुवन् देवीमतिवाद्य  
 कृताञ्जलिः । सर्वं तद्वरतश्रेष्ठ यथावद्वत् स्वयम्भरे ॥ २५ ॥ यथा च रामो राजेन्द्र  
 मया पूर्वं प्रचोदितः । काशिराज सुतायाश्च यथा कर्म पुरातनम् ॥ २६ ॥ ततः  
 सा राममतेत्य जननी मे महानदी । मदर्थं तमूषिं देवी क्रमयामास भार्गवम् ।  
 भीष्मेण सह मा योत्सीः शिष्येणेति वचोह्रववी ॥ २७ ॥ स तु तामाह याचस्त्यीं  
 तीष्णमेव निवर्तय । न च मे कुरूते काममित्यहस्तमुपागमम् ॥ २८ ॥ वैशम्पा-  
 यन उवाच । ततो गङ्गा सूतस्नेहास्त्यीष्णं पुनरुपागमत् । न चास्याश्चाकरोद्वाक्यं  
 क्रोधपर्याकुलेक्षणः ॥ २९ ॥ अथादृश्यत धर्मात्मा भृशुश्रेष्ठो महातपाः । आस्र-  
 यामास च तदा युद्धाय द्विजसन्तमः ॥ ३० ॥

इत्युद्योगपर्वणि अष्टोपाख्यानपर्वणि गङ्गावाक्ये अशीत्यधिक-

शततमोऽध्यायः ॥ १८० ॥

तीर्थ उवाच । तमहं श्रमिन्निव रणे प्रत्यभाषं व्यवस्थितम् । भूमिर्भूतं नोत्सहे  
 योद्धुं भवन्तुं रथमास्थितः ॥ १ ॥ आरोह स्यन्दनं वीर कवचं महाभुज ।  
 बधान समरे राम यदि योद्धुं मयेच्छसि ॥ २ ॥ ततो मामत्रवीजामः श्रममानो  
 रणाजिरे । रथो मे मेदिनी तीर्थ बाहा वेदाः सदश्ववत् ॥ ३ ॥ सूतश्च मात-  
 रिश्चा वै कवचं वेदमातरः । सुसंव्रीतो रणे ताभिर्घोत्स्येत्सहं कुरूनन्दन ॥ ४ ॥  
 एवं क्रावाणो गान्धारे रामो मां सत्यविक्रमः । शरव्रातेन महता सर्वतः प्रत्य-  
 वारयत् ॥ ५ ॥ ततोऽपश्यं जामदग्न्यं रथमध्ये व्यवस्थितम् । सर्वायुधवरे श्रीम-  
 त्यद्भुतोपमदर्शने ॥ ६ ॥ मनसा विहिते पुण्ये विस्तीर्णे नगरौपमे । दिव्याश्व-  
 युजि संनद्धे काष्ठीनेन विभूषिते । कवचेन महाबाहो सोमार्ककृतलक्षणे ॥ ७ ॥  
 धनुर्द्धरो बद्धतूणो बद्धगोधाङ्गुलिवान् । सारथ्यं कृतवांसुत्र युयुत्सो ररुत-  
 त्रणः । सखा वेदविदत्यस्तुं दधितो भार्गवस्य ह ॥ ८ ॥ आश्रयानः स मां युद्धे  
 मनो हर्षयतीव मे । पुनःपुनरभिक्रोशन्नभिषाहीति भार्गवः ॥ ९ ॥ तमा-  
 दित्यमिवोद्यस्तमनाध्वयं महाबलम् । क्षत्रियान्तकरं राममेकमेकः समांस-  
 दम् ॥ १० ॥ ततोऽहं वाणपातेषु त्रिषु बाहान्निगृह्य वै । अवतीर्य धनुर्न्यस्य  
 पदातिर्ध्वंसित्तमम् ॥ ११ ॥ अत्यगच्छं तदा राममर्चिष्यान् द्विजसत्तमम् । अभि-  
 वाद्य तैः च विधिवदक्रवं वाक्यमुत्तमम् ॥ १२ ॥ घोत्स्ये त्वया रणे राम सदृशे-  
 नाधिकेन वा । गुरुणा धर्मशीलेन जयमाशास्व मे विभो ॥ १३ ॥ राम उवाच ।  
 एवमेतत् कुरूश्रेष्ठ कर्तव्यं भूतिमिच्छता । धर्मो ह्येष महाबाहो विशिष्टैः सह  
 युध्यताम् ॥ १४ ॥ शपेयं त्वां न चेदेवमागच्छेथा विशाम्पते । युध्यस्व त्वं  
 रणे यतो धैर्यमालय्य कौरव ॥ १५ ॥ न तु ते जयमाशासे त्वां विजेतुमहं  
 स्थितः । गच्छ युध्यस्व धर्मैर्न प्रीतोऽस्मि चरितेन ते ॥ १६ ॥ ततोऽहं तं नम-  
 स्कृत्य रथमारुह्य सत्वरः । प्राध्यापयं रणे शश्वत् पुनर्हेमपरिष्कृतम् ॥ १७ ॥ ततो  
 युद्धं समभवन्मम तस्य च भारत । दिवसान् सुवहून् राजन् परम्परजिगीषया ॥ १८ ॥  
 स मे तस्मिन्ने पुर्नं प्राहरत् कक्षपत्रिभिः । षट्या शतैश्च नवभिः शरणात् नत-  
 पर्वणाम् ॥ १९ ॥ चत्वारस्तु न मे बाहाः सूतश्चैव विशाम्पते । प्रतिरुद्धस्तथैवाहं  
 समरे दंशितः स्थितः ॥ २० ॥ नमस्कृत्य च देवेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विशेषतः ।  
 तमहं श्रमिन्निव रणे प्रत्यभाषं व्यवस्थितम् ॥ २१ ॥ आचार्यता मानिता मे निर्म-  
 र्यादे ह्यपि त्वयि । भूयश्च शृणु मे ब्रह्मन् सम्पदं धर्मसंग्रहे ॥ २२ ॥ ये ते  
 वेदाः शरीरश्च ब्राह्मण्यं यच्च ते महत् । तपश्च ते महत्तपुं न तेभ्यः प्रहरा-

ম্যহম্ ॥ ২৩ ॥ প্রহরে ক্লত্রধর্মস্য যঃ স্বঃ রাম সমাশ্রিতঃ । ব্রাহ্মণঃ ক্লত্রিয়স্বঃ  
 হি ষাতি শস্ত্রসমুদ্যমাৎ ॥ ২৪ ॥ পশ্য মে ধনুষো বীর্য্যৎ পশ্য বাস্বোর্বলং  
 মম । এষ তে কার্ম্মকং বীর ছিনদ্বি নিশিতেষুণা ॥ ২৫ ॥ তস্যাহং নিশিতং  
 ভল্লং চিক্ষেপ ভরতর্ষভ । তেনাস্য ধনুষঃ কোটিং ছিদ্বা ভূমাবপাতযম্ ॥ ২৬ ॥  
 তথৈব চ পৃষৎকানাং শতানি নতপর্ষণাম্ । চিক্ষেপ কল্পপত্রাণাং জামদগ্ন্যরথং  
 প্রতি ॥ ২৭ ॥ কাযে বিষক্তাস্তু তদা বায়ুনা সমুদীরিতাঃ । চেলুঃ ক্ষরন্তো রুধিরং  
 নাগা ইব চ তে শরাঃ ॥ ২৮ ॥ ক্ষতজোক্কিতসর্বাঙ্গঃ ক্ষরন্ স রুধিরং রণে । বভৌ  
 রামস্তদা রাজন্ নেরুর্ধাতুমিবোৎসৃজন ॥ ২৯ ॥ হেমস্তান্তেঃশোক ইব রক্তস্ত-  
 বকর্ম্মণ্ডিতঃ । বভৌ রামস্তথা রাজন্ প্রফুল্ল ইব কিংশুকঃ ॥ ৩০ ॥ ততোহন্যদ্বনু-  
 রাদায রামঃ ক্রোধসমম্বিতঃ । হেমপুঙ্খান্ সূনিশিতান্ শরাংস্তান্ হি ববর্ষ  
 সঃ ॥ ৩১ ॥ তে সমাসাদ্য মাং রৌদ্রা বহুধা মর্ষ্মভেদিনঃ । অকম্পযন্ মহাবেগাঃ  
 সর্পানলবিষোপমাঃ ॥ ৩২ ॥ তমহং সমবচ্চভ্য পুনরাহ্বানমাহবে । শতসংখ্যেঃ  
 শরৈঃ ক্রুদ্ধস্তদা রামনবাকিরন্ ॥ ৩৩ ॥ স তৈরগ্ন্য সিসঙ্কশেঃ শরৈরাশীবিষো-  
 পমৈঃ । শিতৈরভ্যর্দিতো রানো মন্দচেতা ইবাভবৎ ॥ ৩৪ ॥ ততোহহং রূপ-  
 যাবিক্টো বিচ্চভ্যাহ্বানমাহ্বনা । ষিঙ্খিগিত্যক্রবং যুদ্ধং ক্লত্রধর্ম্মঞ্চ ভারত ॥ ৩৫ ॥  
 অসরুচ্চাক্রবং রাজন্ শোকবেগপরিপ্লুতঃ । অহো বত ক্লতং পাপং মযেদং ক্লত্র-  
 ধর্ম্মণা ॥ ৩৬ ॥ গুরুর্দ্বিজাতিধর্ম্মাত্মা বদযং পীড়িতঃ শরৈঃ । ততো ন প্রাহরং  
 ভূযো জামদগ্ন্যায ভারত ॥ ৩৭ ॥ অথাবতপ্য পৃথিবীং পৃষা দিবসসংক্ষয়ে ।  
 জগামাস্তং সহস্রাংশুস্ততো যুদ্ধমুপারমৎ ॥ ৩৮ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্ষণি অষোপাখ্যানপর্ষণি রামভীষ্মযুদ্ধে একাশীত্যধিক-

শততমোঃধ্যায়ঃ ॥ ১৮১ ॥

ভীষ্ম উবাচ । আত্মনস্ত ততঃ সূতো হযানাঞ্চ বিশাম্পতে । মম চাপনযামাস  
 শল্যান্ কুশলসংমতঃ ॥ ১ ॥ স্নাতোপরুতৈস্তুরগৈলঙ্কতোষৈরবিহ্বলৈঃ । প্রভাতে  
 চোদিতৈ সূর্য্যে ততো যুদ্ধমবর্তত ॥ ২ ॥ দৃষ্ট্বা মাং তূণমাযান্তং দংশিতং স্যন্দ-  
 নে স্থিতম্ । অকরোদ্রথমত্যাথং রামঃ সজ্জং প্রতাপবান্ ॥ ৩ ॥ ততোহং রাম-  
 মাযান্তং দৃষ্ট্বা সমরকাজ্জিগম । ধনুঃশ্রেষ্ঠং সমুৎসৃজ্য সহসাবতরং রথাৎ ॥ ৪ ॥  
 অভিবাদ্য তথৈবাহং রথমারুহ ভারত । যুযুৎসুজ্জামদগ্ন্যস্য প্রমুখে বীতভীঃ  
 স্থিতঃ ॥ ৫ ॥ ততোহহং শরবর্ষণে মহতা সমবাকিরম । স চ মাং শরবর্ষণে

বর্ষস্তং সমবাকিরং ॥ ৬ ॥ সঃ ক্রুদ্ধো জামদগ্ন্যস্ত পুনরেব স্মৃতেজিতান্ । সৎপ্র-  
 ষীন্মে শরান্ যোরান্ দীপ্তাস্যানুরগানিব ॥ ৭ ॥ ততোহহং নিশিতৈর্ভল্লৈঃ  
 শতশোহথ সহস্রশঃ । অচ্ছিদং সহসা রাজন্নন্তরীক্ষে পুনঃ পুনঃ ॥ ৮ ॥ ততস্ত্বানি  
 দিব্যানি জামদগ্ন্যঃ প্রতাপবান্ । মযি প্রযোজযামাস তান্যহং প্রত্যষেধযম্ ॥ ৯ ॥  
 অস্ত্রেণেব মহাবাহো চিকীর্ষমধিকাং ক্রিয়াম্ । ততো দিবি মহান্নাদঃ প্রাত্ত্বরাসীৎ  
 সমন্ততঃ ॥ ১০ ॥ ততোহহমস্তং বাঘব্যং জামদগ্ন্যে প্রযুক্তবান্ । প্রত্যাজস্মে  
 চ তদ্রামো গুহ্যকাস্ত্রেণ ভারত ॥ ১১ ॥ ততোহহমস্তমাগ্নেযমনু মস্ত্য প্রযুক্তবান্ ।  
 বারুণেনৈব তদ্রামো বারযামাস মে বিভূঃ ॥ ১২ ॥ এবমস্তানি দিব্যানি রাম-  
 স্যাহমবারযম্ । রামশ্চ মম তেজস্বী দিব্যাস্ত্রবিদরিন্দমঃ ॥ ১৩ ॥ ততো মাং  
 সব্যতো রাজন্ রামঃ কুর্ষন্ দ্বিজোত্তমঃ । উরন্যবিধ্যং সৎক্রুদ্ধো জামদগ্ন্যঃ প্রতা-  
 পবান্ ॥ ১৪ ॥ ততোহহং ভরতশ্রেষ্ঠ সংন্যসীদং রথোত্তমে । ততো মাং কশ্ম-  
 লাবিক্তং স্মৃতস্তুর্গমুদাবহং ॥ ১৫ ॥ গ্নাঘন্তং ভরতশ্রেষ্ঠ রামবাণপ্রপীড়িতম্ ।  
 ততো নামপঘাতং বৈ ভৃগুবিদ্ধমচেতসম্ ॥ ১৬ ॥ রামস্যানুচরা হৃক্টাঃ সর্বে দৃষ্টা  
 বিচুক্ৰশুঃ । অক্লতব্রণপ্রভৃত্যঃ কাশিকন্যা চ ভারত ॥ ১৭ ॥ ততস্ত্ব লক্ষসংজ্ঞো-  
 হহং স্ত্রোহ্বা স্মৃতমথাক্রবম্ । যাহি স্মৃত যতো রামঃ সজ্জোহহং গতবেদনঃ ॥ ১৮ ॥  
 ততো মামবহং স্মৃতো হৃষৈঃ পরমশোভিতৈঃ । নৃত্যন্দিরিব কৌরব্য মারুতপ্রতি-  
 নৈর্গতো ॥ ১৯ ॥ ততোহহং রামনাসাদ্য বাণবৃষৈশ্চ কৌরব । অবাকিরং সুসং-  
 রক্ণঃ সংরক্ণঞ্চ জিগীষযা ॥ ২০ ॥ তানাপতত এবাসৌ রামো বাণানজিহ্বগান্ ।  
 বাণৈরেবাচ্ছিনত্বূর্ণনৈকৈকং ত্রিভিরাহবে ॥ ২১ ॥ ততস্তে স্মৃদিতাঃ সর্বে মম  
 বাণাঃ স্মদংশিতাঃ । রামবাণৈর্দ্বিধাচ্ছিন্নাঃ শতশোহথ সহস্রশঃ ॥ ২২ ॥ ততঃ  
 পুনঃ শরং দীপ্তং সুপ্রভং কালসংগিতম্ । অদৃজং জামদগ্ন্যায় রানাযাহং জিঘাৎ-  
 সযা ॥ ২৩ ॥ তেন ত্বভিহতো গাঢং বাণবেগবশং গতঃ । মুমোহ সমরে রামো  
 ভূমৌ চ নিপপাত হ ॥ ২৪ ॥ ততো হাহাক্রুতং সঙ্গং রামে ভুতলমাশ্রিতে । জগ-  
 ন্তারত সংবিগ্নং যথার্কপতনে ভবেৎ ॥ ২৫ ॥ তত এনং সমুদ্বিগ্নাঃ সর্ব এবাভিহুঃ ।  
 তপোধনাস্তে সহসা কাশ্যা চ কুরুনন্দন ॥ ২৬ ॥ তত এনং পরিষজ্য শনৈরাশ্বা-  
 সযৎসুদা । পানিভির্জ্বলশীতৈশ্চ জযাশীতিশ্চ কৌরব ॥ ২৭ ॥ ততঃ স বিশ্বলং  
 বাক্যং রাম উথায় চাত্রবীৎ । তিষ্ঠ ভীষ্ম হতোহসীতি বাণং সন্ধায় কার্মকে ॥ ২৮ ॥  
 স মুক্ণো ন্যপতত্বূর্ণং সবে্য পাশ্বে মহাহবে । যেনাহং ভৃগুমুদ্বিগ্নো ব্যাঘূর্ণিত  
 ইব ক্রমঃ ॥ ২৯ ॥ হ্বা হ্বাংস্ততো রামঃ শীঘ্রাস্ত্রেণ মহাহবে । অবাকিরমাং

বিশ্রুকো বাট্ঠৈস্তুলোমবাহিতিঃ ॥ ৩০ ॥ ততোহহমপি শীঘ্রাস্ত্রং সমরপ্রতিবা-  
 রণম্ । আবাসৃজং মহাবাহো তেহস্তুরাধিষ্ঠিতাঃ শরাঃ । রামস্য মম টেবাস্তু  
 ব্যোমারত্য সমস্ততঃ ॥ ৩১ ॥ ন স্ম সূর্য্যঃ প্রতপতি শরজালসমাহৃতঃ । মাতরিশ্বা  
 ততস্তশ্মিম্ মেঘরুদ্ধ ইবাতবৎ ॥ ৩২ ॥ ততো বাঘোঃ প্রকম্পাচ্চ সূর্য্যস্য চ গভস্তিতিঃ ।  
 অতিঘাতপ্রভাবাচ্চ পাবকঃ সমজায়ত ॥ ৩৩ ॥ তে শরাঃ স্বসমুখে ন প্রদীপ্তাশ্চি-  
 ত্তভানুনা । ভূমৌ সর্বে তদা রাজন্ ভস্মভূতাঃ প্রপেদিরে ॥ ৩৪ ॥ তদা শতসহ-  
 স্রাণি প্রযুতান্যর্ধুদানি চ । অযুতান্যথ খর্বাণি নিখর্বাণি চ কৌরব । রামঃ শ-  
 রাণাং সংক্রুদ্ধো মযি তুর্গং ন্যপাতযৎ ॥ ৩৫ ॥ ততোহহং তানপি রণে শঠৈ-  
 রাশীবিষোপমৈঃ । সংছিন্দ্য ভূমৌ নৃপতে পাতঘেষং নগানিব ॥ ৩৬ ॥ এবং  
 তদভবদ্বন্ধুং তদা ভরতসত্তম । সন্ধ্যাকালে ব্যতীতে তু ব্যপাষাৎ স চ মে  
 গুরুঃ ॥ ৩৭ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্ব্বণি অষোপাখ্যানপর্ব্বণি রামভীষ্মযুদ্ধে দ্ব্যশীত্যধিক-  
 শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৮২ ॥

—•••—

ভীষ্ম উবাচ । সমাগতস্য রামেণ পুনরেবাতিদারুণম্ । অনেচ্যাস্তমূলং যুদ্ধং  
 তদা ভরতসত্তম ॥ ১ ॥ ততো দিব্যাস্ত্রবিচ্ছুরো দিব্যান্যস্ত্রাণ্যনেকশঃ । অযো-  
 জযৎ স ধর্ম্মাত্মা দিবসে দিবসে বিভুঃ ॥ ২ ॥ তান্যহং তৎপ্রতীঘাতৈরস্ত্রৈরস্ত্রাণি  
 ভারত । ব্যধমস্তমূলে যুদ্ধে প্রাণাংস্ত্যক্ত্বা স্তুভ্ৰুস্ত্যজান্ ॥ ৩ ॥ অস্ত্রৈরস্ত্রেষু বহুধা  
 হতেষেব চ ভারত । অযুধ্যত মহাতেজাস্ত্যক্তপ্রাণঃ স সংযুগে ॥ ৪ ॥ ততঃ শক্তিং  
 প্রাহিণোদ্ধোরুপামস্ত্রে রুদ্ধে জামদগ্ন্যো মহাত্মা । কালোৎসৃষ্টাং প্রজ্বলিতা-  
 মিবোদ্ধাৎ সংদীপ্তাগ্রাং তেজসা ব্যাপ্য লোকম্ ॥ ৫ ॥ ততোহহস্তামিষুভির্দীপ্য-  
 মানাং সমাযান্তীমন্তুকালার্কদীপ্তাম্ । ছিত্বা ত্রিধা পাতন্নামাস ভূমৌ ততো ববৌ  
 পবনঃ পুণ্যগন্ধিঃ ॥ ৬ ॥ তস্যাত্ং ছিন্নাষাং ক্রোধদীপ্তোহথ রামঃ শক্তীর্ধোরাঃ  
 প্রাহিণোদ্ধাদর্শান্যাঃ । তাসাং রূপং ভারত নোত শক্যং তেজস্বিত্বান্নাঘবাচৈব  
 বক্তুম্ ॥ ৭ ॥ কিংবাহং বিহ্বলঃ সংপ্রদৃশ্য দিগ্ভ্যঃ সর্বাঙ্গা মহোদ্ধা ইবাগ্নেঃ ।  
 নানারূপাস্তেজসোগ্রেন দীপ্তা যথাদিত্যা দ্বাদশ লোকসংক্রয়ে ॥ ৮ ॥ ততো  
 জ্বালং বাণমযং বিরক্তং সংদৃশ্য ভিত্ত্বা শরজালে ন রাজন্ । দ্বাদশেষুন্ প্রাহিণবৎ  
 রণেহহং ততঃ শক্তীরপ্যধমং ঘোররূপাঃ ॥ ৯ ॥ ততো রাজন্ জামদগ্ন্যো মহাত্মা  
 শক্তীর্ধোরা ব্যাক্ষিপদ্বেন্দগাঃ । বিচিত্রিতাঃ কাঞ্চনপটনজ্জা যথা মহোদ্ধা জ্বলি-

तास्तथा ताः ॥ १० ॥ ताश्चाप्युग्रान्शर्मणा वारयित्वा खल्लेनाज्ज्ञौ पातयित्वा नरेन्द्र ।  
वाणैर्दिव्यैर्जामदग्र्यस्य संख्ये दिव्यान्श्वानभ्यवर्षं समृतान् ॥ ११ ॥ निष्कूलानां  
पन्नगानां सकृप। दृष्ट्वा शक्तीर्हेमचित्रा निरुन्ताः । प्रादुश्चक्रे दिव्यमस्तुं महाश्वान्ना  
क्रोधाविष्टो हैह्येशप्रमाथी ॥ १२ ॥ ततः श्रेण्यः शलभानामिवोग्राः समा-  
पेतुर्विशिखानां प्रदीपताः । समाचिनोच्चापि भृशं शरीरं हयान् सूतं सरथैश्च  
महम् ॥ १३ ॥ रथः शरैर्मै निचितः सर्वतोऽभ्युत्थता हयाः सारथिश्चैव राजन् ।  
युगं रथेश च तथैव चक्रे तथैवाङ्गः शरकृत्वाऽपभङ्गः ॥ १४ ॥ ततस्तस्मिन् वाण-  
वर्षे व्यतीते शरौघेण प्रत्यवर्षं षुक्रुस्तम् । संविक्रतो मार्गणैर्ब्रह्मराशिर्देहा-  
दङ्गस्य मुमुचे भूरिरक्तम् ॥ १५ ॥ यथा रामो वाणजालाभितपुस्तथैवाहं सूभृशं  
गातविक्रः । ततो युद्धं व्यरमचापराह्णे भानावस्तुं प्रतिघाते महीधुम् ॥ १६ ॥

इत्युद्देश्योपपत्ति अयोपाख्यानपर्वणि रामभीष्मयुद्धे त्र्यशीत्यधिक-

शततमोऽध्यायः ॥ १८० ॥



भीष्म उवाच । ततः प्रभाते राजेन्द्र सूर्ये विमलतांगते । भार्गवस्य मया  
सार्द्धं पुनर्बुद्धमवर्तत ॥ १ ॥ ततो ब्राह्मे रथे तिष्ठन् रामः प्रहरतांवरः ।  
वर्षं शरजालानि मयि मेघ इवाचले ॥ २ ॥ ततः सूतो मम सुहृच्छरवर्षेण ता-  
डितः । अपघातो रथोपस्थान्मनो मम विषादयन् ॥ ३ ॥ ततः सूतो ममात्यर्थं  
कश्मलं प्राविशमहं । पृथिव्याङ्ग शराघाताग्निपपात मुमोच ह ॥ ४ ॥ ततः  
सूतोऽजहां प्राणान् रामवाणप्रपीडितः । मुहूर्त्तादिव राजेन्द्र माङ्ग तीराविश-  
त्तदा ॥ ५ ॥ ततः सूते हते तस्मिन् क्षिपतस्तस्य मे शरान् । प्रमत्तमनसो  
रामः प्राहिणोन्मृत्युसन्नितान् ॥ ६ ॥ ततः सूतव्यसनिनं विप्लुतं मां स भा-  
र्गवः । शरेणाभ्यहनत्गातं विक्रुष्य बलवद्वल्लुः ॥ ७ ॥ स मे भुजास्तरे राजन्  
निपत्य रूधिराशनः । मथैव सह राजेन्द्र जगाम वसुधातलम् ॥ ८ ॥ मया तु  
निहतं रामस्ततो मां भरतर्षत । मेघवद्दिननादोऽष्टैर्जह्येषे च पुनःपुनः ॥ ९ ॥  
तथा तु पतिते राजन्मयि रामो मुदा युतः । उदक्रोशन्महानादं सह तैरनुयायि-  
भिः ॥ १० ॥ मम तत्राभवन् ये तु कुरवः पार्श्वतः स्थिताः । आगता अपि युद्ध-  
क्षानास्तत्र दिदृक्वः । आर्त्तिं परमिकां जग्मुस्त तदा पातिते मयि ॥ ११ ॥  
ततोऽपश्यं पतितो राजसिंह द्विजानर्को सूर्यहताशनान् । ते मां सम-  
न्तां परिवार्य तस्यः स्वबाह्विः परिवार्याजिमध्ये ॥ १२ ॥ रक्ष्यमाणश्च तैर्विप्रे-

নাহং ভূমিমুপাস্পৃশম্ । অন্তরীক্ষে ধৃতো হৃষ্মি তৈরিথৈপ্রবাস্কবৈরিব । স্বস  
 মিবাস্তরীক্ষে চ জলবিন্দুভিরুক্কিতঃ ॥ ১৩ ॥ ততস্তে ব্রাহ্মণা রাজমক্রবন্ পরিগৃহ  
 যাম্ । মা তৈরিতি চ মাং সর্বে স্বস্তি তেহস্তিতি চাসকুৎ ॥ ১৪ ॥ ততস্তেষামহং  
 বাণ্ডিস্তপিতঃ সহসোখিতঃ । মাতরং সরিতাং শ্রেষ্ঠামপশ্যং রথমাস্থিতাম্ ॥ ১৫ ॥  
 হযাশ্চ মে সংগৃহীতাস্তযাসন্ মহানদ্যা সংযতি কৌরবেশ্চ । পাদৌ জনন্যাঃ  
 প্রতিগৃহ চাহং তথা পিতৃণাং রথমভ্যরোহম্ ॥ ১৬ ॥ ররক্ষ সা মাং সরথং হযাং-  
 শ্চোপস্করাণি চ । তামহং প্রাঞ্জলিভূত্বা পুনরেব ব্যসজ্জয়ম্ ॥ ১৭ ॥ ততোহহং  
 স্বযমুদ্যম্য হযাংস্তান্ বাতরং হসঃ । অযুধ্যং জামদগ্ন্যেন নিবৃত্তেহহনি ভারত ॥ ১৮ ॥  
 ততোহহং ভরতশ্রেষ্ঠ বেগবন্তং মহাবলম্ । অমুঞ্চং সমরে বাণং রামায হৃদয-  
 ছিদম্ ॥ ১৯ ॥ ততো জগাম বসুধাং মম বাণপ্রপীড়িতঃ । জানুভ্যাং ধনুরুৎ-  
 সৃজ্য রামো মোহবশং গতঃ ॥ ২০ ॥ ততস্তস্মিন্মিপতিতে রামে ভুরিসহস্রদে ।  
 আবক্রজ্জ্বলদা ব্যোম ক্ষরন্তো রুধিরং বহু ॥ ২১ ॥ উদ্ধাশ্চ শতশঃ পেতুঃ সনি-  
 ঘাতাঃ সকম্পনাঃ । অক্ষং সহসা দীপ্তং স্বভানুরভিসংব্রণোৎ ॥ ২২ ॥ ববুশ্চ  
 বাতাঃ পরুমাশ্চলিতা চ বসুন্ধরা । গুধা বলাশ্চ কক্শাশ্চ পরিপেতুর্মুদা যুতাঃ ॥ ২৩ ॥  
 দীপ্তাযাং দিশি গোমাযুর্দারুণং মুহুরুন্নদৎ । অনাহতা হৃদুভযো বিনেহুভৃশ্চঃ-  
 স্বনাঃ ॥ ২৪ ॥ এতদৌৎপাতিকং সর্বং যোরমাসীদ্রুবকরম্ । বিসংজ্ঞকল্পে ধরণীং  
 গতে রামে মহান্মনি ॥ ২৫ ॥ ততো রবির্মন্দমরীচিমণ্ডলো জগামাস্তংপাৎ-  
 শুপুঞ্জাবগূঢ়ঃ । নিশা ব্যগাহৎ সুখশীতমারুতা ততো যুদ্ধং প্রত্যবহারযা-  
 বঃ ॥ ২৬ ॥ এবং রাজমবহারো বভূব ততঃ পুনর্বিমলেহভুৎ সুঘোরম্ । কল্যাং  
 কল্যাং বিংশতির্বে দিনানি তথৈব চান্যানি দিনানি ত্রীণি ॥ ২৭ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি অষোপাখ্যানপর্বণি রামভীষ্মযুদ্ধে চতুরশীত্যধিক-

শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৮৪ ॥



ভীষ্ম উবাচ । ততোহহং নিশি রাজেশ্চ প্রথম্য শিরসা তদা । ব্রাহ্মণানাং  
 পিতৃণাঞ্চ দেবতানাঞ্চ সর্বশঃ ॥ ১ ॥ নক্রুঞ্চরাণাং ভূতানাং রাজন্যানাং বিশা-  
 স্পতে । শযনং প্রাপ্য রহিতে মনসা সমচিন্তয়ম্ ॥ ২ ॥ জামদগ্ন্যেন মে যুদ্ধমিদং  
 পরমদারুণম্ । অহানি চ বহুন্যদ্য বর্ততে স্মমহাত্যযম্ ॥ ৩ ॥ ন চ রামং মহা-  
 বীর্য্যং শক্ৰোমি রণমূর্দ্ধানি । বিজেতুং সমরে বিপ্রং জামদগ্ন্যং মহাবলম্ ॥ ৪ ॥  
 যদি শক্যো মদা জেতুং জামদগ্ন্যং প্রতাপবান । দৈবতানি প্রসন্নানি দর্শযন্ত নিশাং

মম ॥ ৫ ॥ ততো নিশি চ রাজেশ্ব প্রসুপ্তঃ শরবিক্রতঃ । দক্ষিণেনেহ পাশ্চেন  
 প্রভাতসময়ে তদা ॥ ৬ ॥ ততোহহং বিপ্রমুখ্যৈস্তৈর্ষৈরস্মি পতিতো রথাৎ ।  
 উখাপিতো ধৃতশ্চৈব মা তৈরিতি চ সাস্থিতঃ ॥ ৭ ॥ তএব মাং মহারাজ স্বপ্নে দর্শ-  
 নমেত্য বৈ । পরিবার্যাক্রবন্ বাক্যং ভষ্মিবোধ কুরুদহ ॥ ৮ ॥ উত্তিষ্ঠ মা তৈর্গা-  
 দ্ধেয় ন ভয়ং তেহস্তি কিঞ্চন । রক্ষামহে ত্বাং কৌরব্য স্বশরীরং হিনো ভবান্ ॥ ৯ ॥  
 ন ত্বাং রামো রণে জেতা জামদগ্ন্যঃ কথঞ্চন । ত্বমেব সমরে রামং বিজেতা ভরত-  
 ষ্ঠত ॥ ১০ ॥ ইদমস্ত্রং সুদযিতং প্রত্যভিষ্টিমস্যতে ভবান্ । বিদিতং হি তবা-  
 প্যেতং পূর্বস্মিন দেহধারণে ॥ ১১ ॥ প্রাজাপত্যং বিশ্বকৃতং প্রস্বাপং নাম ভারত ।  
 ন হীদং বেদ রামোহপি পৃথিব্যাং বা পুমান্ কচিৎ ॥ ১২ ॥ তৎ স্মরস্ব মহা-  
 বাহো ভূশং সংযোজযস্ব চ । ন চ রামঃ ক্ষয়ং গন্তা তেনাস্ত্রেণ নরাধিপ ॥ ১৩ ॥  
 এনসান তু সংযোগং প্রাপ্যসে জাতু মানদ । স্বপ্যতে জামদগ্ন্যোহসৌ স্বদ্বানবল-  
 পীড়িতঃ ॥ ১৪ ॥ ততো জিহ্বা ত্বমেবৈনং পুনরুখাপযিষ্যসি । অস্ত্রেণ দযিতে-  
 নাজৌ ভীষ্ম সস্বোধনেন বৈ ॥ ১৫ ॥ এবং কুরুষ কৌরব্য প্রভাতে রথমাস্থিতঃ ।  
 প্রসুপ্তং বা মৃতং বেতি তুল্যং মন্যামহে বযন্ ॥ ১৬ ॥ ন চ রামেণ মর্তব্যং কদা-  
 চিদপি পার্থিব । ততঃ সমুৎপন্নমিদং প্রস্বাপং যুজ্যতামিতি ॥ ১৭ ॥ ইত্যুক্ত্বাস্ত-  
 হিতা রাজন্ সর্বএব দ্বিজোত্তমাঃ । অর্কৌ সদৃশকপাস্তে সর্বে ভাস্বরমুর্ভযঃ ॥ ১৮ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি অযোপাখ্যানপর্বণি রামভীষ্মযুদ্ধে স্বপ্নোপদেশে

পঞ্চাশীত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৮৫ ॥



ভীষ্ম উবাচ । ততো রাত্রৌ ব্যতীত্যাং প্রতিবুদ্ধোহস্মি ভারত । ততঃ সঞ্চিস্ত্য  
 বৈ স্বপ্নমবাপং হর্ষমুত্তমম্ ॥ ১ ॥ ততঃ সমভবক্ষুক্রং মম তস্য চ ভারত । তুমুলং  
 সর্বভূতানাং লোমহর্ষণমদ্ভুতম্ ॥ ২ ॥ ততো বাণমঘং বর্ষং ববর্ষ মযি ভার্গবঃ ।  
 ন্যবারযমহং তচ্চ শরজালেন ভারত ॥ ৩ ॥ ততঃ পরমসংক্রুদ্ধঃ পুনরেব মহা-  
 তপাঃ । হস্তনেন চ কোপেন শক্তিং বৈ প্রাহিণোম্মযি ॥ ৪ ॥ ইন্দ্রাশানিসমস্পর্শাং  
 ষমদণ্ডসমপ্রভাম্ । জ্বলন্তীমগ্নিবৎ সংখ্যে লেলিহানাং সমস্তৃতঃ ॥ ৫ ॥ ততো  
 ভরতশার্দূল ধিক্ষ্যমাকাশগং যথা । সা মামভ্যববীত্বূর্ণং জত্রুদেশে কুরুদহ ॥ ৬ ॥  
 অথাস্ত্রোঃ স্রবন্দোরং গিরিগৈরিকধাতুবৎ । রামেণ স্তুমহাবাহো ক্ষতস্য ক্ষত-  
 জেক্ষণ ॥ ৭ ॥ ততোহহং জামদগ্ন্যায় ভূশং ক্রোধসমম্বিতঃ । চিক্ষেপ মৃত্যুসকাশং  
 বাণং সর্পবিষোপমম্ ॥ ৮ ॥ স তেনাভিহতো বীরো ললাটে দ্বিজসত্তমঃ । অশো-



ভক্ত মহারাজ সশৃঙ্গ ইব পর্বতঃ ॥ ৯ ॥ স সংরক্তঃ সমাবৃত্য শরং কালাস্তকো-  
পমম্ । সন্দধে বলবৎ ক্লষ্য ঘোরং শত্রুনিবর্হণম্ ॥ ১০ ॥ স বক্ষসি পপাতোগ্রঃ  
শরো ব্যাল ইব শ্বসন্ । মহীং রাজংস্তৃতশ্চাহমগমং কুধিরাবিলঃ ॥ ১১ ॥ সং-  
প্রাপ্য তু পুনঃ সংজ্ঞাং জামদগ্ন্যায ধীমতে' । প্রাহিণুং বিমলাং শক্তিং জ্বলন্তীম-  
শনীমিব ॥ ১২ ॥ সা তস্য দ্বিজমুখ্যস্য নিপপাত ভুজাস্তরে । বিহ্বলশ্চাভব-  
দ্রাজন্ বেপথুশ্চৈচনমাশিৎ ॥ ১৩ ॥ তত এনং পরিষজ্য সখা বিপ্রো মহা-  
তপাঃ । অক্লতব্রণঃ শুভৈর্বাটেক্যরাশ্বাসযদনেকধা ॥ ১৪ ॥ সমাশ্বস্তস্ততো রামঃ  
ক্রোধামর্ষনমস্থিতঃ । প্রাহুশ্চক্রে তদা ব্রাহ্ম্যং পরমাস্ত্রং মহাব্রতঃ ॥ ১৫ ॥  
ততস্তৎপ্রতিঘাতার্থং ব্রাহ্ম্যমেবাস্ত্রমুক্তমম্ । ময়া প্রযুক্তং জঙ্ঘাল যুগাস্তমিব  
দর্শযৎ ॥ ১৬ ॥ তযোত্রকাস্ত্রযোরাসীদন্তরা টেব সমাগমঃ । অসংপ্রাট্যেব রামঞ্চ  
মাঞ্চ ভারতসত্তম ॥ ১৭ ॥ ততো ব্যোম্নি প্রাহুরভূতেজ এব হি কেবলম্ । ভুতানি  
চৈব সর্বাণি জগ্মুরার্তিং বিশাম্পতে ॥ ১৮ ॥ ঋষযশ্চ সগন্ধর্বা দেবতাশ্চৈব ভার-  
ত । সস্তাপং পরমং জগ্মুরস্ততেজোহভিপীড়িতাঃ ॥ ১৯ ॥ ততশ্চচাল পৃথিবী  
সপর্বতবনক্রমা । সস্তপ্তানি চ ভুতানি বিষাদং জগ্মুরুত্তমম্ ॥ ২০ ॥ প্রজঙ্ঘাল  
নভো রাজন্ ধূমায়ন্তে দিশো দশ । ন স্থাতুমস্তরীক্ষে চ শেকুরাকাশগাস্তদা ॥ ২১ ॥  
ততো হাহাক্রুতে লোকে সদেবাসুররাক্ষসে । ইদংস্তরমিত্যেবং । মোক্তুকামোহ-  
স্মি ভারত ॥ ২২ ॥ প্রস্বাপমস্ত্রং হুরিতো বচনাদ্ভ্রুক্বাদিনাম্ । বিচিত্রঞ্চ তদস্ত্রং  
মে মনসি প্রত্যভাতদা ॥ ২৩ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি অয়োপাখ্যানপর্বণি রামভীষ্মযুদ্ধে ষডশীত্যধিক-

শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৮৬ ॥



ভীষ্ম উবাচ । ততো হলহলাশকো দিবি রাজমহানভুৎ । প্রস্বাপং ভীষ্ম মা  
আক্ষীরিতি কৌরবনন্দন ॥ ১ ॥ অযুঞ্জমেব চৈবাহং তদস্ত্রংভৃগুনন্দনে । প্রস্বাপং  
মাং প্রযুঞ্জানং নারদো বাক্যমব্রবীৎ ॥ ২ ॥ এতে বিষতি কৌরব্য দিবি দেব-  
গণাঃ স্থিতাঃ । তে হ্যং নিবারযন্ত্যদ্য প্রস্বাপং মা প্রযোজয ॥ ৩ ॥ রামস্তপস্বী  
ব্রহ্মণ্যো ব্রাহ্মণশ্চ গুরুশ্চ তে । অস্যাবমানং কৌরব্য মান্ম কাৰ্ষীঃ কথঞ্চন ॥ ৪ ॥  
ততোহপশ্যং দিবিষ্ঠান্ বৈ ভানকৌ ব্রহ্মবাদিনঃ । তে মাং স্মযন্তো রাজেজ্ঞ  
শনকৈরিদমক্রবন্ ॥ ৫ ॥ ষথাহ ভরতশ্রেষ্ঠ নারদস্তত্তথা কুরু ! এতদ্বিপরমং  
শ্রেয়ো লোকানাং ভরতর্ষভ ॥ ৬ ॥ ততশ্চ প্রতিসংসৃত্য তদস্ত্রং স্বাপনং মহৎ ।

ब्रह्मास्त्रं दीपयाङ्क्रे तस्मिन् युधि यथाविधि ॥१॥ ततो रामो क्रुषितो राजसिंह  
दृष्ट्वा तदस्त्रं विनिवर्तितं वै । जितोऽस्मि भीष्मेण सुमन्दबुद्धिरित्येव वाक्यं सह-  
सा व्यमुक्तं ॥ ८ ॥ ततोऽपश्यत् पितरं जामदग्न्यः पितुस्तथा पितरङ्गस्य  
मान्यम् । ते तत्र चैनं परिवार्य तस्यैवैतच्छैचनं सास्त्रपूर्वं तदानीम् ॥ ९ ॥  
पितर उचुः । मास्मैव साहसं तात पुनः कार्षीः कथञ्चन । भीष्मेण संयुगं  
गन्तुं क्लिष्येण विशेषतः ॥ १० ॥ क्लिष्यस्य तु धर्मोऽयं यद्यद्भुक्तं भृशुनन्दन ।  
आध्यायोऽत्र तर्क्या च ब्राह्मणानां परं धनम् ॥ ११ ॥ इदं निर्मिते कस्मिंश्चि-  
दस्माभिः प्राणुदाहृतम् । शस्त्रधारणमत्युग्रं तच्चाकार्यं कृतं ह्यथा ॥ १२ ॥  
वत्स पर्याप्तमेतावन्तीष्मेण सह संयुगे । विमर्दस्ते महाबाहो व्यपयाहि रणा-  
दितः ॥ १३ ॥ पर्याप्तमेतद्भ्रष्टस्ते तव कर्म्मधारणम् । विसर्ज्यैतद्दर्शय तपस्तप्य-  
स्व भार्गव ॥ १४ ॥ एष भीष्मः शास्तनवो देवैः सदैर्निवारितः । निवर्तस्व रणादस्मा-  
दिति तैव प्रसादितः ॥ १५ ॥ रामेण सह मा योऽसीशुक्रुणेति पुनः पुनः । न  
हि रामो रणे जेतुं ह्यथा न्यायः कुरुद्वह ॥ १६ ॥ मानं कुरुष्व गाङ्गेय ब्राह्म-  
णस्य रणाजिरे । वयस्य गुरवस्तुभ्यं तस्माद्वा वारयामहे ॥ १७ ॥ भीष्मो वसूनाम-  
न्यतमो दिव्या जीवसि पुत्रक । गाङ्गेयः शास्तनोः पुत्रो वसुरेष महावशाः ।  
कथं शक्यस्त्वया जेतुं निवर्तस्वैह भार्गव ॥ १८ ॥ अर्जुनः पाण्डवश्रेष्ठः पुरन्दर-  
सूतो बली । नरः प्रजापतिर्षीरः पूर्वदेवः सनातनः ॥ १९ ॥ सव्यसाचीति विख्या-  
तस्त्रिभु लोकेषु वीर्यवान् । भीष्ममृत्युर्थथाकालं विहितो वै स्वयस्तुवा ॥ २० ॥  
भीष्म उवाच । एवमुक्तः स पितृभिः पितृनामोऽब्रवीदिदम् ॥ २१ ॥ नाहं युधि  
निवर्तेयमिति मेऽत्रमाहितम् । न निवर्तितपूर्वश्च कदाचिद्गमूह्नि ॥ २२ ॥  
निवर्तयतामापगेयः कामं युद्धात् पितामहाः । न ह्यहं विनिवर्तिये युद्धादस्मात्  
कथञ्चन ॥ २३ ॥ ततस्ते मुनयो राजसूचीकप्रमुखान्मुदा । नारदेनैव सहिताः  
समागम्येदमब्रुवन् । निवर्तस्व रणात्तात मानवस्य द्विजोत्तमम् ॥ २४ ॥ इत्यबोच-  
महन्तांश्च क्लृप्तधर्मव्यपेक्षया । मम त्रतमिदं लोके नाहं युद्धात् कदाचन ।  
विमुखो विनिवर्तेयं पृष्ठतोऽभ्याहतः शरैः ॥ २५ ॥ नाहं लोभान्न कार्पण्यान्न  
तस्मान्मार्थकारणात् । त्र्यजेयं शाश्वतं धर्ममिति मे निश्चिता मतिः ॥ २६ ॥ ततस्ते  
मुनयः सर्वे नारदप्रमुखा नृप । भागीरथी च मे माता रणमध्यं प्रपेदिरे ॥ २७ ॥  
तथैवात्तशरो धनी तथैव दृष्टनिश्चयः । स्थिरोऽहमाहवे योद्धुं ततस्ते राममब्रु-  
वन् ॥ २८ ॥ संमेत्य सहिता भूयः समरे भृशुनन्दनम् । नावनीतं हि हृदयं

বিপ্রাণাং শাম্য ভার্গব ॥ ২৯ ॥ রাম রাম নিবর্তস্ব যুদ্ধাদস্মাদ্বিজোক্তম । অব  
 ধ্যো বৈ ত্বয়া ভীষ্মস্ত্বঞ্চ ভীষ্মস্য ভার্গব ॥ ৩০ ॥ এবং ক্রবন্তস্তে সর্বে প্রতিক্রুধ্য  
 রণাজিরম্ । ন্যাসযাঞ্চক্রিরে শস্ত্রং পিতরো ভৃগুনন্দনম্ ॥ ৩১ ॥ ততোহহং পুন-  
 রেবাথ তানকৌ ব্রহ্মবাদিনঃ । অদ্ভাঞ্চ দীপ্যমানান্ বৈ গ্রহানক্টাবিবোদি-  
 তান্ ॥ ৩২ ॥ তে মাং সপ্রণয়ং বাক্যমক্রবন্ সমরে স্থিতম্ । টৈপ্রহি রামং মহা-  
 বাহো গুরুং লোকহিতং কুরু ॥ ৩৩ ॥ দৃষ্ট্বা নিবর্তিতং রামং সুহৃদ্বাক্যেন তেন  
 বৈ । লোকানাঞ্চ হিতং কুর্ষন্নহমপ্যাদদে বচঃ ॥ ৩৪ ॥ ততোহহং রামমাসাদ্য  
 ববন্দে ভূশবিক্রতঃ । রামশ্চাত্যুৎস্ময়ন্ প্রেম্ণা । নামুবাচ মহাতপাঃ ॥ ৩৫ ॥ ত্বৎ-  
 সমো নাস্তি লোকেহস্মিন্ ক্ষত্রিয়ঃ পৃথিবীচরঃ । গম্যতাং ভীষ্ম যুদ্ধেহস্মিংস্তোষি-  
 তোহহং ভূশং ত্বয়া ॥ ৩৬ ॥ মম চৈব সমক্ষস্তাং কন্যামাহুয ভার্গবঃ । উক্তবান্  
 দীনযা বাচা মধ্য তেষাং মহাঅনাম্ ॥ ৩৭ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি অষোপাখ্যানপর্বণি রামভীষ্মযুদ্ধনিবর্তৌ সপ্তাশীত্য-  
 ধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৮৭ ॥



রাম উবাচ । প্রত্যক্ষমেতল্লোকানাং সর্বেষামেব ভাবিনি । যথা শক্ত্যা মযা-  
 যুদ্ধং কৃতং বৈ পৌরুষং পরম্ ॥ ১ ॥ ন চৈবমপি শক্লোমি ভীষ্মং শস্ত্রভূতাং-  
 বরম্ । বিশেষযিতুমত্যর্থমুক্তমাস্ত্রাণি দর্শয়ন্ ॥ ২ ॥ এষা মে পরমা শক্তিরেতন্মে  
 পরমং বলম্ । যথেষ্টং গম্যতাং ভদ্রে কিমন্যদ্বা করোমি তে ॥ ৩ ॥ ভীষ্মমেব  
 প্রপদ্যস্ব ন তেহন্যা বিদ্যতে গতিঃ । নিজ্জিতো হস্মি ভীষ্মেণ মহাস্ত্রাণি প্রমু-  
 ঞ্জতা ॥ ৪ ॥ এবমুক্ত্বা ততো রামো বিনিশ্চস্য মহামনাঃ । তুষ্ণীমাসীত্ততঃ কন্যা  
 প্রোবাচ ভৃগুনন্দনম্ ॥ ৫ ॥ ভগবন্নেবমেবৈতদ্বথাহ ভগবাৎস্তথা । অজেয়ো  
 যুধি ভীষ্মোহযমপি দেবৈরুদারধীঃ ॥ ৬ ॥ যথাশক্তি যথোৎসাহং মম কার্য্যং কৃতং  
 ত্বয়া । অনিবার্য্যং রণে । বীর্য্যমস্ত্রাণি বিবিধানি চ ॥ ৭ ॥ ন চৈব শক্যতে যুদ্ধে  
 বিশেষযিতুমুক্ততঃ । ন চাহমেনং যাস্যামি পুনর্ভীষ্মং কথঞ্চন ॥ ৮ ॥ গমিষ্যামি  
 তু তত্রাহং যত্র ভীষ্মং তপোধন । সমরে পাতিষ্যামি স্বযমেব ভৃগুদ্বহ ॥ ৯ ॥  
 এবমুক্ত্বা যযৌ কন্যা রোষব্যাকুললোচনা । তাপস্যে ধৃতসঙ্কল্পা সা মে চিন্তযতী  
 বধম্ ॥ ১০ ॥ ততো মহেন্দ্রং সহ তৈর্মুনিভির্ভৃগুনন্দনঃ । যথাগতং তথা সোহগা-  
 ন্মামুপামন্ত্র্য ভারত ॥ ১১ ॥ ততো রথং সমারুহ স্তুষ্যমানো দ্বিজাতিভিঃ । প্রবিশ্য  
 নগরং মাত্রে সত্যবর্ত্যে ন্যবেদযম্ ॥ ১২ ॥ যথারত্বং মহারাজ সা চ মাং প্রত্য-

নন্দত । পুরুষাংশ্চাদিশং প্রাজ্ঞান্ কন্যারতাস্তকর্মণি ॥ ১৩ ॥ দিবসে দিবসে  
হস্য গতিং জল্পিতচেষ্টিতম্ । প্রত্যাহরংশ্চ তে যুক্তাঃ স্থিতাঃ প্রিষহিতে  
সদা ॥ ১৪ ॥ যদৈব হি বনং প্রায়াৎ সা কন্যা তপসে ধৃতা । তদৈব ব্যথিতো  
দীনো গতচেতা ইবাভবম্ ॥ ১৫ ॥ ন হি মাং ক্ষত্রিয়ঃ কশ্চিদ্বীর্যেণ ব্যজঘন্মুধি ।  
ঋতে ব্রহ্মবিদস্তাত তপসা সংশিতব্রতাৎ ॥ ১৬ ॥ অপি চৈতন্ময়া রাজন্ নারদে  
বিনিবেদিতম্ । ব্যাসে চৈব তথা কার্ষ্যং তৌ চোভৌ মামবোচতাম্ ॥ ১৭ ॥ ন  
বিষ্যদস্বয়া কার্যে ভীষ্ম কাশিস্মুতাং প্রতি । দৈবং পুরুষকারেণ কো নিবর্তিতু-  
মুৎসহেৎ ॥ ১৮ ॥ সা কন্যা তু মহারাজ প্রবিশ্যাশ্রমমণ্ডলম্ । যমুনাতীরমাশ্রিত্য  
তপস্তপেহতিমানুষম্ ॥ ১৯ ॥ নিরাহারা ক্লশা কক্ষা জটীলা মলপঙ্কিনী । ষণ্মা-  
সাম্ বায়ুভক্ষা চ স্থানভূতা তপোধনা ॥ ২০ ॥ যমুনাঙ্গলমাশ্রিত্য সংবৎসর-  
মথাপরম্ । উপবাসং নিরাহারা পারযামাস ভাবিনী ॥ ২১ ॥ শীর্ণপত্রেণ চৈকে-  
ন পারযামাস সাপরম্ । সংবৎসরং তীব্রকোপা পাদাঙ্কুষ্ঠাগ্রধিষ্ঠিতা ॥ ২২ ॥  
এবং দ্বাদশ বর্ষাণি তাপযামাস রোদসী । নিবর্ত্যমানাপি চ সা জ্ঞাতিভির্মৈব  
শক্যতে ॥ ২৩ ॥ ততোহগমদ্বৎসভূমিং সিদ্ধচারণসেবিতাম্ । আশ্রমং পুণ্য-  
শীলানাং তাপসানাং মহাত্মনাম্ ॥ ২৪ ॥ তত্র পুণ্যেষু তীর্থেষু সা প্লতাজ্জী  
দিবানিশম্ । ব্যচরৎ কাশিকন্যা সা যথাকামবিচারিণী ॥ ২৫ ॥ নন্দাশ্রমে মহা-  
রাজ তথোলূকাশ্রমে শুভে । চ্যবনস্যাশ্রমে চৈব ব্রহ্মণঃ স্থান এব চ ॥ ২৬ ॥  
প্রয়াগে দেবযজনে দেবারণ্যেষু চৈব হ । ভোগবত্যং মহারাজ কৌশিকস্যাশ্রমে  
তথা ॥ ২৭ ॥ মাণ্ডব্যস্যাশ্রমে রাজন্ দিলীপস্যাশ্রমে তথা । রামহৃদে চ কৌরব্য  
ঐলনগর্গস্য চাশ্রমে ॥ ২৮ ॥ এতেষু তীর্থেষু তদা কাশিকন্যা বিশাম্পতে । আপ্লা-  
বযত গাত্রাণি ব্রতমাশ্রায় ভ্রুকরম্ ॥ ২৯ ॥ তামব্রবীচ্চ কৌরব্য মম মাতা জলে  
স্থিতা । কিমর্থং ক্লিশ্যসে ভদ্রে তথ্যমেব বদস্ব মে ॥ ৩০ ॥ সৈনামথাত্রবীজাজন্  
ক্লম্বাঞ্জলিমনিন্দিতা । ভীষ্মেণ সমরে রামো নিজ্জিতশ্চারুলোচনে ॥ ৩১ ॥ কোহন্য-  
স্তমুৎসহেজ্জতুন্দ্যতেষুং মহীপতিঃ । সাহং ভীষ্মবিনাশায় তপস্তপ্যে সুদা-  
রুণম্ ॥ ৩২ ॥ বিচরামি মহীং দেবি যথা হন্যামহং নৃপম্ । এতদ্বৃতফলং দেবি  
পরমস্মিন্ যথা হি মে ॥ ৩৩ ॥ ততোহব্রবীৎ সাগরুগা জিহ্মধরসি ভাবিনি । নৈব  
কামোহনবদ্যাদ্ধি শক্যঃ প্রাপ্তুং ত্বষাবলে ॥ ৩৪ ॥ যদি ভীষ্মবিনাশায় কাশ্যে  
চরসি টে ব্রতম্ । ব্রতস্থা চ শরীরং ত্বং যদি নাম বিযোক্ষ্যসি ॥ ৩৫ ॥ নদী ভবি-  
ষ্যসি শুভে কুটীলা বার্ষিকোদকা । ভ্রুস্তীর্ণা ন তু বিজ্জেষ্যা বার্ষিকী নাষ্টমাসি-

কী । ভীমগ্রাহবতী ঘোরা সর্বভূতভয়ঙ্করী ॥ ৩৬ ॥ এবমুক্ত্বা ততো রাজন্  
কাশিকন্যাং ন্যবর্তত । মাতা মম মহাভাগা স্ময়মানেন ভাবিনী ॥ ৩৭ ॥ কদা-  
চিদৃষ্টমে মাসি কদাচিদৃষ্টমে তথা । ন প্রাশ্নীতোদকমপি পুনঃ সা বরব-  
র্ধিনী ॥ ৩৮ ॥ সা বৎসভূমিৎ কোরবাং তীর্থলোভান্ততস্ততঃ । পতিতা পরিধা-  
বন্তী পুনঃ কাশিপতেঃ সূতা ॥ ৩৯ ॥ সা নদী বৎসভূম্যাঙ্ক প্রথিতা চেতি ভারত ।  
বার্ষিকী গ্রাহবহলা দুস্তীর্থা কুটীলা তথা ॥ ৪০ ॥ সা কন্যা তপসা তেন দেহাঙ্কেন  
ব্যজাযত । নদী চ রাজন্ বৎসেসু কন্যা চৈবাতবতদা ॥ ৪১ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি অম্বোপাখ্যানপর্বনি অস্বাতপস্যাং অক্ষাশীত্য-  
ধিকশততমোঃধ্যায়ঃ ॥ ১৮৮ ॥



ভীষ্ম উবাচ । ততস্তে তাপসাঃ সর্বে তপসে ধৃতনিশ্চয়াং । দৃষ্ট্বা ন্যবর্তয়ন্তাত  
কিং কার্যমিতি চাক্রবন্ ॥ ১ ॥ তানুবাচ ততঃ কন্যা তপোরদ্ধানুষীংস্তদা ।  
নিরাকৃতাস্মি ভীষ্মেণ ভ্রংশিতা পতিধর্মতঃ ॥ ৩ ॥ বধার্থং তস্য দীক্ষা মে ন  
লোকার্থং তপোধনাঃ । নিহত্য ভীষ্মং গচ্ছেয়ং শান্তিমিত্যেব নিশ্চয়ঃ ॥ ৩ ॥ যৎ-  
কৃতে ছঃখবসতিমিমাং প্রাপ্তাস্মি শাস্ত্বতীম্ । পতিলোকাদ্বিহীনা চ নৈব স্ত্রী ন  
পুমানিহ ॥ ৪ ॥ নাহত্বা যুধি গাজ্জেষং নিবর্তিষ্যে তপোধনাঃ । এষ মে হৃদি  
সঙ্কল্পো যদিদং কথিতং ময়া ॥ ৫ ॥ স্ত্রীভাবে পরিনির্বিমা পুংস্বার্থে কৃতনিশ্চয়া ।  
ভীষ্মে প্রতিচিকীর্ষামি নাস্মি বার্ষ্যেতি বৈ পুনঃ ॥ ৬ ॥ তাং দেবো দর্শয়ামাস  
শূলপানিরুমাপতিঃ । মধ্যে তেষাং মহর্ষীণাং স্মেন রূপেণ তাপসীম্ ॥ ৭ ॥ চন্দ্য-  
মানা বরেণাথ সা বব্রে মৎপরাজযম্ । হনিষ্যসীতি তাং দেবঃ প্রত্যুবাচ মন-  
স্বিনীম্ ॥ ৮ ॥ ততঃ সা পুনরেবাথ কন্যা রুদ্রমুবাচ হ । উপপদ্যেৎ কথং দেব  
স্ত্রিয়া যুধি জযো মম ॥ ৯ ॥ স্ত্রীভাবেন চ মে গাচং মনঃ শাস্ত্বমুমাপতে । প্রতি-  
শ্রুতশ্চ ভূতেশ ছ্বয়া ভীষ্মপরাজযঃ ॥ ১০ ॥ যথা স মর্ত্যো ভবতি তথা কুরু বৃষ-  
ধ্বজ । যথা হন্যাং সমাগম্য ভীষ্মং শাস্ত্বনবং যুধি ॥ ১১ ॥ তানুবাচ মহাদেবঃ  
কন্যাং কিল বৃষধ্বজঃ । ন মে বাগনৃতং প্রাহ সত্যং ভদ্রে ভবিষ্যতি ॥ ১২ ॥ হনি-  
ষ্যসি রূপে ভীষ্মং পুরুষত্বঞ্চ লপ্যসে । স্মরিষ্যসি চ তৎ সর্বং দেহমন্যং গতা  
সতী ॥ ১৩ ॥ ঋপদস্য কূলে জাতা ভবিষ্যসি মহারথঃ । শীঘ্রাস্ত্রস্তীক্ষ্ণবোধী চ  
ভবিষ্যসি স্মসংমতঃ ॥ ১৪ ॥ যথোক্তমেব কল্যাণি সর্বমেতদ্ভবিষ্যতি । ভবিষ্যসি  
পুমান্ পশ্যাৎ কস্মাচ্চিৎ কালপর্যয়াৎ ॥ ১৫ ॥ এবমুক্ত্বা মহাদেবঃ কপর্দী বৃষভ-

ধ্বজঃ । পশ্যতামেব বিপ্রাণাং তত্রৈবাস্তুরধীয়ত ॥ ১৬ ॥ ততঃ সা পশ্যতাং তেষাং  
মহর্ষীগামনিন্দিতা । সমাহৃত্য বনাত্তস্ম্যাং কাষ্ঠানি বরবণিনী ॥ ১৭ ॥ চিতাং  
রুছা সুমহতীং প্রদায় চ হতাশনম্ । প্রদীপ্তেহগ্নৌ মহারাজ রোষদীপ্তেন চেত-  
সা ॥ ১৮ ॥ উক্তা ভীষ্মবধাযেতি প্রবিবেশ হতাশনম্ । জ্যেষ্ঠা কাশিসুতা  
রাজন্ যমুনাভিতো নদীম্ ॥ ১৯ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বনি অম্বোপাখ্যানপর্বন্যম্বাহতাশনপ্রবেশে একোননব-  
ত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৮৯ ॥



দুর্যোধন উবাচ । কথং শিখণ্ডী গাঙ্গেষ কন্যা ভূত্বা পুরা তদা । পুরুষোঃ ভূ-  
ক্ষুধিশ্রেষ্ঠ তন্মে বৃহি পিতামহ ॥ ১ ॥ ভীষ্ম উবাচ । ভার্য্যা তু তস্য রাজেন্দ্র  
ক্রপদস্য মহীপতেঃ । মহিষী দযিতা হাসীদপুল্লা চ বিশাম্পতে ॥ ২ ॥ এতস্মি-  
ন্নেব কালে তু ক্রপদো বৈ মহীপতিঃ । অপত্যার্থে মহারাজ তোষয়ামাস শঙ্ক-  
রম্ ॥ ৩ ॥ অস্মদ্বধার্থং নিশ্চিত্য তপো যোরং সমাস্থিতঃ । ঋতে কন্যাং মহা-  
দেব পুল্লো মে স্যাদিতি ক্রবন্ ॥ ৪ ॥ ভগবন্ পুল্লমিচ্ছামি ভীষ্মং প্রতিচিকী-  
র্ষযা । ইত্যুক্তো দেবদেবেন স্ত্রীপুমাংস্তে ভবিষ্যতি ॥ ৫ ॥ নিবর্তস্ব মহীপাল  
নৈতজ্জান্নন্যথা ভবেৎ । স তু গত্বা চ নগরং ভার্য্যামিদমুবাচ হ ॥ ৬ ॥ ক্রতো  
যত্নে মহাদেবি তপসারাধিতো যথা । কন্যা ভূত্বা পুমান্ ভাবী ইতি চোক্তোঃস্মি  
শস্তুনা ॥ ৭ ॥ পুনঃপুনর্ষাচ্যমানো দিষ্টমিত্যব্রবীচ্ছিবঃ । ন তদন্যচ্চ ভবিতা  
ভবিতব্যং হি তত্তথা ॥ ৮ ॥ ততঃ সা নিযতা ভূত্বা ঋতুকালে মনস্বিনী । পত্নী  
ক্রপদরাজস্য ক্রপদং প্রবিবেশ হ ॥ ৯ ॥ লেভে গর্ভং যথাকালং বিধির্দৃষ্টেন  
কর্মাণা । পার্শ্বতস্য মহীপাল যথা মাং নারদোহব্রবীৎ ॥ ১০ ॥ ততো দধার সা  
দেবী গর্ভং রাজীবলোচনা । তাং স রাজা প্রিয়াং ভার্য্যাং ক্রপদঃ কুরুনন্দন ।  
পুল্লস্নেহান্নহাবাহুঃ সুখং পর্য্যচরত্তদা ॥ ১১ ॥ সর্বাণিভিপ্রাষকৃতান্ ভার্য্যালভত  
কৌরব । অপুল্লস্য সতো রাজ্ঞো ক্রপদস্য মহীপতেঃ ॥ ১২ ॥ যথাকালন্ত সা  
দেবী মহিষী ক্রপদস্য হ । কন্যাং প্রবরকপান্ত প্রাজায়ত নরাধিপ ॥ ১৩ ॥ অপু-  
ল্লস্য তু রাজ্ঞঃ সা ক্রপদস্য মনস্বিনী । খ্যাপয়ামাস রাজেন্দ্র পুল্লো হেষ মমেতি  
বৈ ॥ ১৪ ॥ ততঃ স রাজা ক্রপদঃ প্রচ্ছমাযা নরাধিপ । পুল্লবৎ পুল্লকার্য্যাণি স-  
র্বাণি সমকারণৎ ॥ ১৫ ॥ রক্ষণৈশ্চৈব মন্ত্রস্য মহিষী ক্রপদস্য সা । চকার সর্ব-  
যত্নেন ক্রবাণা পুল্ল ইত্যুত । ন চ তাং বেদ নগরে কশ্চিদন্যত্র পার্শ্বতাৎ ॥ ১৬ ॥

শ্রদ্ধধানো হি তদ্বাক্যং দেবস্যাদ্ভুততেজসঃ । ছাদয়ামাস তাং কন্যাং পুমানিতি  
চ সোহব্রবীৎ ॥ ১৭ ॥ জাতকৰ্ম্মাণি সৰ্বাণি কারয়ামাস পার্থিবঃ । পুংবদ্বিধান-  
যুক্তানি শিখণ্ডীতি চ তাং বিভ্রঃ ॥ ১৮ ॥ অহমেকস্ত চারণে বচনাম্মারদস্য চ ।  
জ্ঞাতবান্বেববাক্যেন অঘাষান্তপসা তথা ॥ ১৯ ॥

ইত্যুদ্যোগপৰ্বণি অষোপাখ্যানপৰ্বণি শিখণ্ড্যুৎপত্তৌ নবত্যধিক  
শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১৯০ ॥



ভীষ্ম উবাচ । চকার যত্নং ক্রপদঃ সূতায়াঃ সৰ্বকৰ্ম্মসু । ততো লেখ্যাदिষু তথা  
শিল্পেষু চ পরস্তপঃ । ইষস্তে চৈব রাজেশ্চ দ্রোণশিষ্যো বভুব হ ॥ ১ ॥ তস্য  
মাতা মহারাজ রাজানং বরবৰ্ণিনী । চোদয়ামাস ভার্য্যার্থে কন্যায়াঃ পুত্রব-  
ভ্রদা ॥ ২ ॥ ততস্তাং পার্বতো দৃষ্ট্বা কন্যাং সংপ্রাপ্তযৌবনাম্ । স্ত্রিয়ং মদ্বা তত-  
শ্চিস্তাং প্রপেদে সহ ভার্য্যয়া ॥ ৩ ॥ ক্রপদ উবাচ । কন্যা মমেযং সংপ্রাপ্তা  
যৌবনং শোকবর্দ্ধিনী । ময়া প্রচ্ছাদিতা চেযং বচনাচ্ছলপাণিনঃ ॥ ৪ ॥ ভার্য্যে-  
বাচ । ন তন্মিত্যা মহারাজ ভবিষ্যতি কথঞ্চন । ত্রৈলোক্যকর্তা কস্মাচ্ছি যথা  
বজ্রুমিহাৰ্হতি ॥ ৫ ॥ যদি তে রোচতে রাজন্ বক্ষ্যামি শৃণু মে বচঃ । ঞ্জ্বেদানীং  
প্রপদ্যেথাঃ স্বাং মতিং পৃষতাত্মজ ॥ ৬ ॥ ক্রিয়তামস্য যত্নেন বিধিবদারসং-  
গ্রহঃ । ভবিতা তদ্বচঃ সত্যমিতি মে নিশ্চিতা মতিঃ ॥ ৭ ॥ ততস্তৌ নিশ্চয়ং ক্রুত্বা  
তস্মিন্ কার্য্যেহথ দম্পতী । বরযাঞ্চক্রতুঃ কন্যাং দশার্গাধিপতেঃ সূতাম্ ॥ ৮ ॥  
ততো রাজা ক্রপদো রাজসিংহঃ সৰ্বান্দ্ৰাজ্ঞঃ কুলতঃ সংনিশম্য । দশার্গকস্য নৃপ-  
তেস্তম্ভুজাং শিখণ্ডিনে বরয়ামাস দারান্ ॥ ৯ ॥ হিরণ্যবৰ্ম্মেতি নৃপো যোহসৌ  
দশার্গকঃ স্মৃতঃ । স চ প্রাদান্মহীপালঃ কন্যাং তস্মৈ শিখণ্ডিনে ॥ ১০ ॥ স চ রাজা  
দশার্গেষু মহানাঙ্গীং সুহৃজ্জয়ঃ । হিরণ্যবৰ্ম্মা দুর্ধৰ্ষো মহাসেনো মহামনাঃ ॥ ১১ ॥  
ক্লতে বিবাহে তু তদা সা কন্যা রাজসত্তম । যৌবনং সমনুপ্রাপ্তা সা চ কন্যা শিখ-  
ণ্ডিনী ॥ ১২ ॥ ক্লতদারঃ শিখণ্ডী চ কাম্পিল্যং পুনরাগমৎ । ততঃ সা বেদ তাং  
কন্যাং কঞ্চিৎ কালং স্ত্রিয়ং কিল ॥ ১৩ ॥ হিরণ্যবৰ্ম্মণঃ কন্যা জ্ঞাত্বা তাস্ত  
শিখণ্ডিনীম্ । ধাত্রীণাঞ্চ সখীনাঞ্চ ত্রীডমানা ন্যবেদয়ৎ । কন্যাং পাঞ্চালরা-  
জস্য সূতাং তাং বৈ শিখণ্ডিনীম্ ॥ ১৪ ॥ ততস্তা রাজশাৰ্দূল ধাত্রেয়া দাশা-  
নিকাস্তদা । জগ্মরার্ভিৎ পরাং প্রেষ্যাঃ প্রেষয়ামাসুরেব চ ॥ ১৫ ॥ ততো দশা-  
র্গাধিপতেঃ প্রেষ্যাঃ সৰ্বা ন্যবেদয়ন্ । বিপ্রলস্তং যথারত্নং স চ চুক্ৰোধ পার্থি-

वः ॥ १७ ॥ शिखण्ड्यपि महाराज पुंवद्राजकुले तदा । विजहार मुदा युक्तः  
 स्त्रीत्वमेव तिरौहयन् ॥ १९ ॥ ततः कतिपयाहस्य तच्छुद्धा भरतर्षभ । हिरण्यवर्ष्मा  
 राजेन्द्र रोषादार्तिं जगाम ह ॥ १८ ॥ ततो दार्शनिको राजा तीव्रकोपसम-  
 न्वितः । दूतं प्रस्थापयामास ऋपदस्य निवेशनम् ॥ १९ ॥ ततो ऋपदमामाद्य  
 दूतः काङ्क्षन्वर्ष्मणः । एक एकान्तमुत्सर्ष्य रहो वचनमब्रवीत् ॥ २० ॥ दशार्णराजो  
 राजंश्चामिदं वचनमब्रवीत् । अतिवक्रां प्रकुपितो विप्रलक्ष्मणानघ ॥ २१ ॥  
 अर्बमन्यसे मां नृपते नूनं दुर्मन्त्रितं तव । यन्मे कन्यां स्वकन्यार्थे मोहाद्व्या-  
 चितवानसि ॥ २२ ॥ तस्याद्य विप्रलक्ष्मस्य फलं प्राप्नुहि दुर्मते । एष ह्यं स्वज-  
 नामात्यमुद्धरामि स्थिरो तव ॥ २३ ॥

इत्युद्घोषपर्वणि अष्टोपाख्यानपर्वणि हिरण्यवर्ष्मदूतप्रेषणे एकनवत्य-  
 धिकशततमोऽध्यायः ॥ १११ ॥



भीष्म उवाच । एवमुक्तस्य दूतेन ऋपदस्य तदा नृप । चौरसेव्येव गृहीतस्य न  
 प्रावर्तत भारती ॥ १ ॥ स यत्नमकरोतीव्रं सशक्तिन्यनुमानने । दूतैश्चधुर-  
 सञ्चारैर्नैतदस्तीति सन्दिशन् ॥ २ ॥ स राजा भूय एवाथ ज्वाहा तद्व्रमथागमत् ।  
 कन्येति पाण्डालसूतां ह्वरमाणो विनिर्ययो ॥ ३ ॥ ततः स प्रेषयामास मित्रा-  
 णाममितौजसाम् । द्रुहिर्बुर्बिप्रलक्ष्मं तं धात्रीणां वचनात्तदा ॥ ४ ॥ ततः समु-  
 दयं क्रुद्धा बलानां राजसन्तमः । अतिघाने मतिक्लृप्ते ऋपदं प्रति भारत ॥ ५ ॥  
 ततः संमन्त्रयामास मन्त्रिभिः स महीपतिः । हिरण्यवर्ष्मा राजेन्द्र पाण्डाल्यं पार्थि-  
 वं प्रति ॥ ६ ॥ तत्रैव निश्चितं तेषामभूद्राज्जां महान्नां । तथ्यं भवति  
 चेदेतं कन्या राजन् शिखण्डी । वधा पाण्डालराजानमानयिष्यामहे गृहम् ॥ ७ ॥  
 अन्यं राजानमाधाय पाण्डालेषु नरेश्वरम् । घातयिष्यामि नृपतिं पाण्डालं सशि-  
 खण्डिनम् ॥ ८ ॥ ततदा नूनमाज्जाय पुनर्दूतान्नराधिपः । प्रस्थापयत् पार्थताय निह-  
 न्नीति स्थिरो तव ॥ ९ ॥ भीष्म उवाच । स हि प्रकृत्या वै तीतः किञ्चिद्वाच नरा-  
 धिपः । तयं तीव्रमनुप्राप्तो ऋपदः पृथिवीपतिः ॥ १० ॥ विसृज्य दूतान् दार्-  
 शार्णे ऋपदः शोकमुच्छ्रितः । समेत्य भार्यां रहिते वाक्यमाह नराधिपः ॥ ११ ॥  
 तथेन महता विरुद्धो हृदि शोकैर्न चाहतः । पाण्डालराजो दयितां मातरुष  
 शिखण्डिनः ॥ १२ ॥ अतिघास्यति मां कोपात् सशक्तौ सुमहाबलः । हिरण्यवर्ष्मा  
 नृपतिः कर्षमाणो वरार्थिनीम् ॥ १३ ॥ किमिदानीं करिष्यावो मूर्छो कन्यामिमां



प्रति । शिखण्डी किल पुल्लेस्ते कन्येति परिशक्तिः ॥ १४ ॥ इति सक्षित्य यत्नेन  
 समित्रः सबलान्गः । वक्षितोऽस्मीति मन्वानो मां किलोद्धर्तुमिच्छति ॥ १५ ॥  
 किमत्र तथ्यं सुश्रोणि मिथ्या किं बुहि शोभने । श्रुत्वा ह्यत्रः शुभे वाक्यं  
 संविधास्याम्यहं तथा ॥ १६ ॥ अहं हि संशयं प्राप्नो बाला चेयं शिखण्डी ।  
 ह्यत्र राज्ञि महं कृच्छ्रं संप्राप्ता वरवर्णिनी ॥ १७ ॥ सा ह्यं सर्वविमोक्षाय तद्व-  
 माख्याहि पृच्छतः । तथा विदध्यां सुश्रोणि कृत्यमांशु शुचिस्मिते ॥ १८ ॥ शि-  
 खण्डी च मा तैस्तुं विधास्ये तत्र तद्वतः । रूपयाहं वरारोहे वक्षितः पुल्ल-  
 धर्मतः ॥ १९ ॥ मया दाशार्णके राज्ञा वक्षितः स महीपतिः । तदाचक्षु महाभागे  
 विधास्ये तत्र यद्विदितम् ॥ २० ॥ जानता हि नरेन्द्रेण ख्यापनार्थं परस्य वै ।  
 प्रकाशक्षोदिता देवी प्रत्यूवाच महीपतिम् ॥ २१ ॥

इत्युद्घोषपर्वणि अयोपाख्यानपर्वणि ऋषदप्रश्ने द्विनवत्यधिक-  
 शततमोऽध्यायः ॥ १२२ ॥



तीम्न उवाच । ततः शिखण्डीनो मता यथातद्वं नराधिप । आचक्षे महाबाहो  
 भर्त्रे कन्यां शिखण्डीनीम् ॥ १ ॥ अपुत्राया महाराज सपत्नीनां भयादिदम् ।  
 कन्या शिखण्डी जाता पूरुषो वै निवेदितः ॥ २ ॥ ह्यया चैव नरश्रेष्ठ तन्मे  
 प्रीत्यानुमोदितम् । पुल्लकर्म कृतक्षेव कन्यायाः पार्थिवर्षभ ॥ ३ ॥ भार्या चोता  
 ह्यया राजन् दशार्णधिपतेः सुता । मया च प्रत्यभिहितं देववाक्यार्थदर्शनात् । कन्या  
 तुह्य पुमान् भावीत्येवैषेतद्रूपोक्तिम् ॥ ४ ॥ एतश्चत्वा ऋषदो यज्ञसेनः सर्वं तद्वं  
 मञ्जुविद्येया निवेदय । मञ्जुं राज्ञा मञ्जुयामस राजन् यथायुक्तं रक्षणे वै प्रजा-  
 नाम् ॥ ५ ॥ मञ्जुकक्षेव समर्थं तस्मिन् दशार्णके वै नृपतौ नरेन्द्रे । स्वयं कृत्वा  
 विप्रलम्बं यथावन्मैत्रेकाग्र्ये निश्चयं वै जगाम ॥ ६ ॥ स्वभावगुण्यं नगरमाप-  
 काले तु भारत । गोपयामास राजेन्द्र सर्वतः समलकृतम् ॥ ७ ॥ आर्तिष्ठ परमां  
 राज्ञा जगाम सह भार्याया । दशार्णपतिना सार्द्धं विरोधे भरतर्षभ ॥ ८ ॥ कथं  
 मञ्जुनिना सार्द्धं न मे स्याद्विग्रहो महान् । इति सक्षित्य मनसा देवतामर्चयत्त-  
 दा ॥ ९ ॥ तद्व दृष्ट्वा तदा राजन् देवी देवपरसुता । अर्चां प्रयुञ्जानमथो  
 भार्या वचनमब्रवीत् ॥ १० ॥ देवानां प्रतिपत्तिश्च सत्यं साधुमता सताम् ।  
 किमु ह्यःखार्णवं प्राप्य तस्मादर्चयतां गुह्यम् ॥ ११ ॥ दैवतानि च सर्वाणि पूज्यन्तां  
 त्पुरिदक्षिणम् । अग्नयश्चापि ह्यस्त्यां दशार्णप्रतिषेधने ॥ १२ ॥ अयुक्तेन निर-

স্তিক্ মনসা চিন্তয় প্রভো । দেবতানাং প্রসাদেন সর্বমেতদ্ভবিষ্যতি ॥ ১৩ ॥  
 মস্ত্রিভির্মস্ত্রিতং সার্কং ত্বয়া পৃথুললোচন । পুরস্যাস্যাবিনাশাষ তচ্চ রাজংস্তথা  
 কুরু ॥ ১৪ ॥ দৈবং হি মানুষোপেতং ভূশং সিধ্যতি পার্থিব । পরস্পরবিরো-  
 ধাঙ্কি সিদ্ধিরস্তি ন চৈতযোঃ ॥ ১৫ ॥ তস্মাদ্বিধায় নগরে বিধানং সচিবৈঃ সহ ।  
 অর্চয়স্ব যথাকামং দৈবতানি বিশাম্পতে ॥ ১৬ ॥ এবং সংভাষমাণৌ তু দৃষ্ট্বা  
 শোকপরাযণৌ । শিখণ্ডিনী তদা কন্যা ব্রীড়িতেব তপস্বিনী ॥ ১৭ ॥ ততঃ সা  
 চিন্তয়ামাস মৎকৃতে দুঃখিতাবুভৌ । ইমাবিতি ততশ্চক্রে মতিং প্রাণবিনাশ-  
 নে ॥ ১৮ ॥ এবং সা নিশ্চয়ং কৃত্বা ভূশং শোকপরাযণা । নিজ্জগাম গৃহং ত্যক্ত্বা  
 গহনং নিজ্জনং বনম্ ॥ ১৯ ॥ যক্ষৈর্গর্জিতা রাজন্ স্তূণাকর্ণেন পালিতম্ । ত-  
 স্ত্বাদেব চ জনো বিসজ্জয়তি তদ্বনম্ ॥ ২০ ॥ তত্র চ স্তূণভবনং সুধামৃন্তিকলেপ-  
 নম্ । লাজোল্লাপিকধূমাচ্যমুচ্চপ্রাকারতোরণম্ ॥ ২১ ॥ তৎ প্রবিশ্য শিখণ্ডী সা  
 ঋপদস্যাত্মজা নৃপ । অনশ্নানা বহুতিথং শরীরমুদশোষযৎ ॥ ২২ ॥ দর্শয়ামাস  
 তাং যক্ষঃ স্তূণো মাদ্ভবসংযুতঃ । কিমর্থোহয়ং তবারন্তঃ করিষ্যে বৃহি মা  
 চিরম্ ॥ ২৩ ॥ অশক্যমিতি সা যক্ষং পুনঃপুনরুবাচ হ । করিষ্যামীতি বৈ ক্ষিপ্রং  
 প্রত্যুবাচাত গুহ্যকঃ ॥ ২৪ ॥ ধনেশ্বরস্যানুচরো বরদোহস্মি নৃপাত্মজে । অদেষ-  
 মপি দাস্যামি বৃহি যত্তে বিবক্ষিতম্ ॥ ২৫ ॥ ততঃ শিখণ্ডী তৎ সর্বমখিলেন ন্যাবে-  
 দযৎ । তস্মৈ যক্ষপ্রধানায় স্তূণাকর্ণায় ভারত ॥ ২৬ ॥ শিখণ্ডীবাচ । অপুত্রো  
 মে পিতা যক্ষ নচিরামাশমেষ্যতি । অভিষাস্যতি সক্রোধো দশার্গাধিপতির্হি  
 তম্ ॥ ২৭ ॥ মহাবলো মহোৎসাহঃ স হেমকবচো নৃপঃ । তস্মাদ্রক্ষস্ব মাং যক্ষ  
 মাতরং পিতরঞ্চ মে ॥ ২৮ ॥ প্রতিজ্ঞাতো হি ভবতা দুঃখপ্রতিশমো মম । ভবে-  
 যৎ পুরুষো যক্ষ ত্বৎপ্রসাদাদনিন্দিত ॥ ২৯ ॥ যাবদেব স রাজা বৈ নোপযাতি  
 পুরং মম । তাবদেব মহাযক্ষ প্রসাদং কুরু গুহ্যক ॥ ৩০ ॥

ইত্যুল্লোগপর্বনি অম্বোপাখ্যানপর্বনি শিখণ্ডিস্তূণাকর্ণসংবাদে ত্রিনব-  
 ত্যাধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১১৩ ॥



ভীষ্ম উবাচ । শিখণ্ডীবাক্যং শ্রুত্বাত্ স যক্ষো ভরতর্ষভ । প্রোবাচ মনসা-  
 চিন্ত্য দৈবেনোপনিপীড়িতঃ ॥ ১ ॥ ভবিতব্যং তথা তদ্বি মম দুঃখাষ কৌরব ।  
 ভদ্রে কামং করিষ্যামি সমযস্ত নিবোধ মে ॥ ২ ॥ কিঞ্চিৎ কালান্তরং দাস্যে পুং-  
 লিঙ্গং স্বমিদং তব । আগস্তব্যং ত্বয়া কালে সত্যং চৈব বদস্ব মে ॥ ৩ ॥ প্রভুঃ

मङ्गलसिद्धोऽस्मि कामचारी विहङ्गमः । मत्प्रसादात् पुरैश्चैव त्राहि'वङ्कुंश्च केव-  
 लम् ॥ ४ ॥ स्त्रीलिङ्गं धारयिष्यामि तवेदं पार्थिवाञ्ज्जे । सत्यं मे प्रतिजा-  
 नीहि करिष्यामि प्रियं तव ॥ ५ ॥ शिखण्डुवाच । प्रतिदास्यामि भगवन् पुंलिङ्गं  
 तव सूत्रत । किञ्चिं कालान्तरं स्त्रीङ्गं धारयस्व निशाचर ॥ ६ ॥ प्रतिघाते दशार्णे  
 तु पार्थिवे हेमवर्म्नि । कन्यैव हि भविष्यामि पुरुषञ्च भविष्यसि ॥ ७ ॥ तीम्न  
 उवाच । इत्युक्त्वा समयं तत्र चक्राते तावुर्भौ नृप । अन्योन्याभिसन्देहे  
 तौ संक्रामयतांततः ॥ ८ ॥ स्त्रीलिङ्गं धारयामास स्वर्णो यक्कोऽथ भारत ।  
 यक्कपक्ष तद्वीपुं शिखण्डी प्रत्यपद्यत ॥ ९ ॥ ततः शिखण्डी पाण्डाल्यः पुंस्त्र-  
 मासाद्य पार्थिव । विवेश नगरं ह्यर्कः पितरं समासदत् ॥ १० ॥ यथावत्तु तं  
 सर्वमाचथोऽपदस्य तत् । अपदस्तस्य तच्छ्रुत्वा हर्षमाहारयत् परम् ॥ ११ ॥ सभा-  
 र्यस्तुष्ट सम्भार महेश्वरवचस्तदा । ततः संप्रेषयामास दशार्णाधिपतेनृप । पुं-  
 योऽथ मम सूतः श्रेष्ठतां मे भवानिति ॥ १२ ॥ अथ दशार्णको राजा सह-  
 साभ्यागमत्तदा । पाण्डालराजं अपदं दुःखशोकसमन्वितः ॥ १३ ॥ ततः कान्पि-  
 ल्यमासाद्य दशार्णाधिपतिस्ततः । प्रेषयामास संकृत्य दूतं ब्रह्मविदांवरम् ॥ १४ ॥  
 बुहि मद्यचन्द्रदूत पाण्डाल्यं तं नृपाधमम् । यन्मे कन्यां स्वकन्यार्थं वृतवानसि  
 दुर्मते । फलं तस्याबलेपस्य अक्षयस्य न संशयः ॥ १५ ॥ एवमुक्त्वाश्च तेनासौ  
 ब्राह्मणो राजसन्तम । दूतः प्रयातो नगरं दशार्णनृपचोदितः ॥ १६ ॥ तत  
 आसादयामास पुरोधोऽपदं पुरे । तस्मै पाण्डालको राजा गामर्षं सुसं-  
 कृतम् । प्रापयामास राजेन्द्र सह तेन शिखण्डिना ॥ १७ ॥ तां पूजां नाभ्य-  
 नन्दत् स वाक्येणैवमुवाच ह । यद्वक्तुं तेन वीरेण राज्ञो काङ्क्षनवर्म्णा ॥ १८ ॥  
 यदेहं ह्यमधमाचारं दुहित्वाभ्याभिवक्षितः । तस्य पापस्य करणात् फलं प्राप्नुहि दुर्म-  
 ते ॥ १९ ॥ देहि युद्धं नरपते ममाद्य रणमूर्च्छनि । उक्करिष्याम्यहं ह्याद्य  
 सामात्यसूतवाक्कवम् ॥ २० ॥ तद्वृपालस्तसंयुक्तं आवितः किल पार्थिवः । दशार्ण-  
 पतिदूतेन मञ्जिमध्ये पुरोधस । अबवद्वरतश्रेष्ठं अपदः प्रणयानतः ॥ २१ ॥  
 यदाह मां भवान् ब्रह्मन् सयन्निवचनाच्चरः । अस्योत्तरं प्रतिवचो दूतो राज्ञे  
 वदिष्यति ॥ २२ ॥ ततः संप्रेषयामास अपदोऽपि महात्मने । हिरण्यवर्म्णे  
 दूतं ब्रह्मणं वेदपारगम् ॥ २३ ॥ तमागम्य तु राजानं दशार्णाधिपतिं तदा ।  
 तद्वाक्यमाददे राजन् यद्वक्तुं अपदं ह ॥ २४ ॥ आगमः क्रियतां व्यक्तः  
 कुमारोऽथ सूतो मम । मिथैतद्वक्तुं केनापि तन्न शक्यमित्युत ॥ २५ ॥

ततः स राजा ऋषयः श्रद्धा विमर्षयुक्तो युवतीर्रिष्ठाः । संप्रेषयामास सूचारु-  
 कपाः शिखण्डिनं स्त्री पुमान् वेति वेदुम् ॥ २७ ॥ ताः प्रेषितास्तुत्तवाव वि-  
 दिद्वा प्रीत्या राज्ञे तच्छशंसुर्हि सर्वम् । शिखण्डिनं पुरुषं कौरवेन्द्र दशार्ण-  
 राजाय महामुतावम् ॥ २९ ॥ ततः श्रद्धा तु राजा स आगमं प्रीतिमानथ ।  
 सशक्तिना समागम्य ह्यष्टौ वासमुवास ह ॥ २८ ॥ शिखण्डिने च मुदितः प्रादाद्विभुं  
 जनेश्वरः । हस्तिनोहश्चांश्च गांश्चैव अव्योहथ बहूलास्तथा । पूजितश्च प्रति-  
 यथो निभर्त्स्य तनयां किल ॥ २९ ॥ विनीतकिञ्चिषे प्रीते हेमवर्ष्मणि पार्थिवे ।  
 प्रतिघाते दशार्णे तु ह्यर्ककपा शिखण्डिनी ॥ ३० ॥ कस्यचिद्वथ कालस्य कुबेरो  
 नरवाहनः । लोकयात्रां प्रकुर्यान्ः शूणस्यागामिवेशनम् ॥ ३१ ॥ स तदाहस्यो-  
 परिवर्तमान आलोकयामास धनाधिगोपुता । शूणस्य यक्षस्य विवेश वेश्म स्व-  
 कृतं माल्यं गुणैर्विचित्रैः ॥ ३२ ॥ लाजैश्च गन्धैश्च तथा वितानैरभ्यर्चितं  
 धूपनधिपितम् । धृष्टैः पताकाभिरलकृतम् । तक्ष्यान्पेयामिषदस्तुहोमम् ॥ ३३ ॥  
 तत्र स्थानं तस्य दृष्ट्वा तु सर्वतः समलकृतम् । मणिरत्नसुवर्णानां मालाभिः परि-  
 पुरितम् ॥ ३४ ॥ नानाकुसुमगन्धाद्यं सिद्धं संमृष्टशोभितम् । अथात्रवीक्ष्य क-  
 पतिस्तान् यक्षान्मुगांस्तदा ॥ ३५ ॥ स्वलकृतमिदं वेश्म शूणस्यामितविक्रमाः ।  
 नोपसर्पति मांश्चैव कस्मादद्य स मन्दधीः ॥ ३६ ॥ यस्माज्जानन् स मन्दात्मा मामसौ  
 नोपसर्पति । तस्मात्तस्मै महादण्डो धार्यः स्यादिति मे मतिः ॥ ३७ ॥ यक्षा ऊचुः ।  
 ऋषयः सुता राजन् राज्ञो जाता शिखण्डिनी । तस्या निमित्ते कस्मिंश्चिद् प्रादात्  
 पुरुषलक्षणम् ॥ ३८ ॥ अग्रहील्लक्षणं स्त्रीणां स्त्रीभूतां तिष्ठते गृहे । नोपसर्पति  
 तेनासौ सत्रीडः स्त्रीश्वरुपवान् ॥ ३९ ॥ एतस्मात् कारणाद्वाजन् शूणो न ह्याद्य  
 सपति । श्रद्धा कुरु यथान्यायं विमानमिह तिष्ठताम् ॥ ४० ॥ आनीयतां शूण-  
 इति ततो यक्षाधिपोऽत्र वीत् । कर्तव्यं निग्रहं तस्य प्रत्युवाच पुनःपुनः ॥ ४१ ॥  
 सोऽभ्यगच्छत यक्षेन्द्रमाहूतः पृथिवीपते । स्त्रीश्वरुपो महाराज तस्मै त्रीडा-  
 समन्वितः ॥ ४२ ॥ तं शशापाथ संक्रुद्धो धनदः कुरुनन्दन । एवमेव भवद्भ्यस्य  
 स्त्रीभ्यं पापस्य गुह्यकाः ॥ ४३ ॥ ततोऽत्र वीक्ष्य कपतिर्म्महात्मा यस्माददास्तु नवम-  
 न्येह यक्षान् । शिखण्डिनो लक्षणं पापबुद्धे स्त्रीलक्षणं ग्रीः पापकर्मन् ॥ ४४ ॥  
 अप्रवृत्तं सुहृद्वे यस्मादेतद्वया कृतम् । तस्मादद्य प्रभृत्येव स्त्री भ्यं सा पुरुष-  
 स्तथा ॥ ४५ ॥ ततः प्रसादयामासुर्भक्ता वैश्रवणं किल । शूणस्यार्थे कुरुष्वान्तं  
 शापस्येति पुनःपुनः ॥ ४६ ॥ ततो महात्मा यक्षेन्द्रः प्रत्युवाचांशुगामिनः ।

सर्वान् यक्रगणांस्तु शपस्यास्तुचिकीर्षया ॥ ४१ ॥ शिखण्डिनि हते यक्राः स्वकपं प्रतिपत्स्यते । शूणो यक्रो निरुद्धेगो भवन्निति महामनाः ॥ ४८ ॥ इत्युज्ज्वला भगवान्नेवो यक्रराजः सुपूजितः । प्रथयो सहितैः सर्वैर्निमेषान्तरचारिभिः ॥ ४२ ॥ स्वगच्छुः शपं संप्राप्य तत्रैव न्यवसन्नुदा । समये चागमन्तुर्न शिखण्डी तं कपाचरम् ॥ ५० ॥ सोऽभिगम्यात्र वीद्वाक्यं प्राप्नोहन्मि भगवन्निति । तमत्र वीक्ष्य ततः शूणः प्रीतोऽस्मीति पुनः पुनः ॥ ५१ ॥ आज्ज्वेनागतं दृष्ट्वा राजपुत्रं शिखण्डिनम् । सर्वमेव यथारुत्तमाचक्षे शिखण्डिने ॥ ५२ ॥ यक्र उवाच । शण्डो वैश्रवणेनाहं ह्यङ्कुरते पार्थिवाञ्ज । गच्छेदानीं यथाकामं चर लोकान् यथासुखम् ॥ ५३ ॥ दिष्टमेतत् पुरा मन्ये न शक्यमतिवर्तितुम् । गमनं तव चेत्तो हि पौलस्त्यस्य च दर्शनम् ॥ ५४ ॥ भीष्म उवाच । एवमुक्तः शिखण्डी तु स्वगच्छेण भारत । प्रत्याजगाम नगरं हर्षेण महता वृतः ॥ ५५ ॥ पूजयामास विविधैर्गङ्गामालैर्महाधनैः । द्विजातीन् देवताशैचर चैतानथ चतुष्पथान् ॥ ५६ ॥ ऋपदः सहपुत्रेण सिद्धार्थेन शिखण्डिना । मुदङ्ग परमां लेते पाण्डाल्यः सह वान्कवैः ॥ ५७ ॥ शिष्यार्थे प्रददौ चाथ द्रोणाय कुरुपुङ्गव । शिखण्डिनं महाराजपुत्रं स्त्रीपूर्विकं तथा ॥ ५८ ॥ प्रतिपेदे चतुष्पादं धनुर्वेदं नृपाञ्जलः । शिखण्डी सह युष्माभिर्धुक्त्वायश्च पार्षतः ॥ ५९ ॥ मम श्वेतच्छरास्तु यथावत् प्रत्यवेदयन् । जडान्कवधिराकारा ये युक्ता ऋपदे मया ॥ ६० ॥ एवमेष महाराज स्त्रीपुमान् ऋपदाञ्जलः । स संस्तुतः कुरुश्रेष्ठ शिखण्डी रथसन्तमः ॥ ६१ ॥ ज्येष्ठा काशिपतेः कन्या अम्बा नामेति विश्रुता । ऋपदस्य कुले जाता शिखण्डी भरतर्षभ ॥ ६२ ॥ नाहमेनं धनुष्पाणिं युयुत्सुं समुपस्थितम् । मुहूर्तमपि पश्येयं प्रहरेयं न चाच्युत ॥ ६३ ॥ व्रतमेतन्मम सदा पृथिव्यामपि विश्रुतम् । स्त्रियां स्त्रीपूर्वके चैव स्त्रीनाम्नि स्त्रीस्वरूपिणि ॥ ६४ ॥ न मुक्षेयमहं वागमिति कौरवनन्दन । न हन्यामहमेतेन कारणेन शिखण्डिनम् ॥ ६५ ॥ एतत्तद्वमहं वेद जन्म तात शिखण्डिनः । ततो नैनं हनिष्यामि समरेष्वाततायिनम् ॥ ६६ ॥ यदि भीष्मः स्त्रियं हन्यात् संस्तुः कुर्युर्विगर्हणम् । नैनं तस्माद्वनिष्यामि दृष्ट्वापि समरे स्थितम् ॥ ६७ ॥ वैशम्पायन उवाच । एतच्छुद्धा तु कौरव्या राजा ह्यर्थेयान्धनसुदा । मुहूर्तमिव स ध्यात्वा भीष्मे युक्तमनन्यत ॥ ६८ ॥

इत्युद्धोगपर्वणि अयोपाख्यानपर्वणि शिखण्डिपुंस्तुप्राण्डौ चतुर्नवत्या-

धिकशततमोऽध्यायः ॥ १२४ ॥

सङ्गय उवाच । प्रभतायास्तु शर्वर्यां पुनरेव सूतस्तुव । मध्ये सर्वस्य सैन्यस्य  
 पितामहमपृच्छत ॥ १ ॥ पाण्डवेयस्य गाङ्गेय यदेतत् सैन्यमुद्यतम् । प्रभूतनर-  
 नागाश्च महारथसमाकुलम् ॥ २ ॥ भीमाङ्गुनप्रभृतिभिर्महेष्वासैर्महाबलैः ।  
 लोकपालसमैर्गुप्तैः धृष्टद्युम्नपुरोगमैः ॥ ३ ॥ अप्रधृष्यमनावार्यमुद्धृतमिव  
 सागरम् । सेनासागरमक्षोभ्यमपि देवैर्महाहवे ॥ ४ ॥ केन कालेन गाङ्गेय  
 रूपयेथा महाद्वाते । आचार्येया वा महेश्वासः रूपो वा सूमहाबलः ॥ ५ ॥ कर्णे  
 वा समरश्लाघी द्रोणिर्वा द्विजसन्तमः । दिव्यास्त्रविद्वेषः सर्वे भवन्तो हि बले मम ॥ ६ ॥  
 एतदिच्छाम्यहं ज्ञातुं परं कौतूहलं हि मे । इति नित्यं महाबाहो वक्तु-  
 मर्हसि तन्मम ॥ ७ ॥ भीष्म उवाच । अन्नुरूपं कुरूश्रेष्ठ द्रव्ये तत् पृथिवीपते ।  
 बलाबलममित्राणां तेषां यदिह पृच्छसि ॥ ८ ॥ शूरा राजन्मम रणे या शक्तिः  
 परमा भवेत् । शस्त्रवीर्यां रणे यत्तु बुजयोश्च महाबुज ॥ ९ ॥ आङ्गुर्वेनेव  
 युद्धेन योद्धव्य इतरौ जनः । मायायुद्धेन मायावी इत्येतद्वर्त्मनिश्चयः ॥ १० ॥  
 इन्यामहं महाभाग पाण्डवानामनीकिनीम् । दिवसे दिवसे कृत्वा भागं प्रागा-  
 त्त्रिकं मम ॥ ११ ॥ योधानां दशसहस्रं कृत्वा भागं महाद्वाते । सहस्रं रथि-  
 नामेकमेव भागो मतो मम ॥ १२ ॥ अनेनाहं विधानेन सन्नद्धः सततोत्थितः ।  
 रूपयेषु महत् सैन्यं कालेनानेन भारत ॥ १३ ॥ मुखेषु यदि वास्त्राणि  
 महान्ति समरे स्थितः । शतसहस्रघातीनि इन्यां मासेन भारत ॥ १४ ॥ सङ्गय  
 उवाच । शूरा भीष्मस्य तद्वाक्यं राजा द्रुर्योधनस्ततः । पर्यापृच्छत राजेन्द्र  
 द्रोणमाङ्गिरसाश्वरम् ॥ १५ ॥ आचार्य केन कालेन पाण्डुपुत्रस्य सैनिकान् ।  
 निहन्या इति तं द्रोणः प्रत्यूवाच हसन्निव ॥ १६ ॥ श्वविरोहस्मि महाबाहो मन्द-  
 प्राणविचेष्टितः । शस्त्राग्निना निर्दहेयं पाण्डवानामनीकिनीम् ॥ १७ ॥ यथा भीष्मः  
 शान्तुनवो मासेनेति मतिर्मम । एषा मे परमा शक्तिरेतन्ने परमं बलम् ॥ १८ ॥  
 द्वाभ्यामेव तु मासाभ्यां रूपः शारदतोहत्रवीत् । द्रोणिस्तु दशरात्रेण प्रति-  
 ज्जे बलक्षयम् । कर्णस्तु पञ्चरात्रेण प्रतिज्जे महास्त्रवित् ॥ १९ ॥ तच्छ्रुत्वा  
 सूतपुत्रस्य वाक्यं सागरगास्तुतः । जहास सस्वनं हासं वाक्येदमुवाच ह ॥ २० ॥  
 न हि यावद्दणे पार्थं वाणखण्डधनुर्धरम् । वासुदेवसमायुक्तं रथेनायास्तमा-  
 हवे ॥ २१ ॥ समागच्छसि राधेय तेनैवमभिमन्यसे । शक्यमेवञ्च भुवश्च त्रया  
 वक्तुं यथेष्टतः ॥ २२ ॥

इत्युद्योगपर्वणि अयोपाख्यानपर्वणि भीष्मादिशक्तिकथने

पञ्चनवत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १२५ ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ । এতচ্ছ্রদ্ধা তু কৌন্তেযঃ সর্বান্ ভ্রাতৃনুপহ্বরে । আহুয  
ভরতশ্রেষ্ঠ ইদং বচনমব্রবীৎ ॥ ১ ॥ যুধিষ্ঠির উবাচ । ধার্ত্তরাষ্ট্রস্য সৈন্যেষু যে  
চারপুরুষা মম । তে প্রবৃত্তিং প্রযচ্ছন্তি মমেমাং ব্যুধিতাং নিশাম্ ॥ ২ ॥ দুর্ঘো-  
ধনঃ কিলাপৃচ্ছদাপগেযং মহাব্রতম্ । কেন কালেন পাণ্ডুনাং হন্যাঃ সৈন্যমিতি-  
প্রভো ॥ ৩ ॥ মাসেনেতি চ তেনোক্তো ধার্ত্তরাষ্ট্রঃ সুদুর্শমতিঃ । তাবতা চাপি কা-  
লেন দ্রোণোহপি প্রতিজজ্জিবান্ ॥ ৪ ॥ গৌতমো দ্বিগুণং কালমুক্তবানিতি নঃ  
শ্রুতম্ । দ্রৌণিস্তু দশরাত্রেণ প্রতিজজে মহাস্ত্রবিৎ ॥ ৫ ॥ তথা দিব্যাস্ত্রবিৎ রুর্গঃ  
সংপৃষ্ঠঃ কুরুসংসদি । পঞ্চভির্দিবসৈর্হন্তুং স সৈন্যং প্রতিজজ্জিবান্ ॥ ৬ ॥  
তস্মাদহমপৌচ্ছামি শ্রোতুমজ্জুন তে বচঃ । কালেন কিযতা শত্রূন ক্ষপযেরিতি  
ফাল্গুন ॥ ৭ ॥ এবমুক্তো গুডাকেশঃ পার্থিবেন ধনঞ্জযঃ । বাসুদেবং সমীক্ষ্যেদ-  
বচনং প্রত্যভাষত ॥ ৮ ॥ সর্ব এতে মহাত্মানঃ কৃতাস্ত্রাশ্চিত্রযোধিনঃ । অসংশয  
মহারাজ হন্যুরেব ন সংশযঃ ॥ ৯ ॥ অপৈতু তে মনস্তাপো যথাসত্যং ব্রবী-  
ম্যহম্ । হন্যামেকরথেনৈব বাসুদেবসহায়বান্ ॥ ১০ ॥ সামরানপি লোকাংস্ত্রীন্  
সর্বান স্থাবরজঙ্গমান্ । ভূতং ভব্যং ভবিষ্যচ্চ নিমেষাদিতি মে মতিঃ ॥ ১১ ॥  
যত্তদ্বোরং পশুপতিঃ প্রাদাদস্ত্রং মহমম । কৈরাতে দ্বন্দ্বযুদ্ধে তু তদিদং মযি  
বর্ততে ॥ ১২ ॥ যদ্বগাস্তে পশুপতিঃ সর্বভূতানি সংহরন্ । প্রযুক্তে পুরুষব্যাত্রে  
তদিদং মযি বর্ততে ॥ ১৩ ॥ যম জানাতি গাঙ্গেযো ন দ্রোণো ন চ গৌতমঃ । ন চ  
দ্রোণসুতো রাজন্ কুত এব তু সূতজঃ ॥ ১৪ ॥ ন তু যুক্তং রণে হস্তং দিব্যৈরস্ত্রেঃ  
পৃথগ্জনম্ । আজ্জবেনৈব যুদ্ধেন বিজেষ্যামো বযং পরান্ ॥ ১৫ ॥ তথেষে  
পুরুষব্যাত্রাঃ সহায়াস্তব পার্থিব । সর্বে দিব্যাস্ত্রবিদ্বাংসঃ সর্বে যুদ্ধাভিকাজ্জি-  
গঃ ॥ ১৬ ॥ বেদান্তাবভূথস্মাতাঃ সর্ব এতেহপরাজিতাঃ । নিহন্যুঃ সমরে সেনাং  
দেবানামপি পাণ্ডব ॥ ১৭ ॥ শিখণ্ডী যুযুধানশ্চ ধৃষ্টিদ্যুম্নশ্চ পার্ষতঃ । ভীমসেনো  
যমৌ চোভৌ যুধামন্যুত্রমৌজসৌ ॥ ১৮ ॥ বিরাটক্রপদৌ চোভৌ ভীমদ্রোণ-  
সমৌ যুধি । শঙ্খশ্চৈব মহাবাহুর্হৈডিম্বশ্চ মহাবলঃ ॥ ১৯ ॥ পুল্লোহস্যাজ্জনপর্বা  
তু মহাবলপরাক্রমঃ । শৈনেযশ্চ মহাবাহুঃ সহায়ো রণকোবিদঃ ॥ ২০ ॥ অতি-  
মন্যুশ্চ বলবান্ দ্রৌপদ্যাঃ পঞ্চ চাত্মজাঃ । স্বযঞ্চাপি সমর্থোহসি ত্রৈলোক্যোৎ-  
সাদনেহপি চ ॥ ২১ ॥ ক্রোধাদন্যং পুরুষং পশ্যেস্তথা শক্রসমহৃত্যে । স ক্ষিপ্রং ন  
ভবেদ্যুক্তমিতি হ্মাং বেদ্বি কৌরব ॥ ২২ ॥

ইত্যুদ্যোগপর্বণি অষোপাখ্যানপর্বণি অজ্জুনবাক্যে ষণ্ণবত্যধিক-

শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১২৬ ॥

वैशम्पायन उवाच । ततः प्रभाते विमले धार्तराष्ट्रेण चोदिताः । दुर्योधनेन राजानः प्रययुः पाण्डवान् प्रति ॥ १ ॥ आप्लाव्य शुचयः सर्वे अग्निः शुक्रवाससः । गृहीतशस्त्रध्वजिनः स्वस्ति वाच्य हताग्रयः ॥ २ ॥ सर्वे ब्रह्मविदः शूराः सर्वे सूचरित-  
त्रताः । सर्वे कामकृतंश्चैव सर्वे चाहवलङ्गणाः ॥ ३ ॥ आहवेषु पराङ्मौकान् जिगीषन्तो महाबलाः । एकाग्रमनसः सर्वे श्रद्धधानाः परस्परम् ॥ ४ ॥ विन्दासु-  
विन्दावावन्तोऽपि कैकेया बाह्लिकैः सह । प्रययुः सर्व एवैते भारद्वाजपुरो-  
गमाः ॥ ५ ॥ अश्वथामा शान्तनवः सैक्यबोहथ जयद्रथः । दार्शिन्याः प्रती-  
च्याश्च पार्वतीयाश्च ये नृपाः ॥ ६ ॥ गान्धारराजः शकुनिः प्राचेद्यादीत्याश्च सर्वशः ।  
शकाः किराता यवनाः शिवयोहथ वशातयः ॥ ७ ॥ स्वैः स्वैरनीकैः सहिताः परि-  
वार्य महारथम् । एते महारथाः सर्वे द्वितीये निर्ययुर्बले ॥ ८ ॥ क्रुतवर्मा महा-  
नीकस्त्रिगर्भश्च महारथः । दुर्योधनश्च नृपतिर्ब्राह्मिणः परिवारितः ॥ ९ ॥ शलो  
दुरिश्रवाः शल्यः कौशलेयोहथ बृहद्रथः । एते पश्चादनुगता धार्तराष्ट्रपुरो-  
गमाः ॥ १० ॥ ते समेत्य यथान्यायं धार्तराष्ट्रे महाबलाः । कुरूक्षेत्रस्य पश्चाद्धे  
व्यातिष्ठन्तु दंशिताः ॥ ११ ॥ दुर्योधनस्तु शिविरं कारयामास भारत । यथैव  
हास्तिनपुरं द्वितीयं समलङ्कृतम् ॥ १२ ॥ न विशेषं विजानन्ति पुरस्य शिविर-  
स्य वा । कुशला अपि राजेन्द्र नरा नगरवासिनः ॥ १३ ॥ तादृशान्येव दुर्गानि  
राज्यामपि महीपतिः । कारयामास कौरव्यः शतशोहथ सहस्रशः ॥ १४ ॥ पङ्क-  
योजनमुत्सृज्य मण्डलं तद्रणजिरम् । सेनानिकेषास्ते राजन्नाविशङ्कतसंघ-  
शः ॥ १५ ॥ तत्र ते पृथिवीपाला यथोत्साहं यथाबलम् । विविशुः शिविरा-  
ण्यत्र द्रव्यवन्ति सहस्रशः ॥ १६ ॥ तेषां दुर्योधनो राजा ससैन्यानां महा-  
अनाम् । व्यादिदेश सवाह्यानां भक्ष्यभोज्यमनुत्तमम् ॥ १७ ॥ सनागाश्वमनु-  
ष्याणां ये च शिब्लोपजौबिनः । ये चान्येहनुगतास्तत्र सूतमागधवन्दिनः ॥ १८ ॥  
वनिजो गणिकाश्चारा ये चैव प्रेक्षका जनाः । सर्वास्तान् कौरवो राजा  
विधिवत् प्रत्यवैकृत ॥ १९ ॥

इत्युद्योगपर्वणि अष्टोपाख्यानपर्वणि कौरवसैन्यनिर्वाणे सप्तमवतः-

धिकंशततमोऽध्यायः ॥ १२१ ॥



वैशम्पायन उवाच । तथैव राजा कौन्तेयो धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः । धृक्द्वान्-  
मुखान् वीरांश्चेदयामास भारत ॥ १ ॥ चेदिकाशिककषाणां नेत्रारं दृढवि-



ক্রমম্ । সেনাপতিমিত্রম্বৎ ধৃষ্টকেতুমথাदिशत् ॥ ২ ॥ বিরাটং দ্রুপদৈষ্ণব  
 যুযুধানং শিখণ্ডিনম্ । পাঞ্চাল্যো চ মহেষাসৌ যুধামন্যুত্তমৌজসৌ ॥ ৩ ॥ তে  
 শুরাশ্চিত্রবর্মাণস্তপ্তকুণ্ডলধারিণঃ । আজ্যাবসিক্কা জ্বলিতা ধিক্ষ্যেষ্ণিব হতা-  
 শনাঃ । অশোভন্ত মহেষাসা গ্রহাঃ প্রজ্বলিতা ইব ॥ ৪ ॥ অথ সৈন্যং যথাযোগং  
 পূজযিত্বা নরর্ষভঃ । দিদেশ তান্যনীকানি প্রযাণায় মহীপতিঃ ॥ ৫ ॥ তেষাং  
 যুধিষ্ঠিরো রাজা সসৈন্যানাং মহাত্মনাম্ । ব্যাদিদেশ সবাছানাং ভক্ষ্যভোজ্য-  
 মনুত্তমম্ । সগজাশ্বমনুষ্যাণাং যে চ শিল্লোপজীবিনঃ ॥ ৬ ॥ অভিমন্যুং বৃহ-  
 ত্তঞ্চ দ্রৌপদেষাংশ্চ সর্ষশঃ । ধৃষ্টদ্র্যম্মুখানেতান্ প্রাহিণোৎ পাণ্ডনন্দনঃ ॥ ৭ ॥  
 ভীমঞ্চ যুযুধানঞ্চ পাণ্ডবঞ্চ ধনঞ্জয়ম্ । দ্বিতীয়ং প্রেষয়ামাস বলস্কন্ধং যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ৮ ॥  
 ভাণ্ডং সমারোপযতাং চরতাং সংপ্রধাবতাম্ । হৃষ্টানাং তত্র ঘোধানাং শব্দো  
 দিবমিবাষ্পৃশৎ ॥ ৯ ॥ স্বয়মেব ততঃ পশ্চাদ্বিরাটদ্রুপদান্বিতঃ । অথাপরেন্মহী-  
 পাতৈঃ সহ প্রাযাম্মহীপতিঃ ॥ ১০ ॥ ভীমধন্বায়নী সেনা ধৃষ্টদ্র্যম্নেন পালিতা ।  
 গজৈব পূর্ণা স্তিমিতা স্যন্দমানা ব্যদৃশ্যত ॥ ১১ ॥ ততঃ পুনরনীকানি ন্যযোজযত  
 বুদ্ধিমান্ । মোহয়ন্ ধৃতরাষ্ট্রস্য পুত্রাণাং বুদ্ধিনিশ্চয়ম্ ॥ ১২ ॥ দ্রৌপদেষাম্-  
 হেষাসানভিমন্যুঞ্চ পাণ্ডবম্ । নকুলং সহদেবঞ্চ সর্ষাংশ্চৈব প্রভদ্রকান্ ॥ ১৩ ॥  
 দশ চাশ্বসহস্রাণি দ্বিসহস্রাণি দস্তিনাম্ । অযুতঞ্চ পদাতীনাং রথাঃ পঞ্চশতং  
 তথা ॥ ১৪ ॥ ভীমসেনস্য দুর্ধর্ষং প্রথমং ব্যাদিশদ্বলম্ । মধ্যমে চ বির টঞ্চ  
 জঘৎসেনঞ্চ পাণ্ডবঃ ॥ ১৫ ॥ মহারথো চ পাঞ্চাল্যো যুধামন্যুত্তমৌজসৌ । বীৰ্য্য-  
 বন্তৌ মহাত্মানৌ গদাকাস্মুকধারিণৌ ॥ ১৬ ॥ অন্বযাতাং তদা মধ্যে বাসুদেব-  
 ধনঞ্জয়ৌ । বভূবুরতিসংরদ্ধাঃ রুতপ্রহরণা নরাঃ ॥ ১৭ ॥ তেষাং বিংশতিসাহস্রা  
 স্বজাঃ শূরৈরধিষ্ঠিতাঃ । পঞ্চ নাগসহস্রাণি রথবংশাশ্চ সর্ষশঃ ॥ ১৮ ॥ পদাতয়শ্চ  
 যে শূরাঃ কাস্মুকাসিগদাধরাঃ । সহস্রশোহন্বযুঃ পশ্চাদগ্রতশ্চ সহস্রশঃ ॥ ১৯ ॥  
 যুধিষ্ঠিরো যত্র সৈন্যে স্বয়মেব বলার্ণবে । তত্র তে পৃথিবীপালা ভূযিষ্ঠং পর্য্যবস্থি-  
 তাঃ ॥ ২০ ॥ তত্র নাগসহস্রাণি হযানামযুতানি চ । তথা রথসহস্রাণি পদাতীনাঞ্চ  
 ভারত ॥ ২১ ॥ চেকিতানঃ স্বসৈন্যেন মহতা পার্থিবর্ষভঃ । ধৃষ্টকেতুশ্চ চেদীনাং  
 প্রণেতা পার্থিবৌ যযৌ ॥ ২২ ॥ সাত্যকিশ্চ মহেষাসৌ রক্ষীনাং প্রবরৌ রথঃ ।  
 রতঃ শতসহস্রৈঃ রথানাং প্রণুদন্ বলী ॥ ২৩ ॥ ক্ষত্রদেবত্রকদেবৌ রথস্থৌ  
 পুরুষর্ষভৌ । জঘনং পালযন্তৌ চ পৃষ্ঠতোহনুপ্রজগ্মতুঃ ॥ ২৪ ॥ ভক্ষ্যং ভোজ্যঞ্চ  
 যৎ কিঞ্চিৎ যানং যুগ্যঞ্চ সর্ষ শঃ । তত্র নাগসহস্রাণি হযানামযুতানি চ ॥ ২৫ ॥

कल्लु सर्वं कलत्रं च किंश्चिद् क्लृप्तं क्लृप्तं । कोषसंघस्यैवांशुः कोष्ठागारं ।  
 तथैव च । गजानीकेन संगृह्य शनैः प्रायान्बुधिष्ठिरः ॥ २७ ॥ तमन्वयात् सत्य-  
 धृतिः सौचित्तिर्युद्धदम् । श्रेणिमान् वसुदानश्च पुत्रः काश्यप्य वा विभुः ॥ २८ ॥  
 रथा विंशतिसहस्रा ये तेषामनुयायिनः । हयानां दश कोट्यश्च महतां किंकिणी-  
 किनाम् ॥ २८ ॥ गजा विंशतिसहस्रा ङ्घ्रिदन्ताः प्रहारिणः । कुलीना भिन्नकरटा  
 मेषा इव विसर्पिनः ॥ २९ ॥ षष्टिर्नागसहस्राणि दशान्यानि च भारता । युधिष्ठिरस्य  
 वान्यासन् युधि सेना महान्ननः ॥ ३० ॥ करुण इव जीमूताः प्रतिभकरटामुखाः ।  
 राजानमन्वयुः पश्चात्कलन्तु इव पर्वताः ॥ ३१ ॥ एवं तस्य बलं तीमं कुन्ती-  
 पुत्रस्य धीमतः । वदाश्रित्याथ युयुधे धार्तराज्यं सुयोधनम् ॥ ३२ ॥ ततोऽन्ये  
 शतशः पश्चात् सहस्रायुतशो नराः । नर्दन्तुः प्रययुस्तेषामनीकानि सहस्रशः ॥ ३३ ॥  
 तत्र तेरीसहस्राणि शङ्खानामयुतानि च । न्यादादयन्तु संरुक्ताः सहस्रायुतशो  
 नराः ॥ ३४ ॥

इत्युद्योगपर्वणि अथोपाख्यानपर्वणि पाण्डवसैन्यानिर्वाणेऽर्जुनवत्याधि-

कशततमोऽध्यायः ॥ १२८ ॥

समाप्तमथोपाख्यानपर्व समाप्तं दमुद्योगपर्व ।



अथवसुनिदोषानाधमाने शकादे सुरपुरगमनैकोद्योगमुद्योगपर्व ।  
 बुधगणपरिशुद्धं मुद्रितं धीरतुष्टौ विविधसङ्गपदेशं वर्द्धमानाधिपेन ॥



# श्रीमहाभारतं

श्रीमन्नर्षिबेदव्यासविरचितम्

तीर्थपर्व ।



श्रीलक्ष्मीयुक्त बर्द्धमानाधिपतिमहाराजाधिराजमहोत्तवचन्द्रबाहादुरसाहज्या वायेन च  
श्रीश्यामाचरणतद्ववागीशरामतनु तर्कसिद्धान्तुगेपालधनचूडामणिरामकृष्णतर्कपञ्चाननैः

परिशोधितम् ।



बर्द्धमान

सत्यप्रकाश यन्त्रेण मुद्रितम् ।

शकाब्दः १९८८ ।

শ্রীপুরুষোত্তমদেবচন্ডীরাজেন মুদ্রিতং ।

## महाभारतीयतीर्थपरिसृष्टीपत्रम् ।

प्रकरणं ... १ ... ..	पृष्ठे पङ्क्तौ	प्रकरणं ... ..	पृष्ठे पङ्क्तौ
कुरुपाण्डवानां युद्धाय कुरुक्षेत्रे गमनं नियमसंस्थापनम् ... ..	१ १	धृतराष्ट्रं प्रति सञ्जयस्य पाण्डवीय- प्रतिव्याहप्रकारकथनं ... ..	७२ ५
पुत्राणामनयं ध्यायन्तं धृतराष्ट्रं प्रति व्यासस्याश्वासनम् ... ..	२ २१	सञ्जयं प्रति धृतराष्ट्रस्य योधगणेत्- साहाजिज्ञासा सञ्जयस्य तदुत्तर- कथनम् ... ..	७४ ४
व्यासस्य सञ्जयाय दिवाचमुद्दानं धृ- तराष्ट्राय दुर्निमित्तकथनम् ... ..	३ ४	तीर्थकल्पितमभेदावाहं दृष्ट्वा वि- षण्णं युधिष्ठिरं प्रत्यर्जुनस्य सा- ञ्जनं ... ..	७५ १०
व्यासधृतराष्ट्रयोर्भक्तिप्रत्यूहोक्तिः ... ..	७ १४	श्रीकृष्णोपदेशेन दुर्गां स्तुवन्तमर्जु- नं प्रति देव्या वरप्रदानं ... ..	७९ १
धृतराष्ट्रं प्रति व्यासस्य विजयचिह्न- कथनम् ... ..	९ १०	स्वपरसैन्याप्राधान्यनिकपणे आचा- र्यां प्रति दुर्योधनस्योक्तिः ... ..	७८ २३
भौमशुभं पृच्छन्तं धृतराष्ट्रं प्रति सञ्जयस्य तत्कथनम् ... ..	८ ११	दुर्योधनस्य हर्षोत्पादनार्थं डी- ग्रेण शस्त्रे ध्वाते पाण्डवानां श- स्त्रबाधः ... ..	७९ १
सुदर्शनद्वीपकथनम् ... ..	९ ११	उभयमेनयोर्मध्ये रथस्थापनार्थं श्रीकृष्णं प्रत्यर्जुनस्योक्तिः ... ..	७९ १४
मालावत्पर्कतवर्णनम् ... ..	१२ २१	युद्धार्थिनः पित्रादीन् दृष्ट्वा विषण्णस्या- र्जुनस्य श्रीकृष्णं प्रति खेदोक्तिः ... ..	७९ २४
रमणकादि वर्षकथनम् ... ..	१४ ५	विषीदन्तमर्जुनं प्रति श्रीकृष्णस्य सा- ञ्जनं पूजार्थं तीर्थद्रोणयोरुपरि- शराघातपराङ्मुखाय तस्मै साञ्चा- योगकीर्तनम् ... ..	८० २१
भारतवर्षीयनदीजनपदानां नाम- कथनम् ... ..	१५ ५	कर्मवोगकथनं ... ..	८४ ५
भारतवर्षीयायुःप्रमाणकथनम् ... ..	१४ १४	ज्ञानयोगकथनं ... ..	८७ १
अश्वत्थीपशाकद्वीपलवणसमुद्रक्षीरोदि- समुद्राणां परिमाणकथनम् ... ..	१६ ९	कर्मसन्नासयोगकथनम् ... ..	८९ २७
विस्तारेण शाकद्वीपवर्णनम् ... ..	१६ २४	आङ्गसंयमयोगकथनम् ... ..	८९ १
कुशक्रोशशाल्मलिपुष्करद्वीपानां वर्ण- नम् ... ..	२१ १	विज्ञानयोगकथनम् ... ..	९१ १
चन्द्रसूर्यास्वर्दानुग्रहाणां परिमाण- कथनम् ... ..	२२ १९	ब्रह्मयोगकथनम् ... ..	९२ २१
सञ्जयस्य संक्षेपेण धृतराष्ट्राय तीर्थ- पतनवृत्तान्तकथनम् ... ..	२३ १०	राजशुभयोगकथनम् ... ..	९४ १
सञ्जयं प्रति धृतराष्ट्रस्य तीर्थवधप्र- कारपृच्छा ... ..	२४ १	विभूतियोगकथनम् ... ..	९५ १७
सञ्जयस्य धृतराष्ट्रकृतप्रश्नस्योत्तर- कथनारम्भः ... ..	२५ ९	विश्वरूपप्रदर्शनम् ... ..	९९ १२
दुःशामनं प्रति दुर्योधनस्य शिष्य- शितो तीर्थरक्षणार्थमादेशः ... ..	२९ २१	भक्तियोगकथनम् ... ..	९९ १०
कुरुपाण्डवसैन्यावर्णनं ... ..	२८ ४		



# সূচীপত্রম্ ।

১

প্রকরণং ... ) ... ..	পৃষ্ঠে পঙ্ক্তৌ
সসৈন্যকলিঙ্গরাজস্য ভীমসেনান্নি- ধনম্ ... ..	২৪ ২১
ধৃষ্টদ্যুম্নাদীনাং সঙ্কুলযুদ্ধম্ ... ..	২৯ ২৪
দ্বিতীয়দিনযুদ্ধাবহারঃ ... ..	১০১ ৮
কৌরবীযগরুডবৃহস্য পাণ্ডবীয়ার্দ্ধ- চন্দ্রবৃহস্য চ নির্মাণপ্রকারকথনম্	১০১ ২১
কুরুপাণ্ডবানাং তৃতীয়দিবসীয় সঙ্কুল- যুদ্ধং ... ..	১০২ ২২
দুর্যোধনবাক্যে ভীষ্মস্য পাণ্ডবপ- রাক্রমনিবারণাঙ্গীকারঃ ... ..	১০৫ ২১
কুরুপাণ্ডবযোস্তমূলযুদ্ধকথনং ...	১০৬ ১৪
ভীষ্মস্য পরাক্রমং পার্থস্য মৃদুতাঞ্চ দৃষ্টা কৃষ্ণস্য চিন্তনং ... ..	১০৯ ১
পার্থরথং প্রতি ভীষ্মস্য পুনঃস্বাণব- র্ষণং ... ..	২০৯ ১১
ভীষ্মনিদেশাং দ্রোণাদীনাং বিসরণং	১০৯ ১৫
সাত্যকৈরজ্জুনসাহায্যকরণং ...	১০৯ ১৮
সমরে পার্থস্য মৃদুতাং ভীষ্মসোপ্র- তাঞ্চ দৃষ্টা সাত্যকিং প্রতি কৃষ্ণস্য বাক্যং ... ..	১০৯ ২৬
ভীষ্মবধার্থমাস্তচক্রস্য কৃষ্ণস্য রথা- দবপ্লুতা গমনং ... ..	১১০ ৬
অযাস্তং কৃষ্ণং সমীক্ষ্য ভীষ্মস্য স্ততিবাক্যং ... ..	১১০ ১৭
কৃষ্ণং সাস্বযিতুমজ্জুনস্য রথাবতর- ণাদি ... ..	১১০ ২২
অজ্জুনানুনয়েন শ্রীকৃষ্ণস্য পুনঃস্বা- রোহণং শঙ্খনিদাদশ্চ ... ..	১১১ ১
ভীষ্মাদিভিঃ সহাজ্জুনস্য পুনঃস্বমূল- সংগ্রামঃ ... ..	১১১ ৯
অজ্জুনাস্ত্রেণ সভীষ্মাদিকুরুগামপযা- নং তৃতীয়দিবসীয়যুদ্ধোপরমশ্চ	১১২ ১৫
চতুর্থদিবসীয়যুদ্ধারম্ভঃ ... ..	১১৩ ১

প্রকরণং ... ..	পৃষ্ঠে পঙ্ক্তৌ
দ্রোণাদিভিঃ সহাভিমন্যোযুদ্ধং ...	১১৪ ১৯
ধৃষ্টদ্যুম্নেন নিহন্যমানমাস্ত্রজং দৃষ্টা তেন সহ সাংঘমনেযুদ্ধং ...	১১৫ ১৫
শোচন্তং ধৃতরাষ্ট্রং প্রতি সঞ্জয়স্য শল্যধৃষ্টদ্যুম্নযোযুদ্ধকথনং ...	১১৬ ৭
শল্যরক্ষার্থমাগতানাং দুর্যোধনা- দিদশবীরানাং ভীমাদিভির্দর্শভিঃ সহ যুদ্ধং ... ..	১১৬ ২২
গজানীকেন সহ ভীমস্য মহদ্যুদ্ধং ...	১১৭ ১৮
ভীমসেনস্য গদাযুদ্ধং ... ..	১১৯ ১
প্রগৃহীতমহাগদং বকোদরং দৃষ্টা ভীষ্মস্য সমাগমঃ তং প্রতি সাত্য- কৈরভিপতনঞ্চ ... ..	১১৯ ২৮
সাত্যকিভুরিশ্রবসোযুদ্ধং ... ..	১২০ ১৬
ভুরিশ্রবোরক্ষার্থং দুর্যোধনাদীনাং সাত্যকিরক্ষার্থং পাণ্ডবানাঞ্চা- গমনং ... ..	১২০ ১৮
ভীমস্য রথারোহণং বাণযুদ্ধঞ্চ ...	১২০ ১৫
ভীমমতিবাতানাং চতুর্দশখার্তরা- ষ্ট্রানাং মধ্যেহৃষ্টানাং নিধনং ...	১২১ ১৭
ভীষ্মবাক্যেন ভীমং প্রতি ভগদত্ত- স্যাভিপতনং ভগদত্তঘটোৎক- চযোযুদ্ধং চতুর্থদিবসীয়সৈন্যাব- হারশ্চ ... ..	১২২ ২
ধৃতরাষ্ট্রং প্রতি সঞ্জয়স্য পাণ্ডবজয়- হেতুকথ্যং ... ..	১২৪ ৫
ভীষ্মদুর্যোধনসংবাদকথনং ...	১২৫ ৮
পঞ্চমদিবসীয়যুদ্ধারম্ভঃ ... ..	১৩১ ১
দ্রোণং প্রতি দুর্যোধনবাক্যং ...	১৩২ ১
দ্রোণপ্রভৃতীনাং যুদ্ধং ... ..	১৩২ ৫
কুরুপাণ্ডবানাং সঙ্কুলযুদ্ধং ... ..	১৩২ ১৬
ভীষ্মবিরাটয়ে যুদ্ধং ... ..	১৩৭ ১৫
অজ্জুনাস্থাশ্বোযুদ্ধং ... ..	১৩৭ ১৭



प्रकरणं ... ..	पृष्ठे पङ्क्तौ	प्रकरणं ... ..	पृष्ठे पङ्क्तौ
भीमदुर्योधनयोयुद्धं ... ..	१७८ ७	भीमदुर्योधनयोः संवादः ... ..	१८१ १७
चित्तसेनादिभिः सहाभिमन्योयुद्धं	१७८ १४	कुरुपाण्डवानां वृत्तिनिर्माणं सप्तम-	
सात्याकिदुरिश्रवसोयुद्धकथनं ...	१७९ ११	दिवसीययुद्धारम्भश्च ... ..	१८३ ४
दुरिश्रवसा सह युद्धे सात्याकिपुत्रा-		अर्जुनं प्रातः भीमस्य गमनं ... ..	१८४ २०
णां विनाशः ... ..	१८० २३	द्रोणपर्वराटयोयुद्धं ... ..	१८५ १
पञ्चमदिवसीययुद्धसमाप्तिः ... ..	१८० २३	द्रोणवाणेन शश्वस्य निधनं ... ..	१८५ १५
कुरुपाण्डवयोः क्रोधमकरवृहनि-		द्रोणशिखाणुनोयुद्धं ... ..	१८५ २१
र्माणं षष्ठदिवसीययुद्धारम्भश्च ...	१८१ १	सात्याकालयुषयोयुद्धं ... ..	१८६ ११
धृतराष्ट्रस्य खेदोक्तिः ... ..	१८२ १८	धृष्टदुय्यमां दुर्योधनस्य पराजयः	१८६ १८
धृतराष्ट्रं प्रति सञ्जयवाक्यं ... ..	१८३ २३	कृतवर्मणा सह भीमस्य युद्धं ... ..	१८६ २१
दुःशासनादिभिः सह भीमस्य युद्धं ...	१८४ १	कुरुपाण्डवानां द्वैरथयुद्धप्रकार-	
विशोकमुखादेकायनगतं भीमं		कथनं ... ..	१८९ १३
श्रुत्वा धृष्टदुय्यस्य तत्सहाय्यार्थ-		सप्तमदिवसीययुद्धावहारः ... ..	१९० ४
मतिगमनं ... ..	१९४ १५	अष्टमदिवसीययुद्धारम्भः ... ..	१९० २१
धृष्टदुय्यमुक्तेन प्रमोहनास्त्रेण धार्त-		युयुत्सुं भीमं रिराक्षिष्यमाणानां	
राष्ट्राणां मोहस्तान् मुक्त्वा दृष्ट्वा		धार्तराष्ट्राणां भीमवाणेन निधनम्	१९० २०
द्रोणस्य प्रज्वालप्रयोगश्च ... ..	१९५ २३	विलपन्तं धृतराष्ट्रं प्रति सञ्जयस्य	
युधिष्ठिरस्याञ्जरा सैन्याभिमन्याप्र-		भीमादिभिरुत्तरास्तकथनं ... ..	१९० १८
भुतीनां भीमपार्षतयोः साहा-		इरावतो युद्धं निधनश्च ... ..	१९२ ११
य्यार्थं कुरुसैन्यप्रवेशः ... ..	१९६ ५	षटोत्कचस्य महदुद्धं ... ..	१९६ ७
द्रोणपार्षतयोयुद्धं ... ..	१९६ १८	भीमदुर्योधनयोः संवादो हैडिम्न-	
सञ्जातकदुर्योधनस्य भीमेन सह		भगदत्तयोः समागमश्च ... ..	१९७ १८
युद्धं ... ..	१९९ ५	इरावन्निधनश्रवणेऽर्जुनस्य विलापः	१९९ ९
सौत्रद्वैकेकेयधृष्टकेतुद्रोपदेया-		भीमादिभिः सहार्जुनादीनां सं-	
नां द्वादशमहारथानां युद्धं ... ..	१९९ १९	ग्रामः ... ..	१९९ २७
दुर्योधनं निर्भयं तेन सह भी-		अष्टमदिवसीययुद्धावहारः ... ..	१९० ११
मस्य युद्धं ... ..	१९८ २३	दुर्योधनस्य कर्णादिभिः सह मञ्जगं	१९० २३
जयद्रथस्य दुर्योधनपार्श्वग्रहणं ...	१९९ १४	दुर्योधनं प्रति कर्णस्योक्तिः ... ..	१९१ २
चित्तसेनादिधार्तराष्ट्रैः सह सौत्र-		दुर्योधनस्य भीमसमीपगमनं ... ..	१९१ १०
द्रादिद्वादशानां युद्धं ... ..	१९९ १९	भीमदुर्योधनयोः संवादः ... ..	१९२ १
पाण्डालान् निहत्य षष्ठदिवसीय सै-		दुर्योधनस्य अश्विविरगमनं ... ..	१९३ २०
न्यवहारं कृत्वा भीमस्य अश्विविर-		राजः प्रति दुर्योधनस्य सैन्यायो-	
गमनं ... ..	१९९ २	जनार्थमादेशः ... ..	१९३ २३

প্রকরণং ... ..	পৃষ্ঠে পঙ্ক্তৌ	প্রকরণং ... ..	পৃষ্ঠে পঙ্ক্তৌ
ভীষ্মরক্ষার্থং দুঃশাসনং প্রতি দু- র্যোধনবাক্যং ... ..	১৯৩ ২৯	দুর্যোধনসমীপে ভীষ্মস্য ভীষ্মযুদ্ধ- করণপ্রতিজ্ঞা ... ..	২২০ ১
উভয়পক্ষীয়াণাং ব্যহপ্রকারকথনং নবমদিবসীযযুজ্ঞারম্ভঃ ... ..	১৫৯ ১	ভীষ্মপরাক্রমং দৃষ্ট্বা শিখণ্ডিনং প্রতি অর্জুনস্য বাক্যং ... ..	২২০ ২২
কুরুসৈন্যমধ্যে হাঃমন্যোঃ পরাক্রম- প্রকাশঃ ... ..	১৯৬ ১	অর্জুনবাক্যেন ভীষ্মং প্রতি শিখণ্ডি- নো ধৃষ্টকুম্ভাদিনাঞ্চ গমনং ...	২২০ ২৪
অলঙ্ঘ্যং দ্রৌপদেষানাং পরো ভবঃ গৌরবদ্রোণসহনাসমর্থস্যালম্বুষস্য- পযানং ... ..	১৯৭ ২৫	ভীষ্মবৈধিগাং পাণ্ডবযোধানাং কু- রুযোঃ টেরেকৈকশো নিবারণং ...	২২১ ২
সক্লুং যুদ্ধং ... ..	১৯৮ ২০	অর্জুনদুঃশাসনযোযুদ্ধং ... ..	২২১ ২৩
দ্রোণত্রিগর্তাদিভিঃ সহার্জুনস্য যুদ্ধং ভীমভগদত্তবে যুদ্ধং ... ..	২০১ ৬	কুরুপাণ্ডবানাং দ্বন্দ্বযুদ্ধং ... ..	২২২ ২৬
কুরুপাণ্ডবানাং সক্লুং যুদ্ধং ভীষ্মস্য বিক্রমপ্রকাশশ্চ ... ..	২০২ ৭	অশ্বখামানং প্রতি দ্রোণবাক্যং ...	২২৫ ১৩
যুগান্তমিব কুর্বাণং ভীষ্মং হস্তকামস্য শ্রীকৃষ্ণস্য প্রতোদং গৃধীত্বাভিম- রণং অর্জুনবাক্যেন নিবর্তনঞ্চ ...	২০২ ২৬	ভগদত্তাদিদশমহারথৈঃ সহ ভীমস্য যুদ্ধং ... ..	২২৭ ৮
নবমদিবসীযযুদ্ধমসাপ্তঃ ... ..	২১০ ১৩	শুশ্রীষাদীনাং প্রতি ভীমার্জুনযোঃ পরাক্রমঃ ... ..	২২৯ ১৭
ভীষ্মপ্রতাপতাপিতস্য যুধিষ্ঠিরস্য কৃষ্ণসমীপে বিলাপঃ ... ..	২১০ ২৭	বহুলজীবসংহারজনিতনির্বেদেন দেহং ত্যক্তুকামস্য ভীষ্মস্য যুধি- ষ্ঠিরং প্রত্যগ্নানাসার্থমুপদেশঃ ...	২৩১ ১৯
যুধিষ্ঠিরং প্রতি শ্রীকৃষ্ণস্য সাত্ত্বনং যুধিষ্ঠিরস্য শ্রীকৃষ্ণপ্রশংসা ... ..	২১২ ৮	কুরুপাণ্ডবযোযুদ্ধং ... ..	২৩২ ৫
বধোপায়াজিজ্ঞাসার্থং ভীষ্মং প্রতি যুধিষ্ঠিরাদীনাং গমনং ... ..	২১২ ২৪	অভিমত্নাপ্রভৃতিভিঃ সহ দুর্যোধ- নাদীনাং দ্বৈরথযুদ্ধং ... ..	২৩৩ ১৭
ভীষ্মস্য স্ববধোপায়কথনং ... ..	২১৩ ১৫	ভীষ্মং প্রতি ওল্লাসিকপতাপি শিখ- ণ্ডিনি ভস্য স্ত্রীত্বং স্মরতো ভীষ্মস্য- যুদ্ধনিরন্তিঃ ... ..	২৩৭ ৯
পিতামহবধানিচ্ছয়া বিলপস্তমর্জুন- প্রতি বাসুদেববাক্যং ... ..	২১৩ ২৮	অর্জুনবাক্যেন ভীষ্মং প্রতি শিখণ্ডি- নঃ পুনর্বাণবর্ষণং ... ..	২৩৭ ৪
কুরুপাণ্ডবযোযুদ্ধপ্রকারকথনং ...	২১৫ ১৮	শিখণ্ডিবাণানুপেক্ষমাণস্য ভীষ্মস্য- র্জুনেন সহ যুদ্ধং ... ..	২৩৭ ৯
দশমদিবসীযযুদ্ধারম্ভঃ ... ..	২১৫ ১৪	দুঃশাসনস্য যুদ্ধপ্রশংসা ... ..	২৩৭ ১৩
যুদ্ধপ্রকারকথনং ... ..	২১৬ ১৪	দুর্যোধনবাক্যে যোধানাং যুদ্ধং ...	২৩৮ ১
অর্জুনভয়াং পলায়মানং সৈন্যং দৃষ্ট্বা দুর্যোধনস্য ভীষ্মসমীপে বি- লাপঃ ... ..	২১৭ ৪	অর্জুনস্য পরাক্রমপ্রকাশঃ ... ..	২৩৮ ১৩
	২১৯ ১	ভীষ্মস্য পরাক্রমঃ ... ..	২৪০ ১৫
	২১৯ ১৮	শিখণ্ডিপ্রমুখানাং পাণ্ডবীনাং ভী-	

प्रकरणं ... .. पुष्टे पङ्क्तौ	प्रकरणं ... .. पुष्टे पङ्क्तौ
अवेधनं ... .. २९२ १	यनं ... .. २९५ ८
शिखिण्डिनं पुरस्कृत्यार्जुनेन तीक्ष्ण- नृषिं हिमे द्रोणादीनामर्जुनाति- द्रवणं ... .. २९२ १७	तीक्ष्णस्य रथात् पतनं ... .. २९५ १७
अर्जुनं विररिक्षिणां सात्याकिमुखा- नामभिधानं द्रोणादितिः सह युद्धं ... .. २९२ २४	तीक्ष्णस्य दैववाणीश्रवणमुत्तरायणं प्र- तीक्ष्य प्राणधारणं ... .. २९५ २७
अर्जुनस्य तीक्ष्णनिष्प्रायाः शक्ते- श्चेदनं ... .. २९३ ७	हंसकर्मिण्यतिः सह तीक्ष्णस्य स- न्नायणं ... .. २९७ ९
हिमांशुं शक्तिं दृष्ट्वा तीक्ष्णस्य चिन्ता ... २९३ ८	तीक्ष्णं पातितं दृष्ट्वा कुरूणां विलापः २९७ १९
आग्नौ मृत्युं प्राणकालमिव मन्य- मानं तीक्ष्णं प्रति वसुदीनां वाक्यं ... .. २९३ १४	दुःशासनात् तीक्ष्णपतनविवरणं 'श्रुत्वा द्रोणस्य मोहो तीक्ष्णसमीप- गमनं ... .. २९८ ४
शिखिण्डिवागेनारूतव्यथस्य तीक्ष्णस्य ध्वजादिकं हित्वा अर्जुनस्य तदुपरि वाग्विसर्जनं ... .. २९४ २	समागतान् कुरूपाणुं सन्नाया धार्त- राष्ट्रान् प्रति तीक्ष्णस्योपधानप्रा- र्थना ... .. २९८ १७
अर्जुनवागेनार्तिविद्वसा तीक्ष्णस्य वाक्यं ... .. २९४ ८	कोमलान्युपधानानि ददतो राज्ञः प्रति तीक्ष्णवाक्यं ... .. २९८ २०
अर्जुनं प्रति तीक्ष्णस्य शक्तिस्फेपणं अर्जुनस्य तच्छक्तिच्छेदनं ... २९४ २२	अर्जुनं प्रति तीक्ष्णस्योपधानप्रार्थना २९८ २२
तीक्ष्णं प्रति युधिष्ठिरस्य स्वसैन्यप्रे- रणं ... .. २९३ २९	अर्जुनस्य तीक्ष्णस्योपधानदानादि... २९९ ७
अथैषिणां धार्तराष्ट्राणां तीक्ष्णाति- रक्षणं ... .. २९५ २	रक्षां विधाय कुरूपाणुवानां स्व- निवेशगमनं ... .. २९९ ७
अर्जुनस्य कुरूसैन्यानां पला-	सर्वपार्थिवानां तीक्ष्णसमीपगमनं २९० ११
	पार्जन्यास्त्रेण जलधारामुत्पादयतो- र्जुनस्य तीक्ष्णतृप्तिस्सम्पादनं ... २९१ ७
	तीक्ष्णकर्णयोः संवादः ... .. २९३ १
	तीक्ष्णपर्वसम्पदनं ... .. २९४ १९

অশুদ্ধং ... .. শুদ্ধং	পৃষ্ঠে	পঙ্ক্তৌ
পার্থিব ... .. পার্থিবাঃ	৩	৩
ভাষাঃ ... .. ভাষাঃ	৪	৩
সহস্রাণি ... .. সহস্রাণি	১৩	২৯
বিশ্বস্য ... .. বিশ্বস্য	১৬	২১
মহারাজ ... .. মহারাজ	২০	২৪
সূচী ... .. সূচী	৩২	৩০
দ্রক্ষুমিত্য ... .. দ্রক্ষুমিত্য	৩২	১৯
শত ... .. শত	৩৪	১০
হিতার্থায় ... .. হিতার্থায়	৩৭	১
বিনদ্যোচ্চৈঃ ... .. বিনদ্যোচ্চৈঃ	৩৯	৮
তৈর্দত্তান প্রদা ... .. তৈর্দত্তানপ্রদা	৪৪	১৯
প্রবত্তো ... .. প্রবত্তো	৪৬	২৫
পুনত্রা ... .. পুনত্রা	৫৫	১১
সমর্প ... .. সমর্প	৭৮	৪
ধৃষ্টদ্য ... .. ধৃষ্টদ্য	৭৮	১২
সৌমদত্তি ... .. সৌমদত্তি	৭৮	১৯
ভরণ ... .. ভরণ	৮৩	১৪
ক্রুদ্ধো ... .. ক্রুদ্ধো	৮৩	১৬
বহতঃ ... .. বহতঃ	৮৪	১৩
সাধ ... .. সাধু	৮৪	১৪
ভা ... .. ভা	৮৪	২৩
ক্রুৎ ... .. ক্রুৎ	৮৭	১১
ধৃষ্টদ্য ... .. ধৃষ্টদ্য	৮৭	২৪
সমর্প ... .. সমর্প	৯০	১৯
পঞ্চাশতৈ ... .. পঞ্চাশতা	৯০	২০
মাচ্ছ ... .. মাচ্ছ	৯১	২০
নণে ... .. নুণে	৯২	১৩
॥ ৬ ॥ ০ ॥ ... .. ॥ ৬ ॥ মাগধাশ্চ কলি-	} ১০২	১
জাশ্চ দাসেরকগণৈঃ সহ		
জঙ্ঘ ... .. জঙ্ঘ	১০২	২৮
নৃপ ... .. নৃপ	১০৪	২১
ভিনত্তো ... .. ভিনত্তো	১০৭	১৮
শকু ... .. শকু	১০৭	২৫

অশুদ্ধং ... .. শুদ্ধং	পৃষ্ঠে	পঙ্ক্তৌ
রণাণ ... .. রণাণ	১০৮	১১
স্মরণ ... .. স্মরণ	১০৯	১
কর্ত্তং ... .. কর্ত্তং	১১২	২১
কীর্ণং ... .. কীর্ণং	১১৩	১৬
বীর ... .. বীর	১২১	২৫
নাগাশ্চ ... .. নাগাশ্চ	১২৩	১৩
গন্তীরকা ... .. গন্তীরকা	১২৬	১১
অনন্তবি ... .. অনন্তবি	১২৬	১১
তুং ... .. তু	১২৭	২
সংযুক্তা ... .. সংযুক্তান্	১৩৫	২৩
সংযুক্তান ... .. সংযুক্তান্	১৩৯	১২
দরাআ ... .. ছুরাআ	১৪৫	১৪
পতন্তুং ... .. তপন্তুং	১৪৭	১
উত্তম্বঃ ... .. উত্তম্বঃ	১৪৮	১৩
দশনঃ ... .. দর্শনঃ	১৪৯	২০
স্বকুমুরা ... .. স্বকুমুরা	১৪৯	২১
সুদীযাঃ ... .. সুদীযাঃ	১৫২	১০
প্রাগযো ... .. প্রাগজ্যো	১৫৩	২৫
ভত্রাক্র ধা ... .. ভত্রাক্রধা	১৫৫	১১
শাস্ত্র ... .. শাস্ত্র	১৫৭	১
যযৌ ... .. যযৌ	১৬৬	১২
বীরোঃ ... .. বীরো	১৬৮	২৫
দ্বেশা ... .. দ্বেশা	১৭২	২২
বৈঃ ... .. বৈ	১৭৪	২৩
ধনুর্দৃষ্টা ... .. ধনুর্দৃষ্টা	১৭৪	২৩
গজাম ... .. জগাম	১৭৮	৪
বাহুগদা ... .. বাহুর্গদা	১৮২	৮
মাপতাং ... .. মাপততাং	১৮৫	২৩
ভবৌ ... .. বভৌ	১৮৯	১৯
স্তুর্ণ ... .. স্তুর্ণ	১৯৭	২৯
সহস্রশঃ ... .. সহস্রশঃ	১৯৮	১১
নৃপ ... .. নৃপ	২০৪	২৫
পরিবব ... .. পরিববু	২০৬	১০

## অশুদ্ধশোধনম্ ।

অশুদ্ধং ... .. শুদ্ধং পৃষ্ঠে পঙ্ক্তৌ	অশুদ্ধং ... .. শুদ্ধং পৃষ্ঠে পঙ্ক্তৌ
দৃষ্টি ... .. দৃষ্টি ২০৭ ২৯	মদ ... .. মদ ২৪২ ১৪
শীঘ্রং ... .. শীঘ্রং ২০৯ ২৭	পম্পর্শ ... .. পম্পর্শ ২৪৫ ২৩
সহস্র ... .. সহস্র ২১১ ১৯	রুন্নদ ... .. রুন্নদ ২৪৬ ১৯
পার্থেন ... .. পার্থেন ২১৩ ৮	দ্বস্ত ... .. দ্বস্ত ২৫০ ৭
কথনঞ্চন ... .. কথঞ্চন ২১৪ ২১	জগ্মঃ ... .. জগ্মঃ ২৫০ ১৬
বৌরব্য ... .. বৌরব্য ২২৪ ২৯	দ্রুতে ... .. দ্রুতে ২৫১ ১৯
যোদ্ধং ... .. যোদ্ধুং ২২১ ১৯	সত্ববতাং ... .. সত্ববতা ২৫২ ৬
জ্জলাঃ ... .. জ্জলাঃ ২২৬ ১৭	সদৃশঃ ... .. সদৃশঃ ২৫৩ ১৫
গমিতা ... .. গমিতাঃ ২৩১ ২২	হর্থো ... .. হর্থো ২৫৪ ২
সর্বে নিব- ... .. সর্বেহনিব- ২৩২ ১	চ্ছযো ... .. চ্ছযো ২৫৪ ১৪
ভর ... .. ভর ২৩৭ ১৩	কর্তং ... .. কর্তং ২৫৪ ১৫
রজো মেঘা ... .. রজোমেঘা ২৩৩ ৬	
পরম্পর ... .. পরম্পর ২৩৪ ৯	



# महाभारतम् ।



## भीष्मपर्व ।

ॐ नारायणं नमस्कृत्य नरैश्चैव नरोत्तमम् ।

देवीं सरस्वतींश्चैव ततो जयमुदीरयेत् ।

जनमेजय उवाच । कथं युयुधिरे वीराः कुरूपाण्वसोमकाः । पार्थिवाः स्मृ-  
हाङ्गामो नानादेशसमागताः ॥ १ ॥ वैशम्पायन उवाच । यथा युयुधिरे वीराः  
कुरूपाण्वसोमकाः । कुरूक्षेत्रे तपःक्षेत्रे शृणु त्वं पृथिवीपते ॥ २ ॥ तेहव-  
तीर्य कुरूक्षेत्रं पाण्डवाः सहसोमकाः । कौरवान् समवर्तन्तु जिगीषन्तो महा-  
बलाः ॥ ३ ॥ वेदाध्ययनसम्पन्नाः सर्वे युक्ताभिनन्दिनः । आशंसन्तो जयं युद्धे  
बलेनाभिमुखा रणे ॥ ४ ॥ अभियाय च दुर्धर्षा धार्तराष्ट्रस्य बाहिनीम् । प्राङ्मु-  
खाः पश्चिमे भागे न्यविशन्तु सैनिकाः ॥ ५ ॥ समन्तपङ्ककाद्वाह्यं शिविरानि  
सहस्रशः । कारयामास विधिवत् कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ ६ ॥ शून्या च पृथिवी सर्वा  
बालवृद्धावशेषिता । निरश्वपुरूषेवासौद्रथकुण्डरवज्जिता ॥ ७ ॥ यावत्तपति सूर्यो  
हि जम्बूद्वीपस्य मण्डलम् । तावदेव समायातं बलं पार्थिवसन्तम् ॥ ८ ॥ एकस्थाः  
सर्ववर्णान्ते मण्डलं बह्व्योजनम् । पर्याक्रामन्तु देशांश्च नदीः शैलान् बनानि  
च ॥ ९ ॥ तेषां युधिष्ठिरो राजा सर्वेषां पूरुषर्षभ । व्यादिदेश सवाहानां  
भक्त्यभोज्यमन्नूत्तमम् ॥ १० ॥ संज्ज्ञाश्च विविधास्तत तेषांश्चैव युधिष्ठिरः । एवं-  
वादी वेदितव्यः पाण्डवेयोऽयमित्युत ॥ ११ ॥ अभिज्ञानानि सर्वेषां संज्ज्ञाश्च  
भाषणानि च । योजयामास कौरव्यो युद्धकाल उपस्थिते ॥ १२ ॥ दृष्ट्वा धृजाग्रं  
पार्थस्य धार्तराष्ट्रो महामनाः । सह सर्वैश्महीपालैः प्रत्यव्यूह्यत पाण्डवम् ॥ १३ ॥  
पाण्डुरेणातपद्रेण ध्रियमाणेन मूर्धनि । मध्ये नागसहस्रस्य भ्रातृभिः परिवारि-  
तः ॥ १४ ॥ दृष्ट्वा दुर्योधनं हर्षाः पाण्डाला युद्धनन्दिनः । दध्नुः प्रीता महाशङ्खान्

ভেরীশ্চ মধুরস্বনাঃ ॥ ১৫ ॥ ততঃ প্রহৃষ্টাং তাং সেনামভিবীক্ষ্যাথ পাণ্ডবাঃ ।  
 বভুবুর্হৃষ্টমনসো বাসুদেবশ্চ বীর্যবান্ ॥ ১৬ ॥ যোধযন্তৌ ততো যোধান্ বাসুদে-  
 বধনঞ্জয়ো । দধাতুঃ পুরুষব্যাসৌ দিব্যৌ শশ্বৌ রথে স্থিতৌ ॥ ১৭ ॥ পাঞ্চজন্যস্য  
 নির্ঘোষং দেবদত্তস্য চোভযোঃ । শ্রুত্বা সমস্তলৌ যোধাঃ শক্রমূত্রং প্রসুসুবুঃ ॥ ১৮ ॥  
 যথা সিংহস্য নদতঃ স্বনং শ্রুত্বৈতরে মৃগাঃ । ত্রসেযুর্নিদং শ্রুত্বা তথাসীদত তদ্ব-  
 লম্ ॥ ১৯ ॥ উদতিষ্ঠদ্রজো ভৌমং ন প্রাজ্জায়ত কিঞ্চন । অস্তংগত ইবাদিত্যে  
 সৈন্যে চ রজসাবৃতে ॥ ২০ ॥ ববর্ষ তত্র পজ্জর্ন্যো মাংসশোণিতবৃষ্টিমান্ । দিক্ষু  
 সর্বাণি সৈন্যানি তদদ্ভুতমিবাভবৎ ॥ ২১ ॥ বায়ুস্ততঃ প্রাদুরাসীন্নীচৈঃ শর্করকর্ষণঃ ।  
 বিনিম্নংস্তান্যানীকানি শতশোহং মহস্রশঃ ॥ ২২ ॥ উভে সৈন্যে চ রাজেশ্চ যুদ্ধায়  
 মুদিতৈ ভৃশম্ । কুরুক্ষেত্রে স্থিতে যন্তে সাগরক্ষুভিতোপমে ॥ ২৩ ॥ তযোস্তু সেন-  
 যোরাসীদদ্ভুতঃ স তু সঙ্গমঃ । যুগান্তে সমনুপ্রাপ্তে দ্বয়োঃ সাগরযোরিব ॥ ২৪ ॥  
 শূন্যাসীৎ পৃথিবী সর্বা বৃদ্ধবালাবশেষিতা । নিরশ্বপুরুষেবাসীদ্রথকুঞ্জরবর্জিতা ।  
 তেন সেনাসমূহেন সমানীতেন কৌরবৈঃ ॥ ২৫ ॥ ততস্তে সমযঞ্চক্রুঃ কুরুপাণ্ডব-  
 সোমকাঃ । ধর্ম্মান্ সংস্থাপয়ামাসুর্যুদ্ধানাং ভরতর্ষভ ॥ ২৬ ॥ নিবৃত্তে বিহিতে  
 যুদ্ধে স্যাৎ প্রীতিনঃ পরস্পরম্ । যথাপরং যথাযোগং ন চ স্যাচ্ছলনং পুনঃ ॥ ২৭ ॥  
 বাচা যুদ্ধপ্রবৃত্তানাং বাচৈব প্রতিযোধনম্ । নিষ্কান্তাঃ পৃতনামধ্যান্ন হস্তব্যাঃ  
 কথঞ্চন ॥ ২৮ ॥ রথী চ রথিনা যোধ্যো গজেন গজধূর্গতঃ । অশ্বেনাশ্বী পদাতিশ্চ  
 পাদাতেনৈব ভারত ॥ ২৯ ॥ যথাযোগং যথাকামং যথোৎসাহং যথাবলম্ । সমা-  
 ভাষ্য প্রহর্তব্যং ন বিশ্বস্তে ন বিশ্বলে ॥ ৩০ ॥ একেন সহ সংযুক্তঃ প্রপন্নো বিমু-  
 খস্তথা । ক্ষীণশস্ত্রো বিবর্ষা চ ন হস্তব্যঃ কথঞ্চন ॥ ৩১ ॥ ন সূতেষু ন ধূর্য্যেষু  
 ন চ শস্ত্রোপনাঘিষু । ন ভেরীশঙ্খবাদেষু প্রহর্তব্যং কথঞ্চন ॥ ৩২ ॥ এবং  
 তে সমযং কৃত্বা কুরুপাণ্ডবসোমকাঃ । বিস্ময়ং পরমং জগ্মুঃ প্রেক্ষমাণাঃ পরস্প-  
 রম্ ॥ ৩৩ ॥ নিবেশ্য চ মহাত্মানস্ততস্তে পুরুষর্ষভাঃ । হৃষ্টরূপাঃ সুমনসো বভুবুঃ  
 সহসৈনিকাঃ ॥ ৩৪ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি জম্বুখণ্ডবিনির্মাণপর্বণি সৈন্যাশিক্ষণং

নাম প্রথমোঃ অধ্যায়ঃ ॥ ১ ॥



দৈবশম্পায়ন উবাচ । ততঃ পূর্বা পরে সৈন্যে সমীক্ষ্য ভগবানৃষিঃ । সর্ববেদ-  
 বিদাং শ্রেষ্ঠো ব্যাসঃ সত্যবতীসুতঃ ॥ ১ ॥ ভবিষ্যতি রণে যোরে ভারতানাং পিতা-

महः । प्रत्याकृदशी भगवान् भूततव्यतविष्यविं ॥ २ ॥ वैचित्रवीर्य्यं राजानं  
स रहस्यत्रवीदिदम् । शोचन्तुमार्तं ध्यायन्तुं पुत्राणामनयं तदा ॥ ३ ॥ व्यास  
उवाच । राजन् परीतकालास्ते पुत्राश्चान्ये च पार्थिव ! ते हनिष्यन्ति संग्रामे  
समासाद्येतरेतरं ॥ ४ ॥ तेषु कालपरीतेषु विनश्यन्सु च भारत । कालपर्या-  
यमाज्जाय मांस्य शोके मनः क्रथाः ॥ ५ ॥ यदि वेच्छसि संग्रामे द्रक्षुमेतान् विशा-  
म्पते । चक्रुर्ददानि ते हस्त युद्धं पुत्र निशामय ॥ ६ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । न रो-  
चये ज्ञातिवधं द्रक्षुं ब्रह्मिणस्तम । युद्धमेतदशेषेण शृणुषान्तव तेजसा ॥ ७ ॥  
वैशम्पायन उवाच । एतस्मिन्नेच्छति द्रक्षुं संग्रामं श्रोतुमिच्छति । वराणामी-  
श्वरो व्यासः सङ्गयाय वरं ददौ ॥ ८ ॥ एष ते सङ्गयो राजन् युद्धमेतद्विद्यति ।  
एतस्य सर्वं संग्रामे न परोक्षं भविष्यति ॥ ९ ॥ चक्रुषा सङ्गयो राजन् दिव्ये-  
नैव समन्वितः । कथयिष्यति ते युद्धं सर्वं श्च भविष्यति ॥ १० ॥ प्रकाशं वा प्र-  
काशं वा दिवा वा यदि वा निशि । मनसा चिन्तितमपि सर्वं वेत्स्यति सङ्गयः ॥ ११ ॥  
नैनं शस्त्राणि छेत्स्यन्ति नैनं बाधियते श्रमः । गावल्गणिरयं सौम्य युद्धाद-  
स्याद्विमोक्ष्यते ॥ १२ ॥ अहस्त कीर्त्तिमेतेषां कुरूणां भरतर्षभ । पाण्डवानां  
सर्वेषां प्रथयिष्यामि मा शुचः ॥ १३ ॥ दिक्षमेतन्नरव्याघ्रु नातिशोचितुमर्हसि ।  
न चैव शक्यं संयन्तुं यतो धर्मस्ततो जयः ॥ १४ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त्वा  
स भगवान् कुरूणां प्रपितामहः । पुनरेव महाभागो धृतराष्ट्रमुवाच ह ॥ १५ ॥  
इह युद्धे महाराज भविष्यति महान् क्रयः । तथेमानि निमित्तानि भयायादयोपल-  
क्षये ॥ १६ ॥ श्येना गृध्राश्च काकाश्च कक्षाश्च सहिता वकैः । संपतन्ति नगाग्रेषु  
समवायांश्च कुर्वते ॥ १७ ॥ अत्यग्रं प्रपश्यान्ति युद्धमानन्दिनो द्विजाः । क्रव्यादा  
भक्षयिष्यन्ति मांसानि गजवाजिनाम् ॥ १८ ॥ निर्दयं प्रतिवाशन्तो तैरुवा भयवे-  
दिनः । कक्षाः प्रयान्ति मध्येन दक्षिणामतितो दिशम् ॥ १९ ॥ उभे पूर्वापरे  
सन्ध्ये नित्यं पश्यामि भारत । उदयास्तमने सूर्यां कवकैः परिवारितम् ॥ २० ॥  
श्वेतलोहितपर्यास्ताः क्रुक्क्रीवाः सविद्युतः । त्रिवर्णाः परिषाः सन्धौ भानुमन्तम-  
वारयन् ॥ २१ ॥ ज्वलितार्केन्दुनक्षत्रं निर्विशेषदिनक्षयम् । अहोरात्रं मया दृष्टं  
तद्व्याय भविष्यति ॥ २२ ॥ अलक्ष्यः प्रभया हीनः पौर्णमासीं कर्त्तिकीम् ।  
चन्द्रोऽद्भुदग्निवर्णश्च पद्मवर्णे नभस्तले ॥ २३ ॥ स्वप्यान्ति निहता वीरा भूमिमावृत्य  
पार्थिवाः । राजानो राजपुत्राश्च शूराः परिषवाहवः ॥ २४ ॥ अन्तरीक्षे वराहस्य  
वृषदंशस्य चोभयोः । प्रणादं युद्धतो रात्रौ रौद्रं नित्यं प्रलक्षये ॥ २५ ॥



देवताप्रतिमाश्चैव प्रकम्पन्ते हसन्ति च । वमन्ति रूधिरक्षाम्यैः श्विद्यन्ति प्रपतन्ति  
 च ॥ २७ ॥ अनाहता दन्दुभयः प्रणदन्ति विशाम्पते । अयुक्ताश्च प्रवर्तन्ते कलि-  
 याणां महारथाः ॥ २९ ॥ कोकिलाः शतपत्राश्च चाषा भाषाः शुकान्तरा । सार-  
 साश्च मयूराश्च वाचो मुष्णन्ति दारुणाः ॥ २८ ॥ गृहीतशस्त्राः क्रोशन्ति वर्ष्मिणो  
 वाजिपृष्ठगाः । अरुणोदये प्रदृश्यन्ते शतशः शलभत्रजाः ॥ २९ ॥ उभे सन्धे  
 प्रकाशेते दिशां दाहसमन्विते । पङ्कजन्यः पांशुवर्षी च मांसवर्षी च भारत ॥ ३० ॥  
 या टैचषा विश्रता राज्ञस्त्रैलोक्ये साधुसन्मता । अरुन्कती तयाप्येष वशिष्ठः  
 पृष्ठतः कृतः ॥ ३१ ॥ रोहिणीं पीडयन्नेव स्थितो राजन् शनैश्चरः । व्यावृत्तं  
 लक्ष्मणसोमस्य भविष्यति महद्भयम् ॥ ३२ ॥ अनन्त्रे च महाघोरः स्तनितः क्षयते स्वनः ।  
 बाहनानां रुदतां निपतन्त्यश्रुविन्दवः ॥ ३३ ॥

इति भीष्मपर्वणि जम्बूखण्डविनिर्माणपर्वणि व्यासवाक्ये

द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥



व्यास उवाच । खरा गोषु प्रजायन्ते रमन्ते मातृभिः सूताः । अनर्तव्यं पुष्पफलं  
 दर्शयन्ति वनद्रमाः ॥ १ ॥ गर्भिण्यो राजपुत्रांश्च जनयन्ति विभीषणान् । क्रव्यादाः  
 पक्षिणश्चापि सहाशन्ति परम्परम् ॥ २ ॥ त्रिविषाणाश्चतुर्नेत्राः पङ्कपादा द्विमे-  
 हनाः । द्विशीर्षाश्च द्विपुच्छाश्च दंष्ट्रिणः पशवोऽश्विवाः ॥ ३ ॥ जायन्ते विवृता-  
 स्याश्च व्याहरन्तोऽश्विवा गिरः । त्रिपदाः शिखिनस्तार्क्याश्चतुर्दंष्ट्रा विषागिनः ॥ ४ ॥  
 तथैवान्याश्च दृश्यन्ते स्त्रियो वै व्रकवादिनाम् । वैनतेयान् मयूरांश्च जनयन्त्यः  
 पुरे तव ॥ ५ ॥ गोवत्सं वडवा सूते श्वा शृगालं महीपते । कुरूटान् कर-  
 तांश्चैव शुकान्शाशुतवादिनः ॥ ६ ॥ स्त्रियः काश्चिं प्रजायन्ते चतस्रः पङ्क क-  
 न्यकाः । जातमात्राश्च नृत्यन्ति गायन्ति प्रहसन्ति च ॥ ७ ॥ पृथग्जनस्य सर्षस्य क्लृप्तकाः  
 प्रहसन्ति च । नृत्यन्ति परिगायन्ति वेदयन्तो महद्भयम् । प्रतिमाश्चालिखन्त्येते  
 मशस्त्राः कालचोदिताः ॥ ८ ॥ अन्योन्यमभिधावन्ति शिशवो दण्डपाणयः । अन्यो-  
 न्यमवमृद्नुन्ति नगराणि युयुत्सवः ॥ ९ ॥ पद्मोऽपलानि वृक्षेषु जायन्ते कुमु-  
 दानि च । विश्वगुताश्च वास्तुग्रा रजो नाप्युपशाम्यति ॥ १० ॥ अभीक्ष्णं कम्पते  
 भूमिरर्कं राहुरूपैति च । श्वेतो ग्रहस्तथा चित्रां समतिक्रम्य तिष्ठति । अभावं  
 हि विशेषेण कुरूणां तत्र पश्यति ॥ ११ ॥ धूमकेतुर्नहाघोरः पुष्यक्षत्रम्य ति-  
 ष्ठति । सेनयोरशिवं घोरं करिष्यति महाग्रहः ॥ १२ ॥ मघाश्वकारको वक्रः

श्रवणे च बृहस्पतिः । भाग्यं नक्षत्रमाक्रम्य सूर्यपुत्रेण पीड्यते ॥ १७ ॥ शुक्रः  
 प्रौष्ठपदे पूर्वे समारूह्य विरोचते । उन्तरे तु परिक्रम्य सहितः समुदीक-  
 ते ॥ १८ ॥ श्वेतो.ग्रहः प्रज्वलितः सधूम इव पावकः । ईन्द्रं तेजसि नक्षत्रं  
 ज्येष्ठामाक्रम्य तिष्ठति ॥ १९ ॥ ध्रुवं प्रज्वलितं घोरमपसव्यं प्रवर्तते । रो-  
 हिणीं पीडयत्येवमुत्थे च शशिभास्करौ ॥ २० ॥ चित्राश्चात्यन्तरे चैव धिष्ठितः  
 परुषो ग्रहः । वक्रान्नुवक्रं क्रुद्धा च श्रवणं पावकप्रभः । वक्रराशिं समावृत्य लो-  
 हिताङ्गे व्यवस्थितः ॥ २१ ॥ सर्वसम्यपरिच्छन्ना पृथिवी सम्यशालिनौ । पक्षशीर्षा यवा-  
 श्चापि शतशीर्षाश्च शालयः १८ ॥ प्रधानाः सर्वलोकस्य यास्वायन्तमिदं जगत् ।  
 ता गावः प्रसूता वत्सैः शोणितं प्रक्षरन्त्युत ॥ २२ ॥ निश्चेत्क्षरर्क्षिष्यचापां  
 खड्गाश्च ज्वलिनो भृशम् । व्यक्तं पश्यान्ति शस्त्राणि संग्रामं समुपस्थितम् ॥ २३ ॥  
 अग्निवर्णा यथा भासः शस्त्राणामुदकस्य च । कवचानां ध्वजानां भविष्यति महान्  
 क्रयः ॥ २४ ॥ पृथिवी शोणितावर्त्ता ध्वजोडुपसमाकुला । कुक्कां वैशसे राजन्  
 पाण्डवैः सह भारत ॥ २५ ॥ दिक्षु प्रज्वलितास्यश्च व्याहरन्ति मृगद्विजाः । अत्या-  
 हितं दर्शयन्ते । वेदयन्ति महद्भयम् ॥ २६ ॥ एकपक्षाक्षिचरणः शकुनिः खचरो  
 निशि । रौद्रं नदति संरक्तः शोणितं हृदयमिव ॥ २७ ॥ शस्त्राणि चैव राजेन्द्र  
 प्रज्वलन्तीव संग्रति । सप्तर्षीणामुदारणां समवच्छाद्यते प्रभा ॥ २८ ॥ सप्तसर-  
 स्वायिनो च ग्रहो प्रज्वलितावुत्थे । विशाखायाः समीपस्थो बृहस्पतिशनैश्च-  
 रो ॥ २९ ॥ चन्द्रादित्यावुत्थे अस्तावेकपक्षे त्रयोदशीम् । अपर्षणि ग्रहं यातो  
 प्रजासंक्षयमिच्छतः ॥ ३० ॥ अशोभिता दिशः सर्वाः पांशुवर्षैः समस्ततः ।  
 उपातमेघा रौद्राश्च रात्रौ वर्षन्ति शोणितम् ॥ ३१ ॥ क्रुत्तिकां पीडय-  
 स्तीक्ष्णं नक्षत्रं पृथिवीपते ॥ ३२ ॥ अतीक्ष्णं वाता वायुं धूमकेतुमवस्थिताः ।  
 विषमं जनयन्त्येत आक्रन्दजननं महत् ॥ ३३ ॥ त्रिषु छत्रेषु नक्षत्रनक्षत्रेषु विशा-  
 स्पते । गृध्रः संपतते शीर्षं जनयन् भयमुत्तमम् ॥ ३४ ॥ चतुर्दशीं पञ्चदशीं  
 कदाचिदपि षोडशीम् । इमान् नाभिजानामि भूतपूर्वां त्रयोदशीम् ॥ ३५ ॥ चन्द्र-  
 सूर्यावुत्थे अस्तावेकमासीं त्रयोदशीम् । अपर्षणि ग्रहावेतो प्रजाः संक्षययि-  
 श्यतः । शोणितैर्बहुसम्पूर्णा अतृणान्तत्र राक्षसाः ॥ ३६ ॥ प्रतिश्रोतोवहा नद्याः  
 सरितः शोणितोदकाः । फेनायमानाः कूपाश्च नर्दन्ति वृषता इव ॥ ३७ ॥ पत-  
 न्त्युक्ताः सनिर्घाताः शुक्लाशानिसमप्रभाः । अद्य चैव निशां व्युष्टामुदये तान्नु-  
 रावहत् ॥ ३८ ॥ ज्वलन्तीतिश्च वस्त्रीभिरुक्ताभिः सर्वतो दिशम् । अन्योन्यमभितिष्ठ-

श्विस्तत्र चोक्तं महर्षिभिः । भूमिपालमहस्राणां भूमिः पास्यति शोणितम् ॥ ७७ ॥  
 कैलासमन्दराभ्यास्तथा हिमवतो गिरेः । सहस्रशो महाशकाः शिखराणि पतन्ति  
 च ॥ ७९ ॥ महाभूता भूमिकम्पे चत्वारः सागराः पृथक् । बेलायुद्धर्तयस्तीव क्रोड-  
 यन्तो वसुधैराम् ॥ ७८ ॥ वृक्षान्मथ्य वास्तुग्रामाताः शर्करकर्षिणः ॥ ७९ ॥ आभ-  
 ग्नाः सुमहावातेरशनीभिः समाहताः । वृक्षाः पतन्ति चैत्याश्च ग्रामेषु नगरेषु  
 च ॥ ८० ॥ नीललोहितपीतश्च ज्वलताग्निर्हते द्विजैः । वामार्चिर्दूर्ध्वगङ्गश्च मुष्ण-  
 वै दारुणं स्वनम् ॥ ८१ ॥ स्पर्शा गङ्गा रसाश्चैव विपरीता महीपते । धूमं ध्वजाः  
 प्रमुञ्चन्ति कम्पमाना मुहूर्णुः ॥ ८२ ॥ मुष्णन्त्यङ्गारवर्षं तेर्यश्च पटहास्तथा ॥ ८३ ॥  
 शिखराणां समृद्धानामुपरिष्ठां समस्ततः । वायसाश्च रूवस्तुग्रं वामं मण्डलमाशि-  
 ताः । पक्वपक्वेति सूभृशं बावाशयस्ते वयांसि च ॥ ८४ ॥ निलीयस्ते ध्वजाग्रेषु  
 क्रयाय पृथिवीकृताम् ॥ ८५ ॥ ध्यायन्तुः प्रकिरन्तुश्च व्याला वेपथुसंयुताः । दीना-  
 स्त्ररङ्गाः सर्वे वारणाः मलिनाश्रयाः ॥ ८६ ॥ एतं श्रुत्वा भवानत्र प्राणुकालं  
 व्यवस्यताम् । यथा लोकः समुच्छेदं नायं गच्छति भारत ॥ ८७ ॥ वैशम्पायन  
 उवाच । पितुर्ब्रह्मो निशम्यैतद्भूतराष्ट्रोऽत्र वीदिदम् । दिष्टमेतं पुरा मन्ये भवि-  
 श्यति न संशयः ॥ ८८ ॥ क्लिषाः क्लृप्तधर्मेण यदि वध्यन्ति संयुगे । वीरलोकं  
 समासाद्य सुखं प्राप्स्यन्ति केवलम् ॥ ८९ ॥ इह कीर्तिं परे लोके दीर्घकालं  
 महत्सुखम् । प्राप्स्यन्ति पुरुषव्याघ्राः प्राणास्त्यक्त्वा महारवे ॥ ९० ॥ वैशम्पायन  
 उवाच । एवमुक्तस्तथेत्युक्त्वा कवीन्द्रो राजसत्तम । पुल्लेण धृतराष्ट्रेण ध्यानमन्त्रगमं  
 परम् ॥ ९१ ॥ स मुहूर्तं तथा ध्यात्वा पुनरेवात्र वीद्वचः । असंशयं पार्थिवेन्द्र  
 कालः संक्षिपते जगत् । सृजते च पुनर्लोकामेह विद्यति शाश्वतम् ॥ ९२ ॥  
 ज्जातीनां कुरुषुणां सद्यस्सिद्धदां तथा । धर्म्यं देशय पश्चानं समर्थो हसि  
 वारणे ॥ ९३ ॥ क्रुद्धं ज्जातिवधं प्राहर्त्वा कुरुषु ममाप्रियम् । कालोऽयं पुल्लक-  
 पेण तव ज्ञातो विशाम्पते ॥ ९४ ॥ न वधः पूज्यते वेदे हितं नैव कथञ्चन ।  
 हन्यात् स एनं यो हन्यात् कुलधर्मं स्वकां तनुम् ॥ ९५ ॥ कालेनोत्पथगस्तसि  
 शक्ये सति यथापदि । कुलस्यास्य विनाशाय तथैव च महीकृताम् ॥ ९६ ॥ अनर्थो  
 राज्यकपेण तव ज्ञातो विशाम्पते । लुप्तधर्मा परेणसि धर्म्यं दर्शय वै सु-  
 तान् ॥ ९७ ॥ किञ्चे राज्येन दुर्द्धर्ष येन प्राप्त्वाहसि क्लिष्यम् । यशो ध-  
 र्म्यं कीर्तिं पालय स्वर्गमाप्स्यसि । लभन्त्यां पाण्डवा राज्यं शमं गच्छन्तु कौर-  
 वाः ॥ ९८ ॥ एवं ब्रुवति विप्रेन्द्रे धृतराष्ट्रोऽम्बिकासुतः । आक्षिप्य वाक्यं वाक्य-

श्रेष्ठो वाक्यैश्चैवात्र वी० पुनः ॥ ५२ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । यथा भवान् वेत्ति तथैव  
 वेत्ता भावाभावो विदितो मे यथार्थो । स्वार्थे हि संमुह्यति तात लोको मा-  
 क्षापि लोकात्मकमेव विद्धि ॥ ५० ॥ प्रसादये द्यामतुलप्रभाव इ० नो गतिर्दर्श-  
 यिता च धीरः । न चापि ते मद्दर्शना महर्षे न चाधर्मं कर्तुमर्हा हि मे मतिः ॥ ५१ ॥  
 इ० हि धर्मप्रवृत्तिश्च यशः कीर्तिश्च भारती । कुरूणां पाण्डवानां मान्यश्चापि  
 पितामहः ॥ ५२ ॥ व्यास उवाच । वैचित्रवीर्य नृपते यत्ते मनसि वर्तते । अति-  
 धृ०श्च यथाकामं छेत्तास्मि तव संशयम् ॥ ५३ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । यानि लिङ्गानि  
 संग्रामे भवन्ति विजयिष्यताम् । तानि सर्वाणि भगवन् श्रोतुमिच्छामि तद्व्रतः ॥ ५४ ॥  
 व्यास उवाच । प्रसन्नताः पावक उर्द्ध्वरशिः प्रदक्षिणावर्तशिथो विधूमः । पुन्या  
 गन्धाश्चाहतीनां प्रवाप्ति जयस्यैतद्भाविनो रूपमाहः ॥ ५५ ॥ गन्तीरघोषाश्च  
 महास्वनाश्च शब्दा मृदङ्गाश्च नदन्ति यत्र । विशुद्धरश्मिस्तपनः शशी च जयस्यैतद्भा-  
 विनो रूपमाहः ॥ ५६ ॥ ईर्ष्या वाचः प्रसृता वायसानां संप्रस्थितानां गमिष्य-  
 तां । ये पृथुतस्ते व्रयन्ति राजन् ये चाग्रतस्ते प्रतिषेधयन्ति ॥ ५७ ॥ कल्याण-  
 वाचः शकुना राजहंसाः शुकाः क्रौञ्चाः शतपत्राश्च यत्र । प्रदक्षिणाश्चैव भवन्ति  
 संख्ये ध्रुवं जयं तत्र वदन्ति विप्राः ॥ ५८ ॥ अलङ्कारैः कवचैः केतुभिश्च सुख-  
 प्रणादैर्हेषितैर्बाहनानाम् । भ्राजिष्मती दुष्पुतिवीर्यनीया येषां चमूस्ते विज-  
 यन्ति शत्रून् ॥ ५९ ॥ हर्षा वाचस्तथा सद्भ्यं योधानां यत्र भारत । न म्लायन्ति सुज-  
 तैश्च ते तरन्ति रणेदधिम् ॥ ६० ॥ ईर्ष्या वाचः प्रविर्कस्य दक्षिणाः प्रविविक्ततः ।  
 पश्चात् संधारयन्त्यर्थमग्रे च प्रतिषेधिकाः ॥ ६१ ॥ शक्ररूपरसस्पर्शा गन्धाश्चावि-  
 कृताः शुभाः । सदा हर्षश्च योधानां जयतामिह लक्षणम् ॥ ६२ ॥ अन्नूगा वायवो  
 वाप्ति तथारुग्नि वयांसि च । अन्नूगवन्ति मेघाश्च तथैवेन्द्रधनुंषि च ॥ ६३ ॥  
 एतानि जयमानानां लक्षणानि विशांस्पते । भवन्ति विपरीतानि मुमुर्षूणां जना-  
 धिप ॥ ६४ ॥ अन्नायां वा महत्यां वा सेनायामिति निश्चयः । हर्षो योधगण-  
 स्यैको जयलक्षणमुच्यते ॥ ६५ ॥ एको दीर्णो दारयति सेनां सुमहतीमपि ।  
 तां दीर्णामनुदीर्यन्ते योधाः शूरतरा अपि ॥ ६६ ॥ दुर्निवर्त्या तदा चैव प्रभगा  
 महती चमूः । अपामिव महावेगास्तस्ता मृगगणा इव ॥ ६७ ॥ नैव शक्या समाधातुं  
 मग्निपाते महाचमूः । दीर्णमित्येव दीर्यन्ते सुविद्यांसोऽपि भारत ॥ ६८ ॥  
 तीतान् भग्नांश्च संप्रेक्ष्य भयं भूयोऽभिवर्द्धते । प्रभगा सहसा राजन् दिशो  
 विद्रवते चमूः ॥ ६९ ॥ नैव स्थापयितुं शक्या शूरैरपि महाचमूः । संभृत्य मह-

तीं सेनां चतुरङ्गां महीपते ॥ ८० ॥ उपायपूर्वं मेधावी यतेत सततोत्थितः ।  
 उपायं विजयं श्रेष्ठमाहर्तेदेन मध्यमम् ॥ ८१ ॥ जघन्य एष विजयो यो  
 युद्धेन विशांस्पते । महान् दोषः समिपातस्तस्याद्यः क्वय उच्यते ॥ ८२ ॥ परस्पर-  
 रज्जाः संश्रुता व्यवधृताः सुनिश्चिताः । अपि पक्षाशतं शूरा मृदन्ति महतीं  
 चमूम् । अपि पक्षं च षट्सप्त विजयस्त्यनिवर्तिनः ॥ ८३ ॥ न वैनतेयो गरुडः  
 प्रशंसति महाजनम् । दृक्त्वा सुपर्णोपचितिं महत्या अपि भारत । न बाह्यलेन  
 सेनाया जयो भवति नित्यशः ॥ ८४ ॥ अध्रुवो हि जयो नाम दैवक्षत्र परायणम् ।  
 जयवस्तो हि संग्रामे क्वयवस्तो भवस्त्युत ॥ ८५ ॥

इति भीष्मपर्वणि जम्बूखण्डविनिर्माणपर्वणि निमित्ताख्याने

तृतीयोऽध्यायः ॥ ७ ॥

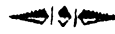


वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त्वा यथो व्यासो धृतराष्ट्राय धीमते । धृतराष्ट्रेऽपि  
 तच्छ्रुत्वा ध्यानमेवानुपदद्यत ॥ १ ॥ स समुहूर्तमिव ध्यात्वा विनिःश्वस्य मुहूर्न्मुहूर्तः । सङ्ग-  
 यं शंसितात्मानमपृच्छद्वरतर्षभ ॥ २ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । सङ्गयेमे महीपालाः  
 शूरा युद्धाभिनन्दिनः । अन्यान्यमभिनिम्नस्ति शस्त्रैरुच्छावचैरिह ॥ ३ ॥ पार्थिवाः  
 पृथिवीहेतोः समरे त्यक्तजीविताः । न वा शाम्यन्ति निम्नस्तो वर्द्धयन्तो यमक-  
 यम् ॥ ४ ॥ भौममैश्वर्यामिच्छन्तो न मृष्यन्ते परस्परम् । मन्ये बहुगुणा भूमिस्तम-  
 माचक्षुः सङ्गय ॥ ५ ॥ बहूनि च सहस्राणि प्रयुतान्यर्धुदानि च । कोट्यंश्च लोकवी-  
 राणां समेताः कुरूजाङ्गले ॥ ६ ॥ देशानां परीमाणं नगराणां सङ्गय ।  
 श्रोतुमिच्छामि तत्रेन यत एते समागताः ॥ ७ ॥ दिव्यबुद्धिप्रदीपेन युक्तस्तुं  
 ज्ञानचक्षुषा । प्रभावान्तस्य विप्रर्षेय्यासम्यामिततेजसः ॥ ८ ॥ सङ्गय उवाच । यथा-  
 प्रज्जं महाप्रज्जं भौमान् वक्ष्यामि ते गुणान् । शास्त्रचक्षुरवेक्ष्य नमस्ते भरत-  
 र्षभ ॥ ९ ॥ द्विविधानीह भूतानि त्रसानि स्थावराणि च । त्रसानां त्रिविधा षोनि-  
 रणुश्वेदजरायुजा ॥ १० ॥ त्रसानां खलु सर्वेषां श्रेष्ठा राजन् जरायुजाः ।  
 जरायुजानां प्रवरा मानवाः पशवश्च ये ॥ ११ ॥ नानाकपधरा राजन् तेषां  
 तेदाश्चतुर्दश । अरण्यवासिनः सप्त सप्तैषां ग्रामवासिनः ॥ १२ ॥ सिंहा व्याघ्रा  
 वराहाश्च महिषा वारणास्तथा । श्वकाश्च वानराश्चैव सप्तारण्याः स्मृता नृप ॥ १३ ॥  
 गौरजाविमन्श्याश्च अश्वत्थतरगर्दभाः । एते ग्राम्याः समाख्याताः पशवः सप्त  
 साधुभिः ॥ १४ ॥ एते वै पशवो राजन् ग्राम्यारण्याश्चतुर्दश । वेदोक्ताः पृथिवी-

पालेषु यज्ञाः प्रतिष्ठिताः ॥ १५ ॥ ग्राम्याणां पुरुषाः श्रेष्ठाः सिंहाशचारण्य-  
वासिनाम् । सर्वेषामेव भूतानामन्योन्योनोपजीवनम् ॥ १६ ॥ उद्विज्जाः श्वावराः  
प्रोक्तास्तेषां पक्षेव जातयः । वृक्षगुण्यलतावल्ग्यस्तृक्ष्मारास्तृणजातयः ॥ १७ ॥  
तेषां विंशतिरेकानां महाभूतेषु पक्षसु । चतुर्विंशतिरुद्विजा गायत्री लो-  
कसम्पत्ता ॥ १८ ॥ य एतां वेद गायत्रीं पुण्यां सर्वगुणान्विताम् । तद्धेन भरत-  
श्रेष्ठ स लोके न प्रणश्यति ॥ १९ ॥ भूमौ च जायते सर्वं भूमौ सर्वं विनश्य-  
ति । भूमिः प्रतिष्ठा भूतानां भूमिरेव परावणम् ॥ २० ॥ यस्य भूमिस्तस्य सर्वं जगत्  
श्वावरजङ्गमम् । ततोऽभिगृह्णा राजानो विनिष्कृतीतरेतरम् ॥ २१ ॥

इति तीर्थपरणि जम्बूखण्डविनिर्माणपरणि भौमगुणकथने

चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । नदीनां पर्वतानां नामधेयानि सर्वशः । तथा जनपदानां  
ये चान्ये भूमिमाश्रिताः ॥ १ ॥ प्रमाणं प्रमाणं पृथिव्या मम सर्वतः । निखिलेन  
व्यमाचक्षु काननानि च सङ्गम ॥ २ ॥ सङ्गम उवाच । पक्षेमानि महाराज महाभूतानि  
संग्रहात् । जगतीस्थानि सर्वाणि समान्याहर्षनीषिणः ॥ ३ ॥ भूमिरापस्तथा वायुर-  
ग्निराकाशमेव च । गुणोत्तराणि सर्वाणि तेषां भूमिः प्रधानतः ॥ ४ ॥ शकः स्पर्शश्च  
रूपं रसो गन्धश्च पञ्चमः । भूमेरेते गुणाः प्रोक्ता ऋषिभिस्तद्वेदिभिः ॥ ५ ॥  
चक्षुरोऽप्युगुणा राजन् गन्धस्तत्र न विद्यते । शकः स्पर्शश्च रूपं तेजसोऽथ गुणा-  
स्तयः । शकः स्पर्शश्च वायोऽस्तु आकाशे शक एव च ॥ ६ ॥ एते पञ्च गुणा राजन्  
महाभूतेषु पक्षसु । वर्तन्ते सर्वलोकेषु येषु भूताः प्रतिष्ठिताः ॥ ७ ॥ अन्योन्यां  
नाभिवर्तन्ते साम्यं भवति वै यदा ॥ ८ ॥ यदा तु विषमीभावमाविशन्ति परस्परम् ।  
तदा देहैर्देहवन्तो व्यतिरोहन्ति नान्यथा ॥ ९ ॥ आन्तुर्पूर्व्या विनश्यन्ति जायन्ते  
चान्तुर्पूर्वशः । सर्वाण्यपरिमेयानि तदेषां रूपमेश्वरम् ॥ १० ॥ तत्र तत्र हि दृश्यन्ते  
धातवः पाण्डुभौतिकाः । तेषां मनुष्यास्तर्केण प्रमाणानि प्रचक्षते ॥ ११ ॥ अचि-  
न्त्याः खलु ये भावास्तान् तर्केण साधयेत् । प्रकृतिभ्यः परं यत्तु तदचिन्त्यस्य लक्ष-  
णम् ॥ १२ ॥ सुदर्शनं प्रवक्ष्यामि द्वीपेन कुरुवर्धन । परिमण्डलो महाराज  
द्वीपोऽसौ चक्रसंस्थितः ॥ १३ ॥ नदीजलप्रतिच्छन्नः पर्वतेश्चात्रुसन्निभैः । पु-  
रैश्च विविधाकारै रमैर्जनपदैस्तथा ॥ १४ ॥ वृक्षैः पुष्पकणोपेतैः सम्पन्नध-  
नधान्यवान् । लवणेन समुद्रेण समस्तां परिवारितः ॥ १५ ॥ यथा हि पुरुषः पश्ये-

दादर्शे मुखमाञ्जनः । एवं सुदर्शनद्वीपो दृश्यते चन्द्रमण्डले ॥ १७ ॥ द्विरंशे  
पिप्ललसुत्रे द्विरंशे च शशो महान् । सर्वोषधिसमावाषः सर्वतः परिवारितः ॥ १९ ॥  
आपस्ततोहन्या विज्ञेयाः शेषः संक्षेप उच्यते । ततोहन्य उच्यते चायमेनं  
संक्षेपतः शृणु ॥ १८ ॥

इति भीष्मपर्वणि जम्बूखण्डविनिर्माणपर्वणि सुदर्शनद्वीपवर्णने .

पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । उक्त्वा द्वीपस्य संक्षेपो बुद्धिमन् विधिवद्ब्रूया । तद्वृक्षेऽसि  
सर्वस्य विस्तरं बुद्धिं सङ्गृह्य ॥ १ ॥ यारान् भूम्यवकाशोऽयं दृश्यते शशलक्षणे । तस्य  
प्रमाणं प्रबुद्धिं ततो वक्ष्यसि पिप्ललम् ॥ २ ॥ एवं राज्ञा स पृष्ठस्तु सङ्गृह्यो वाक्य-  
मब्रवीत् ॥ ३ ॥ सङ्गृह्य उवाच । प्रागायता महाराज षडेते वर्षपर्वताः । अवगाटा  
ह्युत्थतः समुद्रो पूर्वपश्चिमौ ॥ ४ ॥ हिमवान् हेमकूटश्च निषधश्च नगोत्तमः ।  
नीलश्च वैदूर्यमयः श्वेतश्च शशिसन्निभः ॥ ५ ॥ सर्वधातुपिनक्षश्च शृङ्गवान् नामप-  
र्वतः । एते वै पर्वता राजन् सिद्धचारणसेविताः ॥ ६ ॥ तेषामस्तुरविक्षुब्धो यो-  
जनानि सहस्रशः । तत्र पुण्या जनपदास्तानि वर्षाणि भारत ॥ ७ ॥ वसन्ति तेषु  
सद्धानि नानाजातीनि सर्वशः । इदं तु भारतं वर्षं ततो हैमवतं परम् ॥ ८ ॥  
हेमकूटां परशैव हरिवर्षं प्रचक्रते । दक्षिणेन तु नीलस्य निषधस्योत्तरेण  
तु ॥ ९ ॥ प्रागायतो महाभाग माल्यवान् नाम पर्वतः । ततः परं माल्यवतः  
पर्वतो गङ्गामादनः ॥ १० ॥ परिमण्डलस्तयोर्मध्ये मेरुः कनकपर्वतः । आदित्य-  
तरुणाभासो विधूम इव पावकः ॥ ११ ॥ योजनानां सहस्राणि चतुराशीतिमुच्छ्रितः ।  
अधस्ताच्चतुराशीतिर्योजनानां महीपते ॥ १२ ॥ उर्ध्वमधश्च तिर्यक् च लोकाना-  
वृत्य तिष्ठति । तस्य पार्श्वेष्वमी द्वीपाश्चत्वारः संस्थिता विभो ॥ १३ ॥ भद्राश्वः  
केतुमालश्च जम्बूद्वीपश्च भारत । उत्तराशैव कुरवः कृतपुण्यप्रतिश्रयाः ॥ १४ ॥  
विहगः सुमुखो यस्तु सुपर्णस्याञ्जः किल । स वै विचिन्तयामास सौवर्गान् प्रेक्ष्य  
वायसान् ॥ १५ ॥ मेरुरूतममध्यानामधमानां पक्षिणाम् । अविशेषकरो यस्मा-  
त्तस्मादेनं त्यजाम्यहम् ॥ १६ ॥ तमादित्योऽहं न्युपर्येति सततं ज्योतिषां वरः ।  
चन्द्रमाश्च सनक्षत्रो वायुशैव प्रदक्षिणः ॥ १७ ॥ स पर्वतो महाराज दिव्यपुष्पफ-  
लान्वितः । भवनैरावृतः सर्वैर्जायूनदमयैः शुभैः ॥ १८ ॥ तत्र देवगणा राजन्  
गङ्गर्वासुरराक्षसाः । अप्सरोगणसंयुक्ताः शैले क्रीडन्ति सर्वदा ॥ १९ ॥ तत्र

त्रका च क्रुद्रश्च शक्रश्चापि सुरेश्वरः । समेत्य विविधैर्षजैर्षजस्तुहनेकदक्षि-  
 णैः ॥ २० ॥ तुषुरुर्नारदश्चैव विश्वावसूर्हाहा हहः । अतिगम्यामरश्रेष्ठान् स्तुवन्ति  
 विविधैः स्तुवैः ॥ २१ ॥ सप्तर्षयो महान्नानः कश्यपश्च प्रजापतिः । तत्र गच्छन्ति  
 तद्वस्ते सदा पर्वणि पर्वणि ॥ २२ ॥ तस्यैव मूर्द्धन्यशनाः काव्यो दैतैत्यर्न्महीपते ।  
 तस्य हैमानि रत्नानि तस्येमे रत्नपर्वताः ॥ २३ ॥ तस्मात् कुबेरो भगवांश्चतुर्थं  
 भागमश्नुते । ततः कलांशं विभ्रस्य मन्वुष्योभ्यः प्रवच्छति ॥ २४ ॥ पार्श्वे तस्यो-  
 दरे दिव्यं सर्वर्तुकुसुमैश्चितम् । कर्णिकारवनं रम्यं शिलालसमुद्गतम् ॥ २५ ॥  
 तत्र साक्षात् पशुपतिर्दिव्यैर्भुजैः समावृतः । उमासहायो भगवान् रमते  
 भूतभावनः ॥ २६ ॥ कर्णिकारमयीं मालां विभ्रुं पादावलम्बिनीम् । त्रिभिर्नेत्रैः  
 क्रुतोद्द्योतस्त्रिभिः सूर्यैरिवोदितैः ॥ २७ ॥ तमुग्रतपसः सिद्धाः सूत्रताः सत्य-  
 वादिनः । पश्यान्ति न हि दुर्बलैः शक्यो द्रक्षुं महेश्वरः ॥ २८ ॥ तस्य शैलस्य  
 शिखरात् स्त्रीरधारा नरेश्वर । विश्वरूपा प्रविसृता तीमनिर्घातनिश्चना ॥ २९ ॥  
 पुण्या पुण्यतमैर्जुम्हा गङ्गा भागीरथी शुभा । प्लवस्तीव प्रवेगेण हुदे चन्द्रमसः  
 शुभे । तथा ह्युत्पादितः पुण्यः स हुदः सागरोपमः ॥ ३० ॥ तां धारयामास तदा  
 दुर्करां पर्वतैरपि । शतं वर्षसहस्राणां शिरसैव पिनाकधृक् ॥ ३१ ॥ मेरोस्तु  
 पश्चिमे पार्श्वे केतुमालो महीपते । जम्बूखण्डे च तत्रैव महाजनपदो नृप ॥ ३२ ॥  
 आयुर्दशसहस्राणि वर्षाणां तत्र भारत । सुवर्णवर्णाश्च नराः स्त्रियश्चाप्सरसोप-  
 माः ॥ ३३ ॥ अनामया वीतशोका नित्यं मुदितमानसाः । जायन्ते मानवासुत्र  
 निर्मृगकनकप्रताः ॥ ३४ ॥ गङ्गामादनशृङ्गेषु कुबेरः सह राक्षसैः । संवृतोऽप्स-  
 रसां संघैर्मोदते गुह्यकाधिपः ॥ ३५ ॥ गङ्गामादनपार्श्वे तु परे द्वपरगण्डिकाः ।  
 एकादशसहस्राणि वर्षाणां परमायुषः ॥ ३६ ॥ तत्र ह्यर्का नरा राज्ञस्तेजोयुक्ता  
 महाबलाः । स्त्रियश्चात्पलपत्राताः सर्वाः सुप्रियदर्शनाः ॥ ३७ ॥ नीलात्परतरं  
 श्वेतं श्वेताङ्कैरन्यकं परम् । वर्षमैरावतं राजन् नानाजनपदावृतम् ॥ ३८ ॥  
 धनुःसंश्ले महाराज द्वे वर्षे दक्षिणोदरे । इलावृतं मध्यमस्तु पञ्च वर्षाणि चैव  
 ह ॥ ३९ ॥ उदरौत्तरमेतेभ्यो वर्षमुद्रिच्यते षुणैः । आयुःप्रमाणमारोग्यं  
 धर्मतः कामतोऽर्थतः ॥ ४० ॥ समन्वितानि भूतानि तेषु वर्षेषु भारत । एवमेवा  
 महाराज पर्वतैः पृथिवी चिता ॥ ४१ ॥ हेमकूटस्तु सूमहान् कैलासो नाम पर्वतः ।  
 यत्र वैश्रवणो राजन् गुह्यकैः सह मोदते ॥ ४२ ॥ अस्युत्तरेण कैलासात् तैनाकं  
 पर्वतम्पति । हिरण्यशृङ्गः सूमहान् दिव्यो मणिमयो गिरिः ॥ ४३ ॥ तस्य पार्श्वे



महद्विष्यत् श्रुत्वा काङ्कनवालुकम् । रम्यत् विश्वसुरो नाम षड्र राजा तगीरथः ।  
 नृत्वा तगीरथीं गङ्गाम्वास वहलाः समाः ॥ ४४ ॥ यूपी नविमषास्तत्र चैतया-  
 श्चापि हिरण्मयाः । तत्रेफुं तु गतः सिद्धिं सहस्राक्रे महायथाः ॥ ४५ ॥ सुक्तां भूत-  
 पतिर्वज्र सर्वलोकैः सनातनः । उपस्यते त्रिगतेज्जा षड्रं भूतैः समस्ततः । नर-  
 नारायणो ब्रह्मा मनुः श्वानुश्च पञ्चमः ॥ ४६ ॥ तत्र दिव्या त्रिपथगा प्रथमस्तु प्रति-  
 स्तिता । ब्रह्मलोकान्पक्रान्ता सप्तधा प्रतिपद्यते ॥ ४७ ॥ वस्योकसार। नलिनी पा-  
 वनी च सरस्वती । जम्बूनदी च मीता च गङ्गा सिद्धुश्च सप्तमी ॥ ४८ ॥ अचिन्त्या दिव्या-  
 सङ्काशाः प्रभोरेवैष संविधिः । उपसते षड्रं सत्रं सहस्रयुगपर्याये ॥ ४९ ॥  
 दृश्यादृश्या च भवति तत्र तत्र सरस्वती । एता दिव्याः सप्त गङ्गा त्रिषु लोकेषु वि-  
 श्रुताः ॥ ५० ॥ रक्षांसि वै हिमवति हेमकुटे च गुह्यकाः । सर्पा नागाश्च निषधे  
 गोकर्णश्च तपोवनम् ॥ ५१ ॥ देवासुराणां सर्वेषां श्वेतपर्वत उच्यते । गङ्गर्वा  
 निषधे नित्यं नीले ब्रह्मर्षयस्तथा ॥ ५२ ॥ शृङ्गवांस्तु महाराज देवानां प्रतिम-  
 ङ्गरः । इत्येतानि महाराज सप्त वर्षाणि भागशः ॥ ५३ ॥ भूतान्यपनिर्विकानि  
 गतिमस्ति ध्रुवाणि च । तेषामृद्धिर्बह्विधा दृश्यते दैवमानुषी ॥ ५४ ॥ अशक्या  
 परिसंख्यातुं श्रेयसा तु बुभुषता । यास्तु पृच्छसि मां राजन् दिव्यामेतां  
 शशाकृतिम् ॥ ५५ ॥ पार्श्वे शशस्य द्वे वर्षे उक्ते ये दक्षिणोत्तरे । कर्णो तु  
 नागद्वीपश्च काश्यपद्वीप एव च ॥ ५६ ॥ ताम्रपर्णशिलो राजन् श्रीमान् मलयप-  
 र्वतः । एतद्वितीयं द्वीपस्य दृश्यते शशसंस्थितम् ॥ ५७ ॥

इति तीक्ष्णपर्वणि जम्बूखण्डविनिर्माणपर्वणि भूम्यादिपरिमाण-  
 विवरणे षष्ठोऽध्यायः ॥ ७ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । मेरोरथोत्तरं पार्श्वं पूर्वाचक्षुः सङ्गय । निधिलेन महा-  
 वृक्षे माल्यवस्तुश्च पर्वतम् ॥ १ ॥ सङ्गय उवाच । दक्षिणेन तु नीलस्य मेरोः  
 पार्श्वे तथोत्तरे । उत्तराः कुरवो राजन् पुण्याः सिद्धनिषेविताः ॥ २ ॥ तत्र  
 वृक्षा मधुकला नित्यं पुष्पफलोपगाः । पुष्पाणि च सुगन्धानि रसवन्ति फलानि  
 च ॥ ३ ॥ सर्वकामफलान्तु केचिद्वृक्षा जनाधिप । अपरे क्रीरिणो नाम वृक्षास्तत्र  
 नराधिप ॥ ४ ॥ ये करन्ति सदा क्रीरं षड्रसं चामृतोपमम् । वस्त्राणि च प्रसूयन्ते  
 फलेष्वाभरणानि च ॥ ५ ॥ सर्वा नविमषी भूमिः सूक्ष्मकाङ्कनवालुका । सर्वर्तुसुखसं-  
 स्पर्शा निष्पक्वा च जनाधिप ॥ ६ ॥ देवलोकच्युताः सर्वे जायन्ते तत्र मानवाः ।

शुक्लाभिजनसम्पन्नाः सर्वे सुप्रियदर्शनाः ॥ १ ॥ मिथुनानि च जायन्ते स्त्रियश्चाप्सरसोपमाः । तेषां ते क्षीरिणां क्षीरं पिवन्त्यमृतसन्निभम् ॥ ८ ॥ मिथुनं जायते काले समस्तत्र प्रवर्द्धते । तुल्यरूपगुणोपेतं समवेशं तथैव च ॥ २ ॥ एवमेवानुरूपं चक्रवाकसमं विभो । निरामयाश्च ते लोका नित्यं मुदितमानसाः ॥ १० ॥ दश वर्षसहस्राणि दश वर्षशतानि च । जीवन्ति ते महाराज न चान्योन्यं जहत्यत ॥ ११ ॥ भारुणा नाम शकुनास्तीक्ष्णतुण्डा महाबलाः । तामिह रन्तीह मृतान् दरीषु प्रक्षिपन्ति च ॥ १२ ॥ उत्तराः कुरवो राजन् व्याख्यातास्ते समासतः । मेरोः पार्श्वमहं पूर्वं वक्ष्याम्यथ यथातथम् ॥ १३ ॥ तस्य मूर्क्षाभिषेकश्च भद्राश्वस्य विशांस्पते । भद्रशालवनं यत्र कालामुश्च महाक्रमः ॥ १४ ॥ कालामुस्तु महाराज नित्यपुष्पफलः शुभः । क्रमश्च योजनोत्सेधः सिद्धचारणसेवितः ॥ १५ ॥ तत्र ते पूरुषाः श्वेतास्तेजोयुक्ता महाबलाः । स्त्रियः कुमुदवर्णाश्च सुन्दर्याः प्रियदर्शनाः ॥ १६ ॥ चन्द्रप्रभाश्चन्द्रवर्णाः पूर्णचन्द्रनिभाननाः । चन्द्रशीतलगात्राश्च नृत्यगीतविशारदाः ॥ १७ ॥ दश वर्षसहस्राणि तत्रायुर्भरतर्षभ । कालामुरमपीतास्ते नित्यं संस्थितयोवनाः ॥ १८ ॥ दक्षिणेन तु नीलस्य निषधस्योत्तरेण तु । सुदर्शनो नाम महान् जम्बूवृक्षः सनातनः ॥ १९ ॥ सर्वकामफलः पुण्यः सिद्धचारणसेवितः । तस्य नाम्ना समाख्यातो जम्बूद्वीपः सनातनः ॥ २० ॥ योजनानां सहस्रं शतं तत्र तर्षभ । उत्सेधो वृक्षराजस्य दिवस्पृग्मनुजेश्वर ॥ २१ ॥ अरुन्नीनां सहस्रं शतानि दश पञ्च च । परिणाहस्तु वृक्षस्य फलानां रसभेदिनाम् ॥ २२ ॥ पतमानानि तान्नुर्वर्यां कूर्वन्ति विपुलं स्वनम् । मुष्णन्ति च रसं राजसुस्मिन्नुजतसन्निभम् ॥ २३ ॥ तस्या जम्बाः फलरसो नदी भूया जनाधिप । मेरुं प्रदक्षिणं कृत्वा संप्रयात्युत्तरान् कूबन् ॥ २४ ॥ न च क्षुन्नं कुमश्चापि न पिपासा जनाधिप । तस्मिन् फलरसे पीते न जरा बाधते च तान् ॥ २५ ॥ तत्र जम्बूनदं नाम कनकं देवदूषणम् । इन्द्रगोपकसंकाशं जायते भास्वरं तु तं । तरुणादित्यवर्णाश्च जायन्ते तत्र मानवाः ॥ २६ ॥ तथा माल्यवतः शृङ्गे दृश्यते हव्यवाट् सदा । नाम्ना संवर्तको नाम कालाग्निर्भरतर्षभ ॥ २७ ॥ तथा माल्यवतः शृङ्गे पूर्वे पूर्वाश्रुगण्डिकाः । योजनानां सहस्राणि पञ्चषण्णाल्यावाप ॥ २८ ॥ महाराजतसक्काशा जायन्ते तत्र मानवाः । ब्रह्मलोकच्युताः सर्वे सर्वे च ब्रह्मवादिनः ॥ २९ ॥ तपस्तप्यन्ति ते तीव्रं भवन्ति हृद्गुरेतसः । रक्षणांश्च भूतानां प्रविशन्ति दिवाकरम् ॥ ३० ॥ षष्टिस्तानि सहस्राणि षष्टिरेव शतानि च । अरुणस्याग्रतो यांति परि-

वर्ष्य दिवाकरम् ॥ ७१ ॥ षष्टिं वर्षसहस्राणि षष्टिमेव शतानि च । आदित्यताप-  
तप्राप्तौ विशन्ति शशिमण्डलम् ॥ ७२ ॥

इति भीष्मपर्वणि जम्बूखण्डविनिर्माणपर्वणि माल्यवद्वर्गने

सप्तमोऽध्यायः ॥ १ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । वर्षाणां वै नामानि पर्वतानां च सङ्गमः । आचक्रुः मे यथा तद्वत्  
ये च पर्वतवासिनः ॥ १ ॥ सङ्गम उवाच । दक्षिणेन तु श्वेतस्य निषधस्योत्तरेण  
च । वर्षं रमणकं नाम जायन्ते तत्र मानवाः ॥ २ ॥ शुक्लातिजनसम्पन्नाः सर्वे सु-  
प्रियदर्शनाः । निःसपत्नाश्च ते सर्वे जायन्ते तत्र मानवाः ॥ ३ ॥ दश वर्षसह-  
स्राणि शतानि दश पञ्च च । जीवन्ति ते महाराज नित्यं मुदितमानसाः ॥ ४ ॥ दक्षि-  
णेन तु नीलस्य निषधस्योत्तरेण तु । वर्षं हिरण्यं नाम यत्र हैरग्वती नदी ।  
यत्र चायं महाराज पक्षिराट् पतगोक्षमः ॥ ५ ॥ यक्षान्मुगा महाराज धनिनः प्रिय-  
दर्शनाः । महाबलास्तत्र जना राजन् मुदितमानसाः ॥ ६ ॥ एकादशसहस्राणि वर्षाणां  
ते जनाधिप । आयुःप्रमाणं जीवन्ति शतानि दश पञ्च च ॥ ७ ॥ शृङ्गाणि च विचि-  
त्राणि त्रीण्येव मनुजाधिप । एकं मणिमयं तत्र तथैकं रौक्ममद्भुतम् ॥ ८ ॥  
सर्वरत्नमयं तैकं भवनैरूपशोभितम् । तत्र स्वयं प्रभा देवी नित्यं वसति शा-  
ण्डिली ॥ ९ ॥ उत्तरेण तु शृङ्गस्य समुद्रास्ते जनाधिप । वर्षमैरावतं नाम तस्मात्  
शृङ्गवतः परम् ॥ १० ॥ न तत्र सूर्यास्तपति न जीर्यन्ति च मानवाः । चन्द्रमाश्च सन-  
कत्रो ज्योतिर्भूत इवावृतः ॥ ११ ॥ पद्मप्रभाः पद्मवर्णाः पद्मपत्रनिभेक्षणाः ।  
पद्मपत्रसुगन्धाश्च जायन्ते तत्र मानवाः ॥ १२ ॥ अनिस्पन्दा ईर्ष्यगन्ता निराहारा जिते-  
न्द्रियाः । देवलोकच्युताः सर्वे तथा विरजसो नृप ॥ १३ ॥ त्रयोदशसहस्राणि  
वर्षाणां ते जनाधिप । आयुःप्रमाणं जीवन्ति नरा भरतसन्तम ॥ १४ ॥ क्लीरोदस्य  
समुद्रस्य तथैवोत्तरतः प्रभुः । हरिर्वसति वैकुण्ठः शकटे कनकामये ॥ १५ ॥  
अष्टचक्रं हि तद्वानं भूतयुक्तं मनोजवम् । अग्निवर्णं महातेजो जाम्बूनदविभू-  
षितम् ॥ १६ ॥ स प्रभुः सर्वभूतानां विभुश्च भरतर्षभ । संक्षेपो विस्तुरशेषव-  
कर्त्ता कारयिता तथा ॥ १७ ॥ पृथिव्यापस्तथाकाशं वायुस्तैजश्च पार्थिव । स यज्ञः सर्व-  
भूतानामास्यं तस्य हताशनः ॥ १८ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तः सङ्गयेन धृ-  
तराष्ट्रो महामनाः । ध्यानमग्नगमद्राजा पुलान् प्रति जनाधिपः ॥ १९ ॥ स विचिन्त्य  
महातेजाः पुनरेवात्र वीक्ष्य च । असंशयं स्रुतपुत्र कालः संक्षिपते जगत् । सृज-

ते च पुनः सर्वं नेह विद्यति शाश्वतम् ॥ २० ॥ नरो नारायणश्चैव सर्वज्ञः सर्व-  
भूतज्ञः । देवा वैकुण्ठमित्याह्नरा विष्णुमिति प्रभुम् ॥ २१ ॥

इति तीर्णपर्वणि अथुखण्डविनिर्माणपर्वणि धृतराष्ट्रवाक्ये  
अर्कमोहध्यायः ॥ ८ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । यदिदं भारतं वर्षं यत्रेदं मुर्च्छितं बलम् । तत्रातिमात्रं  
लूक्योहयं पुत्रो दुर्वयोधनो मम ॥ १ ॥ यत्र गृह्णाः पाण्डुपुत्रा यत्र मे मज्जते मनः ।  
एतन्मे तद्वमाचक्षु द्वं हि मे बुद्धिमान् मतः ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । न तत्र पाण्डवा  
गृह्णाः शृणु राजन् वचो मम । गृह्णो दुर्वयोधनस्तत्र शकुनिश्चापि सौबलः ॥ ३ ॥  
अपरे कृत्रियाश्चैव नानाजनपदेश्वराः । ये गृह्णा भारते वर्षे न मृष्यन्ति पर-  
स्परम् ॥ ४ ॥ अत्र ते कीर्तयिष्यामि वर्षं भारत भारतम् । प्रियमिन्द्रस्य देवस्य  
मनोर्बेवस्यतस्य च ॥ ५ ॥ पृथोश्च राजन् वैग्यस्य तथेक्ष्वाकौर्महात्मानः । यथातेर-  
रीश्वस्य माक्नातुर्नृषस्य च ॥ ६ ॥ तथैव मुचुकुन्दस्य शिवेरौशीनरस्य च । ऋषभस्य  
तथैलस्य नृगस्य नृपतेस्तथा ॥ ७ ॥ कुशिकस्य च दूर्ध्व गाधेश्चैव महात्मानः ।  
सोमकस्य च राजर्षेर्दिलीपस्य तथैव च ॥ ८ ॥ अन्येषां महाराज कृत्रिया-  
णां बलीयसाम् । सर्वेषामेव राजेन्द्र प्रियं भारत भारतम् ॥ ९ ॥ तत्रे वर्षं  
प्रवक्ष्यामि यथातथमरिन्दम । शृणु मे गदतो राजन् यन्मां द्वं परिपृच्छसि ॥ १० ॥  
महेन्द्रो मलयः सहः शुक्तिमान्कवानपि । विक्ष्यश्च पारिपात्रश्च सपुत्रेते कुलप-  
र्षताः ॥ ११ ॥ तेषां सहस्रशो राजन् पर्वतास्ते समीपतः । अविज्ज्ञाताः सार-  
वन्तो विपुलाश्चित्रमानवः । अन्ये ततोऽपरिज्ज्ञाता ह्युवा ह्युवापजीविनः ॥ १२ ॥  
आर्या ग्लेच्छाश्च कौरव्य तैस्मिंश्चाः पुरुषा विभो । नदीं पिबन्ति विपुलां  
गङ्गां सिन्धुं सरस्वतीम् ॥ १३ ॥ गोदावरीं नर्मदां वाहदां महानदीम् । शत-  
द्रुं चन्द्रभागां यमुनां महानदीम् ॥ १४ ॥ दशद्वतीं विपाशां विपापां शूलवा-  
लुकाम् । नदीं वेत्रवतीं कृष्णवेणां निम्नगाम् ॥ १५ ॥ इरावतीं वितस्तां  
पयोष्णीं देविकामपि । वेदस्मृतिं वेदशिरां त्रिदिवामिन्धुलां क्रुमिम् ॥ १६ ॥  
करीषिणीं चित्रवहां क्षिप्रसेनां निम्नगाम् । गोमतीं धृतपापां चन्दनां महा-  
नदीम् ॥ १७ ॥ कौशिकीं त्रिदिवां क्रुत्यां निचितां लोहितारणीम् । रहस्यां  
शतकुन्दां सरयूं नरेश्वर ॥ १८ ॥ चर्मण्वतीं वेत्रवतीं हस्तिसोमां दिशं  
तथा ॥ १९ ॥ शरावतीं पयोष्णीं वेणां तीमरथीमपि । कावेरीं चलुकां

পি বাপীং শতবলীমপি ॥ ২০ ॥ নীবারাং মহিতাঞ্চাপি সুপ্রযোগাং জনাধিপ ।  
 পবিত্রাং কুণ্ডলাং সিন্ধুং রাজিনীং পুরমালিনীম্ ॥ ২১ ॥ পূর্বাভিরামাং বীরাঞ্চ  
 ভীমামোঘবতীং তথা । পলাশিনীং পাপহরাং মহেন্দ্রাং পাটলাবতীম্ ॥ ২২ ॥  
 করীষিণীমসিক্রীঞ্চ কুশচীরাম্ মহানদীম্ । মরুহীং প্রবরাং মেনাং হেমাং ঘৃতবতীং  
 তথা ॥ ২৩ ॥ পুনাবতীমনুষ্ণাঞ্চ সেব্যাং কাপীঞ্চ ভারত । সদানীরামধৃষ্যাঞ্চ কুশ-  
 ধারাং মহানদীং ॥ ২৪ ॥ সদাকান্তাং শিবাটৈশ্চ তথা বীরবতীমপি । বস্তুং সুব-  
 র্গাং গৌরীঞ্চ কিম্পুনাং সহিরণুতীম্ ॥ ২৫ ॥ বরাং বীরকরাঞ্চাপি পঞ্চমীঞ্চ মহা-  
 নদীম্ । রথচিত্রাং জ্যোতিরথাং বিশ্বামিত্রাং কপিঞ্জলাম্ ॥ ২৬ ॥ উপেন্দ্রাং বহু-  
 লাটৈশ্চ কুবীরামঘুবাহিনীম্ । বৈনন্দীং পিঞ্জলাং বেণ্ণাং তুঙ্গবেণ্ণাং মহান-  
 দীম্ ॥ ২৭ ॥ বিদিশাং ক্রুঞ্চবেণ্ণাঞ্চ তাম্রাঞ্চ কপিলামপি । শলুং সুবামাং বেদাশ্বাং  
 হরিশ্রাবাং মহাপগাম্ ॥ ২৮ ॥ শীঘ্রাঞ্চ পিচ্ছিলটৈশ্চ ভারদ্বাজীঞ্চ নিম্নগাম্ । কৌ-  
 শিকীং নিম্নগাং শোণাং বাহুদামথ চন্দ্রমাম্ ॥ ২৯ ॥ দুর্গাং মন্ত্রশিলাটৈশ্চ ব্রহ্ম-  
 মেধ্যাং বৃহদ্বতীম্ । যবক্ষামথ রোহীঞ্চ তথা জম্বনদীমপি ॥ ৩০ ॥ সুরসাং তম-  
 সাং দাসীং সামান্যাং বরণামসীম্ । নীলাং ধৃতিকরীটৈশ্চ পর্ণাসাঞ্চ মহান-  
 দীম্ ॥ ৩১ ॥ মানবীং বৃষভাং ভাসাং ব্রহ্মমেধ্যাং বৃহদ্বতীম্ । এতাশ্চান্যাশ্চ  
 বহ্নেয়। বৈ মহানদেয়। জনাধিপ ॥ ৩২ ॥ সদা নিরাময়াং ক্রুঞ্চাং মন্দগাং মন্দবা-  
 হিনীম্ । ব্রহ্মাণীঞ্চ মহাগৌরীং দুর্গামপি চ ভারত ॥ ৩৩ ॥ চিত্রোপলাং চিত্র-  
 রথাং মঞ্জুলাং বাহিনীং তথা । মন্দাকিনীং বৈতরণীং কোষাঞ্চাপি মহানদীম্ ॥ ৩৪ ॥  
 শুক্টিমতীমনঙ্গাঞ্চ তথৈব বৃষসাহস্রয়াম্ । লোহিত্যাং করতোয়াঞ্চ তথৈব বৃষসাহস্র-  
 যাম্ ॥ ৩৫ ॥ কুমারীমৃষিকুল্যাঞ্চ মারিষাঞ্চ সরস্বতীম্ । মন্দাকিনীং সুপুণ্যাঞ্চ  
 সর্বাং গঙ্গাঞ্চ ভারত ॥ ৩৬ ॥ বিশ্বস্য মাতরঃ সর্বাঃ সর্বাশ্চৈব মহাকলাঃ । তথা  
 নদ্যস্ত্বপ্রকাশাঃ শতশোহথ সহস্রশঃ ॥ ৩৭ ॥ ইত্যেতাঃ পরিতো রাজন্ সমাখ্যাতা  
 যথাস্মৃতি । অত উর্দ্ধ্বং জনপদান্নিবোধ গদতো মম ॥ ৩৮ ॥ তত্রমে কুরুপাঞ্চালাঃ  
 শাল্লা মাদ্রেয়জাঙ্গলাঃ । শূরসেনাঃ পুলিন্দাশ্চ বোধ। মালাস্তথৈব চ ॥ ৩৯ ॥ মৎ-  
 স্যাঃ কুশটীঃ কৌশল্যাঃ কুন্তযঃ কাশিকৌশলাঃ । চেদিমৎস্যকক্কাশ্চ ভোজাঃ  
 সিন্ধুপুলিন্দকাঃ । উত্তমাশ্চ দশার্গাশ্চ মেকলাশ্চেৎকলেঃ সহ ॥ ৪০ ॥ পাঞ্চালাঃ  
 কোশলাশ্চৈব নৈকপৃষ্ঠা যুগন্ধরাঃ । বোধ। মদ্রাঃ কলিঙ্গাশ্চ কাশযোহপরকাশ-  
 যঃ ॥ ৪১ ॥ জঠরাঃ কুকুরাশ্চৈব সদশার্গাশ্চ ভারত । কুন্তযোহবস্তুশ্চৈব তথৈ-  
 বাপরকুন্তযঃ ॥ ৪২ ॥ গোমস্তা মল্লকাঃ পাণ্ড্যা বিদর্ভানুপবাহিকাঃ । অশ্বকাঃ পাং-

शुक्राक्षिण गोपराक्षाः करीतयः ॥ ४३ ॥ अधिराज्यं कुशटांश्च मल्लराक्षुं केल-  
रलम् । वारवाश्यापवाहाश्च वक्रा वक्रातयः शकाः ॥ ४४ ॥ विदेहा मगधाः  
शका मलया विजयास्तथा । अङ्गा वङ्गाः कलिङ्गाश्च यक्षलोमान एव च ॥ ४५ ॥ मल्लाः  
सुदेषाः प्रह्लादा माहिषाः शशिकान्तथा । बाह्लीका वाटधानाश्च आतीराः काल-  
तोयकाः ॥ ४६ ॥ अपरास्ताः परास्ताश्च पङ्कलाश्चर्मचण्डकाः । अटवीशिखरा-  
शैव मेरुभूताश्च मारिष ॥ ४७ ॥ उपार्वात्तान्मुपावृताः सुराक्षाः केकयास्तथा ।  
कुटाः परास्ता माहेयाः कक्षाः सामुद्रनिष्कृताः ॥ ४८ ॥ अङ्गाश्च बहवो राज-  
मन्तुर्गिर्यास्तथैव च । बहिर्गिर्याङ्गमलदा मागधा मालवाङ्गटाः ॥ ४९ ॥ महूत्रराः  
प्रावृषेया भार्गवाश्च जनाधिप । पुष्पा भार्गाः किराताश्च सुदेषा यामुनास्तथा ॥ ५० ॥  
शका निषादा निषधास्तथैवानर्तनैर्धृताः । दुर्गलाः पूतिमत्स्याश्च कुस्तलाः कुश-  
लास्तथा ॥ ५१ ॥ तीरग्रहाः शूरसेना इजिकाः कन्यकागणाः । तिलभारा मसीराश्च  
मधुमन्त्राः सुकन्दुकाः ॥ ५२ ॥ काश्मीराः सिन्धुसौवीरा गान्धारा दर्शकास्तथा । अती-  
सारा उलूताश्च शैवाला बाह्लिकास्तथा ॥ ५३ ॥ दर्वी चरा नवा दर्वी वातजामरथो-  
रगाः । बह्वुटाश्च कौरव्य सुदामानः सुमल्लिकाः ॥ ५४ ॥ वङ्गाः करीषकाश्चापि  
कुलिन्दापत्यकास्तथा । वानायवो दशाः पार्था रोमाणः कुशविन्दवः ॥ ५५ ॥ कच्छा  
गोपालकच्छाश्च जाङ्गलाः कुरूवर्णकाः । किराता वर्बराः सिद्धा वैदेहास्तामुलिपु-  
काः ॥ ५६ ॥ उद्रा ग्लेच्छाः ससैरिङ्गाः पार्वतीयाश्च मारिष । अथापरे जनपदा  
दक्षिणा भरतर्षभ ॥ ५७ ॥ अविडाः केरलाः प्राच्या मृषिका वानवासिकाः । कर्णा-  
टका माहिषका विक्रमा मूषकास्तथा ॥ ५८ ॥ बिल्लिकाः कुस्तलाश्चैव सौहदा नल-  
काननाः । कोकुटकास्तथा चोलाः कोङ्कणा मालवा नराः ॥ ५९ ॥ समङ्गाः कनका-  
शैव कुरुराङ्गारमारिषाः । धृजिन्यस्यसंकेतास्त्रिगर्भाः शाङ्खसेनयः ॥ ६० ॥  
व्युचकाः कोरकाः प्रोष्ठा समवेगवशास्तथा । तथैव विन्द्यपुलिकाः पुलिन्दा वस्तुलैः  
सह ॥ ६१ ॥ मालवा वल्लवाश्चैव तथैवापरवर्तकाः । कुलिन्दाः कालदाश्चैव दण्ड-  
काः करुटास्तथा ॥ ६२ ॥ मूषकास्तनवालाश्च सनीया घटसृष्टयाः । अलिदायाः शि-  
वाटाश्च स्तनपाः स्तनयास्तथा ॥ ६३ ॥ ऋषिका विदर्भाः काकास्तङ्गनाः परतङ्ग-  
नाः । उद्वराश्चापरे ग्लेच्छा जना भरतसन्तम ॥ ६४ ॥ यवनाश्च सकाश्रोजा दारुणा  
ग्लेच्छजातयः । मरुद्वहाः कुलथाश्च हूनाः पारसिकैः सह ॥ ६५ ॥ तथैव रमणा-  
श्चीनास्तथा च दशमालिकाः । क्लिप्तयोपनिवेशाश्च वैश्याशूद्रकुलानि च ॥ ६६ ॥  
शूद्रातीराश्च दरुदाः काश्मीराः पशुभिः सह । शाशीकाश्चास्तुचाराश्च पङ्कवा गिरि-

गह्वराः ॥ ७१ ॥ आत्रेयाः सत्वरद्वाजास्तथैव सुनपोषिकाः । द्रोणकाश्च कलि-  
 काश्च किरातानाञ्च जातयः ॥ ७८ ॥ तोमरा हन्यमानाश्च तथैव करभङ्गकाः ।  
 एते चान्ये जनपदाः प्राच्योदीच्यास्तथैव च ॥ ७९ ॥ उद्देशमात्रेण मया देशाः  
 संकीर्तिता विभो । यथाशुभं बलकापि त्रिवर्गस्य महाफलम् ॥ ९० ॥ दूहेतु धेनुः  
 कामधुकं भूमिः सम्यगनुष्ठिता । तस्यां गृह्यान्ति राजानः शूरा धर्मार्थकोविदाः ॥ ९१ ॥  
 ते त्यजन्त्याहवे प्राणान् वसुगृह्णास्तुरश्चिनः । देवमानुषकायानां कामं भूमिः परा-  
 यणम् ॥ ९२ ॥ अन्योहन्यस्याबलुम्पन्ति सारमेया यथामिषम् । राजानो भ्रत-  
 श्रेष्ठं भोजकुकामा वसुधराम् ॥ ९३ ॥ न चापि तृप्तिः कामानां विद्यते हृदयापि  
 कस्यचित् । तस्मात् परिग्रहे भुमेर्यतस्ते कुरुपाण्डवाः । सास्त्राभेदेन दानेन दण्डे-  
 नैव च पार्थिव ॥ ९४ ॥ पिता माता च पुत्रश्च खं द्योश्च नरपुङ्गव । भूमिर्भवति  
 भूतानां सम्यगच्छिद्रदर्शना ॥ ९५ ॥

इति भीष्मपर्वणि जयध्वजविनिर्माणपर्वणि भारतीयनद्यादिकथने  
 नवमोऽध्यायः ॥ २ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । भारतस्यास्य वर्षस्य तथा हैमवतस्य च । प्रमाणमायुषः सूत  
 बलकापि शुभाशुभम् ॥ १ ॥ अनागतमतिक्रान्तं वर्तमानञ्च सङ्गम । आचक्षु मे  
 विस्तरेण हरिवर्षं तथैव च ॥ २ ॥ सङ्गम उवाच । चत्वारि भारते वर्षे युगानि भर-  
 तवर्ष । कृतं त्रेता द्वापरञ्च त्रिष्यञ्च कुरुवर्द्धन ॥ ३ ॥ पूर्वञ्च कृतयुगं नाम तत-  
 स्त्रेतायुगं प्रभो । संक्षेपात् द्वापरस्याथ ततस्त्रिष्यञ्च प्रवर्तते ॥ ४ ॥ चत्वारि  
 तु सहस्राणि वर्षाणां कुरुसन्तम । आयुःसंख्या कृतयुगे संख्याता राजसन्तम ॥ ५ ॥  
 तथा त्रीणि सहस्राणि त्रेतायां मनुजाधिप । द्वे सहस्रे द्वापरे तु भूवि तिष्ठति  
 साम्प्रतम् ॥ ६ ॥ न प्रमाणस्थितिर्हस्ति त्रिष्येहस्मिन् भरतवर्ष । गर्भहाश्च म्रिय-  
 स्तेहत्र तथा जाता म्रियन्ति च ॥ ७ ॥ महाबला महासद्वाः प्रजापुंगवमन्विताः । प्रजा-  
 यन्ते च ज्ञाताश्च शतशोऽथ सहस्रशः ॥ ८ ॥ जाताः कृतयुगे राजन् बलिनः प्रि-  
 यदर्शनाः । प्रजायन्ते च ज्ञाताश्च मुनयो वै तपोधनाः ॥ ९ ॥ महोऽसाहा  
 महाश्रानो धार्मिकाः सत्यवादिनः । प्रियदर्शा वपुष्मन्तो महावीर्या धनुर्धराः ॥ १० ॥  
 वराहा युधि जायन्ते क्रत्रियाः शूरसन्तमाः । त्रेतायां क्रत्रिया राजन् सर्वे वै  
 चक्रवर्तिनः ॥ ११ ॥ सर्ववर्णाश्च जायन्ते सदैव द्वापरे युगे । महोऽसाहा महा-  
 वीर्याः परस्परवधैषिणः ॥ १२ ॥ तेजसान्नेन संयुक्ताः क्रोधनाः पुरुषा नृप ।

लूका अनृतकाश्चैव तिष्ये जायन्ति भारत ॥ १७ ॥ ईर्ष्या मानसुथा क्रोधो माया-  
सूया तथैव च । तिष्ये भवति भूतानां रागो लोभश्च भारत ॥ १४ ॥ संक्ले-  
पो वर्तते राजन् द्वापरेऽस्मिन्मराधिप । शुभोत्तरं हेमवतं हरिवर्षं ततः  
परम् ॥ १५ ॥

इति तीर्यपर्वणि जम्बूखण्डविनिर्माणपर्वणि भारताद्यायुर्निरूपणे

दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

समाप्तं जम्बूखण्डविनिर्माणपर्व ।

अथ भूमिपर्व ॥ २ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । जम्बूखण्डस्य प्रोक्तो यथावदिह सङ्गः । विहङ्गमस्य प्रबुहि  
परिमाणं तद्वतः ॥ १ ॥ समुद्रस्य प्रमाणं सम्यगच्छिद्रदर्शन । शाकद्वीपं मे  
बुहि कुशद्वीपं सङ्गः ॥ २ ॥ शाल्मलिक्खेव तद्वेन क्रौञ्चद्वीपं तथैव च । बुहि  
गावल्गणे सर्वं राहोः सोमार्कयोस्तथा ॥ ३ ॥ सङ्ग उवाच । राजन् सुवहवो  
द्वीपा यैरिदं सन्ततं जगत् । सप्त द्वीपान् प्रवक्ष्यामि चन्द्रादित्यो ग्रहं तथा ॥ ४ ॥  
अष्टादशसहस्राणि योजनानां विशाम्पते । षट् शतानि च पूर्णानि विहङ्गो जम्बू-  
पर्वतः ॥ ५ ॥ लावणस्य समुद्रस्य विहङ्गो द्विगुणः स्यूतः । नानाजनपदाकीर्णो मणिवि-  
क्रमचित्रितः ॥ ६ ॥ नैकधातुविचित्रैश्च पर्वतैरुपशोभितः । सिद्धचारुसङ्कीर्णः  
सागरः परिमण्डलः ॥ ७ ॥ शाकद्वीपं वक्ष्यामि यथावदिह पार्थिव । शूणु मे ह्यं  
यथान्यायं क्ववतः कुरुनन्दन ॥ ८ ॥ जम्बूद्वीपप्रमाणेन द्विगुणः स नराधिप ।  
विहङ्गेण महाराज सागरोऽपि विभागशः ॥ ९ ॥ क्शीरोदो भरतश्रेष्ठ येन सं-  
परिवारितः । तत्र पुण्या जनपदास्तत्र न म्रियते जनः । कुत एव हि दुर्भिक्षं क्रमा-  
तेजोयुता हि ते ॥ १० ॥ शाकद्वीपस्य संक्लेपो यथावदुत्तरवर्ति । उक्त एव महा-  
राज किमन्यं कथयामि ते ॥ ११ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । शाकद्वीपस्य संक्लेपो यथा-  
वदिह सङ्गः । उक्तस्य महाप्राज्ञ विस्तरं बुहि तद्वतः ॥ १२ ॥ सङ्ग उवाच ।  
तथैव पर्वता राजन् सप्तान् मणिभूषिताः । रत्नाकरास्तथा नद्यस्तैश्चां नामानि मे  
शूणु । अतीवगुणवत् सर्वं तद्वत् पृच्छ जनाधिप ॥ १३ ॥ देवर्षिगद्गर्भयुतः प्रथमो  
मेरुरुच्यते । प्रागायतो महाराज मलयो नाम पर्वतः ॥ १४ ॥ ततो मेघाः प्रव-  
र्तन्ते प्रभवन्ति च सर्वशः । ततः परेण कौरव्य जलधारो महागिरिः ॥ १५ ॥  
ततो नित्यमुपादत्ते वासवः परमं जलम् । ततो वर्षं प्रभवति वर्षाकाले जने-



শ্বর ॥ ১৬ ॥ উচ্চৈর্গিরী রৈবতকো যত্র নিত্যং প্রতিষ্ঠিতা । রেবতী দিবি নক্ষত্রং  
 পিতামহকৃতো বিধিঃ ॥ ১৭ ॥ উত্তরেণ তু রাজেশ্বর শ্যামো নাম মহাগিরিঃ । নব-  
 মেষপ্রভঃ প্রাংশুঃ শ্রীমাম্বুজ্জলবিগ্রহঃ । যতঃ শ্যামহ্রমাগমাঃ প্রজা জনপদে-  
 শ্বর ॥ ১৮ ॥ ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । সুমহান্ সংশযো মেহদ্য প্রোক্তোহযং সঞ্জয় ভূষা ।  
 প্রজাঃ কথং সূতপুত্র সম্প্রাপ্তাঃ শ্যামতামিহ ॥ ১৯ ॥ সঞ্জয় উবাচ । সর্বেষেব মহা-  
 রাজ দ্বীপেষু কুরুনন্দন । গৌরঃ কৃষ্ণশ্চ পতগস্তয়োর্বর্ণান্তরে নৃপ । শ্যামো  
 যস্মাৎ প্রবৃত্তো বৈ তস্মাৎ শ্যামো গিরিঃ স্মৃতঃ ॥ ২০ ॥ ততঃ পরং কৌরবেশ্বরদুর্গ-  
 শৈলো মহোদয়ঃ । কেশরী কেশরযুতো যতো বাতঃ প্রবর্ততে ॥ ২১ ॥ তেষাং যো-  
 জনবিক্রমো দ্বিগুণঃ প্রবিভাগশঃ । বর্ষাণি তেষু কৌরব্য সপ্তোক্তানি মনীষি-  
 তিঃ ॥ ২২ ॥ মহামেৰুর্নহাকাশো জলদঃ কুমুদোত্তরঃ । জলধারো মহারাজ সুকু-  
 মার ইতি স্মৃতঃ ॥ ২৩ ॥ রেবতস্য তু কৌমারঃ শ্যামস্য মণিকাঞ্চনঃ । কেশরস্যথ  
 মৌদাকী পরেণ তু মহান্ পুমান্ ॥ ২৪ ॥ পরিবার্য্য তু কৌরব্য দৈর্ঘ্যং হৃষ্মমেব  
 চ । জম্বুদ্বীপেন সংখ্যাতস্তস্য মধ্যে মহাক্রমঃ । শাকো নাম মহারাজ প্রজাস্তস্য  
 মহানুগাঃ ॥ ২৫ ॥ তত্র পুণ্য জনপদাঃ পূজ্যতে তত্র শকরঃ । তত্র গচ্ছন্তি সিদ্ধা-  
 শ্চ চারণা দৈবতানি চ ॥ ২৬ ॥ ধাৰ্ম্মিকাশ্চ প্রজা রাজন্ চছারোহতীব ভারত ।  
 বর্ণাঃ স্বকর্মনিরতা ন চ স্তেনোহত্র দৃশ্যতে ॥ ২৭ ॥ দীর্ঘায়ুষো মহারাজ জরামৃ-  
 ত্যবিবর্জিতাঃ । প্রজাস্তত্র বিবর্জন্তে বর্ষাস্বিব সমুদ্রগাঃ ॥ ২৮ ॥ নদ্যঃ পুণ্যজলা-  
 স্তত্র গঙ্গা চ বহুধা গতা । সুকুমারী কুমারী চ শীতা শীবেণিকা তথা ॥ ২৯ ॥ মহা-  
 নদী চ কৌরব্য তথা মণিজলা নদী । বৎসুর্বর্জিনিকা চৈব নদী ভরতসন্তম ॥ ৩০ ॥  
 ততঃ প্রবৃত্তাঃ পুণ্যোদা নদ্যঃ কুরুকুলোদহ । সহস্রাণাং শতান্যেব যতো বর্ষতি বা-  
 সবঃ ॥ ৩১ ॥ ন তাসাং নামধেয়ানি পরিমাণং তথৈব চ । শক্যতে পরিসংখ্যাতুং  
 পুণ্যাস্তা হি সরিষরাঃ ॥ ৩২ ॥ তত্র পুণ্য জনপদাশ্চছারো লোকসম্মতাঃ । মগাশ্চ  
 মশকৈশ্চব মানসা মন্দগাস্তথা ॥ ৩৩ ॥ মগা ব্রাহ্মণভূযিষ্ঠাঃ স্বকর্মনিরতা নৃপ ।  
 মশকেষু তু রাজন্যা ধাৰ্ম্মিকাঃ সর্বকামদাঃ ॥ ৩৪ ॥ মানসাশ্চ মহারাশ্চ বৈশ্যধর্ম্মো-  
 পজীবিনঃ । সর্বকামসমায়ুক্তাঃ শূরা ধর্ম্মার্থনিশ্চিতাঃ ॥ ৩৫ ॥ শূদ্রাস্ত মন্দগা নিত্যং  
 পুরুষা ধর্ম্মশীলিনঃ । ন তত্র রাজা রাজেশ্বর ন দণ্ডো ন চ দাণ্ডিকাঃ । স্বধর্ম্মেণৈব  
 ধর্ম্মজ্ঞে তে রক্ষন্তি পরস্পরম্ ॥ ৩৬ ॥ এতাবদেব শক্যস্ত তত্র দ্বীপে প্রভাষিতুম্ ।  
 এতদেব চ শ্রোতব্যং শাকদ্বীপে মহৌজসি ॥ ৩৭ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভূমিপর্বণি শাকদ্বীপবর্ণনে একাদশোহধ্যায়ঃ ॥ ১১ ॥

সঞ্জয় উবাচ । উত্তরেষু চ কৌরব্য দ্বীপেষু ক্ষয়তে কথা । এবং তত্র মহারাজ ক্রব-  
 তশ্চ নিবোধ মে ॥ ১ ॥ যততোযঃ সমুদ্রোহত্র দধিমণ্ডোদকঃ পরঃ । সুরোদঃ সা-  
 গরশ্চৈব তথানেয়া ধর্মসাগরঃ ॥ ২ ॥ পরস্পরেণ দ্বিগুণাঃ সর্বে দ্বীপা নরাধিপ ।  
 পর্বতাশ্চ মহারাজ সমুদ্রেঃ পরিবারিতাঃ ॥ ৩ ॥ গৌরস্ত মধ্যমে দ্বীপে গিরির্মানঃ-  
 শিলো মহান্ । পর্বতঃ পশ্চিমে ক্রুক্ষেণ নারাষণসখো নৃপ ॥ ৪ ॥ তত্র রত্নানি দিব্যানি  
 স্বয়ং রক্ষতি কেশবঃ । প্রজাপতিমুপাসীনঃ প্রজানাং ব্যদধৎ সুখম্ ॥ ৫ ॥ কুশ-  
 দ্বীপে কুশস্তম্বো মध्ये জনপদস্য হ । সম্প্রজ্যতে শাল্মলিশ্চ দ্বীপে শাল্মলকে  
 নৃপ ॥ ৬ ॥ ক্রৌঞ্চদ্বীপে মহাক্রৌঞ্চে গিরী রত্নচযাকরঃ । সম্প্রজ্যতে মহারাজ  
 চাতুর্ভর্গেন নিত্যদা ॥ ৭ ॥ গোমন্তঃ পর্বতো রাজন্ সুমহান্ সর্ষধাতুকঃ । যত্র  
 নিত্যং নিবসতি শ্রীমান্ কমললোচনঃ । মোক্ষিভিঃ সঙ্গতো নিত্যং প্রভূর্নারাষণো  
 हरिः ॥ ৮ ॥ কুশদ্বীপে তু রাজেন্দ্র পর্বতো বিক্রমৈশ্চিতঃ । সুনামা নাম দুর্দ্ধর্যো  
 দ্বিতীযো হেমপর্বতঃ ॥ ৯ ॥ দ্যুতিমান্ নাম কৌরব্য তৃতীয়ঃ কুমুদো গিরিঃ । চতুর্থঃ  
 পুষ্পবান্ নাম পঞ্চমস্ত কুশেশযঃ ॥ ১০ ॥ ষষ্ঠো हरिगिरिनाम षडेते पर्वतोत्त-  
 माः । তেষামন্তরবিক্রস্তো দ্বিগুণঃ পূর্বভাগশঃ ॥ ১১ ॥ ঔদ্ভিদং প্রথমং বর্ষং দ্বি-  
 তীয়ং বেণুগুণম্ । তৃতীয়ং সুরথং নাম চতুর্থং লম্বনং স্মৃতম্ ॥ ১২ ॥ ধৃতিমৎ  
 পঞ্চমং বর্ষং ষষ্ঠং বর্ষং প্রভাকরম্ । সপ্তমং কাপিলং বর্ষং সঠৈপ্তে বর্ষলন্ত-  
 কাঃ ॥ ১৩ ॥ এতেষু দেবগন্ধর্বাঃ প্রজাশ্চ জগতীশ্বর । বিহরন্তে রমন্তে চ ন তেষু  
 মিষতে জনঃ ॥ ১৪ ॥ ন তেষু দস্যবঃ সন্তি শ্লেচ্ছজাত্যোহপি বা নৃপ । গৌরপ্রাযো  
 জনঃ সর্ষঃ সুকুমারশ্চ পার্থিব ॥ ১৫ ॥ অবশিষ্টেষু সর্বেষু বক্ষ্যামি মনুজেশ্বর ।  
 যথাশ্রুতং মহারাজ তদব্যগ্রমনাঃ শৃণু ॥ ১৬ ॥ ক্রৌঞ্চদ্বীপে মহারাজ ক্রৌঞ্চে  
 নাম মহাগিরিঃ । ক্রৌঞ্চাৎ পরো বামনকো বামনাদক্ষকারকঃ ॥ ১৭ ॥ অন্ধ-  
 কারাৎ পরো রাজন্ মৈনাকঃ পর্বতোত্তমঃ । মৈনাকাৎ পরতো রাজন্ গোবিন্দো  
 গিরিরুত্তমঃ ॥ ১৮ ॥ গোবিন্দাৎ পরতো রাজন্ নিবিন্দো নাম পর্বতঃ । পরস্ত  
 দ্বিগুণস্তেষাং বিক্রস্তো বংশবর্দ্ধন ॥ ১৯ ॥ দেশাংস্তত্র প্রবক্ষ্যামি তন্মে নিগদতঃ  
 শৃণু । ক্রৌঞ্চস্য কুশলো দেশো বামনস্য মনোমুগঃ ॥ ২০ ॥ মনোমুগাৎ পর-  
 শ্চাক্ষেণ দেশঃ কুরুকুলোদহ । উক্সাৎ পরঃ প্রাবরকঃ প্রাবরাদক্ষকারকঃ ॥ ২১ ॥  
 অন্ধকারকদেশাভু মুনিদেশঃ পরঃ স্মৃতঃ । মুনিদেশাৎ পরশ্চৈব প্রোচ্যতে দুন্দুভি-  
 স্বনঃ ॥ ২২ ॥ সিদ্ধচারণসংকীর্ণো গৌরপ্রাযো জনাধিপ । এতে দেশা মহারাজ  
 দেবগন্ধর্বসেবিতাঃ ॥ ২৩ ॥ পুষ্করে পুষ্করো নাম পর্বতো মণিরত্নবান্ । তত্র নিত্যং

निवसति स्वयं देवः प्रजापतिः ॥ २४ ॥ तं पर्युपासते नित्यं देवाः सर्वे  
 महर्षयः । वाग्भिर्मनोऽह्नुकुलाभिः पूजयन्तो जनाधिप ॥ २५ ॥ जम्बूद्वीपां प्रव-  
 र्तन्ते रत्नानि विविधान्मृत । द्वीपेषु तेषु सर्वेषु प्रजानां कुरुसत्रम् ॥ २६ ॥ उक्त्वा-  
 चर्येण सत्येन प्रजानां हि दमेन च । आरोग्यायुःप्रमाणाभ्यां द्विगुणं द्विगुणं  
 ततः ॥ २७ ॥ एको जनपदो राजन् द्वीपेष्वेतेषु भारत । उक्त्वा जनपदा येषु  
 धर्मशैचकः प्रदृश्यते ॥ २८ ॥ ईश्वरो दण्डमुद्यम्य स्वयमेव प्रजापतिः । द्वीपान्ने-  
 तान् महाराज रक्षंस्तिष्ठति नित्यदा ॥ २९ ॥ स राजा सं शिवो राजन् स पिता स  
 पितामहः । गोपायति नरश्रेष्ठ प्रजाः सजडपण्डिताः ॥ ३० ॥ भोजनक्षत्र  
 कौरव्य प्रजाः स्वयमुपस्थितम् । सिद्धमेव महाबाहो भुङ्गते तद्धि नित्यदा ॥ ३१ ॥  
 ततः परं समा नाम दृश्यते लोकसंस्थितिः । चतुरस्रा महाराज त्रयस्त्रिंशत् मण्ड-  
 लम् ॥ ३२ ॥ तत्र तिष्ठन्ति कौरव्य चत्वारो लोकसम्पताः । दिग्गजा भरतश्रेष्ठ  
 वामनैरावतादयः । सुप्रतीकस्तथा राजन् प्रतिमकरटामुखः ॥ ३३ ॥ तस्याहं परि-  
 माणस्तु न संख्यातुमिहोत्सहे । असंख्यातः स नित्यं हि तिर्यग्द्वन्द्वमधस्तथा ॥ ३४ ॥  
 तत्र वै वायवो वासि दिग्यः सर्वाभ्य एव हि । असंबद्धा महाराज ताम्निगृह्णन्ति ते  
 गजाः । पुष्करैः पद्मसंकाशैर्बिकर्षद्भिर्महाप्रभैः ॥ ३५ ॥ शतधा पुनरेवाशु ते  
 तान्मुष्णन्ति नित्यशः ॥ ३६ ॥ स्वसद्भिर्मुच्यमानास्तु दिग्गजैरिह मारुताः । आगच्छन्ति  
 महाराज ततस्तिष्ठन्ति वै प्रजाः ॥ ३७ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । परो वै विस्तरोऽत्यर्थं  
 द्वया सङ्गम कीर्तितः । दर्शितं द्वीपसंस्थानमुत्तरं बुहि सङ्गम ॥ ३८ ॥ सङ्गम उवाच ।  
 उक्त्वा द्वीपा महाराज ग्रहान् वै शूणु तद्वतः । स्वर्भानोः कौरवश्रेष्ठ यावदेव प्रभा-  
 वतः ॥ ३९ ॥ परिमण्डलो महाराज स्वर्भानुः क्षयते ग्रहः । योजनानां सहस्राणि  
 विस्तन्तो द्वादशस्य वै ॥ ४० ॥ परिणाहेन षट्त्रिंशत् विपुलत्वेन चानघ । षष्टि-  
 माहः शतान्यस्य बुधाः पौराणिकासुखा ॥ ४१ ॥ चन्द्रमास्तु सहस्राणि राजन्नेकादश स्यूतः ।  
 विस्तन्तेन कुरुश्रेष्ठ त्रयस्त्रिंशत् मण्डलम् । एकान्यष्टिर्बिस्तुः शीतरश्मेर्महात्मान-  
 नः ॥ ४२ ॥ सूर्यास्तुर्षोः सहस्राणि द्वे चान्ये कुरुनन्दन । विस्तन्तेन ततो राजन्  
 मण्डलं त्रिंशतं समम् ॥ ४३ ॥ अर्धपञ्चाशतं राजन् विपुलत्वेन चानघ । क्षयते  
 परमोदारः पतद्गोहसौ विभावसुः । एतत् प्रमाणमर्कस्य निर्दिष्टमिह भारत ॥ ४४ ॥  
 स राहश्चादयत्येतौ यथाकालं महत्तया । चन्द्रादित्यौ महाराज संक्षेपोऽस्य-  
 मुदाहृतः ॥ ४५ ॥ इत्येतन्ते महाराज पृच्छतः शास्त्रचक्रुवा । सर्वमुक्तं यथातद्वत्  
 तस्माच्छ्रमवाप्नुहि ॥ ४६ ॥ यथोद्दिष्टं मया प्रोक्तं सनिर्माणमिदं जगत् ।

তস্মাদাশ্বস কৌরব্য পুত্রং দুৰ্য্যোধনং প্রতি ॥ ৪৭ ॥ ঞ্জ্বেদং তরতশ্ৰেষ্ঠ ভূমিপর্ব  
মনোহস্তুগম্। শ্রীমান্ ভবতি রাজন্যঃ সিদ্ধার্থঃ সাধুসম্মতঃ ॥ ৪৮ ॥ আয়ুর্বলঞ্চ  
কীর্তিঞ্চ তস্য ত্রেজ্জশ্চ বর্দ্ধতে । যঃ শৃণোতি মহীপালঃ পর্বণীদং যতব্রতঃ । শ্রীষ-  
স্তে .পিতরুস্তস্য তথৈব চ পিতামহাঃ ॥ ৪৯ ॥ ইদম্ভ ভারতং বর্ষং যত্র বর্ত্তামহে  
বযম্। ততঃ প্রবর্ত্ততে পুণ্যং তৎ সর্বং ঞ্জতবানসি ॥ ৫০ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভূমিপর্বণ্যুত্তরকুর্বাদিনিকপণে

দ্বাদশোহধ্যায়ঃ ॥ ১২ ॥

সমাপ্তঞ্চ ভূমিপর্ব ।



অথ ভগবদ্দীতাপর্ব ॥ ৩ ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ । অথ গাবল্গনির্বিদ্বান্ সংযুগাদেত্য ভারত । প্রত্যক্ষদর্শী  
সর্বস্য ভূতভব্যভবিষ্যবিৎ ॥ ১ ॥ ধ্যায়তে ধৃতরাষ্ট্রাষ সহসোৎপত্য দুঃখিতঃ ।  
আচর্চ নিহতং ভীষ্মং ভারতানাং পিতামহম্ ॥ ২ ॥ সঞ্জয় উবাচ । সঞ্জযোহহং  
মহারাজ নমস্তে ভরতর্ষভ । হতো ভীষ্মঃ শাস্তনবো ভরতানাং পিতামহঃ ॥ ৩ ॥  
ককুদং সর্বযোধানাং ধাম সর্বধনুস্মতাম্ । শরতল্লগতঃ সোহদ্য শেতে কুরুপিতাম-  
হঃ ॥ ৪ ॥ যস্য বীর্য্যং সমাশ্রিত্য দ্যুতং পুত্রস্তবাকরোৎ । স শেতে নিহতো রাজন্  
সংখ্যে ভীষ্মঃ শিখণ্ডিনা ॥ ৫ ॥ যঃ সর্বান্ পৃথিবীপ্যালান্ সমবেতান্ মহামৃধে ।  
জিগায়ৈকরথেনৈব কাশিপুৰ্য্যাং মহারথঃ ॥ ৬ ॥ জামদগ্ন্যং রণে রামং যোহযুধ্য-  
দপসংভ্রমঃ । ন হতো জামদগ্ন্যেন স হতোহদ্য শিখণ্ডিনা ॥ ৭ ॥ মহেন্দ্রসদৃশঃ  
শৌর্য্যে ষ্ট্রৈর্য্যে চ হিমবানিব । সমুদ্র ইব গান্ধীর্য্যে সহিষ্ণুশ্চে ধরাসমঃ ॥ ৮ ॥  
শরদংষ্ট্রে। ধনুর্বক্রুঃ খজ্জিহ্বো দুরাসদঃ । নরসিংহঃ পিতা তেহদ্য পাঞ্চাল্যেন  
নিপাতিতঃ ॥ ৯ ॥ পাণ্ডবানাং মহৎ সৈন্যং যং দৃষ্টোদ্যতমাহবে । প্রাবেপত  
ভযোদ্বিগ্নং সিংহং দৃষ্টেব গোগণঃ ॥ ১০ ॥ পরিরক্ষ্য স সেনাং তে দশরাত্রং স্বনী-  
কহা । জগামাস্তমিবাদিত্যঃ কুত্বা কৰ্ম্ম সুদুষ্করম্ ॥ ১১ ॥ যঃ স শত্রু ইবাক্ষোভ্যো  
বর্ষন্ বাণান্ সহস্রশঃ । জঘান যুধি যোধানামর্ষুদং দশভির্দিনৈঃ ॥ ১২ ॥ স শেতে  
নিহতো ভূমো বাতরুগ্ন ইব ক্রমঃ । তব দুৰ্ম্মম্ব্রিতে রাজন্ যথা নারহঃ স ভারতঃ ॥ ১৩ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভগবদ্দীতাপর্বণি ভীষ্মমৃত্যুশ্রবণে

ত্রয়োদশোহধ্যায়ঃ ॥ ১৩ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । कथं कुरूणामृषतो हतो भीष्मः शिखण्डिना । कथं रथात्  
 स न्यपतत् पिता मे वासवोपमः ॥ १ ॥ कथमासत्श्च मे घोषा हीना भीष्मेण  
 सङ्गय । बलिना देवकलेन गुर्वर्धे ब्रह्मचारिणा ॥ २ ॥ तस्मिन् हते महाप्राज्ञे  
 महेश्वासे महाबले । महासत्त्वे नरव्याघ्रे किं न आसीन्ननसुदा ॥ ३ ॥ अर्तिं  
 परामाविशति मनः संश्रुत्य मे हतम् । कुरूणामृषतं वीरमकल्प्यं पुरुषर्षभम् ॥ ४ ॥  
 के तं यास्तुमनुप्राप्ताः के वास्यसन् पुरोगमाः । केऽतिष्ठन् के न्यवर्तस्त केऽ-  
 न्यवर्तस्त सङ्गय ॥ ५ ॥ के शूरा रथशार्दूलमच्युतं क्लिष्यर्षभम् । तथानीकं गाह-  
 मानं सहसा पृष्ठतोऽन्ययुः ॥ ६ ॥ यस्तमोऽर्क ईवापोहन् परसैन्यमित्रहा । सहस्र-  
 रश्मिप्रतिभः परेषां भयमादधत् ॥ ७ ॥ अकरोदुक्षरं कर्म रणे पाण्डुसूतेषु यः ।  
 असमानमनीकानि क एनं पर्यवारयन् ॥ ८ ॥ क्रुतिनं तं दुरोधसं सङ्गयास्यस्तुम-  
 न्तिके । कथं शान्तनवं युद्धे पाण्डवाः प्रत्यवारयन् ॥ ९ ॥ निरुन्तुमनीकानि शर-  
 दंष्ट्रं मनस्विनम् । चापव्याप्ताननं घोरमसिजिह्वं दुरासदम् ॥ १० ॥ अनर्हं पुरु-  
 षव्याघ्रं हीनस्तुमपराजितम् । पातयामास कौन्तेयः कथं तमजितं युधि ॥ ११ ॥  
 उग्रधनाननुश्रेष्ठं वर्तमानं रथोत्तमे । परेषामुत्तमाङ्गानि प्रचिन्तुमथेषुभिः ॥ १२ ॥  
 पाण्डवानां महासैन्यं यं दृष्ट्वाद्यस्तुमाहवे । कालाग्निव दुर्द्धरं समचेष्टत  
 नित्यशः ॥ १३ ॥ परिक्रुष्य स सेनास्तु दशरात्रमनीकहा । जगामास्तुमिवादित्यः  
 क्रुत्वा कर्म सुदुक्षरम् ॥ १४ ॥ यः स शक्र ईवाक्ययं वषट् शरमयं क्षिपन् । जघान  
 युधि घोषानामर्षुदं दशभिर्दिनैः ॥ १५ ॥ स शेते निहतो भूमौ वातरुग्ग इव  
 क्रमः । मम दुर्मन्त्रितेनाजौ यथा नाहति भारतः ॥ १६ ॥ कथं शान्तनवं दृष्ट्वा  
 पाण्डवानामनीकिनी । प्रहर्तुमशकन्नत भीष्मं भीमपराक्रमम् ॥ १७ ॥ कथं भी-  
 ष्मेण संग्रामं प्राकूर्षन् पाण्डुनन्दनाः । कथं नाजघन्तीशो द्रोणे जीवति सङ्ग-  
 य ॥ १८ ॥ रूपे समिहिते तत्र भारद्वाजास्रजे तथा । भीष्मः प्रहरतां श्रेष्ठः  
 कथं स निधनं गतः ॥ १९ ॥ कथं क्षातिरथस्तेन पाण्डाल्येन शिखण्डिना । भीष्मो  
 विनिहतो युद्धे देवैरपि दुरासदः ॥ २० ॥ यः स्पर्द्धते रणे नित्यं जामदग्न्यं  
 महाबलम् । अजितं जामदग्न्येन शक्रतुल्यपराक्रमम् ॥ २१ ॥ तं हतं समरे  
 भीष्मं महारथकुलोदितम् । सङ्गयाचक्षु मे वीरं येन शर्म न विद्यहे ॥ २२ ॥  
 मामकाः के महेश्वासा नाजहः सङ्गयाच्युतम् । दुर्योधनसमादिष्टाः के वीराः पर्य-  
 वारयन् ॥ २३ ॥ वच्छिखण्डिमुखाः सर्वे पाण्डवा भीष्ममभ्ययुः । कच्छित्ते कुरवः सर्वे  
 नाजहः सङ्गयाच्युतम् ॥ २४ ॥ मौर्वीघोषस्तनयिभूः पृषत्कपृषतो महान् । धनु-

হুঁদমহাশকো মহামেষ ইবোন্নতঃ ॥ ২৫ ॥ যোঃ ভ্যবর্ষত কৌন্তেয়ান্ সপাঞ্চালান্  
 সসৃঞ্জযান্ । নিম্নন্ পররথান্ বীরো দানবানিব বজ্রভৃৎ ॥ ২৬ ॥ ইষস্রমাগরং ঘোরং  
 বাণগ্রাহং দুরাসদম্ । কান্মুকোন্নিগমক্শোভ্যমদ্বীপং সমরেহপ্তবম্ ॥ ২৭ ॥ গদাসিমক-  
 রাবাসং হযাবর্তং গজাকুলম্ । 'পদাতিমৎস্যকলিলং শঙ্খদুন্দুভিনিম্বনম্ ॥ ২৮ ॥  
 হযান্ গজান্ পদাতীংশ্চ রথাংশ্চ তরসা বহূন্ । নিমজ্জযন্তং সমরে পরবীরাপহা-  
 রিগম্ ॥ ২৯ ॥ বিদহমানং কোপেন তেজসা চ পরস্তপম্ । বেলেব মকরাবাসং কে  
 বীরাঃ পর্য্যবারষন্ ॥ ৩০ ॥ ভীষ্মো যদকরোৎ কৰ্ম সমরে সঞ্জযারিহা । দুর্য্যো-  
 ধনহিতার্থায় কে তদাস্য পুরোহভবন্ ॥ ৩১ ॥ কেহরক্ষন্ দক্ষিণং চক্রং ভীষ্মস্যা-  
 মিততেজসঃ । পৃষ্ঠতঃ কে পরান্ বীরানপাসেধন্ যতব্রতাঃ ॥ ৩২ ॥ কে পুরস্তাদ-  
 বর্তস্ত রক্ষন্তো ভীষ্মমস্তিকে । কেহরক্ষমুত্তরং চক্রং বীরা বীরস্য যুধ্যতঃ ॥ ৩৩ ॥  
 বামে চক্রে বর্তমানাঃ কেহম্ন সঞ্জয সৃঞ্জযান্ । অগ্রতোহগ্র্যমনীকেষু কেহত্যরক্ষন্  
 দুরাসদম্ ॥ ৩৪ ॥ পার্শ্বতঃ কেহত্যরক্ষন্ত গচ্ছন্তো দুর্গমাং গতিম্ । সমূহে কে  
 পরান্ বীরান্ প্রত্যযুধ্যন্ত সঞ্জয ॥ ৩৫ ॥ রক্ষ্যমাণঃ কথং বীরৈর্গোপ্যমানাশ্চ  
 তেন তে । দুর্জয়ানামনীকানি নাজয়ন্তুরসা যুধি ॥ ৩৬ ॥ সর্বলোকেশ্বরস্যেব  
 পরমেষ্ঠিপ্রজাপতেঃ । কথং প্রহর্তুমপি তে শেকুঃ সঞ্জয পাণ্ডবাঃ ॥ ৩৭ ॥ যস্মিন্  
 দ্বীপে সমাশ্বস্য যুধ্যন্তে কুরবঃ পঠৈঃ । তং নিমগ্নং নরব্যাগ্রং ভীষ্মং শংসসি সঞ্জ-  
 য ॥ ৩৮ ॥ যস্য বীর্যং সমাশ্রিত্য মম পুত্রো বৃহদ্বলঃ । ন পাণ্ডবানগণযৎ কথং  
 স নিহতঃ পঠৈঃ ॥ ৩৯ ॥ যঃ পুরা বিবুধৈঃ সঠৈঃ সাহায্যে যুদ্ধদুর্মদঃ । কাজিক্তো  
 দানবান্ স্তম্ভিঃ পিতা মম মহাব্রতঃ ॥ ৪০ ॥ যস্মিন্ জাতে মহাবীর্যে শান্তনু-  
 লোকবিশ্রুতঃ । শোকং দৈন্যঞ্চ দুঃখঞ্চ প্রাজহৎ পুত্রলক্ষ্মণি ॥ ৪১ ॥ প্রোক্তং  
 পরাযণং প্রাজ্ঞং স্বধৰ্মনিরতং শুচিম্ । বেদবেদাঙ্গতত্ত্বজ্ঞং কথং শংসসি মে  
 হতম্ ॥ ৪২ ॥ সর্বাঙ্গবিনয়োপেতং শান্তং দান্তং মনস্বিনম্ । হতং শান্তনবং  
 শ্রদ্ধা মন্যে শেষং হতং বলম্ ॥ ৪৩ ॥ ধৰ্মাদধৰ্ম্মো বলবান্ সম্প্রাপ্ত ইতি মে মতিঃ ।  
 যত্র বৃদ্ধং গুরুং হত্বা রাজ্যমিচ্ছন্তি পাণ্ডবাঃ ॥ ৪৪ ॥ জামদগ্ন্যঃ পুরা ব্রামঃ সর্বাঙ্গ-  
 বিদমুত্তমঃ । অস্বার্থমুদ্যতঃ সংখ্যে ভীষ্মেণ যুধি নির্জিতঃ ॥ ৪৫ ॥ তমিন্দ্রসনক-  
 র্ম্মাণং ককুদং সর্ষধম্বিনাম্ । হতং শংসসি মে ভীষ্মং কিন্নু দুঃখমতঃ পরম্ ॥ ৪৬ ॥  
 অসকুৎ স্কলিয়ব্রাতাঃ সংখ্যে যেন বিনির্জিতাঃ । জামদগ্ন্যেন রামেণ পরবীরনি-  
 ষাতিনা । ন হতো যো মহাবুদ্ধিঃ স হতোহদ্য শিখণ্ডিনা ॥ ৪৭ ॥ তস্মান্নূনং মহা-  
 বীর্য্যান্ডাগবান্দুদ্গদুর্মদাৎ । তেজোবীর্য্যবলেভূয়ান্ শিখণ্ডী দ্রুপদাত্মজঃ ॥ ৪৮ ॥

यः शूरं कृतिनं युद्धे सर्वशस्त्रविशारदम् । परमास्त्रविदं वीरं जघान भरतर्ष-  
 भम् ॥ ४२ ॥ के वीरास्तुमित्रघ्नमश्वयुः शस्त्रसंसदि । शंस मे तन्मथा चासीत् बुद्धं  
 भीष्मस्य पाण्डवैः ॥ ५० ॥ योषेव हतवीरा मे सेना पुल्लस्य सङ्गम् । अगोपमिव  
 चोद्भ्रास्तं गोकुलं तद्वलं मम ॥ ५१ ॥ पौरुषं सर्वलोकस्य परं यस्मिन् महा-  
 हवे । परासक्ते च वस्तस्मिन् कथमासीन्नस्तदा ॥ ५२ ॥ जीवितेऽप्यद्य सामर्थ्यं  
 किमिवास्मात्सु सङ्गम् । घातयिष्या महावीर्यं पितरं लोकधार्मिकम् ॥ ५३ ॥ अगाधे  
 सलिले मग्नां नावं दृष्ट्वेव पारगाः । भीष्मे हते तृशं दुःखां मन्ये शोचन्ति  
 पुल्लकाः ॥ ५४ ॥ अद्रिसारमयं नूनं हृदयं मम सङ्गम् । यच्छुद्धा पुरुषव्याघ्रं हतं  
 भीष्मं न दीर्यते ॥ ५५ ॥ यस्मिन्मन्त्राणि मेधा च नीतिश्च पुरुषवर्षते । अप्रमेयाणि  
 दुर्क्षे कथं स निहतो युधि ॥ ५६ ॥ न चास्त्रेण न शौर्येण तपसा मेधया न च ।  
 न धृत्या न पुनस्त्यागान्मृत्योः कश्चिद् प्रमुच्यते ॥ ५७ ॥ कालो नूनं महावीर्यः  
 सर्वलोकदुरत्ययः । यत्र शान्तनवं भीष्मं हतं शंससि सङ्गम् ॥ ५८ ॥ पुल्लशो-  
 काभिसंतपो महद्दुःखं विचिन्तयन् । आशंसेहं परित्राणं भीष्माच्छान्तनन्द-  
 नात् ॥ ५९ ॥ यदादित्यमिवापश्यं पतितं भुवि सङ्गम् । दूर्योधनः शान्तनवं  
 किं तदा प्रत्यपद्यत ॥ ६० ॥ नाहं स्वेषां परेषां वा बुद्ध्या सङ्गम् चिन्तयन् ।  
 शेषं किञ्चिद् प्रपश्यामि प्रत्यनीके महीकृताम् ॥ ६१ ॥ दारुणः क्लृप्तधर्मोऽय-  
 म्मृषिभिः संप्रदर्शितः । यत्र शान्तनवं हत्वा राज्यमिच्छन्ति पाण्डवाः ॥ ६२ ॥ वयं  
 वा राज्यमिच्छामो घातयिष्या महात्रतम् । क्लृप्तधर्मोऽस्मिन् हितः पार्था नापराध्यन्ति पुल्ल-  
 काः ॥ ६३ ॥ एतदार्येण कर्तव्यं कृच्छ्रास्वापत्सु सङ्गम् । पराक्रमः पराशक्ति-  
 स्तु च तस्मिन् प्रतिष्ठितम् ॥ ६४ ॥ अनीकानि विनिघ्नन्तुं ह्रीमन्तुमपराजितम् । कथं  
 शान्तनवं तातं पाण्डुपुत्रा न्यवारयन् ॥ ६५ ॥ कथं युक्तान्यनीकानि कथं युक्तं  
 महाश्रुतिः । कथं वा निहतो भीष्मः पिता सङ्गम् मे पतरेः ॥ ६६ ॥ दूर्योधनश्च  
 कर्णश्च शकुनिश्चापि सौबलः । दुःशासनश्च कितवो हते भीष्मे किमक्रवन् ॥ ६७ ॥  
 यच्छरीरैरुपास्तौर्णां नरवारणवाजिनाम् । शरशक्तिगदाखड्गतोमराकां महा-  
 तयाम् ॥ ६८ ॥ प्राविशन् कितवा मन्दाः सभां युद्धविशारदाः । प्राणद्यूते प्रति-  
 तये केहदीव्यस्तु नरर्षभाः ॥ ६९ ॥ के जयन्ति जितास्तुत्र कृतलक्ष्या निपातितः ।  
 अन्ये भीष्मात् शान्तनवात् तन्माचक्षु सङ्गम् ॥ ७० ॥ न हि मे शान्तिरस्तीह श्रद्धा  
 देवव्रतं हतम् । पितरं भीमकर्माणं भीष्ममाहवशोभिनम् ॥ ७१ ॥ आर्तिं मे  
 हृदये कृतां महतीं पुल्लहानिजाम् । ह्वं हि मे सर्पिषेवाग्निमुद्धीपयसि सङ्ग-

য ॥ ৭২ ॥ মহাস্তং ভারমৃদ্যম্য বিক্রতং সার্বলৌকিকম্ । দৃষ্ট্বা বিনিহতং ভীষ্মং  
মন্যে শোচন্তি পুলকাঃ ॥ ৭৩ ॥ শ্রোষ্যামি তানি দুঃখানি দুৰ্য্যোধনকৃতান্যহম্ ।  
তস্মান্মে সৰ্বমাচক্ষু যদ্বত্তং তত্র সঞ্জয় ॥ ৭৪ ॥ যদ্বত্তং তত্র সংগ্রামে মন্দস্যাবুদ্ধিস-  
স্তবম্ । অপনীতং স্তূনীতং যত্তম্মমাচক্ষু সঞ্জয় ॥ ৭৫ ॥ যৎ কৃতং তত্র সংগ্রামে  
ভীষ্মেণ জয়মিচ্ছতা । তেজোযুক্তং কৃতাস্ত্রেণ শংস তচ্চাপ্যশেষতঃ ॥ ৭৬ ॥ যথা  
তদভবদ্বুদ্ধং কুরুপাণ্ডবসেনযোঃ । ক্রমেণ যেন যস্মিন্শ্চ কালে যচ্চ যথাভবৎ ॥ ৭৭ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভগবদ্গীতাপর্বণি ধৃতরাষ্ট্রপ্রশ্নে

চতুর্দশোহধ্যায়ঃ ॥ ১৪ ॥



সঞ্জয় উবাচ । হৃদয়ুজ্জোহয়মনুপ্রশ্নো মহারাজ যথার্থসি । ন তু দুৰ্য্যোধনে দোষ-  
মিমমাসক্তুমর্হসি ॥ ১ ॥ য আত্মনো দূশ্চরিতাদশুভং প্রাপ্নুযাম্বরঃ । এনসো তেন  
নান্যং স উপাশঙ্কিতুমর্হতি ॥ ২ ॥ মহারাজ মনুষ্যেষু নিন্দ্যং যঃ সৰ্বমাচরেৎ ।  
স বধ্যঃ সৰ্বলোকস্য নিন্দিতানি সমাচরন্ ॥ ৩ ॥ নিকারোহ্নিকৃতিপ্রজ্ঞেঃ পাণ্ড-  
বৈস্তুৎপ্রতীক্ষয়া । অন্নভূতঃ সহামাত্যৈঃ ক্ষান্তশ্চ স্মৃচিরং বনে ॥ ৪ ॥ হযানাঞ্চ  
গজানাঞ্চ রাজ্ঞাঞ্চামিততেজসাম্ । প্রত্যক্ষং যন্ময়া দৃষ্টং দৃষ্টং যোগবলেন  
চ ॥ ৫ ॥ শৃণু তৎ পৃথিবীপাল মা চ শোকে মনঃ কুথাঃ । দিষ্টমেতৎ পুরা স্তূন-  
মিদমেব নরাধিপ ॥ ৬ ॥ নমস্কৃত্য পিতুস্তেহং হং পারাশর্য্যস্য ধীমতঃ । যস্য প্রসা-  
দাদ্দিব্যস্তুৎ প্রাপ্তং জ্ঞানমনুভ্রমম্ ॥ ৭ ॥ দৃষ্টিশ্চাতীন্দ্রিয়া রাজন্ দূরাৎ শ্রবণ-  
মেব চ । পরচিত্তস্য বিজ্ঞানমতীতানাগতস্য চ ॥ ৮ ॥ ব্যুথিতোৎপত্তিবিজ্ঞানমা-  
কাশে চ গতিঃ শুভা । শস্ত্রেবসঙ্গে যুদ্ধেষু বরদানাম্হাস্মনঃ ॥ ৯ ॥ শৃণু মে  
বিস্তরেণেদং বিচিত্রং পরমাত্মতম্ । ভারতানামভূদ্বুদ্ধং যথা তল্লোমহর্ষণম্ ॥ ১০ ॥  
তেষনীকেষু যন্তেষু ব্যুচেষু চ বিধানতঃ । দুৰ্য্যোধনো মহারাজ দুঃশাসনমথাত্র-  
বীৎ ॥ ১১ ॥ দুঃশাসন রথাস্তূর্ণং যুজ্যস্তাং ভীষ্মরক্ষিণঃ । অনীকানি চ সর্বাণি শীঘ্রং  
হুমনুচোদয ॥ ১২ ॥ অযং স মামনুপ্রাপ্তো বর্ষপূগাভিচিন্তিতঃ । পাণ্ডুবানাং সসৈ-  
ন্যানাং কুরুণাঞ্চ সমাগমঃ ॥ ১৩ ॥ নাতঃ কার্য্যতমং মন্যে রণে ভীষ্মস্য রক্ষণাৎ ।  
হন্যাঙ্গুপ্তো হসৌ পার্থান্ সোমকাংশ্চ সমঞ্জসান্ ॥ ১৪ ॥ অত্রবীচ্চ বিশুদ্ধাত্মা  
নাইং হন্যাং শিখণ্ডিনম্ । জয়তে স্ত্রী হসৌ পূর্বং তস্মাদ্বজ্যো রণে মম ॥ ১৫ ॥  
তস্মাদ্ভীষ্মো রক্ষিতব্যো বিশেষেণেতি মে মতিঃ । শিখণ্ডিনো বধে যত্তাঃ সর্বে তিষ্ঠন্ত  
মামকাঃ ॥ ১৬ ॥ তথা প্রাচ্যাঃ প্রতীচ্যাশ্চ দাক্ষিণাত্যোত্তরাপথাঃ । সর্ষশস্ত্রেষু



कुशलास्ते रक्षन्तु पितामहम् ॥ ११ ॥ अरक्ष्यमाणं हि वृको हन्यात् सिंहं युधाम-  
बलम् । मा सिंहं जम्बुकेनेव घातयेथाः शिखण्डिना ॥ १८ ॥ वामं चक्रं युधाम-  
न्युरुत्तमोजाश्च दक्षिणम् । गोप्तारो फाल्गुनस्यार्जो फाल्गुनोऽपि शिखण्डि-  
नः ॥ १९ ॥ संपरक्ष्यमाणः पार्थेन भीष्मेण च विवर्जितः । यथा न हन्याद्गाक्षेयं  
दुःशासन तथा कुरु ॥ २० ॥

इति भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि दुर्योधनदुःशासनसंबादे

पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥



सङ्घस्य उवाच । ततो रजन्यां व्युक्तायां शकः समभवन्महान् । क्रोशतां भूमि-  
पालानां युज्यतां युज्यतामिति ॥ १ ॥ शङ्खदुन्दुभिषोऽथैषश्च सिंहनादैश्च भा-  
रत । ह्यहेषितनादैश्च रथनेमिष्वनैस्तथा ॥ २ ॥ गजानां वृंहतांश्चैव योधा-  
नांश्चापि गर्जताम् । क्षेपितास्फेाटितोऽक्रुचैस्तुमुलः सर्वतोऽभवत् ॥ ३ ॥ उद-  
तिष्ठन्महाराज सर्वं युक्तमशेषतः । सूर्योदये महासैन्यां कुरुपाण्डवसैनयोः ॥ ४ ॥  
राजेश्च तव पुत्राणां पाण्डवानां तथैव च । दुष्पुर्षाणि चास्त्राणि सशस्त्रकवचानि  
च ॥ ५ ॥ ततः प्रकाशे सैन्यानि समदृश्यन्तु भारत । हृदीयानां परेषांश्च शस्त्र-  
वस्त्रि महान्ति च ॥ ६ ॥ तत्र नागा रथांश्चैव जायन्तदपरिहृताः । विभ्राजमाना  
दृश्यन्ते मेघा इव सविद्युतः ॥ ७ ॥ रथानीकान्यदृश्यन्तु नगराणां व भूरिशः । अतीव  
शुशुभे तत्र पिता ते पूर्णचन्द्रवत् ॥ ८ ॥ धनुर्भिरिषुभिः खड्गैर्गदाभिः शक्तितो-  
मरैः । योधाः प्रहरणैः शुभैः श्वेघनीकैश्च वसिष्ठैः ॥ ९ ॥ गजाः पदाता रथि-  
नस्तुरङ्गाश्च विशाम्पते । व्यतिष्ठन् वायुराकाराः शतशोऽथ सहस्रशः ॥ १० ॥ ध्वजा  
बह्विधाकारा व्यदृश्यन्तु समुच्छ्रिताः । श्वेषांश्चैव परेषांश्च द्युतिमन्तुः सहस्रशः ॥ ११ ॥  
काष्ठा मणिचित्राङ्गा ज्वलन्तु इव पावकाः । अर्चिष्मन्तो व्यरोचन्तु ध्वजा राज्ञां सह-  
स्रशः ॥ १२ ॥ महेश्चकेतवः शुभ्रा महेश्चसदनेष्विव । समक्षान्ते प्रवीराश्च ददृशु-  
र्बुद्धकाङ्क्षिणः ॥ १३ ॥ उदयतेरायुर्धैश्चित्तैस्तुलवक्त्राः कलापिनः । ऋषभाङ्गा मनु-  
ष्येन्द्राश्च मूमुखगता वभूवुः ॥ १४ ॥ शकुनिः सौबलः शल्य आवन्तेऽथ जयद्रथः ।  
विन्दान्नुविन्दो कैकेयाः काश्याङ्गश्च सुदक्षिणः ॥ १५ ॥ श्रुतायुधश्च कालिङ्गे  
जयसैनश्च पार्थिवः । बृहद्वलश्च कौशल्यः कृतवर्मा च साहवतः ॥ १६ ॥ दशैते  
पुरुषव्याघ्राः शूराः परिषवाहवः । अक्लेशिनीनां पतयो यद्भानो भूरिदक्षि-  
णाः ॥ १७ ॥ एते चान्ये च बहवो दुर्योधनवशान्नुगाः । राजनो राजपुत्राश्च नीति-

মন্তো মহারথাঃ ॥ ১৮ ॥ সমৃদ্ধাঃ সমদৃশ্যন্তু স্বেষনীকেষবস্থিতাঃ । বক্রকৃষ্ণাজিনাঃ  
 সর্বে ধ্বজিনো মঞ্জুমালিনঃ ॥ ১৯ ॥ হৃষ্টা দুর্যোধনস্যার্থে ব্রহ্মলোকায দীক্ষিতাঃ ।  
 সমৃদ্ধা দশ বাহিন্যঃ পরিগৃহ্য ব্যবস্থিতাঃ ॥ ২০ ॥ একাদশী ধার্ত্তরাষ্ট্রী কৌরবাণাং  
 মহাচমুঃ । অগ্রতঃ সর্বসৈন্যানাং যত্র শাস্তনবোহগ্রনীঃ ॥ ২১ ॥ শ্বেতোষ্ণীষং শ্বে-  
 তহযং শ্বেতবর্মানমচ্যুতম্ । অপশ্যাম মহারাজ ভীষ্মং চন্দ্রমিবোদিতম্ ॥ ২২ ॥  
 হেমতালধ্বজং ভীষ্মং রাজতে স্যন্দনে স্থিতম্ । শ্বেতারু ইব তীক্ষ্ণাংশুং দদৃশুঃ  
 কুরুপাণ্ডবাঃ ॥ ২৩ ॥ দৃষ্ট্বা চমুখে ভীষ্মং সমকম্পন্ত পাণ্ডবাঃ । সৃঞ্জযাশ্চ মহে-  
 ষাসা ধৃষ্টদ্যুম্নপুরোগমাঃ ॥ ২৪ ॥ জৃম্বমাণং মহাসিংহং দৃষ্ট্বা ক্ষুদ্রমৃগা যথা ।  
 ধৃষ্টদ্যুম্নমুখাঃ সর্বে সমুদ্বিবিজিরে মুহুঃ ॥ ২৫ ॥ একাদশৈতাঃ শ্রীযুক্তা বাহিন্য-  
 স্তব পার্থিব । পাণ্ডবানাং তথা সপ্ত মহাপুরুষপালিতাঃ ॥ ২৬ ॥ উন্নতমকরা-  
 বভৌ মহাগ্রাহসমাকুলৌ । যুগান্তে সমুপेतৌ হৌ দৃশ্যেতে সাগরাবিব ॥ ২৭ ॥  
 নৈব নস্তাদৃশৌ রাজন্ দৃষ্টপূর্বৌ ন চ শ্রুতঃ । অনীকানাং সমাবেশঃ কৌরবাণা-  
 স্তথাবিধঃ ॥ ২৮ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভগবদ্গীতাপর্বণি সৈন্যবর্ণনে  
 ষোড়শোহধ্যায়ঃ ॥ ১৬ ॥



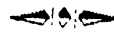
সঞ্জয় উবাচ । যথা স ভগবান্ ব্যাসঃ কৃষ্ণদ্বৈপায়নোহব্রবীৎ । তথৈব সহিতাঃ  
 সর্বে সমাজগ্নুর্মহীক্ষিতঃ ॥ ১ ॥ মঘাবিষয়গঃ সোমস্তদ্দিনং প্রত্যপদ্যত । দীপ্য-  
 মানাশ্চ সংপেতুর্দিবি সপ্ত মহাগ্রহাঃ ॥ ২ ॥ দ্বিধাত্ত্ব ইবাদিত্য উদযে প্রত্যদৃ-  
 শ্যত । জ্বলন্ত্যা শিখয়া ভূষো ভান্নমানুদিতৌ দিবি ॥ ৩ ॥ ববাশিরে চ দীপ্তাযাং  
 দিশি গোমাযুবাযসাঃ । লিপ্সমানাঃ শরীরানি মাংসশোণিতভোজনাঃ ॥ ৪ ॥  
 অহন্যহনি পার্থানাং বৃদ্ধঃ কুরুপিতামহঃ । ভরদ্বাজাশ্চৈব প্রাতরুথায় সং-  
 যতো ॥ ৫ ॥ জযোহস্ত পাণ্ডুপুত্রাণামিত্যুচতুররিন্দমৌ । যুযুধাতে তবার্থায় যথা  
 স সময়ঃ কৃতঃ ॥ ৬ ॥ সর্বধর্ম্মবিশেষজ্ঞঃ পিতা দেবব্রতস্তব । সমানীক্ৰমহীপালা-  
 নিদং বচনমব্রবীৎ ॥ ৭ ॥ ইদং বঃ কল্লিষা দ্বারং স্বর্গাযাপাবৃতং মহৎ । গচ্ছধ্বং  
 তেন শক্রস্য ব্রহ্মণশ্চ সলোকতাম্ ॥ ৮ ॥ এষ বঃ শাস্ত্বতঃ পস্থাঃ পূর্বৈঃ পূর্বতরৈঃ  
 কৃতঃ । সস্তাবযধমাত্মানমব্যগ্রমনসো যুধি ॥ ৯ ॥ নাভাগোহথ যযাতিশ্চ মান্ধাতা  
 নহৃষো নৃগঃ । সংসিদ্ধাঃ পরমং স্থানং গতাঃ কর্ম্মভিরীদৃশৈঃ ॥ ১০ ॥ অধর্ম্মঃ কল্লি-  
 যসৈষ যদ্যাধিমরণং গৃহে । যদাজৌ নিধনং যাতি সোহস্য ধর্ম্মঃ সনাতনঃ ॥ ১১ ॥

এবমুক্তা মহীপালা ভীষ্মেণ ভরতর্ষভ । নির্যযুঃ স্বান্যনীকানি শোভযন্তো রথোক্ত-  
 মৈঃ ॥ ১২ ॥ স তু বৈকর্তনঃ কর্ণঃ সামাত্যঃ সহ বন্ধুভিঃ । ন্যাসিতঃ সমরে শস্ত্রং  
 ভীষ্মেণ ভরতর্ষভ ॥ ১৩ ॥ অপেতকর্ণাঃ পুত্রাস্তে রাজানশ্চৈব তাবকাঃ । নির্যযুঃ  
 সিংহনাদেন নাদযন্তো দিশো দশ ॥ ১৪ ॥ শ্বেতৈশ্ছত্রৈঃ পতাকাভির্ধ্বজবারণবা-  
 জিভিঃ । তান্যনীকান্যশোভন্ত রাজনুথপদাতিভিঃ ॥ ১৫ ॥ ভেরীপঞ্চবশকৈশ্চ  
 দুন্দুভীনাঞ্চ নিস্বনৈঃ । রথনেমিনিনাদৈশ্চ বভূবাকুলিতা মহী ॥ ১৬ ॥ কাঞ্চনাঙ্ক-  
 দকেয়ুরৈঃ কাম্মুকৈশ্চ মহারথাঃ । ভ্রাজমানা ব্যরাজন্ত স্নাগঘঃ পর্বতা ইব ॥ ১৭ ॥  
 তালেন মহতা ভীষ্মঃ পঞ্চতারেণ কেতুনা । বিমলাদিত্যসঙ্কশস্ত্রো কুরুচমু-  
 খে ॥ ১৮ ॥ যে হৃদীয়া মহেষাসা রাজানো ভরতর্ষভ । অবর্তন্ত যথাদেশং রাজন  
 শান্তনবস্য তে ॥ ১৯ ॥ স তু গোবাসনঃ শৈব্যঃ সহিতঃ সর্বরাজভিঃ । যযৌ মাত-  
 ঙ্গরাজেন রাজার্হেণ পতাকিনা ॥ ২০ ॥ পদ্মবর্ণস্ত্বনীকানাং সর্বেষামগ্রতঃ স্থিতঃ ।  
 অশ্বথানা যযৌ যত্রঃ সিংহলাঙ্গুলকেতুনা ॥ ২১ ॥ শ্রুতায়ুধশ্চিত্রসেনঃ পুরুমিত্রো  
 বিবিশতিঃ । শল্যো ভূরিশ্রবীশ্চৈব বিকর্ণশ্চ মহারথঃ ॥ ২২ ॥ এতে সপ্ত মহে-  
 ষাসা দ্রোণপুল্পপুরোগমাঃ । সন্দনৈর্ধরবর্মাণো ভীষ্মস্যাসন্ পুরোগমাঃ ॥ ২৩ ॥  
 তেষামপি মহোৎসেধাঃ শোভযন্তো রথোক্তমান্ । ভ্রাজমানা ব্যরাজন্ত জাম্বুনদ-  
 ময়া ধ্বজাঃ ॥ ২৪ ॥ জাম্বুনদময়ী বেদী কনণ্ডলুবিভূষিতা । কেতুরাচার্য্যমুখ্যস্য  
 দ্রোণস্য ধনুষা সহ ॥ ২৫ ॥ অনেকশতসাহস্রমনীকননুর্কর্ষতঃ । মহান্ দুর্ঘোধান-  
 স্যাসীন্নাগো মণিমযো ধ্বজঃ ॥ ২৬ ॥ তস্য পৌরবকালিঙ্গাঃ কাষোজশ্চ সুদক্ষিণঃ ।  
 ক্ষেমধন্বা চ শল্যশ্চ তস্তুঃ প্রমুখতো রথাঃ ॥ ২৭ ॥ সন্দ্যনেন মহার্হেণ কেতুনা  
 বৃষভেণ চ । প্রকর্ষন্নিব সেনাগ্রং মাগধস্য রূপো যযৌ ॥ ২৮ ॥ তদঙ্গপতিনা গুপ্তং  
 রূপেণ চ মনস্বিনা । শারদাব্রুঘনপ্রখ্যং প্রাচ্যানাং সুমহদ্বলম্ ॥ ২৯ ॥ অনীক-  
 প্রমুখে তিষ্ঠন্ বরাহেণ মহাযশাঃ । শুশুভে কেতুমুখ্যেন রাজতেন জযদ্রথঃ ॥ ৩০ ॥  
 শতং রথসহস্রাণাং তস্যাসন্ বশবর্তিনঃ । অষ্টৌ নাগসহস্রাণি হযানামযুতানি  
 ষট্ ॥ ৩১ ॥ তৎ সিদ্ধুপতিনা রাজ্ঞা পালিতং ধ্বজিনীমুখম্ । অনন্তরথনাগা-  
 শ্বমশোভত মহদ্বলম্ ॥ ৩২ ॥ ষষ্ঠ্যা রথসহস্রৈস্তু নাগানামযুতেন চ । পতিঃ সর্ব-  
 কলিঙ্গানাং যযৌ কেতুমতা সহ ॥ ৩৩ ॥ তস্য পর্বতসঙ্কশা ব্যরোচন্ত মহাগজাঃ ।  
 যজ্ঞতোমরতুণীরৈঃ পতাকাভিঃ শোভিতাঃ ॥ ৩৪ ॥ শুশুভে কেতুমুখ্যেন পাব-  
 কেন কলিঙ্গকঃ । শ্বেতশ্ছত্রেণ নিক্ষেপ চামরব্যজনেন চ ॥ ৩৫ ॥ কেতুমানপি মা-  
 তঙ্গং বিচিত্রপরমাক্ষম্ । আহ্বিতঃ সমরে রাজন্ মেঘস্থ ইব ভানুমান্ ॥ ৩৬ ॥

তেজসা দীপ্যমানস্ত বারণোত্তমমাস্থিতঃ। ভগদত্তো যযৌ রাজা যথা বজ্রধরস্ত-  
থা ॥ ৩৭ ॥ গজস্কন্ধগতাবাস্তাং ভগদত্তেন সন্মিতৌ । বিন্দান্নু বিন্দাবাবস্ত্যৌ কেতু-  
মস্তমন্মুত্রতৌ ॥ ৩৮ ॥ সরথানীকবান্ ব্যূহো হস্ত্যঙ্গো নৃপশীর্ষবান্ । বাজিপক্ষঃ  
পতত্যাগ্রঃ প্রহসন্ সর্বতোমুখঃ ॥ ৩৯ ॥ দ্রোণেন বিহিতো রাজন্ রাজ্ঞা শান্তন-  
বেন চ । তথৈবাচার্য্যপুল্লেণ বাহ্নীকেন রূপেণ চ ॥ ৪০ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভগবদ্গীতাপর্বণি সৈন্যবর্ণনে

সপ্তদশোহধ্যায়ঃ ॥ ১৭ ॥



সঞ্জয় উবাচ । ততো মুহূর্ত্তান্তমূলঃ শব্দো হৃদয়কম্পনঃ । অশ্রুযত মহারাজ যো-  
ধানাং প্রযযুৎসতাম্ ॥ ১ ॥ শঙ্খদুন্দুভিষোষৈশ্চ বারণানাঞ্চ বৃংহিতৈঃ । নেমিষোষৈ  
রথানাঞ্চ দীর্ঘ্যতীব বসুকরা ॥ ২ ॥ হযানাং হেষমাণানাং যোধানাঞ্চৈব গর্জতাম্ ।  
ক্ষণেনৈব নভোভূমী শব্দেনাপূরিতে তদা ॥ ৩ ॥ পুত্রাণাস্তব দুর্দ্ধর্ষ পাণ্ডবানাং  
তথৈব চ । সমকম্পস্ত সৈন্যানি পরস্পরসমাগমে ॥ ৪ ॥ তত্র নাগা রথাশ্চৈব জা-  
ম্বনদবিভূষিতাঃ । ভ্রাজমানা ব্যদৃশ্যস্ত মেঘা ইব সবিদ্যুতঃ ॥ ৫ ॥ ধ্বজা বহুবিধা-  
কারাস্তাবকানাং নরাধিপ । কাঞ্চনাজ্জদিনো রেজুজ্বলিতা ইব পাবকাঃ ॥ ৬ ॥  
স্বেষাঞ্চৈব পরেষাঞ্চ সমদৃশ্যস্ত ভারত । মহেন্দ্রকেতবঃ শুভ্রা মহেন্দ্রসদনেষিব ॥ ৭ ॥  
কাঞ্চনৈঃ কবচৈর্বারী । জ্বলনাকসমপ্রভৈঃ । সন্নদ্ধাঃ সমদৃশ্যস্ত জ্বলনাকসমপ্র-  
ভাঃ ॥ ৮ ॥ কুরুযোধবরা রাজন্ বিচিত্রায়ুধকাস্মুকাঃ । উদ্যতৈরাযুধৈশ্চিত্রৈস্তল-  
বদ্ধাঃ পতাকিনঃ ॥ ৯ ॥ ঋষভাক্ষা মহেষাসাশ্চমুমুখগতা বভূঃ । পৃষ্ঠগোপাস্ত ভী-  
ষ্মস্য পুত্রাস্তব নরাধিপ ॥ ১০ ॥ দুঃশাসনো দুর্ধ্বিষহো দুর্মুখো দুঃসহস্তথা । বিবিং-  
শতিশ্চিত্রসেনো বিকর্ণশ্চ মহারথঃ ॥ ১১ ॥ সত্যব্রতঃ পুরুমিত্রো জযো ভুরিশ্রবাঃ  
শলঃ । রথা বিংশতিসাহস্রাস্তথৈষামনুযায়িনঃ ॥ ১২ ॥ অভীষাহাঃ শূরসেনাঃ শিব-  
যোংথ বসাতযঃ । শাল্বা মৎস্যাস্তথাস্রষ্ঠাস্ত্রেগর্ভাঃ কৈকযাস্তথা । সৌবীক্সাঃ কিতবাঃ  
প্রাচ্যাঃ প্রতীচ্যোদীচ্যবাসিনঃ ॥ ১৩ ॥ দ্বাদশৈতে জনপদাঃ সর্বে শূরাস্তনুত্যজাঃ ।  
মহতা রথবংশেন তে ররক্ষুঃ পিতামহম্ ॥ ১৪ ॥ অনীকং দশসাহস্রং কুঞ্জরাণাং  
তরস্বিনাম্ । মাগধো যেন নৃপতিস্তদ্রথানীকমন্বযাৎ ॥ ১৫ ॥ রথানাং চক্ররক্ষাশ্চ  
পাদরক্ষাশ্চ দন্তিনাম্ । অভবন্ বাহিনীমধ্যে শতানামযুতানি ঘট ॥ ১৬ ॥ পাদা-  
তাশ্চাগ্রতোংগচ্ছন্ ধনুশ্চর্ম্মাসিপাণযঃ । অনেকশতসাহস্রা নথরপ্রাসবোধিনঃ ॥ ১৭ ॥

अक्लोहिण्यो दशैका च तव पुलस्य भारत । अदृश्यस्तु महाराज गङ्गेव यमुना-  
न्तरा ॥ १८ ॥

इति भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि सैन्यवर्गने  
अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

—०—

धृतराष्ट्र उवाच । अक्लोहिणीर्दशैकाश्च व्युत्पाद्युः दृष्ट्वा युधिष्ठिरः । कथमन्नेन सै-  
न्येन प्रत्यव्यूह्यत पाण्डवः ॥ १ ॥ यो वेद मानुष्यं व्यूहं दैव्यं गान्धर्वमाश्रयम् ।  
कथं भीष्मं स कौन्तेयः प्रत्यव्यूह्यत सङ्गय ॥ २ ॥ सङ्गय उवाच । धार्तराष्ट्राण्यनी-  
कानि दृष्ट्वा व्युत्पानि पाण्डवः । अभ्यभाषत धर्मात्मा धर्मराजो धनञ्जयम् ॥ ३ ॥  
महर्षेर्वचनान्नात वेदयन्ति बृहस्पतेः । संहतान् योधयेदन्नान् कामं विस्तारये-  
द्वहन् ॥ ४ ॥ सूचीमुखमनीकं स्यादन्नानां बहूभिः सह । अस्माकं तथा सैन्यम-  
स्त्रीषः सूत्रां पटैः ॥ ५ ॥ एतद्वचनमाज्जाय महर्षेर्व्यूहं पाण्डव । तच्छ्रुत्वा धर्मराजस्य  
प्रत्यभाषत पाण्डवः ॥ ६ ॥ एष व्यूहामि ते व्यूहं राजसत्तम दुर्जयम् । अचलं  
नाम बज्राख्यं विहितं बज्रुपाणिना ॥ ७ ॥ यः स वात इवोद्धृतः समरे दुःसहः  
पटैः । स नः पुरो योत्स्यते च भीमः प्रहरतां वरः ॥ ८ ॥ तेजांसि रिपुसै-  
न्यानां मृदन् पुरुषसत्तमः । सोऽग्रेऽग्नीर्यास्यति नो युद्धोपायविचक्षणः ॥ ९ ॥  
यं दृष्ट्वा पार्थिवाः सर्वे दुर्योधनपुरोगमाः । निवर्तिष्यन्ति संक्रुस्ताः सिंहं क्रुद्र-  
मृगा यथा ॥ १० ॥ तं सर्वे संश्रियिष्यामः प्राकारमकुतोभयाः । भीमं प्रहरतां  
श्रेष्ठं देवराजमिवामराः ॥ ११ ॥ न हि सोऽस्ति पुनाल्लोके यः संक्रुद्धं वृको-  
दरम् । द्रष्टुमित्युग्रकर्माणं विषहेत नरवर्षभम् ॥ १२ ॥ एवमुक्त्वा महाबाहूस्तथा चक्रे  
धनञ्जयः । व्यूहं तानि बलान्याशु प्रययौ काल्पनस्तदा ॥ १३ ॥ सम्पुष्यतान् कुरून्  
दृष्ट्वा पाण्डवानां महाचमूः । गङ्गेव पूर्णा स्तिमिता स्यन्दमाना व्यदृश्यत ॥ १४ ॥ भीम-  
सेनोऽग्नीस्तैषां धृष्टदुय्यंश्च वीर्यवान् । नकुलः सहदेवश्च धृष्टकेतुश्च पार्थि-  
वः ॥ १५ ॥ विराटश्च ततः पश्चाद्वाजाथाक्लोहिनीवृतः । भ्रातृभिः सह पूत्रैश्च  
सोऽभ्यरक्त पृष्ठतः ॥ १६ ॥ चक्ररक्षो तु भीमस्य माद्रीपुत्रो महद्युती । द्रो-  
पदेयाः समौतद्राः पृष्ठगोपास्तुरश्विनः ॥ १७ ॥ धृष्टदुय्यंश्च पाण्डाल्यस्तैषां  
गोप्रा महारथः । सहितः पृतनाशूरै रथमुत्थैः प्रभद्रकैः ॥ १८ ॥ शिखण्डी तु  
ततः पश्चादङ्गुनेनाभिरक्षितः । यत्रो भीष्मविनाशाय प्रययौ भरतवर्ष । पृष्ठतोऽ-  
प्यङ्गुनस्यासीद्व्युधानो महाबलः ॥ १९ ॥ चक्ररक्षो तु पाण्डाल्यो युधामन्युत्तमो-

জসৌ । কৈকেয়া ধৃষ্টকেশুশ্চ চেকিতানশ্চ বীর্যবান্ ॥ ২০ ॥ ভীমসেনো গদাং  
 বিভ্রুদ্বজ্জসারমযীং দৃঢ়াম্ । চরন্ বেগেন মহতা সমুদ্রমপি শোষণেৎ ॥ ২১ ॥ এতে  
 তিষ্ঠন্তি সামাত্যাঃ প্রেক্ষন্তস্তে জনাধিপ । ধৃতরাষ্ট্রস্য দাযাদা ইতি বীভৎসুরত্র-  
 বীৎ । ভীমসেনং তদা রাজন্ দর্শয়ন্ সম্ভাবলম্ ॥ ২২ ॥ ক্রবাণস্ত তথা পার্থং  
 সর্বসৈন্যানি ভারত । অপূজয়ৎস্তদা বাণ্ডিরমুকুলাতিরাহবে ॥ ২৩ ॥ রাজা তু  
 মধ্যমানীকে কুন্তীপুত্রো যুধিষ্ঠিরঃ । বৃহত্তিঃ কুঞ্জরৈর্মত্ৰৈশ্চলন্তিরচলৈরিব ॥ ২৪ ॥  
 অক্ষৌহিণ্যা তু পাঞ্চাল্যো যজ্ঞসেনো মহামনাঃ । বিরাটমন্বযাৎ পশ্চাৎ পাণ্ড-  
 বার্থে পরাক্রমী ॥ ২৫ ॥ তেষামাদিত্যচন্দ্রাভাঃ কনকোত্তমভূষণাঃ । নানাচিহ্নধরা  
 রাজন্ রথেষাসন্ মহাধ্বজাঃ ॥ ২৬ ॥ সমুৎসার্য্য ততঃ পশ্চাৎ ধৃষ্টদ্যুম্নো মহারথঃ ।  
 ভ্রাতৃভিঃ সহ পুত্রৈশ্চ সোহভ্যরক্ষদ্বুধিষ্ঠিরম্ ॥ ২৭ ॥ ত্বদীয়ানাং পরেষাঞ্চ রথেষু  
 বিপুলান্ ধজান্ । অভিভূযাজ্জ্বনসৈ্যেকো ধ্বজে তস্মৌ মহাকপিঃ ॥ ২৮ ॥ পাদা-  
 তাস্ত্বগ্রতোঃ গচ্ছন্নশিক্ত্যুষ্টিপাণযঃ । অনেকশতসাহস্রা ভীমসেনস্য রক্ষিণাঃ ॥ ২৯ ॥  
 বারণা দশসাহস্রাঃ প্রতিম্বরটামুখাঃ । শূরা হেমমযৈর্জালৈর্দীপ্যমানা ইবাচ-  
 লাঃ ॥ ৩০ ॥ ক্ষরন্ত ইব জীমূতা মহার্হাঃ পদ্মগন্ধিনঃ । রাজানমন্বযুঃ পশ্চাৎ জীমূতা  
 ইব বার্ষিকাঃ ॥ ৩১ ॥ ভীমসেনো গদাং ভীমাং প্রকর্ষন্ পরিষোপমাম্ । প্রচকর্ষ  
 মহাসৈন্যং দুরাধর্ষো মহামনাঃ ॥ ৩২ ॥ তমর্কমিব দুশ্প্রেক্ষ্যং তপস্তমিব পাবকম্ ।  
 ন শেকুঃ সর্বযোধাস্তে প্রতিবীক্ষিতুমন্তিকে ॥ ৩৩ ॥ বজ্রো নাতৈষ স ব্যাহো নির্ভযঃ  
 সর্বতোমুখঃ । চাপবিদ্যুদ্বজ্রো ঘোরো গুপ্তো গাণ্ডীবধ্বনা ॥ ৩৪ ॥ যৎ প্রতিবৃহ  
 তিষ্ঠন্তি পাণ্ডবাস্তব বাহিনীম্ । অজেযো মানুষে লোকে পাণ্ডবৈরভিরক্ষিতঃ ॥ ৩৫ ॥  
 সক্ষ্যাৎ তিষ্ঠৎসু সৈন্যেষু সূর্য্যস্যোদয়নং প্রতি । প্রাবাৎ সপৃষতো বায়ুর্নিরন্ত্রে  
 স্তনযিত্তুমান্ ॥ ৩৬ ॥ বিশ্বগ্বাতাশ্চ বিববুর্নীচৈঃ শর্করকর্ষিণঃ । রজশ্চোদ্ধুষত মহৎ  
 তম আচ্ছাদযজ্জগৎ ॥ ৩৭ ॥ পপাত মহতী চোন্ধা প্রাণ্ডুমুখী ভরতর্ষভ । উদ্যন্তং  
 সূর্য্যমাহত্য ব্যশীর্ষ্যত মহাস্বনা ॥ ৩৮ ॥ অথ সজ্জীযমানেষু সৈন্যেষু ভরতর্ষভ ।  
 নিস্প্রভোহভ্যুদ্যক্ষ্যে সূর্য্যঃ সঘোষণং ভূশ্চচাল চ ॥ ৪০ ॥ ব্যশীর্ষ্যত সনাদা চ ভূস্তদা  
 ভরতর্ষভ । নির্ঘাতা বহবো রাজন্ দিক্ষু সর্বাশ্চ চাতবন্ । প্রাদুরাসীদ্রজস্তীত্রং ন  
 প্রাজ্জ্বায়ত কিঞ্চন ॥ ৪১ ॥ ধ্বজানাং ধূষমানানাং সহসা মাতরিশ্বনা । কিঞ্চিনী-  
 জালবন্ধানাং কাঞ্চনসুগুরায়রৈঃ ॥ ৪২ ॥ মহতাং সপতাকানাং মাদিত্যসমতেজ-  
 সাম্ । সর্বং ঝনঝনীভূতমাসীত্তালবনেধিব ॥ ৪৩ ॥ এবস্তে পুরুষব্যাগ্রাঃ পাণ্ডবা  
 যুদ্ধনন্দিনঃ । ব্যবস্থিতাঃ প্রতিবৃহ তব পুত্রস্য বাহিনীম্ ॥ ৪৪ ॥ এসন্ত ইব মজ্জা

नो षोडशानां भरतर्षभ । दृष्ट्वाग्रतो भीमसेनं गदापाणिमवस्थितम् ॥ ४५ ॥

इति भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि पाण्डवसैन्यव्यूहवर्णने  
एकौनविंशतितमोऽध्यायः ॥ १२ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । सूर्योदये सङ्गम के नु पूर्वं युयुत्सवो ह्ययमाणा इवासन् ।  
नामका वा भीष्मनेत्राः समीपे पाण्डवा वा भीष्मनेत्रास्तदानीम् ॥ १ ॥ केषां जय-  
न्यो सोमसूर्यो सवायु केषां सेनां श्वापदाश्चातवन्त । केषां यूनां मुखवर्णाः  
प्रसन्नाः सर्वमेतद्ब्रुहि मे त्वं यथावत् ॥ २ ॥ सङ्गम उवाच । उभे सेने तुल्यमि-  
वोपयाते उभे व्युत्से ह्यर्ककेपे नरेन्द्र । उभे चित्रे वनराजिप्रकाशे तथै-  
वोभे नागरथाश्वपूर्णे ॥ ३ ॥ उभे सेने भीमकेपे बृहत्यो तथैवोभे भारत  
दुर्विषहे । तथैवोभे स्वर्गजयाव सृष्टे तथैवोभे शतपुरुषोपजुष्टे ॥ ४ ॥  
पश्चान्मुखाः कुरवो धार्तराष्ट्राः पश्चां पार्थाः प्राङ्मुखा योत्स्यमानाः । दैतेत्य-  
न्द्रसेनेव च कौरवाणां देवेन्द्रसेनेव च पाण्डवानाम् ॥ ५ ॥ चक्रे वायुः पृष्ठतः  
पाण्डवानां धार्तराष्ट्रान् श्वापदा व्याहरन्त । गजेन्द्राणां मदगङ्गांश्च तीव्रान् से-  
हिरे तव पुत्रस्य नागाः ॥ ६ ॥ दूर्योधनो हस्तिनं पद्मवर्णं सुवर्णकङ्कं जाल-  
वन्तं प्रतिमन् । समास्थितो मध्यगतः कुरूणां संस्तूयमानो बन्दिभिर्मागधैश्च ॥ ७ ॥  
चन्द्रप्रभं श्वेतमप्यातपत्रं सौवर्णसुगुह्रजते चोत्तमाङ्गे । तं सर्वतः शकुनिः  
पार्वतीयैः सार्द्धं गान्धारैरर्षाति गान्धारराजः ॥ ८ ॥ भीष्मोऽग्रतः सर्वसैन्यस्य  
वृद्धः श्वेतच्छत्रः श्वेतधनुः सखजः । श्वेतोष्णीषः पाण्डुरेण ध्वजेन श्वेतैरश्वैः  
श्वेतशैलप्रकाशः ॥ ९ ॥ तस्य सैन्ये धार्तराष्ट्रांश्च सर्वे बाह्लीकानामेकदेशः  
शलश्च । ये चाश्विष्ठाः क्षत्रिया ये च सिन्धोस्तथा सौवीराः पङ्कनदाश्च शूराः ॥ १० ॥  
शोणैर्ह्यैरुक्त्वरथो महात्मा द्रोणो धनुष्पाणिरीदीनसद्भः । आस्तु गुरुः प्रायशः  
सर्वराज्जां पश्चात्समुमिन्द्र इवाभिपाति ॥ ११ ॥ वार्द्धकलिः सर्वसैन्यस्य मध्ये  
भूरिशवाः पुरुमित्रो जयश्च । शाल्वा मत्स्याः केकयाश्चेति सर्वे गजानीकैर्भ्रा-  
तरौ योत्स्यमानाः ॥ १२ ॥ शारद्वतश्चात्तरधुर्महात्मा महेश्वसो गौतमश्चित्र-  
योधी । शकैः किरातेर्जवनेः पल्लवैश्च सार्द्धं चमून्नुत्तरतोऽभिधाति ॥ १३ ॥  
महारथैर्बृषिभोजैः सुगुप्तं सुराष्ट्रकैर्बिदितेरात्तशस्त्रैः । बृहद्वलं क्रुतवर्माभि-  
गुप्तं बलं त्वदीयं दक्षिणेनाभिधाति ॥ १४ ॥ संशुप्तकानामयुतं रथानां मृत्यु-  
र्जयो वाङ्मूनस्येति सृष्टाः । येनाङ्गूनस्येन राजन् क्रुतास्त्राः प्रयातारस्ये त्रिग-

ত্ৰীশচ শূরাঃ ॥ ১৫ ॥ সাগ্রং শতসহস্ৰস্ত নাগানাং তব ভারত । নাগে নাগে রথ-  
শতং শতমশ্বা রথে রথে ॥ ১৬ ॥ অশ্বেহশ্বে দশ ধানুক্ষা ধানুক্ষে দশ চর্ম্মিণঃ ।  
এবং ব্যূতান্যনীকানি ভীষ্মেণ তব ভারত ॥ ১৭ ॥ সংবৃহ্ন মানুষং বৃহ্নং দৈবং গান্ধ-  
র্বমাসুরম্ । দিবসে দিবসে প্রাপ্তে ভীষ্মঃ শান্তনবোহগ্রণীঃ ॥ ১৮ ॥ মহারথো য-  
বিপুলঃ সমুদ্র ইব ঘোষবান্ । ভীষ্মেণ ধার্ত্তরাষ্ট্রানাং বৃহ্নঃ প্রত্যঙমুখো যুধি ॥ ১৯ ॥  
অনন্তরূপা ধ্বজিনী নরেন্দ্র ভীমা হৃদীযা ন তু পাণ্ডবানাম্ । তাঐশ্বেব মন্যে বৃহতীং  
দৃশ্পধর্ষাং যস্য নেতা কেশবশ্চাজ্জুনশ্চ ॥ ২০ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভগবদ্গীতাপর্বণি সৈন্যবর্গনে

বিংশতিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ২০ ॥



সঞ্জয় উবাচ । বৃহতীং ধার্ত্তরাষ্ট্রস্য সেনাং দৃষ্ট্বা সমুদ্যতান্ । বিষাদমগমদ্রাজা  
কুন্তীপুলো যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ২ ॥ বৃহ্নং ভীষ্মেণ চাভেদ্যং কল্লিতং প্রেক্ষ্য পাণ্ডবঃ ।  
অভেদ্যমিব সম্প্রেক্ষ্য বিবর্ণোহজ্জুনমব্রবীৎ ॥ ২ ॥ ধনঞ্জয় কথং শক্যমস্মাভি-  
র্যোদ্ধুমাহবে । ধার্ত্তরাষ্ট্রৈশ্চহাবাহো যেষাং যোদ্ধা পিতামহঃ ॥ ৩ ॥ অক্লে-  
ভ্যোহযমভেদ্যশ্চ ভীষ্মেণামিত্রকর্ষিণা । কল্লিতঃ শাস্ত্রদৃষ্টেন বিধিনা ভূরিবর্চ-  
সা ॥ ৪ ॥ তে বয়ং সংশয়ং প্রাপ্তাঃ সসৈন্যাঃ শত্রুকর্ষণ । কথমস্মান্মহাবৃহ্নাদু-  
দ্বানং নো ভবিষ্যতি ॥ ৫ ॥ অথা জ্জুনোহব্রবীৎ পার্থং যুধিষ্ঠিরমিত্রহা । বিষম-  
মভিসংপ্রেক্ষ্য তব রাজমনীকিনীম্ ॥ ৬ ॥ প্রজ্জ্বাভ্যধিকান্ শরান্ গুণযুক্তান্ বহ-  
নপি । জযন্ত্যন্নতরা যেন তন্নিবোধ বিশাল্পাতে ॥ ৭ ॥ তত্র তে কারণং রাজন্  
প্রবক্ষ্যাম্যনসূষবে । নারদস্তমৃষির্বেদ ভীষ্মদ্রোণৌ তু পাণ্ডব ॥ ৮ ॥ এতমেবার্থ-  
মাশ্রিত্য যুদ্ধে দেবাসুরেহব্রবীৎ । পিতামহঃ কিল পুরা মহেন্দ্রাদীন্ দিবৌক-  
সঃ ॥ ৯ ॥ ন তথা বলবীৰ্য্যাভ্যাং জযন্তি বিজিগীষবঃ । যথা সত্যান্শংসাত্যাং  
ধর্ম্মেণৈবোদ্যমেন চ ॥ ১০ ॥ জ্জ্বাত্বা ধর্ম্মমধর্ম্মঞ্চ লোভং চোদ্যমমাস্তিতাঃ । যুধ্যধ্ব-  
মনহঙ্কারা যতো ধর্ম্মস্ততো জযঃ ॥ ১১ ॥ এবং রাজন্ বিজানীহি ধুরোহস্মাকং  
রণে জযঃ । যথা তু নারদঃ প্রাহ যতঃ কৃষ্ণস্ততো জযঃ ॥ ১২ ॥ গুণভূতো জযঃ  
কৃষ্ণে পৃষ্ঠতোহশ্বেতি মাধবম্ । তদ্যথা বিজয়শ্চাস্য সন্নতিশ্চাপরো গুণঃ ॥ ১৩ ॥  
অনন্ততেজা গোবিন্দঃ শত্রুপুণ্ড্রেষু নিবৃত্যঃ । পুরুষঃ সনাতনতমো যতঃ কৃষ্ণস্ততো  
জযঃ ॥ ১৪ ॥ পুরা হেঘ হরিভূত্বা বৈকুণ্ঠোহকুণ্ঠসায়কঃ । সুরাসুরানবস্কৃজ্জমব্র-  
বীৎ কে জযন্তিতি ॥ ১৫ ॥ কথং কৃষ্ণ জযেমেতি যৈরুক্তং তত্র তৈর্জিতম্ । তৎপ্র-



सादाक्षि त्रैलोक्यं प्राप्सुं शक्रादिभिः सूरैः ॥ १७ ॥ तस्य ते न व्यथां काङ्क्षि-  
दिह पश्यामि भारत । यस्य ते जयमाशास्ते विश्वभुक् त्रिदिवेश्वरः ॥ १९ ॥

इति भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि युधिष्ठिरार्जुनसंवादे

एकविंशतितमोऽध्यायः ॥ २१ ॥



सङ्गय उवाच । ततो युधिष्ठिरो राजा स्वां सेनां समचोदयत् । प्रतिव्यूह्यनी-  
कानि भीष्मस्य भरतर्षभ ॥ १ ॥ यथोद्विष्टान्यनीकानि प्रत्यव्यूह्य पाण्डवाः । स्वर्गं  
परममिच्छन्तः सुयुद्धं कुरुतानयाः ॥ २ ॥ मध्ये शिखण्डिनोऽनीकं रक्षितं सव्य-  
साचिना । धृष्टद्युम्नश्चरमग्रे भीमसेनेन पालितः ॥ ३ ॥ अनीकं दक्षिणं राजन्  
युयुधानेन पालितम् । श्रीमता साह्यताग्रेण शक्रेणैव धनुष्मता ॥ ४ ॥ महेश्वरान-  
प्रतिमं रथस्य सोपस्करं हाटकुरन्नचित्रम् । युधिष्ठिरः काङ्क्षन् भ्रातृघोष्ठं समा-  
स्थितो नागकुलस्य मध्ये ॥ ५ ॥ समुच्छ्रितं दन्तशलाकमस्य सुपाण्डुरं हृत्प्रमतीव  
भाति । प्रदक्षिणैवमुपाचरन्ति महर्षयः संस्तुतिभिर्नरेन्द्रम् ॥ ६ ॥ पुरोहिताः  
शत्रून् वधं वदन्ति व्रक्षिर्षिसिद्धाः श्रुतवस्तु एनम् । जटैप्यश्च मत्स्यैश्च तथोषधीभिः सम-  
न्ततः स्वस्त्ययनं क्रवन्तः ॥ ७ ॥ ततः स वस्त्राणि तथैव गाश्च फलानि पुष्पाणि तथैव  
निष्कान् । कुरुन्नो ब्राह्मणसाम्प्रहाया कूर्बन् यथो शक्र इवामरेशः ॥ ८ ॥ सहस्र-  
सूर्यः शतकिङ्किणीकः परार्क्ष्यजाम्बूनदहेमचित्रः । रथोऽर्जुनस्यग्निरिवाग्निर्वाग्निर्वाग्नि-  
विभ्राजते श्वेतहयः सूचक्रः ॥ ९ ॥ तमास्थितः केशवसंगृहीतं कपिध्वजो गाण्डि-  
वबाणपाणिः । धनुर्धरो यस्य समः पृथिव्यां न विद्यते नो भविता कदाचित् ॥ १० ॥  
उद्वर्तयिष्यन्तुव पुत्रसेनामतीव रौद्रं स विभर्ति कपम् । अनायुधो यः सुभुजो  
भुजाभ्यां नराश्वनागान् युधि भस्म कुर्यात् ॥ ११ ॥ स भीमसेनः सहितो यमाभ्यां  
वृकोदरो वीररथस्य गोप्ता । तं तत्र सिंहर्षभमन्तुखेलं लोके महेश्वरप्रति-  
मानकल्पम् ॥ १२ ॥ सनीक्ष्य सेनाग्रगतं दुरासदं प्रविव्यथुः पङ्कगता यथा द्विपाः ।  
वृकोदरं वारणराजदर्पं योधास्तुदीया भयविग्नसन्त्राः ॥ १३ ॥ अनीकमध्ये ति-  
ष्ठन्तं राजपुत्रं दुरासदम् । अब्रवीत् भरतश्रेष्ठं गुडाकेशं जनार्दनः ॥ १४ ॥ वासु-  
देव उवाच । य एष गोप्ता प्रतपन् बलश्लो यो नः सेनां सिंह इवारुरक्ष । स  
एष भीष्मः कुरुवंशकेतुर्येनाहतास्त्रिशतं वाजिमेधाः ॥ १५ ॥ एतान्यनीकानि  
महान्नुभावं गूहन्ति मेघा इव रश्मिवस्तुम् । एतानि हृत्वा पुरुषप्रवीर काङ्क्षन् युद्धं  
भरतर्षभेण ॥ १६ ॥ सङ्गय उवाच । धार्तराष्ट्रबलं दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् । अर्जु-

নস্য হিতার্থায় ক্রোধে বচনমত্রবীৎ ॥ ১৭ ॥ শ্রীভগবানুবাচ। শুচিভূত্বা মহাবাহো  
 সংগ্রামাভিমুখে স্থিতঃ। পরাজযায় শত্রুনাং দুর্গাস্তোত্রমুদীরষ ॥ ১৮ ॥ সঞ্জয়  
 উবাচ। এবমুক্তোহর্জুনঃ সংখ্যে বাসুদেবেন ধীমতা। অবতীর্য রথাৎ পার্থঃ  
 স্তোত্রমাহ-কৃতাজ্জলিঃ ॥ ১৯ ॥ অর্জুন উবাচ। নমস্তে সিদ্ধসেনানি আর্যে মন্দ-  
 রবাসিনি। কুমারি কালি কাপালি কপিলে ক্রুৎপিঙ্গলে ॥ ২০ ॥ ভদ্রকালি নম-  
 স্তভ্যং মহাকালি নমোহস্ত তে। চণ্ডি চণ্ডে নমস্তভ্যং তারিণি বরবর্গিনি ॥ ২১ ॥  
 কাত্যায়নি মহাভাগে করালি বিজয়ে জয়ে। শিখিপিচ্ছধ্বজধরে নানাতরণভূষি-  
 তে ॥ ২২ ॥ অটশূলপ্রহরণে খঙ্কখেটকধারিণি। গোপেন্দ্রস্যাত্মজে জ্যেষ্ঠে নন্দ-  
 গোপকুলোদ্ভবে ॥ ২৩ ॥ মহিষাসৃকপ্রিয়ে নিত্যং কৌশিকি পীতবাসিনি। অট-  
 হাসে কোকমুখি নমস্তেহস্ত রণপ্রিয়ে ॥ ২৪ ॥ উমে শাকস্তরি শ্বেতে ক্রোধে কৈট-  
 তনাশিনি। হিরণ্যাক্ষি বিকপাক্ষি সুধুমাক্ষি নমোহস্ততে ॥ ২৫ ॥ বেদশ্রুতিমহা-  
 পুণ্যে ব্রহ্মণ্যে জাতবেদসি। জয়কটকচেত্যেযু নিত্যং স্নিহিতালয়ে ॥ ২৬ ॥ স্বং  
 ব্রহ্মবিদ্যা বিদ্যানাং মহানিদ্রা চ দেহিনাম্। স্কন্দমাতর্ভগবতি দুর্গে কান্তারবা-  
 সিনি ॥ ২৭ ॥ স্বাহাকারঃ স্বধা চৈব কলা কাষ্ঠা সরস্বতী। সাবিত্রী বেদমাতা চ  
 তথা বেদান্ত উচ্যসে ॥ ২৮ ॥ স্ততাসি ত্বং মহাদেবি বিশুদ্ধেনান্তরাত্মনা। জঘো  
 ভবতু মে নিত্যং ত্বৎপ্রসাদ্রণাজিরে ॥ ২৯ ॥ কান্তারভয়দুর্গেষু ভক্তানাগালবেষু  
 চ। নিত্যং বসসি পাতালে যুদ্ধে জয়সি দানবান্ ॥ ৩০ ॥ ত্বং জৃম্বণী মোহিনী  
 চ মায়া হ্রীঃ শ্রীমুখৈব চ। সক্ষ্যা প্রভাবতী চৈব সাবিত্রী জননী তথা ॥ ৩১ ॥ তুষ্টিঃ  
 পুষ্টিধৃতির্দীপ্তিশ্চন্দ্রাদিত্যবিবর্দ্ধিনী। ভূতিভূতিমতাং সাংখ্যে বীক্ষ্যসে সিদ্ধচা-  
 রণৈঃ ॥ ৩২ ॥ সঞ্জয় উবাচ। ততঃ পার্থস্য বিজ্ঞায় ভক্তিং মানববৎসলা। অন্ত-  
 রীক্ষগতোবাচ গোবিন্দস্যাগ্রতঃ স্থিতা ॥ ৩৩ ॥ দেবুবাচ। স্বল্পেনৈব তু কালেন  
 শত্রূন্ জেষ্যসি পাণ্ডব। নরস্তুমসি দুর্দ্ধর্ষ নারায়ণসহায়বান্ ॥ ৩৪ ॥ অজেযস্ত্বং  
 রণেহরীণামপি বজ্রভৃতা স্বয়ম্। ইত্যেবমুক্ত্বা বরদা ক্ষণেনান্তরধীযত ॥ ৩৫ ॥ লঙ্কা  
 বরস্ত কৌন্তেযো মেনে বিজয়মাত্মনঃ। আরুরোহ ততঃ পার্থো রথং পরমসম্ম-  
 তম্ ॥ ৩৬ ॥ ক্রুৎজুনাবেকরথে দিব্যো শশ্বো প্রদধাতুঃ ॥ ৩৭ ॥ য ইদং পঠতে  
 স্তোত্রং কল্যমুখায় মানবঃ। যক্ষরক্ষঃপিশাচেভ্যো ন ভয়ং বিদ্যতে সদা ॥ ৩৮ ॥  
 ন চাপি রিপবস্তেভ্যঃ সর্পাদ্যা য়ে চ দংষ্টিণঃ। ন ভয়ং বিদ্যতে তস্য সদা রাজকু-  
 লাদপি ॥ ৩৯ ॥ বিবাদে জয়মাপ্নোতি বন্ধো মুচ্যেত বন্ধনাৎ। দুর্গং তরতি চাব-  
 শ্যং তথা চৌরৈর্বিমুচ্যতে ॥ ৪০ ॥ সংগ্রামে বিজয়েন্নিত্যং লক্ষ্মীং প্রাপ্নোতি

केवलाम् । आरोग्यबलसम्पन्नो जीवेद्वर्षशतं तथा ॥ ४१ ॥ एतद्धृत्प्रसादात्तु  
मया व्यासस्य धीमतः । मोहादेतो न जानन्ति नरनारायणवृषी ॥ ४२ ॥ तव पुत्रा  
दुराज्ञानः सर्वे मनु्यवशात्तुगाः । प्राप्सुकालमिदं राज्यं कालपाशेन शुभिताः ॥ ४३ ॥  
द्वैपायनो नारदश्च कणो रामस्तथा नभः । अवारयंस्तवसूतं न चासौ तद्वृही-  
तवान् ॥ ४४ ॥ यत्र धर्मो द्युतिः कास्तिर्यत्र ह्रीः श्रुस्तथा मतिः । यतो धर्मस्ततः  
रूक्षेण यतः रूक्षस्ततो जयः ॥ ४५ ॥

इति भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि दुर्गास्तोत्रे द्वाविं-  
शतितमोऽध्यायः ॥ २२ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । केषां प्रहृष्टास्तत्राग्रे योधा युध्यन्ति सङ्घय । उदग्रमनसः के  
वा के वा दीना विचेतसः ॥ १ ॥ के पूर्वं प्राहरंस्तत्र युद्धे हृदयकम्पने । मामका  
पाण्डवेया वा तन्ममाचक्षु सङ्घय ॥ २ ॥ कस्य सेनासमुदये गन्धमाल्यसमुद्भवः । वाचः  
प्रदक्षिणांश्चैव योधानामभिगर्जताम् ॥ ३ ॥ सङ्घय उवाच । उभयोः सेना-  
योस्तत्र योधा जहृषिरे तदा । सुजः समाः सुगन्धानामुभयत्र समुद्भवः ॥ ४ ॥ स-  
मन्धानामनीकानां व्यूचानां भरतर्षभ । संसर्गां समुदीर्णानां विमर्दः सुमहा-  
नभूत् ॥ ५ ॥ वादित्रशकस्तमुलः शङ्खभेरीविमिश्रितः । शूराणां रणशूराणां गज्ज-  
तामितरेतरम् ॥ ६ ॥ उभयोः सेनयो राजन् महान् व्यतिकरोऽभवत् । अनेया-  
न्यं वीर्यमानां योधानां भरतर्षभ । कुण्डराणां नदतां सैन्यानां प्रह-  
स्यताम् ॥ ७ ॥

इति भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि धृतराष्ट्रसङ्घयसंवादे  
त्रयोविंशतितमोऽध्यायः ॥ २३ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः । मामकाः पाण्डवा-  
श्चैव किमकुर्वत सङ्घय ॥ १ ॥ सङ्घय उवाच । दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूचं दुर्योधन-  
स्तदा । आचार्यमुपसंगम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥ २ ॥ पश्यातां पाण्डुपुत्राणामा-  
चार्य महतीं चमूम् । व्यूचां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥ ३ ॥ अत्र शूरा  
महेष्वासा भीमाङ्गुनसर्मा युधि । युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥ ४ ॥  
धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान् । पुरुजिं कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च  
नरपुङ्गवः ॥ ५ ॥ युधामन्युश्च विक्रान्त उद्वमोजाश्च वीर्यवान् । सौभद्रो द्रौप-

দেযাশ্চ সর্ব এব মহারথাঃ ॥ ৬ ॥ অস্মাকম্ব বিশিষ্টা যে তাম্নিবোধ দ্বিজোত্তম ।  
 নাযকা মম সৈন্যস্য সংজ্ঞার্থং তান্ ব্রবীমি তে ॥ ৭ ॥ ভবান্ ভীষ্মশ্চ কর্ণশ্চ  
 রূপশ্চ সমিতিঞ্জযঃ । অশ্বখামা বিকর্ণশ্চ সৌমদত্তির্জর্ষদ্রথঃ ॥ ৮ ॥ অন্যে চ বহবঃ  
 শূরা মদর্থে ত্যক্তজীবিতাঃ । নানাশস্ত্রপ্রহরণাঃ সর্বে যুদ্ধবিশারদাঃ ॥ ৯ ॥  
 অপৰ্যাপ্তং তদস্মাকং বলং ভীষ্মাভিরক্ষিতম্ । পর্যাপ্তস্ত্ৰিদমেতেষাং বলং ভী-  
 মাভিরক্ষিতম্ ॥ ১০ ॥ অয়নেষু চ সর্বেষু যথাভাগমবস্থিতাঃ । ভীষ্মমেবাভিরক্ষন্ত  
 ভবন্তঃ সর্ব এব হি ॥ ১১ ॥ তস্য সংজ্ঞনয়ন হর্ষং কুরুবৃদ্ধঃ পিতামহঃ । সিংহনাদং  
 বিনদ্যোর্দৈঃ শঙ্খং দধৌ প্রতাপবান্ ॥ ১২ ॥ ততঃ শঙ্খাশ্চ তৈর্যশ্চ পণবানক-  
 গোমুখাঃ । সহসৈবাত্যহন্যস্ত স শব্দস্তমুলোহ্ভবৎ ॥ ১৩ ॥ ততঃ শ্বেতৈর্হৈষৈর্যুক্তে  
 মহতি স্যন্দনে স্থিতৌ । মাধবঃ পাণ্ডবশ্চৈব দিব্যৌ শঙ্খৌ প্রদধ্বতুঃ ॥ ১৪ ॥ পা-  
 ঞ্জজন্যং হৃষীকেশো দেবদত্তং ধনঞ্জযঃ । পৌণ্ড্রং দধৌ মহাশঙ্খং ভীমকর্মা বৃকো-  
 দরঃ ॥ ১৫ ॥ অনন্তবিজয়ং রাজা কুন্তীপুত্রো যুধিষ্ঠিরঃ । নকুলঃ সহদেবশ্চ সুঘো-  
 ষমণিপুষ্পকৌ ॥ ১৬ ॥ কাশ্যশ্চ পরমেষ্वासঃ শিখণ্ডী চ মহারথঃ । ধৃষ্টদ্যুম্নো বিরা-  
 টশ্চ সাত্যকিষ্চাপরাজিতঃ ॥ ১৭ ॥ দ্রুপদো দ্রৌপদেযাশ্চ সর্বশঃ পৃথিবীপতে ।  
 সৌভদ্রশ্চ মহাবাহুঃ শঙ্খান্ দধ্মুঃ পৃথক্ পৃথক্ ॥ ১৮ ॥ স ঘোষো ধার্ত্তরাষ্ট্রাণাং  
 হৃদযাণি ব্যদারয়ৎ । নভশ্চ পৃথিবীশ্চৈব তুমুলোহ্ভ্যসুনাদয়ন্ ॥ ১৯ ॥ অথ  
 ব্যবস্থিতান্ দৃষ্ট্বা ধার্ত্তরাষ্ট্রান্ কপিধ্বজঃ । প্রবৃত্তে শস্ত্রসম্পাতে ধনুরুদ্যম্য পাণ্ডবঃ ।  
 হৃষীকেশং তদা বাক্যমিদমাহ মহীপতে ॥ ২০ ॥ অর্জুন উবাচ । সেনযোরুভ-  
 যোর্শ্মধ্যে রথং স্থাপয় মেহ্চ্যুত । যাবদেতান্ নিরীক্ষেহং যোদ্ধুকামানবস্থিতান্ ॥ ২১ ॥  
 কৈর্ময়া সহ যোদ্ধব্যমস্মিনুগসমুদ্যমে । যোৎস্যমানানবেক্ষেহং য এতেহত্র সমা-  
 গতাঃ । ধার্ত্তরাষ্ট্রস্য দুর্ধ্বৈর্দুর্ধ্বৈ প্রিয়চিকীর্ষবঃ ॥ ২২ ॥ সঞ্জয় উবাচ । এব-  
 মুক্তো হৃষীকেশো গুডাকেশেন ভারত । সেনযোরুভযোর্শ্মধ্যে স্থাপয়িত্বা রথোত্ত-  
 মম্ ॥ ২৩ ॥ ভীষ্মদ্রোণপ্রমুখতঃ সর্বেষাঞ্চ মহীক্ষিতান্ । উবাচ পার্থ পশ্যেতান্  
 সমবেতান্ কুবনिति ॥ ২৪ ॥ তত্রাপশ্যৎ স্থিতান্ পার্থঃ পিতুনথ পিতামহান্ ।  
 আচার্য্যান্মাতুলান্ ভ্রাতৃন পুত্রান পৌত্রান সখীংস্তথা । শ্বশুরান্ সুহৃদশ্চৈব সেন-  
 যোরুভযোরপি ॥ ২৫ ॥ তান্ সমীক্ষ্য স কৌন্তেযঃ সর্বান্ বন্ধুনবস্থিতান্ । রূপযা  
 পরযাবিষ্টৌ বিষীদম্বিদমব্রবীৎ ॥ ২৬ ॥ অর্জুন উবাচ । দৃষ্টেমান্ স্বজনান্ কৃষ্ণ  
 যুযুৎসূন্ সমবস্থিতান্ । সীদন্তি মম গাত্রাণি মুখঞ্চ পরিশুষ্যতি ॥ ২৭ ॥ বেপথুশ্চ  
 শরীরে মে রোমহর্ষশ্চ জাযতে । গাণ্ডীবং সুংসতে হস্তাৎ ত্বক্ চৈব পরিদহতে ॥ ২৮ ॥

न च शक्रेण्यवस्थातुं भ्रुमतीव च मे मनः । निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि  
 केशव ॥ २२ ॥ न च श्रेयोऽहं नुपश्यामि ह्यत्र स्वजनमाहवे । न काङ्क्षे विजयं  
 क्रुषं न च राज्यं सुखानि च ॥ ३० ॥ किंमेन राज्ञेयं गोविन्द किं भोगैर्जीवि-  
 तेन वा । येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च । त इमेऽवस्थिता  
 युद्धे प्राणांस्तुक्त्वा धनानि च ॥ ३१ ॥ आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पिता-  
 महाः । मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सयन्निनस्तथा ॥ ३२ ॥ एतान् न हन्मि-  
 ष्चामि न्नतोऽपि मधुसूदन । अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किम् महीकृते ॥ ३३ ॥  
 निहत्य धार्तराष्ट्रान् नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन । पापमेवाश्रयेदस्मान् ह्यैतान्-  
 नाततामिनः ॥ ३४ ॥ तस्मान्मार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान् सवाक्त्रवान् । स्वजनं हि  
 कथं ह्यत्र सुथिनः स्याम माधव ॥ ३५ ॥ यद्यप्येते न पश्यान्ति लोभोपहतचे-  
 तसः । कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम् ॥ ३६ ॥ कथं न ज्ञेयमस्माभिः  
 पापादस्मान्निवर्तितुम् । कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यान्तिर्जनार्दन ॥ ३७ ॥ कुलक्षये  
 प्रपश्यान्ति कुलधर्माः सनातनाः । धर्मो नष्टे कुलं क्रुषं न्नमधर्मोऽभितवत्युता ॥ ३८ ॥  
 अधर्माभितवां क्रुषं प्रदुष्यान्ति कुलस्त्रियः । स्त्रीषु दुर्कृत्यु वाक्येय जायते वर्णसङ्-  
 रः ॥ ३९ ॥ सङ्करो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च । पतन्ति पितरो ह्येषां  
 लुप्तपिण्डादकक्रियाः ॥ ४० ॥ दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसङ्करकारकैः । उन्मा-  
 द्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ॥ ४१ ॥ उन्मत्तकुलधर्माणां मनुष्याणां  
 जनार्दन । नरके नियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुमः ॥ ४२ ॥ अहो बत महत्  
 पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् । यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः ॥ ४३ ॥  
 यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः । धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तस्मै क्षेमतरं  
 भवेत् ॥ ४४ ॥ सङ्ग उवाच । एवमुक्त्वाऽर्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत् । विसृज्य  
 मशरं चापं शोकं संविग्नमानसः ॥ ४५ ॥

इति भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि अर्जुनविषादो नाम

चतुर्विंशतितमोऽध्यायः ॥ २४ ॥

—•••—

सङ्ग उवाच । तन्तथा रूपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् । विषीदस्तुमिदं वाक्यमुवाच  
 मधुसूदनः ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच । कुतस्त्वा कश्चलमिदं विषये समुपस्थितम् । अना-  
 र्याजुर्धर्मस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥ २ ॥ मा कैव्यं गच्छ कौन्तेय नैतद्व्युपपद्यते ।  
 क्रुद्रं हृदयदोर्बल्यं त्यक्त्वातिष्ठ परन्तप ॥ ३ ॥ अर्जुन उवाच । कथं भीष्ममहं

সংখ্যে দ্রোণঞ্চ মধুসূদন। ইষুভিঃ প্রতিযোৎস্যামি পূজার্হাবরিসূদন ॥ ৪ ॥ গুণ-  
নহুয়া হি মহানুভাবান্ শ্রেয়ো তোক্তুং তৈক্ষ্যমপীহ লোকে। হুয়ার্থকামাংস্ত  
গুণনিহৈব ভুঞ্জীয ভোগানুধিরপ্রদিক্তান্ ॥ ৫ ॥ ন চৈতদ্বিদ্মঃ কতরমো গরীষো  
যদ্বা জয়েম যদি বা নো জয়েযুঃ। যানেব হুয়া ন জিজীবিষামস্তেহবস্থিতাঃ প্রমুখে  
ধার্ত্তরাষ্ট্রাঃ ॥ ৬ ॥ কার্পণ্যদোষোপহতংস্বভাবঃ পৃচ্ছামি ত্বাং ধর্ম্মসম্মুচচেতাঃ। যচ্ছেষঃ  
স্যামিশ্চিতং ব্রুহি তন্মে শিষ্যস্তেহং সাধি মাং ত্বাং প্রপন্নম্ ॥ ৭ ॥ ন হি প্রপশ্যা-  
মি মমাপনুদ্যাদ্ষচ্ছোকমুচ্ছোষণমিস্রিযাণাম্। অবাধ্য ভূমাবসপত্ত্বমৃদ্ধং রাজ্যং  
সুরাণামপি চাধিপত্যম্ ॥ ৮ ॥ সঞ্জয় উবাচ। এবমুক্ত্বা হৃষীকেশং গুডাকেশঃ  
পরস্তপঃ। ন যোৎস্য ইতি গোবিন্দমুক্ত্বা তুষ্ণীং বভূব হ ॥ ৯ ॥ তমুবাচ হৃষী-  
কেশঃ প্রহসন্নিব ভারত। সেনযোরুভযোর্ম্মধ্যে বিষীদস্তমিদম্বচঃ ॥ ১০ ॥ শ্রীভগ-  
বানুবাচ। অশোচ্যানম্বশোচস্ত্বং প্রজ্ঞাবাদাংশ্চ ভাষসে। গতাস্থনগতাস্থংশ্চ নানু-  
শোচস্তি পণ্ডিতাঃ ॥ ১১ ॥ ন ছেবাহং জাতু নাসং ন স্বং নেমে জনাধিপাঃ। ন  
চৈব ন ভবিষ্যামঃ সর্বে বয়মতঃ পরম্ ॥ ১২ ॥ দেহিনোহস্মিন্ যথা দেহে কৌমারং  
যৌবনং জরা। তথা দেহান্তরপ্রাপ্তির্ধীরস্তত্র ন মুহুতি ॥ ১৩ ॥ মাত্রাপর্শাস্ত  
কৌন্তেয শীতোষ্ণসুখদুঃখদাঃ। আগমাপাষিনোহনিত্যাস্তাংস্তিতিক্ষস্ব ভারত ॥ ১৪ ॥  
যং হি ন ব্যথযন্ত্যেতে পুরুষং পুরুষষভ। সমদুঃখসুখং ধীরং সোহমৃতত্বায় কল্প-  
তে ॥ ১৫ ॥ নাসতো বিদ্যতে ভাবো নাভাবো বিদ্যতে সতঃ। উভযোরপি দৃষ্টোহ-  
স্তস্ত্বনযোস্তত্ত্বদর্শিভিঃ ॥ ১৬ ॥ অবিনাশি তু তদ্বিক্রি যেন সর্বমিদং ততম্। বিনা-  
শমব্যযস্যাস্য ন কশ্চিৎ কর্তুমর্হতি ॥ ১৭ ॥ অন্তবস্ত ইমে দেহা নিত্যস্যোক্তাঃ  
শরীরিণঃ। অনাশিনোহপ্রমেযস্য তস্মাদ্ধূষস্ব ভারত ॥ ১৮ ॥ য এনং বেত্তি  
হস্তারং যশ্চৈনং মন্যতে হতম্। উভৌ তৌ ন বিজানীতো নাযং হস্তি ন হন্য-  
তে ॥ ১৯ ॥ ন জাযতে মিষতে বা কদাচিন্নাযং ভূত্বা ভবিতা বা ন ভূষঃ। অজো  
নিত্যঃ শাস্বতোহযং পুরাণো ন হন্যতে হন্যামানে শরীরে ॥ ২০ ॥ বেদাবিনাশিনং  
নিত্যং য এনমজমব্যযম্। কথং স পুরুষঃ পার্থ কং যাতযতি হস্তি কল্প ॥ ২১ ॥  
বাসাংসি জীণানি যথা বিহায নবানি গৃহ্ণাতি নরোহপরানি। তথা শরীরানি  
বিহায জীর্ণান্যান্যানি সংযাতি নবানি দেহী ॥ ২২ ॥ নৈনং ছিন্তন্তি শস্ত্রাণি  
নৈনং দহতি পাবকঃ। ন চৈনং ক্লেদযন্ত্যাপো ন শোষযতি মারুতঃ ॥ ২৩ ॥ অচ্ছ-  
দ্যোহযমদাছোহযমক্লেদ্যোহশোষ্য এব চ। নিত্যঃ সর্বগতঃ স্থানুরচলোহযং সনা-  
তনঃ ॥ ২৪ ॥ অব্যক্তোহযমচিন্ত্যোহযমবিকার্যোহযমুচ্যতে। তস্মাদেবং বিদি-

.ত্বেনং নানুশোচিতুমর্হসি ॥ ২৫ ॥ অথ চৈনং নিত্যজাতং নিত্যং বা মন্যসে মৃতম্ ।  
 তথাপি ত্বং মহাবাহো নৈবং শোচিতুমর্হসি ॥ ২৬ ॥ জাতস্য হি ধুবো মৃত্যুর্ধুবং  
 জন্ম মৃতস্য চ । তস্মাদপরিহার্যেত্বং ন ত্বং শোচিতুমর্হসি ॥ ২৭ ॥ অব্যক্তাদীনি  
 ভূতানি ব্যক্তমধ্যানি ভারত । অব্যক্তনিধনান্যেব তত্র কা পরিদেবনা ॥ ২৮ ॥  
 আশ্চর্য্যবৎ পশ্যতি কশ্চিদ্দেনমাশ্চর্য্যবদ্বদতি তথৈব চান্যঃ । আশ্চর্য্যবচৈন-  
 মন্যঃ শৃণোতি শ্রদ্ধাপ্যেনং বেদ ন চৈব কশ্চিৎ ॥ ২৯ ॥ দেহী নিত্যমবধোহষং  
 দেহে সর্বস্য ভারত । তস্মাৎ সর্বাণি ভূতানি ন ত্বং শোচিতুমর্হসি ॥ ৩০ ॥ স্বধ-  
 র্ম্মমপি চাবেক্ষ্য ন বিকম্পিতুমর্হসি । ধর্ম্ম্যাদ্বি যুদ্ধাৎ শ্রোযোহন্যৎ ক্লিষস্য ন  
 বিদ্যতে ॥ ৩১ ॥ যদৃচ্ছ্যা চোপপন্নং স্বর্গদ্বারমপাবৃতম্ । সুখিনঃ ক্লিষাঃ পার্থ  
 লভন্তে যুদ্ধমীদৃশম্ ॥ ৩২ ॥ অথ চেৎস্বমিমং ধর্ম্ম্যং সংগ্রামং ন করিষ্যসি । ততঃ  
 স্বধর্ম্মং কীর্ত্তিঞ্চ হি ত্বা পাপমবাপ্যসি ॥ ৩৩ ॥ অকীর্ত্তিঞ্চাপি ভূতানি কথযিষ্যন্তি  
 তেহব্যয়াম্ । সম্ভাবিতস্য চাকীর্ত্তির্ম্মরণাদতিরিচ্যতে ॥ ৩৪ ॥ তযাদ্রণাদুপরতং  
 মংস্যন্তে ত্বাং মহারথাঃ । যেষাঞ্চ ত্বং বহুমতো ভূত্বা যাস্যসি লাঘবম্ ॥ ৩৫ ॥  
 অবাচ্যবাদাংশ্চ বহুন্ বদিষ্যন্তি তবাহিতাঃ । নিন্দন্তস্তব সামর্থ্যং ততো দুঃখতরং  
 নু কিম্ ॥ ৩৬ ॥ হতো বা প্রাপ্যসি স্বর্গং জিত্বা বা ভোক্যসে মহীম্ । তস্মাদুক্তিষ্ঠ  
 কোন্তেয যুদ্ধায় ক্লতনিশ্চয়ঃ ॥ ৩৭ ॥ সুখদুঃখে সমে ক্লত্বা লাভালাভৌ জযাজয়ৌ ।  
 ততো যুদ্ধায় যুক্ত্যস্ব নৈবং পাপমবাপ্যসি ॥ ৩৮ ॥ এষা তেহতিহিতা সাংখ্যে  
 বুদ্ধির্যোগে ত্বিমাং শৃণু । বুদ্ধ্যা যুক্তো যযা পার্থ কর্ম্মবন্ধং প্রহাস্যসি ॥ ৩৯ ॥  
 নেহাভিক্রমনাশোহস্তি প্রত্যবায়ো ন বিদ্যতে । স্বল্পমপ্যস্য ধর্ম্মস্য ত্রাযতে মহতো  
 তযাৎ ॥ ৪০ ॥ ব্যবসায়াত্মিকা বুদ্ধিরেকেহ কুরুনন্দন । বহুশাখা হনন্তাশ্চ বুদ্ধ-  
 যোহব্যবসায়িনাম্ ॥ ৪১ ॥ যামিমাং পুষ্পিতাং বাচং প্রবদন্ত্যবিপশ্চিতঃ । বেদ-  
 বাদরতাঃ পার্থ নান্যদস্তীতি বাদিনঃ ॥ ৪২ ॥ কামাত্মানঃ স্বর্গপরা জন্মকর্ম্মফল-  
 প্রদাম্ । ক্রিয়াবিশেষবহুলাং ভোগৈশ্বর্য্যগতিং প্রতি ॥ ৪৩ ॥ ভোগৈশ্বর্য্যপ্রস-  
 ক্তানাং ত্বযাপহতচেতসাম্ । ব্যবসায়াত্মিকা বুদ্ধিঃ সমাধৌ ন বিধীয়তে ॥ ৪৪ ॥  
 ত্রৈগুণ্যবিষয়া বেদা নিস্ত্রেগুণ্যো ভবাজ্জুন । নিদ্বন্দ্বো নিত্যসত্ত্বস্হো নির্যোগক্ষেম  
 আত্মবান্ ॥ ৪৫ ॥ যাবানর্থ উদপানে সর্বতঃ সংপ্লুতোদকে । তাবান্ সর্বেষু বেদেষু  
 ব্রাহ্মণস্য বিজানতঃ ॥ ৪৬ ॥ কর্ম্মণ্যেবাধিকারস্তে মা ফলেষু কদাচন । মা কর্ম্মফল-  
 হেতুভূর্ম্মা তে সন্ধোহস্ত্বকর্ম্মণি ॥ ৪৭ ॥ যোগস্বঃ কুরু কর্ম্মাণি সঙ্গং ত্যক্ত্বা ধনঞ্জয ।  
 সিদ্ধ্যসিদ্ধ্যাঃ সমো ভূত্বা সমত্বং যোগ উচ্যতে ॥ ৪৮ ॥ দূরেণ হবরং কর্ম্ম বুদ্ধি-

যোগাঙ্কনঞ্জয । বুদ্ধৌ শরণমঘিচ্ছ রূপণাঃ কসহেতবঃ ॥ ৪৯ ॥ বুদ্ধিযুক্তো জহা  
 তীহ উভে সুরুতদুষ্কৃতে । তস্মাদ্বেগায় যুক্ত্যস্ব যোগঃ কৰ্ম্মসু কৌশলম্ ॥ ৫০ ॥  
 কৰ্ম্মজং বুদ্ধিযুক্তা হি ফলং ত্যক্ত্বা মনীষিণঃ । জন্মবন্ধবিনিৰ্ম্মুক্তাঃ পদং গচ্ছন্ত্য-  
 নামযম্ ॥ ৫১ ॥ 'যদা তে মোহকলিলং বুদ্ধিৰ্যতিতরিষ্যতি । তদা গন্তাসি নির্বেদং  
 শ্রোতব্যস্য শ্রুতস্য চ ॥ ৫২ ॥ শ্রুতিবিপ্রতিপন্নো তে যদা স্থাস্যতি নিশ্চলা । সমা-  
 ধাবচলা বুদ্ধিস্তদা যোগমবাপ্যসি ॥ ৫৩ ॥ অর্জুন উবাচ । স্থিতপ্রজ্ঞস্য কা  
 তাশ্চ সমাধিস্থস্য কেশব । স্থিতধীঃ কিং প্রভাষেত কিমাসীত ব্রজেত কিম্ ॥ ৫৪ ॥  
 শ্রীভগবানুবাচ । প্রজহাতি যদা কামান্ সৰ্বান্ পার্থ মনোগতান্ । আত্মন্যে-  
 বাত্মনা তুৰ্ঘ্বঃ স্থিতপ্রজ্ঞস্তদোচ্যতে ॥ ৫৫ ॥ দুঃখেঘনুদ্বিগ্নমনাঃ স্নুখেষু বিগত-  
 স্পৃহঃ । বীতরাগভয়ক্রোধঃ স্থিতধীর্শূনিক্ৰুচ্যতে ॥ ৫৬ ॥ যঃ সৰ্বত্রানভিন্নেহস্তত্ত্বৎ  
 প্রাপ্য শুভাশুভম্ । নাভিনন্দতি ন দ্বেষি তস্য প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা ॥ ৫৭ ॥ যদা  
 সংহরতে চাযং কুৰ্ম্মোহঙ্গানীব সৰ্বশঃ । ইন্দ্রিযাণীন্দ্রিযার্থেভ্যস্তস্য প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠি-  
 তা ॥ ৫৮ ॥ বিষয়া বিনিবর্তন্তে নিরাহারস্য দেহিনঃ । রসবর্জ্যং রসোহপ্যস্য পরং  
 দৃষ্ট্বা নিবর্ততে ॥ ৫৯ ॥ যততো হপি কৌন্তেয পুরুষস্য বিপশ্চিতঃ । ইন্দ্রিযাণি প্রমা-  
 থীনি হরন্তি প্রসভং মনঃ ॥ ৬০ ॥ তানি সৰ্বাণি সংযম্য যুক্ত আসীত মৎপরঃ ।  
 বশে হি যস্যেইন্দ্রিযাণি তস্য প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা ॥ ৬১ ॥ ধ্যাযতো বিষয়ান্ পুংসঃ সঙ্গ-  
 স্তেষুপজায়তে । সঙ্গাৎ সংজায়তে কামঃ কামাৎ ক্রোধোহতিজায়তে ॥ ৬২ ॥  
 ক্রোধান্দ্রবতি সন্মোহঃ সন্মোহাৎ স্মৃতিবিভ্রমঃ । স্মৃতিভ্রংশাদ্বুদ্ধিনাশো বুদ্ধিনা-  
 শাৎ প্রণশ্যতি ॥ ৬৩ ॥ রাগদ্বেষবিমুক্তৈস্ত্ব বিষয়ানিদ্ৰিযৈশ্চরন্ । আত্মবশৈশ্য-  
 বিধেযাত্মা প্রসাদমধিগচ্ছতি ॥ ৬৪ ॥ প্রসাদে সৰ্বদুঃখানাং হানিরস্যোপজায়তে ।  
 অসম্মচেতসো হ্যশু বুদ্ধিঃ পর্য্যবতিষ্ঠতে ॥ ৬৫ ॥ নাস্তি বুদ্ধিরযুক্তস্য ন চায়ুক্তস্য  
 ভাবনা । ন চাভাবযতঃ শান্তিরশান্তস্য কুতঃ সুখম্ ॥ ৬৬ ॥ ইন্দ্রিযাণাং হি চর-  
 তাং সন্মনোহনুবিধীয়তে । তদস্য হরতি প্রজ্ঞাং বায়ুর্নাবনিবাস্তসি ॥ ৬৭ ॥ তস্মা-  
 দ্ঘস্য মহাবাহো নিপৃহীতানি সৰ্বশঃ । ইন্দ্রিযাণীন্দ্রিযার্থেভ্যস্তস্য প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠি-  
 তা ॥ ৬৮ ॥ যা নিশা সৰ্বভূতানাং তস্যাত্ জাগর্ত্তি সংযমী । যস্যাত্ জাগ্রতি  
 ভূতানি সা নিশা পশ্যতো মূনেঃ ॥ ৬৯ ॥ আপূৰ্য্যমাণমচলপ্রতিষ্ঠং সমুদ্রমাপঃ  
 প্রবিশন্তি যদ্বৎ । তদ্বৎ কামা যৎ প্রবিশন্তি সৰ্বে স শান্তিমাশ্নোতি ন কামক-  
 নী ॥ ৭০ ॥ বিহায কামান্ যঃ সৰ্বান্ পুমাংশ্চরতি নিস্পৃহঃ । নিৰ্ম্মমো নিরহংকারঃ



स शान्तिमधिगच्छति ॥ ११ ॥ एषा ब्रह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति ।  
स्थिद्वास्यामन्तुकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥ १२ ॥

इति भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सांख्ययोगो

नाम पञ्चविंशतितमोऽध्यायः ॥ २५ ॥



अर्जुन उवाच । ज्यायसी चेत् कर्मणस्तु मता बुद्धिर्जनार्दन । तत् किं कर्मणि  
घोरे मां नियोजयसि केशव ॥ १ ॥ व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीध  
मे । तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम् ॥ २ ॥ भगवानुवाच । लो-  
केऽस्मिन् द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मया नय । ज्ञानयोगेन सांख्येनां कर्मयो-  
गेन योगिनाम् ॥ ३ ॥ न कर्मणामनारम्भामैकर्म्यं पुरुषोऽश्नुते । न च सम्यसना-  
देव सिद्धिं समधिगच्छति ॥ ४ ॥ न हि कश्चित् कर्ममपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।  
कार्यते ह्यवशं कर्म सर्वं प्रकृतिजैर्गुणैः ॥ ५ ॥ कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्तु  
मनसा स्मरन् । इन्द्रियार्थान् विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ॥ ६ ॥ यस्तुन्द्रियाणि  
मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन । कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते ॥ ७ ॥  
नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः । शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदक-  
र्मणः ॥ ८ ॥ यज्ज्वालां कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः । तदर्थं कर्म कौन्तेय  
मुक्तसङ्गः समाचर ॥ ९ ॥ सहयज्जाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः । अनेन  
प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक् ॥ १० ॥ देवान् भावयतानेन ते देवा भाव-  
यन्तु वः । परस्परं भावयन्तुः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥ ११ ॥ ईशान् भोगान् हि वो  
देवा दास्यन्ते यज्ज्वाविताः । तैर्दत्त्वा न प्रदायैतेषां यो भुङ्क्ते स्तेन एव  
सः ॥ १२ ॥ यज्ज्वाशिक्षाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः । भुङ्क्ते ते त्वयं पापा षे  
पचन्त्यात्मकारणात् ॥ १३ ॥ अमान्द्रवस्ति भूतानि पर्जन्यादमृतसन्तवः । यज्ज्वाद्भवति  
पर्जन्यो यज्ज्वाः कर्मसमुद्भवः ॥ १४ ॥ कर्म ब्रह्माद्भवत् विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ।  
तस्मात् सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ज्वा प्रतिष्ठितम् ॥ १५ ॥ एवं प्रवर्तितं चक्रं नानु-  
वर्तयतीह यः । अघायुरिन्द्रियरामो मोघं पार्थ स जीवति ॥ १६ ॥ यस्तुात्प्रति-  
रेव स्यादात्तृप्तश्च मानवः । आत्मन्येव च सन्तुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥ १७ ॥  
नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन । न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यापाश्र-  
यः ॥ १८ ॥ तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर । असक्तो ह्यचरन् कर्म पर-  
माप्नोति पूरुषः ॥ १९ ॥ कर्मणैव हि संसिद्धिमाप्सिता जनकादयः । लोकसंग्र-

হমেবাপি সংপশ্যন্ কর্তুমহসি ॥ ২০ ॥ যদ্বদাচরতি শ্রেষ্ঠস্তত্তদেবেতরো জনঃ ।  
 স যৎ প্রমাণং কুরুতে লোকস্তদনুবর্ততে ॥ ২১ ॥ ন যে পার্থাস্তি কর্তব্যং ত্রিষু লো-  
 কেষু কিঞ্চন । নানবাণ্ডমবাণ্ডব্যং বর্ত্ত এব চ কৰ্ম্মণি ॥ ২২ ॥ যদি হুহং ন বর্ত্তেষং  
 জাতু কৰ্ম্মণ্যতদ্ভিতঃ । মম বৰ্দ্ধানুবর্ত্তন্তে মনুষ্যাঃ পার্থ সৰ্বশঃ ॥ ২৩ ॥ উৎসী-  
 দেয়ুরিমে লোকা ন কুর্যাং কৰ্ম্ম চেদহম্ । সঙ্করস্য চ কৰ্ত্তা স্যামুপহন্যামিমাঃ  
 প্রজাঃ ॥ ২৪ ॥ সঙ্করাঃ কৰ্ম্মণ্যবিদ্বাংসো যথা কুৰ্ব্বন্তি ভারত । কুর্যাৎসিদ্ধাংস্তথা-  
 সঙ্কশ্চিকীৰ্ণলোকসংগ্রহম্ ॥ ২৫ ॥ ন বুদ্ধিতেদং জনয়েদজ্ঞানাং কৰ্ম্মসঙ্গিনাম্ ।  
 জোষযেৎ সৰ্বকৰ্ম্মাণি বিদ্বান্ যুক্তঃ সমাচরন্ ॥ ২৬ ॥ প্রকৃতেঃ ক্রিয়মাণানি গুণৈঃ  
 কৰ্ম্মাণি সৰ্বশঃ । অহঙ্কারবিমূঢ়াত্মা কৰ্ত্তাহমিতি মন্যতে ॥ ২৭ ॥ তদ্ববিত্তু মহা-  
 বাহো গুণকৰ্ম্মবিভাগযোঃ । গুণা গুণেষু বর্ত্তন্ত ইতি মত্বা ন সজ্জতে ॥ ২৮ ॥ প্রকৃ-  
 তেগুণসংযুতাঃ সজ্জন্তে গুণকৰ্ম্মসু । তানক্লেশবিদো মন্দান্ ক্লেশবিম্ব বিচাল-  
 য়েৎ ॥ ২৯ ॥ যযি সৰ্বাণি কৰ্ম্মাণি সংন্যস্যাদ্যাভ্যচেতসা । নিরাশীর্নির্ম্মমো ভূত্বা  
 যুধ্যস্ব বিগতজ্বরঃ ॥ ৩০ ॥ যে মে মতমিদং নিত্যমনুতিষ্ঠন্তি মানবাঃ । শ্রদ্ধাব-  
 স্তোহনস্বযন্তো মুচ্যন্তে তেহপি কৰ্ম্মভিঃ ॥ ৩১ ॥ যে হেতদভ্যস্বযন্তো নানুতিষ্ঠন্তি  
 মে মতম্ । সৰ্বজ্ঞানবিমূঢ়াংস্তান্ বিদ্ধি নষ্টানচেতসঃ ॥ ৩২ ॥ সদৃশক্ষেৰ্কতে স্বস্যাঃ  
 প্রকৃতেজ্ঞানবানপি । প্রকৃতিং যাস্তি ভুতানি নিগ্রহঃ কিং করিষ্যতি ॥ ৩৩ ॥ ইন্দ্রি-  
 যস্যেन्द्रিয়স্যার্থে রাগদ্বेषৌ ব্যবস্থিতৌ । তযোর্ন বশমাগচ্ছেত্তৌ হস্য পরিপন্নি-  
 নৌ ॥ ৩৪ ॥ শ্রেয়ান্ স্বধৰ্ম্মো বিগুণঃ পরধৰ্ম্মাৎ স্বনুষ্ঠিতাৎ । স্বধৰ্ম্মে নিধনং  
 শ্রেয়ঃ পরধৰ্ম্মো ভয়াবহঃ ॥ ৩৫ ॥ অর্জুন উবাচ । অথ কেন প্রযুক্তোহসং পাপকর-  
 তি পুরুষঃ । অনিচ্ছন্নপি বাৰ্ষেয বলাদিব নিযোজিতঃ ॥ ৩৬ ॥ শ্রীভগবানুবাচ । কাম  
 এষ ক্রোধ এষ রজোগুণসমুদ্ভবঃ । মহাশনো মহাপাপ্মা বিদ্যেয়মিহ বৈরিণম্ ॥ ৩৭ ॥  
 ধূমেনাব্রিয়তে বহ্নিৰ্ব্বথাদর্শো মলেন চ । যথোল্লেনাবৃত্তো গৰ্ভস্তথা তেনেদমাবৃ-  
 তম্ ॥ ৩৮ ॥ আবৃতং জ্ঞানমেতেন জ্ঞানিনো নিত্যবৈরিণা । কামরূপেণ কৌন্তেয  
 দুস্পূরেণানলেন চ ॥ ৩৯ ॥ ইন্দ্রিয়াণি মনো বুদ্ধিরস্যাধিষ্ঠানমুচ্যতে । ঐতৈর্বিমো-  
 হযত্যেয জ্ঞানমাবৃত্য দেহিনম্ ॥ ৪০ ॥ তস্মাত্ত্বমিন্দ্রিয়াণ্যাদৌ নিযম্য ভরতর্ষভ ।  
 পাপ্মানং প্রজহি হেনং জ্ঞানবিজ্ঞাননাশনম্ ॥ ৪১ ॥ ইন্দ্রিয়াণি পরাণ্যাহুরিন্দ্রিযেভ্যঃ  
 পরং মনঃ । মনসস্ত পরা বুদ্ধিৰ্বুদ্ধৈর্যঃ পরতস্ত সঃ ॥ ৪২ ॥ এবং বুদ্ধেঃ পরং বুদ্ধা সংস্ত-  
 ভ্যাগ্মানমাগ্মনা । জহি শত্রুং মহাবাহো কামরূপং দুরাসদম্ ॥ ৪৩ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভগবদ্গীতাপর্বণি কৰ্ম্মযোগো নাম ষড়্বিংশতিতনোহধ্যায়ঃ ॥ ২৬ ॥

भगवान्वाच । इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् । विवस्वान् मनवे प्राह  
 मन्नु रिक्त्वा कवेऽत्र वी० ॥ १ ॥ एवं परम्पराप्रणप्तमिमं राजर्षयो विदुः । स का-  
 लेनेह महता योगो नक्तः परब्रह्मणः ॥ २ ॥ स एवायं मया तेह्यद्य योगः प्रोक्तः  
 पुरातनः । भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं हेतदुक्तमम् ॥ ३ ॥ अर्जुन उवाच ।  
 अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः । कथमेतद्विजानीयां ह्यमादौ प्रोक्तवा-  
 निति ॥ ४ ॥ भगवान्वाच । बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन । तान्यहं  
 वेद सर्वाणि न ह्यं वेत्थ परब्रह्मणः ॥ ५ ॥ अज्ञोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि  
 सन् । प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया ॥ ६ ॥ यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भ-  
 वति भारत । अधुना नमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥ ७ ॥ परित्राणाय साधू-  
 नां विनाशाय च दुर्कृतम् । धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ ८ ॥ जन्म  
 कर्म च मे दिव्यमेव यो वेत्ति तद्गतः । तत्कृत्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति  
 सोऽर्जुन ॥ ९ ॥ वीतरागभयक्रोधा मन्मथा मामुपाश्रिताः । बहवो ज्ञानतपसा  
 पूता मन्दावमागतः ॥ १० ॥ ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् ।  
 मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥ ११ ॥ काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त  
 इह देवताः । क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥ १२ ॥ चातुर्वर्ण्यं  
 मया सृष्टं शुभकर्मविभागशः । तस्य कर्तारमपि मां विद्म्यकर्तारमव्ययम् ॥ १३ ॥  
 न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा । इति मां योऽभिजानाति कर्म-  
 तिनः स बध्नाते ॥ १४ ॥ एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः । कुरु कर्मैव  
 तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम् ॥ १५ ॥ किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मो-  
 हिताः । तत्रे कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ॥ १६ ॥ कर्मणो ह्यपि  
 बोद्धव्यं बोद्धव्यं विकर्मणः । अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः ॥ १७ ॥  
 कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः । स बुद्धिमान् मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्न-  
 कर्मकृत् ॥ १८ ॥ यस्य सर्वे समारम्भाः कामसङ्गवर्जिताः । ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं  
 तमाहुः पण्डितं बुधाः ॥ १९ ॥ तत्कृत्वा कर्मफलसङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः । कर्म-  
 ण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चिद् करोति सः ॥ २० ॥ निराशीर्यतचित्तात्मा तत्कर्मसर्व-  
 परिग्रहः । शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किञ्चिदम् ॥ २१ ॥ यद्दृच्छालाभस-  
 द्भ्रष्टो ह्यन्दातीतो विमत्सरः । समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्नाते ॥ २२ ॥  
 गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः । यज्ज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीय-  
 ते ॥ २३ ॥ ब्रह्मार्पणं ब्रह्मविर्ब्रह्मर्गो ब्रह्मणा हृतम् । ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं

ব্রহ্মকৰ্মসমাধিনা ॥২৪॥ দৈবমেবাপরে যজ্ঞং যোগিনঃ পর্যুপাসতে । ব্রহ্মাণ্যবপরে  
যজ্ঞং যজ্ঞেনৈবোপজুহ্বতি ॥ ২৫ ॥ শ্রোত্রাদীনীন্দ্রিয়াণ্যন্যে সংযমাগ্নিষু জুহ্বতি ।  
শব্দাদীন্ বিষয়ানন্য ইন্দ্রিয়াগ্নিষু জুহ্বতি ॥ ২৬ ॥ সৰ্বাণীন্দ্রিয়কৰ্মাণি প্রাণকৰ্মাণি  
চাপরে । আত্মসংযমযোগাগ্নৌ জুহ্বতি জ্ঞানদীপিতে ॥ ২৭ ॥ দ্রব্যযজ্ঞাস্তুপোষজ্ঞা  
যোগযজ্ঞাস্তুতাপরে । স্বাধ্যায়জ্ঞানযজ্ঞাশ্চ যতযঃ সংশিতব্রতাঃ ॥ ২৮ ॥ অপানে  
জুহ্বতি প্রাণং প্রাণেহপানং তথাপরে । প্রাণাপানগতী রুদ্ধা প্রাণায়ামপরায-  
ণাঃ ॥২৯॥ অপরে নিষতাহারাঃ প্রাণান্ প্রাণেষু জুহ্বতি । সৰ্বেহপ্যেতে যজ্ঞবিদো  
যজ্ঞকথিতকল্মষাঃ ॥ ৩০ ॥ যজ্ঞশিষ্ঠামৃতভূজো যান্তি ব্রহ্মসনাতনম্ । নাযং লো-  
কোহস্ত্যযজ্ঞস্য কুতোহন্যঃ কুরুসত্তম ॥ ৩১ ॥ .এবং বহুবিধা যজ্ঞা বিততা ব্রহ্ম-  
ণো মুখে । কৰ্মজান্ বিদ্ধি তান্ সৰ্বানেবং জ্ঞাত্বা বিমোক্ষ্যসে ॥ ৩২ ॥ শ্রেয়ান্  
দ্রব্যমযাদ্যজ্ঞাৎ জ্ঞানযজ্ঞঃ পরস্তপ । সৰ্বং কৰ্মাখিলং পার্থ জ্ঞানে পরিসমাপ্য-  
তে ॥ ৩৩ ॥ তদ্বিদ্ধি প্রণিপাতেন পরিপ্রশ্নেন সেবযা । উপদেক্ষ্যন্তি তে জ্ঞানং  
জ্ঞানিনস্তদ্বদর্শিনঃ ॥ ৩৪ ॥ যজ্ঞজ্ঞাত্বা ন পুনশ্চোহমেবং যাস্যসি পাণ্ডব । যেন  
ভূতান্যশেষেণ দ্রক্ষ্যস্যান্যন্যথো মযি ॥ ৩৫ ॥ অপি চেদসি পাপেভ্যঃ সৰ্বেভ্যঃ  
পাপক্লান্তমঃ । সৰ্বং জ্ঞানপ্লেবেনৈব বৃজিনং সন্তুরিষ্যসি ॥ ৩৬ ॥ যথৈধাংসি সমি-  
দ্ধোহগ্নিৰ্ভস্মসাৎ কুরুতেহজ্জুন । জ্ঞানাগ্নিঃ সৰ্বকৰ্মাণি ভস্মসাৎ কুরুতে তথা ॥৩৭॥  
ন হি জ্ঞানেন সদৃশং পবিত্রমিহ বিদ্যতে । তৎ স্বয়ং যোগসংসিদ্ধঃ কালেনাত্মনি  
বিন্দতি ॥ ৩৮ ॥ শ্রদ্ধাবান্ লভতে জ্ঞানং তৎপরঃ সংযতেন্দ্রিয়ঃ । জ্ঞানং লব্ধ্বা  
পরাং শান্তিমচিরেণাধিগচ্ছতি ॥ ৩৯ ॥ অজ্ঞশ্চাশ্রদ্ধধানশ্চ সংশয়াত্মা বিনশ্যতি ।  
নাযং লোকোহস্তি ন পরো ন সুখং সংশয়াত্মনঃ ॥ ৪০ ॥ যোগসংন্যস্তকৰ্মাণং  
জ্ঞানসংছিন্নসংশয়ম্ । আত্মবস্তুং ন কৰ্মাণি নিবল্লন্তি ধনঞ্জয় ॥ ৪১ ॥ তস্মা-  
দজ্ঞানসন্তৃতং হৃৎস্থং জ্ঞানাসিনাত্মনঃ । ছিত্ত্বেনং সংশয়ং যোগমাতিষ্ঠৌত্তিষ্ঠ  
ভারত ॥ ৪২ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভগবদ্গীতাপর্বণি শ্রীকৃষ্ণাজ্জুনসংবাদে জ্ঞানযোগো

নাম সপ্তবিংশতিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৭ ॥



অজ্জুন উবাচ । সন্ন্যাসং কৰ্মণাং কৃষ্ণ পুনর্যোগঞ্চ শংসসি । যচ্ছুষ এতযো-  
রেকং তন্মে বৃহি স্তুনিশ্চিতম্ ॥ ১ ॥ শ্রীভগবানুবাচ । সন্ন্যাসঃ কৰ্মযোগশ্চ নিঃ-  
শ্রেয়সকরাবুভৌ । তযোস্তু কৰ্মসন্ন্যাসাৎ কৰ্মযোগো বিশিষ্যতে ॥ ২ ॥ জ্ঞেয়ঃ স

नित्यसम्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति । निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं वक्त्वा प्र-  
 मुच्यते ॥ ७ ॥ सांख्ययोगो पृथग्वालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः । एकमप्यास्थितः-  
 सम्युत्तयोर्विन्दते कलम् ॥ ८ ॥ यत् सांख्येः प्राप्यते स्थानं तद्व्यागैरपि  
 गम्यते । एकं सांख्यं योगं यः पश्यति स पश्यति ॥ ९ ॥ सम्यासस्तु महाबाहो  
 दुःखमाप्नुमयोगतः । योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नर्चिरेणाधिगच्छति ॥ १० ॥ योगयुक्तो  
 विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः । सर्वभूतास्त्रभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ॥ ११ ॥  
 नैव किञ्चिद् करोमीति युक्तो मन्येत तद्भवि । पश्यान् शृण्वन् स्पृशन् जिघृक्षन्  
 गच्छन् स्वपन् श्वसन् ॥ १२ ॥ प्रलपन् विसृजन् गृह्णन्मिषमिमिषमपि । ईर्ष्याणीन्द्रि-  
 षार्थेषु वर्तन्त इति धारयन् ॥ १३ ॥ ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः ।  
 लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवास्तुसा ॥ १४ ॥ कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरि-  
 न्द्रियैरपि । योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वात्सुद्वये ॥ १५ ॥ युक्तः कर्मफलं  
 त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम् । अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते ॥ १६ ॥  
 सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्यास्तु सुखं बन्धी । नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कार-  
 यन् ॥ १७ ॥ न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः । न कर्मफलसंयोगं  
 स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥ १८ ॥ नादत्ते कस्यचिद् पापं न चैव सूरुतं विभुः । अज्ञा-  
 नेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जस्तवः ॥ १९ ॥ ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां  
 नाशितमात्मनः । तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत् परम् ॥ २० ॥ तद्वृद्धयस्तु-  
 दात्मानस्तुमिष्ठास्तु परायणः । गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्दूतकल्मषाः ॥ २१ ॥ वि-  
 द्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि । शुनि चैव श्वपाके च पाण्डिताः समदर्शि-  
 नः ॥ २२ ॥ इहैव तैर्ज्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः । निर्दोषं हि समं  
 ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः ॥ २३ ॥ न प्रहृष्येत् प्रियं प्राप्य नोद्विजेत् प्राप्य  
 चाप्रियम् । स्थिरबुद्धिरसंमूढो ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः ॥ २४ ॥ बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्द-  
 त्यात्मानि यत् सुखम् । स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्कवदश्रुते ॥ २५ ॥ ये हि संस्प-  
 र्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते । आद्यन्तवस्तुः कौस्तुभेन तेषु रमते बुधः ॥ २६ ॥  
 शक्रेतीहैव यः सोढुं प्राक् शरीरविमोक्षणात् । कामक्रोधोद्वेगं वेगं स युक्तः  
 स सुधी नरः ॥ २७ ॥ यो हस्तुः सुखो हस्तुरारामस्तथास्तुर्ज्योतिरेव यः । स योगी  
 ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतो हधिगच्छति ॥ २८ ॥ लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमयसः स्त्रीणकल्मषाः ।  
 हिमद्वेषा षठात्मानः सर्वभूतहिते रताः ॥ २९ ॥ कामक्रोधविभुक्तानां यतीनां  
 यतचेतसाम् । अतितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदित्वात्मानाम् ॥ ३० ॥ स्पर्शान् कृत्वा

বহির্বাহ্যং শক্নুশ্চৈবান্তরে ভ্রুবোঃ । প্রাণাপানৌ সমৌ ক্লৃৎস্বা নামাত্যন্তরচারি-  
ণৌ ॥ ২৭ ॥ যতেশ্চিৎসমনোবুদ্ধিশ্চুনির্মোক্শপরাষণঃ । বিগতেচ্ছাভযক্ৰোধো যঃ  
সদা মুক্ত এব সং ॥ ২৮ ॥ ভোক্তারং যজ্ঞতপসাং সর্বলোকনহেশ্বরম্ । সুহৃদং  
সর্বভূতানাং জ্ঞাত্বা মাং শাস্তিমৃচ্ছতি ॥ ২৯ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভগবদ্গীতাপর্বণি শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে কৰ্ম্মসন্ন্যাস-  
যোগো নাম অষ্টাবিংশতিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৮ ॥



শ্রীভগবানুবাচ । অনাশ্রিতঃ কৰ্ম্মফলং কার্যং কৰ্ম্ম কৰোতি যঃ । স সন্ন্যাসী চ  
যোগী চ ন নিরগ্নির্ন চাক্রিযঃ ॥ ১ ॥ যং সন্ন্যাসমিতি প্রাহুর্যোগং তং বিদ্ধি পা-  
ণ্ডব । ন হ্ৰসংন্যস্তসংকল্পো যোগী ভবতি কশ্চন ॥ ২ ॥ আরুরুক্ষোশ্চুর্নেৰ্যোগং  
কৰ্ম্ম কারণমুচ্যতে । যোগাকৃতস্য তসৈ্যব শমঃ কারণমুচ্যতে ॥ ৩ ॥ যদা হি নেশ্চি-  
যার্থেষু ন কৰ্ম্মস্বল্পযজ্ঞতে । সর্বসংকল্পসন্ন্যাসী যোগাকৃতস্তদোচ্যতে ॥ ৪ ॥ উক্তরে-  
দাত্মনাত্মানং নাাত্মানমবসাদযেৎ । আত্মৈব হ্যাত্মনো বন্ধুরাত্মৈব রিপুৰাত্ম-  
নঃ ॥ ৫ ॥ বন্ধুরাত্মাত্মনস্তস্য যেনাত্মৈবাত্মনা জিতঃ । অনাত্মনস্ত শত্রুশ্চে বর্তেতা-  
ত্মৈব শত্রুবৎ ॥ ৬ ॥ জিতাত্মনঃ প্রশান্তস্য পরমাত্মা সমাহিতঃ । শীতোষ্ণসুখ-  
দুঃখেষু তথা মানাপমানযোঃ ॥ ৭ ॥ জ্ঞানবিজ্ঞানতৃপ্তাত্মা কূটস্থো বিজিতেশ্চিযঃ ।  
যুক্ত ইত্যুচ্যতে যোগী সমলোষ্ঠাশ্মকাঞ্চনঃ ॥ ৮ ॥ সুহৃদ্বিত্রাৰ্য্যদাসীনমধ্যস্থ-  
দেষ্যবন্ধুযু । সাধুশ্চপি চ পাপেষু সমবুদ্ধির্বিশিষ্যতে ॥ ৯ ॥ যোগী যুঞ্জীত সতত-  
মাত্মানং রহসি স্থিতঃ । একাকী যতচিত্তাত্মা নিরাশীরপরিগ্রহঃ ॥ ১০ ॥ শুচৌ  
দেশে প্রতিষ্ঠাপ্য স্থিরমাসনমাত্মনঃ । নাত্যচ্ছিতং নাতিনীচং চৈলাজিনকুশোত্ত-  
রম্ ॥ ১১ ॥ তত্রৈকাগ্রং মনঃ ক্লৃৎস্বা যতচিত্তেন্দ্রিযক্রিযঃ । উপবিশ্যাসনে যুঞ্জ্যাত্মো-  
গমাত্মবিশুদ্ধয়ে ॥ ১২ ॥ সমং কাযশিরোগ্রীবং ধারযন্নচলং স্থিরঃ । সংশ্রেক্ষ্য  
নাসিকাগ্রং স্বং দিশশ্চানবলোকযন্ ॥ ১৩ ॥ প্রশান্তাত্মা বিগতভীত্বক্শচারিত্রতে  
স্থিতঃ । মনঃ সংযম্য মচ্ছিত্তো যুক্ত আসীত মৎপরঃ ॥ ১৪ ॥ যুঞ্জম্বেবং সদাত্মানং  
যোগী নিযতমানসঃ । শাস্তিং নির্বাণপরমাং মৎসংস্থামধিগচ্ছতি ॥ ১৫ ॥ নাত্য-  
শ্নতস্ত যোগোহস্তি ন চৈকান্তমনশ্চতঃ । ন চাতিস্বপ্নশীলস্য জাগ্রতো নৈব চার্জু-  
ন ॥ ১৬ ॥ যুক্তাহারবিহারস্য যুক্তচেষ্টস্য কৰ্ম্মসু । যুক্তস্বপ্নাববোধস্য যোগে  
ভবতি দুঃখহা ॥ ১৭ ॥ যদা বিনিযতং চিত্তমাত্মন্যেবাবতিষ্ঠতে । নিস্পৃহঃ সর্বকা-  
মেভ্যো যুক্ত ইত্যুচ্যতে তদা ॥ ১৮ ॥ যথা দীপো নিবাতস্থো নেত্রতে সোপম

मृतः । योगिनो यतचित्तस्य युञ्जते योगमात्मानः ॥ १९ ॥ यत्रोपरमते चित्तं  
 निरुद्धं योगसेवया । यत्र चैवात्मानान् पश्यन्मात्रानि तुष्यति ॥ २० ॥ सुख-  
 मात्यन्तिकं यत्तद्वृद्धिग्रहणमतीन्द्रियम् । वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तद्भ-  
 तः ॥ २१ ॥ यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः । यस्मिन् स्थितो न दुःखेन  
 पुरुणापि विचाल्यते ॥ २२ ॥ तं विद्यादुःखसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम् ।  
 स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा ॥ २३ ॥ संकल्पप्रभवान् कामांस्त्यक्त्वा  
 सर्वानशेषतः । मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समस्ततः ॥ २४ ॥ शनैः शनै-  
 रूपरमेद्वक्त्या धृतिगृहीतया । आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयेत् ॥ २५ ॥  
 यतो यतो निश्चरति मनश्चक्षुलमस्त्रिभुम् । ततस्ततो नियम्येतदात्मन्येव वशं  
 नयेत् ॥ २६ ॥ प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम् । उटैति शान्तरजसं  
 त्रक्लभूतमकल्मषम् ॥ २७ ॥ युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी विगतकल्मषः । सुखेन त्रक्ल-  
 संस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते ॥ २८ ॥ सर्वभूतस्यमात्मानं सर्वभूतानि चात्मानि ।  
 ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥ २९ ॥ यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं न मयि  
 पश्यति । तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्याति ॥ ३० ॥ सर्वभूतस्थितं यो  
 मां भजतेत्येकत्वमास्थितः । सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ॥ ३१ ॥  
 आद्यौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन । सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी  
 परमो मतः ॥ ३२ ॥ अर्जुन उवाच । योऽयं योगस्तु या प्रोक्तः साम्येन मधुसू-  
 दन । एतस्याहं न पश्यामि चक्षुलत्वात् स्थितिं स्थिराम् ॥ ३३ ॥ चक्षुलं हि मनः  
 कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् । तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥ ३४ ॥  
 भगवान् उवाच । असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् । अभ्यासेन तु कौ-  
 श्लेभ्य वैराग्येण च गृह्यते ॥ ३५ ॥ असंयतात्माना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः ।  
 वश्यात्माना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः ॥ ३६ ॥ अर्जुन उवाच । अयतिः श्रेष्ठ-  
 योपेतो योगाच्चलितमानसः । अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छ-  
 ति ॥ ३७ ॥ क्वचिन्नोभयविभ्रुर्कश्चिन्मात्रुमिव नश्यति । अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढो  
 त्रक्लणः पथि ॥ ३८ ॥ एतन्मे संशयं कृष्ण छेत्तुमर्हस्यशेषतः । त्वदन्यः संशयस्यास्य  
 छेत्ता न ह्युपपद्यते ॥ ३९ ॥ श्रीभगवान् उवाच । पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य  
 विद्यते । न हि कल्याणकृत् कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति ॥ ४० ॥ प्राप्य पुण्य-  
 कृतां लोकानुषिञ्चा शाश्वतीः समाः । शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभूष्टोऽभिजा-  
 यते ॥ ४१ ॥ अथ वा योगिनामेव कुले भवति धीमताम् । एतद्धि दुर्लभतरं

লোকে জন্ম যদিদৃশম্ ॥ ৪২ ॥ তত্র তং বুদ্ধিসংযোগং লভতে পৌর্বেদেহিকম্ ।  
 যততে চ ততো ভূষঃ সংসিক্তৌ কুরুনন্দন ॥ ৪৩ ॥ পূর্বাভ্যাসেন তেনৈব ক্রিয়তে  
 হুবশোহপি সঃ । জিজ্ঞাসুরপি যোগস্য শকত্রন্ধ্রাতিবর্ততে ॥ ৪৪ ॥ প্রযত্নাদ্যতমা-  
 নস্তু যোগী সংশুদ্ধিকিল্বিষঃ । অনেকজন্মসংসিক্তস্ততো যাতি পরাং গতিম্ ॥ ৪৫ ॥  
 তপস্বিত্যোহধিকো যোগী জ্ঞানিত্যোহপি মতোহধিকঃ । কস্মিন্ভ্যাশ্চাধিকো যোগী  
 তস্মাদ্যোগী ভবাজ্জুন ॥ ৪৬ ॥ যোগিনামপি সর্বেষাং মদ্যতেনাস্তুরাত্মনা । শঙ্কা-  
 বান্ ভজতে যো মাং স মে যুক্ততমো মতঃ ॥ ৪৭ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভগবদ্গীতাপর্বণি শ্রীকৃষ্ণাজ্জুনসংবাদে আত্মসংযম-  
 যোগো নামৈকোনত্রিংশত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ২৯ ॥



শ্রীভগবানুবাচ । ময্যাসক্তমনাঃ পার্থ যোগং যুঞ্জন্মদাশ্রয়ঃ । অসংশয়ং সমগ্রং  
 মাং যথা জ্ঞাস্যসি তচ্ছৃণু ॥ ১ ॥ জ্ঞানন্তেহহং সবিজ্ঞানমিদং বক্ষ্যাম্যশেষতঃ ।  
 যজ্জ্ঞাত্বা নেহ ভূযোহন্যজ্জ্ঞাতব্যমবশিষ্যতে ॥ ২ ॥ মনুষ্যাণাং মহসৈষু কশ্চিদ্য-  
 ততি সিদ্ধয়ে । যততামপি সিদ্ধানাং কশ্চিন্মাং বেত্তি তদ্বতঃ ॥ ৩ ॥ ভূমিরাপোহ-  
 নলো বায়ুঃ খং মনো বুদ্ধিরেব চ । অহঙ্কার ইতীযং মে ভিন্না প্রকৃতিরক্ষধা ॥ ৪ ॥  
 অপরেষমিতস্ত্বন্যাং প্রকৃতিং বিদ্ধি মে পরাম্ । জীবভূতাং মহাবাহো যযেদং  
 ধার্ষ্যতে জগৎ ॥ ৫ ॥ এতদ্যোনীনি ভূতানি সর্বাণীতু্যপধারয । অহং ক্লেশস্য  
 জগতঃ প্রভবঃ প্রলয়স্তথা ॥ ৬ ॥ মত্তঃ পরতরং নান্যং কিঞ্চিদস্তি ধনঞ্জয় । নযি  
 সর্বমিদং প্রোতং সূত্রে মণিগণা ইব ॥ ৭ ॥ রসোহহমপ্সু কৌন্তেয প্রভাস্মি শশি-  
 সূর্য্যযোঃ । প্রণবঃ সর্ববেদেষু শকঃ খে পোরুষং নৃষু ॥ ৮ ॥ পুণ্যো গন্ধঃ পৃথি-  
 ব্যাঞ্চ তেজশ্চাস্মি বিভাবসৌ । জীবনং সর্বভূতেষু তপশ্চাস্মি তপস্বিষু ॥ ৯ ॥  
 বীজং মাং সর্বভূতানাং বিদ্ধি পার্থ সনাতনম্ । বুদ্ধির্বুদ্ধিমতামস্মি তেজস্তেজস্বি-  
 নামহম্ ॥ ১০ ॥ বলং বলবতাঞ্চাহং কামরাগবিবর্জিতম্ । ধর্মা বিরুদ্ধো ভূতেষু  
 কামোহস্মি ভরতর্ষভ ॥ ১১ ॥ যে চৈব সাত্ত্বিকা ভাবা রাজসাস্তামসাশ্চ যে । যত্র এবৈতি  
 তান্ বিদ্ধি নত্বহং তেষু তে মযি ॥ ১২ ॥ ত্রিভিগুণমযেভাবৈরেতিঃ সর্বমিদং  
 জগৎ । মোহিতং নাভিজানাতি মামেভ্যঃ পরমব্যষম্ ॥ ১৩ ॥ দৈবী হ্যেষা গুণ-  
 মযী মম মাষা দুরত্যয়া । মামেব যে প্রপদ্যন্তে মাষামেতাং তরন্তি তে ॥ ১৪ ॥ ন  
 মাং দুষ্কৃতিনো মুঢ়াঃ প্রপদ্যন্তে নরাধমাঃ । মাযষাপহ্নতজ্ঞানা আসুরং ভাবনা-  
 শ্রিতাঃ ॥ ১৫ ॥ চতুর্বিধা ভজন্তে মাং জনাঃ স্কৃতিনোহজ্জুন । আর্তো জিজ্ঞাসুরর্থার্থী



ज्ज्ञानी च भरतर्षभ ॥ १७ ॥ तेषां ज्ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते । प्रियो हि ज्ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः ॥ १९ ॥ उदारः सर्व एवैते ज्ज्ञानी श्चात्स्नव मे मतम् । आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवान्नुत्तमां गतिम् ॥ १८ ॥ बहूनां जन्मनामन्ते ज्ज्ञानवान् मां प्रपद्यते । वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ॥ १२ ॥ कांमैस्तैस्तैर्हृतज्ज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः । तं तं नियममास्थाय प्रकृत्यां नियताः स्वया ॥ २० ॥ यो यो यां यां तनुं तक्रः श्रद्धयार्चितुमिच्छति । तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ॥ २१ ॥ स तथा श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते । लभते च ततः कामान् मथैव विहितान् हि तान् ॥ २२ ॥ अशुभदुर्फलं तेषां तदुवत्यल्लमेधसाम् । देवान् देवयज्ञो यांति मद्भक्ता यांति मामपि ॥ २३ ॥ अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः । परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥ २४ ॥ नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः । मूढोऽहं नातिजानाति लोकौ मामङ्गमव्ययम् ॥ २५ ॥ वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चाज्जुन । भविष्याणि च भूतानि नास्तु वेद न कश्चन ॥ २६ ॥ ईच्छाद्देषसमुखेन द्वन्द्वमोहेन भारत । सर्वभूतानि सम्मोहं सर्गे यांति परशुप ॥ २७ ॥ येषां ह्यशुभतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् । ते द्वन्द्वमोहनिश्चुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥ २८ ॥ जरा मरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये । ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मां कर्म चाखिलम् ॥ २९ ॥ साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ज्ज्ञेयं ये विदुः । प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः ॥ ३० ॥

इति भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विज्ञान-

योगो नाम त्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ७० ॥



अर्जुन उवाच । किमुद्वेक किमध्यात्मां किं कर्म पुरुषोत्तम । अधिभूतं किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते ॥ १ ॥ अधियज्ज्ज्ञेयः कथं कोऽत्र देहेऽग्निं मधुसूदन । प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि निषतात्माभिः ॥ २ ॥ भगवान्मुवाच । अक्षरं परमं ब्रह्म स्वभावोऽध्यात्मा मुच्यते । भूतभावोऽद्वयकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः ॥ ३ ॥ अधिभूतं करो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम् । अधियज्ज्ञेयं हमेवात्र देहे देहभूताम्बर ॥ ४ ॥ अशुभकाले च मामेव स्मरन्मुक्ता कलेवरम् । यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः ॥ ५ ॥ यं यथापि स्मरन् भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम् । तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः ॥ ७ ॥ तस्मात् सर्वेषु कालेषु मामनु-

স্মর যুধ্য চ । ময্যপিতমনোবুদ্ধির্শ্মামেবৈষ্যস্যসংশয়ঃ ॥ ৭ ॥ অভ্যাসযোগযুক্তেন  
চেতসা নান্যগামিনা । পরমং পুরুষং দিব্যং যাতি পার্থাস্মুচিন্তয়ন্ ॥ ৮ ॥ কবিং  
পুরাণমনুশাসিতারমণোরণীষাংসমনুস্মরেদ্ব্যঃ । সর্বস্য ধাতারমচিন্ত্যকপমাদিত্য-  
বর্ণং তমসঃ পরস্তাৎ ॥ ৯ ॥ প্রযাগকালে মনসাচলেন ভক্ত্যা যুক্তো যোগবলেন  
চৈব । ভুবোশ্মধ্যে প্রাণমাবেশ্য সম্যক্ স তং পরং পুরুষমুপৈতি দিব্যম্ ॥ ১০ ॥  
যদক্ষরং বেদবিদো বদন্তি বিশন্তি যদ্ব্যতযো বীতরাগাঃ । যদিচ্ছন্তো ব্রহ্মচর্য্যং  
চরন্তি তন্তে পদং সঙ্গ্ৰহেণ প্রবক্ষ্যে ॥ ১১ ॥ সর্বদ্বারাণি সংযম্য মনো হৃদি নিরুধ্য  
চ । মূৰ্দ্ধ্নাধাযাত্মনঃ প্রাণমাস্থিতো যোগধারণাম্ ॥ ১২ ॥ ওমিত্যেকাক্ষরং ব্রহ্ম  
ব্যাহরন্মামনুস্মরন্ । যঃ প্রযাতি ত্যজন্ দেহং স যাতি পরমাং গতিম্ ॥ ১৩ ॥ অন-  
ন্যচেতাঃ সততং যো মাং স্মরতি নিত্যশঃ । তস্যাহং সুলভঃ পার্থ নিত্যযুক্তস্য যো-  
গিনঃ ॥ ১৪ ॥ মামুপেত্য পুনর্জন্ম দুঃখালযমশাশ্বতন্ । নাপুবাতি মহাত্মানঃ সং-  
সিদ্ধিং পরমাং গতাঃ ॥ ১৫ ॥ আব্রহ্মভুবনাল্লোকাঃ পুনরাবর্তিনোহজ্জুন । মামু-  
পেত্য তু কৌন্তেয পুনর্জন্ম ন বিদ্যতে ॥ ১৬ ॥ সহস্রযুগপর্য্যন্তমহর্ষদ্রুক্ষণো বিদুঃ ।  
রাত্রিং যুগসহস্রাস্তাং তেহহোরাত্রবিদো জনাঃ ॥ ১৭ ॥ অব্যক্তাদ্ব্যক্তযঃ সর্বাঃ প্রভ-  
বন্ত্যহরাগমে । রাত্র্যাগমে প্রলীযন্তে তত্রৈবাব্যক্তসংজ্ঞকে ॥ ১৮ ॥ ভূতগ্রামঃ স  
এবাযং ভূত্বা ভূত্বা প্রলীযতে । রাত্র্যাগমেৎবশঃ পার্থ প্রভবত্যহরাগমে ॥ ১৯ ॥  
পরস্তস্মাত্ত্ব ভাবোহন্যোহব্যক্তোহব্যক্তাৎ সনাতনঃ । যঃ স সর্বেষু ভূতেষু নশ্যৎসু  
ন বিনশ্যতি ॥ ২০ ॥ অব্যক্তোহক্ষর ইত্যুক্তস্তমাত্ত্বঃ পরমাত্মিতম্ । যং প্রাপ্য ন  
নিবর্তন্তে তদ্ধাম পরমং মম ॥ ২১ ॥ পুরুষঃ স পরঃ পার্থ ভক্ত্যা লভ্যস্ত্বনন্যথা ।  
যস্যাস্তঃস্থানি ভূতানি যেন সর্বমিদং ততম্ ॥ ২২ ॥ যত্র কালে ত্বনাবৃতিনাবৃতিশ্চৈব  
যোগিনঃ । প্রযাতা যান্তি তং কালং বক্ষ্যামি ভ্রতর্ষভ ॥ ২৩ ॥ অগ্নির্জ্যোতিরহঃ  
শুক্লঃ ষণ্মাসা উত্তরাষণম্ । তত্র প্রযাতা গচ্ছন্তি ব্রহ্ম ব্রহ্মবিদো জনাঃ ॥ ২৪ ॥ ধূমো  
রাত্রিস্তথা কৃষ্ণঃ ষণ্মাসা দক্ষিণাষনম্ । তত্র চান্দ্রমসং জ্যোতির্যোগী প্রাপ্য নিব-  
র্ততে ॥ ২৫ ॥ শুক্লকৃষ্ণে গতী হেতে জগতঃ শাশ্বতে মতে । একযা যাত্যনাবৃতি-  
মন্যথাবর্ততে পুনঃ ॥ ২৬ ॥ নৈতে সৃতী পার্থ জানন্ যোগী মুহুতি কশটন । তস্মাৎ  
সর্বেষু কালেষু যোগযুক্তো ভবাজ্জুন ॥ ২৭ ॥ বেদেষু যজ্ঞেষু তপঃসু চৈব দানেষু  
যৎ পুণ্যফলং প্রদীর্ঘম্ । অভ্যেতি তৎ সর্বমিদং বিদিত্বা যোগী পরং স্থানমুপৈতি  
চাদ্যম্ ॥ ২৮ ॥ \* ইতি ভীষ্মপর্বণি ভগবদ্গীতাপর্বণি শ্রীকৃষ্ণাজ্জুনসংবাদে

ব্রহ্মযোগো নামৈকত্রিংশত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩১ ॥

भगवानुवाच । इदं ते शुद्धतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे । ज्ञानं विज्ञानसहितं  
 यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ॥ १ ॥ राजविद्या राजशुद्धं पवित्रमिदमुक्तमम् ।  
 प्रत्यक्कावगमं धर्म्यं सुसूखं कर्तुमव्ययम् ॥ २ ॥ अश्रद्धधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य  
 परस्तप । अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्जनि ॥ ३ ॥ मया ततमिदं सर्वं  
 जगदव्यक्तमूर्तिना । मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः ॥ ४ ॥ न च मत्स्थानि  
 भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम् । भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः ॥ ५ ॥  
 यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान् । तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्यू-  
 पधारय ॥ ६ ॥ सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यांति मामिकाम् । कल्पकषे पुनस्तानि  
 कल्पादौ विसृजाम्यहम् ॥ ७ ॥ प्रकृतिं स्वामवर्क्यं विसृजामि पुनः पुनः । भूत-  
 ग्राममिमं क्लृप्स्वमवशं प्रकृतेर्बशात् ॥ ८ ॥ न च मां तानि कर्माणि निवर्जन्ति धन-  
 ष्य । उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु ॥ ९ ॥ मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सृजते सच-  
 राचरम् । हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते ॥ १० ॥ अवजानन्ति मां मूढा  
 मामुषीन्तुन्माश्रितम् । परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥ ११ ॥ मोघाशा  
 मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः । राक्षसीमासुरीक्षेव प्रकृतिं मोहिनीं  
 श्रिताः ॥ १२ ॥ महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः । तजस्त्यानन्यमनसो  
 ज्ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम् ॥ १३ ॥ सततं कौर्तव्यन्तो मां यतन्तुश्च दृढव्रताः । नमस्य-  
 त्तुश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते ॥ १४ ॥ ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मा-  
 मुपासते । एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम् ॥ १५ ॥ अहं क्रतुरहं यज्ञः  
 स्वधाहमहमौषधम् । मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हतम् ॥ १६ ॥ पिताहमस्य जग-  
 तो माता धाता पितामहः । वेद्यं पवित्रमोक्षारं ऋक्साम यजुरेव च ॥ १७ ॥  
 गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत् । प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं  
 बीजमव्ययम् ॥ १८ ॥ तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च । अमृतक्षेव  
 मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन ॥ १९ ॥ त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा यज्ञैरिष्ट्वा  
 स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते । ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकमश्नन्ति दिव्यान् दिवि देवभो-  
 गान् ॥ २० ॥ ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति ।  
 एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते ॥ २१ ॥ अनन्याशित्तुयन्तो  
 मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्य-  
 हम् ॥ २२ ॥ येऽप्यन्यदेवताभक्ता यजन्ते श्रद्धयाश्रिताः । तेऽपि मामेव कौन्तेय  
 यजन्त्याविधिपूर्वकम् ॥ २३ ॥ अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च । न तु

মামভিজানস্তি তদ্বৈনাতশ্চ্যবস্তি তে ॥ ২৪ ॥ যাস্তি দেবব্রতা দেবান্ পিতৃন্থ যাস্তি  
 পিতৃব্রতাঃ । ভূতানি যাস্তি ভূতেজ্যা যাস্তি মদ্ব্যাজিনোহপি মাম্ ॥ ২৫ ॥ পত্রং  
 পুষ্পং ফলং তোষং যো মে ভক্ত্যা প্রযচ্ছতি । তদহং ভক্ত্যুপহৃতমশ্বামি প্রযতা-  
 স্বনঃ ॥ ২৬ ॥ যৎ করোষি যদশ্বাসি যজ্জুহোষি দদাসি যৎ । যত্তপস্যসি কৌন্তেয  
 তৎ কুরুষ্ব যদর্পণম্ ॥ ২৭ ॥ শুভাশুভফলৈরেবং মোক্ষ্যসে কৰ্ম্মবন্ধনৈঃ । সংন্যা-  
 সযোগযুক্তাত্মা বিমুক্তো মামুপৈষ্যসি ॥ ২৮ ॥ সমোহহং সর্বভূতেষু ন মে দ্বেষ্যোহ-  
 স্তি, ন প্রিযঃ । যে ভজন্তি তু মাং ভক্ত্যা মঘি তে তেষু চাপ্যহম্ ॥ ২৯ ॥ অপি চেৎ  
 স্মদুরাচারো ভজতে মামনন্যভাক্ । সাধুরেব স মন্তব্যঃ সম্যগ্ ব্যবসিতো হি সঃ ॥ ৩০ ॥  
 ক্রিপ্রং ভবতি ধৰ্ম্মাত্মা শশ্বচ্ছাস্তিৎ নিগচ্ছতি । কৌন্তেয প্রতিজানীহি ন মে ভক্তঃ  
 প্রণশ্যতি ॥ ৩১ ॥ মাং হি পার্থ ব্যপাশ্রিত্য য়েহপি স্যুঃ পাপযোনয়ঃ । স্ত্রিযো  
 বৈশ্যাস্তথা শূদ্রাস্তেহপি যাস্তি পরাং গতিম্ ॥ ৩২ ॥ কিং পুনত্রাক্ষণাঃ পুণ্যা ভক্তা  
 রাজর্ষয়স্তথা । অনিত্যমসুখং লোকমিমং প্রাপ্য ভজস্ব মাম্ ॥ ৩৩ ॥ মন্যনা  
 ভব মন্তুকো মদ্ব্যাজী মাং নমস্কুরু । মামেবৈষ্যসি যুক্তৈবমাত্মানং মৎপরাযণঃ ॥ ৩৪ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভগবদ্গীতাপর্বণি শ্রীকৃষ্ণাজ্জুনসংবাদে রাজগুহযোগো

নাম দ্বাত্রিংশত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩২ ॥



ভগবানুবাচ । ভূষ এব মহাবাহো শূনু মে পরমং বচঃ । যত্তেহহং প্রীযমাণায়  
 বক্ষ্যামি হিতকাম্যয়া ॥ ১ ॥ ন মে বিদুঃ সুরগণাঃ প্রভরং ন মহর্ষয়ঃ । অহমাদির্হি  
 দেবানাং মহর্ষীণাঞ্চ সর্বশঃ ॥ ২ ॥ যো মামজমনাদিঞ্চ বেত্তি লোকমহেশ্বরম্ ।  
 অসংমূঢ়ঃ স মর্ত্যেষু সর্বপাটৈঃ প্রমুচ্যতে ॥ ৩ ॥ বুদ্ধিজ্ঞানমসংমোহঃ ক্রমা সত্যং  
 দমঃ শমঃ । সুখং দুঃখং ভবোহভাবো ভযঞ্চাভযমেব চ ॥ ৪ ॥ অহিংসা সমতা  
 তুষ্টিস্তপো দানং যশোহযশঃ । ভবন্তি ভাবা ভূতানাং মত্ত এব পৃথগিধাঃ ॥ ৫ ॥  
 মহর্ষয়ঃ সপ্ত পূর্বে চত্বারো মনবস্তথা । মদ্ভাবা মানসা জাতা যেষাং লোক ইমাঃ  
 প্রজাঃ ॥ ৬ ॥ এতাং বিভূতিং যোগঞ্চ মম যো বেত্তি তত্ত্বতঃ । সোহবিকল্পেন  
 যোগেন যুক্ত্যতে নাত্র সংশয়ঃ ॥ ৭ ॥ অহং সর্বস্য প্রভবো মত্তঃ সর্বং প্রবর্ত্ততে । ইতি  
 মহা ভজন্তে মাং বুধা ভাবসমন্विताঃ ॥ ৮ ॥ মচ্ছিত্তা মদাতপ্রাণা বোধযন্তঃ পর-  
 স্পরম্ । কথযস্তশ্চ মাং নিত্যং তুষ্যন্তি চ রমন্তি চ ॥ ৯ ॥ তেষাং সততযুক্তানাং  
 ভজতাং প্রীতিপূর্বকম্ । দদামি বুদ্ধিযোগস্তং যেন মামুপযাস্তি তে ॥ ১০ ॥ তে-  
 ষামেবানুকম্পার্থমহমজ্ঞানজন্তমঃ । নাশযাম্যাত্মভাবস্হে জ্ঞানদীপেন ভাস্ব-

ता ॥ ११ ॥ अर्जुन उवाच । परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान् । पुरुषं  
 शाश्वतं दिव्यादिदेवमजं विभुम् ॥ १२ ॥ आहस्तुमृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा ।  
 असितो देवलो व्यासः स्वयंशैव त्रयीषि मे ॥ १३ ॥ सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां  
 वदसि केशव । न हि ते भगवन् व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः ॥ १४ ॥ स्वमेवात्मा-  
 नात्मानं वेथ द्वं पुरुषोत्तम । भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥ १५ ॥  
 ब्रह्मस्येश्वर्येण दिव्या ह्यात्माविभूतयः । यातिर्बिभूतिभिर्लोकानिमांस्तुं व्याप्य तिष्ठ-  
 सि ॥ १६ ॥ कथं विद्यामहं योगिंस्तुं सदा परिचिन्तयन् । केषु केषु च भावेषु  
 चिन्त्याहसि भगवन्मया ॥ १७ ॥ विस्तरेणात्मानो योगं विभूतिषु जनार्दन । भूयः  
 कथय तृप्तिर्हि शृणुतो नास्ति मेहमृतम् ॥ १८ ॥ भगवान् उवाच । इत्थं ते कथयिष्यामि  
 दिव्या ह्यात्माविभूतयः । प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ॥ १९ ॥ अह-  
 मात्मा गुडकेश सर्वभूताशयस्थितः । अहमादिश्च मध्यं भूतानामस्तु एव च ॥ २० ॥  
 आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान् । मरीचिर्मरुतामग्निं नक्षत्राणा-  
 महं शशी ॥ २१ ॥ वेदानां सामवेदोऽग्निं देवानामग्निं वासवः । इन्द्रियाणां  
 मनश्चाग्निं भूतानामग्निं चेतना ॥ २२ ॥ रुद्राणां शक्रश्चाग्निं वित्रेशो यक्रश्चसाम् ।  
 वसूनां पावकश्चाग्निं मेरुः शिखरिणामहम् ॥ २३ ॥ पुरोधसां मुख्यं मां विद्धि  
 पार्थ बृहस्पतिम् । सेनानीनामहं क्रन्दः सरसामग्निं सागरः ॥ २४ ॥ महर्षीणां भृगु-  
 रहं गिरामश्रेयस्कर्मम् । यज्ञानां जपयज्ञोऽग्निं स्थावराणां हिमालयः ॥ २५ ॥  
 अश्वथः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां नारदः । गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो  
 मुनिः ॥ २६ ॥ उच्छेःश्रवसमस्थानां विद्धि माममृतोद्भवम् । ऋषीणां गजेन्द्राणां  
 नराणां नराधिपम् ॥ २७ ॥ आयुधानामहं ब्रह्म धेनुनामग्निं कामधुक । प्रजन-  
 श्चाग्निं कन्दर्पः सर्पाणामग्निं वासुकिः ॥ २८ ॥ अनन्तश्चाग्निं नागानां वरुणो याद-  
 सामहम् । पितॄणामर्ष्यमा चाग्निं यमः संयमतामहम् ॥ २९ ॥ प्रह्लादश्चाग्निं दैत्यानां  
 कालः कलयतामहम् । मृगाणां मृगेशोऽहं वैवतेवशं पङ्क्तिनाम् ॥ ३० ॥ पवनः  
 पवतामग्निं रामः शश्वत्भृतामहम् । ऋषीणां मकरश्चाग्निं स्रोतसामग्निं जाह्न-  
 वी ॥ ३१ ॥ सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यंशैवाहमर्जुन । अध्यात्माविद्या विद्यानां वादः  
 प्रवदतामहम् ॥ ३२ ॥ अक्षराणामकारोऽग्निं द्वन्द्वः सामासिकस्य च । अहमेवा-  
 क्शयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः ॥ ३३ ॥ मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्य-  
 ताम् । कीर्तिः श्रीर्वाक् च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्रमा ॥ ३४ ॥ बृहत्साम तथा  
 साम्नां गायत्री ह्रन्सामहम् । मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः ॥ ३५ ॥

দ্যুতং ছলযতামস্মি তেজস্তুজস্বিনামহম্ । জযোহস্মি ব্যবসায়োহস্মি সত্ত্বং সত্ত্ব-  
বতামহম্ ॥ ৩৬ ॥ বৃকীনাং বাসুদেবোহস্মি পাণ্ডবানাং ধনঞ্জযঃ । মুনীনামপ্যহং  
ব্যাসঃ কবীনামুশনা কবিঃ ॥ ৩৭ ॥ দণ্ডো দমযতামস্মি নীতিরস্মি জিগীষতাম্ ।  
মৌনং চৈবাস্মি গুহানাং জ্ঞানং জ্ঞানবতামহম্ ॥ ৩৮ ॥ যচ্চাপি সর্বভূতানাং  
বীজং তদহমজ্জুন । ন তদস্তি বিনা যৎ স্যাগ্নয়া ভূতং চরাচরম্ ॥ ৩৯ ॥ নাস্তোহস্তি  
মম দিব্যানাং বিভূতীনাং পরন্তপ । এষ তুদ্দেশতঃ প্রোক্তো বিভূতের্বিস্তরো  
ময়া ॥ ৪০ ॥ যদ্বদ্বিভূতিমৎ সত্ত্বং শ্রীমদূর্জিতমেব বা । তত্তদেবাবগচ্ছ ত্বং মম তে-  
জোহংশসন্তবম্ ॥ ৪১ ॥ অথ বা বহুনৈতেন কিং জ্ঞাতেন তবাজ্জুন । বিষ্ণুভ্যাহ-  
মিদং ক্লৃৎস্নমেকাংশেন স্থিতো জগৎ ॥ ৪২ ॥ .

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভগবদ্গীতাপর্বণি শ্রীকৃষ্ণাজ্জুনসংবাদে বিভূতি-

যোগো নাম ত্রযস্ত্রিংশত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩৩ ॥



অজ্জুন উবাচ । মদনুগ্রহায় পরমং গুহমধ্যাত্মসংক্রিতম্ । যত্ত্বযোক্তং বচস্তু  
মোহোহযং বিগতো মম ॥ ১ ॥ ভবাপ্যযৌ হি ভূতানাং শ্রুতৌ বিস্তরশো ময়া ।  
ত্বত্ত্বঃ কমলপত্রাক্ষ মাহাত্ম্যমপি চাব্যযম্ ॥ ২ ॥ এবমেতদ্ব্যথাথ ত্বমাত্মানং পর-  
মেশ্বর । দ্রক্ষুমিচ্ছামি তে রূপমৈশ্বরং পুরুষোত্তম ॥ ৩ ॥ মন্যসে যদি তচ্ছক্যং  
ময়া দ্রক্ষুমিতি প্রভো । যোগেশ্বর ততো মে ত্বং দর্শয়াত্মানমব্যযম্ ॥ ৪ ॥ ভগবা-  
নুবাচ । পশ্য মে পার্থ রূপাণি শতশোহথ সহস্রশঃ । নানাবিধানি দিব্যানি নানা-  
বর্ণাক্রুতীনি চ ॥ ৫ ॥ পশ্যাদিত্যান্ বসূন্ রুদ্রানশ্বিনৌ মরুতস্তথা । বহুন্যদৃষ্ট-  
পূর্বাণি পশ্যাশ্চর্য্যাণি ভারত ॥ ৬ ॥ ইহৈকস্বং জগৎ ক্লৃৎস্নং পশ্যাদ্য সচরাচ-  
রম্ । মম দেহে গুডাকেশ যচ্চান্যদ্রক্ষুমিচ্ছাসি ॥ ৭ ॥ ন তু মাং শক্যসে দ্রক্ষুমনে-  
নৈব স্বচক্ষুষা । দিব্যং দদামি তে চক্ষুঃ পশ্য মে যোগমৈশ্বরম্ ॥ ৮ ॥ সঞ্জয  
উবাচ । এবমুক্ত্বা ততো রাজস্নহাযোগেশ্বরো হরিঃ । দর্শয়ামাস পার্থায় পরমং  
রূপমৈশ্বরম্ ॥ ৯ ॥ অনেকবক্রনযনমনেকান্দ্রুতদর্শনম্ । অনেকদিব্যাভরণং দি-  
ব্যানেকোদ্যতায়ুধম্ ॥ ১০ ॥ দিব্যমাল্যায়রধরং দিব্যগন্ধানুলেপনম্ । সর্বাশ্চর্য্য-  
মযং দেবমনস্তং বিশ্বতোমুখম্ ॥ ১১ ॥ দিবি সূর্য্যসহস্রস্য ভবেদ্যুগপদুখিতা ।  
যদি তাঃ সদৃশী সা স্যান্ডাসস্তস্য মহাত্মনঃ ॥ ১২ ॥ তত্রৈকস্বং জগৎ ক্লৃৎস্নং  
প্রবিভক্তমনেকধা । অপশ্যদেবদেবস্য শরীরে পাণ্ডবস্তদা ॥ ১৩ ॥ ততঃ স বিস্ময়া-  
বিষ্টো হৃষ্টরোমা ধনঞ্জযঃ । প্রণম্য শিরসা দেবং কৃতাজ্জলিরভাষত ॥ ১৪ ॥ অজ্জুন

उवाच । पश्यामि देवांस्तु व देव देहे सर्वांस्तथा भूतविशेषसंघान् । ब्रह्माण्मीशं  
 कमलासनश्चमृषींश्च सर्वाभूरगांश्च दिव्यान् ॥ १५ ॥ अनेकवाहूदरवक्त्रुनेत्रं पश्यामि  
 द्वां सर्वतोहनस्तुरूपम् । नास्तु न मध्यं न पुनस्तुवादिं पश्यामि विश्वेश्वर विश्व-  
 रूपम् ॥ १६ ॥ किर्रीटिनं गदिनं चक्रिणं तैजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम् । पश्या-  
 मि द्वां दुर्निरीक्ष्यं समस्तादीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् ॥ १७ ॥ द्वयम्परं परम-  
 वेदितव्यं द्वयस्य विश्वस्य परं निधानम् । द्वयव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता सनातनस्तु-  
 पुरुषो मतो मे ॥ १८ ॥ अनादिमध्यास्तुमनस्तुवीर्यमनस्तुवाहं शशिसूर्यानेत्रम् ।  
 पश्यामि द्वां दीप्तहताशवक्त्रुं स्वतेजसा विश्वमिदं तपस्तम् ॥ १९ ॥ द्यावापृथि-  
 व्योरिदमस्तुरं हि व्याप्तं द्वयैकेन दिशश्च सर्वाः । दृष्ट्वाद्भूतं रूपमिदं तवोग्रं  
 लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मान् ॥ २० ॥ अमी हि द्वां सुरसंघा विशन्ति केचिद्धी-  
 ताः प्राञ्जलयो गृणन्ति । स्वस्त्यीतुक्त्वा महर्षिसिद्धसंघाः स्तवन्ति द्वां स्तुतिभिः पुष्क-  
 लाभिः ॥ २१ ॥ रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या विश्वेश्विनो मरुतश्चाय्यपाश्च ।  
 गन्धर्वशक्रासुरसिद्धसंघा वीक्षन्ते द्वां विस्मिताश्च व सर्वे ॥ २२ ॥ रूपं महते  
 बहवक्त्रुनेत्रं महाबाहो बहवाहूरुपादम् । बहुरं बहूदंष्ट्राकरालं दृष्ट्वा लोकाः  
 प्रव्यथितास्तथाहम् ॥ २३ ॥ नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं व्याताननं दीप्तविशाल-  
 नेत्रम् । दृष्ट्वा हि द्वां प्रव्यथितास्तुरात्रा धृतिं न विन्दामि शमं विषे ॥ २४ ॥  
 दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि । दिशो न जाने न  
 लभे च शर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥ २५ ॥ अमी च द्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः  
 सर्वे सदैवावनिपालसंघैः । तीम्नो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ सहास्रदीयैरपि  
 योधमुत्थैः ॥ २६ ॥ वक्त्राणि ते स्वरमाणा विशन्ति दंष्ट्राकरालानि भयानकानि ।  
 केचिद्विलग्ना दशनास्तुरेषु संदृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः ॥ २७ ॥ यथा नदीनां बह-  
 वोऽश्वुवेगाः समुद्रमेवाभिमुखा ज्वलन्ति । तथा तवामी नरलोकवीरा विशन्ति वक्त्रा-  
 ण्यभितो ज्वलन्ति ॥ २८ ॥ यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा विशन्ति नाशाय समृद्धवे-  
 गाः । तथैव नाशाय विशन्ति लोकान्तुवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः ॥ २९ ॥ लेलि-  
 हसे असमानः समस्ताल्लोकान् समग्रान् वदनैर्ज्वलन्तिः । तेजोभिरापुर्य्य जगत्  
 समग्रं भासस्तुवोग्राः प्रतपन्ति विषे ॥ ३० ॥ आख्याहि मे को भवान्ग्रकोपो  
 नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद । विज्जातुमिच्छामि त्वस्तुमाद्यं न हि प्रजानामि  
 तव प्रवृत्तिम् ॥ ३१ ॥ भगवानुवाच । कालोऽस्मि लोकक्षयकृत् प्रवृद्धो लोकान्  
 समाहर्तुमिह प्रवृत्तः । ऋतेऽपि द्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु

ষোধাঃ ॥ ৩২ ॥ তস্মাদ্ভুমুক্তিষ্ঠ যশো লভস্ব জিত্বা শত্রূন্ ভুক্ত্বু রাজ্যং সমৃদ্ধম্ ।  
 মথৈবৈতে নিহতাঃ পূর্বমেব নিমিত্তমাত্রং ভব সব্যসাচিন্ ॥ ৩৩ ॥ দ্রোণঞ্চ ভীষ্মঞ্চ  
 জয়দ্রথঞ্চ কর্ণস্তথান্যানপি যোধবীরান্ । মযা হতাংস্ত্বং জহি মা ব্যথিষ্ঠা যুধ্যস্ব  
 জেতাসি রণে সপত্নান্ ॥ ৩৪ ॥ সঞ্জয় উবাচ । এতচ্ছ্রুত্বা বচনং কেশবস্য ক্রুতাঞ্জ-  
 লির্বেপমানঃ কিরীটী । নমস্কৃত্বা ভূয় এবাহ কৃষ্ণং সগদাদং ভীতভীতঃ প্রণম্য ॥ ৩৫ ॥  
 অর্জুন উবাচ । স্থানে হৃষীকেশ তব প্রকীর্ত্যা জগৎ প্রহস্যত্যনুরজ্যতে চ । রক্ষাং-  
 সি ভীতানি দিশো দ্রবন্তি সর্বে নমস্যন্তি চ সিদ্ধসংঘাঃ ॥ ৩৬ ॥ কস্মাচ্চ তে ন  
 নমেরম্মহান্নান্ গরীষসে ব্রহ্মণোহপ্যাদিকত্রে । অনস্ত দেবেশ জগন্নিবাস হুমক্ষরং  
 সদসত্তৎপরং যৎ ॥ ৩৭ ॥ হুমাদিদেবঃ পুরুষঃ পুরাণস্তৃমস্য বিশ্বস্য পরং নিধা-  
 নম্ । বেত্তাসি বেদ্যঞ্চ পরঞ্চ ধাম ত্বয়া ততং বিশ্বমনস্তরূপ ॥ ৩৮ ॥ বায়ুর্যমোহ-  
 গ্নির্বিষ্ণুঃ শশাঙ্কঃ প্রজাপতিস্ত্বং প্রপিতামহশ্চ । নমো নমস্তেহস্ত্ব সহস্রকৃষ্ণঃ পুনশ্চ  
 ভূয়োহপি নমো নমস্তে ॥ ৩৯ ॥ নমঃ পুরস্তাদথ পৃষ্ঠতস্তে নমোহস্ত্ব তে সর্বত এব  
 সর্ব । অনন্তবীর্যামিতবিক্রমস্ত্বং সর্বং সমাপ্নোষি ততোহসি সর্বঃ ॥ ৪০ ॥ সখেতি  
 মত্বা প্রসতং যদুক্তং হে কৃষ্ণ হে যাদব হে সখেতি । অজানতা মহিমানং তবেদং  
 মযা প্রমাদাৎ প্রণয়েন বাপি ॥ ৪১ ॥ যচ্চাবহাসার্থমসৎকৃতোহসি বিহারশয্যা-  
 সনভোজনেষু । একোহথ বাপ্যচ্যুত তৎসমক্ষং তৎ ক্রাময়ে ত্বামহমপ্রমেযম্ ॥ ৪২ ॥  
 পিতাসি লোকস্য চরাচরস্য হুমস্য পূজ্যশ্চ গুরুগরীযান্ । ন হুৎসমোহস্ত্যভ্যধিকঃ  
 কুতোহন্যো লোকত্রয়েহপ্যপ্রতিমপ্রভাব ॥ ৪৩ ॥ তস্মাৎ প্রণম্য প্রনিধায় কাযং  
 প্রসাদয়ে ত্বামহমীশমীড্যম্ । পিতেব পুত্রস্য সখেব সখ্যঃ প্রিয়ঃ প্রিযাযার্থসি দেব  
 সোতুম্ ॥ ৪৪ ॥ অদৃষ্টপূর্বং হৃষিতোহস্মি দৃষ্ট্বা ভযেন চ প্রব্যথিতং মনো মে ।  
 তদেব মে দর্শয় দেব রূপং প্রসীদ দেবেশ জগন্নিবাস ॥ ৪৫ ॥ কিরীটিনং গদিনং  
 চক্রহস্তমিচ্ছামি ত্বাং দ্রষ্টুমহং তথৈব । তেনৈব রূপেণ চতুর্ভুজেন সহস্রবাহো  
 ভব বিশ্বমূর্তে ॥ ৪৬ ॥ ভগবান্নুবাচ । মযা প্রসম্মেন তবাজ্জুনেদং রূপং পরং  
 দর্শিতমাত্মযোগাৎ । তেজোমযং বিশ্বমনস্তমাদ্যং যন্মে হৃদন্যেন ন দৃষ্টপূর্বম্ ॥ ৪৭ ॥  
 ন বেদযজ্ঞাধ্যয়নৈর্নদানৈর্ন চ ক্রিষাভির্ন তপোভিরুগ্রৈঃ । এবংরূপঃ শক্য অহং  
 ন্লোকে দ্রষ্টুং হৃদন্যেন কুরুপ্রবীর ॥ ৪৮ ॥ মা তে ব্যথা মা চ বিমুচ্তভাবো দৃষ্ট্বা  
 রূপং ঘোরমৌদ্গুমেদম্ । ব্যপেতভীঃ প্রীতমনাঃ পুনস্ত্বং তদেব মে রূপমিদং  
 প্রপশ্য ॥ ৪৯ ॥ সঞ্জয় উবাচ । ইত্যর্জুনং বাসুদেবস্তথোক্ত্বা স্বকং রূপং দর্শয়ামাস  
 ভূযঃ । আশ্বাসয়ামাস চ ভীতমেনং ভূত্বা পুনঃ সৌম্যবপুর্মহাত্মা ॥ ৫০ ॥ অর্জুন



उवाच । दृष्टेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन । इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः  
 प्रकृतिं गतः ॥ ५१ ॥ भगवान्नुवाच । सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम देवा  
 अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः ॥ ५२ ॥ न्यहं वेदैर्न तपसा न दानेन न  
 चेज्यथा । शक्य एवंप्रिथो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा ॥ ५३ ॥ 'भक्त्या ह्यनन्याया  
 शक्य अहमेवंप्रिथोऽर्जुन । ज्ञातुं द्रष्टुं च तद्धेन प्रवेष्टुं परस्तप ॥ ५४ ॥  
 मत्कर्मकृत्परमो मद्भक्तः सद्भक्तिः । निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति  
 पाठुव ॥ ५५ ॥

इति तीर्थपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विश्वरूपदर्शनो

नाम चतुस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ७४ ॥



अर्जुन उवाच । एवं सततयुक्ता ये भक्तस्तवां पर्युपासते । ये चाप्यक्वम-  
 व्यक्तं तेषां के योगविभूताः ॥ १ ॥ भगवान्नुवाच । मय्यावेश्य मनो ये मां  
 नित्ययुक्ता उपासते । श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः ॥ २ ॥ ये ह्यक्वम-  
 मनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते । सर्वत्रगमचिन्त्यं कूटस्थमचलं ध्रुवम् ॥ ३ ॥ सं-  
 निश्चयेऽस्मिन्प्रथमं सर्वत्र समबुद्धयः । ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः ॥ ४ ॥  
 कुशोद्भिकतरस्त्रेषामव्यक्तसंज्ञचेतसाम् । अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्विरवा-  
 प्यते ॥ ५ ॥ ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः । अनन्येनैव यो-  
 गेन मां ध्यायन्त उपासते ॥ ६ ॥ तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात् ।  
 तवामि नचिरात् पार्थ मय्यावेशितचेतसाम् ॥ ७ ॥ मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं  
 निवेशय । निवसिष्यसि मय्येव अतर्क्यं न संशयः ॥ ८ ॥ अथ चिन्तं समाधातुं  
 न शक्नोषि मयि स्थिरम् । अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनञ्जय ॥ ९ ॥ अभ्या-  
 सेऽप्यसमथोऽसि मत्कर्मपरमो भव । मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन् सिद्धिमवाप्स्य-  
 सि ॥ १० ॥ अथैतदप्यशक्नोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः । सर्वकर्मफलत्यागं  
 ततः कुरु यथाश्वान् ॥ ११ ॥ श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्व्यानं विशिष्यते ।  
 व्यानात् कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ॥ १२ ॥ अद्वैता सर्वभूतानां मैत्रः  
 करुण एव च । निश्चमो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ॥ १३ ॥ सत्त्वः सततं  
 योगी यथात्मा दृढनिश्चयः । मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥ १४ ॥  
 यन्माम्बोद्धिजते लोके लोकाभोद्धिजते च यः । हर्षामर्षभयोर्द्वैतैर्गुणैः स च मे प्रियः ॥ १५ ॥ अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः । सर्वारम्भपरि-

ত্যাগী যো মদুক্রঃ স মে প্রিষঃ ॥ ১৬ ॥ যো ন হ্রযতি ন হ্বেষ্টি ন শোচতি ন কা-  
 জ্জতি । শুভাশুভপরিত্যাগী ভক্তিমান্ যঃ স মে প্রিষঃ ॥ ১৭ ॥ সমঃ শত্রৌ চ  
 মিত্রে চ তথা মানাপমানযোঃ । শীতোষ্ণসুখদুঃখেষু সমঃ সঙ্গবিবর্জিতঃ ॥ ১৮ ॥  
 তুল্যানিন্দাস্তুতিমৌনী সঙ্কটে যেন কেনচিৎ । অনিকেতঃ স্থিরমতিভক্তিমান্  
 মে প্রিযো নরঃ ॥ ১৯ ॥ যে তু ধর্মামৃতমিদং যথোক্তং পর্যুপাসতে । শ্রদ্ধাধনা মৎ-  
 পরমা ভক্তাস্তেহতীব মে প্রিযাঃ ॥ ২০ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বনি ভগবদ্গীতাপর্বনি শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে ভক্তিযোগো  
 নাম পঞ্চত্রিংশত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩৫ ॥



ভগবানুবাচ । ইদং শরীরং কোন্তেয ক্ষেত্রমিত্যাভিধীযতে । এতন্মো বেত্তি  
 তং প্রাহঃ ক্ষেত্রজ্ঞ ইতি ভদ্বিদঃ ॥ ১ ॥ ক্ষেত্রজ্ঞং চাপি মাং বিদ্ধি সর্বক্ষেত্রেষু  
 ারত । ক্ষেত্রক্ষেত্রজ্ঞয়োজ্ঞানং যত্তজ্জ্ঞানং মতং মম ॥ ২ ॥ তৎ ক্ষেত্রং যচ্চ  
 যাদৃক্ চ যদ্বিকারি যতশ্চ যৎ । স চ যো যৎপ্রভাবশ্চ তৎ সমাসেন মে  
 শৃণু ॥ ৩ ॥ ঋষিভির্ভূত্বা গীতং ছন্দোভির্বিরিথৈঃ পৃথক্ । ব্রহ্মসূত্রপদৈশ্চৈব হেতু-  
 মন্তির্নিশ্চিতৈঃ ॥ ৪ ॥ মহাভূতান্যহঙ্কারো বুদ্ধিরব্যক্তমেব চ । ইন্দ্রিয়াণি দশৈ-  
 কঞ্চ পঞ্চ চেন্দ্রিয়গোচরাঃ ॥ ৫ ॥ ইচ্ছা হেষ্ণুঃ সুখং দুঃখং সংঘাতশ্চেতনা ধৃতিঃ ।  
 এতৎ ক্ষেত্রং সমাসেন সর্বিকারমুদাহৃতম্ ॥ ৬ ॥ অমানিত্বমদস্তিত্বমহিংসা ক্ষান্তি-  
 রাজীবম্ । আচার্য্যোপাসনং শৌচং স্তৈর্য্যমাঅবিনিগ্রহঃ ॥ ৭ ॥ ইন্দ্রিয়ার্থেষু  
 বৈরাগ্যমনহঙ্কার এব চ । জন্মমৃত্যুজরাব্যাদিদুঃখদোষানুদর্শনম্ ॥ ৮ ॥ অসক্তি-  
 র্ননভিষঙ্গঃ পুত্রদারুগ্হাদিষু । নিত্যঞ্চ সমচিত্তত্বমিষ্টানিষ্টোপপত্তিষু ॥ ৯ ॥  
 মর্ষি চানন্যযোগেন ভক্তিরব্যভিচারিণী । বিবিক্তদেশসেবিত্বমরতির্জনসংসদি ॥ ১০ ॥  
 অধ্যাত্মজ্ঞাননিত্যত্বং তত্ত্বজ্ঞানার্থদর্শনম্ । এতজ্জ্ঞানমিতি প্রোক্তমজ্ঞানং যদ-  
 তোহন্যথা ॥ ১১ ॥ জ্ঞেয়ং যত্তৎ প্রবক্ষ্যামি যজ্জ্ঞানান্ভ্রামৃতমশ্নুতে । অনাদিমৎ  
 পরং ব্রহ্ম ন সত্তন্মাসদুচ্যতে ॥ ১২ ॥ সর্বতঃ পাণিপাদস্তৎ সর্বতোহক্ষিশিরোমু-  
 খম্ । সর্বতঃ শ্রুতিমল্লোকে সর্বমাবৃত্য তিষ্ঠতি ॥ ১৩ ॥ সর্বৈন্দ্রিয়গুণাভাসং সর্বৈ-  
 ন্দ্রিয়বিবর্জিতম্ । অসক্তং সর্বভূচ্চৈব নিগুণং গুণভোক্তৃ চ ॥ ১৪ ॥ বহিরন্তশ্চ  
 ভূতানাং চরং চরমেব চ । সূক্ষ্মহ্যান্তদবিজ্ঞেয়ং দূরস্থং চান্তিকে চ তৎ ॥ ১৫ ॥ অবি-  
 ভক্তঞ্চ ভূতেষু বিভক্তমিব চ স্থিতম্ । ভূতভর্তৃ চ তজ্জ্ঞেয়ং গ্রাসিঞ্চ প্রভবিঞ্চ  
 চ ॥ ১৬ ॥ জ্যোতিষামপি তজ্জ্যোতিস্তমসঃ পরমুচ্যতে । জ্ঞানং জ্ঞেয়ং জ্ঞানগম্যং

इति सर्वस्य विष्टितम् ॥ ११ ॥ इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं क्षेत्रं चोक्तं समासतः ।  
 मन्त्रं एतद्विज्ञाय मन्त्रावाषोपपद्यते ॥ १८ ॥ प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्वान्नादी  
 उभावपि । विकारांश्च गुणान् चैव विद्वि प्रकृतिसम्भवान् ॥ १९ ॥ कार्यकारणक-  
 र्त्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते । पुरुषः सुखदुःखानां तोकृत्वे हेतुरुच्यते ॥ २० ॥  
 पुरुषः प्रकृतिश्चैव हि भूः प्रकृतिजान् गुणान् । कारणं गुणसङ्घास्य सदस-  
 न्मोनिजन्मसु ॥ २१ ॥ उपद्रव्यान्मन्त्रा च भर्ता भोक्ता महेश्वरः । परमात्मेति  
 चाप्युक्ते देहेहस्मिन् पुरुषः परः ॥ २२ ॥ य एव वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैः  
 सह । सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते ॥ २३ ॥ ध्यानेनात्मानि पश्यन्ति  
 केचिदात्मानमात्माना । अन्ये सांख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे ॥ २४ ॥  
 अन्ये ह्येवमजानन्तः श्रद्धान्येभ्य उपसते । तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्र-  
 तिपरायणाः ॥ २५ ॥ यावत् संजायते किञ्चित् सत्त्वं स्थावरजङ्गमम् । क्षेत्रक्षेत्रज्ञ-  
 संयोगात्तद्विद्वि भरतर्षभ ॥ २६ ॥ समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम् ।  
 विनश्यत्स्वविनश्यत्तुं यः पश्यति स पश्यति ॥ २७ ॥ समं पश्यन् हि सर्वत्र समव-  
 स्थितमीश्वरम् । न हिनस्त्यात्मानात्मानं ततो याति परां गतिम् ॥ २८ ॥ प्रकृतैव  
 च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः । यः पश्यति तथात्मानमकर्तारं स पश्यति ॥ २९ ॥  
 यदा भूतपृथग्भावमेकस्त्वमनुपश्यति । तत एव च विस्तारं ब्रह्मसंपद्यते तदा ॥ ३० ॥  
 अनादिद्वामिर्गुणद्वयं परमात्मायमव्ययः । शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न  
 लिप्यते ॥ ३१ ॥ यथा सर्वगतं सौम्यादाकाशं नोपलिप्यते । सर्वत्रावस्थितो  
 देहे तथात्मा नोपलिप्यते ॥ ३२ ॥ यथा प्रकाशयत्येकः क्लृप्तं लोकाग्निं रविः ।  
 क्षेत्रं क्षेत्री तथा क्लृप्तं प्रकाशयति भारत ॥ ३३ ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञेषोरेवम-  
 स्तुरं ज्ञानचक्षुषा । भूतप्रकृतिमोक्षं ये विदुर्यान्ति ते परम् ॥ ३४ ॥

इति भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि श्रीकृष्णार्जुनसंवादे प्रकृतिपुरुष-  
 विवेकयोगो नाम षट्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३७ ॥



भगवान्ब्रुवाच । परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम् । यज्ज्ञात्वा मुनयः  
 सर्वे परां सिद्धिमितो गताः ॥ १ ॥ इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः ।  
 मर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च ॥ २ ॥ मम योनिर्माहर्ष्यं तस्मिन् गर्भ-  
 न्दधाम्यहम् । सन्तवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत ॥ ३ ॥ सर्वयोनिषु कौन्तेय  
 मूर्तयः संभवन्ति याः । तासां ब्रह्म महद्मोनिरहं बीजप्रदः पिता ॥ ४ ॥ सत्त्वं

রজস্তম ইতি গুণাঃ প্রকৃতিসম্ভবাঃ । নিবল্লন্তি মহাবাহো দেহে দেহিনমব্যয়ম্ ॥ ৫ ॥  
 তত্র সত্ত্বং নিৰ্ম্মলত্বাৎ প্রকাশকমনাময়ম্ । সুখসঙ্গেন বন্ধাতি জ্ঞানসঙ্গেন চান-  
 য ॥ ৬ ॥ রজো রাগাত্মকং বিদ্ধি তৃষ্ণাসঙ্গসমুদ্ভবম্ । তন্নিবন্ধাতি কৌন্তেষ কৰ্ম্মস-  
 ঙ্গেন দেহিনম্ ॥ ৭ ॥ তমস্ত্বজ্ঞানজুং বিদ্ধি মোহনং সৰ্বদেহিনাম্ । প্রমাদালস্য-  
 নিদ্রাভিস্তম্বিবন্ধাতি ভারত ॥ ৮ ॥ সত্ত্বং সুখে সঞ্জয়তি রজঃ কৰ্ম্মণি ভারত । জ্ঞান-  
 মাবৃত্য তু তমঃ প্রমাদে সঞ্জয়তু্যত ॥ ৯ ॥ রজস্তমশ্চাতিভূষ সত্ত্বং ভবতি ভারত ।  
 রজঃ সত্ত্বং তমশ্চৈব তমঃ সত্ত্বং রজস্তথা ॥ ১০ ॥ সৰ্বদ্বারেষু দেহেহস্মিন্ প্রকাশ  
 উপজায়তে । জ্ঞানং যদা তদা বিদ্যাং বিবৃদ্ধং সত্ত্বমিত্যুত ॥ ১১ ॥ লোভঃ প্রবৃদ্ধি-  
 রারম্ভঃ কৰ্ম্মণামসমঃ স্পৃহা । রজস্যেতানি জায়ন্তে বিবৃদ্ধে ভরতষভ ॥ ১২ ॥  
 অপ্রকাশোহপ্রবৃদ্ধিশ্চ প্রমাদো মোহ এব চ । তমস্যেতানি জায়ন্তে বিবৃদ্ধে কুরু-  
 নন্দন ॥ ১৩ ॥ যদা সত্ত্বে প্রবৃদ্ধে তু প্রলয়ং যাতি দেহভূৎ । তদোত্তমবিদ্যাং লো-  
 কানমলান্ প্রতিপদ্যতে ॥ ১৪ ॥ রজসি প্রলয়ং গত্বা কৰ্ম্মসঙ্গিষু জায়তে । তথা  
 প্রলীনস্তমসি মূঢ়ঘোনিষু জায়তে ॥ ১৫ ॥ কৰ্ম্মণঃ স্ক্রুতস্যাত্মঃ সাত্ত্বিকং নিৰ্ম্মলং  
 ফলম্ । রজসস্ত ফলং দুঃখমজ্ঞানং তমসঃ ফলম্ ॥ ১৬ ॥ সত্ত্বাৎ সংজায়তে  
 জ্ঞানং রজসৌ লোভ এব চ । প্রমাদমোহৌ তমসৌ ভবতোহজ্ঞানমেব চ ॥ ১৭ ॥  
 উদ্ধং গচ্ছন্তি সত্ত্বস্থা মধ্যে তিষ্ঠন্তি রাজসাঃ । জঘন্যগুণবৃদ্ধিস্থা অধো গচ্ছন্তি  
 তামসাঃ ॥ ১৮ ॥ নান্যং গুণেভ্যঃ কৰ্ত্তারং যদা দ্রষ্টানুপশ্যতি । গুণেভ্যশ্চ পরং  
 বেত্তি মদ্ভাবং সোহধিগচ্ছতি ॥ ১৯ ॥ গুণানেতানতীত্য ত্রীন্ দেহী দেহসমুদ্ভ-  
 বান্ । জন্মমৃত্যুজরাদুঃখৈর্বিমুক্তোহমৃতমশ্নুতে ॥ ২০ ॥ অজ্জুন উবাচ । কৈলি-  
 ক্ৰেস্ত্রীন্ গুণানেতানতীতো ভবতি প্রভো । কিমাচারঃ কথং চৈতাংস্ত্রীন্ গুণান-  
 তিবর্ত্ততে ॥ ২১ ॥ ভগবান্নুবাচ । প্রকাশঞ্চ প্রবৃদ্ধিঞ্চ মোহমেব চ পাণ্ডব । ন দ্বেষি  
 সংপ্রবৃত্তানি ন নিবৃত্তানি কাঙ্কতি ॥ ২২ ॥ উদাসীনবদাসীনো গুণৈর্যো ন বিচা-  
 ল্যতে । গুণা বর্ত্তন্ত ইত্যেবং যোহবতিষ্ঠতি নেত্রতে ॥ ২৩ ॥ সমদুঃখসুখঃ সুস্থঃ  
 সমলোষ্ঠাশ্মকাঞ্চনঃ । তুল্যপ্রিয়াপ্রিষো ধীরস্তল্যানিন্দাশ্চ সংস্তুতিঃ ২৪ ॥ মানাপ-  
 মানযোস্তুল্যস্তুল্যো মিত্রারিপক্ষযোঃ । সৰ্ব্বারম্ভপরিত্যাগী গুণাতীতঃ স উচ্য-  
 তে ॥ ২৫ ॥ নাঞ্চ যোহব্যতিচারেণ ভক্তিযোগেন সেবতে । স গুণান্ সমতীতৈ-  
 তান্ ব্রহ্মভূষায় কল্পতে ॥ ২৬ ॥ ব্রহ্মণো হি প্রতিষ্ঠাহমমৃতস্যাব্যয়স্য চ । শাস্ত্ৰ-  
 তস্য চ ধৰ্ম্মস্য সুখস্যৈকান্তিকস্য চ ॥ ২৭ ॥ \* ইতি ভীষ্মপর্বণি ভগবদ্গীতাপর্বণি  
 শ্রীকৃষ্ণাজ্জুনসংবাদে গুণত্রয়বিভাগযোগো নাম সপ্তত্রিংশত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩৭ ॥

भगवान्मुवाच । उर्ध्वमूलमधःशाखमश्वथं प्राहरव्यायम् । छन्दांसि यस्य पर्णानि  
 यस्तु वेद स वेदवि ॥ १ ॥ अधश्चाङ्गं प्रसृतस्तस्य शाखा गुणप्रवृक्षा विषय-  
 प्रवालाः । अधश्च मूलान्यनुसन्तानि कर्मानुरङ्गीनि मनुष्यलोके ॥ २ ॥ न  
 कपमस्येह तथोपलभ्यते नास्तौ न चादिर्न च संप्रतिष्ठा । अश्वथमेनं सूबिकात्-  
 मूलमसङ्गशस्त्रेण दृष्टेन ह्रिद्वा ॥ ३ ॥ ततःपदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन् गता  
 न निवर्तन्ति भूयः । तमेवं चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी ॥ ४ ॥  
 निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः । द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुख-  
 दुःखसंज्ञैर्गच्छन्त्यमृताः पदमव्यायं तत् ॥ ५ ॥ न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न  
 पावकः । यदाहा न निवर्तन्ते तद्काम परमं मम ॥ ६ ॥ ममेवांशो जीवलोकै  
 जीवभूतः सनातनः । मनः षष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥ ७ ॥ शरीरं  
 यदावाप्नोति यच्छाप्यंक्रामतीश्वरः । गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गङ्गानिवाश-  
 यात् ॥ ८ ॥ श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं रसनं घ्राणमेव च । अधिष्ठाय मनश्चायं विष-  
 यानुपसेवते ॥ ९ ॥ उक्त्वा मन्त्रं स्थितं वापि भुङ्गानं वा गुणान्वितम् । विमुक्ता  
 नानुपश्यान्ति पश्यान्ति ज्ञानचक्षुषः ॥ १० ॥ यतस्तो योगिनश्चैनं पश्यान्त्यात्मन्य-  
 वस्थितम् । यतस्तोप्यकृतात्मानो नैनं पश्यान्त्यचेतसः ॥ ११ ॥ यदादित्यगतं  
 तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् । यच्छस्त्रमसि यच्छाग्नौ तदेतेजो विद्धि मामकम् ॥ १२ ॥  
 गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा । पुष्कामि चोषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा  
 रसात्प्रकः ॥ १३ ॥ अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः । प्राणापानस-  
 मायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥ १४ ॥ सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञान-  
 मपोहनम् । वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्देवविदेव चाहम् ॥ १५ ॥  
 द्वाविमौ पुरुषौ लोके ऋरश्चांर एव च । ऋरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽंर उच्य-  
 ते ॥ १६ ॥ उक्तमः पुरुषस्तुन्यः परमाश्चेत्युदाहृतः । यो लोकत्रयमाविश्य विभ-  
 र्त्याव्यय ईश्वरः ॥ १७ ॥ यस्मात् ऋरमतीतोऽहमंररादपि चोक्तमः । अतोऽस्मि  
 लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोक्तमः ॥ १८ ॥ यो मामेवमसंमूढो जानाति  
 पुरुषोक्तमम् । स सर्वविद्धजति मां सर्वभावेन भारत ॥ १९ ॥ इति गुह्यतमं शा-  
 स्त्रमिदमुक्तं मयानय । एतद्वक्त्वा बुद्धिमान् स्यात् कृतकृत्यश्च भारत ॥ २० ॥

इति भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोक्तम-  
 योगो नाम अष्टात्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ७८ ॥

ভগবান্মুবাচ । অভয়ং সত্বসংশুদ্ধিজ্ঞানযোগব্যবস্থিতিঃ । দানং দমশ্চ যজ্ঞশ্চ  
 স্বাধ্যায়স্তপ আর্জবম্ ॥ ১ ॥ অহিংসা সত্যমক্রোধস্ত্যাগঃ শান্তিরপৈশুনম্ । দয়া  
 ভূতেষলোলুপ্ত্বং মর্দবং হীরচাপলম্ ॥ ২ ॥ তেজঃ ক্রমা ধৃতিঃ শৌচমদ্রোহো না-  
 তিমানিতা । ভবন্তি সম্পদং দৈবীমভিজাতস্য ভারত ॥ ৩ ॥ দস্তো দর্পোহভিমা-  
 নশ্চ ক্রোধঃ পারুষ্যমেব চ । অজ্ঞানং চাভিজাতস্য পার্থ সম্পদমাসুরীম্ ॥ ৪ ॥  
 দৈবী সম্পদ্বিমোক্ষায় নিবন্ধায়াসুরী মতা । মা শুচঃ সম্পদং দৈবীমভিজা-  
 তোহসি পাণ্ডব ॥ ৫ ॥ দ্বৌ ভূতসর্গৌ লোকেহস্মিন্ দৈব আসুর এব চ । দৈবো  
 বিস্তরশঃ প্রোক্ত আসুরং পার্থ মে শৃণু ॥ ৬ ॥ প্রবৃত্তিঞ্চ নিবৃত্তিঞ্চ জনা ন বিদু-  
 রাসুরাঃ । ন শৌচং নাপি চাচারো ন সত্যং তেষু বিদ্যতে ॥ ৭ ॥ অসত্যমপ্র-  
 তিষ্ঠং তে জগদাহরনীশ্বরম্ । অপরম্পরসংভূতং কিমন্যং কামহৈতুকম্ ॥ ৮ ॥  
 এতাং দৃষ্টিমবচ্চভ্য নষ্ঠাঅানোহন্নবুদ্ধযঃ । প্রভবন্ত্যগ্রকর্মানঃ ক্ষযায় জগতোহ-  
 হিতাঃ ॥ ৯ ॥ কামমাশ্রিত্য দুস্পুরং দস্তমানমদাশ্বিতাঃ । মোহাদাহীত্বাহসদ্গ্রা-  
 হান্ প্রবর্তন্তেহশুচিত্রতাঃ ॥ ১০ ॥ চিন্তামপরিমেয়াঞ্চ প্রলযান্তামুপাশ্রিতাঃ । কা-  
 মোপভোগপরমা এতাবদिति নিশ্চিতাঃ ॥ ১১ ॥ আশাপাশশতৈর্বন্ধাঃ কামক্রোধ-  
 পরাযণাঃ । ঈহন্তে কামভোগার্থমন্যাযেনার্থসঞ্চয়ান্ ॥ ১২ ॥ ইদমদ্য মযা লন্ধমিদং  
 প্রাপ্স্য মনোরথম্ । ইদমস্তীদমপি মে ভবিষ্যতি পুনর্দ্বনম্ ॥ ১৩ ॥ অসৌ মযা হতঃ  
 শত্রুর্হনিষ্যে চাপরানপি । ঈশ্বরোহহমহং ভোগী সিদ্ধোহহং বলবান্ সুখী ॥ ১৪ ॥  
 আচ্যোহভিজনবানস্মি কোহন্যোহস্তি সদৃশো মযা । যক্ষ্যে দাস্যামি মোদিষ্য  
 ইত্যজ্ঞানবিমোহিতাঃ ॥ ১৫ ॥ অনেকচিত্তবিভ্রান্তা মোহজালসমাবৃতাঃ । প্রসক্তাঃ  
 কামভোগেষু পতন্তি নরকেহশুচৌ ॥ ১৬ ॥ আত্মসংভাবিতাঃ স্ত্রীনা ধনমানমদা-  
 শ্বিতাঃ । যজন্তে নাম যজ্ঞেস্তে দস্তেনাবিধির্পূর্বকম্ ॥ ১৭ ॥ অহঙ্কারং বলং দর্পং  
 কামং ক্রোধঞ্চ সংশ্রিতাঃ । মামাত্মপরদেহেষু প্রদ্বিষন্তোহভ্যসূষকাঃ ॥ ১৮ ॥ তানহং  
 দ্বিষতঃ ক্রুরান্ সংসারেষু নরাধমান্ । ক্ষিপাম্যজসুমশুভানাসুরীষেব যোনিষু ॥ ১৯ ॥  
 আসুরীং যোনিমাপন্ন্য মুঢ়া জন্মনি জন্মনি । মামপ্রাপৈপ্যব কৌন্তেষ ততো যান্ত্য-  
 ধমাং গতিম্ ॥ ২০ ॥ ত্রিবিধং নরকস্যেদং দ্বারং নাশনমাত্মনঃ । কামঃ ক্রোধ-  
 স্তথা লোভস্তস্মাদেতত্রযং ত্যজেৎ ॥ ২১ ॥ এতৈর্বিমুক্তঃ কৌন্তেষ তমোদ্বারৈস্তি-  
 ভিন্নরঃ । আচরত্যাত্মনঃ শ্রেযস্ততো যাতি পরাং গতিম্ ॥ ২২ ॥ যঃ শাস্ত্রবিধি-  
 মুৎসৃজ্য বর্ততে কামকারতঃ । ন স সিদ্ধিমবাপ্নোতি ন সুখং ন পরাঙ্গতিম্ ॥ ২৩ ॥

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणञ्चेत् कार्याकार्यव्यवस्थितौ । ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुं  
मिहाहसि ॥ २४ ॥

इति भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दैवासुरसम्पद्धि-  
भागयोगो नाम एकानचद्वारिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ७२ ॥

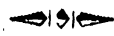
—०—

अर्जुन उवाच । ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयाश्रिताः । तेषां निष्ठा तु  
का कृष्ण सद्ब्रमाहो रजस्तमः ॥ १ ॥ भगवानुवाच । त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सा  
स्वभावजा । सात्त्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां शृणु ॥ २ ॥ सद्ब्राम्हणस्य सर्वस्य  
श्रद्धा भवति भारत । श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः ॥ ३ ॥ यजन्ते  
सात्त्विका देवान् यक्नुरक्षांसि राजसाः । भूतान् प्रेतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा  
जनाः ॥ ४ ॥ अशास्त्रविहितं योरं तप्यन्ते ये तपो जनाः । दम्बाहंकारसं-  
युक्ताः कामरागबलाश्रिताः ॥ ५ ॥ कर्षवस्तुः शरीरस्यं भूतग्राममचेतसः । मां चै-  
वान्तुःशरीरस्यं तान् विद्यासुरनिश्चयान् ॥ ६ ॥ आहारस्तुपि सर्वस्य त्रिविधो  
भवति प्रियः । यज्जस्तपस्तथा दानं तेषां भेदमिमं शृणु ॥ ७ ॥ आयुःसद्ब्रव-  
लारोग्यसुखप्रतीतिविवर्द्धनाः । रसयाः स्निग्धाः स्थिरा हृदया आहाराः सात्त्विकप्रि-  
याः ॥ ८ ॥ कटुम्ललवणातुष्यतीक्ष्णकृष्णविदाहिनः । आहारा राजसस्येष्टा दुःख-  
शोकामयप्रदाः ॥ ९ ॥ यातयामं गतरसं पूतिपर्युसितं च यत् । उच्छिर्कमपि  
चामेध्यं तोजनं तामसप्रियम् ॥ १० ॥ अफलाकाङ्क्षिर्भिर्यज्जो विधिदृष्टो य इज्य-  
ते । यर्कव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः ॥ ११ ॥ अभिसन्नाय तु फलं दम्बा-  
र्थमपि चैव यत् । इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्जं विद्धि राजसम् ॥ १२ ॥ विधिहीन-  
मसृष्टाम् मन्त्रहीनमदक्षिणम् । श्रद्धाविरहितं यज्जं तामसं परिचक्षते ॥ १३ ॥  
देवद्विजगुरुप्राञ्जपूजनं शौचमार्जवम् । ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्य-  
ते ॥ १४ ॥ अन्नद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं यत् । स्वाध्यायाभ्यासनं चैव  
वाङ्मयं तप उच्यते ॥ १५ ॥ मनःप्रसादः सौम्यञ्च मोनमात्मानिग्रहः । भाव-  
संशुद्धिरित्येतन्नपो मानसमुच्यते ॥ १६ ॥ श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्रिविधं  
नरैः । अफलाकाङ्क्षिर्भिर्युक्तेः सात्त्विकं परिचक्षते ॥ १७ ॥ सत्कारमानपूजार्थं  
तपो दस्तेन चैव यत् । क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमधुवम् ॥ १८ ॥ मूढ-  
ग्रान्हेणात्मानो यत् पीडया क्रियते तपः । परस्योत्सादनार्थं वा तन्नामसमुदाह-  
तम् ॥ १९ ॥ दातव्यामिति यद्दानं दीयतेऽन्नूपकारिणे । देशे काले च पात्रे च

তদানং সাত্বিকং স্মৃতম্ ॥ ২০ ॥ যতু প্রত্যুপকারার্থং ফলমুদ্दिश्य वा पुनः । दीय-  
 ते च परिक्रियं तदानं राजसं स्मृतम् ॥ ২১ ॥ অদেশকালে যদানমপাত্রে-  
 ভ্যশ্চ দীযতে । অসৎকৃতমবজ্ঞাতং তত্ত্বামসমুদাহৃতম্ ॥ ২২ ॥ ওঁ তৎসদিত্তি নির্দে-  
 শো ব্রহ্মণস্ত্রিবিধঃ স্মৃতঃ । ব্রাহ্মণাস্তেন বেদাশ্চ যজ্ঞাশ্চ বিহিতাঃ পুরা ॥ ২৩ ॥  
 তস্মাদোমিত্যুদাহৃত্য যজ্ঞদানতপঃক্রিয়াঃ । প্রবর্তন্তে বিধানোক্তাঃ সততং ব্রহ্মবা-  
 দিনাম্ ॥ ২৪ ॥ তদিত্যনভিসন্ধায় ফলং যজ্ঞতপঃক্রিয়াঃ । দানক্রিয়াশ্চ বিবিধাঃ  
 ক্রিয়ন্তে মোক্ষকাজ্জিভিঃ ॥ ২৫ ॥ সঙ্ঘাবে সাধুভাবে চ সদিত্যেতৎ প্রযুজ্যতে ।  
 প্রশস্তে কর্মণি তথা সচ্ছকঃ পার্থ যুজ্যতে ॥ ২৬ ॥ যজ্ঞে তপসি দানে চ স্থিতিঃ  
 সদিত্তি চোচ্যতে । কর্ম চৈব তদর্থীযং সদিত্যেবাভিধীযতে ॥ ২৭ ॥ অশ্রদ্ধয়া  
 হৃতং দত্তং তপস্তপ্তং কৃতঞ্চ যৎ । অসদিত্যুচ্যতে পার্থ ন চ তৎ প্রেত্য নো  
 ইহ ॥ ২৮ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বনি ভগবদ্গীতাপর্বনি শ্রীকৃষ্ণার্জুনসংবাদে শ্রদ্ধাত্রয়বিভাগ-

যোগো নাম চত্বারিংশত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৪০ ॥



অর্জুন উবাচ । সন্ন্যাসস্য মহাবাহো তদ্বিমিচ্ছামি বেদিতুম্ । ত্যাগস্য চ হৃষী-  
 কেশ পৃথক্ কেশিনিসূদন ॥ ১ ॥ ভগবানুবাচ । কাম্যানাং কর্মণাং ন্যাসং সন্ন্যা-  
 সং কবযো বিদুঃ । সর্বকর্মফলত্যাগং প্রাহস্ত্যাগং বিচক্ষণাঃ ॥ ২ ॥ ত্যাজ্যং দো-  
 ষবদিত্যেকে কর্ম প্রাহর্মনীষিণঃ । যজ্ঞদানতপঃ কর্ম ন ত্যাজ্যমিতি চাপরে ॥ ৩ ॥  
 নিশ্চয়ং শূনু মে তত্র ত্যাগে ভরতসত্তম । ত্যাগো হি পুরুষব্যাস্থ ত্রিবিধঃ সংপ্র-  
 কীর্তিতঃ ॥ ৪ ॥ যজ্ঞদানতপঃকর্ম ন ত্যাজ্যং কার্যমেব তৎ । যজ্ঞো দানং তপ-  
 শ্চৈব পাবনানি মনীষিণাম্ ॥ ৫ ॥ এতান্যপি তু কর্মাণি সঙ্গং ত্যক্ত্বা ফলানি চ ।  
 কর্তব্যনীতি মে পার্থ নিশ্চিতং মতমুত্তমম্ ॥ ৬ ॥ নিষতস্য তু সংন্যাসঃ কর্মণো  
 নোপপদ্যতে । মোহান্তস্য পরিত্যাগস্তামসঃ পরিকীর্তিতঃ ॥ ৭ ॥ দুঃখমিত্যেব  
 যৎ কর্ম কাযক্লেশভযাত্ত্যজেৎ । স কুহ্না রাজসং ত্যাগং নৈব ত্যাগফলং ল-  
 ভেৎ ॥ ৮ ॥ কার্যমিত্যেব যৎ কর্ম নিষতং ক্রিয়তেহর্জুন । সঙ্গং ত্যক্ত্বা ফলশ্চৈব  
 স ত্যাগঃ সাত্বিকো মতঃ ॥ ৯ ॥ ন দ্বেষ্ট্যকুশলং কর্ম কুশলে নানুষজ্জতে । ত্যাগী  
 সত্বসমাবিষ্টো মেধাবী ছিন্নসংশযঃ ॥ ১০ ॥ ন হি দেহভূতা শক্যং ত্যক্ত্বং কর্মা-  
 গ্যশেষতঃ । যস্তু কর্মফলত্যাগী স ত্যাগীত্যভিধীযতে ॥ ১১ ॥ অনিষ্টমিষ্টং মিশ্রঞ্চ  
 ত্রিবিধং কর্মণঃ ফলম্ । ভবত্যত্যাগিনাং প্রেত্য ন তু সংন্যাসিনাং ক্ৰটিৎ ॥ ১২ ॥



पक्षेमानि महाबाहो कारणानि निबोध मे । सांख्ये कृतास्तु प्रोक्तानि सिद्धये  
 सर्वकर्मणाम् ॥ १७ ॥ अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं पृथग्विधम् । विविधाश्च पृथक्  
 चेष्टा दैव्यं चैवात्र पक्षमम् ॥ १४ ॥ शरीरवाङ्मनोभिर्बुद्धिर्बुद्धिः कर्म प्रारभते नरः ।  
 न्याय्यं वा विपरीतं वा पक्षेते तस्य हेतवः ॥ १५ ॥ तत्रैव सति कर्तारमा-  
 त्मानं केवलम् यः । पश्यत्यकृतबुद्धिश्चाप्यपश्यति स दुर्मतिः ॥ १६ ॥ यस्य नाह-  
 कृतो भावो बुद्धिर्बुद्धिः न लिप्यते । इदमपि स इमांल्लोकान् न हस्ति न निबध्य-  
 ते ॥ १७ ॥ ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना । करणं कर्म कर्तेति  
 त्रिविधः कर्मसंग्रहः ॥ १८ ॥ ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः । प्रोच्य-  
 ते गुणसंख्याने यथावच्छृणु तान्यपि ॥ १९ ॥ सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमी-  
 क्षते । अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम् ॥ २० ॥ पृथक्त्वेन तु  
 यज्ज्ञानं नानाभावात् पृथग्विधान् । वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राज-  
 सम् ॥ २१ ॥ यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन् कार्ये सक्रमहेतुकम् । अतद्वार्थवदङ्गं तत्रा-  
 मसमिति स्मृतम् ॥ २२ ॥ नियतं सङ्गरहितमरागद्वेषतः कृतम् । अफलप्रेम्पुना  
 कर्म यत्तु सात्त्विकमुच्यते ॥ २३ ॥ यत्तु कामेप्सुना कर्म साहकारेण वा पुनः । क्रि-  
 यते बह्वलायासं तद्राजसमुदाहृतम् ॥ २४ ॥ अनुबन्धं क्रयं हिंसामनपेक्ष्य च  
 पौरुषम् । मोहादारभ्यते कर्म यत्तन्नामसमुच्यते ॥ २५ ॥ मुक्तसङ्गोऽनहंवादी  
 धृत्यसाहसमन्वितः । सिद्ध्यासिद्धौ निर्बिकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते ॥ २६ ॥ रागी  
 कर्मफलप्रेम्पुर्लुक्को हिंसात्त्रकोऽशुचिः । हर्षशोकान्वितः कर्ता राजसः परिकी-  
 र्त्तितः ॥ २७ ॥ अयुक्तः प्राकृतः सुक्तः शठो नैकृतिकोऽलसः । विषादी दीर्घसूत्री च  
 कर्ता तामस उच्यते ॥ २८ ॥ बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुणतस्त्रिविधं शृणु । प्रोच्य-  
 मानमशेषेण पृथक्त्वेन धनञ्जय ॥ २९ ॥ प्रवृत्तिं निवृत्तिं कार्यकार्ये तयात्-  
 ये । बन्धं मोक्षं वा वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी ॥ ३० ॥ यथा धर्ममधर्मं  
 कार्यकार्यमेव च । अयथावत् प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी ॥ ३१ ॥ अध-  
 र्मं धर्ममिति वा मन्यते तमसावृता । सर्वार्थान् विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ ता-  
 मसी ॥ ३२ ॥ धृत्या यथा धारयते मनः प्राणैस्त्रियक्रियाः । योगेनाव्यभिचारिण्या  
 धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी ॥ ३३ ॥ यथा तु धर्मकामार्थान् धृत्या धारयतेऽर्जुन ।  
 प्रसङ्गेन फलाकाङ्क्षी धृतिः सा पार्थ राजसी ॥ ३४ ॥ यथा स्वप्नं भयं शोकं  
 विषादं मदमेव च । न विमुञ्चति दुर्मोधा धृतिः सा पार्थ तामसी ॥ ३५ ॥ सुखं हिदा-  
 नीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ । अत्यासाद्रमते यत्र दुःखास्तुश्च निगच्छति ॥ ३६ ॥

যত্তদগ্রে বিষমিব পরিণামেহমৃতোপমম্। তৎ সুখং সাত্ত্বিকং প্রোক্তমাত্মবুদ্ধিপ্রসা-  
দজম্ ॥ ৩৭ ॥ বিষযেন্দ্রিয়সংযোগাৎ যত্তদগ্রেহমৃতোপমম্। পরিণামে বিষমিব  
তৎ সুখং রাজসংস্মৃতম্ ॥ ৩৮ ॥ যদগ্রে চানুবন্ধে চ সুখং মোহনমাত্মনঃ।  
নিদ্রালস্যপ্রমাদোথৎ তত্তামসমুদাহতম্ ॥ ৩৯ ॥ ন তদস্তি পৃথিব্যাং বা দিবি  
দেবেষু বা পুনঃ। সত্ত্বং প্রকৃতিজৈশ্মুকুং যদেতিঃ স্যাভ্রিভিগুণৈঃ ॥ ৪০ ॥ ব্রাহ্মণ-  
ক্লিয়বিশাং শূদ্রাণাঞ্চ পরস্তপ। কৰ্ম্মাণি প্রবিভক্তানি স্বভাবপ্রভবৈগুণৈঃ ॥ ৪১ ॥  
শমো দমস্তপঃ শৌচং ক্ষান্তিরাজ্জবমেব চ। জ্ঞানং বিজ্ঞানমাস্তিক্যং ব্রহ্ম-  
কৰ্ম্ম স্বভাবজম্ ॥ ৪২ ॥ শৌর্যং তেজো ধৃতিদাক্ষ্যং যুদ্ধে চাপ্যপলাযনম্। দান-  
মীশ্বরভাবশ্চ ক্লমকৰ্ম্ম স্বভাবজম্ ॥ ৪৩ ॥ কৃষিগোরক্ষ্যবাণিজ্যং বৈশ্যকৰ্ম্ম স্বভা-  
বজম্। পরিচর্য্যাঅকং কৰ্ম্ম শূদ্রস্যাপি স্বভাবজম্ ॥ ৪৪ ॥ স্বে স্বে কৰ্ম্মণ্যতিরতঃ  
সংসিদ্ধিং লভতে নরঃ। স্বকৰ্ম্মনিরতঃ সিদ্ধিং যথা বিন্দতি তচ্ছুণু ॥ ৪৫ ॥ যতঃ  
প্রবৃত্তিভূতানাং যেন সৰ্বমিদং ততম্। স্বকৰ্ম্মণা তমভ্যর্চ্য সিদ্ধিং বিন্দতি মা-  
নবঃ ॥ ৪৬ ॥ শ্রেযান্ স্বধৰ্ম্মো বিগুণঃ পরধৰ্ম্মাৎ স্বনুষ্ঠিতাৎ। স্বভাবনিষতং কৰ্ম্ম  
কুৰ্ব্বম্নাপ্নোতি কিল্বিষম্ ॥ ৪৭ ॥ সহজং কৰ্ম্ম কৌন্তেয সদোষমপি ন ত্যজেৎ।  
সৰ্বারস্তা হি দোষেণ ধূমেনাগ্নিরিবাবৃতাঃ ॥ ৪৮ ॥ অসক্তবুদ্ধিঃ সৰ্বত্র জিতাত্মা  
বিগতস্পৃহঃ। নৈককৰ্ম্ম্যসিদ্ধিং পরমাং সম্যাসেনাধিগচ্ছতি ॥ ৪৯ ॥ সিদ্ধিং প্রাপ্তো  
যথা ব্রহ্ম তথাপ্নোতি নিবোধ মে। সমাসেনৈব কৌন্তেয নিষ্ঠা জ্ঞানস্য যা  
পরা ॥ ৫০ ॥ বুদ্ধ্যা বিশুদ্ধয়া যুক্তো ধৃত্যাঅনং নিষম্য চ। শব্দাদীন্ বিষয়াং-  
স্ত্যক্ত্বা রাগদ্বেষৌ ব্যদস্য চ ॥ ৫১ ॥ বিবিক্তসেবী লংঘাশী যতবাক্ কাযমানসঃ।  
ধ্যানযোগপরো নিত্যং বৈরাগ্যং সমুপাশ্রিতঃ ॥ ৫২ ॥ অহঙ্কারং বলং দৰ্পং  
কামং ক্রোধং পরিগ্রহম্। বিমুচ্য নিৰ্ম্মমঃ শান্তো ব্রহ্মভূষায কল্পতে ॥ ৫৩ ॥  
ব্রহ্মভূতঃ প্রসন্নাত্মা ন শোচতি ন কাঙ্কতি। সমঃ সৰেষু ভূতেষু মন্তুক্তিং লভতে  
পরাম্ ॥ ৫৪ ॥ ভক্ত্যা মামভিজানাতি যাবান্ যশ্চাম্মি তত্ত্বতঃ। ততো মাং  
তত্ত্বতো জ্ঞাত্বা বিশতে তদনন্তরম্ ॥ ৫৫ ॥ সৰ্বকৰ্ম্মাণ্যপি সদা কুৰ্ব্বাণো মদ্ব্যপা-  
শ্রয়ঃ। মৎপ্রসাদাদবাপ্নোতি শাস্ত্বতং পদমব্যযম্ ॥ ৫৬ ॥ চেতসা সৰ্বকৰ্ম্মাণি  
মযি সৎন্যস্য মৎপরঃ। বুদ্ধিযোগমুপাশ্রিত্য মচ্ছিত্তঃ সততং ভব ॥ ৫৭ ॥ মচ্ছি-  
ত্তঃ সৰ্বদুর্গাণি মৎপ্রসাদান্তরিষ্যসি। অথ চেত্বমহঙ্কারাম শ্রোষ্যসি বিনঙ্ক্য-  
সি ॥ ৫৮ ॥ যদহঙ্কারমাশ্রিত্য ন যোৎস্য ইতি মন্যসে। মিথ্যৈব ব্যবসাযস্তে  
প্রকৃতিস্ত্বাং নিযোক্যতি ॥ ৫৯ ॥ স্বভাবজেন কৌন্তেয নিবন্ধঃ সেন কৰ্ম্মণা।

କର୍ତ୍ତୁଂ ନେଚ୍ଛାମି ଯନ୍ମୋହାଂ କରିଷ୍ୟାମ୍ୟବଶୋଽପି ତଂ ॥ ୬୦ ॥ ଈଶ୍ଵରଃ ସର୍ବଭୂତାନାଂ  
 ହୃଦ୍ଦେଶେଽର୍ଜ୍ଜୁନ ତିର୍ଥତି । ଭ୍ରାମୟନ୍ ସର୍ବଭୂତାନି ଯନ୍ତ୍ରାକୃତାନି ମାୟୟା ॥ ୬୧ ॥ ତମେବ  
 ଶରଣଂ ଗଚ୍ଛ ସର୍ବଭାବେନ ଭାରତ । ତଂ ପ୍ରମାଦାଂ ପରାଂ ଶାନ୍ତିଂ ସ୍ଥାନଂ ପ୍ରାପ୍ସ୍ୟାମି ଶା-  
 ଶ୍ଵତମ୍ ॥ ୬୨ ॥ ଇତି ତେ ଜ୍ଞାନମାଧ୍ୟାତଂ ଶୁଭାକ୍ଷୁହତରଂ ଯୟା । ବିମୂଢ଼ାୟତଦଶେଷେଣ  
 ଯଥେଚ୍ଛାମି ତଥା କୁରୁ ॥ ୬୩ ॥ ସର୍ବଶୁଭତମଂ ଭୃଃଃ ଶୂନ୍ଵ ମେ ପରମଂ ବଚଃ । ଇଚ୍ଛୋଽସି  
 ମେ ଦୃଢ଼ମିତି ତତୋ ବକ୍ଷ୍ୟାମି ତେ ହିତମ୍ ॥ ୬୪ ॥ ଯନ୍ମନା ଭବ ମନ୍ତ୍ରକ୍ତୋ ମନ୍ଦ୍ୟାଜ୍ଞୀ ମାଂ  
 ନମସ୍କୁରୁ । ମାମେବୈଷ୍ୟାମି ମତ୍ୟଂ ତେ ପ୍ରତିଜାନ୍ତେ ପ୍ରିୟୋଽସି ମେ ॥ ୬୫ ॥ ସର୍ବଧର୍ମାନ୍  
 ପରିତ୍ୟଜ୍ୟ ମାମେକଂ ଶରଣଂ ବୁଞ୍ଜ । ଅହଂ ହ୍ଵାଂ ସର୍ବପାପତ୍ୟୋ ମୋକ୍ଷୟିଷ୍ୟାମି ମା  
 ଶୁଚଃ ॥ ୬୬ ॥ - ଇଦଂ ତେ ନାତପସ୍କାୟ ନାତକ୍ତାୟ କଦାଚନ । ନ ଚାଶୁକ୍ଷୟେ ବାଚ୍ୟଂ ନ  
 ଚ ମାଂ ଯୋହତ୍ୟସୂୟତି ॥ ୬୭ ॥ ଯଃ ଇମଂ ପରମଂ ଶୁଭଂ ମନ୍ତ୍ରକ୍ତେଷ୍ଠତିଧାମ୍ୟତି । ଭକ୍ତିଂ  
 ଯସି ପରାଂ କୁହ୍ଵା ମାମେବୈଷ୍ୟତ୍ୟସଂଶୟଃ ॥ ୬୮ ॥ ନ ଚ ତନ୍ମାନ୍ମନ୍ତ୍ରଷ୍ଠେଷୁ କଞ୍ଚିନ୍ମେ  
 ପ୍ରିୟକୃତମଃ । ଭବିତା ନ ଚ ମେ ତନ୍ମାଦନ୍ୟଃ ପ୍ରିୟତରୋ ଭୁବି ॥ ୬୯ ॥ ଅଧ୍ୟେଷ୍ୟତେ ଚ  
 ଯ ଇମଂ ଧର୍ମାଂ ସନ୍ଧାଦନାବସୋଃ । ଜ୍ଞାନସଞ୍ଜେନ ତେନାହିମିଫଃ ସ୍ୟାମିତି ମେ ମତିଃ ॥ ୭୦ ॥  
 ଶ୍ରଦ୍ଧାବାନନସୂୟଶ୍ଚ ଶୂନ୍ଵାଦପି ଯୋ ନରଃ । ସୋଽପି ମୁକ୍ତଃ ଶୁଭାଲ୍ଲୋକାନ୍ ପ୍ରାପ୍ନୁୟାଂ  
 ପୁଣ୍ୟକର୍ମଣାମ୍ ॥ ୭୧ ॥ କଚ୍ଚିଦେତଂ ଶ୍ରୁତଂ ପାର୍ଥ ହ୍ଵୟେକାଗ୍ରେଣ ଚେତସା । କଚ୍ଚିଦଜ୍ଞାନ-  
 ସନ୍ମୋହଃ ପ୍ରନୟତ୍ସେ ଧନଞ୍ଜୟ ॥ ୭୨ ॥ ଅର୍ଜ୍ଜୁନ ଉବାଚ । ନଚ୍ଚୋ ମୋହଃ ସ୍ମୃତିର୍ଲକ୍ଷ୍ମୀ ହ୍ଵ-  
 ପ୍ରମାଦାନ୍ମସାଚ୍ୟତ । ସ୍ଥିତୋଽସ୍ମି ଗତସନ୍ଦେହଃ କରିଷ୍ୟେ ବଚନଂ ତବ ॥ ୭୩ ॥ ସଞ୍ଜୟ  
 ଉବାଚ । ଇତ୍ୟହଂ ବାସୁଦେବସ୍ୟ ପାର୍ଥସ୍ୟ ଚ ମହାତ୍ମନଃ । ସନ୍ଧାଦମିମମଶ୍ରୈଷମନ୍ତୁତଂ  
 ଲୋମହର୍ଷଣମ୍ ॥ ୭୪ ॥ ବ୍ୟାସଂ ପ୍ରମାଦାଚ୍ଛ୍ରୁତବାନିମଂ ଶୁଭମହଂ ପରମ୍ । ଯୋଗଂ ଯୋଗେ-  
 ଶ୍ଵରାଂ କୃଷ୍ଣାଂ ସାକ୍ଷାଂ କଥୟତଃ ସ୍ଵୟମ୍ ॥ ୭୫ ॥ ରାଜନ୍ ସଂସ୍ମୃତ୍ୟ ସଂସ୍ମୃତ୍ୟ ସନ୍ଧାଦ-  
 ମିମମନ୍ତୁତମ୍ । କେଶବାର୍ଜ୍ଜୁନସୋଃ ପୁଣ୍ୟଂ ହ୍ଵୟାମି ଚ ମୁହୁର୍ମୁହଃ ॥ ୭୬ ॥ ତଚ୍ଚ ସଂସ୍ମୃତ୍ୟ  
 ସଂସ୍ମୃତ୍ୟ କପମତ୍ୟନ୍ତୁତଂ ହରେଃ । ବିସ୍ମୟୋ ମେ ମହାନ୍ ରାଜନ୍ ହ୍ଵୟାମି ଚ ପୁନଃ ପୁନଃ ॥ ୭୭ ॥  
 ଯତ୍ର ଯୋଗେଶ୍ଵରଃ କୃଷ୍ଣୋ ଯତ୍ର ପାର୍ଥୋ ଧନ୍ୱର୍ଜ୍ଜରଃ । ତତ୍ର ଶ୍ରୀର୍ବିଜୟୋ ଭୂତିଧ୍ରୁବା ନୀତିର୍ମ-  
 ତିର୍ନମ ॥ ୭୮ ॥

ଇତି ମହାଭାରତେ ଶତମାହତ୍ତ୍ଵ୍ୟାଂ ସଂହିତାୟାଂ ବୈଷାମିକ୍ୟାଂ ଡୀୟପର୍ବିନି

ଭଗବଦ୍‌ଗୀତାପର୍ବିନି ଭଗବଦ୍‌ଗୀତାସୁପନିଷତ୍ତ୍ଵୁ ବ୍ରହ୍ମବିଦ୍ୟାୟାଂ ଯୋଗଶାସ୍ତ୍ରେ

ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାର୍ଜ୍ଜୁନସଂବାଦେ ଏକଚତ୍ଵାରିଂଶତ୍ତମୋଽଧ୍ୟାୟଃ ॥ ୫୧ ॥

ସମାପ୍ତଃ ଭଗବଦ୍‌ଗୀତାପର୍ବ ।



অথ ভীষ্মবধপর্ব ।

সঞ্জয় উবাচ । ততো ধনঞ্জয়ং দৃষ্ট্বা বাণগাণ্ডীবধারিণম্ । পুনরেব মহানাৎ  
ব্যসৃজন্ত মহারথাঃ ॥ ১ ॥ পাণ্ডবাঃ সৃঞ্জয়াশ্চৈব যে চৈষামনুযায়িনঃ । দধ্মুশ্চ  
মুদিতাঃ শঙ্খান্ বীরাঃ সাগরসম্ভবান্ ॥ ২ ॥ তথা ভৈর্যশ্চ পেশ্যশ্চ ককচা গো-  
বিষ্ণাণিকাঃ । সহসৈবাত্যহন্যস্ত স্ শকস্তমুলোহভবৎ ॥ ৩ ॥ অথ দেবাঃ সগ-  
ন্ধর্বাঃ পিতরশ্চ জনেশ্বর । সিদ্ধচারণসজ্যাশ্চ সমীযুস্তে দিদ্ক্ষয়া ॥ ৪ ॥ ঋষশ্চ  
মহাভাগাঃ পুরস্কৃত্য শতক্রতুম্ । সমীযুস্তত্র সহিতা দ্রক্ষুং তদৈশসং মহৎ ॥ ৫ ॥  
তন্তো যুধিষ্ঠিরো দৃষ্ট্বা যুদ্ধায় স্তসমুদ্যতে । তে সেনে সাগরপ্রথ্যে মুহুঃ প্রচলিতে  
নৃপ ॥ ৬ ॥ বিমুচ্য কবচং বীরো নিক্ষিপ্য চ বরাযুধম্ । অবরুহ রথাত্ত্বর্ণং পদ্ম্যা-  
মেব ক্রুতাঞ্জলিঃ ॥ ৭ ॥ পিতামহমভিপ্রেক্ষ্য ধর্মরাজো যুধিষ্ঠিরঃ । বাগ্বতঃ প্রযযৌ  
যেন প্রাণ্ডমুখো রিপুবাহিনীম্ ॥ ৮ ॥ তং প্রযান্তমভিপ্রেক্ষ্য কুন্তীপুলো ধনঞ্জ-  
য়ঃ । অবতীর্য রথাত্ত্বর্ণং ভ্রাতৃত্বিঃ সহিতোহম্বগাৎ ॥ ৯ ॥ বাসুদেবশ্চ তং রাজন্  
পৃষ্ঠতোহনুজগাম হ । পার্থিবাশ্চৈব রাজানমনুজগ্মুস্তমুৎসুকাঃ ॥ ১০ ॥ অর্জুন  
উবাচ । কিস্তে ব্যবসিতং রাজন্ যদস্মানপহায বৈ । পদ্ম্যামেব প্রযাতোহসি প্রা-  
ণ্ডমুখো রিপুবাহিনীম্ ॥ ১১ ॥ ভীমসেন উবাচ । ক্ গমিষ্যসি রাজেন্দ্র নিক্ষিপ্ত-  
কবচায়ুধঃ । দংশিতেষ্মরিসৈন্যেষু ভ্রাতুনুৎসৃজ্য পার্থিব ॥ ১২ ॥ নকুল উবাচ ।  
এবং গতে ত্বয়ি জ্যেষ্ঠে মম ভ্রাতরি ভারত । ভীর্শ্মে দুনোতি হৃদয়ং বৃহি গস্তা ভবান্  
ক্ স্মু ॥ ১৩ ॥ সহদেব উবাচ । অস্মিন্গনসমূহে বৈ বর্তমানে মহাভয়ে । যোদ্ধব্যে  
ক্ স্মু গস্তাসি শত্রুনভিমুখো নৃপ ॥ ১৪ ॥ সঞ্জয় উবাচ । এবনাতাষ্যমাণোহপি  
ভ্রাতৃত্বিঃ কুরুনন্দন । নোবাচ বাগ্বতঃ কিঞ্চিদাচ্ছত্যেব যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ১৫ ॥ তানুবাচ  
মহাপ্রাজ্ঞো বাসুদেবো মহামনাঃ । অতিপ্রাযোহস্য বিজ্ঞাতো মযেতি প্রহসন্নি-  
ব ॥ ১৬ ॥ এষ ভীষ্মং তথা দ্রোণং গৌতমং শল্যমেব চ । অনুমান্য গুণান্ সর্বান্  
যোৎস্যতে সহ শত্রুভিঃ ॥ ১৭ ॥ ক্ষয়তে হি পুরা কল্পে গুণান্ বৃদ্ধান্ সবান্ধবান্ ।  
অনুমান্য যথা শাস্ত্রং যস্ত যুধ্যোন্নহন্তরৈঃ । ধুবস্তস্য জযো যুদ্ধে ভবেদিতি মতি-  
র্ন্যম ॥ ১৮ ॥ এবং ক্রবন্তি ক্লেঃ তু ধার্ত্তরাষ্ট্রচমুৎ প্রতি । হাহাকারো মহানাসীন্নিঃ-  
শকাস্ত্বপরেহভবন্ ॥ ১৯ ॥ দৃষ্ট্বা যুধিষ্ঠিরং ক্রুরা ধার্ত্তরাষ্ট্রস্য সৈনিকাঃ । মিথঃ  
সংকথষাঞ্চকুরেষো হি কুলপাৎসনঃ ॥ ২০ ॥ ব্যক্তং ভীত ইবাভ্যেতি রাজাহসৌ  
ভীষ্মমস্তিকে । যুধিষ্ঠিরঃ সমোদর্য্যঃ শরণার্থং প্রযাচকঃ ॥ ২১ ॥ ধনঞ্জয়ে কথং  
নাথে পাণ্ডপুলে বৃকোদরে । নকুলে সহদেবে চ ভীতোহভ্যেতি চ পাণ্ডবঃ ॥ ২২ ॥

ন স্মনং ক্লিষকুলে জাতোহযং প্রথিতো ভুবি । যথাস্য হৃদযং ভীতমন্নসত্ত্বস্য  
 সংযুগে ॥ ২৩ ॥ ততস্তে সৈনিকাঃ সর্বে প্রশংসন্তি স্ম কৌরবান্ । হৃষ্টাঃ স্মমনসো  
 ভূত্বা চৈলানি দুধুবুঃ পৃথক্ ॥ ২৪ ॥ ব্যনিদন্ত ততঃ সর্বে যোধাস্তত্র বিশাম্পতে ।  
 যুধিষ্ঠিরং সমোদর্যং সহিতং কেশবেন তু ॥ ২৫ ॥ ততস্তৎ কৌরবং সৈন্যং ধিক্  
 কৃত্বা তু যুধিষ্ঠিরম্ । নিঃশব্দমভবত্ত্বগং পুনরেন্ব বিশাম্পতে ॥ ২৬ ॥ কিং স্ম বক্ষ্যতি  
 রাজাহসৌ কিং ভীষ্মঃ প্রতিবক্ষ্যতি । কিং ভীমঃ সমরশ্লাঘী কিমু কৃষ্ণার্জুনাবি-  
 তি ॥ ২৭ ॥ বিবক্ষিতং কিমস্যেতি সংশযঃ স্ম মহানভুৎ । উভযোঃ সেনযো রাজন্  
 যুধিষ্ঠিররূতে তদা ॥ ২৮ ॥ সোহবগাহ চমুং শত্রোঃ শরশক্তিসমাকুলাম্ । ভীষ্ম-  
 মেবাভ্যযাতুর্নং ভ্রাতৃভিঃ পরিবারিতঃ ॥ ২৯ ॥ তমুবাচ ততঃ পাদৌ কঁরাভ্যাং  
 পীড়্য পাণ্ডবঃ । ভীষ্মং শাস্তনবং রাজা যুদ্ধায় সমুপস্থিতম্ ॥ ৩০ ॥ যুধিষ্ঠির উবাচ ।  
 আমন্ত্রযে হ্বাং দুর্দর্ষ হ্বযা যোৎস্যামহে সহ । অনুজানীহি মাং তত্র আশিষশ্চৈব  
 যোজয ॥ ৩১ ॥ ভীষ্ম উবাচ । যদ্যেবং নাধিগচ্ছেথা যুধি মাং পৃথিবীপতে ।  
 শপেষং হ্বাং মহারাজ পরাভাবায় ভারত ॥ ৩২ ॥ প্রীতোহস্মি পুত্র যুধ্যস্ব জযমা-  
 প্লুহি পাণ্ডব । যত্তেহভিলষিতং চান্যত্তদবাপ্লুহি সংযুগে ॥ ৩৩ ॥ ত্রিযতাঞ্চ বরঃ  
 পার্থ কিমস্মত্তোহভিকাক্ষসি । এবং গতে মহারাজ ন তবাস্তি পরাজযঃ ॥ ৩৪ ॥  
 অর্থস্য পুরুষো দাসো দাসস্তুর্থো ন কস্যচিৎ । ইতি সত্যং মহারাজ বন্ধোহস্ম্য-  
 র্থেন কৌরবৈঃ ॥ ৩৫ ॥ অতস্ত্বাং ক্লীববদ্বাক্যং ত্রবীমি কুরুনন্দন । ভূতোহস্ম্য-  
 র্থেন কৌরবৈর্যুদ্ধাদন্যৎ কিমিচ্ছসি ॥ ৩৬ ॥ যুধিষ্ঠির উবাচ । মন্ত্রযস্ব মহাপ্রাজ্ঞ  
 হিতার্থী মম নিত্যশঃ । যুধ্যস্ব কৌরবার্থে বৈ মমৈষ সততং বরঃ ॥ ৩৭ ॥ ভীষ্ম  
 উবাচ । রাজন্ কিমত্র সহং তে করোমি কুরুনন্দন । কামং যোৎস্যে পরস্যার্থে বৃহি  
 যত্তে বিবক্ষিতম্ ॥ ৩৮ ॥ যুধিষ্ঠির উবাচ । কথং জযেষং সংগ্রামে ভবন্তমপরাজিতম্ ।  
 এতন্মে মন্ত্রয হিতং যদি শ্রেযঃ প্রপশ্যসি ॥ ৩৯ ॥ ভীষ্ম উবাচ । ন তং পশ্যামি  
 কৌন্তেষ যো মাং যুধ্যন্তমাহবে । বিজযেত পুমান্ কশ্চিদপি সাক্ষাচ্ছতক্র-  
 তুঃ ॥ ৪০ ॥ যুধিষ্ঠির উবাচ । তস্মাৎ পৃচ্ছাম্যহং তু হ্বাং পিতামহ নমোহস্ততে ।  
 জযোপায়ং ত্রবীহি হ্বমাত্মনঃ সমরে পরৈঃ ॥ ৪১ ॥ ভীষ্ম উবাচ । ন স্ম তং তাত  
 পশ্যামি সমরে যো ক্ৰুবেত নাম্ । ন তাবগ্নতু্যকালো মে পুনরাগমনং কুরু ॥ ৪২ ॥  
 মঞ্জয উবাচ । ততো যুধিষ্ঠিরো বাক্যং ভীষ্মস্য কুরুনন্দন । শিরসা প্রতিজগ্রাহ  
 ভূযস্তমভিবাদ্য চ ॥ ৪৩ ॥ শ্লাঘাৎ পুনর্নহাবাহরাচার্যস্য রথং প্রতি । পশ্যতাং  
 সর্বসৈন্যানাং মধ্যেন ভ্রাতৃভিঃ সহ ॥ ৪৪ ॥ স দ্রোণমভিবাদ্যাত্ব কৃত্বা চৈব প্রদ-

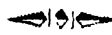
ক্ষিণম্ । উবাচ রাজা দুর্দ্ধর্ষমান্ননিঃশ্রেয়সং বচঃ ॥ ৪৫ ॥ আমন্ত্রয়ে হ্মাং ভগবন্  
 যোৎস্যে বিগতকল্মষঃ । কথং জয়ে রিপুন্ সর্বাননুজ্ঞাতস্ত্বয়া দ্বিজ ॥ ৪৬ ॥ দ্রোণ  
 উবাচ । যদি মাং নাধিগচ্ছেথা যুদ্ধায় কৃতনিশ্চয়ঃ । শপেযং হ্মাং মহারাজ পরা-  
 ভাবায় সর্বশঃ ॥ ৪৭ ॥ তদ্যুধিষ্ঠির তুর্কোহস্মি পূজিতশ্চ হ্ময়ানষ । অনুজানামি  
 যুধ্যস্ব বিজয়ং সমবাপ্লুহি ॥ ৪৮ ॥ করবাণি চ তে কামং ব্রুহি যত্তে বিবক্ষিতম্ ।  
 এবং গতে মহারাজ যুদ্ধাদন্যৎ কিমিচ্ছসি ॥ ৪৯ ॥ অর্থস্য পুরুষো দাসো দাস-  
 স্ত্বর্থো ন কস্যচিৎ । ইতি সত্যং মহারাজ বন্ধোহস্ম্যর্থেন কৌরবৈঃ ॥ ৫০ ॥ অত-  
 স্ত্বাং ক্লীববদ্বয়াং যুদ্ধাদন্যৎ কিমিচ্ছসি । যোৎস্যামি কৌরবস্যার্থে তবাশাস্যো  
 জযো মম ॥ ৫১ ॥ যুধিষ্ঠির উবাচ । জযমাশাস্ব মে ব্রহ্মস্বস্ত্বয়শ্চ মদ্বিতম্ । যুধ্যস্ব  
 কৌরবস্যার্থে বর এষ বৃত্তো ময়া ॥ ৫২ ॥ দ্রোণ উবাচ । ধ্রুবস্তে বিজযো রাজন্ যস্য মন্ত্রী  
 হরিস্তব । অহং হ্মানুজানামি রণে শত্রুন্ বিজেষ্যসি ॥ ৫৩ ॥ যতো ধর্মস্তুতঃ কৃষ্ণো  
 যতঃ কৃষ্ণস্তুতো জযঃ । যুধ্যস্ব গচ্ছ কৌন্তেয পৃচ্ছ মাং কিং ব্রবীমি তে ॥ ৫৪ ॥  
 যুধিষ্ঠির উবাচ । পৃচ্ছামি হ্মাং দ্বিজশ্রেষ্ঠ শৃণু মে যদ্বিবক্ষিতম্ । কথং জযেয-  
 সংগ্রামে ভবন্তমপরাজিতম্ ॥ ৫৫ ॥ দ্রোণ উবাচ । ন তেহস্তু বিজযস্তাবদ্যাবদ্যু-  
 ধ্যাম্যহং রণে । মমাশু নিধনে রাজন্ যতস্ব সহ সোদরৈঃ ॥ ৫৬ ॥ যুধিষ্ঠির উবাচ ।  
 হন্ত তস্মান্নহাবাহো বধোপাযং বদাত্মনঃ । আচার্য্য প্রণিপতৈত্যষ পৃচ্ছামি হ্মাং  
 নমোহস্তু তে ॥ ৫৭ ॥ দ্রোণ উবাচ । ন শত্রুং তাত পশ্যামি যো মাং হন্যাদ্রণে  
 স্থিতম্ । যুধ্যমানং সুসংরদ্ধং শরবযৌর্ঘবর্ষণম্ ॥ ৫৮ ॥ ঋতে প্রায়গতং রাজন্  
 ন্যস্তশস্ত্রমচেতনম্ । হন্যাত্মাং যুধি যো হন্যাৎ সত্যমেতদ্ববীমি তে ॥ ৫৯ ॥ শস্ত্রং  
 চাহং রণে জহ্যং শ্রদ্ধা স্মহদপ্রিয়ম্ । শক্বেষবাক্যাৎ পুরুষাদিতি সত্যং ব্রবীমি  
 তে ॥ ৬০ ॥ মঞ্জুষ উবাচ । এতচ্ছুভ্বা মহারাজ ভারদ্বাজস্য ধীমতঃ । অনুমান্য  
 তমাচার্য্যং প্রাযাচ্ছারদ্বতং প্রতি ॥ ৬১ ॥ সোহভিবাদ্য রূপং রাজন্ কৃদ্ধা চাভি-  
 প্রদক্ষিণম্ । উবাচ দুর্দ্ধর্ষতরং বাক্যং বাক্যবিশারদঃ ॥ ৬২ ॥ অনুমানযে হ্মাং  
 যোৎস্যামি গুরো বিগতকল্মষঃ । জযেযঞ্চ রিপুন্ সর্বাননুজ্ঞাতস্ত্বয়ানষ ॥ ৬৩ ॥  
 রূপ উবাচ । যদি মাং নাভিগচ্ছেথা যুদ্ধায় কৃতনিশ্চয়ঃ । শপেযং হ্মাং মহারাজ  
 পরাভাবায় সর্বশঃ ॥ ৬৪ ॥ অর্থস্য পুরুষো দাসো দাসস্ত্বর্থো ন কস্যচিৎ । ইতি  
 সত্যং মহারাজ বন্ধোহস্ম্যর্থেন কৌরবৈঃ ॥ ৬৫ ॥ তেষামর্থেন মহারাজ যোদ্ধব্য-  
 মिति মে মতিঃ । ব্রবীম্যতঃ ক্লীববদ্বয়াং যুদ্ধাদন্যৎ কিমিচ্ছসি ॥ ৬৬ ॥ যুধিষ্ঠির  
 উবাচ । হন্ত পৃচ্ছামি তে তস্মাদাচার্য্য শৃণু মে বচঃ । ইত্যুক্ত্বা ব্যথিতো রাজা নো-

वाच गतचेतनः ॥ ७१ ॥ सङ्गय उवाच । तं गौतमः प्रत्यूवाच विज्जायास्य विव-  
 क्रितम् । अवधोऽहं महाराज युध्यस्व जयमाप्नुहि ॥ ७८ ॥ प्रीतस्तेऽतिगमेना-  
 हं जयश्रुत्वा नराधिप । आशासिष्ये सदोथाय सत्यमेतद्विभीषि ते ॥ ७९ ॥ एत-  
 द्ब्रुवा महाराज गौतमस्य वचस्तदा । अनुमान्य रूपं राजा प्रययौ येन मद्र-  
 राट् ॥ ९० ॥ स शल्यमभिवादयाथ कृत्वा चातिप्रदक्षिणम् । उवाच राजा दुर्क्षर्षमात्मनिः-  
 श्रेयसं वचः ॥ ९१ ॥ अनुमानये द्वां दुर्क्षर्ष योऽस्ये विगतकल्मषः । जयेश्वर  
 परान् राजमनुज्जातस्तुया रिपुन् ॥ ९२ ॥ शल्य उवाच । यदि मां नातिगच्छेथा  
 युद्धाय कृतनिश्चयः । शपेथं द्वां महाराज पराभावाय वै रणे ॥ ९३ ॥ 'तुर्कोऽ-  
 स्मि पूजितश्चास्मि यं काङ्क्षसि तदस्तु ते । अनुजानामि तैव द्वां युध्यस्व जय-  
 माप्नुहि ॥ ९४ ॥ ब्रुहि तैव वरं वीर केनार्थः किं ददानि ते । एवं गते महा-  
 राज युद्धादन्यं किमिच्छसि ॥ ९५ ॥ अर्थस्य पुरुषोदासो दासस्तुर्थो न कस्यचिं ।  
 इति सत्यं महाराज वदोऽस्म्यर्थेन कौरवैः ॥ ९६ ॥ करिष्यामि हि ते कामं  
 भागिनेय यथेप्सितम् । त्रयीम्यतः क्लीबवद्वां युद्धादन्यं किमिच्छसि ॥ ९७ ॥  
 युधिष्ठिर उवाच । मन्त्रयस्व महाराज नित्यं मद्दितमुत्तमम् । कामं युध्य परस्यार्थे  
 वरमेतं वृणोम्यहम् ॥ ९८ ॥ शल्य उवाच । किमत्र ब्रुहि सहं ते करामि नृपस-  
 त्तम । कामं योऽस्ये परस्यार्थे भूतोऽस्म्यर्थेन कौरवैः ॥ ९९ ॥ युधिष्ठिर उवाच ।  
 स एव मे वरः शल्य उद्देश्येन यस्तुया कृतः । सूतपुत्रस्य संग्रामे कार्यस्तेजो-  
 बधस्तुया ॥ १०० ॥ शल्य उवाच । सम्पत्स्यतेष ते कामः कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर । यथे-  
 प्सितं गच्छ युध्य प्रतिजाने जयं तव ॥ १०१ ॥ सङ्गय उवाच । अनुमान्याथ कौन्तेयो  
 मातुलं मद्रकेश्वरम् । निर्जगाम महासैन्याद्भ्रातृभिः परिवारितः ॥ १०२ ॥ वासु-  
 देवस्तु राधेयमाहवेऽतिजगाम ह । तत एननुवाचेदं पाण्डुवार्थे गदाग्रजः ॥ १०३ ॥  
 श्रुतं मे कर्ण तीष्णस्य देवात् किल न योऽस्यसि । अस्मान् वरय राधेय यावन्तीष्णो  
 न हन्यते ॥ १०४ ॥ हते तु तीष्णे राधेय पुनरेष्यसि संयुगम् । धार्तराष्ट्रस्य सा-  
 हाय्यं यदि पश्यसि चेत् समम् ॥ १०५ ॥ कर्ण उवाच । न विप्रियं करिष्यामि धार्तरा-  
 ष्ट्रस्य केशव । त्यक्तप्राणं हि मां विद्धि दुर्योधनहितैषिणम् ॥ १०६ ॥ तद्ब्रुवा  
 वचनं कृष्णः संन्यवर्तत भारत । युधिष्ठिरपुरोगैश्च पाण्डुवैः सह सङ्गतः ॥ १०७ ॥  
 अथ सैन्यस्य मध्ये तु प्राक्कोशं पाण्डुवाग्रजः । योऽस्मान् वृणोति तमहं वरये  
 सहकारणात् ॥ १०८ ॥ अथ तान् समभिप्रेक्ष्य युयुत्सुरिदमब्रवीत् । प्रीतास्मा धर्म-  
 राजानं कुन्तीपुत्रं युधिष्ठिरम् ॥ १०९ ॥ अहं योऽस्यामि मिषतः संयुगे धृतरा-

কুজান্ । যুগ্মদর্থে মহারাজ যদি মাং বৃণুযেংনঘ ॥ ২০ ॥ যুধিষ্ঠির উবাচ । এহেহি  
 সর্বে যোৎস্যামস্তব ভ্রাতুনপণ্ডিতান্ । যুযুৎসো বাসুদেবশ্চ বযঞ্চ ব্রুম সর্বশঃ ॥ ২১ ॥  
 বৃণোমি ত্বাং মহাবাহো যুধ্যস্ব মম কারণাৎ । ত্বযি তন্ত্ৰশ্চ পিণ্ডশ্চ ধৃতরাষ্ট্রস্য দৃশ্য-  
 তে ॥ ২২ ॥ ভজস্বাস্মান্নাজপুল্ল ভজমানাম্হাদ্যুতে । ন ভবিষ্যতি দুর্ভিক্ষির্ধাত্তরা-  
 ষ্ট্রোহত্যমর্ষণঃ ॥ ২৩ ॥ সঞ্জয় উবাচ । ততো যুযুৎসুঃ কৌরব্যান্ পরিত্যজ্য সূতাং-  
 স্তব । জগাম পাণ্ডুপুত্রাণাং সেনাং বিশ্রাব্য দুন্দুভীঃ ॥ ২৪ ॥ ততো যুধিষ্ঠিরো  
 রাজা সূসংহৃষ্টো মহাভুজঃ । জগ্রাহ কবচং ভূযো দীপ্তিমং কনকোজ্জলম্ ॥ ২৫ ॥  
 প্রত্যপদ্যন্ত তে সর্বে রথান্ স্বান্ পুরুষর্ষভাঃ । ততো ব্যূহং যথাপূর্বং প্রত্যব্যূহন্ত  
 তে পুনঃ ॥ ২৬ ॥ অবাদযন্ দুন্দুভীশ্চ শতশশৈব পুঞ্চলান্ । সিংহনাদাংশ্চ  
 বিবিধান্ বিনেদুঃ পুরুষর্ষভাঃ ॥ ২৭ ॥ রথস্থান্ পুরুষব্যায়ান্ পাণ্ডবান্ প্রেক্ষ্য  
 পার্থিবাঃ । ধৃষ্টদ্যুম্নাদযঃ সর্বে পুনর্জহ্মষিরে তদা ॥ ২৮ ॥ গৌরবং পাণ্ডুপুত্রাণাং  
 মান্যমানযতাঞ্চ তান্ । দৃষ্ট্বা মহীক্ষিতস্তত্র পূজযাঞ্চক্রিরে ভূশম্ ॥ ২৯ ॥ সৌহ-  
 দঞ্চ রূপাঋষ প্রাপ্তকালং মহাত্মনাম্ । দযাঞ্চ জ্ঞাতীষু পরাং কথযাঞ্চক্রিরে  
 নৃপাঃ ॥ ৩০ ॥ সাধু সাধ্বিতি সর্বত্র নিশেচরুঃ স্তুতিসংহিতাঃ । বাচঃ পুণ্যাঃ কীর্তি-  
 মতাং মনোহৃদযকর্ষণাঃ ॥ ৩১ ॥ শ্লেচ্ছাশচার্য্যাশ্চ যে তত্র দদৃশুঃ শুশ্রুবুস্তদা ।  
 বৃত্তং তৎ পাণ্ডুপুত্রাণাং রুরুদুস্তে সগদাদাঃ ॥ ৩২ ॥ ততো জম্বুস্মহাতেরীঃ শত-  
 শশৈব পুঞ্চলান্ । শঙ্খাংশ্চ গোক্ষীরনিতান্ দধ্মুর্হৃষ্টা মনস্বিনঃ ॥ ৩৩ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি যুধিষ্ঠিরস্য ভীষ্মাদিসমীপগমনে

দ্বিচত্বারিংশত্তমোঃধ্যায়ঃ ॥ ৪২ ॥



ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । এবং ব্যূহেষনীকেষু মামকেষিতরেষু চ । কে পূর্বং প্রাহরংস্তত্র  
 কুরবঃ পাণ্ডবাস্তথা ॥ ১ ॥ সঞ্জয় উবাচ । ভ্রাতুস্তদচনং শ্রুত্বা পুল্লো দুঃশাসনস্তব ।  
 ভীষ্মং প্রমুখতঃ কৃত্বা প্রযযৌ সেনযা সহ ॥ ২ ॥ তথৈব পাণ্ডবাঃ সর্বে ভীমসেন-  
 পুরোগমাঃ । ভীষ্মেণ যুদ্ধমিচ্ছন্তঃ প্রযযুর্হৃষ্টমানসাঃ ॥ ৩ ॥ ক্ষেপাঃ কিলকিলাশকাঃ  
 কুকচা গোবিষাণিকাঃ । ভেরীমৃদঙ্গমুরজা হযকুঞ্জরনিষনাঃ ॥ ৪ ॥ উভযোঃ সেনযো  
 রাজংস্ততস্তে স্ম সমাদ্রবন্ । বযং তান্ প্রতি নর্দন্তস্তদাসীত্তুমূলং মহৎ ॥ ৫ ॥  
 মহাস্ত্যনীকানি মহাসমুচ্ছুষে সমাগমে পাণ্ডবধাত্তরাষ্ট্রযোঃ । চকম্পিরে শঙ্খমৃদঙ্গ-  
 নিষনৈঃ প্রকম্পিতানীব বনানি বায়ুনা ॥ ৬ ॥ নরেন্দ্রনাগাশ্বরথাকুলানামাগ-  
 ছতীনামশিবে মুহূর্ত্তে । বভুব ঘোষস্তমূলশ্চমুনাং বাতোদ্ধতানামিব সাগরা-



णाम् ॥ १ ॥ तस्मिन् समुत्थिते शक्रे तुमुले लोमहृषणे । भीमसेनो महाबाहूः  
 प्राणदक्षोवृषो यथा ॥ ८ ॥ शङ्खदुम्भुभिर्निर्घोषान् वारणानां वृंहितम् । सिं-  
 नादङ्ग सैन्यानां भीमसेनरवोहृत्तु ॥ ९ ॥ ह्यानां हेषमाणानामनीकेषु  
 सहस्रशः । सर्वानभ्यवच्छ्रान् भीमसेनस्य निश्चनः ॥ १० ॥ तं श्रुत्वा निन्द-  
 तस्य सैन्यास्तव वितत्रसुः । जीमूतस्येव नदतः शक्राशनिसमश्चनम् ॥ ११ ॥ बाहना-  
 नि च सर्वाणि शक्रमुत्रं प्रसुसुवुः । शक्रेण तस्य वीरस्य सिंहस्येवेतरे मृगाः ॥ १२ ॥  
 दर्शयन् घोरमात्मानं महारुमिव नादयन् । तीषयंस्ते सूतांस्तत्र तत एतान् सम-  
 भ्यां ॥ १३ ॥ तमायास्तं महेश्वासं सोदर्याः पर्यवारयन् । छ्वादयस्तुः शरत्रा-  
 तैश्चेष्टा इव दिवाकरम् ॥ १४ ॥ दुर्योधनश्च पुल्लेस्ते दुर्मुखो दुःसहः सहः । दुःशा-  
 सनश्चातिरथस्तथा दुर्म्मर्षणो नृप ॥ १५ ॥ विविंशतिश्चित्तसेनो विकर्णश्च महारथः ।  
 पुरुमित्रो जयो भोजः सोमदत्तिश्च वीर्यवान् ॥ १६ ॥ महाचापानि धुन्वन्तो  
 जलदा इव विद्युतः । आददानाश्च नाराचान् निष्कुञ्जाशीविषोपमान् ॥ १७ ॥  
 अथ ते द्रौपदीपुत्राः सौभद्रश्च महारथः । नकुलः सहदेवश्च धृष्टद्युम्नश्च पा-  
 र्थतः ॥ १८ ॥ धार्तराष्ट्रान् प्रतिघ्नुरर्द्धयस्तुः शितैः शरैः । वज्रैरिव महावेगैः  
 शिखराणि धराभृतान् ॥ १९ ॥ तस्मिन् प्रथमसंग्रामे भीमज्यातलनिश्चनैः । ताव-  
 कानां परेषां नासीत् कश्चित् पराङ्मुखः ॥ २० ॥ लाघवं द्रोणशिष्याणाम-  
 पश्यं भरतर्षभ । निमित्तवेधिनां राजन् शरान् सृजतां तृणम् ॥ २१ ॥ नोप-  
 शाम्यति निर्घोषो धनुषां कूजतां तदा । विनिश्चरुः शरा दीपुत्रा ज्योतींषीव  
 नतस्तलात् ॥ २२ ॥ सर्वे ह्यने्ये महीपालाः प्रेक्षका इव भारत । ददृशुर्दर्शनीयं  
 तं भीमं ज्वातिसमागमम् ॥ २३ ॥ ततस्ते जातसंरुन्ताः परस्पररुतागसः ।  
 अन्योहन्यस्पर्द्धया राजन् व्याघ्रस्तु महारथाः ॥ २४ ॥ कुरूपाण्डवसेने ते हस्त्य-  
 श्वरथसङ्कुले । शुशुभताते रणेऽतीव पटे चित्रगते इव ॥ २५ ॥ ततस्ते पार्थिवाः  
 सर्वे प्रगृहीतशरासनाः । सहसैन्याः समापेतुः पुल्लस्य तव शासनात् ॥ २६ ॥  
 तेषामाधावतास्तत्र गजाश्वकलिलो महान् । सिंहनादरवोग्निश्रेः शङ्खतेरीसमा-  
 कुलः ॥ २७ ॥ सघोषवाङ्मुरग्राहो धनुर्नागोऽसिकच्छपः । व्यावल्गितपुरोवात  
 आसीत् क्रुक्काक्विबत् स्वनः ॥ २८ ॥ युधिष्ठिरेण चादिष्ठाः पार्थिवास्ते सहस्रशः । विन-  
 दन्तुः समापेतुः पुल्लस्य तव बाहिनीम् ॥ २९ ॥ उभयोः सेनयोस्तौत्रः सैन्यानां  
 स समागमः । अस्तुर्क्षीयत चादित्यः सैन्येन रजसा वृतः ॥ ३० ॥ प्रयुक्तानां प्रभ-  
 ग्नानां पुनरावर्ततामपि । न तु श्वेषां परेषां वा विशेषः समदृश्यत ॥ ३१ ॥

তস্মিন্ সূতুমুলে যুদ্ধে বর্তমানেন মহাভয়ে। অতি সর্বাণ্যনীকানি পিতা তেহতি-  
ব্যরোচত ॥ ৩২ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বনি ভীষ্মবধপর্বনি যুদ্ধারম্ভে ত্রিচত্বারিংশ-  
ভ্রমোহধ্যায়ঃ ॥ ৪৩ ॥



সঞ্জয় উবাচ। পূর্বাঙ্কে তস্য রৌদ্রস্য যুদ্ধমহো বিশাম্পতে। প্রাবর্তত মহা-  
ঘোরং রাজ্ঞাং দেহাবকর্তনম্ ॥ ১ ॥ কুরুণাং সৃঞ্জয়ানাঞ্চ সংগ্রামে বিজিগীষতাম্।  
সিংহানামিব সংহাদো দিবমুর্ধীঞ্চ নাদয়ন্ ॥ ২ ॥ আসীৎ কিলকিলাশকস্তল-  
শঙ্খরবৈঃ সহ। জজ্জিরে সিংহনাদাশ্চ নরাণাং প্রতিগর্জতাম্ ॥ ৩ ॥ তলত্রাভি-  
হতশৈব জ্যাশকো ভরতর্ষভ। পত্নীনাং পদশকশ্চ বাজিনাঞ্চ মহাস্বনঃ ॥ ৪ ॥  
তোত্রাক্লুশনিপাতশ্চ আযুধানাঞ্চ নিস্বনঃ। ঘণ্টাশকশ্চ নাগানামন্যোন্যমতিধা-  
বতাম্ ॥ ৫ ॥ তস্মিন্ সমুদিতঃ শকস্তমুলো লোমহর্ষণঃ। বভূব রথনির্ঘোষঃ পঙ্ক-  
ন্যানিনদোপমঃ ॥ ৬ ॥ তে মনঃ ক্রুরমাস্থায় সমভিত্যক্ৰুজীবিতাঃ। পাণ্ডবানভ্য-  
বর্তন্ত সর্ব এবোচ্ছ্রিতধ্বজাঃ ॥ ৭ ॥ স্বয়ং শাস্তনবো রাজন্নভ্যধাবদ্ধনঞ্জয়ম্। প্রগহ  
কাম্মুকং ঘোরং কালদণ্ডোপমং রণে ॥ ৮ ॥ অর্জুনোহপি ধনুর্গৃহ্ণ গাণ্ডীবং লো-  
কবিশ্রুতম্। অভ্যধাবত তেজস্বী গাঙ্গেয়ং রণমূর্ধনি। তাবুভৌ কুরুশার্দূলৌ  
পরস্পরবধৈষণৌ ॥ ৯ ॥ গাঙ্গেয়স্তু রণে পার্থং বিদ্ধ্বা নাকম্পযদ্বলী। তথৈব  
পাণ্ডবো রাজন্ ভীষ্মং নাকম্পযদ্বুধি ॥ ১০ ॥ সাত্যকিস্তু মহেষাসঃ ক্লতবর্মান-  
মভ্যাৎ। তযোঃ সমভবদ্বুধুং তুমুলং লোমহর্ষণম্ ॥ ১১ ॥ সাত্যকিঃ ক্লতবর্মানঃ  
ক্লতবর্মা চ সাত্যকিম্। আনচ্ছতুঃ সনির্ঘোষঃ তক্ষমাণৌ পরস্পরম্ ॥ ১২ ॥ তৌ  
শরার্চিতসর্বাঙ্কৌ শুশুভাতেহথ সাত্বতৌ। বসন্তে পুষ্পশবলৌ পুষ্পিতাবিব কিং-  
শুকৌ। অভিমন্যুর্মহেষাসৌ বৃহদ্বলমযোধযৎ ॥ ১৩ ॥ ততঃ কোশলকো রাজা সৌভ-  
দ্রস্য বিশাম্পতে। ধ্বজং চিচ্ছেদ সমরে সারথিং চাত্যপাতযৎ ॥ ১৪ ॥ সৌভদ্রস্তু ততঃ  
ক্রুদ্ধঃ পাতিতে রথসারথৌ। বৃহদ্বলং মহারাজ বিব্যাধ নবতিঃ শরৈঃ ॥ ১৫ ॥  
অথাপরাত্যাং তল্লাভ্যাং শিতাভ্যামরিমর্দনঃ। ধ্বজমেকেন চিচ্ছেদ পার্শ্বমেকেন  
সারথিম্। অন্যোহন্যাঞ্চ শরৈস্তীকৈস্তু তক্ষতুররিন্দমৌ ॥ ১৬ ॥ মানিনং সমরে  
দীপ্তং ক্লতবৈরং মহারথম্। ভীমসেনস্তব সূতং দুর্ঘোধানমযোধযৎ ॥ ১৭ ॥ তাবু-  
ভৌ নরশার্দূলৌ কুরুমুখ্যৌ মহারথৌ। অন্যোহন্যাং শরবর্ষাভ্যাং ববৃষাতে রণা-  
জিরে ॥ ১৮ ॥ তৌ বীক্ষ্য তু মহাত্মানৌ কৃতিনৌ চিত্রযোধিনৌ। বিস্ময়ঃ সর্বভু-

तानां समपद्यत भारत ॥ १२ ॥ दुःशासनस्तु नकुलं प्रत्यूष्याय महारथम् ।  
 वानैरविध्यमिशितैर्दशभिर्मन्त्रैर्दिभिः ॥ २० ॥ तस्य माद्रीसूतः केतुं सशरं  
 शरामनम् । चिच्छेद निशितैर्बाणैः प्रहसन्निव भारत । अथैनं पञ्चविंशत्या  
 क्षुद्रकाणां समर्पयत् ॥ २१ ॥ पुत्रस्तु तव दुर्क्षुर्षो नकुलस्य महाहवे । तुरङ्गा-  
 शैव चिच्छेद ध्वजैश्चैव न्यपातयत् ॥ २२ ॥ दुर्मुखः सहदेवस्तु प्रत्यूष्याय महा-  
 बलम् । विव्याध शरवर्षेण यतमानं महाहवे ॥ २३ ॥ सहदेवस्ततो वीरो दुर्मुखस्य  
 महामूढे । शरेण भृशतीक्ष्णं पातयामास मारथिम् ॥ २४ ॥ तावनेयान्यं सर्मा-  
 साद्य समरे युद्धदुर्मदो । त्रासयेतां शरैर्घोरैः क्रुतप्रतिकृतैर्षिर्णो ॥ २५ ॥  
 युधिष्ठिरः स्वयं राजा मद्रराजानमभ्ययात् । तस्य मद्रपतिश्चापं द्विधा चिच्छेद  
 पश्यतः ॥ २६ ॥ तदपास्य धनुश्छिन्नं कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः । अन्यं कार्मुकमा-  
 दत्त वेगवद्वलवन्तरम् ॥ २७ ॥ ततो मद्रेश्वरं राजा शरैः समतपर्वभिः । छाद-  
 यामास संक्रुद्धस्तिष्ठं तिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ २८ ॥ धृष्टद्युम्नस्ततो द्रोणमभ्यधावत भा-  
 रत । तस्य द्रोणः सुसंक्रुद्धः परासूकरणं दृत्म् । धनुश्चिच्छेद समरे पाषाण्यस्य  
 महारथः ॥ २९ ॥ शरैश्चैव महाघोरं कालदण्डमिवापरम् । प्रेषयामास समरे-  
 सोऽस्य काये न्यमज्जत ॥ ३० ॥ अथान्यद्विरादाय सायकांश्च चतुर्दश । द्रोणं  
 द्रुपदपुत्रस्तु प्रतिविव्याध संयुगे । तावनेयान्यं सुसंरक्तो चक्रतुः सुभृशं  
 रणम् ॥ ३१ ॥ सोमदन्तिं रणे शश्वो रभसं रभसो युधि । अत्यूष्यस्यो महाराज  
 तिष्ठं तिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ ३२ ॥ तस्य वै दक्षिणं वीरो निर्विभेद रणे भुजम् ।  
 सोमदन्तिस्ततः शश्वं जत्रुदेशे समाहनत् ॥ ३३ ॥ तयोः समभवद्वुद्धं घोर-  
 रूपं विशाम्पते । दृष्टयोः समरे तूर्णं देवदानवयोरिव ॥ ३४ ॥ बाह्लीकस्तु  
 रणे क्रुद्धः क्रुद्धरूपं विशाम्पते । अभ्यद्रवदनेयात्त्रा धृष्टकेतुर्महारथः ॥ ३५ ॥  
 बाह्लीकस्तु ततो राजन् धृष्टकेतुममर्षणम् । शरैर्बहुभिरधनच्छं सिंहनादमथान-  
 दत् ॥ ३६ ॥ चेदिराजस्तु संक्रुद्धो बाह्लीकं नवभिः शरैः । विव्याध समरे तूर्णं  
 गतो मत्तमिव द्विपम् ॥ ३७ ॥ तौ तत्र समरे क्रुद्धो नर्दन्तो च मुहूर्मुहूः । समी-  
 यतुः सुसंक्रुद्धावङ्गारकवुधाविव ॥ ३८ ॥ राक्षसं क्रूरकर्माणं क्रूरकर्मा यटो-  
 कचः । अलघुषं प्रत्यूष्याद्वलं शक्र इवाहवे ॥ ३९ ॥ यटोऽकचस्तु संक्रुद्धो  
 राक्षसं तं महाबलम् । नवत्या शायकैस्त्यैर्द्वन्द्वारयामास भारत ॥ ४० ॥ अलघु-  
 यस्तु समरे तैमसेनिं महाबलम् । बहुधा दारयामास शरैः समतपर्वभिः ॥ ४१ ॥  
 व्याभ्राजेतां ततस्तौ तु संयुगे शरविक्रतो । यथा देवासुरे युद्धे बलशक्तौ महा-

বলৌ ॥ ৪২ ॥ শিখণ্ডী সমরে রাজন্ দ্রৌণিমভ্যুদ্যযৌ বলী । অশ্বথামা ততঃ ক্রুদ্ধঃ  
 শিখণ্ডিনমবস্থিতম্ । নারাচেন সূতীক্লেণ ভূশং বিদ্ধ্বা ব্যকম্পযৎ ॥ ৪৩ ॥ শিখ-  
 ণ্ড্যপি ততো রাজন্ দ্রোণপুত্রমত্ৰাডযৎ । সাযকেন সূপীতেন তীক্লেণ নিশিতেন  
 চ । জম্বতুস্তৌ তদান্যোন্যং শরৈৰ্ৰহুভিধৈশ্শৃধে ॥ ৪৪ ॥ ভগদত্তং রণে শূরং বি-  
 রাটৌ বাহিনীপতিঃ । অভ্যযাত্তুরিতৌ রাজংস্ততো যুদ্ধমবর্তত ॥ ৪৫ ॥ বিরাটৌ  
 ভগদত্তস্ত শরবর্ষণ ভারত । অভ্যবর্ষৎ সুসংক্রুদ্ধো মেঘো বৃষ্টিয়া ইবাচলম্ ॥ ৪৬ ॥  
 ভগদত্তস্ত তং তুর্ণং বিরাটং পৃথিবীপতিম্ । ছাদযামাস সমরে মেঘঃ সূর্য্যমিবো-  
 দিতম্ ॥ ৪৭ ॥ বৃহৎক্ষত্রঞ্চ কৈকেয়ং রূপঃ শারদ্বতো যযৌ । তং রূপঃ শরবর্ষণে  
 ছাদযামাস ভারত । গৌতমঞ্চ সুসংক্রুদ্ধঃ শরবৃষ্টিয়াভ্যপূরযৎ ॥ ৪৮ ॥ ততো-  
 ন্যোন্যং হযান্ হত্বা ধনুশ্ছিত্বা চ ভারত । বিরথাবসিযুদ্ধায় সমীযতুরমর্ষণৌ ।  
 তযোস্তদভবদ্বুদ্ধং ঘোররূপং দুরাসদম্ ॥ ৪৯ ॥ দ্রুপদস্ত ততো রাজা সৈন্ধবং  
 বৈ জয়দ্রথম্ । অভ্যুদ্যযৌ সুসংক্রুদ্ধো হৃষ্টরূপং পরস্তপ ॥ ৫০ ॥ ততঃ সৈন্ধবকৌ  
 রাজা দ্রুপদং বিশিথৈস্ত্রিভিঃ । তাডযামাস সমরে স চ তং প্রত্যবিধ্যত ॥ ৫১ ॥  
 তযোঃ সমভবদ্বুদ্ধং ঘোররূপং সুদারুণম্ । ঈক্ষিতৃপ্রীতিজননং শুক্রাঙ্গারকযো-  
 রিব ॥ ৫২ ॥ বিকর্ণস্ত সূতস্তভ্যং সূতসোমং মহাবলম্ । অভ্যযাজ্জবনৈরশ্বেস্ত-  
 তো যুদ্ধমবর্তত ॥ ৫৩ ॥ বিকর্ণঃ সূতসোমস্ত বিদ্ধ্বা নাকম্পযচ্ছরৈঃ । সূতসোমৌ  
 বিকর্ণঞ্চ তদদ্ভুতমিবাভবৎ ॥ ৫৪ ॥ সুশর্মাণং নরব্য্যাঘুং চেকিতানো মহারথঃ ।  
 অভ্যদ্রবৎ সুসংহৃষ্টঃ পাণ্ডবার্থে পরাক্রমী ॥ ৫৫ ॥ সুশর্মা তু মহারাজ চেকি-  
 তানং মহারথম্ । মহতা শরবর্ষণে বারযামাস সংযুগে ॥ ৫৬ ॥ চেকিতানোহপি  
 সংরুদ্ধঃ সুশর্মাণং মহাহবে । ববর্ষ শরবর্ষণে মহামেষ ইবাচলম্ ॥ ৫৭ ॥ শকুনিঃ  
 প্রতিবিন্ধ্যস্ত পরাক্রান্তং পরাক্রমী । অভ্যদ্রবত রাজেন্দ্র মত্তং সিংহ ইব দ্বি-  
 পম্ ॥ ৫৮ ॥ যৌধিষ্ঠিরঃ সুসংক্রুদ্ধঃ সৌবলং নিশিতৈঃ শরৈঃ । ব্যদারযত সংগ্রামে  
 মঘবা ইব দানবম্ ॥ ৫৯ ॥ শকুনিঃ প্রতিবিন্ধ্যস্ত পরাক্রান্তং পরাক্রমী । অদারয-  
 ন্নহাপ্রাজ্ঞং শরৈঃ সন্নতপর্ষতিঃ ॥ ৬০ ॥ সুদক্ষিণস্ত রাজেন্দ্র কাষোজানাং মহার-  
 থম্ । শ্রুতকর্মা পরাক্রান্তমভ্যদ্রবত সংযুগে ॥ ৬১ ॥ সুদক্ষিণস্ত রাজেন্দ্র সাহদেবিং  
 মহারথম্ । বিদ্ধ্বা নাকম্পযচ্চৈনং মৈনাকমিব পর্ষতম্ ॥ ৬২ ॥ শ্রুতকর্মা ততঃ  
 ক্রুদ্ধঃ কাষোজানাং মহারথম্ । শরৈৰ্ৰহুভিরানচ্ছদারযামিব সর্ষশঃ ॥ ৬৩ ॥ ইরা-  
 বানথ সংক্রুদ্ধঃ শ্রুতায়ুষমমর্ষণম্ । প্রত্যুদ্যযৌ রণে যতো যত্তরূপং পরস্তপঃ ॥ ৬৪ ॥  
 আজ্জনিস্তস্য সমরে হযান্ হত্বা মহারথঃ । ননাদ বলবান্নাজংস্তৎ সৈন্যং প্রত্য-

पूजयत् ॥ ७५ ॥ श्रुतायुस्तु सुसंक्रुद्धः फाल्गुनेः समरे ह्यान् । निजघ्नान गदाग्रेण  
 भतो युद्धमवर्तत ॥ ७७ ॥ विन्दान्नुविन्दामावन्त्यो कुन्तिभोजं महारथम् । ससेनं  
 समुत्तं वीरं संसज्जतुराहवे ॥ ७९ ॥ तत्राद्भुतमपश्यामस्तयोर्घोरं पराक्रमम् ।  
 अयुध्येतां स्थिरो भूष्वा महत्या सेनया सह ॥ ७८ ॥ अनुविन्दस्तु गदया कुन्ति-  
 भोजमताडयत् । कुन्तिभोजश्च तं तूर्णं शरव्रातेरवाकिरत् ॥ ७९ ॥ कुन्तिभो-  
 जस्तुतश्चापि विन्दं विव्याध शायकैः । स च तं प्रतिविव्याध तदद्भुतमिवात्-  
 वत् ॥ ९० ॥ कैकेया भ्रातरः पक्ष गान्धारान् पक्ष मारिष । ससैन्याः सहसै-  
 न्यांस्तु योधयामासुराहवे ॥ ९१ ॥ वीरवाहश्च ते पुलो वैराटिं रथसन्तमम् ।  
 उन्नरं योधयामास विव्याध निशितैः शरैः । उन्नरश्चापि तं वीरं विव्याध नि-  
 शितैः शरैः ॥ ९२ ॥ चेदिराट् समरे राजमूलकं समभिद्रवत् । तथैव शरवर्षेण  
 उलूकं समविध्यत् । उलूकश्चापि तं वाणैर्निशितैर्लोमवाहिभिः ॥ ९३ ॥ तयो-  
 र्युद्धं समभवद्घोररूपं विशाम्पते । दारयेतां सुसंक्रुद्धावन्योन्यमपराजि-  
 तो ॥ ९४ ॥ एवं द्वन्द्वसहस्राणि रथवारणवाजिनाम् । पदातीनां समरे तव  
 तेषां सकूलम् ॥ ९५ ॥ मुहूर्तमिव तद्व्युद्धमासीन्मधुरदर्शनम् । तत उन्नतवद्राजम  
 प्राज्जायत किङ्कन ॥ ९७ ॥ गजो गजेन समरे रथी च रथिनं यथो । अश्वो-  
 हश्च समरे प्रेत्य पदातिश्च पदातिनम् ॥ ९९ ॥ ततो युद्धं सुदुर्द्ध्वं व्याकुलं  
 समपद्यत् । शूराणां समरे तत्र समासाद्य परस्परम् ॥ ९८ ॥ तत्र देवर्षयः सिद्धा-  
 श्चारणाश्च समागताः । त्रैलोक्यं तद्रणं घोरं देवासुरसमं भुवि ॥ ९९ ॥ ततो  
 दान्तिसहस्राणि रथानांश्चापि मारिष । अश्वोघाः पूरुषोघाश्च विपरीतं समा-  
 ययुः ॥ ८० ॥ तत्र तत्र व्यदृश्यन्त रथवारणपत्रयः । सादिनश्च नरव्याघ्र युध्यमाना  
 मुहूर्त्मुहः ॥ ८१ ॥

इति भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि सकूलयुद्धे चतुश्चत्वारिंश-

तमोऽध्यायः ॥ ४४ ॥



सङ्गम उवाच । राजन् शतसहस्राणि तत्र तत्र पदातिनाम् । निर्भय्यादं प्रयुक्तानि  
 तन्त्रे वक्ष्यामि भारत ॥ १ ॥ न पुत्रः पितरं जज्ञे न पिता पुत्रमौरसम् । न  
 भ्राता भ्रातरं तत्र स्वमीयो न च मातुलम् ॥ २ ॥ न मातुलश्च स्वमीयं न सथायं  
 सथा तदा । आविष्ठा इव युधास्ते पाण्डवाः कुरुभिः सह ॥ ३ ॥ रथानीकं नर-  
 व्याघ्राः केचिदत्यपतनुथैः । अबज्यन्त युगेरेव युगानि भरतर्षभ ॥ ४ ॥ रथे-

शाश्वत् रथेशाभिः कूवरा रथकूवरेः । संहतैः संहताः केचिं परस्परजिघांस-  
 सवः । न शुकुचलितुं केचिं सन्निपत्य रथारथैः ॥ ५ ॥ प्रतिमास्तु महानागाः  
 सन्निपत्य महागजैः । बहुधादारयन् क्रुद्धा विषाणैरितरेतरम् ॥ ६ ॥ सतोमर-  
 पताकैश्च वारणा वरवारणैः । अभिसृत्य महाराज वेगवद्विर्महाजवैः । दंष्ट्र-  
 रभिहतास्तत्र चक्रुः परमातुराः ॥ ७ ॥ अभिनीताश्च शिक्षाभिस्तोत्राङ्गुशसमाह-  
 ताः । अप्रतिमाः प्रतिमानां सम्मुखाभिमुखं ययुः ॥ ८ ॥ प्रतिमैरपि संयुक्ताः  
 केचिदत्र महागजाः । क्रौञ्चवन्निन्दं मुक्त्वा प्राद्ववस्तु ततस्ततः ॥ ९ ॥ सम्यक् प्रणी-  
 ताश्च तथा प्रतिमकरटामुखाः । ऋषितोमरनाराटैर्निर्विद्धा वरवारणाः ॥ १० ॥  
 विनेदुर्भिमर्माणा निपेतुश्च गतासवः । प्रधावन्ति दिशः केचिन्नदस्तो तैरवा-  
 नुवान् ॥ ११ ॥ गजानां पादरक्षाश्च व्यूढोरक्षाः प्रहारिणः । ऋषिभिश्च धनु-  
 र्भिश्च विमलैश्च परश्वधैः ॥ १२ ॥ गदाभिर्मुषलैश्चैव भिन्दिपाटैः सतोमरैः ।  
 आयसैः परिघैश्चैव निस्त्रिंशैर्बिमलैः शितैः ॥ १३ ॥ प्रगृहीतैः सुसंरक्ता  
 द्रवमाणस्ततस्ततः । व्यदृश्यास्तु महाराज परस्परजिघांसवः ॥ १४ ॥ भ्राजमानाश्च  
 निस्त्रिंशाः संसिक्ता नरशोणितैः । प्रत्यदृश्यास्तु शूराणामन्योन्यमभिधावताम् ॥ १५ ॥  
 अवक्लिप्तावधूतानामसीनां वीरवाह्यैः । सञ्जङ्गे तुमुलः शङ्कः पततां परम-  
 र्मसू ॥ १६ ॥ गदानुषलरुग्नानां भिम्बानां वरासिभिः । दन्तिदन्तावभिम्बानां  
 मर्दिनानां दान्तिभिः ॥ १७ ॥ तत्र तत्र नरौघाणां क्रोशतामितरेतरम् । शुश्रु-  
 वुर्दारूणा वाचः प्रेतानामिव भारत ॥ १८ ॥ ह्यैरपि ह्यारोहाश्चामरापीड-  
 धारिभिः । हंसैरिव महावेगैरन्योन्यमभिविद्रताः ॥ १९ ॥ तैर्बिमुक्त्वा महा-  
 प्रासा जायूनदविभूषणाः । आशुगा विमलास्तीक्ष्णाः संपेतुर्भुजगोपमाः ॥ २० ॥  
 अश्वैरग्र्यजवैः केचिदाप्लुत्य महतो रथां । शिरांस्याददिरे वीराः रथिनाम-  
 श्वसादिनः ॥ २१ ॥ वहूनपि ह्यारोहान् भल्लैः समतपर्वभिः । रथी जघान स-  
 प्राप्य बाणगोचरमागतान् ॥ २२ ॥ नवमेघप्रतीकाशाश्चाक्लिप्य तुरगान् गजाः ।  
 स्वपादैरवमृदुस्तो मत्ताः कनकभूषणाः । प्रासैर्बिमथिताः केचिद्विनेदुः परमातु-  
 राः ॥ २३ ॥ साश्वारोहान् हयान् केचिदुग्रथ्य वरवारणाः । सहसा चिक्लिपुस्तत्र सं-  
 कुले तैरवे सति ॥ २४ ॥ साश्वारोहान् विषाणैर्गृह्णन्क्लिप्य तुरगान् गजाः ।  
 रथोघानपि मृदुस्तः सध्वजानभिचक्रुः ॥ २५ ॥ पुंसुस्तदतिमदहाच्च केचित्तत्र महा-  
 गजाः । साश्वारोहान् हयान् जम्बूः कटैः सचरणैश्च ॥ २६ ॥ प्रतिमानेषु गा-  
 त्रेषु पार्श्वेषु च वारणान् । आशुगा विमलास्तीक्ष्णा निपेतुर्भुजगोपमाः ॥ २७ ॥

नराश्वकायान्निर्भेद्य लोहानि कवचानि च । निपेतुर्विमलाः शक्त्या वीरवाह्विर्न-  
 पिताः । महोष्ठाप्रतिमा घोरान्त्र तत्र विशाम्पते ॥ २८ ॥ द्वीपिचर्मामनकैश्च  
 व्याघ्रचर्मच्छदैरपि । विकोशैर्विमलेः खञ्जेरभिजम्बुः परानुणे ॥ २९ ॥ अति-  
 प्लुतमभिक्रुद्धमेकपार्श्ववदारितम् । विदर्शयन्तुः सम्पेतुः खञ्जचर्मपरश्वधैः ॥ ३० ॥  
 केचिदाक्षिप्य करिणः साश्वानपि रथान् करेः । विकर्षन्तो दिशः सर्वाः सम्पेतुः  
 सर्वशङ्काः ॥ ३१ ॥ शकुतिर्दारिताः केचिन् संछिन्नाश्च परश्वधैः । हस्तिभिर्मृ-  
 दिताः केचिन् स्फुणाः केचित्तुरङ्गमैः ॥ ३२ ॥ रथचक्रनिकृत्वाश्च निकृत्वाश्च पर-  
 श्वधैः । व्याक्रोशन्तु महाराज तत्र तत्र स्ववाक्त्रवान् ॥ ३३ ॥ पुल्लानन्ये पितृ-  
 नन्ये भ्रातृन् च सह वन्दुभिः । मातुलान् भागिनेवांश्च परानपि च संयुगे ॥ ३४ ॥  
 विकीर्णान्त्राः सुवहवो भग्नसक्थाश्च भारत । बाह्विश्चापरेच्छिन्नेः पार्श्वेषु च  
 विदारिताः ॥ ३५ ॥ क्रन्दन्तुः समदृश्यन्तु सुभृशं जीवितेऽसवः । तृषापारिगताः  
 केचिद्वल्लसद्वा विशाम्पते ॥ ३६ ॥ भूमौ निपतिताः संख्ये मृगयाङ्कजिरे  
 जलम् । क्रुधिरौषपरिक्रिमाः क्लिश्यमानाश्च भारत ॥ ३७ ॥ व्यनिन्दन् भृशमात्मानं  
 तव पुल्लान् च भारत । अपरे क्लिष्याः शूराः क्रुतवैराः परस्परम् ॥ ३८ ॥ नैव  
 शस्त्रं विमुञ्चन्ति नैव क्रन्दन्ति मारिष । तज्ज्वलन्ति च संहृष्टान्त्र तत्र विशाम्प-  
 ते ॥ ३९ ॥ निर्दश्य दशनैश्चापि क्रोधात् स्वदशनच्छदम् । भृकुटीकुटिलैर्बक्रेः  
 प्रेक्षन्ते च परस्परम् ॥ ४० ॥ अपरे क्लिश्यमानास्तु शरार्ता व्रणपीडिताः । निष्कृजाः  
 समपद्यन्तु दृढसद्वा महाबलाः ॥ ४१ ॥ अन्ये तु विरथाः शूरा रथमन्यस्य संयुगे ।  
 प्रार्थयान् निपतिताः संस्फुणा वरवारणैः ॥ ४२ ॥ अशोभन्तु महाराज सपुष्पा  
 इव किंशुकाः । सन्धुवुरनीकेषु बहवो तैरवश्वनाः ॥ ४३ ॥ वर्तमाने महाभीमे  
 तस्मिन् वीरवरक्षये । अहनच्छ पिता पुल्लान् पुल्लश्च पितरं रणे ॥ ४४ ॥ स्वसृषो  
 मातुलकापि स्वसृषकापि मातुलः । सखा सखायश्च तथा सशकौ वाक्त्रवन्तथा ॥ ४५ ॥  
 एवमेष क्षयो वृत्तः कुरूणां पाण्डवैः सह । वर्तमाने भये तस्मिन्निर्मर्यादे महा-  
 हवे ॥ ४६ ॥ तीर्थमासाद्य पार्थानां बाहिनी समकम्पत । केतुना पङ्क्तारेण  
 तालेन भरतर्षभ ॥ ४७ ॥ राजतेन महाबाहुरूद्धितेन महारथे । बभौ तीर्थस्तदा  
 राज्ञश्चन्द्रमा इव मेरुणा ॥ ४८ ॥

इति तीर्थवधपत्रे तीर्थवधपर्वणि सकूलयुद्धे पञ्चद्वारिंश-

स्तमोऽध्यायः ॥ ४५ ॥



লঙ্কায় উবাচ । গতপূর্বান্ভূষিষ্ঠে তস্মিন্মহনি দারুণে । বর্তমানে তথা রৌদ্রে  
 রাজমরবরক্ষয়ে ॥ ১ ॥ দুর্মুখঃ কৃতবর্মা চ রূপঃ শল্যো বিবিংশতিঃ । ভীষ্মং জগু-  
 পুরাসাদ্য তব পুত্রেণ চোদিতাঃ ॥ ২ ॥ এতৈরতিরথৈর্গুপ্তঃ পঞ্চভিত্তরতর্ভ ।  
 পাণ্ডবানামনীকানি বিজগাহ মহারথঃ ॥ ৩ ॥ চেদিকাশিককেষু পাঞ্চালেষু চ  
 ভারত । ভীষ্মস্য বহুধা তালশ্চলন্ কেতুরদৃশ্যত ॥ ৪ ॥ স শিরাংসি রণে বীরো  
 রথাংশ্চ সযুগধজান্ । বিচকর্ত মহাবেগৈর্ভল্লৈঃ সন্নতপর্বতিঃ ॥ ৫ ॥ নৃত্যতো  
 রথনাগেষু ভীষ্মস্য ভরতর্ভ । কেচিদার্ত্তস্বরং চক্রুর্নাগা মর্ম্মণি তাড়িতাঃ ॥ ৬ ॥  
 অভিমন্যুঃ সুসংক্রুদ্ধঃ পিশটৈঙ্গস্তুরগোত্তমৈঃ । সুযুক্তং রথমাশ্রায় প্রাঘাণ্ডীম্বরথং  
 প্রতি ॥ ৭ ॥ জাম্বুনদবিচিত্রেণ কর্ণিকারেণ কেতুনা । অভ্যবর্ষত ভীষ্মঞ্চ তাংশ্চৈব  
 রথসত্তমান্ ॥ ৮ ॥ স তালকেতোস্তীক্ষ্ণেন কেতুমাহত্য পল্লিণা । ভীষ্মেণ যুযুধে  
 বীরস্তস্য চান্নুরথৈঃ সহ ॥ ৯ ॥ কৃতবর্মাণমেকেন শল্যং পঞ্চভিরাযসৈঃ । ভিদ্ধা  
 নবভিরানচ্ছৎ শিতাগ্রৈঃ প্রপিতামহম্ ॥ ১০ ॥ পূর্ণায়তবিসৃষ্টেন সম্যক্প্রাণিহি-  
 তেন চ । ধ্বজমেকেন বিব্যাধ জাম্বুনদবিভূষিতম্ ॥ ১১ ॥ দুর্মুখস্য তু ভল্লেন সর্বা-  
 ভরণভেদিনা । জহার সারথৈঃ কাষাচ্ছিরঃ সন্নতপর্বণা ॥ ১২ ॥ ধনুশ্চিচ্ছেদ ভল্লেন  
 কার্ত্তস্বরবিভূষিতম্ । রূপস্য নিশিতাগ্রেণ তাংশ্চ তীক্ষ্ণমুথৈঃ শরৈঃ । জঘান পর-  
 মক্রুদ্ধো নৃত্যমিব মহারথঃ ॥ ১৩ ॥ তস্য লাঘবমুদীক্ষ্য তুতুষুর্দেবতা অপি । লঙ্ক-  
 লক্ষ্যতয়া কার্ষেঃ সর্বে ভীষ্মমুখা রথাঃ । সত্ত্ববস্তমমন্যস্ত সাক্ষাদিব ধনঞ্জয়ম্ ॥ ১৪ ॥  
 তস্য লাঘবমার্গস্থমলাতসদৃশপ্রভম্ । দিশঃ পর্য্যপতচ্চাপং গাণ্ডীবমিব ঘোষ-  
 বৎ ॥ ১৫ ॥ স তমাসাদ্য বেগেন ভীষ্মো নবভিরাশুগৈঃ । বিব্যাধ সমরে তুর্নমা-  
 জ্জুনিং পরবীরহা ॥ ১৬ ॥ ধ্বজস্য ত্রিভির্ভল্লৈশ্চিচ্ছেদ পরমৌজসঃ । সারথিঞ্চ  
 ত্রিভির্বাণৈরাজঘান যতব্রতঃ ॥ ১৭ ॥ তথৈব কৃতবর্মা চ রূপঃ শল্যশ্চ মারিষ ।  
 বিদ্ধা নাকম্পযন্ কার্ষিঃ মৈনাকমিব পর্বতম্ ॥ ১৮ ॥ স তৈঃ পরিবৃতঃ শূরো ধার্ত্ত-  
 রাতৈর্মহারথৈঃ । ববর্ষ শরবর্ষাণি কার্ষিঃ পঞ্চ রথান্ প্রতি ॥ ১৯ ॥ ততস্তেষাং  
 মহাস্ত্রাণি সংবার্য্য শরবৃষ্টিভিঃ । ননাদ বলবৎ কার্ষিঃ ভীষ্মায় বিসৃজঙ্করান্ ॥ ২০ ॥  
 তত্রাস্য সুমহদ্রাজন্ বাহ্নোর্বলমদৃশ্যত । যতমানস্য সমরে ভীষ্মমর্দয়তঃ শরৈঃ ॥ ২১ ॥  
 পরাক্রান্তস্য তস্যৈবং ভীষ্মোহপি প্রাহিণোচ্ছরান্ । স তাংশি চ্ছেদ সমরে ভীষ্ম  
 চাপচ্যুতান শরান্ ॥ ২২ ॥ ততো ধ্বজমমোষেযু ভীষ্মস্য নবভিঃ শরৈঃ । চিচ্ছেদ  
 সমরে বীরস্তত উচ্চুকুশুর্জনাঃ ॥ ২৩ ॥ স রাজতো মহাক্ককস্তলো হেমবিভূষিতঃ ।  
 সৌভদ্রবিশিথৈশ্ছিন্নঃ পপাত ভুবি ভারত ॥ ২৪ ॥ ধ্বজং সৌভদ্রবিশিথৈঃ পতন্তুং

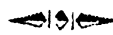


उरुतर्षतः । दृष्ट्वा भीमोहनदक्षुर्धः सौभद्रमतिहर्षयन् ॥ २५ ॥ अथ भीष्मो महा-  
 स्त्राणि दिव्यानि च बहूनि च । प्रादुश्चक्रे महारौद्रे रणे तस्मिन् महाबलः ॥ २६ ॥  
 ततः शतसहस्रेण सौभद्रं प्रपितामहः । अवाकिरदमेयास्त्रा शरणां नतपर्ष-  
 णाम् ॥ २७ ॥ ततो दश महेष्वासः पाण्डवानां महारथाः । रक्षार्थमभ्यधावन्तु सौ-  
 भद्रं दुरिता रथैः ॥ २८ ॥ विराटः सहपुत्रेण धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः । भीमश्च के-  
 कयाश्चैव सात्यकिश्च विशाम्पते ॥ २९ ॥ जवेनापततां तेषां तीम्नः शान्त-  
 नवो रणे । पाण्डाल्यं त्रिभिरानर्ह्यं सात्यकिं नवभिः शरैः ॥ ३० ॥ पूर्णायत-  
 विसृष्टेन क्रमेण निशितेन च । ध्रुवमेकेन चिच्छेद भीमसेनस्य पत्त्रिणा ॥ ३१ ॥  
 जाम्बूनदमयः केतुः केशरी नरसत्तम । पपात भीमसेनस्य तीम्नेन मथितो  
 रथां ॥ ३२ ॥ ततो भीमस्त्रिभिर्विद्ध्वा तीम्नं शान्तनवं रणे । रूपमेकेन विव्याध  
 क्रुतवर्ष्माणमर्षभिः ॥ ३३ ॥ अग्रहीताग्रहस्तुन वैराटिर्पि दन्तिना । अत्यद्रवत  
 राजानं मद्राधिपतिमुत्तरः ॥ ३४ ॥ तस्य वारणराजस्य रथे चापततो जवात् ।  
 शल्यो निवारयामास वेगमप्रतिमं रणे ॥ ३५ ॥ तस्य क्रुद्धः स नागेन्द्रो बहतः  
 साधवाहिनः । पदा युगमधिष्ठाय जघान चतुरो हवान् ॥ ३६ ॥ स हताश्वे रथे  
 तिष्ठन् मद्राधिपतिरायमीम् । उन्नरास्तकरीं शक्तिं चिक्षेप भुजगोपमाम् ॥ ३७ ॥  
 तथा भिन्नतनुद्राणः प्रविश्य विपुलं तमः । स पपात गजस्कन्धां प्रमुक्ताक्षुशतो-  
 मरः ॥ ३८ ॥ समादाय च शल्योऽसिमवप्लत्य रथोत्तमात् । वारणेन्द्रस्य विक्रम्य  
 चिच्छेदाथ महाकरम् ॥ ३९ ॥ भिन्नमर्मा शरत्रातैश्चिन्नहस्तः स वारणः । भीममार्त-  
 श्वरं क्रुत्वा पपात च ममार च ॥ ४० ॥ एतदीदृशकं क्रुत्वा मद्रराजो जनाधिपः ।  
 आरुरोह रथं तूर्णं भास्वरं क्रुतवर्ष्मणः ॥ ४१ ॥ उन्नरस्तु हतं दृष्ट्वा वैराटिर्भा-  
 तरं ततः । क्रुतवर्ष्मणा च सहितं दृष्ट्वा शल्यमवस्थितम् । शङ्खः क्रोधात् प्रजङ्घाल  
 हविषा हव्यवाडिव ॥ ४२ ॥ स विस्फार्य महच्छापं शक्रचापोपमं बली । अत्य-  
 धावज्जिघांसन् वै शल्यं मद्राधिपं युधि ॥ ४३ ॥ महता रथवंशेन समस्तां परि-  
 वारितः । सृजन् वाणमयं वर्षं प्रायाच्छल्यरथं प्रति ॥ ४४ ॥ तमापतस्तु सं-  
 प्रेक्ष्य मद्रवारणविक्रमम् । तावकानां रथाः सप्त समस्तां पर्यवारयन् । मद्रराज-  
 परीप्सुस्तो मृत्योर्दंष्ट्रास्तुरं गतम् ॥ ४५ ॥ ततो भीष्मो महाबाह्विनिन्द्य जलदो  
 यथा । तालमात्रं धनुर्गृह्य शङ्खमभ्यद्रवद्रेणे ॥ ४६ ॥ तमुद्यत्तुमुदीक्ष्याथ महेष्वासं  
 महाबलम् । संव्रस्ता पाण्डवी सेना वातवेगाहतेव नोः ॥ ४७ ॥ तत्रार्द्धूनः  
 संव्रितः शङ्खस्यासीत् पुरःसरः । भीष्माद्रक्ष्येयं यमद्योति तत्र युद्धमवर्तत ॥ ४८ ॥

হাহাকাৰো মহানাঙ্গীক্ষোধানাং যুধি যুধ্যতাম্ । তেজস্বেজসি সংপৃক্তমিত্যেবং  
 বিস্ময়ং যযুঃ ॥ ৪৯ ॥ অথ শল্যো গদাপানিরবতীৰ্য্য মহারথাৎ । শঙ্খস্য চতুরো  
 বাহানবধীন্দ্রতৰ্ষভ ॥ ৫০ ॥ সহতাশ্বো রথাত্তূৰ্ণং খজ্জমাদায় বিক্রতঃ । বীভৎ-  
 সোশ্চ রথং প্রাপ্য ততঃ শাস্তিমবিন্দত ॥ ৫১ ॥ ততো ভীষ্মরথাত্তূৰ্ণমুৎপতন্তি  
 পতপ্রিণঃ । যৈরন্তুরীক্ষং ভুমিশ্চ সৰ্বতঃ সমবস্ততা ॥ ৫২ ॥ পাঞ্চালানথ মৎ-  
 স্যাংশ্চ কেৱলাংশ্চ প্রভদ্রকান্ । ভীষ্মঃ প্রহরতাং শ্ৰেষ্ঠঃ পাতযামাস মার্গ-  
 ণৈঃ ॥ ৫৩ ॥ উৎসৃজ্য সমরে রাজন্ পাণ্ডবং সব্যসাচিনম্ । অভ্যদ্রবত পাঞ্চাল্যাং  
 ক্রপদং সেনযাবৃতম্ । প্রিযং সহস্কিনং রাজন্ শরাংশ্চ বিকিরনবহূন্ ॥ ৫৪ ॥  
 অগ্নিনেব প্রদক্ষানি বনানি শিশিৱাত্যযে । শরদক্ষান্যদৃশ্যন্ত সৈন্যানি ক্রপ-  
 দস্য হ ॥ ৫৫ ॥ অতিষ্ঠত রণে ভীষ্মো বিধূম ইব পাবকঃ ॥ ৫৬ ॥ মধ্যংদিনে যথা-  
 দিত্যং তপন্তমিব তেজসা । ন শেকুঃ পাণ্ডবেষস্য যোধা ভীষ্মং নিরীক্ষিতুম্ ॥ ৫৭ ॥  
 বীক্ষাঞ্চক্রঃ সমস্তান্তে পাণ্ডবা ভযপীড়িতাঃ । ত্রাতারং নাভ্যপদ্যন্ত গাবঃ শীতা-  
 দ্বিতা ইব ॥ ৫৮ ॥ হতবিপ্রক্রতে সৈন্যে নিরুৎসাহে বিমর্দিতৈ । হাহাকাৰো  
 মহানাঙ্গী পাণ্ডুসৈন্যস্য ভারত ॥ ৫৯ ॥ ততো ভীষ্মঃ শান্তনবো নিত্যং মণ্ডল-  
 কাশ্মুকঃ । মুমোচ বাণান্দীপ্তাগ্রানহীনাশীবিধানিব ॥ ৬০ ॥ শরৈরেকায়নীকুৰ্বন্  
 দিশঃ সৰ্বা যতত্রতঃ । জঘান পাণ্ডবরথানাदिश्यादिश्य ভারত ॥ ৬১ ॥ ততঃ সৈ-  
 ন্যেযু ভগ্নেষু মথিতেষু চ ভারত । প্রাপ্তে চাস্তং দিনকরে ন প্রাজ্জায়ত কিঞ্চ-  
 ন ॥ ৬২ ॥ ভীষ্মঞ্চ সমুদীৰ্য্যন্তং দৃষ্ট্বা পার্থা মহাহবে । অবহারমকুৰ্বন্ত সৈন্যানাং  
 ভরতৰ্ষভ ॥ ৬৩ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি শঙ্খযুদ্ধে প্রমথদিনসৈন্যাবহারে

ষট্চত্বারিংশত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৪৬ ॥



সঞ্জয় উবাচ । ক্রতেহবহারে সৈন্যানাং প্রথমে ভরতৰ্ষভ । ভীষ্মে চ যুধি সং-  
 রুদ্ধে হৃষ্টে দুৰ্য্যোধনে তথা ॥ ১ ॥ ধৰ্ম্মরাজস্ততস্তূৰ্ণমভিগম্য জনার্দনম্ । ভ্রাতৃভিঃ  
 সহিতঃ সৰ্বৈঃ সৰ্বৈশ্চৈব জনেশ্বরৈঃ ॥ ২ ॥ শোকেন মহতা যুক্তশ্চিত্তযানঃ পৱা-  
 জয়ম্ । বাৰ্ষেযমব্রবীদ্রাজা দৃষ্ট্বা ভীষ্মস্য বিক্রমম্ ॥ ৩ ॥ কৃষ্ণং পশ্য মহেষাসং  
 ভীষ্মং ভীষ্মপৱাক্রমম্ । শরৈর্দহতি সৈন্যং মে গ্রীষ্মে কক্ষমিবানলঃ ॥ ৪ ॥ কথ-  
 মেনং মহাত্মানং শক্যামং প্রতিবীক্ষিতুম্ । লেলিহমানং সৈন্যং মে হবিষ্মস্তমি-  
 বানলম্ ॥ ৫ ॥ এনং হি পুরুষব্যাস্তং ধনুশ্চন্তং মহাবলম্ । দৃষ্ট্বা বিপ্রক্রতং সৈন্যং

मदीयं मार्गणाहतम् ॥ ७ ॥ शक्यो जेतुं यमः क्रुद्धो ब्रह्मपाणिश्च संयुगे ।  
 बरुणः पाशतृष्णापि कुबेरो वा गदाधरः ॥ १ ॥ न तु भीष्मो महातेजाः शक्यो  
 जेतुं महाबलः । सोऽहमेव गते मग्ने भीष्मागाधजले प्लुतः ॥ ८ ॥ आत्मनो  
 बुद्धिदोर्बल्याद्धीमत्सामाद्य केशव । वनं यास्यामि वार्ष्णेय श्रेष्ठो मे तत्र जीवि-  
 त्नुम् ॥ ९ ॥ न द्विमान् पृथिवीपालान् दातुं भीष्माय मृत्यवे । ऋषियत्याति सेनां  
 मे क्रुषः भीष्मो महास्रविं ॥ १० ॥ यथानलं प्रज्वलितं पतङ्गाः समतिक्रताः ।  
 विनाशायैव गच्छन्ति तथा मे सैनिका जनाः ॥ ११ ॥ ऋषं नीतोऽस्मि वार्ष्णेय  
 राज्यहेतोः पराक्रमी । भ्रातरश्चैव मे वीराः कर्षिताः शरपीडिताः ॥ १२ ॥  
 मत्कृते भ्रातृहार्देन राज्याद्धुक्तास्तथा सुखात् । जीवितं बहु मन्येऽहं जीवितं  
 हृद्यदुर्लभम् ॥ १३ ॥ जीवितस्य हि शेषेण तपस्तप्यामि दुश्चरम् । न घातयिष्ये  
 च रणे मित्राणीमानि केशव ॥ १४ ॥ रथान्ने बहुसाहस्रान् दिव्यैरस्त्रैर्महाबलः ।  
 घातयत्यनिशं भीष्मः प्रवराणां प्रहारिणाम् ॥ १५ ॥ किम् क्रुद्धा हितं मे स्याद्बुद्धि-  
 माधव मा चिरम् । मध्यस्थमिव पश्यामि समरे सव्यासाचिनम् ॥ १६ ॥ एको भीमः  
 परं शक्यो युध्यतेऽय महाभुजः । केवलं बाह्वीर्येण क्लृप्तधर्ममनुस्मरन् ॥ १७ ॥  
 गदया वीरघातिन्या यथोऽसाहं महामनाः । करोत्यसुरं कर्म रथाश्वनरदन्ति-  
 शु ॥ १८ ॥ नालमेष ऋषं कर्तुं परसैन्यस्य मारिष । आर्जवेनैव युद्धेन वीर  
 वर्षशतैरपि ॥ १९ ॥ एकोऽस्रविं सथा तेऽयं सोऽप्यात्मानं समुपेक्षते । नि-  
 र्दहमानान् भीष्मेण द्रोणेन च महात्मना ॥ २० ॥ दिव्यान्स्त्राणि भीष्मस्य द्रोणस्य  
 च महात्मनः । धक्यन्ति क्लिप्तान् सर्वान् प्रयुक्तानि पुनः पुनः ॥ २१ ॥ क्रुषः भीष्मः  
 सुसंरक्तः सहितः सर्वपार्थिवैः । ऋषियत्याति नो ह्यनं यादृशोऽस्य पराक्र-  
 मः ॥ २२ ॥ स ह्यं पश्य महाभाग योगेश्वर महारथम् । भीष्मं यः शमयेत् सन्ध्ये  
 दावाग्निं जलदो यथा ॥ २३ ॥ तव प्रसादादोऽविन्द पाण्डवा निहर्ताद्विषः । स्वरा-  
 ज्यमनुसंप्राप्त्वा मोदिष्यन्ते सवाक्त्रवाः ॥ २४ ॥ एवमुक्त्वा ततः पार्थो ध्यायन्नास्ते  
 महामनाः । चिरमस्तुर्मना बुद्ध्या शोकोपहतचेतनः ॥ २५ ॥ शोकार्तं पाण्डवं  
 दृष्ट्वा दुःखेनावृतचेतसम् । अत्र वीक्ष्वा गोविन्दो हर्षयन् सर्वपाण्डवान् ॥ २६ ॥  
 मा शुचो भरतश्रेष्ठ न ह्यं शोचितुमर्हसि । यस्य ते भ्रातरः शूराः सर्वे ते लो-  
 कधन्विनः ॥ २७ ॥ अहं प्रियकृद्वाजन् सात्यकिश्च महारथः । विराट्कपदो चैव  
 धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः ॥ २८ ॥ तथैव सबलाः सर्वे राजानो राजसत्तम । ह्यं प्रसादं  
 प्रतीकृते ह्यस्तुक्ताश्च विशेषतः ॥ २९ ॥ अयं ते पार्षतो नित्यं हितकामः

প্রিয়েরতঃ । সৈন্যপত্যমল্পপ্রাপ্তো ধৃষ্টদ্যুম্নো মহারথঃ । শিখণ্ডী চ মহাবাহো  
ভীষ্মস্য নিধনং কিল ॥ ৩০ ॥ এতচ্ছ্রুত্বা ততো রাজা ধৃষ্টদ্যুম্নং মহারথম্ । অত্র-  
বীৎ সমিতৌ তস্যাত্ বাসুদেবস্য শৃণুতঃ ॥ ৩১ ॥ ধৃষ্টদ্যুম্ন নিবোধেদং যদ্বাত্  
বক্ষ্যামি মারিষ । নাতিক্রম্যৎ ভবেত্তচ্চ বচনং মম ভাষিতম্ ॥ ৩২ ॥ ভবান্ সেনা-  
পতিস্মহৎ বাসুদেবেন সম্মতঃ । কার্ত্তিকেযো যথা নিত্যং দেবানামভবৎ পুরা ॥ ৩৩ ॥  
তথা হুমপি পাণ্ডুনাং সেনানীঃ পুরুষৰ্ষভ । স হুৎ পুরুষশার্দূল বিক্রম্য জহি কৌ-  
রবান্ ॥ ৩৪ ॥ অহঞ্চ তেহনুযাস্যামি ভীমঃ কৃষ্ণশ্চ মারিষ । মাদ্রীপুল্লৌ চ  
সহিতৌ দ্রৌপদেষাশ্চ দংশিতাঃ । যে চান্যে পৃথিবীপালাঃ প্রধানাঃ পুরুষৰ্ষ-  
ভ ॥ ৩৫ ॥ তত উদ্ধৰ্ষয়ন্ সর্বান্ ধৃষ্টদ্যুম্নোহভ্যভাষত । অহং দ্রোণাস্তকং পার্থ  
বিহিতঃ শস্ত্রুনা পুরা ॥ ৩৬ ॥ রণে ভীষ্মং তথা দ্রোণং রূপং শল্যং জয়দ্রথম্ ।  
সর্বানদ্য রণে দৃষ্ট্বান্ প্রতিযোৎস্যামি দংশিতঃ ॥ ৩৭ ॥ অথোৎক্রম্যৎ মহেষ্টাসৈঃ  
পাণ্ডবৈর্ষদুর্দুর্দৈঃ । সমুদ্যতে পার্থিবেস্ত্রে পার্ষতে শত্রুতাপনে ॥ ৩৮ ॥ তমব্রবীৎ  
পুনঃ পার্থঃ পার্ষতং পৃথনাপতিম্ । ব্যূহঃ ক্রৌঞ্চারুণো নাম সর্বশত্রুনিমূদনঃ ।  
যং বৃহস্পতিরিন্দ্রায় তদা দেবাসুরেংব্রবীৎ ॥ ৩৯ ॥ তং যথাবৎ প্রতিব্যূহ পরা-  
নীকবিনাশনম্ । অদৃষ্টপূর্বং রাজানঃ পশ্যন্ত কুরুভিঃ সহ ॥ ৪০ ॥ তথোক্তঃ স  
নৃদেবেন বিষ্ণুর্ভজুভূতব হ । প্রভাতে সর্বসৈন্যানামগ্রে চক্রে ধনঞ্জয়ম্ ॥ ৪১ ॥  
আদিত্যপথগঃ কেতুস্তস্যাদ্ভুতমনোরমঃ । শাসনাৎ পুরুহৃতস্য নিশ্চিন্তো বিশ্বকর্মা-  
ণা ॥ ৪২ ॥ ইন্দ্রায়ুধসবর্ণাভিঃ পতাকাভিরলঙ্কিতঃ । আকাশগ ইবাকাশে গন্ধর্বন-  
গরোপমঃ । নৃত্যমান ইবাভাতি রথচর্য্যাসু মারিষ ॥ ৪৩ ॥ তেন রত্নবতা পার্থঃ  
স চ গাণ্ডীবধন্বনা । বভূব পরমোপেতঃ স্বযন্তুরিব ভান্বনা ॥ ৪৪ ॥ শিরোভূদ্রপদো  
রাজা মহত্যা সেনয়া বৃতঃ । কুস্তিভোজশ্চ টেদ্যশ্চ চক্ষুরাস্তাং নরেশ্বরঃ ॥ ৪৫ ॥  
দশার্ণকাঃ প্রযাগাশ্চ দাসেরকগণৈঃ সহ । অম্লপকাঃ কিরাতাশ্চ গ্রীবাঘাং ভরত-  
র্ষভ ॥ ৪৬ ॥ পটচরৈশ্চ হুৈগুশ্চ রাজা কৌরবকৈস্তথা । নিষাদৈঃ সহিতশ্চাপি  
পৃষ্ঠমাসীদ্বুধিষ্ঠিরঃ ॥ ৪৭ ॥ পক্ষৌ তু ভীমসেনশ্চ ধৃষ্টদ্যুম্নশ্চ পার্ষতঃ । দ্রৌপদে-  
যাভিমন্যুশ্চ সাত্যকিশ্চ মহারথঃ ॥ ৪৮ ॥ পিশাচা দরদাশ্চৈব পৌণ্ড্রৈঃ কুণ্ডী-  
বৃষৈঃ সহ ॥ ৪৯ ॥ মারুতা ধেম্বুকাশ্চৈব তঙ্গণাঃ পরতঙ্গণাঃ । বাহ্লীকাস্তিভিরা-  
শ্চৈব চোলাঃ পাণ্ড্যাশ্চ ভারত । এতে জনপদা রাজন্ দক্ষিণং পক্ষমাশ্রিতাঃ ॥ ৫০ ॥  
অগ্নিবৈশ্যা গজতুণ্ডা মলদা দাশকারযাঃ । শবরাঃ কুন্তলাশ্চৈব বৎসাশ্চ সহ  
নাকুলৈঃ । নকুলঃ সহদেবশ্চ বামং পক্ষং সমাশ্রিতাঃ ॥ ৫১ ॥ রথানামযুতং পক্ষঃ

शिरश्च नियुतं तथा । पृष्ठमर्षुदमेवासौ सहस्राणि च विंशतिः ॥ ५२ ॥ ग्रीवा-  
यां नियुतक्षापि सहस्राणि च सप्ततिः । पक्षकोटिप्रपक्षेषु पक्षाक्षेषु च वा-  
रणाः । जग्गुः परिवता राजंश्चलन्तु इव पर्वताः ॥ ५३ ॥ जघनं पालयामास  
विराटः सह केकथैः । काशिराजश्च शैव्यश्च रथानामयुतेस्त्रिभिः ॥ ५४ ॥ एव-  
मेतन्महाव्यूहं व्यूहं भारतसन्तमाः । सूर्योदयनमिच्छन्तः स्थिता युद्धाय दंशि-  
ताः ॥ ५५ ॥ तेषामादित्यवर्णानि विमलानि महान्ति च । श्वेतच्छत्राण्यदृश्यन्तु वारणेषु  
रथेषु च ॥ ५६ ॥

इति भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि क्रौञ्चव्यूहनिर्माणे सप्तचत्वारिं-

शतमोऽध्यायः ॥ ४१ ॥



सञ्जय उवाच । क्रौञ्चमुतो महाव्यूहमभेद्यं तनयस्तव । व्यूहं दृष्ट्वा महाघोरं  
पाण्डवेनामितोजसा ॥ १ ॥ आचार्यमुपसंगम्य रूपं शल्यं मारिष । सौमदन्तिं  
विकर्णं अश्वथामानमेव च ॥ २ ॥ दूःशासनादीन् भ्रातृंश्च सर्वानेव च भारत ।  
अन्यांश्च सूबहून् शूरान् युद्धाय समुपागतान् ॥ ३ ॥ प्राहेदं वचनं काले हर्ष-  
यंस्तनयस्तव । नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे शास्त्रार्थकोविदाः ॥ ४ ॥ एकैकशः सम-  
र्था हि यूयं सर्वे महारथाः । पाण्डुपुत्रानुणे हस्तं ससैन्याः किमु संहताः ॥ ५ ॥  
अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरस्मितम् । पर्याप्तं द्विदमेताषां बलं भी-  
माभिरस्मितम् ॥ ६ ॥ संस्थानाः शूरसेनाश्च विकर्णाः कुरुरास्तथा । रेचकाश्च त्रि-  
गर्ताश्च मद्रका यवनास्तथा ॥ ७ ॥ शत्रुञ्जयेन सहितास्तथा दूःशासनेन ह । विकर्णेन  
सूवीरेण तथानन्दोपनन्दकैः ॥ ८ ॥ चित्रसेनेन सहिताः सहिता मणिभद्रकैः ।  
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु सहसैन्यपुरःसराः ॥ ९ ॥ ततो भीष्मश्च द्रोणश्च तव पुत्राश्च  
मारिष । अव्यूहन्तु महाव्यूहं पार्थानां प्रतिवाधने ॥ १० ॥ भीष्मः सैन्येन महता  
समन्तां परिवारितः । ययौ प्रकर्षन्महतीं वाहिनीं सुरराडिव ॥ ११ ॥ तमन्वया-  
न्महेष्वासो भारद्वाजः प्रतापवान् । कुन्तलेश्च दशार्णेश्च मागधेश्च विशाम्प-  
ते ॥ १२ ॥ विदतेर्भस्मैकलेश्चैव कर्णप्रवरणैरपि । सहिताः सर्वसैन्येन भीष्ममा-  
हवशोभिनम् ॥ १३ ॥ गान्धाराः सिन्धुसौवीराः शिवयोश्च वशातषः । शकुनिश्च  
ससैन्येन भारद्वाजमपालयन् ॥ १४ ॥ ततो दुर्योधनो राजा सहितः सर्वसौ-  
दरैः । अश्वतकैर्बिकर्णेश्च तथा चामलकोशलैः । दरुदैश्च शकैश्चैव तथा क्रुद्ध-  
कमालवैः । अत्र्यद्रवत संहर्षः पाण्डवेषस्य वाहिनीम् ॥ १५ ॥ तूरिश्रवाः शलः

শল্যো ভগদত্তশ্চ মারিষ । বিন্দানুবিন্দাবাবস্ত্যো বামং পার্শ্বমপালয়ন্ ॥ ১৬ ॥  
 সৌমদন্তিঃ সুশর্মা চ কাষ্মোজশ্চ সুদক্ষিণঃ । শ্রুতায়ুশ্চাচ্যুতায়ুশ্চ দক্ষিণং পার্শ্ব-  
 মাস্থিতাঃ ॥ ১৭ ॥ অশ্বখামা রূপশ্চাপি ক্রুতবর্মা চ সাত্বতঃ । পৃষ্ঠগোপাশ্চ তস্য-  
 সন্নানাদেশ্যা জনেশ্বরাঃ ॥ ১৮ ॥ কেতুমান্ বসুদানশ্চ পুত্রঃ কাশ্যস্য বা বিভূঃ ।  
 মহত্যা সেনয়া সার্কং সেনাপৃষ্ঠে ব্যবস্থিতাঃ ॥ ১৯ ॥ ততস্তে তাবকাঃ সর্বে হৃষ্টা  
 যুদ্ধায় ভারত । দধ্মুঃ শঙ্খান্ মুদা যুক্তাঃ সিংহনাদাংস্তথানদন্ ॥ ২০ ॥ তেষাং শঙ্খা  
 তু হৃষ্টানাং কুরুবৃদ্ধঃ পিতামহঃ । সিংহনাদং বিনদ্যোচ্চৈঃ শঙ্খং দধ্বৌ প্রতাপ-  
 বান্ ॥ ২১ ॥ ততঃ শঙ্খাশ্চ ভৈর্যাশ্চ পেশ্যাশ্চ বিবিধাঃ পরৈঃ । আনকাশ্চাত্যহ-  
 ন্যস্ত স শব্দস্তমুলোহভবৎ ॥ ২২ ॥ ততঃ শ্বেতৈর্হ বৈর্যুক্ষে মহতি স্যন্দনে স্থিতৌ ।  
 দধ্মাতুস্তৌ শঙ্খবরৌ হেমরত্নবিভূষিতৌ ॥ ২৩ ॥ পাঞ্চজন্যং হৃষীকেশো দেবদত্তং  
 ধনঞ্জয়ঃ । পৌণ্ড্রং দধ্বৌ মহাশঙ্খং ভীমকর্মা বৃকোদরঃ ॥ ২৪ ॥ অনন্তবিজয়ং রাজা  
 কুন্তীপুত্রো যুধিষ্ঠিরঃ । নকুলঃ সহদেবশ্চ সুঘোষমণিপুষ্পকৌ ॥ ২৫ ॥ কাশিরা-  
 জশ্চ শৈব্যশ্চ শিখণ্ডী চ মহারথঃ । ধৃষ্টদ্যুম্নো বিরাটশ্চ সাত্যকিশ্চ মহারথঃ ॥ ২৬ ॥  
 পাঞ্চাল্যশ্চ মহেশ্বাসা দ্রৌপদেয়াশ্চ পঞ্চ যে । সর্বে দধ্মুর্মহাশঙ্খান্ সিংহনা-  
 দাংশ্চ নেদিরে ॥ ২৭ ॥ স ঘোষঃ সুমহাংস্তত্র বীরৈস্তৈঃ সমুদীরিতঃ । নভশ্চ পৃথি-  
 বীকৈব তুমুলোহভ্যন্নাদযন্ ॥ ২৮ ॥ এবমেতে মহারাজ প্রহৃষ্টাঃ কুরুপাণ্ডবাঃ ।  
 পুনর্বুদ্ধায় সংজগ্মুস্ত্রাসযানাঃ পরস্পরম্ ॥ ২৯ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বনি ভীষ্মবধপর্বনি কৌরবব্যূহরচনায়ামষ্ট-

চত্বারিংশত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৪৮ ॥



ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । এবং ব্যূঢ়েষনীকেষু মামকেষ্বিতরেষু চ । কথং প্রহরতাং শ্রেষ্ঠাঃ  
 সংপ্রহারং প্রচক্রিরে ॥ ১ ॥ সঞ্জয় উবাচ । এবং ব্যূঢ়েষনীকেষু সম্রদ্ধা রুচির-  
 ধ্বজাঃ । অপারমিব সংদৃশ্য সাগরপ্রতিমং বলম্ ॥ ২ ॥ তেষাং মধ্যে স্থিতৌ  
 রাজন্ পুত্রো দুর্যোধনস্তব । অত্রবীত্তাবকান্ সর্বান্ যুধ্যধমিতি দংশিতাঃ ॥ ৩ ॥  
 তে মনঃ ক্রুরমাশ্বায সমভিত্যক্রজীবিতাঃ । পাণ্ডবানভ্যবর্তন্ত সর্ব এবোচ্ছ্রিতধ-  
 জাঃ ॥ ৪ ॥ ততো যুদ্ধং সমভবত্তমুলং লোমহর্ষণম্ । তাবকানাং পরেষাঞ্চ ব্যতি-  
 ষক্তরথদ্বিপম্ ॥ ৫ ॥ মুক্তাস্ত রথিভির্বাণা রুক্মপুত্রাঃ সূতেজিতাঃ । সন্নিপেতুরকু-  
 ঠাগ্রা নাগেষু চ হযেষু চ ॥ ৬ ॥ তথা প্রবৃত্তে সংগ্রামে ধনুরুদ্যম্য দংশিতাঃ ।  
 অতিপদ্য মহাবাহুর্ভীষ্মো ভীমপরাক্রমঃ ॥ ৭ ॥ সৌভদ্রে ভীমসেনে চ অর্জুনে চ

মহারথে । কৈকেযে চ বির্যাটে চ ধৃষ্টদ্যুয়ে চ পার্ষতে ॥ ৮ ॥ এতেষু নরবীরেষু  
চেদিমৎস্যেষু বা বিভুঃ । ববর্ষ শরবর্ষাণি বৃদ্ধঃ কুরুপিতামহঃ ॥ ৯ ॥ প্রাকম্পত  
মহাব্যহস্তস্মিন্ বীরসমাগমে । সর্বেষামেব সৈন্যানামাসীদ্ব্যতিকরো মহান্ ॥ ১০ ॥  
সাদিনো ধ্বজনশ্চৈব হতাঃ প্রবরবাজিনঃ । বিপ্রযাত্রথানীকাঃ সমপদ্যন্ত  
পাণ্ডবাঃ ॥ ১১ ॥ অর্জুনস্ত নরব্যাসো দৃষ্ট্বা ভীষ্মং মহারথম্ । বাক্ষে'ষমব্রবীৎ  
ক্রুদ্ধো যাহি যত্র পিতামহঃ ॥ ১২ ॥ এষ ভীষ্মঃ সুসংক্রুদ্ধো বাক্ষে'ষ মম বাহিনীম্ ।  
নাশযিষ্যতি সুব্যক্তং দুৰ্য্যোধনহিতে রতঃ ॥ ১৩ ॥ এষ দ্রোণঃ রূপঃ শল্যো বিক-  
র্ণশ্চ জনার্দন । ধার্ত্তরাষ্ট্রাশ্চ সহিতা দুৰ্য্যোধনপুরোগমাঃ ॥ ১৪ ॥ পাঞ্চালান্নিহ-  
নিষ্যন্তি রক্ষিতা দৃঢ়ধন্বনা । সোহং ভীষ্মং বধিষ্যামি সৈন্যহেতোর্জনার্দন ॥ ১৫ ॥  
তমব্রবীদ্বাসুদেবো যত্তো ভব ধনঞ্জয় । এষ ত্বাং প্রাপযে বীর পিতামহরথং প্র-  
তি ॥ ১৬ ॥ এবমুক্ত্বা ততঃ শৌরী রথং তং লোকবিশ্রুতম্ । প্রাপযামাস ভীষ্মস্য  
রথং প্রতি জনেশ্বর ॥ ১৭ ॥ চলদ্বহুপতাকেন বলাকাবর্ণবাজিনা । সমুচ্ছিতমহা-  
ভীষ্মনদদ্বানরকেতুনা ॥ ১৮ ॥ মহতা মেঘনাদেন রথেনাদিত্যবর্চসা । বিনিঘ্নন্  
কৌরবানীকং শূরসেনাংশ্চ পাণ্ডবঃ ॥ ১৯ ॥ আগচ্ছন্তং রণে শীঘ্রং সুহৃদাং হর্ষব-  
ন্ধনম্ । তমাপতন্তং বেগেন প্রতিঘ্নমিব বারণম্ । ত্রাসযন্তং রণে শূরান্ পাতযন্তঞ্চ  
শাষকৈঃ ॥ ২০ ॥ সৈন্ধবপ্রমুখে'গুপ্তঃ প্রাচ্যসৌবীরকৈকযৈঃ । সহসা প্রত্যুদীষায়  
ভীষ্মঃ শান্তনবোহর্জুনম্ ॥ ২১ ॥ কো হি গাণ্ডীবধন্বানমন্যঃ কুরুপিতামহাৎ ।  
দ্রোণবৈকর্তনাত্যাং বা রথী সংযাতুমর্হতি ॥ ২২ ॥ ততো ভীষ্মো মহারাজ কৌ-  
রবাণাং পিতামহঃ । অর্জুনং সপ্তসপ্তত্যা নারাচানাং সমর্পযৎ ॥ ২৩ ॥ দ্রোণশ্চ  
পঞ্চবিংশত্যা রূপঃ পঞ্চশতৈঃ শরৈঃ । দুৰ্য্যোধনশ্চতুষ্টয়া শল্যশ্চ নবভিঃ  
শরৈঃ ॥ ২৪ ॥ সৈন্ধবো নবভিষ্চাপি শকুনিশ্চাপি পঞ্চভিঃ । বিকর্ণো দশভি-  
ভিলৈ রাজন্ বিব্যধ পাণ্ডবম্ ॥ ২৫ ॥ স তৈর্বিদ্ধো মহেষ্বাসঃ সমন্তান্নিশিতৈঃ  
শরৈঃ । ন বিব্যথে মহাবাহুর্ভিদ্য়মান ইবাচলঃ ॥ ২৬ ॥ স ভীষ্মং পঞ্চবিং-  
শত্যা রূপঞ্চ নবভিঃ শরৈঃ । দ্রোণং ষষ্ঠ্যা নরব্যাসো বিকর্ণঞ্চ ত্রিভিঃ শরৈঃ ॥ ২৭ ॥  
আর্ত্তাযনিং ত্রিভির্বাণৈ রাজানঞ্চাপি পঞ্চভিঃ । প্রত্যবিধ্যদমেযান্না কিরীটী  
ভরতষভ ॥ ২৮ ॥ তং সাত্যকির্বিরাটশ্চ ধৃষ্টদ্যুম্নশ্চ পার্ষতঃ । দ্রৌপদেযাভি-  
মল্ল্যশ্চ পরিবক্রধনঞ্জয়ম্ ॥ ২৯ ॥ ততো দ্রোণং মহেষ্বাসং গাঙ্গেযস্য প্রিয়ে  
রথম্ । অত্যবর্ত্তত পাঞ্চাল্যঃ সংযুক্তঃ সহ সোমকৈঃ ॥ ৩০ ॥ ভীষ্মস্ত রথিনাং  
শ্রেষ্ঠস্তর্নং বিব্যধ পাণ্ডবম্ । অশীত্যা নিশিতৈর্বাণৈস্ততোহক্রোশন্ত তাব-

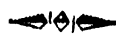
কাঃ ॥ ৩১ ॥ তেষাস্ত নিনদং শ্ৰুত্বা প্রহৃষ্টানাং প্রহৃষ্টবৎ । প্রবিবেশ ততো মধ্যং  
 রথসিংহঃ প্রতাপবান্ ॥ ৩২ ॥ তেষাস্ত রথসিংহানাং মধ্যং প্রাপ্য ধনঞ্জয়ঃ ।  
 চিক্রীড ধনুশ্চ রাজল্লঙ্ক্যং কুত্বা মহারথান্ ॥ ৩৩ ॥ ততো দুৰ্য্যোধনো রাজা  
 ভীষ্মমাহ জনেশ্বর । পীড়্যমানং স্বকং সৈন্যং দৃষ্ট্বা পার্থেন সংযুগে ॥ ৩৪ ॥ এষ  
 পাণ্ডুসুতস্তাত কৃষ্ণেন সহিতো বলী । পাতযন্ সৰ্বসৈন্যানি মূলং নঃ পরিক্রান্ত-  
 তি । অঘি জীবতি গাঙ্গেষ দ্রোণে চ রথিনাং বরে ॥ ৩৫ ॥ ত্বৎকৃতে হেষ্ণ কৰ্ণোহপি  
 ন্যস্তশস্ত্রো বিশাম্পতে । ন যুধ্যতি রণে পার্থান্ হিতকামঃ সদা মম ॥ ৩৬ ॥ স  
 তথা কুরু গাঙ্গেয যথা হন্যেত ফাল্গুনঃ ॥ ৩৭ ॥ এবমুক্তস্ততো রাজন্ পিতা দেব-  
 ব্রতস্তব । ধিক্ কলধৰ্ম্মমিত্যুক্তা প্রায়াৎ পার্থরথং প্রতি ॥ ৩৮ ॥ উভৌ শ্বেতহর্যৌ  
 রাজন্ সংসক্তৌ দৃশ্য পার্থিবাঃ । সিংহনাদং ভৃশং চক্রুঃ শত্ৰুান্ দধমুশ্চ মারি-  
 ষ ॥ ৩৯ ॥ দ্রৌণির্দুৰ্য্যোধনশ্চৈব বিকর্ণশ্চ তবাত্মজঃ । পরিবার্য্য রণে ভীষ্মং স্থিতা  
 যুদ্ধায় মারিষ ॥ ৪০ ॥ তথৈব পাণ্ডবাঃ সৰ্বৈ পরিবার্য্য ধনঞ্জয়ম্ । স্থিতা যুদ্ধায়  
 মহতে ততো যুদ্ধমবৰ্ত্তত ॥ ৪১ ॥ গাঙ্গেযস্ত রণে পার্থমানচ্ছন্নবতিঃ শরৈঃ । তম-  
 জ্জুনঃ প্রত্যবিধ্যদশভির্ম্মভেদিভিঃ ॥ ৪২ ॥ ততঃ শরসহস্ৰেণ সুপ্রযুক্তেন পা-  
 ণ্ডবঃ । অজ্জুনঃ সমরশ্লাঘী ভীষ্মস্যাবরষদিশঃ ॥ ৪৩ ॥ শরজালং ততস্তত্তু শর-  
 জালেন পার্থিব । বারযামাস পার্থস্য ভীষ্মঃ শাস্তনবস্তদা ॥ ৪৪ ॥ উভৌ পরমসং-  
 হৃষ্টাবুভৌ যুদ্ধাভিনন্দিনৌ । নির্বিশেষমযুধ্যেতাং কৃতপ্রতিকৃতৈষিণৌ ॥ ৪৫ ॥  
 ভীষ্মচাপবিমুক্তানি শরজালানি সংঘশঃ । শীর্ষ্যমাণান্যদৃশ্যস্ত ছিন্নান্যজ্জুনসায়-  
 কৈঃ ॥ ৪৬ ॥ তথৈবাজ্জুনমুক্তানি শরজালানি ভাগশঃ । গাঙ্গেযশরভূম্যানি ন্যপ-  
 তন্ত মহীতলে ॥ ৪৭ ॥ অজ্জুনঃ পঞ্চবিংশত্যা ভীষ্মমাচ্ছিতৈঃ শরৈঃ । ভী-  
 ষ্মোহপি সমরে পার্থং বিব্যাধ নবতিঃ শরৈঃ ॥ ৪৮ ॥ অন্যান্যং তো হযান্  
 বিদ্ধা ধ্বজৌ চ স্তমহাবলৌ । রথেশাং রথচক্রঞ্চ চিক্রীডতুররিন্দমৌ ॥ ৪৯ ॥ ততঃ  
 ক্রুদ্ধো মহারাজ ভীষ্মঃ প্রহরতাং বরঃ । বাসুদেবং ত্রিভির্বাণৈরাজঘান স্তনাস্ত-  
 রে ॥ ৫০ ॥ ভীষ্মচাপচ্যুতৈস্তৈস্তু নির্বিক্ণো মধুসূদনঃ । বিররাজ রণে রাজন্  
 সপুঙ্গ ইব কিংশুকঃ ॥ ৫১ ॥ ততোহজ্জুনো ভৃশং ক্রুদ্ধো নির্বিক্ণং প্রেক্ষ্য মাধবম্ ।  
 গাঙ্গেযসারথিং সংখ্যে নির্বিত্তেদ ত্রিভিঃ শরৈঃ ॥ ৫২ ॥ যতমানৌ তু তৌ বীরাব-  
 ন্যান্যস্য রথং প্রতি । নাশকুতাং তদান্যান্যমভিসন্ধাতুমাহবে ॥ ৫৩ ॥ মণ্ড-  
 লানি বিচিত্রাণি গতপ্রত্যাগতানি চ । দর্শয়ামাসতু রাজন্ সূতসামার্থ্যলাঘবাৎ ॥ ৫৪ ॥  
 অন্তরঞ্চ প্রহারেষু তর্কযন্তৌ বিশাম্পতে । রাজমন্তরমার্গস্থৌ স্থিতাবাস্তাং মুহূৰ্ম্ম-



হঃ ॥ ৫৫ ॥ উভৌ সিংহরবোম্মিশ্রং শম্বশকঞ্চ চক্রতুঃ । তথৈব চাপনির্ঘোষণং চক্র-  
 তুস্তৌ মহারথৌ ॥ ৫৬ ॥ তযোঃ শম্বপ্রণাদেন রথনেমিস্বনেন চ । দারিতা সহসা  
 ভুমিশ্চকম্পে চ ননাদ চ ॥ ৫৭ ॥ ন তযোরন্তরং কশ্চিদদৃশে ভরতর্ষভ । বলিনৌ  
 সমরে শূরাবন্যোন্যসদৃশাবৃতৌ ॥ ৫৮ ॥ চিহ্নমাত্রেণ ভীষ্মঞ্চ প্রজগ্মুস্তত্র কৌরবাঃ ।  
 তথা পাণ্ডুসুতং পার্থং চিহ্নমাত্রেণ জগ্মিরে ॥ ৫৯ ॥ তযোর্নুবরযৌ রাজন্ দৃষ্ট্বা  
 তাদৃক্ পরাক্রমম্ । বিস্ময়ং সর্বভুতানি জগ্মুর্ভারত সংযুগে ॥ ৬০ ॥ ম তযোরন্তরং  
 কশ্চিদ্রণে পশ্যতি ভারত । ধর্ম্মে স্থিতস্য হি যথা ন কশ্চিদৃজিনং ক্বচিৎ ॥ ৬১ ॥  
 উভৌ হি শরজালেন তাবদৃশ্যৌ বভূবতুঃ । প্রকাশৌ তু পুনস্তূর্ণং বভূবতুরুভৌ  
 রণে ॥ ৬২ ॥ তত্র দেবাঃ সগন্ধর্বাশ্চারণাশ্চ মহর্ষিভিঃ । অন্যান্যং প্রত্যভাষন্ত  
 তযোদৃষ্ট্বা পরাক্রমম্ ॥ ৬৩ ॥ ন শক্যৌ যুধি সংরকৌ জেতুমেতৌ মহারথৌ ।  
 সদেবাসুরগন্ধর্বেলোকৈরপি কথঞ্চন ॥ ৬৪ ॥ আশ্চর্য্যভূতং লোকেষু যুদ্ধমেতন্ম-  
 হাদ্ভুতম্ । নৈব চৈতাদৃশং যুদ্ধং ভবিষ্যতি কদাচন ॥ ৬৫ ॥ ন হি শক্যৌ রণে  
 জেতুং ভীষ্মঃ পার্থেন ধীমতা । সধনুঃ সরথঃ শাশ্বঃ প্রবপন্ শাষকানগে ॥ ৬৬ ॥  
 তথৈব পাণ্ডবং যুদ্ধে দেবৈরপি দুরাসদম্ । ন বিজেতুং রণে ভীষ্ম উৎসহেত ধনু-  
 র্করম্ ॥ ৬৭ ॥ আলোকাদপি যুদ্ধং হি সমমেতদ্ভবিষ্যতি । ইতি স্ম বাচঃ শ্রযন্তে  
 প্রচরন্ত্যস্ততস্ততঃ । গাঙ্গেযাজ্জুনযোঃ সংখ্যে স্তবযুক্তা বিশাম্পতে ॥ ৬৮ ॥ হৃদী-  
 যাস্তু ততো যোধাঃ পাণ্ডবেষাশ্চ ভারত । অন্যান্যং সমরে জগ্মুস্তযোসুত্র পরা-  
 ক্রমে ॥ ৬৯ ॥ শিতধারৈস্তথা খড়্গৈরিমলৈশ্চ পরশ্বধৈঃ । শরৈরনৈশ্চ বহুভিঃ  
 শস্ত্রৈর্নানাবিধৈর্ষুধি । উভযোঃ সেনযোঃ শূরা ন্যকুস্তস্ত পরস্পরম্ ॥ ৭০ ॥ বর্ত-  
 মানে তথা ঘোরে তস্মিন্ যুদ্ধে সুদারুণে । দ্রোণপাঞ্চাল্যযৌ রাজমহানাসীৎ  
 সমাগমঃ ॥ ৭১ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি ভীষ্মাজ্জুনযোষু যুদ্ধে একো-

নপঞ্চাশত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৪২ ॥



ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । কথং দ্রোণো মহেষাসঃ পাঞ্চাল্যশ্চৈব পার্ষতঃ । রণে সমী-  
 যতুর্ষভৌ তন্মমাচক্ষু সঞ্জয ॥ ১ ॥ দিষ্টমেব পরং মন্যে পৌরুষাদপি সঞ্জয । যত্র  
 শাস্ত্রনবো ভীষ্মো নাতরদ্যুধি পাণ্ডবম্ ॥ ২ ॥ ভীষ্মো হি সমরে ক্রুদ্ধো হন্যল্লোকাং-  
 শচরাচরান্ । স কথং পাণ্ডবং যুদ্ধে নাতরদ্যুধি সঞ্জয ॥ ৩ ॥ সঞ্জয উবাচ । শূণু  
 রাজন্ স্থিরো ভূত্বা যুদ্ধমেতৎ সুদারুণম্ । ন শক্যঃ পাণ্ডবো জেতুং দেবৈরপি

सवासवैः ॥ ४ ॥ द्रोणस्तु विविधैर्बाणैर्धृष्टद्युम्नमविध्यत । सारथिष्णस्य भल्लेन  
 रथनीडादपातयत् ॥ ५ ॥ तस्याथ चतुरो बाहाश्चतुर्भिः सायकोस्तमैः । पीडया-  
 मास संक्रुद्धो धृष्टद्युम्नस्य मारिष ॥ ६ ॥ धृष्टद्युम्नस्ततो द्रोणं नवत्या निशितैः  
 शरैः । विव्याध प्रहसन् वीरसिंघं त्रिष्ठेति चात्रवीत् ॥ ७ ॥ ततः पुनरमेयात्मा  
 भारद्वाजः प्रतापवान् । शरैः प्रच्छादयामास धृष्टद्युम्नमर्षणम् ॥ ८ ॥ आददे च  
 शरं घोरं पार्श्वतस्य वधं प्रति । शक्राशनिसमस्पर्शं मृत्युदण्डमिवापरम् ॥ ९ ॥  
 हाहाकारो महानासीत् सर्वसैन्यस्य भारत । तमिसुं सन्धितं दृष्ट्वा भारद्वाजेन  
 संयुगे ॥ १० ॥ तत्राद्भुतमपश्याम धृष्टद्युम्नस्य पौरुषम् । वदेकः समरे वीरस्तुष्टौ  
 गिरिरिवाचलः ॥ ११ ॥ तत्र दीप्तं महाघोरमायास्तं मृत्युमात्मनः । चिच्छेद शर-  
 वृष्टिं भारद्वाजे मुमोच ह ॥ १२ ॥ तत उक्तं क्रुशुर्हृष्टाः पाण्डालाः पाण्डवैः  
 सह । धृष्टद्युम्नेन तं कर्मा क्रुतं दृष्ट्वा सुदुस्करम् ॥ १३ ॥ ततः शक्तिं महावेगां  
 स्वर्णवैदूर्यभूषिताम् । द्रोणस्य निधनाकाङ्क्षी चिक्केप स पराक्रमी ॥ १४ ॥ तामा-  
 पतस्त्यैः सहसा शक्तिं कनकभूषणाम् । त्रिधा चिच्छेद समरे भारद्वाजो हसन्निः-  
 व ॥ १५ ॥ शक्तिं विनिहतां दृष्ट्वा धृष्टद्युम्नः प्रतापवान् । ववर्ष शरवर्षाणि  
 द्रोणं प्रति जनेश्वर ॥ १६ ॥ शरवर्षं ततस्तत्र सग्निवार्य्य महायशाः । द्रोणो  
 ऋपदपुत्रस्य मध्ये चिच्छेद कार्शुकम् ॥ १७ ॥ स छिन्नधन्वा समरे गदां गुर्वीं महा-  
 यशाः । द्रोणाय प्रेषयामास गिरिसारमयीं बली ॥ १८ ॥ सा गदा तंकरान्मुक्त्वा  
 प्रायाद्द्रोणजिघांसया । तत्राद्भुतमपश्याम भारद्वाजस्य विक्रमम् ॥ १९ ॥ लाघ-  
 वाद्यं सयामास गदां हेमविभूषिताम् । व्यंसयिन्वा गदांश्वेव प्रेषयामास मारि-  
 ष ॥ २० ॥ भल्लान् सुनिशितान् पीतान् स्वर्णपुञ्जान् शिलाशितान् । ते तस्य कवचं  
 भिद्वा पपुः शोणितमाहवे ॥ २१ ॥ अथान्यद्गुरादाय धृष्टद्युम्नो महामनाः ।  
 द्रोणं युधि पराक्रम्य शरैर्बिब्याध पङ्कभिः ॥ २२ ॥ रुधिराक्तौ ततस्तौ तु शुशु-  
 ताते नरर्षभौ । वसन्ते पुष्पशबलो पुष्पिताविव किंशुकौ ॥ २३ ॥ अमर्षितस्ततो  
 राजन् पराक्रम्य चमूमुखे । द्रोणो ऋपदपुत्रस्य पुंनश्चिच्छेद कार्शुकम् ॥ २४ ॥  
 अथैनं छिन्नधन्वानं शरैः समतपर्वभिः । अवाकिरदमेयात्मा वृष्ट्या मेघ इवा-  
 चलम् । सारथिष्णस्य भल्लेन रथनीडादपातयत् ॥ २५ ॥ अथास्य चतुरो बाहाश्च-  
 त्तुर्भिर्निशितैः शरैः । पातयामास समरे सिंहनादं ननाद च । ततोऽपरेण  
 भल्लेन हस्तावापमथाच्छिनत् ॥ २६ ॥ स छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः ।  
 गदापाणिर्वारोहत् थ्यापयन् पौरुषं महत् ॥ २७ ॥ तामस्य विशिथस्तूर्णं पात-

যামাস ভারত । রথাদনবকচস্য তদদ্ভুতমিবাভবৎ ॥ ২৮ ॥ ততঃ সুবিপুলং চর্ম্ম  
শতচন্দ্রংমনোরমম্ । খঙ্করং বিপুলং দিব্যং প্রগৃহ্ম সুভুজো বলী ॥ ২৯ ॥ অস্তি-  
দুদ্রাব বেগেন দ্রোণস্য বধকাক্ষযা । আমিষার্থী যথা সিংহো বনে মন্ত্রমিব দ্বি-  
পম্ ॥ ৩০ ॥ তত্রাশ্চর্য্যমপশ্যাম ভারদ্বাজস্য পৌরুষম্ । লাঘবঞ্চাস্ত্রযোগেণ বলং  
বাহ্নোশ্চ ভারত ॥ ৩১ ॥ যদেকঃ শরবর্ষণে বরযামাস পার্শ্বতম্ । ন শশ্যাক ততো  
গন্তং বলবানপি সংযুগে ॥ ৩২ ॥ তত্র স্থিতমপশ্যাম ধৃষ্টদ্যুম্নং মহন্নরথম্ । বার-  
যস্তং শরৌঘাংশ্চ চর্ম্মণা কৃতহস্তবৎ ॥ ৩৩ ॥ ততো ভীমো মহাবাহুঃ সহসা  
ন্যপতদ্বলী । সাহায্যকারী সমরে পার্শ্বতস্য মহান্ননঃ ॥ ৩৪ ॥ স দ্রোণং নিশি-  
তৈর্বাণৈ রাজন্ বিব্যাধ সপ্তভিঃ । পার্শ্বতঞ্চ তদা তুর্গমন্যমারোপযদ্রথম্ ॥ ৩৫ ॥  
ততো দুর্যোধনো রাজা কলিঙ্কং সমচোদযৎ । সৈন্যেন মহতা যুক্তং ভারদ্বাজস্য  
গোপনে ॥ ৩৬ ॥ ততঃ সা মহতীসেনা কলিঙ্কানাং জনেশ্বর । ভীমমভ্যাযযৌ  
ভীমা তব পুলস্য শাসনাৎ ॥ ৩৭ ॥ পাঞ্চাল্যমভিসংত্যজ্য দ্রোণোহপি রুধিনাং-  
বরঃ । বিরাটক্রপদৌ বৃদ্ধৌ যোধযামাস সঙ্গতো ॥ ৩৮ ॥ ধৃষ্টদ্যুম্নোহপি সম-  
রে ধর্ম্মরাজং সমভ্যাযৎ ॥ ৩৯ ॥ ততঃ প্রববৃতে যুদ্ধং তুমুলং লোমহর্ষণম্ ।  
কলিঙ্কানাঞ্চ সমরে ভীমস্য চ মহান্ননঃ । জগতঃ প্রক্ষয়করং ঘোরকপং ভয়ান-  
কম্ ॥ ৪০ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বাণি ভীষ্মবধপর্বাণি দ্রোণধৃষ্টদ্যুম্নযুদ্ধে

পঞ্চাশত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫০ ॥



ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । তথা প্রতिसমাদিষ্ঠঃ কালিঙ্কো বাহিনীপতিঃ । কথমদ্ভুতক-  
র্মাণং ভীমসেনং মহাবলম্ ॥ ১ ॥ চরন্তং গদয়া বীরং দণ্ডপাণিমিবাস্তকম্ । যোধ-  
যামাস সমরে কালিঙ্কঃ সহ সেনযা ॥ ২ ॥ সঞ্জয় উবাচ । পুস্ত্রেণ তব রাজেশ্চ স  
তথোক্কো মহাবলঃ ॥ মহত্যা সেনযা যুক্তঃ প্রাযাঙ্গীমরথং প্রতি ॥ ৩ ॥ তামা-  
পতন্তীং মহতীং কলিঙ্কানাং মহাচমুন্ । রথাস্বনাগকলিলাং প্রগৃহীতমহাযু-  
ধাম্ ॥ ৪ ॥ ভীমসেনঃ কলিঙ্কানামাচ্ছন্দারত বাহিনীম্ । কেতুমস্তঞ্চ নৈষাদিমা-  
ষাস্তং সহ চেদিতিঃ ॥ ৫ ॥ ততঃ শ্রুতায়ুঃ সংক্রুদ্ধো রাজা কেতুমতা সহ । আস-  
সাদ রণে ভীমং ব্যুতানীকেন দংশিতঃ ॥ ৬ ॥ রুথৈরনেকসাহসৈঃ কলিঙ্কানাং  
জনাধিপঃ । অযুতেন গজানাঞ্চ নিষাদৈঃ সহ কেতুমান্ । ভীমসেনং রণে রাজন্  
সমস্তাং পর্য্যবারযৎ ॥ ৭ ॥ চেদিমৎস্যকক্বাশ্চ ভীমসেনপুরোগমাঃ । অভ্যব-

ভীমসহস্রানিষাদান্ সহ রাজভিঃ ॥৮॥ ততঃ প্রববৃতে যুদ্ধং ঘোরকপং ভয়ানকম্ ।  
 প্রধাবতাঞ্চ ঘোধানাং পরম্পরজিঘাৎসয়া ॥ ৯ ॥ ঘোরমাসীত্ততো যুদ্ধং ভীমস্য  
 সহসা পঠৈঃ । যথেন্দ্রস্য মহারাজ মহত্যা দৈত্যসেনয়া ॥ ১০ ॥ তস্য সৈন্যস্য সং-  
 গ্রামে যুধ্যমানস্য ভারত । বভূব সুমহান্ শকঃ সাগরস্যেব গর্জতঃ ॥ ১১ ॥  
 অন্যান্যস্য তদা ঘোধা নিরুত্তস্তো বিশাম্পতে । মহীং চক্রুশ্চিতাং সর্বাং মাংস-  
 শোণিতসম্মিতাম্ ॥ ১২ ॥ যোধান্ স্বান্ বা পরান্ বাপি ন ব্যজানন্ জিঘাৎসয়া ।  
 স্ব্যনুপ্যাদদতে তু স্বাঃ শূরাঃ সমরদুর্জয়াঃ ॥ ১৩ ॥ বিমর্দঃ সুমহানাসীদন্নানাং  
 বহুভিঃ সহ । কলিঙ্গৈঃ সহ চেদীনাং নিষাটদেশে বিশাম্পতে ॥ ১৪ ॥ ক্রুত্বা পুরুষ-  
 কারস্ত যথাশক্তি মহাবলাঃ । ভীমসেনং পরিত্যজ্য সন্ন্যবর্ত্তস্ত চেদযঃ ॥ ১৫ ॥  
 সর্ষৈঃ কলিঙ্গৈরাসন্নঃ সন্নিবৃত্তেষু চেদিষু । স্ববাহুবলমাশ্রায় ন ন্যবর্ত্তত পাণ্ড-  
 বঃ ॥ ১৬ ॥ ন চচাল রথোপস্থান্ভীমসেনো মহাবলঃ । শিতৈরবাকিরন্ বাটৈঃ কলি-  
 ঙ্গানাং বক্খিনীম্ ॥ ১৭ ॥ কলিঙ্গস্ত মহেষাসঃ পুত্রশচাস্য মহারথঃ । শক্রদেব  
 ইতি খ্যাতো জন্মতুঃ পাণ্ডবংশঠৈঃ ॥ ১৮ ॥ ততো ভীমো মহাবাহুর্বিধুঘ্নুচিরং  
 ধমুঃ । যোধযামাস কালিঙ্গং স্ববাহুবলমাশ্রিতঃ ॥ ১৯ ॥ শক্রদেবস্ত সমরে বিসৃ-  
 জন্ সাযকান্ বহ্ন । অশ্বান্ জঘান চতুরো ভীমসেনস্য সাযকৈঃ ॥ ২০ ॥ তৎ-  
 দৃষ্ট্বা বিরথস্তত্র ভীমসেনমরিন্দমম্ । শক্রদেবোহভিদুদ্ভাব কিরস্তং নিশিতৈঃ  
 শঠৈঃ ॥ ২১ ॥ ভীমস্যোপরি রাজেন্দ্র শক্রদেবো মহাবলঃ । ববর্ষ শরবর্ষাণি তপা-  
 স্তে জলদো যথা ॥ ২২ ॥ হতাশ্বে তু রথে তিষ্ঠন্ ভীমসেনো মহাবলঃ । শক্রদেবায  
 চিক্ষেপ সর্ষশৈক্যাসন্নীং গদাম্ ॥ ২৩ ॥ স তথা নিহতো রাজন্ কালিঙ্গস্য সূতো  
 রথাৎ । সধ্বজঃ সহ সূতেন জগাম ধরণীতলম্ ॥ ২৪ ॥ হতমাত্মসুতং দৃষ্ট্বা কলি-  
 ঙ্গানাং জনাধিপঃ । রথৈরনেকসাহসৈর্ভীমস্যাবারযদ্দিশঃ ॥ ২৫ ॥ ততো ভীমো  
 মহাবাহুর্গদাং ত্যক্ত্বা মহাবলঃ । উদবর্হ স নিস্ত্রিংশং চিকীর্ষুঃ কন্ম দারুণম্ ॥ ২৬ ॥  
 চন্ম চাপ্রতিমং রাজমার্ষভং পুরুষর্ষভ । নক্ষত্রৈরর্কচন্দ্রৈশ্চ শাতকুস্তমযৈশ্চি-  
 তম্ ॥ ২৭ ॥ কালিঙ্গস্ত ততঃ ক্রুদ্ধো ধমুর্জ্যামবমৃজ্য চ । প্রগৃহ স শরং ঘোর-  
 মেকং সর্পবিষোপমম্ । প্রাহিণোন্ভীমসেনায বধাকাজ্জী নরেশ্বর ॥ ২৮ ॥ তমা-  
 পতস্তং বেগেন প্রেরিতং নিশিতং শরম্ । ভীমসেনো দ্বিধা রাজংশিচ্ছেদ বি-  
 পুলাসিনা । উদক্রোশচ্চ সংহৃষ্টস্ত্রাসযানো বলস্তব ॥ ২৯ ॥ কালিঙ্গোহথ ততঃ  
 ক্রুদ্ধো ভীমসেনস্য সংযুগে । তোমরান্ প্রাহিণোচ্ছীঘ্রং চতুর্দশ শিলাশিতান্ ॥ ৩০ ॥  
 তানপ্রাপ্তান্ মহাবাহুঃ খগতানেব পাণ্ডবঃ । চিচ্ছেদ সহসা রাজমসংভ্রান্তো বরা-

सिना ॥ ७१ ॥ निरुक्त्य तु रणे भीमस्तोमरान् वै चतुर्दश । तान्मुमस्तमभिप्रेक्ष्य  
 प्रादुवत् पुरुषर्षभ ॥ ७२ ॥ तान्मुमांस्तु ततो भीमं शरवर्षेण छादयन् । ननाद  
 बलवन्नादं नादयानो नभस्तलम् ॥ ७३ ॥ न तं स मयूषे भीमः सिंहनादं महा-  
 रणे । ततः स्वरेण महता विननाद महान्वनम् ॥ ७४ ॥ तेन शब्देन विव्रस्ता कलि-  
 ज्ञानां वक्त्रिणी । न भीमं समरे मेने मान्मुषं पुरुषर्षभ ॥ ७५ ॥ ततो भीमो  
 महाराज नदिह्य विपुलं स्वनम् । सासिर्बेगवदाप्लुत्य दस्ताभ्यां वारणेस्तमम् ॥ ७६ ॥  
 आरुरोह ततो मध्यं नागराजस्य मारिष । खञ्जेन पृथुना मध्ये तान्मुमस्तमथाच्छि-  
 नत् ॥ ७७ ॥ सोऽस्तुरा युधि तं ह्य राजपुत्रमरिन्दमः । गुरुभारसहं ऋद्धे ना-  
 गस्यासिमपातयत् ॥ ७८ ॥ छिन्नस्कन्धः स विनदन् पपात गजयूथपः । आरुग्मः  
 सिम्बुवेगेन सान्मुमानिव पर्वतः ॥ ७९ ॥ पततश्चाप्यवप्लुत्य गजान्धारत भारतः ।  
 खञ्जपागिरदीनात्त्वा तस्त्रो भुवि स दंशितः ॥ ८० ॥ स चचार बहून् मार्गानभीतः  
 पातयन् गजान् । अग्निचक्रमिवाविद्धं सर्वतः प्रत्यदृश्यत् ॥ ८१ ॥ अश्ववृन्देषु  
 नागेषु रथानीकेषु वा विभुः । पदातीनां संघेषु विनिघ्नन् शोणितोष्कितः ॥ ८२ ॥  
 श्येनवह्यचरं संथेय भीमो युधि बलोत्कटः । छिन्दंस्तेषां शरीराणि शिरांसि  
 च महाजवः । खञ्जेन शितधारेण संयुगे गजयोधिनाम् ॥ ८३ ॥ पदातिरेकः  
 संक्रुद्धः शत्रूणां भयवर्द्धनः । मोहयामास शूरांस्तान् कालास्तकयमोपमः ॥ ८४ ॥  
 मुत्तान्तमेव च रणे विनदस्तः समाद्रवन् । सासिमुत्तमवेगेन विचरस्तं महारणे ॥ ८५ ॥  
 निरुक्त्य रथिनामाजो रथेषां युगानि च । जघान रथिनश्चापि बलवानरिमर्द-  
 नः ॥ ८६ ॥ भीमसेनश्चरन् मार्गान् सूबहून् प्रत्यदृश्यत् । त्रान्तमुद्भ्रान्तमाविद्धमा-  
 प्लुतं प्रसृतं प्लुतम् । सम्पातं समुदीर्णं दर्शयामास भारत ॥ ८७ ॥ केचिदग्रा-  
 सिना छिन्नाः पाण्डवेन महाश्रना । विनेदूर्ध्वमर्माणां निपेतुश्च गतासवः ॥ ८८ ॥  
 छिन्नदन्ताग्रहस्ताश्च तिमकुस्तान्स्थापरे । विमोधाः स्वान्यनीकानि जम्बुभारत वार-  
 णाः । निपेतुरूर्व्यां तदा विनदस्तो महारवान् ॥ ८९ ॥ छिन्नांश्च तोमरान्नाज-  
 न्महामात्रशिरांसि च । परिस्तोमानि चित्राणि कक्काश्च कनकोज्जलाः ॥ ९० ॥ त्रै-  
 वेयाण्यथ शक्तीश्च पताकाः कुणपांस्तथा । तूणीराण्यथ यन्त्राणि विचित्राणि धनुंसि  
 च ॥ ९१ ॥ अग्निदण्डानि शुभ्राणि तोत्रांश्चैवाकुशैः सह । घण्टाश्च विविधाकारा  
 हेमगर्भान् ःसकनपि । पततः पतितान्श्चैव पश्यानः सह सार्दिभिः ॥ ९२ ॥ छिन्म-  
 गात्रावरकरैर्निहतैश्चापि वारणैः । आसीत्स्मिन्नुणे भूमिः पतितैः पर्वतै-  
 रिव ॥ ९३ ॥ विमृद्यैव महानागान् मनर्दाश्वान् नरर्षभः । अश्वारोहवरांश्चैव

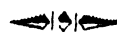
পাতয়ামাস ভারত । তদ্ব্যোমভবক্ষুঙ্কং তব ত্রেযাঞ্চ ভারত ॥ ৫৪ ॥ খলীনান্যথ  
 চিত্রাণি কক্ষাশ্চ কনকোজ্জ্বলাঃ । পরিস্তোমাশ্চ প্রাসাশ্চ ঋক্ষ্যশ্চ মহাধনাঃ ॥ ৫৫ ॥  
 কবচান্যথ চর্ম্মাণি চিত্রাণ্যাস্তুরাণি চ । তত্র তত্রাপবিদ্বানি ব্যাদৃশ্যস্ত মহা-  
 বে ॥ ৫৬ ॥ প্রোথযন্তৈর্ষিচিট্রৈশ্চ শস্ত্রৈশ্চ বিমলৈস্তথা । স চক্রে বসুধাং কীর্গাং  
 শবলাং কুমুদৈরিব ॥ ৫৭ ॥ আপ্পুত্য় রথিনঃ কাংশ্চিৎ পরামৃষ্য মহাবলঃ । পাত-  
 যামাস খঞ্জন সধজ্ঞানপি পাণ্ডবঃ ॥ ৫৮ ॥ মুহুরূপততো দিক্ষু ধাবতশ্চ যশ-  
 স্বিনঃ । মার্গাংশ্চ চরতশ্চিত্রান্ ব্যস্মযস্তুরণে জনাঃ ॥ ৫৯ ॥ নিজঘান পদা কাংশ্চি-  
 দাক্ষিপ্যান্যানপোথযৎ । খঞ্জনান্যাংশ্চ চিচ্ছেদ নাদৈরন্যানভীষযৎ ॥ ৬০ ॥ উরু-  
 বেগেন চাপ্যান্যান্ পাতয়ামাস ভুতলে । অপরে চৈনমালোক্য ভযাদ্বিদ্রাবিণোহ-  
 ভবন্ ॥ ৬১ ॥ এবং সা বহুলা সেনা কলিঙ্গানাং তরস্বিনাম্ । পরিবার্য্য রণে  
 ভীষ্মং ভীমসেনমুপাদ্রবৎ ॥ ৬২ ॥ ততঃ কলিঙ্গসেনানাং প্রমুখে ভরতর্ষভ । শ্ৰ-  
 তায়ুষমভিপ্ৰেক্ষ্য ভীমসেনঃ সমভ্যযাৎ ॥ ৬৩ ॥ তমাযান্তমভিপ্ৰেক্ষ্য কালিঙ্গো  
 নবতিঃ শটৈঃ । ভীমসেনমমেযাত্মা প্রত্যবিধ্যৎ স্তনান্তুরে ॥ ৬৪ ॥ কালিঙ্গবাণা-  
 তিহতস্তোত্রাদিত ইব দ্বিপঃ । ভীমসেনঃ প্রজজ্বাল ক্রোধেনাগ্নিরিবেক্ষনৈঃ ॥ ৬৫ ॥  
 অথাশোকঃ সমাদায় রথং হেমপরিষ্কৃতম্ । ভীমং সম্পাদয়ামাস রথেন রথিনাম্ব-  
 রম্ ॥ ৬৬ ॥ তমারুহ রথং তূর্ণং কৌন্তেযঃ শত্রুসুদনঃ । কালিঙ্গমভিদুদ্রাব তিষ্ঠ  
 তিষ্ঠেতি চাত্রবীৎ ॥ ৬৭ ॥ ততঃ শ্ৰতায়ুর্বলবান্ ভীমস্য নিশিতান্ শরান্ । প্রে-  
 ষয়ামাস সংক্রুদ্ধো দর্শয়ন্ হস্তলাঘবম্ ॥ ৬৮ ॥ স কার্ম্মুকবরোৎসৃষ্টৈর্নবতিনি-  
 শিতৈঃ শটৈঃ । সমাহতো ভৃশং রাজন্ কালিঙ্গেন মহাবলঃ । সঞ্চুকোপ ভৃশং  
 ভীমো দণ্ডাহত ইবোরগঃ ॥ ৬৯ ॥ ক্রুদ্ধঃ স চাপমাযম্য বলবদ্বলিনাম্বরঃ । কালি-  
 ঙ্গমবধীৎ পার্থো ভীমঃ সপ্ততিরায়সৈঃ ॥ ৭০ ॥ ক্ষুরাত্যাং চক্ররক্ষৌ চ কালিঙ্গস্য  
 মহাবলো । সত্যদেবঞ্চ সত্যঞ্চ প্রাহিণোদ্যমসাদনম্ ॥ ৭১ ॥ ততঃ পুনরমেযাত্মা  
 নারাটচর্নিশিতৈস্ত্রিভিঃ । কেতুমন্তং রণে ভীমোং গময়দ্যমসাদনম্ ॥ ৭২ ॥ ততঃ ক-  
 লিঙ্গাঃ সংক্রুদ্ধা ভীমসেনমমর্ষণম্ । অনীকৈর্বহুসাহসৈঃ ক্ষত্রিয়াঃ সমযোধয়ন্ ॥ ৭৩ ॥  
 ততঃ শক্তিগদাখজ্জতোমরষ্টি পরশ্বধৈঃ । কলিঙ্গাঃ শতশো রাজন্ ভীমসেনমবা-  
 রয়ন্ ॥ ৭৪ ॥ সন্নিবার্য্য তু তাং রাজন্ শরবৃষ্টিং সমুখিতাম্ । গদামাদায় তরসা  
 পরিপ্লুত্য মহাবলঃ । ভীমঃ সপ্তশতান্ বীরাননযদ্যমসাদনম্ ॥ ৭৫ ॥ পুনশ্চৈব  
 দ্বিসাহস্রান্ কালিঙ্গানরিমর্দনঃ । প্রাহিণোমৃত্যুলোকায তদদ্ভুতমিবাভবৎ ॥ ৭৬ ॥  
 এবং স তান্যনীকানি কলিঙ্গানাং পুনঃ পুনঃ । বিভেদ সমরে বীরো ভীমো ভীম-

पराक्रमः ॥ ११ ॥ हतारोहाश्च मातङ्गाः पाण्डवेन क्रुता रणे । विप्रजग्नुरनीकेषु  
 घना वातहता इव । मृदुस्तः स्वान्यनीकानि विनदस्तः शरातुराः ॥ १८ ॥ ततो  
 भीमो महाबाहूः खड्गासक्तमहाभुजः । संप्रहृष्टो महाघोषं शङ्खं प्राध्यापय-  
 द्दली ॥ १२ ॥ सर्वकालिङ्गसैन्यानां मनांसि समकम्पयत् । मोहश्चापि कलिङ्गा-  
 नामाविवेश परस्तप ॥ ८० ॥ प्राकम्पस्तु च सैन्यानि बाहनानि च सुस्रुवुः । भीमेन  
 समरे राजन् गजेन्द्रेणैव सर्वतः ॥ ८१ ॥ मार्गान् बहून् विचरता धावता च तत-  
 स्ततः । मुहुरुत्पतता चैव सम्मोहः समजायत ॥ ८२ ॥ भीमसेनभयद्रस्तुं सैन्यं  
 तत् समकम्पत । फ्लोभ्यमाणसंवाधं ग्राहेणैव महत् सरः ॥ ८३ ॥ द्रासितेषु  
 च वीरेषु भीमेनाद्भुतकर्मणा । पुनरावर्तमानेषु विद्रवत्सु समस्ततः ॥ ८४ ॥  
 सर्वकालिङ्गयोधेषु पाण्डुनां धृजिनीपतिः । अवादीं स्वान्यनीकानि युध्यधमिति  
 भारत ॥ ८५ ॥ सेनापतेर्वचः श्रुत्वा शिखण्डिप्रमुखा गणाः । भीममेवाभ्यवर्तस्तु रथा-  
 नीकैः प्रहारिभिः ॥ ८६ ॥ धर्मराजश्च तान् सर्वान्मुपजग्राह पाण्डवः । महता  
 मेघवर्णेन नागानीकेन पृष्ठतः ॥ ८७ ॥ एवं संचोद्य सर्वानि स्वान्यनीकानि पा-  
 र्षतः । भीमसेनस्य जग्राह पार्थिः संपुरूषैर्वृतः ॥ ८८ ॥ न हि पाण्डालराजस्य  
 लोके कश्चन विद्यते । भीमसात्यकयोरन्यः प्राणैर्भ्यः प्रियकृतमः ॥ ८९ ॥  
 सोऽपश्यत् कलिङ्गेषु चरन्तमरिस्तदनम् । भीमसेनं महाबाहूँ पार्श्वतः परवीर-  
 हा ॥ ९० ॥ ननर्द बहूधा राजन् हृष्टश्चासीत् परस्तपः । शङ्खं दध्णो स समरे सिंह-  
 नादं ननाद च ॥ ९१ ॥ स च पारावताश्वस्य रथे हेमपरिक्लृते । कोविदारध्वजं  
 दृष्ट्वा भीमसेनः समाश्वसत् ॥ ९२ ॥ धृष्टदुय्यंश्च तं दृष्ट्वा कालिङ्गैः समभिद्रुतम् ।  
 भीमसेनमेयात्त्वा द्राणायाज्जौ समभ्ययात् ॥ ९३ ॥ तौ दूरात् सात्यकिर्दृष्ट्वा धृष्ट-  
 द्युय्यवृकोदरो । कालिङ्गान् समरे वीरो योधयन्तो मनस्विनौ ॥ ९४ ॥ स तत्र गत्वा  
 शैनेयो जवेन जयतां वरः । पार्थपार्श्वतयोः पार्थिः जग्राह पूरुषर्षभः ॥ ९५ ॥  
 स क्रुत्वा कदनं तत्र प्रगृहीतशरासनः । आस्थितो रौद्रमात्मानं जघान समरे  
 परान् ॥ ९६ ॥ कालिङ्गप्रभवां चैव मांसशोणितकर्दमाम् । क्रुधिरस्यन्दिनीं  
 तत्र भीमः प्रावर्तयन्दीम् ॥ ९७ ॥ अथास्तरे कलिङ्गानां पाण्डवानां वाहिनीम् ।  
 सन्ततार सुदुस्तारां भीमसेनो महाबलः ॥ ९८ ॥ भीमसेनं तथा दृष्ट्वा प्राक्रो-  
 शंस्तुावका नृप । कालोऽयं भीमरूपेण कालिङ्गैः सह युध्यते ॥ ९९ ॥ ततः शास्त-  
 नवो भीमः श्रुत्वा तस्मिन्दं रणे । अभ्ययात्त्रितो भीमं व्युत्तानीकः समस्ततः ॥ १०० ॥  
 तं सात्यकिर्भीमसेनो धृष्टदुय्यंश्च पार्श्वतः । अभ्यद्रवन्तु भीमस्य रथं हेमपरिक्लृ-

তন্ ॥ ১০১ ॥ পরিবার্য তু তে সর্বে গাঙ্গেযং তরসা রণে । ত্রিভিস্ত্রিভিঃ শঠৈর্যো-  
 রৈর্ভীষ্মমানচ্ছুরুঙ্গসা ॥ ১০২ ॥ প্রত্যবিধ্যত তান্ সর্ষান্ পিতা দেবব্রতস্তব । যত-  
 মানাম্বেষাসাংস্ত্রিভিস্ত্রিভিরজ্জিহ্বগৈঃ ॥ ১০৩ ॥ ততঃ শরসহস্ৰেণ সংনিবার্য  
 মহারথান্ । হযান্ কাঞ্চনসন্মাহান্ ভীমস্যাভ্যহনচ্ছরৈঃ ॥ ১০৪ ॥ হতাস্থে তু রথৈ  
 তিষ্ঠন্ ভীমসেনঃ প্রতাপবান্ । শক্তিং চিক্ষেপ তরসা গাঙ্গেযস্য রথং প্রতি ॥ ১০৫ ॥  
 অপ্রাপ্তামথ তাং শক্তিং পিতা দেবব্রতস্তব । ত্রিধা চিচ্ছেদ সমরে পৃথিব্যাং সা ব্য-  
 শীর্ষ্যত ॥ ১০৬ ॥ ততঃ শৈক্যায়সীং গুর্ধীং প্রগৃহ্ম মহতীং গদাম্ । ভীমসেনো রথা-  
 ত্তূর্ণং পুপ্লুবে মনুজর্ষভঃ ॥ ১০৭ ॥ ধৃষ্টদ্যুম্নস্তমারোপ্য স্বরথে রথিনাস্বরঃ । পশ্যতাং  
 সর্ষসৈন্যানামপোবাহ যশস্বিনম্ ॥ ১০৮ ॥ সাত্যকোহপি ততস্তূর্ণং ভীমস্য প্রিয-  
 কাম্যযা । সারথিং কুরুবৃদ্ধস্য পাতয়ামাস সাযকৈঃ ॥ ১০৯ ॥ ভীষ্মস্ত নিহতে  
 তস্মিন্ সারথৌ রথিনাস্বরঃ । বাতায়মানৈরশ্বৈস্তৈরপনীতো রণাজিরাৎ ॥ ১১০ ॥  
 ভীমসেনস্ততো রাজন্নপনীতে মহারথে । প্রজ্জ্বাল যথা বহ্নির্দহন্ কক্ষমিবো-  
 ল্লণঃ ॥ ১১১ ॥ স হত্বা সর্ষকালিঙ্গান্ সেনামধ্যে ব্যবস্থিতঃ । নৈনমভ্যুৎসহন্  
 কেচিত্তাবকা ভরতর্ষভ ॥ ১১২ ॥ স পূজ্যমানঃ পাঞ্চালৈশ্চ সৈশ্চ ভরতর্ষভ । ধৃষ্ট-  
 দ্যুম্নং পরিষজ্য সমীষাদথ সাত্যকিম্ ॥ ১১৩ ॥ অথাববীড়ীমসেনং সাত্যকিঃ সত্য-  
 বিক্রমঃ । প্রহর্ষয়ন্ যদুব্যাঘ্রৌ ধৃষ্টদ্যুম্নস্য পশ্যতঃ ॥ ১১৪ ॥ দিষ্ঠ্য কলিঙ্গরাজশ্চ  
 রাজপুত্রশ্চ কেতুমান্ । শক্রদেবশ্চ কালিঙ্গঃ কালিঙ্গাশ্চ মৃধে হতাঃ ॥ ১১৫ ॥ স্ববা-  
 হুবলবীর্যেণ নাগাশ্বরথসঙ্কলঃ । মহাপুরুষভূযিষ্ঠৌ বীরযোধনিষেবিতঃ । মহা-  
 ব্যূহঃ কলিঙ্গানামেকেন মৃদিতস্ত্রুযা ॥ ১১৬ ॥ এবমুক্ত্বা শিনেনপ্তা দীর্ঘবাহুররি-  
 ন্দমঃ । রথস্থং তমভিদ্ধত্য পর্যষজত পাণ্ডবম্ ॥ ১১৭ ॥ ততঃ স্বরথমাগম্য পুন-  
 রেব মহারথঃ । তাবকানবধীং ক্রুদ্ধো ভীমস্য বলমাদধৎ ॥ ১১৮ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বনি ভীষ্মবধপর্বনি কলিঙ্গরাজবধে এক-

পঞ্চাশত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫১ ॥



সঞ্জয় উবাচ । গতপূর্বাঙ্কসময়ে তস্মিন্নহনি ভারত ! রথাস্থনরনাগানাং সাদিনাঞ্চ  
 মহাঙ্কয়ে ॥ ১ ॥ দ্রোণপুল্লেণ শল্যেন রূপেণ চ মহাত্মনা । সমসজ্জত পাঞ্চাল্য-  
 স্ত্রিভিরেতৈশ্চ হারথৈঃ ॥ ২ ॥ স লোকবিদিতানশ্বামিজঘান মহাবলঃ । দ্রৌণেঃ পাঞ্চা-  
 লদাযাদঃ শিতৈর্দশভিরাশুগৈঃ ॥ ৩ ॥ ততঃ শল্যরথং তূর্ণমাস্থাষ হতবাহনঃ ।  
 দ্রৌণিঃ পাঞ্চালদাযাদমভ্যবর্ষদথেষুভিঃ ॥ ৪ ॥ ধৃষ্টদ্যুম্নস্ত সংযুক্তং দ্রৌণিনা দৃশ্য

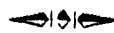


भारत । सौभद्रोऽभ्यपततूर्णं विकिरन् निशितान् शरान् ॥ ५ ॥ स शल्यं पक्ष-  
 विंशत्या रूपं नवभिः शरैः । अश्वथामानमर्षाभिर्विव्याध भरतर्षभ ॥ ६ ॥  
 आर्जुनिस्तु ततस्तूर्णं द्रोणिर्विव्याध पत्त्रिणा । शल्यो द्वादशभिश्चैव रूपश्च निशि-  
 तैस्त्रिभिः ॥ ७ ॥ लक्ष्मणस्तु पौत्रस्तु सौभद्रं पर्यवसितम् । अत्यवर्तत संक्रुद्ध-  
 स्तयोर्युद्धमवर्तत ॥ ८ ॥ दौर्योधनिस्तु संक्रुद्धः सौभद्रं निशितैः शरैः । विव्याध  
 समरे राजंस्तदद्भुतनिवातवत् ॥ ९ ॥ अभिमन्युश्च संक्रुद्धो भ्रातरं भरतर्षभ ।  
 शरैः पक्षशतैः क्षिप्रं क्षिप्रहस्तो न्यविधत् ॥ १० ॥ लक्ष्मणोऽपि ततस्तस्य धनु-  
 श्छिच्छेद पत्त्रिणा । मुष्टिदेशे महाराज तत उच्छुक्रुशुर्जनाः ॥ ११ ॥ तद्विहाय धनु-  
 श्छिन्नं सौभद्रः परवीरहा । अन्यादादत्तवांश्चित्तं कार्मुकं वेगवन्तरम् ॥ १२ ॥  
 तौ तत्र समरे युक्तौ कृतप्रतिकृतैषिणौ । अन्यान्यं निशितैस्त्रीकैर्जघ्नतुः  
 पूरुषर्षभौ ॥ १३ ॥ ततो दुर्योधनो राजा दृष्ट्वा पुलं महाबलम् । पीडितं तव  
 पौत्रेण प्रायात्तत्र जनेश्वरः ॥ १४ ॥ समिवृत्ते तव सूते सर्व एव जनाधिपाः ।  
 आर्जुनिं रथवंशेन समस्तां पर्यवारयन् ॥ १५ ॥ स तैः परिवृतः शरैः शूरो  
 युधि सुदुर्जयः । न स्य प्रव्यथते राजन् रूढतुल्यपराक्रमः ॥ १६ ॥ सौभद्रमथ सं-  
 युक्तं दृष्ट्वा तत्र धनञ्जयः । अभिदुद्राव संक्रुद्धस्त्रातुकामः स्वमाञ्जम ॥ १७ ॥  
 ततः सरथनागाश्वा तीर्णद्रोणपुरोगमाः । अत्यवर्तन्त राजानः सहसा सव्यसाचि-  
 नम् ॥ १८ ॥ उद्धृतं सहसा भोमं नागाश्वरथसादिभिः । दिवाकरपथं प्राप्य  
 रजस्तीव्रमदृश्यत् ॥ १९ ॥ तानि नागसहस्राणि भूमिपालशतानि च । तस्य वाणपथं  
 प्राप्य नात्यवर्तन्त सर्वशः ॥ २० ॥ प्रवेदुः सर्वभूतानि बभूवुस्त्रिमिरा दिशः ।  
 कुरूणामनयस्तीव्रः प्रत्यपद्यत् दारुणः ॥ २१ ॥ नाप्यस्तुरीक्षं न दिशो न भूमिर्न च  
 तान्करः । प्राज्ज्ञायत नरश्रेष्ठ शरसंघैः किरीटिनः ॥ २२ ॥ सादितध्वजनागास्तु  
 हताश्वा रथिनो भृशं । विप्रद्रुतरथाः केचिद्दृश्यन्ते रथयूथपाः ॥ २३ ॥ वि-  
 रथा रथिनश्चान्ये धावमानास्तुतस्ततः । तत्र तत्रैव दृश्यन्ते सायुधाः साङ्गदैर्भु-  
 जैः ॥ २४ ॥ ह्यारोहा ह्यांस्त्यक्त्वा गजारोहाश्च दन्तिनः । अर्जुनस्य भया-  
 द्राजन् समस्ताद्विप्रदुःखवुः ॥ २५ ॥ रथेभ्यश्च गजेभ्यश्च ह्येभ्यश्च नराधिपाः ।  
 पातिताः पात्यमानाश्च दृश्यन्तेऽर्जुनसायकैः ॥ २६ ॥ सगदानुद्यतान् बाहून्  
 सखजांश्च विशाम्पते । सप्रामांश्च सतूणीरान् सशरान् सशरासनान् ॥ २७ ॥ साङ्गुशान्  
 सपताकांश्च तत्र तत्रार्जुनो नृणाम् । विचकर्त शरैरुग्रैश्च रौद्रं विभ्रुपुस्त-  
 दा ॥ २८ ॥ परिषाणां विदीर्णानां मुदागणांश्च मारिषा । प्रामानां तन्दिपालानां

নিস্ত্রিংশানাঞ্চ সংযুগে ॥ ২৯ ॥ পরশ্বধানাং তীক্ষ্ণানাং তোমরাণাঞ্চ ভারত ।  
চর্মণামপবিদ্ধানাং কবচানাঞ্চ ভুতলে ॥ ৩০ ॥ স্বজানাং শস্ত্রাণাং সংত্যক্তা-  
নাঞ্চ সর্বশঃ । ছত্রাণাং হেমদণ্ডানামক্ষুশানাঞ্চ ভারত ॥ ৩১ ॥ প্রতোদানাং কশা-  
নাঞ্চ যোত্রাণাঞ্চাপি মারিষ । রাশযঃ স্ম প্রদৃশ্যন্তে বিনিকীর্ণা রণক্ষিতৌ ॥ ৩২ ॥  
নাসীত্তত্র পুমান্ কশ্চিত্তব সৈন্যস্য মারিষ । যোহর্জুনং সমরে শূরং প্রত্যাঙ্গীয়াৎ  
কথঞ্চন ॥ ৩৩ ॥ যো যো হি সমরে পার্থং প্রত্যাঙ্গীতি বিশাম্পতে । স শরৈর্বিশি-  
ক্শিত্ত্বৈকৈঃ পরলোকায নীযতে ॥ ৩৪ ॥ তেষু বিদ্রবমাণেষু তব যোধেষু সর্বশঃ ।  
অর্জুনো ঘাসুদেবশ্চ শশ্বৌ দধ্মতুরুত্তমৌ ॥ ৩৫ ॥ তৎ প্রভগ্নং বলং দৃষ্ট্বা পিতা  
দেবব্রতস্তব । অত্র বীৎ সমরে শূরং ভারদ্বাজং স্ময়ম্ভিব ॥ ৩৬ ॥ এষ পাণ্ডুসুতো  
বীরঃ কৃষ্ণেন সহিতো বলী । তথা করোতি সৈন্যানি যথা কুর্য্যাদ্বনঞ্জয়ঃ ॥ ৩৭ ॥  
ন হেঘ সমরে শক্যো জেতুমদ্য কথঞ্চন । যথাস্য দৃশ্যতে রূপং কালান্তকয়মোপ-  
মম্ ॥ ৩৮ ॥ ন নিবর্ত্তযিতুঞ্চাপি শক্যেযং মহতী চমুঃ । অন্যান্যাপ্রেক্ষয়া পশ্য  
দ্রবতীযং বর্কথিনী ॥ ৩৯ ॥ এষ চাস্তং গিরিশ্রেষ্ঠং ভানুমান্ প্রতিপদ্যতে । চক্ষুঃ-  
ষি সর্বলোকস্য সংহরম্ভিব সর্বথা ॥ ৪০ ॥ তত্রাবহারং সংপ্রাপ্তং মন্যোহহং পুরুষ-  
র্ষভ । শ্রান্তা ভীতাশ্চ যে যোধা ন যোৎস্যন্তি কথঞ্চন ॥ ৪১ ॥ এবমুক্ত্বা ততো  
ভীষ্মো দ্রোণমাচার্য্যসত্তমম্ । অবহারমথো চক্রে ভাবকানাং মহারথঃ ॥ ৪২ ॥  
ততোহবহারঃ সৈন্যানাং তব তেষাঞ্চ মারিষ । অস্তং গচ্ছতি সূর্য্যেহভূৎ সন্ধ্যা-  
কালে চ বর্ত্ততি ॥ ৪৩ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি দ্বিতীয়দিনসৈন্যাবহারে

দ্বিপঞ্চাশত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫২ ॥



সঞ্জয় উবাচ । প্রভাতায়াস্ত শর্ষর্যাং ভীষ্মঃ শাস্তনবস্ততঃ । অনীকান্যথ সংযানে  
ব্যাদিদেশ পরস্তপঃ ॥ ১ ॥ গারুডঞ্চ মহাব্যূহং চক্রে শাস্তনবস্তদা । পুত্রাণাং তে  
জযাকাঙ্ক্ষী বৃদ্ধঃ কুরুপিতামহঃ ॥ ২ ॥ গরুডস্য স্বয়ং তুণ্ডে পিতা দেবব্রতস্তব ।  
চক্ষুষী চ ভারদ্বাজঃ কৃতবর্মা চ সাত্বতঃ ॥ ৩ ॥ অশ্বথামা রূপশ্চৈব শির আস্তাং  
যশস্বিনো । ত্রিগর্ত্তৈর্ম্মৎস্যকৈকেযৈর্বাটধানৈশ্চ সংযুতৈঃ ॥ ৪ ॥ ভুরিশ্রবাঃ শলঃ  
শল্যো ভগদত্তশ্চ মারিষ । মদ্রকাঃ সিন্ধুশৌবীরাস্তথা পঞ্চনদাশ্চ যে । জঘদ্রথেন  
সহিতা গ্রীবায়াং সন্নিবেশিতাঃ ॥ ৫ ॥ পৃষ্ঠে দুর্ঘ্যেধনো রাজা সোদর্য্যেঃ সান্নুগৈ-  
র্হৃতঃ । বিন্দান্নু বিন্দাবারন্ত্যো কান্বোজাশ্চ শকৈঃ সহ । পুচ্ছমাসম্বহারাজ শূরসে-

नाश्च मारिष ॥ ७ ॥ दक्षिणं पक्षमासाद्य स्थिता बृहस्प दंशिताः ॥ १ ॥ कारुषाश्च  
विकुष्णाश्च मुग्धाः कुण्डीवृषास्तथा । बृहद्वलेन सहिता वामपार्श्वे समास्थिताः ॥ ८ ॥  
व्याटं दृष्ट्वा तु तं सैन्यं सव्यासात्पी परशुपः । धृष्टद्युम्नेन सहितः प्रत्यव्यूहत् सं-  
युगे ॥ २ ॥ तावकानास्तु तं बृहत् प्रत्यव्यूहस्तु पाण्डवाः । अर्क्षच्छ्रेण व्यहेन बृहत्  
तमतिदारुणम् ॥ १० ॥ दक्षिणं शृङ्गमास्थाय भीष्मसेनो व्यरोचत । नानाशस्त्रैश्च स-  
म्पन्नैर्नानादेशैर्नृपैर्बृतः ॥ ११ ॥ तमन्वेव विराटश्च द्रुपदश्च महारथः । तद-  
नन्तरमेवाथ नीलो नीलायुधैः सह ॥ १२ ॥ नीलादनन्तरं चैव धृष्टकेतुश्महारथः ।  
चेदिकाशिककवैश्च पौरवैश्चाभिसंवृतः ॥ १३ ॥ धृष्टद्युम्नः शिखण्डी च पाण्डा-  
लाश्च प्रभद्रकाः । मध्ये सैन्येन महता स्थिता युद्धाय भारत ॥ १४ ॥ तत्रैव धर्मरा-  
जोऽपि गजानीकेन संवृतः । ततस्तु सात्यकी राजन्द्रोपदयाः पक्ष चात्तजाः ॥ १५ ॥  
अभिमन्युस्तु तस्युर्गमिरावांश्च ततः परम् । तैमसेनिस्ततो राजन् कैकेयाश्च  
महारथाः ॥ १६ ॥ ततोऽहंभुद्विपदांश्चैष्टो वामं पार्श्वमुपाश्रितः । सर्वस्य जग-  
तो गोपुत्रा यस्य गोपुत्रा जनार्दनः ॥ १७ ॥ एवमेतन्महाव्यूहं प्रत्यव्यूहस्तु पा-  
ण्डवाः । वधार्थं तव पुत्राणां तत्पक्षं ये च संश्रिताः ॥ १८ ॥ ततः प्रवृत्ते  
युद्धं व्यतिवृत्तं रथद्विपम् । तावकानां परेषां निम्नतामितरेतरम् ॥ १९ ॥ हस्त्या-  
णाश्च रथोघाश्च तत्र तत्र विशाम्पते । सम्पतन्तो व्यदृश्यास्तु निम्नतन्ते परस्प-  
रम् ॥ २० ॥ धावतांश्च रथोघानां युध्यतांश्च पृथक् पृथक् । बभूव तुमुलः शक्यो  
विमिश्रो दूम्भुभिस्वनैः ॥ २१ ॥ दिवस्पृष्टुरवीराणां निम्नतामितरेतरम् । संप्रहारे  
तु तुमुले तव तेषां भारत ॥ २२ ॥

इति भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि गारुडार्क्षच्छ्रव्यूहनिर्माणे

त्रिपक्षाशतमोऽध्यायः ॥ ५३ ॥



सञ्जय उवाच । ततो व्यूहैश्चनीकेषु तावकेष्वितरेषु च । धनञ्जयो रथानीकमव-  
धीकृतव भारत । शरैरतिरथो युद्धे पातयन्नुथयुथपान् ॥ १ ॥ ते वध्यमानाः पा-  
र्थेन कालेनेव युगक्षये । धार्तराष्ट्रा रणे यत्नाः पाण्डवान् प्रत्ययोधयन् ॥ २ ॥  
प्रार्थयाना यशो दीपुं मृत्युं कृत्वा निवर्तनम् । एकाग्रमनसो भूत्वा पाण्डवानां वक्-  
थिनीम् । वतञ्जुर्बृहशो राजंस्ते चातज्यस्तु संयुगे ॥ ३ ॥ द्रवन्तिरथ भग्नैश्च  
परिवर्तन्तिरेव च । पाण्डवैः कौरवैश्च न प्राञ्ज्यायत किञ्चन ॥ ४ ॥ उदतिष्ठ-  
द्रजो भौमं ह्यादयानं दिवाकरम् । न दिशः प्रदिशश्चापि तत्र जङ्गः कथञ्चन ॥ ५ ॥

অনুমানেন সংজ্ঞাভিনামগোত্রৈশ্চ সংযুগে । বর্ততে স্ম তদা যুদ্ধং তত্র তত্র বিশা-  
 ম্পতে ॥ ৬ ॥ ন ব্যূহো ভিদ্যতে তত্র কৌরবাণাং বিশাম্পতে । রক্ষিতঃ সত্যসঙ্কেন  
 ভারদ্বাজেন মারিষ ॥ ৭ ॥ তথৈব পাণ্ডবেযানাং রক্ষিতঃ সব্যসাচিনা । নাভিদ্যত  
 মহাব্যূহো ভীমেম চ সুরক্ষিতঃ ॥ ৮ ॥ সেনাগ্রাদভিনিম্পত্য প্রায়ুধ্যৎস্তত্র মানবাঃ ।  
 উতথোঃ সেনযো রাজন্ ব্যভিষক্রথদ্বিধিপাঃ ॥ ৯ ॥ হযারোহৈহযারোহাঃ পাত্য-  
 স্তে স্ম মহাহবে । ঋষ্টিভির্বিমলাগ্রাভিঃ প্রাসৈরপি চ সংযুগে ॥ ১০ ॥ রথী রথিন-  
 মশ্চাদ্য বাণৈঃ কনকভূষণৈঃ । পাতযামাস সমরে তস্মিন্নতিভবকরে ॥ ১১ ॥ গজা-  
 রোহা গজারোহান্ নারাচশরতোমরৈঃ । সংযুক্তান্ পাতযামাসুস্তব তেষাঞ্চ  
 সংঘশঃ ॥ ১২ ॥ পত্তিসংঘা রণে পত্তীন্ ভিন্দিপালপরশ্বধৈঃ । ন্যপাতযন্ত সংহৃষ্টাঃ  
 পরস্পরকৃতাগসঃ ॥ ১৩ ॥ রথী চ সমরে রাজন্মাসাদ্য গজযোধিনম্ । সগজং  
 পাতযামাস গজী চ রথিনং তথা ॥ ১৪ ॥ রথিনঞ্চ হযারোহঃ প্রাসেন ভরতর্ষভ ।  
 পাতযামাস সমরে রথী চ হযসাদিনম্ ॥ ১৫ ॥ পদাতী রথিনক্শেব রথী চৈব পদা-  
 তিনম্ । ন্যপাতযৎ শিতৈঃ শস্ত্রৈঃ সেনযোরুভযোরপি ॥ ১৬ ॥ গজারোহা হযা-  
 রোহান্ পাতযামাসুরাহবে । হযারোহা গজারোহাংস্তদদ্ভুতমিবাভবৎ ॥ ১৭ ॥  
 গজারোহবরৈশ্চাপি তত্র তত্র পদাতযঃ । পাতিতাঃ সমদৃশ্যন্ত তৈশ্চাপি গজযো-  
 ধিনঃ ॥ ১৮ ॥ পত্তিসংঘা হযারোহৈঃ সাদিসংঘাশ্চ পত্তিভিঃ । পাত্যমানা ব্যদৃ-  
 শ্যন্ত শতশোহথ সহস্রশঃ ॥ ১৯ ॥ ধ্বজৈস্তত্রাপবিদ্বৈশ্চ কাশ্মুকৈস্তোমরৈস্তথা ।  
 প্রাসৈস্তথা গদাভিশ্চ পরিঘৈঃ কম্পনৈস্তথা ॥ ২০ ॥ শক্তিভিঃ কবচৈশ্চিত্রৈঃ কুণ-  
 পৈরক্ষুশৈরপি । নিস্ত্রিংশৈর্বিমলৈর্বাপি স্বর্ণপুটৈঃ শরৈস্তথা ॥ ২১ ॥ পরিস্তোমৈঃ  
 কুথাভিশ্চ কশ্বলৈশ্চ মহাধনৈঃ । ভূর্ভাতি ভরতশ্রেষ্ঠ সুগদামৈরিব চিত্রিতা ॥ ২২ ॥  
 নরাশ্বকাযৈঃ পতিতৈর্দন্তিভিশ্চ মহাহবে । অগম্যকৃপা পৃথিবী মাংসশোণিতকর্দ-  
 মা ॥ ২৩ ॥ প্রশশাম রজো ভৌমং ব্যুক্তিতং নরশোণিতৈঃ । দিশশ্চ বিমলাঃ  
 সর্বাঃ সমপদ্যন্ত ভারত ॥ ২৪ ॥ উখিতান্যগণেযানি কবন্ধানি সমস্ততঃ । চিহ্নভূ-  
 তানি জগতো বিনাশার্থায় ভারত ॥ ২৫ ॥ তস্মিন্ যুদ্ধে মহারৌদ্রে বর্তমানে সুদা-  
 রুণে । প্রত্যদৃশ্যন্ত রথিনো ধাবমানাঃ সমস্ততঃ ॥ ২৬ ॥ ততো ভীষ্মশ্চ দ্রোণশ্চ  
 সৈন্ধবশ্চ জঘদ্রথঃ । পুরুমিত্রো বিকর্ণশ্চ শকুনিশ্চাপি সৌবলঃ ॥ ২৭ ॥ এতে সম-  
 রদুর্কর্ষাঃ সিংহতুল্যপরাক্রমাঃ । পাণ্ডবানামনীকানি বভঞ্জুঃ সমরে স্থিতাঃ ॥ ২৮ ॥  
 তথৈব ভীমসেনোহপি রাক্ষসশ্চ ষটোৎকচঃ । সাত্বকিশ্চেকিতানশ্চ দ্রৌপদেযাশ্চ  
 ভারত ॥ ২৯ ॥ তাবকাংস্তব পুত্রাংশ্চ সহিতাঃ সর্বরাজভিঃ । দ্রাবযামাসুরাজি-

স্বাংস্ত্রিদশা দানবানিব ॥ ৩০ ॥ তথা তে সমরেহন্যোন্যং নিম্নন্তঃ ক্লত্রিয়র্ষতাঃ ।  
 রক্তোক্ষিতা ঘোররূপা বিরেজুর্দানবা ইব ॥ ৩১ ॥ বিজিত্য চ রিপূন্ বীরান্ সেন-  
 যোরুভযোরপি । ব্যদৃশ্যন্তু মহামাত্রা গ্রহা ইব নভস্তলে ॥ ৩২ ॥ ততো রথসহস্রেণ  
 পুত্রো দুর্যোধনস্তব । অভ্যযাৎ পাণ্ডবান্ যুদ্ধে রাক্ষসঞ্চ ঘটোৎকচম্ ॥ ৩৩ ॥  
 তথৈব পাণ্ডবাঃ সর্বে মহত্যা সেনযা সহ । ভীষ্মদ্রোণৌ রণে শূরৌ প্রত্যাঙ্ক্যরুরি-  
 ন্দমৌ ॥ ৩৪ ॥ কিরিটী চ যযৌ ক্রুদ্ধঃ সমস্তাৎ পার্থিবোত্তমান্ । আর্জুনিঃ সাত্য-  
 কিশ্চিব যযতুঃ সৌবলং বলম্ ॥ ৩৫ ॥ ততঃ প্রববৃতে ভূষঃ সংগ্রামো লোমহর্ষণঃ  
 তাবকানাং পরেষাঞ্চ জিগীষুণাং পরস্পরম্ ॥ ৩৬ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি তৃতীয়দিবসযুদ্ধারম্ভে

চতুঃপঞ্চাশত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫৪ ॥



সঞ্জয় উবাচ । ততস্তে পার্থিবাঃ ক্রুদ্ধাঃ ফাল্গুনং বীক্ষ্য সংযুগে । রথৈরনেকস্যা  
 হসৈঃ সমস্তাৎ পর্য্যবারয়ন্ ॥ ১ ॥ অথৈনং রথবংশেন কোষ্ঠকীকৃত্য ভারত ।  
 শরৈঃ সুবহুসাহসৈঃ সমস্তাৎ পর্য্যবাকিরন্ ॥ ২ ॥ শঙ্কীশ্চ বিমলাস্তীক্ষ্ণা গদাশ্চ  
 পরিঘৈঃ সহ । প্রাসান্ পরশ্বধাংশৈশ্চব মুদারান্ মুষলানপি । চিক্ৰিপুঃ সমরে ক্রুদ্ধাঃ  
 ফাল্গুনস্য রথং প্রতি ॥ ৩ ॥ শস্ত্রাণামথ তাং বৃষ্টিং শলভানামিবাযতিম্ । রুরোধ  
 সর্ষতঃ পার্থঃ শরৈঃ কনকভূষণৈঃ ॥ ৪ ॥ তত্র তল্লাঘবং জ্জাহ্বা বীভৎসোরতিমানু-  
 ষম্ । দেবদানবগন্ধর্বাঃ পিশাচোরগরাক্ষসাঃ । সাধু সাধ্বিতি রাজেশ্চ ফাল্গুনং  
 প্রত্যপূজয়ন্ ॥ ৫ ॥ সাত্যকিশ্চাভিমন্যুশ্চ মহত্যা সেনযা সহ । গান্ধারান্ সমরে  
 শূরান্ রুরুধুঃ সহসৌবলান্ ॥ ৬ ॥ ততঃ সৌবলকাঃ শূরা বার্ষেযস্য রথোত্তমম্ ।  
 তিলশশিচ্ছিদুঃ ক্রোধাচ্ছৈর্নানাবিধৈরপি ॥ ৭ ॥ সাত্যকিস্তু রথং ত্যক্ত্বা বর্ত-  
 মানে মহাহবে । অভিমন্যো রথং তুর্গমারুরোহ পরস্তপ ॥ ৮ ॥ তাবেকরথসংযুক্তৌ  
 সৌবলেযস্য বাহিনীম্ । জম্বতুর্নিশিতৈস্তূর্ণং শরৈঃ সমতপর্ষভিঃ ॥ ৯ ॥ দ্রোণ-  
 ভীষ্মৌ রণে যত্তৌ ধর্ম্মরাজস্য বাহিনীম্ । নাশযেতাং শরৈস্তীক্ষ্ণৈঃ কঙ্কপত্রপরি-  
 ছদৈঃ ॥ ১০ ॥ ততো ধর্ম্মসুতো রাজা মাদ্রীপুত্রো চ পাণ্ডবৌ । মিশতাং সর্বসৈ-  
 ন্যানাং দ্রোণানীকমুপাদ্রবন্ ॥ ১১ ॥ তত্রাসীৎ সুমহদ্বুদ্ভং তুমুলং লোমহর্ষণম্ ।  
 যথা দেবাস্বরং যুদ্ধং পূর্বমাসীৎ সুদারুণম্ ॥ ১২ ॥ কুর্বাণৌ তু মহৎ কর্ম্ম ভীষ্মসে-  
 নঘটোৎকচৌ । দুর্যোধনস্ততোহভ্যেত্য তাবুভাবপ্যবারয়ৎ ॥ ১৩ ॥ তত্রাস্তুতম-  
 পশ্যাম হৈভিষ্মস্য পরাক্রমম্ । অতীত্য পিতরং যুদ্ধে যদযুধ্যত ভারত ॥ ১৪ ॥

ভীষ্মসেনাস্তু সংক্রুদ্ধো দুর্যোধনমমর্ষণম্ । হৃদ্যরিধ্যৎ পৃষৎকেন প্রহসন্নিব্ পাণ্ড-  
 বঃ ॥ ১৫ ॥ ততো দুর্যোধনো রাজা প্রহারবরমোহিতঃ । নিষসাদ রথোপস্থে কঙ্ক-  
 লঞ্চ জগাম হ ॥ ১৬ ॥ তৎ বিসংক্রমথো জ্ঞাত্বা দ্রবমাণোহস্য সারথিঃ । অপোবাহ  
 রণাদ্রাজংস্ততঃ সৈন্যমভজ্যত ॥ ১৭ ॥ ততস্তাং কৌরবীং সেনাং দ্রবমাণাং তত-  
 স্ততঃ । নিঘ্নন্ ভীমঃ শরৈস্তীষ্টৈক্ষুরনুব্রাজ পৃষ্ঠতঃ ॥ ১৮ ॥ পার্শ্বতশ্চ রথশ্রেষ্ঠো  
 ধর্মপুল্কশ্চ পাণ্ডবঃ । দ্রোণস্য পশ্যতঃ সৈন্যং গান্ধেয়স্য চ ভারত । জঘ্নতুর্বিশি-  
 ঠৈস্তীষ্টৈক্ষুঃ পরানীকবিনাশনৈঃ ॥ ১৯ ॥ দ্রবমাণঞ্চ তৎ সৈন্যং তব পুল্কস্য সংযুগে ।  
 নাশকুতাং বারষিতুং ভীষ্মদ্রোণৌ মহারথৌ ॥ ২০ ॥ বার্যমাণঞ্চ ভীষ্মেণ দ্রোণেন  
 চ মহাত্মনা । বিদ্রবতে্যব তৎ সৈন্যং পশ্যতোর্দ্রোণভীষ্মযোঃ ॥ ২১ ॥ ততো রথ-  
 সহস্রেষু বিদ্রবৎসু ততস্ততঃ । তাবাস্তিতাবেকরথং সৌভদ্রশিনিপুঙ্গবো । সৌবলীং  
 সমরে সেনাং নাশযেতাং সমস্ততঃ ॥ ২২ ॥ শুশুভাতে তদা তৌ তু শৈনেষকুরুপু-  
 ঙ্গবো । অমাবস্যাং গতৌ যদ্বৎ সোমসূর্য্যৌ নভস্তলে ॥ ২৩ ॥ অর্জুনস্ত ততঃ  
 ক্রুদ্ধস্তব সৈন্যং বিশাম্পতে । ববর্ষ শরবর্ষণে ধারাতিরিব তোষদঃ ॥ ২৪ ॥ বধ্য-  
 মানং ততস্তত্তু শরৈঃ পার্থস্য সংযুগে । দুদ্ভাব কৌরবং সৈন্যং বিষাদভযকম্পি-  
 তম্ ॥ ২৫ ॥ দ্রবতস্তান্ সমালোক্য ভীষ্মদ্রোণৌ মহাবলৌ । ন্যবারযেতাং সং-  
 ক্রুদ্ধৌ দুর্যোধনহিতৈষিণৌ ॥ ২৬ ॥ ততো দুর্যোধনো রাজা সমাস্বাস্য বিশাম্প-  
 তে । ন্যবর্ত্তযত তৎ সৈন্যং দ্রবমাণং সমস্ততঃ ॥ ২৭ ॥ যত্র যত্র সূতং তুভ্যং যো  
 যঃ পশ্যতি ভারত । তত্র তত্র ন্যবর্ত্তন্ত ক্লিষাণাং মহারথাঃ ॥ ২৮ ॥ তান্নিবৃত্তান্  
 সমীক্ষ্যেব ততোহন্যেহপীতরে জনাঃ । অন্যান্যস্পর্ধয়া রাজন্ লজ্জযান্যেহবত-  
 স্থিরে ॥ ২৯ ॥ পুনরাবর্ত্ততাং তেষাং বেগ আসীদ্বিশাম্পতে । পূর্য্যতঃ সাগরসে্যব  
 চন্দ্রস্যোদয়নং প্রতি ॥ ৩০ ॥ সন্নিবৃত্তাংস্ততস্তাংস্ত দক্ষ্য রাজা সুযোধনঃ । অত্র-  
 বীত্বরিতো গত্বা ভীষ্মং শ্যাস্তনবং বচঃ ॥ ৩১ ॥ পিতামহ নিবোধেদং যত্নাং বক্ষ্যা-  
 মি ভারত । নানুরূপমহং মন্যে ত্বয়ি জীবতি কৌরব ॥ ৩২ ॥ দ্রোণে চাস্ত্রবিদ্যাং  
 শ্রেষ্ঠে সপুল্লে সমুহজ্জনে । রূপে চৈব মহেষ্বাসে দ্রবতে যৎ বক্খিণী ॥ ৩৩ ॥ ন  
 পাণ্ডবান্ প্রতিবলাংস্তব মন্যে কথঞ্চন । তথা দ্রোণস্য সংগ্রামে দ্রোণেশ্চাপি কু-  
 পস্য চ ॥ ৩৪ ॥ অনুরূগ্রাহাঃ পাণ্ডুসুতা নুনং তব পিতামহ । যথেষাং ক্ষমসে বীর  
 বধ্যমানাং বক্খিণীম্ ॥ ৩৫ ॥ সোহস্মি বাচ্যস্তুষা রাজন্ পূর্বমেব সমাগমে । ন  
 যোৎস্যে পাণ্ডবান্ সংখ্যে নাপি সাত্যকিপার্ষতৌ ॥ ৩৬ ॥ শ্রদ্ধাহং বচনং তুভ্য-  
 মাচার্য্যস্য চ ভারত । কর্ণেন সহিতঃ কৃত্যং চিন্তয়ানস্তদৈব হি ॥ ৩৭ ॥ যদি

নাহং পরিত্যাজ্যে। যুবাভ্যামিহ সংযুগে । বিক্রমেণানুরূপেণ যুদ্ধেতাং পুরুষ-  
ভৌ ॥ ৩৮ ॥ এতচ্ছুভ্বা বচো ভীষ্মঃ প্রহসন্ বৈ মুহুর্শ্মুহুঃ । অত্রবীক্তনয়ং তুভ্যং  
ক্রোধাদ্যাবৃত্য চক্ষুষী ॥ ৩৯ ॥ বহুশোহসি ময়া, রাজন্ পথ্যমুক্তো হিতং বচঃ ।  
অজেযাঃ পাণ্ডবা যুদ্ধে দেবৈরপি সবার্ষবৈঃ ॥ ৪০ ॥ যত্র শক্যং ময়া কর্তুং বৃদ্ধেনাত্র  
নৃপোত্তম । করিষ্যামি যথাশক্তি প্রেক্ষেদানীং সবার্ষবঃ ॥ ৪১ ॥ অদ্য পাণ্ডুসু-  
তান্ বীরান্ সসৈন্যান্ সহ বন্ধুভিঃ । মিষতো বারিষিষ্যামি সর্বলোকস্য পশ্যা-  
তঃ ॥ ৪২ ॥ এবমুক্তস্ত ভীষ্মেণ পুলস্ত্যব জনেশ্বরঃ । দধৌ শঙ্খং মুদা যুদ্ধো ভৈ-  
রীশ্চ সমতাডঘৎ ॥ ৪৩ ॥ পাণ্ডবাশ্চ ততো রাজন্ শ্রুত্বা তং নিনদং মহৎ । দধ্মুঃ  
শঙ্খাংশ্চ ভেরীশ্চ মুরজাংশ্চাত্যত্যাডঘন্ ॥ ৪৪ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি ভীষ্মদুর্যোধনসংবাদে

পঞ্চপঞ্চাশত্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫৫ ॥



ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । প্রতিজ্ঞাতে তু ভীষ্মেণ তস্মিন্ যুদ্ধে স্মদারুণে । মম পুলস্য  
বাক্যেস্ত ক্রোধিতেন বিশেষতঃ ॥ ১ ॥ ভীষ্মঃ কিমকরোত্তত্র পাণ্ডবেষু সঞ্জয় ।  
পিতামহে বা পাঞ্চালাস্তম্মমাচক্ষু সঞ্জয় ॥ ২ ॥ সঞ্জয় উবাচ । গতপূর্বাঙ্কভূষিষ্ঠে  
তস্মিন্নহনি ভারত । পশ্চিমাং দিশমাস্থাষ কিঞ্চিদ্বাতে দিবাকরে ॥ ৩ ॥ জয়ংপ্রা-  
প্তেষু হৃষ্টেষু পাণ্ডবেষু মহাত্মসু । সর্বধর্মবিশেষজ্ঞঃ পিতা দেবত্রতস্তব ॥ ৪ ॥ অভ্য-  
বাদ্যবনৈরশ্বৈঃ পাণ্ডবানামনীকিনীম্ । মহত্যা সেনয়া যুক্তস্তব পুত্রৈশ্চ সর্ব-  
শঃ ॥ ৫ ॥ প্রাবর্তত ততো যুদ্ধং তুমুলং লোমহর্ষণম্ । অস্মাকং পাণ্ডবৈঃ সার্কম-  
নযাত্তব ভারত ॥ ৬ ॥ ধনুষাং কূজতাং তত্র তলানাঞ্চাভিন্যতাম্ । বভূব তুমুলঃ  
শকো গিরীণামিব দীর্ঘ্যতাম্ ॥ ৭ ॥ তিষ্ঠ স্থিতোহস্মি বিদ্ব্যনং নিবর্তস্ব স্থিরো ভব ।  
স্থিতোহস্মি প্রহরস্বৈতি শকাঃ শ্রযন্ত সর্বশঃ ॥ ৮ ॥ কাঞ্চনেষু তনুত্রেষু কিরীটেষু  
ধজেষু চ । শিলানামিব শৈলেষু পতন্তীনামভুং স্বনঃ ॥ ৯ ॥ পতিতান্যুক্তমাজানি  
বাহবশ্চ বিভূষিতাঃ । ব্যচেষ্টস্ত মহীং প্রাপ্য শতশোহথ সহস্রশঃ ॥ ১০ ॥ কৃতো-  
ত্তমাজাঃ কেচিদ্ভু তথৈবোদ্যতকান্মুকাঃ । প্রগৃহীতায়ুধাশ্চৈব তস্তুঃ পুরুষসত্ত-  
মাঃ ॥ ১১ ॥ প্রাবর্তত মহাবেগা নদী রুধিরবাহিনী । মাতঙ্গাঙ্গশিলা ঘোরা মাং-  
সশোণিতকর্দমা ॥ ১২ ॥ বরাশ্বনরনাগানাং শরীরপ্রভবা তদা । পরলোকার্ণ-  
বমুখা গৃধ্রগোমায়ুমোদিনী ॥ ১৩ ॥ ন দৃষ্টং ন শ্রুতঞ্চাপি যুদ্ধমেতাদশং নৃপ ।  
যথা তব স্মৃতানাঞ্চ পাণ্ডবানাঞ্চ ভারত ॥ ১৪ ॥ নাসীদ্রথপথস্তত্র ষোড়ৈর্ঘুধি নিপা-

তিতৈঃ । গজৈর্নিপতিতৈর্নীলৈর্গিরিশৃঙ্গৈরিবাবৃতঃ ॥ ১৫ ॥ বিকীর্ণৈঃ কবচৈশ্চিহ্নৈঃ  
 শিরস্ত্রাণৈশ্চ মারিষ । শুশুভে তদ্রণস্থানং শরদীব নভস্তলম্ ॥ ১৬ ॥ বিনির্ভিমা  
 নরাঃ কেচিদস্তাপীডপ্রকর্ষণঃ । অদীনাঃ সমরে শত্রুনভ্যধাবন্তু দর্পিতাঃ ॥ ১৭ ॥  
 তাত ভাতঃ সখে বন্ধো বয়স্য মম মাতুল । মা মাং পরিত্যজেত্যন্যে চক্রুশুঃ পতি-  
 তা রণে ॥ ১৮ ॥ অথাভ্যেহি হুমাগচ্ছ কিং ভীতোহসি ক্ব যাস্যসি । স্থিতোহহং  
 সমরে মা ভৈরিতি চান্যে বিচক্রুশুঃ ॥ ১৯ ॥ তত্র ভীষ্মঃ শান্তনবো নিত্যং মণ্ডল-  
 কশ্মুকঃ । মুমোচ বাণান্ দীপ্তাগ্রানহীনাশীবিষানিব ॥ ২০ ॥ শরৈরেকাযনীকুর্ষন  
 দিশঃ সর্বা যতত্রতঃ । জঘান পাণ্ডবরথানাдиश्यादिश्या ভারত ॥ ২১ ॥ নৃত্যন্ বৈ  
 রথমার্গেষু দর্শয়ন্ পাণিলাঘবম্ । অলাতচক্রবদ্রাজংস্তত্র তত্র স্ম দৃশ্যতে ॥ ২২ ॥  
 তমেকং সমরে শূরং পাণ্ডবাঃ সৃষ্ট্যৈঃ সহ । অনেকশতসাহস্রং সমপশ্যন্ত লাঘ-  
 বাৎ ॥ ২৩ ॥ মাষাকৃতান্নানমিব ভীষ্মং তত্র স্ম মেনিরে । পূর্বস্যাং দিশি তং দৃষ্ট্বা  
 প্রতীচ্যাং দদৃশুর্জনাঃ ॥ ২৪ ॥ উদীচ্যাং চৈবমালোক্য দক্ষিণস্যাং তথৈব চ ।  
 প্রতিযুধ্যন্ স সমরে গান্ধেযঃ প্রত্যদৃশ্যত ॥ ২৫ ॥ ন চৈনং পাণ্ডবেযানাং কশ্চি-  
 চ্ছক্ৰোতি বীক্ষিতুম্ । বিশিখানেব পশ্যন্তি ভীষ্মচাপচ্যুতান্ বহুন্ ॥ ২৬ ॥ কুর্বাণং  
 সমরে কন্ম সুদযানঞ্চ বাহিনীম্ । ব্যক্ৰোশন্তু রণে তত্র বীরা বহুবিধং বহু ॥ ২৭ ॥  
 অমানুষেণ রূপেণ চরন্তং পিতরস্তব । শলভা ইব রাজানঃ পতন্তি স্ম প্রমোহিতাঃ ।  
 ভীষ্মাগ্নিমভিসংক্রুদ্ধং বিনাশায় সহস্রশঃ ॥ ২৮ ॥ ন হি মোঘঃ শরঃ কশ্চিদাসী-  
 ভীষ্মস্য সংযুগে । নরনাগাশ্বকাযেষু বহুত্বান্নযুযোধিনঃ ॥ ২৯ ॥ ভিনত্যেকেন চ  
 রণে স্মুজ্জেন পতন্তিণা । গজং কঙ্কটসংনদ্ধং বজ্রেণেব শিলোচ্চযম্ ॥ ৩০ ॥ দ্বৌ  
 ব্রীনপি গজারোহান্ পিণ্ডিতান্ বস্মিতানপি । নারাচেন স্মৃতীক্লেণ নিজঘান পিতা  
 তব ॥ ৩১ ॥ যো যো ভীষ্মং নরব্যাগ্রমভ্যেতি যুধি কশ্চন । মুহূর্তদৃষ্টঃ স যথা  
 পতিতো ভুবি দৃশ্যতে ॥ ৩২ ॥ এবং সা ধর্মরাজস্য বধ্যমানা মহাচমুঃ । ভীষ্মেণ  
 তুলবীর্ষেণ ব্যশীর্ষ্যত সহস্রধা ॥ ৩৩ ॥ প্রাকম্পত মহাসেনা শরবর্ষাভিপীড়িতা ।  
 পশ্যতো বাসুদেবস্য পার্থস্য চ মহাত্মনঃ ॥ ৩৪ ॥ যতমানাপি তে বীরা দ্রবমানান্ন-  
 হারথান্ । নাশকুবন্ বারযিতুং ভীষ্মবাণপ্রপীড়িতান্ ॥ ৩৫ ॥ মহেন্দ্রসমবীর্ষেণ  
 বধ্যমানা মহাচমুঃ । অভজ্যত মহারাজ ন চ দ্বৌ সহ ধাবতঃ ॥ ৩৬ ॥ আবিদ্ধরথ-  
 নাগাশ্বং পতিতধ্বজকুবরম্ । অনীকং পাণ্ডুপুত্রাণাং হাহাভুতমচেতনম্ ॥ ৩৭ ॥  
 জঘানাত্র পিতা পুলং পুলশ্চ পিতরং তথা । প্রিযং সখাযং চাক্রন্দে সখা দৈবব-  
 লাৎকৃতঃ ॥ ৩৮ ॥ বিমুচ্য কবচাংশ্চান্যে পাণ্ডুপুত্রস্য মৈনিকাঃ । প্রকীর্ণকেশা



धावन्तः प्रत्यदृश्यन्तु भारत ॥ ७२ ॥ तदोक्तान् कूलमिवोद्भूतान् मुद्धान्तरथयूथपम् ।  
 ददृशे पाण्डुपुत्राणां सैन्यमार्तस्य न तदा ॥ ८० ॥ प्रतज्यमानं सैन्यं दृष्ट्वा  
 यादवनन्दनः । उवाच पार्थं क्रुशस्तु निगृह्य रथमुत्तमम् ॥ ८१ ॥ अयं स कालः  
 सम्प्राप्तः पार्थ षः काङ्क्षितस्तव । प्रहरांस्मै नरव्याघ्रं न चेन्मोहाद्विमुहसे ॥ ८२ ॥  
 यद्दृष्ट्वा कथितं वीर पुरा राज्ञां समागमे । भीष्मद्रोणमुखान् सर्वान् धार्तराष्ट्रस्य  
 सैनिकान् ॥ ८३ ॥ सान्नुवन्तान् हनिष्यामि यो मां योत्स्यति संयुगे । इति तं  
 कुरु कौन्तेय सत्यं वाक्यमरिन्दम ॥ ८४ ॥ वीभत्सो पश्य सैन्यं स्वं तज्यमान-  
 मितस्ततः । द्रवतश्च महीपालान् पश्य योधिष्ठिरे बले ॥ ८५ ॥ दृष्ट्वा तु समरे  
 भीष्मं व्याताननमिवास्तकम् । भयार्ताः संप्रणश्यान्ति सिंहं क्रुद्धमृगा इव ॥ ८६ ॥  
 एवमुक्तः प्रत्युवाच वासुदेवं धनञ्जयः । चोदयान् यतो भीष्मो विगाहैनं  
 रणावन् । पातयिष्यामि दुर्क्षं वृद्धं कुरुपितामहम् ॥ ८७ ॥ ततोऽश्वानुजतप्र-  
 थ्यांश्चादयामास माधवः । यतो भीष्मरथो राजन् दुष्प्रेक्ष्यो रश्मिवानिव ॥ ८८ ॥  
 ततस्तं पुनरावृत्तं युधिष्ठिरबलं महत् । दृष्ट्वा पार्थं महाबाहूँ भीष्माद्योद्युक्तमा-  
 हवे ॥ ८९ ॥ ततो भीष्मः कुरुश्रेष्ठः सिंहवद्विनदन्मुहः । धनञ्जयरथं तूर्णं शरवर्षे-  
 रवाकिरन् ॥ ९० ॥ ऋणेन स रथस्तस्य सधजः सहस्ररथिः । शरवर्षेण महता संह्रमो-  
 न प्रकाशते ॥ ९१ ॥ वासुदेवस्तु संत्रास्तो धैर्यमास्थाय सद्भवान् । चोदयामास  
 तान् यान् वितुमान् भीष्मशायकैः ॥ ९२ ॥ ततः पार्थो धनुर्गृह्य दिव्यं जलदनिश्च-  
 नम् । पातयामास भीष्मस्य धनुश्छिद्वा शितैः शरैः ॥ ९३ ॥ स छिन्नधरा कौरव्य  
 पुनरन्यन्नहङ्कनुः । निमिषान्तरमात्रेण सज्यं चक्रे पिता तव ॥ ९४ ॥ विचर्ष  
 ततो दोर्भ्यां धनुर्जलदनिश्चनम् । अथस्य तदपि क्रुद्धश्चिच्छेद धनुर्ज्जनः ॥ ९५ ॥  
 तस्य तं पूजयामास लाघवं शान्तनोः सुतः । साधु पार्थ महाबाहो साधु भोः  
 पाण्डुनन्दन ॥ ९६ ॥ ह्येषो वै तद्वुक्त्वाप्यं महत् कर्म धनञ्जय । प्रीतोऽस्मि सुदृष्टं  
 पुत्रं कुरु युद्धं मया सह ॥ ९७ ॥ इति पार्थं प्रशस्यथ प्रगृह्णान्यन्नहङ्कनुः । मुमोच  
 समरे वीरः शरान् पार्थरथं प्रति ॥ ९८ ॥ अदर्शयद्वासुदेवो ह्ययाने परं  
 बलम् । मोघान् कुर्वन् शरांस्तस्य मङ्गलान्यचरन्नु ॥ ९९ ॥ तथापि भीष्मः सुदृष्टं  
 वासुदेवधनञ्जयो । विव्याध निशितैर्बाणैः सर्वगात्रेषु मारिष ॥ १०० ॥ शुशुभाते  
 नरव्याघ्रो तो भीष्मशरविक्रतो । गोवृषाविव नर्दन्तो विषाणोल्लिखनाक्लि-  
 तो ॥ १०१ ॥ पुनश्चापि सुसंक्रुद्धः शरैः शतसहस्रशः । क्रुशयोर्भृशसंक्रुद्धो भीष्म  
 आवारयद्विशः ॥ १०२ ॥ वार्षेयं शरैस्त्यैः कम्पयामास रोषितः । मुहुरभ्यु-

স্মরন্ ভীষ্মঃ প্রহস্য স্বনবত্তদা ॥ ৬৩ ॥ ততঃ কৃষ্ণস্তু সমরে দৃষ্ট্বা ভীষ্মপরাক্রমম্ ।  
 সংশ্রেক্ষ্য চ মহাবাহুঃ পার্থস্য মৃদুযুদ্ধতাম্ ॥ ৬৪ ॥ তং ভীষ্মং শরবর্ষাণি সৃজন্ত-  
 মনিশং যুধি । প্রতপস্তমিবাদিত্যং মধ্যমাসাদ্য সেনযোঃ ॥ ৬৫ ॥ বরান্ বরান্ বিনি-  
 ম্নস্তং পাণ্ডুপুলস্য সৈনিকান্ । যুগাস্তুমিব কুর্বাণং ভীষ্মং যৌধিষ্ঠিরে বলে ॥ ৬৬ ॥  
 অমৃষ্যমাণো ভগবান্ কেশবঃ পরকীরহা । অচিন্ত্যদমেঘাত্মা নাস্তি যৌধিষ্ঠিরং  
 বলম্ ॥ ৬৭ ॥ একাক্সা হি রণে ভীষ্মো নাশযেদৈত্যদানবান্ । কিমু পাণ্ডুসুতান্  
 যুদ্ধে সবলান্ সপদাসুগান্ ॥ ৬৮ ॥ দ্রবতে চ মহৎ সৈন্যং পাণ্ডবস্য মহাত্মনঃ ।  
 এতে চ কৌরবাস্তূর্ণং প্রভগ্নান্ দৃশ্য সোমকান্ । আদ্রবস্তি রণে হৃষ্টা হর্ষযন্তঃ  
 পিতামহম্ ॥ ৬৯ ॥ সোহং ভীষ্মং নিহন্যদ্য পাণ্ডবার্থায দংশিতঃ । ভারমেতং  
 বিনেষ্যামি পাণ্ডবানাং মহাত্মনাম্ ॥ ৭০ ॥ অজ্জুনো হি শরৈস্তীক্ষ্ণৈর্ধ্যমানোঃপি  
 সংযুগে । কর্তব্যং নাভিজানাতি রণে ভীষ্মস্য গৌরবাৎ ॥ ৭১ ॥ তথা চিন্ত্যত-  
 স্তস্য ভূয এব পিতামহঃ । প্রেষয়ামাস সংক্রুদ্ধঃ শরান্ পার্থরথং প্রতি ॥ ৭২ ॥  
 তেষাং বহুত্বাত্তু ভূশং শরাণাং দিশোহথ সর্বাঃ পিহিতা বভূবুঃ । ন চান্তরীক্ষং  
 ন দিশো ন ভূমিন্ ভাস্করোহদৃশ্যত রশ্মিমালী ॥ ৭৩ ॥ ববুশ্চ বাতাস্তুমুলাঃ সধূমা  
 দিশশ্চ সর্বাঃ ক্ষুভিতা বভূবুঃ । দ্রোণো বিকর্ণোহথ জঘদ্রথশ্চ ভূরিশ্রবাঃ কৃতবর্ষ্মা  
 রূপশ্চ ॥ ৭৪ ॥ শ্রুতায়ুরষষ্ঠপতিশ্চ রাজা বিন্দাসুবিন্দো চ সুদক্ষিণশ্চ । প্রাচ্যাশ্চ  
 সৌবীরগণাশ্চ সর্বে বশাতযঃ ক্ষুদ্রকমালবাশ্চ । কিরীটিনং হ্রমাণা বিসসুম্বিদে-  
 শগাঃ শান্তনবস্য রাজ্ঞঃ ॥ ৭৫ ॥ তং বাজ্রিপাদাতরশৌঘজালৈরনেকসাহসুশতৈ-  
 র্দদর্শ । কিরীটিনং সম্পরিবার্যমাণং শিনেনপ্তা বারণমুথপৈশ্চ ॥ ৭৬ ॥ ততস্তু  
 দৃষ্ট্বাজ্জুনবাসুদেবো পদাতিনাগাশ্বরথৈঃ সমস্তাৎ । অভিঙ্গতো শস্ত্রভৃত্যশ্রিষ্ঠৌ  
 শিনিপ্রবীরোহভিসসার তুর্ণম্ ॥ ৭৭ ॥ স তান্যনীকানি ধনুস্মতাং বরঃ শিনিপ্রবীরঃ  
 সহস্রাভিপত্য । চকার সাহায্যমথাজ্জুনস্য বিষ্ণুর্যথা বৃত্তনিসূদনস্য ॥ ৭৮ ॥ বিশীর্ণনা-  
 গাশ্বরথধ্বজৌঘং ভীষ্মেণ বিভ্রাসিতসর্বযোধম্ । যুধিষ্ঠিরানীকমভিদ্রবস্তং প্রোবাচ  
 সংদশ্য শিনিপ্রবীরঃ ॥ ৭৯ ॥ ক্ কল্লিষা যাস্যথ নৈষ ধর্ম্মঃ সত্যং পুরস্তাৎ কথিতঃ  
 পুরাণৈঃ । মা স্বাং প্রতিজ্ঞাং ত্যজত প্রবীরাঃ স্ববীরধর্মান্ প্রতিপালযধম্ ॥ ৮০ ॥ তান্  
 বাসবানস্তরজো নিশম্য নরেন্দ্রমুখ্যান্ দ্রবতঃ সমস্তাৎ । পার্থস্য দৃষ্ট্বা মৃদুযুদ্ধতাক্ষ  
 ভীষ্মঞ্চ সংখ্যে সমুদীর্যমাণম্ ॥ ৮১ ॥ অমৃষ্যমাণস্তু ততো মহাত্মা যশস্বিনং সর্ব-  
 দশার্ভতর্ভা । উবাচ শৈনেযমভিপ্রশংসন্ দৃষ্ট্বা কুৰুনাপততঃ সমস্তাৎ ॥ ৮২ ॥  
 যে যান্তি যান্তেব শিনিপ্রবীর যেংপি স্থিতাঃ সাত্তত তেংপি যান্ত । ভীষ্মং রথাৎ

पश्य निपात्यमानं द्रोणं संख्ये सगणं मयाद्य ॥ ८३ ॥ न मे बले साक्षत  
 कौरवाणां क्रुद्धस्य मुच्येत रणेन्द्य कश्चित् । तस्माद्दहं गृह्य रथाद्गमुग्रं प्राणं  
 हरिष्यामि महाव्रतस्य ॥ ८४ ॥ निहत्य तीर्थं सगणं तथाजौ द्रोणं शैनेष  
 रथप्रवीरम् । प्रीतिं करिष्यामि धनञ्जयस्य राज्ञश्च तीर्थस्य तथाश्विनोश्च ॥ ८५ ॥  
 निहत्य सर्वान् धृतराष्ट्रपुत्रांस्तु पाण्डिका ये च नरेन्द्रमुख्याः । राज्ञेन राजान-  
 मजातशत्रुं सम्पादयिष्याम्यहमद्य ह्यर्कः ॥ ८६ ॥ ततः सुनाभं वसुदेवपुत्रः सूर्य-  
 प्रभं वज्रसहस्रतुल्यम् । क्रुरास्तमुद्धाम्य भुजेन चक्रं रथादवप्लुत्य विसृज्य बाह्वन् ।  
 संकम्पयन् गां चरुणैश्महात्मा वेगेन क्रुधः प्रससार तीर्थम् ॥ ८७ ॥ मदास्त्वामाजौ  
 समुदीर्णदपं सिंहो जिघांसन्निव वारुणेश्चम् । सोऽभ्यद्रवन्तीर्थमनीकमध्ये क्रुद्धो  
 महेश्चावरजः प्रमाथी । ब्यालघ्निपीतान्तपटश्चकाशे यनो यथा खेचिरभापिन-  
 द्धः ॥ ८८ ॥ सुदशनं चास्य रराज शौरेस्तच्छक्रपद्मं सुभुजोरुनालम् । यथादि-  
 पद्मं तरुणार्कवर्णं रराज नारायणनाभिजातम् ॥ ८९ ॥ तं क्रुधकोपौदयसूर्य-  
 वुद्धं क्रुरास्ततीक्ष्णाग्रसुजातपद्मम् । तस्यैव देहोरुसरः प्रकटं रराज नारायण-  
 बाह्वनालम् ॥ ९० ॥ तमातुचक्रं प्रणदस्तमुच्छेः क्रुद्धं महेश्चावरजं समीक्ष्य ।  
 सर्वाणि भूतानि भृशं विनेदुः क्रुधः कुरूणामिति चिन्तयिष्या ॥ ९१ ॥ स वासुदेवः  
 प्रगृहीतचक्रः सम्यर्तयिष्यान्निव जीवलोकम् । अद्युत्पतन् लोकगुरुर्व्रतासे भूतानि  
 धक्क्यान्निव धूमकेतुः ॥ ९२ ॥ तमापतस्तं प्रगृहीतचक्रं समीक्ष्य देवं द्विपदां  
 वरिष्ठम् । असंभ्रमां कार्मुकवाणपाणी रथे स्थितः शान्तनवोऽभ्युवाच ॥ ९३ ॥  
 एहेहि देवेश जगन्निवास नमोऽस्तु ते शार्ङ्गदामिपाणे । प्रसह्य मां पातय  
 लोकनाथ रथोत्तमाद्भूतशरण्य संख्ये ॥ ९४ ॥ ह्यया हतस्येह मयाद्य क्रुधः श्रेयः  
 परस्मिन्निहैव लोके । सन्नावितोऽस्म्यन्कवृषिनाथ लोकैस्त्रिभिश्च प्रथितप्र-  
 भावः ॥ ९५ ॥ रथादवप्लुत्य ततस्तुरावान् पार्थोऽभ्यनुद्धृत्य यदुप्रवीरम् । जग्राह  
 पीनोत्तमलम्बबाह्वं वासोर्हरिं व्याघ्रतपीनबाह्वः ॥ ९६ ॥ निगृह्यमाणस्तु तदा-  
 दिदेवो भृशं सरोषः किल चास योगी । आदाय वेगेन जगाम विष्णुर्जिष्णुं महा-  
 वात इवैकवृक्षम् ॥ ९७ ॥ पार्थस्तु विस्मृत्य बलेन पादौ तीर्थास्तिकं तूर्णमभिद्र-  
 वस्तुम् । बलान्निजग्राह शनैश्महात्मा पदे च राजन् दशमे कथञ्चित् ॥ ९८ ॥ अव-  
 स्थितं प्रणिपत्य क्रुधं प्रीतोऽर्जुनः काष्णचित्रमाली । उवाच कोपं प्रतिसं-  
 हरेति गतिर्भवान् केशव पाण्डवानाम् ॥ ९९ ॥ न हास्यते कर्म यथाप्रतिष्ठं  
 पुत्रैः शपे केशव सोदरैश्च । अस्तु गमिष्यामि यथा कुरूणां ह्ययाहमिन्द्रान्नुज

संप्रयुक्तः ॥ १०० ॥ ततः प्रतिष्ठां समयं तस्य जनार्दनः प्रीतमना निशम्य ।  
 स्थितः प्रियः कौरवसन्तमस्य रथं सचक्रः पुनरारूहोह ॥ १०१ ॥ स तानभीषुन् पुन-  
 राददानः प्रगृह्य शङ्खं द्विषतां निहन्ता । निनादयामास दिशो नभश्च स पाण्ड-  
 न्यस्य रवेण शौरिः ॥ १०२ ॥ व्याविद्धनिष्काङ्गदकुण्डलं तं रजोविकीर्णाक्षितपत्र-  
 नेत्रम् । रिशुद्धदंष्ट्रं प्रगृहीतशङ्खं विचक्रुः प्रेक्ष्य कुरूप्रवीराः ॥ १०३ ॥ मृद-  
 ङ्गतेरीपटहप्रणादा नेमिस्वना दन्दुभिनिस्वनाश्च । ससिंहनादाश्च वडुवुरूघ्राः  
 सर्वेष्वनीकेषु ततः कुरुणाम् ॥ १०४ ॥ गाण्डीवघोषः स्तनघिन्नकण्ठो जगाम पार्थस्य  
 नभो दिशश्च । जग्मुश्च बाणा विमलाः प्रसन्नाः सर्वा दिशः पाण्डवचापमुक्ताः ॥ १०५ ॥  
 तं कौरवाणामधिपो बलेन भीष्मेण भूरिश्रवसा च मार्कम् । प्रत्यूह्यवावद्यतवाण-  
 पाणिः कङ्कं दिधङ्गनिव धूमकेतुः ॥ १०६ ॥ अथाङ्गुनाय प्रजहार भल्लान् भूरि-  
 श्रवाः सप्त सुवर्णपुञ्जान् । दुर्योधनस्तोमरमुग्रवेगं शलेया गदां शान्तनवश्च  
 शक्तिम् ॥ १०७ ॥ सप्तश्रुतिः सप्तशरप्रवेगान् संवार्य भूरिश्रवसा प्रमुक्तान् । शितेन  
 दुर्योधनवाहमुक्तं स्फुरेण ततोमरमुग्रमाथ ॥ १०८ ॥ ततः शुभामापतितार्क्ष शक्तिं  
 विद्युत्प्रभां शान्तनवेन मुक्तान् । गदांश्च मर्दाधिपवाहमुक्तां द्वाभ्यां शराभ्यां  
 निचकर्त वीरः ॥ १०९ ॥ ततो भुजाभ्यां बलवद्विरुष्य चित्रं धनुर्गाण्डिवमप्रेषम् ।  
 ग्राहेन्द्रमस्त्रं विधिवत् सुघोरं प्रादुश्चकाराद्भुतमस्तुरीक्षे ॥ ११० ॥ तेनोत्तमा-  
 स्त्रेण ततो महान्ना सर्वाण्यनीकानि महाधनुमान् । शरौघजालैस्त्रिमलाग्निवर्णैर्नि-  
 वारयामास किर्रीटमाली ॥ १११ ॥ गिलीमूथाः पार्थद्वन्द्विसृष्टा रथान् धजाग्राणि  
 धनुषि बाहून् । निरुत्य देहान् विविशुः परेषां नरेन्द्रनागेन्द्रतुरङ्गमाणाम् ॥ ११२ ॥  
 ततो दिशः सोऽनुदिशश्च पार्थः शरैः सुधारैर्निशि शितैर्वितत्य । गाण्डीवशकेन  
 मनांसि तेषां किर्रीटमाली व्यथवाङ्ककार ॥ ११३ ॥ तस्मिंस्तथा घोरतमास्त्रयुद्धे  
 शङ्खस्वना दन्दुभिनिस्वनाश्च । अस्तुहिता गाण्डिवनिस्वनेन वडुवुरूघ्राश्च रथप्रणा-  
 दाः ॥ ११४ ॥ गाण्डीवशकं तमथो विदित्वा विराटराजप्रमुखा नृवीराः । पाण्डाल-  
 राजो ऋपदश्च वीरस्तं देशमाजग्मुरदीनसद्भाः ॥ ११५ ॥ सखाणि सैन्यानि तु  
 तावकानि यतो यतो गाण्डिवजः प्रणादः । ततस्ततः समतिमेव जग्मूर्न तं प्रती-  
 पोऽभिसमार कश्चित् ॥ ११६ ॥ तस्मिन् सुघोरे नृप संप्रहारे हताः प्रवीराः  
 सरथाश्चसृताः । गजाश्च नाराचनिपाततप्ता महापताकाः शुभरुक्ककङ्काः । परीत-  
 सद्भाः सहसा निपेतुः किर्रीटिना तत्र विभिन्नकाषाः ॥ ११७ ॥ दृष्टाहताः पत्रिभिरु-  
 ग्रवेगैः पार्थेन भल्लैर्निशितैः शिताग्रैः । निरुत्तयन्ना निहतेन्द्रजाला धजा

नृपाणां ध्वजिनीमुखेषु ॥ ११८ ॥ पदातिसञ्घाश्च रथाश्च संख्ये ह्यशाश्च नागाश्च  
 धनञ्जयेन । बाणाहतास्तूर्णमपेतसङ्घा विरुध्य शस्त्राणि निपेतुरूर्ध्व्याम् । ऋश्रेण ते-  
 नास्त्रवरेण राजन् महाहवे भिन्नतनुत्रकायाः ॥ ११९ ॥ ततः शरौघैर्निशितैः कि-  
 रीटिना नृदेहशस्त्रकृतलोहितोदा । नदी सुघोरा नरमेदफेना प्रवर्तिता तत्र  
 रणाजिरे वै ॥ १२० ॥ वेगेन सातीव पृथुप्रवाहा पश्येत्नागाश्चशरीरतीरा । नरा-  
 स्त्रमज्ज्वाहृतमांसपक्वा प्रभूतरक्षेणगणभूतसेविता ॥ १२१ ॥ शिरः कपालाकुलके-  
 शशाद्वला शरीरसंघातसहस्रमालिनी । विकीर्णनानाकवचोस्त्रिसंकुला नराश्वत्था-  
 गास्त्रिनिरुत्तशर्करा ॥ १२२ ॥ गोमायुशालावृकगृध्रुकर्कैः क्रव्यादसंघैश्च तरुक्षु-  
 त्तिश्च । उपेतकुलां ददृशुस्त्रनुष्याः क्रूरां महावैतरणीप्रकाशाम् ॥ १२३ ॥ प्रव-  
 र्तितामर्ज्जूनबाणसंघैश्चेदोवसासृक्प्रवहां सुभीमाम् । इतप्रवीराश्च तथैव दृष्ट्वा  
 सेनां कुरूणामथ फाल्गुनेन ॥ १२४ ॥ ते चेदिपाक्षालककषमस्य्याः पार्थाश्च सर्वे  
 सहसा प्रणेदुः । जयप्रगल्भाः पुरुषप्रवीराः सन्नासयन्तः कुरूवीरयोधान् । इतप्र-  
 वीराणि बलानि दृष्ट्वा किरीटिना शत्रून्प्रवहन् ॥ १२५ ॥ विद्रास्य सेनां ध्वजिनी-  
 पतीनां सिंहे । मृगाणामिव युथसंघान् । विनेदतुस्तुवतिहर्षयुक्तौ गांतीवधत्वा  
 च जनार्दनश्च ॥ १२६ ॥ ततो रविं संवृतस्त्रिजालं दृष्ट्वा तृशं शस्त्रपरिष्फ-  
 ताङ्गाः । तदैन्द्रमस्त्रं विततश्च योरमसहमुद्गीक्य युगास्तकलम् ॥ १२७ ॥ अथाप-  
 यानं कुरवः सतीम्नाः सद्रोणदुर्योधनवाह्निकाश्च । चक्रुर्निशां सन्निगतां समीक्य  
 विभावसोर्लोहितरागयुक्त्याम् ॥ १२८ ॥ अवाप्य कीर्तिं यशश्च लोके विमृद्य  
 शत्रूँश्च धनञ्जयोऽपि । यथौ नरेन्द्रेः सह सोदरैश्च समाप्तकर्मा शिविरं निशा-  
 याम् ॥ १२९ ॥ ततः प्रज्ज्जे तुमुलः कुरूणां निशामुखे योरतमः प्रणादः । रणे  
 रथानामयुतं निहत्य इता गजाः सप्तशताङ्गुनेन ॥ १३० ॥ प्राच्याश्च सौवीरग-  
 णाश्च सर्वे निपातिताः क्षुद्रकमालवाश्च । महं क्रूतं कर्म धनञ्जयेन कर्तुं यथा  
 नाहति कश्चिदन्यः ॥ १३१ ॥ श्रुतायुरध्वरुपतिश्च राजसुतैव दुर्मर्षणचित्रसेनो ।  
 द्रोणः रूपः सैन्धववाह्निकौ च भूरिश्रवाः शलाशलो च राजन् ॥ १३२ ॥ अन्ये च  
 योधाः शतशः समेताः क्रुद्धेन पार्थेन रणस्य मध्ये । स्वबाह्वीर्येण जिताः सती-  
 म्नाः किरीटिना लोकमहारथेन । इति क्रवन्तः शिविराणि जग्मुः सर्वे गणा भारत  
 ये हृदीयाः ॥ १३३ ॥ उक्त्वासहस्रैश्च सुसं प्रदीपैर्बिभ्राजमानैश्च तथा प्रदीपैः ।  
 किरीटिविद्रासितसर्वयोधा चक्रे निवेशं ध्वजिनी कुरूणाम् ॥ १३४ ॥  
 इति भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि तृतीयदिनसैन्यावहारे षट्पक्षाशतमोऽध्यायः ॥ ५७ ॥

সঞ্জয় উবাচ । ব্যুফাং নিশাং ভারত ভারতীনামনীকিনীনাং প্রমুখে মহাত্মা ।  
যযৌ সপত্নান্ প্রতিজাতকোপস্ততঃ সমগ্ৰেণ বলেন ভীষ্মঃ ॥ ১ ॥ তং দ্রোণ-  
দুর্যোধনবাহ্লিকাস্চ তথৈব দুৰ্ম্মর্ষণচিত্রসেনো । জয়দ্রথশ্চাতিবলো বলৌঘৈর্ন পা-  
স্তথান্যে প্রযযুঃ সঁমস্তাৎ ॥ ২ ॥ স তৈর্মহদ্ভিঃ মহারথৈশ্চ তেজস্বিভির্বির্ষ্যবদ্ভিঃ  
রাজন্ । ররাজ রাজোত্তম রাজমুখৈর্মধ্যে সুরাণামিব দেবরাজঃ ॥ ৩ ॥ তস্মি-  
ন্ননীকপ্রমুখে বিষক্তা দোধূষমানাশ্চ মহাপতাকাঃ । সুরক্ৰপীতাসিতপাণ্ডরাভা  
মহাগজস্কন্ধগতা বিরেজুঃ ॥ ৪ ॥ সা বাহিনী শাস্তনবেন রাজ্ঞা মহারথৈর্বারণবা-  
জিতিশ্চ । বভৌ সবিদ্যুৎস্তনযিত্নুকল্পা জলাগমে দ্যৌরিব জাতমেঘা ॥ ৫ ॥  
ততো রণায়াতিমুখী প্রযাতা প্রত্যজ্জুনং শাস্তনরাভিগুপ্তা । সমার সেনা সহসা  
কুরুণাং বেগো যথা ভীম ইবাপগায়াঃ ॥ ৬ ॥ তং ব্যালনানাবিধগুচসারং গজা-  
শ্বপাদাতরথৌষপক্ষম্ । ব্যহং মহামেঘসমং মহাত্মা দদর্শ দূরাৎ কপিরাজকে-  
তুঃ ॥ ৭ ॥ স নির্যযৌ কেতুমতা রথেন নরর্ষভঃ শ্বেতহযেন বীরঃ । বক্রথিনীনাং  
প্রমুখে মহাত্মা বলৈর্হৃতঃ সর্বসপত্নসেনাম্ ॥ ৮ ॥ সোপস্করং সোত্তরবন্ধুরেশং  
যজ্ঞা যদুনামৃষভেণ সংখ্যে । কপিধ্বজং প্রেক্ষ্য বিষেদুরাজৌ সত্বেব পুত্রৈস্তব কৌ-  
রবেযাঃ ॥ ৯ ॥ প্রকর্ষতা গুপ্তমুদায়ুধেন কিরীটিনা লোকমহারথেন । তং ব্যহরাজং  
দদৃশুস্তদীয়াশ্চতুশ্চতুর্ভ্যালসহস্রকীর্ণম্ ॥ ১০ ॥ যথা হি পূর্বেহহনি ধর্মরাজ্ঞা ব্যহঃ  
কৃতঃ কৌরবসত্তমেন । তথা ন ভূতো ভুবি মানু্ষেষু ন দৃষ্টপূর্বে ন চ বিশ্রুত-  
শ্চ ॥ ১১ ॥ ততো মহাবেগসমাহতানি ভেরীসহস্রাণি বিনেদুরাজৌ । শঙ্খস্বনাস্তু-  
র্যরবাশ্চ জজ্জ্বঃ সর্বেষনীকেষু সসিংহনাদাঃ ॥ ১২ ॥ ততঃ সবাণানি মহাস্বনানি  
বিস্ফার্যমাণানি ধনুঃষি বীরৈঃ । ক্ষণেন ভেরীপণবপ্রণাদানন্তর্দধুঃ শঙ্খমহাস্ব-  
নাশ্চ ॥ ১৩ ॥ তচ্ছঙ্খশব্দাবৃতমন্তরীক্ষমুদ্ভূতভৌমদ্রতরেণ জালম্ । মহাবিতানাব-  
ততপ্রকাশমালোক্য বীরঃ সহসা নিপেতুঃ ॥ ১৪ ॥ রথী রথেনাভিহতঃ সসূতঃ  
পপাত সাস্বঃ সরথঃ সকেতুঃ । গজো গজেনাভিহতঃ পপাত পদাতিনা চাভিহতঃ  
পদাতিঃ ॥ ১৫ ॥ আবর্তমানান্যভিবর্তমানৈর্ঘোরাক্রুতীন্যদ্ভুতদর্শনানি । প্রাসৈ-  
শ্চ খঞ্জৈশ্চ সমাহতানি সদশ্ববৃন্দানি সদশ্ববৃন্দৈঃ ॥ ১৬ ॥ সুবর্ণতারাগণভূষি-  
তানি সূর্য্যপ্রভাবানি শরাবরাণি । বিদার্যমাণানি পরশ্বধৈশ্চ প্রাসৈশ্চ খঞ্জৈশ্চ  
নিপেতুরুর্ভ্যাম্ ॥ ১৭ ॥ গজৈর্বিষাণৈর্ঘরহস্তরুগ্নাঃ কেচিৎ সসূতা রথিনঃ প্রপেতুঃ ।  
গজর্ষভাশ্চাপি রথর্ষভেণ প্রপেদিরে বাণহতাঃ পৃথিব্যাম্ ॥ ১৮ ॥ গজৌষবেগো-  
দ্ধতসাদিতানাং শ্রুত্বা বিষেদুর্ভুধা মনুষ্যাঃ । আর্তস্বরং সাদিপদাতিযুনাং বিষা-

णगात्रावरताडितानाम् ॥ १२ ॥ संत्रासुनागाश्वरथे मुहूर्ते महाकषे सादिपदाति-  
 यूनाम् । महारथेः संपरिवार्यमाणो ददर्श तीष्णः कपिराजकेतुम् ॥ २० ॥ तं  
 पङ्कतालोल्लिखिततालकेतुः सदश्ववेगाद्भुतवीर्ययानम् । महाश्ववेगाशनिदीप्तिमस्तुं  
 किरीटिनं शासुनबोहत्यावत् ॥ २१ ॥ तथैव शक्रप्रतिमानकर्मिन्द्राञ्ज-  
 द्रोणमुखातिसप्तः । रूपश्च शल्यश्च विविंशतिश्च दुर्योधनः सौमदन्तिश्च रा-  
 जन् ॥ २२ ॥ ततो रथानीकमुखादपेत्य सर्वास्त्रविं काङ्क्षन्चित्रवर्मा । ज्वेन  
 शूरोऽतिसमार सर्वांस्तानर्जुनस्यत्सुतोऽभिमन्युः ॥ २३ ॥ तेषां महंस्त्राणि  
 महाबलानामसहकर्म । विनिहत्य कार्किः । वतेो महामञ्जुताच्छिर्माली सद्गोतः  
 सन् भगवानिवाग्निः ॥ २४ ॥ ततः स तुर्णं रूषिरोदफेनां क्रुद्धा नदीं तां समरे  
 रिपूणाम् । जगाम सौभद्रमतीत्य तीष्णो महारथं पार्थमदीनसङ्घः ॥ २५ ॥ ततः  
 प्रहस्याद्भुतदर्शनेन गाण्डीवनिर्हृदमहाश्वनेन । विपाठजालेन महाश्वजालं विना-  
 शयामास किरीटमाली ॥ २६ ॥ तद्युत्तमं सर्वधनुर्द्धराणामसक्तकर्म । कपिराजके-  
 तुः । तीष्णं महाश्वान् स ववर्ष भुयः शरैः सूतीक्लेश्विनलैश्च भल्लैः ॥ २७ ॥ तथैव  
 तीष्णाहतमस्तुरीक्षे महाश्वजालं कपिराजकेतोः । विशीर्यमाणं ददृशुस्तुदीया  
 दिवाकरेणैव तमोऽभिभूतम् ॥ २८ ॥ एवंविधं कार्मुकतीमनादमदीनवत् स-  
 पुरूषोत्तमाभ्याम् । ददर्श लोकः कुरूसृग्गयाश्च तद्देरुथं तीष्णधनञ्जयाभ्याम् ॥ २९ ॥

इति तीष्णपर्वणि तीष्णवधपर्वणि तीष्णाञ्जुनद्वैरथे सप्तपङ्काश-

त्रयोऽध्यायः ॥ ५९ ॥



सङ्घ उवाच । द्रोणिर्भूरिश्रवाः शल्यश्चित्रसेनश्च मारिष । पुत्रः सांघमनेश्चैव  
 सौभद्रं समबोधयन् ॥ १ ॥ संप्रसक्तमतितेजोतिस्तुमेकं ददृशुर्जनाः । पङ्क-  
 तिस्रन्नुजव्याष्टैर्गजैः सिंहाशिशुं यथा ॥ २ ॥ नाभिलक्ष्यतया कश्चिन्म शौर्येण परा-  
 क्रमे । वभूव सदृशः कार्ष्णमास्त्रेणापि च लाघवे ॥ ३ ॥ तथा तमाञ्जं युद्धे विक्र-  
 मस्तुमरिन्दमम् । दृष्ट्वा पार्थो रणे यत्तः सिंहादमथानदत् ॥ ४ ॥ पीडयान्श्च तं  
 सैन्यं पौत्रं तव विशाम्पते । दृष्ट्वा त्वदीया राजेन्द्र समस्तां पर्यवारयन् ॥ ५ ॥  
 ध्वजिनीं धार्तराष्ट्राणां दीनशत्रुरदीनवत् । प्रतुयन्मयो स सौभद्रस्तेजसा च बले-  
 न च ॥ ६ ॥ तस्य लाघवमार्गश्चमादित्यसदृशप्रभम् । नादृश्यत महत्तापं समरे  
 युध्यतः पटैः ॥ ७ ॥ स द्रोणिमिषुर्गैकेन विद्ध्वा शल्यं पङ्कतिः । ध्वजं सांघमने-  
 श्चापि सोऽर्थातिरपवर्जयत् ॥ ८ ॥ रूक्मिण्यं महाशक्तिं प्रेषितां सौमदन्तिना ।

শিতেনোরগসংকাশাং পল্লিগাভিজহার তাম্ ॥ ৯ ॥ শল্যস্য চ মহাঘোরানস্যতঃ  
 শতশঃ শরান্ । নিবার্যাজ্জুনদাযাদৌ জঘান চতুরো হযান্ ॥ ১০ ॥ ভূরিশ্রবাশ্চ  
 শল্যশ্চ দ্রৌণিঃ সাংঘমনিঃ শলঃ । নাভ্যবর্ত্তন্তু সংরদ্ধাঃ কার্ষিবাহুবলোদযম্ ॥ ১১ ॥  
 ততস্ত্রিগর্ত্তা রাজেন্দ্র মদ্রাশ্চ সহ কৈকযৈঃ । পঞ্চবিংশতিসাহসাস্তব পুত্রৈঃ চোদি-  
 তাঃ ॥ ১২ ॥ ধনুর্বেদবিদৌ মুখ্যা অজেযাঃ শত্রুভির্যুধি । সহপুত্রং জিঘাংসন্তুং  
 পরিবক্রঃ কিরীটিনম্ ॥ ১৩ ॥ তৌ তু তত্র পিতাপুল্লৌ পরিক্ষিপ্তৌ রথর্ষভৌ । দদর্শ  
 রাজন্ পাঞ্চাল্যঃ সেনাপতিরমিত্রজিৎ ॥ ১৪ ॥ স বারণরথৌঘানাং সহসৈর্বহুভি-  
 র্বৃতঃ । বাজিতিঃ পত্তিভিশ্চৈব ততঃ শতসহস্রশঃ ॥ ১৫ ॥ ধনুর্বিষ্কার্য্য সংক্রুদ্ধশ্চেচা-  
 দযিত্বা চ বাহিনীম্ । যযৌ তন্নদ্রকানীকং কৈকেয়াংশ্চ পরস্তপঃ ॥ ১৬ ॥ তেন  
 কীর্ত্তিমতা গুপ্তমনীকং দৃঢ়ধ্বনা । প্রযুক্তরথনাগাশ্চং যোৎস্যমানমশোভত ॥ ১৭ ॥  
 সোহজ্জুনপ্রমুখে যাস্তুং পাঞ্চালকুলবর্দ্ধনঃ । ত্রিভিঃ শারদ্বতং বাণৈর্জত্রুদেশে  
 সমাপর্ষৎ ॥ ১৮ ॥ ততঃ স মদ্রকান্ বিদ্ধা দশভির্নিশিতৈঃ শরৈঃ । পৃষ্ঠরক্ষং জঘা-  
 নাশু ভল্লেন ক্রুতবর্ষগঃ ॥ ১৯ ॥ দমনং চাপি দাযাদং পৌরবস্য মহাত্মনঃ । জঘান  
 বিপুলাগ্ৰেণ নারাচেন পরস্তপঃ ॥ ২০ ॥ ততঃ সাংঘমনেঃ পুল্লঃ পাঞ্চাল্যং যুদ্ধদুর্ম-  
 দম্ । অবিধ্যদশভির্বাণৈর্দশতিশ্চাস্য সারথিম্ ॥ ২১ ॥ সোহতিবিক্রো মহেষাসঃ  
 সৃক্কণী পরিসংলিহন্ । ভল্লেন ভৃশতীক্ষ্ণেন চকর্তাস্য চ কার্ম্মুকম্ ॥ ২২ ॥ তথৈনং  
 পঞ্চবিংশত্যা ক্ষিপ্রমেব সমাপর্ষৎ । অশ্বাংশ্চাস্যাবধীদ্রাজমুভৌ তৌ পার্ষিসা-  
 রথী ॥ ২৩ ॥ হতাশ্বে সরথে তিষ্ঠন্ দদর্শ ভরতর্ষভ । পুল্লঃ সাংঘমনেঃ পুল্লং পাঞ্চা-  
 ল্যস্য যশস্বিনঃ ॥ ২৪ ॥ সংপ্রগৃহ মহাঘোরং নিস্ত্রিংশবরমাযসম্ । পদাতিস্তূর্ণমা-  
 নচ্ছত্রথস্তং দ্রুপদাত্মজম্ ॥ ২৫ ॥ তং মহৌঘমিবাযাস্তুং খাৎ পতন্তুং মহোরগম্ ।  
 ভ্রাস্তাবরণনিস্ত্রিংশং কালোৎসৃষ্টমিবাস্তুকম্ ॥ ২৬ ॥ দীপ্যমানমিবাদিত্যং মত্ত-  
 বারণবিক্রমম্ । অপশ্যন্ পাণ্ডবাস্তত্র ধৃষ্টদ্যুম্নশ্চ পার্ষতঃ ॥ ২৭ ॥ তস্য পাঞ্চাল-  
 পুল্লস্তু প্রতীপমভিধাবতঃ । শিতনিস্ত্রিংশহস্তস্য শরাবরণধারিণঃ ॥ ২৮ ॥ বাণবে-  
 গমতীতস্য রথাভ্যাসমুপেযুষঃ । স্বরন্ সেনাপতিঃ ক্রুদ্ধো বিভেদ গদযা শিরঃ ॥ ২৯ ॥  
 তস্য রাজন্ সনিস্ত্রিংশং সুপ্রভঞ্চ শরাবরম্ । হতস্যাপতিতং হস্তাৎ সোৎসেধম-  
 পতন্তুবি ॥ ৩০ ॥ তং নিহত্য গদাগ্ৰেণ লেভে স পরমং যশঃ । পুল্লঃ পাঞ্চালরা-  
 জস্য মহাত্মা ভীমবিক্রমঃ ॥ ৩১ ॥ তস্মিন হতে মহেষাসে রাজপুল্লে মহারথে ।  
 হাহাকারো মহানাসীত্তব সৈন্যস্য মারিষ ॥ ৩২ ॥ ততঃ সাংঘমনিঃ ক্রুদ্ধো দৃষ্টা  
 নিহতমাত্মজম্ । অভিদুদ্রাব বেগেন পাঞ্চাল্যং যুদ্ধদুর্মদম্ ॥ ৩৩ ॥ তৌ তত্র সমরে



वीरौ समेतौ रथिनाश्चरौ । ददृशुः सर्वराजानः कुरवः पाण्डुवास्तथा ॥ ७४ ॥  
ततः सांघमनिः क्रुद्धः पार्षतं परवीरहा । आजघान त्रिभिर्बाणैस्तोत्रैरिव महा-  
द्विपम् ॥ ७५ ॥ तथैव पार्षतं शूरं शल्यः समितिशोभनः । आजघानोरसि  
क्रुद्धस्ततो युद्धमवर्तत ॥ ७६ ॥

इति तीक्ष्णपर्षणि तीक्ष्णवधपर्षणि सांघमनिपुत्रवधे अर्धपञ्चा-

शतमोऽध्यायः ॥ ५८ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । दैवमेव परं मन्ये पौरुषादपि सङ्गम । यं सैन्यं मम  
पुत्रस्य पाण्डुसैन्येन वध्यते ॥ १ ॥ नित्यं हि मामकांस्तुत हतानेव हि शंससि ।  
अत्युग्रान्श्च प्रहृष्टान्श्च नित्यं शंससि पाण्डवान् ॥ २ ॥ हीनान् पुरुषकारेण  
मामकानद्य सङ्गम । पतितान् पात्यमानांश्च हतानेव च शंससि ॥ ३ ॥ युध्यमानान्  
यथाशक्ति घटमानान् जयं प्रति । पाण्डवा हि जयन्त्येते हीयन्ते चैव मामकाः ॥ ४ ॥  
सोऽहं तीव्रानि दुःखानि दुर्येयाधनक्रतानि च । अश्रीषं सततं तात दुःसहानि  
बहूनि च ॥ ५ ॥ तमुपायं न पश्यामि हीयेरन् येन पाण्डवाः । मामका वा जयं युद्धे  
प्राप्नुयुर्वेन सङ्गम ॥ ६ ॥ सङ्गम उवाच । ऋयं मनुष्यदेहानां गजवाजिरथऋयम् ।  
शृणु राजन् स्थिरो भूत्वा तवैवापनयो महान् ॥ ७ ॥ धृष्टदुय्यश्च शल्येन पीडितो  
नवतिः शरैः । पीडयामास संक्रुद्धो मद्राधिपतिमायसैः ॥ ८ ॥ तत्राद्भुतमपश्याम  
पार्षतस्य पराक्रमम् । न्यवारयत यद्गुणं शल्यं समितिशोभनम् ॥ ९ ॥ नास्तुरं  
ददृशे कश्चित्तयोः संरक्षयो रणे । मुहूर्तमिव तद्वृद्धं तयोः समभवत्तदा ॥ १० ॥  
ततः शल्यो महाराज धृष्टदुय्यस्य संयुगे । धनुश्छिच्छेद भल्लेन पीतेन निशितेन  
च ॥ ११ ॥ अथैनं शरवर्षेण ह्यदयामास भारत । गिरिं जलागमे यद्द्वं जलदा  
जलधारिणः ॥ १२ ॥ अभिमन्युस्तु संक्रुद्धो धृष्टदुय्ये च पीडिते । अभिद्रुद्राव वे-  
गेन मद्रराज्रथं प्रति ॥ १३ ॥ ततो मद्राधिपरथं कार्ष्णिः संप्राप्य कोपनः ।  
आर्त्तायनिममेयात्त्वा विव्याध विशिथैस्त्रिभिः ॥ १४ ॥ ततस्तु तावका राजन् परीप्स-  
स्तोऽर्जुनिं रणे । मद्रराज्रथं तूर्णं परिवार्यावतस्थिरे ॥ १५ ॥ दुर्येयाधनो  
विकर्णश्च दुःशासनविबिंशती । दुर्मुखो दुःसहश्च चित्रसेनः सुदुर्मुखः ॥ १६ ॥  
सत्यव्रतः पुरुमित्रो विकर्णश्च महारथः । एते मद्राधिपरथं पालयन्तुः स्थिता  
रणे ॥ १७ ॥ तान् भीमसेनः संक्रुद्धो धृष्टदुय्यश्च पार्षतः । द्रौपदेयाभिमन्युश्च  
माद्रीपुत्रो च पाण्डवो ॥ १८ ॥ धार्तराष्ट्रान् दशरथान् दशैव प्रत्यवारयन् । नाना-

কপাণি শস্ত্রাণি বিসৃজন্তো বিশাম্পতে ॥ ১৯ ॥ অভ্যবর্ত্তন্ত সংক্রুদ্ধাঃ পরস্পরব-  
 ধৈষিণঃ । তে বৈ সমীযুঃ সংগ্রামে রাজন্ দুৰ্ম্মস্ত্রিতে তব ॥ ২০ ॥ তস্মিন্ দশরথে  
 ক্রুদ্ধে বর্ত্তমানে মহাভযে । তাবকানাং পরেষাঞ্চ প্রেক্ষকা রথিনোহভবন্ ॥ ২১ ॥  
 শস্ত্রাণ্যনেককপাণি বিসৃজন্তো মহারুথাঃ । অন্যান্যমভিনর্দন্তুঃ সংগ্রহাং প্রচ-  
 ক্রিরে ॥ ২২ ॥ তে তদা জাতসংরম্ভাঃ সর্বেহন্যান্যং জিঘাংসবঃ । অন্যান্যমভি-  
 নর্দন্তুঃ স্পর্ধমানাঃ পরস্পরম্ ॥ ২৩ ॥ অন্যান্যস্পর্ধয়া রাজন্ জ্ঞাতযঃ সঙ্গতা  
 মিথঃ । মহাস্ত্রাণি বিমুঞ্চন্তুঃ সমাপেতুরমর্ষণাঃ ॥ ২৪ ॥ দুৰ্য্যোধনস্তু সংক্রুদ্ধো ধৃষ্-  
 দ্যুন্নং মহারণে । বিব্যাধ নিশিতৈর্বাণৈশ্চতুর্ভিঃ সমরে দ্রুতম্ ॥ ২৫ ॥ দুৰ্ম্মর্ষণশ্চ  
 বিংশত্যা চিত্রসেনশ্চ সপ্তভিঃ । দুৰ্ম্মুখো দশভির্বাণৈর্দুঃসহশ্চাপি সপ্তভিঃ । বিবিংশ-  
 শতিঃ পঞ্চভিস্তু ত্রিভির্দুঃশাসনস্তথা ॥ ২৬ ॥ তান্ প্রত্যবিধ্যদ্রাজেসু পার্ষতঃ শত্রু-  
 তাপনঃ । একৈকং পঞ্চবিংশত্যা দর্শয়ন্ হস্তলাঘবম্ ॥ ২৭ ॥ সত্যব্রতঞ্চ সমরে  
 পুরুমিত্রঞ্চ ভারত । অভিমন্যুরবিধ্যতু দশভির্দশভিঃ শরৈঃ ॥ ২৮ ॥ মাদ্রীপুলৌ  
 তু সমরে মাতুলং মাতৃনন্দনো । ছাদযেতাং শরৈস্তীক্ষ্ণস্তদদ্ভুতমিবাভবৎ ॥ ২৯ ॥  
 ততঃ শল্যো মহারাজ স্বসীযৌ রথিনাশ্বরৌ । শরৈর্বহুভিরানর্ছৎ কৃতপ্রতিকূটে-  
 ষিণৌ । ছাদ্যমানৌ ততস্তৌ তু মাদ্রীপুলৌ ন চলতুঃ ॥ ৩০ ॥ অথ দুৰ্য্যোধনং  
 দৃষ্ট্বা ভীমসেনো মহাবলঃ । বিধিৎসুঃ কলহস্যাস্তং গদাং জগ্রাহ পাণ্ডবঃ ॥ ৩১ ॥  
 তমুদ্যতগদং দৃষ্ট্বা কৈলাসমিব শৃঙ্গিণম্ । ভীমসেনং মহাবাহুং পুল্লাস্তে প্রাদ্রবন্  
 ভযাৎ ॥ ৩২ ॥ দুৰ্য্যোধনস্তু সংক্রুদ্ধো মাগধং সমচোদযৎ । অনীকং দশসাহস্রং  
 কুঞ্জরাণাং তরস্বিনাম্ ॥ ৩৩ ॥ গজানীকেন সহিতস্তেন রাজা সুযোধনঃ । মাগধং  
 পুরতঃ কুত্বা ভীমসেনমথাভ্যযাৎ ॥ ৩৪ ॥ আপতন্তুঞ্চ তং দৃষ্ট্বা গজানীকং বৃকো-  
 দরঃ । গদাপাণিরবারোহদ্রথাং সিংহ ইবোন্নদন্ ॥ ৩৫ ॥ অদ্রিসারমযীং গুর্বাং  
 প্রগৃহ মহতীং গদাম্ । অভ্যধাবদাজানীকং ব্যাদিতাস্য ইবাস্তকঃ ॥ ৩৬ ॥ স  
 গজান্ গদযা নিগ্নন্ সমরে ব্যচরদ্বলী । ভীমসেনো মহাবাহুর্ভূত্রহা দানবেষিব ॥ ৩৭ ॥  
 তস্য নাদেন মহতা মনোহৃদযকম্পিনা । ব্যত্যচেষ্টন্তু সংহত্য গজা ভীমস্য নর্দ-  
 তঃ ॥ ৩৮ ॥ ততস্তু দ্রৌপদীপুল্লাঃ সৌভদ্রশ্চ মহারণঃ । নকুলঃ সহদেবশ্চ ধৃষ্-  
 দ্যুন্নশ্চ পার্ষতঃ ॥ ৩৯ ॥ পৃষ্ঠং ভীমস্য রক্ষন্তুঃ শরবর্ষণে বারণান্ । অভ্যধাবন্ত  
 বর্ষন্তো মেঘা ইব গিরীন্ যথা ॥ ৪০ ॥ ক্ষুরৈঃ ক্ষুরৈপ্রৈভল্লৈশ্চ পীতৈরঞ্জলিকৈঃ  
 শিতৈঃ । ব্যাহরম্মুক্তমাদ্রানি পাণ্ডবা গজযোধিনাম্ ॥ ৪১ ॥ শিরোভিঃ প্রপতন্তিশ্চ  
 বাহুভিশ্চ বিভূষিতৈঃ । অশ্ববৃষ্টিরিবাভাতি পাণিভিশ্চ সহাকুশৈঃ ॥ ৪২ ॥ কৃত্তো-

क्रमाद्वाः शक्रेषु गजानां गजयोधिनः । अदृश्यस्ताचलाग्रेषु क्रमा भग्नशिखा  
 इव ॥ ४७ ॥ धृष्टद्युम्नहतानन्यानपश्याम महागजान् । पतितान् पातयमानांश्च  
 पार्षतेन महाश्वना ॥ ४८ ॥ मागधोऽथ महीपालो गजमैरावतोपमम् । प्रेष-  
 यामास समरे सौभद्रस्य रुथं प्रति ॥ ४९ ॥ तमापतस्तु संप्रेक्ष्य मागधस्य महा-  
 गजम् । जघानैकेषुणा वीरः सौभद्रः परवीरहा ॥ ५० ॥ तस्यारज्जितनागस्य  
 काशिकः परपुरञ्जयः । राज्ञो रजतपुच्छेन भल्लेनापाहरच्छिरः ॥ ५१ ॥ विगाह्य तदुदा-  
 जानीकं भीमसेनोऽपि पाण्डवः । व्यचरन् समरे मृदुन् गजानिन्द्रे गिरिनि-  
 व ॥ ५२ ॥ एकप्रहारनिहतान् भीमसेनेन दन्तिनः । अपश्याम रणे तस्मिन् गिरिन्  
 वज्रहतानिव ॥ ५३ ॥ भग्नदस्तान् भग्नकटान् भग्नसक्थांश्च वारणान् । भग्नपृष्ठत्रिका-  
 नन्याग्निहतान् पर्वतोपमान् ॥ ५४ ॥ भयात् संसीदतश्चान्यान् विमुथान् समरे  
 गजान् । विमूत्रान् भयसंविग्नांस्तथा विशकृतोऽपरान् ॥ ५५ ॥ भीमसेनस्य  
 मार्गेषु गतासून् पर्वतोपमान् । अपश्यामिहतान्नागान् राजन्निर्घनतोऽपरान् ॥ ५६ ॥  
 वमन्तो रूधिरक्षान्ये भिन्नकुम्भा महागजाः । विश्वलन्तो गता भूमिं शैला इव  
 धरातले ॥ ५७ ॥ मेदोरूधिरदिक्काङ्क्षे वसामज्जसमुष्कितः । व्यचरन् समरे भीमो  
 दण्डपागिरिवास्तकः ॥ ५८ ॥ गजानां रूधिराक्ताङ्गीं गदां विभ्रद्भृकोदरः । घोरः  
 प्रतिभयश्चासीत् पिनाकीव पिनाकधृक् ॥ ५९ ॥ निम्नथ्यामानाः क्रुद्धेन भीमसेनेन  
 दन्तिनः । सहसा प्राद्ववन् क्लिष्टा मृदुस्तुम्बव बाहिनीम् ॥ ६० ॥ तं हि वीरं महेश-  
 षासाः सौभद्रप्रमुखा रथाः । पर्यारक्तस्तु युध्यस्तुं वज्रायुधमिवामराः ॥ ६१ ॥ शो-  
 णिताक्तां गदां विभ्रदूकृितां गजशोणितैः । क्रुतान्तु इव रौद्रास्त्रा भीमसेनो  
 व्यदृश्यत ॥ ६२ ॥ व्याघ्रच्छमानं गदया दिक्कु सर्वासु भारत । भीमसेनमपश्याम  
 नृत्यस्तुमिव शकुरम् ॥ ६३ ॥ यमदण्डोपमां गुर्वीन्द्राशनिमस्रनाम् । अपश्याम  
 महाराज रौद्रीं विशसनीं गदाम् ॥ ६४ ॥ व्यग्निश्रां केशमज्जातिः प्रदिक्तां  
 रूधिरैर्ग च । पिनाकमिव रूद्रस्य क्रुद्धस्यातिघ्नतः पशून् ॥ ६५ ॥ यथा पशूनां सं-  
 घातं यर्ष्या पालः प्रकालयेत् । तथा भीमो गजानीकं गदया पर्यकालयेत् ॥ ६६ ॥  
 गदया वधयमानांश्च मार्गणैश्च समस्ततः । स्वान्यनीकानि मृदुस्तुः प्राद्ववन् कुञ्जरास्तु-  
 व ॥ ६७ ॥ महावात इवात्राणि विधमिद्वा स वारणान् । अतिष्ठत् समरे भीमः श्व-  
 शान इव शूलभृत् ॥ ६८ ॥

इति तीर्थवधेऽपि तीर्थवधपर्वणि भीमसेनपराक्रमे एकौन-

व्यक्तितमोऽध्यायः ॥ ५२ ॥

सङ्घ उवाच । हते तस्मिन् गजानीके पुल्लो दुर्योधनस्तव । भीमसेनं मते-  
 त्येवं सर्वसैन्यानाद्योदयं ॥ १ ॥ ततः सर्वाणि सैन्यानि तव पुल्लस्य शासनात् ।  
 अभ्यद्रवन् भीमसेनं नदन्तुं तैरवानुवान् ॥ २ ॥ तं बलौघमपर्यस्तुं देवैरपि  
 सुदुःसहम् । आपतन्तुं सुदुष्पारं समुद्रमिव पर्वणि ॥ ३ ॥ रथनागाश्वकलिलं  
 शङ्खदुन्दुभिर्नमदितम् । अनन्तरथपादात् रजसा सर्वतो वृतम् ॥ ४ ॥ स भीमसेनः  
 समरे महोदधिमिवापरम् । सेनासागरमक्कोत्थं बलेव समवारयत् ॥ ५ ॥ तदा-  
 श्चर्यमपश्याम पाण्डवस्य महात्मानः । भीमसेनस्य समरे राजन् कर्मातिमान्नुवम् ॥ ६ ॥  
 उदीर्णान् पार्थिवान् सर्वान् साश्वान् सरथकुञ्जरान् । असंभ्रमं भीमसेनो गदया  
 समवारयत् ॥ ७ ॥ स संवार्य बलौघांस्तान् गदया बलिनाश्रयः । अतिष्ठत्तुमुले  
 भीमो गिरिर्मेरुरिवाचलः ॥ ८ ॥ तस्मिन् सुतुमुले घोरे रणे परमदारुणे ।  
 द्वातरशैचव पुल्लश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः ॥ ९ ॥ द्रोपदेयाभिमन्युश्च शिखण्डी चाप-  
 राजितः । न प्राङ्महन् भीमसेनं भये जाते महाबलम् ॥ १० ॥ ततः शैक्यायसीं  
 षुर्वीं प्रगृह्य महतीं गदाम् । अवधीत्रावकान् योधान् दण्डपाणिरिवास्तकः ॥ ११ ॥  
 पोथयनुथवृन्दानि बाजिवृन्दानि वा विभुः । व्यचरत् समरे भीमो युगास्तु पावको  
 यथा ॥ १२ ॥ विनिघ्नन् समरे योधान् युगास्तु कालवद्विभुः । उरुवेगेण संकर्ष-  
 नुथजालानि पाण्डवः ॥ १३ ॥ बलानि च ममर्दास्तु नडलानीव कुञ्जरः । मृदुनुथेतेत्या  
 रथिनो गजेतेत्या गजयोधिनः । सादिनश्चाश्वपृष्ठेतेत्या भूमौ चापि पदाति-  
 नः ॥ १४ ॥ गदया व्यहनत् सर्वान् वातो वृक्षानिवौजसा । भीमसेनो महाबाहू-  
 स्तव पुल्लस्य वै बले ॥ १५ ॥ सा वै मज्जावसामांसैः प्रदिक्ता रूधिरेण च । अदृ-  
 श्यत महारौद्री गदा नागाश्वघातिनी ॥ १६ ॥ तत्र तत्र हतैश्चापि मनुष्यगजसा-  
 दिभिः । रणाङ्गनं तदभवन्त्योराघातसन्निभम् ॥ १७ ॥ पिनाकमिव रुद्रस्य क्रुद्ध-  
 स्यात्तिघ्नतः पशून् । यमदण्डोपमामुग्रामिन्द्राशनिसमप्रभाम् । ददृशुर्भीमसेनस्य  
 रौद्रीं विशसनीं गदाम् ॥ १८ ॥ आविध्यतो गदात् तस्य कोन्तेयस्य महात्मानः ।  
 वभौ कपत् महाघोरं कालमेव युगक्षये ॥ १९ ॥ तं तथा महतीं सेनां द्राव-  
 यन्तुं पुनः पुनः । दृष्ट्वा मृत्युमिवायास्तुं सर्वे विमनसोऽभवन् ॥ २० ॥ यतो यतः  
 प्रेक्षते स्म गदामुद्यम्य पाण्डवः । तेन तेन स्म दीर्यस्तु सर्वसैन्यानि भारत ॥ २१ ॥  
 प्रदारयन्तुं सैन्यानि बलौघेनापराजितम् । असमानमनीकानि व्यादिताम्यमिवा-  
 स्तकम् ॥ २२ ॥ तं तथा भीमकर्माणं प्रगृहीतमहागदम् । दृष्ट्वा वृकोदरं तीव्रः  
 महसैव समभ्ययात् ॥ २३ ॥ महता मेघघोषेण रथेनादिभ्यवर्त्तसा । छादयन्

शरवर्षेण पर्याण्य इव वृष्टिमान् ॥ २४ ॥ तमायास्तुं तथा दृष्ट्वा व्याप्ताननमिवास्तु-  
कम् । तीर्णं तीमो महाबाहूः प्रत्यूदीयादमर्षितः ॥ २५ ॥ तस्मिन् कृणे सात्यकिः  
सत्यसङ्गः शिनिप्रवीरोऽभ्यपतत् पितामहम् । निम्नमित्रान् धनुषा दृटेन सकम्प-  
यत्सुव पुलस्य सेनाम् ॥ २६ ॥ तं यास्तुमश्वैः रजतप्रकाशैः शरान् वपस्तुं निशि-  
तान् सुपुञ्जान् । नाशकूबन् वारयितुं तदानीं सर्वे गणा भारत ये हृदीयाः ॥ २७ ॥  
अविध्यदेनं दशभिः पृषत्कैरलशुषो राक्षसोऽसौ तदानीम् । शरैश्चतुर्भिः  
प्रतिविध्य तं नष्टा शिनेरभ्यपतद्भवेन ॥ २८ ॥ अन्वागतं वृषिवीरुं निशम्य  
मध्ये रिपूणां परिवर्तमानम् । प्रावर्तयस्तुं कुरूपुङ्गवांश्च पुनः पुनश्च प्रणदस्तु-  
माजो ॥ २९ ॥ योधास्तुदीयाः शरवर्षेः रवर्षन् मेषा यथा भुधरमश्रुवेगैः । नाश-  
कूबन् वारयितुं वरिष्ठं मध्यन्दिने सूर्यामिवातपस्तुम् ॥ ३० ॥ न तत्र कश्चिन्म-  
विषण्ण आसीदते राजन् सोमदत्तस्य पुत्रात् ॥ ३१ ॥ स ह्याददानो धनुरुग्रवेगं  
भूरिश्रवा भारत सौमदत्तिः । दृष्ट्वा रथान् स्वान् व्यपनीयमानान् प्रत्यूक्ष्यो सात्यकिं  
योद्धुमिच्छन् ॥ ३२ ॥

इति तीर्णपर्वणि तीर्णवधपर्वणि सात्यकिभूरिश्रवसोः समागमे  
षष्ठितमोऽध्यायः ॥ ७० ॥



सङ्गघ उवाच । ततो भूरिश्रवा राजन् सात्यकिं नवभिः शरैः । अविध्यद्वृशसं-  
क्रुद्धस्तोत्रैरिव महाद्विपम् ॥ १ ॥ कौरव्यं सात्यकिश्चापि शरैः समतपर्वभिः ।  
अवारयदमेयाग्ना सर्वलोकस्य पश्यतः ॥ २ ॥ ततो दुर्योधनो राजा सोदर्यैः  
परिवारितः । सौमदत्तिं रणे यत्नं समस्तां पर्यवारयत् ॥ ३ ॥ तथैव पाण्डवाः  
सर्वे सात्यकिं तरसा रणे । परिवार्य स्थिताः सञ्चेय समस्तां सुमहौजसः ॥ ४ ॥  
तीमसेनस्तु संक्रुद्धो गदामुद्यम्य भारत । दुर्योधनमुखान् सर्वान् पुत्रांस्तु पर्या-  
वारयत् ॥ ५ ॥ रथैरनेकनाहसैः क्रोधा मर्ष समन्वितः । नन्दकस्तुव पुत्रस्तु तीम-  
सेनं महाबलम् । विव्याध विशिथैस्तुक्लैः कङ्कपत्रैः शिलाशितैः ॥ ६ ॥ दुर्यो-  
धनस्तदा राजन् तीमसेनं महाहवे । आजयानोरसि क्रुद्धो मार्गणैर्नवभिः  
शितैः ॥ ७ ॥ ततो तीमो महाबाहूः स्वरथं सुमहाबलः । आरुरोह रथश्रेष्ठं  
विशोकक्षेदमत्रवीत् ॥ ८ ॥ एते महारथाः शूरा धार्तराष्ट्रा महाबलाः । मामेव  
भृशसं क्रुद्धा हस्तमभ्युद्यता युधि ॥ ९ ॥ एतानद्य हनिष्यामि पश्यतस्तु न संशयः ।  
तस्मान्ममास्थान् संग्रामे यत्नः संयच्छ सारथे ॥ १० ॥ एवमुक्त्वा ततः पार्थः पुत्रं

তব বিশাম্পতে । বিব্যাধ দশভিস্তীক্লেঃ শরৈঃ কনকভূষণৈঃ । নন্দকঞ্চ ত্রিভি-  
 র্বাণৈঃ প্রত্যবিধ্যৎ স্তনাস্তরে ॥ ১১ ॥ তন্ত্ব দুৰ্য্যোধনঃ ষষ্ঠ্যা বিদ্ধা ভীমং মহাব-  
 লম্ । ত্রিভিরন্যৈঃ সুনিশিতৈর্বিশোকং প্রত্যবিধ্যত ॥ ১২ ॥ ভীমস্য চ রণে রাজন্  
 ধনুশ্চিচ্ছেদ ভাস্বরম্ । মুষ্টিদেশে শরৈস্তীক্লেস্ত্রিভিরাজৌ হসম্বিব ॥ ১৩ ॥ ভীমস্ত  
 প্রেক্ষ্য যন্তুরং বিশোকং সংযুগে তদা । পীড়িতং বিশিখৈস্তীক্লেস্তব পুল্লং  
 ধম্বিনা ॥ ১৪ ॥ অমৃষ্যমাণঃ সংক্রুদ্ধো ধনুর্দীব্যং পরামৃষৎ । পুল্লস্য তে মহারাজ  
 বধার্থং পুরুষর্ষভ ॥ ১৫ ॥ সমাধত্ত চ সংরুদ্ধঃ ক্ষুরপ্রং লোমবাহিনম্ । তেন চি-  
 ছেদ নৃপতেমুষ্টৌ কার্ম্মুকমুক্তমম ॥ ১৬ ॥ অপবিধ্য ধনুশ্চিহ্নং পুল্লস্তে ক্রোধ-  
 মুচ্ছিতঃ । অন্যৎ কার্ম্মুকমাদাষ সত্বরং বেগবত্তরম্ ॥ ১৭ ॥ সন্ধায় বিশিখং ঘোরং  
 কালমৃত্যুসমপ্রভং । তেনাজঘান সংক্রুদ্ধো ভীমসেনং স্তনাস্তরে ॥ ১৮ ॥ স গাঢ়-  
 বিদ্ধো ব্যথিতঃ সর্বগাত্রৈর্বিযোজিতঃ । নিষসাদ রথোপস্থে মুচ্ছাঞ্চাপি জগাম-  
 হ ॥ ১৯ ॥ তং দৃষ্ট্বা ব্যথিতং ভীমমভিনন্যুপুরোগমাঃ । নামৃষ্যস্ত মহাভাগাঃ  
 পাণ্ডবানাং মহারথাঃ ॥ ২০ ॥ ততঃ স্তুতুমুলাং বৃষ্টিং শরণামুগ্রতেজসাম্ । পাত-  
 যামাসুরব্যগ্রাঃ পুল্লস্য তব মুর্দ্ধনি ॥ ২১ ॥ প্রতিলভ্য ততঃ সংজ্ঞাং ভীমসেনো  
 মহাবলঃ । দুৰ্য্যোধনং ত্রিভির্বিদ্ধা পুনর্বিব্যাধ পঞ্চভিঃ ॥ ২২ ॥ শল্যঞ্চ পঞ্চবিং-  
 শত্যা শরৈর্বিব্যাধ পাণ্ডবঃ । রুদ্ভাপুংথৈর্ম্মহেষাসঃ স বিদ্ধো ব্যপষাদ্রণাৎ ॥ ২৩ ॥  
 প্রত্যুদ্যযুস্ততো ভীমং তব পুল্লাশ্চতুর্দশ । সেনাপতিঃ সুষণশ্চ জলসন্ধঃ সুলো-  
 চনঃ ॥ ২৪ ॥ উগ্রো ভীমরথো ভীমো বীরবাহুরলোলুপঃ । দুর্ম্মুখো দুম্পধর্ষশ্চ  
 বিবিৎসূর্ধিকটঃ সমঃ ॥ ২৫ ॥ বিসৃজন্তো বহুন্ বাণান্ ক্রোধসংরক্তলোচনাঃ ।  
 ভীমসেনমতিক্রত্য বিব্যাধুঃ সহিতা ভূশম্ ॥ ২৬ ॥ পুল্লাংস্ত তব সংপ্রেক্ষ্য ভীম-  
 সেনো মহাবলঃ । সৃক্কণী বিলিহ্ন বীরঃ পশুমধ্যে বৃকো যথা ॥ ২৭ ॥ অভিপত্য  
 মহাবাহুর্গরুত্মানিব বেগিতঃ । সেনাপতেঃ ক্ষুরপ্রং শিরশ্চিচ্ছেদ পাণ্ডবঃ ॥ ২৮ ॥  
 সংপ্রহস্য চ হৃষ্টাত্মা ত্রিভির্বাণৈর্ম্মহাভুজঃ । জলসন্ধং বিনির্ভিদ্য সোহনযদ্যমসা-  
 দনম্ ॥ ২৯ ॥ সুষণঞ্চ ততো হত্বা প্রেষয়ামাস মৃত্যবে । উগ্রস্য সশিরস্ত্রাণং শিরশ্চ-  
 ক্ষ্রোপমং ভুধি । পাতযামাস ভল্লেন কুণ্ডলাভ্যাং বিভূষিতম্ ॥ ৩০ ॥ বী রবাহুঞ্চ সপ্ত-  
 ত্যা সাস্বকেতুং সমারথিম্ । নিনাস সমরে ভীমঃ পরলোকায পাণ্ডবঃ ॥ ৩১ ॥  
 ভীমভীমরথো চোভৌ ভীমসেনো হসম্বিব । ভ্রাতরৌ রভসৌ যুদ্ধে হনযদ্যমসাদ-  
 নম্ ॥ ৩২ ॥ ততঃ সুলোচনং ভীমঃ ক্ষুরপ্রং মহামৃধে । মিশতাং সর্বসৈন্যানাম-  
 নযদ্যমসাদনম্ ॥ ৩৩ ॥ পুল্লাস্ত তব তং দৃষ্ট্বা ভীমসেনপরাক্রমম্ । শেবা যেহন্যেহ-

भवन्सुत्र ते तीमस्य भयात्तदा । विप्रक्रता दिशो राजन् वध्यमाना महात्मना ॥७४॥  
 ततोऽत्रवीच्छास्तनवः सर्वानेव महारथान् । एष तीमो रणे क्रुद्धः सर्वानेव महा-  
 रथान् ॥७५॥ यथाप्राग्र्यान् यथावीरान् यथाशूरांश्च मङ्गतान् । निपातयत्युग्रधन्वा  
 तं प्रमथीत मा चिरम् ॥७६॥ एवमुक्त्वास्ततः सर्वे धार्तराष्ट्रस्य सैनिकाः । अत्य-  
 द्रवस्तु संक्रुद्धा तीमसेनं महाबलम् ॥७७॥ भगदत्तः प्रतिभेन कुञ्जरेण विशा-  
 म्पते । अपतत्सहस्रा तत्र यत्र तीमो व्यवस्थितः ॥७८॥ आपतमेव च रणे  
 तीमसेनं शिलीमुथैः । अदृश्यं समरे चक्रे जीमूत इव भास्करम् ॥७९॥ अति-  
 मम्युमुखास्तत्र नामृष्यस्तु महारथाः । तीमस्याच्छादनं संख्ये स्वबाह्वलमाश्रि-  
 ताः ॥८०॥ त एनं शरवर्षेण समस्तां पर्यावारयन् । गजस्तु शरवृष्ट्या तु विभि-  
 द्नुस्ते समस्ततः ॥८१॥ स शस्त्रवृष्ट्याभिहतः समस्तेस्तैर्महारथैः । प्राग्ज्योतिष-  
 गजे राजानानालिङ्गैः सूतेजनैः ॥८२॥ संजातरुधिरौ पीडः प्रेक्षणीयोऽ-  
 भवद्गणे । गभस्तिभिर्निवारकस्य संसृतो जलदो महान् ॥८३॥ स चोदितो  
 मदसुवी भगदत्तेन वारणः । अत्यधावत तान् सर्वान् कालोऽसृष्ट इवास्तकः । द्विगु-  
 णं ज्वमान्हाय कम्पयंश्चरन्महीम् ॥८४॥ तस्य तं सुमहद्गणं दृष्ट्वा सर्वे महा-  
 रथाः । असहं मन्यमानाश्च ते विप्रमनसोऽभवन् ॥८५॥ ततस्तु नृपतिः क्रुद्धो  
 तीमसेनं स्तनास्तरे । आजघान नरव्याघ्रु शरेणानतपर्षणा ॥८६॥ सोऽतिविद्धो  
 महेश्वासस्तेन राज्ञा महारथः । मूर्च्छयाभिपरीताङ्गे ध्वजयन्तिमुपाश्रितः ॥८७॥  
 तांस्तु भीतान् समालक्ष्य तीमसेनश्च मूर्च्छितम् । ननाद बलवन्नादं भगदत्तः प्रताप-  
 वान् ॥८८॥ ततो षटोऽकचो राजन् दृष्ट्वा तीमं तथागतम् । संक्रुद्धो राक्षसो  
 घोरस्तत्रैवान्तरधीयत ॥८९॥ स क्रुद्धा दारुणां मायां भीरुणां भयवर्द्धनीम् ।  
 अदृश्यत निमेषार्द्धान्देवाररूपं समाश्रितः । ऐरावतं समारूह्य स्वयं मायामयं  
 कृतम् ॥९०॥ तस्य चान्येऽपि दिङ्गागा वडूवुरन्नुयायिनः । अङ्गनो वामनश्चैव  
 महापद्मश्च सुप्रभः ॥९१॥ त्रय एते महानागा राक्षसैः समधिष्ठिताः । महाका-  
 यास्त्रिधा राजन् प्रसुवन्तो मदं बह । तेजोवीर्यवलोपेता महाजवपराक्र-  
 माः ॥९२॥ षटोऽकचस्तु स्वं नागं प्रेषयामास संयुगे । सगजं भगदत्तस्तु हस्त-  
 कामः परस्तपः ॥९३॥ ते चान्ये चोदितानागा राक्षसैः सुमहाबलैः । परि-  
 पेतुः सुसंक्रुद्धाश्चतुर्दन्ताश्चतुर्दिशम् । भगदत्तस्य तं नागं विषाणैः समपीड-  
 यन् ॥९४॥ स पीड्यमानस्तैर्नागैर्बेदनार्तः शराहतः । अनदं सुमहानादमिन्द्रा-  
 शनिसमं ततः ॥९५॥ तस्य तं नदतो नादं सुघोरं तीमनिश्चनम् । श्रुत्वा ती-

স্মোহত্রবীৎ দ্রোণং রাজানঞ্চ সুযোধনম্ ॥ ৫৬ ॥ এষ যুধ্যতি সংগ্রামে হৈডিষ্মেন  
 মহাত্মনা । ভগদত্তো মহেষাসঃ কৃচ্ছ্রে চ পরিবর্ততে ॥ ৫৭ ॥ রাক্ষসশ্চ মহাকাষঃ স  
 চ রাজাতিকোপনঃ । ধুবং সমেতো সমরে কালমৃত্যুসমাবুভৌ ॥ ৫৮ ॥ শ্রমতে  
 হেষ্৷ স্কটানাং পাণ্ডবানাং মহাস্বনঃ । হস্তিনশ্চৈব সুমহান্ ভীতস্য রুদিতধ-  
 নিঃ ॥ ৫৯ ॥ তত্র গচ্ছাম ভদ্রং বো রাজানং পরিরক্ষিতুম্ । অরক্ষ্যমাণঃ সমরে  
 শীঘ্রং প্রাণান্ বিমোক্যতি ॥ ৬০ ॥ তত্ত্বরধং মহাবীৰ্য্যা মাচিরং কুরুতানঘাঃ ।  
 মহান্ হি বর্ততে রৌদ্রঃ সংগ্রামো রোমহর্ষণঃ ॥ ৬১ ॥ ভক্তশ্চ কুলপুত্রশ্চ শূরশ্চ  
 পৃতনাপতিঃ । যুক্তং তস্য পরিত্রাণং কর্ত্তুমস্মাভিরচ্যুতাঃ ॥ ৬২ ॥ ভীষ্মস্য তদ্বচঃ  
 শ্রুত্বা ভারদ্বাজপুরোগমাঃ । সহিতাঃ সর্বরাজানো ভগদত্তপরীক্ষয়া । উত্তমং জব-  
 মাস্থায় প্রযযূৰ্বত্র সোহ্ভবৎ ॥ ৬৩ ॥ তান্ প্রযাতান্ সমালোক্য যুধিষ্ঠিরপুরোগমাঃ ।  
 পাঞ্চালাঃ পাণ্ডবৈঃ সার্কং পৃষ্ঠতোহ্নুযযুঃ পরান্ ॥ ৬৪ ॥ তান্যনীকান্যথালোক্য  
 রাক্ষসেন্দ্রঃ প্রতাপবান্ । ননাদ সুমহানাৎ নাদয়ানো নভস্তলম্ ॥ ৬৫ ॥ তস্যাপি  
 নিনদং শ্রুত্বা দৃষ্ট্বা নাগাশ্চ যুধ্যতঃ । ভীষ্মঃ শাস্তনবো ভূযো ভারদ্বাজমভাষ-  
 ত ॥ ৬৬ ॥ ন রোচতে মে সংগ্রামো হৈডিষ্মেন দুরাত্মনা । বলবীৰ্য্যসমাবিষ্টিঃ সুস-  
 হাষশ্চ সাম্প্রুতম্ ॥ ৬৭ ॥ নৈষ শক্যো যুধা জেতুমপি বজ্রভূতা স্ববম্ । লঙ্কলক্ষঃ  
 প্রহারী চ বযঞ্চ শ্রান্তবাহনাঃ ॥ ৬৮ ॥ পাঞ্চালৈঃ পাণ্ডবেবৈশ্চ দিবসং ক্রতবি-  
 ক্রতাঃ । তন্মে ন রোচতে যুদ্ধং পাণ্ডবৈর্জিতকাশিভিঃ । যুষ্যতামবহারোহদ্য শ্বে  
 যোৎস্যামঃ পরৈঃ সহ ॥ ৬৯ ॥ পিতামহবচঃ শ্রুত্বা তথা চক্রুঃ প্রহর্ষিতাঃ । উপা-  
 যেনাপযাতাস্তে ঘটোৎকচভয়ার্দিতাঃ ॥ ৭০ ॥ কৌরবেষু নিবৃত্তেষু পাণ্ডবা জিত-  
 কাশিনঃ । সিংহনাদমকুর্ষন্ত শঙ্খবেগুশ্বনৈঃ সহ ॥ ৭১ ॥ এবং তদভবদ্যুদ্ধং দিবসং  
 ভরতর্ষভ । পাণ্ডবানাং কুরুণাঞ্চ পুরস্কৃত্য ঘটোৎকচম্ ॥ ৭২ ॥ কৌরবাস্তু তত-  
 স্তূর্ণং প্রযযুঃ শিবিরং স্বকম্ । ত্রীডান্বিতা নিশাকালে পাণ্ডবেষৈঃ পরাজিতাঃ ॥ ৭৩ ॥  
 শরবিক্রতগাত্রাস্তু পাণ্ডুপুত্রা মহারথাঃ । যুদ্ধে স্মনসো রাজন্ জগ্মুশ্চ শিবিরং  
 প্রতি । পুরস্কৃত্য মহারাজ ভীমসেনঘটোৎকচৌ ॥ ৭৪ ॥ পূজযন্তো মহারাজ মুদা  
 পরমযা যুতাঃ । নদন্তো বিরিধামাদাং স্তূর্য্যশ্বনবিমিশ্রিতান্ ॥ ৭৫ ॥ সিংহনাদাংশ্চ  
 কুর্বাণা বিমিশ্রান্ শঙ্খনিশ্বনৈঃ । বিনদন্তো মহাত্মানঃ কম্পযন্তশ্চ মেদিনীম্ ॥ ৭৬ ॥  
 ঘটযন্তশ্চ মর্মানি তব পুত্রস্য মারিষ । প্রযাতাঃ শিবিরায়ৈব নিশাকালে পরন্ত-  
 পাঃ ॥ ৭৭ ॥ দুর্য্যোধনস্ত নৃপতির্দীনো ভ্রাতৃবধেন চ । মুহূর্ত্তং চিন্তয়ামাস বাস্প-



शोकसमाकुलः ॥ १८ ॥ ततः क्रुद्धा विधिं सर्वं शिविरस्य यथाविधि । प्रदध्या  
शोकसन्तप्तो ब्राह्मव्यसनकर्षितः ॥ १९ ॥

इति तीर्थपर्वणि तीर्थवधपर्वणि चतुर्थदिवसयुक्तावहारे

एकव्यक्तितमोऽध्यायः ॥ ७१ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । भयं मे सुमहज्जातं विस्मयश्चैव सङ्गम । श्रुत्वा पाण्डुकुमाराणां  
कर्म देवैः सुदुस्करम् ॥ १ ॥ पुत्राणां पराभावं श्रुत्वा सङ्गम सर्वशः । चिन्तां मे  
महती भूता भविष्यति कथञ्चित् ॥ २ ॥ ध्रुवं विदुरवाक्यानि धक्यन्ति हृदयं मम ।  
यथा हि दृश्यते सर्वं दैवयोगेन सङ्गम ॥ ३ ॥ यत्र तीर्थमुखान् शूरान्द्रज्जान् यो-  
धसन्तमान् । पाण्डवानामनीकेषु योधयन्ति प्रहारिणः ॥ ४ ॥ केनावध्या महात्मानः  
पाण्डोः पुत्रा महाबलाः । केन दत्तवरास्तात किम्वा ज्ञानं विदन्ति ते । येन क्वयं  
न गच्छन्ति दिवि तारागणा इव ॥ ५ ॥ पुनः पुनर्नृष्यामि हतं सैन्यं अ पाण्ड-  
वैः । मय्येव दण्डः पतितो दैवात् परमदारुणः ॥ ६ ॥ यथावध्याः पाण्डुसूता यथा  
वध्याश्च मे सूताः । एतन्मे सर्वमाचक्षु यथातद्वेन सङ्गम ॥ ७ ॥ न हि पारं प्रप-  
श्यामि दुःखस्यास्य कथञ्चन । समुद्रस्यैव महतो भुजाभ्यां प्रतरन्नरः ॥ ८ ॥ पुत्रा-  
णां व्यसनं मन्ये ध्रुवं प्राप्स्यं सुदारुणम् । घातयिष्यति मे पुत्रान् सर्वान् तीर्थो  
न संशयः ॥ ९ ॥ न हि पश्यामि तं वीरं यो मे रक्तेः सूतानुगे । ध्रुवं विना-  
शः समरे पुत्राणां मम सङ्गम ॥ १० ॥ तस्मान्मे कारणं सूत युक्तैश्चैव विशेषतः ।  
पृच्छतो वै यथातद्वं सर्वमाख्यातुमर्हसि ॥ ११ ॥ दुर्योधनस्तु वृक्षक्रे दृष्ट्वा स्वान्  
विमुखानुगे । तीर्थद्रोणो रूपश्चैव सौबलेयो जयद्रथः । द्योगिर्वापि महेश्वासो  
विकर्णो वा महाबलः ॥ १२ ॥ निश्चयो वापि कस्त्वेषां तदा ह्यसौम्यहास्यनाम् ।  
विमुखेषु महाप्राज्ञ मम पुत्रेषु सङ्गम ॥ १३ ॥ सङ्गम उवाच । शूणू राजन्वहितः  
श्रुत्वा चैवावधारय । नैव मन्त्रकृतं किञ्चित्मैव मायां तथाविधाम् ॥ १४ ॥ न वै  
विभीषिकां काङ्क्षिद्राजन् कुर्यन्ति पाण्डवाः । युध्यन्ते ते यथान्यायं शक्तिमन्तश्च  
संयुगे ॥ १५ ॥ धर्मेण सर्वकार्याणि जीवितादीनि भारत । आरभन्ते सदा पार्थाः  
प्रार्थयाना महत्प्रशः ॥ १६ ॥ न ते युक्तामिबर्तन्ते धर्मोपेता महाबलाः । श्रिया  
परमया युक्ता यतो धर्मस्ततो जयः । तेनावध्या रणे पार्था जययुक्ताश्च पार्थि-  
व ॥ १७ ॥ तव पुत्रा दुरात्मानः पापेष्वभिरताः सदा । निष्ठूरा हीनकर्माणस्तैन  
हीयन्ति संयुगे ॥ १८ ॥ सुवहूनि नृशंसानि पुत्रैस्तव जनेश्वर । निरूतानीह

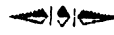
পাণ্ডুনাং নীচৈরিব যথা নরৈঃ ॥ ১৯ ॥ সর্বঞ্চ তদনাদৃত্য পুল্লাণাং তব কিঙ্খিমম্ ।  
 সাপহুবাঃ সদৈবাসন্ পাণ্ডবাঃ পাণ্ডুপূর্বজ ॥ ২০ ॥ ন চৈনান্ বহু মন্যন্তে পুল্লাস্তব  
 বিশাম্পতে । তস্য পাপস্য সততং ক্রিয়মাণস্য কৰ্মণঃ ॥ ২১ ॥ সংপ্রাপ্তং সুমহ-  
 দ্ঘোহুং ফলং কিম্পাকসম্মিতম্ । স তদ্ভুক্তু মহারাজ সপুল্লঃ সমুহজ্জনঃ ॥ ২২ ॥  
 নাববধ্যাসিষ্যদ্রাজন্ বার্য্যমাণঃ সুহজ্জনৈঃ । বিদুরেণাথ ভীষ্মেণ দ্রোণেন চ মহা-  
 ত্মনা ॥ ২৩ ॥ বার্য্যমাণো মযা চাপি ন গৃহ্যসি মহীপতে । বাক্যং হিতঞ্চ তথ্যঞ্চ  
 মন্দঃ পথ্যমিবৌষধম্ । পুল্লাণাং মতমাস্থায় মন্যসে পাণ্ডবান্ জিতান্ ॥ ২৪ ॥  
 শৃণু ভূষো যথাতত্বং যন্মাং ত্বমনুপৃচ্ছসি । কারণং ভরতশ্রেষ্ঠ পাণ্ডবানাং জয়ং  
 প্রতি ॥ ২৫ ॥ তত্তেহং কথয়িষ্যামি যথাশ্রুতমরিন্দম । দুৰ্য্যোধনেন সংপৃষ্ঠ এত-  
 মর্থং পিতামহঃ ॥ ২৬ ॥ দৃষ্ট্বা ভ্রাতৃনুণে সর্বাঙ্গির্জিতান্ সুমহারথান্ । শোকসং-  
 মুচহাদযো নিশাকালে স্ম কৌরবঃ ॥ ২৭ ॥ পিতামহং মহাপ্রাজ্ঞং বিনযেনোপগম্য  
 হ । যদব্রবীৎ সুতস্তেহসৌ তন্মে শৃণু জনেশ্বর ॥ ২৮ ॥ দুৰ্য্যোধন উবাচ । দ্রোণশ্চ  
 ত্বঞ্চ শল্যশ্চ কুপো দ্রৌণিস্তথৈব চ । কৃতবর্মা চ হার্দিক্যঃ কাষোজশ্চ সুদক্ষি-  
 ণঃ ॥ ২৯ ॥ ভুরিশ্রবা বিকর্ণশ্চ ভগদত্তশ্চ বীর্য্যবান্ । মহারথাঃ সমাখ্যাতাঃ  
 কুলপুল্লাস্তনুত্যজঃ ॥ ৩০ ॥ ত্রযাণামপি লোকানাং পর্য্যাপ্তা ইতি মে মতিঃ ।  
 পাণ্ডবানাং সমস্তাশ্চ ন তিষ্ঠন্তি পরাক্রমে ॥ ৩১ ॥ তত্র মে সংশযো জাতস্ত-  
 ন্মমাচক্ষু পৃচ্ছতঃ । যৎ সমাশ্রিত্য কৌন্তেযা জয়ন্ত্যস্মান্ পদে পদে ॥ ৩২ ॥  
 ভীষ্ম উবাচ । শৃণু রাজন্ বচো মহং যদ্বাং বক্ষ্যামি কৌরব । বহুশশ্চ মযো-  
 ক্তোহসি ন চ মে তদ্বযা শ্রুতম্ ॥ ৩৩ ॥ ক্রিয়তাং পাণ্ডবৈঃ সার্কিং শমো ভরত-  
 সত্তন । এতৎ ক্ষেমমহং মন্যে পৃথিব্যাস্তব বা-বিভো ॥ ৩৪ ॥ ভুঞ্জেকুমাং পৃথিবীং  
 রাজন্ ভ্রাতৃভিঃ সহিতঃ সুখী । সুহাদস্তপযন্ সর্বাঙ্গন্দযংশ্চাপি বান্ধবান্ ॥ ৩৫ ॥  
 ন চ মে ক্রোশতস্তাত শ্রুতবানসি বৈ পুরা । তদিদং সমনুপ্রাপ্তং যৎ পাণ্ডুনবম-  
 ন্যসে ॥ ৩৬ ॥ যশ্চ হেতুরবধ্যত্বে তেষামক্লিষ্টকৰ্ম্মণাম্ । তং শৃণু মহারাজ  
 মম কীর্ত্তয়তঃ প্রভো ॥ ৩৭ ॥ নাস্তি লোকেষু তদ্ভূতং ভবিতা নো ভবিষ্যতি ।  
 যো জযেৎ পাণ্ডবান্ সর্বাণ্ পালিতান্ শার্ঙ্গধন্বনা ॥ ৩৮ ॥ যত্ত্বু মে কথিতং  
 তাত মুনিভির্ভাবিতাত্মভিঃ । পুরাণগীতং ধৰ্ম্মজ্ঞ তচ্ছৃণু যথাতথম্ ॥ ৩৯ ॥ পুরা  
 কিল সুরাঃ সর্বে ঋষযশ্চ সমাগতাঃ । পিতামহমুপাসেদুঃ পর্বতে গন্ধমাদনে ॥ ৪০ ॥  
 মধ্যে তেষাং সমাসীনঃ প্রজাপতিরপশ্যত । বিমানং জাজ্বলন্তাসা স্থিতং প্রবরম-  
 স্বরে ॥ ৪১ ॥ ধ্যানেনাবেদ্য তদ্বক্ষা কৃত্বা চ নিযতোহঞ্জলিম্ । নমশ্চকার হৃষ্টাত্মা

পুরুষং পরমেশ্বরম্ ॥ ৪২ ॥ ঋষযন্ত্ৰুথ দেবাশ্চ দৃষ্টা ব্রহ্মাণমুখিতম্ । স্থিতাঃ প্রাঞ্জ-  
 লযঃ সর্বে পশ্যন্তে । মহদদ্ভুতম্ ॥ ৪৩ ॥ যথাবচ্চ তমভ্যর্চ্য ব্রহ্মা ব্রহ্মবিদাম্বরঃ ।  
 জগাদ জগতঃ সৃষ্টা পরং পরমধর্মবিৎ ॥ ৪৪ ॥ বিশ্বাবসুর্বিশ্বমূর্ত্তির্বিশ্বেশো বিশ্বক্-  
 সেনো বিশ্বকর্মা বশী চ । বিশ্বেশ্বরো বাসুদেবোহসি 'তস্মাদ্যোগাত্মানং দৈবতং  
 স্বামুপৈমি ॥ ৪৫ ॥ জয় বিশ্বমহাদেব জয় লোকহিতে রত । জয় যোগীশ্বর বিভো  
 জয় যোগপরাবর ॥ ৪৬ ॥ পদ্মনাভ বিশালাক্ষ জয় লোকেশ্বরেশ্বর । ভূতভবভ-  
 বমাথ জয় সৌম্যাত্মজাত্মজ ॥ ৪৭ ॥ অসংখ্যেযগুণাধার জয় সর্বপরাযগ । নারা-  
 যণ সুদুস্পার জয় শার্ঙ্গধর্মুর্ধ্বির ॥ ৪৮ ॥ জয় সর্বগুণোপেত বিশ্বমূর্ত্তে নিরাময । বি-  
 শ্বেশ্বর মহাবাহো জয় লোকার্থতৎপর ॥ ৪৯ ॥ মহোরগ বরাহাদ্য হরিকেশ বিভো  
 জয় । হরিবাস দিশামীশ বিশ্ববাসামিতাব্যয ॥ ৫০ ॥ ব্যক্তাব্যক্তামিতস্থান নিয-  
 তেন্দ্রিয় সৎক্রিয় । অসংখ্যেযাত্মভাবজ্ঞ জয় গম্ভীরকামদ ॥ ৫১ ॥ অনন্তবিদিত  
 ব্রহ্মনিত্য ভূতবিভাবন । কৃতকার্য কৃতপ্রজ্ঞ ধর্মজ্ঞ বিজযাজয় ॥ ৫২ ॥ গুহ্যাত্মন  
 সর্বযোগাত্মন স্ফুটসন্তুতসম্ভব । ভূতাত্মতত্ত্ব লোকেশ জয় ভূতবিভাবন ॥ ৫৩ ॥  
 আত্মযোনে মহাভাগ কল্পসংক্ষেপতৎপর । উদ্ভাবনমনোভাব জয় ব্রহ্মজনপ্রি-  
 য ॥ ৫৪ ॥ নিসর্গসর্গনিরত কামেশ পরমেশ্বর । অমৃতোদ্ভবসদ্ভাব মুক্তাত্মন বিজয-  
 প্রদ ॥ ৫৫ ॥ প্রজাপতিপতে দেব পদ্মনাভ মহাবল । আত্মভূত মহাভূত কর্ম্মাত্মন  
 জয় সর্বদ ॥ ৫৬ ॥ পাদৌ ত্বব ধরা দেবী দিশো বাহুর্দ্বিৎ শিরঃ । মূর্ত্তিস্তেহং  
 সুরাঃ কাষশ্চন্দ্রাদিত্যৌ চ চক্ষুধী ॥ ৫৭ ॥ বলন্তপশ্চ সত্যঞ্চ ধর্মকর্ম্মাত্মজং তব ।  
 তেজোহগ্নিঃ পবনঃ শ্বাস আপস্তে স্বেদসম্ভবাঃ ॥ ৫৮ ॥ অশ্বিনৌ শ্রবণৌ নিত্যং  
 দেবী জিহ্বা সরস্বতী । বেদাঃ সংস্কারনিষ্ঠা হি ত্বয়ীদং জগদাশ্রিতম্ ॥ ৫৯ ॥ ন  
 সংখ্যাং ন পরীমাণং ন তেজো ন পরাক্রমম্ । ন বলং যোগযোগীশ জানীমস্তে  
 ন সম্ভবম্ ॥ ৬০ ॥ ত্বদ্ভক্তিনিরতা দেব নিয়মৈস্ত্বাং সমাশ্রিতাঃ । অর্চয়ামঃ সদা  
 বিষ্ণো পরমেশং মহেশ্বরম্ ॥ ৬১ ॥ ঋষযো দেবগন্ধর্বা যক্ষরাক্ষসপন্নগাঃ । পিশাচা  
 নানুঘাশৈচব মৃগপক্ষিসরীসৃপাঃ ॥ ৬২ ॥ এবমাদি মযা সৃষ্টং পৃথিব্যাং ত্বৎপ্রসাদ-  
 জম্ । পদ্মনাভ বিশালাক্ষ কৃষ্ণ দুঃখপ্রণাশন ॥ ৬৩ ॥ ত্বং গতিঃ সর্বভূতানাং ত্বং  
 নেতা ত্বং জগন্মুখম্ । ত্বৎপ্রসাদেন দেবেশ স্মৃথিনো বিবুধাঃ সদা ॥ ৬৪ ॥ পৃথিবী  
 নির্ভয়া দেব ত্বৎপ্রসাদাৎ সদাভবৎ । তস্মাদ্ভব বিশালাক্ষ যদুবংশবিবর্ধনঃ ॥ ৬৫ ॥  
 ধর্মসংস্থাপনার্থায় দৈতেযানাং বধায় চ । জগতো ধারণার্থায় বিজ্ঞাপ্যং কুরু মে  
 বিভো ॥ ৬৬ ॥ যত্তৎ পরমকং গুহ্যং ত্বৎপ্রসাদাদিদং বিভো । বাসুদেব তদেতত্তে

মযোদ্ধীতং যথাতথম্ ৬৭ ॥ সৃষ্টা সক্ষৰ্ণং দেবং স্বযমান্মানমাঅনা । কৃষ্ণমা-  
অনাসুক্ষীঃ প্রদ্যুম্নং হ্যায়সংভবম্ ॥ ৬৮ ॥ প্রদ্যুম্নাচ্চানিরুদ্ধং তুং যং বিদুর্বিষ্ণু-  
মব্যয়ম্ । অনিরুদ্ধোহসৃজমাং বৈ । ব্রহ্মাণং লোকধারিণম্ ॥ ৬৯ ॥ বাসুদেব-  
মযঃ সোহহং হৃষৈবাস্মি বিনির্মিতঃ । বিভজ্য ভাগশোঅনং ব্রজ মানুষতাং  
বিভো ॥ ৭০ ॥ তত্রাসুরবধং কৃৎস্বা সৰ্বলোকসুখায় বৈ । ধর্মং স্থাপ্য যশঃ প্রাপ্য  
যোগং প্রাপ্যসি তদ্রতঃ ॥ ৭১ ॥ ত্বাং হি ব্রহ্মর্ষযো লোকে দেবাশ্চামিতবিক্রম ।  
তৈস্তৈঃ সৈর্মামভিভক্তা গায়ন্তি পরমাঅকম্ ॥ ৭২ ॥ স্থিতাশ্চ সর্বে ত্বয়ি ভূতসংঘাঃ  
কৃৎস্বাশ্রয়ং ত্বাং বরদং সুবাহো । অনাদিমধ্যান্তমপারযোগং লোকস্য সেতুং প্রব-  
দন্তি বিপ্রাঃ ॥ ৭৩ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি বিশ্বেপাখ্যানেনে দ্বিষষ্টি-

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৬২ ॥



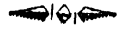
ভীষ্ম উবাচ । ততঃ স ভগবান্দেবো লোকানামীশ্বরেশ্বরঃ । ব্রহ্মাণং প্রত্যুবা-  
চেদং স্নিগ্ধগস্তীরযা গিরা ॥ ১ ॥ বিদিতং তাত যোগায়ে সৰ্বমেতত্তবেপ্সিতম্ ।  
তথা তদ্ভবিতেন্ত্যক্ত্বা তত্রৈবান্তরধীয়ত ॥ ২ ॥ ততো দেবর্ষিগন্ধর্বা বিস্ময়ং পরমং  
গতাঃ । কৌতূহলপরাঃ সর্বে পিতামহমথাক্রবন্ ॥ ৩ ॥ কো ন্বয়ং যো ভগবতা  
প্রণম্য বিনযাদ্বিভো । বাগ্ধিঃ স্তুতো বরিষ্ঠাভিঃ শ্রোতুমিচ্ছান তং বয়ম্ ॥ ৪ ॥ এব-  
মুক্তস্ত ভগবান্ প্রত্যুবাচ পিতামহঃ । দেবদেবর্ষিগন্ধর্বান্ সর্বান্ মধুরযা গিরা ॥ ৫ ॥  
যত্তৎ পরং ভবিষ্যৎ ভবিতা যচ্চ যৎপরম্ । ভূতান্মা যঃ প্রভুশ্চৈব ব্রহ্ম যচ্চ পরং  
পদম্ ॥ ৬ ॥ তেনাস্মি কৃতসম্বাদঃ প্রসম্মেন সুরর্ষভাঃ । জগতোহনুগ্রহার্থায় যা-  
চিতো মে জগৎপতিঃ ॥ ৭ ॥ মানুষং লোকমার্তিষ্ঠ বাসুদেব ইতি শ্রুতঃ । অসু-  
রাণাং বধার্থায় সস্তবস্ব মহীতলে ॥ ৮ ॥ সংগ্রামে নিহতা যে তে দৈত্যদানবরা-  
ক্ষসাঃ । ত ইমে নৃষু সন্তুতা ঘোররূপা মহাবলাঃ ॥ ৯ ॥ তেষাং বধার্থং ভগবান্ন-  
রেণ সহিতো বলী । মানুষীং যোনিমাস্থায় চরিষ্যতি মহীতলে ॥ ১০ ॥ নরনারা  
যণৌ যৌ তৌ পুরাণাবৃষিসত্তমৌ । অজেযৌ হি রুণে যন্তৌ সমেতৈরমরৈরপি ॥ ১১ ॥  
সহিতৌ মানুষে লোকে সন্তুতাবমিতদ্যুতী । মুঢ়াস্তুতৌ ন জানন্তি নরনারাযণাবৃ-  
ষী ॥ ১২ ॥ যস্যাহমাঅজঃ পুত্রঃ সর্বস্য জগতঃ পতিঃ । বাসুদেবোহর্চনীযো বঃ  
সৰ্বলোকমহেশ্বরঃ ॥ ১৩ ॥ তথা মনুষ্যোহযমিতি কদাচিত্ সুরসত্তমাঃ । নাবজ্ঞেযো  
মহাবীর্য্যঃ শঙ্খচক্রগদাধরঃ ॥ ১৪ ॥ এতৎ পরমকং গুহ্যমেতৎ পরমকং পদম্ । এতৎ

परमकं ब्रह्म एतत् परमकं यशः ॥ १५ ॥ एतदक्षयमव्यक्तमेतच्छाश्वतमेव च ।  
 यत्तत् पुरुषसंज्ञत्वं वै गीयते ज्ञायते न च ॥ १६ ॥ एतत् परमकं तेज एतत्  
 परमकं सुखम् । एतत् परमकं सत्यं कीर्तितं विश्वकर्माणां ॥ १७ ॥ तस्मात्  
 सुरासुरैः सर्षैः सैश्रेष्ठाभितविक्रमः । नावज्जेयो वासुदेवो मानुसोऽयमिति  
 प्रभुः ॥ १८ ॥ यश्च मानुषमात्रोऽयमिति बुधाः सुमन्दधीः । हवीकेशमक्लिप्तानात्तमाहः  
 पुरुषाधमम् ॥ १९ ॥ यं योगिनं महात्मानं प्रविष्टं मानुषीशुभम् । अवमन्ये-  
 दासुदेवं तमाहस्तामसं जनाः ॥ २० ॥ देवं चराचरात्मानं श्रिवत्साङ्गं सुवर्च-  
 सम् । पद्मनाभं न जानाति तमाहस्तामसं जनाः ॥ २१ ॥ किरीटकौस्तुभधरं  
 मित्राणामभयकरम् । अवजानन्महात्मानं घोरे तमसि मज्जति ॥ २२ ॥ एवं विदित्वा  
 तद्वार्थं लोकानामीश्वरेश्वरः । वासुदेवो नमस्कार्यः सर्वलोकैः सुरोत्तमाः ॥ २३ ॥  
 एवमुक्त्वा स भगवान् सर्षिदेवगणान् पुरा । विसृज्य सर्वभूतानि जगाम भवनं  
 स्वकम् ॥ २४ ॥ ततो देवाः सगन्धर्वा मुनयोऽप्सरसोऽपि च । कथां तां ब्रह्मणा  
 गीतां श्रुत्वा प्रीता दिवं ययुः ॥ २५ ॥ एवं श्रुतं यथा तात हवीणां भाविता-  
 त्मनाम् । वासुदेवं कथयतां समवाये पुरातनम् ॥ २६ ॥ जामदग्न्यस्य रामस्य मार्क-  
 ङ्घेयस्य धीमताः । व्यासनारदयोश्चापि श्रुतं श्रुतविशारदाः ॥ २७ ॥ एतम-  
 र्थं विज्ञाय श्रुत्वा च प्रभुमव्ययम् । वासुदेवं महात्मानं लोकानामीश्वरं  
 प्रभुम् ॥ २८ ॥ यस्य स्यादात्तुजो ब्रह्मा सर्वस्य जगतः पिता । कथं न वासुदेवोऽ-  
 यमर्च्यश्चेज्यश्च मानवैः ॥ २९ ॥ वारितोऽसि पुरा तात मुनिभिर्भावितान्निभिः ।  
 मा गच्छ संयुगं तेन वासुदेवेन ध्विना ॥ ३० ॥ पाण्डवैः सार्क्षमिति यत्तद्वत्  
 मोहान् बुध्यसे । मन्ये ह्यं राक्षसं क्रूरं तथा चासि तमोवृतः ॥ ३१ ॥ यस्मा-  
 द्द्विषसि गोविन्दं पाण्डवम् धनञ्जयम् । नरनारायणो देवो कोऽन्यो द्विष्याद्वि  
 मानवः ॥ ३२ ॥ तस्माद्भुवीमि ते राजन्नेषोऽसौ शाश्वतोऽव्ययः । सर्वलोकमयो  
 नित्यः शास्ता धाता धरो ध्रुवः ॥ ३३ ॥ लोकान् धारयते यस्त्रींश्चराचरगुरुः प्रभुः ।  
 योक्ता जयश्च जेता च सर्वप्रकृतिरीश्वरः ॥ ३४ ॥ राजन् सत्त्वमयो ह्येष तमोर-  
 ज्जिविर्जितः । यतः क्रुशस्ततो धर्मो यतो धर्मस्ततो जयः ॥ ३५ ॥ तस्य महात्मा-  
 योगेन योगेनात्ममयेन च । धृताः पाण्डुसूता राजन् जयश्चेषां भविष्यति ॥ ३६ ॥  
 श्रेष्योयुक्तां सदा बुद्धिं पाण्डवानां ददाति यः । बलकापि रणे नित्यं तथेभ्य-  
 श्चैव रक्षति ॥ ३७ ॥ स एष शाश्वतो देवः सर्वभूतमयः शिवः । वासुदेव इति  
 प्रोक्तो यस्मात् पृच्छसि भारत ॥ ३८ ॥ ब्राह्मणैः क्लिष्टैर्षैः शूद्रैश्च कृत-

লক্ষণৈঃ । সেব্যতেহভ্যর্চ্যতে চৈব নিত্যযুক্তৈঃ স্কর্ষণভিঃ ॥ ৩৯ ॥ দ্বাপরস্য যুগ-  
স্যান্তে আদৌ কলিযুগস্য চ । সাত্ততং বিধিমাংস্বাঘ গীতঃ স্কর্ষণেন যঃ ॥ ৪০ ॥  
স এষ সর্বং সুরমর্ত্যলোকং সমুদ্রকক্ষান্তরিতাঃ পুরীশ্চ । যুগে যুগে মানুষ্যৈশ্চৈব  
বাসং পুনঃ পুনঃ সৃজতে বিশ্বকর্মা ॥ ৪১ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বনি ভীষ্মবধপর্বনি বিশ্বেশ্বাপাখ্যানেন

ত্রিষষ্ঠিতমোঃধ্যায়ঃ ॥ ৬৩ ॥

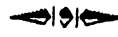


দুর্যোধন উবাচ । বাসুদেবো মহাভূতঃ সর্বলোকেষু কথ্যতে । তস্যাগমং প্রতি-  
ষ্ঠাঞ্চ জ্ঞাতুমিচ্ছে পিতামহ ॥ ১ ॥ ভীষ্ম উবাচ । বাসুদেবো মহাভূতঃ সর্বদৈবতদৈ-  
বতম্ । ন পরং পুণ্ডরীকাকাদৃশ্যতে ভরতর্ষভ । মার্কণ্ডেয়শ্চ গোবিন্দে কথয়ত্য-  
ভূতং মহৎ ॥ ২ ॥ সর্বভূতানি ভূতান্না মহান্না পুরুষোহব্যয়ঃ । আপো বায়ুশ্চ  
তেজশ্চ ত্রয়মেতদকল্পযৎ ॥ ৩ ॥ স সৃষ্টি পৃথিবীন্দেবঃ সর্বলোকেশ্বরঃ প্রভুঃ । অঙ্গু-  
বৈ শযনং চক্রে মহান্না পুরুষোত্তমঃ । সর্বভেজোময়ো দেবো যোগাৎ সুষ্মাপ তত্র  
হ ॥ ৪ ॥ মুখতঃ সোহগ্নিমসৃজৎ প্রাণাদ্বায়ুমথাপি চ । সরস্বতীঞ্চ বেদাংশ্চ বাসু-  
দেবো মহামনাঃ ॥ ৫ ॥ এবং লোকান্ সমজ্জাদৌ দেবাংশ্চর্ষিগণৈঃ সহ । নিধ-  
নশ্চৈব মৃত্যুঞ্চ প্রজানাং প্রভবাহপ্যযৌ ॥ ৬ ॥ এষ ধর্ম্মশ্চ ধর্ম্মান্না বরদঃ সর্বকা-  
মদঃ । এষ কর্তা চ কার্য্যঞ্চ পূর্দেবঃ স্বয়ং প্রভুঃ ॥ ৭ ॥ ভূতং ভব্যং ভবিষ্যঞ্চ  
পূর্দেবতদকল্পযৎ । উভে সন্ধ্যে দিশঃ খঞ্চ নিযমঞ্চ জনার্দনঃ ॥ ৮ ॥ ঋষীংশ্চৈব চ  
গোবিন্দস্তপশ্চৈবাপ্যকল্পযৎ । প্রজাপতিঞ্চ সৃষ্টারং বরদঃ প্রভুরব্যয়ঃ ॥ ৯ ॥ অজ-  
যং সর্বভূতানাং স্কর্ষণমকল্পযৎ । শেষঞ্চাকল্পযদেবমনস্ত ইতি যং বিদুঃ ॥ ১০ ॥  
যো ধারয়তি ভূতানি ধরাঞ্চেনাং সপর্ষতাম্ । ধ্যানযোগেন বিপ্রাশ্চ তং বিদস্তি  
মহৌজসঃ ॥ ১১ ॥ কর্ণশ্চোতোভবঞ্চাপি মধুং নাম মহৌজসম্ । তমুগ্রমুগ্রকর্মাণমু-  
গ্রাং বুদ্ধিং সমাশ্রিতম্ । ব্রহ্মণোহপচিতিং যান্তুং জঘান পুরুষোত্তমঃ ॥ ১২ ॥ তস্য  
তাত বধাদেব দেবদামবমানুষাঃ । মধুসূদনমিত্যাহুর্ঋষযশ্চ জনার্দনম্ ॥ ১৩ ॥  
বরাহশ্চৈব সিংহশ্চ ত্রিবিক্রমগতিঃ প্রভুঃ । এষ মাতা পিতা চৈব সর্বেষাং প্রাণি-  
নাং হরিঃ । পরং হি পুণ্ডরীকাক্ষম ভূতং ন ভবিষ্যতি ॥ ১৪ ॥ মুখতোহজনয-  
দ্বিপ্রান্ বাহুভ্যাং ক্ষত্রিয়াংস্তথা । বৈশ্যাংশ্চাপ্যুরুতো রাজন্ শূদ্রান্ পাদাতথৈব  
চ ॥ ১৫ ॥ তপসা নিযতো দেবং বিধানং সর্বদেহিনাম্ । ব্রহ্মভূতমম্বাস্যাং পৌর্ণ-  
মাস্যাং তথৈব চ । যোগভূতং পরিচরন্ কেশবং মহদাপ্নুযাৎ ॥ ১৬ ॥ কেশবঃ

परमं तेजः सर्वभूतजगत्पतिः । एवमाहृषीकेशं मुनयो वै नराधिप ॥ ११ ॥  
 एतमेव विजानीयादाचार्यं पितरं गुरुम् । कृष्णो यस्य प्रसीदेत लोकास्ते-  
 नाकृष्या जिताः ॥ १८ ॥ यश्चेत्तैव न भयस्थाने केशवं शरणं व्रजेत् । सदा नरः  
 पठंश्चेदं स्वस्तिमान् स सुखी भवेत् ॥ १९ ॥ ये च कृष्णं प्रपद्यन्ते न ते मुह्यन्ति  
 मानवाः । भये महति मग्नांश्च त्राति नित्यं जनार्दनः ॥ २० ॥ एवुं युधिष्ठिरो  
 ज्ज्ञात्वा यथातथ्येन भारत । सर्वात्मना महाभागं केशवं जगदीश्वरम् । प्रपन्नः  
 शरणं राजन् योगानामीश्वरं प्रभुम् ॥ २१ ॥

इति तीर्थवधपर्वणि तीर्थवधपर्वणि विश्वोपाख्याने

चतुःषष्टितमोऽध्यायः ॥ ७४ ॥



तीर्थ उवाच । शृणु चेदं महाराज ब्रह्मभूतं स्तवं मम । ब्रह्मर्षिभिश्च देवैश्च  
 यः पुरा कथितो भुवि ॥ १ ॥ साध्यानामपि देवानां देवदेवेश्वरः प्रभुः । लोक-  
 भावनभावज्ज इति ह्यं नारदोऽब्रवीत् ॥ २ ॥ भूतं भव्यं भविष्यं मार्कण्डे-  
 योऽभ्युवाच ह । यज्जानांश्चैव यज्जं ह्यं तपश्च तपसामपि ॥ ३ ॥ देवानामपि  
 देवश्च ह्यमाह भगवान् भृशुः । पुराणंश्चैव परमं विष्णो रूपं तवेति च ॥ ४ ॥  
 वासुदेवो वसूनां ह्यं शक्रश्चापयिता तथा । देवदेवोऽसि देवानामिति द्वैपा-  
 यनोऽब्रवीत् ॥ ५ ॥ पूर्वे प्रजापतेः सर्गे दक्षमाहः प्रजापतिम् । सुर्कारं सर्व-  
 भूतानामङ्गिरास्तु तथाब्रवीत् ॥ ६ ॥ अव्यक्तं ते शरीरं व्यक्तं ते मनसि  
 स्थितम् । देवानां सन्तवश्चेति देवलस्तुसितोऽब्रवीत् ॥ ७ ॥ शिरसा ते दिवं  
 व्याप्तुं बाह्वभ्यां पृथिवी धृता । जठरं ते त्रयो लोकाः पुरुषोऽसि सनातनः ।  
 एवं ह्यमभिजानन्ति तपसा भाविता नराः ॥ ८ ॥ आत्मादर्शनतृप्तानामृषीणामसि  
 सन्तमः । राजर्षीणामुदारानामाहवेष्टनिवर्तिनाम् । सर्वधर्मप्रधानानां ह्यङ्गतिर्धुसू-  
 दन ॥ ९ ॥ इति नित्यं योगविद्धिर्भगवान् पुरुषोत्तमः । सनत्कुमारप्रमुथैः  
 स्तुयतेऽत्यर्च्यते हरिः ॥ १० ॥ एष ते विस्तुरस्तात संक्षेपश्च प्रकीर्तितः । केश-  
 वस्य यथातद्वत् सुप्रीतो भज केशवम् ॥ ११ ॥ सञ्जय उवाच । पुण्यं श्रुत्वेतदा-  
 ख्यानं महाराज सुतस्तव । केशवं बहूमेने स पाण्डवांश्च महारथान् ॥ १२ ॥ तम-  
 त्रवीण्यहाराज तीर्थः शान्तनवः पुनः । माहात्म्यं ते श्रुतं राजन् केशवस्य महा-  
 त्मनः ॥ १३ ॥ नरस्य च यथातद्वत् यन्मां ह्यं परिपृच्छसि । यदर्थं नृभू सन्तुतो नर-  
 नारायणवृत्तौ ॥ १४ ॥ अवधेऽसि च यथा वीरौ संयुगेऽपराजितौ । यथा च पाण्डवा

রাজম্ববধ্য। যুধি কস্যচিৎ ॥ ১৫ ॥ প্রীতিমান্ হি দৃঢ়ং ক্রুঞ্চঃ পাণ্ডবেষু যশস্বিনু ।  
তস্মাদ্ধুবীমি রাজেন্দ্র শমো ভবতু পাণ্ডবৈঃ ॥ ১৬ ॥ পৃথিবীং ভুঙ্কু সহিতো ভ্রাতৃ-  
ভির্হলিভির্হশী । নরনারাষণৌ দেবাববজ্জাষ বিনঙ্ক্যসি ॥ ১৭ ॥ এবমুক্ত্বা তব  
পিতা, তুষ্ণীমাসীদ্বিশাম্পতে । ব্যসর্জর্ষচ্চ রাজানং শযনঞ্চ বিবেশ হ ॥ ১৮ ॥  
রাজাপি শিরিরং প্রায়াৎ প্রণিপত্য মহাত্মনে । শিষ্যে চ শযনে দিব্যে তাং রাত্রিৎ  
স নরর্ষভঃ ॥ ১৯ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি বিশ্বেোপাখ্যানে  
পঞ্চষষ্টিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৬৫ ॥



সঞ্জয় উবাচ । ব্যুধিতাষাঞ্চ শর্ষর্যামুদিতে চ দিবাকরে । উভে সেনে মহারাজ  
যুদ্ধাযৈব সমীযতুঃ ॥ ১ ॥ অভ্যধাবংশ্চ সংক্রুদ্ধাঃ পরস্পরজিগীষবঃ । তে সর্বে  
সহিতা যুদ্ধে সমালোক্য পরস্পরম্ ॥ ২ ॥ পাণ্ডবা ধার্ত্তরাষ্ট্রাশ্চ রাজন্ দুর্মুখিত্তে  
তব । ব্যূহৌ চ ব্যূহ সন্নদ্ধাঃ সংপ্রহৃষ্টাঃ প্রহারিণঃ ॥ ৩ ॥ অরক্ষ্মকরব্যূহং ভীষ্মো  
রাজন্ সমস্ততঃ । তথৈব পাণ্ডবা রাজম্বরক্ষন্ ব্যূহমাত্মনঃ ॥ ৪ ॥ স নির্যযৌ রথা-  
নীকৈঃ পিতা দেবত্র তস্তব । মহতা রথবংশেন সংবৃত্তো রথিনাম্বরঃ ॥ ৫ ॥ ইতরে  
চান্বয়ুঃ সর্বে যথাস্থানমবস্থিতাঃ । রথিনঃ পত্তয়শ্চৈব দস্তিনঃ সাদিনস্তথা ॥ ৬ ॥  
তান্ দৃষ্ট্বা প্রোদ্যতাঃ সংখে্য পাণ্ডবাশ্চ যশস্বিনঃ । শ্যেনেন ব্যূহরাজেন তেনা-  
জয্যেন সংযুগে ॥ ৭ ॥ অশোভত মুখে তস্য ভীমসেনো মহাবলঃ । নেত্রে শিখণ্ডী  
দুর্দ্ধর্যো ধৃষ্টদ্যুম্নশ্চ পার্ষতঃ ॥ ৮ ॥ শীর্ষে তস্যাতবদ্বীরঃ সাত্যকিঃ সত্যবিক্রমঃ ।  
বিধুম্বন্ গাণ্ডিবং পার্থো গ্রীবাযামভবত্তদা ॥ ৯ ॥ অক্ষৌহিন্যা চ পাঞ্চাল্যো বামঃ  
পক্ষোহভবত্তদা । মহাত্মা দ্রুপদঃ শ্রীমান্ সহ পুল্লেণ সংযুগে ॥ ১০ ॥ দক্ষিণশ্চাত-  
বৎ পক্ষঃ কৈকেযোহক্ষৌহিনীপতিঃ । পৃষ্ঠতো দ্রৌপদেযাশ্চ সৌভদ্রশ্চাপি বীর্য-  
বান্ ॥ ১১ ॥ পৃষ্ঠে সমভবচ্ছীমান্ স্বয়ং রাজা যুধিষ্ঠিরঃ । ভ্রাতৃত্যাং সহিতো বীরো  
যমাত্যাং চারুবিক্রমঃ ॥ ১২ ॥ প্রবিশ্য তু রণে ভীমো মকরং মুখতস্তদা । ভীষ্মমা-  
সাদ্য সংগ্রামে ছাদযামাস শাষকৈঃ ॥ ১৩ ॥ ততো ভীষ্মো মহাস্ত্রাণি পাতযামাস  
বীর্যবান্ । মোহয়ন্ পাণ্ডুপুত্রাণাং ব্যূহং সৈন্যং মহাহবে ॥ ১৪ ॥ সংযুহতি তদা  
সৈন্যে ত্বরমাণো ধনঞ্জয়ঃ । ভীষ্মং শরসহস্রেণ বিব্যাধ রণমুর্দ্ধনি ॥ ১৫ ॥ প্রতিস-  
ন্ধ্যায চাস্ত্রাণি ভীষ্মমুক্তানি সংযুগে । স্বেনানীকেন হর্ষেণ যুদ্ধায সমবস্থিতঃ ॥ ১৬ ॥



ततो दुर्योधनो राजा भारद्वाजमभाषत । पूर्वं दृष्ट्वा वधं योरं बलस्य बलिना-  
 स्वरः ॥ ११ ॥ ब्राह्मणां वधं संख्ये स्वरमाणो महारथः । आचार्य्य सततं द्वं हि  
 हितकामो ममानघ ॥ १८ ॥ वयं हि द्वां समाश्रित्य भीष्मैव पितामहम् ।  
 देवानपि रणे जेतुं प्रार्थयामो न संशयः ॥ १९ ॥ किमु पाण्डुसुतान् युद्धे हीन-  
 वीर्यपराक्रमान् । स तथा कुरु भद्रं ते यथा वध्यस्ति पाण्डवाः ॥ २० ॥ एवमुक्तस्ततो  
 द्रोणस्तव पुत्रेण संयुगे । अभिनं पाण्डवानीकं प्रेक्षमाणस्य सात्यकेः ॥ २१ ॥  
 सात्यकिश्च ततो द्रोणं वारयामास भारत । तयोः प्रवृत्ते युद्धं योरकंपं  
 भयानकम् ॥ २२ ॥ शैनेयस्तु रणे क्रुद्धो भारद्वाजः प्रतापवान् । अविध्यदशभि-  
 र्बाणैर्जत्रदेशे स्मयन्निव ॥ २३ ॥ भीमसेनस्ततः क्रुद्धो भारद्वाजमविध्यत । संर-  
 क्कन् सात्यकिं राजन् द्रोणाच्छत्रभृताम्बरां ॥ २४ ॥ ततो द्रोणश्च भीष्मश्च तथा  
 शल्यश्च मारिष । भीमसेनं रणे क्रुद्धाश्छादयात्क्रिरे शरैः ॥ २५ ॥ ततो हति-  
 मन्त्र्यः संक्रुद्धो द्रौपदेयाश्च मारिष । विविधुर्निशितैर्बाणैः सर्वांस्तान्मुद्यतायु-  
 धान् ॥ २६ ॥ द्रोणभीष्मौ तु संक्रुद्धावापतन्तौ महाबलौ । प्रत्यूक्षयो शिखण्डी  
 च महेश्वामो महाहवे ॥ २७ ॥ प्रगृह्य बलवद्दीरो धनुर्जलदनिश्चनम् । अत्यवर्ष-  
 छरैस्तूर्णं छादयानो दिवाकरम् ॥ २८ ॥ शिखण्डिनं तथामाद्य भरतानां पिता-  
 महः । अवर्ज्जयत संग्रामे स्त्रीद्वं तस्यानुसंस्मरन् ॥ २९ ॥ ततो द्रोणो महाराज  
 अभ्यद्रवत तं रणे । रक्कमाणस्तदा भीष्मं तव पुत्रेण चोदितः ॥ ३० ॥ शिखण्डी तु  
 समासाद्य द्रोणं शस्त्रभृताम्बरं । अवर्ज्जयत संव्रुष्टो युगान्ताग्निबोल्बनम् । ३१ ॥  
 ततो बलेन महता पुलस्तव विशाम्पते । जुगोप भीष्ममासाद्य प्रार्थयानो मह-  
 क्षणः ॥ ३२ ॥ तथैव पाण्डवा राजन् पुरस्कृत्य धनञ्जयम् । भीष्ममेवात्यवर्तन्तु जये  
 क्रुद्धा दृष्ट्वां मतिम् ॥ ३३ ॥ तद्व्यक्तमभवद्वेषारं देवानां दानवैरिव । जयमाशं-  
 सतां संख्ये यशश्च सुमहाद्भुतम् ॥ ३४ ॥

इति भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि पञ्चमदिवसयुक्कारभुते

षट्षष्टितमोऽध्यायः ॥ ७७ ॥



सञ्जय उवाच । अकरोत्तुमुलं युद्धं भीष्मः शान्तनवस्तदा । भीमसेनभयादिच्छन्  
 पुल्लान्स्तराधितुं तव ॥ १ ॥ पूर्वाह्ने तन्महारौद्रं राज्ञां युद्धमवर्तत । कुरुणां  
 पाण्डवानां मुख्याशूरविनाशनम् ॥ २ ॥ तस्मिन्नाकुलसंग्रामे वर्तमाने महाभये ।

অভবত্তুমুলঃ শকঃ সংস্পৃশন্ গগণং মহৎ ॥ ৩ ॥ নদন্তিচ্চ মহানাটৈর্হেষমাটৈশ্চ  
 বাজিভিঃ । ভেরীশঙ্খনিদৈশ্চ তুমুলং সমপদ্যত ॥ ৪ ॥ যুযুৎসবস্তে বিক্রান্তা  
 বিজযাষ মহাবলাঃ । অন্যান্যমভিগজ্জন্তো গোষ্ঠেষু বৃষভা ইব ॥ ৫ ॥ শিরসাং  
 পাত্যমানানাং সমরে নিশিতৈঃ শরৈঃ । অশ্ববৃষ্টিরিবাকাশে বভুব ভরতর্ষভ ॥ ৬ ॥  
 কুণ্ডলোক্ষীষুধারীণি জাতকপোজ্বলানি চ । পতিতানি স্ম দৃশ্যন্তে শিরাংসি ভর-  
 তর্ষভ ॥ ৭ ॥ বিশিখোন্নথিতৈর্গাত্রৈঃ শিরোভিচ্চ সকুণ্ডলৈঃ । সহস্তাভরণৈশ্চা-  
 ন্যৈরভবচ্ছাদিতা মহী ॥ ৮ ॥ কবচোপহিতৈর্গাত্রৈর্হস্তৈশ্চ সমলকৃতৈঃ । মুখৈশ্চ  
 চন্দ্রসংকাশৈ রক্তান্তনয়নৈস্তথা ॥ ৯ ॥ গজবাজিমনুষ্যাণাং সর্বগাত্রৈশ্চ ভূপতে ।  
 আসীৎ সর্বা সমাকীর্ণা মুহূর্তেন বসুন্ধরা ॥ ১০ ॥ রজোমেঘৈশ্চ তুমুলৈঃ শস্ত্রবি-  
 দ্যুৎপ্রকাশিভিঃ । আযুধানাঞ্চ নির্যোষঃ স্তনযিত্ত্বসমোহভবৎ ॥ ১১ ॥ স সংপ্রহার-  
 স্তমূলঃ কটুকঃ শোণিতোদকঃ । প্রাবর্ত্তত কুৰ্ণাঞ্চ পাণ্ডবানাঞ্চ ভারত ॥ ১২ ॥  
 তস্মিন্নহাভযে ঘোরে তুমুলে লোমহর্ষণে । ববর্ষুঃ শরজালানি ক্ষল্লিষা যুদ্ধদুর্ম-  
 দাঃ ॥ ১৩ ॥ প্রাক্রোশন্ কুঞ্জরাশ্চাত্র শরবর্ষপ্রপীড়িতাঃ । তাবকানাং পরেষাঞ্চ  
 সংযুগে ভরতোত্তম ॥ ১৪ ॥ সংরক্তানাং নৃবীরাণাং বীরাণামতিতেজসাম্ । ধনুর্জ্যা-  
 তলযোষণে ন প্রাজ্জায়ত কিঞ্চন ॥ ১৫ ॥ উখিতেষু কবন্ধেষু সর্বতঃ শোণিতোদকে ।  
 অপরে পর্য্যধাবন্ত নৃপা রিপুবধোদ্যতাঃ ॥ ১৬ ॥ শরশক্তিগদাভিচ্চ খজ্জৈশ্চামিত-  
 তেজসঃ । নিজঘ্নুঃ সমরেহন্যান্যং শূরাঃ পরিঘবাহবঃ ॥ ১৭ ॥ বভ্রমুঃ কুঞ্জরাশ্চাত্র  
 শরৈর্বিদ্ধা নিরঙ্কশাঃ । অশ্বাশ্চ পর্য্যধাবন্ত হতারোহা দিশো দশ ॥ ১৮ ॥ উৎপত্য  
 নিপতন্ত্যন্যে শরঘাতপ্রপীড়িতাঃ । তাবকানাং পরেষাঞ্চ যোধানাং ভরতর্ষ-  
 ভ ॥ ১৯ ॥ বাহুনামুত্তমাঙ্গানাং কাশ্মুকানাঞ্চ ভারত । গদানাং পরিঘাণাঞ্চ হস্তানাং  
 চোরুভিঃ সহ ॥ ২০ ॥ পাদানাং ভূষণানাঞ্চ কেয়ুরাণাঞ্চ সর্বশঃ । রাশযশ্চাত্র  
 দৃশ্যন্তে ভীষ্মভীমসমাগমে ॥ ২১ ॥ অশ্বানাং কুঞ্জরাণাঞ্চ রথানাঞ্চানিবর্ত্তিনাম্ ।  
 সংঘাতাঃ স্ম প্রদৃশ্যন্তে তত্র তত্র বিশা স্পতে ॥ ২২ ॥ গদাভিরসিভিঃ প্রাসৈর্বাটৈ-  
 শ্চানতপর্ষভিঃ । জঘ্নুঃ পরস্পরং তত্র ক্ষল্লিষাঃ কালচোদিতাঃ ॥ ২৩ ॥ অপরে  
 বাহুভির্বিরা নিযুদ্ধকুশলা যুধি । বহুধা সমসজ্জন্ত আযসৈঃ পরিঘৈরিব ॥ ২৪ ॥ মুষ্টি-  
 তির্জান্নভিশ্চৈব তলৈঃ কীলৈর্বিশাস্পতে । অন্যান্যং জঘ্নিরে বীরাস্তাবকাঃ পা-  
 ণ্ডবৈঃ সহ ॥ ২৫ ॥ পতিতৈঃ পাত্যমানৈশ্চ বিচেষ্টন্তিচ্চ ভূতলে । ঘোরমাযোধনং  
 জজ্ঞে তত্র তত্র নরেশ্বর ॥ ২৬ ॥ বিরথা রথিনশ্চাত্র নিস্ত্রং শবরধারিণঃ । অন্যা-  
 ন্যমভ্যধাবন্ত পরস্পরবধৈষিণঃ ॥ ২৭ ॥ ততো দুর্যোধনো রাজা কালিঙ্গৈর্ষভিঃ

वृतः । पुरस्कृत्य रणे भीष्मं पाण्डवान्भवर्तत ॥ २८ ॥ तथैव पाण्डवाः सर्वे परि-  
वार्य वृकोदरम् । भीष्ममभ्यद्रवन् क्रुद्धा रणे रतसवाहनाः ॥ २९ ॥

इति भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि सकूलयुद्धे सप्तषष्टि-

तमोऽध्यायः ॥ ७१ ॥



सङ्गम उवाच । दृष्ट्वा भीष्मेण संयुक्तान् ब्रातृनन्यांश्च पार्थिवान् । समभ्यधाव-  
काङ्क्षेयमुद्यतास्त्रो धनङ्गयः ॥ १ ॥ पाङ्कजन्यस्य निर्घोषं धनुषो गाण्डीवस्य च ।  
ध्वजं दृष्ट्वा पार्थस्य सर्वाम्ना भयमाविशत् ॥ २ ॥ सिंहलाङ्गलमाकाशे ज्वलन्तमिव  
पर्वतम् । असज्जमानं वृक्षेषु धूमराशिमिवोत्थितम् ॥ ३ ॥ बह्वर्णं चित्रं दिव्यं  
वानरलक्षणम् । अपश्याम महाराज ध्वजं गाण्डीवध्वनः ॥ ४ ॥ विद्युत् मेघमध्यस्थां  
ब्राह्मणांमिवास्त्रे । ददृशुर्गाण्डीवं योधा रूक्मपृष्ठं महामुधे ॥ ५ ॥ आशु-  
क्रम भृशंशस्य शक्रस्येवाभिगच्छतः । सुघोरं तलयोः शकं निम्नतस्तव बाहि-  
नीम् ॥ ६ ॥ चण्डवातो यथा मेघः सविद्युत्स्तनयित्नुमान् । दिशः संप्लावयामास  
शरवर्षैः समस्ततः ॥ ७ ॥ अभ्यधावत गाङ्क्षेयं तैरवास्त्रो धनङ्गयः । दिशं प्राचीं  
प्रतीचीं न जानीमोऽस्त्रमोहिताः ॥ ८ ॥ कान्दिग्दुताः श्रान्तपत्रा हताश्वा हत-  
चेतसः । अन्योन्यमभिसंश्लिष्य योधास्ते भरतर्षभ ॥ ९ ॥ भीष्मेवाभ्यलीयन्तु  
सह सर्वैस्तवास्त्रजैः । तेषामार्त्तायनमभ्रुद्धीष्मः शास्तनवो रणे ॥ १० ॥ समुत्पतन्ति  
विक्रान्ता रथेभ्यो रथिनस्तदा । सादिनश्चाश्वपृष्ठेभ्यो भूमौ चापि पदातयः ॥ ११ ॥  
श्रद्धा गाण्डीवनिर्घोषं विस्फूर्जितमिवाशनेः । सर्वसैन्यानि भीतानि व्यावलीयन्तु  
भारत ॥ १२ ॥ अथ काञ्चोज्जैरश्वैर्म्महद्भिः शीघ्रगामिभिः । गोपानां बहूना-  
हसैर्बलैर्गोपायनैर्वृतः ॥ १३ ॥ मद्रसोवीरगान्कारैस्त्रैर्गर्भैश्च विशाम्पते ।  
सर्वकालिङ्गमुत्थैश्च कलिङ्गाधिपतिः सह ॥ १४ ॥ नानानरगणौघैश्च दुःशासनपुर-  
सरः । जयद्रथश्च नृपतिः सहितः सर्वराजभिः ॥ १५ ॥ हयारोहवराशैश्च तव पुल्लेण  
चोदिताः । चतुर्दशसहस्राणि सौबलं पर्यवारयन् ॥ १६ ॥ ततस्ते सहिताः सर्वे  
विभक्तुरथवाहनाः । पाण्डवाः समरे जग्मुस्तावकान् भरतर्षभ ॥ १७ ॥ रथिभिर्भार-  
णैरश्वैः पादातैश्च समीरितम् । घोरमायोधने जजेत महान्मुसदृशं रजः ॥ १८ ॥  
तोमरप्रामनाराचगङ्गाश्वरथयोधिनाम् । बलेन महता भीष्मः समसज्जत् किरीटि-  
ना ॥ १९ ॥ आवस्त्यः काशिराजेन भीमसेनेन सैन्धवः । अजातशत्रुर्म्मद्राणामृष-  
तेण यशस्विना ॥ २० ॥ सहपुत्रः सहामात्यः शल्येन समसज्जत । विकर्णः सहदेवेन

চিত্রসেনঃ শিখণ্ডিনা ॥ ২১ ॥ মৎস্য্য দুৰ্য্যোধনং জগ্নুঃ শকুনিঞ্চ বিশাম্পতে ।  
 দ্রুপদশ্চেকিতানশ্চ সাত্যকিঞ্চ মহারথঃ ॥ ২২ ॥ দ্রোণেন সমসজ্জস্ত সপুল্লেন মহা-  
 স্মনা । রূপশ্চ কৃতবর্মা চ ধৃষ্টকেতুমভিধ্রুতো ॥ ২৩ ॥ এবং প্রজ্বিতাশ্বানি ভ্রান্ত-  
 নাগরথানি চ । সমসজ্জস্ত বৃন্দানি তত্র তত্র সমন্ততঃ ॥ ২৪ ॥ নিরন্ত্রে বিদ্যুতস্তীত্রা  
 দিশশ্চ রজসু বৃত্তাঃ । প্রাদুরাসন্ মহোক্ষাশ্চ সনির্ঘাতা বিশাম্পতে ॥ ২৫ ॥ প্রাদু-  
 র্ভতো মহাবাতঃ পাংশুবর্ষং পপাত চ । নভস্যন্তর্দধে সূর্য্যঃ সৈন্যেন রজসা  
 বৃত্তঃ ॥ ২৬ ॥ প্রমোহঃ সর্বভূতানামতীব সমপদ্যত । রজসা চাভিভূতানামস্তজা-  
 লৈশ্চ যুধ্যতাম্ ॥ ২৭ ॥ বীরবাহুবিসৃষ্টানাং সর্বা বরণভেদিনাম্ । সংহৃদঃ শর-  
 জালানা মতীব সমপদ্যত ॥ ২৮ ॥ প্রকাশঞ্চক্রুরাকাশমুদ্যতানি ভুজোত্তমৈঃ ।  
 নক্ষত্রবিমলাভানি শস্ত্রাণি ভরতর্ষভ ॥ ২৯ ॥ আর্ষভাণি বিচিত্রাণি রুক্ষজালাবৃ-  
 তানি চ । সংপেতুর্দিক্ষু সর্বাশু চক্ষ্মাণি ভরতর্ষভ ॥ ৩০ ॥ সূর্য্যবর্গৈশ্চ নিস্ত্রিংশৈঃ  
 পাত্যমানানি সর্ষশঃ । দিক্ষু সর্বাশ্বদৃশ্যস্ত শরীরানি শিরাংসি চ ॥ ৩১ ॥ ভগ্নচ-  
 ক্রাক্ষনীডাশ্চ নিপাতিতমহাধ্বজাঃ । হতাশ্বাঃ পৃথিবীং জগ্নুস্তত্র তত্র মহার-  
 থাঃ ॥ ৩২ ॥ পরিপেতুর্হযাস্তত্র কেচিচ্ছস্ত্রকৃতব্রণাঃ । রথান্ বিপরিকর্ষন্তো হতেষু  
 রথযোধিষু ॥ ৩৩ ॥ শরাহতা ভিন্নদেহা বন্ধযোত্রা হযোত্তমাঃ । যুগানি পর্য্যকর্ষন্ত  
 তত্র তত্র হি ভারত ॥ ৩৪ ॥ অদৃশ্যস্ত সসূতাশ্চ মাশ্বাঃ সরথযোধিনঃ । একেন  
 বলিনা রাজন্ বারণেন হতা রণে ॥ ৩৫ ॥ গন্ধং হস্তিমদসু্যবমাঘ্যায় বহবো রণে ।  
 সন্নিপাতে বলৌঘানাং বাতমাদদিরে গজাঃ ॥ ৩৬ ॥ সতোরণমহামাত্রৈঃ পতন্তি  
 গতাসুভিঃ । বভুবাযোধনং ছন্নং নারাচাতিহতৈর্গজৈঃ ॥ ৩৭ ॥ সন্নিপাতে বলৌ-  
 ঘানাং চোদিতৈর্বারবারণৈঃ । নিপেতুর্যুধি সংভগ্নাঃ সযোধাঃ সধ্বজা গজাঃ ॥ ৩৮ ॥  
 নাগরাজোপমৈর্হ স্তৈর্নাগৈরাক্ষিপ্য সংযুগে । ব্যদৃশ্যস্ত মহারাজ সংভগ্নরথকুব-  
 রাঃ ॥ ৩৯ ॥ বিশীর্ণরথজালাশ্চ কেশেষাক্ষিপ্য দন্তিভিঃ । ক্রমশাখা ইবা-  
 বিধ্য নিস্পিষ্টা রথিনো রণে ॥ ৪০ ॥ রথেষু চ রথান্ যুদ্ধে সংযুক্তা বরবারণাঃ ।  
 বিকর্ষন্তো দিশঃ সর্বাঃ সংপেতুঃ সর্ষশকগাঃ ॥ ৪১ ॥ তেষাং তথা কর্ষতাঞ্চ গজা-  
 নাং রূপমাবভৌ । সরঃসু নলিনীজালং বিষক্তমিব কর্ষতাম্ ॥ ৪২ ॥ এবং সঞ্জা-  
 দিতং তত্র বভুবাযোধনং মহৎ । সাদিতিশ্চ পদাংগৈশ্চ সধ্বজৈশ্চ মহারথৈঃ ॥ ৪৩ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি সঙ্কলযুদ্ধে অর্ঘ্যবর্ষি-

তমোঃধ্যায়ঃ ॥ ৬৮ ॥



सञ्जय उवाच । शिखण्डी सह मत्स्येन विराटेन विशाम्पते । भीष्ममाशु महेष्वा-  
 समाससाद सुदुर्जयम् ॥ १ ॥ द्रोणं रूपं विकर्णं महेष्वासाम्हावलान् । राज्ञश्चा-  
 न्यानुणे शूरान् बहूनाच्छङ्कनञ्जयः ॥ २ ॥ सैन्धवश्च महेष्वासं सामात्यं सह बन्धुभिः ।  
 प्राच्यांश्च दक्षिणात्यांश्च भूमिपान् भूमिपर्वत ॥ ३ ॥ पुल्लश्च ते महेष्वासं  
 दुर्योधनममर्षणम् । दूःसहस्रैश्च समरे भीमसेनोऽभ्यवर्तत ॥ ४ ॥ सहदेवस्तु शकु-  
 निमूलकश्च महारथम् । पितापुत्रौ महेष्वासोऽभ्यवर्तत दुर्जयो ॥ ५ ॥ युधिष्ठिरो  
 महाराज गजानीकं महारथः । समवर्तत संग्रामे पुल्लेण निरूतस्तव ॥ ६ ॥  
 माद्रीपुत्रस्तु नकुलः शूरः संक्रन्दनो युधि । त्रिगर्भानां रथोदारैः समसज्जत  
 पाण्डवः ॥ ७ ॥ अभ्यवर्तस्तु दुर्क्षवाः समरे शाल्वकेकयान् । सात्यकिश्चैकितानश्च  
 सौभद्रश्च महाबलः ॥ ८ ॥ धृष्टकेतुश्च समरे राक्षसश्च घटोत्कचः । पुल्लानां ते  
 रथानीकं प्रत्यूक्ष्यतुराहवे ॥ ९ ॥ सेनापतिरमेष्वात्मा धृष्टद्युम्नो महारथः । द्रो-  
 णेन समरे राजन् समियायोगकर्म्मणा ॥ १० ॥ एवमेते महेष्वासान्स्तावकाः पाण्डवैः  
 सह । समेत्य समरे शूराः संग्रहणं प्रचक्रिरे ॥ ११ ॥ मध्यन्दिनगते सूर्ये नभ-  
 स्याकुलतां गते । कुरवः पाण्डवेषाश्च निजघ्नुरितरेतरम् ॥ १२ ॥ धृजिनो हेमचि-  
 त्राङ्गा विचरन्तो रणार्जिरे । सपताका रथारेजुर्बैषाण्यपरिवारणाः ॥ १३ ॥ समेताना-  
 नाश्च समरे जिगीषुणां परस्परम् । बभूव तुमूलः शक्रः सिंहानामिव गज्जताम् ॥ १४ ॥  
 तत्राद्भुतमपश्याम संग्रहणं सुदारुणम् । यदकुर्वन्नुणे वीराः सृञ्जयाः कुरूभिः  
 सह ॥ १५ ॥ नैव खं न दिशो राजन् सूर्यां शत्रुतापन । विदिशो वाप्यपश्याम  
 शरैर्न्मुक्तैः समस्ततः ॥ १६ ॥ शक्तीनां विमलाग्राणां तोमराणां तथास्यताम् ।  
 निस्त्रिंशानां पीतानां नीलोत्पलनिभाः प्रभाः ॥ १७ ॥ कवचानां विचित्राणां  
 भूषणानां प्रभास्तथा । खं दिशः प्रदिशश्चैव भाषयामासुरोजसा ॥ १८ ॥ वपु-  
 र्भिश्च नरेन्द्राणां चन्द्रसूर्यासमप्रभैः । विरराज तदा राजंस्तत्र तत्र रणाङ्ग-  
 नम् ॥ १९ ॥ रथसिंहा नरव्याघ्राः समायास्तश्च संयुगे । विरेजुः समरे राजन्  
 ग्रहा इव नभस्तले ॥ २० ॥ भीष्मस्तु रथिनां श्रेष्ठो भीमसेनं महाबलम् । अवा-  
 रयत संक्रुद्धः सर्वसैन्यस्य पश्यतः ॥ २१ ॥ ततो भीष्मविनिर्मुक्ता रूक्मपुत्र्याः  
 शिलाशिताः । अभ्यगन् समरे भीमं तैलधोताः सुतेजनाः ॥ २२ ॥ तस्य शक्तिं  
 महावेगां भीमसेनो महाबलः । क्रुद्धाशीविषसङ्काशां प्रेषयामास भारत ॥ २३ ॥  
 तामापतञ्छीं सहसा रूक्मदुगां दूरामदाम् । चिच्छेद समरे भीष्मः शरैः समतपर्व-  
 तैः ॥ २४ ॥ ततोऽपरेण भल्लेन पीतेन निशितेन च । कार्मुकं भीमसेनस्य

দ্বিধা চিচ্ছেদ ভারত ॥ ২৫ ॥ সাত্যকিস্ত ততস্তূর্ণং ভীষ্মমাসাদ্য সংযুগে । আকর্ণ-  
প্রহিতৈস্তীক্ষ্ণৈর্নিশিতৈস্তিগ্মতেজনৈঃ । শরৈর্বহুভিরানচ্ছৎ পিতরং তে জনেশ্ব-  
র ॥ ২৬ ॥ ততঃ সন্ধায় বৈ তীক্ষ্ণং শরং পরমদারুণম্ । বার্ষেয়স্য রথাস্তীষ্মঃ  
পাতয়ামাস সারথিম্ ॥ ২৭ ॥ তস্যাস্থাঃ প্রক্রতা রাজম্বিহতে রথসারথৌ । তেন  
তেনৈব ধাবন্তি মনোমারুতরং হসঃ ॥ ২৮ ॥ ততঃ সৈন্যস্য সর্বস্য নিশ্বনস্তমুলোহ-  
ভবৎ । হাহাকারশ্চ সংজ্জ্বেত পাণ্ডবানাং মহাত্মনাম্ ॥ ২৯ ॥ অভিদ্রবত গৃহীত  
হযান্ যচ্ছত ধাবত । ইত্যাসীত্তুমুলঃ শব্দো যুযুধানরথং প্রতি ॥ ৩০ ॥ এতস্মিমেব  
কালে তু ভীষ্মঃ শান্তনবস্তদা । অবধীৎ পাণ্ডবীং সেনামাসুরীমিব বৃত্রহা ॥ ৩১ ॥  
তে বধ্যমানা ভীষ্মেণ পাঞ্চালাঃ সোমকৈঃ সহ । আৰ্য্যাং যুদ্ধে মতিং কৃত্বা ভীষ্মমে-  
বাভিদুক্রবুঃ ॥ ৩২ ॥ ধৃষ্টদ্যুম্নমুখাশ্চাপি পার্থাঃ শান্তনবং রণে । অভ্যধাবন্ জি-  
ঘাৎসন্তস্তব পুলস্য বাহিনীম্ ॥ ৩৩ ॥ তথৈব তাবকা রাজন্ ভীষ্মদ্রোণমুখাঃ পরান্ ।  
অভ্যধাবন্ত বেগেন ততো যুদ্ধমবর্তত ॥ ৩৪ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বনি ভীষ্মবধপর্বনি ভীষ্মপরাক্রমে একোন-

সপ্ততিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৬৯ ॥

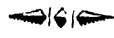


সঞ্জয় উবাচ । বিরাতোহথ ত্রিভির্বাণৈর্ভীষ্মমাচ্ছন্নহারথম্ । বিব্যাধ তুরগাং-  
শ্চাস্য ত্রিভির্বাণৈর্মহারথঃ ॥ ১ ॥ তং প্রত্যবিধ্যদশভির্ভীষ্মঃ শান্তনবঃ শরৈঃ । রুক্ম-  
পুত্রৈর্মহেশ্বাসঃ কৃতহস্তো মহাবলঃ ॥ ২ ॥ দ্রৌণির্গাণ্ডীবধন্বানং ভীমধন্বা মহাবলঃ ।  
অবিধ্যদিশুভিঃ ষড্ভির্দৃঢ়হস্তঃ স্তনান্তরে ॥ ৩ ॥ কাম্মুকং তস্য চিচ্ছেদ ফাল্লুনঃ  
পরবীরহা । অবিধ্যচ্চ ভৃশং তীক্ষ্ণঃ পত্রিভিঃ শত্রুকর্ষণঃ ॥ ৪ ॥ সোহন্যৎ কাম্মু-  
কমাদায় বেগবৎ ক্রোধমুচ্ছিতঃ । অমৃষ্যমাণঃ পার্থেন কাম্মুকচ্ছেদমাহবে ॥ ৫ ॥  
অবিধ্যৎ ফাল্লুনং রাজম্ববত্যা নিশিতৈঃ শরৈঃ । বাসুদেবঞ্চ সপ্তত্যা বিব্যাধ পরমে-  
যুভিঃ ॥ ৬ ॥ ততঃ ক্রোধাভিতাম্রাফঃ সহ ক্রুৎসে ফাল্লুনঃ । দীর্ঘমুষ্ণঞ্চ নিশ্বস্য  
চিস্তযিহ্না মুহুম্মুহুঃ ॥ ৭ ॥ ধনুঃ সংপীড়্য বামেণ করেণামিত্রকর্ষণঃ । গাণ্ডীবধন্বা  
সংক্রুদ্ধঃ শিতান্ সন্নতপর্ষণঃ ॥ ৮ ॥ জীবিতান্তকরান্ ঘোরান্ সমাধত্ত শিলীমুখান্ ।  
তৈস্তূর্ণং সমরেহবিধ্যদ্রৌণিৎ বলবতাং বরঃ ॥ ৯ ॥ তস্য তে কবচং ভিত্বা পপুঃ  
শোণিতমাহবে । ন বিব্যথে বিনির্ভিমৌ দ্রৌণির্গাণ্ডীবধন্বনা ॥ ১০ ॥ তথৈব চ  
শরান্ পার্থে প্রতিমুঞ্চম্বিস্বলঃ । তসৌ স সমরে রাজংস্ত্রাতুমিচ্ছন্নহারতম্ ॥ ১১ ॥  
তস্য তৎ সুমহৎ কর্ম শশংসুঃ কুরুসত্তমাঃ । যৎ কৃষাভ্যাং সমেতাভ্যামভ্যাপতত

संयुगे ॥ १२ ॥ स हि नित्यमनीकेषु युध्यते ह्यभयमास्थितः । अस्त्रग्रामं समं हारं  
 द्रोणां प्राप्य सुदुर्लभम् ॥ १३ ॥ ममाचार्यसूतो ह्येष द्रोणस्यापि प्रियः सूतः ।  
 ब्राह्मणश्च विशेषेण माननीयो ममेति च ॥ १४ ॥ समाहाय मतिं वीरो वीतसुः  
 शत्रूतापनः । रूपाक्षक्रे रथश्रेष्ठे । भारद्वाजसूतं प्रति ॥ १५ ॥ द्रोणिं त्यक्त्वा  
 ततो युद्धे कौश्लेयः श्वेतवाहनः । युद्धे तावकान्निघ्नं सुव्रमाणं पराक्रमी ॥ १६ ॥  
 दुर्योधनस्तु दशभिर्गाधुपत्रैः शिलाशितैः । भीमसेनं महेश्वरं रूक्मपुंश्चैः  
 समर्पयत् ॥ १७ ॥ भीमसेनस्तु संक्रुद्धः परासूकरं दृष्ट्वा । चित्रं कार्मुकमादत्त  
 शरांश्च निशितान् दश ॥ १८ ॥ आकर्णप्रहितैस्त्यैस्त्रैरेव गवद्विरजिह्वैः । अवि-  
 ध्यत्तूर्णमव्यग्रः कुरुराजं महोरसि ॥ १९ ॥ तस्य काष्णसूत्रस्तु शरैः परिवृतो  
 मणिः । रराजोरसि खे सूर्ये । ग्रहैरिव समवृतः ॥ २० ॥ पुलस्तु तव तेजस्यै  
 भीमसेनेन ताडितः । नागृष्यत यथा नागस्तलशकं समीरितम् ॥ २१ ॥ ततः शरै-  
 र्महाराज रूक्मपुंश्चैः शिलाशितैः । भीमं विव्याध संक्रुद्धस्त्रासयानो वक्रधि-  
 नीम् ॥ २२ ॥ तौ युध्यमानौ समरे भृशमन्योन्यविकृतौ । पुल्लो ते देवसङ्काशौ  
 व्यरोचेतां महाबलौ ॥ २३ ॥ चित्रसेनं नरव्याघ्रं सौभद्रः परवीरहा । अवि-  
 ध्यन्निशितैर्बाणैः पुरुमित्रं सप्तभिः ॥ २४ ॥ सत्यव्रतं सप्तत्या विद्ध्वा शक्रसमो  
 युधि । नृत्यन्निव रणे वीर आर्तिं नः समजीजनत् ॥ २५ ॥ तं प्रत्यविध्यदशभि-  
 श्चित्रसेनः शिलीमुखैः । सत्यव्रतश्च नवभिः पुरुमित्रश्च सप्तभिः ॥ २६ ॥ स विद्ध्वा  
 विष्करन् रक्तं शत्रुसंवारणं महत् । चिच्छेद चित्रसेनस्य चित्रं कार्मुकमाङ्गुलिः ।  
 भिद्ध्वा चाम्य तनुत्राणं शरणोरस्यताडयत् ॥ २७ ॥ ततस्तु तावका वीरा राज-  
 पुल्लो महारथाः । समेत्य युधि संरक्त्वा विव्याधुर्निशितैः शरैः । तांश्च सर्वान्  
 शरैस्त्यैस्त्रैर्जघान परमास्त्रविः ॥ २८ ॥ तस्य दृष्ट्वा तु तं कर्म परिवक्रः सूता-  
 स्तव । दहन्तुं समरे षोधांस्तव कर्म यथोत्पन्नम् । अपेतशिशिरे काले समिद्ध-  
 मिव पावकम् ॥ २९ ॥ अभ्यरोचत सौभद्रस्तव सैन्यानि शतवन् ॥ ३० ॥ तन्नस्य  
 चरितं दृष्ट्वा पौत्रस्तव विशाम्पाते । लक्ष्मणोऽप्यपततूर्णं सावृतीपुत्रमाहवे ॥ ३१ ॥  
 अभिमन्युस्तु संक्रुद्धो लक्ष्मणं शुभलक्षणम् । विव्याध विशिथैः षड्भिः सारथिभ्य-  
 त्रिभिः शरैः ॥ ३२ ॥ तथैव लक्ष्मणो राजन् सौभद्रं निशितैः शरैः । अवि-  
 ध्यत महाराज तदद्भुतमिवाभवत् ॥ ३३ ॥ तस्याश्वांश्चतुरो हत्वा सारथिभ्यं महा-  
 रथः । अभ्यद्रवत सौभद्रो लक्ष्मणं निशितैः शरैः ॥ ३४ ॥ हताश्वे तु रथे  
 तिष्ठन् लक्ष्मणः परवीरहा । शक्तिं चिक्षेप संक्रुद्धः सौभद्रस्य रथं प्रति ॥ ३५ ॥

তামাপতস্তীং সহসা ঘোররূপাং দুরাসদাম্ । অভিমন্যুঃ শরৈস্তীকৈশ্চিচ্ছেদ  
 ভুজগোপমাম্ ॥ ৩৬ ॥ ততঃ স্বরথমারোপ্য লক্ষণং গৌতমস্তদা । অপোবাহ  
 রথেনাজৌ সর্বসৈন্যস্য পশ্যতঃ ॥ ৩৭ ॥ ততঃ সমাকুলে তস্মিন্ বর্তমানে মহা-  
 ভয়ে । অভ্যদ্রবন্ জিঘাংসন্তঃ পরস্পরবধৈষিণঃ ॥ ৩৮ ॥ তাবকাশ্চ মহেষ্টাসাঃ  
 পাণ্ডবাশ্চ মহারথাঃ । জুহুতঃ সমরে প্রাণামিজঘুরিতরেতরম্ ॥ ৩৯ ॥ মুক্তকেশা  
 বিকবঁচা বিরথাশ্চিন্নকাস্মুকাঃ । বাহুভিঃ সমযুধ্যন্ত সৃঞ্জয়াঃ কুরুভিঃ সহ ॥ ৪০ ॥ ততো  
 ভীষ্মো মহাবাহুঃ পাণ্ডবানাং মহাত্মনাম্ । সেনাং জঘান সংক্রুদ্ধো দিব্যৈরস্ত্রের্ম-  
 হাবলঃ ॥ ৪১ ॥ হতেশ্বরৈর্গজৈস্তত্র নরৈরশ্শৈশ্চ পাতিতৈঃ । রথিভিঃ সাদিভি-  
 শ্চৈব সমাস্তীর্যত মেদিনী ॥ ৪২ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বনি ভীষ্মবধপর্বনি দ্বন্দ্বযুদ্ধে স্তম্ভতিমোহধ্যায়ঃ ॥ ৭০ ॥



সঞ্জয় উবাচ । অথ রাজমহাবাহুঃ সাত্যকিষুদ্ধদুর্মদঃ । বিক্রয্য চাপং সমরে  
 ভারসাধনমুত্তমম্ ॥ ১ ॥ প্রামুঞ্চৎ পুঙ্খসংযুক্তান শরানাশীবিষোপমান্ । প্রকাশং  
 লঘুচিত্রঞ্চ দর্শয়ন্ হস্তলাঘবম্ ॥ ২ ॥ তস্য বিক্ষিপ্তশ্চাপং শরানন্যাংশ্চ মুঞ্চতঃ ।  
 আদদানস্য ভূষশ্চ সন্দধানস্য চাপরান্ ॥ ৩ ॥ ক্ষিপ্তশ্চাপরাংস্তূর্ণং রণে শত্রূন  
 বিনিস্ততঃ । দদৃশে রূপমত্যর্থং মেঘস্যেব প্রবর্ষতঃ ॥ ৪ ॥ তমুদীর্যন্তমালোক্য রাজা  
 দুর্ঘোষণস্তদা । রথানামযুতং তস্য প্রেষয়ামাস ভারত ॥ ৫ ॥ তাংস্ত সর্ষামহে-  
 ষাসান্ সাত্যকিঃ সত্যবিক্রমঃ । জঘান পরমেষ্ঠাসো দিব্যেনাস্ত্রেণ বীর্যবান্ ॥ ৬ ॥  
 ন কৃৎস্বা দারুণং কৰ্ম্ম প্রগৃহীতশরাসনঃ । আসসাদ ততো বীরো ভুরিশ্রবসমাহ-  
 বে ॥ ৭ ॥ স হি সংদৃশ্য সেনান্তাং যুযুধানেন পীড়িতাম্ । অভ্যধাবত সংক্রুদ্ধঃ  
 কুরুণাং কীর্ত্তিবর্ধনঃ ॥ ৮ ॥ ইন্দ্রায়ুধসবর্ণস্ত স বিস্ফার্য্য মহদ্ধনুঃ । ব্যসৃজদ্বজসং-  
 কাশাঙ্কুরানাশীবিষোপমান্ । সহস্রশো মহারাজ দর্শয়ন্ পাণিলাঘবম্ ॥ ৯ ॥  
 শরাংস্তান্মৃত্যুসংস্পর্শান্ সাত্যকেস্ত পদানুগাঃ । ন বিবেহস্তদা রাজন্ দুঃক্রবস্তে সম-  
 স্ততঃ । বিহায় সমরে রাজন্ সাত্যকিং যুদ্ধদুর্মদম্ ॥ ১০ ॥ তং দৃষ্ট্বা যুযুধানস্য স্মৃতা  
 দশ মহাবলাঃ । মহারথাঃ সমাখ্যাতাশ্চিত্রবর্মাযুধধজাঃ ॥ ১১ ॥ সমাসাদ্য মহে-  
 ষাসং ভুরিশ্রবসমাহবে । উচুঃ সর্ষে স্তুসংরক্তা যুপকেতুং মহারণে ॥ ১২ ॥ ভো  
 ভোঃ কৌরবদাযাদ সহাস্মাভিস্মহাবল । এহি যুধ্যস্ব সংগ্রামে সমস্তেঃ পৃথগেব  
 বা ॥ ১৩ ॥ অস্মান্ বা ত্বং পরাজিত্য যশঃ প্রাপ্নুহি সংযুগে । বযং ত্বাং বা পরা-  
 জিত্য প্রীতিং দাস্যামহে পিতুঃ ॥ ১৪ ॥ এবমুক্তস্তদা শূরৈস্তানুবাচ মহাবলঃ ।



वीर्यशुशी नरश्रेष्ठो दूर्का वै समवस्थितान् ॥ १५ ॥ साध्विदं कथ्यते वीरा यद्येवम्  
 मतिरदय वः । युध्यन् संहिता यत्ना निहनिष्यामि वो रणे ॥ १६ ॥ एवमुक्त्वा महेश्वा-  
 सास्ते वीराः क्षिप्रकारिणः । महता शरवर्षेण अत्यवर्षन्नरिन्दमाः ॥ १७ ॥ अपराङ्क्षे  
 महाराज संग्रामस्तुमुलोत्भवत् । एकस्य च बहूनां समेतानां रणाजिरे ॥ १८ ॥  
 तमेकं रथिनां श्रेष्ठं शरैस्ते समवाकिरन् । प्रावृषीव यथा मेरुं सिषिचूर्जलदा  
 नृप ॥ १९ ॥ तैस्तु मुक्ताङ्गुरौघांस्तान् यमदंशनिप्रभान् । असंप्राप्तानसंभ्रा-  
 त्तुश्चिच्छेदांश्च महारथः ॥ २० ॥ तत्राद्भुतमपश्याम सौमदन्तेः पराक्रमम् । यदे-  
 को बह्विर्बुद्धे समसज्जदधीतवत् ॥ २१ ॥ विसृज्य शररुष्टिं तां दश राज्ञमहा-  
 रथाः । परिवार्य महाबाहू निहन्तुपचक्रुः ॥ २२ ॥ सौमदक्षिस्ततः क्रुद्धस्तेषां  
 चापानि भारत । चिच्छेद दशभिर्बाणैर्निमेषेण महारथः ॥ २३ ॥ अथैषां छिन्न-  
 धनुषां तल्लैः समतपस्वभिः । चिच्छेद समरे राजन् शिरांसि भरतर्षभ । ते हता  
 न्यपतन् भूमौ बज्ररुग्ना इव क्रमाः ॥ २४ ॥ तान् दूर्का निहतान् वीरानुणे पुत्रान्  
 महाबलान् । वार्ष्णेयो विन्दनाजन् भूरिश्रवसमत्यथा ॥ २५ ॥ रथं रथेन समरे  
 पीडयिष्वा महाबलो । तावन्योन्यास्य समरे निहत्य रथवाजिनः । विरथावतिबलग-  
 स्तो समेयातां महारथो ॥ २६ ॥ प्रगृहीतमहाखड्गो तो चर्मवरधारिणो ।  
 शुशुभ्राते नरव्याघ्रौ युद्धाय समवस्थितौ ॥ २७ ॥ ततः सात्यकिमत्येत्य निस्त्रिंश-  
 वरधारिणम् । भीमसेनस्त्रुरन् राजन्नुथमारोपयत्तदा ॥ २८ ॥ तवापि तनयो राजन्  
 भूरिश्रवसमाहवे । आरोपयद्भ्रथं तूर्णं पश्यातां सर्वध्विनाम् ॥ २९ ॥ तस्मिन्-  
 स्तथा वर्तमाने रणे भीष्मं महारथम् । अयोधयस्तु संरक्षाः पाण्डवा भरतर्षभ ॥ ३० ॥  
 लोहिताशति चादित्ये ह्यरमाणो धनञ्जयः । पञ्चविंशतिर्माहसुस्त्रिजघान महार-  
 थान् ॥ ३१ ॥ ते हि दुर्योधनादिर्कास्तदा पार्थनिवर्हणे । अप्राप्यैव गता नाशं  
 शलभा इव पावकम् ॥ ३२ ॥ ततो मत्स्याः केकयाश्च धनुर्बेदविशारदाः । परिवव्रु-  
 रणे पार्थं सहपुत्रं महारथम् ॥ ३३ ॥ जगामास्तुमथादित्यो रजोमेघैः समुत्थि-  
 तैः । सर्वेषामेव सैन्यानां प्रमोहः समपद्यत ॥ ३४ ॥ अवहारं ततश्चक्रे  
 पिता देवव्रतस्तव । सङ्क्राकाले महाराज सैन्यानां श्रावणवाहनः ॥ ३५ ॥ पाण्डवा-  
 नां कुरूणां परम्परसमागमे । ते सेने भ्रशमुद्दिग्ने ययतुः स्वं निवेशनम् ॥ ३६ ॥  
 ततः स्वशिविरं गत्वा न्यविशंस्तत्र भारत । पाण्डवाः सृष्टयैः सार्द्धं कुरवश्च यथा-  
 विधि ॥ ३७ ॥

\*

इति भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि पञ्चमदिवसयुद्धावहारे  
 एकसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ११ ॥

সঞ্জয় উবাচ। বিহত্য তে ততো রাজন্ সহিতাঃ কুরুপাণ্ডবাঃ। ব্যতীতাযাঞ্চ  
 শৰ্বর্য্যাং পুনর্যুদ্ধায় নির্যয়ুঃ ॥ ১ ॥ ততঃ শকো মহানাঙ্গীভব তেষাঞ্চ ভারত।  
 যুধ্যতাং রথমুখ্যানাং কল্যাতাঞ্চাপি দস্তিনাম্ ॥ ২ ॥ সমহতাং পদাতীনাং হযা-  
 নাঈব ভারত। শত্রুদুন্দুভিনাদাশ্চ তুমুলাঃ সৰ্বতোহভবন্ ॥ ৩ ॥ ততো যুধিষ্ঠিরো  
 রাজা ধৃষ্টদ্যুম্নমভাষত। ব্যূহং ব্যূহ মহাবাহো মকরং শত্রুতাপনম্ ॥ ৪ ॥ এবমু-  
 ক্তস্ত পার্থেন ধৃষ্টদ্যুম্নো মহারথঃ। ব্যাদিদেশ মহারাজ রথিনো রথিনাশ্বরঃ ॥ ৫ ॥  
 গিরোহভুদ্দুপদস্তস্য পাণ্ডবশ্চ ধনঞ্জয়ঃ। চক্ষুযী সহদেবশ্চ নকুলশ্চ মহারথঃ।  
 তুণ্ডমাসীন্মহারাজ ভীমসেনো মহাবলঃ ॥ ৬ ॥ সৌভদ্রো দ্রৌপদেযাশ্চ রাক্ষসশ্চ  
 ঘটোৎকচঃ। সাত্যকির্ধৰ্ম্মরাজশ্চ ব্যূহগ্রীবাং সমাস্থিতাঃ ॥ ৭ ॥ পৃষ্ঠমাসীন্মহারাজ  
 বিরাটো বাহিনীপতিঃ। ধৃষ্টদ্যুম্নেন সহিতো মহত্যা সেনযা বৃতঃ ॥ ৮ ॥ কৈকেয়া  
 ভ্রাতরঃ পঞ্চ বামং পক্ষং সমাশ্রিতাঃ। ধৃষ্টকেতুর্নরব্যাগ্রশ্চেকিতানশ্চ বীর্যবান্।  
 দক্ষিণং পক্ষমাশ্রিত্য স্থিতা ব্যূহস্য রক্ষণে ॥ ৯ ॥ পাদযোস্তু মহারাজ স্থিতঃ  
 শ্রীমান্ মহারথঃ। কুন্তিভোজঃ শতানীকো মহত্যা সেনযা বৃতঃ ॥ ১০ ॥ শিখণ্ডী  
 তু মহেষাসঃ সোমকৈঃ সম্বতো বলী। ইরাবাংশ্চ নৃপঃ পুচ্ছে মকরস্য ব্যবস্থি-  
 তো ॥ ১১ ॥ এবমেতং মহাব্যূহং ব্যূহ ভারত পাণ্ডবাঃ। সূর্য্যোদয়ে মহারাজ পুন-  
 র্যুদ্ধায় দংশিতাঃ ॥ ১২ ॥ কৌরবানভ্যযুস্তূর্ণং হস্ত্যশ্বরথপত্তিভিঃ। সমুচ্ছিতৈর্ধ-  
 জৈশ্ছত্রৈঃ শস্ত্রেশ্চ বিমলৈঃ শিতৈঃ ॥ ১৩ ॥ ব্যাচং দৃষ্ট্বা তু তৎ সৈন্যং পিতা দে-  
 বত্র তস্তব। ক্রোধেন মহতা রাজন্ প্রত্যব্যূহত বাহিনীম্ ॥ ১৪ ॥ তস্য তুণ্ডে মহে-  
 ষাসো ভারদ্বাজোহভ্যরোচত। অশ্বখামা রূপশ্চৈব চক্ষুরাস্তাং নরেশ্বর ॥ ১৫ ॥  
 রুতবর্মা তু সহিতঃ কাষ্যোজবরবাহ্লিকৈঃ। শিরস্যাসীন্নরশ্রেষ্ঠ শ্রেষ্ঠঃ সৰ্বধনুয়-  
 তাম্ ॥ ১৬ ॥ গ্রীবাঘাং শূরসেনস্ত তব পুত্রশ্চ ভারত। দুর্য্যোধনো মহারাজ রাজ-  
 ভির্বহ্তভির্বৃতঃ ॥ ১৭ ॥ প্রাগ্জ্যোতিষস্তু সহিতো মদ্রসৌবীরকেকটৈঃ। উরস্যভূমর-  
 শ্রেষ্ঠ মহত্যা সেনযা বৃতঃ ॥ ১৮ ॥ স্বসেনযা চ সহিতঃ সুশর্মা প্রস্থলাধিপঃ। বামং  
 পক্ষং সমাশ্রিত্য দংশিতঃ সমবস্থিতঃ ॥ ১৯ ॥ তুখারী যবনাসৈশ্চব শকাশ্চ সহ চ-  
 লিকৈঃ। দক্ষিণং পক্ষমাশ্রিত্য স্থিতা ব্যূহস্য দংশিতাঃ ॥ ২০ ॥ শ্রুতায়ুশ্চ শতা-  
 যুশ্চ সৌমদন্তিশ্চ মারিষ। ব্যূহস্য জঘনে তস্তু রক্ষমাণাঃ পরম্পরম্ ॥ ২১ ॥ ততো  
 যুদ্ধায় সংজগ্মুঃ পাণ্ডবাঃ কৌরবৈঃ সহ। সূর্য্যোদয়ে মহারাজ ততো যুদ্ধমভূম-  
 হৎ ॥ ২২ ॥ প্রতীযু রথিনো নাগান্ নাগাশ্চ রথিনো যযুঃ। হযারোহা হযারোহান্  
 রথিনশ্চাপি সাদিনঃ ॥ ২৩ ॥ সাদিনশ্চ রথানাজন্ কুঞ্জরাংশ্চ মহারণে। হস্ত্যা-

रोहानुथान् राजनुथिनश्चापि सादिनः ॥ २४ ॥ रथिनः पत्त्रिभिः सार्क्षं सादिनश्चापि  
 पत्त्रिभिः । अन्योन्यं समरे राजन् प्रत्यधावन्नमर्षिताः ॥ २५ ॥ भीमसेनाज्जूनयमै-  
 षुष्टा चानैर्महारथैः । शुशुभे पाण्डवी सेना नक्तैरिव शर्वरी ॥ २६ ॥ तथा भीम-  
 रूपद्रोणशल्यदुर्योधनादिभिः । तवापि विवभौ सेना ग्रहैर्देयैरिव संवृता ॥ २७ ॥  
 भीमसेनस्तु कौन्तेयो द्रोणं दृष्ट्वा पराक्रमी । अर्भयान्ज्जवनैरश्वैर्भारद्वाजस्य  
 बाहिनीम् ॥ २८ ॥ द्रोणस्तु समरे क्रुद्धो भीमं नवतिरायसैः । विव्याध समरे  
 राजन् मर्माण्युद्दिश्य वीर्यवान् ॥ २९ ॥ दृष्ट्वा हतस्ततो भीमो भारद्वाजस्य संयुगे  
 सारथिं प्रेषयामास यमस्य सदनं प्रति ॥ ३० ॥ स संगृह्य स्वयं वाहान् भारद्वाजः  
 प्रतापवान् । व्यधमं पाण्डवीं सेनां तूलराशिमिवानलः ॥ ३१ ॥ ते वध्यमाना  
 द्रोणेन भीष्मेण च नरोत्तम । सृष्ट्याः कैकयैः सार्क्षं पलायनपराभवन् ॥ ३२ ॥  
 तथैव तावकं सैन्यं भीमाज्जूनपरिष्कृतम् । मूमोह तत्र तत्रैव समदेव वराङ्ग-  
 ना ॥ ३३ ॥ अभिद्येतां ततो व्यूहो तस्मिन् वीरवरक्षये । आसीद्यतिकरो  
 घोरस्तव तेषां भारत ॥ ३४ ॥ तदद्भुतमपश्याम तावकानां परैः सह । एका-  
 यनगताः सर्वे यद्युध्यन्तु भारत ॥ ३५ ॥ प्रतिसन्नाय चास्त्राणि तेहन्योन्यस्य विशा-  
 म्पते । युयुधुः पाण्डवाश्चैव कौरवाश्च महाहवे ॥ ३६ ॥

इति भीमपर्वणि भीमवधपर्वणि षष्ठदिवसयुद्धारम्भे

द्विसप्ततितमोऽध्यायः ॥ १२ ॥



धृतराष्ट्र उवाच ॥ एवं बहुगुणं सैन्यमेव बहुविधं परम् । व्यूहमेव यथा  
 शास्त्रममोषशैव सङ्गम ॥ १ ॥ तुर्मन्माकमत्यन्तमभिकामक्ष नः सदा । प्रह्वमव्य-  
 मनोपेतं पुरस्ताद्दृष्टविक्रमम् ॥ २ ॥ नातिवृद्धमबालं न कृशं न च पीवरम् । लघु-  
 वृत्तायतप्रायं सारगात्रमनामयम् ॥ ३ ॥ आतसन्नाहसम्पन्नं बहुशस्त्रपरिग्रहम् ।  
 असियुद्धे नियुद्धे च गदायुद्धे च कोविदम् ॥ ४ ॥ प्रासक्तिं तोमरेष्वार्जो परि-  
 षेष्वायसेषु च । भिन्दिपालेषु शक्तीषु युषलेषु च सर्वशः ॥ ५ ॥ कम्पनेषु च चा-  
 पेक्षु कणपेषु च सर्वशः । क्षेपणेषु विचित्रेषु युक्तियुद्धेषु च क्षमम् ॥ ६ ॥ अप-  
 रोकक्षं विद्यासु व्यायामे च कृतश्रमम् । शस्त्रग्रहणविद्यासु सर्वासु परिनिष्ठितम् ॥ ७ ॥  
 आरोहे पर्यवस्कन्दे सरणे सान्तरङ्गते । सम्यक्प्रहरणे याने व्यपयाने च को-  
 विदम् ॥ ८ ॥ नागाश्वरथयानेषु बहुशः सुपरीक्षितम् । परीक्ष्य च यथान्यायं वे-  
 तनेनोपपादितम् ॥ ९ ॥ न गोष्ठ्या नोपकारेण न मयस्कनिमित्ततः । न सो-

হৃদবলেনাপি ন কুলীনপরিগ্রহৈঃ ॥ ১০ ॥ সমৃদ্ধজনমার্ষ্যঞ্চ তুচ্ছসংকৃতবান্ধ-  
বম্ । ক্রতোপকারভূষিষ্ঠং যশস্বি চ মনস্বি চ ॥ ১১ ॥ সজবৈশ্চ নরৈর্মুখৈথ্যবহ্-  
শো মুখ্যকর্মভিঃ । লোকপালোপনৈস্তাত পালিতং লোকবিশ্রুতৈঃ ॥ ১২ ॥ বহু-  
ভিঃ ক্ষত্রিযৈশ্চ পুং পৃথিব্যাং লোকসম্মতৈঃ । অস্মানভিগতৈঃ কামাং সবলেঃ  
সপদান্নুগৈঃ ॥ ১৩ ॥ মহোদধিমিধাপূর্ণমাপগাভিঃ সমন্ততঃ । অপক্লেঃ পক্ষিসং-  
কাশৈ রথৈর্নানৈগৈশ্চ সংবৃতম্ ॥ ১৪ ॥ নানাযোধজলং ভীমং বাহনোশ্মিতরঞ্জি-  
গম্ । ক্ষেপণ্যসিগদাশক্তিশরপ্রাসসমাকুলম্ ॥ ১৫ ॥ ধ্বজভূষণসম্বাধং রত্নপটমু-  
সঞ্চিতম্ । বাহনৈঃ পরিধাবন্তির্বাযুবেগবিকম্পিতম্ ॥ ১৬ ॥ অপারমিব গজ্জন্তুং  
সাগরপ্রতিমং মহৎ । দ্রোণভীষ্মাভিসঙ্গুপ্তং গুপ্তঞ্চ কৃতবস্মণা ॥ ১৭ ॥ রূপদুঃশা-  
সনাভ্যাঞ্চ জঘদ্রথমুখৈস্তথা । ভগদভবিকর্ণাভ্যাং দ্রৌণিসৌবলবাহ্নিকৈঃ ॥ ১৮ ॥  
গুপ্তং প্রবীরৈর্লোকস্য সারবন্দির্মহাত্মভিঃ । যদহন্যত সংগ্রামে দিষ্টমত্র পুরা-  
তনম্ ॥ ১৯ ॥ নৈতাদৃশং সমুদ্যোগং দৃষ্টবস্তোহথ মানুষাঃ । ঋষযো বা মহা-  
ভাগাঃ পুরাণা ভুবি সঞ্জঘ ॥ ২০ ॥ ঈদৃশোহপি বলৌঘস্ত যুক্তঃ শাস্ত্রার্থসম্পদা ।  
বধ্যতে যত্র সংগ্রামে কিমন্যদ্ভাগধেয়তঃ ॥ ২১ ॥ বিপরীতমিদং সর্বং প্রতিভা-  
তি স্ম সঞ্জঘ । যত্রেদৃশং বলং ঘোরং নাতরক্ষুধি পাণ্ডবান্ ॥ ২২ ॥ অথ বা পাণ্ড-  
বার্থায় দেবাস্তত্র সমাগতাঃ । যুধ্যন্তে মামকং সৈন্যং যথা বধ্যতি সঞ্জঘ ॥ ২৩ ॥  
উক্কো হি বিদুরেণেহ হিতং পথ্যঞ্চ নিত্যশঃ । ন চ গৃহ্ণাতি তস্মন্দঃ পুরো দুর্ঘো-  
ধনো মম ॥ ২৪ ॥ তস্য মন্যে মতিঃ পূর্বং সর্বজ্জস্য মহাত্মনঃ । আসীদ্যথাগতং  
ভাত যেন দৃষ্টমিদং পুরা ॥ ২৫ ॥ অথ বা ভাব্যমেবং হি সঞ্জঘৈতেন সর্বথা । পুরা  
ধাত্রা যথা সৃষ্টং তত্রথা ন তদন্যথা ॥ ২৬ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি ধৃতরাষ্ট্রচিন্তায়াং ত্রিসপ্ততি

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৭৩ ॥



সঞ্জঘ উবাচ । আত্মদোষাত্ত্বয়া রাজন্ প্রাপ্তং ব্যসনমীদৃশম্ । ন হি দুর্ঘোষণ-  
স্তানি পশ্যতে ভরতর্ষভ । যানি ত্বং দৃষ্টবান্নাজন্ ধর্মসঙ্করকারিতে ॥ ১ ॥ তব  
দোষাৎ পুরা বৃত্তং দ্যুতমেতদ্বিশাম্পতে । তব দোষণে যুদ্ধঞ্চ প্রবৃত্তং সহ পাণ্ড-  
বৈঃ ॥ ২ ॥ ত্বমেবাদ্য ফলং ভুঙ্কু রুহ্মা কিম্বিষমাশ্বনঃ । আত্মনৈব কৃতং কর্ম আত্ম-  
নৈবোপভূজ্যতে ॥ ৩ ॥ ইহ বা প্রেত্য বা রাজন্ ত্বয়া প্রাপ্তং যথাতথম্ । তস্মাদ্রা-  
জন্ স্থিরো ভূহ্মা প্রাপ্যেদং ব্যসনং মহৎ । শূণু যুদ্ধং যথাবৃত্তং শংসতো মম মা-

রিষ ॥ ৪ ॥ ভীমসেনঃ স্ননিশিতৈর্বাণৈর্ভিদ্ধা মহাচমুং । আসসাদ ততো বীরঃ  
 সর্বান্ দুৰ্য্যোধনানুজান্ ॥ ৫ ॥ দুঃশাসনং দুর্বিষহং দুর্শ্মদং দুঃসহং জয়ম্ । জয়-  
 সেনং বিকর্ণঞ্চ চিত্রসেনং সুদর্শনম্ ॥ ৬ ॥ চারুচিত্রং সুধর্মাণং দুর্কর্ণং কর্ণমেব চ ।  
 এতানন্যাংশ্চ সুবহূন্ সমীপস্থান্ মহারথান্ ॥ ৭ ॥ ধাৰ্ত্তরাষ্ট্রান্ সুসংক্রুদ্ধান্ দৃষ্ট্বা  
 ভীমো মহাবলঃ । ভীম্বেণ সমরে গুপ্তাং প্রবিবেশ মহাচমুং ॥ ৮ ॥ অথালোক্য  
 প্রবিষ্টমুচুস্তে সর্ব এব তু । জীবগ্রাহং নিগৃহীমো বযমেতং নরাধিপাঃ ॥ ৯ ॥  
 স তৈঃ পরিবৃতঃ পার্থো ভ্রাতৃভিঃ কৃতনিশ্চয়ৈঃ । প্রজাসংহরণে সূর্য্যঃ ক্রুরৈরিব মহা-  
 গ্রহৈঃ ॥ ১০ ॥ সংপ্রাপ্য মধ্যং ব্যুহস্য ন ভীঃ পাণ্ডবমাবিশৎ । যথা দেবাসুরে যুদ্ধে  
 মহেন্দ্রং প্রাপ্য দানবান্ ॥ ১১ ॥ ততঃ শতসহস্রাণি রথিনাং সর্বশস্ত্রিণাম্ । উদ্যতানি  
 শরৈর্যৌরৈস্তমেকমনু বব্রিরে ॥ ১২ ॥ স তেষাং প্রবরান্ যোধান্ হস্ত্যশ্বরথসাদিনঃ ।  
 জঘান সমরে শুরো ধাৰ্ত্তরাষ্ট্রানচিন্তয়ন্ ॥ ১৩ ॥ তেষাং ব্যবসিতং জ্ঞাত্বা ভীম-  
 সেনো জিঘৃক্ষতান্ । সমস্তানাং বধে রাজন্ মতিং চক্রে মহাবলঃ ॥ ১৪ ॥ ততো  
 রথং সমুৎসৃজ্য গদামাদায পাণ্ডবঃ । জঘান ধাৰ্ত্তরাষ্ট্রাণাং তং বলৌঘমহার্ণ-  
 বম্ ॥ ১৫ ॥ ভীমসেনে প্রবিষ্টে তু ধৃষ্টদ্যুম্নোহপি পার্ষতঃ । দ্রোণমুৎসৃজ্য তরসা প্র-  
 যযৌ যত্র সৌবলঃ ॥ ১৬ ॥ নিবার্য মহতীং সেনাং তাবকানাং নরর্ষভঃ । আসসাদ  
 রথং শূন্যং ভীমসেনস্য সংযুগে ॥ ১৭ ॥ দৃষ্ট্বা বিশোকং সমরে ভীমসেনস্য সার-  
 থিম্ । ধৃষ্টদ্যুম্নো মহারাজ দুর্শ্মনা গতচেতনঃ ॥ ১৮ ॥ অপৃচ্ছদ্বাম্পসংরুদ্ধো নিঃশ্বসন্  
 বাচনীরযন্ । মম প্রাণৈঃ প্রিযতমঃ ক্ব ভীম ইতি দুঃখিতঃ ॥ ১৯ ॥ বিশোকস্তমুবা-  
 চেদং ধৃষ্টদ্যুম্নং ক্রুতাজ্জলিঃ । সংস্থাপ্য মামিহ বলী পাণ্ডবঃ সুমহাবলঃ ॥ ২০ ॥  
 প্রবিষ্টো ধাৰ্ত্তরাষ্ট্রাণামেকো বলমহার্ণবম্ । মামুক্ত্বা পুরুষব্যায়ু প্রীতিযুক্তমিদং  
 বচঃ ॥ ২১ ॥ প্রতিপালয় মাং সূত নিযন্যাশ্বান্ মুহূর্তকম্ । যাবদেতান্ নিহন্যাদ্য য  
 ইমে মদ্বধোদ্যতাঃ ॥ ২২ ॥ ততো দৃষ্ট্বা গদাহস্তং প্রধাবস্তং মহাবলম্ । সর্বেষামেব  
 সৈন্যানাং সংহর্ষঃ সমজাযত ॥ ২৩ ॥ তস্মিন্ স্ততুমুলে যুদ্ধে বর্তমানে মহাতযে ।  
 ভিদ্ধা রাজন্ মহাব্যুহং প্রবিবেশ সখা তব ॥ ২৪ ॥ বিশোকস্য বচঃ শ্রুত্বা ধৃষ্ট-  
 দ্যুম্নোহপি পার্ষতঃ । প্রত্যুবাচ ততঃ সূতং রণমধ্যে মহাবলঃ ॥ ২৫ ॥ ন হি মে  
 জীবিতেনাপি বিদ্যতেহদ্য প্রযোজনম্ । ভীমসেনং রণে হিদ্ধা স্নেহমুৎসৃজ্য পাণ্ড-  
 বৈঃ ॥ ২৬ ॥ যদি যামি বিনা ভীমং কিং মাং ক্রত্ৰং বদিষ্যতি । একাযনগতে  
 ভীমে মঘি চাবস্থিতে যুধি ॥ ২৭ ॥ অস্বস্তি তস্য কুর্ষন্তি দেবাঃ শক্রপুরোগমাঃ ।  
 যঃ মহাযান্ পরিত্যজ্য স্বস্তিমানাত্রজেদাহান্ ॥ ২৮ ॥ স মে ভীমঃ সখা চৈব

সম্বন্ধী চ মহাবলঃ । ভক্কো মে ভক্তিমাংশ্চাহং তস্মিন্নরি নিসূদনে ॥২৯॥ সোহহং  
 তত্র গমিষ্যামি যত্র যাতে বৃকোদরঃ । নিম্নস্তং মাং রিপুন্ পশ্য দানবানিব বাস-  
 বম্ ॥ ৩০ ॥ এবমুক্ত্বা ততো বীরো যযৌ মথ্যেন ভারত । ভীমসেনস্য মাৰ্গেষু  
 গদাপ্রমথিতৈর্গজৈঃ ॥ ৩১ ॥ স দদর্শ তদা ভীমং দহস্তং রিপুর্বাহিনীম্ । বাতং  
 বৃক্ষানিব বহুন্ প্রভঞ্জস্তং রণে নৃপান্ ॥ ৩২ ॥ তে হন্যমানাঃ সমরে রথিনঃ  
 সাদিনস্তথা । পদাতা দস্তিনশ্চৈব চক্রুরার্তস্বরং মহৎ ॥ ৩৩ ॥ হাহাকারশ্চ  
 সংজ্ঞে তব সৈন্যস্য মাৰিষ । বধ্যতো ভীমসেনেন কুতিনা চিত্রযোধিনা ॥ ৩৪ ॥  
 ততঃ কৃতাস্ত্রাস্তে সর্বে পরিবার্য্য বৃকোদরম্ । অতীতাঃ সমকুর্ষন্ত শস্ত্রবৃষ্টিং সম-  
 স্ততঃ ॥ ৩৫ ॥ অতিক্রতং শস্ত্রভূতাং বরিষ্ঠং সমস্ততঃ পাণ্ডবং লোকবীরং ।  
 সৈন্যেন যোরেণ স্মসংহতেন দৃষ্ট্বা বলী পার্ষতো ভীমসেনম্ ॥ ৩৬ ॥ অথোপ-  
 গচ্ছচ্ছরবিক্ষতাস্তং পদাতিনং ক্রোধবিষং বনস্তম্ । আশ্বাসয়ন পার্ষতো ভীম-  
 সেনং গদাহস্তং কালমিবাস্তুকালে ॥ ৩৭ ॥ নিঃশল্যমেনঞ্চ চকার তুর্গমারোপয-  
 চ্চাত্মরথে মহাত্মা । ভূশং পরিষজ্য চ ভীমসেনমাশ্বাসয়ামাস চ শত্রুমধ্যে ॥ ৩৮ ॥  
 ভ্রাতুনথোপেত্য তবাপি পুত্রস্তস্মিন্ বিমর্দে সহসাত্মাবাচ । অযং দুরাত্মা দ্রুপ-  
 দস্য পুত্রঃ সমাগতো ভীমসেনেন সার্কম্ । তং যাম সর্বে সহিতা নিহন্তং মা নো  
 রিপুঃ প্রার্থযতামনীকম্ ॥ ৩৯ ॥ শত্র্বাথ বাক্যং তনমৃষ্যমাণা জ্যেষ্ঠাজ্ঞয়া চোদিতা  
 ধার্ত্তরাষ্ট্রাঃ । বধ্যয নিশ্চেষ্টুরুদায়ুধাস্তে যুগক্ষেযে কেতবো যদ্বদুগ্রাঃ ॥ ৪০ ॥ প্র-  
 গৃহ চিত্রাণি ধনুংবি বীরা জ্যানেমিষোেষঃ প্রবিকম্পযস্তঃ । শরৈরবর্ষন্ দ্রুপ-  
 দস্য পুত্রং যথায়ুদা ভুধরং বারিজালৈঃ ॥ ৪১ ॥ নিহন্যমানোহপি শরৈঃ সূতী-  
 ক্লেৰ্ন বিব্যথে সমরে চিত্রযোধী । সমভ্যুদীর্ণাংশ্চ তবাত্মজাংস্তথা নিশম্য বীরান-  
 ভিতঃ স্থিরানুগে ॥ ৪২ ॥ জিয়াংসুরগ্রং দ্রুপদাত্মজো যুবা প্রমোহনাস্ত্রং যুবুজে  
 মহারথঃ । ক্রুদ্ধো ভূশং তব পুত্রেষু রাজন্ দৈতেষু যদ্বৎ সমরে মহেন্দ্রঃ ॥ ৪৩ ॥  
 ততো ব্যমুহস্ত রণে নৃবীরাঃ প্রমোহনাস্ত্রাহতবুদ্ধিসত্ত্বাঃ । প্রদুক্রবুঃ কুরবশ্চৈব  
 সর্বে সবাজিনাগাঃ সরথাঃ সমস্তাৎ । পরীতকালানিব নষ্টসংজ্ঞান্ মোহোপে-  
 তাংস্তব পুত্রানিশম্য ॥ ৪৪ ॥ এতাস্মিন্নেব কালে তু দ্রোণঃ শস্ত্রভূতায়রঃ । দ্রুপদং  
 ত্রিভিরাসাদ্য শরৈর্বিব্যাধ দারুণৈঃ ॥ ৪৫ ॥ সোহ্ৰতিবিদ্ধস্তদা রাজন্ রণাদ্দ্ৰোণেন  
 পার্থিবঃ । অপাযাদ্দ্ৰুপদো রাজন্ পূর্ববৈরমনুস্মরন্ ॥ ৪৬ ॥ জিহ্বা তু দ্রোণো  
 দ্রুপদং শশ্বৎ দধৌ প্রতাপবান্ । তস্য শশ্বস্বনং শত্র্বা বিত্রেসুঃ সর্বসোমকাঃ ॥ ৪৭ ॥  
 অথ শুশ্রাব তেজস্বী দ্রোণঃ শস্ত্রভূতাং বরঃ । প্রমোহনাস্ত্রেণ রণে মোহিতানা-

अजांस्तव ॥ ४८ ॥ ततो द्रोणे राजगृही हरितोऽभ्याषथौ रणात् । तत्रा-  
 पश्यान्महेष्वासो भारद्वाजः प्रतापवान् । धृष्टद्युम्नश्च भीमश्च विचरन्तौ महा-  
 रणे ॥ ४९ ॥ मोहाविर्कांश्च ते पुल्लानपश्यात् स महारथः । ततः प्रज्ज्वास्त्रमा-  
 दाय मोहनास्त्रं व्याशतयत् ॥ ५० ॥ अथ प्रत्यागतप्राणास्तव पुत्रा महारथाः ।  
 पुनर्युक्ताय समरे प्रथयुर्भीमपार्षतो ॥ ५१ ॥ ततो युधिष्ठिरः प्राह समाहूय ससै-  
 निकान् । गच्छन्त पदवीं शक्त्या भीमपार्षतयोर्युधि ॥ ५२ ॥ सैतद्विप्रमुखा  
 वीरा रथा द्वादश दंशिताः । प्रवृत्तिमधिगच्छन्त न हि शुध्यति मे मनः ॥ ५३ ॥  
 त एवं समनुज्जाताः शूरा विक्रान्तयोधिनः । वाचमित्येवमुक्त्वा तु सर्वे पुरुषमा-  
 निनः । मध्याह्ननगते सूर्ये प्रथयुः सर्व एव हि ॥ ५४ ॥ कैकेया द्रोपदेयाश्च  
 धृष्टकेतुश्च वीर्यवान् । अभिमन्युं पुरस्कृत्य महत्या सेनया वृताः ॥ ५५ ॥  
 ते क्रुद्धा समरे व्युहं सूचीमुखमरिन्दमाः । विभिदुर्धार्तराष्ट्राणां तद्वथानीकमाह-  
 वे ॥ ५६ ॥ तान् प्रयातान्महेष्वासानभिमन्युपुरोगमान् । भीमसेनभयाविर्का  
 धृष्टद्युम्नविमोहिता ॥ ५७ ॥ न सङ्कारयितुं शक्त्वा तव सेना नराधिप । मदमूर्च्छा-  
 निताञ्जानं प्रमदेवाधनि स्थिता ॥ ५८ ॥ ते हि पार्था महेष्वासाः सुवर्णविकृत-  
 ध्वजाः । परीप्सन्तोऽभ्याषावस्तु धृष्टद्युम्नवृकोदरो ॥ ५९ ॥ तौ च दृष्ट्वा महेष्वासान-  
 भिमन्युपुरोगमान् । बभूवतुर्मुदा युक्तौ निम्नन्तौ तव बाहिनीम् ॥ ६० ॥ दृष्ट्वा च  
 सहसायास्तुं पाषाण्यो गुरुमात्मनः । नाशंसत वधं वीरः पुल्लानां तव पार्ष-  
 तः ॥ ६१ ॥ ततो रथं समारोप्य कैकेयस्य वृकोदरम् । अभ्याषत् सुसंक्रुद्धो  
 द्रोणमिषस्रपारगम् ॥ ६२ ॥ तस्यातिपततस्तूर्णं भारद्वाजः प्रतापवान् । क्रुद्ध-  
 शिच्छेद भल्लेन धनुः शत्रुनिःसृदनः ॥ ६३ ॥ अन्यांश्च शतशो बाणान् प्रेषयामास  
 पार्षते । दुर्योधनहितार्थाय भर्तृपिण्डमनुस्मरन् ॥ ६४ ॥ अथान्यद्विदुर्धारादाय पा-  
 र्षतः परवीरहा । द्रोणं विव्याध सप्तत्या रूक्मपुत्रैः शिलाशितैः ॥ ६५ ॥ तस्य  
 द्रोणः पुनश्चापं चिच्छेदामित्रकर्षणः । हयांश्च चतुरस्रूर्णं चतुर्भिः सायकोत्त-  
 मैः ॥ ६६ ॥ वैवस्वतक्षयं घोरं प्रेषयामास भारत । सारथिष्वास्य भल्लेन  
 प्रेषयामास मृत्यवे ॥ ६७ ॥ हताश्वान् रथान्तूर्णमवप्लुत्य महारथः । आरुरोह  
 महाबाहुरभिमन्योर्महारथम् ॥ ६८ ॥ ततः सरथनागाश्वा समकम्पत बाहिनी ।  
 पश्यातो भीमसेनस्य पार्षतस्य च पश्यातः ॥ ६९ ॥ तं प्रभग्नं बलं दृष्ट्वा द्रोणे-  
 नामिततेजसा । नाशकृवन् वारयितुं समस्तास्ते महारथाः ॥ ७० ॥ वध्यमानस्तु तं  
 सैन्यं द्रोणेन निशितैः शरैः । व्यभ्रमन्तु तत्रैव फोभ्यमाण इवाणवः ॥ ७१ ॥

তথা দৃষ্ট্বা চ তৎ সৈন্যং জহবে চ বলং তব । দৃষ্ট্বাচার্য্যঞ্চ সংক্রুদ্ধং পতন্তুং  
রিপুবাহিনীম্ । চক্রশুঃ সর্বতো যোধাঃ সাধু সাধ্বিতি ভারত ॥ ৭২ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বনি ভীষ্মবধপর্বনি দ্রোণপরাক্রমে চতুঃসপ্ততি-

তমোহুধ্যায়ঃ ॥ ৭৪ ॥

১৭৫

সঞ্জয় উবাচ । ততো দুৰ্য্যোধনো রাজা মোহাৎ প্রত্যাগতস্তদা । শরবর্ষেঃ পুন-  
র্ভীমং প্রত্যবারষদচ্যুতম্ ॥ ১ ॥ একীভূতাঃ পুনশ্চৈব তব পুত্রা মহারথাঃ । সমেতা  
সমরে ভীমং যোধয়ামাসুরুদ্যতাঃ ॥ ২ ॥ ভীমসেনোহপি সমরে সংপ্রাপ্য স্বরথং  
পুনঃ । সমারুহ মহাবাহর্য্যযৌ যত্র তবাত্মজঃ ॥ ৩ ॥ প্রগৃহ চ মহাবেগং পরাসু-  
করণং দৃঢ়ম্ । চিত্রং শরাসনং সংখেয় শরৈর্বিব্যাহ তে সূতম্ ॥ ৪ ॥ ততো দুৰ্য্যোধনো  
রাজা ভীমসেনং মহাবলম্ । নারাচেন স্নতীক্লেদন ভূশং মর্শ্মণ্যতাডযৎ ॥ ৫ ॥  
সোহতিবিদ্ধো মহেষাসস্তব পুত্রেন ধম্বিনা । ক্রোধসংরক্তনয়নো বেগাদারুণ্য কা-  
শ্মুকম্ ॥ ৬ ॥ দুৰ্য্যোধনং ত্রিভির্বাণৈর্বাহ্নোরুরসি চাপযৎ । স তথাতিহতো রাজ-  
মাচলদারিরাডিব ॥ ৭ ॥ তৌ দৃষ্ট্বা সমরে ক্রুদ্ধৌ বিনিমন্তৌ পরস্পরম্ । দুৰ্য্যো-  
ধনানুজাঃ সর্বে শূরাঃ সংত্যক্তজীবিতাঃ ॥ ৮ ॥ সংস্মৃত্য মদ্বিতং পূর্বং নিগ্রহে  
ভীমকর্ষণঃ । নিশ্চয়ং পরমং কৃত্বা নিগ্রহীতুং প্রচক্রমুঃ ॥ ৯ ॥ তানাপতত এবাজৌ  
ভীমসেনো মহাবলঃ । প্রতু্যক্ষ্যযৌ মহারাজ গজঃ প্রতিগজানিব ॥ ১০ ॥ ভূশং  
ক্রুদ্ধশ্চ তেজস্বী নারাচেন সমার্ষৎ । চিত্রসেনং মহারাজ তব পুত্রং মহাঘ-  
শাঃ ॥ ১১ ॥ তথৈতরাংস্তব সূতাংস্তাডযামাস ভারত । শরৈর্বিহবিধৈঃ সংখেয়  
রুক্ষপুষ্কৈঃ সুবেগিতৈঃ ॥ ১২ ॥ ততঃ সংস্থাপ্য সমরে স্বান্যনীকানি সর্বশঃ । অভি-  
মন্যপ্রভৃতযস্তে দ্বাদশ মহারথাঃ ॥ ১৩ ॥ প্রেষিতা ধর্ম্মরাজেন ভীমসেনপদা-  
নুগাঃ । প্রতু্যক্ষ্যযুর্ম্মহারাজ তব পুত্রান্ মহারথান্ ॥ ১৪ ॥ দৃষ্ট্বা রথস্থাংস্তান্  
শূরান্ সূর্য্যগ্নিসমতেজসঃ । সর্বান্বেব মহেষাসান্ ভ্রাজমানান্ শিষাবৃতান্ ॥ ১৫ ॥  
মহাহবে দীপ্যমানান্ সুবর্ণমুকুটোজ্বলান্ । তত্যজুঃ সমরে ভীমং তব পুত্রা  
মহাবলাঃ ॥ ১৬ ॥ তান্নামৃষ্যত কৌন্তেযো জীবমানা গতা ইতি । অস্বীয় চ  
পুনঃ সর্বাংস্তব পুত্রানপীডয়ৎ ॥ ১৭ ॥ অভিমন্যুঞ্চ সমরে ভীমসেনেন সংযুতম্ ।  
পার্ষতেন চ সংপ্রেক্ষ্য তব সৈন্যে মহারথাঃ ॥ ১৮ ॥ দুৰ্য্যোধনপ্রভৃত্যঃ প্রগৃ-  
হীতশরাসনাঃ । ভূশমশ্বেঃ প্রজবিতৈঃ প্রযযুর্যত্র তে রথাঃ ॥ ১৯ ॥ অপরাহ্নে ততো  
রাজন্ প্রাবর্ত্তত মহারণঃ । তাবকানাঞ্চ বলিনাং পরেষাশ্চৈব ভারত ॥ ২০ ॥



अभिमन्युर्विकर्णस्य हयान् हत्वा महाहवे । अथैनं पञ्चविंशत्या क्रुद्रकाणां समा-  
 चिनोत् ॥ २१ ॥ हताश्वं रथमुत्सृज्य विकर्णस्तु महारथः । आरुरोह रथं  
 राजंश्चित्रसेनस्य भास्वरम् ॥ २२ ॥ स्थितावेकरथे तौ तु द्रातरौ कुरूवर्द्ध-  
 नौ । आज्जुनिः शरवर्षेण ह्यादयामास भारत ॥ २३ ॥ दुर्जयोश्च विकर्णश्च का-  
 र्किः पञ्चभिराशसैः । विव्याधाते न चाकम्पुत् कार्किर्मैरुरिव स्थितः ॥ २४ ॥  
 दुःशामनस्तु समरे कैकेयान् पञ्च मारिष । योधयामास राजेन्द्र तदद्भुतमिवाभ-  
 वत् ॥ २५ ॥ द्रौपदेया रणे क्रुद्धा दुर्व्याधनमवारयन् । एकैकस्त्रिभिरान्कुरु-  
 पुलं तव विशाम्पते ॥ २६ ॥ पुलोऽपि तव दुर्धरो द्रौपद्यास्तनुयानुणे ।  
 शायकैर्निशितै राजन्नाजयान पृथक्पृथक् ॥ २७ ॥ तैश्चापि विद्वः शुशुभे  
 रूधिरैण समुक्षितः । गिरिः प्रसुवर्णैर्बद्धकिरिधातुविमिश्रितैः ॥ २८ ॥ भीष्मो-  
 पि समरे राजन् पाण्डवानां वक्थिनीम् । कालयामास बलवान् पालः पशुगणा-  
 निव ॥ २९ ॥ ततो गाण्डीवनिर्घोषः प्रादुरासीद्विशाम्पते । दक्षिणेन वक्थि-  
 न्याः पार्थस्यारीन् विनिघ्नतः ॥ ३० ॥ उन्नतः समरे तत्र कवक्कानि सहस्रशः ।  
 कुरूणांश्चापि सैन्येषु पाण्डवानांश्च भारत ॥ ३१ ॥ शोणितोदं शरावर्तं गज-  
 द्वीपं ह्योश्मिणम् । रथनोतिनरव्याघ्राः प्रतेरुः सैन्यसागरम् ॥ ३२ ॥ छिन्न-  
 हस्ता विकवचा विदेहाश्च नरोत्तमाः । पतितस्तत्र दृश्यन्ते शतशोश्च सहस्र-  
 शः ॥ ३३ ॥ निहतैर्मन्त्रमातङ्गैः शोणितोद्यपरिप्लुतैः । भृर्भाति भरतश्रेष्ठ  
 पर्वतैराचिता यथा ॥ ३४ ॥ तत्राद्भुतमपश्याम तव तेषांश्च भारत । न तत्रासीत्  
 पुमान् कश्चिद्व्यो योद्धुं नाभिकाङ्क्षति ॥ ३५ ॥ एवं युयुधिरे वीराः प्रार्थयाना  
 महद्वशः । तावकाः पाण्डवैः सार्द्धं काङ्क्षमाणा जयं युधि ॥ ३६ ॥

इति भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि सङ्कलयुद्धे पञ्चसप्ततितमो-

अध्यायः ॥ १५ ॥



सञ्जय उवाच ॥ ततो दुर्व्याधनो राजा लोहितायति भास्करे । सङ्ग्राम-  
 रतसो भीमं हस्तकामोऽभ्यधावत ॥ १ ॥ तमायास्तमभिप्रेक्ष्य नृवीरं दृष्टवैरि-  
 णम् । भीमसेनः सुसङ्क्रुद्ध इदं वचनमवब्रीत् ॥ २ ॥ अयं स कालः संप्राप्तो  
 वर्षपुगाभिकाङ्क्षितः । अद्य ह्यं निहनिष्यामि यदि नोत्सृजसे रणम् ॥ ३ ॥ अद्य  
 कुन्त्याः परिक्लेशं वनवासं क्लृप्स्यः । द्रौपद्याश्च परिक्लेशं प्रणोत्स्यामि  
 हते ह्यसि ॥ ४ ॥ यत् पुरा मत्सरो भुव्वा पाण्डवानवनन्यसे । तस्य पापस्य गान्धारे

পশ্য ব্যসনমাগতম্ ॥ ৫ ॥ কর্ণস্য মতমাস্থায় সৌবলস্য চ যৎ পুরা । অচিন্ত্য পাণ্ড-  
বান্ কামাদ্ব্যথেষ্টং কৃতবানসি ॥ ৬ ॥ যাচমানঞ্চ যন্মোহাদ্ধাশাহ্নমবমন্যসে । উ-  
লুকস্য সমাদেশং যদদাসি চ হৃষ্টবৎ ॥ ৭ ॥ তেন হ্যং নিহ্ননিষ্যামি সান্নুবন্ধং  
সবান্ধবম্ । শমীকরিষ্যে তৎ পাপং ষৎ পুরা কৃতবানসি ॥ ৮ ॥ এবমুক্ত্বা ধনুর্ঘোরং  
বিক্রম্যেদ্ভ্রাম্য চাসকৃত্বৎ । সমাদায শরান্ ঘোরান্ মহাশনিসমস্বনান্ ॥ ৯ ॥  
ষড়্বিংশত্তরসা ক্রুদ্ধো মুমোচাশু সূযোধনে । জ্বলিতাগ্নিশিখাকারান্ বজ্রকল্লান-  
জিহ্বগান্ ॥ ১০ ॥ ততোহস্য কাশ্মুকং দ্বাভ্যাং সূতং দ্বাভ্যাঞ্চ বিব্যধে । চতুর্ভি-  
র্জবনানশ্বাননযদ্ব্যমসাদনম্ ॥ ১১ ॥ দ্বাভ্যাঞ্চ সূবিক্রুষ্ঠাভ্যাং শরাভ্যাগ্নিরমর্দনঃ ।  
চিচ্ছেদ সমরে ছত্রং রাজ্ঞস্তস্য রথোত্তমাৎ ॥ ১২ ॥ ত্রিভিঃ তস্য চিচ্ছেদ জ্বলন্তং  
ধ্বজমুত্তমম্ । ছিত্বা তঞ্চ ননাদৌচৈস্তব পুত্রস্য পশ্যতঃ ॥ ১৩ ॥ রথাস্ত স ধ্বজঃ  
শ্রীমামানারত্নবিভূষিতঃ । পপাত সহসা ভূমৌ বিদ্যুজ্জলধরাদিব ॥ ১৪ ॥ জ্বলন্তং  
সূর্য্যসঙ্কাশং নাগং মণিময়ং শুভম্ । ধ্বজং কুরুপতেশ্চিন্নং দদৃশুঃ সর্বপার্থি-  
বাঃ ॥ ১৫ ॥ অথৈনং দশভির্বাণৈস্তোত্রৈরিব মহাগজম্ । আজঘান রণে ভীমঃ  
স্বয়ম্নিব মহারথঃ ॥ ১৬ ॥ ততস্তু রাজা সিন্ধুনাং রথশ্রেষ্ঠো মহাবলঃ । দুর্য্যো-  
ধনস্য জগ্রাহ পার্শ্বিঃ সৎপুরুষৈঃ সহ ॥ ১৭ ॥ রূপশ্চ রথিনাং শ্রেষ্ঠঃ কৌরব্যম-  
নিতৌজসম্ । আরোপয়দ্রথং রাজন্ দুর্য্যোধনমমর্ষণম্ ॥ ১৮ ॥ স গাঢ়বিক্রো  
ব্যথিতো ভীমসেনেন সংযুগে । নিষসাদ রথোপস্থে রাজা দুর্য্যোধনস্তদা ॥ ১৯ ॥  
পরিবার্য্য রণে ভীমং হস্তকামো জয়দ্রথঃ । রথৈরনেকসাহসৈর্ভীমস্যাবারযদি-  
শঃ ॥ ২০ ॥ ধৃষ্টকেতুস্ততো রাজমভিমন্যুশ্চ বীর্য্যবান্ । কৈকেয়া দ্রৌপদেয়া-  
শ্চ তব পুত্রানযোধযন্ ॥ ২১ ॥ চিত্রসেনঃ সূচিত্রশ্চ চিত্রাঙ্গশ্চিত্রদশনঃ । সূচারু-  
শ্চারুচিত্রশ্চ তথা মন্দোপনন্দকৌ ॥ ২২ ॥ অষ্ঠাবেতে মহেষ্টাসাঃ সূকুমুরা ষশ-  
স্বিনঃ । অভিমন্যুং মহারাজ সমস্তাং পর্য্যবারযন্ ॥ ২৩ ॥ আজঘান ততস্তুর্গ-  
মভিমন্যুস্মহামনাঃ । একৈকং পঞ্চভির্বাণৈঃ শিতৈঃ সন্নতপর্ষতিঃ । বজ্রমৃত্যু-  
প্রতীকৈর্ষিচিত্রায়ুধনিঃসৃতৈঃ ॥ ২৪ ॥ অমৃষ্যমাণাস্তে সর্বে সৌভদ্রং রথসত্ত-  
মম্ । ববষুর্মাগ্নৈস্তীক্ষ্ণৈর্গিরিং মেরুমিবাম্বুদাঃ ॥ ২৫ ॥ স পীড়্যমানঃ সমরে  
কৃতাস্ত্রো যুদ্ধদুর্মদঃ । অভিমন্যুস্মহারাজ তাবকান্ সমকম্পযৎ । যথা দেবা-  
সুরে যুদ্ধে বজ্রপাণিস্মহাসুরান্ ॥ ২৬ ॥ বিকর্ণস্য ততো ভল্লান্ প্রেষয়ামাস ভা-  
রত । চতুর্দশ রথশ্রেষ্ঠো ঘোরানাশীবিশোপমান্ ॥ ২৭ ॥ স তৈর্বির্কর্ণস্য রথাৎ  
পাতয়ামাস বীর্য্যবান্ । ধ্বজং সূতং হ্যাংশ্চাপং নৃত্যমান ইবাহবে ॥ ২৮ ॥ পুন-

शचान्याङ्गरान् पीतानकुष्ठाग्रानजिह्मगान् । प्रेषयामास सौभद्रो विकर्णाय महा-  
 बलः ॥ २२ ॥ ते विकर्णं समासाद्य कङ्कवर्हिर्गवाससः । भिक्षा देहं गता भूमिं  
 ज्वलन्तु इव पन्नगाः ॥ ३० ॥ ते शरा हेमपुष्पाग्रा व्यदृश्यन्तु महीतले । विकर्णरुधि-  
 रक्लिन्ना वमन्तु इव शोणितम् ॥ ३१ ॥ विकर्णं वीक्ष्य निर्भिन्नं तस्यैवान्ये सहो-  
 दराः । अत्यद्रवस्तु समरे सौभद्रप्रमुखानुथान् ॥ ३२ ॥ अतिषाय तथैवाशु रंथा-  
 स्तान् सूर्यवर्चसः । अविध्यन् समरेहन्योन्यं संरक्ता युद्धदुर्मदाः ॥ ३३ ॥ दुर्मुखः  
 श्रुतकर्माणं विद्धा सपुत्रिराशुगैः । ध्वजमेकेन चिच्छेद सारथिष्वास्य सपुत्रिः ॥ ३४ ॥  
 अश्वान् जामूनदैर्जालैः प्रच्छन्नान् वातरं हसः । जघान षड्भिरासाद्य सारथि-  
 ष्णात्यपातयत् ॥ ३५ ॥ स हताश्वे रथे तिष्ठन् श्रुतकर्मा महाबलः । शक्तिं चिक्षेप  
 संक्रुद्धो महोक्त्वा ज्वलितामिव ॥ ३६ ॥ सा दुर्मुखस्य विपुलं वस्त्रं भिक्षा यश-  
 स्विनः । विदार्य प्राविशद्भूमिं दीप्यमाना स्वतेजसा ॥ ३७ ॥ तं दृष्ट्वा विरथं  
 तत्र सूतसोमो महाबलः । पश्यतां सर्वसैन्यानां रथमारोपयत् स्वकम् ॥ ३८ ॥  
 श्रुतकीर्तिस्तथा वीरो जयत्सेनं सूतं तव । अत्ययां समरे राजन् हस्तुकामो  
 यशस्विनम् ॥ ३९ ॥ तस्य विक्लिपतश्चापं श्रुतकीर्तेर्महात्मानः । चिच्छेद समरे  
 राजन् जयत्सेनः सूतस्तव । क्रूरप्रेण सूतीक्लेन प्रहसामिव भारत ॥ ४० ॥ तं  
 दृष्ट्वा छिन्नध्यानं शतानीकः सहोदरम् । अत्यपद्यत तेजस्वी सिंहवद्दिनदन्  
 मुखः ॥ ४१ ॥ शतानीकस्तु समरे दृष्टं विस्फार्य कान्शुकम् । विव्याध दशभिस्रुर्णं  
 जयत्सेनं शिलीमुखैः ॥ ४२ ॥ अथान्येन सूतीक्लेन सर्वावरणभेदिना । जयत्-  
 सेनं शतानीको विव्याध हृदये भृशम् ॥ ४३ ॥ तथा तस्मिन् वर्तमाने दुष्कर्णे ब्रा-  
 तुरन्तिके । चिच्छेद सशरं चापं नाकुलेः क्रोधमुच्छ्रितः ॥ ४४ ॥ अथान्यद्वन्नुरा-  
 दाय भारसाधनमुत्तमम् । समादत्त शरान् घोरान् शतानीको महाबलः ॥ ४५ ॥  
 तिष्ठ तिष्ठेति चामन्त्र्य दुष्कर्णं ब्रातुरग्रतः । मुमोचास्मै शितान् बाणान् ज्वलितान्  
 पन्नगानिव ॥ ४६ ॥ ततोऽस्य धनुरेकेन द्वाभ्यां सूतक्ष मारिष । चिच्छेद समरे  
 राजंस्तुक्ष विव्याध सपुत्रिः ॥ ४७ ॥ अश्वान्ननोजवांश्चास्य कल्पाशान् वीतकल्मषः ।  
 जघान निशितैस्तूर्णं सर्वान् द्वादशभिः शरैः ॥ ४८ ॥ अथापरेण भल्लेन सूमुक्ते-  
 नारिघातिना । दुष्कर्णं समरे राजन् क्रुद्धो विव्याध पत्रिणा । स पपात हतो  
 भूमौ वज्ररुग्ण इव क्रमः ॥ ४९ ॥ दुष्कर्णं निहतं दृष्ट्वा पक्ष राजन् महारथाः ।  
 जिघांसन्तुः शतानीकं सर्वतः पर्यवारयन् ॥ ५० ॥ ह्याद्यमानं शरत्रातैः शता-  
 नीकं यशस्विनम् । अत्यधावस्तु संक्रुद्धाः कैकेयाः पक्ष सोदराः ॥ ५१ ॥ तान-

ভ্যাপততঃ প্রেক্ষ্য তব পুত্রা মহারথাঃ । প্রত্যাশ্বযুর্নমহারাজ গজা ইব মহাগ-  
জান্ ॥ ৫২ ॥ দুর্শ্মুখো দুর্জয়শ্চৈব তথা দুর্শ্ময়ণো যুবা । শত্রুঞ্জয়ঃ শত্রুসহঃ সর্বে  
ক্রুদ্ধা যশস্বিনঃ ॥ ৫৩ ॥ প্রত্যাশ্বাতা মহারাজ কৈকেয়ান্ ভ্রাতরঃ সমম্ । রথৈর্নগর-  
সংকাতৈর্হৈযৈরু কৈশ্মনোজবৈঃ । নানাবর্ণবিচিত্রাভিঃ পতাকাভিরলঙ্কৃতেঃ ॥ ৫৪ ॥  
বরচাপধরা বীরা বিচিত্রকবচধ্বজাঃ । বিবিশুস্তে পরং সৈন্যং সিংহা ইব বনা-  
দ্বনম্ ॥ ৫৫ ॥ তেষাং সুতুমুলং যুদ্ধং ব্যতিষক্তরথদ্বিপম্ । অবর্ত্তত মহারৌদ্রং  
নিঘ্নতামিতরেতরম্ । অন্যান্যোগস্কৃতাং রাজন্ যমরাফুবিবর্দ্ধনম্ ॥ ৫৬ ॥ মুহূ-  
র্ত্তাস্তমিতে সূর্য্যে চক্রুর্যুদ্ধং সুদারুণম্ । রথিনঃ সাদিনশ্চাত্র ব্যকীর্যাস্ত মহ-  
সুশঃ ॥ ৫৭ ॥ ততঃ শাস্ত্রনবঃ ক্রুদ্ধঃ শরৈঃ সন্নতপর্ব্বভিঃ । নাশয়ামাস তাং সেনাং  
ভীষ্মস্তেষাং মহাত্মনাম্ । পাঞ্চালানাঞ্চ সৈন্যানি শরৈর্নির্ন্যে যমক্ষয়ম্ ॥ ৫৮ ॥  
এবং তিত্বা মহেশ্বাসঃ পাণ্ডবানামনীকিনীম্ । কৃত্বাবহারং সৈন্যানাং যযৌ স্বশি-  
বিরং প্রতি ॥ ৫৯ ॥ ধর্ম্মরাজোহপি সংপ্রেক্ষ্য ধৃষ্টদ্যুম্নবৃকোদরৌ । মূর্দ্ধি চৈতাবু-  
পায়ায প্রহৃষ্টঃ শিবিরং যযৌ ॥ ৬০ ॥

ইতি ভীষ্মপর্ব্বণি ভীষ্মবধপর্ব্বণি ষষ্ঠ্যদিবসযুদ্ধাবহারে  
ষট্শপ্ততিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৭৬ ॥

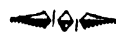


সঞ্জয় উবাচ । অথ শূরা মহারাজ পরস্পরকৃতাগমঃ । জগ্মুঃ স্বশিবিরান্ত্যেব রুধি-  
রেণ সমুক্ষিতাঃ ॥ ১ ॥ বিশ্রম্য চ যথান্যাযং পূজয়িত্বা পরস্পরম্ । সন্নদ্ধাঃ সমদৃ-  
শ্যস্ত ভূষো যুদ্ধচিকীর্ষয়া ॥ ২ ॥ ততস্তব সূতো রাজন্ চিন্তয়াভি পরিপ্লুতঃ । বিসুব-  
চ্ছাণিতাক্তাঙ্গঃ পপ্রচ্ছেদং পিতামহম্ ॥ ৩ ॥ সৈন্যানি ঘোরানি ভয়ানকানি  
ব্যূটানি সম্যগ্বেলধজানি । বিদার্য্য হত্বা চ নিপীড়্য শূরাস্তে পাণ্ডবানাং হ্বরিতা  
মহারথাঃ ॥ ৪ ॥ সম্মোহ্য সর্বান্ যুধি কীর্ত্তিমস্তে ব্যূহঞ্চ তং মকরং বজুকল্পম্ ।  
প্রবিশ্য ভীমেন নিবর্হিতোহস্মি ঘোরৈঃ শরৈর্মৃত্যুদণ্ডপ্রকাশৈঃ ॥ ৫ ॥ ক্রুদ্ধং তমু-  
দীক্ষ্য ভয়েন রাজন্ সংমুচ্ছিতো ন লভে শান্তিমদ্য । ইচ্ছে প্রসাদাত্তব সত্যসন্ধ  
প্রাপ্তুং জয়ং পাণ্ডবেষাংশ্চ হস্তম্ ॥ ৬ ॥ তেনৈবমুক্তঃ প্রহসন্ মহাত্মা দুর্ঘ্যোধনং  
জাতমন্যুং বিদিত্বা । তং প্রতু্যবাচাবিননা মনস্বী গজাসুতঃ শস্ত্রভৃতাং বরিষ্ঠঃ ॥ ৭ ॥  
পরেণ যত্নেন বিগাহ্য সেনাং সর্বাশ্বনাহং তব রাজপুত্র । ইচ্ছামি দাতুং বিজয়ং  
সুখঞ্চ ন চাত্মানং ছাদয়েহং হৃদথে ॥ ৮ ॥ এতে তু রৌদ্রা বহবো মহারথা যশ-  
স্বিনঃ শূরতমাঃ কৃতাস্ত্রাঃ । যে পাণ্ডবানাং সমরে সহায়া জিতকুমাঃ ক্রোধবিষং

বমস্তঃ ॥ ৯ ॥ তে নেহ শক্যাঃ সহসা বিজেতুং বীর্যোন্নতাঃ ক্লুতবৈরাশ্চুয়া চ ।  
 অহং হেতান্ প্রতিযোৎস্যামি রাজন্ সর্বাঙ্ঘনা জীবিতং ত্যজ্য বীর ॥ ১০ ॥ রণে  
 তবার্থায় মহাশুভাব ন জীবিতং রক্ষিতব্যং মযাদ্য । সর্বাংস্তবার্থায় সদেবদৈত্যান্  
 লোকান্দহেয়ং কিমু শত্রুংস্তবেহ ॥ ১১ ॥ তান্ পাণ্ডবান্ যোধষিষ্যামি রাজন্  
 প্রিয়ঞ্চ তে সর্বমহং করিষ্যে । শ্রুত্বৈব চৈতৎ পরমপ্রতীতো দুর্যেয়াধনঃ শান্তমনা  
 বভুব ॥ ১২ ॥ সর্বাণি সৈন্যানি ততঃ প্রহর্যে নিগচ্ছতেত্যাহ নৃপাংশ্চ সর্বাণি ।  
 তদাজ্জয়া তানি বিনির্ঘয়ুর্জতং রথাস্থপাদাতগজায়ুতানি ॥ ১৩ ॥ প্রহর্ষযুক্তানি  
 তু তানি রাজন্ মহান্তি নানাবিধশস্ত্রবস্তি । স্থিতানি নাগাস্থপদাতিমস্তি বিরে-  
 জুরাজৌ তব রাজন্ বলানি ॥ ১৪ ॥ বৃন্দৈঃ স্থিতাশ্চাপি স্তুসংপ্রযুক্তাশ্চকাশিরে  
 দস্তিগণাঃ সমস্তাৎ । শস্ত্রাস্ত্রবিদ্ভিন্দেবযোধৈরধিষ্ঠিতাঃ সৈন্যগণাস্তদীয়াঃ ॥ ১৫ ॥  
 রথাগ্রপাদাতগজাস্থসংঘৈঃ প্রযাদিরাজৌ বিধিবৎপ্রণুমৈঃ । সমুদ্ধতং বৈ তরুণা-  
 কর্বণং রজো বভৌ ছাদযৎ সূর্য্যরশ্মীন্ ॥ ১৬ ॥ রেজুঃ পতাকা রথদস্তিসংস্থা  
 বাতেরিতা ভ্রাম্যমাণাঃ সমস্তাৎ । নানারঙ্গাঃ সমরে তত্র রাজন্ মেঘান্তরে বিদ্যুতঃ  
 খে যথৈব ॥ ১৭ ॥ ধনুঃষি বিস্ফারযতাং নৃপাণাং বভুব শকস্তমুলোহতিঘোরঃ ।  
 বিমথ্যতো দেবমহাসুরৌষৈর্ষথার্নবস্যাদিযুগে তদানীম্ ॥ ১৮ ॥ তদুগ্রনাদং বহুবর্ণ-  
 কপং তবান্জানাং সমুদীর্ণবর্ণম্ । বভুব সৈন্যং রিপুসৈন্যহন্তু যুগাস্তমেঘৌষ-  
 নিতং তদানীম্ ॥ ১৯ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি ভীষ্মদুর্যেয়াধনসংবাদে

সপ্তসপ্ততিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৭৭ ॥



সপ্তম উবাচ । অথান্জং তব পুনর্গান্ধেযো ধ্যানমাস্তিতম্ । অত্রবীৎ ভরত-  
 শ্রেষ্ঠ সংপ্রহর্ষকরং বচঃ ॥ ১ ॥ অহং দ্রোণশ্চ শল্যশ্চ ক্লুতবর্মা চ সাত্ততঃ ।  
 অশ্বখামা বিকর্ণশ্চ ভগদত্তোহথ সৌবলঃ ॥ ২ ॥ বিন্দান্নু বিন্দাবাবন্তৌ বাহ্লীকঃ  
 সহ বাহ্লিকৈঃ । ত্রিগর্তরাজশ্চ বলী মাগধশ্চ সুদুর্জয়ঃ ॥ ৩ ॥ বৃহদ্বলশ্চ কৌশ-  
 ল্যশ্চিত্রসেনো বিবিংশতিঃ । রথশ্চ বহুসাহস্রাঃ শোভমানা মহাধজাঃ ॥ ৪ ॥  
 দেশজাশ্চ হযা রাজন্ সাকৃতা হযসাদিভিঃ । গজেন্দ্রাশ্চ মদোদ্ধৃতাঃ প্রতিম্বরটা-  
 মুখাঃ ॥ ৫ ॥ পাদাতাশ্চ তথা শূরা নানাপ্রহরণায়ুধাঃ । নানাদেশসমুৎপন্না-  
 স্ত্বদর্থে যোদ্ধুমুদ্যতাঃ ॥ ৬ ॥ এতে চান্যে চ বহুবস্ত্বদর্থে ত্যক্তজীবিতাঃ । দেবা-  
 নপি রণে জেতুং সমর্থা ইতি মে মতিঃ ॥ ৭ ॥ অবশ্যং তু মযা রাজন্ তব বাচ্যং

হিতং সদা । অশক্যাঃ পাণ্ডবা জেতুং দেবৈরপি সবাসবৈঃ । বাসুদেবসহাযাশ্চ  
 মহেন্দ্রসমবিক্রমাঃ ॥ ৮ ॥ সর্বথাহস্ত রাজেন্দ্র করিষ্যে বচনং তব । পাণ্ডবান্ বা  
 রণে জেষ্যে মাং বা জেষ্যস্তি পাণ্ডবাঃ ॥ ৯ ॥ এবমুক্ত্বা দদৌ চাশ্মৈ বিশল্যকরণীং  
 শুভাম্ । ওষধীং বীর্য্যসম্পন্নাং বিশল্যশ্চাভবতদা ॥ ১০ ॥ ততঃ প্রভাতে বিমলে  
 স্বেনানীকেন বীর্য্যবান্ । অব্যুহত স্বয়ং বীরো ব্যুহং ব্যুহবিশারদঃ ॥ ১১ ॥ মণ্ডলং  
 ভরতশ্রেষ্ঠ নানাশস্ত্রসমাকুলম্ । সম্পূর্ণং যোধমুখ্যৈশ্চ তথা দস্তিপদাতিভিঃ ॥ ১২ ॥  
 রথৈরনেকসাহসৈঃ সমস্তাং পরিবারিতম্ । অশ্ববৃন্দৈর্বৃহদ্ভিশ্চ প্রাসতোমরথারি-  
 ভিঃ ॥ ১৩ ॥ নাগে নাগে রথাঃ সপ্ত সপ্ত চাশ্বা রথে রথে । অশ্বেহশ্বে চর্শ্বিণঃ সপ্ত  
 ধানুক্ষাঃ সপ্ত চর্শ্বিণি ॥ ১৪ ॥ এবং ব্যুতং মহারাজ তব সৈন্যং মহারথৈঃ । স্থিতং  
 রণায় মহতে ভীষ্মেণ যুধি পালিতম্ ॥ ১৫ ॥ দশাশ্বানাং সহস্রাণি দস্তিনাঞ্চ তথৈব  
 চ । রথানামযুতঞ্চাপি পুত্রাশ্চ তব দংশিতাঃ । চিত্রসেনাদয়ঃ শূরা অভ্যরক্ষন্  
 পিতামহম্ ॥ ১৬ ॥ রক্ষ্যমাণঃ স তৈঃ শূরৈর্গোপ্যমানাশ্চ তেন তে । সন্নদ্ধাঃ সম-  
 দৃশ্যন্ত রাজানস্তে মহাবলাঃ ॥ ১৭ ॥ দুর্য্যোধনংস্ত সমরে দংশিতো রথমাস্থিতঃ ।  
 ব্যরাজত শ্রিযা জুষ্টো যথা শক্রস্ত্রিপিষ্টপে ॥ ১৮ ॥ ততঃ শক্ণো মহানাসীং পুত্রা-  
 গাং তব ভারত । রথযোষশ্চ বিপুলো বাদিত্রাণাঞ্চ নিস্বনঃ ॥ ১৯ ॥ ভীষ্মেণ ধার্ত-  
 রাক্ষাণাং ব্যুতঃ প্রত্যঙ্মুখো যযৌ । মণ্ডলঃ স্তুমহাব্যুহো দুর্ভেদ্যোহমিত্রঘাতিনাম্ ।  
 সর্বতঃ শুশুভে রাজনুগেহরীণাং দুরাসদঃ ॥ ২০ ॥ মণ্ডলস্ত সমালোক্য ব্যুহং পর-  
 মদারুণম্ । স্বয়ং যুধিষ্ঠিরো রাজা ব্যুহং বজ্রমথাকরোং ॥ ২১ ॥ তথা ব্যুতেষনী-  
 কেষু যথাস্থানমবস্থিতাঃ । রথিনঃ সাদিনশ্চৈব সিংহনাদানথানদন্ ॥ ২২ ॥ বিভিৎ-  
 সবস্ততো ব্যুহং নির্য্যযুর্দৃকাক্ষিণঃ । ইতরেতরতঃ শূরাঃ সহসেনাঃ প্রহারিণঃ ॥ ২৩ ॥  
 ভারদ্বাজো যযৌ নতস্যং দ্রৌণিশ্চাপি শিখণ্ডিনম্ । স্বয়ং দুর্য্যোধনো রাজা পার্শ্ব-  
 তং সমুপাদ্রবৎ ॥ ২৪ ॥ নকুলঃ সহদেবশ্চ রাজন্ মদ্রেশমীযতুঃ । বিন্দানুবিন্দাবা-  
 বস্ত্যো যুধামন্যু্যমভিধ্রতো ॥ ২৫ ॥ সর্বে নৃপাস্তু সমরে ধনঞ্জয়মযোধয়ন্ । ভীম-  
 সেনো রণে যত্তো হার্দিক্যং সমবারযৎ ॥ ২৬ ॥ চিত্রসেনং বিকর্ণঞ্চ তথা দুর্শ্মর্ষণং  
 বিভো । আজ্জুনিঃ সমরে রাজংস্তব পুত্রানযোধয়ৎ ॥ ২৭ ॥ প্রাণ্ণোতিষন্ত রাজা-  
 নং হৈডিষ্টো রাক্ষসোত্তমঃ । অভিদুদ্রাব বেগেন মত্তো মত্তমিব দ্বিপম্ ॥ ২৮ ॥  
 অলম্বুষস্তথা রাজন্ সাত্যকিং যুদ্ধদুর্শ্মদম্ । সসৈন্যং সমরে ক্রুদ্ধো রাক্ষসঃ সমভি-  
 দ্রবৎ ॥ ২৯ ॥ ভুরিশ্রবা রণে যত্তো ধৃষ্টকেতুমযোধয়ৎ । শ্রুতায়ুষন্ত রাজানং  
 ধর্মপুত্রো যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ৩০ ॥ চেকিতানস্ত সমরে রূপমেবান্বযোধয়ৎ । শেযাঃ প্রতি

ययुर्ब्रह्मा भीष्ममेव महारथम् ॥ ७१ ॥ ततो राजसहस्राणि परिवक्रुर्धनङ्गयम् । शक्ति-  
 तोमरनाराचगदापरिघपाणयः ॥ ७२ ॥ अर्जुनस्तु भृशं क्रुद्धो बाष्पैर्मिदमत्र-  
 वी७ । पश्य माधव सैन्यानि धार्तराष्ट्रस्य संयुगे । व्यूटानि व्यूहविदुषा गाङ्गेयेन  
 महात्माना ॥ ७३ ॥ युद्धाभिकामान् शूरांश्च पश्य माधव दंशितान् । त्रिगर्भराजं  
 सहितं द्रुपदिः पश्य केशव ॥ ७४ ॥ अर्देयतान् घातयिष्यामि पश्यतुस्तु जना-  
 र्दन । य इमे मां यदुश्चेत्तु योद्धुकामा रणाजिरे ॥ ७५ ॥ एतावदुक्ता कौस्तुभो  
 धनुर्ज्यामवमृज्य च । ववर्ष शरवर्षाणि नराधिपगणान् प्रति ॥ ७६ ॥ तेहृषितं  
 परमेष्वासः शरवर्षैरपुरयन् । तडागमिव धाराभिर्बथा प्रावृषि तोषदाः ॥ ७७ ॥  
 हाहाकारो महानासीत्तव सैन्ये विशाम्पते । ह्यदयमानो भृशं क्रुद्धो शरैर्दृष्ट्वा  
 महारणे ॥ ७८ ॥ देवा देवर्षयश्चैव गच्छन्नाशं महोरगाः । विस्मयं परमं जग्मुर्दृष्ट्वा  
 क्रुद्धो तथाविधो ॥ ७९ ॥ ततः क्रुद्धोऽर्जुनो राजमैत्रमस्रमुदैरयं । तत्राद्भुत-  
 मपश्याम विजयस्य पराक्रमम् ॥ ८० ॥ शस्त्रवृष्टिं परैस्त्रुक्तां शरौघैर्यदवारयं ।  
 न च शस्त्रैरनिर्भिन्नः कश्चिदासीद्विशाम्पते ॥ ८१ ॥ तेषां राजसहस्राणां हयानां  
 दन्तिनास्तथा । द्वाभ्यां त्रिभिः शरैश्चान्यान् पार्थो विव्याध मारिष ॥ ८२ ॥ ते  
 हन्यमानाः पार्थेन भीष्मं शास्तनवं ययुः । अगाधे मज्जमानानां भीष्मस्त्राता  
 तदाभवत् ॥ ८३ ॥ आपतद्भिश्च तैस्तत्र प्रभङ्गैस्तुवकं बलम् । संचुम्बुते महा-  
 राज वातैरिव महार्णवः ॥ ८४ ॥

इति भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि सप्तमदिवसयुद्धारम्भे अष्टमपुत्रि-

तमोऽध्यायः ॥ १८ ॥



सङ्गय उवाच । तथा प्रवृत्ते संग्रामे निवृत्ते च सूशर्माणि । प्रभङ्गेषु च वीरेषु  
 पाण्डवेन महात्माना । १ ॥ स्फुट्यमाणे बले तुर्णं सागरप्रतिमे तव । प्रतुद्व्याते  
 च गाङ्गेये स्वरितं विजयं प्रति ॥ २ ॥ दृष्ट्वा दूर्योधनो राजनुगे पार्थस्य विक्र-  
 मम् । स्वरमाणः समत्पेत्य सर्वास्तानत्र वीष्पान् ॥ ३ ॥ तेषां प्रमुखे शूरं सूश-  
 र्माणं महाबलम् । मध्ये सर्वस्य सैन्यस्य भृशं संहर्षयन् वचः ॥ ४ ॥ एष भीष्मः  
 शास्तनवो योद्धुकामो धनङ्गयम् । सर्वात्माना कुरुश्रेष्ठस्त्यक्त्वा जीवितमात्मानः ॥ ५ ॥  
 तं प्रयास्तं परान् वीरान् सर्वसैन्येन भारतम् । संयत्ताः समरे सर्वे पालयध्वं  
 पितामहम् ॥ ६ ॥ वाटानित्येवमुक्त्वा तु तान्यनीकानि सर्वशः । नरेन्द्राणां महाराज  
 अनुजग्मुः पितामहम् ॥ ७ ॥ ततः प्रयातः सहसा भीष्मः शास्तनवोऽर्जुनम् । रणे

ভারতমাষান্তমাসাদ মহাবলম্ ॥ ৮ ॥ মহাশ্বেতাশ্বযুক্তেন ভীমবানরকেতুনা ।  
 মহতা মেঘনাদেন রথেনাতিবিরাজতা ॥ ৯ ॥ সমরে সর্বসৈন্যানামুপযাতং ধন-  
 ঙ্গমম্ । অভবত্তুমুলো নাদো ভষাদৃক্ষ্য কিরীটিনম্ ॥ ১০ ॥ অভীষুহস্তং কৃষ্ণ-  
 দৃক্ষ্যাদিত্যমিবা পরম্ । মধ্যন্দিনগতং সংখ্যে ন শেকুরতিবীক্ষিতুম্ ॥ ১১ ॥ তত্র  
 শান্তনবং ভীষ্মং শ্বেতাশ্বং শ্বেতকাস্মুকম্ । ন শেকুঃ পাণ্ডবা দ্রক্ষুং শ্বেতং গ্রহমি-  
 বোদিতম্ ॥ ১২ ॥ স সর্বতঃ পরিবৃত্তৈস্ত্রিগর্ভৈঃ সুমহাভিঃ । ভ্রাতৃভিস্তব পুত্রৈশ্চ  
 তথানৈশ্চ মহারথৈঃ ॥ ১৩ ॥ ভারদ্বাজস্ত সমরে মৎস্যং বিব্যাধ পল্লিণা । ধ্বজ-  
 ঞ্গস্য শরৈণাজৌ ধনুশ্চেকেন চিচ্ছিদে ॥ ১৪ ॥ তদপাস্য ধনুশ্ছিন্নং বির্যাটো বাহি-  
 নীপতিঃ । অন্যদাদত্ত বেগেন ধনুভারসহং দৃঢ়ম্ ॥ ১৫ ॥ শরাংশ্চাশীবিষাকারান্  
 জ্বলিতান্ পন্নগানিব । দ্রোণং ত্রিভিঃ প্রবিব্যাধ চতুর্ভিঃচাস্য বাজিনঃ ॥ ১৬ ॥  
 ধ্বজমেকেন বিব্যাধ সারথিঞ্চাস্য পঞ্চভিঃ । ধনুশ্চেকেনুণাবিধ্যত্তত্রাত্নু ধ্যদ্বিজর্ষ-  
 ভঃ ॥ ১৭ ॥ তস্য দ্রোণোংবধীদশ্বান্ শরৈঃ সন্নতপর্বভিঃ । অর্ঘ্যভির্ভরতশ্রেষ্ঠ সূত-  
 মেকেন পল্লিণা ॥ ১৮ ॥ স হতাশ্বাদবপ্লত্য স্যন্দনাক্তসারথিঃ । আরুরোহ রথে  
 তূর্ণং পুত্রস্য রথিনাম্বরঃ ॥ ১৯ ॥ ততস্ত্ব তো পিতাপুল্লৌ ভারদ্বাজং রথে স্থিতৌ ।  
 মহতা শরবর্ষণে বারষামাসতুর্ধলাৎ ॥ ২০ ॥ ভারদ্বাজস্ততঃ ক্রুদ্ধঃ শরমাশীবিষো-  
 পমম্ । চিক্ষেপ সমরে তূর্ণং শঙ্খং প্রতি জনেশ্বর ॥ ২১ ॥ স তস্য হৃদযং ভিত্বা  
 পীত্বা শোণিতমাহবে । জগাম ধরনীং বাণো লোহিতার্দ্ৰকৃতচ্ছবিঃ ॥ ২২ ॥ স পপাত  
 রথাত্তূর্ণং ভারদ্বাজশরাহতঃ । হিত্বা ধনুঃ শরাংশ্চৈব পিতুরেব সমীপতঃ ॥ ২৩ ॥  
 হতং স্বমাত্মজং দৃক্ষ্য বির্যাটঃ প্রাদ্রবদ্ভযাৎ । উৎসৃজ্য সমরে দ্রোণং ব্যাত্তাননমি-  
 বাস্তকম্ ॥ ২৪ ॥ ভারদ্বাজস্ততস্তূর্ণং পাণ্ডবানাং মহাচমুম্ । বারষামাস সমরে শত-  
 শোহথ সহস্রশঃ ॥ ২৫ ॥ শিখণ্ড্যপি মহারাজ দ্রৌণিমাসাদ্য সংযুগে । আজঘান  
 ভুবোর্মধ্যে নারাটৈস্ত্রিভিরাশুগৈঃ ॥ ২৬ ॥ স বভৌ নরশাৰ্দুলো ললাটে সংস্থি-  
 তৈস্ত্রিভিঃ । শিখরৈঃ কাঞ্চনমযৈর্মৈরুস্ত্রিভিরিবোচ্ছ্রিতৈঃ ॥ ২৭ ॥ অশ্বথামা ততঃ  
 ক্রুদ্ধো নিমেষাৰ্দ্ধাচ্ছিখণ্ডিনঃ । সূতং ধ্বজমথো রাজংস্তুরগানায়ুধস্তথা । শরৈর্বহু-  
 ভিরাচ্ছিদ্য পাতযামাস সংযুগে ॥ ২৮ ॥ স হতাশ্বাদবপ্লত্য রথাত্বে রথিনাম্বরঃ ।  
 খঞ্জমাদায নিশিতং বিমলঞ্চ শরাবরম্ । শ্যেনবদ্যচরৎ ক্রুদ্ধঃ শিখণ্ডী শত্রুতাপ-  
 নঃ ॥ ২৯ ॥ সখঞ্জস্য মহারাজ চরতস্তস্য সংযুগে । নাস্তুরং দদৃশে দ্রৌণিস্তদদ্ভু-  
 তমিবাভবৎ ॥ ৩০ ॥ ততঃ শরসহস্রাণি বহুনি ভরতর্ষভ । প্রেষ্যামাস সমরে দ্রৌণিঃ  
 পরমকোপনঃ ॥ ৩১ ॥ তামাপতস্তীং সমরে শরবৃষ্টিং সুদারুণাম্ । অসিনা তীক্ষ্ণ-



धारेण चिच्छेद बलिनाम्बरः ॥ ७२ ॥ ततोऽतिविमलं द्रोणिः शतचन्द्रं मनोर-  
 मम् । चर्माच्छिनदसिंघास्य खण्डयामास संयुगे । शरैः सुबहूशो राजसुतं वि-  
 व्याध पल्लिभिः ॥ ७३ ॥ शिखण्डी तु ततः खड्गं खण्डितं तेन शायकैः । आविध्य  
 व्यसृजतूर्णं ज्वलन्तमिव पन्नगम् ॥ ७४ ॥ तर्मापतन्तुं सहसा वज्रांशिसमप्रभम् ।  
 चिच्छेद समरे द्रोणिर्दृश्यन् पाणिनाघवम् । शिखण्डिनं विव्याध शरैर्बहुभिर्वा-  
 सैः ॥ ७५ ॥ शिखण्डी तु भृशं राजसुताद्यमानः शितैः शरैः । आरुरोह रथं  
 तूर्णं माधवस्य महान्नः ॥ ७६ ॥ सात्यकिश्चापि संक्रुद्धो राक्षसं क्रूरमाह्वै ।  
 अलम्बुषं शरैर्योरैर्विव्याध बलिनां वली ॥ ७७ ॥ राक्षसेन्द्रस्तुतस्तस्य धनुश्चि-  
 छेद भारत । अर्द्धचन्द्रेण समरे तं विव्याध शायकैः । मायां राक्षसीं क्रुद्धा  
 शरवर्षैरवाकिरत् ॥ ७८ ॥ तत्राद्भुतमपश्याम शैनेयस्य पराक्रमम् । नासन्तुमक्ष्यं  
 समरे वध्यमानः शितैः शरैः ॥ ७९ ॥ ऐन्द्रमस्रं वार्ष्णेयो योजयामास भार-  
 त । विजयाक्षयदनुप्राप्तं माधवेन यशस्विना । तदस्रं तस्मसां क्रुद्धा मायां तां  
 राक्षसीं तदा ॥ ८० ॥ अलम्बुषं शरैर्योरैरवाकिरत् सर्वशः । पर्वतं वारिधा-  
 राभिः प्रावृषीव बलाहकः ॥ ८१ ॥ तत्रथा पीडितं तेन माधवेन यशस्विना ।  
 प्रदुद्राव तयाद्रक्ते हिंसा सात्यकिमाहवे । ८२ ॥ तमजेयं राक्षसेन्द्रं संथेय  
 मघवता अपि । शैनेयः प्राणदज्जिह्वा योधानां तव पश्याताम् ॥ ८३ ॥ अवधी-  
 त्तावकांश्चापि सात्यकिः सत्यविक्रमः । निशितैर्बहुभिर्वाणैस्तेऽद्रवन्तु तयादि-  
 ताः ॥ ८४ ॥ एतस्मिन्नेव फाले तु द्रुपदस्यात्तज्जो वली । धृष्टद्युम्नो महाराज  
 पुत्रं तव जनेश्वरं । ह्यादयामास समरे शरैः समतपर्वभिः ॥ ८५ ॥ संछाद्य-  
 मानो विशिथे धृष्टद्युम्नेन मारिष । विव्यथे न च राजेन्द्र तव पुत्रो जनेश्व-  
 रः ॥ ८६ ॥ धृष्टद्युम्नं समरे तूर्णं विव्याध पल्लिभिः । षष्ट्या च त्रिंशता चैव  
 तदद्भुतमिवाभवत् ॥ ८७ ॥ तस्य सेनापतिः क्रुद्धो धनुश्चिच्छेद मारिष । ह्यांश्च  
 चतुरः शीघ्रं निजघान महाबलः ॥ ८८ ॥ शरैश्चैनं सुनिशितैः क्षिप्रं विव्याध  
 सप्तभिः । स हताश्वान्महाबाहुरवप्लुत्य रथादली । पदातिरसिमुद्यम्य प्राधावत्  
 पार्षतं प्रति ॥ ८९ ॥ शकुनिस्तु समभ्येत्य राजगुह्यी महाबलः । राजानं सर्व-  
 लोकस्य रथमारोपयत् स्वकम् ॥ ९० ॥ ततो नृपं पराजित्य पार्षतः परवीर-  
 हा । निजघ्ने तावकं सैन्यं वज्रपाणिनिवासुरम् ॥ ९१ ॥ क्रुतवर्मा रणे तीमं  
 शरैर्राक्ष्महारथम् । प्रच्छादयामास च तं महामेघो रविं यथा ॥ ९२ ॥ ततः  
 प्रहस्य समरे तीमसेनः परस्तपः । प्रेषयामास संक्रुद्धः शायकान् क्रुतवर्माणे ॥ ९३ ॥

তৈর্হন্যমানোহ্ তিরথঃ সাত্বতঃ শাস্ত্রকোবিদঃ । নাকম্পত মহারাজ ভীমমাচ্ছ্ চিত্তৈঃ  
শরৈঃ ॥ ৫৪ ॥ তস্যাস্থাংশ্চতুরো হুত্বা ভীমসেনো মহাবলঃ । সারথিং পাতযা-  
মাস ধ্বজঞ্চ সুপরিষ্কৃতম্ ॥ ৫৫ ॥ শরৈর্বহুবিধৈশ্চেনমাচিনোৎ পরবীরহা । শ-  
কলীকৃতসর্বাঙ্গঃ শ্বাবিদ্বৎ সমদৃশ্যত ॥ ৫৬ ॥ ইতাশ্বাচ্চ রথাতুর্গং বৃষকস্য রথং  
যযৌ । শ্যালস্য তে মহারাজ ভব পুত্রস্য পশ্যতঃ ॥ ৫৭ ॥ ভীমসেনোহপি সং-  
ক্রুদ্ধস্তব সৈন্যং সমাদ্রবৎ । নিজঘান চ সংক্রুদ্ধো দণ্ডপাণিরিবাশ্তকঃ ॥ ৫৮ ॥

ইতি ভীষ্মপর্ষণি ভীষ্মবধপর্ষণি দ্বৈরথৈ একোনাশীতি-

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৭৯ ॥



ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । সুবহূনি বিচিত্রাণি দ্বৈরথানি স্ম সঞ্জয় ! পাণ্ডনাং মামকৈঃ  
সান্নিবেশ্রৌষং তব জল্পতঃ ॥ ১ ॥ ন চৈব মামকং কক্ষিদ্ধৃক্ং শংসসি সঞ্জয় ।  
নিত্যং পাণ্ডুসুতান্ হৃষ্টানভগ্নাংশ্চৈব শংসসি ॥ ২ ॥ হীযমানান্ বিমনসো  
মামকান্ বিগতোজসঃ । বদসে সংযুগে স্মৃত দিষ্টমেতন্ন সংশয়ঃ ॥ ৩ ॥ সঞ্জয়  
উবাচ । যথাশক্তি যথোৎসাহং যুদ্ধে চেষ্টন্তি মামকাঃ । দর্শয়ন্তঃ পরং শক্ত্যা  
পৌরুষং পুরুষর্ভাঃ ॥ ৪ ॥ গঙ্গায়াঃ সুরনদ্যা বৈ স্বাদুভূতং যথোদকম্ । মহোদধি-  
গুণাভ্যাসাৎ লবণত্বং নিযচ্ছতি ॥ ৫ ॥ তথা তৎ পৌরুষং রাজ্যস্তাবকানাং মহা-  
অনাম্ । প্রাপ্য পাণ্ডুসুতান্ বীরান্ ব্যর্থীভবতি সংযুগে ॥ ৬ ॥ ঘটমানান্ যথা-  
শক্তি কুর্বাণান্ কস্ম দুষ্করম্ । ন দোষেণ কুরুশ্রেষ্ঠ স্বান্ যোধান্ গন্তমহঁসি ॥ ৭ ॥  
তবাপরাধাৎ সুমহান্ সপুত্রস্য বিশাম্পতে । পৃথিব্যাঃ প্রক্ষযো ঘোরো যমরাষ্ট্র-  
বিবর্দ্ধনঃ ॥ ৮ ॥ আত্মদোষসমুৎপন্নং শোচিতুং নার্সে নৃপ । ন হি রক্ষন্তি  
রাজানঃ সর্বার্থামপি জীবিতম্ ॥ ৯ ॥ যুদ্ধেন সুরকৃতাল্লোকানিচ্ছন্তো বসুধাধিপাঃ ।  
চমুং বিগাহু যুধ্যন্তে নিত্যং স্বর্গপরাযণাঃ ॥ ১০ ॥ পূর্বাঙ্কে তু মহারাজ প্রাবর্ত্তত  
জনক্ষয়ং । তস্মমৈকমনা ভুত্বা শূণু দেবাসুরোপমম্ ॥ ১১ ॥ আবন্ত্যো তু মহে-  
ষাসৌ মহাত্মানৌ মহাদ্যুতী । ইরাবন্তমভিপ্রেক্ষ্য সমেঘাতাং রণোৎকটৌ ॥ ১২ ॥  
তেষাং প্রববৃতে যুদ্ধং তুমুলং লোমহর্ষণম্ ॥ ১৩ ॥ ইরাবাংস্তু স্ম সংক্রুদ্ধো ভ্রাত-  
রৌ দেবকপিণৌ । বিব্যাধ নিশিতৈস্তুর্গং শরৈঃ সন্নতপর্ষতিঃ । তাবেনং প্রত্যবি-  
ধ্যতাং সমরে চিত্রযোধিনৌ ॥ ১৪ ॥ যুধ্যতাং হি ততো রাজন্ বিশেষো ন  
স্ম দৃশ্যতে । যততাং শত্রুনাশায় কৃতপ্রতিকৃতৈষিণাম্ ॥ ১৫ ॥ ইরাবাংস্তু রণে  
রাজমম্বুবিন্দস্য শায়কৈঃ । চতুর্ভিঃশ্চতুরো বাহাননযদ্বমসাদনম্ ॥ ১৬ ॥ ভল্লা-

ত্যাঞ্চ সূতীক্লাভ্যাং ধনুঃ কেতুঞ্চ মারিষ । চিচ্ছেদ সমরে রাজংস্তদন্তুতমিবাভ-  
 বৎ ॥ ১৭ ॥ ত্যক্ত্বানুবিন্দোহথ রথং বিন্দস্য রথমাস্থিতঃ । ধনুগৃহীত্বা সূদৃঢ়ং  
 ভারসাহমনুত্তমম্ ॥ ১৮ ॥ তাবেকস্থৌ রণে বীরধবাবস্ত্যৌ বলিনাম্বরৌ । শরান্  
 মুমুচতুস্তূর্ণমিরাবতি মহাত্মনি ॥ ১৯ ॥ তাভ্যাং মুক্তা মহাবেগাঃ শরাঃ কণকভূ-  
 ষণাঃ । দিবাকরপথং প্রাপ্য ছাদয়ামাসুরম্বরম্ ॥ ২০ ॥ ইরাবাংস্ত রণে ক্রুদ্ধৌ  
 ভ্রাতরৌ তৌ মহারথৌ । ববর্ষ শরবর্ষণে সারথিং চাভ্যপাতষৎ ॥ ২১ ॥ তন্মি-  
 পতিতে রাজন্ গতসত্ত্বৈংথ সারথৌ । রথঃ প্রদ্রাব দিশঃ সমুদ্ভ্রাস্তহয়স্ততঃ ॥ ২২ ॥  
 তৌ স জিত্বা মহারাজ নাগরাজসুতাসুতঃ । পৌরুষং খ্যাপয়ংস্তূর্ণং ব্যধমত্তব  
 বাহিনীম্ ॥ ২৩ ॥ সা বধ্যমানাসমরে ধার্ত্তরাক্ষী মহাচমুঃ । বেগান্ বহুবিধাংশ্চ-  
 ক্রে বিষং পীত্বৈব মানবঃ ॥ ২৪ ॥ হৈডিষ্মো রাক্ষসেন্দ্রস্ত ভগদত্তং সমাদ্রবৎ ।  
 রথেনাদিত্যবর্ণেন সধ্বজেন মহাবলঃ ॥ ২৫ ॥ ততঃ প্রাগ্জ্যোতিষো রাজা নাগরাজং  
 সমাস্থিতঃ । যথা বজ্রধরঃ পূর্বং সংগ্রামে তারকামযে ॥ ২৬ ॥ তত্র দেবাঃ সগ-  
 ক্ৰবা ঋষযশ্চ সমাগতাঃ । বিশেষং ন স্ম বিবিদুহৈডিষ্মভগদত্তযোঃ ॥ ২৭ ॥ যথা  
 সুরপতিঃ শক্রস্ত্রাসয়ামাস দানবান্ । তথৈব সমরে রাজা দ্রাবয়ামাস পাণ্ডবা-  
 ন্ ॥ ২৮ ॥ তেন বিদ্রাব্যমাণাস্তে পাণ্ডবাঃ সর্বতো দিশম্ । ভ্রাতারং নাভ্যবিন্দ-  
 স্তু স্বেষনীকেষু ভারত ॥ ২৯ ॥ ভৈমসেনিং রথস্থং তু তত্রাপশ্যাম ভারত । শেষা  
 বিমনসৌ ভূত্বা প্রাদ্রবন্ত মহারথাঃ ॥ ৩০ ॥ নিবৃন্তেষু তু পাণ্ডুনাং পুনঃ সৈন্যেষু  
 ভারত । আসীম্মিষ্টানকো ঘোরস্তব সৈন্যস্য সংযুগে ॥ ৩১ ॥ যটোৎকচস্ততো  
 রাজন্ ভগদত্তং মহারণে । শরৈঃ প্রচ্ছাদয়ামাস মেরুং গিরিমিবাশ্বদঃ ॥ ৩২ ॥  
 নিহত্য তান্ শরানুজা রাক্ষসস্য ধনুশ্চ্যুতান্ । ভৈমসেনিং রণে তূর্ণং সর্বমশ্ম-  
 স্বতাডষৎ ॥ ৩৩ ॥ স তাড্যমানো বহুভিঃ শরৈঃ সন্নতপর্ষভিঃ । ন বিব্যথে রাক্ষ-  
 সেন্দ্রে ভিদ্য়মান ইবাচলঃ ॥ ৩৪ ॥ তস্য প্রাগ্জ্যোতিষঃ ক্রুদ্ধস্তোমরান্ বৈ চতু-  
 র্দশ । প্রেষয়ামাস সমরে তাংশ্চ চিচ্ছেদ রাক্ষসঃ ॥ ৩৫ ॥ স তান্ ছিত্বা মহাবাহু-  
 স্তোমরান্মিশিতৈঃ শরৈঃ । ভগদত্তঞ্চ বিব্যাধ সপ্তত্যা কঙ্কপত্রিভিঃ ॥ ৩৬ ॥ ততঃ  
 প্রাগ্জ্যোতিষো রাজা প্রহসন্নিব ভারত । তস্যাস্থাংশ্চতুরৌ রাজন্ পাতয়ামাস  
 শাযকৈঃ ॥ ৩৭ ॥ স হতাস্থে রথে তিষ্ঠন্ রাক্ষসেন্দ্রঃ প্রতাপবান্ । শক্তিং চি-  
 ক্ষেপ বেগেন প্রাগ্জ্যোতিষগজং প্রতি ॥ ৩৮ ॥ তামাপতন্তীং সহসা হেমদণ্ডাং  
 প্রবেগিতাম্ । ত্রিধা চিচ্ছেদ নৃপতিঃ সা স্বকীর্য্যত বৈ ভুবি ॥ ৩৯ ॥ শক্তিং বি-  
 নিহতাং দৃষ্ট্বা হৈডিষ্মঃ প্রাদ্রবন্তবাৎ । যথেন্দ্রস্য রণে পূর্বং নমুচির্দৈত্যসত্তমঃ ॥ ৪০ ॥

তং বিজিত্য রণে শত্রুং বিক্রান্তং খ্যাতপৌরুষম্ । অজেযং সমরে রাজন্ যমেন  
বরুণেন চ ॥ ৪১ ॥ পাণ্ডবীং সমরে সেনাং সংমর্দ স কুঞ্জরঃ । যথা বনগজো  
রাজন্যদুঃশচরতি পদ্মিনীম্ ॥ ৪২ ॥ মদ্রেশ্বরশ্চ সমরে যমাভ্যাং সহ সঙ্গতঃ ।  
স্বস্রীযৌ ছাদযাঞ্চক্রে শরৌঘৈঃ পাণ্ডুনন্দনো ॥ ৪৩ ॥ সহদেবস্ত সমরে মাতুলং  
বীক্ষ্য সঙ্গতম্ । অবারযচ্ছরৌঘেণ মেঘো যদ্বদিবাকরম্ ॥ ৪৪ ॥ ছাদ্যমানঃ  
শরৌঘেণ হৃষ্টকপতরোহভবৎ । তযোশ্চাপ্যভবৎ প্রীতিরতুলা মাতৃকারণাৎ ॥ ৪৫ ॥  
ততঃ প্রহস্য সমরে নকুলস্য মহারথঃ । অশ্বান্ বৈ চতুরো রাজংশ্চতুর্ভিঃ শায-  
কোত্তমৈঃ । প্রেষয়ামাস মদ্রেশো যমস্য সদনং প্রতি ॥ ৪৬ ॥ হতাস্বাত্তু রথা-  
তুর্গমবপ্লত্য মহারথঃ । আরুরোহ ততো যানং ভ্রাতুরেব যশস্বিনঃ ॥ ৪৭ ॥ এক-  
শ্চৌ তু রণে শুরৌ দৃচে বিক্ষিপ্য কাশ্ম্মুকে । মদ্ররাজরথং ক্রুদ্ধৌ ছাদযামাসতুঃ  
ক্ষণাৎ ॥ ৪৮ ॥ স ছাদ্যমানো বহুভিঃ শরৈঃ সমতপর্ষভিঃ । স্বস্রীযাভ্যাং নর-  
ব্যাস্থো নাকম্পত যথাচলঃ । প্রহসন্নিব তাঞ্চাপি শরবৃষ্টিং জঘান হ ॥ ৪৯ ॥ সহ-  
দেবস্ততঃ ক্রুদ্ধঃ শরমুদৃত্য বীর্ষ্যবান্ । মদ্ররাজমতিপ্রেক্ষ্য প্রেষয়ামাস ভারতা ॥ ৫০ ॥  
স শরঃ প্রেষিতস্তেন গরুড্মানিব বেগবান্ । মদ্ররাজং বিনির্ভিদ্য নিপপাত মহী-  
তলে ॥ ৫১ ॥ স গাঢ়বিক্রো ব্যথিতো রথোপস্থে মহারথঃ । নিষসাদ মহারাজ  
কশ্মলঞ্চ জগাম হ ॥ ৫২ ॥ তং বিসংক্রুং নিপতিতং সূতঃ সংপ্রেক্ষ্য সংযুগে ।  
অপোবাহ রথেনাজৌ যমাভ্যামতিপীড়িতম্ ॥ ৫৩ ॥ দৃষ্ট্বা মদ্রেশ্বররথং ধার্ত্তরা-  
ষ্টিাঃ পরাঙ্মুখম্ । সর্বে বিমনসো ভূত্বা নেদমস্তীর্ত্যচিস্তয়ন্ ॥ ৫৪ ॥ নির্জিত্য  
মাতুলং সংখ্যে মাদ্রীপুল্লৌ মহারথৌ । দধ্যতুর্নুদিতৌ শশ্চৌ সিংহনাদঞ্চ নেদ-  
তুঃ ॥ ৫৫ ॥ হৃষ্টৌ চাদ্রবতাং সংখ্যে তব সৈন্যং বিশাম্পতে । যথা দৈত্যচমুং  
রাজান্নিন্দ্রোপেন্দ্রাবিবামরৌ ॥ ৫৬ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বাণি ভীষ্মবধপর্বাণি দ্বন্দ্বযুদ্ধেহশীতি-

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৮০ ॥

সঞ্জয় উবাচ । ততো যুধিষ্ঠিরো রাজা মধ্যং প্রাপ্তে দিবাকরে । শ্রুতায়ুষ্মতি-  
প্রেক্ষ্য চোদযামাস বাজিনঃ ॥ ১ ॥ অভ্যধাবত্ততো রাজা শ্রুতায়ুষ্মরিন্দমম্ ।  
বিনিগ্নন্ শাযকৈস্তীক্লেনবভিনর্তপর্ষভিঃ ॥ ২ ॥ স সংবার্য্য রণে রাজন্ প্রেষিতান্  
ধর্ম্মসূনুনা । শরান্ সপ্ত মহেষ্বাসঃ কৌন্তেযায সমাপর্ষৎ ॥ ৩ ॥ তে তস্য কবচং  
ভিত্বা পপুঃ শোণিতমাহবে । অস্মুনিব বিচিন্ত্তো দেহে তস্য মহাত্মনঃ ॥ ৪ ॥  
পাণ্ডবস্ত ভূশং বিক্রস্তেন রাজ্ঞা মহাত্মনা । রণে বরাহকর্ণেন রাজানং হৃদি বিব্য-

ধে ॥ ৫ ॥ অথাপরেণ ভল্লেন কেতুং তস্য মহাত্মনঃ । রথশ্রেষ্ঠো রথাত্তূর্ণং ভুমৌ  
 পার্থো ন্যপাতযৎ ॥ ৬ ॥ কেতুং নিপতিতং দৃষ্ট্বা শ্রুতায়ুঃ স তু পার্থিবঃ । পাণ্ডবং  
 বিশিথৈস্তীক্লে রাজন্ বিব্যাধ সপ্তভিঃ ॥ ৭ ॥ ততঃ ক্রোধাৎ প্রজঙ্ঘাল ধর্মপুল্লো  
 যুধিষ্ঠিরঃ । যথা যুগান্তে ভূতানি ধক্ষ্যন্নিব হতাশনঃ ॥ ৮ ॥ ক্রুদ্ধস্ত পাণ্ডবং দৃষ্ট্বা  
 দেবগন্ধর্ষরাক্ষসাঃ । প্রবিব্যথুর্মহারাজ ব্যাকুলং চাপ্যভুজ্জগৎ ॥ ৯ ॥ সর্বেষাং  
 চৈব ভূতানামিদমাসীন্ননোগতম্ । ত্রীল্লোকানদ্য সংক্রুদ্ধো নৃপোহযং ধক্ষ্যতীতি  
 বৈ ॥ ১০ ॥ ঋষষশ্চৈব দেবাশ্চ চক্রুঃ স্বস্ত্যযনং মহৎ । লোকানাং নৃপ শাস্ত্যর্থ্যং  
 ক্রোধিতে পাণ্ডবে তদা ॥ ১১ ॥ স চ ক্রোধসর্বাবিফটঃ সৃক্ণী পরিসংলিহন্ । দধা-  
 রাঅবপূর্ষোরং যুগাস্তাদিত্যসম্ভিতম্ ॥ ১২ ॥ ততঃ সর্বাণি সৈন্যানি তাবকানি  
 বিশাম্পতে । নিরাশান্যভবংস্তত্র জীবিতং প্রতি ভারত ॥ ১৩ ॥ স তু ধৈর্যেণ তং  
 কে পং সন্নিবার্য বিশাম্পতে । শ্রুতায়ুঃ প্রচিচ্ছেদ মুক্তিদেশে মহাক্ষমুঃ ॥ ১৪ ॥  
 অথৈনং ছিন্নধন্বানং নারাচেন স্তনাস্তরে । নির্বিভেদ রণে রাজা সর্বসৈন্যস্য পশ্য-  
 তঃ ॥ ১৫ ॥ সত্বরঞ্চ রণে রাজংস্তস্য বাহান্নহাত্মনঃ । নিজঘান শরৈঃ ক্ষিপ্রং সূত-  
 ঞ্চ সুমহাবলঃ ॥ ১৬ ॥ হতাস্থং তু রথং ত্যক্ত্বা দৃষ্ট্বা রাজ্জস্ত পৌরুষম্ । বিপ্রদুদ্ৰাব  
 বেগেন শ্রুতায়ুঃ সমরাতদা ॥ ১৭ ॥ তস্মিন্ জিতে মহেষ্টাসে ধর্মপুল্লেন সংযুগে ।  
 দুর্যোধনবলং রাজন্ সর্বমাসীৎ পরাঙমুখম্ ॥ ১৮ ॥ এতৎ কৃত্বা মহারাজ ধর্ম-  
 পুল্লো যুধিষ্ঠিরঃ । ব্যাত্তাননো যথা কালস্তব সৈন্যং জঘান হ ॥ ১৯ ॥ চেকিতানশ্চ  
 বাক্ষ্যেযো গৌতমং রথিনাম্বরম্ । প্রেক্ষতাং সর্বসৈন্যানাং ছাদয়ামাস শায়কৈঃ ॥ ২০ ॥  
 সন্নিবার্য শরাংস্তাংস্তু রূপঃ শারদ্বতো যুধি । চেকিতানং রণে যত্তং রাজন্ বিব্যাধ  
 পত্রিভিঃ ॥ ২১ ॥ অথাপরেণ ভল্লেন ধনুশ্চিচ্ছেদ মারিষ । সারথিং চাস্য ভল্লেন  
 ক্ষিপ্রহস্তে ন্যপাতযৎ ॥ ২২ ॥ হযাংশচাস্যাবধীদ্রাজমুতো চ পার্শ্বিসারথী । মোহ-  
 বপ্লুত্য রথাত্তূর্ণং গদাং জগ্রাহ সাত্ততঃ ॥ ২৩ ॥ স তযা বীরঘাতিন্যা গদযা গদিনা-  
 স্বরঃ । গৌতমস্য হযান্ হত্বা সারথিং চাপ্যপাতযৎ ॥ ২৪ ॥ ভূমিষ্ঠো গৌতমস্তস্য  
 শরাংশ্চিক্ষেপ ষোড়শ । তে শরাঃ সাত্ততং ভিত্বা প্রাবিশস্ত ধরাতলম্ ॥ ২৫ ॥  
 চেকিতানস্ততঃ ক্রুদ্ধঃ পুনশ্চিক্ষেপ তাং গদাম্ । গৌতমস্য বধাকাঙ্ক্ষী বৃত্রস্যেব  
 পুরন্দরঃ ॥ ২৬ ॥ তামাপতস্তীং বিপুলামশ্মগর্ভাং মহাগদাম্ । শরৈরনেকসাহসৈ-  
 র্ধারয়ামাস গৌতমঃ ॥ ২৭ ॥ চেকিতানস্ততঃ খঞ্জং কোষাদুদৃত্য ভারত । লাঘবং  
 পরমাঙ্ঘায গৌতমং সমুপাদ্রবৎ ॥ ২৮ ॥ গৌতমোহপি ধনুস্ত্যক্ত্বা প্রগৃহাসিং  
 স্মসংঘতঃ । বেগেন ন মহারাজ চেকিতানমুপাদ্রবৎ ॥ ২৯ ॥ তাবুতো বলসম্পন্নৌ

নিস্ত্রিংশবরধারিণৌ । নিস্ত্রিংশাত্যাং স্মৃতীক্লাভ্যামন্যোন্যং সংততকৃতুঃ ॥ ৩০ ॥  
 নিস্ত্রিংশবেগাভিহতৌ ততস্তৌ পুরুষষভৌ । ধরণীমন্মুসংপ্রাপ্তৌ সর্বভূতনিষেবি-  
 তাম্ ॥ ৩১ ॥ মুচ্ছ্যাতিপরীতাকৌ ব্যাযামেন চ মোহিতৌ । ততোহভ্যধাবছে-  
 গেন করকর্ষঃ স্মুহান্তযা ॥ ৩২ ॥ চেকিতানং তথাভূতং দৃষ্ট্বা সমরদুর্মদম্ । রথমা-  
 রোপযচ্চৈনং সর্বসৈন্যস্য পশ্যতঃ ॥ ৩৩ ॥ তথৈব শকুনিঃ শূরঃ শ্যালস্তব বিশা-  
 ম্পতে । আরোপযদ্রথং তূর্ণং গৌতমং রথিনাম্বরম্ ॥ ৩৪ ॥ সৌমদত্তিং রণে  
 ক্রুদ্ধো ধৃষ্টকেতুর্মহাবলঃ । নবত্যা শাযকৈঃ ক্ষিপ্রং রাজন্ বিব্যাধ বক্ষসি ॥ ৩৫ ॥  
 সৌমদত্তিরুরুস্থৈস্তৈর্ভৃশং বাটৈরশোভত । মধ্যন্দিনে মহারাজ রশ্মিতিস্তপনো  
 যথা ॥ ৩৬ ॥ ভুরিশ্রবাস্তু সমরে ধৃষ্টকেতুং মহারথং । হতসূতহযং চক্রে বিরথং  
 শাযকোত্তমৈঃ ॥ ৩৭ ॥ বিরথং চৈনমালোক্য হতাশ্বং হতসারথিম্ । মহতা শর-  
 বর্ষণে ছাদযামাস সংযুগে ॥ ৩৮ ॥ স চ তং রথমুৎসৃজ্য ধৃষ্টকেতুর্মহামনাঃ ।  
 আরুরোহ ততো যানং শতানীকস্য মারিষ ॥ ৩৯ ॥ চিত্রসেনো বিকর্ণশ্চ রাজন্  
 দুর্মর্ষণস্তথা । রথিনো হেমসন্নাহাঃ সৌভদ্রমভিদুক্রবুঃ ॥ ৪০ ॥ অভিমন্যোস্তুত-  
 স্তৈস্তু ঘোরং যুদ্ধমবর্তত । শরীরস্য যথা রাজন্ বাতপিত্তকফৈস্ত্রিভিঃ ॥ ৪১ ॥  
 বিরথাংস্তব পুত্রাংস্তু ক্রুত্বা রাজন্ মহাহবে । ন জঘান নরব্যাগুঃ স্মরন্ ভীমবচস্ত-  
 দা ॥ ৪২ ॥ ততো রাজ্ঞাং বহুশতৈর্গজাশ্বরথযাযিভিঃ । সংবৃতং সমরে ভীষ্মং  
 দেবৈরপি দুরাসদম্ ॥ ৪৩ ॥ প্রযান্তং শীঘ্রমুদীক্য পরিভ্রাতুং সূতাংস্তব । অভি-  
 মন্যুং সমুদ্दिश्य बालमेकं महारथम् ॥ ৪৪ ॥ বাসুদেবমুবাচেদং কৌন্তেযঃ শ্বেত-  
 বাহনঃ । চোদযাশ্বান্ হৃষীকেশ যত্রৈতে বহুলা রথাঃ ॥ ৪৫ ॥ এতে হি বহবঃ শূরাঃ  
 কৃতাস্ত্রা যুদ্ধদুর্মদাঃ । যথা হন্যুর্মনঃ সেনাং তথা মাধব চোদয ॥ ৪৬ ॥ এবমুক্তঃ  
 স বার্ষেযঃ কৌন্তেযেনামিতৌজসা । রথং শ্বেতহৃষৈর্যুক্তং প্রেষযামাস সংযু-  
 গে ॥ ৪৭ ॥ নিষ্ঠানকো মহানাসীত্তব সৈন্যস্য মারিষ । যদজ্জুনো রণে ক্রুদ্ধঃ সং-  
 যাতস্তাবকান্ প্রতি ॥ ৪৮ ॥ সমাসাদ্য তু কৌন্তেযো রাজ্ঞস্তান্ ভীষ্মরক্ষিণঃ । সুশ-  
 র্মাণমথো রাজম্বিদং বচনমব্রবীৎ ॥ ৪৯ ॥ জানামি ত্বাং যুধি শ্রেষ্ঠমত্যন্তং পূর্ব-  
 বৈরিণম্ । অনঘস্যাদ্য সংপ্রাপ্তং ফলং পশ্য সুদারুণম্ ॥ ৫০ ॥ অদ্য ত্বাং দর্শয়ি-  
 ষ্যামি পূর্বপ্রৈতান্ পিতামহান্ । এবং প্রজল্পতস্তস্য বীভৎসোঃ শত্রুঘাতিনঃ ॥ ৫১ ॥  
 ঞ্জ্বাপি পরুষং বাক্যং সুশর্মা রথযুথপঃ । ন চৈনমব্রবীৎ কিঞ্চিৎ শুভং বা  
 যদি বাশুভম্ ॥ ৫২ ॥ অভিগম্যাজ্জুনং বীরং রাজভির্ষহ্তির্ষতঃ । পুরস্তাং  
 পৃষ্ঠতশ্চৈব পার্শ্বতশ্চৈব সর্বতঃ ॥ ৫৩ ॥ পরিবার্য্যাজ্জুনং সংখ্যে তব পুত্রৈঃ সহা-

नमः । शरैः संछादयामास मेघा इव दिवाकरम् ॥ ५४ ॥ ततः प्रववृते घोरः  
संग्रामः शोणितोदकः । तावकानाञ्च समरे पाण्डवानाञ्च भारत ॥ ५५ ॥

इति तीमपर्वणि तीमवधपर्वणि सुशर्माङ्गुनसमागमे  
एकाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८१ ॥



मञ्जुष उवाच । स तुद्यमानस्तु शरैर्द्वन्द्वयः पदाहते नाग इव श्वसन् वली । वा-  
गेन वागेन महारथानां चिच्छेद चापानि रणे प्रसह ॥ १ ॥ संछिद्य चापामि च  
तानि राज्ञां तेषां रणे वीर्यवतां क्रमेण । विव्याध वाणैर्युगपन्महात्मा निःशे-  
षतां तेषथमन्यमानः ॥ २ ॥ निपेतुराजौ क्रुधिरप्रदिक्तास्ते ताडिताः शक्रसु-  
तेन राजन् । विभिन्नगात्राः पतितोत्तमाङ्गा गतासवच्छिन्नतनुत्रकायाः । महारथाः  
पार्थवलाभिभूता विचित्ररूपा युगपद्विनेशुः ॥ ३ ॥ दृष्ट्वा हतांस्तान् युधि राज-  
पुत्रांस्त्रिगर्भराजः प्रययौ रथेन । तेषां रथानामथ पृष्ठगोपा द्वात्रिंशदन्ये  
त्यपतस्तु पार्थम् ॥ ४ ॥ तथैव ते संगपरिवार्य पार्थं विक्रम्य चापानि महारवा-  
णि । अवीवृषन् वाणमहोषवृक्त्या यथा गिरिं तोयधरा जलौघैः ॥ ५ ॥ सं-  
पीड्यमानस्तु महाशरौघैर्द्वन्द्वयस्तान् युधि जातरौघः । वक्त्या शरैः संघति  
तैलधौतैर्जघान तानप्यथ पृष्ठगोपान् ॥ ६ ॥ वक्तिं रथांस्तानभिजित्य संख्ये  
धनञ्जयः प्रीतमना यशस्वी । अथाश्वरुद्धीमवधाय जिम्बुर्बलानि राज्ञां समरे नि-  
हत्य ॥ ७ ॥ त्रिगर्भराजो निहतान् समीक्ष्य महात्माना तानथ वक्रवर्गान् । रणे  
पुरस्कृत्य नराधिपांस्तान् जगाम पार्थं ह्वरितो वधाय ॥ ८ ॥ अतिक्रतं चास्त्र-  
विदां वरिष्ठं धनञ्जयं वीक्ष्य शिखण्डिमुख्याः । अब्रुवन्मयुस्ते शिशुस्रहस्तारिरक्कि-  
वन्तो रथमङ्गुनस्य ॥ ९ ॥ पार्थोऽपि तानापततः समीक्ष्य त्रिगर्भराजो सहिता-  
मृवीरान् । विध्वंसयिष्यामि महाधनुमान् गाण्डीवमुत्केनिशितैः पृषत्कैः ॥ १० ॥  
तीमं यियासूर्युधि संददर्श दुर्येयाधनं सैन्धवादींश्च राज्ञः । आवारयिषुंनथसंप्र-  
याय गूहूर्तमायोध्य बलेन वीरः ॥ ११ ॥ उत्सृज्य राजानमनन्तवीर्येया जयद्रथा  
दींश्च नृपान् महोजाः । ययौ ततो तीमवलो मनस्वी गाङ्गेयमाजौ शरचाप-  
पाणिः ॥ १२ ॥ युधिष्ठिरश्चाग्रवलो महात्मा समाययौ ह्वरितो जातकोपः । मद्रा-  
धिपं समभित्यज्य संख्ये स्वभागमापुस्तमनस्तकीर्तिः । सार्द्धं स माद्रीसूततीमसे-  
नैर्तीमं ययौ शान्तनवं रणाय ॥ १३ ॥ तैः संप्रयुक्तः स महारथाग्रैर्गङ्गासूतः  
समरे चित्रयोधी । न विव्यथे शान्तनवो महात्मा समागतैः पाण्डुसूतैः सम-

স্তৈঃ ॥ ১৪ ॥ উপেত্য রাজা যুধি সত্যসন্ধো জয়দ্রথোহপ্যগ্রবলো মনস্বী । চিচ্ছেদ  
 চাপানি মহারথানাং প্রসহ তেষাং ধনুষা বরেণ ॥ ১৫ ॥ যুধিষ্ঠিরং ভীমসেনং যমৌ চ  
 পার্থানথো যুধি সংজাতকোপঃ । দুৰ্য্যোধনঃ ক্রোধবিষো মহাত্মা জঘান বাণৈরনল-  
 প্রকাশৈঃ ॥ ১৬ ॥ রূপেণ শল্যেন শলেন চৈব তথা বিভো চিত্রসেনেন চাজৌ ।  
 বিদ্বাঃ শরৈস্তেহতিবিবৃদ্ধকোটৈর্দেবী যথা দৈত্যগণৈঃ সমেতৈঃ ॥ ১৭ ॥ ছিন্মাযুধং  
 শান্তনবেন রাজা শিখণ্ডিনং প্রেক্ষ্য চ জাতকোপঃ । অজাতশত্রুঃ সমরে মহাত্মা  
 শিখণ্ডিনং ক্রুদ্ধ উবাচ বাক্যম্ ॥ ১৮ ॥ উক্ত্বা তথা ত্বং পিতুরগ্রতো মামহং হনি-  
 য়ামি মহাত্রতং তম্ । ভীষ্মং শরৌষৈর্বিমলাকর্ষণৈঃ সত্যং বদামীতি ক্রুতা প্রতি-  
 জ্ঞা ॥ ১৯ ॥ ত্বয়া ন চৈনাং সফলাং করোষি দেবত্রতং যম নিহংসি যুদ্ধে । মি-  
 থ্যা প্রতিজ্ঞে ভব মা নৃবীর রক্ষস্ব ধর্ম্মঞ্চ যশঃ কুলঞ্চ ॥ ২০ ॥ প্রেক্ষস্ব ভীষ্মং যুধি  
 ভীমবেগং সর্বাংস্তপস্তং মম সৈন্যসংঘান্ । শরৌষজালৈরতিতিগ্নতে জনৈঃ কালো  
 যথা কালক্রুতং ক্ষণেন ॥ ২১ ॥ নিক্রান্তচাপঃ সমরেহনপেক্ষঃ পরাজিতঃ শান্তনবেন  
 রাজ্ঞা । বিহায বন্ধুনথ সোদরাংশ্চ ক্ব যাস্যসে নাংনুরূপং তবেদং ॥ ২২ ॥ দৃষ্ট্বা হি  
 ভীষ্মং তমনন্তবীর্যং ভগ্নঞ্চ সৈন্যং দ্রবমাণমেতৎ । ভীতোহসি নুনং দ্রুপদস্য পুত্র  
 তথা হি তে মুখবর্ণোহপ্রহৃষ্টঃ ॥ ২৩ ॥ অজ্ঞায়মানেন ধনঞ্জয়েন মহাহবে পশ্য  
 যুক্তং নবীরম্ । কথং হি ভীষ্মাৎ প্রথিতঃ পৃথিব্যাং ভযং ত্বমদ্য প্রকরোষি  
 বীর ॥ ২৪ ॥ স ধর্ম্মরাজস্য বচো নিশম্য কক্ষাক্ষরং বিপ্রলাপাপবিদ্ধম্ । প্রত্যা-  
 দেশং মন্যমানো মহাত্মা প্রতত্বরে ভীষ্মবধায় রাজন্ ॥ ২৫ ॥ তমাপতস্তং মহতা  
 জবেন শিখণ্ডিনং ভীষ্মমতিদ্রবস্তম্ । আবারযামাস হি শল্য এনং শস্ত্রেণ যোরেণ  
 সুদুর্জয়েন ॥ ২৬ ॥ স চাপি দৃষ্ট্বা সমুদীর্যমাণমস্ত্রং যুগাস্তাগ্নিসমপ্রকাশম্ । নাসৌ  
 ব্যমুহুদ্দ্রুপদস্য পুত্রো রাজমহেন্দ্রপ্রতিমপ্রভাবঃ ॥ ২৭ ॥ তস্মৌ চ তত্রৈব মহাধনু-  
 ষ্মান্ শরৈস্তদস্ত্রং প্রতিবোধমানঃ । অথাদদে বারুণমন্যদস্ত্রমুগ্রং শিখণ্ডী প্রতিঘা-  
 তমস্য । তদস্ত্রমস্ত্রেণ নিবার্যমাণং খস্থাঃ সুরা দদৃশুঃ পার্থিবাশ্চ ॥ ২৮ ॥ ভীষ্মস্ত  
 রাজন্ সমরে মহাত্মা ধনুঃ সূচিত্রং ধ্বজমেব চাপি । ছিত্ত্বানদৎ পাণ্ডুসুতস্য বীরো  
 যুধিষ্ঠিরস্যাজমীচস্য রাজ্ঞঃ ॥ ২৯ ॥ ততঃ সমুৎসৃজ্য ধনুঃ সবাণং যুধিষ্ঠিরং বীক্ষ্য  
 ভষাতিভুতম্ । গদাং প্রগৃহ্মাথ পপাত সংখ্যে জয়দ্রথং ভীমসেনঃ পদাতিঃ ॥ ৩০ ॥  
 তমাপতস্তং মহতা জবেন জয়দ্রথঃ সগদং ভীমসেনম্ । বিব্যাধ ষোরৈর্যমদগুকন্ঠৈঃ  
 শিতৈঃ শরৈর্বে নবতিঃ সমস্তাৎ ॥ ৩১ ॥ অচিন্তয়িত্বা স শরাংস্তরস্বী বৃকোদরঃ  
 ক্রোধপরীতচেতাঃ । জঘান বাহান্ সমরে সমস্তান্ পারাবতান্ সিদ্ধুরাজস্য



संख्ये ॥ ७२ ॥ ततोऽभिवीक्याप्रतिमप्रभावस्तवाञ्जसुरमाणो रथेन । अत्र्या-  
यसौ तीमसेनं निहन्तं समुद्यतास्त्रः सुरराजकण्ठः ॥ ७३ ॥ तीमोऽप्यथैनं  
सहसा विनद्य प्रत्यूह्यसौ गदया तर्ज्जमानः । समुद्यतास्तां यमदण्डकण्ठं दृष्ट्वा गदां  
ते कुरवः समस्ताः ॥ ७४ ॥ विहाय सर्वे तव पुत्रमुग्रं तैमीं गदां तां परि-  
हर्तुकामाः । अपक्रान्तास्तुमुले संविमर्दे सुदारुणे भारत मोहनीषे ॥ ७५ ॥  
अमृत्चेतास्तुथ चित्रसेनो महागदामापतस्तीं निरीक्य । रथं समुत्सृज्य पदाति-  
राजो प्रगृह्य खड्गं विपुलं चर्म । अवप्लुतः सिंह इवाचलाग्राज्जगाम तं भूमिप  
भूमिदेशम् ॥ ७६ ॥ गदापि सा प्राप्य रथं सूचित्रं साश्वंससूतं विनिहत्य  
संख्ये । जगाम भूमिं झलिता महोक्ता ब्रह्मराक्षामिव सङ्गरुन्ती ॥ ७७ ॥ आश्च-  
र्यरूपं सुमहद्बदीया दृष्ट्वैव तद्भारत संप्रहृष्टाः । सर्वे विनेदुः सहिताः समस्ताः  
प्रपूजिरे तव पुत्रं ससैन्याः ॥ ७८ ॥

इति तीर्यपर्वणि तीर्यवधपर्वणि चित्रसेनरथभङ्गे

द्व्यशीतितमोऽध्यायः ॥ ८२ ॥



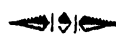
सङ्गस्य उवाच । विरथस्तु समासाद्य चित्रसेनं मनस्विनम् । रथमारोपयामास विक-  
र्णस्तनयस्तव ॥ १ ॥ तस्मिंस्तथा वर्तमाने तुमुले सकूले भृशम् । तीर्यः शान्तनव-  
स्तूर्णं युधिष्ठिरमुपाद्रवत् ॥ २ ॥ ततः सरथनागाश्वाः समकम्पस्तु सृष्टयाः । मृत्योरा-  
स्यमन्नप्राप्तं मेनिरे च युधिष्ठिरम् ॥ ३ ॥ युधिष्ठिरोऽपि कौरव्यो यमात्र्यां सहितः  
प्रभुः । महेश्वासं नरव्याघ्रं तीर्यं शान्तनवं यथौ ॥ ४ ॥ ततः शरसहस्राणि प्रमु-  
क्षन् पाण्डवो युधि । तीर्यं संछादयामास यथा मेघो दिवाकरम् ॥ ५ ॥ तेन  
सम्यक् प्रणीतानि शरजालानि भागशः । प्रतिजग्राह गाङ्गेयः शतशोऽथ सहस्र-  
शः ॥ ६ ॥ तथैव शरजालानि तीर्येणस्तानि मारिष । आकाशे समदृश्यस्तु खग-  
मानां ब्रजा इव ॥ ७ ॥ निमेषार्द्धात् कौन्तेयं तीर्यः शान्तनवो युधि । अदृश्यं  
समरे चक्रे शरजालेन भागशः ॥ ८ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा कौरवस्य महाअनः ।  
नाराचं प्रेषयामास क्रुद्ध आशीविषोपमम् ॥ ९ ॥ असंप्राप्तं ततस्तु क्रूरप्रेण  
महारथः । चिच्छेद समरे राजन् तीर्यस्तस्य धनुश्च्युतम् ॥ १० ॥ तस्तु चिद्वां रणे तीर्यो  
नाराचं कालसमिभम् । निजस्त्रे कौरवेषस्य हयान् काञ्चनभूषणान् ॥ ११ ॥ इता-  
श्वस्तु रथं त्यक्त्वा धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः । आरुरोह रथं तूर्णं नकुलस्य महाअन-  
नः ॥ १२ ॥ यमावपि सुसंक्रुद्धो समासाद्य रणे तदा । शरैः संछादयामास तीर्यः

পরপুরঞ্জয়ঃ ॥ ১৩ ॥ তৌ তু দৃষ্টা মহারাজ ভীষ্মবাণপ্রপীড়িতৌ । জগামাথ পরাং  
 চিন্তাং ভীষ্মস্য বধকাজ্জয়া ॥ ১৪ ॥ ততো যুধিষ্ঠিরো বশ্যান্নাজ্জস্তান্ সমচোদ-  
 যৎ । ভীষ্মং শান্তনবং সংখে নিহতেতি সুহৃদাগান্ ॥ ১৫ ॥ ততস্তে পার্থিবাঃ  
 সর্বে শ্ৰদ্ধা পার্থস্য ভাষিতম্ । মহতা রথবংশেন পরিবক্রঃ পিতামহম্ ॥ ১৬ ॥  
 স সমস্তাং পরিবৃতঃ পিতা দেবত্রতস্তব । চিক্রীড ধনুষা রাজন্ পাতযানো মহার-  
 থান্ ॥ ১৭ ॥ তং চরন্তং রণে পার্থা দদৃশুঃ কৌরবং যুধি । মৃগমধ্যং প্রবিশ্যেব যথা  
 সিংহং মহাবনে ॥ ১৮ ॥ তর্জযানং রণে শূরাংস্ত্রাসযানঞ্চ সাযকৈঃ । দৃষ্টা ত্রেসুম্নহা-  
 রাজ সিংহং মৃগগণা ইব ॥ ১৯ ॥ রণে ভরতসিংহস্য দদৃশুঃ ক্ষত্রিয়া গতিম্ । অগ্রের্ষায়ু-  
 সহায়স্য যথা কক্ষং দিধক্ষতঃ ॥ ২০ ॥ শিরাংসি রথিনাং ভীষ্মঃ পাতযামাস সং-  
 যুগে । তালেভ্য ইব পক্ষানি ফলানি কুশলো নরঃ ॥ ২১ ॥ পতদ্ভিষ্ম মহারাজ শি-  
 রোভিধরনীতলে । বভূব তুমুলঃ শব্দঃ পততামশ্মনামিব ॥ ২২ ॥ তস্মিন্ সূতুমুলে  
 যুদ্ধে বর্তমানে ভয়ানকে । সর্বেষামেব সৈন্যানামাসীদ্যতিকরো মহান্ ॥ ২৩ ॥  
 ভিন্নেষু তেষু ব্যূহেষু ক্ষত্রিয়া ইতরেতরম্ । একমেকং সমাহুয যুদ্ধাযৈবোপতস্থি-  
 রে ॥ ২৪ ॥ শিখণ্ডী তু সমাসাদ্য ভরতানাং পিতামহম্ । অভিদুদ্ভাব বেগেন তিষ্ঠ  
 তিষ্ঠেতি চাত্রবীৎ ॥ ২৫ ॥ অনাদৃত্য ততো ভীষ্মস্তং শিখণ্ডিনমাহবে । প্রযযৌ  
 সৃঞ্জযান্ ক্রুদ্ধঃ স্ত্রীত্বং চিন্ত্য শিখণ্ডিনঃ ॥ ২৬ ॥ সৃঞ্জযাস্ত ততো হৃষ্টা ভীষ্মং দৃষ্টা  
 মহারথম্ । সিংহনাদান্ বহুবিধাংশক্রুঃ শঙ্খবিমিশ্রিতান্ ॥ ২৭ ॥ ততঃ প্রববৃতে  
 যুদ্ধং ব্যতিষক্তরথদ্বিপম্ । অপরাং দিশমাস্থাষ স্থিতে সবিতিরি প্রভো ॥ ২৮ ॥  
 ধৃষ্টদ্যনোহথ পাঞ্চাল্যাঃ সাত্যকিষ্ম মহারথঃ । পীডযন্তৌ ভৃশং সৈন্যং শক্তিতো-  
 মরবৃষ্টিভিঃ ॥ ২৯ ॥ শট্শ্রব্ধবিধৈ রাজমাজ্জমুস্তাবকানুগে । তে হন্যমানাঃ সমরে  
 তাবকাঃ পুরুষর্ষভ ॥ ৩০ ॥ আর্ষ্যাং যুদ্ধে মতিং ক্রুত্বা ন ত্যজন্তি স্ম সংযুগম্ । যথোৎ-  
 সাহঞ্চ সমরে জম্বুলোকং মহারথাঃ ॥ ৩১ ॥ তত্রাক্রন্দো মহানাঙ্গীতাবকানাং মহা-  
 অন্নাম্ । বধ্যতাং সমরে রাজন্ পার্ষতেন মহাঅন্না ॥ ৩২ ॥ তং শ্ৰদ্ধা নিনদং যোরং  
 তাবকানাং মহারথৌ । বিন্দান্নুবিন্দাবান্ত্যৌ পার্ষতং প্রত্যুপস্থিতৌ ॥ ৩৩ ॥  
 তৌ তস্য তুরগান্ হত্বা স্বরমাণৌ মহারথৌ । ছাদযামাসতুরুভৌ শরবর্ষণ পার্ষ-  
 তম্ ॥ ৩৪ ॥ অবপ্লুত্যাথ পাঞ্চাল্যো রথাতুর্গং মহাবলঃ । আরুরোহ রথং তুর্গং  
 সাত্যকৈঃ সুমহাঅনঃ ॥ ৩৫ ॥ ততো যুধিষ্ঠিরো রাজা মহত্যা সেনযাবৃতঃ । আব-  
 স্ত্যৌ সমরে ক্রুদ্ধাবভ্যধাবৎ পরন্তপৌ ॥ ৩৬ ॥ তথৈব তব পুত্রোহপি সর্বৌদ্ঘো-  
 গেন মারিষ । বিন্দান্নুবিন্দৌ সমরে পরিবার্য্যাবতস্থিবান্ ॥ ৩৭ ॥ অজ্জ্বলশ্চাপি

सङ्क्रुद्धः क्रुद्धिमान् क्रुद्धिर्वषत । अयोधयत सङ्ग्रामे वज्रपाणिर्निवासुरान् ॥ ७८ ॥  
 द्रोणश्च समरे क्रुद्धः पुलस्य प्रियकृत्तव । व्यधमं सर्वपाङ्गालाङ्गुलराशिनिबान-  
 लः ॥ ७९ ॥ दुर्योधनपुरोगास्तु पुल्लास्तुव विशांस्पते । परिवार्य रणे तीमं युयुधुः  
 पाण्डवैः सह ॥ ८० ॥ ततो दुर्योधनो राजा लोहितायति भास्करे । अब्रवीत् ताव-  
 कान् सर्वाङ्गुलधमिति भारत ॥ ८१ ॥ युध्यतास्तु तथा तेषां कूर्बतां कर्म दुष्करम् ।  
 अस्तु गिरिमथाकटे न प्रकाशति भास्करे ॥ ८२ ॥ प्रावर्तत नदी घोरौ शोणितो-  
 यतरङ्गिनी । गोमायुगणसङ्कीर्णा क्णनेन क्णदामुखे ॥ ८३ ॥ शिवाभिरशिवाभिश्च  
 रूवस्तीतिः समस्ततः । घोरमायोधनं जङ्घे भूतसंघसमाकुलम् ॥ ८४ ॥ राक्-  
 साश्च पिशाचाश्च तथान्ये पिशिताशिनः । समस्ततो व्यदृश्यन्तु शतशोऽथ सहस्र-  
 शः ॥ ८५ ॥ अर्जुनोऽथ सूशर्मादीन् राज्ञः सहपदानुगान् । विजित्य पृतनामध्ये  
 ययौ स्वशिविरं प्रति ॥ ८६ ॥ युधिष्ठिरोऽपि कौरव्यो ब्राह्म्यां सहितस्तदा ।  
 ययौ स्वशिविरं राजनिशायां सेनयावृतः ॥ ८७ ॥ तीमसेनोऽपि राजेन्द्र दुर्यो-  
 धनमुखानुथान् । अवजित्य ततः सङ्घे ययौ स्वशिविरं प्रति ॥ ८८ ॥ दुर्यो-  
 धनोऽपि नृपतिः परिवार्य महारथैः । तीमं शान्तनवं तूर्णं प्रयातः शिविरं  
 प्रति ॥ ८९ ॥ द्रोणो द्रोणिः रूपः शल्यः कृतवर्मा च सात्वतः । परिवार्य चमू-  
 सर्वे प्रययुः शिविरं प्रति ॥ ९० ॥ तथैव सात्यकी राजन् धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः ।  
 परिवार्य रणे योधान् ययतुः शिविरं प्रति ॥ ९१ ॥ एवमेते महाराज तावकाः  
 पाण्डवैः सह । पर्यवर्तन्तु सहिता निशाकाले परस्तपाः ॥ ९२ ॥ ततः स्वशिविरं  
 गत्वा पाण्डवाः कुरवस्तथा । न्यविशन्तु महाराज पूजयन्तुः परंस्परम् ॥ ९३ ॥ रक्षां  
 कृत्वाङ्गनः शूरा दृष्ट्वा गुल्मान् यथाविधि । अपनीय च शल्याङ्गुले स्नात्वा च विविधैर्ज-  
 लैः ॥ ९४ ॥ कृतस्वस्त्ययनाः सर्वे स्तूयमानाश्च वन्दिभिः । गीतवादित्रशब्देन चिक्री-  
 डुस्ते यशस्विनः ॥ ९५ ॥ मुहूर्तादिव तं सर्वमभवत् स्वर्गसन्मितम् । न हि युद्धकथां  
 काङ्क्षित्वा चक्रुर्महारथाः ॥ ९६ ॥ ते प्रस्रुप्ते बले तत्र परिश्रान्तजने नृप । हस्त्य-  
 श्वबहले राजन् प्रेक्षणीये बभूवतुः ॥ ९७ ॥

इति तीमपर्वणि तीमवधपर्वणि सप्तमदिवसयुद्धावहारे

त्र्यशीतितमोऽध्यायः ॥ ८७ ॥



सङ्गद्य उवाच । परिणाम्य निशां तास्तु सुखसुप्ता जनेश्वराः । कुरवः पाण्डवाश्चैव  
 पुनर्युद्धाय निर्ययुः ॥ १ ॥ ततः शक्यो महानासीत् सेनयोरुत्तयोरपि । निर्गच्छ-

মানযোঃ সংখ্যে সাগরপ্রতিমে। মহান্ ॥ ২ ॥ ততো দুৰ্য্যোধনো রাজা চিত্রসেনো  
 বিবিশতিঃ । ভীষ্মশ্চ রথিনাং শ্রেষ্ঠো ভারদ্বাজশ্চ বৈ দ্বিজঃ ॥ ৩ ॥ একীভূতাঃ  
 স্ত্ৰসংযতাঃ কৌরবাণাং মহারথাঃ । ব্যূহায় বিদধু রাজন্ পাণ্ডবান্ প্রতি দংশি-  
 তাঃ ॥ ৪ ॥ ভীষ্মঃ ক্রুত্বা মহাব্যুহং পিতা তব বিশাম্পতে । সাগরপ্রতিমং ঘোরং  
 বাহনোন্মিতরঙ্গিণম্ ॥ ৫ ॥ অগ্রতঃ সর্বসৈন্যানাং ভীষ্মঃ শান্তনবো যযৌ । মাল-  
 বৈর্দাক্ষিণাত্যশ্চ আবন্ত্যশ্চ সমন্বিতঃ ॥ ৬ ॥ ততোহনন্তরমেবাসীদ্ধারদ্বাজঃ প্রতা-  
 পবান্ । পুলিন্দৈঃ পারদৈশ্চৈব তথা ক্ষুদ্রকমালবৈঃ ॥ ৭ ॥ দ্রোণাদনন্তরং যত্তো  
 ভগদত্তঃ প্রতাপবান্ । মাগধৈশ্চ কলিঙ্গৈশ্চ পিশাটৈশ্চ বিশাম্পতে ॥ ৮ ॥ প্রাগ্-  
 জ্যোতিষাদনু নৃপঃ কৌশল্যোহথ বৃহদ্বলঃ । মেকলৈস্ত্রেপুরৈশ্চৈব চিলুকৈশ্চ সম-  
 ন্বিতঃ ॥ ৯ ॥ বৃহদ্বলস্ততঃ শূরস্ত্রিগৰ্ভঃ প্রস্থলাধিপঃ । কাষ্মৌজৈর্বহুভিঃ সার্কং প্রব-  
 রৈশ্চ সহস্রশঃ ॥ ১০ ॥ দ্রৌণিস্তু রভসঃ শূরস্ত্রিগৰ্ভাদনু ভারত । প্রযযৌ সিংহনাদেন  
 নাদযানো ধরাতলম্ ॥ ১১ ॥ তথা সর্বেণ সৈন্যেন রাজা দুৰ্য্যোধনস্তদা । দ্রৌণে-  
 রনন্তরং প্রায়াৎ সোদরৈঃ পরিবারিতঃ ॥ ১২ ॥ দুৰ্য্যোধনাদনু ততঃ রূপঃশারদ্বতো  
 যযৌ । এবমেব মহাব্যুহঃ প্রযযৌ সাগরোপমঃ ॥ ১৩ ॥ রেজুস্তত্র পতাকাশ্চ শ্বেত-  
 ক্ষত্রাণি বা বিভো । অঙ্গদান্যথ চিত্রাণি মহার্হাণি ধনুংষি চ ॥ ১৪ ॥ তন্ত দৃষ্ট্বা মহা-  
 ব্যুহং তাবকানাং মহারথঃ । যুধিষ্ঠিরোহত্রবীভূর্ণং পার্ষতং পূতনাপতিম্ ॥ ১৫ ॥  
 পশ্য ব্যুহং মহেষাস নিৰ্ম্মিতং সাগরোপমম্ । প্রতিব্যুহং ত্রমপ্যত্র কুরু পার্ষত  
 সত্বরম্ ॥ ১৬ ॥ ততঃ স পার্ষতঃ শূরো ব্যুহং চক্রে সুদারুণম্ । শৃঙ্গাটকং মহারাজ  
 পরব্যুহবিনাশনম্ ॥ ১৭ ॥ শৃঙ্গাভ্যাং ভীমসেনশ্চ সাত্যকিশ্চ মহারথঃ । রথৈ-  
 রনেকসাহসৈস্তথা হ্যপদাতিভিঃ ॥ ১৮ ॥ নাভ্যামভূমরশ্রেষ্ঠঃ শ্বেতাস্থঃ কৃষ্ণসা-  
 রথিঃ । মধ্যে যুধিষ্ঠিরো রাজা মাদ্রীপুল্লৌ চ পাণ্ডবৌ ॥ ১৯ ॥ তথৈতরে মহেষাসাঃ  
 সহসৈন্যা মহারথাঃ । ব্যুহং তং পুরযামাসুর্বুহশাস্ত্রবিশারদাঃ ॥ ২০ ॥ অভিমন্যু-  
 স্ততঃ পশ্চাদ্বিরাটশ্চ মহারথঃ । দ্রৌপদেযাশ্চ সংহৃষ্টা রাক্ষসশ্চ ঘটোৎকচঃ ॥ ২১ ॥  
 এবমেতন্মহাব্যুহং ব্যুহ ভারত পাণ্ডবাঃ । অতিষ্ঠন্ সমরে শূরা যোদ্ধুকামা জ্যৈ-  
 ষিণঃ ॥ ২২ ॥ ভেরীশকাশ্চ তুমুলা বিমিশ্রাঃ শঙ্খনিবনৈঃ । ক্ষেড়িতাক্ষেষ্কাটিতোৎ-  
 ক্রুর্ফৈঃ স্ত্রীভীমাঃ সর্বতো দিশঃ ॥ ২৩ ॥ ততঃ শূরাঃ সমাসাদ্য সমরে তে পরস্প-  
 রম্ । নেত্রৈরনির্ম্মিষৈ রাজমবৈক্ষন্ত পরস্পরম্ ॥ ২৪ ॥ নামভিস্তে মনুষ্যেস্ত পূর্বং  
 যোধাঃ পরস্পরম্ । যুদ্ধায় সমবর্তন্ত সমাহূযেতরেতরম্ ॥ ২৫ ॥ ততঃ প্রববৃতে যুদ্ধং  
 ঘোররূপং ভয়ানকম্ । তাবকানাং পরেষাঞ্চ নিম্নতামিতরেতরম্ ॥ ২৬ ॥ নারাচা

নিশিতাঃ সংখ্যে সংপতন্তি স্ম ভারত । ব্যাত্তাননা ভয়করা উরগা ইব সর্ষ-  
 শঃ ॥ ২৭ ॥ নিম্পেতুর্বিমলাঃ শক্র্যস্তৈলধোতাঃ সমস্ততঃ । অম্বুদেভ্যো যথা রাজন্  
 ব্রাজমানাঃ শতহৃদাঃ ॥ ২৮ ॥ গদাশ্চ বিমলেঃ পটেইর্হেমবন্দির্বিভূষিতাঃ । পত-  
 স্ত্যস্তত্র দৃশ্যন্তে গিরিশৃঙ্খোপমাঃ শুভাঃ । নিস্ত্রিংশাশ্চ ব্যরাজন্ত বিমলাম্বরুসম্মি-  
 তাঃ ॥ ২৯ ॥ আর্ষভাণি চ চন্দ্রাণি শতচন্দ্রাণি ভারত । অশোভন্ত রুণে রাজন্  
 পতমানানি সর্ষশঃ ॥ ৩০ ॥ তেহন্যোন্যং সমরে সেনে যুধ্যমানে নরাধিপ । অশো-  
 ভেতাং যথা দেবদৈত্যসেনে সমুদ্যতে ॥ ৩১ ॥ অভ্যদ্রবন্ত সমরে তে চান্যোনি্যং  
 সমস্ততঃ । রথাস্তু রথিভিস্তুর্গং প্রেষিতাঃ পরমাহবে । যুগৈর্ঘুগানি সংশ্লিষ্য যুযুধুঃ  
 পার্থিবর্ষভাঃ ॥ ৩২ ॥ দন্তিনাং যুধ্যমানানাং সজ্জর্ষাৎ পাবকোহতবৎ । দন্তেষু  
 ভরতশ্রেষ্ঠ সধূমঃ সর্ষতো দিশঃ ॥ ৩৩ ॥ প্রাসৈরভিহতাঃ কেচিৎ গজযোধাঃ সম-  
 স্ততঃ । পতমানাঃ স্ম দৃশ্যন্তে গিরিশৃঙ্খাগা ইব ॥ ৩৪ ॥ পাদাতাশ্চাপ্যদৃশ্যন্ত  
 নিম্নস্তোহথ পরস্পরম্ । চিত্ররূপধরাঃ শূরাঃ নথরপ্রাসযোধিনঃ ॥ ৩৫ ॥ অন্যোন্যং  
 তে সমাসাদ্য কুরুপাণ্ডবসৈনিকাঃ । শস্ত্রৈর্নানাবিধৈর্ঘোঠৈ রণে নিত্ব্যর্ষমক্ষ-  
 যম্ ॥ ৩৬ ॥ ততঃ শান্তনবো ভীষ্মো রথঘোষণে নাদযন্ । অভ্যাগমদ্রুণে পাণ্ডুন্  
 ধনুঃশব্দেন মোহযন্ ॥ ৩৭ ॥ পাণ্ডবানাং রথাশ্চাপি নদন্তো ভৈরবং রবম্ । অভ্য-  
 দ্রবন্ত সংযত্বা ধৃচ্চদ্যুন্নপুরোগমাঃ ॥ ৩৮ ॥ ততঃ প্রববৃতে যুদ্ধং তব তেষাঞ্চ ভা-  
 রত । নরাশ্বরথনাগানাং ব্যতিষক্তং পরস্পরম্ ॥ ৩৯ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বাণি ভীষ্মবধপর্বাণি অষ্টমদিবসযুদ্ধারম্ভে  
 চতুরশীতিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৮৪ ॥



সঞ্জয় উবাচ । ভীষ্মন্তু সমরে ক্রুদ্ধং প্রতপস্তং সমস্ততঃ । ন শেকুঃ পাণ্ডবা দ্রক্ষুং  
 তপস্তমিব ভাস্করম্ ॥ ১ ॥ ততঃ সর্বাণি সৈন্যানি ধর্মপুল্লস্য শাসনাৎ । অভ্যধা-  
 বন্ত গাঙ্গেযং মর্দয়ন্তং শিতৈঃ শরৈঃ ॥ ২ ॥ স তু ভীষ্মো রণশ্লাঘী সোমকান্ সহ-  
 সৃঞ্জয়ান্ । পাঞ্চালাংশ্চ মহেষ্মাসান্ পাতযামাস শাষকৈঃ ॥ ৩ ॥ তে বধ্যমানা  
 ভীষ্মেণ পাঞ্চালাঃ সোমকৈঃ সহ । ভীষ্মমেবাভ্যযুস্তুর্গং ত্যক্ত্বা মৃত্যুকৃতং ভযম্ ॥ ৪ ॥  
 স তেষাং রথিনাং বীরোঃ ভীষ্মঃ শান্তনবো যুধি । চিচ্ছেদ সমরে রাজন্ বাহুনথ  
 শিরাংসি চ ॥ ৫ ॥ বিরথানুথিনশ্চক্রে পিতা দেবব্র তস্তব । পতিতান্ন্যত্নমাঙ্গানি  
 হযেভ্যো হযসাদিনান্ ॥ ৬ ॥ নির্মল্লুষ্যাংশ্চ মাতঙ্গান্ নির্বৃক্ষানিব পর্ষতান্ । অপ-  
 শ্যাম মহারাজ ভীষ্মাস্ত্রেণ প্রমোহিতান্ ॥ ৭ ॥ ন তত্রাসীৎ পুমান্ কশ্চিৎ পাণ্ড-

বানাং বিশাম্পতে । অন্যত্র রথিনাং শ্রেষ্ঠাঙ্গীমসেনান্মহাবলাং । স হি ভীষ্মং  
সমাসাদ্য বারযামাস সংযুগে ॥ ৮ ॥ ততো নিষ্ঠানকো ঘোরো ভীষ্মভীমসমাগমে ।  
বভূব সর্বসৈন্যানাং ঘোররূপো ভয়ানকঃ । তথৈব পাণ্ডবা হৃফাঃ সিংহনাদমথা-  
নদন্ ॥ ৯ ॥ ততো দুর্যোধনো রাজা সৌদর্যৈঃ পরিবারিতঃ । ভীষ্মং জুগোপ  
সমরে বর্ত্তমানে মহাক্ষয়ে ॥ ১০ ॥ ভীমস্তু সারথিং হত্বা ভীষ্মস্য রথিনাংবরঃ । প্রক্র-  
তাশ্চে রথে তস্মিন্ প্লবমানে সমন্ততঃ ॥ ১১ ॥ সুনাতস্য ক্ষুরপ্রেণ শিরশ্চিচ্ছেদ ভা-  
রতী পূর্ণায়তবিসৃষ্টেন সহতো ন্যপতন্তুবি ॥ ১২ ॥ হতে তস্মিন্মহারাজ তব পুত্রে  
মহারথে । নামৃষ্যস্তু রণে শূরাঃ সৌদরাঃ সপ্ত সংযুগে ॥ ১৩ ॥ আদিত্যকেতুর্-  
হ্মাশী কুণ্ডারো মহোদরঃ । অপরাজিতঃ পণ্ডিতকো বিশালাক্ষশ্চ দুর্জয়ঃ ॥ ১৪ ॥  
পাণ্ডবং চিত্রসম্মাহং বিচিত্রকবচায়ুধাঃ । অভ্যবর্ত্তন্ত সংগ্রামে যোদ্ধকামারিমর্দ-  
নাঃ ॥ ১৫ ॥ মহোদরস্তু সমরে ভীমং বিব্যাধ পত্রিভিঃ । নবতির্ভ্রজুসংক্কাশৈর্নমুচিং  
বৃত্রহা যথা ॥ ১৬ ॥ আদিত্যকেতুঃ সপ্তত্যা বহ্মাশী চৈব পঞ্চভিঃ । নবত্যা কুণ্ডা-  
রস্তু বিশালাক্ষশ্চ সপ্তভিঃ ॥ ১৭ ॥ অপরাজিতো মহারাজ পরাজিষ্কুর্ম্মহারথঃ ।  
শরৈর্বহুভিরানর্ছাঙ্গীমসেনং মহাবলম্ ॥ ১৮ ॥ রণে পণ্ডিতকশ্চৈচনং ত্রিভির্বাটৈঃ  
সমার্পযৎ । স তন্ন মৃষে ভীমঃ শত্রুভির্বধমাহবে ॥ ১৯ ॥ ধনুঃ প্রপীড়্য বামেন  
করেণামিত্রকর্ষণঃ । শিরশ্চিচ্ছেদ সমরে শরেণানতপর্ষণা ॥ ২০ ॥ অপরাজিতস্য  
সুনসং তব পুত্রস্য সংযুগে । পরাজিতস্য ভীমেন নিপপাত শিরো মহীম্ ॥ ২১ ॥  
অথাপরেণ ভল্লেন কুণ্ডারং মহারথম্ । প্রাহিণোন্মৃত্যুলোকায সর্বসৈন্যস্য পশ্য-  
তঃ ॥ ২২ ॥ ততঃ পুনরমেযাত্মা প্রসন্নায় শিলীমুখম্ । প্রেষয়ামাস সমরে পণ্ডিতং  
প্রতি ভারত ॥ ২৩ ॥ স শরঃ পণ্ডিতং হত্বা বিবেশ ধরণীতলম্ । যথা নরং নিহত্যাশু  
ভুজগঃ কালচোদিতঃ ॥ ২৪ ॥ বিশালাক্ষশিরশ্চিত্ত্বা পাতয়ামাস ভুতলে । ত্রিভিঃ  
শরৈরদীনায়া স্মরন্ কেশং পুরাতনম্ ॥ ২৫ ॥ মহোদরং মহেষ্বাসং নারাচেন  
স্তনাস্তরে । বিব্যাধ সমরে রাজন্ সহতো ন্যপতন্তুবি ॥ ২৬ ॥ আদিত্যকেতো-  
শ্চত্রঞ্চ ছিত্বা বাণেন সংযুগে । ভল্লেন ভৃশতীক্লেদ শিরশ্চিচ্ছেদ ভারত ॥ ২৭ ॥  
বহ্মাশিনং ততো ভীমঃ শরেণানতপর্ষণা । প্রেষয়ামাস সংক্রুদ্ধো যমস্য সদনং  
প্রতি ॥ ২৮ ॥ প্রদুক্রবুস্ততস্ত্বন্যে পুত্রাস্তব বিশাম্পতে । মন্যমানা হি তৎ সত্যং  
সভাযান্তস্য ভাষিতম্ ॥ ২৯ ॥ ততো দুর্যোধনো রাজা ভ্রাতৃব্যসনকর্ষিতঃ । অবু-  
বীৎ তাবকান্ সর্ষান্ ভীমোহযং যুধি বধ্যতাম্ ॥ ৩০ ॥ এবমেতে মহেষ্বাসাঃ পুত্রা-  
স্তব বিশাম্পতে । ভ্রাতৃন্ সংদৃশ্য নিহতান্ প্রাস্মরন্তু হি তদ্বচঃ ॥ ৩১ ॥ যদক্র-

বান্ মহাপ্রাজ্ঞঃ ক্ষত্বা হিতমনাময়ম্ । তদিদং সমনুপ্রাপ্তং বচনং সত্যবাদি-  
নঃ ॥ ৩২ ॥ লোভমোহসমাবিষ্টঃ পুত্রপ্রীত্যা জনাধিপ । ন বুধ্যসে পুরা যত্নু  
তথ্যমুক্তং হিতং বচঃ ॥ ৩৩ ॥ তবৈব চ বধার্থায় পুত্রাণাং পাণ্ডবো বলী । মূনং  
জাতো মহাবাহুর্ষথা হস্তি স্ম কৌরবান্ ॥ ৩৪ ॥ ততো দুর্যোধনো রাজা ভীষ্ম-  
মাসাদ্য গারিষ । শোকেন মহতাবিষ্টো বিললাপাতিদুঃখিতঃ ॥ ৩৫ ॥ নিহতা  
ভ্রাতরঃ শূরাঃ ভীমসেনেন মে যুধি । যতমানাস্তথান্যেহপি হন্যন্তে সর্বসৈনি-  
কাঃ ॥ ৩৬ ॥ তবাংশ্চ মধ্যস্থতয়া নিত্যমস্মানুপেক্ষতে । সোহহং কাপথমর্কটঃ  
পশ্য দৈবমিদং মম ॥ ৩৭ ॥ এতচ্ছ্রুত্বা বচঃ ক্রুরং পিতা দেবব্রতস্তব । দুর্যোধন-  
মিদং বাক্যমব্রবীৎ সাশ্ৰুলোচনম্ ॥ ৩৮ ॥ উক্তমেতন্ময়া পূর্বং দ্রোণেন বিদু-  
রেণ চ । গান্ধার্য্যা চ যশস্বিন্যা তত্ত্বং তাত ন বুদ্ধবান্ ॥ ৩৯ ॥ সমযশ্চ ময়া পূর্বং  
কৃতো বঃ শত্রুসুদন । নাহং যুধি বিমোক্তব্যো নাপ্যাচার্য্যঃ কথঞ্চন ॥ ৪০ ॥ যং যং  
হি ধার্ত্তরাষ্ট্রাণাং ভীমো দ্রক্ষ্যতি সংযুগে । হনিষ্যতি রণে তং তং সত্যমেতদ্বুবীমি  
তে ॥ ৪১ ॥ স ত্বং রাজন্ স্থিরো ভূত্বা দৃঢ়াং ক্রুত্বা রণে মতিম্ । যোধযশ্ব রণে পা-  
র্থান্ স্বর্গং ক্রুত্বা পরাযণম্ ॥ ৪২ ॥ ন শক্যাঃ পাণ্ডবা জেতুং দেবৈরপি সবাসবৈঃ ।  
তস্মাদ্যুদ্ধে স্থিরাং ক্রুত্বা মতিং যুধ্যস্ব ভারত ॥ ৪৩ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি আদিত্যকেতুপ্রভৃতিবধে

পঞ্চাশীতিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৮৫ ॥



ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । দৃষ্ট্বা মম হতান্ সর্বান্ বহুনেকেন সঞ্জয় । ভীষ্মো দ্রোণঃ  
রূপশ্চৈব কিমকুর্ষত সংযুগে ॥ ১ ॥ অহন্যহনি মে পুত্রাঃ ক্ষয়ং গচ্ছন্তি সংযুগে ।  
মন্যেহং সর্বথা স্মৃত দৈবেনোপহতা ভূশম্ । যত্র মে তনয়াঃ সর্বে জীযন্তে ন জয-  
ন্ত্যুত ॥ ২ ॥ যত্র ভীষ্মস্য দ্রোণস্য রূপস্য চ মহাত্মনঃ । সৌমদন্তেশ্চ বীরস্য ভগদত্তস্য  
চোভযোঃ ॥ ৩ ॥ অশ্বখান্নস্তথা তাত শূরাণাং সুমহাত্মনাম্ । অন্যেষাষ্টৈশ্চ শূরা-  
ণাং মধ্যগাস্তনয়া মম । যদহন্যন্ত সংগ্রামে কিমন্যদ্ভাগধেযতঃ ॥ ৪ ॥ ন হি দুর্যো-  
ধনো মন্দঃ পুরা প্রোক্তমবুধ্যত । বার্য্যমাণো ময়া তাত ভীষ্মেণ বিদুরেণ চ ॥ ৫ ॥  
গান্ধার্য্যা টেব দুর্মেধাঃ সততং হিতকাম্যয়া । নাবুধ্যত পুরা মোহান্তস্য প্রাপ্ত-  
মিদং ফলম্ ॥ ৬ ॥ যদ্ভীমসেনঃ সমরে পুত্রান্ মম বিশেষতঃ । অহন্যহনি সংক্রু-  
দ্ধো নযতে যমসাদনম্ ॥ ৭ ॥ সঞ্জয় উবাচ । ইদন্তং সমনুপ্রাপ্তং ক্ষত্বুর্ষচনমুক্ত-  
মম্ । ন বুদ্ধবানসি বিভো প্রোচ্যমানং হিতং তদা ॥ ৮ ॥ নিবারয় স্মৃতান্ দ্যুতাং

পাণ্ডবান্ মা ক্রহেতি চ। সূহৃদাং হিতকামানাং ক্রবতাং তত্তদেব চ ॥ ৯ ॥ যম  
 শুক্রযমে বাক্যং মর্ত্যঃ পথ্যমিবৌষধম্। তদেবং স্বামনুপ্রাপ্তং বচনং সাধুভাষি-  
 তম্ ॥ ১০ ॥ বিদরদ্রোণভীষ্মাণাং তথান্যেষাং হিতৈষিণাম্। অরুহ্মা বচনং পথ্যং  
 ক্ষম্ গচ্ছন্তি কৌরবাঃ ॥ ১১ ॥ তদেতৎ সমনুপ্রাপ্তং পূৰ্ণমেব বিশাম্পতে! ত-  
 স্মান্মে শৃণু তত্বেন যথা যুদ্ধমবর্ত্তত ॥ ১২ ॥ মধ্যাহ্নে স্মমহারৌদ্রঃ সংগ্রামঃ সম-  
 পদ্যত। লোকক্ষয়করো রাজংস্তমে নিগদতঃ শৃণু ॥ ১৩ ॥ ততঃ সর্বাণি সৈন্যা-  
 নি ধর্মপুত্রস্য শাসনাৎ। সংরক্ষান্যভ্যধাবন্ত ভীষ্মমেব জিঘাংসযা ॥ ১৪ ॥ ধৃষ্-  
 দ্যুয়ঃ শিখণ্ডী চ সাত্যকিষ্চ মহারথঃ। যুক্তানীকা মহারাজ ভীষ্মমেব সমভ্য-  
 যুঃ ॥ ১৫ ॥ বিরাতো ক্রপদশ্চৈব সহিতঃ সর্বসোমকৈঃ। অভ্যদ্রবন্ত সংগ্রামে  
 ভীষ্মমেব মহারথাঃ ॥ ১৬ ॥ কৈকেয়া ধৃষ্কৈতুশ্চ কুন্তিতোজশ্চ দংশিতঃ। যুক্তা-  
 নীকা মহারাজ ভীষ্মমেব সমভ্যযুঃ ॥ ১৭ ॥ অর্জুনো দ্রৌপদেয়াশ্চ চেকিতানশ্চ  
 বীর্যবান্। দুৰ্য্যোধনসমাদিষ্ঠান্নাজ্জঃ সর্বান্ সমভ্যযুঃ ॥ ১৮ ॥ অভিমন্যুস্তথা  
 বীরো হৈভিষশ্চ মহারথঃ। ভীমসেনশ্চ সংক্রদ্ধাস্তেহভ্যধাবন্ত কৌরবান্ ॥ ১৯ ॥  
 ত্রিধাভূতৈরবধ্যস্ত পাণ্ডবৈঃ কৌরবা যুধি। তথৈব কৌরবৈ রাজমবধ্যস্ত পরে  
 রণে ॥ ২০ ॥ দ্রোণস্ত রথিনাং শ্রেষ্ঠঃ সোমকান্ সঞ্জয়ৈঃ সহ। অভ্যদ্রবত সংক্রুদ্ধঃ  
 প্রেষষিষ্যন্ যমক্ষয়ম্ ॥ ২১ ॥ তত্রাক্রন্দো মহানাসীৎ সৃঞ্জয়ানাং মহান্ননাম্।  
 বধ্যতাং সমরে রাজন্ ভারদ্বাজেন ধ্বনি। ॥ ২১ ॥ দ্রোণেন নিহতাস্তত্র কল্লিয়া  
 বহবো রণে। বিচেষ্টন্তো ব্যদৃশ্যন্ত ব্যাধিক্লিষ্টা নরা ইব ॥ ২৩ ॥ কূজতাং ক্রন্দ-  
 তাশ্চৈব স্তনতাশ্চৈব সংযুগে। অভিসংক্রযতে শকঃ ক্ষুৎকুশানাং নৃণামিব ॥ ২৪ ॥  
 তথৈব কৌরবেষাণাং ভীমসেনো মহাবলঃ। চকার কদনং ঘোরং ক্রুদ্ধঃ কাল  
 ইবাপরঃ ॥ ২৫ ॥ বধ্যতাং সর্বসৈন্যানামন্যোন্যেন মহারণে। প্রাবর্ত্তত নদী  
 ঘোরা শোণিতৌষতরঙ্গিণী ॥ ২৬ ॥ স সংগ্রামো মহারাজ ঘোরকপোহভবম-  
 হান্। কুব্ধাং পাণ্ডবানাঞ্চ যমরাষ্টিবিবর্দ্ধনঃ ॥ ২৭ ॥ ততো ভীমো রণে ক্রুদ্ধো  
 রভসশ্চ বিশেষতঃ। গজানীকং সমাসাদ্য প্রেষয়ামাস মৃত্যবে ॥ ২৮ ॥ তত্র ভার-  
 ত ভীমেন নারাচাভিহতা গজাঃ। পেতুঃ সেদুশ্চ নেদুশ্চ দিশশ্চ পরিবভ্রমুঃ ॥ ২৯ ॥  
 ছিন্নস্তা মহানাগাশ্চিন্নগাত্রাশ্চ মারিষ। ক্রৌঞ্চবহ্নিনদন্তুশ্চ পৃথিবীমবশিশি-  
 রে ॥ ৩০ ॥ নকুলঃ সহদেবশ্চ হযানীকমভিক্রতো। তে হযাঃ কাঞ্চনাপীড়া  
 রুক্ষতাণ্ডপরিচ্ছদাঃ। বধ্যমানা ব্যদৃশ্যন্ত শতশোহথ সহস্রাঃ। পতন্তি হযৈরা-  
 জন্ সমাকীর্যত মেদিনী ॥ ৩১ ॥ নিজ্জ্বলৈশ্চ শ্বসন্তি শ্চ কূজন্তি গতাসুভিঃ।



হৃষৈর্বভৌ নরশ্রেষ্ঠ নানাকপধরৈর্ধরা ॥ ৩২ ॥ অর্জুনেন হৃতেঃ সংখ্যে তথা ভা-  
রত রাজভিঃ । প্রবভৌ বসুধা ঘোরা তত্র তত্র বিশাম্পতে ॥ ৩৩ ॥ রথৈর্ভগ্নৈর্ধ-  
জৈশ্চিহ্নৈর্নিকৃতৈশ্চ মহায়ুধৈঃ । চামরব্যজনৈশ্চৈব ছত্রৈশ্চ সূমহাপ্রভৈঃ ॥ ৩৪ ॥  
হারৈর্নিকৈঃ সকেয়ুরৈঃ শিরোভিশ্চ সকুণ্ডলৈঃ । উষ্ণীষৈরপবিষ্টৈশ্চ পতাকাভিশ্চ  
সর্বশঃ ॥ ৩৫ ॥ অম্বুর্কষৈঃ শুভৈ রাজন্ যোতৈক্শ্চ সহ রশ্মিভিঃ । সংছ্রমা বসুধা  
ভাতি বসন্তে কুসুমৈরিব ॥ ৩৬ ॥ এবমেব ক্রমো বৃত্তঃ পাণ্ডু নামপি ভারত । ক্রুদ্ধে  
শাস্তনবে ভীষ্মে দ্রোণে চ রথসত্তমে ॥ ৩৭ ॥ অশ্বখাস্মি রূপে চৈব তথৈব ক্রুত-  
বর্শ্মণি । তথেষু ক্রুদ্ধেষু তাবকানাংপি ক্রমঃ ॥ ৩৮ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি অষ্টমদিবসযুদ্ধে ষষ্ঠাশীতি-

তমোহ ধ্যায়ঃ ॥ ৮৬ ॥



সঞ্জয় উবাচ । বর্তমানে তথা রৌদ্রে রাজন্ বীরবরক্ষযে । শকুনিঃ সৌবলঃ  
শ্রীমান্ পাণ্ডবান্ সমুপাদ্রবৎ ॥ ১ ॥ তথৈব সাহসতো রাজন্ হার্দিক্যঃ পরবীরহা ।  
অভ্যদ্রবত সংগ্রামে পাণ্ডবানাং বকথিনীম্ ॥ ২ ॥ ততঃ কাষোজমুখ্যানাং নদী-  
জানাঞ্চ বাজিনাম্ । আরটানাং মহীজানাং সিন্ধুজানাঞ্চ সর্বশঃ ॥ ৩ ॥ বানায়ু-  
জানাং শুক্রাণাস্তথা পর্বতবাসিনাম্ । বাজিনাং বহুভিঃ সংখ্যে সমস্তাং পর্য-  
বারয়ন্ । যে চাপরে তিত্তিরিজা জবনা বাতরং হসঃ ॥ ৪ ॥ সুবর্ণালঙ্কৃতৈর্গাত্রৈর্ধর্ম-  
বদ্ভিঃ সুকলিতৈঃ । হৃষৈর্বাভজবৈশ্মুথৈঃ পাণ্ডবস্য সূতো বলী ॥ ৫ ॥ অভ্যবর্তত  
তৎসৈন্যং হৃষ্টকপঃ পরস্তপঃ । অর্জুনস্যাত্মজঃ শ্রীমানিরাবাংমাম বীর্যবান্ । স্নুষা-  
যাং নাগরাজস্য জাতঃ পার্থেন ধীমতা ॥ ৬ ॥ ঐরাবতেন সা দত্তা হনপত্যা মহা-  
অনা । পত্যো হতে সূপর্ণেন রূপণা দীনচেতনা ॥ ৭ ॥ ভার্যার্থং তাঞ্চ জগ্রাহ পার্থঃ  
কামবশানুগাম্ । এবমেব সমুৎপন্নঃ পরক্ষেত্রেহর্জুনাঅজঃ ॥ ৮ ॥ স নাগলোকে  
সংবৃদ্ধো মাত্ৰা চ পরিরক্ষিতঃ । পিতৃব্যেন পরিত্যক্তঃ পার্থদেশাদুরাঅনা ॥ ৯ ॥  
রূপবান্ বলসম্পন্নো গুণবান্ সত্যবিক্রমঃ । ইন্দ্রলোকং জগামাশু শ্রুত্বা তত্রার্জু-  
নং গতম্ ॥ ১০ ॥ সোহভিগম্য মহাবাহুঃ পিতরং সত্যবিক্রমঃ । অভ্যবাদযদব্যগ্রো  
বিনযেন ক্রুতাঞ্জলিঃ ॥ ১১ ॥ ন্যবেদযত চাত্মানমর্জুনস্য মহাঅনঃ । ইরাবানস্মি  
ভদ্রং তে পুত্রশ্চাহং তব প্রভো ॥ ১২ ॥ মাতুঃ সমাগমো যশ্চ তৎসর্বং প্রত্যবেদ-  
যৎ । তচ্চ সর্বং যথাবৃত্তমমুসম্মার পাণ্ডবঃ ॥ ১৩ ॥ পরিষজ্য সূতঞ্চাপি সোঅনঃ  
সদৃশং গুণৈঃ । প্রীতিমানভবৎ পার্থো দেবরাজনিবেশনে ॥ ১৪ ॥ সোহর্জুনেন

সমাদিক্ষৌ দেবলোকে তদা নৃপ ! প্রীতিপূর্বং মহাবাহুঃ স্বকার্যং প্রতি ভারত ।  
 যুদ্ধকালে ত্বয়াম্মাকং সহং দেয়মিতি প্রভো ॥ ১৫ ॥ বাচমিত্যেবমুক্ত্বা চ যুদ্ধকাল  
 ইহাগতঃ । কামবর্গজবৈরশ্বেঃ সংবৃত্তো বহুভিনৃপ ॥ ১৬ ॥ তে হযাঃ কাঞ্চনাপীড়া  
 নানাধর্গমনোজবাঃ । উৎপেতুঃ সহসা রাজন্ হংসা ইব মহোদধৌ ॥ ১৭ ॥ তে  
 ত্বদীযান্ সমাসাদ্য হযসংঘান্ মহাজবান্ । ক্রোডৈঃ ক্রোডানভিঘন্তো যোণাতিশ্চ  
 পরস্পরম্ । নিপেতুঃ সহসা রাজন্ স্ববেগাভিহতা ভুবি ॥ ১৮ ॥ নিপতন্তিস্তথা  
 তৈশ্চ হযসংঘৈঃ পরস্পরম্ । শুশ্রুবে দারুণঃ শব্দঃ সুপর্গপতনে যথা ॥ ১৯ ॥ তথৈব  
 চ মহারাজ সমেত্যান্যোন্যমাহবে । পরস্পরবধং ঘোরং চক্রুস্তে হযসাদিনঃ ॥ ২০ ॥  
 তস্মিন্স্থথা মহাঘোরে সঙ্কুলে তুমুলে ভূশম্ । উভযোরপি সংব্রান্তা হযসংঘাঃ সম-  
 স্ততঃ ॥ ২১ ॥ প্রক্ষীণসায়কাঃ শূরা নিহতাশ্বাঃ শ্রমাতুরাঃ । বিলযং সমনুপ্রাপ্তা-  
 স্তক্ষমাণাঃ পরস্পরম্ ॥ ২২ ॥ ততঃ ক্ষীণে হযানীকে কিঞ্চিচ্ছিক্ষে চ সংযুগে ।  
 সৌবলস্যানুজাঃ শূরা নিগতা রণমূর্দ্ধনি ॥ ২৩ ॥ বায়ুবেগসমস্পর্শান্ বায়ুবেগ-  
 সমান্ জবে । আরুহ শীলসম্পন্নান্ বযস্থাংস্তুরগোত্তমান্ ॥ ২৪ ॥ গজো গবা-  
 ক্ষো বৃষভশ্চর্ম্মবানার্জবঃ শুকঃ । ষডেতে বলসম্পন্নানির্ঘয়ুর্ম্মহতো বলাৎ ॥ ২৫ ॥  
 বার্যমাণাঃ শকুনিনা সৈশ্চ যোধৈর্ম্মহাবলৈঃ । সমদ্ধা যুদ্ধকুশলা রৌদ্ররূপা মহা-  
 বলাঃ ॥ ২৬ ॥ তদনীকং মহাবাহো ভিত্বা পরমদুর্জযম্ । বলেন মহতা যুক্তাঃ  
 স্বর্গাষ বিজযৈষিণঃ । বিবিশুস্তে তদা হৃষ্টা গান্ধারী, যুদ্ধদুর্ম্মদাঃ ॥ ২৭ ॥ তান্  
 প্রবিষ্টাংস্তদা দৃষ্ট্বা ইরাবানপি বীর্যবান্ । অত্রবীৎ সমরে যোধান্ বিচিত্রাভ-  
 রণায়ুধান্ ॥ ২৮ ॥ যথৈতে ধার্ত্তরাষ্ট্রস্য যোধাঃ সানুগবাহনাঃ । হন্যস্তে সমরে  
 সর্বে তথা নীতির্বিপ্লীযতাম্ ॥ ২৯ ॥ বাচমিত্যেবমুক্ত্বা তে সর্বে যোধা ইরাবতঃ ।  
 জঘ্নুস্তেষাং বলানীকং দুর্জযং সমরে পরৈঃ ॥ ৩০ ॥ তদনীকমনীকেন সমরে বীক্ষ্য  
 পাতিতম্ । অমৃষ্যমাণাস্তে সর্বে সুবলস্যানুজা রণে । ইরাবন্তমভিক্রত্য সর্বতঃ  
 পর্য্যবারযন্ ॥ ৩১ ॥ তাডযস্তঃ শিতৈঃ প্রাসৈশ্চোদযস্তঃ পরস্পরম্ । তে শূরাঃ পর্য্য-  
 ধাবন্ত কুর্ষস্তো মহদাকুলম্ ॥ ৩২ ॥ ইরাবানপি নির্বিদ্ধঃ প্রাসৈস্ত্যৈকুর্ম্মহাভিঃ ।  
 সুবর্তা রুধিরেণাক্তস্তোত্রৈর্বিদ্ধ ইব দ্বিপঃ ॥ ৩৩ ॥ উরস্যপি চ পৃষ্ঠে চ পাশ্ব্যৌশ্চ  
 ভূশাহতঃ । একো বহুভিরত্যর্থং ধৈর্য্যাভ্রাজন্ন বিব্যথে ॥ ৩৪ ॥ ইরাবানপি সং-  
 ক্রুদ্ধঃ সর্বাংস্তামিশিতৈঃ শরৈঃ । মোহযামাস সমরে বিদ্ধা পরপূরঞ্জযঃ ॥ ৩৫ ॥  
 প্রাসানুৎক্রুষ্য সর্বাংশ্চ স্বশরীরাদরিন্দমঃ । তৈরেব তাডযামাস সুবলস্যানুজা-  
 নুণে ॥ ৩৬ ॥ নিষ্কৃষ্য চ শিতং খঙ্গং গৃহীত্বা চ শরাবরম্ । পদাতিস্তূর্ণমাগচ্ছ-

जिह्वाङ्गुः सौबलान् युधि ॥ ७१ ॥ ततः प्रत्यागतप्राणाः सर्वे ते सुबलाञ्जजाः ।  
 भूषः क्रोधसमाविष्टा-इरावस्तुमथाद्रवन् ॥ ७८ ॥ इरावानपि खञ्जेन दर्शयन् पाणि-  
 लाषवम् । अत्यवर्तत तान् सर्वान् सौबलान् बलदर्पितः ॥ ७२ ॥ लाषवेनाथ चर-  
 तः सर्वे ते सुबलाञ्जजाः । अस्तुरं नात्यगच्छन्तु चरन्तः शीघ्रगैर्हयैः ॥ ८० ॥ भू-  
 मिष्ठमथ तं संख्ये संप्रदृश्य ततः पुनः । परिवार्य्य भूषं सर्वे ग्रहीतुमुपचक्र-  
 मुः ॥ ८१ ॥ अथाभ्यासगतानां स खञ्जेनामित्रकर्षणः । असिहस्तापहस्ताङ्गु-  
 तेषां गात्राण्यकृन्तत ॥ ८२ ॥ आयुधानि च सर्वेषां बाहून्पि विभूषितान् । अप-  
 तन्तु निरुन्ताङ्ग । मृता भूमिं गतासवः ॥ ८३ ॥ वृषभस्तु महाराज बहुधा परिवि-  
 क्रतः । अमुच्यत महारौद्रात्स्माद्दीरावकर्तनां ॥ ८४ ॥ तान् सर्वान् पतितान्  
 दृष्ट्वा स्त्रुतो दुर्योधनस्तव । अत्यथावत संक्रुद्धो राक्षसं घोरदर्शनम् ॥ ८५ ॥  
 आर्यशृङ्गिं महेश्वासं मायाविनमरिन्दमम् । वैरिणं तीमसेनस्य पूर्वं वकवधेन  
 वै ॥ ८६ ॥ पश्य वीर यथा ह्येष फाल्गुनस्य स्त्रुतो बली । मायावी विप्रियं घोर-  
 मकार्षीन्मे बलक्षयम् ॥ ८७ ॥ द्वेष कामगमस्तात मायास्त्रे च विशारदः । क्रुतवैरश्च  
 पार्थेन तस्मादेनं रणे जहि ॥ ८८ ॥ वाचमित्येवमुक्त्वा तु राक्षसो घोरदर्शनः ।  
 प्रथयो सिंहनादेन यत्राङ्गुनस्त्रुतोऽभवत् ॥ ८९ ॥ श्वार्कटैर्युक्ककुशलेर्बिमलप्रा-  
 सयोधिभिः । वीरैः प्रहारिभियुक्तेः स्वैरनीकैः समावृतः ॥ ९० ॥ इतशेषैश्म-  
 हाराज द्विसाहस्रैश्चोत्तमैः । निहस्तकामः समरे इरावस्तुं महाबलम् ॥ ९१ ॥ इरा-  
 वानपि संक्रुद्धस्त्रुरमाणः पराक्रमी । हस्तकामममित्रस्त्रो राक्षसं प्रत्यवारयत् ॥ ९२ ॥  
 तमापतन्तुं संप्रेक्ष्य राक्षसः सुमहाबलः । स्त्रुरमाणस्ततो मायां प्रयोक्तुमुपच-  
 क्रमे ॥ ९३ ॥ तस्मिंस्तु निहते सैन्ये तावुभौ युद्धदुर्मदो । संप्राप्ते समतिष्ठेतां  
 यथा वै वृत्रवासवो ॥ ९४ ॥ आद्रवस्तुमभिप्रेक्ष्य राक्षसं युद्धदुर्मदम् । इरावान्  
 क्रोधसंरक्तः प्रत्यथावमहाबलः ॥ ९५ ॥ समभ्यासगतस्याङ्गौ तस्य खञ्जेन दुर्मदः ।  
 चिच्छेद कार्मुकं दीप्तं शरान् वैः पक्ष पक्षधा ॥ ९६ ॥ स निरुन्तं धनुर्दृष्ट्वा खं-  
 जवेन समाविशत् । इरावस्तुमतिक्रुद्धं मोहयन्मायया तदा ॥ ९७ ॥ ततोऽस्तुरीक-  
 मुत्पत्य इरावानपि राक्षसम् । विमोहयित्वा मायाभिस्तस्य गात्राणि संयुगे । चि-  
 क्षेद सर्वमर्माङ्गः कामरूपो दुरासदः ॥ ९८ ॥ तथा स राक्षसश्रेष्ठः क्रुतः क्रुतः पुनः  
 पुनः । सशुभ्र महाराज समवाप्य च यौवनम् ॥ ९९ ॥ माया हि सहजा तेषां वयो  
 रूपं कामजम् । एवमुद्राक्षसस्याङ्गं छिन्नं छिन्नमजायत ॥ १०० ॥ इरावानपि  
 राजेन्द्र राक्षसं तं महाबलम् । परश्वधेन तीक्ष्णेन चिच्छेद च पुनः पुनः ॥ १०१ ॥

স তেন বলিনা বীরশ্চিদ্যমান ইব ক্রমঃ । রাক্ষসো ব্যনদদেধারং স শব্দস্তমুলোহ-  
ভবৎ ॥ ৬২ ॥ পরশ্বধকৃতং রক্ষঃ সুস্রাব রুধিরং বহু । ততশ্চুক্ৰোধ বলবাংশক্রে  
বেগঞ্চ সংযুগে ॥ ৬৩ ॥ আর্ষ্যশৃঙ্গিস্তদা দৃষ্ট্বা সমরে শত্রুমূর্জিতম্ । ক্রুত্বা ঘোরং  
মহদ্রুপং গ্রহীতুমুপচক্রমে ॥ ৬৪ ॥ অর্জুনস্য সূতং বীরমিরাবন্তং যশস্বিনম্ ।  
সংগ্রামশিরসো মথ্যে সর্বেষাং তত্র পশ্যতাম্ ॥ ৬৫ ॥ তাং দৃষ্ট্বা তাদৃশীং মাষাং  
রাক্ষসস্য দুরাত্মনঃ । ইরাবানপি সংক্রুদ্ধো মাষাং সুফুং প্রচক্রমে ॥ ৬৬ ॥ তস্য  
ক্রোধাভিভূতস্য সংযুগেষনিবর্তিনঃ । যোহন্বযো মাতৃকস্তস্য স এনমভিপেদি-  
বান্ ॥ ৬৭ ॥ স নাগৈর্বহুশো রাজন্ সর্বতঃ সমৃতো রণে । দধার সুমহদ্রুপমনস্ত  
ইব ভোগবান্ । ততো বহুবিধৈর্নাগৈশ্ছাদযামাস রাক্ষসম্ ॥ ৬৮ ॥ ছাদ্যমানস্ত  
নাগৈঃ স ধ্যাত্বা রাক্ষসপুঙ্গবঃ । সৌপর্ণং রূপমাস্থায় তক্ষয়ামাস পন্নগান্ ॥ ৬৯ ॥  
মাযযা ভক্ষিতে তস্মিন্নন্বযে তস্য মাতৃকে । বিমোহিতমিরাবন্তং ন্যহনদ্রাক্ষসোহসি-  
না ॥ ৭০ ॥ সকুণ্ডলং সমুকুটং পদ্বেন্দুসদৃশপ্রভম্ । ইরাবতঃ শিরো রক্ষঃ পাতযা-  
য়াস ভূতলে ॥ ৭১ ॥ তস্মিংস্ত নিহতে বীরে রাক্ষসেনাৰ্জুনাত্মজে । বিশোকাঃ  
সমপদ্যস্ত ধার্ত্তরাষ্ট্রাঃ স রাজকাঃ ॥ ৭২ ॥ তস্মিন্নহতি সংগ্রামে তাদৃশে ভৈরবে  
পুনঃ । মহান ব্যতিকরো ঘোরঃ সেনযোঃ সমপদ্যত ॥ ৭৩ ॥ গজা হযাঃ পদাতাশ্চ  
বিমিশ্রা দস্তিভিহতাঃ । রথাস্থা দস্তিনশ্চৈব পত্তিভিস্তত্র সূদিতাঃ ॥ ৭৪ ॥ তথা  
পত্তিরথোঘাশ্চ হযাশ্চ বহবো রণে । রথিভিনিহতা রাজংস্তব তেষাঞ্চ সঙ্কু-  
লে ॥ ৭৫ ॥ অজানমর্জুনশ্চাপি নিহতং পুলমৌরসম্ । জঘান সমরে শূরান্নাজ্ঞ-  
স্তান্ ভীষ্মরক্ষিণঃ ॥ ৭৬ ॥ তথৈব তাবকা রাজন্ সৃঞ্জয়াশ্চ সহস্রশঃ । জুহ্বতঃ সমরে  
প্রাণান্নিজঘুরিতরেত্তরম্ ॥ ৭৭ ॥ মুক্তকেশা বিকবচা বিরথাশ্চিন্নকাস্মুকাঃ । বাহু-  
ভিঃ সমযুধ্যন্ত সমবেতাঃ পরস্পরম্ ॥ ৭৮ ॥ তথা মর্মাতিগৈর্ভীষ্মো নিজঘান মহা-  
রথান্ । কম্পযন্ সমরে সেনাং পাণ্ডবানাং পরস্তপঃ ॥ ৭৯ ॥ তেন ষোধিষ্ঠিরে  
সৈন্যে বহবো মানবা হতাঃ । দস্তিনঃ সাদিনশ্চৈব রথিনোহথ হযাস্তথা ॥ ৮০ ॥  
তত্র ভারত ভীষ্মস্য রণে দৃষ্ট্বা পরাক্রমম্ । অত্যদ্ভুতমপশ্যাম শক্রস্যেব পরাক্র-  
মম্ ॥ ৮১ ॥ তথৈব ভীমসেনস্য পার্ষতস্য চ ভারত । রৌদ্রমাসীদ্রণে যানং সাত্য-  
কস্য চ ধন্বিনঃ ॥ ৮২ ॥ দৃষ্ট্বা দ্রোণস্য বিক্রান্তং পাণ্ডবান্ ভযমাবিশৎ । এক এব  
রণে শক্ভো হস্তমস্মান্ সসৈনিকান্ ॥ ৮৩ ॥ কিং পুনঃ পৃথিবীশূঠৈর্যোধত্রাতৈঃ স-  
মাবৃতঃ । ইত্যক্রবমহারাজ পার্থা দ্রোণেন পীড়িতাঃ ॥ ৮৪ ॥ বর্তমানে তথা রৌদ্রে  
সংগ্রামে ভরতর্ষভ । উভযোঃ সেনযোঃ শূরা নামৃষ্যন্ত পরস্পরম্ ॥ ৮৫ ॥ আবিষ্কা

ইব যুধ্যস্তে রক্ষোভুতৈর্মহাবলাঃ । তাবকাঃ পাণ্ডবেষাশ্চ সংরক্ষাস্তাত ধন্বি-  
নঃ ॥ ৮৬ ॥ ন স্ম পশ্যামহে কক্ষিৎ প্রাণান্ যঃ পরিরক্ষতি । সংগ্রামে দৈত্যস-  
কাশে তস্মিন্ বীরবরক্ষযে ॥ ৮৭ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি ইরাবদ্ধধে সপ্তাশীতি-

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৮৭ ॥



ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । ইরাবস্তস্ত নিহতং দৃষ্ট্বা পার্থা মহারথাঃ । সংগ্রামে কিমকুর্বস্ত  
তন্মমাচক্ষু সঞ্জয় ॥ ১ ॥ সঞ্জয় উবাচ । ইরাবস্তস্ত নিহতং সংগ্রামে বীক্ষ্য রাক্ষসঃ  
ব্যনদন্তৈরবৎ নাদং ভৈমসেনির্ঘটোৎকচঃ ॥ ২ ॥ নদতস্তস্য শব্দেন পৃথিবী সাগ-  
রাশ্বরা । সপর্বতবনা রাজশ্চচাল সুভৃশস্তদা । অন্তরীক্ষং দিশশ্চৈব সর্বাশ্চ প্রদি-  
শস্তথা ॥ ৩ ॥ তং শ্রুত্বা সুমহানাদং তব সৈন্যস্য ভারত । উরুস্তস্তঃ সমভবদে-  
পথুঃ শ্বেদ এব চ ॥ ৪ ॥ সর্ব এব চ রাজেন্দ্র তাবকা দীনচেতসঃ । সর্বতঃ সমচেষ্টস্ত  
সিংহভীতা গজা ইব ॥ ৫ ॥ নদিত্বা সুমহানাদং নির্ঘাতমিব রাক্ষসঃ । জ্বলিতং  
শূলমুদ্যম্য কপং কৃত্বা বিভীষণম্ ॥ ৬ ॥ নানাকপপ্রহরণৈর্ভূতো রাক্ষসপুঙ্গবৈঃ ।  
আজগাম সুসংক্রুদ্ধঃ কালান্তকযমোপমঃ ॥ ৭ ॥ তমাপতস্তং সংপ্রেক্ষ্য সংক্রুদ্ধং  
ভীমদর্শনম্ । স্ববলঞ্চ ভষাতস্য প্রায়শো বিমুখীকৃতম্ ॥ ৮ ॥ ততো দুর্যোধনো  
রাজা ঘটোৎকচমুপাদ্রবৎ । প্রগৃহ্য বিপুলঞ্চাপং সিংহবদ্বিনদম্মুহঃ ॥ ৯ ॥ পৃষ্ঠ-  
তোহম্মুষযৌ চৈনং সুবুদ্ধিঃ পর্বতোপমৈঃ । কুঞ্জরৈর্দশসাহসৈর্বিজ্ঞানামধিপঃ স্ব-  
য়ম্ ॥ ১০ ॥ তমাপতস্তং সংপ্রেক্ষ্য গজানীকেন সংবৃতম্ । পুলস্তব মহারাজ চু-  
কোপ স নিশাচরঃ ॥ ১১ ॥ ততঃ প্রববৃতে যুদ্ধং তুমুলং লোমহর্ষণম্ । রাক্ষসানাঞ্চ  
রাজেন্দ্র দুর্যোধনবলস্য চ ॥ ১২ ॥ গজানীকঞ্চ সংপ্রেক্ষ্য মেঘবৃন্দমিবোদ্যতম্ ।  
অভ্যধাবস্ত সংক্রুদ্ধা রাক্ষসাঃ শস্ত্রপাণযঃ ॥ ১৩ ॥ নদন্তো বিবিধাম্মাদান্ মেঘা  
ইব সবিদ্যুতঃ । শরশক্ত্যুষ্টিনারাটৈর্নিঘন্তো গজযোধিনঃ ॥ ১৪ ॥ ভিন্দিপালৈ-  
স্তথা শূলৈর্মুদ্যারৈঃ সপরশ্বধৈঃ । পর্বতাটৈশ্চ বৃকৈশ্চ নিজস্তুস্তে মহাগজান্ ॥ ১৫ ॥  
ভিন্নকুস্তান্ বিরুধিরান্ ভিন্নগাত্রাংশ্চ বারণান্ । অপশ্যাম মহারাজ বধ্যমানামি-  
শাচরৈঃ ॥ ১৬ ॥ তেষু প্রক্ষীযমাণেষু ভগ্নেষু গজযোধিষু । দুর্যোধনো মহারাজ  
রাক্ষসান্ সমুপাদ্রবৎ ॥ ১৭ ॥ অমর্ষবশমাপন্নস্ত্যক্ত্বা জীবিতমান্বনঃ । মুমোচ নি-  
শিতান্ বাণান্নাক্ষসেযু পরস্তপঃ ॥ ১৮ ॥ জঘান চ মহেষাসং প্রধানাংস্তত্র রাক্ষ-  
সান্ । সংক্রুদ্ধো ভরতশ্রেষ্ঠ পুল্লো দুর্যোধনস্তব ॥ ১৯ ॥ বেগবস্তং মহারৌদ্রং

বিদ্যুজ্জ্বলং প্রমাথিনম্ । শঠৈশ্চতুর্ভিশ্চতুরো নিজঘান মহাবলঃ ॥ ২০ ॥ ততঃ  
 পুনরমেঘায়া শরবর্ষং দুরাসদম্ । মুমোচ ভরতশ্রেষ্ঠো নিশাচরবলং প্রতি ॥ ২১ ॥  
 তত্ত্ব দৃষ্ট্বা মহৎ কশ্ম পুত্রস্য তব মারিষ । ক্রোধেনাভিপ্রজঙ্ঘাল তৈমসেনির্মহা-  
 বলঃ ॥ ২২ ॥ স বিস্ফার্য মহচ্চাপমিস্ফাশনিসমস্বনম্ । অভিদুদ্রাব বেগেন দুর্যো-  
 ধনমরিন্দমম্ ॥ ২৩ ॥ তমাপতন্তুমুদ্বীক্ষ্য কালসৃষ্টমিবাস্তকম্ । ন বিব্যথে মহা-  
 রাজ পুত্রো দুর্যোধনস্তব ॥ ২৪ ॥ অথেনমব্রবীৎ ক্রুদ্ধঃ ক্রুরঃ সংরক্তলোচনঃ ।  
 অদ্যস্নগ্যং গমিষ্যামি পিতৃণাং মাতুরেব চ ॥ ২৫ ॥ যে ভ্রষা সুনৃশংসেন দীর্ঘ-  
 কালং প্রবাসিতাঃ । যচ্চ তে পাণ্ডবা রাজন্ ছলদ্যুতে পরাজিতাঃ ॥ ২৬ ॥ যচ্চৈব  
 দ্রৌপদী কৃষ্ণা একবস্ত্রা রজস্বলা । সতামানীয দুর্বুদ্ধে বহুধা ক্লেশিতা ভ্রষা ॥ ২৭ ॥  
 তব চ প্রিয়কামেন আশ্রমস্থা দুরাত্মনা । সৈন্ধবেন পরিক্লিষ্টা পরিভুষ পিতৃন্ম-  
 ম ॥ ২৮ ॥ এতেষামপমানানামন্যেষাঞ্চ কুলাধম । অন্তমদ্য গমিষ্যামি যদি  
 নোৎসৃজসে রণম্ ॥ ২৯ ॥ এবমুক্ত্বা তু হৈডিঘো মহাদ্বিস্ফার্য কাস্মুকম্ । সন্দশ্য  
 দশনৈরোষ্ঠং সৃক্ণী পরিসংলিহন্ ॥ ৩০ ॥ শরবর্ষণে মহতা দুর্যোধনমবাকিরৎ ।  
 পর্বতং বারিধারাভিঃ প্রাবৃষীব বলাহকঃ ॥ ৩১ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি হৈডিঘবাক্যে অর্চাশীতি-

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৮৮ ॥



সঞ্জঘ উবাচ । ততস্তদ্বাণবর্ষস্ত দুঃসহং দানবৈরপি । দধার যুধি রাজেন্দ্রো যথা  
 বর্ষং মহাদ্বিপঃ ॥ ১ ॥ ততঃ ক্রোধসমাবিষ্টো নিশ্বসন্নিব পন্নগঃ । সংশয়ং পরমং  
 প্রাপ্তঃ পুত্রস্তে ভরতর্ষভ ॥ ২ ॥ মুমোচ নিশিতাংস্তীক্ষ্ণান্নারাজান্ পঞ্চবিংশতিম্ ।  
 তেহপতন্ মহসা রাজংস্তস্মিন্মুক্সপুঙ্গবে ॥ ৩ ॥ আশীবিষা ইব ক্রুদ্ধাঃ পর্বতে  
 গন্ধমাদনে । স তৈর্বিদ্ধঃ স্রবনুক্রং প্রতিম ইব কুঞ্জরঃ ॥ ৪ ॥ দধে মতিং বিনা-  
 শায রাক্তঃ স পিশিতাশনঃ । জগ্রাহ চ মহাশক্তিং গিরীণামপি দারণীম্ ॥ ৫ ॥  
 সংপ্রদীপ্তাং মহোঙ্কাতাং জ্বলিতামশনীমিব । সমুদ্বচ্ছমহাবাহুর্জিঘাংসুস্তনয-  
 স্তব ॥ ৬ ॥ তামুদ্যতামভিপ্রেক্ষ্য বঙ্গানামধিপস্তুরন্ । কুঞ্জরং গিরিসঙ্কশং রাক্ষ-  
 সংপ্রত্যচোদয়ৎ ॥ ৭ ॥ স নাগপ্রবরেণাজৌ বলিনা শীঘ্রগামিনা । যতো দুর্যো-  
 ধনরথস্তং মার্গং প্রত্যপদ্যত ॥ ৮ ॥ রথঞ্চ বারযামাস কুঞ্জরেণ স্তুতস্য তে । মার্গ-  
 মাবারিতং দৃষ্ট্বা রাজ্ঞাবজেন ধীমতা ॥ ৯ ॥ যটোৎকচো মহারাজ ক্রোধসংরক্ত-  
 লোচনঃ । উদ্যতাং তাং মহাশক্তিং তস্মিংশিচক্ষুপ বারণে ॥ ১০ ॥ স তযাভিহতো

राजसुतेन बाह्वप्रमुक्तया । संजातरुधिरोत्पीडः पपात च ममार च ॥ ११ ॥  
 पतत्यथ गजे चापि वङ्गानामीश्वरो बली । जवेन समभिद्रुत्य जगाम धरणीतल-  
 म् ॥ १२ ॥ दुर्योधनोऽपि संप्रेक्ष्य पतितं वरवारणम् । प्रभङ्गं बलं दृष्ट्वा  
 गजाम परमां व्यथाम् ॥ १३ ॥ क्लृप्तधर्मं पुरस्कृत्य आत्मानश्चाभिमानिताम् ।  
 प्राप्तेऽपक्रमणे राजसुतेऽपि गिरिनिवाचनः ॥ १४ ॥ सक्त्वा च शितं वाणं का-  
 लाग्निसमतेजसम् । मुमोच परमक्रुद्धस्तस्मिन् घोरे निशाचरे ॥ १५ ॥ तमाप-  
 तस्तुं संप्रेक्ष्य वाणमिन्द्राशनिप्रभम् । लाघवाद्योचयामास महामायो ऋष्टो-  
 कचः ॥ १६ ॥ भ्रूयश्च विननादोग्रं क्रोधसंरक्तलोचनः । त्रासयन् सर्वसैन्यानि  
 युगास्ते जलदो यथा ॥ १७ ॥ तं श्रुत्वा निनदं घोरां तस्य भीमस्य रक्तसः ।  
 आचार्यमुपसङ्गम्य भीष्मः शास्त्रनंबोऽब्रवीत् ॥ १८ ॥ यथैष निनदो घोराः क्षयते  
 राक्षसेरितः । हैडिषो युध्यते ह्यनं राज्ञा दुर्योधनेन ह ॥ १९ ॥ नैव शक्यो  
 हि संग्रामे जेतुं भूतेन केनचित् । तत्र गच्छत भद्रं वो राजानं परिर-  
 क्रत ॥ २० ॥ अभिद्रुतो महाभागो राक्षसेन महात्मना । एतद्धि परमं क्रुत्य-  
 सर्वेषां नः परस्तुपाः ॥ २१ ॥ पितामहवचः श्रुत्वा ध्रुवमाणा महारथाः । उतम-  
 जवमास्थाय प्रथयुर्वत्र कौरवः ॥ २२ ॥ द्रोणश्च सोमदत्तश्च बाह्लिकोऽथ जयद्रथः ।  
 रूपो भूरिश्रवाः शल्य आवन्त्यः सर्वहृदलः ॥ २३ ॥ अश्वथामा विकर्णश्च चित्र-  
 सेनो विविंशतिः । रथाश्चानेकसाहसु । ये तेषामनुयायिनः । अभिद्रुतं परी-  
 ष्तुः पुलं दुर्योधनं तव ॥ २४ ॥ तदनीकमनाध्वयं पालितस्तु महारथैः ।  
 आतथायिनमायास्तुं प्रेक्ष्य राक्षससत्तमः । नाकम्पत महाबाह्वर्मेनाक इव पर्व-  
 तः ॥ २५ ॥ प्रगृह्य विपुलं चापं ज्वातिभिः परिवारितः । शूलमुदारहस्तैश्च नाना-  
 प्रहरणैरपि ॥ २६ ॥ ततः समभवदुद्धं तुमुलं लोमहर्षणम् । राक्षसानां मुख्यस्य  
 दुर्योधनबलस्य च ॥ २७ ॥ धनुषां कृजतां शकः सर्वतस्तुमुलो रणे । अक्षयत्र  
 महाराज वंशानां दहतामिव ॥ २८ ॥ अस्त्राणां पातयमानानां कवचेषु शरी-  
 रिणाम् । शकः समभवद्राजन् गिरीणामिव भिद्यताम् ॥ २९ ॥ वीरबाह्विसृष्टानां  
 तोमराणां विशाम्पते । रूपमासीद्विषंस्थानां सर्पाणामिव सर्पताम् ॥ ३० ॥ ततः  
 परमसंकुद्धो विस्फार्य सुमहद्वधुः । राक्षसेन्द्रो महाबाह्वर्बिनदन् तैरव-  
 वम् ॥ ३१ ॥ आचार्यस्यार्क्षिचक्ष्रेण क्रुद्धश्चिच्छेद कार्मुकम् । सोमदत्तस्य भ्रमेन  
 ध्वजक्षेपमथ्य चानदत् ॥ ३२ ॥ बाहिकं त्रिभिर्बाणैः प्रत्यविध्यं सुनास्तुरे ।  
 रूपमेकेन विव्याध चित्रसेनं त्रिभिः शरैः ॥ ३३ ॥ पूर्णघतविसृष्टेन सम्यक्

প্রণিহিতেন চ । জত্রুদেশে সমাসাদ্য বিকর্ণং সমতাডযৎ । ন্যসীদৎ স রথোপস্থে  
শোণিতেন পরিপ্লুতঃ ॥ ৩৪ ॥ ততঃ পুনরমেঘাত্মা নারাচান্ দশ পঞ্চ চ । ভুরি-  
শ্রবসি সংক্রুদ্ধঃ প্রাহিণোদ্ভরতর্ষভ । তে বর্ষ্ম ভিত্বা তস্যাপ্তু প্রাবিশন্ ধরণীত-  
লম্ ॥ ৩৫ ॥ বিবিংশতেশ্চ দ্রৌণেশ্চ যন্তারৌ সমতাডযৎ । তৌ পেততু রথো-  
পস্থে রশ্মীন্সৃজ্য বাজিনাম্ ॥ ৩৬ ॥ সিন্ধুরাজ্জোহর্কচন্দ্রেন বারাহং স্বর্ণভূষি-  
তম্ । উন্নমাথ মহারাজ দ্বিতীয়েনাচ্ছিনদ্ধনুঃ ॥ ৩৭ ॥ চতুর্ভিরথ নারাচৈরাব-  
স্ত্যস্য মহাত্মনঃ । জঘান চতুরো বাহান্ ক্রোধসংরক্তলোচনঃ ॥ ৩৮ ॥ পূর্ণায-  
তবিসৃষ্টেন পীতেন নিশিতেন চ । নিষিভেদ মহারাজ রাজপুত্রং বৃহদ্বলম্ ।  
স গাচবিদ্ধো ব্যথিতো রথোপস্থ উপাবিশৎ ॥ ৩৯ ॥ ভৃশং ক্রোধেন চাবিষ্টো  
রথস্থো রাক্ষসাধিপঃ । চিক্ষেপ নিশিতাংস্তীক্ষ্ণাঙ্কুরানাশীবিষোপমান্ । বিভি-  
দুস্তে মহারাজ শল্যং যুদ্ধবিশারদম্ ॥ ৪০ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বনি ভীষ্মবধপর্বনি ষটোৎকচযুদ্ধে একোন-  
নবতিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৮৯ ॥



সঞ্জয় উবাচ । বিমুখীকৃত্য সর্বাংস্তু তাবকান্ যুধি রাক্ষসঃ । জিঘাংসুর্ভরতশ্রেষ্ঠ  
দুর্যোধনমুপাদ্রবৎ ॥ ১ ॥ তমাপতন্তুং সংশ্রেক্ষ্য রাজানং প্রতি বেগিতম্ । অভ্য-  
ধাবন্ জিঘাংসন্তস্তাবকা যুদ্ধদুর্ন্দদাঃ ॥ ২ ॥ তালমাত্রাণি চাপানি বিকর্ষন্তো  
মহারথাঃ । তমেকমভ্যধাবন্তু নদন্তুঃ সিংহসংঘবৎ ॥ ৩ ॥ অথৈনং শরবর্ষণ  
সমস্তাং পর্যবাকিরন্ । পর্বতং বারিধারাভিঃ শরদীব বলাহকাঃ ॥ ৪ ॥ স গাচ-  
বিদ্ধো ব্যথিতস্তোত্রাদিত ইব দ্বিপঃ । উৎপপাত তদাকাশং সমস্তাঈদ্বনতেষ-  
বৎ ॥ ৫ ॥ ব্যনদৎ সুমহানাদং জীমূত ইব শারদঃ । দিশঃ খং বিদিশশ্চৈব  
নাদযন্ তৈরবস্বনঃ ॥ ৬ ॥ রাক্ষসস্য তু তং শব্দং শ্রুত্বা রাজা যুধিষ্ঠিরঃ । উবাচ  
ভরতশ্রেষ্ঠো ভীমসেনমরিন্দমম্ ॥ ৭ ॥ যুধ্যতে রাক্ষসো হুনং ধার্ত্তরাষ্ট্রৈর্মহার-  
তৈঃ । যথাস্য শ্রযতে শব্দো নদতো তৈরবং স্বনম্ ॥ ৮ ॥ অতিভারঞ্চ পশ্যামি  
তস্মিন্নাক্ষসপুঙ্গবে । পিতামহশ্চ সংক্রুদ্ধঃ পাঞ্চালান্ হস্তমুদ্যতঃ । তেষাঞ্চ রক্ষ-  
ণার্থায় যুধ্যতে ফাল্গুনঃ পঠৈঃ ॥ ৯ ॥ এতজ্জ্ঞাত্বা মহাবাহো কার্য্যদ্বয়মুপস্থিতম্ ।  
গচ্ছ রক্ষস্ব হৈডিম্বং সংশয়ং পরমং গতম্ ॥ ১০ ॥ ভ্রাতুর্ভচনমাজ্জায় জ্বরমাণো  
বৃকোদরঃ । প্রযযৌ সিংহনাদেন ত্রাসঘন্ সর্বপার্থিবান্ । বেগেন মহতা রাজন্  
পর্বকালে যথোদধিঃ ॥ ১১ ॥ তমন্নগাং সত্যধৃতিঃ সৌচিত্তির্যুদ্ধদুর্ন্দদঃ ! শ্রেণিমান্



वसुदानश्च पुल्लः काश्यास्य वा विभुः ॥ १२ ॥ अभिमन्युमुखाश्चैव द्रौपदेया महा-  
 रथाः । क्लृदेवश्च विक्रान्तः क्लृधर्मा तथैव च ॥ १३ ॥ अनूपाधिपतिश्चैव  
 नीलः स्वबलमास्थितः । महता रथवंशेन हैडिभ्यं पर्यावारयन् ॥ १४ ॥ कुङ्कुरैश्च  
 सदा मत्तैः षट्सहस्रैः प्रहारिभिः । अत्यरुक्मन्सहितः राक्षसेन्द्रं षटोत्कच-  
 म् ॥ १५ ॥ सिंहनादेन महता नेमिषोषेण चैव ह । क्रूरशकनिपातैश्च कम्प-  
 यन्तो वसुङ्कराम् ॥ १६ ॥ तेषामापततां श्रद्धा शकं तं तावकं बलम् । भीमसे-  
 नतयोद्धिगं विवर्णवदनस्तथा । परिवृत्तं महाराज परित्यज्य षटोत्कचम् ॥ १७ ॥  
 ततः प्रवृत्ते युद्धं तत्र तेषां महात्मनाम् । तावकानां परेषां सङ्ग्रामेष्वनि-  
 वर्तिनाम् ॥ १८ ॥ नानारूपानि शस्त्रानि विसृजन्तो महारथाः । अन्योन्यमभिधा-  
 वन्तः संप्रहारं प्रचक्रिरे ॥ १९ ॥ व्यतिषक्तं महारौद्रं युद्धं भीरुभयावह-  
 म् ॥ २० ॥ हया गजैः समाजग्नुः पादाता रथिभिः सह । अन्योन्यं समरे रा-  
 जन् प्रार्थयानाः समभ्ययुः ॥ २१ ॥ सहसा चाभवतीव्रं समिपातामहद्रजः । रथाश्च-  
 गजपत्नीनां पादनेमिसमुद्धतम् ॥ २२ ॥ धूमरूढं रजस्तीव्रं रणभूमिं समा-  
 वृणोत् । नैव स्ये न परे राजन् समजानन् परस्परम् ॥ २३ ॥ पिता पुल्लं न  
 जानीते पुल्लो वा पितरं तथा । निश्चर्यादे तथाभूते वैशसे लोमहर्षणे ॥ २४ ॥  
 शस्त्राणां तरतश्चेष्ट मनुष्याणां गज्जताम् । सुमहानभवच्छकः प्रेतानामिव भा-  
 रत ॥ २५ ॥ गजवाजिमनुष्याणां शोणितानां तरङ्गिणी । प्रावर्तत नदी तत्र  
 केशशैवालशाद्वला ॥ २६ ॥ नराणां शैव काषेभ्यः शिरसां पततां रणे । शुश्रु-  
 वे सुमहाङ्गकः पततामश्नानामिव ॥ २७ ॥ विशिरस्केर्मनुष्यैश्च छिन्नगात्रैश्च वा-  
 रणैः । अश्वैः सन्तिमदेहैश्च सकीर्णाभुवसुङ्करा ॥ २८ ॥ नानाविधानि शस्त्रानि  
 विसृजन्तो महारथाः । अन्योन्यमभिधावन्तः संप्रहारार्थमुदात्ताः ॥ २९ ॥ हया  
 हयान् समासाद्य प्रेषिता हयसादिभिः । समाहत्य रणेऽन्योन्यं निपेतुर्गत-  
 जीविताः ॥ ३० ॥ नरा नरान् समासाद्य क्रोधरक्तेक्षणं भृशम् । उरांस्युरो-  
 तिरन्योन्यं समाश्लिष्य निजस्त्रिरे ॥ ३१ ॥ प्रेषिताश्च महामात्रैर्वारणाः परवा-  
 रणैः । अत्यन्तं विषाणां वैवारणानेव संयुगे ॥ ३२ ॥ ते जातरूधिरोत्-  
 पीडाः पताकाभिरलङ्कताः । संसक्ताः प्रत्यदृश्यन्तु मेघा इव सविद्युतः ॥ ३३ ॥  
 केचिद्धिमा विषाणां वैर्भिन्नकुन्दाश्च तोमरैः । विनदन्तोऽभ्यधावन्तु गर्जमाना घना  
 इव ॥ ३४ ॥ केचिक्लृष्टैर्दिधा छिन्नैश्छिन्नगात्रास्तथापरे । निपेतुस्तुमुले तस्मिन्-  
 छिन्नपक्वा इवाद्रवः ॥ ३५ ॥ पाठैर्षादिदारितैरन्यैर्वारणैर्बरवारणाः । युमुचुः

শোণিতং ভূরি ধাতুনিব মহীধরাঃ ॥ ৩৬ ॥ নারাচনিহতাস্ত্বন্যে তথা বিদ্ধাশ্চ  
তোমরৈঃ । হতারোহা ব্যদৃশ্যন্তু বিশৃঙ্গা ইব পর্বতাঃ ॥ ৩৭ ॥ কেচিৎ ক্রোধসমা-  
বিষ্টা মদাক্ষা নিরবগ্রহাঃ । রথান্ হযান্ পদাতীংশ্চ নমূদুঃ শতশো রণে ॥ ৩৮ ॥  
তথা হযা হযারোহৈস্তাডিভাঃ প্রাসতোমরৈঃ । তেন তেনাত্যবর্ত্তন্তু কুর্বন্তো ব্যা-  
কুলা দিশ্ঃ ॥ ৩৯ ॥ রথিনো রথিভিঃ সার্কং কুলপুত্রাস্তমৃত্যজঃ । পরাং শক্তিং  
সমাস্থায চক্রুঃ কৰ্ম্মাণ্যভীতবৎ ॥ ৪০ ॥ স্বঘয়র ইবানর্দে প্রজহুরিতরেতরন্ ।  
প্রার্থয়ানা যশো রাজন্ স্বর্গং বা যুদ্ধশালিনঃ ॥ ৪১ ॥ তস্মিন্স্থথা বর্ত্তমানে সং-  
গ্রামে লৌমহর্ষণে । ধার্ত্তরাষ্ট্রং মহৎ সৈন্যং প্রায়শো বিমুখীকৃতম্ ॥ ৪২ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি ত্রৈভিঃস্বয়ুক্ষে নবতি-

তনোহধ্যায়ঃ ॥ ৯০ ॥



সঞ্জয় উবাচ । স্বসৈন্যং নিহতং দৃষ্ট্বা রাজা দুৰ্য্যোধনঃ স্বয়ম্ । অভ্যধাবত সং-  
ক্রুদ্ধো ভীমসেনমরিন্দমম্ ॥ ১ ॥ প্রগৃহ্ম সুমহচ্চাপং ইন্দ্রাশনিসমস্বনম্ । মহতা  
শরবর্ষণে পাণ্ডবং সমবাকিরৎ ॥ ২ ॥ অর্দ্ধচন্দ্রঞ্চ সন্ধায সুতীক্ষ্ণং লোমবাহি-  
নম্ । ভীমসেনস্য চিচ্ছেদ চাপং ক্রোধসমগ্নিতঃ ॥ ৩ ॥ তদন্তরঞ্চ সংপ্রেক্ষ্য  
হ্বরমাণো মহারথঃ । প্রসন্দধে শিতং বাণং গিরীণামপি দারণম্ । তেনোরসি  
মহারাজ ভীমসেনমতাডযৎ ॥ ৪ ॥ স গাঢ়বিদ্ধো ব্যথিতঃ সৃক্ণী পরিসংলিহন্ ।  
সমাললয়ে তেজস্বী ধ্বজং হেমপরিষ্কৃতং ॥ ৫ ॥ তথা বিমনসং দৃষ্ট্বা ভীমসেনং  
যটোৎকচঃ । ক্রোধেনাভিপ্রজ্জ্বাল দিধক্ষ্মিব পাবকঃ ॥ ৬ ॥ অভিমন্যুখা-  
শ্চৈব পাণ্ডবানাং মহারথাঃ । সমভ্যধাবন্ ক্রোশন্তো রাজানং জাতসন্তুমাঃ ॥ ৭ ॥  
সংপ্রেক্ষ্য তান্ সম্প্রততঃ সংক্রুদ্ধান্ জাতসন্তুমান্ । ভারদ্বাজোহব্রবীদ্বাক্যং তাব-  
কানাং মহারথান্ ॥ ৮ ॥ ক্ষিপ্রং গচ্ছত ভদ্রং বো রাজানং পরিরক্ষত । সংশযং  
পরমং প্রাপ্তং মজ্জন্তং ব্যসনার্ণবে ॥ ৯ ॥ এতে ক্রুদ্ধা মহেষাসাঃ পাণ্ডবানাং  
মহারথাঃ । ভীমসেনং পুরস্কৃত্য দুৰ্য্যোধনমুপাদ্রবন্ ॥ ১০ ॥ নানাবিধানি শস্ত্রা-  
নি বিসৃজন্তো জযে ধৃতাঃ । নদন্তো তৈরবান্নাদাংস্ত্রাসযন্তুশ্চ ভূমিপান্ ॥ ১১ ॥  
তদাচার্য্যবচঃ শ্রুত্বা সোমদত্তপুরোগমাঃ । তাবকাঃ সমবর্ত্তন্তু পাণ্ডবানামনীকি-  
নীম্ ॥ ১২ ॥ রূপো ভুরিশ্রবাঃ শল্যো দ্রোণপুত্রো বিবিশতিঃ । চিত্রসেনো  
বিকর্ণশ্চ সৈন্ধবোহথ বৃহদ্বলঃ । আবন্ত্যোচ মহেষাসৌ কোরুরং পর্য্যবারযন্ ॥ ১৩ ॥  
তে বিংশতিপদং গত্বা সংগ্রহারং প্রচক্রিরে । পাণ্ডবা ধার্ত্তরাষ্ট্রাশ্চ পরস্পর-

জিঘাংসবঃ ॥ ১৪ ॥ এবমুক্ত্বা মহাবাহুর্নহদ্বিস্ফার্য কাশ্মুকম্ । ভারদ্বাজস্ততো  
 ভীমং ষড়্ভিংশত্যা সমাপ্ষৎ ॥ ১৫ ॥ ভূষশ্চেনং মহাবাহুঃ শট্টৈঃ শীঘ্রমবাকিরৎ ।  
 পর্বতং বারিধারাভিঃ শরদীব বলাহকঃ ॥ ১৬ ॥ তং প্রত্যবিধ্যদ্বশভির্ভীমসেনঃ  
 শিলীমুথেঃ । স্বরমাণো মহেষাসঃ সবে্য পার্শ্বে মহাবলঃ ॥ ১৭ ॥ স গাঢ়বিদ্ধো  
 ব্যথিতো বযোবৃদ্ধশ্চ ভারত । প্রনম্ফসংক্রঃ সংহসা রথোপস্থ উপাশিৎ ॥ ১৮ ॥  
 গুরুং প্রব্যথিতং দৃষ্ট্বা রাজা দুর্ব্যোধনঃ স্বযম্ । দ্রৌণায়নিশ্চ সংক্রুদ্ধো ভীমসেন-  
 মভিদ্ধতো ॥ ১৯ ॥ তাবাপতন্তৌ সংপ্ৰেক্ষ্য কালান্তক্যমোপমৌ । ভীমসেনৌ  
 মহাবাহুগদামাদায় সত্বরঃ ॥ ২০ ॥ অবপ্লুত্য রথাত্বর্ণং তস্থৌ গিরিরিবাচলঃ । সমুদ্যম্য  
 গদাং গুর্ভীং যমদণ্ডোপমাং রণে ॥ ২১ ॥ তমুদ্যতগদং দৃষ্ট্বা কৈলাসমিব শৃঙ্গি-  
 গম্ । কৌরবো দ্রোণপুল্লশ্চ সহিতাবভ্যধাবতাম্ ॥ ২২ ॥ তাবাপতন্তৌ সহিতৌ  
 স্বরিতৌ বলিনামরৌ । অভ্যধাবত বেগেন স্বরমাণো বৃকোদরঃ ॥ ২৩ ॥ তমাপ-  
 তন্তুং সংপ্ৰেক্ষ্য সংক্রুদ্ধং ভীমদর্শনম্ । সমভ্যধাবৎস্বরিতাঃ কৌরবাণাং মহা-  
 রথাঃ । ভারদ্বাজমুখাঃ সর্বে ভীমসেনজিঘাংসয়া ॥ ২৪ ॥ নানাবিধানি শস্ত্রাণি  
 ভীমস্যোরস্যপাতয়ন্ । সহিতাঃ পাণ্ডবং সর্বে পীডয়ন্তুঃ সমস্ততঃ ॥ ২৫ ॥ তং  
 দৃষ্ট্বা সংশয়ং প্রাপ্তং পীড্যমানং মহারথম্ । অভিমন্যুপ্রভৃতযঃ পাণ্ডবানাং  
 মহারথাঃ । অভ্যধাবন্ পরীপ্সন্তুঃ প্রাণাংস্ত্যক্ত্বা সুদুস্ত্যজান্ ॥ ২৬ ॥ অনূপাধি-  
 পতিঃ শূরো ভীমস্য দযিতঃ সখা । নীলো নীলাম্বুদপ্রথ্যঃ সংক্রুদ্ধো দ্রৌণিম-  
 ভ্যষাৎ ॥ ২৭ ॥ স্পর্ধিতে হি মহেষাসো নিত্যং দ্রোণসুতেন সঃ । স বিস্ফার্য  
 মহচ্চাপং দ্রৌণিং বিব্যাধ পল্লিণা ॥ ২৮ ॥ যথা শক্ৰো মংহারাজ পুরা বিব্যাধ  
 দানবম্ । বিপ্রচিহ্নিতং দুরাধর্ষং দেবতানাং ভয়ঙ্করম্ । যেন লোকত্রয়ং ক্রোধাৎ  
 ত্রাসিতং স্বেন তেজসা ॥ ২৯ ॥ তথা নীলেন নিভিষ্ণঃ স্রুমুক্তেন পতল্লিণা । সং-  
 জাতরুধিরোৎপীডো দ্রৌণিঃ ক্রোধসমম্বিতঃ ॥ ৩০ ॥ স বিস্ফার্য ধনুশ্চিত্রমিন্দ্ৰা-  
 শনিসমম্বনম্ । দধে নীলবিনাশায় মতিং মতিমতাস্বরঃ ॥ ৩১ ॥ ততঃ সন্ধায় বিম-  
 লান্ ভল্লান্ কর্ম্মারমার্জিতান্ । জঘান চতুরো বাহান্ সারথিং ধ্বজমেব চ ॥ ৩২ ॥  
 সপ্তমেন চ ভল্লেন নীলং বিব্যাধ বক্ষসিঃ । স গাঢ়বিদ্ধো ব্যথিতো রথোপস্থ উপা-  
 শিৎ ॥ ৩৩ ॥ মোহিতং বীক্ষ্য রাজানং নীলমভ্রচযোপমম্ । ষট্টোৎকচোহ-  
 ভিসংক্রুদ্ধো জ্ঞাতিভিঃ পরিবারিতঃ ॥ ৩৪ ॥ অভিদ্রাব বেগেন দ্রৌণিমাহ-  
 বশোভিনম্ । তথেষত্রে চাত্যধাবন্নাক্ষসা যুদ্ধদুর্শদাঃ ॥ ৩৫ ॥ তমাপতন্তুং সং-  
 প্ৰেক্ষ্য রাক্ষসং যোরদর্শনম্ । অভ্যধাবত তেজস্বী ভারদ্বাজাঙ্গজস্ত্বরন্ ॥ ৩৬ ॥

নিজঘান চ সংক্রুদ্ধো রাক্ষসান্ ঘোরদর্শনান্ । যেহ্ভবন্নগ্রতঃ ক্রুদ্ধা রাক্ষসস্য  
 পুরঃসরাঃ ॥ ৩৭ ॥ বিমুখাংশ্চৈব তান্ দৃষ্ট্বা দ্রৌণিচাপচ্যুতৈঃ শরৈঃ । অক্রুধ্যত  
 মহাকাষো ভৈমসেনির্ঘটোৎকচঃ ॥ ৩৮ ॥ প্রাদুশ্চক্রে ততো মায়াং ঘোররূপাং  
 সুদারুণাম্ । মোহয়ন্ সমরে দ্রৌণিং মায়াবী রাক্ষসাধিপঃ ॥ ৩৯ ॥ ততস্তে  
 তাবকাঃ সর্বে মাযয়া বিমুখীকৃতাঃ । অন্যান্যং সমপশ্যন্ত নিরুত্তা মেদিনী  
 তলে ॥ ৪০ ॥ বিচেষ্টমানান্ রূপণান্ শোণিতেন পরিপ্লুতান্ । দ্রোণং দুর্ঘ্যো-  
 ধনং শল্যমশ্বখামানমেব চ ॥ ৪১ ॥ প্রায়শ্চ মহেষাসা যে প্রধানাঃ স্ম কৌর-  
 বাঃ । বিধস্তা রথিনঃ সর্বে রাজানশ্চ নিপাতিতাঃ ॥ ৪২ ॥ হযাশ্চৈব হযারোহাঃ  
 সন্নিকৃতাঃ সহস্রশঃ । তদৃষ্ট্বা তাবকং সৈন্যং বিক্রতং শিবিরং প্রতি ॥ ৪৩ ॥ মম  
 প্রাক্রোশতো রাজংস্তথা দেবব্রতস্য চ । যুধ্যধ্বং মা পলাযধ্বং মাঠেষা রাক্ষসী  
 রণে ॥ ৪৪ ॥ ঘটোৎকচপ্রযুক্তেতি নাতিষ্ঠন্ত বিমোহিতাঃ । নৈব তে শ্রদ্ধধুর্ভীতা  
 বদতোরাবযোর্বচঃ ॥ ৪৫ ॥ তাংশ্চ প্রজবতো দৃষ্ট্বা জঘপ্রাপ্তাশ্চ পাণ্ডবাঃ । ঘটোৎ-  
 কচেন সহিতাঃ সিংহনাদান্ প্রচক্রিরে । শঙ্খান্দুভিনির্ঘোষৈঃ সমস্তাম্বেদিরে  
 ভৃশম্ ॥ ৪৬ ॥ এবং তব বলং সর্বং হৈডিঘ্নেন দুরাঅনা । সূর্য্যাস্তমনবেলায়াং  
 প্রভগ্নং বিক্রতং দিশঃ ॥ ৪৭ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি হৈডিঘ্নমায়াযুদ্ধে

একনবতিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৯১ ॥



সঞ্জয় উবাচ । তস্মি্ন্মহতি সংক্রন্দে রাজা দুর্ঘ্যোধনস্তদা । গাঙ্গেয়মুপসংগম্য  
 বিনযেনাভিবাদ্য চ ॥ ১ ॥ তস্য সর্বং যথাবৃত্তমাখ্যাতুমুপচক্রমে । ঘটোৎকচস্য  
 বিজয়মাত্মনশ্চ পরাজয়ম্ ॥ ২ ॥ কথয়ামাস দুর্ধ্বর্ষো বিনিশ্চস্য পুনঃ পুনঃ । অত্র-  
 বীচ্ছ তদা রাজন্ ভীষ্মং কুরুপিতামহম্ ॥ ৩ ॥ ভবন্তং সমুপাশ্রিত্য বাসুদেবং  
 যথা পটৈঃ । পাণ্ডবৈর্বিগ্রহো ঘোরঃ সমারুদ্ধো মযা প্রভো ॥ ৪ ॥ একাদশ সমা-  
 খ্যাতা অক্ষৌহিণ্যশ্চ যামম । নিদেশে তব তিষ্ঠন্তি মযা সার্কং পরন্তপ ॥ ৫ ॥  
 সোহহং ভরতশার্দূল ভীমসেনপুরোগমৈঃ । ঘটোৎকচং সমাশ্রিত্য পাণ্ডবৈ-  
 র্যুধি নির্জিতঃ ॥ ৬ ॥ তন্মে দহতি গাত্রাণি শুষ্কং বৃক্ষমিবানলঃ । তদিচ্ছামি  
 মহাভাগ ত্বৎপ্রসাদাৎ পরন্তপ ॥ ৭ ॥ রাক্ষসাপসদং হস্তং স্বয়মেব পিতামহ ।  
 ত্বাং সমাশ্রিত্য দুর্ধ্বর্ষ তন্মে কর্ত্বুং ত্বমহসি ॥ ৮ ॥ এতৎ শ্রুত্বা তু বচনং রাজ্ঞো  
 ভরতসন্তমঃ । দুর্ঘ্যোধনমিদং বাক্যং ভীষ্মঃ শান্তনবোহব্রবীৎ ॥ ৯ ॥ শূনু রা-

जन्मम वचो यद्वाꣳ वक्ष्यामि कौरव । यथा ह्यथा महाराज वर्तितव्याꣳ परशु-  
 प ॥ १० ॥ आत्मा रक्ष्या रणे तात सर्वावस्थास्वरिन्दम । धर्मराजेन संग्राम-  
 स्तुथा कार्यः सदानघ ॥ ११ ॥ अर्जुनेन यमाभ्याꣳ वा भीमसेनेन वा पुनः । राज-  
 धर्मꣳ पुरस्कृत्य राजा राजानमर्च्छति ॥ १२ ॥ 'अहꣳ द्रोणः रूपो द्रोणिः कृतवर्मा  
 च साह्वतः । शल्यश्च सौमदन्तिश्च विकर्णश्च महारथः ॥ १३ ॥ तव च द्रातृरः श्रेष्ठा  
 दुःशासनपुरोगमाः । ह्यदर्थे प्रतिषोꣳस्यामो राक्षसꣳ तꣳ महाबलम् । रौद्रे  
 तस्मिन्नाक्षसेन्द्रे यदि तेहनुशयो महान् ॥ १४ ॥ अयꣳ वा गच्छतु रणे तस्य युद्धीय  
 दुर्मतेः । भगदत्तो महीपालः पुरन्दरसमो युधि ॥ १५ ॥ एतावदुक्त्वा राजानꣳ  
 भगदत्तमथात्रवीꣳ । समक्षꣳ पार्थिवेन्द्रस्य वाक्यꣳ वाक्यविशारदः ॥ १६ ॥ गच्छ  
 शीघ्रꣳ महाराज हैडिषꣳ युद्धदुर्मदम् । वारयस्व रणे यत्तो मिषताꣳ सर्वधन्विनाम् ।  
 राक्षसꣳ क्रूरकर्माणꣳ यथेन्द्रस्तारकꣳ पुरा ॥ १७ ॥ तव दिव्यानि चास्त्राणि विक्रमश्च  
 परशुप । समागमश्च बह्विः पुराभूदमरैः सह ॥ १८ ॥ ह्यꣳ तस्य नृपशार्दूल  
 प्रतिषोक्त्वा महाहवे । स्वलेनोच्छ्रितो राजन् जहि राक्षसपुङ्गवम् ॥ १९ ॥  
 एतꣳ श्रुत्वा तु वचनꣳ भीष्मस्य पृथनापतेः । प्रययौ सिꣳहनादेन परानतिमुखो  
 द्रुतम् ॥ २० ॥ तमाद्रवस्तꣳ संग्रैक्ष्य गर्जस्तुमिव तोषदम् । अत्यवर्तस्तु संग्रुक्ताः  
 पाण्डवानाꣳ मथारथाः ॥ २१ ॥ भीमसेनोऽतिमन्युश्च राक्षसश्च षटोꣳकचः ।  
 द्रौपदेयाः सत्यधृतिः क्लृदेवश्च भारत ॥ २२ ॥ चेदिपो वसुदानश्च दशार्णाधि-  
 पतिस्तथा । सुप्रतीकेन त्रांश्चापि भगदत्तोऽप्युपाद्रवꣳ ॥ २३ ॥ ततः समभ-  
 वद्वुक्त्वा घोरकपꣳ भयानकम् । पाण्डूनाꣳ भगदत्तेन यमराक्षुर्विबर्द्धनम् ॥ २४ ॥ प्र-  
 युक्त्वा रथिभिर्वाणा भीमवेगाः सूतेजनाः । ते निपेतुर्महाराज नागेषु च रथेषु  
 च ॥ २५ ॥ प्रतिग्राश्च महानागा विनीता हस्तिमादिभिः । परस्परꣳ समासाद्य  
 समिपेतुरतीतवꣳ ॥ २६ ॥ मदाक्ता रोषसꣳरक्ता विषाणाऽग्रेष्महाहवे । विभिदु-  
 र्दस्तमुषलैः समासाद्य परस्परम् ॥ २७ ॥ ह्यश्च चामरापीडाः प्रासपाणितिरा-  
 स्त्रिताः । चोदिताः सादिभिः क्षिप्रꣳ निपेतुरितरैतरम् ॥ २८ ॥ पादात्राश्च  
 पदातेयाऽघैस्ताडिताः शक्तितोमरैः । न्यपतस्तु तदा भूमौ शतशोऽथ महस्र-  
 शः ॥ २९ ॥ रथिनश्च रथे राजन् कर्णिनालीकसायकैः । निहत्य समरे वीरान्  
 सिꣳहनादाग्निनेदिरे ॥ ३० ॥ तस्मिꣳस्तथा वर्तमाने संग्रामे लोमहर्षणे । भग-  
 दत्तो महेष्वासो भीमसेनमथाद्रवꣳ ॥ ३१ ॥ कुङ्करेण प्रतिभेन सपुधा सुवता म-  
 दम् । पर्वतेन यथा तोषꣳ सुवमाणेन सर्वशः ॥ ३२ ॥ किरण्णरसहस्राणि सुप्रतीक

শিরোগতঃ । ঐরাবতস্তো মঘবান্ বারিধারা ইবানঘ ॥ ৩৩ ॥ স ভীমং শরধারা-  
 ভিস্তাডযামাস পার্ধিবঃ । পর্বতং বারিধারাভিস্তপান্তে জলদো যথা ॥ ৩৪ ॥ ভীম-  
 সেনস্ত সংক্রুদ্ধঃ পাদরক্ষান্ পরঃশতান্ । নিজঘান মহেষাসঃ সংরুদ্ধঃ শরবৃষ্টি-  
 ভিঃ ॥ ৩৫ ॥ তান্ দৃষ্ট্বা নিহতান্ ক্রুদ্ধো ভগদত্তঃ প্রতাপবান্ । চোদযামাস না-  
 গেন্দ্রং ভীমসেনরথং প্রতি ॥ ৩৬ ॥ স নাগঃ প্রেষিতস্তেন বাণো জ্যাচোদিতো  
 যথা । অভ্যধাবত বেগেন ভীমসেনমরিন্দমম্ ॥ ৩৭ ॥ তমাপতন্তুং সংপ্রেক্ষ্য  
 পাণ্ডবানাং মহারথাঃ । অভ্যবর্ত্তন্ত বেগেন ভীমসেনপুরোগমাঃ ॥ ৩৮ ॥ কৈকে-  
 যাশ্চাভিমন্যুশ্চ দ্রৌপদেযাশ্চ সর্বশঃ । দশার্ণাধিপতিঃ শূরঃ ক্ষত্রদেবশ্চ মারি-  
 ষ ॥ ৩৯ ॥ চেদিপশ্চিক্রকেতুশ্চ সংরক্ষাঃ সর্ব এব তে । উত্তমাস্ত্রাণি দিব্যানি  
 দর্শয়ন্তো মহাবলাঃ । তমেকং কুঞ্জরং ক্রুদ্ধাঃ সমস্তাং পর্য্যবারযন্ ॥ ৪০ ॥ স  
 বিদ্ধো বহুভির্বাণৈর্ব্যরোচত মহাদ্বিপঃ । সংজাতরুধিরোৎপীডো ধাতুচিত্র ইবা-  
 দ্রিরাট্ ॥ ৪১ ॥ দশার্ণাধিপতিশ্চাপি গজং ভূমিধরোপমম্ । সমাস্থিতোহভিদু-  
 দ্রাব ভগদত্তস্য বারণম্ ॥ ৪২ ॥ তমাপতন্তুং সমরে গজং গজপতিঃ স চ । দধার  
 সুপ্রতীকোহপি বেলেব মকরালযম্ ॥ ৪৩ ॥ বারিতং প্রেক্ষ্য নাগেন্দ্রং দশার্ণস্য  
 মহাত্মনঃ । সাধু সাধ্বিতি সৈন্যানি পাণ্ডবেযান্যপূজযন্ ॥ ৪৪ ॥ ততঃ প্রাগ-  
 জ্যোতিষঃ ক্রুদ্ধস্তোমরানৈ চতুর্দশ । প্রাহিণোত্তস্য নাগস্য প্রমুখে নৃপসত্তম ॥ ৪৫ ॥  
 বস্মমুখ্যং তনুত্রাণং শাতকুস্তপরিষ্কৃতম্ । বিদার্য্য প্রাবিশন্ ফিপ্রং বল্লীকমিব  
 পন্নগাঃ ॥ ৪৬ ॥ স গাচবিদ্ধো ব্যথিতো নাগো ভরতসত্তম । উপাবৃত্তমদঃ ফিপ্রম-  
 ভ্যবর্ত্তত বেগিতঃ ॥ ৪৭ ॥ স প্রদুদ্রাব বেগেন প্রণদন্ তৈরবং রবম্ । সম্মর্দযানঃ  
 স্ববলং বায়ুব্ক্ষানিবৌজসা ॥ ৪৮ ॥ তস্মিন্ পরাজিতে নাগে পাণ্ডবানাং মহা-  
 রথাঃ । সিংহনাদং বিনদ্যোচ্চৈর্যুদ্ধাযৈবোপতস্থিরে ॥ ৪৯ ॥ ততো ভীমং পুরস্কৃত্য  
 ভগদত্তমুপাদ্রবন্ । কিরন্তো বিবিধান্ বাণান্ শস্ত্রাণি বিবিধানি চ ॥ ৫০ ॥ তেষা-  
 মাপতাং রাজন্ সংক্রুদ্ধানামমর্ষণাম্ । শ্রদ্ধা স নিনদং যোরমমর্ষাদাতসাধসঃ ।  
 ভগদত্তো মহেষাসঃ স্বনাগং প্রত্যচোদযৎ ॥ ৫১ ॥ অক্ষুশাক্ষুষ্ঠমুদিতঃ স গজ-  
 প্রবরো যুধি । তস্মিন্ ক্ষণে সমভবৎ সংবর্ত্তক ইবানলঃ ॥ ৫২ ॥ রথসংঘাৎস্তথা  
 নাগান্ হযাংশ্চ হযসাদিভিঃ । পাদাতাংশ্চ স্তুসংক্রুদ্ধঃ শতশোংথ সহস্রশঃ ।  
 অমৃদাৎ সমরে নাগঃ সংপ্রধাবৎস্ততস্ততঃ ॥ ৫৩ ॥ তেন সংলোড্যমানস্ত পাণ্ড-  
 বানাং বলং মহৎ । সঞ্চুকোচ মহারাজ চর্ম্মেবাণৌ সমাহিতম্ ॥ ৫৪ ॥ ভগ্নস্ত  
 স্ববলং দৃষ্ট্বা ভগদত্তেন ধীমতা । ঘটোৎকচোংথ সংক্রুদ্ধো ভগদত্তমুপাদ্রবৎ ॥ ৫৫ ॥

विकटः पुरुषो राजन् दीप्तस्यो दीप्तलोचनः । रूपं विभीषणं क्रुद्धा रोषेण  
 प्रज्वलन्निव ॥ ५७ ॥ जग्राह विमलं शूलं गिर्रीणामपि दारुणम् । नागं जिघां-  
 स्यः सहसा चिक्षेप च महाबलः । स विस्फुलिङ्गमालाभिः समस्तां परिवेष्टितम् ॥ ५९ ॥  
 तमापतस्तुं सहसा दृष्ट्वा प्राग्ज्योतिषो नृपः । चिक्षेप रुचिरं तीक्ष्णमर्द्धचन्द्रं  
 सुदारुणम् ॥ ५८ ॥ चिच्छेद तन्महच्छूलं तेन'वाणेन वेगवत् । उपपात द्विधा  
 छिन्नं शूलं हेमपरिष्कृतम् । महाशनिर्यथा ब्रह्मा शक्रमुक्त्वा नभोगता ॥ ५९ ॥  
 शूलं निपातितं दृष्ट्वा द्विधा क्रुद्धः पार्थिव । रुक्मदण्डं महाशक्तिं जग्राहार्द्ध-  
 शिथोपमाम् । चिक्षेप तां राक्सस्य तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ ६० ॥ तामाप-  
 तन्तीं संप्रेक्ष्य विषंस्वामशनीमिव । उपपात राक्सससूर्णं जग्राह च ननाद  
 च ॥ ६१ ॥ बभञ्ज चैनान्त्वरितो जानून्यारोप्य भारत । पश्यतः पार्थिवेन्द्रस्य  
 तदद्भुतमिवाभवत् ॥ ६२ ॥ तदवेक्ष्य क्रुतं कर्म राक्ससेन बलीयसा । दिवि देवाः  
 सगन्धर्वा नूनशचापि विस्मिताः ॥ ६३ ॥ पाण्डवाश्च महाराज भीमसेनपुरो-  
 गमाः । साधु साध्विति नादेन पृथिवीमन्ननादयन् ॥ ६४ ॥ तन्न श्रुत्वा महानादं  
 प्रहृष्टानां महात्मानाम् । नामूष्यत महेश्वसो भगदत्तः प्रतापवान् ॥ ६५ ॥ स  
 विस्फार्य महत्तापमिन्द्राशिसमप्रभम् । तर्जयामास वेगेन पाण्डवानां महा-  
 रथान् ॥ ६६ ॥ विमृजन्निमलांस्तीक्ष्णाम्राचाग्निमलप्रभान् । भीममेकेन विव्या-  
 द राक्ससं नवभिः शरैः ॥ ६७ ॥ अभिमन्युं त्रिभिश्चैव कैकेयान् पक्ष्यतिस्तथा ।  
 पूर्णावतविमृष्टेन शरेणानतपर्वणा ॥ ६८ ॥ विभेद दक्षिणं बाह्वं क्रुद्धदेवस्य  
 चाहवे । पपात सहसा तस्य सशरं धनुःक्रुद्धम् ॥ ६९ ॥ द्रौपदेयांस्तुतः पक्ष-  
 पक्ष्यतिः समताडयत् । भीमसेनस्य च क्रोधाज्जघान च तुरङ्गमान् ॥ ७० ॥ ध्वजं  
 केशरिणक्षस्य चिच्छेद विशिथैस्त्रिभिः । निरिभेद त्रिभिश्चानैः सारथिणस्य  
 पत्रिभिः ॥ ७१ ॥ स गाढविक्रो व्यथितो रथोपसु उपाविशत् । विशोको भरत  
 श्रेष्ठ भगदत्तेन संयुगे ॥ ७२ ॥ ततो भीमो महाबाहूर्धिरथो रथिनायुरः ।  
 गदां प्रगृह्य वेगेन प्रचक्रन्द रथोत्तमात् ॥ ७३ ॥ तनुद्यतगदं दृष्ट्वा सशृङ्गमिव  
 पद्मम् । तावकानां भयं योरं समपद्यत भारत ॥ ७४ ॥ एतस्मिन्नेव काले तु  
 पाण्डवः क्रुद्धसाराथिः । आजगाम महाराज निम्नं शत्रून् समस्ततः ॥ ७५ ॥ यत्र  
 तो पुरुषव्याधौ पितापुत्रौ महाबलौ । प्राग्ज्योतिषेण संसक्तौ भीमसेन-  
 षटोऽकटौ ॥ ७६ ॥ दृष्ट्वा च पाण्डवो ब्रातृन् वध्यमानान्महारथान् । स्वरितो  
 भरतश्रेष्ठ तत्रायुध्यं किरञ्जरान् ॥ ७७ ॥ ततो दुर्योधनो राजा स्वरमाणो महा-

রথঃ । সেনামচোদযৎ ক্ষিপ্রং নরনাগাশ্বসংকুলাম্ ॥ ৭৮ ॥ তামাপতন্তীং মহমা  
কৌরবাণাং মহাচমূম্ । অতিদুদ্ভাব বেগেন পাণ্ডবঃ শ্বেতবাহনঃ ॥ ৭৯ ॥ ভগ-  
দভ্রোহপি সমরে তেন নাগেন ভারত । বিমৃদন্ পাণ্ডববলং যুধিষ্ঠিরমুপাদ্রবৎ ॥ ৮০ ॥  
তদাসীৎ স্তুমহদ্বৃদ্ধং ভগদভ্রস্য মারিষ । পাঞ্চালৈঃ পাণ্ডবেযৈশ্চ কৈকেযৈশ্চোদ্য  
তায়ুধৈঃ ॥ ৮১ ॥ ভীমসেনোহপি সমরে তাবুভৌ কেশবাজ্জুনৌ । অশ্রাবযদ্ব-  
থাবৃভমিরাবদ্বধমুক্তমম্ ॥ ৮২ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বনি ভীষ্মবধপর্বনি ভগদভ্রপরাক্রমে দ্বিনবতি-

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৯২ ॥



সঞ্জয় উবাচ । পুত্রং বিনিহতং শত্রু ইরাবন্তং ধনঞ্জয়ঃ । দুঃখেন মহতাবিন্টো  
নিশ্বসন্ পন্নগো যথা । অত্রবীৎ সমরে রাজন্ বাসুদেবমিদং বচঃ ॥ ১ ॥ ইদং  
নৃত্যং মহাপ্রাজ্ঞো বিদুরো দৃষ্টবান্ পুরা । কুরুণাং পাণ্ডবানাঞ্চ ক্ষয়ং ঘোরং  
মহামতিঃ । ততো নিবারয়িতবান্ ধৃতরাষ্ট্রং জনেশ্বরম্ ॥ ২ ॥ অবধ্যা বহবো  
বীরাঃ সংগ্রামে মধুসূদন । নিহতাঃ কৌরবৈঃ সংখ্যে তথাস্মাভিশ্চ কৌরবাঃ ॥ ৩ ॥  
অর্থহেতোন্নরশ্রেষ্ঠ ক্রিয়তে কস্ম কুৎসিতম্ । ধিগর্থান্ যৎক্লতে হেবং ক্রিয়তে  
জ্ঞাতিসংক্ষয়ঃ ॥ ৪ ॥ অধনস্য মৃতং শ্রেয়ো ন চ জ্ঞাতিবধাদ্ধনম্ । কিন্নু প্রাপ্স্যা-  
মহে ক্লয়ং হত্না জ্ঞাতীন্ সমাগতান্ ॥ ৫ ॥ দুর্ব্যোধনাপরাধেন শকুনেঃ সৌবলস্য  
চ । ক্ষত্রিয়া নিধনং যাস্তি কর্ণদুর্শ্মন্তিতেন চ ॥ ৬ ॥ ইদানীঞ্চ বিজানামি সুরূ-  
তং মধুসূদন । ক্লতং রাজ্ঞা মহাবাহো যাচতা চ স্ত্রযোধনম্ । রাজ্যার্কং পঞ্চ বা  
গ্রামান্নাকার্ষীৎ স চ দুর্শ্মতিঃ ॥ ৭ ॥ দৃষ্টা হি ক্ষত্রিয়াঙ্কুরান্ শযানান্ ধরণীতলে ।  
নিন্দামি ভৃশমাত্মানং ধিগস্তু ফলজীবিকাম্ ॥ ৮ ॥ অশক্তনিতি মামেতে জ্ঞা-  
ম্যাস্তি ক্ষত্রিয়া রণে । যুদ্ধং মহৎ সুরূচিতং জ্ঞাতিভিমধুসূদন ॥ ৯ ॥ সঞ্চোদয  
হযাঞ্জীঘ্রং ধার্তরাষ্ট্রচমুং প্রতি । প্রতরিষ্যে মহাপারং ভুজাভ্যাং সমরোদধিম্ ।  
নাযং ক্লীবাযিতুং কালো বিদ্যতে মাধব ক্ৰচিৎ ॥ ১০ ॥ এবমুক্তস্ত পার্থেন কেশবঃ  
পরবীরহা । চোদযামাস তানশ্বান্ পাণ্ডুরান্ বাতরংহসঃ ॥ ১১ ॥ অথ শকো  
মহানাসীত্তব সৈন্যস্য ভারত । মারুতোদ্ধৃতবেগস্য সাগরস্যেব পর্বনি ॥ ১২ ॥  
অপরাহে মহারাজ সংগ্রামঃ সমপদ্যত । পর্জন্যসমনির্ঘোষো ভীষ্মস্য সহ পাণ্ড-  
বৈঃ ॥ ১৩ ॥ ততো রাজংস্তব সূতা ভীমসেনমুপাদ্রবন্ । পরিবার্য্য রণে দ্রোণং



বসবো বাসবং যথা ॥ ১৪ ॥ ততঃ শান্তনবো ভীষ্মঃ ক্রপশ্চ রথিনায়রঃ । ভগদত্তঃ  
 সুশম্মা চ ধনঞ্জয়মুপাদ্রবন্ ॥ ১৫ ॥ হার্দিক্যো বাহ্লিকশ্চৈব সাত্যকিং সমভি-  
 দ্রুতো । অযষ্ঠকস্ত নৃপতিরভিমন্যুমুপাদ্রবৎ ॥ ১৬ ॥ শেষাস্ত্বন্যে মহারাজ শেষা-  
 নেব মহারথান্ । ততঃ প্রববৃতে যুদ্ধং ঘোরকপং ভয়াবহম্ ॥ ১৭ ॥ ভীমসেনস্ত  
 নংপ্রেক্ষ্য পুত্রাংস্তব জনেশ্বর । প্রজজ্বাল রণে ক্রুদ্ধো হবিষা হব্যবার্ভিব ॥ ১৮ ॥  
 পুত্রাস্ত তব কৌন্তেযং ছাদযাঞ্চক্রিরে শরৈঃ । প্রাবৃষীব মহারাজ জলদা ইব পৰ্ব-  
 তম্ ॥ ১৯ ॥ সচ্ছাদ্যমানো বহুধা পুত্রৈস্তব বিশাম্পতে । মৃক্ণী সংলিহ্ন ধীরঃ  
 শার্দূল ইব দর্পিতঃ ॥ ২০ ॥ ব্যাচোরক্ষং ততো ভীমঃ পাতযামাস পার্থিব । ক্ষুর  
 প্রেণ সুতীক্ষ্ণেন সোহ্ভবদাতজ্জীবিতঃ ॥ ২১ ॥ অপরেণ তু ভল্লেন পীতেন নিশি-  
 তেন চ । অপাতযৎ কুণ্ডলিনং সিংহঃ ক্ষুদ্রমৃগং যথা ॥ ২২ ॥ ততঃ সূনিশিতান্  
 পীতান্ সমাদত্ত শিলীনুখান্ । সমর্জ হুরবা যুদ্ধঃ পুত্রাংস্তে প্রাপ্য নারিষ ॥ ২৩ ॥  
 প্রেযিতা ভীমসেনেন শরাংস্তে দৃচখসিনা । অপাতযন্ত পুত্রাংস্তে রথেভ্যঃ সুমহার-  
 থান্ ॥ ২৪ ॥ অনাধৃষ্টিং কুণ্ডভেদিং বৈরাটিং দীর্ঘলোচনম্ । দীর্ঘবাহুং স্তবাহুঞ্চ  
 তথৈব কনকধ্বজম্ ॥ ২৫ ॥ প্রপতন্তঃ স্ম তে বীরা বিরেজুভরতর্ষভ । বসন্তে  
 পুষ্পশবলাশ্চূতাঃ প্রপতিতা ইব ॥ ২৬ ॥ ততঃ প্রদুক্রবুঃ শেষাস্তব পুত্রা মহা-  
 হবে । তং কালমিব মন্যন্তো ভীমসেনঃ মহাবলম্ ॥ ২৭ ॥ দ্রোণস্ত সমরে  
 বীর নির্দহন্তং স্মতাংস্তব । যথাদ্রিঃ বারিধ্যারামিঃ সমস্তাদ্যকিরচ্ছরৈঃ ॥ ২৮ ॥  
 তত্রাদ্ভুতমপশ্যাম কুন্তাপুত্রস্য পৌকুষম্ । দ্রোণেন বার্য্যনাণোপি নিজস্নে যৎ  
 স্মতাংস্তব ॥ ২৯ ॥ যথা গোবৃষভো বর্ষঃ সন্ধারবতি খাৎ পাতৎ । ভীমস্তথা দ্রোণ-  
 মুক্তঃ শরবর্ষনদীধরৎ ॥ ৩০ ॥ অদ্ভুতঞ্চ মহারাজ তত্র চক্রে বৃকোদরঃ । যৎ পুত্রাং-  
 স্তেংবধীং সংখ্যে দ্রোণথৈব ন্যবার্ষৎ ॥ ৩১ ॥ পুত্রেষু তব বীরেষু চিক্রীডাজুন  
 পূর্বজঃ । নৃগেষিব মহারাজ চরন্ ব্যাঘ্রো মহাবলঃ ॥ ৩২ ॥ যথা হি পশুমধ্যস্তে  
 দ্রাবষেত পশুন্ বকঃ । বৃকোদরস্তব স্মতাংস্তথা ব্যাদ্রাবষদ্রণে ॥ ৩৩ ॥ গাঙ্গেযো  
 ভগদত্তশ্চ গোতমশ্চ মহারথঃ । পাণ্ডবং রভসং যুদ্ধে বারযামাসুরজ্জুনম্ ॥ ৩৪ ॥  
 অস্ত্রৈরস্ত্রাণি সংবার্য্য তেষাং সোহ্ভতিরথো রণে । প্রবীরাংস্তব সৈন্যেষু প্রেষযা-  
 নাস নৃত্যবে ॥ ৩৫ ॥ অভিমন্যুস্ত রাজাননয়ম্ভং লোকবিশ্রুতম্ । বিরথং রথিনাং  
 শ্রেষ্ঠং কারযামাস সাযকৈঃ ॥ ৩৬ ॥ বিরথো বধ্যমানস্ত সৌভদ্রেণ যশস্বিনা ।  
 অবপ্লুত্য রথাত্মুর্গং মন্ত্রীভো মন্বজাধিপঃ ॥ ৩৭ ॥ অসিং চিক্ষেপ সমরে সৌভদ্রস্য  
 মহাত্মনঃ । আরুরোহ রথথৈব হার্দিক্যস্য মহাত্মনঃ ॥ ৩৮ ॥ আপতন্তন্ত নিস্ত্রিংশং

যুদ্ধমার্গাংশিষ্যঃ। লাঘবাধ্যংসযামাস সৌভদ্রঃ পরবীরহা ॥ ৩২ ॥ ব্যংসিতং  
 বীক্ষ্য নিস্ত্রিংশং সৌভদ্রেণ রণে তদা। সাধু সাদ্বিত্তি সৈন্যানাং প্রণাদোহ্ভুদ্দি-  
 শাম্পতে ॥ ৪০ ॥ ধৃষ্টদ্যুম্নমুখাস্তুন্যে তব সৈন্যমঘোধষন্। তথৈব তাবকাঃ সর্বে  
 পাণ্ডুসৈন্যমঘোধষন্ ॥ ৪১ ॥ তত্রাক্রন্দো মহানাসীত্তব তেষাঞ্চ ভারত। নিম্নতাং  
 দৃঢ়মন্যানাং কুৰ্বতাং কৰ্ম্ম দুষ্করম্ ॥ ৪২ ॥ অন্যান্যং হি রণে শূরাঃ কেশেষা-  
 ক্ষিপ্য মানিনঃ। নখদন্তৈরযুধ্যন্ত মুষ্টিভিজান্ভুভিস্তথা ॥ ৪৩ ॥ তলৈশ্চৈবাত  
 নিস্ত্রিংশৈরাহুভিশ্চ স্তসংস্থিতৈঃ। বিবরং প্রাপ্য চান্যোন্যমনষন্ যমসাদ-  
 নম্ ॥ ৪৪ ॥ ন্যহনচ্চ পিতা পুত্রং পুত্রশ্চ পিতরং তথা। ব্যাকুলীকৃতসর্বাঙ্গ।  
 যুযুধস্তত্র মানবাঃ ॥ ৪৫ ॥ রণে চাকণি চাপানি হেমপৃষ্ঠানি মারিষ। হতানামপ-  
 বিদ্ধানি কলাপাশ্চ মহাধনাঃ ॥ ৪৬ ॥ জাতকপময়ৈঃ পুটৈশ্চ রাজতৈর্নিশিতাঃ শরাঃ।  
 তৈলধৌতা ব্যরাজস্ত নিস্কৃতভুজগোপমাঃ ॥ ৪৭ ॥ হস্তিদন্তসকন্থজান  
 জাতকপপরিষ্কৃতান্। চক্ষ্মাণি চাপবিদ্ধানি রুক্মচিভ্রাণি পশ্বিনাম ॥ ৪৮ ॥ সুবর্ণ-  
 বিকৃতান্ প্রাসান্ পাঁটশান্ হেমভূষিতান্। জাতকপমঘীশ্চক্ষীঃ শক্লাশ্চ কনকো-  
 জ্জ্বলাঃ ॥ ৪৯ ॥ স্তসম্মাহাংশ্চ পতিতান্ মুযলানি গুণকণি চ। পরিঘান পাঁটশাং-  
 শ্চৈব ভিন্দিপালাংশ্চ মারিষ ॥ ৫০ ॥ পতিতান্ বিবিধাংশ্চাপাংশ্চিত্রহেমপরি-  
 ষ্কৃতান্। কুথাশ্চ বহুধাকারাস্চামরব্যজনানি চ ॥ ৫১ ॥ নানাবিধানি শস্ত্রাণি  
 প্রগৃহ্য পতিতা নরাঃ। জীবন্ত ইব দৃশ্যন্তে গতসত্ত্বা মহারথাঃ ॥ ৫২ ॥ গদাবি-  
 মথিতৈর্গাত্রেমু ষলৈর্ভিন্নমস্তকাঃ। গজবাজিরথক্ষুপাঃ শেরতে নৃপতে ক্ষিতৌ ॥ ৫৩ ॥  
 তথৈবান্বনানাগানাং শরীরৈর্বিভবৌ তদা। সংচক্ষা বসুধা রাজন্ পরতৈরিব  
 সর্ষশঃ ॥ ৫৪ ॥ সমরে পতিতৈশ্চৈব শক্ত্যক্ষিশরতোমরৈঃ। নিস্ত্রিংশৈঃ পাঁটশৈঃ  
 প্রাসৈরবঃকুন্তৈঃ পরশ্বশৈঃ। ৫৫ ॥ পরিঘৈর্ভিন্দিপালৈশ্চ শতশ্চাভিশ্চ মারিষ।  
 শরীরৈঃ শস্ত্রনির্ভিন্নৈঃ সমাস্তীর্য্যত মেদিনী ॥ ৫৬ ॥ বিশকৈরন্ন গদৈশ্চ শোণিতৌঘ-  
 পরিপ্লুতৈঃ। গতাস্ত্ৰিভিন্নিত্রয় বিবভৌ সংবৃতা মহী ॥ ৫৭ ॥ সতলত্রেঃ সকেয়ুরৈ-  
 রাহুভিশ্চন্দনোক্ষিতৈঃ। হস্তিহস্তোপমৈশ্চিন্নৈকরুভিশ্চ তরশ্বিনাম ॥ ৫৮ ॥ বদ্ধ-  
 চূড়ামণিবরৈঃ শিরোভিশ্চ সকুণ্ডলৈঃ। পাতিতৈর্বৃষভাক্ষাণাং বভৌ ভারত মেদি-  
 নী ॥ ৫৯ ॥ কবচৈঃ শোণিতাদিষ্টৈর্বিপ্রকীর্ণৈশ্চ কাঞ্চনৈঃ। ররাজ স্ত্ৰুশ্চ  
 ভূমিঃ শান্তার্চিভিরিবানলৈঃ ॥ ৬০ ॥ বিপ্রবিদ্ধৈঃ কলাপৈশ্চ পতিতৈশ্চ শরা-  
 সনৈঃ। বিপ্রকীর্ণৈঃ শরৈশ্চৈব রুক্মপুটৈঃ সমস্ততঃ ॥ ৬১ ॥ রথৈশ্চ সর্ষতো ভগ্নৈঃ  
 কিঙ্কিনীজালভূষিতৈঃ। বাজিভিশ্চ হতৈর্বাটৈঃ স্তস্তজিহ্বৈঃ সশোণিতৈঃ ॥ ৬২ ॥

অনুকর্ষেঃ পতাকাভিরূপাসঙ্কৈর্ধ্বজৈরপি । প্রবীরাণাং মহাশত্ৰুর্বিপ্রকীর্ণৈশ্চ  
 পাণ্ডুরৈঃ ॥ ৬৩ ॥ সুসুহৃৎশ্চ মাতঙ্গৈঃ শযানৈর্বিবভৌ মহী । নানাকটৈপল-  
 ক্ষারৈঃ প্রমদেবাত্যলকৃতা ॥ ৬৪ ॥ দন্তিভিশ্চাপরৈস্তত্র সপ্রাসৈগাঢবেদনৈঃ ।  
 করৈঃ শব্দং বিমুঞ্চন্তিঃ শীৎকারঞ্চ মুহুমুহুঃ ॥ ৬৫ ॥ বিবভৌ তদ্রণস্থানং স্যন্দমানৈ-  
 রিবাচলৈঃ । নানারাগৈঃ কয়লৈশ্চ পরিস্তোমৈশ্চ দন্তিনাম্ ॥ ৬৬ ॥ বৈদূর্য্য-  
 মণিদট্টৈশ্চ পতিতৈরকুশৈঃ শুভৈঃ । ঘণ্টাভিশ্চ গজেন্দ্রাণাং পতিতাভিঃ সম-  
 স্ততঃ ॥ ৬৭ ॥ বিপাটিতবিচিত্রাভিঃ কুথাভিরকুশৈস্তথা । ঐথবেযৈশ্চিত্রকটৈশ্চ  
 রুক্মকক্ষাভিরেব চ ॥ ৬৮ ॥ যন্তৈশ্চ বহুধা ছিন্নৈস্তোমরৈশ্চাপি কাঞ্চনৈঃ । অশ্বা-  
 নাং রেণুকপিলৈরুক্মচ্ছিন্নৈরুশ্চদৈঃ ॥ ৬৯ ॥ সাদিনাঞ্চ ভুজৈশ্চিন্নৈঃ পতিতৈঃ  
 সাক্ষদৈস্তথা । প্রাসৈশ্চ বিমলৈস্তীক্ষ্ণৈর্মিমালাভিস্তথর্ষিভিঃ ॥ ৭০ ॥ উকণ্ঠৈশ্চ তথা  
 চিত্রৈর্বিপ্রবিক্লেস্ততস্ততঃ । বিচিত্রৈর্বাণবৈশ্চ জাতকপপরিষ্কৃতৈঃ ॥ ৭১ ॥ অগ্নাস্তর-  
 পরিস্তোমৈ রাক্ষবৈর্মৃদিতৈস্তথা । নরেন্দ্রচূডামণিভির্বিচিত্রৈশ্চ মহাধনৈঃ ॥ ৭২ ॥  
 ছত্রৈস্তথাপবিদ্বৈশ্চ চামরব্যজনৈরপি । পদ্মেন্দ্রদ্যুতিভিশ্চৈব বদনৈশ্চারুকুণ্ড-  
 লৈঃ ॥ ৭৩ ॥ কুপ্তশ্মশ্রুভিরত্যর্থং বীরাণাং সমলকৃতৈঃ । অপবিদ্বৈশ্চ মহারাজ  
 স্তবর্ণোজ্জ্বলকুণ্ডলৈঃ । গ্রহনক্ষত্রশবলা দেয়োরিবাসীদমুন্ধরা ॥ ৭৪ ॥ এবনেভে  
 মহাসেনে মৃদিতে তত্র ভারত । পরস্পরং সমাসাদ্য তব তেষাঞ্চ সংযুগে ॥ ৭৫ ॥  
 তেষু শ্রান্তেষু ভগ্নেষু মৃদিতেষু চ ভারত । রাত্রিঃ সমভবত্তত্র নাপশ্যাম ততো  
 রণম্ ॥ ৭৬ ॥ ততোহবহারং সৈন্যানাং প্রচক্রুঃ কুরুপাণ্ডবাঃ । যোরে নিশামুখে  
 রৌদ্রে বর্তমানে মহাভবে ॥ ৭৭ ॥ অবহারং ততঃ কুত্বা সহিতাঃ কুরুপাণ্ডবাঃ ।  
 ন্যাবিশস্ত যথাকালং গত্বা স্বশিবিরং তদা ॥ ৭৮ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বাণি ভীষ্মবধপর্বাণি অষ্টমদিবসযুদ্ধাবহারে  
 ত্রিনবতিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৯৩ ॥



সঞ্জয় উবাচ । ততো দূর্য্যোধনো রাজা শকুনিশ্চাপি সৌবলঃ । দূঃশাসনশ্চ  
 পুলস্তে সূতপুলশ্চ দুর্জয়ঃ ॥ ১ ॥ সমাগম্য মহারাজ মন্ত্রং চক্রুর্বিবাক্তম্ । কথং  
 পাণ্ডুসুতাঃ সংখ্যে জেতব্যঃ সগণা ইতি ॥ ২ ॥ ততো দূর্য্যোধনো রাজা সর্বাং-  
 স্তানাহ মন্ত্রিণঃ । সূতপুলং সমাভাষ্য সৌবলঞ্চ মহাবলম্ ॥ ৩ ॥ দ্রোণো ভীষ্মঃ  
 রূপঃ শল্যঃ সৌমদন্তিশ্চ সংযুগে । ন পার্থান্ প্রতিবাধন্তে ন জানে তচ্চ কার-  
 ণম্ ॥ ৪ ॥ অবধ্যমানাস্তে চাপি ক্ষয়যন্তি বলং মম । সোহস্মি ক্ষীণবলঃ কণ

ক্ষীণশস্ত্রশচ সংযুগে ॥ ৫ ॥ নিকৃতঃ পাণ্ডবৈঃ শঠৈরবধৈর্দৈবতৈরপি । মোহহং  
 সংশয়মাপন্নঃ প্রহরিষ্যে কথং রণে ॥ ৬ ॥ কর্ণ উবাচ । মা শুচো ভরতশ্রেষ্ঠ করি-  
 ষ্যেহহং প্রিযং তব । ভীষ্মঃ শান্তনবস্তূর্ণমপযাতু মহারণাৎ ॥ ৭ ॥ নিবৃত্তে যুধি  
 গাঙ্গেযে ন্যস্তশস্ত্রে চ ভারত । অহং পার্থান্ হনিষ্যামি সহিতান্ সর্বসোমকৈঃ ।  
 পশ্যতো যুধি ভীষ্মস্য শপে সত্যেন তে নৃপ ॥ ৮ ॥ পাণ্ডবেষু দযাং নিত্যং স হি  
 ভীষ্মঃ করোতি বৈ । অশক্রশচ রণে ভীষ্মো জেতুমেতান্মহারথান্ ॥ ৯ ॥ অভি-  
 মানী রণে ভীষ্মো নিত্যঞ্চপি রণপ্রিযঃ । স কথং পাণ্ডবান্ যুদ্ধে জেষ্যতে তাত  
 সঙ্গতান্ ॥ ১০ ॥ স হুং শীঘ্রমিতো গচ্ছ ভীষ্মস্য শিবিরং প্রতি । অনুমান্য  
 গুরুং বৃদ্ধং শস্ত্রং ন্যাসয ভারত ॥ ১১ ॥ ন্যস্তশস্ত্রে ততো ভীষ্মে নিহতান্ পশ্য  
 পাণ্ডবান্ । মযৈকেন রণে রাজন্ সমুহদাগবান্ধবান্ ॥ ১২ ॥ এবমুক্তস্ত কর্ণেন  
 পুল্লো দুর্বোধনস্তব । অত্রবীদ্ভ্রাতরং তত্র দুঃশাসনমিদং বচঃ ॥ ১৩ ॥ অনুযাত্রং  
 যথা সর্বং সঙ্জীভবতি সর্বশঃ । দুঃশাসন তথা ক্ষিপ্রং সর্বনেবোপপাদয ॥ ১৪ ॥  
 এবমুক্ত্বা ততো রাজন্ কর্ণমাহ জনেশ্বরঃ । অনুমান্য রণে ভীষ্মমেযোহহং দ্বিপ-  
 দাং বরং ॥ ১৫ ॥ আগমিষ্যে ততঃ ক্ষিপ্রং হুংসকাশমরিন্দম । অপক্রান্তে  
 ততো ভীষ্মে প্রহরিষ্যামি সংযুগে ॥ ১৬ ॥ নিষ্পপাত ততস্তূর্ণং পুল্লস্তব বিশা-  
 ন্পতে । সহিতো ভ্রাতৃভিত্তৈস্তেস্ত দেবৈরিব শতক্রতুঃ ॥ ১৭ ॥ ততস্তং নৃপশার্দূলং  
 শার্দূলসমবিক্রমম্ । আরোহযদ্ধবং তূর্ণং ভ্রাতা দুঃশাসনসুদা ॥ ১৮ ॥ অঙ্গদৌ  
 বন্ধনুকুটৌ হস্তাভরণবান্নৃপ । ধাৰ্ত্তরাষ্ট্রৌ মহারাজ বিবভৌ স পথি ব্রজন্ ॥ ১৯ ॥  
 ভণ্ডীপুষ্পনিকাশেম তপনৌঘনিভেন চ । অনুলিপ্তঃ পরাক্ৰেয়ান চন্দনেন সুগ-  
 ক্শিনা ॥ ২০ ॥ অরজোঃস্বরসমীতঃ সিংহখেলগতিনৃপ । শুশুভে বিনলার্চিষ্মা-  
 ম্নভসীব দিবাকরঃ ॥ ২১ ॥ তং প্রযান্তং নরব্যাগ্রং ভীষ্মস্য শিবিরং প্রতি । অনু-  
 জগ্মমহেষ্বাসাঃ সর্বলোকস্য ধ্বনিঃ । ভ্রাতরশচ মহেষ্বাসাস্ত্রিদশা ইব বাসবন্ ॥ ২২ ॥  
 হ্যানন্যে সমারুহ গজানন্যে চ ভারত । রথানন্যে নরশ্রেষ্ঠং পরিবক্রঃ সমন্ত-  
 তঃ ॥ ২৩ ॥ আভ্রশস্ত্রাশচ মুহূদো রক্ষণার্থং মহীপতেঃ । প্রাদূর্বভূবুঃ সহিতাঃ  
 শক্রস্যেবামরা দিবি ॥ ২৪ ॥ সংপূজ্যমানঃ কুরুভিঃ কোরবাণাং মহাবলঃ । প্রয-  
 যৌ সদনং রাজা গাঙ্গেযস্য যশস্বিনঃ ॥ ২৫ ॥ অস্বীয়মানঃ সততং সোদরৈঃ  
 পরিবারিতঃ । দক্ষিণং দক্ষিণঃ কালে সংবৃত্য স্বভুজস্তদা । হস্তিহস্তোপমং  
 শৈক্যং সর্বশত্রুনিবর্হণম্ ॥ ২৬ ॥ প্রগৃহ্নন্নঞ্জলীন্ নৃণামুদ্যতান্ সর্বতো দিশঃ ।  
 শুক্রবে মধুরা বাচো নানাদেশনিবাসিনাম্ ॥ ২৭ ॥ সংস্তুষমানঃ স্মৃতৈশ্চ মা-

गणेशश्च महाशशाः । पूजयानश्च तान् सर्वान् सर्वलोकेश्वरेश्वरः ॥ २८ ॥ प्र-  
दीपैः काण्ठनैस्तत्र गन्धतैलावसेचितैः । परिवक्रन्महात्मानः प्रञ्जलद्विः सम-  
वृत्तः ॥ २९ ॥ स तैः परिवृतो राजा प्रदीपैः काण्ठनैर्ज्वलन् । शुशुभे चन्द्रमा-  
युक्ते दीपैश्चरिव महाग्रहैः ॥ ३० ॥ काण्ठनोष्णीषिणस्तत्र वेदत्रयवरपाणयः ।  
प्रोत्सारयन्तुः शनकैस्तुं जनं सर्वतो दिशम् ॥ ३१ ॥ संप्राप्य तु ततो राजा  
भाग्यस्य मदनं शुभम् । अवतीर्य ह्याच्छापि भीष्मं प्राप्य जनेश्वरः ॥ ३२ ॥  
अभिवाद्य ततो भीष्मं निषण्णः परमासने । काण्ठने सर्वतोभद्रे स्पर्द्ध्यास्तुरध-  
सं वृते । उवाच प्राञ्जलिर्भीष्मं वाष्पकण्ठोऽश्रुलोचनः ॥ ३३ ॥ द्वां वयं हि समा-  
श्रिता संयुगे शत्रुमदन । उत्सहेम रणे जेतुं सैन्यानि सुरासुरान् । किमु  
पाण्डुस्तान् वीरान् समुहान्गवाम्कवान् ॥ ३४ ॥ तस्मादर्हसि गाङ्गेय रूपां कर्तुं  
मयि प्रभो । जहि पाण्डुस्तान् वीरान् महेन्द्र इव दानवान् ॥ ३५ ॥ अहं सर्वान्  
महाराज निहनिष्यामि सोमकान् । पाण्डालान् कैकयैः सार्द्धं ककषांश्चेति  
भारत ॥ ३६ ॥ हृदयः सत्यमेवास्तु जहि पार्थान् समागतान् । सोमकांश्च महे-  
यमान सत्यवाह्वव भारत ॥ ३७ ॥ दयया यदि वा राजन् द्वेष्यभावान्मम प्रभो ।  
मन्दभाग्यतया वापि मम रक्षसि पाण्डवान् ॥ ३८ ॥ अनुजानीहि समरे कर्णमाहव-  
शोभिनम् । स जेष्यति रणे पार्थान् समुहज्जनवाम्कवान् ॥ ३९ ॥ स एवमुक्त्वा  
जपतिः पुत्रो दुर्योधनस्तव । नोवाच वचनं किञ्चिद्धीम्नं सत्यपराक्रमम ॥ ४० ॥

इति भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मदुर्योधनसंवादे

चतुर्नवतितमोऽध्यायः ॥ २४ ॥



सञ्जय उवाच । वाक्छलैस्तव पुत्रेण सोऽतिविद्वो महामनाः । दग्धेन मह-  
ताविष्टो नोवाचाप्रियमर्षि ॥ १ ॥ स ध्यात्वा सृष्टिरः कालं दुःखरौषमम्वितः ।  
भ्रमनानेः यथा नागः प्रतुमो वाक्छलाक्या ॥ २ ॥ उद्धृत्य चक्रुषी कोपाग्निदह-  
तिव भारत । सदेवासुरगन्धर्वं लोकं लोकविदाहरः ॥ ३ ॥ अब्रवीद्वर पु-  
त्रस्तु सामपूर्वनिदं वचः । किं ह्यं दुर्योधनैवमां वाक्छलैरपक्रुन्तसि ॥ ४ ॥  
घटनानं यथाशक्ति कुर्याणश्च तव प्रियम् । जह्मनां समरे प्राणांस्तव वै प्रिय-  
काम्यया ॥ ५ ॥ यदा तु पाण्डवः शूरः खाण्डवेऽग्निमतर्षयत् । पराजित्य रणे शत्रुं  
पर्याप्तुं तन्निदर्शनम् ॥ ६ ॥ यदा च द्वां महाबाहो गन्धर्वैर्जितमोजसा । अमो-  
चयत् पाण्डुस्तः पर्याप्तुं तन्निदर्शनम् ॥ ७ ॥ द्रवमाणेषु शूरेषु सोदरेषु तव

প্রভো । সূতপুত্রে চ রাধেযে পর্য্যাপ্তং তন্নিদর্শনম্ ॥ ৮ ॥ যচ্চ নঃ সহিতান্ সর্বান  
 বিরাটনগরে তদা । এক এব সমুদ্বাতঃ পর্য্যাপ্তং তন্নিদর্শনম্ ॥ ৯ ॥ দ্রোণঞ্চ  
 যুধি সংরক্তং মাঞ্চ নিজ্জিত্য সংযুগে । বাসাংসি স সমাদত্ত পর্য্যাপ্তং তন্নিদ-  
 র্শনম্ ॥ ১০ ॥ তথা দ্রৌণিং মহেধাসং শারদ্বতমথাপি চ । গোত্রহে জিতবান্  
 পূর্বং পর্য্যাপ্তং তন্নিদর্শনং ॥ ১১ ॥ বিজিত্য চ যদা কর্ণং সদা পুরুষমানিনম্ । উদ্ভ-  
 রায়ৈ দদৌ বস্ত্রং পর্য্যাপ্তং তন্নিদর্শনম্ ॥ ১২ ॥ নিবাতকবচান্ যুদ্ধে বাসবেনাপি  
 দুর্জয়ান্ । জিতবান্ সমরে পার্থঃ পর্য্যাপ্তং তন্নিদর্শনম্ ॥ ১৩ ॥ যস্য গোপ্তা  
 জগদোপ্তা শঙ্খচক্রগদাধরঃ । বাসুদেবো মহাশক্তিঃ সৃষ্টিসংহারকারকঃ ॥ ১৪ ॥  
 সর্বেশ্বরো দেবদেবঃ পরমাত্মা সনাতনঃ । উক্তো হি বহুশো রাজন্ নারদাদৈর্দ্যমহ-  
 ষিভিঃ ॥ ১৫ ॥ কো হি শক্তো রণে জেতুং পাণ্ডবং রতমন্তদা । হস্তমোহান জা-  
 নীষে বাচ্যাবাচ্যং সুযোধন ॥ ১৬ ॥ মৃমূর্ষুর্হি নরঃ সর্বান বৃক্ষান্ পশ্যতি কাঞ্চ-  
 নান্ । তথা হুমপি গান্ধারে বিপরীতানি পশ্যসি ॥ ১৭ ॥ স্বযং বৈরং মহৎ  
 কৃৎস্না পাণ্ডবৈঃ সহ সৃঞ্জয়ৈঃ । যুধাস্ত তানদ্য রণে পশ্যামঃ পুরুষো ভব ॥ ১৮ ॥  
 অহস্ত সোমকান্ সর্বান পাঞ্চালাংশ্চ সমাগতান্ । নিহনিষ্যে নরব্যায় বর্জযিহ্না  
 শিখণ্ডিনম্ ॥ ১৯ ॥ তৈবাহং নিহন্তঃ সংখ্যে গমিষ্যে যমসাদনম্ । তান্ বা নি-  
 হত্য সংগ্রামে প্রীতিং দাস্যাম্যহং তব ॥ ২০ ॥ পৃথং হি স্ত্রী সমুৎপন্না শিখণ্ডী  
 রাজবেশ্মনি । বরদানাৎ পুমান্ জাতঃ সৈষা বৈ স্ত্রী শিখণ্ডিনী ॥ ২১ ॥ তনহং  
 ন হনিষ্যামি প্রাণত্যাগেহপি ভারত । যাসৌ প্রাঙ্কিম্বিতা ধাত্রা সৈষা বৈ স্ত্রী  
 শিখণ্ডিনী ॥ ২২ ॥ সুখং স্বপিহি গান্ধারে শ্লোহস্মি কল্লা মহারণম্ । য জনাঃ  
 কথযিষ্যন্তি যাবৎ স্ত্যাস্যতি মেদিনী ॥ ২৩ ॥ এবমুক্তস্তব সূতো নিজ্জগাম জনে-  
 শ্বর । অভিবাদ্য গুরুং মৃদ্ধু প্রযযৌ স্বং নিবেশনম্ ॥ ২৪ ॥ আগম্য তু ততো  
 রাজা বিসৃজ্য চ মহাজনম্ । প্রবিবেশ ততস্তুর্গং ক্ষয়ং শত্রুকবক্ষরঃ ॥ ২৫ ॥ প্র-  
 বিষ্টিঃ স নিশাং তাঞ্চ গমযামাস পার্থিবঃ । প্রভাতাষাঞ্চ শরব্যং প্রাতরুথায়  
 তান্নপঃ ॥ ২৬ ॥ রাজঃ সমাজ্ঞাপযত সেনাং যোজযতেতি হ । অদ্য ক্রুদ্ধো  
 রণে ভীষ্মো নিহনিষ্যতি সোমকান্ ॥ ২৭ ॥ দুর্ব্যোধনস্য তচ্ছ্রদ্ধা রাত্রৌ বিলপিতং  
 বহু । মন্যমানঃ স তং রাজন্ প্রত্যাদেশমিবাগ্ননঃ ॥ ২৮ ॥ নিবেদং পরমঃ  
 গহ্না বিনিন্দ্য পরবাচ্যতাম্ । দীর্ঘং দধৌ শান্তনবো যোদ্ধুকামোহজ্জুনং  
 রণে ॥ ২৯ ॥ ইন্দ্রিতেন তু তজ্জ্জ্বায়া গান্ধেযেন বিচিস্তিতম্ । দুর্ব্যোধনো মহারাজ  
 দুঃশাসনমচোদযৎ ॥ ৩০ ॥ দুঃশাসন রথাস্তূর্গং যুজ্যন্তাং ভীষ্মরক্ষিণঃ । দ্বাবি-

शतिमनीकानि सर्वाण्येवाभिचोदय ॥ ७१ ॥ इदं हि समन्नुप्राप्तं वर्षपुगाभि-  
 चिन्तितम् । पाण्डवानां ससैन्यानां वधो राज्यस्य चागमः ॥ ७२ ॥ तत्र कार्य-  
 तमं मन्ये भीष्मस्यैवाभिरक्षणम् । स नो षुषुः सहायः स्याद्वन्यां पार्थांश्च सं-  
 युगे ॥ ७३ ॥ अब्रवीन्नि विशुक्तात्मा नाहं हन्यां शिखण्डिनम् । स्त्रीपूर्वको हसौ  
 राज्ञं सुस्माद्धर्जेया मया रणे ॥ ७४ ॥ लोकसुन्देद. यदहं पितुः प्रियचिकीर्षया ।  
 राज्यं स्फीतं महाबाहो स्त्रियश्च त्यक्तवान् पुरा ॥ ७५ ॥ नैव चाहं स्त्रियं  
 जातु न स्त्रीपूर्वं कथञ्चन । हन्यां युधि नरश्रेष्ठ सत्यमेतद्वीमि ते ॥ ७६ ॥ अयं  
 स्त्रीपूर्वको राजन् शिखण्डी यदि ते श्रुतः । उद्दोषेण कथितं यत्तत्रथा जाता  
 शिखण्डी ॥ ७७ ॥ कन्या भूया पुमान् जातः स च मां योधयिष्यति । तस्याहं  
 प्रमुखे वाणम् मुखेयं कथञ्चन ॥ ७८ ॥ युद्धे हि क्लिष्यांस्तुत पाण्डवानां जयै-  
 षिणः । सर्वानन्यान् हनिष्यामि संप्राप्तान् वाणगोचरम् ॥ ७९ ॥ एवं मां भरत-  
 श्रेष्ठ गाङ्गेयः प्राह शास्त्रविं । तत्र सर्वाङ्गानां मन्ये गाङ्गेयस्यैव पालनम् ॥ ८० ॥  
 अरक्ष्यमाणं हि वृको हन्यां सिंहं महाबने । मा वृकेणैव गाङ्गेयं यातयेम  
 शिखण्डी ॥ ८१ ॥ मातुलः शकुनिः शल्यः रूपो द्रोणो विविंशतिः । यत्ना रक्षन्त  
 गाङ्गेयं तस्मिन् षुषुषु ध्रुवो जयः ॥ ८२ ॥ एतच्छ्रुत्वा तु ते सर्वे दुर्योधनवचस्तदा ।  
 सद्यतो रथवंशेन गाङ्गेयं पर्यवारयन् ॥ ८३ ॥ पुल्लोश्च तव गाङ्गेयं परि-  
 वार्य्य ययुस्मदा । कम्पयन्तो भुवन् द्याक्ष्ण क्षोभयन्तश्च पाण्डवान् ॥ ८४ ॥ ते रथैश्च  
 सुसंरक्षैर्दन्तिभिश्च महारथाः । परिवार्य्य रणे भीष्मं दंशिताः समवस्थिताः ॥ ८५ ॥  
 यथा देवासुरे युद्धे त्रिदशा वज्रधारिणम् । सर्वे ते स्म व्यतिष्ठन्त रक्षन्तस्तं महा-  
 रथम् ॥ ८६ ॥ सव्यं चक्रं युधामन्युरूत्तमोजाश्च दक्षिणम् । गोपुत्रावर्जुनस्यैता-  
 वज्जूनोऽपि शिखण्डिनः ॥ ८७ ॥ रक्ष्यमाणः स पार्थेन तथाम्नातिर्विबर्जितम् । यथा  
 भीष्मं न नो हन्यादुःशासन तथा कुरु ॥ ८८ ॥ ब्रातुस्तद्वचनं श्रुत्वा पुल्लो दुःशा-  
 सनस्तव । भीष्मं प्रमुखतः कृत्वा प्रयसौ सह सैनया ॥ ८९ ॥ भीष्मन्त रथवंशेन  
 दृष्ट्वा समतिसंवृतम् । अर्जुनो रथिनां श्रेष्ठो धृष्टद्युम्नमुवाच ह ॥ ९० ॥ शिख-  
 ण्डिनं नरव्याघ्रं भीष्मस्य प्रमुखे नृप । स्थापयन्नाद्य पाण्डाल्य तस्य गोपुत्राहमि-  
 त्तुत ॥ ९१ ॥

इति भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि दुःशासनदुर्योधनसंबादे

पञ्चनवतितमोऽध्यायः ॥ २५ ॥



সঞ্জয় উবাচ । ততঃ শান্তনবো ভীষ্মো নির্যযৌ সহ সেনযা । ব্যহৃষ্যাব্যহৃতমহৎ  
 সর্বতোভদ্রমাত্মনা ॥ ১ ॥ রূপশ্চ কৃতবর্ষ্মা চ শৈব্যশ্চৈব মহারথঃ । শকুনিঃ  
 সৈন্ধবশ্চৈব কাশ্যোজশ্চ সুদক্ষিণঃ ॥ ২ ॥ ভীষ্মেণ সহিতাঃ সর্বে পুত্রৈশ্চ তব ভা-  
 রত । অগ্রতঃ সর্বসৈন্যান্যং ব্যহস্য প্রমুখে স্থিতাঃ ॥ ৩ ॥ দ্রোণো ভুরিশ্রবাঃ  
 শল্যো ভগ্নদত্তশ্চ মারিষ । দক্ষিণং পক্ষমাশ্রিত্য স্থিতা ব্যহস্য দংশিতাঃ ॥ ৪ ॥  
 অশ্বথামা সোমদত্তশ্চাবস্ত্যো চ মহারথৌ । মহত্যা সেনযা যুক্তা বামং পক্ষমপাল-  
 যন্ ॥ ৫ ॥ দুর্যোধনো মহারাজ ত্রিগর্ভৈঃ সর্বতো বৃতঃ । ব্যহ্মধ্যে স্থিতো রাজন্  
 পাণ্ডবান্ প্রতি ভারত ॥ ৬ ॥ অলম্বুষো রথশ্রেষ্ঠঃ শ্রুতায়ুশ্চ মহারথঃ । পৃষ্ঠতঃ  
 সর্বসৈন্যান্যং স্থিতো ব্যহস্য দংশিতো ॥ ৭ ॥ এবঞ্চ তত্তদা ব্যহং কৃৎস্না ভারত  
 তাবকাঃ । সন্নদ্ধাঃ সমদৃশ্যন্তু প্রতপন্তু ইবাগ্নয়ঃ ॥ ৮ ॥ ততো যুধিষ্ঠিরো রাজা  
 ভীমসেনশ্চ পাণ্ডবঃ । নকুলঃ সহদেবশ্চ মাদ্রীপুত্রাবুভাবপি ॥ ৯ ॥ অগ্রতঃ সর্ব-  
 সৈন্যান্যং স্থিতা ব্যহস্য দংশিতাঃ । ধৃষ্টদ্যুম্নো বিরাটশ্চ সাত্যকিশ্চ মহার-  
 থঃ ॥ ১০ ॥ স্থিতাঃ সৈন্যেন মহতা পরানীকবিনাশনাঃ । শিখণ্ডী বিজয়শ্চৈব  
 রাক্ষসশ্চ ঘটোৎকচঃ ॥ ১১ ॥ চেকিতানো মহাবাহুঃ কুন্তিভোজশ্চ বীর্যবান্ ।  
 স্থিতা রণে মহারাজ মহত্যা সেনযা বৃত্তাঃ ॥ ১২ ॥ অভিমন্যুর্মহেশ্বাসো দ্রুপদশ্চ  
 মহাবলঃ । কৈকেয়া ভ্রাতরশ্চৈব স্থিতা যুদ্ধায় দংশিতাঃ ॥ ১৩ ॥ এবং তেহপি মহা-  
 ব্যহং প্রতিব্যূহ্য সুদুর্জয়ম্ । পাণ্ডবাঃ সমরে শূরাঃ স্থিতা যুদ্ধায় দংশিতাঃ ॥ ১৪ ॥  
 তাবকাস্তু রণে যতাঃ সহসেনা নরাধিপাঃ । অভ্যুদ্যম্যু রণে পার্থান্ ভীষ্মং কৃৎস্নাগ্রতো  
 নৃপ ॥ ১৫ ॥ তথৈব পাণ্ডবা রাজন্ ভীমসেনপুরোগমাঃ । ভীষ্মং সমভ্যযুঃ সর্বে  
 সংগ্রামে বিজযৈষিণঃ ॥ ১৬ ॥ ক্ষেভাঃ কিলকিলাশব্দাঃ ক্রকটা গোবিষাণিকাঃ ।  
 তেরীমৃদঙ্গপণবান্ নাদযন্তশ্চ কুঞ্জরান্ ॥ ১৭ ॥ পাণ্ডবা অভ্যবর্তন্তু নদন্তো  
 ভৈরবানুবান্ । তেরীমৃদঙ্গশঙ্খানাং দুন্দুভীনাঞ্চ নিস্বনৈঃ ॥ ১৮ ॥ উৎক্রুষ্ঠসি-  
 হনাদৈশ্চ বল্গিতৈশ্চ পৃথগ্বিধৈঃ । বযং প্রতিনদন্তস্তানগচ্ছাম ত্বরাম্বিতাঃ ॥ ১৯ ॥  
 সহসৈবাভিসংক্রুদ্ধাস্তদাসীত্তুমুলং মহৎ । ততোহন্যোন্যং প্রধাবন্তঃ সংপ্রহারং  
 প্রচক্রিরে ॥ ২০ ॥ ততঃ শব্দেন মহতা প্রচকম্পে বসুম্ভরা । পক্ষিণশ্চ মহাঘোরং  
 ব্যাহরন্তো বিবভ্রমুঃ ॥ ২১ ॥ সপ্রভশ্চোদিতঃ সূর্য্যো নিস্পৃভঃ সমপদ্যত । ববুশ্চ  
 বাতাস্তমুলাঃ শংসন্তঃ সুমহদ্ভয়ম্ ॥ ২২ ॥ ঘোরাশ্চ ঘোরনির্হ্বাদাঃ শিবাস্তত্র  
 ববাশিরে । বেদযন্তো মহারাজ মহদ্বৈশসমাগতম্ ॥ ২৩ ॥ দিশঃ প্রজ্বলিতা  
 রাজন্ পাংশুবর্ষণং পপাত চ । রুধিরেণ সমুগ্নিশ্রমস্বিবর্ষন্তথৈব চ ॥ ২৪ ॥ রুদ-



तां वाहनानां नेत्रेभ्यः प्रापतज्जलम् । सुसुबुधं शक्रमूत्रं प्रध्यायन्तो विशा-  
 म्पते ॥ २५ ॥ अस्तुर्हिता महानादाः क्षयन्ते भरतर्षभ । रक्तसां पुरुषादानां  
 नदतां भैरवानुवान् ॥ २६ ॥ संपतन्तश्च दृश्यन्ते गोमायुबलवायसाः । श्वानश्च  
 विविधैर्नादैर्वाशस्तुत्रं मारिष ॥ २७ ॥ झलिताश्च महोक्ता वै समाहृत्य दिवाक-  
 रम् । निपेतुः सहसा भूमौ वेदयन्त्या महद्वयम् ॥ २८ ॥ महान्तानीकानि महा-  
 समुच्छ्रये ततस्तयोः पाण्डवधार्तराक्षसयोः । चकम्पिरे शङ्खमृदङ्गनिश्चनैः प्रक-  
 म्पितानीव वनानि वायुना ॥ २९ ॥ नरेन्द्रनागाश्वसमकुलानामभ्यायतीनामशि-  
 वे मुहूर्ते । वडूव घोषस्तुलश्चमूनां वातोक्तानामिव सागराणाम् ॥ ३० ॥

इति तीर्थवधपर्वणि तीर्थवधपर्वणि उपपातदर्शने षष्ठ्यवधि-

तमोऽध्यायः ॥ २७ ॥



सञ्जय उवाच । अभिमन्यु रथोदारः पिशङ्कसुरगोत्रमैः । अतिदुद्राव तेज-  
 श्ची दुर्योधनबलं महत् । विकिरञ्जुरवर्षाणि वारिधारा इवायुदः ॥ १ ॥ न शेकुः  
 समरे योद्धुं सौभद्रमरिसूदनम् । शस्त्रोघिनं गार्हमानं सेनासागरमक्षयम् ।  
 निवारयितुमप्यार्जो हृदीयाः कुरूनन्दन ॥ २ ॥ तेन मुक्ता रणे राजन् शराः शत्रु-  
 निवर्हणाः । क्लिष्याननयञ्जुरान् प्रेतराजनिवेशनम् ॥ ३ ॥ यमदण्डोपमान्  
 घोरान् झलिताशीविषोपमान् । सौभद्रः समरे क्रुद्धः प्रेषयामास शायकान् ॥ ४ ॥  
 सरथान् रथिनस्तुर्गं ह्यांश्चैव समादिनः । गजारोहांश्च सगजान्दारयामास  
 फाल्गुनिः ॥ ५ ॥ तस्य तं कूर्बतः कर्म महत् संख्येद्भुतं नृपः । पूजयाङ्किक्रिरे  
 हृष्टाः प्रशशंसुश्च फाल्गुनिम् ॥ ६ ॥ तान्यनीकानि सौभद्रो द्रावयामास भारत ।  
 तूलराशिमिवाकाशे मारुतः सर्वतो दिशम् ॥ ७ ॥ तेन विद्राव्यमाणानि तव सै-  
 न्यानि भारत । त्रातारं नाध्यगच्छन्त पक्षे मग्ना इव द्विपाः ॥ ८ ॥ विद्राव्य सर्व-  
 सैन्यानि तावकानि नरोत्तम । अभिमन्युः स्थितो राजन् विधूमोऽग्निरिव ज्वा-  
 लन् ॥ ९ ॥ न चैनं तावका राजन् विषेहुररिघातिनम् । प्रदीपुं पावकं यद्दत्तं  
 पतङ्गाः कालचोदिताः ॥ १० ॥ प्रहरन् सर्वशत्रुभ्याः पाण्डवानां महारथः । अदृ-  
 श्यत महेश्वासः सबज्जु इव वासवः ॥ ११ ॥ हेमपृष्ठं धनुश्चास्य ददृशे विचरदिशः ।  
 तोषदेषु यथा राजन्नाजमाना शतहृदा ॥ १२ ॥ शराश्च निशिताः पीता निश्चरन्ति  
 स्म संयुगे । वनां फुल्लज्जमाद्राजन् द्रमराणामिव व्रजाः ॥ १३ ॥ तथैव चरत-  
 स्तस्य सौभद्रस्य महात्मनः । रथेन काङ्क्षनाङ्गेन ददृशुर्नास्तुरं जनाः ॥ १४ ॥

মোহযিত্বা রূপং দ্রোণং দ্রৌণিঞ্চ সবৃহদ্বলম্ । সৈন্ধবঞ্চ মহেষাসো ব্যচরল্লঘু সূষ্ঠু  
 চ ॥ ১৫ ॥ মণ্ডলীকৃতমেবাস্য ধনুঃ পশ্যাম মারিষ । সূর্য্যমণ্ডলসঙ্কাশং দহতস্তব  
 বাহিনীম্ ॥ ১৬ ॥ তং দৃষ্ট্বা ক্লিষ্টাঃ শূরাঃ প্রপতস্তং তরস্বিনম্ । দ্বিফাল্লনমিমং  
 লোকং মেনিরে তস্য কৰ্ম্মভিঃ ॥ ১৭ ॥ তেনাদ্বিতা মহারাজ ভারতী সা মহাচমুঃ ।  
 ব্যভ্রুমত্তত্র তত্রৈব যোষিষ্মদবশাদিব ॥ ১৮ ॥ ভ্রামযিত্বা মহাসৈন্যং কল্পযিত্বা মহা-  
 রথান্ । নন্দযামাস সূহৃদো মযং জিহ্নেব বাসবঃ ॥ ১৯ ॥ তেন বিদ্রাব্যমাণানি  
 তব সৈন্যানি সংযুগে । চক্রুরাৰ্ভুস্বরং ঘোরং পর্জন্যনিনদোপমম্ ॥ ২০ ॥ তং  
 শ্রুত্বা নিনদং ঘোরং তস্য সৈন্যস্য ভারত । মারুতোদ্ধতবেগস্য সাগরস্যেব পর্ব-  
 গি । দুর্য্যোধনস্তদা রাজা আৰ্য্যশৃঙ্গিমভাষত ॥ ২১ ॥ এষ কার্কির্মহাবাহো দ্বিতীয়  
 ইব ফাল্লনঃ । চমুং দ্রাবযতে ক্রোধাদ্বিত্রো দেবচমুমিব ॥ ২২ ॥ তস্য চান্যন্ন  
 পশ্যামি সংযুগে ভেষজং মহৎ । ঋতে ত্বাং রাক্ষসশ্রেষ্ঠ সর্ববিদ্যাসু পারগম্ ॥ ২৩ ॥  
 স গহ্বা ত্বরিতং বীরং জহি সৌভদ্রমাহবে । বযং পার্থং হনিষ্যামো ভীষ্মদ্রোণ-  
 পুরোগমাঃ ॥ ২৪ ॥ স এবমুক্তো বলবান্নাক্ষসেন্দ্রঃ প্রতাপবান্ । প্রযযৌ সমরে  
 তুর্গং তব পুত্রস্য শাসনাৎ । নর্দমানো মহানাৎ প্রাবৃষীব বলাহকঃ ॥ ২৫ ॥  
 তস্য শকেন মহতা পাণ্ডবানাং বলং মহৎ । প্রাচলৎ সর্বতো রাজন্ বাতোদ্ধূত  
 ইবার্ণবঃ ॥ ২৬ ॥ বহবশ্চ মহারাজ তস্য নাদেন ভীষিতাঃ । প্রিয়ান্ প্রাণান্  
 পরিত্যজ্য নিপেতুর্ধরণীতলে ॥ ২৭ ॥ কার্কিংশ্চাপি মুদা যুক্তঃ প্রগৃহ সশরং ধনুঃ ।  
 নৃত্যম্ভিব রথোপস্থে তদ্রক্ষঃ সমুপাদ্রবৎ ॥ ২৮ ॥ ততঃ স রাক্ষসঃ ক্রুদ্ধঃ সংপ্রা-  
 প্যৈবাজ্জুনিং রণে । নাতিদূরে স্থিতস্তস্য দ্রাবযামাস বৈ চমুম্ ॥ ২৯ ॥ সা বধ্য-  
 মানা সমরে পাণ্ডবানাং মহাচমুঃ । প্রতু্যদ্ব্যর্থো রণে রক্ষে দেবসেনা যথা বলম্ ॥ ৩০ ॥  
 বিমর্দঃ সুমহানাসীভস্য সৈন্যস্য মারিষ । রক্ষসা ঘোররূপেণ বধ্যমানস্য সং-  
 যুগে ॥ ৩১ ॥ ততঃ শরসহসৈস্তাং পাণ্ডবানাং মহাচমুম্ । ব্যদ্রাবযদ্রণে রক্ষে  
 দর্শযৎ স্বপরাক্রমম্ ॥ ৩২ ॥ সা বধ্যমানা চ তথা পাণ্ডবানামনীকিনী । রক্ষসা  
 ঘোররূপেণ প্রদুদ্রাব রণে ভযাৎ ॥ ৩৩ ॥ তাং প্রমৃদ্য রণে সেনাং পদ্বিনীং  
 বারুণো যথা । ততোহভিদুদ্রাব রণে দ্রৌপদেযান্ মহারথান্ ॥ ৩৪ ॥ তে তু ক্রুদ্ধা  
 মহেষাসা দ্রৌপদেবাঃ প্রহারিণঃ । রাক্ষসং দুদ্রবুঃ সংখ্যে গ্রহাঃ পঞ্চ রবিং  
 যথা ॥ ৩৫ ॥ বীর্য্যবন্তিস্ততস্তৈস্ত পীড়িতো রাক্ষসোত্তমঃ । যথা যুগক্ষ্যে ঘোরে  
 চন্দ্রমাঃ পঞ্চভিগ্রহৈঃ ॥ ৩৬ ॥ প্রতিবিন্দ্যস্ততো রক্ষে বিভেদ নিশিতৈঃ শটৈঃ ।  
 সর্বপারশবৈস্তর্গমকুণ্ঠাগ্রৈর্মহাবলঃ ॥ ৩৭ ॥ স তৈর্ভিন্নতনুত্রাণঃ শুশুভে রাক্ষসো-

ভ্রমঃ । মরীচিতিরিবাকস্য সংসূতো জলদো মহান্ ॥ ৩৮ ॥ বিষক্লেঃ স শরৈ-  
 শ্চাপি তপনীয়পরিচ্ছদৈঃ । আৰ্য্যশৃঙ্গিবভৌ রাজন্ দীপ্তশৃঙ্গ ইবাচলঃ ॥ ৩৯ ॥  
 ততস্তে ভ্রাতরঃ পঞ্চ রাক্ষসেন্দ্রং মহাহবে । বিব্যাধুর্নিশিতৈর্বাণৈস্তপনীয়বিভূষি-  
 তৈঃ ॥ ৪০ ॥ স নির্ভিন্নঃ শরৈর্যোরৈর্ভূজগৈঃ কোপিতৈরিব । অলম্বুষো ভূশং রাজ-  
 মাগেন্দ্র ইব চুক্ৰোধে ॥ ৪১ ॥ সোহ্তিবিদ্ধো মহারাজ মুহূর্তমথ মারিষ । প্রবি-  
 বেশ তমো দীর্ঘং পীড়িতস্তৈর্মহারথৈঃ ॥ ৪২ ॥ প্রতিলভ্য ততঃ সংজ্ঞাং ক্রোধেন  
 দ্বিগুণীকৃতঃ । চিচ্ছেদ শায়কৈস্তেষাং ধ্বজাংশ্চৈব ধর্ম্মংষি চ ॥ ৪৩ ॥ একৈকং  
 পঞ্চভির্বাণৈরাজঘান স্ময়মিব । অলম্বুষো রথোপস্থে নৃত্যমিব মহারথঃ ॥ ৪৪ ॥  
 স্বরমাণঃ সুসংরুদ্ধো হযাংস্তেষাং মহাত্মনাম্ । জঘান রাক্ষসং ক্রুদ্ধঃ সারথীংশ্চ  
 মহাবলঃ ॥ ৪৫ ॥ বিভেদ চ সুসংরুদ্ধঃ পুনশ্চেনান্ সুসংশিতৈঃ । শরৈর্বহুবিধা-  
 কারৈঃ শতশোহংথ সহস্রশঃ ॥ ৪৬ ॥ বিরথাংশ্চ মহেষাসান্ ক্রুড়া তত্র স রাক্ষসঃ ।  
 অভিদুদ্ভাব বেগেন হস্তকামো নিশাচরঃ ॥ ৪৭ ॥ তানর্দিতানুণে তেন রাক্ষসেন  
 দুরাত্মনা । দৃষ্টাজ্জুনসুতঃ সংখ্যে রাক্ষসং সমুপাদ্রবৎ ॥ ৪৮ ॥ তযোঃ সমভব-  
 দ্বক্ষুৎ বৃত্রবাসবযোরিব । দদৃশুস্তাবকাঃ সর্বে পাণ্ডবাশ্চ মহারথাঃ ॥ ৪৯ ॥ তৌ  
 সমেতৌ মহায়ুদ্ধে ক্রোধদীপ্তৌ পরস্পরম্ । মহাবলৌ মহারাজ ক্রোধসংরক্তলো-  
 চনৌ । পরস্পরমবৈক্ষেতাং কালানলসমৌ যুধি ॥ ৫০ ॥ তযোঃ সমাগমৌ ঘোরৌ  
 বভূব কটুকোদয়ঃ । যথা দেবাসুরে যুদ্ধে শক্রশয়রযোঃ পুরা ॥ ৫১ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি নবমদিবসযুদ্ধারম্বে সপ্তনবতি-

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৯৭ ॥



ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । আজ্জুনিং সমরে শূরং বিনিম্নস্তং মহারথান্ । অলম্বুষঃ কথং  
 যুদ্ধে প্রত্যযুধ্যত সঞ্জয ॥ ১ ॥ আৰ্য্যশৃঙ্গিং কথংৈব সৌভদ্রঃ পরবীরহা । তন্নমা-  
 চক্ষুতত্ত্বেন যথাবত্তং স্ম সংযুগে ॥ ২ ॥ ধনঞ্জযশ্চ কিঞ্চক্রে মম সৈন্যেষু সংযুগে ।  
 ভীমো বা বলিনাংশ্চেষ্টৌ রাক্ষসৌ বা ঘটোৎকচঃ ॥ ৩ ॥ নকুলঃ সহদেবো বা  
 সাত্যকির্বা মহারথঃ । এতদাচক্ষুমে সত্যং কুশলো হ্যসি সঞ্জয ॥ ৪ ॥ সঞ্জয উবাচ ।  
 হস্ত তেহং প্রবক্ষ্যামি সংগ্রামং লোমহর্ষণং । যথাভূদ্ভাক্ষসেন্দ্রস্য সৌভদ্রস্য চ  
 মারিষ ॥ ৫ ॥ অজ্জুনশ্চ যথা সংখ্যে ভীমসেনশ্চ পাণ্ডবঃ । নকুলঃ সহদেবশ্চ  
 রণে চক্রুঃ পরাক্রমং ॥ ৬ ॥ তথৈব তাবকাঃ সর্বে ভীষ্মদ্রোণপুরঃসরাঃ । অস্তুতানি  
 বিচিত্রাণি চক্রুঃ কৰ্ম্মাণ্যতীতবৎ ॥ ৭ ॥ অলম্বুষস্ত সমরে অভিমমু্যং মহারথং ।

বিনদ্য সুমহানাদং তজ্জয়িত্বা মুহুমুহুঃ । অভিদূদ্রাব বেগেন তিষ্ঠ তিষ্ঠেতি চাব্র-  
 বীৎ ॥৮॥ সৌভদ্রোহপি রণে রাজন্ সিংহবদ্বিনদনমুহুঃ । আৰ্যশৃঙ্গিং মহেষাসং  
 পিতুরত্যস্তবৈরিণম্ ॥ ৯ ॥ ততঃ সগীযতুঃ সংখ্যে ত্বরিতৌ নররাক্ষসৌ । রথাভ্যাং  
 রথিনাং শ্রেষ্ঠৌ যথা বৈ দেবদানবৌ । মাঘাবী রাক্ষসশ্রেষ্ঠে । দিব্যাস্ত্রজ্ঞশ্চ ফা-  
 ল্লুনিঃ ॥ ১০ ॥ ততঃ কার্ষ্মর্মহারাজ নিশিতৈঃ শাযকৈস্ত্রিভিঃ । আৰ্যশৃঙ্গিং রণে  
 বিদ্ধ্বা পুনর্বিধ্যাথ পঞ্চভিঃ ॥ ১১ ॥ অলয়ুষোহপি সংক্রুদ্ধঃ কার্ষ্মিং নবতিরাস-  
 শুগৈঃ । হৃদি বিব্যাধ বেগেন তৌত্রৈরিব মহাদ্বিপং ॥ ১২ ॥ ততঃ শরসহস্রৈঃ  
 ক্ষিপ্রকারী নিশাচরঃ । অজ্জুনস্য সূতং সংখ্যে পীডয়ামাস ভারত ॥ ১৩ ॥ অভি-  
 মন্যুস্ততঃ ক্রুদ্ধো নবতিন্তপর্বতিঃ । বিভেদ নিশিতৈর্বাণৈ রাক্ষসেন্দ্রং মহো-  
 রসি ॥ ১৪ ॥ তে তস্য বিবিশুস্তূর্ণং কাযং নির্ভিদ্য মর্শ্মণি । স তৈর্বিভিন্নস-  
 র্বাঙ্গঃ শুশুভে রাক্ষসোত্তমঃ । পুষ্পিতৈঃ কিংশুকৈরাজন্ সংস্তীর্ণ ইব পর্বতঃ ॥ ১৫ ॥  
 স ধারষণশ্চ শরান্ হেমপুত্রান্মহাবলঃ । বিবভৌ রাক্ষসশ্রেষ্ঠঃ সজ্বাল ইব পর্ব-  
 তঃ ॥ ১৬ ॥ ততঃ ক্রুদ্ধো মহারাজ আৰ্যশৃঙ্গিরমর্ষণঃ । মহেন্দ্রসদৃশং কার্ষ্মিং ছাদ-  
 যামাস পত্রিভিঃ ॥ ১৭ ॥ তেন তে বিশিখা মুক্তা যমদণ্ডোপমাঃ শিতাঃ । অভি-  
 মন্যুং বিনির্ভিদ্য প্রাবিশস্ত ধরাতলং ॥ ১৮ ॥ তথৈবাজ্জুনিনা মুক্তাঃ শরাঃ কন-  
 কভূষণাঃ । অলয়ুষং বিনির্ভিদ্য প্রাবিশস্ত মহীতলং ॥ ১৯ ॥ সৌভদ্রস্ত রণে  
 রক্ষঃ শরৈঃ সমতপর্বতিঃ । চক্রে বিমুখমাসাদ্য মঘং শক্র ইবাহবে ॥ ২০ ॥ বিমু-  
 খঞ্চ ততো রক্ষো বধ্যমানং রণেংরিণা । প্রাদুশ্চক্রে মহামাঘাং তামসীং পরতা-  
 পনঃ ॥ ২১ ॥ ততস্তে তমসা সর্বে বৃতা হাসন্নহীপতে । নাভিমন্যুমপশ্যস্ত নৈব  
 স্বাম পরানুগে ॥ ২২ ॥ অভিমন্যুশ্চ তদৃষ্টা যোরকপং মহত্তমঃ । প্রাদুশ্চক্রেহস্ত্র-  
 মত্যুগ্রং ভাস্করং কুরুনন্দনঃ ॥ ২৩ ॥ ততঃ প্রকাশমভবজ্জগৎ সর্বং মহীপতে ।  
 তাঞ্চাপি জঘ্নিবান্মাঘাং রাক্ষসস্য দুরাত্মনঃ ॥ ২৪ ॥ সংক্রুদ্ধশ্চ মহাবীর্য্যো রাক্ষ-  
 সেন্দ্রং রথোত্তমঃ । ছাদয়ামাস সমরে শরৈঃ সমতপর্বতিঃ ॥ ২৫ ॥ বহ্নীস্তথান্যা  
 মাঘাশ্চ প্রমুক্তাস্তেন রক্ষসা । সর্বাস্ত্রবিদমেঘাত্মা বারযামাস ফাল্লুনিঃ ॥ ২৬ ॥  
 হতমাঘং ততো রক্ষো বধ্যমানঞ্চ শাযকৈঃ । রথং তত্রৈব সন্ত্যজ্য প্রাদ্রবন্নহতো  
 ভয়াৎ ॥ ২৭ ॥ তস্মিন্ বিনির্জিত্তে তুর্ণং কূটযোধিনি রাক্ষসে । আজ্জুনিঃ সমরে  
 সৈন্যং তাবকং সন্মমর্দহ । মদাক্ষো গন্ধনাগেন্দ্রঃ সপদ্যাং পদ্বিনীমিব ॥ ২৮ ॥  
 ততঃ শাস্তনবো ভীষ্মঃ সৈন্যং দৃষ্টাভিবিক্রতং । মহতা রথবংশেন সৌভদ্রং  
 পর্য্যবারযৎ ॥ ২৯ ॥ কোষ্ঠীকৃত্য চ তং বীরং ধার্তরাষ্ট্রা মহারথাঃ । একং স্তবহ-

वो युद्धे ततस्त्रुः शायकैर्दृष्टं ॥ ३० ॥ स तेषां रथिनां वीरः पितृस्त्वल्पपरा-  
 क्रमः । सदृशो वासुदेवस्य विक्रमेण बलेन च ॥ ३१ ॥ उभयोः सदृशं कर्म स-  
 पितृस्मात्तुल्यं च । रणे बह्विधं चक्रे सर्वशस्त्रभृताम्बरः ॥ ३२ ॥ ततो धनञ्जयो  
 वीरान् विनिम्नंस्तव सैनिकान् । आसमाद रणे तीर्णं पुत्रप्रेम्पुत्रमर्षणः ॥ ३३ ॥  
 तथैव समरे राजन् पिता देवव्रतस्तव । आसमाद रणे पार्थं स्वर्भासुरिव भा-  
 स्करं ॥ ३४ ॥ ततः सरथनागाश्वाः पुत्रास्तव जनेश्वर । परिववु रणे तीर्णं जूष्ण-  
 पुश्च समस्ततः ॥ ३५ ॥ तथैव पाण्डवा राजन् परिवार्यं धनञ्जयम् । रणाय महते  
 युक्ता दंशिता भरतर्षभ ॥ ३६ ॥ शारद्वतस्ततो राजन् तीर्णस्य प्रमुखे स्थितं ।  
 अर्जुनं पञ्चविंशत्या शायकानां समाचिनोत् ॥ ३७ ॥ प्रत्यूक्षाम्याथ विव्याध  
 सात्यकिस्तुं शितैः शरैः । पाण्डवप्रियकामार्थं शार्दूल इव कुञ्जरम् ॥ ३८ ॥ गौ-  
 तमोऽपि ह्यरायुक्ते माधवं नवभिः शरैः । हृदि विव्याध संक्रुद्धः कक्षपत्रपरि-  
 च्छदैः ॥ ३९ ॥ शैनेयोऽपि ततः क्रुद्धश्चापमानस्य वेगवान् । गौतमास्तुकरं  
 तूर्णं समादत्त शिलीमुखं ॥ ४० ॥ तमापतस्तुं वेगेन शक्राशनिसमद्युतिम् । द्विधा  
 चिच्छेद संक्रुद्धो द्रोणिः परमकोपनः ॥ ४१ ॥ समुत्सृज्याथ शैनेयो गौतमं  
 रथिनाम्बरः । अभ्यद्रवद्रणे द्रोणिं राहः खे शशिनं यथा ॥ ४२ ॥ तस्य द्रोणस्तु-  
 तश्चापं द्विधा चिच्छेद भारत । अथैनं छिन्नध्वानं ताडयामास शायकैः ॥ ४३ ॥  
 सोऽन्यं कार्मुकमादाय शत्रुंस्तं भारसाधनम् । द्रोणिं षट्या महाराज बाह्यो-  
 रुरसि चार्पयत् ॥ ४४ ॥ स विद्धो व्यथितश्चैव मुहूर्तं कश्मलायुतः । निषमाद रथो-  
 पस्थे ध्वजयष्टिं समाश्रितः ॥ ४५ ॥ प्रतिलभ्य ततः संज्ज्ञां द्रोणपुत्रः प्रताप-  
 वान् । वार्ष्णेयं समरे क्रुद्धो नाराचन समार्पयत् ॥ ४६ ॥ शैनेयं स तु निर्भिद्य  
 प्राविशद्वरणीतलं । वसस्तुकाले बलवान् विलं सर्पशिशुर्यथा ॥ ४७ ॥ अथापरेण  
 भल्लेन माधवस्य ध्वजोत्तमं । चिच्छेद समरे द्रोणिः सिंहनादं मुमोच ह ॥ ४८ ॥  
 पुनश्चैनं शरैर्घोरैश्छादयामास भारत । निदाघास्ते महाराज यथा मेघो दिवा-  
 करं ॥ ४९ ॥ सात्यकोऽपि महाराज शरजालं निहत्य तं । द्रोणिमभ्याकि-  
 रत्तूर्णं शरजालैरनेकधा ॥ ५० ॥ तापयामास च द्रोणिं शैनेयः परवीरहा ।  
 विमुक्ते मेघजालेन यथैव तपनस्तथा ॥ ५१ ॥ शराणां सहस्रेण पुनरेव  
 समुद्यतः । सात्यकिश्छादयामास ननाद च महाबलः ॥ ५२ ॥ दृष्ट्वा पुत्रं तथा ग्रस्तं  
 राहणेव निशाकरं । अभ्यद्रवत शैनेयं भारद्वाजः प्रतापवान् ॥ ५३ ॥ विव्याध  
 च सुतीक्ष्णं पृषकेन महामूढे । परीप्सन् स्वसूतं राजन् वार्ष्णेयेनाभिपी-

ডিতম্ ॥৫৪॥ সাত্যকিস্ত্ব রণে হিত্বা গুরুপুলং মহারথম্ । দ্রোণং বিব্যাধ বিংশত্যা ।  
সর্বপারশবৈঃ শরৈঃ ॥ ৫৫ ॥ তদন্তরমমেযাত্মা কৌন্তেযঃ শ্বেতবাহনঃ । অভ্য-  
দ্রবদ্রণে ক্রুদ্ধো দ্রোণং প্রতি মহারথঃ ॥ ৫৬ ॥ ততো দ্রোণশ্চ পার্থশ্চ সমেষাতাং  
মহামুধে । যথা বৃধশ্চ শুক্রশ্চ মহারাজ নভস্তলে ॥ ৫৭ ॥

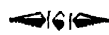
ইতি ভীষ্মপর্বনি ভীষ্মবধপর্বনি সঙ্কলযুদ্ধে অষ্টনবতিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৯৮ ॥



ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । কথং দ্রোণো মহেষাসঃ পাণ্ডবশ্চ ধনঞ্জয়ঃ । সমীযতু রণে বীরৌ  
তাবুভৌ পুরুষৰ্ষভৌ ॥ ১ ॥ প্রিযো হি পাণ্ডবো নিত্যং ভারদ্বাজস্য ধীমতঃ ।  
আচার্য্যশ্চ রণে নিত্যং প্রিযঃ পার্থস্য সঞ্জয় ॥ ২ ॥ তাবুভৌ রথিনৌ সংখ্যে  
সিংহাবিব বলোৎকটৌ । কথং সমীযতুৰ্ষভৌ ভারদ্বাজধনঞ্জয়ৌ ॥ ৩ ॥ সঞ্জয়  
উবাচ । ন দ্রোণঃ সমরে পার্থং জানীতে প্রিযমাত্মনঃ । ক্ষত্রধৰ্ম্মং পুরস্কৃত্য পার্থে  
বা গুরুমাহবে ॥ ৪ ॥ ন ক্ষত্রিয়া রণে রাজন্ বজ্জয়ন্তি পরম্পরং । নিৰ্ম্মর্য্যাদং হি  
যুধ্যন্তে পিতৃভিত্ত্বাভিঃ সহ ॥ ৫ ॥ রণে ভারত পার্থেন দ্রোণো বিদ্ধস্তিভিঃ শরৈঃ ।  
নাচিন্তযচ্চ তান্ বাণান্ পার্থচাপচ্যুতান্ যুধি ॥ ৬ ॥ শরবৃষ্টিয়া পুনঃ পার্থশ্ছাদ-  
যামাস তং রণে । স প্রজজ্বাল রোষণে গহনেহগ্নিরিবোজ্জ্বিতঃ ॥ ৭ ॥ ততোহ-  
জ্জ্বনং রণে দ্রোণঃ শরৈঃ সমতপর্ষতিঃ । ছাদযামাস রাজেন্দ্র নচিরাদিব ভার-  
ত ॥ ৮ ॥ ততো দুৰ্য্যোধনো রাজা স্তম্ভান্ মচোদযৎ । দ্রোণস্য সমরে রাজন্  
পার্ষিগ্রহণকারণাৎ ॥ ৯ ॥ ত্রিগৰ্ভরাজপি ক্রুদ্ধো ভৃশমায়ম্য কাম্মুকম্ । ছাদযা-  
মাস সমরে পার্থং বাণৈরযোমুখেঃ ॥ ১০ ॥ তাভ্যাং মুক্তাঃ শরা রাজনস্তরীক্ষে  
বিরেজিরে । হংসা ইব মহারাজ শরৎকালে নভস্তলে ॥ ১১ ॥ তে শরাঃ প্রাপ্য  
কৌন্তেযং সমস্তাদ্বিবিশুঃ প্রভো । ফলভারনতং যদ্বৎ স্বাদুবৃক্ষং বিহঙ্গমাঃ ॥ ১২ ॥  
অজ্জ্বনস্ত রণে নাদং বিনদ্য রথিনাম্বরঃ । ত্রিগৰ্ভরাজং সমরে সপুলং বিব্যাধে  
শরৈঃ ॥ ১৩ ॥ তে বধ্যমানাঃ পার্থেন কালেনেব যুগক্ষযে । পার্থমেবাভ্যবৰ্ত্তন্ত  
মরণে কৃতনিশ্চযাঃ । মুমুচুঃ শরবৃষ্টিং পাণ্ডবস্য রথং প্রতি ॥ ১৪ ॥ শরবৃষ্টিং  
ততস্তাস্ত শরবর্ষৈঃ সমস্ততঃ । প্রতিজগ্রাহ রাজেন্দ্র তোযবৃষ্টিমিবাচলঃ । তত্রাদ্ভু-  
তমপশ্যাম বীভৎসোহস্তলাঘবম্ ॥ ১৫ ॥ বিমুক্তাং বহুভির্ষোধৈঃ শরবৃষ্টিং দুরা-  
সদাম্ । যদেকো বারযামাস মারুতোহব্রগণানিব । কৰ্ম্মণা তেন পার্থস্য তুতুষুর্দে-  
বদানবাঃ ॥ ১৬ ॥ অথ ক্রুদ্ধো রণে পার্থস্ত্রিগৰ্ভান্ প্রতি ভারত । মুমোচাস্ত্রং মহা-  
রাজ বাঘব্যং পৃতনামুখে ॥ ১৭ ॥ প্রাদুরাসীত্ততো বায়ুঃ কোভযাণো নভস্তলং ।

পাতযন্ বৈ তরুগণান্ বিনিম্নংশ্চৈব সৈনিকান্ ॥ ১৮ ॥ ততো দ্রোণোঃ ভিবীকৈশ্চৈব  
 বাযব্যাস্ত্রং সুদারুণম্ । শৈলমন্যম্‌হারাজ ঘোরমস্ত্রং মুমোচ হ ॥ ১৯ ॥ দ্রো-  
 ণেন যুধি নিম্নুক্তে তস্মিন্মস্ত্রে নরাধিপ । প্রশশাম ততো বায়ুঃ প্রসম্মাশ্চ দিশো  
 দশ ॥ ২০ ॥ ততঃ পাণ্ডুসুতো বীরস্ত্রিগৰ্ভস্য রথব্রজান্ । নিরুৎসাহানুগে চক্রে  
 বিমুখান্ বিপরাক্রমান্ ॥ ২১ ॥ ততো দুর্যোধনশ্চৈব রূপশ্চ রথিনাশ্বরুঃ । অশ্ব-  
 খামা তথা শল্যঃ কাষ্যোজশ্চ সুদক্ষিণঃ ॥ ২২ ॥ বিন্দান্নুবিন্দাবান্ত্যে বাহ্লিকঃ  
 সহ বাহ্লিকৈঃ । মহতা রথবংশেন পার্থস্যাবারযন্ দিশঃ ॥ ২৩ ॥ তথৈব ভগদত্তশ্চ  
 শ্রুতায়ুশ্চ মহাবলঃ । গজানীকেন ভীমস্য তাববারযতাং দিশঃ ॥ ২৪ ॥ ভূরিশ্রবাঃ  
 শলশ্চৈব সৌবলশ্চ বিশাম্পতে । শরৌষৈর্বিমলৈস্তীক্ষ্ণুর্মাড্রীপুল্লাববারযন্ ॥ ২৫ ॥  
 ভীষ্মস্তু সহিতঃ সংখ্যে ধার্ত্তরাষ্ট্রৈঃ সসৈনিকৈঃ । যুধিষ্ঠিরং সমাসাদ্য সর্বতঃ পর্য-  
 বারযৎ ॥ ২৬ ॥ আপতন্তুং গজানীকং দৃষ্ট্বা পার্থো বৃকোদরঃ । লেলিহন্ সৃঙ্খনী  
 বীরো মৃগরাডিব কাননে ॥ ২৭ ॥ ততস্তু বলিনাং শ্রেষ্ঠো গদাং গৃহ মহাহবে ।  
 অবপ্লুত্যা রথাত্তূর্ণং তব সৈন্যান্যাতীষযৎ ॥ ২৮ ॥ তমুদ্বীক্ষ্য গদাহস্তং ততস্তে  
 গজসাদিনঃ । পরিববু রণে যত্র ভীমসেনং সমস্ততঃ ॥ ২৯ ॥ গজমধ্যম্নুপ্রাপ্তঃ  
 পাণ্ডবঃ স ব্যরাজত । মেঘজালস্য মহতো যথা মধ্যগতো রবিঃ ॥ ৩০ ॥ ব্যধমৎ  
 স গজানীকং গদয়া পাণ্ডবর্ষতঃ । মহাব্রজালমতুলং মাতরিশ্বেব সমস্ততম্ ॥ ৩১ ॥  
 তে বধ্যমানা বলিনা ভীমসেনেন দন্তিনঃ । আর্তনাদং রণে চক্রুর্গজ্জন্তো জলদা-  
 ইব ॥ ৩২ ॥ বহুধা দারিতশ্চৈব বিষাণৈস্তত্র দন্তিভিঃ । ফুল্লাশোকনিতঃ পার্থঃ  
 শুশুভে রণমূর্দ্ধনি ॥ ৩৩ ॥ বিষাণে দন্তিনং গৃহ নিবিষাণমথাকরোৎ । বিষা-  
 ণেন চ তেনৈব কুন্তেভ্যাহত্য দন্তিনম্ । পাতযামাস সমরে দণ্ডহস্ত ইবাস্তকঃ ॥ ৩৪ ॥  
 শোণিতাক্রাং গদাং বিভ্রমেদোমজ্জকৃতচ্ছবিঃ । কৃতাত্যঙ্গঃ শোণিতেন রুদ্রবৎ  
 প্রত্যদৃশ্যত ॥ ৩৫ ॥ এবং তে বধ্যমানাস্চ হতশেষা মহাগজাঃ । প্রাদবস্তু দিশো  
 রাজন্ বিমৃদন্তঃ স্বকং বলম্ ॥ ৩৬ ॥ দ্রবন্তিস্তৈশ্চহানাগৈঃ সমস্তান্তুরতর্ষভ ।  
 দুর্যোধনবলং সর্বং পুনরাসীৎ পরাণ্ডমুখম্ ॥ ৩৭ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি ভীমপরাক্রমে নবনবতিতমোঃধ্যায়ঃ ॥ ৯৯ ॥



সঞ্জয় উবাচ । মধ্যন্ধিনে মহারাজ সংগ্রামঃ সমপদ্যত । লোকক্ষয়করো রৌদ্রো  
 ভীষ্মস্য সহ সোমকৈঃ ॥ ১ ॥ গান্ধেষো রথিনাং শ্রেষ্ঠঃ পাণ্ডবানামনীকিনীম্ ।  
 ব্যধমশিশিতৈর্বাণৈঃ শতশোহথ সহস্রশঃ ॥ ২ ॥ সংমর্দ চ তৎ সৈন্যং পিতা

দেবব্রতস্তব। ধান্যানামিব লুনানাং প্রকরং গোগণা ইব ॥ ৩ ॥ ধৃষ্টদ্যুম্নঃ  
 শিখণ্ডী চ বিরাটো দ্রুপদস্তথা। ভীষ্মমাসাদ্য সমরে শরৈর্জঙ্গমমহারথম্ ॥ ৪ ॥  
 ধৃষ্টদ্যুম্নং ততো বিদ্ধ্বা বিরাটঞ্চ শরৈস্ত্রিভিঃ। দ্রুপদস্য চ নারাচং প্রেষয়ামাস ভা-  
 রত ॥ ৫ ॥ তেন বিদ্ধ্বা মহেষাসা ভীষ্মেনামিত্রকর্ষণা। চুক্রুধুঃ সমরে রাজন্ পাদ-  
 স্পৃষ্ঠা ইবোরগাঃ ॥ ৬ ॥ শিখণ্ডী তঞ্চ বিব্যাধ ভরতানাং পিতামহম্। স্ত্রীময়ং মনসা  
 ধ্যাত্বা নাট্ম্য প্রাহরদচ্যুতঃ ॥ ৭ ॥ ধৃষ্টদ্যুম্নস্ত সমরে ক্রোধেনাগ্নিরিব জ্বলন্।  
 পিতামহং ত্রিভির্বাণৈর্বাষ্মোরুরসি চার্পযৎ ॥ ৮ ॥ দ্রুপদঃ পঞ্চবিংশত্যা বিরাটো  
 দশভিঃ শরৈঃ। শিখণ্ডী পঞ্চবিংশত্যা ভীষ্মং বিব্যাধ সাযকৈঃ ॥ ৯ ॥ সোহতিবিদ্ধো  
 মহারাজ শোণিতৌষপরিপ্লুতঃ। বসন্তে পুষ্পশবলো রক্তাশোক ইবাবভৌ ॥ ১০ ॥  
 তান্ প্রত্যবিধ্যদ্যাদ্ভেযস্ত্রিভিঃত্রিভিরজিহ্মগৈঃ। দ্রুপদস্য চ ভল্লেন ধনুশ্চিচ্ছেদ  
 মারিষ ॥ ১১ ॥ সোহন্যং কাস্মুকমাদায ভীষ্মং বিব্যাধ পঞ্চভিঃ। সারথিঞ্চ  
 ত্রিভির্বাণৈঃ স্মৃশিতৈ রণমূর্দ্ধনি ॥ ১২ ॥ তথা ভীমো মহারাজ দ্রৌপদ্যাঃ পঞ্চ চা-  
 ত্বজাঃ। কৈকেয়া ভ্রাতরঃ পঞ্চ সাত্যকির্শেচব সাত্বতঃ ॥ ১৩ ॥ অভ্যদ্রবন্ত গাঞ্জেযং  
 যুধিষ্ঠিরহিতৈশ্বযা। রিরক্ষিষন্তঃ পাঞ্চাল্যাং ধৃষ্টদ্যুম্নপুরোগমাঃ ॥ ১৪ ॥ তথৈব  
 তাবকাঃ সর্বে ভীষ্মরক্ষার্থমুদ্যতাঃ। প্রত্যাঘ্নয়ুঃ পাণ্ডুসেনাং সহসৈন্যা নরাধি-  
 প ॥ ১৫ ॥ তত্রাসীৎ সুমহদ্বৃদ্ধং তব তেষাঞ্চ সঙ্কুলম্। নরাশ্চরথনাগানাং যমরাষ্ট্র  
 বিবর্দ্ধনম্ ॥ ১৬ ॥ রথী রথিনমাসাদ্য প্রাহিণৌদ্যমসাদনম্ ॥ ১৭ ॥ তথৈতরান্  
 সমাসাদ্য নরনাগাশ্চসাদিনঃ। অনঘন্ পরলোকায শরৈঃ সন্নতপর্বভিঃ ॥ ১৮ ॥  
 শরৈশ্চ বিবিধৈর্ষেণৈস্তত্র তত্র বিশাম্পতে। রথাস্ত রথিভির্হীনা হতসারথযস্তথা।  
 বিপ্রক্রতাশ্চ সমরে দিশো জগ্মুঃ সন্নততঃ ॥ ১৯ ॥ মৃদুস্তস্তে নরান্নাজন্ হযাংশ্চ  
 সুবহুনাগে। বাতায়মানা দৃশ্যন্তে গন্ধর্বনগরোপমাঃ ॥ ২০ ॥ রথিনশ্চ রথৈর্হীনা  
 বর্শ্মিণস্তেজসা যুতাঃ। কুণ্ডলোক্ষীষিণঃ সর্বে নিষ্কাঙ্গদবিভ্রুষণাঃ ॥ ২১ ॥ দেবপুত্র-  
 সমাঃ সর্বে শৌর্য্যে শক্রসমা যুধি। ঋদ্ধ্যা বৈশ্রবণঞ্চাতি নযেন চ বৃহস্পতিম্ ॥ ২২ ॥  
 সর্বে লোকেশ্বরাঃ শূরাস্তত্র তত্র বিশাম্পতে। বিপ্রক্রতা ব্যদৃশ্যন্ত প্রাক্রতা ইব মা-  
 নবাঃ ॥ ২৩ ॥ দস্তিনশ্চ নরশ্রেষ্ঠ হীনাঃ পরমসাদিভিঃ। মৃদুস্তঃ স্বান্যনীকানি  
 নিপেতুঃ সর্ষশব্দগাঃ ॥ ২৪ ॥ বর্শ্মভিঃচামরৈশ্চিট্রৈঃ পতাকাভিঃশ্চ মারিষ। ছত্রৈঃ  
 শিতৈহৈমদৈশ্চোস্তোমরৈশ্চ সন্নততঃ ॥ ২৫ ॥ বিশীর্ণৈর্বি প্রধাবন্তো দৃশ্যন্তে স্ম দিশো-  
 দশ। নবমেঘপ্রতীকাশা জলদোপমনিষনাঃ ॥ ২৬ ॥ তথৈব দস্তিভির্হীনান্  
 গজারোহান্ বিশাম্পতে। প্রধাবতোহনুপশ্যাম তব তেষাঞ্চ সঙ্কুলে ॥ ২৭ ॥ নানা-



देशसमुखांश्च तुरगान् हेमभृषितान् । वातायमानानद्राक्कं शतशोऽथ सह-  
सुशः ॥ २८ ॥ अश्वारोहान् हतैरश्वैर्गृहीतासीन् समस्ततः । द्रवमाणानपश्याम  
द्राव्यमाणांश्च संयुगे ॥ २९ ॥ गजो गजं समासाद्य द्रवमाणान्महाहवे । यथो  
प्रमृद्य तरसा पदातीन् वाजिनस्तथा । तथैव च रथान् राजन् प्रममर्द्द रणे गजः ॥ ३० ॥  
रथाश्चैव समासाद्य पतितान् सुरगान् भुवि । व्यमृद्दन् समरे राजन् तुरगांश्च नरा-  
नुगे ॥ ३१ ॥ एवञ्च बहुधा राजन् प्रत्यमृद्दन् परस्परं ॥ ३२ ॥ तस्मिन् रौद्रे  
तथा युद्धे वर्तमाने भयावहे । प्रावर्तत नदी घोरा शेषगितान्प्रतरङ्गिणी ॥ ३३ ॥  
अस्त्रिसंघातसंवाधा केशशैबलशादला । रथहुदा शरावर्ता ह्यमीना दुरा-  
सदा ॥ ३४ ॥ शीर्षोपलसमाकीर्णा हस्तिग्राहसमाकुला । कवचोष्णीषफेर्णोष्णा  
धनुर्वेलासिकच्छपा ॥ ३५ ॥ पताकाध्वजवृक्षाद्या मर्त्यकृलापहारिणी । क्रव्याद-  
हंससंकीर्णा यमराक्षुर्विवर्द्धिनी ॥ ३६ ॥ तां नदीं क्लृप्तिवाः शूरा ह्यनागरथ-  
प्लवैः । प्रतेरुर्बहवो राजन् त्वयं त्यज्जु महारथाः ॥ ३७ ॥ अपोवाह रणे  
भीकन् कश्मलेनाभिसंवृतान् । यथा वैतरणी प्रेतान् प्रेतराजपुरं प्रति ॥ ३८ ॥  
प्राक्रोशनं क्लृप्तिवास्तत्र दृष्ट्वा तद्वैशसं महत् । दुर्योधनापराधेन गच्छन्ति क्लृप्ति-  
वाः क्वयम् ॥ ३९ ॥ शुण्वत्सु कथं द्वेषं धृतराष्ट्रे जनेश्वरः । क्रुतवान् पाण्डु-  
पुत्रेषु पापात्मा लोभमोहितः ॥ ४० ॥ एवञ्च बहुविधा वाचः श्रयन्ते स्म पर-  
स्परम् । पाण्डुवस्तुवसंयुक्ताः पुत्राणां ते सुदारुणाः ॥ ४१ ॥ ता निशम्य ततो  
वाचः सर्वथोऽधैरुदाहताः । आगच्छन् सर्वलोकस्य पुत्रो दुर्योधनस्तव ॥ ४२ ॥  
भीष्मं द्रोणं रूपशैव शल्यशोवाच भारत । युध्यध्वमनईकाराः किष्किरं कुरू-  
थेति च ॥ ४३ ॥ ततः प्रवृत्ते युद्धं कुरूणां पाण्डवैः सह । अक्लृप्तकृतं  
राजन् सुघोरं वैशसं तदा ॥ ४४ ॥ यत् पुरा ह्यं न गृह्णीषे वार्यमाणा महा-  
अभिः । वैचित्रवीर्यं तस्येदं फलं पश्य सुदारुणम् ॥ ४५ ॥ न हि पाण्डुसुता  
राजन् ससैन्याः सपदानुगाः । रक्त्वि समरे प्राणान् कौरवा वापि संयुगे ॥ ४६ ॥  
एतस्मात् कारणाद्घोरौ वर्तते स्वजनक्षयः । दैवाद्वा पुरुषव्याघ्र तव वापनवा-  
मप ॥ ४७ ॥

इति भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि सङ्कुलयुद्धे शततमोऽध्यायः ॥ १०० ॥



सङ्घस्य उवाच । अर्जुनस्तान्नरव्याघ्रः सुशर्मान् चरामृपान् । अनयं प्रेतराजस्य  
सदनं शाश्वतैः शितैः ॥ १ ॥ सुशर्मापि ततो वाणैः पार्थं विव्याध संयुगे ।

বাসুদেবঞ্চ সপ্তত্যা পার্থঞ্চ নবভিঃ পুনঃ ॥ ২ ॥ তন্নিবার্য্য শরৌষেণ শক্রসুশ্রুশ্ম-  
হারথঃ । সুশ্রুশ্মণো রণে যোধান্ প্রাহিণোদ্যমসাদনম্ ॥ ৩ ॥ তে বধ্যমানাঃ পা-  
র্থেন কালেনেব যুগক্ষয়ে । ব্যদ্রবস্ত রণে রাজন্ ভয়ে জাতে মহারথাঃ ॥ ৪ ॥ উৎ-  
সৃজ্য তুরগান্ কেচিৎ রথান্ কেচিচ্চ মারিষ । গজানন্যে সমুৎসৃজ্য প্রাদ্রবস্ত  
দিশো দশ ॥ ৫ ॥ অপরে তু তদাদায বাজিনাগরথানুণে । হ্রষা পরষা যুক্তাঃ  
প্রাদ্রবস্ত বিশাম্পতে ॥ ৬ ॥ পাদাতাশ্চাপি শস্ত্রাণি সমুৎসৃজ্য মহারণে । নির-  
পেক্ষা ব্যধাবস্ত তেন তেন স্ম ভারত ॥ ৭ ॥ বার্য্যমাণাঃ সুবহুশস্ত্রৈগর্ভেন সু শ-  
শ্রুশ্মণা । তঁথান্যেঃ পার্থিবশ্রেষ্ঠৈর্ন ব্যতিষ্ঠন্ত সংযুগে ॥ ৮ ॥ তদ্বলং প্রক্রতং দৃষ্ট্বা  
পুল্লো দুর্য্যোধনস্তব । পুরস্কৃত্য রণে ভীষ্মং সর্বসৈন্যপুরস্কৃতঃ ॥ ৯ ॥ সর্বো-  
দ্যোগেন মহতা ধনঞ্জয়মুপাদ্রবৎ । ত্রিগর্তাধিপতেরথৈ জীবিতস্য বিশাম্প-  
তে ॥ ১০ ॥ স একঃ সমরে তস্থৌ কিরন্ বহুবিধান্ শরান্ । ভ্রাতৃভিঃ সহিতঃ  
সর্বৈঃ শেযা হি প্রক্রতা নরাঃ ॥ ১১ ॥ তথৈব পাণ্ডবা রাজন্ সর্বোদ্যোগেন দং-  
শিতাঃ । প্রযযুঃ ফাল্গুনার্থায যত্র ভীষ্মো ব্যতিষ্ঠত ॥ ১২ ॥ জানস্তোহপি রণে  
বীর্য্যং ঘোরং গাণ্ডীবধ্বননঃ । হাহাকারকৃতোৎসাহা ভীষ্মং জগ্মুঃ সমস্ততঃ ॥ ১৩ ॥  
ততস্তালধ্বজঃ শূরঃ পাণ্ডবানাং বক্খিনীম্ । ছাদয়ামাস সমরে শরৈঃ সন্নতপর্ব-  
ভিঃ ॥ ১৪ ॥ একীভূতাস্ততঃ সর্বৈ কুরবঃ পাণ্ডবৈঃ সহ । অযুধ্যস্ত মহারাজ মধ্যং  
প্রাপ্তে দিবাকরে ॥ ১৫ ॥ সাত্যকিঃ রুতবর্মানং ভিদ্ধা পঞ্চভিরাশুগৈঃ । অতিষ্ঠদা-  
হবে শূরঃ কিরন্ বাণান্ সহস্রশঃ ॥ ১৬ ॥ তথৈব ক্রপদো রাজা দ্রোণং বিদ্ধা শিতৈঃ  
শরৈঃ । পুনর্বিব্যাধ সপ্তত্যা সারথিঞ্চাস্য পঞ্চভিঃ ॥ ১৭ ॥ ভীমসেনস্ত রাজানং  
বাহ্লিকং প্রপিতামহম্ । বিদ্ধা নদন্ মহানাদং শাদ্দুল ইব কাননে ॥ ১৮ ॥ আজ্জু-  
নিশ্চিত্রসেনেন বিদ্ধো বহুভিরাশুগৈঃ । চিত্রসেনং ত্রিভির্বাণৈর্বিব্যাধ হৃদযে  
ভূশম্ ॥ ১৯ ॥ সমাগতো তৌ তু রণে মহামাত্রৌ ব্যরোচতাম্ । যথা দিবি মহা-  
ঘোরৌ রাজন্ বুধশনৈশ্চরৌ ॥ ২০ ॥ তস্যাস্থাংশ্চতুরো হস্তা সূতঞ্চ নবভিঃ  
শরৈঃ । ননাদ বলবান্নাদং সৌভদ্রঃ পরবীরহা ॥ ২১ ॥ হতাশ্বাত্তু রথার্ভুগং  
সোহবপ্লুত্য় মহারণঃ । আরুরোহ রথং তূর্ণং দুর্শ্মখস্য বিশাম্পতে ॥ ২২ ॥ দ্রো-  
ণশ্চ ক্রপদং বিদ্ধা শরৈঃ সন্নতপর্বভিঃ । সারথিঞ্চাস্য বিব্যাধ হ্রমাণঃ পরাক্র-  
মী ॥ ২৩ ॥ পীড়্যমানস্ততো রাজা ক্রপদো বাহিনীমুখে । অপাযাজ্জবনৈরশ্বৈঃ  
পূর্ববৈরমনুস্মরন্ ॥ ২৪ ॥ ভীমসেনস্ত রাজানং মুহূর্তাদিব বাহ্লিকম্ । ব্যশ্বসূত-  
রথঞ্চক্রে সর্বসৈন্যস্য পশ্যতঃ ॥ ২৫ ॥ সসংভ্রমো মহারাজ সংশযং পরমং গতঃ ।

अवप्लुत्य ततो बाहाद्वाह्निकः पुरूषोत्तमः । आरुरोह रथं तूर्णं लक्षणस्य महा-  
 अन्नः ॥ २७ ॥ सात्यकिः क्रुतवर्ष्माणं वारयिष्व महारणे । शरैर्ब्रह्मविधे राजमा-  
 ससाद पितामहम् ॥ २९ ॥ स विद्धा भारतं षट्क्या निशितैर्लोमवाहिभिः । नन-  
 त्तेव रथोपस्थे विधुन्नानो महङ्गुः ॥ २८ ॥ तस्यायसौं महाशक्तिं चिक्षेपाथ  
 पितामहः । हेमचित्रां महावेगां नागकन्योपमां शुभाम् ॥ २२ ॥ तामाप-  
 तन्तीं सहसा मृत्युकलां सुदुर्जयाम् । व्यंसयामास वार्ष्णेयो लाघवेन महाय-  
 शाः ॥ ३० ॥ अनासाद्य तु वार्ष्णेयं शक्तिः परमदारुणा । न्यपतङ्करणीपृष्ठे  
 महोक्तेव महाप्रभा ॥ ३१ ॥ वार्ष्णेयस्तु ततो राजन् स्वां शक्तिं कनकप्रभाम् ।  
 वेगवद्गृह्य चिक्षेप पितामहरथम्प्रति ॥ ३२ ॥ वार्ष्णेयभुजवेगेन प्रणुमा सा  
 महाहवे । अभिदूद्राव वेगेन कालरात्रिर्यथा नरम् ॥ ३३ ॥ तामापतन्तीं सहसा  
 द्विधा चिच्छेद भारत । क्रूरप्राभ्यां सुतीक्ष्णाभ्यां सा व्यशीर्यत मेदिनीम् ॥ ३४ ॥  
 छिद्वा तु शक्तिं गाङ्गेयः सात्यकिं नवभिः शरैः । आजघानोरसि क्रुद्धः प्रहसन्  
 शत्रुकर्षणः ॥ ३५ ॥ ततः सरथनागाश्वाः पाण्डवाः पाण्डुपूरुर्ज । परिवव रणे भीष्मं  
 माधवव्राणकारणात् ॥ ३६ ॥ ततः प्रववृते युद्धं तुमुलं लोमहर्षणम् । पाण्ड-  
 वानां कुरूणां समरे विजयैषिणाम् ॥ ३७ ॥

इति भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मवार्ष्णेययुद्धे एकाधिकशत-

तमोऽध्यायः ॥ १०१ ॥



सङ्गद्य उवाच । दृष्ट्वा भीष्मं रणे क्रुद्धं पाण्डवैरभिसंवृतम् । यथा मेघैश्चमहा-  
 राज तपास्ते दिवि भास्करम् । दुर्योधनो महाराज दुःशासनमभाषत ॥ १ ॥ एष  
 शूरो महेष्वासो भीष्मः शत्रूनिस्मदनः । छादितः पाण्डवैः शूरैः समस्तान्द्रत-  
 षत् ॥ २ ॥ तस्य कार्यं ह्यया वीर रक्षणं सुमहात्मनः । रक्ष्यमाणो हि समरे  
 भीष्मोऽस्माकं पितामहः । निहन्यात् समरे यत्नान् पाण्डालान् पाण्डवैः सह ॥ ३ ॥  
 तत्र कार्यतमं मन्ये भीष्मस्येवाभिरक्षणम् । गोपुत्रो ह्येष महेष्वासो भीष्मोऽस्माकं  
 महाव्रतः ॥ ४ ॥ स भवान् सर्वसैन्येन परिवार्य पितामहम् । समरे कूर्म कूर्षाण-  
 दङ्करं परिरक्षतु ॥ ५ ॥ स एवमुक्तः समरे पुत्रो दुःशासनस्तव । परिवार्य-  
 स्थितो भीष्मं सैन्येन महतावृतः ॥ ६ ॥ ततः शतसहस्राणां हयानां सुबलात्मजः ।  
 विमलप्रसहस्तानामृष्टितोमरधारिणाम् ॥ ७ ॥ दर्पितानां सुवेगानां बलस्थानां  
 पताकिनाम् । शिक्षितैर्युद्धकुशलैरुपेतानां नरोत्तमैः ॥ ८ ॥ नकुलं सह-

দেবঞ্চ ধর্মরাজঞ্চ পাণ্ডবম্ । ন্যবারযদ্রথশ্রেষ্ঠান্ পরিবার্য্য সমন্ততঃ ॥ ১০ ॥ ততো  
 দুর্ষ্যোধনো রাজা শূরাণাং হযসাদিনাম্ । অযুতং প্রেষয়ামাস পাণ্ডবনাং নিবা-  
 রণে ॥ ১০ ॥ তৈঃ প্রবিষ্টৈর্মহাবেগৈর্গরুভ্রুন্দিরিবাহবে । খুরাহতা ধরা রাজংশক-  
 ম্পে চ ননাদ চ ॥ ১১ ॥ খুরশকশ্চ স্তুমহান্ বাজিনাং শুশ্রুবে তদা । মহাবংশ-  
 বনস্যেব দ্রুহমানস্য পর্বতে ॥ ১২ ॥ উৎপতদ্ভিষ্চ তৈস্তত্র সমুদ্ভূতং মহদ্রজঃ ।  
 দিবাকরপথং প্রাপ্য ছাদয়ামাস ভাস্করম্ ॥ ১৩ ॥ বেগবদ্ভির্হৈযৈস্তৈস্ত্ব ক্ষোভিতা  
 পাণ্ডবী চমুঃ । নিপতদ্ভির্মহাবেগৈর্হৈসৈরিব মহৎ সরঃ । হেষতাঐশ্বেব শকেনন  
 প্রাজ্জায়ত কিঞ্চিন ॥ ১৪ ॥ ততো যুধিষ্ঠিরো রাজা মাদ্রীপুলৌ চ পাণ্ডবৌ । প্রত্য-  
 স্ত্রংস্তরসা বেগং সমরে হযসাদিনাম্ ॥ ১৫ ॥ উদ্বৃতস্য মহারাজ প্রাবৃট্কালেহভি-  
 পূর্য্যতঃ । পৌর্নমাস্যাময়ুবেগং যথা বেলা মহোদধেঃ ॥ ১৬ ॥ ততস্তে রথিনো  
 রাজন্ শরৈঃ সম্নতপর্বতিঃ । ন্যক্লন্তম্নুত্তমাঙ্গানি শরেণ হযসাদিনাম্ ॥ ১৭ ॥  
 তে নিপেতুর্মহারাজ নিহতা দৃঢ়ধন্বিভিঃ । নাগৈরিব মহানাগা যথাবদ্বিরিগ-  
 হ্নরে ॥ ১৮ ॥ তেহপি প্রাসৈঃ সূনিশিতৈঃ শরৈঃ সম্নতপর্বতিঃ । ন্যক্লন্তম্নুত্তমা-  
 ঙ্গানি বিচরন্তো দিশো দশ ॥ ১৯ ॥ অভ্যাহতা হযারোহা ঋষ্টিভিত্তরতর্ষভ ।  
 অত্যজম্নুত্তমাঙ্গানি ফলানীব মহাদ্রমাঃ ॥ ২০ ॥ সমাদিনো হযা রাজংশত্র তত্র  
 নিসৃদিতাঃ । পতিতাঃ পাত্যমানাশ্চ প্রত্যদৃশ্যন্ত সর্বশঃ ॥ ২১ ॥ বধ্যমানা হযাশ্চৈব  
 প্রাদ্রবন্ত ভযাদ্দিতাঃ । যথা সিংহং সমাসাদ্য মৃগাঃ প্রাণপরাযণাঃ ॥ ২২ ॥ পাণ্ড-  
 বাশ্চ মহারাজ জিহ্বা শত্রূমহাহবে । দধ্মাঃ শঙ্খাংশ্চ ভেরীশ্চ তাডয়ামাসুরাহ-  
 বে ॥ ২৩ ॥ ততো দুর্ষ্যোধনো দীনো দৃফ্ট্বা সৈন্যং পরাজিতম্ । অত্রবীন্দ্ররতশ্রেষ্ঠ  
 মদ্ররাজমিদং বচঃ ॥ ২৪ ॥ এষ পাণ্ডুসুতো জ্যেষ্ঠো যমাভ্যাং সহিতো রণে ।  
 পশ্যতাং নো মহাবাহো সেনাং দ্রাবযতি প্রভো ॥ ২৫ ॥ তং বারয মহাবাহো  
 বেলেব মকরালয়ম্ । ত্বং হি সংক্ষয়সেহত্যর্থমসহবলবিক্রমঃ ॥ ২৬ ॥ পুল্লস্য তব  
 তদ্বাক্যং শ্রুত্বা শল্যঃ প্রতাপবান্ । স যযৌ রথবংশেন যত্র রাজা যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ২৭ ॥  
 তদ্রাপতদ্বৈ সহসা শল্যস্য স্তুমহদ্বলম্ । মহৌষবেগং সমরে বারয়ামাস পাণ্ড-  
 বঃ ॥ ২৮ ॥ মদ্ররাজঞ্চ সমরে ধর্মরাজো যুধিষ্ঠিরঃ । দশভিঃ শাযকৈস্তূর্ণমাজঘান  
 স্তনাস্তরে ॥ ২৯ ॥ নকুলঃ সহদেবশ্চ তং সপ্তভিরজিক্ৰগৈঃ । মদ্ররাজোহপি  
 তান্ সর্বানাজঘান ত্রিভিস্ত্রিভিঃ ॥ ৩০ ॥ যুধিষ্ঠিরং পুনঃ ষষ্ঠ্যা বিব্যাধ নিশিতৈঃ  
 শরৈঃ । মাদ্রীপুলৌ চ সস্ত্রান্তৌ দ্বাভ্যাং দ্বাভ্যামতাডযৎ ॥ ৩১ ॥ ততো ভীমো  
 মহাবাহুর্দৃষ্ট্বা রাজানমাহবে । মদ্ররাজবশং প্রাপ্তং মৃত্যোরাস্যগতং যথা ।

अभ्युपगत्य संग्रामे युधिष्ठिरमग्निद्रुजि ॥ ७२ ॥ ततो युद्धं महाघोरं प्राव-  
र्तत सुदारुणम् । अपरां दिशमास्थाय तप्यमाने दिवाकरे ॥ ७३ ॥

इति भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि शल्यधर्मराजसमागमे द्यधिकशत-  
तमोऽध्यायः ॥ १०२ ॥



सङ्गम उवाच । ततः पिता तव क्रुद्धो निशितैः शायकोत्तमैः । आजघान रणे  
पार्थान् सहस्रेणान् समस्ततः ॥ १ ॥ भीमं द्वादशतिर्विद्वान् सात्यकिं नवभिः शरैः ।  
नकुलं त्रिंशतिर्विद्वान् सहदेवश्च सप्तभिः ॥ २ ॥ युधिष्ठिरं द्वादशतिर्बाह्यैः शौरि-  
सि चार्पयत् । धृष्टदुम्नं ततो विद्वान् ननाद सुमहाबलः ॥ ३ ॥ तं द्वादशाथैर्न-  
कुलो माधवश्च त्रिभिः शरैः । सहदेवश्च सप्ततया पार्थश्च नवभिः शरैः ॥ ४ ॥  
धृष्टदुम्नश्च सप्ततया भीमसेनश्च सप्तभिः । युधिष्ठिरो द्वादशभिः प्रत्यविध्यत् पिता-  
महम् ॥ ५ ॥ द्रोणस्तु सात्यकिं विद्वान् भीमसेनमविध्यत् । एकैकं पञ्चतिर्बाणै-  
र्यमदण्डोपमैः शितैः ॥ ६ ॥ तौ च तं प्रत्यविध्येतां त्रिंशतिभिरजिह्वकैः ।  
तौ त्रैरिव महानागं द्रोणं ब्राह्मणपुङ्गवम् ॥ ७ ॥ सौवीराः कितवाः प्राच्याः  
प्रतीचेद्यादीच्यमालवाः । अतीषाहाः शूरसेनाः शिवयोश्च वशातयः । संग्रामे  
नाजहृतींश्च वध्यमानाः शितैः शरैः ॥ ८ ॥ तथैवान्ये महीपाला नानादेश-  
समागताः । पाण्डवानभ्यवर्तन्तु विविधायुधपाणयः ॥ ९ ॥ तथैव पाण्डवा राजन्  
परिवक्रः पितामहम् । स संमन्तां परिबृते रथोत्थैरपराजितः ॥ १० ॥ गहनेऽग्नि-  
रिवोऽसृष्टः प्रजङ्गल दहन् परान् । रथाग्न्यगारचापार्चिरसि शक्तिगदेक्ष्मणः ।  
शरस्फुलिङ्गे भीष्माग्निर्दाहं क्लिष्यतान् ॥ ११ ॥ सुवर्णपुंश्चरिषुतिर्गार्क्षपत्रैः  
सुतेजनैः । कर्णनालीकनारारौ चैच्छादयामास तद्वलम् ॥ १२ ॥ अपातयद्भुजां-  
शैश्च व रथिनश्च शितैः शरैः । मुञ्जतालवनानीव चकार स रथव्रजान् ॥ १३ ॥  
निर्मन्त्र्यानुथान् राजन् गजानश्चांश्च संयुगे । अकरोऽस महाबाहूः सर्वशस्त्रभृता-  
श्चरः ॥ १४ ॥ तस्य ज्यातलनिर्घोषं विस्फुज्जितमिवाशनेः । निशम्य सर्वभूतानि  
समकम्पन्तु भारत ॥ १५ ॥ अमोघा ह्यपतन् वाणाः पितुस्तु भरतर्षभ । नासङ्गन्तु  
तन्मूत्रेषु भीष्मचापच्युताः शराः ॥ १६ ॥ इतवीरान्नुथान् राजन् संयुक्तान् जवनैर्ह-  
थैः । अपश्याम महाराज ह्युपमाणां नुगाजिरे ॥ १७ ॥ चेदिकाशिककषाणां सहस्राणि  
चतुर्दश । महारथाः समाख्याताः कुलपुत्रास्तुभ्युत्तयजः ॥ १८ ॥ अपरावर्तिनः  
सर्वे सुवर्णविकृतधजाः । संग्रामे भीष्ममासाद्य व्यादितस्यमिवास्तुकम् । निमग्नाः

পরলোকায সবাজিরথকুঞ্জরাঃ ॥ ১২ ॥ ভগ্নাক্ষোপস্করান্ কাংশ্চিদ্ভগ্নচক্রাংশ্চ ভার-  
 ত । অপশ্যাম্ মহারাজ শতশোহ্থ সহস্রশঃ ॥ ২০ ॥ সবক্ৰথে রথৈর্ভগ্নৈ রথি-  
 ভিশ্চ নিপাতিতৈঃ । শরৈঃ সকবচৈশ্চিত্রৈঃ পটিউশৈশ্চ বিশাম্পাতে ॥ ২১ ॥ গদা-  
 ভির্ভিন্দিপালৈশ্চ নিশিতৈশ্চ শিলীমুখৈঃ । অনুর্যৈরুপাসঙ্কৈশ্চক্রৈর্ভগ্নৈশ্চ মারি-  
 ষ ॥ ২২ ॥ বাহুভিঃ কাশ্মুকৈঃ খঞ্জৈঃ শিরোভিশ্চ সকুণ্ডলৈঃ । তলত্রৈরঙ্গুলি-  
 ত্রৈশ্চ ধ্বজৈশ্চ বিনিপাতিতৈঃ । চাপৈশ্চ বহুধা ছিন্নৈঃ সমাস্তীৰ্য্যত মেদিনী ॥ ২৩ ॥  
 হতারোহা গজা রাজন্ হযাশ্চ ইতসাদিনঃ । ন্যপতন্তু গতপ্রাণাঃ শতশোহ্থ  
 সহস্রশঃ ॥ ২৪ ॥ যতমানা হি তে বীরা ভবমাণাম্ হারথান্ । নাশকুবন্ বারষিতুং  
 ভীষ্মবাণপ্রপীড়িতান্ ॥ ২৫ ॥ মহেন্দ্রসমবীৰ্য্যেণ বধ্যমানা মহাচমুঃ । অভজ্যত  
 মহারাজ ন চ দ্বৌ সহ ধাবতঃ ॥ ২৬ ॥ আবিদ্ধরথনাগাশ্চ পতিতধ্বজসঙ্কুলম্ ।  
 অনীকং পাণ্ডুপুত্রাণাং হাহাভূতমচেতনম্ ॥ ২৭ ॥ জঘানাত্র পিতা পুত্রং পুত্রশ্চ  
 পিতরং তথা । প্রিযং সখাযঞ্চাক্রন্দে সখা দৈববলাৎকৃতঃ ॥ ২৮ ॥ বিমুচ্য কব-  
 চানন্যে পাণ্ডুপুত্রস্য সৈনিকাঃ । প্রকীর্য্য কেশান্ ধাবন্তঃ প্রত্যদৃশ্যন্তু সর্বশঃ ॥ ২৯ ॥  
 তদনোকুলমিবোদ্ভাস্তমুদ্ভাস্তরথকুবরং । দদৃশে পাণ্ডুপুত্রস্য সৈন্যমার্ত্তস্বরং ত-  
 দা ॥ ৩০ ॥ প্রভজ্যমানং সৈন্যস্ত দৃষ্ট্বা যাদবনন্দনঃ । উবাচ পার্থং বীতস্মুং  
 নিগৃহ রথসত্তমম্ । অযং স কালঃ সম্প্রাপ্তঃ পার্থ যঃ কাঙ্ক্ষিতস্তব ॥ ৩১ ॥ প্রহ-  
 রাষ্ট্মৈ নরব্যাস্থন চেমোহাছিমুহসি । যৎ পুরা কথিতং বীর ভবা রাজ্ঞাং স-  
 মাগমে ॥ ৩২ ॥ বিরাটনগরে তাত সঞ্জয়স্য সমীপতঃ । ভীষ্মদ্রোণনুখান্ সর্বান্  
 ধার্ত্তরাষ্ট্রস্য সৈনিকান্ । সানুবন্ধান্ হনিষ্যামি যেমাং যোৎস্যন্তি সংযুগে ॥ ৩৩ ॥  
 ইতি তৎ কুরুকৌন্তেয সত্যং বাক্যমরিন্দম । ক্ষত্রধর্ম্মমন্মৃত্যু যুধ্যস্ব বিগতজ্বরঃ ॥ ৩৪ ॥  
 ইত্যুক্তো বাসুদেবেন তিৰ্য্যগ্দ্‌ক্ষিরধোমুখঃ । অকান ইব বীতস্মুরিদং বচনমব-  
 বীৎ ॥ ৩৫ ॥ অবধ্যানাং বধং কুত্বা রাজ্যং বা নরকোত্তরম্ । দুঃখানি বনবাসে বা  
 কিম্ম মে স্যাৎ কৃতং ভবেৎ ॥ ৩৬ ॥ চোদযাশ্বান্ যতো ভীষ্মঃ করিষ্যে বচনং তব ।  
 পাতযিষ্যামি দুর্দ্ধর্ষং ভীষ্মং কুরুপিতামহম্ ॥ ৩৭ ॥ ততোহশ্বান্ রজতপ্রখ্যাৎ-  
 শ্চোদযামাস মাধবঃ । যতো ভীষ্মস্ততো রাজন্ দুস্প্রেক্ষ্য রশ্মিবানিব ॥ ৩৮ ॥ তত-  
 স্তৎ পুনরাবৃত্তং যুধিষ্ঠিরবলং মহৎ । দৃষ্ট্বা পার্থং মহাবাহুং ভীষ্মাঘোদ্যতমা-  
 হবে ॥ ৩৯ ॥ ততো ভীষ্মঃ কুরুশ্রেষ্ঠঃ সিংহবদ্বিনদমুহুঃ । ধনঞ্জয়রথংশীঘ্রং শরব-  
 র্ষৈরবাকিরৎ ॥ ৪০ ॥ ক্ষণেন স রথস্তস্য সহস্রঃ সহসারথিঃ । শরবর্ষণে মহতা ন  
 প্রাজ্জাঘত ভারত ॥ ৪১ ॥ বাসুদেবস্তৃস্তুান্তো ধৈর্য্যমাশ্বায সত্বরঃ । চোদযামাস

तानश्वान् विभुमान् भीष्मशायकैः ॥ ४२ ॥ ततः पार्थो धनुर्गृह्य दिव्यं जलद-  
 निश्चनम् । पातयामास भीष्मस्य धनुश्छिन्ना शितैः शरैः ॥ ४३ ॥ स छिन्नधन्वा को-  
 रव्यः पुनरन्यान्महद्गन्धुः । निमेषान्तरमात्रेण सृज्यङ्गक्रेः पिता तव ॥ ४४ ॥ चकष्य च  
 ततो दौर्भागं धनुर्जलदनिःश्चनम् । अथास्य तदपि क्रुद्धश्चिच्छेद धनुर्जङ्गुनः ॥ ४५ ॥  
 तस्य तं पूजयामास लाघवं शान्तनोः सूतः । साधु साधु महाबाहो साधु कुन्ती-  
 सूतेति च ॥ ४६ ॥ समाभाषेयानमपरं प्रगृह्य रूचिरं धनुः । नुमोच समरे भीष्मः  
 शरान् पार्थरथं प्रति ॥ ४७ ॥ अदर्शयद्वासुदेवो हयघाने परं बलम् । मोघान्  
 कूर्धन् शरांस्तस्य मण्डलानि निदर्शयन् ॥ ४८ ॥ शुशुभते नरव्याघ्रौ तौ भीष्म-  
 शरविक्रतौ । गोवृषाविव संरक्तौ विषाणोल्लिखिताङ्कितौ ॥ ४९ ॥ वासुदेवस्तु स-  
 म्प्लेक्ष्य पार्थस्य मृदुयुद्धताम् । भीष्मं शरवर्षाणि सृजन्तमनिशं युधि ॥ ५० ॥ प्रत-  
 पन्तुमिवादित्यं मध्यमासाद्य सैनयोः । वरान् वरान् विनिघ्नन्तं पाण्डुपुत्रस्य सै-  
 निकान् ॥ ५१ ॥ युगान्तमिव कूर्वाणं भीष्मं योधिष्ठिरे बले । नामृष्यत महाबाहू-  
 र्न्माधवः परवीरहा ॥ ५२ ॥ उत्सृज्य रजतप्रख्यानं हयान् पार्थस्य मारिष । वासु-  
 देवस्ततो योगी प्रचक्रन्द महारथात् ॥ ५३ ॥ अभिदुद्राव भीष्मं स भुजप्रह-  
 रणो बली । प्रतोदपाणिस्तुजस्यै सिं हवद्विनदन् मुहः ॥ ५४ ॥ दारयन्मिव पद्भ्यां  
 स जगतीं जगतीश्वरः । क्रोधतामेकणः क्रुषो जिघांसुरमितदुयतिः ॥ ५५ ॥  
 सुंसन्तु इव चेतांसि तावकानां महाहवे । दृष्ट्वा माधवमाक्रन्दे भीष्माघोद्यतम-  
 स्तिके ॥ ५६ ॥ हतो भीष्मो हतो भीष्मस्तत्र तत्र वचो महत् । अक्षयत महाराज  
 वासुदेवतयात्तदा ॥ ५७ ॥ पीतकौशेषसंवीतो मनिश्यामो जनार्दनः । शुशु-  
 भेऽभिद्रवन् भीष्मं विदुन्माली यथायुदः ॥ ५८ ॥ स सिं ह इव मातङ्गं यूथर्वत  
 इवर्षतम् । अभिदुद्राव वेगेन निनदन् वादवर्षतः ॥ ५९ ॥ तमापतन्तं सम्प्लेक्ष्य  
 पुण्डरीकाक्षमाहवे । असन्तुमं रणे भीष्मो विचकष्य महद्गन्धुः । उवाच तैव गोवि-  
 न्दमसन्प्राप्तुन चेतसा ॥ ६० ॥ एहेहि पुण्डरीकाक्ष देवदेव नमोऽस्तु ते ।  
 मामद्य साह्यतश्चेष्ट पातयस्व महाहवे । ६१ ॥ ह्यया हि देव संग्रामे हतस्यापि  
 ममानस । श्रेय एव परं क्रुष लोके भवति सर्वतः ॥ ६२ ॥ सन्नावितोऽस्मि  
 गोविन्द त्रैलोक्येनाद्य संयुगे । प्रहरस्व तथेष्टं वै दासोऽस्मि तव चान-  
 य ॥ ६३ ॥ अन्नगेव ततः पार्थः समभिद्रुत्य केशवम् । निजग्राह महाबाहूर्वा-  
 हृत्यां परिगृह्य वै ॥ ६४ ॥ निगृह्यमाणः पार्थेन क्रुषो राजीबलोचनः । जगा-  
 तैवैनमादाय वेगेन पुरुषोत्तमः ॥ ६५ ॥ पार्थस्तु विरुध्य बलात्तरणो परवी-

রহা। নিজগ্রাহ হৃষীকেশং কথঞ্চিদশমে পদে ॥ ৬৬ ॥ তত এনমুবাচার্ত্তঃ ক্রোধ-  
পর্য্যাকুলেক্ষণম্। নিশ্বসন্তুং যথা নাগমজ্জুনঃ প্রণযাৎ সখা ॥ ৬৭ ॥ নিবর্ত্তস্ব  
মহাবাহো নানৃতং কর্ত্তুমহঁসি। যদ্বয়া কথিতং পূর্ব্বং ন যোৎস্যামীতি কেশব ॥ ৬৮ ॥  
মিথ্যাবাদীতি লোকস্ত্রাং কথষিষ্যতি মাধব। মমৈষ ভারঃ সর্বো হি হনিষ্যামি  
পিতামহম্ ॥ ৬৯ ॥ শপে কেশব শস্ত্রেণ সত্যেন স্মরুতেন চ। অস্তুং যথা গমি-  
ষ্যামি শত্রুণাং শত্রুকর্ষণ ॥ ৭০ ॥ অদৈব্য পশ্য দুর্দ্ধর্ষং পাত্যমানং মহারথম্।  
তারাপতিমিবাপূর্ণমন্তুকালে যদৃচ্ছয়া ॥ ৭১ ॥ মাধবস্তু বচঃ শ্রুত্বা ফাল্লুনস্য মহা-  
অনঃ। অকিঞ্চিদুক্তা সক্রোধ আরুরোহ রথং পুনঃ ॥ ৭২ ॥ তৌ রথস্থৌ নর-  
ব্যাসৌ ভীষ্মঃ শান্তনবঃ পুনঃ। ববর্ষ শরবর্ষণ মেঘো বৃষ্টিয়া যথাচলৌ ॥ ৭৩ ॥  
প্রাণানাদত্ত যোধানাং পিতা দেবব্রতস্তব। গভস্তিভিরিবাদিত্যস্তেজাংসি শিশি-  
রাত্যযে ॥ ৭৪ ॥ যথা কুরুণাং সৈন্যানি বভঞ্জুর্যুধি পাণ্ডবাঃ। তথা পাণ্ডবসৈ-  
ন্যানি বভঞ্জ যুধি তে পিতা ॥ ৭৫ ॥ হতবিদ্রুতসৈন্যাস্তু নিরুৎসাহা বিচেতসঃ।  
নিরীক্ষিতুং নশেকুস্তে ভীষ্মমপ্রতিমং রণে ॥ ৭৬ ॥ মধ্যঙ্গতমিবাদিত্যং প্রত-  
পন্তুং স্বতেজসা। তে বধ্যমানা ভীষ্মেণ শতশোহথ সহস্রশঃ ॥ ৭৭ ॥ বীক্ষাঞ্চ-  
ক্রুশ্মহারাজ পাণ্ডবা ভযপীড়িতাঃ। তথা পাণ্ডবসৈন্যানি দ্রাব্যমানানি ভার-  
ত ॥ ৭৮ ॥ ত্রাতারং নাধ্যগচ্ছন্তু গাবঃ পক্ষগতা ইব। পিপীলিকা ইব ক্ষণা  
দুর্ধলা বলিনা রণে ॥ ৭৯ ॥ মহারথং ভারত দুর্ধ্বকম্পং শরৌষিণং প্রতপন্তুং  
নরেন্দ্রান্। ভীষ্মং ন শেকুঃ প্রতিবীক্ষিতুং তে শরার্চিষং সূর্য্যমিবা তপন্তু ॥ ৮০ ॥  
বিমৃদুতস্তস্য তু পাণ্ডুসৈন্যাস্তু জগামাথ সহস্রশিঃ। ততো বলানাং শ্রমকর্ষি-  
তানাং মনোহবহারং প্রতি সংবভূব ॥ ৮১ ॥

ইতি ভীষ্মপর্ব্বণি ভীষ্মবধপর্ব্বণি .নবমদিবসযুদ্ধসমাপ্তৌ ত্র্যধিকশত-

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ১০৩ ॥



সঞ্জয় উবাচ। যুদ্ধতামেব তেষান্তু ভাস্করে হস্তমুপাগতে। সঙ্ক্যাসমভবদেহারা  
নাপশ্যাম ততো রণম্ ॥ ১ ॥ ততো যুধিষ্ঠিরো রাজা সঙ্ক্যাং সংদৃশ্য ভারত।  
বধ্যমানঞ্চ ভীষ্মেণ ত্যক্তাস্ত্রং ভযবিহ্বলম্ ॥ ২ ॥ স্বসৈন্যঞ্চ পরাবৃত্তং পলায়ন-  
পরাযণম্। ভীষ্মঞ্চ যুধি সংরক্তং পীড়যন্তুং মহারথম্ ॥ ৩ ॥ সোমকাংশ্চ জিতান্  
দৃষ্ট্বা নিরুৎসাহান্মহারথান্। চিন্তুষিষ্বা ততো রাজা অবহারমচোদযৎ ॥ ৪ ॥  
ততোহবহারং সৈন্যানাং চক্রে রাজা যুধিষ্ঠিরঃ। তথৈব তব সৈন্যানামবহারো



হৃভুভদা ॥ ৫ ॥ ততোহবহারং সৈন্যানাং ক্রুত্বা তত্র মহারথাঃ । ন্যবিশস্ত কুরু-  
 শ্রেষ্ঠ সংগ্রামে ক্ষতবিক্ষতাঃ ॥ ৬ ॥ ভীষ্মস্য সমরে কৰ্ম চিন্তয়ানাস্তু পাণ্ডবাঃ ।  
 নালভন্ত তদা শান্তিং ভীষ্মবাণপ্রপীড়িতাঃ ॥ ৭ ॥ ভীষ্মোহপি সমরে জিহ্বা-পাণ্ড-  
 বান্ সহসৃঞ্জয়ান্ । পূজ্যমানস্তব সূতৈর্বন্দ্যমানশ্চ ভারত ॥ ৮ ॥ ন্যবিশস্ত কুরুভিঃ  
 সার্কং হৃষ্টকপৈঃ সমস্ততঃ । ততো রাত্রিঃ সমভবৎ সর্বভূতপ্রমোহিনী ॥ ৯ ॥  
 তস্মিন্ রাত্রিমুখে ঘোরে পাণ্ডবা বৃষ্টিভিঃ সহ । সৃঞ্জয়াশ্চ দুরাধৰ্ষা মন্ত্রাঘ সমুপা-  
 বিশন্ ॥ ১০ ॥ আত্মনিশ্চেষসং সর্বে প্রাপ্তকালং মহাবলাঃ । মন্ত্রযামাসুরব্যগ্রা  
 মন্ত্রনিশ্চযকোবিদাঃ ॥ ১১ ॥ ততো যুধিষ্ঠিরো রাজা মন্ত্রযিত্বা চিরং নৃপ । বাসু-  
 দেবং সমুদীক্ষ্য বচনক্ষেদমাদদে ॥ ১২ ॥ কৃষ্ণ পশ্য মহাত্মানং ভীষ্মং ভীমপরা-  
 ক্রমম্ । গজং নলবনানীব বিমৃদুস্তং বলং মম ॥ ১৩ ॥ ন চৈবৈনং মহাত্মান-  
 মুৎসহামো নিরীক্ষিতুম্ । লেলিহমানং সৈন্যেষু প্রবৃদ্ধমিব পাবকম্ ॥ ১৪ ॥ যথা  
 ঘোরে মহানাগস্তক্ষকো বৈ বিষোলগঃ । তথা ভীষ্মো রণে ক্রুদ্ধস্তীক্ষ্ণশস্ত্রঃ প্রতা-  
 পবান্ ॥ ১৫ ॥ গৃহীতচাপঃ সমরে প্রমুঞ্চনিশিতাঙ্কুরান্ । শক্যো জেতুং যমঃ  
 ক্রুদ্ধো বজ্রুপাণিশ্চ দেবরাট্ ॥ ১৬ ॥ বরুণঃ পাশভূচ্চাপি সগদো বা ধনেশ্বরঃ ।  
 ন তু ভীষ্মঃ সুসংক্রুদ্ধঃ শক্যো জেতুং মহাহবে ॥ ১৭ ॥ সোহহমেবং গতে কৃষ্ণ  
 নিমগ্নঃ শোকসাগরে । আত্মনো বুদ্ধিদৌৰ্বল্যাৎ ভীষ্মমাসাদ্য সংযুগে ॥ ১৮ ॥  
 বনং যাস্যামি দুর্দ্ধৰ্ষ শ্রেষো মে তত্র বৈ গতম্ । ন যুদ্ধং রোচযে কৃষ্ণ হস্তি ভীষ্মো  
 হি নঃ সদা ॥ ১৯ ॥ যথা প্রজ্বলিতং বহ্নিং পতঙ্গঃ সমভিদ্ৰবন্ । একতো মৃত্যু-  
 ভ্যেতি তথাহং ভীষ্মমীষিবান্ ॥ ২০ ॥ ক্ষয়ং নীতোহস্মি বার্ষ্ণেয় রাজ্যহেতোঃ  
 পরাক্রমী । ভ্রাতরশ্চৈব মে শূরাঃ শাযকৈর্ভূশপীড়িতাঃ ॥ ২১ ॥ মৎকৃতে ভ্রাতৃ-  
 সৌহার্দাদ্রাজ্যভ্রষ্টা বনং গতাঃ । পরিক্লিষ্টা তথা কৃষ্ণ মৎকৃতে মধুসূদন ॥ ২২ ॥  
 জীবিতং বহু মন্যেহহং জীবিতং হৃদ্য দুর্লভম্ । জীবিতস্যাদ্য শেষেণ চরিষ্যে ধৰ্ম্ম-  
 মুত্তমম্ ॥ ২৩ ॥ যদি তেহহমনুগ্রাহো ভ্রাতৃভিঃ সহ মাধব । স্বধৰ্ম্মস্যাবিরোধেন  
 হিতং ব্যাহর কেশব ॥ ২৪ ॥ এবং শ্রুত্বা বচস্তস্য কারুণ্যাদহং বিস্তরম্ । প্রত্যু-  
 বাচ ততঃ কৃষ্ণঃ সান্ত্বয়ানো যুধিষ্ঠিরম্ ॥ ২৫ ॥ ধৰ্ম্মপুত্র বিধাদং ত্বং না কৃথাঃ  
 সত্যসঙ্গর । যস্য তে ভ্রাতরঃ শূরা দুর্জযাঃ শত্রুসূদনাঃ ॥ ২৬ ॥ অজ্ঞানো ভীমসৈ-  
 নশ্চ বায়ুগ্নিসমতেজসৌ । মাদ্রীপুত্রো চ বিক্রান্তৌ ত্রিদশানামিবেশ্বরৌ ॥ ২৭ ॥  
 নাং বা নিযুক্ত্ব সৌহার্দাৎ যোৎস্যে ভীষ্মেণ পাণ্ডব । ত্বৎপ্রযুক্তো মহারাজ  
 কিম্ কুর্য্যাৎ মহাহবে ॥ ২৮ ॥ হনিষ্যামি রণে ভীষ্মমাহূষ পুরুষৰ্ষভম্ । পশ্যতাং

ধাৰ্ত্তরাষ্ট্ৰাণাং যদি নেচ্ছতি ফাল্গুনঃ ॥ ২৯ ॥ যদি ভীষ্মে হতে বীরে জয়ং  
 পশ্যসি পাণ্ডব । হস্তাস্ম্যেকরথেনাদ্য কুরুবৃদ্ধং পিতামহম্ ॥ ৩০ ॥ পশ্য মে  
 বিক্রমং রাজন্ মহেন্দ্রস্যেব সংযুগে । বিমুঞ্চস্তং মহাস্ত্রাণি পাতঘিষ্যামি তং  
 রথাৎ ॥ ৩১ ॥ যঃ শত্রুঃ পাণ্ডুপুত্রাণাং মচ্ছত্রুঃ স ন সংশয়ঃ । মদীযা ভবদীযা  
 যে যে মদীযাস্তবৈব তে ॥ ৩২ ॥ তব ভ্রাতা মম সখা সহকী শিষ্য এব চ । মাং-  
 সান্ন্যৎকৃত্য দাস্যামি ফাল্গুনার্থে মহীপতে ॥ ৩৩ ॥ এষ চাপি নরব্যাগ্ধো মৎ-  
 ক্রুতে জীবিতং ত্যজেৎ । এষ নঃ সমযস্তাত তারযেম পরস্পরম্ ॥ ৩৪ ॥ স মাং  
 নিযুক্ত্ব রাজেন্দ্র যথা যোদ্ধা ভবাম্যহম্ । প্রতিজ্ঞাতমুপপ্লব্যে যতং পাথেন  
 পূৰ্বতঃ ॥ ৩৫ ॥ যাতমিষ্যামি গাঞ্জেঘমিতি লোকস্য সন্নিধৌ । পরিরক্ষ্যামিদং তাব-  
 দ্বচঃ পার্থস্য ধীমতঃ ॥ ৩৬ ॥ অনুজ্ঞাতন্তু পার্থেন ময়া কার্যং ন সংশয়ঃ ।  
 অথ বা ফাল্গুনস্যৈষ ভারঃ পরিমিতো রণে ॥ ৩৭ ॥ নিহনিষ্যতি সংগ্রামে ভীষ্মং  
 পরপুরঞ্জযম্ । অশক্যমপি কুর্য্যাদ্ধি রণে পার্থঃ সমুদ্যতঃ ॥ ৩৮ ॥ ত্ৰিংশান্ বা  
 সমুদ্যুক্তান্ সহিতান্ দৈত্যদানবৈঃ । নিহন্যাদজ্জুনঃ সংখ্যে কিমু ভীষ্মং নরা-  
 ধিপ ॥ ৩৯ ॥ বিপরীতো মহাবীর্যেয়া গতসত্ত্বোহল্লচেতনঃ । ভীষ্মঃ শান্তনবো নুনং  
 কর্তব্যং নাববুধ্যতে ॥ ৪০ ॥ যুধিষ্ঠির উবাচ । এবমেতম্মহাবাহো যথা বদসি  
 মাধব । সৰ্ব্বে হেতে ন পর্যাপ্তাস্তব বেগবিধারণে ॥ ৪১ ॥ নিযতং সমবাপ্স্যামি সৰ্ব-  
 মেতদ্যথেষ্পিতম্ । যস্য মে পুরুষব্যাগ্ধো ভবান্ পক্ষে ব্যবস্থিতঃ ॥ ৪২ ॥ সেন্দ্রা-  
 নপি রণে দেবান্ জয়েষং জয়তাম্বর । ত্রযা নাথেন গোবিন্দ কিমু ভীষ্মং মহার-  
 থম্ ॥ ৪৩ ॥ ন তু ত্বামনৃতং কর্তুমুৎসহে স্বার্থগৌবরাৎ । অযুধ্যমানঃ সাহায্যং  
 যথোক্তং কুরু মাধব ॥ ৪৪ ॥ সমযস্তু কৃতঃ কশ্চিন্মম ভীষ্মেণ সংযুগে । মন্ত্রাঘিষ্যে  
 তবার্থাষ ন তু যোৎস্যে কথঞ্চন ॥ ৪৫ ॥ দূৰ্য্যোধনার্থে যোৎস্যামি সত্যমেতদिति-  
 প্রভো । স হি রাজ্যস্য মে দাতা মন্ত্রস্যেব চ মাধব ॥ ৪৬ ॥ তস্মাদেবব্রতং ভূযো  
 বধোপাযার্থমাত্মনঃ । ভবতা সহিতাঃ সৰ্ব্বে প্রযাম মধুসূদন ॥ ৪৭ ॥ তদ্বৎ সহিতা  
 গত্বা ভীষ্মমাশু নরোত্তমম্ । নচিরাৎ সৰ্ব্ব বার্ষেয মন্ত্রং পৃচ্ছাম কৌরবম্ ॥ ৪৮ ॥ স  
 বক্ষ্যতি হিতং বাক্যং তথ্যমস্মাঞ্জনার্দন । যথা চ বক্ষ্যতে কৃষ্ণ তথা কর্ত্বাম্মি সং-  
 যুগে ॥ ৪৯ ॥ স নো জয়স্য দাতা স্যাম্মন্ত্রস্য চ দূতব্রতঃ । বালাঃ পিত্রা বিহীনাশ্চ  
 তেন সযর্দ্ধিতা বয়ম্ ॥ ৫০ ॥ তঞ্জেৎ পিতামহং বৃদ্ধং হস্তমিচ্ছামি মাধব । পিতুঃ  
 পিতরমিচ্ছং ধিগস্তু ক্ষল্রজীবিকাম্ ॥ ৫১ ॥ সঞ্জয উবাচ । ততোহব্রবীন্মহারাজ  
 বার্ষেযঃ কুরুনন্দনম্ । রোচতে মে মহাপ্রাক্ত রাজেন্দ্র তব ভাষিতম্ ॥ ৫২ ॥ দেব-

व्रतः कृती भीष्मः प्रेक्षितेनापि निर्दहेत् । गम्यतां स वधोपायं प्रकृतं सागर-  
 गाम्भृतः ॥ ५३ ॥ वक्रुर्मर्ति सत्यं स ज्ञया पृष्ठो विशेषतः । ते वयं तत्र गच्छामः  
 प्रकृतं कुरुपितामहम् ॥ ५४ ॥ गत्वा शासुनवः वृद्धं मन्त्रं पृच्छाम भारत । स नो-  
 दास्यति मन्त्रं यं तेन योऽस्यामहे परान् ॥ ५५ ॥ एवमामन्त्र्य ते वीराः पाण्डवाः  
 पाण्डुपूर्वज । जग्मुस्ते सहिताः सर्वे वासुदेवश्च वीर्यवान् ॥ ५६ ॥ विमुक्तशस्त्र-  
 कवचा भीष्मस्य सदनं प्रति । प्रविश्य च तदा भीष्मं शिरोभिः प्रणिपेतिरे ॥ ५७ ॥  
 पूजयन्तो महाराज पाण्डवा भरतर्षभम् । प्रणम्य शिरसां चैनं भीष्मं शरणमभ्य-  
 युः ॥ ५८ ॥ तान्नुवाच महाबाहुर्भीष्मः कुरुपितामहः । स्वागतं तव वार्ष्णेय स्वागतं  
 ते धनञ्जय । स्वागतं धर्मपुत्राय भीमाय यमयोस्तथा ॥ ५९ ॥ किं वा कार्यं करो-  
 म्याद्य युष्माकं प्रीतिवर्द्धनम् । सर्वाङ्गानापि कर्तास्मि यद्यपि स्यात् सुदुष्करम् ॥ ६० ॥  
 तथा क्वाणं गान्धेयं प्रीतियुक्तं पुनः पुनः । उवाच राजा दीनान्ना प्रीति-  
 पूर्वमिदं वचः ॥ ६१ ॥ कथं जयेम धर्मज्ञे कथं राज्यं लभेमहि । प्रजानां  
 संक्षयो न स्यात् कथं तस्मै वद प्रभो ॥ ६२ ॥ भवान् हि नो वधोपायं ब्रवीतु  
 स्वयमात्मनः । भवन्तं समरे वीर विषहेन कथं वयम् ॥ ६३ ॥ न हि ते सूक्ष्म-  
 प्यास्ति रक्षुः कुरुपितामह । मङ्गलेनैव धनुषा दृश्यसे संयुगे सदा ॥ ६४ ॥ आद-  
 दानं सन्दधानं विकर्षन्तं धनुर्गच्छ । पश्यामस्त्रां महाबाहो रथे सूर्यमिव स्थि-  
 तम् ॥ ६५ ॥ रथाश्वनरनागानां हस्तारं परवीरहा । कोऽथ वोऽसहते जेतुं  
 द्वां पुमान् भरतर्षभ ॥ ६६ ॥ वर्षता शरवर्षाणि भवता वैशमं कृतम् । क्षयं  
 नीता हि पृथना संयुगे महती मम ॥ ६७ ॥ यथा युधि जयेम द्वां यथा राज्यं  
 भवेन्मम । मम सैन्यस्य च क्षेमं तस्मै ब्रूहि पितामह ॥ ६८ ॥ ततोऽब्रवीच्छा-  
 न्तनवः पाण्डवान् पाण्डुपूर्वज । न कथनधनं कौन्तेय मयि जीवति संयुगे । जयो  
 भवति धर्मज्ञे सत्यमेतद्ब्रवीमि ते ॥ ६९ ॥ निज्जिते मयि युद्धेन रणे जेय्यथ  
 पाण्डवाः । क्षिप्रं मयि प्रहरत यदीच्छथ रणे जयम् ॥ ७० ॥ अन्नुजानामि वः  
 पार्थाः प्रहरन्धं यथा सुखम् । एवं हि सूकृतं मन्ये भवतां विदितो ह्वयम् ।  
 हते मयि हतं सर्वं तस्मादेव विधीयताम् ॥ ७१ ॥ युधिष्ठिर उवाच । ब्रूहि तस्मा-  
 दुपायं नो यथा युद्धे जयेमहि । भवन्तं समरे क्रुद्धं दण्डहस्तमिवास्तकम् ॥ ७२ ॥  
 शक्ये वज्रधरो जेतुः वरुणोऽपि यमस्तथा । न भवान् समरे शक्यः सैन्धुरपि  
 सुरासुरैः ॥ ७३ ॥ भीष्म उवाच । सत्यमेतन्महाराज यथा वदसि पाण्डव । नाहं  
 शक्यो रणे जेतुं सैन्धुरपि सुरासुरैः । आत्तशस्त्रो रणे यत्रो गृहीतवर-

কাশ্মুকঃ ॥ ৭৪ ॥ ন্যস্তশস্ত্রস্ত মাং রাজন্ এতে হ্ন্যস্মহারথাঃ ॥ ৭৫ ॥ নিক্ষিপ্ত-  
 শস্ত্রে পতিতে বিমুক্তকবচধজে । দ্রবমাণে চ ভীতে চ তবাস্মীতি চ বাদিনি ॥৭৬॥  
 স্ত্রিয়াং স্ত্রীনাগধেষে চ বিকলে চৈকপুলকে । অপ্রসূতে দুষ্কৃতৌ চ নযুদ্ধং রোচতে  
 মম ॥ ৭৭ ॥ ইদং মে শৃণু রাজেন্দ্র মকল্পং পূর্বচিন্তিতম্ । অমঙ্গল্যধ্বজং দৃষ্ট্বা ন  
 যুধ্যেয়ং কথঞ্চন ॥ ৭৮ ॥ য এষ দ্রৌপদো রাজন্ তব সৈন্যে মহারথঃ । শিখণ্ডী  
 সমরামর্ষী শুরশ্চ সমিতিঞ্জয়ঃ ॥৭৯॥ যথাভবচ্চ স্ত্রী পূর্বং পশ্চাৎ পুংস্ত্বং সমাগতঃ ।  
 জানন্তি চ ভবন্তোহপি সর্বমেতদ্ব্যথা তথম্ ॥ ৮০ ॥ অর্জুনঃ সমরে শুরঃ পুরস্কৃত্য  
 শিখণ্ডিনম্ । মামেব বিশিথৈস্তীকৈরুভিঃ দংশিতঃ ॥ ৮১ ॥ অমঙ্গল্যধ্বজে  
 তস্মিন্ স্ত্রীপূর্বে চ বিশেষতঃ । ন প্রহর্তুমতীপ্যামি গৃহীতেষুঃ কথঞ্চন ॥ ৮২ ॥  
 তদন্তরং সমাসাদ্য পাণ্ডবো মাং ধনঞ্জয়ঃ । শরৈর্ঘাতযতু ক্ষিপ্রং সমস্তান্দুরত-  
 র্ষভ ॥ ৮৩ ॥ ন তং পশ্যামি লোকেষু যো মাং হন্যাৎ সমুদ্যতম্ । ঋতে কৃষ্ণা-  
 ন্মহাভাগাৎ পাণ্ডবাদ্ধা ধনঞ্জয়াৎ ॥ ৮৪ ॥ এষ তস্মাৎ পুরোধায় পাঞ্চাল্যং তং  
 মমাগ্রতঃ । আন্তশস্ত্রো রণে যত্তো গৃহীতবরকাশ্মুকঃ । মাং পাতযতু বীভৎসুরে-  
 বস্তে বিজযো ধুবঃ ॥ ৮৫ ॥ এতৎ কুরুষ কৌন্তেয যথোক্তং বচনং মম । ততো  
 জেষ্যসি সংগ্রামে ধার্ত্তরাষ্ট্রান্ সমাগতান্ ॥ ৮৬ ॥ সঞ্জয় উবাচ । তেহ্নুজ্জা-  
 তাস্ততঃ পার্থা জগ্মুঃ স্বশিবিরং প্রতি । অভিবাদ্য মহাত্মানং ভীষ্মং কুরুপিতা-  
 মহম্ ॥ ৮৭ ॥ তথোক্তবতি গাঙ্গেষে পরলোকায দীক্ষিতে । অর্জুনো দুঃখসন্তপ্তঃ  
 সত্রীডমিদমব্রবীৎ ॥ ৮৮ ॥ গুরুণা কুরুবৃদ্ধেন কৃতপ্রজ্ঞেন ধীমতা । পিতামহেন  
 সংগ্রামে কথং যোৎস্যামি মাধব ॥ ৮৯ ॥ ক্রৌডতা হি মঘা বাল্যে বাসুদেব মহা-  
 মনাঃ । পাংশুক্షিতগাত্রেণ মহাত্মা কলুষীকৃতঃ ॥ ৯০ ॥ যস্যাহমধিরুহাঙ্কং  
 বালঃ কিল গদাগ্রজ । তাতে ত্যবোচং পিতরং পিতুঃ পাণ্ডোর্মহাত্মনঃ ॥ ৯১ ॥  
 নাহং তাতস্তব পিতুস্তাতোহস্মি তব ভারত । ইতি নামব্রবীদ্বাল্যে যঃ স বধ্যঃ  
 কথং মঘা ॥ ৯২ ॥ কামং বধ্যতু সৈন্যং মে নাহং যোৎস্যে মহাত্মনা । জযো বাস্তু  
 বধো বা মে কথং বা কৃষ্ণ মন্যসে ॥ ৯৩ ॥ বাসুদেব উবাচ । প্রতিজ্ঞায় বধং  
 জিষ্ণো পুরা ভীষ্মস্য সংযুগে । ক্ষত্রধর্ম্মে স্থিতঃ পার্থ কথং নৈনং হনিষ্যসি ॥ ৯৪ ॥  
 পাতয়েনং রথাৎ পার্থ ক্ষত্রিয়ং যুদ্ধদুর্মদম্ । নাহত্বা যুধি গাঙ্গেযং বিজযস্তে  
 ভবিষ্যতি ॥ ৯৫ ॥ দৃষ্টমেতৎ পুরা দেবৈর্গামিষ্যতি যমক্ষয়ম্ । যদৃষ্টং হি পুরা  
 পার্থ তত্তথা ন তদন্যথা ॥ ৯৬ ॥ ন হি ভীষ্মং দুরাধর্ম্মং ব্যাত্তাননমিবাশ্তকম্ ।  
 ত্বদন্যঃ শকুযাঙ্কন্তমপি বজ্রধরঃ স্বয়ম্ ॥ ৯৭ ॥ জহি ভীষ্মং স্থিরো ভূত্বা শৃণু চেদং

वचो मम । यथोवाच पुरा शक्रं महाबुद्धिर्बृहस्पतिः ॥ १८ ॥ ज्यायांसमपि  
 चेद्दृक्त्वं गुणैरपि समन्वितम् । आततायिनमायास्तुं हन्याद्वातकमात्ननः ॥ २२ ॥  
 शाश्वतोऽयं स्थितो धर्मः क्लृप्तिषाणां धनञ्जय । योद्धव्यं रक्षितव्यञ्च यच्छव्यञ्च  
 नसूयिभिः ॥ १०० ॥ अर्जुन उवाच । शिखण्डी निधनं क्रुशं भीष्मस्य भविता श्रुवम् ।  
 दृष्टेव हि सदा भीष्मः पाण्डाल्यं विनिवर्तते ॥ १०१ ॥ ते वयं प्रमुখে तस्य पुर-  
 स्कृत्य शिखण्डिनम् । गाङ्गेषु घातयिष्याम उपायेनेति मे मतिः ॥ १०२ ॥ अहम-  
 न्यान् महेश्वसान् वारयिष्यामि शायकैः । शिखण्ड्यपि युधां श्रेष्ठं भीष्ममेव हि  
 योधयेत् ॥ १०३ ॥ श्रुतं हि कुरूमुख्यस्य नाहं हन्यां शिखण्डिनम् । कन्या ह्येष  
 पुरा भूत्वा पुरुषः समपद्यत ॥ १०४ ॥ इत्येवं निश्चयं क्रुत्वा पाण्डवाः सहमाध-  
 वाः । अनुमान्य महान् प्रययुर्द्धमानसाः ॥ १०५ ॥

इति भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि पाण्डवानां भीष्मेण सह तद्वधोपायमन्त्रणे

चतुरधिकशततमोऽध्यायः ॥ १०४ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । कथं शिखण्डी गाङ्गेषु मत्प्रवर्तित संयुगे । पाण्डवांश्च कथं  
 भीष्मसुगमाचक्षु सञ्जय ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । ततस्ते पाण्डवाः सर्वे सूर्यस्योदयनं  
 प्रति । ताड्यमानास्तु भेरौषु मृदङ्गेष्वानकेषु च ॥ २ ॥ ध्यायन्तु दधिवर्णेषु जल-  
 जेषु समन्ततः । शिखण्डिनं पुरस्कृत्य निर्घाताः पाण्डवा युधि ॥ ३ ॥ क्रुत्वा ब्यूहं  
 महाराज सर्वशत्रुनिवर्हणम् । शिखण्डी सर्वसैन्यानामग्र आसीद्विशाम्पाते ॥ ४ ॥  
 चक्ररक्षो ततस्तस्य भीमसेनधनञ्जयो । पृष्ठतो द्रौपदेयाश्च सौभद्रश्चैव वीर्य-  
 वान् ॥ ५ ॥ सात्यकिश्चैकितानश्च तेषां गोप्रा महारथः । धृष्टद्युम्नस्ततः पश्चात्  
 पाण्डालैरभिरक्षितः ॥ ६ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा यमाभ्यां सहितः प्रभुः ।  
 प्रययौ सिंहनादेन नादयन् भरतर्षभ ॥ ७ ॥ विराटस्तु ततः पश्चात् स्वैन सैन्येन  
 संवृतः । ऋपदश्च महाबाहो ततः पश्चाद्दुपाद्रवत् ॥ ८ ॥ कैकेया ब्रातरः पञ्च  
 धृष्टकेतुश्च वीर्यवान् । जघनं पालयामासुः पाण्डुसैन्यस्य भारत ॥ ९ ॥ एवं  
 ब्यूहं महसैन्यं पाण्डवास्तव बाह्विनीम् । अत्र्यद्रवस्तु संग्रामे त्यक्त्वा जीवितमा-  
 त्ननः ॥ १० ॥ तथैव कुरवो राजन् भीष्मं क्रुत्वा महारथम् । अग्रतः सर्वसैन्यानां  
 प्रययुः पाण्डवान् प्रति । पुल्लैस्तव दुरोधै रक्षितः सुमहाबलैः ॥ ११ ॥ ततो  
 द्रोणो महेश्वसः पुल्लशस्य महाबलः । भगदत्तस्ततः पश्चात् गजानीकेन संवृ-  
 तः ॥ १२ ॥ रूपश्च कृतवर्मा । च भगदत्तमनुव्रतो । काश्याजराजो बलवांस्ततः

পশ্চাৎ সুদক্ষিণঃ ॥১৩॥ মাগধশ্চ জযৎসেনঃ সৌবলশ্চ বৃহদ্বলঃ । তথৈতরে মহে-  
 ষাসাঃ সুশর্ম্মপ্রমুখা নৃপাঃ । জঘনং পালযামাসুস্তব সৈন্যস্য ভারত ॥ ১৪ ॥  
 দিবসে দিবসে প্রাপ্তে ভীষ্মঃ শাস্তনবো যুধি । আশুরানকরোদ্যুহান্ তৈশাচানথ  
 রাক্ষসান্ ॥ ১৫ ॥ ততঃ প্রববৃতে যুদ্ধং তব তেষাঞ্চ ভারত । অন্যান্যং নিম্নতাং  
 রাজন্ যমরাক্ষুবিবর্দ্ধনম্ ॥ ১৬ ॥ অর্জুনপ্রমুখাঃ পার্থাঃ পুরস্কৃত্য শিখণ্ডিনম্ ।  
 ভীষ্মং যুদ্ধেহভ্যবর্ত্তন্ত কিরন্তো বিবিধাঙ্গুরান্ ॥ ১৭ ॥ তত্র ভারত ভীমেন তাডি-  
 তাঁস্তাবকাঃ শটৈঃ । রুধিরৌষপরিঙ্কিমাঃ পরলোকং যযুস্তদা ॥ ১৮ ॥ নকুলঃ  
 সহদেবশ্চ সাত্যকিশ্চ মহারথঃ । তব সৈন্যং সমাসাদ্য পীডযামাসুরোজসা ॥১৯॥  
 তে বধ্যমানাঃ সমরে তাবকা ভরতর্ষভ । নাশকুবন্ বারযিতুং পাণ্ডবানাং মহা-  
 বলম্ ॥ ২০ ॥ ততস্ত্ব তাবকং সৈন্যং বধ্যমানং সমস্ততঃ । সম্প্রাদ্রবদশ দিশঃ-  
 কাল্যমানং মহারথৈঃ ॥ ২১ ॥ ত্রাতারং নাধ্যগচ্ছন্ত তাবকা ভরতর্ষভ । বধ্যমানাঃ  
 শিতৈর্বাণৈঃ পাণ্ডবৈঃ সহসৃঞ্জযৈঃ ॥ ২২ ॥ ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । পীড্যমানং বলং  
 দৃষ্ট্বা পার্থৈর্ভীষ্মঃ পরাক্রমী । যদকার্ষীদ্রণে ক্রুদ্ধস্তম্মমাচক্ষু সঞ্জয ॥ ২৩ ॥ কথং বা  
 পাণ্ডবান্ যুদ্ধে প্রত্যুদ্ঘাতঃ পরস্তপঃ । বিনিম্নন্ সোমকান্ বীরস্তদাচক্ষু মমা-  
 নয ॥ ২৪ ॥ সঞ্জয উবাচ । আচক্ষে তে মহারাজ যদকার্ষীৎ পিতা তব । পীডিতে  
 তব পুলস্য সৈন্যে পাণ্ডবসৃঞ্জযৈঃ ॥ ২৫ ॥ প্রহৃষ্টমনসঃ শূরাঃ পাণ্ডবাঃ পাণ্ডুপু-  
 র্বজ । অভ্যবর্ত্তন্ত নিম্নস্তস্তব পুলস্য বাহিনীম্ ॥ ২৬ ॥ তং বিনাশং মনুষ্যেভ্য  
 নরবারণবাজিনাম্ । নামৃষ্যত তদা ভীষ্মঃ সৈন্যঘাতং রণে পটৈঃ ॥ ২৭ ॥ স পাণ্ড-  
 বায়মহেষাসঃ পাঞ্চালাংশ্চ সমৃঞ্জযান্ । নারাটৈর্বৎসদটৈস্তশ্চ শিতৈরঞ্জলিকৈস্তথা ।  
 অভ্যবর্ষত দুর্দ্ধর্ষস্ত্যক্তা জীবিতমায়নঃ ॥ ২৮ ॥ স পাণ্ডবানাং প্রবরান্ পঞ্চ রাজ-  
 ন্মহারথান্ । আর্তিশস্ত্রান্ রণে যত্তান্ বারযামাস শাযকৈঃ ॥ ২৯ ॥ নানাশস্ত্রাস্ত্র-  
 বর্ষেস্তান্ বীর্য্যামর্ষপ্রবেরিটৈঃ । নিজস্নে সমরে ক্রুদ্ধে হস্ত্যশ্বখাগিতং বহু ॥ ৩০ ॥  
 রথিনোহপাতযদ্রাজনুথেভ্যঃ পুরুষর্ষভ । সাদিনশ্চাশ্বপৃষ্ঠেভ্যঃ পাদাতাংশ্চ সমা-  
 গতান্ । গজারোহান্ গজেভ্যশ্চ পরেষাং জযকাজ্জিণঃ ॥ ৩১ ॥ তমেকং সমরে  
 ভীষ্মং ত্বরমাণং মহারথম্ । পাণ্ডবাঃ সমবর্ত্তন্ত বজ্রহস্তমিবাসুরাঃ ॥ ৩২ ॥ শক্রা-  
 শনিসমস্পর্শান্ বিমুঞ্চমিশিতাঙ্গুরান্ । দিক্শুদৃশ্যত সর্বাশু ঘোরং সন্ধারযন্  
 বপুঃ ॥ ৩৩ ॥ মণ্ডলীকৃতমেবাস্য নিত্যং ধনুরদৃশ্যত । সংগ্রামে যুধ্যমানস্য শক্র-  
 চাপোপমং মহৎ ॥ ৩৪ ॥ তদৃষ্ট্বা সমরে কর্ম্ম পুত্রাস্তব বিশাম্পতে । বিস্ময়ং  
 পরমং গত্বা পিতামহমপূজযন্ ॥ ৩৫ ॥ পার্থা বিমনসো ভূত্বা তৈশ্চকন্ত পিতরং

তব । যুধ্যমানং রণে শূরং বিপ্রচিক্তিমিবামরাঃ । ন চৈনং বারযামাসুৰ্যাত্তানন-  
 মিবাস্তকম্ ॥ ৩৬ ॥ দশমেহহনি সম্প্রাপ্তে রথানীকং শিখণ্ডিনঃ । অদহ্মিশি-  
 তৈর্বাণৈঃ কৃষ্ণবর্ষেব কাননম্ ॥ ৩৭ ॥ তং শিখণ্ডী ত্রিভির্বাণৈরভ্যবিধ্যৎ স্তনা-  
 ন্তরে । আশীবিষমিব ক্রুদ্ধং কালসৃষ্টমিবাস্তকম্ ॥ ৩৮ ॥ স তেনাতিভূষণং বিক্রঃ  
 প্রেক্ষ্য ভীষ্মঃ শিখণ্ডিনম্ । অভিচ্ছন্দম্বিব ক্রুদ্ধঃ প্রহসন্নিদমত্র বীৎ ॥ ৩৯ ॥ কাম-  
 মভ্যস বা মা বা ন ত্বাং যোৎস্যে কথঞ্চন । যৈব হি ত্বং কৃত্য ধাত্ৰা সৈব হি ত্বং শিখ-  
 ণ্ডিনী ॥ ৪০ ॥ তস্য তদ্বচনং শ্রুত্বা শিখণ্ডী ক্রোধমুচ্ছিতঃ । উবাচৈনং তদা  
 ভীষ্মং সৃঙ্কনী পরিসংলিহন্ ॥ ৪১ ॥ জানামি ত্বাং মহাবাহো ক্লিষাংগাং ক্ৰ-  
 ক্রম্ । মযা শ্রুতঞ্চ তে যুদ্ধং জামদগ্ন্যেন বৈ সহ ॥ ৪২ ॥ দিব্যশ্চ তে প্রভা-  
 বোহসং মযা চ বহুশঃ শ্রুতঃ । জানন্নপি প্রভাবন্তে যোৎস্যেহদ্যাহং ত্বয়া  
 সহ ॥ ৪৩ ॥ পাণ্ডবানাং প্রিষং কুর্বন্মান্ননশ্চ নরোত্তম । অদ্য ত্বাং যোধযি-  
 ষ্যামি রণে পুরুষসত্তম ॥ ৪৪ ॥ ধুবঞ্চ ত্বাং হনিষ্যামি শপে সত্যেন তেহগ্রতঃ ।  
 এতচ্ছ্রুত্বা চ মদ্বাক্যং যৎ ক্রমং তৎ সমাচর ॥ ৪৫ ॥ কামমভ্যস বা মা বা ন মে জীবন  
 বিমোক্ষ্যসে । সূদৃষ্টঃ ক্রিষতাং ভীষ্ম লোকোহসং সমিতিঞ্জয় ॥ ৪৬ ॥ সঞ্জয় উবাচ ।  
 এবমুক্ত্বা ততো ভীষ্মং পঞ্চতিন্তপর্ষভিঃ । অবিধ্যত রণে রাজন্ প্রতুমং বাক্যশা-  
 যকৈঃ ॥ ৪৭ ॥ তস্য তদ্বচনং শ্রুত্বা সব্যসাচী মহারথঃ । কালোহর্ষমিতি সঞ্চিন্ত্য  
 শিখণ্ডিনমচোদযৎ ॥ ৪৮ ॥ অহং ত্বামনুযাস্যামি পরান্ বিদ্রাবয়ন্ শরৈঃ । অভি-  
 দ্রব সুসংরুদ্ধো ভীষ্মং ভীমপরাক্রমম্ ॥ ৪৯ ॥ ন হি তে সংযুগে পীড়াং শক্তঃ  
 কর্তুং মহাবলঃ । তস্মাদদ্য মহাবাহো যত্নান্ভীষ্মমভিদ্রব ॥ ৫০ ॥ অহত্বা সমরে  
 ভীষ্মং যদি যাস্যসি মারিষ । অবহাস্যোহস্য লোকস্য ভবিষ্যসি মযা সহ ॥ ৫১ ॥  
 নাবহাস্যা যথা বীর ভবেম পরমাহবে । তথা কুরু রণে যত্নং সাধযস্ব পিতাম-  
 হম্ ॥ ৫২ ॥ অহং তে রক্ষণং যুদ্ধে করিষ্যামি মহাবল । বারযন্ রথিনঃ সর্বান  
 সাধযস্ব পিতামহম্ ॥ ৫৩ ॥ দ্রোণঞ্চ দ্রোণপুত্রঞ্চ রূপঞ্চাথ সুযোধনম্ । চিত্রসেনং  
 বিকর্ণঞ্চ সৈন্ধবঞ্চ জয়দ্রথম্ ॥ ৫৪ ॥ বিন্দান্নু বিন্দাবাবন্ত্যো কাষ্যোজঞ্চ সুদক্ষিণম্ ।  
 ভগদত্তং তথা শূরং মাগধঞ্চ মহাবলম্ ॥ ৫৫ ॥ সৌমদত্তিং তথা শূরনার্ষ্যশৃঙ্গিঞ্চ  
 রাক্ষসম্ । ত্রিগর্ত্তরাজঞ্চ রণে সহ সর্বেষ্মহারথেঃ । অহমাবারিষ্যামি বেলেব নক-  
 রালয়ম্ ॥ ৫৬ ॥ কুরুশ্চ সহিতান্ সর্বান্ যুধ্যমানান্নাহাবলান্ । নিবারিষ্যামি  
 রণে সাধযস্ব পিতামহম্ ॥ ৫৭ ॥

ইতি ভীষ্মপর্ষণি ভীষ্মবধপর্ষণি দশমদিবসযুদ্ধারম্ভে ভীষ্মশিখণ্ডি প্রলাপে  
 পঞ্চাধিকশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১০৫ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । कथं शिखण्डी गाङ्गेयमभ्यधावत् पितामहम् । पाण्डाल्यः सम-  
 रे क्रुद्धो धर्मात्मानं यतव्रतम् ॥ १ ॥ केहरक्षन् पाण्डुवानीके शिखण्डिनमुदायुधम् ।  
 द्रवमाणसुवराकाले जिगीषन्तो महारथाः ॥ २ ॥ कथं शास्तनवो तीर्थः स तस्मि-  
 न्दशमेहनि । अयुध्यत महावीर्याः पाण्डवैः सहसृष्टयैः ॥ ३ ॥ न मृष्यामि रणे  
 तीर्थं प्रत्यूह्यात् शिखण्डिना । कश्चिन्न रथभङ्गोऽस्य धनुर्वाशीर्यतास्यतः ॥ ४ ॥  
 सङ्गय उवाच । नाशीर्यत धनुस्तस्य रथभङ्गे न चाप्युभूत् । युध्यमानस्य संग्रामे  
 तीर्थस्य भरतर्षभ । निम्नतः समरे शत्रुन् शरैः समतपर्वभिः ॥ ५ ॥ अनेकशत-  
 साहस्रास्तावकानां महारथाः । तथा दन्तिगणा राजन् ह्यशैचव सुसज्जिताः । अत्य-  
 वर्तुस्त युद्धाय पुरस्कृत्य पितामहम् ॥ ६ ॥ यथाप्रतिहृतं कौरव्य स चापि समिति-  
 ष्यः । पार्थानामकरोद्धीर्षः सततं समितिक्वयम् ॥ ७ ॥ युध्यमानं महेश्वासं  
 विनिम्नन्तं परान् शरैः । पाण्डालाः पाण्डवैः सार्द्धं सर्वे ते नाभ्यधारयन् ॥ ८ ॥  
 दशमेहनि सम्प्राप्ते ततस्तां रिपुवाहिनीम् । कीर्यमाणं शितैर्बाणैः शत-  
 शोऽथ सहस्रः ॥ ९ ॥ न हि तीर्थं महेश्वासं पाण्डवाः पाण्डुपूर्वज । अशक्रुव-  
 नुणे जेतुं पाशहस्तमिवासुक्तम् ॥ १० ॥ अथोपायान्महाराज सव्यासाची धनङ्गयः ।  
 त्रासयन्नुत्थिनः सर्वान् वीभत्सुरपराजितः ॥ ११ ॥ सिंहवद्विनदन्नुच्छेर्धनुर्ज्यां  
 विक्लिपन् मुहुः । शरौघान् विक्लिपन् पार्थो व्यचरत् कालवद्रेणे ॥ १२ ॥ तस्य  
 शक्रेण विव्रस्तास्तावका भरतर्षभ । सिंहस्येव मृगा राजन् व्यद्ववस्तु महाभ-  
 यात् ॥ १३ ॥ जयन्तं पाण्डवं दृष्ट्वा ह्यसैन्यक्षतिपीडितम् । दुर्येयाधनस्ततो  
 तीर्थमत्र वीदुःशपीडितः ॥ १४ ॥ एष पाण्डुसुतस्तात श्वेताश्वः क्रुशःसारथिः । दह-  
 ते मामकान् सर्वान् क्रुशवत्सेव काननम् ॥ १५ ॥ पश्य सैन्यानि गाङ्गेय द्रवमा-  
 णानि सर्वशः । पाण्डवेन युधांश्रेष्ठ काल्यमानानि संयुगे ॥ १६ ॥ यथा पशुगणान्  
 पालः सकालयति कानने । तथेदं मामकं सैन्यं काल्यते शत्रुतापन ॥ १७ ॥  
 धनङ्गयशरैर्भग्नं द्रवमाणं ततस्ततः । तीर्मोहप्येव दुराधर्यो विद्रावयति मे  
 बलम् ॥ १८ ॥ सात्यकिश्चेकितानश्च माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ । अभिमन्युश्च विक्रा-  
 न्तो वाहिनीं द्रवते मम ॥ १९ ॥ धृष्टद्युम्नस्तथा शूरो राक्षसश्च घटोत्कचः ।  
 व्यद्रावयेतां सहसा सैन्यं मम महारणे ॥ २० ॥ वध्यमानस्य सैन्यस्य सर्वै-  
 रेभिर्महारथैः । नान्यां गतिं प्रपश्यामि स्थाने युद्धे च भारत । ऋते ह्यं  
 पुरुषव्याघ्र देवतुल्यपराक्रमम् ॥ २१ ॥ पर्य्याप्तोऽतु भवान् क्षिप्रं पीडितानां  
 गतिर्भव ॥ २२ ॥ एवमुक्त्वा महाराज पिता देवव्रतस्तव । चिन्तयिष्या मुहूर्तं क्रुश



निश्चयमात्मनः । तव सङ्कारयन् पुल्लमत्रवीं शान्तुनोः सूतः ॥ २३ ॥ दुर्योधन  
विजानीहि स्थिरो भूत्वा विशाम्पते । पूर्वकालस्तव मया प्रतिज्जातं महाबल ॥ २४ ॥  
इत्वा दश सहस्राणि क्लृप्त्रियाणां महान्नाम् । संग्रामाद्यपयातव्यमेतं कर्म ममा-  
ह्निकम् ॥ २५ ॥ इति तं कृतवांश्चाहं यथोक्तं भरतर्षभ । अद्य चापि महं  
कर्म प्रकरिष्ये महाबल ॥ २६ ॥ अहं वा निहतः शेष्ये हनिष्ये वांद्य पाण्ड-  
वान् । अद्य ते पुरुषव्याघ्र प्रतिमोक्ष्ये ऋणं महं । तर्त्तपिण्डकृतं राजमिहतः  
पुत्रनामुखे ॥ २७ ॥ इत्युक्त्वा भरतश्रेष्ठ क्लृप्त्रियान् प्रवपञ्चरैः । आसर्साद्  
दुराधर्षः पाण्डवानामनीकिनीम् ॥ २८ ॥ अनीकमध्ये तिष्ठन्तं गाक्षेयं पुरुषर्षभ ।  
आशीविषमिव क्रुद्धं पाण्डवाः प्रत्यवारयन् ॥ २९ ॥ दशमेहहनि भीष्मस्तु दर्शयन्  
शक्तिमात्मनः । राजन् शतसहस्राणि सोऽहवधीं कुरूनन्दन ॥ ३० ॥ पाण्डालानां  
ये श्रेष्ठा राजपुत्रा महारथाः । तेषामादत्त तेजांसि जलं सूर्य्य इवांशु-  
भिः ॥ ३१ ॥ इत्वा दश सहस्राणि कुञ्जराणां तरश्चिनाम् । सारोहाणां महाराज  
हयानां ऋषुतस्तथा ॥ ३२ ॥ पूर्णे शतसहस्रे द्वे पादातानां नरोत्तमः । प्रज-  
ङ्गाल रणे भीष्मो विधूम इव पावकः ॥ ३३ ॥ न चेमं पाण्डवेयानां केचिच्छे-  
कुर्निरीक्षितुम् । उत्तरं मार्गमास्थाय तपस्तमिव भास्करम् ॥ ३४ ॥ ते पाण्डवेयाः  
संरक्ता महेष्वासैन पीडिताः । वधायाभ्यद्रवन् भीष्मं सृञ्जयाश्च महारथाः ॥ ३५ ॥  
स युध्यमानो बह्वृत्तिर्भीष्मः शान्तुनवस्तदा । अवकीर्णो महामेरुः शैलो मेघैरिवा-  
सितैः ॥ ३६ ॥ पुल्लास्तु तं व गाक्षेयं समस्तां पर्यवारयन् । महत्या सेनया  
सार्द्धं ततो युद्धमवर्तत ॥ ३७ ॥

इति भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मपराक्रमे षडधिकशत-

तमोऽध्यायः ॥ १०७ ॥



सञ्जय उवाच । अङ्गुनस्तुरणे राजन् दृष्ट्वा भीष्मस्य विक्रमम् । शिखण्डिनमथो-  
वाच समतेयहि पितामहम् ॥ १ ॥ न चापि भीष्मया कार्य्या भीष्मादद्य कथञ्चन । अह-  
मेनं शरैस्त्यैः पातयिष्ये रथोत्तमां ॥ २ ॥ एवमुक्तुस्तु पार्थेन शिखण्डी  
भरतर्षभ । अभ्यद्रवत गाक्षेयं श्रुत्वा पार्थस्य भाषितम् ॥ ३ ॥ धूर्तदुग्धस्तथा  
राजन् सौभद्रश्च महारथः । हर्षावाद्रवतां भीष्मं श्रुत्वा पार्थस्य भाषितम् ॥ ४ ॥  
विराट्द्रुपदो वृद्धो कुन्तिभोजश्च दंशितः । अभ्यद्रवन्त गाक्षेयं पुल्लस्य  
तव पश्यातः ॥ ५ ॥ नकुलः सहदेवश्च धर्मराजश्च वीर्यवान् । तथेतराणि सै-

ন্যানি সর্বাণ্যেব বিশাম্পতে ॥ ৬ ॥ প্রত্যাঙ্ঘযুস্তাবকাশ্চ সমেতাংস্তান্মহার-  
 থান্ । যথাশক্তি যথোৎসাহং তন্মে নিগদতঃ শূণ্ ॥ ৭ ॥ চিত্রসেনো মহারাজ  
 চেকিতানং সমভ্যাযাৎ । ভীষ্মপ্রেম্পুং রণে যাস্তুং বৃষং ব্যাঘ্রশিশুর্যথা ॥ ৮ ॥ ধৃষ্-  
 দ্যম্নং মহারাজ ভীষ্মাস্তিকমুপাগতম্ । হ্রমাণং রণে যন্তং রুতবর্ষ্মা ন্যবারযৎ ॥ ৯ ॥  
 ভীমসৈনং সুসংক্রুৎ গাঙ্গেয়স্য বধৈষণম্ । হ্রমাণো মহারাজ সৌমদত্তিন্যবা-  
 রযৎ ॥ ১০ ॥ তথৈব নকুলং শূরং কিরন্তুং শায়কান্ বহূন্ । বিকর্ণো বারযামাস  
 ইচ্ছন্ ভীষ্মস্য জীবিতম্ ॥ ১১ ॥ সহদেবং তথা রাজন্ যাস্তুং ভীষ্মরথং প্রতি ।  
 বারযামাস সংক্রুৎ রূপঃ শারদতো যুধি ॥ ১২ ॥ রাক্ষসং ক্রুরকর্মাণং তৈম-  
 সেনিং মহাবলম্ । ভীষ্মস্য নিধনপ্রেম্পুং দুর্ম্মখোহভ্যদ্রবদ্বলী । সাত্যকিং সমরে  
 ক্রুৎকার্যশৃঙ্গিরবারযৎ ॥ ১৩ ॥ অভিমন্যুং মহারাজ যাস্তুং ভীষ্মরথং প্রতি ।  
 সুদক্ষিণো মহারাজ কাষোজঃ প্রত্যবারযৎ ॥ ১৪ ॥ বিরাটক্রুপদৌ বৃদ্ধৌ সমে-  
 তাবরিমর্দনৌ । অশ্বথামা ততঃ ক্রুদ্ধো বারযামাস ভারত ॥ ১৫ ॥ তথা পাণ্ডুসুতং  
 জ্যেষ্ঠং ভীষ্মস্য বধকাজ্জিগম্ । ভারদ্বাজো রণে যন্তো ধর্ম্মপুত্রমবারযৎ ॥ ১৬ ॥  
 অর্জুনং রতসং যুদ্ধে পুরস্কৃত্য শিখণ্ডিনম্ । ভীষ্মপ্রেম্পুং মহারাজ তাপযন্তুং  
 দিশো দশ । দুঃশাসনো মহেষাসো বারযামাস সংযুগে ॥ ১৭ ॥ অন্যে চ তাবকা  
 যোধাঃ পাণ্ডবানাং মহারথান্ । ভীষ্মস্যভিমুখং যাতান্ বারযামাসুরাহবে ॥ ১৮ ॥  
 ধৃষ্টিদ্যুম্নস্ত সৈন্যানি প্রাক্রোশংস্ত পুনঃ পুনঃ । অভ্যদ্রবত সংরুদ্ধৌ ভীষ্মমেকং  
 মহারথম্ ॥ ১৯ ॥ এষোহর্জুনো রণে ভীষ্মং প্রযাতি কুরুনন্দনঃ । অভ্যদ্রবত মা  
 তৈষ্ঠ ভীষ্মো ন প্রাপ্স্যতে হি বঃ ॥ ২০ ॥ অর্জুনং সমরে যোদ্ধং নোৎসহেতাপি  
 বাসবঃ । কিমু ভীষ্মো রণে বীরা গতসত্ত্বোহল্পজীবিতঃ ॥ ২১ ॥ ইতি সেনাপতেঃ  
 শ্রুত্বা পাণ্ডবানাং মহারথাঃ । অভ্যদ্রবন্ত সংহৃষ্টা গাঙ্গেয়স্য রথং প্রতি ॥ ২২ ॥  
 আগচ্ছমানান্ সমরে বীর্যেয়ীঘান্ প্রবলানিব । ন্যবারযন্ত সংহৃষ্টাস্তাবকাঃ পুরু-  
 ষর্ষভাঃ ॥ ২৩ ॥ দুঃশাসনো মহারাজ ভযং ত্যক্ত্বা মহারথঃ । ভীষ্মস্য জীবিতা-  
 কাজ্জী ধনঞ্জয়মুপাদ্রবৎ ॥ ২৪ ॥ তথৈব পাণ্ডবাঃ শূরা গাঙ্গেয়স্য রথম্পৃতি ।  
 অভ্যদ্রবন্ত সংগ্রামে তব পুত্রান্মহারথান্ ॥ ২৫ ॥ তত্রাদ্রুতমপশ্যাম চিত্রকপং  
 বিশাম্পতে । দুঃশাসনরথং প্রাপ্য যৎ পার্থো নাভ্যবর্তত ॥ ২৬ ॥ যথা বারযতে  
 বেলা ক্ষুদ্রতোষং মহার্ণবম্ । তথৈব পাণ্ডবং ক্রুৎকং তব পুত্রো ন্যবারযৎ ॥ ২৭ ॥  
 উভৌ তৌ রথিনাং শ্রেষ্ঠাবুভৌ ভারত দুর্জয়ৌ । উভৌ চন্দ্রার্কসদৃশৌ কাস্ত্য  
 দীপ্ত্যা চ ভারত ॥ ২৮ ॥ তৌ তথা জাতসংরস্তাবন্যোন্যবধকাজ্জিগর্ণৌ । সমী-

যতুর্ন্যহাসংখ্যে মঘশক্রৌ যথা পুরা ॥ ২২ ॥ দুঃশাসনো মহারাজ পাণ্ডবং বিশি-  
 থৈস্ত্রিভিঃ । বাসুদেবঞ্চ বিংশত্যা তাদযামাস সংযুগে ॥ ৩০ ॥ ততোহজ্জুনো  
 জাতমন্যুর্বার্ষেণং বীক্ষ্য পীড়িতম্ । দুঃশাসনং শতেনাজৌ নারাচানাং সমাপ-  
 যৎ । তে তস্য কবচং ভিত্ত্বা পপুঃ শোণিতমাহবে ॥ ৩১ ॥ দুঃশাসনস্ততঃ ক্রুদ্ধঃ  
 পার্থং বিব্যাধ পঞ্চভিঃ । ললাটে ভরতশ্রেষ্ঠ শরৈঃ সমতপর্ষতিঃ ॥ ৩২ ॥ ললাট-  
 ষ্ঠৈস্ত্ব তৈর্বাণৈঃ শুশুভে পাণ্ডবো রণে । যথা মৈরুর্ন্যহারাজ শৃঙ্গৈরত্যর্থমুচ্ছি-  
 তৈঃ ॥ ৩৩ ॥ সোহতিবিদ্ধো মহেষাসঃ পুন্ত্ৰেণ তব ধম্বিনা । ব্যরাজত রণে  
 পার্থঃ কিংশুকঃ পুষ্পবানিব ॥ ৩৪ ॥ দুঃশাসনং ততঃ ক্রুদ্ধঃ পীড়যামাস পাণ্ডবঃ ।  
 পর্ষণীব সুসংক্রুদ্ধো রাহুঃ পূর্ণং নিশাকরম্ ॥ ৩৫ ॥ পীড়্যমানো বলবতা পুত্রস্তব  
 বিশাম্পতে । বিব্যাধ সমরে পার্থং কঙ্কপত্রৈঃ শিলাশিতৈঃ ॥ ৩৬ ॥ তস্য পার্থো  
 ধনুশ্চিত্ত্বা রথঞ্চাস্য ত্রিভিঃ শরৈঃ । আজঘান ততঃ পশ্চাৎ পুত্রস্তে নবভিঃ  
 শরৈঃ ॥ ৩৭ ॥ সোহন্যৎ কান্মুকমাদায় ভীষ্মস্য প্রমুখে স্থিতম্ । অজ্জুনং পঞ্চ-  
 বিংশত্যা বাহ্নোরুরসি চাপর্ষৎ ॥ ৩৮ ॥ তস্য ক্রুদ্ধো মহারাজ পাণ্ডবঃ শত্রুতা-  
 পনঃ । অপ্রৈষীদ্বিশিখান্ ঘোরান্ যমদণ্ডোপমান্ বহুন্ ॥ ৩৯ ॥ অপ্রাপ্তানেব  
 তান্ বাণান্ চিচ্ছেদ তনযস্তব । যতমানস্য পার্থস্য তদদ্ভুতমিবাভবৎ । পার্থঞ্চ  
 নিশিতৈর্বাণৈরবিধ্যতনযস্তব ॥ ৪০ ॥ ততঃ ক্রুদ্ধো রণে পার্থঃ শরান্ সন্ধায় কান্মু-  
 কে । প্রেষযামাস সমরে স্বর্ণপুত্ৰান্ শিলাশিতান্ ॥ ৪১ ॥ ন্যমজ্জংস্তে মহারাজ  
 তস্য কাযে মহাত্মনঃ । যথা হংসা মহারাজ তদাগং প্রাপ্য ভারত ॥ ৪২ ॥ পীডি-  
 তশ্চৈব পুত্রস্তে পাণ্ডবেন মহাত্মনা । হিত্বা পার্থং রণে তুর্ণং ভীষ্মস্য রথমাত্র-  
 জৎ । অগাধে মজ্জতস্তস্য দ্বীপো ভীষ্মোহভবত্তদা ॥ ৪৩ ॥ প্রতিলভ্য ততঃ  
 সংজ্ঞাং পুত্রস্তব বিশাম্পতে । অবারযত্ততঃ শূরো ভূষ এব পরাক্রমী ॥ ৪৪ ॥  
 শরৈঃ সূনিশিতৈঃ পার্থং যথা বৃত্রং পুরন্দরঃ । নির্বিভেদ মহাকাযো বিব্যথে নৈব  
 চাজ্জুনঃ ॥ ৪৫ ॥

ইতি ভীষ্মপর্ষণি ভীষ্মবধপর্ষণি অজ্জুনদুঃশাসনসমাগমে সপ্তাধিক-

শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১০৭ ॥



সঞ্জয় উবাচ । সাত্যকিং দংশিতং যুদ্ধে ভীষ্মাষাভ্যুদ্যতং রণে । আর্ষ্যশূঙ্গি-  
 ন্মহেষাসো বারযামাস সংযুগে ॥ ১ ॥ মাধবস্ত্ব সুসংক্রুদ্ধো রাক্ষসং নবভিঃ শরৈঃ ।  
 আজঘান রণে রাজন্ প্রহসন্নিব ভারত ॥ ২ ॥ তথৈব রাক্ষসো রাজন্ মাধবং

নবভিঃ শরৈঃ । অর্দযামাস রাজেন্দ্র সংক্রুদ্ধঃ শিনিপুঙ্গবম্ ॥ ৩ ॥ শৈনেযঃ শর-  
 সঙ্ঘস্ত প্রেষয়ামাস সংযুগে । রাক্ষসায় সুসংক্রুদ্ধো মাধবঃ পরবীরহা ॥ ৪ ॥ ততো  
 রক্ষো মহাবাহুং সাত্যকিং সত্যবিক্রমম্ । বিব্যাধ বিশিথৈস্তীকৈঃ সিংহনাদং  
 ননাদ চ ॥ ৫ ॥ মাধবস্তু ভূশং বিদ্ধো রাক্ষসেন রণে তদা । ধৈর্য্যমালম্ব্য তেজস্বী  
 জহাস চ ননাদ চ ॥ ৬ ॥ ভগদত্তস্ততঃ ক্রুদ্ধো মাধবং নিশিতৈঃ শরৈঃ । তাডযা-  
 মাস সমরে তোত্রৈরিব মহাগজম্ ॥ ৭ ॥ বিহায রাক্ষসং যুদ্ধে শৈনেযো রথিনা-  
 স্বরঃ । প্রাগ্জ্যোতিষায় চিক্লেপ শরান্ সমতপর্ষণঃ ॥ ৮ ॥ তস্য প্রাগ্জ্যো-  
 তিষো রাজা মাধবস্য মহদ্ধনুঃ । চিচ্ছেদ শিতধারেণ ভল্লেন ক্রুতহস্তবৎ ॥ ৯ ॥  
 অথান্যদ্ধনুরাদায় বেগবৎ পরবীরহা । ভগদত্তং রণে ক্রুদ্ধং বিব্যাধ নিশিতৈঃ  
 শরৈঃ ॥ ১০ ॥ সোহতিবিদ্ধো মহেষ্বাসঃ সৃক্ণী পরিসংলিহন । শক্তিং কনকবৈ-  
 দূর্য্যভূষিতামাযসীং দৃঢ়াম্ । যমদণ্ডোপমাং ঘোরাং চিক্লেপ পরমাহবে ॥ ১১ ॥  
 তামাপতন্তীং সহসা তস্য বাহুবলৈরিতাম্ । সাত্যকিঃ সমরে রাজন্ দ্বিধা চিচ্ছেদ  
 শায়কৈঃ । ততঃ পপাত সহসা মহোক্লেব হতপ্রভা ॥ ১২ ॥ শক্তিং বিনিহতাং  
 দৃষ্ট্বা পুল্লস্তব বিশাম্পতে । মহতা রথবংশেন বারযামাস মাধবম্ ॥ ১৩ ॥ তথা  
 পরিবৃতং দৃষ্ট্বা বার্ষেযানাং মহারথম্ । দুৰ্য্যোধনো ভূশং হৃষ্টো ভ্রাতৃন্ সর্ষানু-  
 বাচ হ ॥ ১৪ ॥ তথা কুরুত কৌরব্য যথা বঃ সাত্যকো যুধি । ন জীবন্ প্রতিনি-  
 র্য্যতি মহতোহস্মাদ্রথত্রজাৎ । তস্মিন্ হতে হতং মন্যে পাণ্ডবানাং মহদ্ধ-  
 লম্ ॥ ১৫ ॥ তথৈতি চ বচস্তস্য পরিগৃহ মহারথাঃ । শৈনেযং যোধয়ামাসু ভীষ্মস্য  
 প্রমুখে তদা ॥ ১৬ ॥ অভিমন্যুং তদাযান্তং ভীষ্মস্যাত্যুদ্যতং রণে । কাষোজ-  
 রাজো বলবান্ বারযামাস ভারত ॥ ১৭ ॥ আজ্জুনিং নৃপতির্বিদ্ধা শরৈঃ সমতপ-  
 র্ঘভিঃ । পুনরেব চতুষ্টয়া রাজন্ বিব্যাধ তং নৃপ ॥ ১৮ ॥ সুদর্শিনস্তু সমরে  
 পুনর্বিব্যাধ পঞ্চভিঃ । সারথিঞ্চাস্য নবভিরিচ্ছন্ ভীষ্মস্য জীবিতম্ ॥ ১৯ ॥ তদ্যু-  
 ক্তমাসীৎ সুমহৎ তযোস্তুত্র সমাগমে । যদভ্যধাবদ্যাদ্বেষং শিখণ্ডী শত্রুকর্ষ-  
 ণঃ ॥ ২০ ॥ বিরাটক্রপদৌ বৃদ্ধৌ বারষস্তৌ মহাচমুম্ । ভীষ্মঞ্চ যুধি সংরদ্ধাবা-  
 দ্রবস্তৌ মহারথৌ ॥ ২১ ॥ অশ্বখামা রণে ক্রুদ্ধঃ সমিষাদ্রথসত্তমঃ । ততঃ প্রব-  
 বৃতে যুদ্ধং তযোস্তুস্য চ ভারত ॥ ২২ ॥ বিরাটৌ দশভির্ভল্লৈরাজঘান পরস্তপঃ ।  
 যতমানং মহেষ্বাসং দ্রৌণিমাহবশোভিনম্ ॥ ২৩ ॥ ক্রপদশ্চ ত্রিভির্বাণৈর্বিব্যাধ  
 নিশিতৈস্তদা । গুরুপুল্লং সমাসাদ্য প্রহরন্তৌ মহাবলৌ ॥ ২৪ ॥ অশ্বখামা  
 ততস্তৌ তু বিব্যাধ বহুভিঃ শরৈঃ । বিরাটক্রপদৌ বীরৌ ভীষ্মং প্রতি সমুদ্যতৌ ॥ ২৫ ॥

तद्वाद्भुतमपश्याम वृद्धयोश्चरितं महत् । यद्द्वौविशायकान् घोरान् प्रत्यवार-  
 यतां युधि ॥२७॥ सहदेवं तथायास्तुं रूपः शारद्वतोहृत्प्रयात् । यथा नागो वने  
 नागं गन्तो मन्तुमुपाद्रवत् ॥ २९ ॥ रूपश्च समरे शूरो माद्रीपुत्रं महारथम् ।  
 आजघान शरैस्तूर्णं सप्तत्या रुक्मभूषणैः ॥ २८ ॥ तस्य माद्रीसुतश्चापं द्विधा  
 चिच्छेद शायकैः । अथैनं छिन्नधन्वानं विव्याध नवभिः शरैः ॥ २९ ॥ सोऽन्यात्  
 कार्मुकमादाय समरे भारसाधनम् । माद्रीपुत्रं सुसंज्ञकं दशभिर्निशितैः  
 शरैः । आजघानोरसि क्रुद्ध इच्छन् भीष्मस्य क्षीवितम् ॥ ३० ॥ तथैव पाण्डवो  
 राजन् शारद्वतममर्षणम् । आजघानोरसि क्रुद्धो भीष्मस्य वधकाङ्क्षया । तयोर्बुद्धं  
 समभवत् घोररूपं भयावहम् ॥ ३१ ॥ नकुलस्तु रणे क्रुद्धो विकर्णः शत्रुतापनः ।  
 विव्याध शायकैः षट्या रुक्मन् भीष्मं महाबलम् ॥ ३२ ॥ नकुलोऽपि भृशं विद्व-  
 स्तव पुल्लेण धीमता । विकर्णं सप्तसप्तत्या निर्विभेद शिलीमुथैः ॥ ३३ ॥ तत्र  
 तौ नरशार्दूलौ भीष्महेतोः परतृप्तौ । अन्योन्यां जम्बतुर्वीरौ गोष्ठे गोरुष-  
 भाविव ॥ ३४ ॥ षटोऽकचं रणे यास्तुं निम्नस्तुस्तव वाहिनीम् । दुर्मुखः समरे  
 प्रायात् भीष्महेतोः पराक्रमी ॥ ३५ ॥ हैडिस्वस्तु रणे राजन् दुर्मुखं शत्रुता-  
 पनम् । आजघानोरसि क्रुद्धः शरैर्गानतपर्वणा ॥ ३६ ॥ भीमसेनसुतश्चापि दुर्मुखः  
 सुमुथैः शरैः । षट्या वीरो नदन् हर्षेण विव्याध रणमूर्धनि ॥ ३७ ॥ धृष्टद्युम्नं  
 तथायास्तुं भीष्मस्य वधकाङ्क्षिणम् । हार्दिक्यो वारयामास रथश्रेष्ठं महारथम् ॥ ३८ ॥  
 हार्दिक्यं पार्श्वतश्चापि विद्ध्वा पञ्चभिरावसैः । पुनः पञ्चाशता तूर्णं तिष्ठतिष्ठेति  
 चात्रवीत् । आजघान महाबाहूः पार्श्वतं तं महारथम् ॥ ३९ ॥ तथैव पार्श्वतो-  
 राजन् हार्दिक्यं नवभिः शरैः । विव्याध निशितैस्तृणैः कर्कपत्रैरजिक्कगैः ॥ ४० ॥  
 तयोः समभवद्बुद्धं भीष्महेतोर्महारणे । अन्योन्यातिशये युक्तं यथा वृत्रम-  
 हेन्द्रयोः ॥ ४१ ॥ भीमसेनं तथायास्तुं भीष्मं प्रति महारथम् । भूरिशवा-  
 त्रयास्तूर्णं तिष्ठतिष्ठेति चात्रवीत् ॥ ४२ ॥ सौमदन्तिरथो भीममाजघानस्तना-  
 स्तरे । नाराचेन सूतीक्ष्णं रुक्मपुञ्जेन संयुगे ॥ ४३ ॥ उरस्त्रेण वतौ तेन  
 भीमसेनः प्रतापवान् । स्कन्दशक्त्या यथा क्रौञ्चः पुरा नृपतिसत्तम ॥ ४४ ॥ तौ  
 शरान् सूर्यसङ्काशान् कर्मारपरिमाज्जितान् । अन्योन्यस्य रणे क्रुद्धो चिक्किपाते  
 मुहूर्मुहूः ॥ ४५ ॥ भीमो भीष्मवधाकाङ्क्षी सौमदन्तिं महारथम् । तथा भीष्मजये  
 गृद्धः सौमदन्तिस्तु पाण्डवम् । कृतप्रतिकृते वतौ योधयामासतू रणे ॥ ४६ ॥ युधि-  
 स्तिरस्तु वौरव्य महत्या सेनयावृतं । भीष्माभिमुखमायास्तुं भारद्वाजो न्यवार-

যৎ ॥ ৪৭ ॥ দ্রোণস্য রথনির্ঘোষণং পঙ্কজন্যানিনদোপমম্ । শ্রদ্ধা প্রভদ্রকা রাজন্  
সমকম্পান্ত মারিষ ॥ ৪৮ ॥ সা সেনা মহতী রাজন্ পাণ্ডুপুত্রস্য সংযুগে । দ্রোণেন  
বারিতা যত্রা ন চচাল পদাৎ পদম্ ॥ ৪৯ ॥ চেকিতানং রণে ক্রুদ্ধং ভীষ্মং প্রতি  
জনেশ্বর । চিত্রসেনস্তব স্মৃতঃ ক্রুদ্ধকমবারিষৎ ॥ ৫০ ॥ ভীষ্মহেতোঃ পরাক্রান্তশিচত্র-  
সেনো মুহারথঃ । চেকিতানং পরং শক্ত্যা যোধয়ামাস ভারত ॥ ৫১ ॥ তথৈব  
চেকিতানোহপি চিত্রসেনমবারিষৎ । তক্ষুক্ষমাসীৎ সুমহত্তযোস্তত্র সমাগমে ॥ ৫২ ॥  
অঙ্কুরনো বার্যমাণস্ত বহুশস্ত্র কারত । বিমুখীকৃত্য পুত্রং তে সেনাং তব মম-  
দ হ ॥ ৫৩ ॥ দুঃশাসনোহপি পন্নয়া শক্ত্যা পার্থমবারিষৎ । কথং ভীষ্মং ন নো-  
হন্যাদিতি নিশ্চিত্য ভারত ॥ ৫৪ ॥ সা বধ্যমানা সমরে পুত্রস্য তব বাহিনী ।  
লোড্যতে রথিভিঃ শ্রেষ্ঠৈস্তত্র তত্রৈব ভারত ॥ ৫৫ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি দ্বন্দ্বযুদ্ধে অষ্টাধিকশত-  
তমোহধ্যায়ঃ ॥ ১০৮ ॥



সঞ্জয় উবাচ । অথ বীরো মহেষ্ণাসো মত্তবারণবিক্রমঃ । সমাদায় মহচ্চাপং  
মত্তবারণবারণম্ ॥ ১ ॥ বিধুস্থানো রথশ্রেষ্ঠো দ্রাবঘাণো মহারথান্ । পুতনাং  
পাণ্ডবেযানাং গাহমানো মহাবলঃ ॥ ২ ॥ নিমিত্তানি নিমিত্তজ্ঞঃ সর্বতো বীক্ষ্য  
বীৰ্যবান্ । প্রতপস্তমনীকানি দ্রোণঃ পুত্রমভাষত ॥ ৩ ॥ অযং স দিবসস্তাত  
যত্র পার্থো মহাবলঃ । জিঘাংসুঃ সমরে ভীষ্মং পরং যত্রং করিষ্যতি ॥ ৪ ॥ উৎ-  
পতন্তি হি মে বাণা ধনুর্বিষ্ফুরতীব চ । যোগমস্ত্রাণি নেচ্ছন্তি ক্রুরং মে বর্ততে  
মনঃ ॥ ৫ ॥ দিক্ষুশান্তানি ঘোরাণি ব্যাহরন্তি মৃগদ্বিজাঃ । নীচৈর্গৃধ্ৰা নিলী-  
যন্তে ভরতানাং চমুং প্রতি ॥ ৬ ॥ নষ্টপ্রভ ইবাদিত্যঃ সর্বতো লোহিতা দিশঃ ।  
রসতে ব্যথতে ভুমিঃ কম্পতীব চ সর্বশঃ ॥ ৭ ॥ কক্কা গৃধ্ৰা বলাকাশ্চ ব্যাহরন্তি  
মুহূর্মুহুঃ । শিবানৈচবাশিবা ঘোরা বেদযানা মহাভযম্ ॥ ৮ ॥ পপাত মহতী  
চোক্ষা মধ্যেনাদিত্যমগুলাৎ । সকবন্ধশ্চ পরিযো ভানুমাবৃত্য তিষ্ঠতি ॥ ৯ ॥  
পরিবেশস্তথা ঘোরশ্চন্দ্রভাস্করযোরভুৎ । বেদযানো ভযং ঘোরং রাজ্ঞাং দেহাব-  
কর্তনম্ ॥ ১০ ॥ দেবতায়তনস্থাশ্চ কৌরবেন্দ্রস্য দেবতাঃ । কম্পন্তে চ হসন্তে চ  
নৃত্যন্তি চ রুদন্তি চ ॥ ১১ ॥ অপসব্যং গ্রহাশ্চক্রুরলঙ্ঘাণং দিবাকরম্ । অবাক-  
শিরাশ্চ ভগবান্দতিষ্ঠত চন্দ্রমাঃ ॥ ১২ ॥ বপুংষি চ নরৈন্দ্রাণাং বিগতাতানি  
লক্ষ্যে । ধার্ত্তরাষ্ট্রস্য সৈন্যেষু ন চ ভ্রাজন্তি দংশিতাঃ ॥ ১৩ ॥ সেনযোরুভযো-

श्चापि समस्तां क्रवते महान् । पाण्डुजन्यास्य निर्घोषो गाण्डीवस्य च निम्बनः ॥१४॥  
 ध्रुवमाश्राय वीभत्सुरुत्तमास्त्राणि संयुगे । अपासयान्यान् रणे घोधानभ्येष्यति  
 पितामहम् ॥१५॥ ह्यस्त्युक्ति रोमकूपाणि सौदतीव च मे मनः । चिन्तयिष्या महाबाहो  
 भीष्माङ्गूनसमागमम् ॥ १७ ॥ तक्षेह निकृतिप्रच्छं पाण्डाल्यं पापंचेतसम् । पुर-  
 स्कृत्य रणे पार्थो भीष्मस्यायोधनं गतः ॥१९॥ 'अत्र वीक्ष पुरा भीष्मो नाहं हन्यां  
 शिर्षाङ्गिनम् । स्त्री ह्येषा विहिता धात्रा दैवाच्च स पुनः पुमान् ॥ १८ ॥ अमङ्गल्य-  
 ध्वजश्चैव याञ्जसेनिर्महाबलः । नचामाङ्गलिके कस्मिन् ग्रहरेदापगास्तुतः ॥ १९ ॥  
 एतद्वि चिन्तयानस्य मञ्ज्जा सौदति मे भृशम् । अबुद्ध्यतो रणे पार्थः कुरुवृद्ध-  
 मुपाद्रव ॥ २० ॥ युधिष्ठिरस्य च क्रोधो भीष्मश्चाङ्गूनसङ्गतः । मम चास्त्रसमारम्भः  
 प्रजानामशिवं ध्रुवम् ॥ २१ ॥ मनस्वी बलवान् शूरः कृतान्त्रो लघुविक्रमः । दूर-  
 पाती दृष्टेषुश्च निमित्तञ्च पाण्डवः ॥ २२ ॥ अजेयः समरे चापि देवैरपि  
 सवासवैः । बलवान् बुद्धिमांश्चैव जितकेशो युधाश्वरः ॥ २३ ॥ विजयी च रणे  
 नित्यं तैरवास्त्रश्च पाण्डवः । तस्य मार्गं परिहरन् द्रुतं गच्छ यतव्रतम् ॥ २४ ॥  
 पश्यादैद्यतमहाघोरं संयुगे वैशसं महत् । हेमचित्राणि शूराणां महान्ति च  
 शुभानि च ॥ २५ ॥ कवचान्यवदीर्यन्ते शरैः समतपर्वभिः । त्रिदयन्ते च ध्वजा-  
 ग्राणि तोमराश्च धूम्रं चि च ॥ २६ ॥ प्रामाश्च विमलास्तीक्ष्णाः शक्त्यश्च कनको-  
 ज्जलाः । वैजयन्त्यश्च नागानां संक्रुद्धेन किरीटिना ॥ २७ ॥ नायं संरक्षितुं  
 कालः प्राणान् पुल्लोपज्जीर्षिभिः । याहि स्वर्गं पुरस्कृत्य यशसे विजयाय च ॥ २८ ॥  
 हतनागरथावर्तां महाघोरां सुदुर्गमाम् । रथेन संग्राममदीं तरत्येष कपि-  
 ध्वजः ॥ २९ ॥ व्रक्ष्यता दमो दानं तपश्च चरितं महत् । इहैव दृश्यते पार्थे  
 द्राता यस्य धनञ्जयः ॥ ३० ॥ भीमसेनश्च बलवान् माद्रीपुत्रो च पाण्डवो । वासु-  
 देवश्च वार्ष्णेयो यस्य नाथो व्यवस्थितः ॥ ३१ ॥ तस्यैव मनु्यप्रभवो धार्तराष्ट्रस्य  
 दुर्मतेः । तपोदक्षशरीरस्य कोपो दहति भारतीम् ॥ ३२ ॥ एष संदृश्यते  
 पार्थो वासुदेवव्यापाश्रयः । दारयन् सर्वसैन्यानि धार्तराष्ट्रस्य पश्यतः ॥ ३३ ॥  
 एतदालोक्यते सैन्यं क्लोभ्यमाणं किरीटिना । महोर्षिनक्षं सुमहतिमिनेव  
 महाजलम् ॥ ३४ ॥ हाहाकिलकिलाशकाः क्रवन्ते च चमुमुखे । याहि पाण्डालदाया-  
 दमहं यास्ये युधिष्ठिरम् ॥ ३५ ॥ दुर्गमं हस्तं राञ्ज्जो व्युहस्यामिततेजसः । समु-  
 द्रकुक्षिप्रतिमं सर्वतोऽतिरथैः स्थितैः ॥ ३६ ॥ सात्यकिश्चाभिमन्युश्च धृष्टद्युम्नवृ-  
 कोदरो । पर्यारक्तु राजानं यमो च मनुजेश्वरम् ॥ ३७ ॥ उपेन्द्रसदृशश्यामो

মহাশাল ইবোদ্ধাতঃ । এষ গচ্ছত্যনীকাগ্রে দ্বিতীয় ইব ফাল্লুনঃ ॥ ৩৮ ॥ উত্তমা-  
স্ত্রাণি চাধৎস্ব গৃহীত্বান্যমহঙ্কমুঃ । পার্শ্বতং যাহি রাজানং যুধ্যস্ব চ বৃকোদ-  
রম্ ॥ ৩৯ ॥ কো হি নেচ্ছেৎ প্রিষৎ পুত্রং জীবন্তং শাশ্বতীঃ সমাঃ । ক্ষত্রধর্মস্তু  
সম্প্রেক্ষ্য ততস্ত্বাং নিযুনজ্জম্যহম্ ॥ ৪০ ॥ এষ চাপি রণে ভীষ্মো দহতে বৈ মহা-  
চমুম্ । যুদ্ধেষু সদৃশস্তাত যমস্য বরুণস্য চ ॥ ৪১ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি অশ্বখামানং প্রতি দ্রোণবাক্যে

নরাধিকশত্ৰুতমোহধ্যায়ঃ ॥ ১০৯ ॥



সঞ্জয় উবাচ । ভগদত্তঃ রূপঃ শল্যঃ কৃতবর্মা তথৈব চ । বিন্দানুবিন্দাবাবন্ত্যৌ  
সৈন্ধবশ্চ জয়দ্রথঃ ॥ ১ ॥ চিত্রসেনো বিকর্ণশ্চ তথা দুর্মর্ষণো যুবা । দশৈতে তা-  
বকা যোধা ভীমসেনমযোধযন্ ॥ ২ ॥ মহত্যা সেনয়া যুক্তা নানাদেশসমুখয়া ।  
ভীষ্মস্য সমরে রাজন্ প্রার্থয়ান্না মহদ্বশঃ ॥ ৩ ॥ শল্যস্ত নবভির্বাণৈর্ভীমসেনম-  
তাডযৎ । কৃতবর্মা ত্রিভির্বাণৈঃ রূপশ্চ নবভিঃ শরৈঃ ॥ ৪ ॥ চিত্রসেনো বিক-  
র্ণশ্চ ভগদত্তশ্চ মারিষ । দশভির্দশভির্ভল্লৈর্ভীমসেনমতাডযৎ ॥ ৫ ॥ সৈন্ধবশ্চ  
ত্রিভির্বাণৈর্ভীমসেনমতাডযৎ । বিন্দানুবিন্দাবাবন্ত্যৌ পঞ্চভিঃ পঞ্চভিঃ শরৈঃ ।  
দুর্মর্ষণশ্চ বিংশত্যা পাণ্ডবং নিশিতৈঃ শরৈঃ ॥ ৬ ॥ স তান্ সর্বান্ মহারাজ  
রাজমানান্ পৃথক্ পৃথক্ । প্রবীরান্ সর্বলোকস্য ধার্ত্তরাষ্ট্রান্মহারথান্ । বিব্যাধ-  
নিশিতৈর্বাণৈর্ভীমসেনো মহাবলঃ ॥ ৭ ॥ শল্যং পঞ্চাশতা বিদ্ধ্বা কৃতবর্মাণম-  
র্ফতিঃ । রূপস্য সশরক্ষাপং মধ্যে চিচ্ছেদ ভারত ॥ ৮ ॥ অথৈনং ছিন্নধন্বানং  
পুনর্বিব্যাধ সপ্তভিঃ । বিন্দানুবিন্দৌ চ তথা ত্রিভিস্ত্রিভিরতাডযৎ ॥ ৯ ॥ দুর্মর্ষণঞ্চ  
বিংশত্যা চিত্রসেনঞ্চ পঞ্চভিঃ । বিকর্ণং দশভির্বাণৈঃ পঞ্চভিশ্চ জয়দ্রথম্ । বিদ্ধ্বা-  
ভীমোহনদক্ষৃৎ সৈন্ধবঞ্চ পুনস্ত্রিভিঃ ॥ ১০ ॥ অথান্যদ্বনুরাদায গৌতমো রথিনা-  
স্বরঃ । ভীমং বিব্যাধ সংরুদ্ধো দশভির্নিশিতৈঃ শরৈঃ ॥ ১১ ॥ স বিদ্ধ্বো দশভি-  
র্বাণৈস্তোত্রৈরিব মহাদ্বিপঃ । ততঃ ক্রুদ্ধো মহাবাহুর্ভীমসেনঃ প্রতাপবান্ । গৌত-  
মং তাডয়ামাস শরৈর্বহুভিরাহবে ॥ ১২ ॥ সৈন্ধবস্য তথাশ্বাংশ্চ সারথিঞ্চ ত্রিভিঃ  
শরৈঃ । প্রাহিণোমৃত্যুলোকায কালান্তকসমদ্যুতিঃ ॥ ১৩ ॥ হতাস্বাত্তু রথাত্তূর্ণ-  
মবপ্তত্য মহারথঃ । শরাংশ্চিক্ষেপ নিশিতান্ ভীমসেনস্য সংযুগে ॥ ১৪ ॥ তস্য  
ভীমো ধনুর্মধ্যে দ্বাভ্যাং চিচ্ছেদ মারিষ । ভল্লাভ্যাং ভরতশ্রেষ্ঠ সৈন্ধবস্য মহা-  
স্বনঃ ॥ ১৫ ॥ স ছিন্নধন্বা বিরথো হতাস্থো হতসারথিঃ । চিত্রসেনরথং রাজমা-



क्रुरोह ह्यराश्वितः ॥ १७ ॥ अत्यद्भुतं रणे कर्म कृतवांसुत्र पाण्डवः । महारथान  
 शरैर्बिद्धा वारयिष्या च मारिष ॥ १९ ॥ विरथं सैन्धवं चक्रे सर्वलोकस्य पश्यतः ।  
 तदा न ममृषे शल्यो भीमसेनस्य विक्रमम् ॥ १८ ॥ स सन्नाथ शरांस्त्रीक्ष्णान् कर्मा-  
 रपरिमाङ्गितान् । भीमं विव्याध समरे तिष्ठं तिष्ठेति चात्र वी० ॥ १२ ॥ रूपश्च  
 कृतवर्मा च भगदत्तश्च वीर्यवान् । विन्दान्नुविन्दावाम्भ्यो चित्रसेनश्च संयुगे ॥ २० ॥  
 दर्शुर्षणो विकर्णश्च सिक्कुराजश्च वीर्यवान् । भीमं ते विव्याधसुर्गं शल्यहेतोर-  
 रिन्दमाः ॥ २१ ॥ स तु तान् प्रतिविव्याध पङ्क्तिः पङ्क्तिः शरैः । शल्यं विव्या-  
 ध सप्तत्या पुनश्च दशभिः शरैः ॥ २२ ॥ तं शल्यो नवतिर्बिद्धा पुनर्बिब्याध  
 पङ्क्तिः । सारथिण्यस्य भलेन गात्रं विव्याध मर्मणि ॥ २३ ॥ विशोकं प्रेक्ष्य  
 निर्भिन्नं भीमसेनः प्रतापवान् । मद्रराजं त्रिभिर्बाणैर्बाह्योरुरसि चार्पयत् ॥ २४ ॥  
 तथेतन्महेष्वासान् त्रिभिस्त्रिभिरङ्गैः । ताडयामास समरे सिंहवद्विनना-  
 द च ॥ २५ ॥ ते हि यत्ना महेष्वासाः पाण्डवं युद्धकोविदम् । त्रिभिस्त्रिभिरकुष्ठा-  
 ग्रैर्भृशं मर्मस्वताडयन् ॥ २६ ॥ सोऽतिविद्धो महेष्वासो भीमसेनो न विव्यथे ।  
 पर्वतो वारिधाराभिर्वर्षमाणैरिवायुदैः ॥ २७ ॥ स तु क्रोधसमाविष्टो भीम-  
 सेनो महाबलः । मद्रेश्वरं त्रिभिर्बाणैर्भृशं विद्धा महायशाः ॥ २८ ॥ रूपं  
 नवतिर्बाणैर्भृशं विद्धा समन्ततः । प्राग्ज्योतिषं शतेनाजो राजन् विव्याध  
 शायकैः ॥ २९ ॥ ततस्तु सशरणापं साञ्चतस्य महात्मनः । क्रुरप्रेण सूतीक्ष्ण  
 चिच्छेद कृतहस्तवत् ॥ ३० ॥ अथान्यद्गुरादाय कृतवर्मा वृकोदरम् । आजघान  
 भ्रुवोर्मध्ये नाराचेन परसुतपः ॥ ३१ ॥ भीमस्तु समरे विद्धा शल्यं नवतिरायसैः ।  
 भगदत्तं त्रिभिश्चैव कृतवर्माणमर्षभिः ॥ ३२ ॥ द्वाभ्यां द्वाभ्यां विव्याध गौत-  
 मप्रभृतीन्नुथान् । तेऽपि तं समरे राजन् विव्याधुर्निशितैः शरैः ॥ ३३ ॥ स  
 तदा पीड्यमानोऽपि सर्वतस्तैर्महारथैः । मद्वा तूनेन तांस्तुल्यान् विचचार गत-  
 व्यथः ॥ ३४ ॥ ते चापि रथिनां श्रेष्ठा भीमाय निशितान् शरान् । प्रेषयामा-  
 सुर्व्याघ्राः शतशोऽथ सहस्रशः ॥ ३५ ॥ तस्य शक्तिं महावेगां च भगदत्तो महा-  
 रथः । चिक्षेप समरे वीरः स्वर्णदंष्ट्रां महीपते ॥ ३६ ॥ तोमरं सैन्धवो राज्ञा  
 पट्टिशं महाभुजः । शतश्रेण रूपो राजन् शरं शल्यश्च वीर्यवान् ॥ ३७ ॥  
 तथेतरे महेष्वासाः पङ्क्तं पङ्क्तं शिलीमुखान् । भीमसेनं समुद्दिश्य प्रेषयामासुरो  
 जसा ॥ ३८ ॥ तोमरं द्विधा चक्रे क्रुरप्रेणानिलात्मजः । पट्टिशं त्रिभि-  
 र्बाणैश्चिच्छेद तिलकाण्डवत् ॥ ३९ ॥ स विभेद शतश्रेण नवतिः कर्णपत्रिभिः । मद्र-

রাজপ্রমুক্রঞ্চ শরং ছিত্বা মহারথঃ ॥ ৪০ ॥ শক্তিঞ্চিচ্ছেদ সহস্রা ভগদত্তোরিতাং  
 রণে। তথৈতরান্ শরান্ ঘোরান্ শরৈঃ সন্নতপর্বতিঃ ॥ ৪১ ॥ ভীমসেনো রণ-  
 শ্লাঘী ত্রিধৈকৈকং সমাচ্ছিনৎ ॥ তাংশ্চ সর্বাঙ্গহেঘাসান্ ত্রিভিত্তিভিরতাডযৎ ॥ ৪২ ॥  
 ততো ধনঞ্জয়স্তত্র বর্ত্তমানে মহারণে। আজগাম রথেনাজৌ ভীমং দৃষ্ট্বা মহা-  
 রথম্। নিম্নস্তং সমরে শত্রূন্ যোধযানঞ্চ শাযকৈঃ ॥ ৪৩ ॥ তৌ তু তত্র মহা-  
 ত্মানৌ সমেতৌ বীক্ষ্য পাণ্ডবৌ। নাশশংসুর্জঘৎ তত্র তাবকাঃ পুরুষর্ষভাঃ ॥ ৪৪ ॥  
 অংথাজ্জুনৌ রণে ভীমং যোধযন্তু মহারণান্। ভীষ্মস্য নিধনাকাজ্জী পুরস্কৃত্য  
 শিখণ্ডিনম্। আসসাদ রণে বীরাংস্তাবকান্ দশ ভারত ॥ ৪৫ ॥ যেস্ম ভীমং  
 রণে রাজন্ যোধযন্তো ব্যবস্থিতাঃ। বীতংসুস্তানথাবিধ্যৎ ভীমস্য প্রিয়কাম্য-  
 যা ॥ ৪৬ ॥ ততো দুর্ষেয়াধনো রাজা সুশর্মাণমচোদযৎ। অজ্জুনস্য বধার্থায়  
 ভীমসেনস্য চোভযোঃ ॥ ৪৭ ॥ সুশর্মান্ গচ্ছ শীঘ্রং ত্বং বলৌঘৈঃ পরিবারিতঃ।  
 জহি পাণ্ডুসুতাবেতৌ ধনঞ্জয়বৃকোদরৌ ॥ ৪৮ ॥ তচ্ছুত্বা বচনং তস্য ত্রিগর্ত্তঃ  
 প্রস্থলাধিপঃ। অভিজ্রত্য রণে ভীমমজ্জুনঞ্চৈব ধন্বিনৌ ॥ ৪৯ ॥ রথৈরনেকসা-  
 হসৈঃ সমস্তাং পর্য্যবারযৎ। ততঃ প্রববৃতে যুদ্ধমজ্জুনস্য পটৈঃ সহ ॥ ৫০ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি ভীমপরাক্রমে দশাধিকশত-

তমোহধ্যায়ঃ ॥ ১১০ ॥



সঞ্জয় উবাচ। অজ্জুনস্তু রণে শল্যং যতমানং মহারণম্। ছাদয়ামাস সমরে শরৈঃ  
 সন্নতপর্বতিঃ ॥ ১ ॥ সুশর্মাণং রূপঞ্চৈব ত্রিভিত্তিভিরবিধ্যত। প্রাগ্জ্যোতিষস্ত  
 সমরে সৈন্ধবঞ্চ জঘদ্রথম্ ॥ ২ ॥ চিত্রসেনং বিরূর্ণঞ্চ ক্রুতবর্মাণমেব চ। দুর্শর্ষণঞ্চ রা-  
 জেন্দ্র হ্যাবস্ত্যৌ চ মহারণৌ ॥ ৩ ॥ একৈকং ত্রিভিরানচ্ছৎ কঙ্কবর্হিণবাজিতৈঃ।  
 শরৈরতিরথৌ যুদ্ধে পীড়যন্ বাহিনীস্তব ॥ ৪ ॥ জঘদ্রথৌ রণে পার্থং বিদ্ধ্বা ভারত  
 সাযকৈঃ। ভীমং বিব্যাধ তরসা চিত্রসেনরথে স্থিতঃ ॥ ৫ ॥ শল্যশ্চ সমরে  
 জিষ্ণুং রূপশ্চ রথিনাম্বরঃ। বিব্যাধাতে মহারাজ বহুধা মর্শ্মভেদিতিঃ ॥ ৬ ॥ চিত্র-  
 সেনাদযশৈশ্চব পুল্লাস্তব বিশাম্পতে। পঞ্চভিঃ পঞ্চভিস্তূর্ণং সংযুগে নিশিতৈঃ  
 শরৈঃ। আজঘুরজ্জুনং সংখ্যে ভীমসেনঞ্চ মারিষ ॥ ৭ ॥ তৌ তত্র রথিনাং  
 শ্রেষ্ঠৌ কৌন্তেয়ৌ ভরতর্ষভৌ। আপীড়যেতাং সমরে ত্রিগর্ত্তানাং মহদ্বলম্ ॥ ৮ ॥  
 সুশর্মাপি রণে পার্থং বিদ্ধ্বা নবভিরাযসৈঃ। ননাদ বলবন্মাদং ত্রাসয়ানৌ মহ-  
 দ্বলম্ ॥ ৯ ॥ অন্যে চ বহবঃ শূরা ভীমসেনধনঞ্জয়ৌ। বিব্যাধুর্নিশিতৈর্বাণৈ রুন্ম-

पुष्टैश्चरज्जिह्वैः ॥ १० ॥ तेषां रथिनां मध्ये कौस्तुभो रथिनाश्चरो । क्रीड-  
 मानो रथोदारो चित्रकपो व्यदृश्यताम् । आमिषेषु गवां मध्ये सिंहाविव  
 मदोत्कटो ॥ ११ ॥ छिद्वा धनुंषि शूराणां शरांश्च बहधा रणे । पातयामास-  
 तूर्वीरो शिरांसि शतशो रणे ॥ १२ ॥ रथांश्च बहवो भग्ना हयाश्च शतशो  
 हताः । गजाश्च सगजारोहाः पेतुरूर्ध्व्यां महाहवे ॥ १३ ॥ रथिनः सादिन-  
 श्चैव तत्र तत्र निमृदिताः । दृश्यान्ते बहवो राक्षन् चेतमानाः समस्ततः ॥ १४ ॥  
 हतैर्गजैः पदात्योषैर्बाजिभिश्च निमृदितैः । रिथैश्च बहधा भङ्गैः समास्तूर्यातं  
 मेदिनी ॥ १५ ॥ छलैश्च बहधा छिमैर्धजैश्च विनिपातितैः । अक्षुशैरपवि-  
 त्कैश्च परिस्तोमैश्च भारत ॥ १६ ॥ केयूरैरङ्गदैर्हातै रारक्षवैर्मृदितैस्तथा ।  
 उष्णीषैश्चिभिश्चैव चामरव्यजनैरपि ॥ १७ ॥ तत्र तत्रापवित्कैश्च बाह्विभिश्च-  
 न्दनोष्णितैः । उरुभिश्च नरेन्द्राणां समास्तूर्यात मेदिनी ॥ १८ ॥ तत्राद्भुतमप-  
 श्याम रणे पार्थस्य विक्रमम् । शरैः संवार्य तान् वीरान् यज्जघान बलं तव ॥ १९ ॥  
 पुलस्तु तव तं दृष्ट्वा भीमाज्जूनपरक्रमम् । गाङ्गेशस्य रथाभ्यासमुपजग्मे महा-  
 बलः ॥ २० ॥ रूपश्च कृतवर्मा च सैन्धवश्च जयद्रथः । विन्दान् विन्दावाम्भेत्यो नाजहः  
 संयुगं तदा ॥ २१ ॥ ततो भीमो महेश्वासः फाल्गुनश्च महारथः । कौरवाणां  
 चमूं घोरां भृशं दूद्रवतु रणे ॥ २२ ॥ ततो बर्हिर्बाजानामयुतान्यर्बुदानि  
 च । धनञ्जयरथे तूर्णं पातयन्ति स्म भूमिपाः ॥ २३ ॥ ततस्तान् शरजालेन समि-  
 वार्य महारथान् । पार्थः सर्भस्तां समरे प्रेषयामास मृत्यवे ॥ २४ ॥ शल्यस्तु  
 समरे जिष्णुं क्रीडन्निव महारथः । आजघानोरसि क्रुद्धो भल्लैः सन्नतपर्वभिः ॥ २५ ॥  
 तस्य पार्थो धनुश्छिद्वा हस्तावापङ्ग पङ्गभिः । अथैनं शायकैस्तुष्टैर्भृशं विव्या-  
 ध मर्मणि ॥ २६ ॥ अथान्यक्त्वरुदाय समरे भारसाधनम् । मद्देश्वरो रणे जिष्णुं  
 ताडयामास रोषितः ॥ २७ ॥ त्रिभिः शरैर्महाराज वासुदेवङ्ग पङ्गभिः । भीम-  
 सेनङ्ग नवभिर्बाह्वोरसि चार्पयत् ॥ २८ ॥ ततो द्रोणो महाराज मागधश्च  
 महारथः । दुर्योधनसमादिक्तौ तं देशमुपजग्मतुः ॥ २९ ॥ यत्र पार्थो महा-  
 राज भीमसेनश्च पाण्डवः । कौरवस्य महासेनां जग्मतुः सुमहारथो ॥ ३० ॥  
 जयसेनस्तु समरे भीमं भीमायुधं युधि । विव्याध निशितैर्बाणैररुतिर्भरत-  
 र्षभ ॥ ३१ ॥ तं भीमो दशभिर्विद्वा पुनर्विव्याध पङ्गभिः । सारथिष्वास्य भल्लेन  
 रथनीडादपातयत् ॥ ३२ ॥ उद्धुत्तुस्तुरगैः सोऽथ द्रवमाणैः समस्ततः । माग-  
 धोऽपसृतो राजा सर्वसैन्यस्य पश्यतः ॥ ३३ ॥ द्रोणश्च विवरं लब्ध्वा भीमसेन-

মথাষসৈঃ । বিব্যাধ বাণৈর্নিশিতৈঃ পঞ্চষষ্ঠ্যা শিলীমুথেঃ ॥ ৩৪ ॥ তং ভীমঃ  
সমরশ্লাঘী গুরুং পিতৃসমং রণে । বিব্যাধ নবভির্ভল্লৈস্তথা ষষ্ঠ্যা চ ভারত ॥ ৩৫ ॥  
অর্জুনস্তু সুশর্মাণং বিদ্ধ্বা বহুভিরায়সৈঃ । ব্যধমন্ত্রস্য তৎসৈন্যং মহাদ্রাণি  
যথাহ্নিলঃ ॥ ৩৬ ॥ ততো ভীষ্মশ্চ রাজা চ কৌশল্যশ্চ বৃহদ্বলঃ । সমবর্তন্ত  
সংক্রুন্ধা ভীমসেনধনঞ্জয়ো ॥ ৩৭ ॥ তথৈব পাণ্ডবাঃ শূরা ধৃষ্টদ্যুম্নশ্চ পার্ষতঃ ।  
অভ্যদ্রবন্ রণে ভীষ্মং ব্যাদিতাস্যমিবাস্তুকম্ ॥ ৩৮ ॥ শিখণ্ডী তু সমাসাদ্য ভর-  
তানাং পিতামহম্ । অভ্যদ্রবত গংহকো ভয়ং ত্যক্ত্বা মহারথাৎ ॥ ৩৯ ॥ যুধি-  
ষ্ঠিরমুখাঃ পার্থাঃ পুরস্কৃত্য শিখণ্ডিনম্ । অষোধযনুণে ভীষ্মং সহিতাঃ সর্বসৃ-  
ঞ্জয়ৈঃ ॥ ৪০ ॥ তথৈব তাবকাঃ সর্বে পুরস্কৃত্য যতব্রতম্ । শিখণ্ডিপ্রমুখান্ পার্থান  
যোধযন্তি স্ম সংযুগে ॥ ৪১ ॥ ততঃ প্রববৃতে যুদ্ধং কৌরবাণাং ভষাবহম্ । তত্র  
পাণ্ডুসুতৈঃ সার্কং ভীষ্মস্য বিজয়ং প্রতি ॥ ৪২ ॥ তাবকানাং জয়ে ভীষ্মো গুহ  
আসীদ্বিশাম্পতে । তত্র হি দ্যুতমাসক্তং বিজয়াযেতরায বা ॥ ৪৩ ॥ ধৃষ্টদ্যুম্নস্তু  
রাজেন্দ্র সর্বসৈন্যান্যচোদযৎ । অভ্যদ্রবত গাঞ্জেষং না তৈষ্ঠ রথসত্তমাঃ ॥ ৪৪ ॥  
সেনাপতিবচঃ শ্রুত্বা পাণ্ডবানাং বক্রথিনী । ভীষ্মং সমভ্যযাত্তুর্গং প্রাণাংস্ত্যক্ত্বা  
মহাহবে ॥ ৪৫ ॥ ভীষ্মোহপি রথিনাং শ্রেষ্ঠঃ প্রতিজগ্রাহ তাং চমুন্ । আপতন্তীং  
মহারাজ বেলামিব মহোদধিঃ ॥ ৪৬ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি ভীমার্জুনপরাক্রমে একাদশো-

ভরশততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১১১ ॥



ধৃতরাষ্ট্র উবাচ । কথং শাস্তনবো ভীষ্মো দশমেহ্নিনি সঞ্জঘ । অযুধ্যত মহা-  
বীৰ্য্যঃ পাণ্ডবৈঃ সহসৃঞ্জয়ৈঃ ॥ ১ ॥ কুরবশ্চ কথং যুদ্ধে পাণ্ডবান্ প্রত্যবারযন্ ।  
আচক্ষু মে মহদ্বুদ্ধং ভীষ্মস্যাহবশোভিনঃ ॥ ২ ॥ সঞ্জঘ উবাচ । কুরবঃ পাণ্ডবৈঃ  
সার্কং যদযুধ্যন্ত ভারত । সর্বমেতদশেষেণ তন্তে বক্ষ্যামি সাম্প্রতম্ ॥ ৩ ॥ গমিতা  
পরলোকায পরমাস্ত্রৈঃ কিরীটিনঃ । অহন্যহ্নি সংরদ্ধাস্তাবকানাং রথব্রজাঃ ॥ ৪ ॥  
যথাপ্রতিজ্ঞং কৌরব্যঃ স চাপি সমিতিঞ্জঘঃ । পার্থানাংকরোদ্ভীষ্মঃ সততং সমি-  
তিক্ষয়ম্ ॥ ৫ ॥ কুরুভিঃ সহিতং ভীষ্মং যুধ্যমানং পরস্তপ । অর্জুনঞ্চ সপা-  
ঞ্চাল্যং সংশযো বিজয়েহ্তবৎ ॥ ৬ ॥ দশমেহ্নিনি তস্মিৎস্তু ভীষ্মার্জুনসমাগমে ।  
অবর্তত মহারৌদ্রঃ সততং সমিতিক্ষয়ঃ ॥ ৭ ॥ তস্মিন্নয়ুতশো রাজন্ ভূযশশ্চ  
পরস্তপঃ । ভীষ্মঃ শাস্তনবো যোধান্ জঘান পরমাস্ত্রবিৎ ॥ ৮ ॥ যেযামজ্ঞাত-

कर्णानि नामगोत्राणि पार्थिव । ते हतास्तत्र भीष्मेण शूराः सर्वे निवर्तिनः ॥ २ ॥  
 दशार्हानि ततस्तपुः। भीष्मः पाण्डववाहिनीम् । निरविद्यत धर्मात्मा जीवितेन पर-  
 त्तपः ॥ १० ॥ स किंप्रं वधमश्निच्छन्मनोऽभिमुखे रणे । न हन्यां मानवश्रेष्ठान्  
 संग्रामे सुवह्निनि ॥ ११ ॥ चिन्तयिष्या महाराष्ट्रः पिता देवव्रतस्तव । अत्र्यासस्यं  
 महाराज पाण्डवं वाक्यमब्रवीत् ॥ १२ ॥ युधिष्ठिर महाप्राज्ञ सर्वशास्त्रविशारद ।  
 शूण्व वचनं तात धर्म्यं स्वर्ग्यं जगत् ॥ १३ ॥ निर्विमोहस्यि त्वं तात देहे-  
 नानेन भारत । मृतश्च मे गतः कालः सुवह्निं प्राणिनो रणे ॥ १४ ॥ तस्मात्  
 पार्थं पुरोधाय पाण्डालान् सृज्यांस्तथा । मद्धे क्रियतां यत्नो मम चेदिच्छसि  
 प्रियम् ॥ १५ ॥ तस्य तन्मतमाज्ञाय पाण्डवः सत्यदर्शिनः । भीष्मं प्रतिययौ राजा  
 संग्रामे सह सृज्यैः ॥ १६ ॥ धृष्टद्युम्नस्ततो राजन् पाण्डवश्च युधिष्ठिरः । ऋद्ध्वा  
 भीष्मस्य तां वाचं चोदयामासतुर्बलम् ॥ १७ ॥ अतिद्रवत युध्यं भीष्मं जयत  
 संयुगे । रक्षिताः सत्यसन्नेन जिष्णुना रिपुजिष्णुना ॥ १८ ॥ अयथापि महेश-  
 वासः पार्षतो वाहिनीपतिः । भीमसेनश्च समरे पालयिष्यति वो ध्रुवम् ॥ १९ ॥  
 ना वो भीष्माद्भयं किञ्चिदस्तुद्य युधि सृज्याः । ध्रुवं भीष्मं विजेष्यामः पुरस्कृत्य  
 शिखण्डिनम् ॥ २० ॥ ते तथा समयं क्रुद्ध्वा दशमेऽहनि पाण्डवाः । ब्रह्मलोकपरा  
 डुद्ध्वा संजग्मुः क्रोधमूर्च्छिताः ॥ २१ ॥ शिखण्डिनं पुरस्कृत्य पाण्डवश्च धनञ्जयम् ।  
 भीष्मस्य पातने यत्नं परमं ते समास्थिताः ॥ २२ ॥ ततस्तव सुतादिक्ता नाना-  
 जनपदेश्वराः । द्रोणेन सहपुत्रेण सहसेना महाबलाः ॥ २३ ॥ दुःशासनश्च बल-  
 वान् सह सर्वैः सहोदरैः । भीष्मं समरमध्यस्थं पालयात्क्रिरे तदा ॥ २४ ॥ ततस्तु  
 तावकाः शूराः पुरस्कृत्य महामृतम् । शिखण्डिप्रमुखान् पार्थान् योधयन्ति स्म संयु-  
 गे ॥ २५ ॥ चेदिभित्तु सपाण्डालैः सहितो वानरध्वजः । ययौ शास्तनवं भीष्मं  
 पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् ॥ २६ ॥ द्रोणपुत्रं शिनेर्नष्ट्वा धृष्टकेतुश्च पौरवम् । अति-  
 मन्युः सहामात्यं दुर्योधनमयोधयत् ॥ २७ ॥ विराटस्तु सहानीकः सहसेनं  
 जयद्रथम् । वार्किष्मेमेस्तु दाषाद आसमाद परस्तप । चित्रसेनं तव सुतं विचित्र-  
 शरकान्मुकम् ॥ २८ ॥ मद्रराजं महेश्वासं सहसेन्यं युधिष्ठिरः । भीमसेनोऽ-  
 भिषुपुस्तु नागानीकमुपाद्रवत् ॥ २९ ॥ अप्रधृष्यामनावार्यां सर्वशस्त्रभृताम्बरम् ।  
 द्रोणं प्रतिययौ यत्नः पाण्डाल्यः सह सोदरैः ॥ ३० ॥ कर्णिकारध्वजैश्च सिंह-  
 केतुररिन्दमः । प्रत्यूज्जगाम सौभद्रं राजपुत्रो बृहद्वलः ॥ ३१ ॥ शिखण्डिनश्च  
 पुत्रास्ते पाण्डवश्च धनञ्जयम् । राजतिः समरे सार्कमभिपेतुर्जिष्वांसवः ॥ ३२ ॥

তস্মিন্মতিমহাভীমে সেনযোর্ধৈ পরাক্রমে । সৎপ্রথাবৎস্বনীকেষু মেদিনী সম-  
কম্পত ॥ ৩৩ ॥ তান্যনীকান্যনীকেষু সমসজ্জস্ত ভারত । তাবকানাং পরেষাঞ্চ  
দৃষ্ট্বা শান্তনবং রণে ॥ ৩৪ ॥ ততস্তেষাং প্রযততামন্যোন্যমভিধাবতাম্ । প্রাদু-  
রাসীম্মহাশকো দিক্ষু সর্ষাসু ভারত ॥ ৩৫ ॥ শঙ্খদুন্দুভিঘোষশ্চ বারণানাঞ্চ বৃংহি-  
তম্ । স্মিংহনাদশ্চ সৈন্যানাং দারুণঃ সমপদ্যত ॥ ৩৬ ॥ সা চ সর্বনরেন্দ্রাণাং  
চন্দ্রার্কসদৃশী প্রভা । বীরান্দদকিষ্কীটেষু নিম্পভা সমপদ্যত ॥ ৩৭ ॥ রজো মেঘাশ্চ  
সংজজ্জুঃ শস্ত্রবিদ্যুদ্ভিরাবৃত্তাঃ । ধনুযাঞ্চাপি নির্ঘোষো দারুণঃ সমপদ্যত ॥ ৩৮ ॥  
বাণশঙ্খপ্রণাদাশ্চ তেরীনাঞ্চ মহাধনাঃ । রথঘোষাশ্চ সংজজ্জুঃ সেনযোরুভযো-  
রপি ॥ ৩৯ ॥ প্রাসশক্ত্যুষ্টিসজ্জৈশ্চ বাণৌঘৈশ্চ সমাকুলম্ । নিম্প্রকাশমিবাকাশং  
'সেনযোঃ সমপদ্যত ॥ ৪০ ॥ অন্যোন্যং রথিনঃ পেতুর্ভাজিনশ্চ মহাহবে । কুঞ্জ-  
রান্ কুঞ্জরা জম্বুঃ পদাতীংশ্চ পদাতযঃ ॥ ৪১ ॥ তদাসীৎ সুমহদ্বুদ্ধং কুব্জাং  
পাণ্ডবৈঃ সহ । ভীষ্মহেতোর্নরব্যায়ু শ্যেনযোরানিষৈর্যথা ॥ ৪২ ॥ তেষাং সমা-  
গমো ঘোরো বভূব যুধি ভারত । অন্যোন্যস্য বধার্থায় জিগীষুণাং মহা-  
হবে ॥ ৪৩ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বনি ভীষ্মবধপর্বনি সঙ্কলযুদ্ধে দ্বাদশাধিকশত-  
তমোঃধ্যায়ঃ ॥ ১১২ ॥



সঞ্জয় উবাচ । অভিনন্দ্যম্মহারাজ তব পুত্রমযোধযৎ । মহত্যা সেনযা যুক্তং  
ভীষ্মহেতোঃ পরাক্রমী ॥ ১ ॥ দুর্ঘ্যোধনো রণে কার্ষিঃ নবভিন্তপর্বভিঃ । আজ-  
যানোরসি ক্রুদ্ধঃ পুনশ্চৈনং ত্রিভিঃ শরৈঃ ॥ ২ ॥ তস্য শক্তিং রণে কার্ষির্মৃত্যো-  
র্ঘোরাং স্বসামিবা । প্রেষয়ামাস সংক্রুদ্ধো দুর্ঘ্যোধনরথং প্রতি ॥ ৩ ॥ তামা-  
পতন্তীং সহসা ঘোরকপাং বিশাম্পতে । দ্বিধা চিচ্ছেদ তে পুত্রঃ ক্ষুরপ্রেণ মহা-  
রথঃ ॥ ৪ ॥ তাং শক্তিং পতিতাং দৃষ্ট্বা কার্ষিঃ পরমকোপনঃ । দুর্ঘ্যোধনং  
ত্রিভির্বাণৈর্বাঙ্কোরসি চার্ঘযৎ ॥ ৫ ॥ পুনশ্চৈনং শরৈর্ঘোরৈরাজঘান স্তনা-  
স্তরে । দশভির্ভরতশ্রেষ্ঠ ভরতানাং মহারথঃ ॥ ৬ ॥ তদ্বুদ্ধমভবদেষ্বারং চিত্রক-  
পঞ্চ ভারত । ইন্দ্রিষপ্রীতিজননং সর্বপার্থিবপূজিতম্ ॥ ৭ ॥ ভীষ্মস্য নিধনা-  
র্থায পার্থস্য বিজয়ায চ । যুযুধাতে রণে বীরৌ সৌভদ্রকুরুপুঙ্গবৌ ॥ ৮ ॥ সাত্য-  
কিং রুভসং যুদ্ধে দ্রৌণিব্রাহ্মণপুঙ্গবঃ । আজযানোরসি ক্রুদ্ধো নারাচেন পর-  
স্তপঃ ॥ ৯ ॥ শৈনেযোহপি গুরোঃ পুত্রং সর্বমশ্নসু ভারত । অতাডঘদমেঘাত্মা

नवभिः कङ्कवाजितैः ॥ १० ॥ अश्वत्थामा तु समरे सात्यकिं नवभिः शरैः । त्रिंश-  
 ता च पुनस्तूर्णं बाह्योरुरसि चार्पयत् ॥ ११ ॥ सोऽतिविद्धो महेश्वासो द्रोणपु-  
 त्रेण साह्यतः । द्रोणपुत्रं त्रिभिर्बाणैराजघान महायशाः ॥ १२ ॥ पौरवो  
 धृष्टकेतुश्च शरैराच्छाद्य संयुगे । बहूनां दारयाङ्ग्रे महेश्वासं महारथः ॥ १३ ॥  
 तथैव पौरवं युद्धे धृष्टकेतुर्महारथः । त्रिंशता निशितैर्बाणैर्बिभ्याधास्तु  
 महाभुजः ॥ १४ ॥ पौरवस्तु धनुश्छिन्ना धृष्टकेतुर्महारथः । ननाद बलवन्नादं  
 विव्याध च शितैः शरैः ॥ १५ ॥ सोऽन्यत् कार्मुकमादाय पौरवं निशितैः  
 शरैः । आजघान महाराज त्रिसप्तत्या शिलीमुखैः ॥ १६ ॥ तौ तु तत्र महेश्वा-  
 ससौ महामात्रौ महारथौ । महता शरवर्षेण परम्परमविध्यताम् ॥ १७ ॥ अन्ये-  
 न्यस्य धनुश्छिन्ना हयान् हत्वा च भारत । विरथावसियुद्धाय समीपतुरमर्षणौ ॥ १८ ॥  
 आर्षभे चर्मणी चित्रे शतचन्द्रपरिभृते । तारकाशतचित्रे च निस्त्रिंशौ सुमहा-  
 प्रभौ ॥ १९ ॥ प्रगृह्य विमलो राजसुतावन्यान्यमभिक्रतौ । वासितासङ्गमे  
 यत्नौ सिंहाविव महावने ॥ २० ॥ मङ्गलानि विचित्राणि गतप्रत्यागतानि च ।  
 चेरतुर्दशयन्तौ च प्रार्थयन्तौ परम्परम् ॥ २१ ॥ पौरवो धृष्टकेतुश्च शङ्खदेशे  
 महासिना । ताडयामास संक्रुद्धस्तिष्ठतिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ २२ ॥ चेदिराजोऽपि  
 समरे पौरवं पुरुषर्षभम् । आजघान शिताग्रेण जद्रुदेशे महासिना ॥ २३ ॥  
 तावन्यान्यं महाराज समासाद्य महाहवे । अन्येन्यावेगाभिहतौ निपेततु-  
 ररिन्दमौ ॥ २४ ॥ ततः स्वरथमारोप्य पौरवं तनयस्तव । जयत्सेनो रथे-  
 नाजावपोवाह रणाजिरात् ॥ २५ ॥ धृष्टकेतुश्च समरे माद्रीपुत्रः प्रतापवान् ।  
 अपोवाह रणे राजन् सहदेवः पराक्रमी ॥ २६ ॥ चित्रसेनः सुशर्माणः विद्ध्वा  
 बहूभिरायसैः । पुनर्बिब्याध तं षष्ठ्या पुनश्च नवभिः शरैः ॥ २७ ॥ सुशर्मा तु  
 रणे क्रुद्धस्तव पुत्रं विशाम्पाते । दशभिर्दशभिश्चैव विव्याध निशितैः शरैः ॥ २८ ॥  
 चित्रसेनश्च तं राजसुत्रिंशता नतपर्षतिः । आजघान रणे क्रुद्धः स च तं प्रत्य-  
 विध्यत । भीष्मस्य समरे राजन् यशो मानसं वर्द्धयन् ॥ २९ ॥ सोऽत्रो राज-  
 पुत्रस्तु बृहद्वलमयोधयत् । पार्थहेतोः पराक्रान्तो भीष्मस्यायोधनं प्रति ॥ ३० ॥  
 आजङ्गुनिं कौशलेन्द्रस्तु विद्ध्वा पङ्कभिरायसैः । पुनर्बिब्याध विंशत्या शरैः  
 समतपर्षतिः ॥ ३१ ॥ सोऽत्रः कौशलेन्द्रस्तु विव्याधाऽर्षभिरायसैः । नाकम्पयत  
 संग्रामे विव्याध च पुनः शरैः ॥ ३२ ॥ कौशल्यस्य पुनश्चापि धनुश्छिच्छेद  
 फाल्गुनिः । आजघान शरैश्चैव त्रिंशता कङ्कपत्रिभिः ॥ ३३ ॥ सोऽन्यत् कार्मुक-

মাদায রাজপুত্রো বৃহদ্বলঃ । ফাল্গুনিং সমরে ক্রুদ্ধো বিব্যাধ বহুভিঃ শটৈঃ ॥ ৩৪ ॥  
 তযোর্যুদ্ধং সমভবদ্ভীষ্মহেতোঃ পরন্তপ । সংরক্ষযোর্মহারাজ সমরে চিত্রযোধিনোঃ ।  
 যথা দেবাসুরে যুদ্ধে বলিবাসবযোরভূৎ ॥ ৩৫ ॥ ভীমসেনো গজানীকং যোধ-  
 যন্ বহুশোভত । যথা শক্ৰো বজ্রপার্ণিদারয়ন্ পর্বতোত্তমান্ ॥ ৩৬ ॥ তে বধ্য-  
 মানা ক্রীমেন মাতঙ্গা গিরিসম্মিতাঃ । নিপেতুরুর্ব্যাং সহিতা নাদযন্তো বসুম্ভ-  
 রাম্ ॥ ৩৭ ॥ গিরিমাত্রা হি তে মাগা ভিন্নাঙ্গনচষোপমাঃ । বিরেজুর্ষসুধাং প্রাপ্য  
 বিকীর্ণা ইব পর্বতাঃ ॥ ৩৮ ॥ যুধিষ্ঠিরো মহেষাসো মদ্ররাজানমাহবে । মহত্যা  
 সেনযা গুপ্তং পীডযামাস সঙ্গতম্ ॥ ৩৯ ॥ মদ্রেশ্বরশ্চ সমরে ধর্মপুত্রং মহারথম্ ।  
 পীডযামাস সংরক্কো ভীষ্মহেতোঃ পরাক্রমী ॥ ৪০ ॥ বিরাটং সৈন্ধবো রাজা বিদ্ধ্বা  
 সন্নতপর্বতিঃ । নবভিঃ শাযকৈস্তীক্ষ্মস্ত্রিংশতা পুনরার্পযৎ ॥ ৪১ ॥ বিরাটশ্চ মহা-  
 রাজ সৈন্ধবং বাহিনীপতিম্ । ত্রিংশদ্ভিনিশিতৈর্বাণৈরাজঘান স্তনাস্তুরে ॥ ৪২ ॥  
 চিত্রকর্ষ্মুকনিস্ত্রিংশো চিত্রবর্ষ্মায়ুধধজো । রেজতুশ্চিত্রকপৌ তৌ সংগ্রামে মৎস্য-  
 সৈন্ধবৌ ॥ ৪৩ ॥ দ্রোণঃ পাঞ্চালপুত্রেন সমাগম্য মহারণে । মহাসমুদযঞ্চক্রে শটৈঃ  
 সন্নতপর্বতিঃ ॥ ৪৪ ॥ ততো দ্রোণো মহারাজ পার্ষতস্য মহদ্ধনুঃ । ছিত্বা পঞ্চা-  
 শতেষণাং পার্ষতং সনবিধ্যত ॥ ৪৫ ॥ সোহন্যৎ কান্মুকমাদায পার্ষতঃ পরবী-  
 রহা । দ্রোণস্য মিষতো যুদ্ধে প্রেষযামাস শাযকান্ ॥ ৪৬ ॥ তান্ শরান্ শর-  
 যাতেন চিচ্ছেদ স মহারথঃ । দ্রোণো দ্রুপদপুত্রায় প্রাহিণোৎ পঞ্চ শাযকান্ ॥ ৪৭ ॥  
 ততঃ ক্রুদ্ধো মহারাজ পার্ষতঃ পরবীরহা । দ্রোণায় চিক্ষেপ গদাং যমদগোপমাং  
 রণে ॥ ৪৮ ॥ তমাপতন্তীং সহসা হেমপটবিভূষিতাম্ । শটৈঃ পঞ্চাশতা দ্রোণো  
 বারযামাস সংযুগে ॥ ৪৯ ॥ সা ছিন্না বহুধা রাজন্ দ্রোণচাপচ্যুতৈঃ শটৈঃ ।  
 চূর্ণীকৃতা বিশীর্ষ্যন্তী পপাত বসুধাতলে ॥ ৫০ ॥ গদাং বিনিহতাং দৃষ্ট্বা পার্ষতঃ  
 শত্রুতাপনঃ । দ্রোণায় শক্তিং চিক্ষেপ সর্বপারশবীং শুভাম্ ॥ ৫১ ॥ তাং দ্রোণো  
 নবাভির্বাণৈশ্চিচ্ছেদ যুধি ভারত । পার্ষতঞ্চ মহেষাসং পীডযামাস সংযুগে ॥ ৫২ ॥  
 এবমেতমহদ্ধনুং দ্রোণপার্ষতযোরভূৎ । ভীষ্মং প্রতি মহারাজ যোরকপং ভযা-  
 নকম্ ॥ ৫৩ ॥ অজ্জুনং প্রাপ্য গান্ধেযং পীডযম্নিশিতৈঃ শটৈঃ । স্নাত্যদ্রবত সং-  
 মত্তো বনে মত্তমিব দ্বিপম্ ॥ ৫৪ ॥ প্রত্যুদ্যযৌ চ তং রাজা ভগদত্তঃ প্রতাপবান্ ।  
 ত্রিধা ভিন্নেন নাগেন মদাক্ষেন মহাবলঃ ॥ ৫৫ ॥ তমাপতন্তুং সহসা মহেন্দ্রগজ-  
 সন্নিভম্ । পরং যত্নং সমাস্থায বীভৎসুঃ প্রত্যপদ্যত ॥ ৫৬ ॥ ততো গজগতো  
 রাজা ভগদত্তঃ প্রতাপবান্ । অজ্জুনং শরবর্ষণে বারযামাস সংযুগে ॥ ৫৭ ॥



अर्जुनस्तु ततो नागमायास्तु रजतोपमैः । विमलैरावसैस्त्रीकैरुविध्यत महा-  
 रणे ॥ ५८ ॥ शिखण्डिनश्च कौन्तेयो याहि याहीत्यचोदयत् । भीष्मं प्रति महा-  
 राज जहैनमिति चाब्रवीत् ॥ ५९ ॥ प्राग्ज्योतिषस्ततो हिवा पाण्डवं पाण्डु-  
 पुरंज । प्रषयो हरितो राजन् क्रुपदस्य रथं प्रति ॥ ६० ॥ ततोऽर्जुनो  
 महाराज भीष्ममभ्यद्रवद्गतम् । शिखण्डिनं पुरस्कृत्य ततो युद्धमवर्तत ॥ ६१ ॥  
 ततस्तु तावकाः शूराः पाण्डवं रथसं युधि । समुत्थावन् क्रोशस्तुदन्तुमिवा-  
 भवत् ॥ ६२ ॥ नानाविधान्यनीकानि पुल्लाशास्ते जनाधिप । अर्जुनो व्यधमत्  
 काले दिवीवायुनि मारुतः ॥ ६३ ॥ शिखण्डी तु समासाद्य भरतानां पितामहम् ।  
 ईषुभिस्तूर्णमव्याघ्रो बभूविः स समाचिनोत् ॥ ६४ ॥ रथाग्र्यगारश्चापार्चिरसिशक्ति-  
 गदेक्ष्मणः । शरसंघमहाङ्गलः क्लियान् समरेऽदहत् ॥ ६५ ॥ यथाग्निः सूमहां-  
 निहः कफे चरति सानिलः । तथा जङ्गलं भीष्मोऽपि दिव्यान्यस्त्राण्युदीरयन् ॥ ६६ ॥  
 सोमकांश्च रणे भीष्मो जग्ने पार्थपदानुगान् । न्यवारयत तत् सैन्यं पाण्डवस्य  
 महारथः ॥ ६७ ॥ सुवर्णपुष्टैरिषुभिः शितैः सम्रतपर्वभिः । नादयन् स दिशो  
 भीष्मः प्रदिशस्तु महाहवे ॥ ६८ ॥ पातयन्नुथिनो राजन् हयांश्च हयसादिभिः ।  
 मुण्डतालवनानीव चकार स रथव्रजान् ॥ ६९ ॥ निर्मनुष्यानुथान् राजन् गजान-  
 श्चांश्च संयुगे । चकार समरे भीष्मः सर्वशस्त्रभृताम्बरः ॥ ७० ॥ तस्य ज्यातल-  
 निर्घोषं विस्फूर्ज्जितमिवाशनेः । निशम्य सर्वतो राजन् समकम्पस्तु सैनिकाः ॥ ७१ ॥  
 अमोघान्यपतन् वानाः पिशुस्तु मनुजेश्वर । नासज्जस्तु शरीरेषु भीष्मचापच्युताः  
 शराः ॥ ७२ ॥ निर्मनुष्यानुथान् राजन् संयुक्तान् जवनेऽहं यैः । वातायमानानद्राक्षं  
 ह्युमानान् विशाम्पते ॥ ७३ ॥ चेदिकाशिककषाणां सहस्राणि चतुर्दश । महा-  
 रथाः समाख्याताः कुलपुत्रास्तुत्यजः ॥ ७४ ॥ अपरावर्तिनः शूराः सुवर्णविकृत-  
 धजाः । संग्रामे भीष्ममासाद्य सबाजिरथकुण्डराः । जग्मुस्तु परलोकाय व्यादि-  
 तास्यनिवासुकम् ॥ ७५ ॥ न तत्रासीद्रेणे राजन् सोमकानां महारथः । यः सम्प्रा-  
 प्य रणे भीष्मं जीविते स्म मनो दधे ॥ ७६ ॥ तांश्च सर्वान् रणे योधान् प्रेत-  
 राजपुरं प्रति । नीतानमन्यास्तु जना दृष्ट्वा भीष्मस्य विक्रमम् ॥ ७७ ॥ न कश्चिदेनं  
 समरे प्रत्यूह्यति महारथः । खंते पाण्डुसूतं वीरं श्वेताश्वं कृष्णसारथिम् ।  
 शिखण्डिनश्च समरे पाण्डाल्यममितौजसम् ॥ ७८ ॥

इति भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मपराक्रमे त्रयोदशाधिक-

शततमोऽध्यायः ॥ ११७ ॥

সঞ্জয় উবাচ । শিখণ্ডী তু রণে ভীষ্মমাসাদ্য-পুরুষৰ্ষভম্ । দশভিনিশিতৈর্ভল্লৈ-  
 রাজঘান স্তনান্তরে ॥ ১ ॥ শিখণ্ডিনস্ত গাঙ্গেযঃ ক্রোধদীপ্তেন চক্ষুষা । সংপ্রৈক্ষত  
 কটাক্ষেণ নির্দহ্মিব ভারত ॥ ২ ॥ স্ত্রীহুং তস্য স্মরনুজন্ সর্বলোকস্য পশ্যতঃ ।  
 নাজঘান রণে ভীষ্মঃ স চ-তন্মাববুদ্ধবান্ ॥ ৩ ॥ অর্জুনস্ত মহারাজ শিখণ্ডিনম-  
 ভাষত । অভিজবস্ব স্বরিতো জুহি চৈনং পিতামহম্ ॥ ৪ ॥ কিস্তে বিবক্ষয়া বীর  
 জুহি ভীষ্মং মহারথম্ । নহন্যমহুপশ্যামি কঙ্কিদৌধিষ্টিরে বলে ॥ ৫ ॥ যঃ শক্রঃ  
 সমরে ভীষ্মং প্রতিযোদ্ধুমিহাহবে । ঋতে হ্বাং পুরুষব্যঘু সত্যমেতদ্ববীমি তে ॥ ৬ ॥  
 এবমুক্তস্ত পার্থেন শিখণ্ডী ভরতর্ষভ । শরৈর্নানাবিধৈস্তুগং পিতামহমবাকিরৎ ॥ ৭ ॥  
 অচিস্তযিত্বা তান্ বাণান্ পিতা দেবত্র তস্তব । অর্জুনং সমরে ক্রুদ্ধং বারযামাস  
 সাযকৈঃ ॥ ৮ ॥ তথৈব চ চমুং সর্বাং পাণ্ডবানাং মহারথঃ । অপ্রৈষীৎ স শরৈ-  
 স্তীকৈঃ পরলোকায মারিষ ॥ ৯ ॥ তথৈব পাণ্ডবা রাজন্ মৈন্যেন মহতাবৃতাঃ ।  
 ভীষ্মং সংছাদযামাসুর্মেঘা ইব দিবাকরম্ ॥ ১০ ॥ স সমস্তাং পরিবৃতো ভারতৈ-  
 ভরতর্ষভ । নির্দদাহ রণে শূরান্ বনে বহ্নিরিব জ্বলন্ ॥ ১১ ॥ তত্রাদ্ভুতমপশ্যান  
 তব পুলস্য পৌরুষম্ । অযোধযচ্ যৎ পার্থং জুগুপে চ পিতামহম্ ॥ ১২ ॥ কৰ্ম্মণা  
 তেন সমরে তব পুলস্য ধম্বিনঃ । দুঃশাসনস্য তুতুষুঃ সর্বে লোকা মহাত্মনঃ ॥ ১৩ ॥  
 যদেকঃ সমরে পার্থান্ সার্জুনান্ সমযোধযৎ । ন চৈনং পাণ্ডবা যুদ্ধে বারযামা-  
 সুরুল্লবম্ ॥ ১৪ ॥ দুঃশাসনেন সমরে রথিনো বিরথীকৃতাঃ । সাদিনশ্চ মহে-  
 ষাসা হস্তিনশ্চ মহাবলাঃ ॥ ১৫ ॥ বিনিভিন্নাঃ শরৈস্তীকৈর্নিপেতুর্ষসুধাতলে ।  
 শরাতুরাস্তথৈবান্যে দম্বিনো বিক্রতা দিশঃ ॥ ১৬ ॥ যথাগ্নিরিহ্ননং প্রাপ্য জ্বলে-  
 দ্দীপ্তার্চিরুল্লবঃ । তথা জজ্বাল পুলস্তে পাণ্ডুসেনাঞ্চ নির্দহন্ ॥ ১৭ ॥ তং ভারত  
 মহামাত্রং পাণ্ডবানাং মহারথঃ । জেতুং নোৎসহতে কশ্চৎ নাভ্যুদ্যাতুং কথ-  
 ণন । ঋতে মহেন্দ্রতনয়াং শ্বেতাশ্বাং ক্লমসারথৈঃ ॥ ১৮ ॥ স হি তং সমরে  
 রাজন্ নিজ্জিত্য বিজযোহর্জুনঃ । ভীষ্মমেবাভিদ্রাব সর্বসৈন্যস্য পশ্যতঃ ॥ ১৯ ॥  
 বিজিতস্তব পুল্লোহপি ভীষ্মবাহব্যপাশ্রযঃ । পুনঃ পুনঃ সমাশ্বস্য প্রায়ুষ্যত  
 মদোৎকটঃ । অর্জুনস্ত রণে রাজন্ যোধযন্ স ব্যরাজত ॥ ২০ ॥ শিখণ্ডী তু রণে  
 রাজন্ বিব্যাধৈব পিতামহম্ । শরৈরশনিসংস্পর্শৈস্তথা সর্পবিষোপটৈঃ । ন চ  
 তে স্ম রুজঞ্চক্রুঃ পিতুস্তব জনেশ্বর ॥ ২১ ॥ স্মযমানস্ত গাঙ্গেযস্তান্ বাণান্ জগৃহে-  
 তদা । উষার্ভো হি নরো যদজ্জলধারাঃ প্রতীচ্ছতি । তথা জগ্রাহ গাঙ্গেযঃ শর-  
 ধারাঃ শিখণ্ডিনঃ ॥ ২২ ॥ তং ক্ষত্রিয়া মহারাজ দদৃশুর্ঘোরমাহবে । ভীষ্মং দহন্তং

সৈন্যানি পাণ্ডবানাং মহাত্মনাম্ ॥ ২৩ ॥ ততোহত্রবীত্ত্ব স্মৃতঃ সর্বসৈন্যানি  
 মারিষ । অভিদ্রবত সংগ্রামে ফাল্গুনং সর্বতো রণে ॥ ২৪ ॥ ভীষ্মো বঃ সমরে  
 সর্বান্ পালষিষ্যতি ধর্মবিৎ । তে ভয়ং সুমহত্যক্কা পাণ্ডবান্ প্রতিযুধ্যত ॥ ২৫ ॥  
 হেমতালেন মহতা ভীষ্মস্তিষ্ঠতি পালয়ন্ । সর্বেষাং ধাত্তুরাষ্ট্রাণাং সমরে শর্মা বর্ষ  
 চ ॥ ২৬ ॥ ত্রিদশাপি সমায়ুক্তা নালং ভীষ্মং সম্যসিতুং । কিমু পার্থা মহাত্মানং  
 মর্ত্যভূতা মহাবলাঃ ॥ ২৭ ॥ কস্মাদ্দ্রবত হে যোধাঃ ফাল্গুনং প্রাপ্য সংযুগে ।  
 অহমদ্য রণে যত্তো যোধষিষ্যামি পাণ্ডবম্ । সহিতঃ সর্বতো যত্নৈর্ভবন্তির্বসুধা-  
 ধিপৈঃ ॥ ২৮ ॥ তচ্ছ্রুত্বা তু বচো রাজংস্তব পুত্রস্য ধন্বিনঃ । সর্বে যোধাঃ সুসং-  
 রুদ্ধা বলবন্তো মহাবলাঃ ॥ ২৯ ॥ তে বিদেহাঃ কলিঙ্গাশ্চ দাসেরকগণাশ্চ হ ।  
 অভিপেতুর্নিষাদাশ্চ সৌবীরাশ্চ মহারণে ॥ ৩০ ॥ বাহ্লীকা দরদাশ্চৈব প্রতী-  
 চ্যেদীচ্যামালবাঃ । অভীষাহাঃ শূরসেনাঃ শিবযোহথ বশাতযঃ ॥ ৩১ ॥ শাল্লাঃ  
 শকাস্ত্রিগর্তাশ্চ অশ্বষ্ঠাঃ কেকযৈঃ সহ । অভিপেতু রণে পার্থং পতঙ্গাইব পাব-  
 কম্ ॥ ৩২ ॥ স তান্ সর্বান্ সহানীকান্ মহারাজ মহারণান্ । দিব্যান্যস্ত্রাণি  
 সঞ্চিন্ত্য প্রসন্নায ধনঞ্জযঃ ॥ ৩৩ ॥ স তৈরস্ত্রের্মহাবেগৈর্দদাহাশু মহাবলঃ ।  
 শরপ্রতাপৈর্বাভিসুঃ পতঙ্গানিব পাবকঃ ॥ ৩৪ ॥ তস্য বাণসহস্রাণি সৃজতো  
 দৃঢ়ধন্বিনঃ । দীপ্যমানমিবাকাশে গাণ্ডীবং সমদৃশ্যত ॥ ৩৫ ॥ তে শরান্না  
 মহারাজ বিপ্রকীর্ণমহাধ্বজাঃ । নাভ্যবর্তন্ত রাজানঃ সহিতা বানরধ্বজম্ ॥ ৩৬ ॥  
 সধ্বজা রথিনঃ পেতুর্হয়ারৌহা হযৈঃ সহ । সগজাশ্চ গজারোহাঃ কিরীটিশ-  
 রতাডিতাঃ ॥ ৩৭ ॥ ততোহর্জুনকরোৎসৃষ্টৈরাবৃতাসীদ্বসুন্ধরা । বিদ্রবন্তিঃ  
 বহুধা বলৈ রাক্ষাং সমস্ততঃ ॥ ৩৮ ॥ অথ পার্থোমহারাজ দ্রাবযিহ্না বকথি-  
 নীম্ । দুঃশাসনায স্তুবহূন্ প্রেষয়ামাস শাযকান্ ॥ ৩৯ ॥ তে তু ভিত্ত্বা তব  
 স্মৃতং দুঃশাসনমধোমুখাঃ । ধরণীং বিবিশুঃ সর্বে বল্লীকমিব পন্নগাঃ । হযাং-  
 শ্চাস্য তথা জগ্নে সারথিঞ্চ ন্যপাতযৎ ॥ ৪০ ॥ বিবিংশতিঞ্চ বিংশত্যা বিরথং  
 ক্রুতবান্ যুধি । আজঘান ভূশঙ্কৈব পঞ্চভিন্তপর্ষভিঃ ॥ ৪১ ॥ রূপং শল্যং বিক-  
 র্ণঞ্চ বিদ্ধ্বা বহুভিরাযমৈঃ । চকার বিরথাংশ্চৈব কৌন্তেযঃ শ্বেতবাহনঃ ॥ ৪২ ॥  
 এবস্তে বিরথাঃ পঞ্চ রূপঃ শল্যশ্চ মারিষ । দুঃশাসনো বিকর্ণশ্চ তথৈব চ বিবিং-  
 শতিঃ । সম্প্রাদ্রবন্ত সমরে নিজ্জিতাঃ সব্যসাচিনা ॥ ৪৩ ॥ পূর্বাঙ্কে তরতশ্রেষ্ঠ  
 পরাজিত্য মহারণান্ । প্রজঙ্ঘাল রণে পার্থো বিধুম ইব পাবকঃ ॥ ৪৪ ॥ তথৈব  
 শরবর্ষণ ভাস্করো রশ্মিবানিব । অন্যানপি মহারাজ পাতয়ামাস পার্থিবান্ ॥ ৪৫ ॥

পরাঙ্মুখীকৃত্য তথা শরবর্ষৈর্মহারথান্ । প্রাবর্ত্তযত সংগ্রামে শোণিতোদাং  
 মহানদীম্ । মধ্যে চ কুরুসৈন্যানাং পাণ্ডবানাঞ্চ ভারত ॥ ৪৬ ॥ গজাশ্বরথসং-  
 যাস্চ বহুধা রথিভিহতাঃ । রথাস্চ নিহতা নাগৈর্হযাশ্চৈব পদাতিভিঃ ॥ ৪৭ ॥  
 অন্তরাম্চ্ছিদ্যমানানি শরীরানি শিরাংসি চ । নিপেতুর্দিক্ষু সর্বাশু গজাশ্বরথযো-  
 ধিনাম্ ॥ ৪৮ ॥ ছন্নমাযোধনং রাজন্ কুণ্ডলাঙ্গদধারিভিঃ । পতিতৈঃ পাত্যমা-  
 নৈশ্চ রাজপুলৈর্মহারথৈঃ । রথনৈমিনিকৃতৈশ্চ গজৈশ্চৈবাবপোথিতৈঃ ॥ ৪৯ ॥  
 পাদাতাশ্চাপ্যধাবন্ত সাস্থাশ্চ হযযোধিনঃ । গজাশ্চ রথযোধাস্চ পরিপেতুঃ সম-  
 স্ততঃ । বিকীর্ণাশ্চ রথা ভূমৌ ভগ্নচক্রযুগধ্বজাঃ ॥ ৫০ ॥ তদাজাশ্বরথৌঘানাং  
 রুধিরেণ সমুক্ষিতম্ । ছন্নমাযোধনং রেজে রক্তাত্ত্রিমিব শারদম্ ॥ ৫১ ॥ স্থানঃ কাকা-  
 শ্চ গৃধ্রাশ্চ বৃকা গোমায়ুভিঃ সহ । প্রণেদুর্ভক্ষ্যমাসাদ্য বিকৃতাস্চ মৃগদ্বিজাঃ ॥ ৫২ ॥  
 ববুর্ভবিধাশ্চৈব দিক্ষু সর্বাশু মারুতাঃ । দৃশ্যমাণেষু রক্ষসশ্চ ভূতেষু বিনদৎ-  
 স্তু চ ॥ ৫৩ ॥ কাঞ্চনানি চ দামানি পতাকাশ্চ মহাধনাঃ । ধযমানা ব্যদৃশ্যন্ত  
 সহস্রা মারুতেরিতাঃ ॥ ৫৪ ॥ শ্বেতচ্ছত্রসহস্রানি সধ্বজাশ্চ মহারথাঃ । বিকীর্ণাঃ  
 সমদৃশ্যন্ত শতশোহথ সহস্রাঃ ॥ ৫৫ ॥ সপতাকাশ্চ মাতঙ্গা দিশৌ জগ্মুঃ শরা-  
 তুরাঃ । ফলিয়াশ্চ মনুষ্যেভ্য গদাশাক্তিধনুর্ধরাঃ । সমস্ততশ্চ দৃশ্যন্তে পতিতা  
 ধরনীতলে ॥ ৫৬ ॥ ততো ভীষ্মো মহারাজ দিব্যমস্ত্রমুদীরয়ন্ । অভ্যধাবত  
 কৌন্তেযং মিশতাং সর্ষধ্বিনাম্ ॥ ৫৭ ॥ তং শিখণ্ডী রুণে যান্তমভ্যদ্রবত দংশিতঃ ।  
 ততঃ সমাহরন্তীম্ স্তদস্ত্রং পাবকোপমম্ ॥ ৫৮ ॥ এতস্মিন্নেব কালে তু কৌন্তেযঃ  
 শ্বেতবাহনঃ । নিজস্মৈ তাবকং সৈন্যং মোহযিত্বা পিতামহম্ ॥ ৫৯ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি অর্জুনপরাক্রমে চতুর্দশাধিক-

শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১১৪ ॥



সঞ্জয় উবাচ । সমং ব্যূচেষ্টনীকেষু ভূষিষ্ঠেষু নিবর্ত্তিনঃ । ব্রহ্মলোকপরাঃ সর্বে  
 সমপদ্যন্ত ভারত ॥ ১ ॥ ন হনীকমনীকেন সমসজ্জত সঙ্কুলে । ন রথা রথিভিঃ  
 সার্কং ন পাদাতাঃ পদাতিভিঃ ॥ ২ ॥ অস্থা নাশ্চৈরযুধ্যন্ত ন গজা গজযো-  
 ধিভিঃ । উন্নত্তবম্ মহারাজ যুধ্যন্তে তত্র ভারত । মহান্ ব্যতিকরো রৌদ্রঃ সেনযোঃ  
 সমপদ্যত ॥ ৩ ॥ নরনাগগণেষেবং ব্যবকীর্ণেষু সর্ষশঃ । ক্ষযে তস্মিন্নমহারৌদ্রে  
 নির্বিশেষমজাযত ॥ ৪ ॥ ততঃ শল্যঃ রূপশ্চৈব চিত্রসেনশ্চ ভারত । দুঃশাসনো  
 বিকর্ণশ্চ রথানাশ্চায় ভাস্বরান্ । পাণ্ডবানাং রুণে যোধা ধ্বজিনীং সন্দকম্প-

षन् ॥ ५ ॥ सा वध्यमाना समरे पाण्डुसेना महाअभिः । ब्राम्यते बहुधा राजन्  
 मारुतेनेव नोर्जले ॥ ७ ॥ यथा हि शैशिरः कालो गवां मर्माणि क्रुञ्चति ।  
 तथा पाण्डुसूतानां वै भीष्मो मर्माणि क्रुञ्चति ॥ १ ॥ तथैव तव सैन्यस्य पार्थेन  
 च महाअना । नवमेघप्रतीकाशाः प्रतीता बहुधा गजाः । मृद्यमानाश्च दृश्यन्ते  
 पार्थेन रथयूथपाः ॥ ८ ॥ ईषुतिस्तुाड्यमानाश्च नाराटैश्च सहस्रशः । शैतुरार्द्ध-  
 स्वरं क्रुद्धा तत्र तत्र महागजाः ॥ ९ ॥ आनङ्गाभरणैः काथैर्निहतानां महा-  
 अनाम् । छम्मायोधनं रेजे शिरोभिश्च सकुण्डलैः ॥ १० ॥ तस्मिन्नेव महा-  
 राज महवीरवरक्षये । भीष्मे च युधि विक्रान्ते पाण्डवे च धनञ्जये ॥ ११ ॥ ते  
 पराक्रान्तमालोक्य राजन् युधि पितामहम् । अभ्यवर्तन्त ते पुत्राः सर्वसैन्य-  
 पुरस्कृताः ॥ १२ ॥ इच्छन्तो निधनं युद्धे स्वर्गं क्रुद्धा परायणम् । पाण्डवानभ्यवर्तन्त  
 तस्मिन् वीरवरक्षये ॥ १३ ॥ पाण्डवापि महाराज स्मरन्तो विविधान् बहून् । कुशान्  
 क्रुतान् सपुत्रेण ह्यथा पूर्वं नराधिप ॥ १४ ॥ त्वयं त्यक्त्वा रणे शूरा ब्रह्मलोकाय  
 तत्पराः । अमर्षवशमापन्ना योधयन्ति प्रहृष्टवत् ॥ १५ ॥ सेनापतिस्तु समरे  
 प्राह सेनां महारथः । अभिद्रवत गाङ्गेयं सोमकाः सृष्टयैः सह ॥ १६ ॥  
 सेनापतिवचः श्रुत्वा सोमकाः सृष्टयाश्च ते । अभ्यद्रवन्त गाङ्गेयं शस्त्रवृष्ट्या  
 समस्ततः ॥ १७ ॥ वध्यमानस्ततो राजन् पिता शान्तनवस्तव । अमर्षवशमापन्ना  
 योधयामास सृष्टयान् ॥ १८ ॥ तस्य कीर्तिमतस्तत पूरा रामेण धीमता । सम्पुद-  
 त्तास्तुशिक्षा वै परानीकविनाशिनी ॥ १९ ॥ स तां शिक्षामधिष्ठाय कूर्बन् परबल-  
 क्षयम् । अहन्यहनि पार्थानां वृद्धः कुरूपितामहः । भीष्मो दश सहस्राणि जघान  
 परवीरहा ॥ २० ॥ तस्मिंस्तु दशमे प्राप्ते दिवसे भरतर्षभ । भीष्मेणैकेन मत्स्येषु  
 पाण्डालेषु च संयुगे । गजाश्वमितं ह्यहा हताः सप्त महारथाः ॥ २१ ॥ ह्यहा  
 पञ्च सहस्राणि रथिनां प्रपितामहः । नराणां महायुद्धे सहस्राणि चतुर्दश ॥ २२ ॥  
 दस्तिनां षट् सहस्राणि हयानामयुतं पुनः । शिक्षाबलेन निहतं पित्रा तव विशा-  
 म्पते ॥ २३ ॥ ततः सर्वमहीपानां क्रोडयिह्य बकथिनीम् । विराटस्य प्रियो  
 ब्राता शतानीको निपातितः ॥ २४ ॥ शतानीकस्तु समरे ह्यहा भीष्मः प्रताप-  
 वान् । सहस्राणि महाराज राज्ञां भल्लैरताडयत् ॥ २५ ॥ ये च केचन पार्थाना-  
 मभिघाता धनञ्जयम् । राजानो भीष्ममासाद्य गतास्तु यमसादनम् ॥ २६ ॥ एवं  
 दश दिशो भीष्मः शरजातैः समस्ततः । आहत्य सेनां पार्थानामवतश्चे चमू-  
 युथे ॥ २७ ॥ स क्रुद्धा सुमहत् कर्म तस्मिन् वै दशमेहनि । सेनयोरन्तरे तिष्ठन्

প্রগৃহীতশরাসনঃ ॥ ২৮ ॥ ন চৈনং পার্থিবাঃ কেচিৎ শক্রা রাজমিরীক্ষিতুন্ ।  
 নধ্যং প্রাপ্তং যথা গ্রীষ্মে তপস্তং ভাস্করং দিবি ॥ ২৯ ॥ যথা দৈত্যচমুং শক্র-  
 স্তাপয়ামাস সংযুগে । তথা ভীষ্মঃ পাণ্ডবেষাংস্তাপয়ামাস ভারত ॥ ৩০ ॥ তথা  
 চৈনং পরাক্রান্তমালোক্য মধুসূদনঃ । উবাচ দেবকীপুত্রঃ প্রীযমাণো ধন-  
 জ্ঞয়ম্ ॥ ৩১ ॥ এষ শাস্তনবো ভীষ্মঃ সেনর্যোরন্তরে স্থিতঃ । সন্নিহত্য বলাদেনং  
 বিজয়ন্তে ভবিষ্যতি ॥ ৩২ ॥ বলাৎ সংস্তুস্তুষ্টৈশ্বনং যত্রৈষা ভিদ্যতে চমুঃ । ন হি  
 ভীষ্মশরানন্যঃ সোচুমুৎসহতে বিভো ॥ ৩৩ ॥ ততস্তস্মিন্ ক্রমে রাজন্ চোদিতো  
 বানরধ্বজঃ । সধ্বজং সরথং সাস্থং ভীষ্মমন্তর্দধে শরৈঃ ॥ ৩৪ ॥ স চাপি কুরুমু-  
 খ্যানামৃষভঃ পাণ্ডবেরিতান্ । শরব্রাতৈঃ শরব্রাতান্ বহুধা বিদদার তান্ ॥ ৩৫ ॥  
 ততঃ পাঞ্চালরাজশ্চ ধৃষ্টকিতুশ্চ বীর্যবান্ । পাণ্ডবো ভীমসেনশ্চ ধৃষ্টদ্যুম্নশ্চ  
 পার্শ্বতঃ ॥ ৩৬ ॥ যমৌ চ চেকিতানশ্চ কৈকেয়াঃ পঞ্চ চৈব হ । সাত্যকিশ্চ মহা-  
 বাহুঃ সৌভদ্রোহথ ঘটোৎকচঃ ॥ ৩৭ ॥ দ্রৌপদেষাঃ শিখণ্ডী চ কুন্তিভোজশ্চ  
 বীর্যবান্ । সুশর্মা চ বিরাটশ্চ পাণ্ডবেষা মহাবলাঃ ॥ ৩৮ ॥ এতে চান্যে চ  
 বহবঃ পীড়িতা ভীষ্মশায়কৈঃ । সমুদ্ধতাঃ ফাল্লুনেন নিমগ্নাঃ শোকমাগরে ॥ ৩৯ ॥  
 ততঃ শিখণ্ডী বেগেন প্রগৃহ পরমাযুধম্ । ভীষ্মমেবাভিদুদ্রাব রক্ষ্যমাণঃ কিরী-  
 টিনা ॥ ৪০ ॥ ততোহস্যানুচরান্ হত্বা সর্বানুগবিভাগবিৎ । ভীষ্মমেবাভিদুদ্রাব  
 বীভৎসুরপরাজিতঃ ॥ ৪১ ॥ সাত্যকিশ্চেকিতানশ্চ ধৃষ্টদ্যুম্নশ্চ পার্শ্বতঃ । বিরাটো  
 দ্রুপদশ্চৈব মাদ্রীপুল্লৌ চ পাণ্ডবৌ । দুদ্রুবু ভীষ্মমেবাজৌ রক্ষিতা দৃঢ়ধন্বনা ॥ ৪২ ॥  
 অভিমন্যুশ্চ সমরে দ্রৌপদ্যাঃ পঞ্চ চাত্মজাঃ । দুদ্রবুঃ সমরে ভীষ্মং সমুদ্যতমহা-  
 যুধাঃ ॥ ৪৩ ॥ তে সর্বে দৃঢ়ধন্বনঃ সংযুগেষপলাঘিনঃ । বহুধা ভীষ্মমানচ্ছূর্মার্গ নৈঃ  
 কৃতমার্গ নৈঃ ॥ ৪৪ ॥ বিধুষ তান্ বাণগণান্ যে মুক্তাঃ পার্থিবোত্তমৈঃ । পাণ্ডব-  
 নামদীনাভ্যা ব্যগাহত বকথিনীম্ । চক্রে শরবিঘাতঞ্চ ক্রীডন্নিব পিতামহঃ ॥ ৪৫ ॥  
 নাভিসন্ধত পাঞ্চাল্যে স্রষমানো মুহুমুহুঃ । স্ত্রীভ্যং তস্য তু সংসৃত্য ভীষ্মো বাণান্  
 শিখণ্ডিনি ॥ ৪৬ ॥ জঘান দ্রুপদানীকে রথান্ সপ্ত মহারথঃ । ততঃ কিলকিলাশকঃ  
 ক্ষণেন সমভূত্তদা । মৎস্যপাঞ্চালচেদীনাং তমেকমভিধাবতাম্ ॥ ৪৭ ॥ তে নরা-  
 শ্বরথব্রাতৈর্বারনৈশ্চ পরস্তপ । তমেকং ছাদয়ামাসু স্মেষা ইব দিবাকরম্ । ভীষ্মং  
 ভাগীরথীপুত্রং প্রতপস্তং রণে রিপুন্ ॥ ৪৮ ॥ ততস্তস্য চ তেষাঞ্চ যুদ্ধে দেবা-  
 সুরোপমে । কিরীটী ভীষ্মমানচ্ছৎ পুরস্কৃত্য শিখণ্ডিনম্ ॥ ৪৯ ॥

ইতি ভীষ্মপর্বণি ভীষ্মবধপর্বণি ভীষ্মপরাক্রমে পঞ্চদশাধিক-

শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১১৫ ॥

सङ्गय उवाच । एवं ते पाण्डवाः सर्वे पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् । विव्याधुः समरे  
 तीर्णं परिवार्य समस्ततः ॥ १ ॥ शतश्रीभिः सुषोराभिः पाटिशैश्च परश्वधैः ।  
 मूढारैर्मूषलप्रसैः क्लेषणीयैश्च सर्वशः ॥ २ ॥ शरैः कनकपुत्रैश्च शक्तितो-  
 मरकम्पनैः । नाराटैर्बृहत्सदृशैश्च भुषुण्डीभिश्च सर्वशः । अताडयन् रणे तीर्णं  
 सहिताः सर्वसृष्टयाः ॥ ३ ॥ स विशीर्णतन्मुद्राणः पीडितो बह्वतिसुदा । नृविव्यथे  
 तदा तीर्णो त्रिदयमानेषु मर्मसु ॥ ४ ॥ स दीपुशरचापाग्निरस्तप्रसृतमारुतः ।  
 नेमिनिहृदसन्तापो महास्त्रोदयपावकः ॥ ५ ॥ चित्रचापमहाङ्गालो वीरक्षय-  
 महैकनः । युगान्ताग्निसमप्रथः परेषां समपद्यत ॥ ६ ॥ विवृत्य रथसंघात-  
 मस्तुरेण विनिःसृतः । दृश्यते स्म नरेन्द्राणां पुनर्मध्यगतश्चरन् ॥ ७ ॥ ततः पाष्ण-  
 लराजश्च धृष्टकेतुमचिन्त्य च । पाण्डवानीकिनौमध्यमासमाद विशाम्पते ॥ ८ ॥ ततः  
 सात्यकिर्भीमो च पाण्डवश्च धनञ्जयम् । द्रुपदश्च विराटश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्षतम् ॥ ९ ॥  
 तीमघोषैश्महावेगैश्मर्मावरणभेदिभिः । षडेतामिशितैर्भीमैः प्रविव्याधोत्तमैः  
 शरैः ॥ १० ॥ तस्य ते निशितान् वाणान् समिवार्य महारथाः । दशभिर्दशभिर्भी-  
 ममदयामासुरोजसा ॥ ११ ॥ शिखण्डी तु रणे वाणान् यान्ममोच महारथः । ते  
 तीर्णं विविशुस्तूर्णं स्वर्णपुञ्जाः शिलाशिताः ॥ १२ ॥ ततः किर्रीटी संरुद्धो तीर्ण-  
 मेवाभ्यधावत । शिखण्डिनं पुरस्कृत्य धनुश्चास्य समाच्छिनत् ॥ १३ ॥ तीर्णस्य धनु-  
 षश्छेदं नामृष्यस्तु महारथाः । द्रोणश्च कृतवर्मा च सैन्धवश्च जयद्रथः ॥ १४ ॥  
 डुरिश्चवाः शलः शल्यो भर्षदत्तस्तथैव च । सप्रेते परमक्रुद्धाः किर्रीटिनमभि-  
 क्रुताः ॥ १५ ॥ उन्नमास्त्राणि दिव्यानि दर्शयन्तो महारथाः । अभिपेतुर्भृशं क्रुद्धा-  
 श्छादयन्तुः स्म पाण्डवम् ॥ १६ ॥ तेषामापततां शकः शुश्रुवे फाल्गुनं प्रति ।  
 उद्भ्रानां यथा शकः समुद्राणां युगक्षये ॥ १७ ॥ हतानयत गृहीत विध्यधमव-  
 क्रुन्तत । इत्यासीदुमूलः शकः फाल्गुनस्य रथं प्रति ॥ १८ ॥ तं शकं तुमूलं  
 श्रुत्वा पाण्डवानां महारथाः । अभ्यधावन् परीप्सन्तुः फाल्गुनं भरतर्षत ॥ १९ ॥  
 सात्यकिर्भीमसेनश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः । विराटद्रुपदो चोत्तो राक्षसश्च षटोत्त-  
 कचः ॥ २० ॥ अतिमन्युश्च संक्रुद्धः सप्रेते क्रोधमुच्छ्रिताः । समभ्यधावन्तुर्दि-  
 ताश्चित्रकार्मुकधारिणः ॥ २१ ॥ तेषां समभवद्भुक्तं तुमूलं लोमहर्षणम् । संघ्रा-  
 मे भरतश्रेष्ठ देवानां दानवैरिव ॥ २२ ॥ शिखण्डी तु रथश्रेष्ठो रक्ष्यमाणः  
 किर्रीटिना । अविध्यदशभिर्भीमैः छिन्नधन्वाननाहवे । सारथिं दशभिश्चास्य धृज-  
 ष्ठकेन चिच्छिदे ॥ २३ ॥ सोहन्यत्कार्मुकमादत्त गाह्वयो वेगवत्तरम् । तद-

প্যস্য শিতৈর্বাণৈস্ত্রিভিশ্চিচ্ছেদ ফাল্গুনঃ ॥ ২৪ ॥ এবং স পাণ্ডবঃ ক্রুদ্ধ আত-  
 মাত্তং পুনঃ পুনঃ । ধনুর্ভীষ্মস্য চিচ্ছেদ সব্যসাতী পরস্তুপঃ ॥ ২৫ ॥ স ছিন্নধন্বা  
 সংক্রুদ্ধঃ স্কন্ধনী পরিসংলিহন্ । শক্তিং জগ্রাহ তরসা গিরীণামপি দারুণীম্ ।  
 বাঞ্চ চিক্ষেপ সংক্রুদ্ধঃ ফাল্গুনস্য ব্রথং প্রতি ॥ ২৬ ॥ তামাপতন্তীং সংপ্রেক্ষ্য  
 জ্বলন্তীমশনীমিব । সমাধত্ত শিতান্ ভল্লান্ পঞ্চ পাণ্ডবনন্দনঃ ॥ ২৭ ॥ তস্য  
 চিচ্ছেদ তাং শক্তিং পঞ্চধা পঞ্চভিঃ শরৈঃ । সংক্রুদ্ধো ভরতশ্রেষ্ঠ ভীষ্মবাহুপ্রবে-  
 রিত্যম্ ॥ ২৮ ॥ সা পপাত তথা ছিন্না সংক্রুদ্ধেন কিরীটিনা । মেঘবৃন্দপরিভ্রষ্টা  
 বিচ্ছিন্নেব শতহৃদা ॥ ২৯ ॥ ছিন্নাং তাং শক্তিমালোক্য ভীষ্মঃ ক্রোধসমম্বিতঃ ।  
 অচিন্তয়দ্ভগ্নে বীরো বুদ্ধ্যা পরপুরুঞ্জযঃ ॥ ৩০ ॥ শক্ভোহহং ধনুষ্টৈকেন নিহন্তুঃ  
 সর্বপাণ্ডবান্ । যদ্যেযাং ন ভবেদগোপ্তা বিশ্বক্সেনো মহাবলঃ ॥ ৩১ ॥ কারণ-  
 দ্বয়মাস্থায় নাহং যোৎস্যামি পাণ্ডবান্ । অবধ্যহ্মাচ্চ পাণ্ডনাং স্ত্রীভাবাচ্চ শিখ-  
 গুণিঃ ॥ ৩২ ॥ পিত্রা তুর্কেন মে পূর্বং যদা কালীমুদাবহৎ । স্বচ্ছন্দমরণং দত্ত-  
 মবধ্যহ্মং রণে তথা । তস্মান্মৃত্যুমহং মন্যে প্রাপ্তকালমিবাত্মনঃ ॥ ৩৩ ॥ এবং  
 জ্ঞাত্বা ব্যবসিতং ভীষ্মস্যামিততেজসঃ । ঋষযো বসবশ্চৈব বিষৎস্বা ভীষ্মমক্রবন্ ॥ ৩৪ ॥  
 যত্তে ব্যবসিতং তাত তদস্মাকমপি প্রিযম্ । তৎ কুরুষ মহেষাস যুদ্ধে বুদ্ধিং নিব-  
 র্ত্তম ॥ ৩৫ ॥ তস্য বাক্যস্য বিরতো প্রাদুরাসীৎ শিবোহনিলঃ । অনুলোমঃ সুগ-  
 ন্ধী চ পৃষতৈশ্চ সমম্বিতঃ ॥ ৩৬ ॥ দেবদুন্দুভয়শ্চৈব সম্পূর্ণেদুর্মহাস্বনাঃ । পপাত  
 পুষ্পবৃষ্টিশ্চ ভীষ্মস্যোপরি মারিষ ॥ ৩৭ ॥ ন চ তৎ শুশ্রুবে কশ্চিৎ তেষাং  
 সম্বদতাং ন প । ঋতে ভীষ্মং মহাবাহুং মাঞ্চাপি মুনিতেজসা ॥ ৩৮ ॥ সম্ভ্রমশ্চ  
 মহানাসীল্লিদশানাং বিশাম্পাতে । পতিষ্যতি রথাস্তীয়ে সর্বলোকপ্রিযে তদা ॥ ৩৯ ॥  
 ইতি দেবগণানাঞ্চ বাক্যং শ্রুত্বা মহাযশাঃ । ততঃ শান্তনবো ভীষ্মো বীভৎসুং  
 নাভ্যবর্তত । ভিद्यমানঃ শিতৈর্বাণৈঃ সর্বাৱরণভেদিভিঃ । ৪০ ॥ শিখণ্ডী তু মহা-  
 রাজ ভরতানাং পিতামহম্ । আজঘানোরসি ক্রুদ্ধো নবভিনিশিতৈঃ শরৈঃ ॥ ৪১ ॥  
 স তেনাভিহতঃ সংখ্যে ভীষ্মঃ কুরুপিতামহঃ । নাকস্পত মহারাজ ক্ষিতিকম্পে  
 যধাচলঃ ॥ ৪২ ॥ ততঃ প্রহস্য বীভৎসুর্ব্যাক্ষিপন্ গাণ্ডিবং ধনুঃ । গাঙ্গেয়ং পঞ্চ-  
 বিংশত্যা ক্ষুদ্রকাণ্ডং সমাপর্ষৎ ॥ ৪৩ ॥ পুনঃ শরশতৈরেনং ছরমাণো ধনঞ্জযঃ ।  
 সর্বগাত্রেষু সংক্রুদ্ধঃ সর্বমর্শস্বতাডযৎ ॥ ৪৪ ॥ এবমন্যৈরপি ভৃশং বিধ্যমানঃ  
 সহস্রশঃ । তানপ্যাশু শরৈর্ভীষ্মঃ প্রবিব্যাধ মহারথঃ ॥ ৪৫ ॥ তৈর্বিমুক্তান্ শরণ্য  
 ভীষ্মো যুধি সত্যপরাক্রমঃ । নিবারয়ামাস শরৈঃ সমং সমতপর্ষভিঃ ॥ ৪৬ ॥ শিখণ্ডম



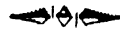
ङ्गी तु रणे वाणान् यान्मुमोच महारथः । न चक्रुस्ते रूजस्तस्य रूक्मपुत्राः शिला-  
 शिताः ॥ ४१ ॥ ततः किर्रीटी संक्रुद्धो तीर्थमेवाभ्यवर्तत । शिखण्डिनं पुरस्कृत्य  
 धनुश्चास्य समाच्छिनत् ॥ ४२ ॥ अथैनं नवभिर्बिद्वा ध्वजमेकेन चाच्छिनत् । सारथिं  
 विशिथैश्चास्य दशभिः समकम्पयत् ॥ ४३ ॥ सोहन्यं कार्मुकमादत्त गाङ्गेये-  
 बलवत्तरम् । तदप्यस्य शितैर्बाणैस्त्रिधा त्रिभिरपातयत् ॥ ५० ॥ निमेषार्द्धेन  
 कौन्तेय आत्तमात्तं महारणे । एवमस्य धनुःश्याजो चिच्छेद सुबहून्मृत ॥ ५१ ॥  
 ततः शान्तनवो तीर्थो वीथं सुं नाभ्यवर्तत । अथैनं पञ्चविंशत्या क्रुद्ध-  
 कानां समार्पयत् ॥ ५२ ॥ सोहतिविद्धो महेश्वासो दुःशासनमभाषत । एष पार्थो  
 रणे क्रुद्धः पाण्डवानां महारथः । शरैरनेकसाहसैर्नामेवाभ्यहनद्रणे ॥ ५३ ॥  
 न चैष समरे शक्यो जेतुं वज्रवृत्ता अपि । न चापि सहिता वीर देवदानवरा-  
 क्रमाः । नापि शक्ता निज्जैतुं किमु मर्त्या महारथाः ॥ ५४ ॥ एवं तयोः  
 सन्वदतोः फाल्गुनो निशितैः शरैः । शिखण्डिनं पुरस्कृत्य तीर्थं विव्याध संयु-  
 गे ॥ ५५ ॥ ततो दुःशासनं भूयः स्मयमान इवाब्रवीत् । अतिबिद्धः शितैर्बाणै-  
 र्भृशं गाण्डीवध्वना ॥ ५६ ॥ वज्राशनिमसम्पर्शा अर्जुनेन शरा युधि । युक्ताः  
 सर्वे व्यवच्छिन्ना नेमे वाणाः शिखण्डिनः ॥ ५७ ॥ निरुस्तमाना मर्माणि दृष्टावरण-  
 तेदिनः । मुषला इव मे मृत्ति नेमे वाणाः शिखण्डिनः ॥ ५८ ॥ ब्रह्मदण्डमसम्पर्शा  
 वज्रवेगदुरासदाः । मम प्राणान्कारुजन्ति नेमे वाणाः शिखण्डिनः ॥ ५९ ॥ नाश-  
 यन्तीव मे प्राणान् यमदृता इवाहिताः । गदापरिघसंस्पर्शा नेमे वाणाः शिख-  
 ण्डिनः ॥ ६० ॥ भुजगा इव संक्रुद्धा लेलिहाना विषोल्लङ्घाः । ममाविशान्ति मर्माणि  
 नेमे वाणाः शिखण्डिनः ॥ ६१ ॥ अर्जुनस्य इमे वाणाः नेमे वाणाः शिखण्डिनः ।  
 क्रुशन्ति मम गाल्गाणि माघमासे गवामिव ॥ ६२ ॥ सर्वे ह्यपि न मे दुःखं कुर्युरन्ये  
 नराधिपाः । वीरं गाण्डीवध्वनमृते जिह्वं कपिध्वजम् ॥ ६३ ॥ इति ब्रुवन् शान्त-  
 नवो दिधक्कुरिव पाण्डवम् । शक्तिं तीर्थः स पार्थाय ततश्चिक्वेप भारत ॥ ६४ ॥  
 तामस्य विशिथैश्छिद्वा त्रिधा त्रिभिरपातयत् । पश्यतां कुरुवीराणां सर्वेषां तत्र  
 भारत ॥ ६५ ॥ चर्मथादत्त गाङ्गेयो जातकपपरिष्कृतम् । खड्गधन्यातरं प्रेषु-  
 मृत्योरग्रे जयाय वा ॥ ६६ ॥ तस्य तच्छतधा चर्म व्यधमत् शायकैस्तदा । रथा-  
 किदनवकटस्य तदद्भुतमिवाभवत् ॥ ६७ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा स्वान्यनीकान्याचो-  
 ष्टयत् । अतिद्रवत गाङ्गेयं मा बोहस्तु भयमनुपि ॥ ६८ ॥ अथ ते तोमरैः  
 सैर्बाणैश्चैश्च समस्ततः । पट्टिशैश्च सुनिस्त्रिंशैर्नाराटैश्च तथा शितैः ॥ ६९ ॥

বৎসদন্তৈশ্চ ভল্লৈশ্চ তমেকমভিদুক্রবুঃ । সিংহনাদস্ততো ঘোরঃ পাণ্ডবানামভূ-  
 ত্তদা ॥ ৭০ ॥ তথৈব তব পুত্রাশ্চ রাজন্ ভীষ্মজযৈষিণঃ । তমেকমভ্যরক্ষন্ত  
 সিংহনাদাংশ্চ চক্রিরে ॥ ৭১ ॥ তত্রাসীত্তুমুলং যুদ্ধং তাবকানাং পঠৈঃ সহ । দশ-  
 মেহহনি রাজেন্দ্র ভীষ্মাজ্জুনসমাগমে ॥ ৭২ ॥ আসীদ্রাজ ইবাবর্তে মুহূর্ত্তমুদ-  
 ধেরিব । সৈন্যানাং যুধ্যমানানাং নিম্নতামিতরেতরম্ ॥ ৭৩ ॥ অসৌম্যকৃপা  
 পৃথিবী শোণিতাক্ৰান্তবত্তদা । সমঞ্চ বিষমশ্ৰেণ ন প্রাজ্জায়ত কিঞ্চন ॥ ৭৪ ॥  
 যোধানাং যুতং হুয়া তস্মিন্ স দশমেহহনি । অতিষ্ঠদাহবে ভীষ্মো ভিদ্যমাণেযু  
 মর্শ্মসু ॥ ৭৫ ॥ ততঃ সেনামুখে তস্মিন্ স্থিতঃ পার্থো ধনুর্ধরঃ । মধ্যেনু কুরুসৈ-  
 ন্যানাং দ্রাবয়ামাস বাহিনীম্ ॥ ৭৬ ॥ বযং শ্বেতহৃষাভীতাঃ কুন্তীপুত্রাদ্ধন-  
 ঙ্গযাৎ । পীড়্যমানাঃ শিতৈঃ শস্ত্রৈঃ প্রাদ্রবাম রণে তদা ॥ ৭৮ ॥ সৌবীরাঃ  
 কিতবাঃ প্রাচ্যাঃ প্রতীচ্যোদীচ্যমালবাঃ । অভীষাহাঃ শূরসেনাঃ শিবযোহথ  
 বশাতযঃ ॥ ৭৯ ॥ শালুশ্রযাস্ত্রিগর্ত্তাশ্চ অযুষ্ঠাঃ কৈকযৈঃ সহ । সর্ব এতে  
 মহাত্মানঃ শরার্ত্তা ব্রণপীড়িতাঃ । সংগ্রামে প্রজহুর্ভীষ্মং যুধ্যমানং কিরী-  
 টিনা ॥ ৮০ ॥ ততস্তমেকং বহবঃ পরিবার্য্য সমন্ততঃ । পরিকাল্য কুরুন্ সর্বান  
 শরবর্ষৈরবাকিরন্ ॥ ৮১ ॥ নিপাতযত গৃহীত বিধ্যধনবক্ষুণ্ডত । ইত্যাসীত্তুমুলঃ  
 শকো রাজন্ ভীষ্মরথং প্রতি ॥ ৮২ ॥ নিহত্য সমরে রাজন্ শতশোহথ সহস্রশঃ ।  
 ন তস্যাসীদনির্ভিন্নং গাত্রে দ্ব্যঙ্গুলমন্তরম্ ॥ ৮৩ ॥ এবস্ততস্তব পিতা শরৈরিশ-  
 কলীকৃতঃ । শিতাট্রৈঃ ফাল্লুনেনাজৌ প্রাক্শিরাঃ প্রাপতদ্রথাৎ । কিঞ্চিচ্ছেষে  
 বন্ধনকরে পুত্রাণাং তব পশ্যতাম্ ॥ ৮৪ ॥ হাহেতি দিবি দেবানাং পার্থিবানাঞ্চ  
 পাণ্ডবাশ্চ পুত্রমাণে রথান্ভাষ্মে বভূব স্তমহাস্বনঃ ॥ ৮৫ ॥ সম্পতন্তমভিপ্রেক্ষ্য  
 ন পার্থিবী লৈপতামহন্ । সহ ভীষ্মেণ সর্বেষাং প্রাপতন্ হৃদযানি নঃ ॥ ৮৬ ॥ স  
 মহাবাহুর্ষসুধামনুকম্পষন্ । ইন্দ্রধ্বজ ইবোৎসৃষ্টঃ কেতুঃ সর্বধনুষ্ণ  
 তাম্ ॥ ৮৭ ॥ ধরণীং ন স পম্পশ শরসজ্জৈঃ সমাবৃতঃ ॥ ৮৮ ॥ শরতল্লৈ ম  
 স্বাসং শযানং পুরুষর্ষভম্ । রথান্নিপতিতশ্চেনং দিব্যো ভাবঃ সম্পাশিৎ ॥ ৮  
 অভ্যবর্ষচ্চ পঞ্জরন্যঃ প্রাকম্পত চ মেদিনী । পতন্ স দদৃশে চ্যুপি দক্ষিণেন চ  
 করম্ ॥ ৯০ ॥ সংজ্ঞাঞ্চোপালভদ্বীরঃ কালং সঞ্চিন্ত্য ভারত । অন্তরীক্ষে চ শু  
 দিব্যা বাচঃ সমন্ততঃ ॥ ৯১ ॥ কথং মহাত্মা গাঙ্গেযঃ সর্বশস্ত্রভূতায়রঃ । কা  
 কর্ত্তা নরব্যাসুঃ সম্প্রাপ্তে দক্ষিণায়ণে । স্থিতোহস্মীতি চ গাঙ্গেযস্তচ্ছ্রুত্বা বাক্য-  
 মব্রবীৎ ॥ ৯২ ॥ ধারয়ামাস চ প্রাণান্ পতিতোহপি মহীতলে । উত্তরায়ণম-

द्विच्छन् भीष्मः कुरूपितामहः ॥ २७ ॥ तस्य तन्मतमाज्जाय गङ्गा हिमवतः सूता ।  
 महर्षीन् हंसरूपेण प्रेषयामास तत्र वै ॥ २४ ॥ तेह्यथ सम्पातिनो हंसान्स्त्रु-  
 रिता मानसौकसः । आजग्मुः सहिता द्रक्षुः भीष्मं कुरूपितामहम् । यत्र शेते  
 नरश्रेष्ठः शरतस्त्रे पितामहः ॥ २५ ॥ ते तु भीष्मं सन्साद्य ऋषयो हंसक-  
 पिणः । अपशान् शरतस्त्रस्य भीष्मं कुरूकुलोदहम् ॥ २७ ॥ ते तं दृष्ट्वा महा-  
 आनन्दं कृत्वा चापि प्रदक्षिणम् । गाङ्गेयं भरतश्रेष्ठं दक्षिणेन च भास्करम् । इत-  
 रेतरमामन्त्र्य प्राहस्तत्र मनीषिणः ॥ २९ ॥ भीष्मः कथं महात्मा सन् संस्थाता दक्षि-  
 णायने । इत्युक्त्वा प्रसृष्टा हंसा दक्षिणामभितो दिशम् ॥ २८ ॥ सम्प्लुक्त्य वै  
 महाबुद्धिश्चित्तुयिद्धा च भारत । तानत्रवौच्छास्तनवो नाहं गन्ता कथञ्चन । दक्षिणा-  
 वृत्त आदित्य एतन्मे मनसि स्थितम् ॥ २२ ॥ गमिष्यामि स्वकं स्थानमासीद्वन्मे पुरा-  
 तनम् । उदगावृत्त आदित्ये हंसाः सत्यं ब्रवीमि वः । धारयिष्याम्यहं प्राणा-  
 न्मृतरायणकाङ्क्षया ॥ १०० ॥ ऋषय्यभूतः प्राणानामुत्सर्गे निषतो मम । तस्मात्-  
 प्राणान् धारयिष्ये मुमुर्षुरूदगायने ॥ १०१ ॥ यश्च दत्तो वरो मह्यं पित्रा तेन  
 महात्माना । ह्यन्तो मृत्युरित्येव तस्य चास्तु वरस्तथा ॥ १०२ ॥ धारयिष्ये ततः  
 प्राणान्मुत्सर्गे निषते मति । इत्युक्त्वा तांस्तदा हंसान् स शेते शरतस्त्रगः ॥ १०३ ॥  
 एवं कुरूणां पतिते शृङ्गे भीष्मे महोजसि । पाण्डवाः सृञ्जयाश्चैव सिंहनादं  
 प्रचक्रिरे ॥ १०४ ॥ तस्मिन् हते महासद्वे भरतानां पितामहे । न किञ्चिद्  
 प्रत्यपद्यन्त पुल्लास्ते भरतर्षभ । सम्योहश्चैव तुमुलः कुरूणामभवत्तदा ॥ १०५ ॥  
 रूपदुर्योधनमुखा निश्वस्य रुरुदस्ततः । विषादाच्च चिरं कालमतिष्ठन् विगन्त-  
 द्विषाः ॥ १०७ ॥ दध्युश्चैव महाराज न युद्धे दधिरे मनः । उरुग्रान्  
 नाभ्यवर्तन्त पाण्डवान् ॥ १०९ ॥ अवधे शान्तनोः पुत्रे हते भीष्मे,  
 अभावः सहसा राजन् कुरुराजस्य तर्कितः ॥ १०८ ॥ इतः प्रवीरास्तु वधं न क-  
 ष्यन्ति शितैः शरैः । कर्तव्यं नाभिजानीमो निज्जिताः सव्यसाचिना ॥ १०९ ॥  
 शूरान्स्तु जयं लब्ध्वा परत्र च परां गतिम् । सर्वे दधुर्म्महाशब्धान् शूराः परिष-  
 त्वा ॥ ११० ॥ सोमकाश्च सपाङ्गालाः प्राह्वयन्तु जनेश्वर ॥ ११० ॥ ततस्तुर्यसहस्रेषु  
 सुमहाबलः । आस्फोटयामास भृशं भीमसेनो नन्दं च ॥ १११ ॥ सेन-  
 षाश्चापि गाङ्गेये निहते विभो । संन्यस्य वीराः शस्त्राणि प्राध्या-  
 न्ततः ॥ ११२ ॥ प्राक्रोशन् प्राद्रवश्चान्ये जग्मुर्मोहं तथापरे ।  
 म्यहभ्यनिन्दन्त भीष्मक्षान्येभ्यपूजयन् ॥ ११३ ॥ ऋषयः पितरश्चैव प्रश-

যে পূর্বে তে চৈনং প্রশংসিরে ॥ ১১৪ ॥ মহে  
শান্। জপন্ শান্তনবো ধীমান্ কালাকাজ্জী

ভীষ্মবধপর্বণি ভীষ্মনিপাতনে ষোড়শাধিক-  
শততমোহধ্যায়ঃ ॥ ১১৬ ॥



ধৃতরাষ্ট্র উবাচ। কথমাসংস্তদা যোধা হীনা ভীষ্মেণ জয়। বলিনা দে  
কল্পেন গুর্ভর্থে ব্রহ্মচারিণা ॥ ১ ॥ তদৈব নিহতান্মন্যে কুবন্যাংশ্চ পাণ্ডবৈ  
ন প্রাহরন্মদা ভীষ্মো যুগিত্বাদ্ধুপদাভ্রজম্ ॥ ২ ॥ ততো দুঃসরং মন্যে কিমন্য  
শ্ৰভবিষ্যতি! অদ্যাং পিতরং শ্ৰদ্ধা নিহতং স্ম সুদুর্শ্রুতিঃ ৩ ॥ অশ্মসারমঃ  
নুনং হৃদযং মম সঞ্জয়। শ্ৰদ্ধা বিনিহতং ভীষ্মং শতধা যন্ন দীতে ॥ ৪ ॥ যদ  
মিহতেনাজৌ ভীষ্মেণ জয়মিচ্ছতা। চেষ্টিতং কুরুসিংহেন তং কথয় সূত্রত ॥  
পুনঃপুনর্ন মৃষ্যামি হতং দেবত্রতং রণে। ন হতো জামদগ্নে দিব্যৈরস্ত্রে  
পুরা। স হতো দ্রৌপদেযেন পাঞ্চাল্যেন শিখণ্ডিনা ॥ ৬ ॥ সঙ্ঘউবাচ। সাযা  
নিহতো ভূমৌ ধার্ত্তরাষ্ট্রান্ বিষাদয়ন্। পাঞ্চালান্ হর্ষযংশ্চ বীষ্মঃ কুরুপিত  
মহঃ। অশেত শরতল্লঙ্ঘ্যে মেদিনীমস্পৃশংস্তদা ॥ ৭ ॥ ভীষ্মোহাং প্রপতি  
প্রচ্যুতে ধরণীতলে। হাহেতি তুমুলঃ শকো ভূতানাং সমপদা ৮ ॥ সী  
বৃক্ষে নিপতিতে কুরুণাং সমিতিঞ্জয়ে। উভযোঃ সেনযো রাজনুত্রিয়ান্ তয  
বিশং ॥ ৯ ॥ ভীষ্মং শান্তনবং দৃষ্ট্বা বিশীর্ণকবচধ্বজম্। অঃ পর্যাবহ  
পাণ্ডবাশ্চ বিশাম্পতে ॥ ১০ ॥ খন্তমঃসংবৃতং হ্যসীদাসীদানুপভঃ। র  
স পৃথিবী চৈব ভীষ্মে শান্তনবে হতে ॥ ১১ ॥ অযং ব্রহ্মবিদাং গৈ হযং ব্র  
বিদাং গতিঃ। ইত্যভাষন্ত ভূতানি শযানং পুরুষর্ষভম্ ॥ ১২ ॥ অযং পিত  
মাজ্জায় কামার্ত্তং শান্তনুং পুরা। উদ্ধুরেতসমাত্মানং চকার পুত্রঃ ॥ ১৩ ॥  
ইতি স্ম শরতল্লঙ্ঘং ভরতানাং মহত্তমম্। ধ্বষঃ প্রত্যভাষন্ত সঃ সিদ্ধ  
রনৈঃ ॥ ১৪ ॥ হতে শান্তনবে ভীষ্মে ভরতানাং পিতামহে। নুবি প্রত্য  
দ্যন্ত পুত্রাস্তব হি মারিষ ॥ ১৫ ॥ বিবর্ণবদনাশ্চাসন্ গতশ্রীকৃষ্ণা অ  
ষ্টন্ ব্রীড়িতাশ্চৈব হ্রিষা যুক্তা হৃধোমুখাঃ ॥ ১৬ ॥ পাণ্ডবশ্চ জয়ং কংগ্র  
শিরসি স্থিতাঃ। সর্বে দধ্য স্মহাশঙ্খান্ হেনজালবিভূষিতান্। হৃষ্ঠানান্

मानं कौश्लेषं हर्षेण महता युतम् । निहत्य व  
 संमोहश्चापि तुमुलः कुरुगामभवत्ततः । क  
 युः ॥ १२ ॥ तथा निपतिते तीम्ने कौर  
 सर्वं निस्सर्ष्यादमवर्तत ॥ २० ॥ दृष्ट्वा च पतितं  
 उत्तमं जवमास्थाय द्रोणानीकमुपद्रवत् ॥ २१ ॥ ब्रात्रा प्र  
 नीकेन दंशितः । प्रथमो पुरुषव्याघ्रः स्वसैन्यमविषादयन् ॥ २२ ॥  
 मतिप्रेक्ष्य कुरवः पर्यवारयन् । दुःशासनं महाराज किमयं वक्ष्यतीति च ॥  
 ततो द्रोणाय निहतं तीम्नमाचर्त् कौरवः । द्रोणस्तत्राप्रियं श्रद्धा मू  
 ढरतर्षभ ॥ २४ ॥ 'स संज्जामुपलभ्यांश्च भारद्वाजः प्रतापवान् । निवारया  
 तदा स्वान्यनीकानि मारिष ॥ २५ ॥ विनिवृत्तान् कुरुन् दृष्ट्वा पाण्डवापि  
 निकान् । दूतेः शीघ्राश्वसंयुक्तेः समन्तां पर्यवारयन् ॥ २६ ॥ निवृ  
 सैन्येषु पारम्पर्येण सर्वशः । विमुक्तकवचाः सर्वे तीम्नमीयुर्नराधिपाः ॥ २७  
 व्युपरम्य ततो युगिक्षोधाः शतसहस्रशः । उपतस्त्रुर्म्महात्मानं प्रजापतिमिव  
 मराः ॥ २८ ॥ ते तु तीम्नं समासाद्य शयानं पुरुषर्षभम् । अभिवादय व्या  
 ष्टस्तु पाण्डवाः कुरुभिः सह ॥ २९ ॥ अथ पाण्डुन् कुरुंश्चैव प्रणिपत्याग्रत  
 स्थितान् । अत्यथावत धर्मात्मा तीम्नः शास्तनवस्तदा ॥ ३० ॥ तीम्न उवाच । स्वागत  
 वो महाभागाः स्वागतं वो महारथाः । तूष्यामि दर्शनाच्छाहं युष्माकममरो  
 पमाः ॥ ३१ ॥ अभिमन्याथ तानेव शिरसा लम्बताव्रवीत् ॥ ३२ ॥ परिपाटे  
 तव सूतान् स्थिताम्बुदीक्ष्य भारत । शिरो मे लम्बतेऽन्त्यर्धमुपधानं प्रदीय  
 ताम् ॥ ३३ ॥ ततो नृपाः समाजह्रुस्तन्ननि च मृदूनि च । उपधानानि मुख्यानि  
 नैच्छतानि पितामहः ॥ ३४ ॥ अथाव्रवीन्नरव्याघ्रः प्रहसन्मिव ताम्पान् । नैतानि  
 वीरशय्यासु युक्तरूपानि पार्थिवाः । ततो वीक्ष्य नरश्रेष्ठमत्यथावत पाण्डव  
 धनञ्जयं दीर्घबाहूः सर्वलोकमहारथम् ॥ ३५ ॥ धनञ्जय महाबाहो शिरो मे ताव  
 लम्बते । दीयतानुपधानं वै यद्वुक्त्वमिह मन्यसे ॥ ३६ ॥ सञ्जय उवाच । समा  
 रोप्य महत्पापमभिवादय पितामहम् । नेत्राभ्यामश्रुपूरुणाभ्यामिदं वचनमब्र  
 वीत् ॥ ३७ ॥ आह्लापय कुरुश्रेष्ठ सर्वशस्त्रभृताम्बर । प्रेष्योऽहं तव दूर्क्ष्य क्रिष  
 तां किं पितामह ॥ ३८ ॥ तमव्रवीच्छास्तनवः शिरो मे ताव लम्बते । उपधानं  
 कुरुश्रेष्ठ फाल्गुनोपदधत्स मे ॥ ३९ ॥ शयनस्यान्तरूपं वै शीघ्रं वीर प्रयच्छ  
 मे । त्वं हि पार्थ समर्थो वै श्रेष्ठः सर्वशस्त्र-

बुद्धिसङ्गुणाश्रितः । फाल्गुनोऽपि तथेत्युक्त्वा व्यवसायमरोचयत् ॥४२॥ गृह्याह मन्त्र्य  
 गाण्डीवन् शरान् समतपर्वणः । अमुस्मान् महात्मानं भरतानां पितामहम् ॥ ४३ ॥  
 त्रिभित्तौत्कैर्म्महावेगैरश्वगृहाच्छिरः शरैः । अभिप्रायेतु विदिते धर्मात्त्वा मव्य-  
 सार्चिना ॥ ४४ ॥ अहव्यन्दरतश्रेष्ठो तीर्थो दृष्टुार्थतद्वत् । उपधानेन दत्तेन  
 प्रत्यनन्दकनञ्जयम् । प्राह सर्धान् समुदीक्ष्य भरतान् भारुं प्रति ॥ ४५ ॥ कुन्ती-  
 पुत्र युधांश्रेष्ठ सुहृदां प्रीतिवर्द्धन । शयनस्याभूकपं पाण्डवोपहितं ह्यया ।  
 यद्वान्यथा प्रपद्येथाः शपेयं ह्यामहं रुषा ॥ ४६ ॥ वनेतन्महावाहो धर्मेषु  
 परिनिष्ठता । स्वपुत्र्यं क्लियेणार्जो शरतल्लगतं तै ॥ ४७ ॥ एवमुक्त्वा च  
 वीभत्सुं सर्वांस्तानब्रवीद्वचः । राज्ञश्च राजपुत्रां सर्वांस्तानभिसंस्थि-  
 तान् ॥ ४८ ॥ प्रपश्यातोपधानं मे पाण्डवेनाभिसंस्थिम् । शेष्येहमस्यां  
 शय्यायां यावदावर्तनं रवेः । ये तदा मां गमिष्यां ते च द्रक्ष्यन्ति मां  
 नृपाः ॥ ४९ ॥ दिशं वैश्रवणाक्रान्तां यदा गन्ता दिकरः । हूनं सपुत्र-  
 युक्तेन रथेनोत्तमतेजसा । विमोक्ष्येहं तदा प्रान् सुहृदः सुप्रिया-  
 निव ॥ ५० ॥ परिखा खन्यतामत्र ममावसदने नृपाः । उपस्ये विवस्वस्तमेव  
 शरशताचितः ॥ ५१ ॥ उपारमध्वं संग्रामाद्देवरमुत्सृज्य पद्भ्यां ॥ ५२ ॥ मञ्जय  
 उवाच । उपातिष्ठन्तथा वैदयाः शल्योद्धरणकोविदाः । रौपकरणैर्धक्ताः  
 कुशलाः साधु शिक्षिताः ॥ ५३ ॥ तान् दृष्ट्वा जाह्नवीपुत्रः उवाच तनयं तव ।  
 धनं दत्त्वा विसृज्यास्तां पूजयित्वा चिकित्सकाः ॥ ५४ ॥ कृते न ह्रीदानीं  
 वैदेयैः कार्यमिहास्तु मे । क्लृप्तधर्मे प्रशस्तां हि प्राप्नुम्य परमां गति-  
 म् ॥ ५५ ॥ नैष धर्मो महीपालाः शरतल्लगतस्य मे । एरव शरैश्चाहं  
 दक्षव्योऽस्मि नराधिपाः ॥ ५६ ॥ तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य पु दुर्योधनस्तव ।  
 वैदयान् विसृज्यामस पूजयित्वा यथाहृतः ॥ ५७ ॥ ततस्ते विं जग्मूर्नानाजन-  
 पदेश्वराः । स्थितिं धर्मे परां दृष्ट्वा तीर्थस्यामिततेजसः ॥ ५८ ॥ उपधानं  
 ततो दत्त्वा पितुस्ते मन्त्रुजेश्वराः । सहिताः पाण्डवाः सर्वे कुरवाहारथाः ॥ ५९ ॥  
 उपागम्य महात्मानं शयानं शयने शुभे । तेऽतिवाद्या तीर्थं कृत्वा च  
 त्रिः प्रदक्षिणम् ॥ ६० ॥ विधाय रक्षां तीर्थस्य सर्व एव समस्तु वीराः स्वशि-  
 विराण्येव ध्यायन्तः परमातुराः । निवेशायाभ्युपागच्छन् रुद्धिरोक्शि-  
 ताः ॥ ६१ ॥ निविष्टान् पाण्डवान् सर्धान् प्रीयमाणान्हरथा तीर्थस्य पतने  
 हर्षान् उपागम्य महाबलः । उवाच माधवः काले धर्मपुत्रधिष्ठिरम् ॥ ६२ ॥

दिव्यं जयसि कौरव्य दिव्यं तीर्यो निपातितः । अवधे । मानुषैरेष सत्यसहो  
 महारथः ॥ ७३ ॥ अथ वा दैवतैः पार्थ सर्वशस्त्रस्य पारगः । द्वास्तु चक्रुर्हणं प्राप्य  
 दक्षो षोरेण चक्रुषा ॥ ७४ ॥ एवमुक्त्वा धर्मराजः प्रत्युवाच जनार्दनम् । तव  
 प्रसादाद्विजयस्तव क्रोधात् पराजयः ॥ ७५ ॥ द्वं हि नः शरणं कृषः भक्त्या-  
 नामभयकरः । अनाश्रय्या जयस्तेषां येषां ह्यसि केशव ॥ ७६ ॥ रक्षिता  
 समरे नित्यं नित्यं हिते रतः । सर्वथा ह्यं समासाद्य नाश्रयामिति मे-  
 मतिः ॥ ७७ ॥ एवमुक्त्वा प्रत्युवाच स्मयमानो जनार्दनः । तवैवैतद्व्यक्तकृपं  
 वचनं पार्थिवोक्तम् ॥ ८ ॥

इति तीर्यपणे तीर्यवधपर्वणि तीर्योपधानदाने सप्तदशाधिक-

शततमोऽध्यायः ॥ १११ ॥



सङ्गम उवाच । व्यक्तं महाराज शर्वर्यां सर्वपार्थिवाः । पाण्डवा धार्तराष्ट्राश्च  
 उपातिष्ठन् पितामहम् ॥ १ ॥ तं वीरशयने वीरं शयानं कुरुसन्तमम् । अति-  
 वादोपतस्तु रैः कृत्विः कृत्विष्यतम् ॥ २ ॥ कन्याश्चन्दनचूनेश्च लाजैर्म्मालैश्च  
 सर्वशः । अवाकिरन् नवः तत्र गत्वा सहस्रशः ॥ ३ ॥ स्त्रियो वृक्षास्तथा बालाः  
 प्रेक्षकाश्च पृथग्ज । समुत्थयुः शान्तनवः भूतानीव तमोन्मदम् ॥ ४ ॥ तूर्याणि  
 शतसंख्यानि तथैः टनर्तकाः । शिल्पिनश्च तथा जग्मः कुरुवृक्षं पितामहम् ॥ ५ ॥  
 उपारम्य च युद्धेभ्यः माहाग्निप्रमुच्य ते । आयुधानि च निष्क्रियं सहिताः कुरु-  
 पाण्डवाः ॥ ६ ॥ धासस्तु दुराधर्षं देवव्रतमरिन्दमम् । अन्योन्यं प्रीतिम-  
 तुस्ते यथापूर्वं ययः ॥ ७ ॥ सा पार्थिवशतकीर्णा समितिर्तीर्यशोभिता । शुशु-  
 भे भारती दीप्ता वीवादित्यमण्डलम् ॥ ८ ॥ विवभो च नृपाणां सा गङ्गासूत-  
 मुपासताम् । देवि देवेशं पितामहमुपासताम् ॥ ९ ॥ तीर्यस्तु वेदनां  
 धैर्यमिनिगृह्य भ्रष्ट । अतितप्तः शरैश्चैव निश्चसन्नुरगो यथा ॥ १० ॥ शराभि-  
 तप्तकायोऽपि शस्तापमूर्च्छितः । पानीयमिति सस्पृक्ष्य राज्ञस्तान् प्रत्यभा-  
 यत ॥ ११ ॥ ततः कृत्विषा राजन् समाजहः समन्ततः । भक्त्या नूत्तावचान् राजन्  
 वारिकुन्दांश्च शीन् ॥ १२ ॥ उपनीतांस्ततो दृष्ट्वा तीर्यः शान्तनवोऽब्रवीत् ।  
 नाद्य तात मया । भो गाः केचन मानुषाः ॥ १३ ॥ अपक्रान्त्वा मनुष्येभ्यः  
 शरशय्यागतो ह्ये प्रतीकमाणस्तिष्ठामि निर्वृत्तिं शशिसूर्ययोः ॥ १४ ॥ एव-  
 मुक्त्वा शान्तनवोऽपि वाक्येन पार्थिवान् । अर्जुनं द्रक्षुमिच्छामि इत्यभाषत

তারতশা ১৫ ॥ অথোপেত্য মহাবাহুরভিবাদ্য পিতামহম্ । অতিষ্ঠৎ শ্ৰুঞ্জলিঃ  
 প্রস্বঃ কিংকরোমীতি চাত্ৰবীৎ ॥ ১৬ ॥ তৎ দৃষ্ট্বা পাণ্ডবং রাজন্ অভিবাদ্যাশ্ৰুৎ  
 স্থিতম্ । অভ্যভাষত ধৰ্ম্মাত্মা ভীষ্মঃ শ্ৰীতো ধনঞ্জয়ম্ ॥ ১৭ ॥ দহতীব শরীরং মে  
 সংসৃতস্য তবেষুভিঃ । মৰ্ম্মাণি পরিদূষন্তে মুখঞ্চ পরিশ্ৰুতি ॥ ১৮ ॥ বেদনার্ত-  
 শরীরস্য প্রযচ্ছাপো মমাজ্জুন । ত্বং হি শক্ভো মহেষ্বাস দতুমাপো যথাবিধি ॥ ১৯ ॥  
 অজ্জুনস্ত তথेत্যুক্ত্বা রথমারুহ বীর্যবান্ । অধিজ্যং লবৎ কৃষ্ণা গাণ্ডীবং ব্যা-  
 ক্ষিপ্ত্বানুঃ ॥ ২০ ॥ তস্য জ্যাতলনির্ঘোষণং বিস্কৃজ্জিত্বাশনেঃ । বিত্রেমুঃ সর্ব-  
 ভূতানি সর্বে শ্ৰুত্বা চ পার্থিবাঃ ॥ ২১ ॥ ততঃ প্রদক্ষিণং কৃত্বা রথেন রথিনাম্বরঃ ।  
 শযানং তরতশ্ৰেষ্ঠং সর্বশস্ত্ৰভূতাম্বরম্ ॥ ২২ ॥ সন্ধায় শরং দীপ্তমভিমন্ত্য স  
 পাণ্ডবঃ । পাজ্জন্যাস্ত্রেণ সংযোজ্য সৰ্বলোকস্য পশতঃ ॥ ২৩ ॥ অবিধ্যৎ  
 পৃথিবীং পার্থঃ পার্শ্বে ভীষ্মস্য দক্ষিণে । উৎপপাত তদে ধারা বারিণো বিমলা  
 শুভা । শীতস্যামৃতকল্পস্য দিব্যগন্ধরসস্য চ ॥ ২৪ ॥ তর্পয়ত্ততঃ পার্থঃ শীতবা  
 জলধারযা । ভীষ্মং কুরুণামৃষভং দিব্যকৰ্ম্মপরাক্রমম্ ॥ ২৫ ॥ কৰ্ম্মণা তেন পার্থস্য  
 শক্রস্যেব বিকূৰ্বতঃ । বিস্ময়ং পরমং জগ্নুস্ততস্তে বসুধাধিঃ ॥ ২৬ ॥ তৎ কৰ্ম্ম  
 প্রেক্ষ্য বীভৎসোরতিমানুষ্যবিক্রমম্ । সম্পাবেপন্ত কুরা গাবঃ শীতাদিতা  
 ইব ॥ ২৭ ॥ বিস্ময়াচ্ছোভরীযাণি ব্যাবিধ্যন্ সৰ্বতো নৃপাঃ শঙ্খদুন্দুভিনির্ঘোষ-  
 স্তমূলঃ সৰ্বতোহভবৎ ॥ ২৮ ॥ তৃপ্তঃ শান্তনবশ্চাপি রাত্ত বীভৎসুমত্ৰবীৎ ।  
 সর্বপার্থিববীরাণাং সন্নিধৌ পূজয়ামিব ॥ ২৯ ॥ নৈতচ্চিত্রং হাবাহো ত্বষিকৌর-  
 বনন্দন । কথিতো নারদেনাসি পূৰ্ব্বর্ষিরমিতদ্যতে ॥ ৩০ ॥ বদেবসহায়স্ত্বং মহৎ  
 কৰ্ম্ম করিষ্যসি । যম্নোৎসহতি দেবেন্দ্রঃ সহ দেবৈরপি ধু ॥ ৩১ ॥ বিদু-  
 স্ত্বাং নিধনং পার্থ সর্বকলস্য তদ্বিদঃ । ধনুর্ধরাণামেকস্ত্বপৃথিব্যাঃ প্রবরো  
 নৃষু ॥ ৩২ ॥ মনুষ্যা জগতি শ্রেষ্ঠাঃ পক্ষিণাং গরুডো বর সরিতাং সাগরঃ  
 শ্রেষ্ঠঃ শ্রেষ্ঠস্ত্বমসি ধ্বনিমাম্ ॥ ৩৩ ॥ আদিত্যস্তেজসাং শ্রেণেরীণাং হিমবান  
 বরঃ । জাতীনাং ব্রাহ্মণঃ শ্রেষ্ঠঃ শ্রেষ্ঠস্ত্বমসি ধ্বনিমাম্ ॥ ৩৪ ॥ বৈ শ্ৰুতং ধার্ত্ত-  
 রাষ্ট্রেণ বাক্যং মঘোচ্যমানং বিদুরেণ চৈব । দ্রোণেন রামেণাৰ্দনেন মুহুমুহুঃ  
 সঞ্জয়েনাপি চোক্তম্ ॥ ৩৫ ॥ পরীতবুদ্ধির্হি বিসংজ্ঞকল্পো গৃধ্রনো ন চ তৎ  
 শ্ৰদ্ধধাতি । স শেষ্যতে বৈ নিহতশ্চরায শাস্ত্রাতিগো ভীমন্তভূতঃ ॥ ৩৬ ॥  
 ততঃ শ্ৰুত্বা তদ্বচঃ কৌরবেন্দ্রো দুৰ্য্যোধনো দীনমনা বভূব । অস্বীচ্ছান্তনবোহ-  
 ভিবীক্ষ্য নিবোধ রাজন্ ভব বীতমন্যুঃ ॥ ৩৭ ॥ দৃষ্টং দুৰ্য্যোধিত্তে যথা পার্থেন



धीमता जलस्य धारा जनिता शीतस्य मृतगन्धिनः । एतस्य कर्ता लोकेऽस्मिन्  
 नान्यः कश्चन विद्यते ॥ ७८ ॥ आग्नेयं वाक्पुत्रं सौम्यं वायव्यमथ वैष्णवम् ।  
 ऐश्वर्यं पाशुपतं ब्राह्मं पारमेष्ठ्यं प्रजापतेः ॥ ७९ ॥ धातुस्तुष्टुश्च सवितु-  
 रैवस्य तमथापि वा । सर्वस्मिन्मानुष्ये लोके वेद्येद्येको हि धनञ्जयः ॥ ८० ॥ क्रुषेण  
 वा देवकीपुत्रो नान्यो वदेह कश्चन । न शक्यः पाशुवस्तुत युद्धे जेतुं कथ-  
 ञ्चन । अमानुषानि कर्मणि यस्यैतानि महात्मानः ॥ ८१ ॥ तेन सद्भवतां संख्ये  
 शूरेणाहवशोतिना । कृतना समरे राजन् सन्निर्भवतु मा चिरम् ॥ ८२ ॥ यावत्  
 क्रुषेण महाबाहूः स्वाधीनकुरुसन्तम । तावत् पार्थेन शूरेण सन्निस्ते तात युज्य-  
 ताम् ॥ ८३ ॥ यावन्न केमुं सर्वां शरैः समतपर्वतिः । नाशयत्यर्जुनस्तावत्  
 सन्निस्ते तात युज्यताम् ॥ ८४ ॥ यावत्तिष्ठति समरे हतशेषाः सहोदराः । नृपाश्च  
 बहवो राजन् तावत् स हि प्रयुज्यताम् ॥ ८५ ॥ न निर्दहति ते यावत् क्रोधदी-  
 प्तेक्षणश्चमूम् । युधिष्ठिरणे राजन् सन्निस्ते तात युज्यताम् ॥ ८६ ॥ नकुलः  
 सहदेवश्च तीमसेनश्च शत्रुवः । यावत्समूहं महाराज नाशयन्ति न सर्वशः ॥ ८७ ॥  
 तावन्ते पाण्डवैर्वीरैः शीघ्रं मम रोचते । युद्धं मदस्तमेवास्तु तात संशाम्य  
 पाण्डवैः ॥ ८८ ॥ एतं रोचतां वाक्यं यदुक्त्वाहसि मयानघ । एतत् क्षेम-  
 महं मन्ये तव चैववास्य च ॥ ८९ ॥ त्वञ्ज्वा मम्यं व्यापाशाम्यश्च पार्थैः पर्या-  
 पुमेतत् यत् कृतं कृतेन । तीमस्यान्तादस्तु वः सौहार्दं जीवन्तु शेषाः साधु  
 राजन् प्रसीद ॥ ९० ॥ राज्यस्यार्कं दीयतां पाण्डवानामिन्द्र प्रभूत्वं धर्मराजोऽभि-  
 यातु । मामिन्द्रध्रुकुपानानां जघन्याः पापां कीर्तिं प्राप्स्यसे कौरवेन्द्र ॥ ९१ ॥  
 ममावसानाच्छान्तिरपजानां सद्गच्छतां पार्थिवाः प्रीतिमन्तुः । पिता पुत्रं  
 मातुलं भागिनेयोता चैव ब्रातरं त्रैतु राजन् ॥ ९२ ॥ नचेदेवत् प्राणु-  
 कालं वचो मे मेविकः प्रतिपत्स्यस्यवुक्त्या । तप्यम्यस्ते एतदन्ताः स्तु सर्वे  
 सत्याद्येतां भारतीरियामि ॥ ९३ ॥ एतद्वाक्यं सौहार्दादापगेयो मध्ये राज्ञां  
 भारतं श्रावयिष्या तूष्णीमासीच्छल्यसन्तुष्टमर्मा योज्यात्मानं वेदनां समि-  
 यम्य ॥ ९४ ॥ सङ्गवाच । धर्मार्थसहितं वाक्यं श्रुत्वा हितमनामयम् । नारो-  
 चयत् पुलस्ते मुमुक्षु भेषजम् ॥ ९५ ॥

इति तीमनि तीमवधपर्वणि दुर्योधनं प्रति तीमोपदेशे

साहस्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ ११८ ॥

सञ्जय उवाच । ततस्ते पार्थिवाः सर्वे जग्मुः स्वानालयान् पुनः । तृष्णीश्रुते  
महाराज भीष्मे शान्तनुनन्दने ॥ १ ॥ श्रुत्वा तु निहतं भीष्मं राधेयः पुरुष-  
वर्षतः । ईषदागतसन्नासस्तुरयोपजगाम ह ॥ २ ॥ स ददर्श महात्मानं शरीरलग्नतं  
तदा । जगन्मथ्यागतं वीरं कार्तिकेयिव प्रभुम् ॥ ३ ॥ निमीलितान्कं तं वीरं  
साश्रुकण्ठस्तदा वृषः । अत्रेत्य पादयोरस्य निपपात महाद्यूतिः ॥ ४ ॥ राधेयो-  
हं कुरुश्रेष्ठ नित्यमस्मिगतस्तव । द्वेषोऽहं तव सर्वत्र इति तैनमुवाच ह ॥ ५ ॥  
तच्छ्रुत्वा कुरुवृद्धो हि बली संवृतलोचनः । शनैरुद्धीक्य सन्नेहमिदमचनमववीत् ॥ ६ ॥  
रहितं धिष्यमालोक्य समुत्सार्थ्य च वृष्णिणः । पितेव पुलं गाङ्गेयः परिरतैकवा-  
हना ॥ ७ ॥ एहेहि मे विप्रतीप स्पर्क्षसे ह्यं मया सह । यदि मां नाधिगच्छेथा न  
ते श्रेयो ध्रुवं भवेत् ॥ ८ ॥ कौन्तेयस्तु न राधेयो न तवाधिरथः पिता ।  
श्रुतस्तुं हि महाबाहो वदतो नारदाग्रया ॥ ९ ॥ कुरुद्वेषपायनाच्छेव तच्छ सत्यं-  
न संशयः । न च द्वेषोऽस्ति मे तात ह्यसि सत्यं त्रवीमि ते ॥ १० ॥ तेज्योवध-  
निमित्तं पुरुषं त्वाहमक्रवम् । अकस्मात् पाण्डवान् सर्वानवस्मिपसि सूत्रत । तेनासि  
बहूनां कुरुश्रेष्ठः कुरुसंसदि ॥ ११ ॥ जानामि समरे वीर्यं शत्रुतिदुःसह-  
स्तव । त्रकण्यतां शौर्यं दाने च परमां स्थितिम् ॥ १२ ॥ न ह्यया सदशः कश्चिच्च  
पुरुषेष्वमरोपम । कुलभेदतयाच्छाहं सदा पुरुषमुक्तवान् ॥ १३ ॥ ईषस्त्रे चास्त्र-  
सन्ताने लाघवेऽस्त्रवले तथा । सदशः फाल्गुनेनासि कुरुषेन च महात्माना ॥ १४ ॥  
कर्ण काशिपुरं गत्वा ह्यैकेन धनुश्मता । कन्याथे कुरुराजस्य राजानो मृदिता  
युधि ॥ १५ ॥ तथा च बलवान् राजा जरासन्को दरासदः । समरे समरश्लाघी न  
ह्यया सदशोऽभवत् ॥ १६ ॥ त्रकण्यः सत्यवादी च तेजसापि बलेन च । देवगर्भ-  
समः संख्ये मनुष्यैरधिषो युधि ॥ १७ ॥ व्यपनीतोऽहं मनुष्यैश्च यस्तुः प्रति  
पुरा कृतः । दैवं पुरुषकारेण न शक्यमतिवर्तितुम् ॥ १८ ॥ सोदर्यताः पाण्डवा  
वीराः प्रातरस्तेऽरिस्तदन । सद्गच्छ तैर्महाबाहो मम चेदिच्छसि प्रियम् ॥ १९ ॥  
मया भवतु निर्वृत्तं वैरमादित्यनन्दन । पृथिव्यां सर्वराजानो भवस्तुदय निष्ठा-  
मयाः ॥ २० ॥ कर्ण उवाच । जानाम्येवं महाबाहो सर्वमेतन्न संशयः । यथा  
वदसि दुर्क्ष्य कौन्तेयोऽहं न सूतजः ॥ २१ ॥ अवकीर्णस्तुहं कुत्स्या सूतेन च  
विवर्द्धितः । दुक्त्वा दुर्व्याधनैश्चर्यां न मिथ्या कर्तुमुत्सहे ॥ २२ ॥ वसुदेवसूतो  
यद्वत् पाण्डवार्थेऽदृत्तः । वसु तैव शरीरं पुत्रा दारास्तथा वशः । सर्वं दुर्व्या-  
धनस्यार्थे त्यक्तं मे भूरिदक्षिण ॥ २३ ॥ नचेष्टं व्याधिमरणं क्लिषस्योपकार-

कर्म । कोपिताः पाण्डवा नित्यं समाश्रित्य सुयोधनम् ॥ २४ ॥ अवश्यंभावी  
 ह्यथो यो न स शक्यो निवर्तितुम् । दैवम् पुरुषकारेण को निवर्तितुमुत्सहेत् ॥ २५ ॥  
 पृथिवीक्षयशंसिनि निमित्तानि पितामह । भवद्विरूपलक्षानि कथितानि च संस-  
 दि ॥ २६ ॥ पाण्डवा वासुदेवश्च विदिता मम सर्वशः । अजेयाः पुरुषैरन्यैरिति  
 तांश्चात्सहामहे ॥ २७ ॥ विर्जयिष्ये रणे पाण्डूनि मे निश्चितं मनः । न च  
 शक्यमवसृष्टुं वैरमेतत् सुदारुणम् ॥ २८ ॥ धनञ्जयेन योत्स्येह हं युधि सम्प्री-  
 तमानसः । अनुजानीहि मां तात युद्धाय कृतनिश्चयम् । अनुज्जातस्तु या वीर युध्येष-  
 मिति मे मतिः ॥ २९ ॥ यदङ्गं विप्रतौपं वा संरञ्जात्पापलाभथा । यन्मयेह  
 कृतं किञ्चित्त्वे त्वं क्वन्तमहसि ॥ ३० ॥ भीष्म उवाच । न चेच्छक्यं त्वयोत्सृष्टुं  
 वैरमेतत् सुदारुणम् । अनुजानामि कर्ण त्वां युध्यस्व स्वर्गकाम्यया ॥ ३१ ॥ निश्च-  
 ल्युत्सर्गसंरञ्जः कुरु कर्ण नृपस्य हि । यथाशक्ति यथोत्साहं सतां वृत्तेषु वृत्त-  
 वान् ॥ ३२ ॥ अहं त्वामनुजानामि यदिच्छसि तदापुहि । क्लृप्तधर्मजितान् लोकान-  
 नवाप्स्यसि न संशयः ॥ ३३ ॥ युध्यस्व निरहङ्कारो बलवीर्याव्यपाश्रयः । धर्म्याद्धि  
 युद्धाच्छेयोऽन्यत् क्लृप्तियस्य न विद्यते ॥ ३४ ॥ प्रशंसते इ कृतो यत्नः सुमहान्  
 सूचिरं मया । न तैव शकितः कर्तुं कर्ण सत्यं । मिति ते ॥ ३५ ॥ सञ्जय  
 उवाच । इत्युक्तवति गान्धेये अभिवाद्य प्रकृत्य च । राधेयो रथमारूढ प्रायात्तव  
 सूतं प्रति ॥ ३६ ॥

इति भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मकर्णसमागमे एकौनविंशत्यधिक-

शततमोऽध्यायः ॥ ११२ ॥ भीष्मवधपर्व समाप्तम् ।

समाप्तं भीष्मपर्व ।



वसुधैव कुटुम्बकम् ।

सुदुर्लभं भीष्मपर्वं वर्द्धमाननृपेहया ॥















